(মহর্ষি কৃষ্ণদৈপায়ণবেদ্যাাদ প্রণাত্র 🕥

সপ্তকাতঃ

মূল ও বঙ্গানুবাদ সহ জীনাথো মিজ্র কর্তৃক সংগৃহাত ও

কলিকাভা বড়বাজার হইতে তৎকর্ত্বক প্রকাশিত।



শ্রীযুক্ত নীলকান্ত তর্কবাগীশ কর্ত্তক অমুবাদিত।

কলিকাতা।

২৫ নং গঙ্গাধর বাবুর লেন চীপ্সাইড প্রেদে বি, এচ, ব্যানার্জী এও কোং ঘারা বুজিত।

১২৯০ সাল

राशाशकीया कीयाता कीरहा खनले समा ।

সাধারণের নিমিত ইহার মূল্য ৬ ছয় টাক। ও রাজা মহারাজা মহোদয়পণের নিমিত্ত ১২ বার টা

শুদ্ধিপত্র।

শু দ্ধি	ন্ত কি	পৃষ্ঠা	কলম	পংক্তি	অ ভিদ্বি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	কণম	প ংক্তি
শ্বস্তৃ	च्य <u>्</u> य स्ट्र	٤	• • •	a	देवक्षा	देवपूर्गा	•99	•••	• • •
গ্ৰন্ <u>থ</u>	প্রত্যুত	ર	•••	7 &	ভাগৰ	७ वन	૭૧	ર	٠ 5٤
वैया	বিষয	ર	•••	ર ૨	मृक्षदी	मक्षत्री	•9	۶	20
ভ দহি	ভদ্রহি	ьь	• • •	8	শুক্	গুলুফ	•9	>	28
गृष	মৃষা	>>	•••	>>	किकिनो, धग्र, ভृक,	ছৰ্কা,			
প্রত্যুচ	প্রভাত	5 2 ,	•••	۶৫	কিঙ্কিণী, ধর, ভূক,	দৃৰ্কা	• ৭	•••	۶Œ
কামৰ পূৰ্ণা	কামনা পূৰ্ণ	30	•••	૨ •	সমূজ্ ল	শ মুজ্জ ল	•9	•••	₹•
শাবিভূত	আ বিভূতি	79	•••	₹8	७ सः	এষ	અ	•••	25
: क∮ रू:	কেবিত্তভ	3 8	***	ø	নমোক্ত	নমোহস্ত	96	۶	9
नाज!	নায়া	>%	• • •	ર	জগত্তরং	জগত্ররং	3 F	ء	~
3. mar.	ত শ্ৰুম	56	•••	Œ	মুপৈপতি	মুগৈতি	60	•••	>>
শ্ৰভাত	প্রভ্যুত	১৬	•••	24	मृ ष्टे1	पृष्ट् १	8 0	•••	>•
<u> শূত্রে</u>	পুত্ৰো	> 9		æ	মধ	मथ	8 9	۰ ع	8
া ত্ৰ	পুত্রো	5 9 -	₹	9	দিভোমিত	দিতোহমিত	8 °	٤	•
হ ষ ুরা;	ভৃষ্ণাভূরা	۶ ۹	•••	>७	ভ্ৰুমঃ	© 파괴	8 >		2
∑ व	চুচুখ	۶5	•••	9	मच्चाः	লক্ষণ্;	8 👁	•••	>0
1==11	ठम्भा	૨ ¢	•••	۷,۶	য থা	मथ ।	8-9	•••	5¢
াচূৰ	. প্রচুর	૨ ¢	•••	૨૭	गज्य न।	্রামাণ)	8 8	•••	8 ,
প্ররা	লেয়া	90	•••	9	প্রাত্যা	জীভা	88	•••	Œ
8 1	मृष्ट्रे ।	95 .	•••	7	मदबाक्कभान्	্ময়ে বিশ্ব	8 (£	•••	> &
সূত্ৰণ	मग्र ब्दल	তণ	•••	. 89	गर्का	শক্ া	8 (۶	, a

				(4).				
অশুছি	ভৰি	পৃষ্ঠা	কলম	পুংস্কৃ	অশুদ্ধি	ভূদ্ধি	পৃষ্ঠা	কল্ম	গুংক্তি
শৃক্ষিত	মৃ লিছ্ ড	t da	>	>>	श्रृ विद्या	ফ ুবি ত্ব া	48	***	•
খোরানি	খোরাণি	8 &	•••	•	5 5:	ভভ:	¢ a		9
म् क	मृ ष्	8 %	• • •	ت	উচ্ছীয়ভাং	উ व्हि य खाः	¢¢	•••	23
মনাল	মণ্ডল	8 🍤	•••	>>	যদ্য	यम्य	e c	২	•
নামা	ন†মা	8 🌭	३	. b r	বোড়য	যোড়শ	(%	•••	>
য ়	या उ	8 9	•••	> ,	নৃপাঙ্গনে	নূপাক্ৰে	45	• • •	a
শক্ত	শ কা	8 9	•••	*	তেৰ	ভেষ্	u &		: 4
মঞ্বা	মঞ্জ সা	8 9	•••	۶ ک	প্রাণভ্য	প্রণত্যু	48		4,5
ভূতোষ	ভূভোষ	8 9	,,, a	. •	দ্যাত্রা	দ্যাত্রী	4		. 39
ৰুক্ত	যুক্ত	89	:	۳ e	র	শ্ব	a 9	4	३७
মি	खिः	89	٠ ۶	. >•	ধেক্ষ ভি	ষেক্ষ্যতি	a 9	ર	Í
উৎপৎসে	উৎপৎস্থে	8 9	•••	२ ५७	ক†ক্ষয়	ক†জ্জগ	4 9	, , , · a	. ২ .৩
ভাগ	ভাগ্	86	•••	२ १	চাৰ্য্যত্ব	চার্ঘাত্ত্ব	ሲ ፃ	ર	, 'ર 8
বোগা	বে গগ ৎ	8 b-	•••	Œ	র্বা	रूष !	% 0		>>
যা ভা ং	ৰাণ্ড ্যাং	€8		2	নাশ্বর	নাম্বর	৬১		>*
यमाप	यम् य ८	द8	•••	٩	ভ্যকে	ভ্যকো	৬১		2.
দ্যস্থা	দ্य ख	83	• • •	>	য স্তো ষা ৰ্থ	সন্তো ষাৰ্থ	७ऽ		>0
ब्राट्मटेन	রামেটণ	8 %	•••	ર ૭	রাশাভাদর	রামাত্যদয়	& 2 .	••	*
माज	न्य ज	د ه	•••	٩	তত্তাদৃই।	ভতাতৃষ্ট ।	৬২		8
শর চ ন্ত্র	শর চক ন্দ্র	a >	•••	ሥ	ভামুতুঃ	ভাষ্ঠঃ	७३		2
গুদ্ধনা	স্থদৰ্শন!	¢ >	• • •	২ (t	ব্ৰুছি	ত্রাহি	66	s) #	20
चराः পূর	অন্তঃপুর	د >	•••	২ ১৩	সপথ	শপ	⊗≥	••	२ २१
ৰক্ষণো	বঙ্গণো	(2	***	२ >०	ध ब्र	४द्रः	40		22
ब्रहा र ड	ভূাচাতে	૯૨	•••	4	বিলয়ে ড	বিলখেড	40		२ ५२
म्णाधि	সুপাধি	(ર	***	20	গৃহীষ্ট	গৃহীৰ	₩8	1	. 25
চিন্ম ব্য	চিন্মাত্র	42	• • •	240	মিত্যকঃ	মিত্যুক্ত:	७ 8	***) ર
ভূরি	ত্বরি	(*)	•••	5	ভক্ষা মহে	· ·	\$ (t	•••	٠ >٥
ব্যাদা	জাম্বা	4.0	•••	8	কোন্তভা	কৌজুভা	96	•••	ર ૨

						অণ্ড ছি	তাদ	পৃষ্ঠা	कलम १	া ক
						চিরাৎ	ছ চিরাৎ	98	•	20
						ভ্ৰহ্ণা সি	দ্ৰ ক্ষ সি	98	۶	>>
						ষদ্যক্তৰ	याम्य छ व	9¢	•••	Œ
						নাহয়	ৰা হ্য	٦¢	•••	•
						क्र्रेव	কুটু খ	94	***	7
	দুজ্জর *	%৮			>9	ख९	હ ৎ	16	•••	8
জ্জর শৈক্ষ	श्रेत्र स ।	%৮			ኔ ৮	डे ठूः	ख्र ूः	99	•••	•
ীয়ন্ডা	द्वान् डा स्नर ख	%b -	,	ર	۵	বাদীত।	বাদিভা	99	• • •	56
त् न (पछ	হা ৰ জে চিৎ	৬৮	•••	٠ ٤	4	কৃ ৰ্ ষ	কৃপা	ዓ৮	•••	>
53	স্বরূপং	৬৮		2	b ~	क्टेमा व	स् रेमाब	æ۴	•••	7
্রপং অব্য	य आ श. २ सृ ध ्री	ر ده			y	ভূবি	ভূবি	«۴		٩
ब् र्ड्जा	তুন, আমায়ু	90			5	নাল্পৈৰ	নাইয়ৰ	æ۴	•••	50
আ য়্	মস্	95			•	ইন্তু জু 1	ইত্যুক্ত্ ।	₽•	•••	b -
ম্পু	ন গ্ _য নগর	43	•••		•	ग्रानमः	মানসঃ	৮ ₹.		•
দগর ং	<u> सृङ्</u> ग	95	• • •		a	মধ্	मध्	৮২		50
পুত্য দাযু	र दर नाश्	95		٤	৩	मः পृष्ठे	সংপৃষ্ট	b 2		ર ૭
ना इ ८बारजी शः	রে ংগ\ম াঃ	95	. • •	ર	8	পূৱা	পুয়া	هم	•••	৩
বিশিষ্ঠাদি	বিষ্ঠাদি	95	•••	ŧ	24	স্থাপ	হুৰাপ	F-3	•••	8
- रूपन ३	স্দন	٩2			•	সংস্কৃত্তে	সংস্কৃতে	P-0	•••	8
প্ৰান	পুমান্	ঀঽ	•••		Œ	তাৰ্দা	ত্রাণ ুদা	b-8	•••	5
বুদাদিভো	বৃদ্ধাবদিভোগ	42	4	ર	8	यम् उपम् उ	यम् यम्य	P-8	•••	8
इ:८ थीटे य ः	ज् डटबोटेच ः	42	•••	2	٩	७ ८व	: इंग्र	8-8	•••	*
क्ष्य का	লক্ষণং	93			> ર	मत्र न	न्य वर्गन	₽8	•••	>8
শশ্বিত	শশ্বিভ	90	•••		૭	यम्	य नय	re	•••	8

অশুদ্ধি	ভঙ্কি	পৃষ্ঠা	কল্ম	পুংক্তি	অভ্জি			
তে ২ন্ যে	ভে ংন্যোন্য	6 4	• • •	26	ख्यमा			
কুলম	কুলম্	49	×	8	জ গ্য _় ঃ			
स ्टकऋगश	সূজেক ণং	64	₹,	5.0	ন্মুলা	•,		
রম	व्रम्	৮ ৮	•••	>>	সাঙা	দী তা	> · c	ર ((
ভোহমিশম্	ভো হনিশম্	p P.	•••	28	ষত্ৰ	यद्ध	>06	•
তামাং	ভা ৰাং	44	•••	& .	नमर	नहीः .	· ১০৬	٠ ٤
विक्टः	বাদহং	दच	•••	>•	কিমভ	কি মে ভ	٠٠	Z >>
শত্ৰায়াং	শ্তারাং	दर्च	•••	>0	মূনি	মূনি	٠	. "
করনে†হমবং	ক রনো হভ ব	۰ ه ۱	•••	>>	ভ বিষং	ভ বিষ্যং	>•9	٠ ٤ (
७ था २ क व	তথাহকর	96	۶	٥٠	কামধূক্	ক†মসূক্	_	s 55.
ত্বাম্ভেন	তামুক্তো	22	•••	~	রামবন	ৱাম ভবন	>° ъ	ે ે ર
হ্ বস্ন	ক্ বসন্	27	•••	৬	मामि	ঋষি	5°b	⇒ €
লক্ষণেন	লন্ম ণেন	ねぇ	•••	৬	म रर्थो	ल्य दर्य	5•b	2 3
ষ ে লাঃ	শশ্রে1:	20	•••	œ	পূন:	લૂ ગ્ર	559	9
ৰ্ভোড া।	ভীত্যা	> 4	•	z	春	₹	>>° ···	Ŀ
প্রাপ্তা	প্রাপ্তঃ	<i>એ</i>	•••	₩.	रुवा	ेक्र मो	222	خ ک
চক্ৰ ুভূ ল্ চ	চুক্তু শুশ্চ	7 6	z	>	পূরং	পুরং	>>>	چ
ইত্যুক্ত্যু	हे ज़्राब्त।	20	ء	ь.	কুৰ্য্যা সত্যং	কুৰ্যামসভ্যং	>>> ···	b
স্থাত্ৰৰী	ন্ধাব্ৰী	26	ء	>•	যদ্য	যদয	>> >	5•
ष्ट ह्रे । श्रि	দৃ ঙ্গেহিদি	P 6	•••	4 0	কাৰ্য্যং	কাৰ্য্যহ	8 <i>22</i>	8
ভো	cet:	ねり	•••	24	ন নৃত্যং	নান্তং	3 28	3 \$.
মৃক্তকণ্ঠা	মুক্ত কণ্ঠা	22	•••	7	মেশক্সে	८ माकाटम	55¢	,
र्म का	ল ক্ব	. 5 %	•••	۶۶	मृ क	দৃক্	>5¢	ર '
প্ৰভূ:	প্ৰভূ:	200	•••	>5	রা জ প '	ু বাজোপ	32¢ ···	ર
∌:	न् यः	>.>	•••	.	य नद्रः	म् नहः	ેર ્	5.4
কোট্য-	কোটয়ো	5.2		٠, ا	.:	۵,	32.	

অন্ত দ্ব	9 f	পৃষ্ঠা	কলম	পং জি	অওকি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	কলম	পংক্তি
মকতধ্য:	মকৰাষঃ	528	•••	২	কিম	কিম্	ده د		ર
क् भा _र	ল গ্	>	•••	ò	কাৰ্যয়া	কাজ্ফর।	>8 •	-	3 5
কেশা	কেষা)	•	>	महङ्का	ম হ দ্বুদ্ধং	>8.	2	
ন্থতীক	হুতীক্:	> 2 ¢	-	20	বদ্ধা	वक्का	28 •	ર	. •
जहें :	अक ृः	५ २७		4	5135ক	চ†রচক্	>8>	•••	*
माख	দযভূ	>२ १		ર	गरका	मःदश ्र	282	•	•
আগন্ত্য	অগন্ত্য	১২৭	- >	Œ	भू बा	পুর।	282	•••	>=
সং ধৈশ্চ	স ং থৈ শ্চ	3 2 b	*****	5	মুহাক1	भूमगु रङ ।	> 8 >		٩
गार्कः	শাৰ্ক ং	>>>		9	ক্ল ভি	क्रम खी	>8 <	•••	20
च ्य।	ङ, मा	7.20		٩	কামিণীকে	কামিনীকে	>83	****	5.0
वृद्धिक छरेनः	वृद्धिः वर्षः	200	3	Œ	म कां	সর্ক	582	– 	৬
ख्य ्क्षावण ः	স্থ্পাবস্থা	750	···	₹5	মস্ব্য	মহুষ্য	>83	,	53
नाई	म्यर्ह	>°>	main artigi	8	কুলেহমৃৎ	কু লেহ ভূৎ	>8 ₹	٠ ع	72
বিভূ ষিত ঃ	বিভূষিভ:	५ ७२	•	>	म:	স	>80		>
শুভাষিত:	সুভাষিত:	5 0 2	*****	>	কুভাভিখ ং	কুড়াতিখ্য ং	288		br
ৰ ন্ত্যে	বক্তে	>00	***	2	বৃদ্ধিমান	বুজিমান্	>88		22
বুদ্ধিন	বুদ্দিনা	200	•••	b -	ভার্য্যা	ভার্মা	288	ર	>
সজ্জেপা	मः(क्श्री	>∕98	***	ن و د	হত্য	হত্বা	\$86	ર	22
बनार	श्रम्य	204		•	ভূ গ	মূগ	284		3
ভন ুশ:	ख म ् नः	>04	 .	\$	मूखम न्	यू म्, बसन्	>84		>•
न् तृ	স্গ্	100	****	ર	চতৃ দ্দিক	इ ज्किक्	2 8 ¢		>4
হকু ভিভো!	হস্ ভিভো	1200		¢	न् षक्षात्र	হুনৰ্কার	>84		24
য়ন	বেৰ	505		9	নশ্বভি	নশ্ৰতি	>8%		7 8
ভবেদ্য থা	ভবেদ্যথা	১৩৬	-	۳	বাক্যভোশ্গুৰ	ব্যক্তভোহশূগুম	>8%	ર	8
न टेमडानाः	শ মেতানা	()06	returned.	>•	পুরা	পুরা	589		4
বিভোহমনিশং	ৰিজোহ্মনিশং	१७८	****	۵	refie	চোন্যৎ	>89		b
भ ्राध्य	সস্থাদে	P O C		>>	শ্ৰা য়।	শ্ৰুত্বা	58 9		۶•
কিন্তো ত্ৰ	কি ৰে ংত	704		>>	रकाना षि	२ छ। नय कि	>8 9		ş٤

শ ভূদ্ধি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠ।	কল্ম	প ংক্তি	অশুদি .	_^ শু দ্ধি	পৃষ্ঠা	কলম্	পংক্তি
ग(को	গভে	58 A	\$	•	इ ८ ल	ऋृ (ल	১৬৩		a
नवार म	সমাদে	> 8 e	٠	> 2	মিভীৰ্ঘত	্ মিতীগ্যতে		ę	>
ভক্তান্ <u>থ</u> বাস্পী	ভক্তামুকল্পী	दं ८६		৬	উরস্থলং	উরঃস্থূলং	<i>>७</i> ०	ə .	s
ক ত ূং	কর্তু:	£8¢		9	কুক্ষিনাড়্যে।	কু কিনাতে	1260	ર	১৬
গভা েশ	২ভাবে	₹ 8¢		> °	य ण न्त्रिः	যদিস্মিন্	>७8		•
द घ	বদ্ধ	£80		8 6	অপীয় বয়সং	অপীভাবয়দং	3 %3		> 0
চিন্তা	हि ग्र	> @ •		5	বুধ্যা	বৃদ্যা	১৬৫		>
ラペ な	ভূজা	2 N Z		> 0	প् र८ञ्च	शृ ং ছে	f & C		.yg
পুর	পুর	> @ >		>0	4	٩١	>७ २		৬
ชาโฮ	হ।তিং	> (\		> •	মদ্ব্ ধ্যা	ग দ্বृका	১৬৭		•
उ ष्ट्रे ।	७९ पृष्ट्री	> 0 2		22	ত।ক্তা	ভাক ্ 1	てきた		ર
ভি ষ্ঠেত ঃ	তি ষ্ঠে তি	> 0 >	\$	•	अ ज्ञा।	পম্পা	0 F C		٤
কোশমানাং	কোশমানাং	>40		b -	नामा	নামা	2 4 3		•
সন্থাদে	শস্থাদে	\$60		2.5	७ ८७	ভ েগ	293		b-
জ্ঞ ত্বা	জ্ঞাত্তা	> & 8		৬	তদভূত	ভ দ ছু ত	DFC		১২
হক্ষা	উদ্বাক্য	300		٥	নিঃপতাৰ	নিষ্পতা†ন্	ऽ ने ७		3
ত্রবং	এবং	> (%		4	মিত্রাযুদা	মি <u>অ</u> ণ্যু/ুদা	5 94		ь
वभूर्षिष्ठे ।	वश्कृष्ट्र ।	>৫৬		১২	अटे श्	র ্মাব	599	સ્	~
বাহ ন্	বাহান্	১৫৬	٥,	6	यर्जिका १	য ুগা ং	১ ዓ৮		2,
ভূবি	ভুবি	F D <		> २	রঘূনক্র	রঘু ন কন ঃ	चि६८	ą	ь
গণান্	পগন্ '	P D <	ą	≥,	তচ্ছুখা	ভ দ্ভ ুত্ব	af :		
ভ ৰাস্ত	ভত্তাভূভ	১৬৽		૭	অযধ্যেত্র	অযোধ্যেত	af C		۸
বে ন্তি কৌ	বেক্টিভৌ	১৬৽		b-	পূন	পুন	>b.•		æ
यम्र	यमय :	5.60	۶,	۶	ত্বা	ধৃত্বা	365		>>
পুরা	পুরা	১৬১		•	নু গ্রীয় শুগতি	স্থ গ্রীবস্থাভি	747	ঽ	> 0
সাপস্থা রক	শাপস্থাস্তঞ্জ	<i>></i> %5		•	मगूमृग्कः	সমূ দ্যু ক্ত ঃ	५ ५८		৬
তু বি	ଚ୍ ସା ১	৬১		٩	বালীন	বালিন	725		•
ই ভাক্তো	ইভাজে। ১	, ৬ २		9	পতস্যৎ	পতঞ্বৎ	24,		b

অণ্ড জি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	, ক্লম	4	<u> </u> ধৃংক্তি ,	অ শুদ্ধি	শু,দ্ধ	পৃষ্ঠা	কলম	۶۰	ং জুক
वृक्षाभारनो	युक्षामाटनो	:क-२		,	5 २	সিধ্যৰ্থং	সিদ্ধাৰ্থং	रदर		>	\$
पूर्वाचीनः प्राचीनः	वा लिनः	562		ર	•	মঘ্ধ্যা	नू हे जा।	८ द ८		>	20
ভত্বা	ভূ ত্ব 1	5 5 -2		خ	٩	ষ ল কার	ঘলকার	282		₹.	28
ধ্যুরাল্যা	ধনু রালস্ব্য	১৮২		२	æ	অভি ষ্ট	অ ভীষ্ট	225		> \$	د . ا
ব হা	ব ক্ষ ঃ	১৮২		ž	>>	পুম	পুন	' ५७३			•
হৰ্মা	দূर्त्व ।	>P.5		٥	>	ब्हू हुज़ा	জুহুর1	066		>	ર
প্ৰক	লক্ষ্য	১৮২		\$	>0	नाथ1	ल्यश †	041		ર	8
	রাজধর্ম	ं ५०			' S	যদ্যদি	यक्य कि	ودر		>	ા
রা জথ ন্ম দে থি বা	দে থিবা	550			30	পঠক্যজাস্ত্রং	প্রভাজতৎ	० द ८		>	>>
দোৰ্থ। অন্যাম	আনয়†মি					নিশ্চেত্তং	নি শ্চেতু ং	\$\$6		>	28
মুহু তথি দি। দি	(১৮৩		د	5	হঃ খা ৰ্তা	হঃথার্ত্তা	ए दर			•
	,					अक्टाना ९	প*61দ্যৎ	७५ ८			25
ক জিত্বাৎ	ক পিত্ব ংৎ	26-8		\$	50	নিৰ্মূল†মামঃ	নিৰ্মালাত্ম†	78 3 7			t 5
<u> ছব্ব</u>	• দ্বহু,জা	३ ४ ४			\$	মুহাকো	মুদৃযুক্তে।	ンシャ			>
শ্রিয়	শ্ৰিয়ং	>₽8		_	2	माभीयाः	সামীপাং	とかか			8
পদ্যুত্তমন্	প্দমুভ্যম্			₹.	>	তচ্ছ ্ত্বা	ভচ্চুত্বা	ンンタ		3	្ន
द्वपृनस्नः	द घूनन्दन ः	> ज्य			લ	যু থপানাং	য ু খপানাং	. ५७ ६	•		50
শিক্ত	সি ক্ত	े ज र्			28	ুঘূপতে:	র্ঘুপতেঃ	<i>בב</i> נ			৯
দেহস্ত খাস	দেহস্বসুং দ	200			.	ी ना म	খান্	<i>をなく</i>		~	২
য হাক্ত ং	যদ্যুক্তং	7 6 6			ů	यम् छः	न म् ख ९	⊋∘ ⊕			>.
भू रे थ	मु देशा	7 के क		•	٩	হুমুমচে গ	হৰুমভো	> 0 0			৯
मूथ ेल व 1 ग े व	ः श्थितिर्गनिर	রঃ ১৮৮	•		20	কণ্ক	কনক	૨	,		٩
ত্ ত†ঃর ^{য়} 1	স্তার মা	2 p -p-			>•	অজিনস্ব	অ ্জিনা				۶د
<u>লাহুম্পুত্র</u>	ভাতৃপ্ত	244	•		72						ર .
স ঞ ্ন	म श हन्	・ほく			٩	জাম্বালাম		াম ২০ ২ লোহ০২			R
মেঘ†স্কর	(মঘ†ভ্যস্তর	720	•		20	বায় পুজে		<u>জ</u> া ২০২ ২ ০ ২			2.5
ভক্তায়	ভক্তার	これに)		> >		শতি _, সববাক		•		
मग् थ1	मय थ।	: בנ			\$ 8	যুবরাদং	যুবর াজ ভাল <i>বর</i>		•		Ą
वर्टा	ৰা চেৎ	577)	:	₹. 8	ব †স্ববস্ত ং	জাম্ব ব		-		-34

				(# →)				
অশুদ্ধি	ভঙ্জি	পৃষ্ঠা	ক লম	পংক্তি	ু অন্ত িদ্ধ	' শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	本門 和	পংক্তি
नः शृकः	সং <u>ষ</u> ৃক্তং	ર • છ		>•	क् बारवः	ৰু পাছে	२५৫		٩
পৃষ্ণবাঃ	পুন্দবা:	17, [®] ⊕	2	. (1	য়৻ভ	ब रड}	२ ५७	:	· -
কণক	कनक	2.8		5*	ऋङ्व	র চত্ত্ব	२ ऽ ৫	ą	: > •
অ বনিকা	যৱনিক)	૨,∙ ७		۲	পেশীত্ব	ণশিত্ব	२५৫	4	. > 2
द्रोगावः ,	নামার	२०७		2	স্থামাদত	ষ্পাদত	२५७		>>
ক্ পিন	<u>রূপি</u> ণ	२०७		2•	ब्रट्डन	ৱ ক্ষেণ	234	٤,	
यम्	यम्य	२ • १		8	क् ष्ट्रेब	কুট ু স্ব	२ऽ७	×.	. >•
ত প্স	তপ দঃ	२०१		•	বিনিভূ'ৰুং	বিনিশ্মূক্ত	2 229		5•
वच्टळहेर	त्रष्ट्र(अर्छर	209	ર	ર	পুৰণবে	পুনর্শবৌ	27.		8
কপ্লং	****	3.0▶		>	मः	म	2 / 2		à
র যুক্তমের	র ব্তমেয়	२०৮	ર	4	যানসা	মান স	42%		> 9
শ্ল	यिक	२०५		•	জারবাংস্ত	काम् वाःख	२८६	9	2 3
क्ट्यां श त्र (क्यार क	হু ৰোধ সন্তোগে	≅ ₹১•		٦	জাহ্বা	লাখ ুবা	3 3 #		9
গৃহীতা স্বঃ	গ্থীতা: সঃ			\$ \$	পুর্বাৎ	श् कार	2 2 0		'
মহাচলম	মহাচলম্	45 5		ą	काय , वाबी द्वा	नर्सविग्रामि			
ছঃপায়	ছজ্পায়	422		¢	জানুবারী।	রোদর্শরিষা†মি	२ २ १		b
ভ্ৰমাত	ভ্ৰমভা	355		چ	চিত্রেল	চিষেণ	३ २०		*
ভক্ষো	ভক্যো	2 > 5		 Y	কাৰ্য্যৰ্থ	कार्यार्थ	२ २०	4	
वार्षक्षः	ব্যাহর তঃ	२५२		9	শ্বতঃ	শ্বত	३ २०	2	- b-
गुलु	ৰস্ত	२५०		*	किंगामाद्द	কিপান্যছং	२२५		•
द्रदशः	রাব ণং	×>.0		9 .	রাম	রামং	२१२		8
नव र्ष	जु द्राह्म	२५७		> ۶	ৰিচাৰ্যং	ৰিচাৰ্য্য	२२ २		2•
लाबिनी	দায়িনী	२५०		> %	হৰুমান্	হৰুমান্	૨૨ ३		સ્
वानदः	वानदाः	₹28		2	57 :	海神 :	२२७		ť
সুৰ্ব্যমশ্ৰৰ	कू र्या मधन	ं २ 5 8		•	হসুৰা	হ হ্যা	२२७		6
সমূস্ত বঃ	मभू दुवः	२ऽ€		ર	হতুসারাহ	হ্হমানাহ	२२७		১২
ৰুখৰ গ	বুদ্ধা	२५ ६		*	ভো	ভো:	२ २8		2
क्रांगादमाङः	ভাদাম্য•ঃ	२५६		۵	য়াৰকড়াকাল:	শা নাক্তা ত্মক	२२.		¢

সিহার্থি সিহার্থি ২২৪ ৭ হলান্তর্প: শুলান্তর্প: ২২৪ ১১ শত্তাম থাম ২০৫ ১ ভবাস্থ্যে ভবাস্থ্যে ২২৫ ৫ ১ ভবাস্থ্যে ভবাস্থ্যে ২৪০ ২ ৫ ভবাস্থ্য ভবাস্থ্য ২৪০ ১০ ভবাস্থ্যে ভবাস্থ্যে ২৪০ ২ ৫ ভবাস্থ্য ভবাস্থ্য ২৪৫ ২ ৫ ভবাস্থ্যে ভবাস্থ্যে ২৪০ ২ ৫ ভবাস্থ্য ভবাস্থ্য ২৪৫ ২ ৫ ভবাস্থ্য ভবাস্থ্য ২৪৫ ২ ৪ সিনীনো সংশীনো ২০৮ ১০ সিনীয়ে স্কলান ২৪০ ২ ৪ সিনীয়ে স্কলান ২৪০ ২ ৪ সিনীয়া স্কলান ২৪০ ২ ১ বিভীমণ গামী বিভীমণ কমী ২৪৮ ২ ৪ সিনীয়া স্কলান ২৪০ ২ ৪ সিনীয়া স্কলান ২৪০ ২ ১ সিনীয়া স্বাহ্য ২০০ ১০ সিনীয়ামাস প্রেমানাল ২০২ ১০ বিভাস্থ্যান্ত্রীয়া স্বাহ্য ২০০ ১১ স্কলানাল নার্গনার্থ ২৫০ ১১ স্কলানাল নার্গনার্থ ২৫০ ১১ স্কলানাল নার্গনার্থ ২৫০ ১১ স্কলানাল নার্গনার্থ ২৫০ ১১ স্কলান্তর্গা স্বাহ্য ২০০ ২ ১ স্কলান্তর্গা স্বাহ্য ২০০ ১১ স্কলান্তর্গা স্বাহ্য ২০০ ২ ১ স্কলান্তর্গা স্বাহ্য ২০০ ২ ১০ স্বাহ্যা স্বাহ্যা স্বাহ্যা ২০০ ২ ১০ স্বাহ্যা স্বাহ্যা স্বাহ্যা ২০০ ২ ১০ স্বাহ্যা স্বাহ্যা স্বাহ্যা ২০০ ২ ১৯ সিনীয়ে স্বাহ্যা স্বাহ্যা ২০০ ২ ১৯ সিনীয়ে স্বাহ্যা ২০০ ২০০ ২০০ ১৯ স্বাহ্যা স্বাহ্যা ২০০ ২০০ ২০০ ২০০ ১৯ স্বাহ্যা স্বাহ্য	ঋশু দ্ধি	ভাৰ	পূঠা .	কলম	্পং ক্ষি	অভিদ্বি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	কশ্ম	#1ª	ংক্তি
ক্ষণ ক্ষণ ক্ষণ ক্ষণ ক্ষণ ক্ষণ ক্ষণ ক্ষণ		সিদ্ধ্যৰ্থং	•			কেম	(কন	≥.85	•••		. 9
ভাষ তাম			২ >8		>>	মস্ত	মাস্ত	≥ 8 ≥	•••		٩
ভাষ তাম্ ২০৫ ১ ভাষা হ'ব ১ ভাষা হ'ব ভবাস্থ্য ;৪৯০ ১০ হর্মাজ হ'ব ভবাস্থ্য ;৪৯০ ১০ হ্রমাজ হ'ব ১০ হ্রমাজ ভবিষাভি ১০৬ ১০ হিল্লার ক্রমাজ হ'ব ১০ হামাজ হ'ব ১০ হ'ব হ'ব ১০ হামাজ হ'ব ১০ হামাজ হ'ব ১০ হ'ব ১০ হামাজ হ'ব ১০ হামাজ হ'ব ১০ হ'ব ১০ হামাজ হ'ব ১০ হ'ব ১০ হামাজ হ'ব ১০	•	`		• • •	د آف	বালিণং	বালিনং	₹85		२	>
ভ্রমণ হল্প হল্প হল্প হল্প হল্প হল্প হল্প হল্প	•	·	3 ′5 ((5	ভো	ভোঃ	२ 85	•••	ર ્	4
ভ্রমণ ছবান্য ২২৫ — ১২ স্থেন্তি স্থান্তি তিবিছাল হিন্তা স্থান্তি বিভাগ হ০০ ১০ ১০ স্থান্তি বিভিন্ন হ০৮ ১০ ১০ স্থান্তি বিভাগ হ০০ ১০ ১০ স্থান্তি হলিটি হ০০ ২০ ১০ স্থান্তি হিলিটি হ০০ ২০ ১০ স্থান্তি হ০০ ২০ ১০ স্যান্তি হ০০ ২০ ১০ স্থান্তি হ০০ ২০ ১০ স্থান হ০০ ২০ ১০ স্		-	⇒ ≥ ¢	•••	Œ	ভবাস্ধে	ভবামুধে	₹.8 🕏	• • •		> 0
সন্ধানা সংলীনো ০০৮ ১ বিভীয়ণ গদ্মী বিভীয়ণ ভদ্মী ০৪৭ ৪ বিভীয়ণ গদ্মী বিভীয়ণ ভদ্মী ০৪৭ ৪ বিভীয়ণ গদ্মী বিভীয়ণ ভদ্মী ০৪৭ ৫ বিভীয়ণ গদ্মী বিভীয়ণ ভদ্মী ০৪৬ ৫ বিভীয়ণ গদ্মী বিভীয়ণ ভদ্মী ০৪৬ ৫ বিভীয়ণ জদ্মা ০৪৬ ৫ বিভীয়ণ জদ্মা ০৪৬ ৫ বিভীয়ণ জদ্মা ০৪৬ ০০০০ ২ বিভায়ণ জদ্মা ০৪৬ ০০০০০ ২ বিভায়ণ জদ্মা ০৪৬ ০০০০০০ বিভায়ণ ক্ষমান ০৪৯০০০ ০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০০			૨ ૨ (১২	স্নেদেশ	স্থোদ ৰ	≥88	• • •		٤
নি ন		ভবিষ্যতি	2 5 B		2.	ভূৰ্ঘোট্য	তৃৰ্যাখোঁ ষ	284	•••	> .	8
দ্ধন মন্ত্র্যা হল্প ১০০ ১০০ ২ দ্ধনা দুক্তা দুক্তা ২০৮ ১০০ ২ দ্ধনা দুক্তা দুক্তা ২০৮ ১০০ ২ দিক্ষাসে দুক্ষাসে ২০৯ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১০০ ১		সংগীনেশ	عودد		>	বিভীষণ গন্মী	বিভীষণ ভশ্মী	≥8 9	• • •		8
দুক্তী দুক্ত্য ২০৮ ১০০ ২ মন্তেদে মন্ত্রে মহন্ত্র হছি ০০ ২ দুক্তী দুক্ত্য হল্ড হল্ড হল্ড হল্ড হল্ড হল্ড হল্ড হল্ড	্ব ষ্টীত	বেফিট	२३५	•••	ي ح	উৎপ্লুহা জল	ব}-				
দ্বন্ধী দুক্ষ্যী ২০৮ ঐ ৮ সীতা সীতাং ২৪৮ ০ ১০ বরা বীরা ২৪৮ ০ ৭ কিল্প কিল্ম ১৪৯ ৮ কিল্প কিল্ম ১৪৯ ৮ কিল্প কিল্ম ১৪৯ ০ কিল্প কিল্ম ১৪৯ ১১ ব্যক্তিক বিল্লাভ্যকা ১০০ ১১ কিল্প কিল্ম ১৪৯ ১১ কিল্ম ১৪৯ ১১ কিল্প কিল্ম ১৪৯ ১১ কিল্প কিল্ম ১৪৯ ১১ কিল্ম ১৪৯ ১১ ব্যক্তিক সংহতি ১০০ ১৪ ব্যক্তিক বল্ভা ১৫২ ১ বিল্লাভ্যক সংহতি ১০০ ১৪ ব্যক্তিক বল্ভা ১৫২ ১ বিল্লাভ্যক ২৫১ ১ বিল্লাভ্যক হন্তা ১৪৯ বিল্লাভ্যক ২৫০ ১ বিল্লাভ্যক হন্তা ১৯৮ এ ১৯৪ বিল্লাভ্যক ১৫০ ১ ১৯৪ বিল্লাভ্যক হন্তা ১৯৪ বিল্লাভয় ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪ ১৯৪	মভ্য	মহম্				উৎ	क्षुका कलाधी	≥8%			¢
দৃষ্ঠা দৃষ্ঠ্য ২০৮ ঐ ৮ সীতা সীতাং ২৪৮ ০ ১ বরা বীবা ২৪৮ ০ বরা বরা হল	দুফু ৷	দু মট্র 1	> 2 br		> >- ২	মভেদে	ম্ন্যসে	२ 8	***		•
পিক্ষমে দ্রক্ষাদে ২০৯ ১০ বিরম্ভ বরা বীরা ২৪৮ ০ বির্বাহ ১৪৯ ৮ বিরহি বর্ষাহ ১০৯ ১০ কিন্তুর কিন্তুর ১৪৯ ৮ বিরম্ভ ১০০ ৯ চপটি চপেটি ২৪৯ ১১ বির্বাহ পরিষ্ঠান ১০০ ১১ কুলি কপি ২৪৯ ১১ কুলানভীব সৃথানভীব ২৫০ ১১ কুলানভীব সৃথানভীব ২৫০ ১১ কুলানভীব সৃথানভীব ২৫০ ১১ কুলানভীব সৃথানভীব ২৫০ ১১ কুলানভীব স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১১ কুলানভীব স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১১ কুলানভীব স্বাহ্মানভীব স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১১ কুল্মান্থন প্রম্মান্থন স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১১ কুল্মান্থন স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১১ কুল্মান্থন স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১ কুল্মান্থন স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১ কুল্মান্থন স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১১ কুল্মান্থন স্বাহ্মানভীব স্বাহ্মানভীব ২৫০ ১১			२२४-		خ ف	সীত।		२८৮		>	>
নাকং বাকাং ২০৯ ১০ নিজপ্ন নিজস্ন ২৪৯ ৮ কপি কপিম্ ২৪৯ ৯ নেখাপেতা স্বোপেতা ২০০ ৯ নিজপ্ন কপিম্ ২৪৯ ৯ কপি কপিম্ ২৪৯ ৯ কপি কপি ২৪৯ ১১ কিল্লাল্ডকা বাল্যাদ্ভকা ২০০ ১১ কপি কপি ২৪৯ ১১ কপি কপি বিষয়িনভাৱ বিষয়াদ্ভকা ২০০ ১১ মার্গনাতীব স্থানতীব স্বেণ ৯ মার্গনাত্ব নার্গনাতীব স্বেণ ১০ মার্গনাত্ব নার্গনাত্ব নার্গনাত্ব ২৫০ ১৫ সার্ভাতি সংহতি ২০০ ১৪ রণালমং রপালমং ২৫১ ২ ৫ সার্ভাতি বারিধি ২০৫ ৭ প্রমান্ত্রন প্রমান্ত্রন ২৫০ ২ ৫ হন্মস্থোমতো হন্মস্তমবেলা ২০৮ এ ২ চিস্তান্ত্রত চিস্তান্ত্রেক ২৫০ ২ ১০ ক্রেটিধঃ জ্রেটিয়াহ ২০৮ এ ২ চিস্তান্ত্রত চিস্তান্ত্রেক ২৫০ ২ ১০ ক্রেটিধঃ জ্রেটিয়াহ ২০৮ এ ২ চিস্তান্ত্রত চিস্তান্ত্রেক ২৫০ ২ ১০			२२५	• • •	>	বরা		₹8₽-	•••	>	4
কিপ কিপিম্ ২৪৯ স্থানিভাবি হ০০ ৯ চপটি চপেটে ২৪৯ ১১ বাকাদিওকা বাকাদিওকা ২০০ ১১ কিপ কিপ ২৪৯ ১১ বাকাদিওকা বাকাদিওকা ২০০ ১১ কুলানভীব সূথানভীব সহত ১১ শীর্ষং পীষ্ষং ২০০ ১১ মার্গনাথ নার্গনার্থং ২৫০ ১২ দৃষ্টা দৃষ্টা ২০০ ৫ বদভ বদভা ২৫২ ৫ সাক্তাভি সংহতি ২০০ ১৪ বণাগমং ব্রস্থান্ত্র ২৫১ ২ ৫ বাবিঘি বারিধি ২০৫ ৭ প্রমান্ত্রন ২৫০ ২ ৫ হন্মছোমডো হন্মন্তর্থা ২০৮ এ ২ বিক্তাং ব্রক্তাং ২৫০ ২ ২ ভৌবৈধঃ ব্রৌবৈধঃ ব্রৌবৈধঃ ২০৮ এ ২ চিন্তান্ত্রভ চিন্তান্ত্রভ ২৫০ ২ ১০	•				54	নিজপ্র	निकन्न	≈8≈			b
ন্ধোপেতা হ্বেথাপেতা ২০০ ৯ চপটি চপেটি ২৪৯ ১১ বিকাদণ্ডকা বিকাদণ্ডকা ২০০ ১১ কপি কপি ২৪৯ ১১ কেপ কপি ২৪৯ ১১ কেপ কপি ২৪৯ ১১ কিপ কপি কপি ২৪৯ ১১ কিপ কপি ২৪৯ ১১			> 00 ¢		•	কপি	কপিম্	₹85			7
বিকাদন্তকা বিকাদন্তকা ২৩২ ১১ কপি কপি ২৪৯ ১১ প্রেসরামাস প্রেষরামাস ২০২ ১১ মুগানতীব স্থানতীব সহও ১২ শীর্ষং পীষ্ষং ২৩৩ ১৯ মার্গনাথ মার্গনাথ হত ১২ দৃষ্টা দৃষ্ট্বা ২০০ ৫ বদত বদতা হতে ৫ সাক্তাতি সংহতি ২০০ ১৪ রপ্যাসমং রপ্যাসমং ২০২ ১১ বারিঘি বারিধি ২৩৫ ৭ প্রমান্থান প্রমান্থানঃ ২৫১ ২ ৫ তুন: পূনঃ ২০৬ ১২ বদত্তেন যদত্তেন ২৫০ ৫ হন্মছোমতো হন্মন্তমথো ২০৮ এ ২ চিন্তান্ত্রাক চিন্তান্তর ২৫০ ২ ২ ক্রিটিধঃ ক্রোটিখঃ ২০৮ এ ২ চিন্তান্ত্রাক চিন্তান্তর ২৫০ ২ ১৬	ম েগাপেড া		২ ৩ ৽		*	চপট্ট		₹85	•••		22
দীর্বং পীর্বং ২৩০ ১১ মার্গনাথ মার্গনাথং ২৫০ ১২ দুষ্টা দৃষ্ট্ব ২০০ ৫ বদত বদতা ২৫২ ৫ সাক্তাভি সংহতি ২০০ ১৪ রপার্গমং রপার্গমং ২৫২ ২১ বারিঘি বারিধি ২০৫ ৭ প্রমান্ত্রন ২৫১ ২ ৫ ভূন: পূনঃ ২০৬ ১২ বদ্যেন যদন্তেন ২৫০ ৫ হন্মছোমতো হন্মস্তমথো ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক চিন্তান্ত্রাক ২৫০ ২ ২ শ্রেটধঃ জৌধৈঃ ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক ২৫০ ২ ১০			> 🗆 🗢		23	, কপি	কপি	≈8≈			22
দার্থং দ্বী দৃষ্টা ২০০ ৫ বদ্ভ বদ্ভা ২৫২ ৫ সাক্তাভি সংহতি ২০০ ১৪ রপাগমং রপাগমং ২৫২ ২ ৫ বারিঘি বারিধি ২০৫ ৭ প্রমাত্মন প্রমাত্মনঃ ২৫১ ২ ৫ তুনঃ পুনঃ ২০৬ ১২ ঘদজেন গদজেন ২৫০ ৫ হন্মছোমতো হন্মস্তমণো ২০৮ এ ১ রিকভাং রক্ষিভাং ২৫০ ২ ২ ক্রোধিঃ ক্রোইখঃ ব্রেটিখঃ ২০৮ এ ২ চিস্তান্ত্রাক চিস্তান্ত্র ২৫০ ২ ১০	েপ্রসন্থামাস	প্রেষর্গমাস	2 DR.		>	> যুশানভীব	সৃখান তীব	340	• • •		7
দুষ্টা দৃষ্ট্ ২০০ ৫ বদত বদত ২৫২ ৫ সাক্তাভি সংহতি ২০০ ১৪ রপাগমং রপাগমং ২৫২ ১১ বারিঘি বারিধি ২০৫ ৭ প্রমান্ত্রন পর্মান্ত্রনঃ ২০১ ২ ৫ তুলঃ পুনঃ ২০৬ ১২ বদ্যেন যদ্যেন ২৫০ ৫ হন্মছোমভো হন্মস্তমধো ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক ১৫০ ২ ২ ক্রোধিঃ ক্রোবিভঃ ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক ১৫০ ২ ১০	শীরুধং	পীষৃষং	२७७		>>	মার্গনাথ	মার্গ নার্থ ং	5.60	•••		25
সাজ্যতি সংহতি ২০০ ১৪ রপাগমং রপাগমং ২৫২ ১১ বারিঘি বারিধি ২০৫ ৭ প্রমান্ত্রন প্রমান্ত্রনঃ ২৫১ ২ ৫ তুলঃ পুনঃ ২০৬ ১২ বৃদ্যন্ত্রন ২৫০ ৫ হন্মছোমতো হন্মস্তমধো ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রত ১৫০ ২ ২০ ক্রিটিধঃ ক্রেটিখঃ ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রত ১৫০ ২ ১০			> 99		Œ	বদভ	বদভা	s (; s	•••		¢
বারিঘি বারিধি ২৩৫ ৭ প্রমান্ত্রন প্রমান্ত্রন ২৫১ ২ ৫ তুন: পুনঃ ২০৬ ১২ বদজেন ফল্ডেন ২৫৩ ৫ হন্মছোমডো হন্মস্তমধো ২৩৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক ১৫০ ২ ২০ ক্রিটিধঃ ক্রেটিয়ঃ ২৩৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক ১৫০ ২ ১৩			3.00		. 5	রপ্যগমং	রপ্যাগ ম ং	≥.৫২	•••		>>
ভূন: পুনঃ ২০৬ ১২ বদভোন যদভোন ২৫০ ৫ হন্মছোমডো হন্মস্তমথো ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক ১৫০ ২ ২ স্বৌধিঃ স্তৌবিঃ ২০৮ ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক ১৫০ ২ ১০			> 0 €		4	প্রমাস্থান	পর্মান্সনঃ	<0>>		ર	đ
হন্মছোমডো হন্মন্তমথো ২৩৮ ··· ঐ ২ বিকভাং রক্ষিভাং ২৫০ ··· ২ ২০ বিশ্বীধঃ জৌটখঃ ২৩৮ ··· ঐ ২ চিন্তান্ত্রাক চিন্তান্ত্রাক ২৫০ ··· ২ ১০			২০৬	• • •	3	ষদভোন	यम् एक न	> (⊙	•••		æ
্ফ্রাট্রাঃ (ক্রাট্রাঃ ২৩৮ ··· ঐ ২ চিস্তান্ত্রাক চিস্তান্ত্রাক ২৫০ ··· ২ ১৩			≥ ૭৮	•••	د (ف	রক্ষিতাং	র ক্ষিতাঃ	C.D &	•••	2	2
MAYER PRATES 2.00 2 30					હે ≥	চিন্তান্ত্রাক	চিন্তান্তান	२৫०	•••	₹.	> 0
Fally (Martin) - Early 19 Fig. 1	প্রেসরামাস	প্রেষয়াস	جرور <u>ج</u>		ঐ ৬-৮	প্রকারে	প্রকারে	२ ৫७	. •••	2.	>9
शस्त्राम् शस्त्राम् २६६ ३				••		গছ্বামে	গ চ্ছামো	ર¢ હ	•••		\$
পদাস্ত্রং পদাস্ত্রং ২৪০ ১ গ্রেমি স্বিলাভাগে স্বিলাভাগে ২৫৬ ২ ৫					\$	সলিলাভ্যাশ	সলিলাভ্যাস	२६७	•••	২	4

অভি	©	ମ ଞା	क इन म	গংক্তি	অশুদ্	, ভদ্	পৃষ্ঠা	कन्मभ्	পংক্তি
ভষ্ ধ	চ্ছ ধং	2 (C) 5-		e	ইতৃ জ ়া	हेड्डा क् ।	₹9•		8
নাভূত্র	নাভূত্তৰ	2 (b		Ú	मृ ष्टे!	पृष्ट ्र	२ 9 •	•••	8
যাগ্ৰামতে	য। স্থানহৈ	æ 10 =	•••	ù	<u>ইত্যুকোপ</u>	ইভ়ঃকে,†প	२१२		>
আদেশকৰণ	আংশেশকরন	२०२		₹.8	বিক্ষাক্তে	বিখ্যাজে;	> 9.€	•••	8
বিভোক:	বিশেক্ত	२७०		b -	<i>७</i> अ८४	ভপুরে	૨૧ ٠.	, 4	ş:
কাৰজভং	ভাবদ্ক্রতং	२७०	۰ ২	8	তক্ষাত্ৰং	কশাৎ ত্বং	२ १ ८	>	> > > > > > > > > > > > > > > > > > > >
বিমোক্ষদে	বি যোক্য দে	<i>३७०</i>	ع	Œ	ल व स्व	লক ়া	÷ 98		, ,
গতে	গতে।	₹७•	٠ ۶	9	বভীষণ তাজিষ্ম্	ৰিভীষণ-ভাজিযু	ম্ ২ ৭ ৫	•••	8
অনাৰ্যেণ	অন্যথে) গ	২৬>	ર	•	হক	ভ ক	૨ ૧৫	•••	20
ষেশহন্ত	(या इंज	২৬ ১		ď	ष्ट् रक।	क्टूरक∵	₹ 9¢	•••	a
त्भटलन	(હદદન	२७১	•••	> 0	ভূক:	ভুক:	२१७		24
ভা ডা	ভ্ৰাত্ৰ1	૨૭ ૭	•••	¢	ভেশক্ত্	ভোক্তা	> 9 %	3	۲ خ
শুংশাভোষঃ	শৃণোভ্যেষ	^২ ৬৩	•••	b -	ष्यविहार्स द	অবিচাথ্যের	ə 9 🌭	>	> 8
রপাণীয়াং শ্চ	ৰপা ণীয়াং ণ্চ	રહ હ	•••	٩	ভাবদ্যদা	७ १ व म्यम ।	२ ११	>	•
পুক্ষ	श्रुक्यः	₹ % (*	২	*	পৃত্তাত্মা	পূতাসা	< 9 <i>b</i> −	•••	٠, ١
স ন্ তি	मम् ङक्कि	২৬ ৫	۰۰۰ ۶	¢	मृतकाटनः रेः	ञ् रका देनाः	૨ ૧৯	•••	\$
্যাগ(খং	যোগাৰ্য:	₹ ७ ([٠ ۶	•	তরুংস্কোৎপাট্য	ত ক্রংম্চোৎপাট	j = 92		?
જ િ મિટ્ટા હત્	ওমিত্যুক্ত।			^	क्षच्द्र क्रमा	জ্বু রোজ সা	३৮ ॰		ુ ૧
হীভো	শ্রীতো ∫	२७७	• • •	4	कम् ुषा	दर्भ्य हैं।	₹ b -2	,	22
भटिकास्त्र निर्वदा	भटर्जनयस्य निद्धारयः	<i>ঽ</i> .৬. ড়	٠ ۶	>	যুৰ্গু জায়	ষসুযুদ্ধার	२४-२	• • •	ś
जा वजाकाः	ভাবস্তাজ্যং	२७७	ર	٩	নম্ভূ	ম্মস্	रेम ^ड	;	ś 8
ॱ इंद्	ক্তু বু	२७७	>,	72	थटेक	अटे फ़ाइ	२५२	>	4
পরিষ্কা	পরি ছ জ্য	२ ७. ७	۶	> 5	শক্তি	শক্তি:	2 p.s.	;	•
মুখবং	. মুখ্যম্বং	269	• • •	ર	य एक	यू ८ 🕏	२৮७	•••	>
यू ४८ भः	. यृथ्देशः	२७३	•••	ર	মহাসভং	মহাসত্বং	२४०		خ
मवी ९	শৱৰীৎ	२ ७ १	•••	\$	হরেন্ডনো	রস্তবেশঃ॥ ৯॥	२४७	>	. b -
म र् या	म र ्टा	२७७	•••	Ó	विकः	ৰি ফুং	3 5-8	• • •	ڼ
নিপাডাকাৰ	ৰিপা ভ্যভা ম্	542	ب	ર	গ্ৰহীতকামঃ গ্ৰ	शैजूकामः	² b-8	•••	

অ শু দ্ধি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা,	কশম .	পং ্বি	काम हि	শু.ক্ষ	পৃষ্ঠা	কল্ম '	প্ ং ক্তি
রংখাপ্র	ब्रटबं नाटळ	₹6-8	•••	ь	মূভ্য বিভাগ	মৃত্যি বছার	٠.৬	• • •	હ
বায়ুগেণ	ৰ্যযুবেগেন	₹ b C	•••	٩	ম্চিড্ডঃ তুন	ষ্ডিছ তিঃ পুন	৩৽৬	4	٠
বায়িমত	বাগ্নিমং	रिक्ष		٩	বুদ্ধা	বৃদ্ধা	9 0 /9	•••	. 7 >
প্ৰযো	अ न्य ग	२৮৮		b ²	বিস্তর	বিস্তুর	60%		> &
কু ঙং	<i>₽</i> 3€• ·	ጓ ৮৮		>0	বিষ্কৃষী	विशृष्धी: .	• 4	٠ ٦	•
গেকিন(যুগ্	যোজনায়ভম্	२ ५%	• • •	৬	কৃতিরাগেন	কহিয়াছিলে	30 6	•••	2
হনুমা-বকা	হতুম্ব-বদ্ধা	520	, ¥	: 5 2	म ळ्म	ত্জ#	90F	•••	١.
সূত	P	۶ ۾ ج		₹	मुश्रदेशः	যুণবৈপ:	6. P	٠ ١	ર
अ न्य	পদম্	\$75	•••	8	প্রেশশু	কোৰয়াভ	200	•••	22
अ वाटन	ज ञ ार <i>भ</i>	२		7	বিবিভ্যুদ্ৰ 😁	বিবি শু জ'ভ্য	₹ ∘& ,	a.	5.
	T Tabrella	1		•	প্রহর্ষিতাঃ	প্ৰহৰ্ষিত্যং	977		a
কুৰু প্তৰ্ ং	स्वृत्र ार्थः	2 72 (L	•••	Œ	পরিষাত্ত্যন্	পরিসা স্ যুন্	6:5		৬
<i>प्र‡8</i> छ् ख• जट	HT TO THE	2 2.10	• • •	•	শ্র	ज् ष	9 >2		8
ব†বনর†ন	বানরান্	5 Z 9	٠ ۶	22	কোণী-কচিন্	কেণী কচিৎ	0 52	7	7.5
বিখাসাকি	বিশ্বসাক্ষি	-د د _ک	• • •	\$	নিধ্যায়াচ	নি ধ নায়চ	७ \ २		20
< क र्ष	র স ণে	2 9Pa		æ	বণৈঃ সুষীঘ্ৰগৈঃ	বাদৈ:-সুশীঘ্ৰ	গ ৩:৩	• • •	Œ
रष्ट्र त ्य प्रत	ন্তরন্তে।ৰ	520		22	८य†कः	(याक्रु:	9 18		٠,
রামস্তং	ৱা মস্থ ণ	2 2 Z	•••	۶.	। ; নি শ্চকামা থ	নিশ্চক্রাখাথ	% ;8	.,,	۹
िनंतः	८व्यव्	307	•••	8	श् रका मा ब्राटच्या करम	পশ্চাৰায়) মো কা	दम ७५५		4
মার।	শারাং	6.7	n • •	<i>\$\ceic\</i>	অন্ত স্ত্র	ভাৱ শেৱ	% >8	5	ં હ
দে মিত্র ্	সৌমিতিং	•• • ₹	•••	4	८७ १यमः	(जाहमः	9 5¢	•••	2.2
ৰুথ প্ৰ :	व् थ 🕶 🕆	900	• • •	৬	ভাহয়	जा दूबर	• : @	٠ ٦	હ
डे ब	डें द	500	•••	•	রযুত্তমম্	রঘূত্রমম্	9:0	۶	3
শেশ্চত:	লোচনঃ	⊅ ∘8		ь	मञ्जू करका	সম্বৰ্ <u>ত</u> সম্বৰ্ত্তকো	% 9	۶	
শত্ৰং	শক্ত্ৰ'	⊘ ∘8		ર ક	ৰ্যক্ত	સૂ ં જિ	10 h	•••	- -
যুকে তাং	বু ধ্যে ভা ং	დავ	• • •	۶ ک	স্মীপঙ্গে	ু ই স্মীপ ে ছা	७১৮		ક
দ শ্বীর্ঘকাল ং	স্থীৰ্ঘ কালঃ			ર ১૭	मः ब्रा च	म्: त्रुक्त	10 26-	ء	
মূ ত্র্	মূত্যু ত	ပစ္ နွ		•	বাহ্ছাং	বাহ্ভাাং	७১৮	,,, ર	9
गृ ङ्गुरुः	মুহ ণ হ:	4 0 · (t	• • •	•	বৰ্ত্ত	ৰভূতে	دۈھ		
3 ~ * < .	3 2 4 2 7	7 *	•	•	1 4 2 200	1 3 4 3	~ ; ~	••	•

অশুদ্ধি	শুদ্	পৃষ্ঠা	● 0 11	ম প্রং	কৈ অচুদ্	9 6	. کیم		_
জাজ লামানং	জ। জ্বল	্যানং ৩১৯	·		र्व		পৃষ্ঠা	কলম	শং জি
কাশ্মকং	কাৰ্মুক:	<i>دده</i> ۶	• • •		১১ মাভ্যা	ट्र स्क	დგ •	6-4	ર ૭
ভাষানপন্ন	ভাবাপন্ন					মা ভায়:	◆8 ◆		> :0
विकटस्वी	বিষ্ণুদে	वी ७२०	•••	ર ર	(4.0)(49	নিৰ্যান্ত	◆ \$ ◆	>	> > > > > > > > > > > > > > > > > > > >
निवदयुष्	- নিবারয়	ত ৩২২			क्ष चिष	ব্যাধনস্তং		-	>
-				,	ততো লম্ব	मगमामा दिवस	न्हीः नाम	কীর্ত্তয়ন্	1
	ট্যাগাদাস্থনা-ড	কং ত জেপ	•	[₹] \$	অ ভ্যবাদয়ত	ত প্রীতো ভরত	ঃ প্রেমবিং	বলঃ ॥	ka 11
ই ∙চর	टेन्छव	৩ ২৪	•••	b -	সমৃতঃ			X 10 11	<i>V 4</i> II
छ्नामय	ই তাদির	* * * 8	***	*	গুরুণা	সং যু ভঃ	৩৪৭		7
हिडा !ः	চিভা:) s.c.	•••	b		'গুরুণ্	-589		٠
স ৰ্ব্ধ মকে।	সর্বামকে	রা ৩২৫	• • •	>•	দুৱা	ড়াজ্য	◆ 89		٩
ত ৰ্ষ	হৰ্ষ	. છે રૂં ઉ		, ,	পাণিয়ৰা	পাৰিয়গা	⊘ 9 ≽-		٠
গুজামানো	পূজামানে				নিন†দেশ্চ	निन्त रेम क	986		. 7
ংৰ্দি গদ য়।		ায়া ৩১৭		\$ > •	ONCAL	ठब्रट न\	•ેત લ		ą
হভ শত্রং			•••	> . 9	ৰ্ভদি	র্নভঙ্গি	000	ঐ	2.3
শিবির্চাহ	হ' <u>⊕</u> শক্তহ	40 > 4	\$	१ 9	ক্ত	শ ত্ৰু	005		8
-	নিবিকার্চ		3	b	গিবেশে	গিবেশ	• (1)	Ą	9
ভিহতো	নিহতে	997	• •	•	ন্ম ক্তি	ন্ম ক্রি	૭ (૭		5.0
द नश ः	रऋ १	995		8	শতা	সীত।	• 08	خ	
\$ G	রত্ব	90 5	>	&	जु शका	•		Ġ.	¢
ছ ুনি	ভূবি	SO2	٠ ۽	ь	্ব শক্ত-ধৰ্ষি ত ো	ভূংক	• (4	Ď	>
াগলকল	খিল	৽ ৽২		\$	1	শত্ৰ-ধৰিত:	૭ ૯૧		2
শ্ৰতিবিশ্ব	প্রতিবিশ্ব	৩৩৩			मःश ्ड	সংগ্ৰহ		9	ь
ব্রামং	বর†ভং	000	*	*~ &	≨ क्क1	ভূকা	৩ ৬০		>>
শার5জ্ঞ	শর চচ জ্র	೨೨೪	· •		মধুপকার্প	মধ্পকাৰ্ঘ্য	26 2		২ •
জগৰান্	ভগবান্	900	*	Œ.	म(क)	म ংर्थः	৩৬১		b-
হিগানস্থ:	ছিমানত্থ	૭ ૦૯		•	ব্ৰাহ্মণঃ	ন্ত্ৰশ্ব ণঃ	৩ ৬ >		¢
লজ্জমানং	লজামানাং		-	b -	অসংস্কৃতি ভ	অ সঙ্কৃচিত	৩ ৬ ২		54
		999	\$	5	নভীৎসাসি	নভীপ্সদি	৩৬৪	(59
স্পিনং	म निन ः	೨೦ನ	ર	>•	শূর্পনখা	শূপ বিখা	৩৬৪	<u>ે</u>	
ভ্তানাং	ভূভানাং	∞ 8 •		b-	হৃদিখিডে:	•		-1	,2
-	e, ~ 1 11 1	3 , 2		b -	কাশিখতে:	হৃদি স্থিতো	D. W. C.		b

			\	(n	/o)				
অণ ্ডি	শুদ্ধি	र्गु है।	কলম '	ংক্তি	অত দি	শুদ্ধি	পৃষ্ঠা	কলম	পংক্তি
প্রিষ জ্ য	পরিছজ্য	৩৬৭	2	১২	ध री	প্রতী	ولاق		ь
বাম্ব	বাপ	200		¢ .	, এষঃ	এষ	०८७	ą	•
শ্ৰু	र्म्	90F		æ	বৃদ্ভি	বৃ দ্ধি	८८७		a
শ্ৰু	मृ ष्	996		>2	স্ক্ত	(স্ক্র ,	৩৯ ১		; 0
তৃ জ ্ব।	ভ্য ক ৃ 1	৩৬৮	(A)	>	२ र ज	२१ म	८८७	Ġ	Œ
কা ল থঞ্	কা লখ ঞ্জ	200		১৭	কৃষি	হ প্যকৃ ষি	८ द७	(a)	৬
শ ৰ্কো ক্ৰ ৰ ন্মে	শ র্কেছেত্রবন্মে	cvo	Á	2	অ ন	থান •	ゆわぇ		>
মেটু াদামঃ	(मजु। मयमः	•95		٦	द्या	ĦŢ	8 6 6		8
পিব স্ত্যভূ ত	পিবস্তামৃত	695	É	ર	রণবন	রাধন	850		;0
বৃহ্যক্ত	ত্বহুক্ত	৩ ৭১	Ŕ	æ	र्यमीमध	यानी मः	8 60	ক্র	ď
ময়যন্তা	ময়স্যা	৩१২	(a)	>%	ঠে দ্য	ঠেশ্বম	Dac	ঐ	>
দেশেকজ	দেশেহস্ত	৩৭৩	ঐ	৮	হৰ্ষ	২ ষ	カデジ	ঐ	>2
স হায্যার্থে	সা হা য্যার্থে	998	Ŕ	>	ছধ হো	इश रव 1	& C &		۶ <mark>२</mark>
दे जु ार ङ ्।	ইত্যুক্তো	• 98	ሷ	ર	ইত্যকু1	ই ত্যুক ৃ।	& K &	ঐ	8
ক্রিয়া নেষ	কিয়ানে য	•98	ঠ	ર	ভার্য্যা	ভাৰ্য্যা	せんシ	À	24
জগদার:	क्र भणाधातः	• ৭৬		>2	গ্নে	গৃহে	ランチ		>>
যো দকান:	যো ৰ ুকামঃ	७ १४	ঐ	২	তর	ভরং	७ २४	œ	>
পরাত্মান	পরাত্মানং	چ وه		>	<u>ৰাত্মীকে</u>	বা শ্মীকে	420	ক্র	8
ভ্ৰম	ভম্	د و د	ক্র	•	ক্রক:	কুরু	800		æ
ঙ্গীত		¸ ୬ ► >	• @	Œ	व्राथय:	রাখব:	8 0 5		æ
প্রেফৌ	প্রোচ	• ৩৮২		2		छ निषिधाननानः -	हुत्र ६०५		78
				9	मिटका	क्टिक	8 - 2	Ŕ	4
रे ज्य ङ्गः	रेजूाकः	৩৮২			भृक्टि दब	শৃঙ্গবের	૭૯૭	©	> 9
খীলে!	शैरमा	9 F8	, de	2	সান্ত ।	সভা	8 • >	ক্র	24
ত্য নাভ্য না	ভ্যৰা	७৮१	(a)	2	न्द्र्य १४६	जू (व णक	8 • ₹		6
रेषा ी	ধ্যেষ্ঠ	9 4	(a)	>9	ৰাশ্মীকিং	বালীকি	8 • २	É	•
শ্বাভাং	স্তাং	6 66	4	>•	গেরার	গেৰিবং	8 • २	4	>
সমৃশং	, সংष्ट्रभः	• 🔊	ঐ	>	1	র পাতার ২৩ (শাকের পর	যে শে	াক জাগ
জানায়ে	জ্ঞান্ময়ে	•60	A	٩	छो श रहे दव न	t i			

অন্তরি	ণ্ডদ্ধি	পৃষ্ঠা	কলম্	পংক্তি	অভূতি	ofs	পৃষ্ঠা	কলম	পংক্তি
মম্যশ্ৰম	ম্মাশ্ৰম	8 0-0		>>	সমরিত	সমন্বিভ	8 > 8		ેર
छा टे ७ व	छा देवु ब	8 • @		2.	বিজি	বিশ্বি	8 २ ৫		•
অধ†র	আধার	8 • %	2	>•	ব্নঃ	মহাবলঃ	8 ? . (L		৬
পরিশুদ্ধান্তবেশ	প্রিভদ্ধান্তরে	18.9		ર	অ গপতে গ হস্মি	মহাতেজ 🤰	8 ² (t		۶۰
সংতি স্থম ্	সং স্থি হম্	8 • 9	(a)	Ċ	আগতোহস্থি	মহাভুজং।∫	• •		•
অগন যৈ;	আণহৈয়	8° V		2	গমনা বিঞ্চি	গমলে বিদ্ধি	8 % (0		>>
পুরুত্তঃ	পুৰুষঃ	9 •ъ		۶.	••	•>>	8 ર હ		>
ম্বাশাসি	মণাপ্যাসি	8.02		ર	% >	७२	8 2 (ર	9
মেবাধিগম	মেবাধিগমা	8 • 🏲	É	> ,	• ર	••	8 < €	ঐ	ь
পুষ্প	পুষ	8 • 1		> •	••	◆ 8	8 २ (£	٩	; ၃
পুষরবত্যা	পুষরাবতী	ۥ8		74	শ্ৰংস্থা	শ্ৰত্বা	824		2
ছরিম	হরি ম ্	8 > •		۳	म। भृष	মা মৃষ্	8 2 (ঐ	2 8
লক্ষ ণম্	লক্ষ্মণম্	855.	۵	ર	ৰান	ব†নর	8 २ ७		*
বি স্তিভূ তিঃ	বিস্তিভি	8.5.5	(ь	র্যন্থ থি	সভ্যি	8 २७		7.5
স দাত্ত্বী	স সত্বে	१८९	٨	২	व्यन कृत	অনস্তর	82%		ى د
কাৰ্যান্তৰে	কাৰ্য্যান্তবে	8 2 €		>	म ्क्क्यन	म्टक्क्श्यन	9 2 %	ক্র	৯
ভূ ্জ ়া	ভূ কৈ 1	8>%		٩	जी	A .	82%	Ā	20
रे ऋू ।	टे ष्ट् ।	870		5 .0	->8	• (824	ર	> •
সি দ্ধার	সিদ্ধান	8 > %		>9	200	৩ ৬	8 ২ ৬		৬
অরাজুশো	অবাল্মু থো	8 > 16	ঐ	٠ , و	26	৩৭	१२ ७		> •
माञ्	ষভ্যমূ	859		. 2	• • •	৩ ৮	8 ২ .৬	(4)	ર
ে মটৈব	देगदव	8 74-		>	কাৰিঃ ।	কান্তি॥ ৩৯	1 83 w	À	•
মারেশ	व र्गटका	875			৩৮	৩ ৯	ଃ ୧ ৬	ঐ	>•
সুহা	সৃহ	<i>ፍር</i> 8	- ঐ	•	শস্তানি শ'স্ত	ানি শক্তাণি শাক্তা	ife 829		۶
					জগাুজ্ত বি				
প ভিতন্তাং	পতিতা ন্তাঃ	852	د		`	}	84.4		. *
দক্তিভাষ্	দ স্থিনা ম	8 ર ર	A	,	জগ্মুঃ দ্ধু ভ			1	٠.
শত্র্যা	শত্ৰুমা	8 २ २ .	্ৰ	20	বিজ্ঞা	বিণ্ডাছা	8.29		◆.
निवर्भगः	নিৰ্যাণং	820		•	co.	83.	829		. 8

				(u	1.0)				
অশুদ্ধি	শুদ্ধি	761	কলম্ব	শং ক্তি	ম ণ্ডবি	of s	পৃষ্ঠা	কলম '	শংক্তি
পুরজনবাসীর।	পুর বাসীজ নের)	8 २ १	2.	>%	ভৰ†ব্বি	ভবাৰি	8 42		»
কির্দ্ধা	কি র্ব	829	ঐ	74	নাথ	না খং	8-0 3		>>
৩ ৮	૭ ૧	8-७२	,	5 ₹	স্থরপম	শ্বর শম	€ © 8		>8
ঞ্চতীনাং সার্ছং	- শ্ৰতীনাং দাৰ্দ্ধং	8२१		Œ	মশ্বত	- মন্ত্ৰং	8.93	ર '	Ł
স্বিস্তত	সু বি শু ,ভ	824	À	٤>	मन्द	वन्य	a08		Ċ
उ १	ত্তে	· 8२৯	ক্র	٩	স ভৈহা স্ব	শ ভৈব শ্চ	880		>0
≈6জেদ রে	শ্চক্রধরে	8-00		>>	অন্ধক ব্য	অন্ধকার নাশকরিতে	5 88•		> ¢
শুদ্ধাৰ	হু জ্ঞাব	8.07	@	2	বিভূতিন	বিভূতিদং	88•	ঐ	8
সাস্তানিকান্যাহ	গেন্থান্ডিকান্যা	8 8 2 5		5 ≷	ভাপশ	ভাপস	880	ن	22
(मवर्षि	দেবৰ্ধি	8-07		>>	खगर	ন্তথা	882		ર
কলে র	क टम वद्ग	8.05	ه	२१	ধৰ্মা	ধৰ্ম	885		2
স্ভা:	স ং জাঃ	8-0-2		১২	<u>फ्टू प्याम</u>	চ ভ ূণুয়াদ্	885	ঐ	Œ
সান্তনিকা	म:खनिक	8 ७ २		১২	রামান্তিকচি	রামাৎ কিঞ্চি	882	ঞ্জ	>0
•99	P 8	8२४		৬	্রেফ	শ্রেষ্ঠ	885	ঠ	ર 9
স্পৃষ্টা1	~બૃં કે 1	8-७२	ৰ্	ર	প্ৰভং জ্বন	প্রভঞ্জন	88%	1	8
त्र <i>ञ्च</i> ः	র <i>হ</i> ণ	8 ७२	હ ો	2	যতিপ্রভ	জনস্থত ভত্ত্ব যোগি	জ্ন কথাতি-	–ইহার প	রিবদে
স্থানন্ত য়	স্থানান্তর	8 ७२	ক্র	3 5	"ম্নীন্দ্রগণ	কর্ত্ক উত্তমরূপে ব	্যা খ্যাত প র	ম তত্ত্ব প্ৰ	ন ত ন
बह्रकछ मा	ন†য়কস্ত	800		>	হতুমান্ যাঁহা	র সম্পূথে ব্যক্ত করি	তেছেন"—	ইেব	
मश्खु ७ (म	সংস্তুতং মে	800	ঠ	8	बु क्ता	বুৰী।	884	de la	8
নম্ভার	নমস্ব †র	8 🔊 8	•	>•	ধশ্মস্ত	ধর্মস্থ	884		৬
সর্কান্ত্রের	দৰ্ব্ব শ†ক্ষের	808		2 O	তীনিষ্টিতঃ	নিষ্ঠিতঃ	88 @		. ъ
সৌমিত্র		8-9(t	ঠ	· •	তীকায়	্ <u>তি</u> তি ক ার	880	à	>9
ভাঙ্গত	সূত্ৰালম্ভ		ঠ	78	চিত্রকূচ	চিত্ৰকুট	88%	چ <u>ې</u>	>4
वी र्या ः वीर्याः	बीर्गार	8 🗢 🖢	ف		বশিষ্টাদি	, तिक्छानि	89 %	افي	٦٤٠
चर्गः चर्गः	ङगश	800	ي د	ه ۲	নেকাণ্ডা	মেক্যপ্র	889		৬
्न [्] भटनाग्रः	কে শিলেয়ং	8 • 9	٥	7 6	भग ख	গমৰ্	889		>0
নিরবৎ	নিয়বদ্য	8-05-		>>	হহাক্ত†ম্ভ	হৃদযুক্ত†ন্	889	Ú	¢
জানকীৎ	জ্বকী	४७ ४	اق ا		নিনবস্তা	নিব স তা	889	١	ь

	ভৃত্তি	পৃষ্ঠা	কলম পংক্তি	অপ্তৰি -	ভৰি	পৃষ্ঠা	কলম প	ণ ংক্তি
শশ্ব		-		প্রসূত্রা	প্রগদ্	881	ર	•
সৃষ্ঠিত:	मृह्हि ७:	889	5 2.	প্রনরা স্থগ্রীব	স্থ ত্ৰীবঃ	488	₫	:5 ,
ভৰৱাক্যং	ভ ৰা ক্যং	889	8 ﴿ ﴿	প্রনার প্রথীব প্রোক্ষ চাছিং রামার্ফ	(প্ৰহ্ম চাছি	886	ক্র	> 3
গৃ ধং	গ্ৰহ	88	8	রামান্ট	রামাষ্ট ক	862		
চারিনীমং	চারিণীম	88	>		বান্ত্	>20		
রাঘৰমং	রাখবশ্	885	>;	গীতা ও লক্ষণের	লক্ষণের	79,		> 0

শুদ্ধিপত্ত সমাপ্ত।

সূচিপত্র।

প্ৰক্ষণ 🖟		शृष्ट्री ।	প্রকরণ।		श्रुष्ठे। ।
উমামহেশ্বর সাধার্ণ	7	á	জনীয়ুর সন্থিত কথা ও রাম লক্ষ্যার ক্রেপ্প		7.
∰ র'ম স দর	૭	> ?	ক্থন	:05	ي مي م
ৰামাবভাৱোৎপত্তি	25	5 &	শ্প্ৰশার নাসিকা ও কৰ্ণচ্ছেদ	> 9b	283
ঋষ্ট্রেপ্থান	১৬	<i>''</i> ''	ৱাবণ মারীচ সম্বাদ	188	539
রামাদির উংপত্তি বিশাগতের সহিত্ত বামচল্ডের ব্নগ্যন ও	20	92	স্পৃত্যাক্ষেষ্ণে রাহের গমন সীভার কটুবচনে লক্ষমণের জপা হইতে গায়ন ভিক্তুক		
ভারকাবধ সংস্কৃত্য মারীও স্থাবাহ্য নিধন বিবরণ অর্ছ-	5.2	ာ်ခွဲ	বেশে রাধ্বণের আগগমন ও তৎকভ্রি সীভা হরণ	س ا 8 ند	ક <i>ા</i> ક
ল্যার শাপমোচন ও তৎক্কত শীরাম-			দীতার অদর্শনে রামের বিলাপ ও জাটায়ু		
চ ্চ्या ३ रहन कथन	ిక	つる	মুপে সীতাহরণের কণা প্রবণ ও		
ভংধত্বজ্ঞ ও রামাদির বিবাহ	80	8 &	ভাটায়ুৰ মৃত্যু কৰক বধ	> €3 > y o	ัส <i>ก ะ</i> ภะะ
প্রভ্রামের প্রাজ্জর ৩৪ রামাদির অবে।ধণ নগ্রেনিবাস	8 %	ł o	শ্বরীর উপা্থাশন	. 5 % t	ر دور
उपम भारतम सम्बास	ά'n	48	শ্বামৃক প্রবিভে বানবাদি দর্শন ও ফুণৌরের সহিভ জীরামচলের সৈত্রভা		
বশিষ্কের সভিভ দশরণের ও কৈকেরীর	a a			> 10	- 9 b-
স্থিত মন্ত্রার মন্ত্রণা	3 (1	85	সপ্ততাল বেধ ও বালি বহ	≥ 4 b -	7 - 8
ेर्करकत्रीत महिल ममंत्रायद कथा उरेकरकत्री			রাম ভারে) সন্ধাদ	>64	- 70
ক্তৃঁক রামের বনগ্রনে বর প্রাথিন।	رد ين.	ሄ ታ	রাম লক্ষ্মণের ক্রোপিকখন	\$20	`⊅ €
াম স্থমিতা স্থাদ। লক্ষণ ও সীভার সহিত ভীরামের বন গমন	৬৯	4 ৬	স্থাীবেৰ উপেক্ষাদর্শনে রামের ভোধ প্রকাশ ও লক্ষাণের কিছিদ্ধাণপুরীতে		
গ্রহার সহিত্ত মৈত্রভা ।	a 9	وخو	গ্ৰন	5 to 8	> 0 ,
अश्रकत विषया, खंदवां स्वीमत हत्वं वन्तना		0 -	मी डारवारण यानव गटगंद गमन ५ स्थासिनी	,	
করিয়া চিত্রকৃট পর্বত সমীশে বাল্মি-			সন্থাদ	₹•5	مط د د
কীর আশ্রমে শ্রীরামচক্ষের আগমন	b 8	८६	ৰণনর গণের থেদ ও সম্পাতি দর্শন	2 • D	250
কুমক্ত্রের অবেশধাশ্য আগগমন, দশরবের ক্ষয়			সম্পাতির পুর্বারভান্ত	* > 8	> > b-
মুনিকৃত জভিশাপের কপন ও মুপতির			মাগর দ র্শনে বাম র গণের শকা	२२५	>,> >
মৃত্যু এবং ভরতের আলেমন	z >	५०२	ুমুমানের সাগর ল জ্জান	3,5,5	> \$.5
ভরতের রামচজ্রাকে লইয়া আসিতে বন গমন	200	5 0 6	হরুমানের অশোকবনে প্রবেশ সীভাদশন		
त्राय ७ जत्उत करवाशकणम	な。ミ	229	ত্রং তথায় রাবণের দীতাবধে উদেযাগ	> > 9	২ ৩১
ধ্যমাদির দণ্ডকারণ্যে প্রবেশ ও বিরাধ র্ভান্ত	224	<u> </u>	সীঙা ও হরুমানের কংশাপকণন	₹ • ₹	> 8 •
শর ভলাতমে গমন সুতীক্ষ এবং অ গান্ত মুমির আতিথা গ্রহণানন্ত র রামাদির পঞ্চব ীর ব নে গমন	১২৩	<u>, </u>	পাশবদ্ধ হইর৷ রাবণ সভার হনুমানের প্রবেশ ডৎক্ত পরিচয় প্রদান ও ছত্- মান কর্ক লকাদাহ	ર 8 •	> 8 %

)		
প্রকরণ।		3011	শ্রকরণ।	পু	क्षेत्र ।
জাননীর স্থিত মাজতীর কংলাপকথন শীতার নিকটে বিদায় লহয় আগ্যন ও বানর গণের মধুবনে প্রবেশ রামাদির মিকটে সীতা দশনের কথা প্রকাশ স্মুদ্তীরে শীরামচন্দ্রের শিবির ভাগেন	y s e		ধানণ বধে দেবগণ কর্তৃক গ্রামচন্দ্রের স্তোত্র ভবতের আক্ষেপ ও রামাভিষেকার্থ ক্ষিগণের আগমন, মহাদেব, পিতৃগণ ও গন্ধ্বি- গণের স্থোত্র যথাযোগ। সংকার পূর্বক		€હેલ
মত্ত্বিগণের স্কৃতি রাধণের মন্ত্রণা বিভাষণ বাকো ক্রুদ্ধ হুইয়া তাহাকে অব্যানন্দ ও বিভীষ্ণের শ্রীরাম নিকটে আক্ষমন	> R *	> ((*) > √y=	অঞ্চন, বিভীষণাদির স্থাপ স্থানে গ্রহন তথ্যাধ্যা নগরে ক্ষমিগণের আগগন অগতা কট্ট বাবণেব পুরপুর-ষের ও রাবণ কুন্তক ্তির র্যান্ত কগন	১ ১৫	⊕ (%
িভীষণের স্থিত মিত্রণ সাগরের সূর্টি- ধারণ করিয়া আগগমন ৩৪ তৎকট্টক শীরণম চক্তের ক্তব	২৬৬	> 9 •	বাশিস্তগ্রীবেড জন্তন্ত্র্যঃ নাবদ ভাৰণের কথা পুষ্পাক রবের প্রস্তান	4)2 ≥	. ,÷ .
নির বানর কাঠ্কি সমূদেবেলন ও ভক বাবণ স্থাদ দংকের অপমান ও প্রাহ্মণমূদ্ভি ধারণ, মালা–	200	২ - 9 a	সীতারামের কথা বাত। ও সীতাবজ্জন লক্ষাকুত শ্রীরামক্ষোৱ	&9 b -	めかる
বানের হিতরচনে রাবনের অবলদা: উভয় পক্ষে যুদ্ধ ওঅভিকায় বধ	> 4 <i>(</i> (> कर	লাগ কেছে আজাৰ্ডিভাতি শ্ৰুছ কতুক লবিণাস্থিব বধ, প্ৰাৰিণ্টাৰে অখনেধ সহাৰ, কুলা বালামিকিন কেলাগৈতা	かない	5 % %
্ষ্মণের শক্তিশেল, কালনেমি রাবণস্থাদ শুনুমান কর্তৃক কালনেমি বধা লক্ষ্যের চৈত্রঃ	2 b -0	> ≈8	ৰামেৰ নিকটে কুশ্ল বেধ ৱামায়ণ গান, সীভাৱ স্তিভ পুনকাৰ ধুনিবৰেৰ ছথায় আগমন এবং বাংলীকি কভুক বলেকৰয়ের পাৰিচয়		
কুপ্তকৰ্ম বধ	シネル		প্রদান	807	5 ° E
ইশজিৎ বাধ রাধানের গোপনে আছিতি প্রাণান বানরগাণ কর্তৃক যাজা ভাস ও মেনাগোদীর স্পাপ- মান এবং উভারের কথাবাতা।	- 0 0 €	: ৩০৭ ৩১৩	কালের আগ্রমন ঐবিমের প্রতিজ্ঞা ও লক্ষ্ণ বজ্জন কুশ লবকে বাজ্যপ্রদান, কামরুদ্ধী বানরগণের	is u ž	٤.٦
রাম রাবণের যুদ্ধ ও রাবণ বধ	3	957	আবিভার বিভীষণ ও মারুতি বাভীত সকলের শ্রীবামচজাদির স্থিত গমন,		
সমুদ্রতীরে শিবিকারোখণে সীভার আগমন ও সীতার অগ্নি পরীক্ষা	ઝરર	ಶಿಶೀ	স্রযুনদীর জলে স্কলের কলেবর ভাগি: পুকারপ গারণ: ,দ্বগণের স্ত্র	e u	
শ্বসা ও ইঞাদি দেবগণের স্তব ও কথায় দেববেশে দশরথের আগমন	తిత్రి,		পুকরের বার্থ-নিবসংগর শুব শীর্মসচন্দ্রের শুব সংক্ষিপ্ত রামশ্রণ	888 234	8 3 3 8 3 3 8 3 2
ङ्क्लाः প্রেরত পুষ্পক রথে আরোহণ করিষ। রামাদির গমন, পথিমধ্যে ভরদাজ, গুছক			কামপত বাশারণ রামপ্টক	ጽ ^ቀ	. (()
ও ভরতের নিকটে আগসম বার্তা প্রদান	200	يه ۾ره	ন্ধ্যায়ণ ক্ষ	800	50 a

বিজ্ঞাপন ভূমিকা।

ব্রকাওপুরাণান্তর্গত সপ্তকাও জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণ গ্রন্থ অভিপ্রাচীন ও বিবিধ সতুপদেশ পূর্ণ। ইহা-মনোযোগ পূর্ব্বক পাঠ বা শ্রবণ করিলে, নরপতিগণের রাজনীতি, প্রজাবর্গের রাজভক্তি, যোগপরায়ণ মুমুক্ তপস্বিদের তপঃপ্রকরণ, আচার্য্যগণের শিষ্যের প্রতি ব্যবহার, শিষ্যগণের গুরুভক্তি নারী-রুন্দের পতিপরায়ণতা-প্রভৃতি শিক্ষা হয়। ইহার স্থমধুর-বচন-বিন্যাদ শ্রবণ করিলে, মুমুর্ব্যক্তির অন্তরে সাহস, নিদারণ-শোক-সম্ভপ্ত ব্যক্তির হৃদয়ের শান্তি ও ঘোরমহাপাতকগ্রস্তব্যক্তির অন্তঃ-করণেও হুথ-প্রদায়িনী আশার উদ্রেক হয়। এই স্থগভীর অধ্যাত্মরামায়ণ-সমুদ্রে যে নানাপ্রকার রাজ-নীতি, সমাজনীতি ও ধর্মনীতিরুপ মুক্তাকলাপে পরিপুর্ণ, তাহা আর ভারতবাদীগণের অবিদিত নাই। অধুনা যবন-কর নিমুক্ত ভারত-ভূমি শশাক্ষরেথার আয়ে প্রতিদিন পরিবর্দ্ধিত হইতেছে। ইহার বিমল কিরণে গৌড়ীয়দাহিত্যদংদার উজ্জ্বল ভাব ধারণকরিয়াছে। অতএব এমন দময়ে যে দমস্ত মানবমওলীরস্থপথ প্রদর্শক, বিশেষতঃ সমস্ত সাংসারিকগণের প্রধান আগ্রোম্পাদ ও ভবিষাৎ কবি গণের কল্লতক্ত্রক্রপ অধ্যাল্রামায়ণ গ্রন্থ মহামূল্য পরিচ্ছদ ধারণ করিয়া, মনের আনন্দে অভাভ গ্রন্থাপেক্ষাও অধিকতর স্থুমধুর ধ্বনিকরতঃ বঙ্গবাদীগণের কর্ণকুহুরে স্থা বর্ষণ করিবেন, তাহাতে সন্দেহ কি। বঙ্গদাহিতেরে প্রধান আশ্রয়াম্পাদ মহামান্য শ্রীযুক্ত কালিপ্রদন্ধ সিংহ মহোদয় ও শ্রীযুক্ত বৰ্দ্ধনানাধিপতি মহারাজাধিরাজ বাহাছুর স্বপ্রাসিদ্ধ মহাভারত গ্রন্থের অনুবাদত্রত উদ্যাপন করিয়া যে সমস্ত শিক্ষিত ভূথণ্ডের ধন্যবাদ-রূপ-ফলভোগী হইয়াছেন, তাহা কাহারও অবিদিত নাই। কিন্ত এই তুই মহোদয়ের অনুবাদিত পুস্তকের ন্যায় মদনুবাদিত অধ্যাত্মরামায়ণও ষেজন সমাজে আদরণীয় হইবে, এরূপ আশা জ্রাশামাত্র। ইদানীন্তন বিশ্ববিদ্যালয়ে সংস্কৃত সাহিত্যের আলোচনা দেখিয়া অনেকে অনেক পুরাতন প্রদিদ্ধ মহাকাব্য ও দৃশ্যকাব্যাদি মুদ্রাঙ্কন করিতে যত্নবান্ হইয়াছেন। কিন্তু সত্র পদেশের সমষ্ঠিদ্তরপ অধ্যাত্মরামায়ণের প্রতি কেহুই কটাক্ষপাত করেন নাই। সংস্কৃত ভাষার আলোচনার সহিত এই সময়ে এই গ্রন্থকে মূল ও অবিকল বাঙ্গালা অনুবাদে স্থানোভিত করিতে পারিলে ভারতবাদিগণের অনেক উপকার সংসাধন করা হয়। আমি এই বিবেচনায় আমার ভারতবাদী ভাতৃগণের সেই উপকার সংসাধনে স্থিরপ্রতিজ্ঞ হইয়া জনসমাজে দণ্ডায়মান হইয়াছি, এইক্ষণ কৃতবিদ্য দেশ-হিতৈষী মহাশয়গণ কুপা করিয়। এই অধ্যাত্মরামায়ণের উন্নতি সাধনবিষয়ে কিঞ্ছিৎ কটাক্ষ রাখেন তাহা হইলেই সকল পরিশ্রম সফল হয়।

> তং নং রামমোহন মন্ত্রীকের বীট্। বড়বাজার অধ্যাক্ষরামারণ কার্ম্যালয়।

গ্রীনাথো মিশ্র।

অধ্যাত্য-রামায়ণম্।

আদিকাণ্ডঃ।



অনুক্রমণিকাধ্যারঃ।

সূত উবাচ।

কদাচিন্নারদো যোগী পরাত্থহবাঞ্যা।
পর্যাটন্ দকলান্ লোকান্ ব্রহ্মলোকমুপাগমৎ॥১॥
তত্র দৃষ্টা মৃর্তিমন্তিশ্ছন্দোভিঃ পরিবেষ্টিতম্।
বালার্কপ্রভয়া দম্যগ্-ভাদয়ন্তং দভাগৃহম্॥ ২॥
মার্কণ্ডেয়াদিমুনিভিঃ স্তুয়মানং প্রজাপতিম্।

দৰ্ক্তাজাচরজ্ঞানং সরস্বত্যা সমন্বিতম্ ॥ ৩ ॥
চতুরু থিং জগন্নাথং ভক্তাভীক্ষলপ্রদম্ ।
প্রাম্য দণ্ডবদ্ভূমো তুন্টাব মুনিপুঙ্গবঃ ॥ ৪ ॥

স্ত কহিলেন,—কোন সময়ে ভ্বনহিতৈষী, মহাযোগীক্ত ভগবান্ নারদঋষি, সমন্ত লোক পর্যটনকরতঃ, ব্রহ্মলোক গমন করিলেন (১)। তপার দেখিলেন,—মূর্ত্তিমান্ বেদ সকলে পরিব্রেটিত হইয়া, প্রজাপতি নবোদিতস্থ্যতুল্য প্রভাদারা সভাগৃহ ক্রুটিয়াবিত করিতেছেন (২)। এবং ব্রহ্মতেজঃসমপ্রভ তপোবীর্যান প্রজাপতি ব্রহ্মান কর্তৃক, সর্বাত্মগোচর সর্বাত্ত ধামী প্রজাপতি ব্রহ্মা, বান্দেবী ভারতীর সহিত স্তুয়মান হইতে ছেন (৩)। সেই ভক্তরনাভীষ্টকলপ্রদ, চতুর্থ জগ্রাণকে,

माष्टीत्म मखन अंगाम कतिया, म्निभूमन नातन छन कति-

লেন (8)।

সন্তুক্ত মুনিং প্রান্থ স্বয়স্তু ব্রেঞ্চবোত্তমম্।
কিং প্রস্কু কামস্থমি তদ্বদিষ্যামি তে মুনে ॥ ৫ ॥
ইত্যাকর্ণ্য মুনিশ্রেষ্ঠো বাক্যং ব্রহ্মাণমব্রবীৎ।
নারদ উবাচ॥ ৬॥

ষতঃ প্রাতং ময়া দর্বং পূর্বিমেব শুভাশুভম্। ইদানীমেকমেবাস্তি প্রোতব্যং স্থরসত্তম ॥ ৭ ॥ তদ্রহস্থমপি ক্রহি যদি তেহকুগ্রহো ময়ি॥ ৮ ॥ প্রাপ্তে কলিযুগে ঘোরে নরাঃ পুণ্যবিবর্জিতাঃ। হুরাচাররতাঃ সর্বেষ্ সত্যবার্ত্তাপরাধ্যুখাঃ॥ ৯॥

অনন্তর স্থাস্থ প্রজাপতি ব্রহ্মা, বৈক্ষবচ্ডামণি নারদের হুবে পরিতৃষ্ট হইয়া কহিলেন, বৎস! স্বাভিপ্রায় প্রকাশ কর; তোমার প্রার্থনামুর্নপ অভিলয়িত সমস্তই অকপটে কহিব (৫)। ইত্যাদি ব্রহ্ম বাক্যাবসানে নারদ স্বাভিপ্রায়ামুসারে প্রতৃত্তর প্রদানে প্রবৃত্ত হইয়া, কহিলেন (৬)। হে স্ক্রসত্তম! পুর্বে দ্বীয়-মুগ-বিনির্গত হুভাগুভ সমস্ত তম্ববার্তা প্রবণ করিয়াছি, এক্ষণে অপর একটা প্রোত্ব্য আছে (৭)। তাহা নির্জ্জনে অমুক্ত অপর প্রকৃত্তি হইলে, সমস্ত লোক প্রাক্তনক ধর্ম্মকর্ম্ম পরিত্যাগ পুর্বক হুরাচারে রত্ত এবং সত্যবার্ত্তায় পরামুধ, পরাপ্রাদে

অধ্যাত্মরামায়ণম্। ..

পরাপবাদনিরতা: পরত্রব্যাভিলাবিশ: ।
পরত্রীসক্তমনস: পরহিংসাপরারণাঃ ॥ > ॥
দেহাত্মদৃষ্টয়ো-মূঢ়া নান্তিকাঃ পশুবৃদ্ধয়: ।
মাতৃ বিশ্বরুত্তহেবা: স্ত্রীদেবা: কামকিকরা: ॥ >> ॥
বিশ্বা-লোভভয়এস্তা-বেদবিক্রয়জীবিন: ।
ধনার্জনার্থমভ্যন্তবিদ্যামদবিমোহিতাঃ ॥ >২ ॥
তক্ত্যস্বজাতিকর্মাণঃ প্রায়শঃ পরবঞ্চকাঃ ।
ক্ষত্রিয়াশ্চ তথা বৈশ্যাঃ সধর্মত্যাগশীলিনঃ ॥ > > ॥
তদ্বচ্ছু দ্রাশ্চ যে কেচিৎ ব্রাহ্মণাচারতৎপরাঃ ।
ব্রিয়শ্চ প্রায়ণা ভ্রম্ভা-ভর্তবজ্ঞাননির্ভরাঃ ॥ >৪ ॥
শুভরদ্রোহকারিণ্যো-ভবিষ্যন্তি ন সংশয়ঃ ।
এতেষাং নইত্রিদ্ধাং পরলোক কথং ভবেৎ ॥ ১৫ ॥
ইতি চিন্তাকুলং চিত্তং জায়তে মম সন্তত্ম।
লঘুপায়েন যেনেষাং পরলোকগতি র্ভবেৎ ॥ ১৬ ॥

নিরত, পর দ্রব্যে অভিলাষী, পরস্বীতে আসক্ত চিত্ত, পরহিংসা পরারণ (৯) (১০)। নিজ দেহকে আত্মা জানিয়া তৎপ্রতিপালনে তৎপর, কর্জনাকর্জব্যাবিচারবিষ্ট, পশুবৃদ্ধি, জনক জননীর প্রতি ভক্তিহীন,প্রত্যুত ক্ষ্টভাবে গুরুজন সন্তাযণকারী, স্ত্রীবশীভ্ত, কামাত্র (১১)। ব্রাহ্মণগণ সদা অসৎপ্রতিপ্রহ প্রভৃতিতে লোলুণ, ভর্ঘবিছ্মল, বেদবিক্রয়োপজীবী অর্থাৎ গ্রন্থ বিক্রয় ও অধ্যাপনাকর বেতনাদিয়ার। জীবিকানির্মাহকারী, অর্থকরী বিদ্যাভাগ্যাকর্মের বিমোহিত (১২)। স্বজাতি কর্মত্যাগী এবং মত্যুত্ত পরপ্রভারণাপরায়ণ; ক্ষব্রের ও বৈশ্রগণও স্বর্মান্ত্রাগালীর (১৩)। ভক্তপ শৃদ্রগণ ব্রাহ্মণাচার তৎপর; স্ত্রীজ্ঞাতি মত্যন্ত জ্বর্মনের অনিষ্টকারিণী, ভর্তার প্রতি অবজ্ঞাকারিণী (১৪)। ও খণ্ডর প্রভৃতি জ্বর্মনের অনিষ্টকারিণী হইবে, সন্দেহ নাই। এই সমন্ত নইক্ষেত্রের অনিষ্টকারিণী হইবে, সন্দেহ নাই। এই সমন্ত নইক্ষেত্রের আনিষ্টকারিণী হইবে, সন্দেহ নাই। এই সমন্ত নইক্ষেত্রের আনিষ্টকারিণী হইবে, সন্দেহ নাই। এই সমন্ত নইক্ষেত্রের আনিষ্ট চিত্ত সভত আকৃল হইতেছে। বে সামান্য উপার্ভর উক্ত জনগণের পর্যাব্যের প্রত্যাহে গড়ি হয় (১৬)। জাপনি

তমুপায়মুপাথ্যাহি সর্বাং বেত্তি যতো ভবান্। ইত্যুবের্ব্বাক্যমাকর্ণ্য প্রত্যুবাচামুজাসনঃ॥ ১৭॥

ত্রকোবাচ।

শাধু পৃষ্ঠং স্থয়া সাধো বক্ষে তচ্চুণু সাদরম্।
পুরা ত্রিপুরহস্তারং পার্বাতী ভক্তবংসলম্ ॥ ১৮ ॥
শ্রীরামতত্ত্বং জিজ্ঞাস্থঃ পপ্রচ্ছ বিনয়ান্বিতা।
প্রোয়ে-গিরিশস্ত স্তৈ গৃঢ়ং ব্যাখ্যাতবান্ স্বয়ম্ ॥১৯॥
পুরাণোত্তম-মধ্যাত্মরামায়ণ-মিতি স্মৃতম্।
তৎপার্বাতী জগদ্ধাত্রী পূজ্য়িত্বা দিবাদিশম্॥ ২০ ॥
আলোচয়ন্তী সানন্দময়া তিষ্ঠতি সাম্প্রতম্।
প্রচরিষ্যতি তল্লোকে প্রাণ্যদৃষ্টবশাদ্-য়িদ্ ॥ ২১ ॥
তত্যাধ্যয়নমাত্রেণ জনা-যাস্থান্তি সদ্গতিম্।
তাবিদ্বিজ্ঞতে পাপং ব্রহ্মহত্যাপুরঃসরম্॥ ২২ ॥

সেই উপায় ব্যক্ত করুন, যেহেত্ আপনি সর্বজ্ঞ। ঋষির এট বাক্য শ্রুবণ করিয়া অধ্যাসন ব্রহ্মা প্রত্যুত্তরে প্রসৃত্ত চই লেন (১৭)।

ব্রন্ধা কহিলেন,—হে সাধো! তুমি অত্যুৎকৃষ্ট প্রশ্ন করিরাছ। আমি ঘদীর প্রশ্নের উত্তর দিতেছি, তুমি সাদরে প্রবণ
কর। প্রাকাশে ত্রিপ্রাপ্রনাশক ভক্তবৎসল (মহাদেবকে)
পার্কাতী (১৮)। বিনর বচনে শ্রীরামতত্ব কিজ্ঞাসা করিলে, স্বরং
গিরিশ প্রিয়ার নিকট (অখ্যাত্মরামারণ রূপ) নিগৃঢ় (বিষয়)
ব্যব্যা করিয়াছিলেন(১৯)। ক্রগদাবী পার্কাতী প্রাণপ্রধান সেই
অধ্যাত্ম রামারণ দিবানিশি অর্চন ও আলোচনা করতঃ সানন্দচিত্তে অবস্থিতি করিতেছেন। এক্শলে প্রাণিগণের গুভাদৃষ্টবশতঃ
ভারাই লোকে প্রচারিত হইবে (২০) (২১)। তাহার অধ্যয়ন—
বাবেই ক্রনগণ সালতি লাভ করিবে। বাবৎ ক্রগৎসংসারে
অধ্যাত্মনারণের আবিস্থাব না হইবে, তবেৎ ব্রন্ধহত্যাপ্রভৃতি
মহাপাপের প্রাহৃত্যার থাকিবে এবং সমন্ত শাস্ত্র প্রক্ষণর বিব্রদ

ষাবজ্জগতি নাধ্যাত্মরামায়ণ-মুদেষ্যতি। ভাবং সর্বাণি শাস্ত্রাণি বিবদন্তে পরস্পারম্ ॥ ২৩॥ যাৰজ্জগতি নাধ্যত্মরাশায়ণ-মুদেষ্যতি। তাবৎ স্বরূপং রামস্ত চুর্ব্বোধং মহতামপি॥ ২৪॥ যাবজ্বগতি নাধ্যাত্মরামারণ-মুদেষ্যতি। তাবৎ সর্ব্যপুরাণানি প্রবর্ত্তে মহীতলে॥ ২৫॥ যাবজ্ঞগতি নাধ্যাত্মরামায়ণ-মুদেষ্যতি। তাবৎ কলিশ্মহোৎদাহঃ দঞ্রিষ্যতি নির্ভয়ঃ ॥২৬॥ जाभागात्राभाग्रगमः की र्जन अवगानि अग्। ফলং বক্তুং ন শকোমি কাৎস্থেটন মুনিদত্তম ॥২৭॥ তথাপি তৃদ্য মাহাত্মং বক্ষ্যে কিঞ্চিত্রান্য। শৃণু চিত্তং সমাধায় শিবেনোক্তং পুরা মম ॥ ২৮ ॥ অধ্যাত্মরামায়ণতঃ শ্লোকার্দ্ধং শ্লোকমেব বা। যঃ পঠেন্দুক্তি সংযুক্তঃ স-পাপামুচ্যতে ক্ষণাৎ ॥২৯॥ যন্ত্র প্রত্যহ মধ্যাত্ম রামায়ণ মন্যধীঃ। যথাশক্তি পঠেন্দ্রক্ত্যা স জীবন্মুচ্যতে নর: ॥ ৩০ ॥

মান হইবে (২২)(২২)। যাবৎ জগতে অধ্যাত্যরামায়ণ না উদিত
১ইবে, তাবৎ মহৎ বাক্তিরাও শ্রীরামচন্দ্রের অরপপরিজ্ঞানে
অসমর্থ থাকিবে (২৪)। যতদিন না পৃথিবীতে অধ্যাত্যরামায়ণ
শ্রেকাশিত হইবে, তাবৎ সমন্ত প্রাণ শাল্র অপ্রবর্ত্তিত থাকিবে
(২৫)। যত দিন না মংসাবে অধ্যাত্যরামায়ণ প্রাচ্তুত হইতেছে,
তাত দিন কলিযুগ মহোৎসাহসহকাবে নির্ভয়চিত্তে বিচরণ
করিবে (২৬)। ছে মুনিসন্তম! যদিও আমি অধ্যাত্যরামায়ণের
সংকীর্ত্তন ও প্রবাদিজনিত পুণ্যফল সংস্কৃরিপে বর্ণন করিছে
অসমর্থ (২৭)। তথাপি, ছে অনঘ! যাহা আমি পুর্বেষ মহাদেবের
নিকট প্রবণ করিয়াছি, তাহার কিঞ্জিৎ মাহাত্যা বর্ণন করিভেতি, তুমি অবহিত চিত্তে প্রবণ কর(২৮)। বে ব্যক্তি অধ্যাত্যরামারণের একটী স্লোক বা শ্লোকার্ম ভক্তিসমূকারে পাঠ করেন,
তিন সমস্ত পাপরাশিকে কণকালমাত্রে ভস্মাৎ করিরা মৃক্ত
হুত্তে পারেন (২৯)। থিনি অন্যাচিত্ত হুইয়া ভক্তিপূর্ব্যক প্রতি-

যো ভক্তার্কয়তেইধ্যাত্মরামায়ণ-মতক্রিতঃ।

দিনে দিনেইশ্বনেধন্য ফলং তদ্য ভবেমুনে ॥ ০১ ॥

যদৃচ্ছয়াপি যোইধ্যাত্মরামায়ণ মনাদরাহ।

অন্যতঃশৃণুয়ামতাঃ দোইপি মুচ্যেত পাতকাহ ॥০২॥

নমস্করোতি যোইধ্যাত্মরামায়ণ মদূরতঃ।

দর্বদেবার্কনফলং দ প্রাপ্রোতি ন সংশয়ঃ ॥ ০০ ॥

লিথিছা পুস্তকেইধ্যাত্মরামায়ণমশেষতঃ।

যো দদ্যাদ্রামভক্তভাস্তদ্য পুণ্যফলং শৃণু॥ ০৪ ॥

অধীতেয় চ বেদেয়ু শাস্তেয়ু ব্যাহ্যতেয়ু চ।

যহ ফলং ছল্ল ভং লোকে তহফ নং তদ্য সংভবেহ॥০৫॥

একাদশীদিনেইধ্যাত্মরামায়ণ-মুপোষিতঃ।

যো- রামভক্তঃ দদ্দি ব্যাকরোতি নরোত্তমঃ ॥ ০৬ ॥

তদ্য পুণ্যফলং বক্ষ্যে শৃণু বৈষ্ণবদত্তম ।

প্রত্যক্ষরস্ত গায়ত্তীপুরশ্বর্যাফলং লভেহ ॥ ০৭ ॥

निवन यथां भक्ति अधाषाबामाय भार्र करतन, जिनि की वस्क হইতে পারেন(৩০)। যিনি ভক্তিপূর্বক নিরালস্ত হইরা অধ্যাত্য-तामायन পुञ्जक भूका करतन, जिनि निन निन अथरमधककीत कन्तां कित्र विश्वास (७১)। य नत्र यमुक्तां क्रिया जनामरत य কোন ব্যক্তি হইতে অধ্যাত্মরামায়ণ শ্রবণ করেন, তিনি পাতক হইতে মুক্ত হয়েন (৩২)। যিনি আবৃরতঃ অধ্যাতারামায়ণকে প্রণাম করেন, তিনি সর্বাদেবের অর্চনকল লাভ করিতে পারেন, তাহার সংশয় নাই (৩৩)। (হে নারদ!) যিনি রুংশ্ব অধ্য। আ-রামায়ণ পুস্তক লিখিয়া রামভক্ত জনে প্রাদাণ করেন, তাঁহাৰ श्राक्त अवग कत (०८)। निशित (तम अधायन कतिरत ता সমস্ত শাস্ত্র ব্যাথ্যা করিলে, যে ফল হয় আর তৈলোক্যে যে ফল ত্র্ভ, তাঁহার সেই সমস্ত ফল লাভ হয় (৩৫)। একাদশীদিনে যে রামভক্ত নরোত্তম উপোষিত হইয়া সভামগুলীতে অধ্যাত্ম-রামায়ণ ব্যাথ্যাকরেন (৩৬)। হে বৈষ্ণবেশ্তম নারদ! ভাষার পুণ্যফল কীর্ত্তন করি শ্রবণ কর। (উক্ত ব্যক্তি) গায়ত্রী পুরশ্চর ণের প্রতি অক্ষরের ফল লাভ করেন (৩)। জ্রীরামনব্দীদিনে

অধ্যাত্মরামায়ণম্।

উপবাদত্তং কৃত্বা শ্রীরামনবমীদিনে।
রাজোজাগরিতোহধ্যাত্মরামায়ণ মনস্থীঃ।

যঃ পঠেং শৃণুয়াদাপি তদ্য পুণ্যং বদামাহম্॥ ৩৮॥

কৃক্ষেত্রাদিনিখিলপুণ্যতীর্থেদনকশঃ।

আত্মতুল্যং ধনং সূর্যগ্রহণে সর্বতোমুখে॥ ৩৯॥

বিপ্রেভ্যো ব্যাদমুখ্যেভ্যো দক্তা যথ ফল মর্মুতে।
তৎফলং সম্ভবেং তদ্য সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ॥৪০॥

যো-গায়তে মুদা ধ্যাত্মরামায়ণ মহর্নিশন্।

আজ্ঞাং তদ্য প্রতীক্ষন্তে দেবা ইন্দ্রপরোগমা ॥৪১॥

পঠন্ প্রত্যহমধ্যাত্মরামায়ণ মতন্দ্রিতঃ।

যদ্যৎ করোতি তৎকর্ম তত্তৎ কোটীগুণং ভবেং ॥৪২॥

তত্র শ্রীরামহৃদয়ং যঃ পঠেৎ হৃদ্মাহিতঃ।

সব্রহ্মন্মোহপি পূতাত্মা ত্রিভিরের নিনোর্ভবেং॥৪০॥

শ্রীরামহৃদয়ং য-স্ত হৃত্মুমং প্রতিমান্তিকে।

ক্রিঃপঠেৎ প্রত্যহং মৌনী স্নার্কেপ্সতভাগ্ভবেং॥৪৪

নিরাহার জাগরিত ও অনভচিত্ত হইরা বিনি অধ্যায়রামায়ণ পাঠ বা প্রবণ করেন, তাঁহার পুণাফল বলিতেছি (৩৮)। বারম্বার কুরুক্ষেত্র প্রভৃতি নিথিল পুণাতীর্থ পর্যটন করিলে বা সর্প্রগ্রাসচন্দ্রস্থাগ্রহণকালে বেদব্যাসসম বিপ্রসকলকে নিজ বিহবারু সারে ধন দানকহিলে, যে ফল হর, উক্ত মহাত্মার সেই ফল হয়, ইহার সভ্যতাবিষয়ে সংশয় নাই (৩৯) (৪০)। যে জন জ্পুটিতে দিবারাত্রি অর্যাত্ম রামায়ণ গান করেন, ইন্দ্র প্রভৃতি দেবগণ তাঁহার আজ্ঞা প্রতীক্ষাকরেন (৪১)। নিরালশু ব্যক্তি প্রত্যহ অধ্যাত্মরামায়ণ পাঠ করিয়া যে ধর্ম্মকর্ম্ম করেন, তাঁহার দে সমস্তই কোটগুণ হয় (৪২)। যে ব্যক্তি সাবধান হইয়া অধ্যাত্মরামায়নণের অন্তর্গত প্রিরামন্ত্রদর পাঠ করেন, তিনি ব্রক্ষম হইলেও, দিবসত্রর মধ্যে পরিত্র হয়েন (৪৩)। যে ব্যক্তি মৌনী হইয়া হয়্মৎ প্রতিমানিকটে প্রতিদিন বারত্রয় শ্রীরামন্ত্রদয় পাঠ করেন, তিনি ব্রক্ষীয় ফললাভ করিতে পারেন (৪৪)। যিনি তুল্মী

পঠন্ শ্রীরামহাদয়ং তুলস্যশ্বরোর্যদি।
প্রদক্ষিণং প্রক্রবীত প্রক্ষহত্যা নিবর্ততে ॥ ৪৫ ॥
শ্রীরামগীতমাহাত্মাং সর্বাং জানাতি শঙ্করঃ।
তদর্জং গিরিজা বেত্তি তদর্জং বেদ্মাহং মুনে ॥ ৪৬ ॥
তত্তে কিঞ্চিং প্রবক্ষ্যামি কৃৎস্রং বক্তুং ন শক্যতে।
যজ্জাত্বা তৎক্ষণালোকশ্চিত্রভান্ধিমবাপুয়াৎ ॥ ৪৭ ॥
শ্রীরামগীতা বৎ পাপং ন নাশয়তি নারদ।
তন্ন পশ্যামহং লোকে মার্গমাণোহিপি সর্ব্যদি ॥ ৪৮॥
রামেণোপনিষ্ দিন্ধুম্মথ্যোৎ পাদিতাং পুরা।
রামলক্ষ্মণযোগীতাং স্থপাং পীত্বামরো ভবেৎ॥ ৪৯ ॥
যমদ্মিস্তাং পুর্বাং কার্ত্বীর্যব্ধেক্ষয়া।
ধরুবির্বাদ্যমভ্যদিতুং মহেশ্দ্যান্তিকে বদম্॥ ৫০ ॥
অধীর্মানাং পাবর্বত্যা রামগীতাং প্রয়ন্তং।
শ্রুহা গৃহীত্বা স্থপঠন্ নারায়ণকলামগাৎ॥ ৫১ ॥

বা অর্থবৃক্ষ প্রদক্ষিণপুরঃমর শ্রীরামন্ত্র আবৃত্তি করেন, তিনি ব্রহ্মহত্যাগাপ হইতে নিজ্তি পাইতে পারেন (৪৫)। হে নারদ! শ্রীরামগীত মাহাত্যা শহর মহাদেব সমস্তই বিদিত আছেন,তদ্দি গিরিজা আনেন এবং তদ্ধি আনি জানি(৪৬)। অতএব তোমার নিকট সমস্ত কীর্ত্তন করিতে অসমর্থ হইলেও আমি তাতার কিঞ্চিনাত্র কতিতে গির বিদিত হইলে মুহুর্ত্তমধ্যে লোবের চিন্ত নিশ্লে হইতে পারে (৪৭)। হে নারদ! সর্বাদা ব্রহ্মাণ্ডন্মধ্যে অবেষণ করিয়াও আমি এমন পাপ দেখিতে পাই না, শ্রীরামগীতা যাহা ধ্বংস করিতে অসমর্থ (৪৮)। পূর্ব্বে শ্রীরাম সাগর মন্থন করিয়া রামলক্ষণের গীতারূপ যে স্থা উৎপন্ন করিয়াছিলেন, উক্ত স্থাপানে সমস্ত বেদ অমর ইইয়াছেন(৪৯)। পূর্ব্বে ব্যাদ্যিতনয় পর্কশ্রাম কার্ত্বীর্যাবধাভিলায়ী হইয়া

পূর্বের বনদ্যিত নয় পরশুরাম ক। গুরী বাবণা ভিশাষী হইর।
ধর্বিলা অভ্যাসকরিবার নিমিত্ত মহাদেবের নিকট অব্দ্যিতি
করত: (৫০)। পার্বিত কৈ কৃক অধীরনান রামগীতা যতুসহকারে
প্রবা, গ্রহণ ও পঠন পূর্বেক নারায়গংশ শাভ করিয়াছেন (৫১)।

ব্রন্ধাহত্যাদিপাপানাং নিষ্কৃতিং যদি বাঞ্চি।
রামগীতাং মাসমাত্রং পঠিত্বা মূচ্যতে নরঃ॥ ৫২॥

কুপ্রতিগ্রহ্রভোজ্যন্তরালাপাদিসম্ভবম্।
পাপং সক্ৎকীর্ত্তনেন রামগীতা বিনাশয়েৎ॥ ৫০॥
শালগ্রামশিলাগ্রে চ তুলস্যখ্যসিমিধা।

যতীনাং পুরত-স্তম্ব-দ্রামগীতাং পঠেতু যঃ।
স তৎফলমবাপ্রোতি যদ্বাচোহপি ন গোচরম্॥ ৫৪॥
রামগীতাং পঠন্ ভক্ত্যা যঃ শ্রাদ্ধে ভোজয়েদ্দিজান্।
তস্য তে পিতরঃ সর্ব্বে বাস্তি বিক্ষোঃ পরংপদম্॥ ৫৫॥

একাদশ্যাং নিরাহারো নিয়তো-দাদশীদিনে।

স্থিত্বাগস্ত্যতরোম্লি রামগীতাং পঠেতু যঃ।
স-এব রাঘবঃ সাক্ষাৎ সর্ব্বদেবৈশ্চ পূজ্যতে॥ ৫৬॥

বিনা দানং বিনা ধ্যানং বিনা তীর্থাবগাহনম্।
রামগীতাং নরোহধীত্য তদন্তরফলং লভেৎ ॥ ৫৭ ॥
বহুনা কি-মিহোক্তেন শৃণু নারদ তত্ত্তঃ।
আঠিক্স্তিপুরাণেতিহাসাগ্মশতানি চ।
নাইন্তি নাল্লা-মধ্যাত্মরামায়ণকলা-মপি ॥ ৫৮ ॥
অধ্যাত্মরামচরিতস্য মুনীশ্বরায়
মহাত্ম্য-মেতত্ত্দিতং কমলাসনেন।
যঃ শ্রদ্ধা পঠতি বা শৃণুয়াৎ স মর্ত্যঃ
প্রাপ্রোতি বিষ্ণুপদবীং স্থরপূজ্যমানঃ ॥ ৫৯ ॥
ইতি ব্রহ্মাণ্ডপুরাণে উমামহেশ্বরসংবাদে উত্তরশশ্তে
একষ্টিতমোহধ্যায়ঃ।

যে নর ব্রহ্মাহত্যাদি নানাবিধু পাশহইতে নিক্কৃতি বাঞ্চাকরিবেন তিনি মাসমাত্র রামগীতা আবৃত্তি করিলেই মুক্ত হইতে পারিবেন (৫২)। একৰারমাত্র রামগীতাকীর্ত্তনকারীর নিশিত প্রতিগ্রহ, অভোজ্যভোজন, অসং আলাপন প্রভৃতি জনিত পাগ বিনষ্ট হয় (৫৩)। শালগ্রামশীলা, তুলসী, অখথ বু মুনিদিগের সম্মুথে যে ব্যক্তি রামগীতা পাঠ করেন বাক্সের অতীত ফল লাভ করিতে পারেন (৫৪)। যিনি গাদি সাংবৎসরিক পিতৃশ্রাদ্ধ দিবদে ব্রাহ্মণভোজন সমরে প্রকি শ্রীরামগীতা পাঠ করেন, তাঁহার সমস্ত পিতৃলোক পর্ম পদ প্রাপ্ত হন (৫৫)। একাদশীদিনে নিরাহার ও দিনে (অর্থাৎ পারণদিবসে) একাগ্রমনে যিনি অগন্ত্য রামগীতা পাঠকরেন, তিনি সাক্ষাৎ রাঘ্বক্ষরূপ এবং পূজ্য হন (৫৬)। দান, ধ্যান ও তীর্থাবগাহন-ব্যক্তি

মনুষ্য রামগীতা অধ্যয়ন করিলেই অসীম ফল লাভ করিতে পারেন (৫৭)। হে নারদ। এ বিষয়ে ভোমায় আর অধিক কি কহিব; ক্রতি, পুরাণ, ইতিহাস ও শতজাগম আবৃত্তি-করিলেও অধ্যাত্মরামাণের এক কলার তুল্য ফল লাভ হয় না (৫৮)। কমলাসন ব্রহ্মা মূলীখর নারদকে যে অধ্যাত্মরামায়ণ-মহাত্ম্য কহিয়াছিলেন, মানবগণ শ্রদ্ধা ও ভক্তি-সহকারে ভাহা পাঠ বা শ্রবণ করিলে দেবগণ কর্ত্বক পূজ্যমান হইয়া বিষ্ণুপদ্বী প্রাপ্ত হয়েন (৫৯)।

এই ব্রহ্মাণ্ড পুরাণে উমা ও মহেশ্বরের কথোপ কথনে উত্তর্থণ্ডে একষ্টিতম অধ্যায় উক্ত হইল ∤

প্রথমোহধাায়ঃ।

खरमार्गाठ ।

যাঃ পৃথ্বীভরবারণায় দিবজৈঃ সংপ্রাথিত শিচনায়ঃ
সংজ্ঞাতঃ পৃথিবীতলে রবিকুলে মায়ামসুষ্যোহব্যয়।
হত্বা রাক্ষদপুস্থবং পুনরগাদ্ ত্রহ্মত্বমাদ্যাং ভিরোম্
কীর্ত্তিংপাপহরাংবিধায়জগতাংতংজানকীশংভজে॥১॥

বিখোদ্তবন্থিতিলয়াদিয়ু হেছুমেকং
মারাশ্রমং বিগতমারমচিন্তামূর্টিম্।
আনন্দসান্তমেমলং নিজবোধরূপং
সীতাপতিং বিদিততত্ত্বমহং নমামি॥ ২॥
পঠন্তি যে নিত্যমনক্যচেতসঃ
শৃণুন্তি চাধ্যাত্মকসংক্তিতং শুভম্।
রামায়ণং সর্বপুরানসম্মতং
বিধৃতপাপা-হরিমেব বান্তি॥ ৩॥

ব্রহ্মা কহিলেন,—হে নারদ! যিনি চিন্মর, অব্যয় ভূভার হ্রণার্থ স্বর্গণ-কর্ত্ব প্রার্থিত হইয়া, ভ্তলে ভাস্বর কুলে মায়া-মন্ত্র্যভাবে জগৎসংসারের পাশহরা অচলা কীর্ত্তি বিধান করিয়া রাক্ষসশ্রেষ্ঠ দশানন বধানস্কর পুনর্কার ব্রহ্মসাযুজ্যপদ প্রাপ্ত হইয়াছেন এরূপ জানকীশ রামচন্দ্রকে ভজনাকরি (১)। যিনি ব্রহ্মাণ্ডের স্পষ্ট, ছিতি, লয়ের মুখ্য কারণ, মায়ার আধার অথচ মায়াবিরহিত, অচিন্তনীয়মূর্ত্তি, আনন্দরসময়, নির্বাল্ঞানস্বরূপ, নিজবোধরূপ, সমস্তত্ত্ব বিদিত; সেই সীতাপতিকে প্রণাম করি (২)।

বাঁহারা অন্সচিত্ত হইয়া প্রতিদিন সর্কপ্রাণ সম্মত অধ্যাত্ম-রামায়ণ পাঠ বা শ্রবণ করেন, তাঁহারা বিধৃতপাপ হইয়া বৈকুঠ-ভবনে গমন করেন (৩)। যিনি ভববদ্ধন হইতে মুক্তি লাভ অধ্যাত্মরামায়ণমেব নিত্যং
পঠেদ্-যদীচ্ছেন্ত্ববন্ধমুক্তিম্।
গবাং দহস্রাযুতকোটিদানজং
ফলং লভেদ্-যঃ শৃগুয়াৎ স নিত্যম্॥ ৪॥
পুরারিগিরিসস্তৃতা শ্রীরামার্শবসংজ্ঞিতা।
অধ্যাত্মরামগঙ্গেয়ং পুনাতি ভুবনত্রয়ম্॥ ৫॥
কৈলাসাত্রে কদাচিদ্রবিশতবিমলে মন্দিরে রক্নপীঠে
সংবিষ্ঠংধ্যাননিষ্ঠংত্তিনয়নমভয়ংসেবিতংসিদ্ধসংঘিঃ।
দেবী বামাঙ্গসংস্থা গিরিবরতনয়া পার্বিতী ভক্তিনআ
প্রাহেদংদেবমীশংসকলমলহরংবাক্যমানন্দকন্দম্॥৬॥

পার্ব্বহ্যুবাচ।

নমোহস্ত তে দেব জগদ্বিবাদ সর্বাত্মদৃক্ ত্বং প্রমেশ্বরোহদি।

করিতে বাসনা করিবেন, তিনি প্রতিদিবদ অধ্যাত্মরামায়ণ পাঠ করিবেন এবং যিনি নিত্য উক্ত রামায়ণ প্রবণ করেন, তিনি কোটিসহস্রায়ত সবৎসা ধেমুদানের ফল লাভ করেন (৪)। হিমাগরিসম্ভবা ত্রিপথগামিনী ভালীরথীর ভার কৈলাদশিথর-সম্ভব্য শ্রীরাম-সাগর-সঙ্গতা অধ্যাত্মরামায়ণ গঙ্গা ত্রিভ্বন পরিত্র করিতেছেন (৫)। একদা কৈলাসাপ্রে মহাদেবের বামউর্জ্বনাসিনী ভক্তিনন্ত্রা গিরিবর্তন্ত্রা পার্ক্তী শতস্থ্যভূল্যবিমল মন্দিরে রত্ময় পীঠোপরি উপবিষ্ট ধ্যাননিষ্ঠ সিদ্ধসমূহ সেবিত অভ্য ত্রিনয়ন দেবদেব মহাদেবকে আনন্দরসপূর্ণ কলুষবিনাশক বাক্যে জিজ্ঞান। করিলেন(৬),—হে দেব জগনিবাস ! আপনাকে

পুচ্ছামি তত্ত্বং পুরুষোত্তমন্য
সনাতনত্বঞ্চ সনাতনোহদি ॥ १ ॥
গোপ্যং যদত্যন্তমনন্যবাক্যং
বদন্তি ভক্তেমু মহানুভাবাঃ।
তদপ্যহোহহং তব দেব ভক্তা।
প্রিয়োহদি মে ত্বং বদ যতু পৃষ্ঠীম্ ॥ ৮ ॥
জ্ঞানং সবিজ্ঞানমথামুভক্তি
বৈরাগ্যমুক্তঞ্চ মিতং বিভাস্বন্।
জানাম্যহং যোষিদপি ত্বত্নক্তং
যথা তথা ক্রহি তরন্তি যেন ॥ ৯ ॥
প্চছামি চান্যচ্চ পরং রহস্যং
তদেব চাগ্রে বদ বারিজাক্ষ।

নমস্বার, আপনি দর্ব্বাত্মদৃক্ ও পরমেশ্বর; আপনাকে পুরুষোত্ত-নের তত্ব ও স্নাত্নত জিজাসা করিতেছি, যেহেতু আপনিও সনাতন (৭)। যদিও শিববাক্য অতিশয় গোপনীয়, তথাপি মহামুভব ব্যক্তিরা ভক্তজনে বিতরণ করিয়া থাকেন, কারণ আমিও আপনার অভিভক্তিপ্রিয়া, অতএব হে ভক্তিপ্রিয়়া আমার প্রশ্নের উত্তর দেওয়া আপনার সর্বতোভাবে বিধের (৮)। হে বিভাস্বন! যদিও আপনি আমায় পূর্ব্বে জ্ঞানযোগ, বিজ্ঞান-र्याभ, चिक्तर्याभ ७ देवजाभार्याभ शुकान कतिशास्त्रन, এवः বদিও আমি উক্ত যোগচতুষ্টয় জানি, তথাপি যোষিদিধার আমাকে পুনর্কার কহিতে অনুমতি হয় (অর্থাৎ সম্যানুসারে সকল কণা সর্বাদা সামার স্মৃতিপথবর্তিনী হয় না; শ্রুতিরূপা ভবদীয় বাণী শ্রবণ করাই আমাদের কর্ত্তব্য, কারণ শ্রুতি ও মুতির পরম্পর বিরোধ হইলে শ্রুতিই বলবতী হয়), অভএব মন্দবৃদ্ধি ব্যক্তিরা যেরূপে উদ্ধার হইতে পারে, তজ্ঞপ বলিতে আজা হয় (১)। আমি আপনার সমীপে আর একটি যে রহস্থ কথা জিজাসা করিতেছি, হে বারিজাক্ষ ! আপনি আমার

জ্রীরামচন্দ্রেইথিলতত্ত্বসারে ভক্তিদু ঢ়া নো ভবতি প্রসিদ্ধা। ১০।। ভক্তিঃ প্রসিদ্ধা ভবমোকণায় নান্যন্ততঃ সাধনমস্তি কিঞ্ছি। তথাপি হৃৎসংশয়বন্ধনং মে বিভেত্ত মহদ্যনয়োক্তিভিস্তম্ ॥ ১১ ॥ বদন্তি রামং প্রমেকমাদ্যং নিরস্তমায়াগুণসংপ্রবাহম্। ভজন্তি চাহনিশ্মপ্রমতাঃ পরং পদং যান্তি তথৈব সিদ্ধাঃ ॥১২ ॥ বদন্তি কেচিৎ প্রমোহপি রামঃ স্ববিদ্যয়া সংর্তমানসঃ স্বম্। জানাতি নাত্মানমতোহপরেণ সংবোধিতো-বেদপরাত্মতত্ত্বমূ॥১৩॥ যদি প্ৰজানাতি কুতো-বিলাপঃ সীতা হতা তেন কুতঃ পরেণ।

তাহা .প্রকাশ করিরা বলুন। অথিলতত্ত্বার শ্রীরামে কিরুপে আমাদিগের অনপারিনী অসাধারণী প্রাদিদ্ধ ভক্তি জন্মিতে পারে (১০)। ভক্তিই ভবমোচনের নিমিত্ত প্রাসিদ্ধা, তদপেকা অন্ত কোন সাধন নাই,তথাপি আপনি আমার মানসসংশর্মন ছেদন করিবার উপযুক্ত পাত্র (১১) অপ্রমন্ত সিদ্ধ ব্যক্তিরা শ্রীরামকে শ্রেষ্ঠ অদিতীয়,আদ্য ও মায়াগুণ প্রবাহরহিত জানিরা দিবারাত্র ভলনা করিয়া পর্ম পদ প্রাপ্ত হইয়া থাকেন (১২)। নিজ বিদ্যালারা আচ্ছন্নচিত্ত কোন কোন ব্যক্তিরা শ্রীরামকে পর্ম বলিয়া বিদিত আছেন, কিন্তু ভাঁহাদের নিজ আত্মত হবাধ না থাকার, অপরবোধিত ব্যক্তিক স্ক্রোধিত হইয়া, বেদ পর্মাত্মতত্ত্ব জানিয়া থাকেন (১৩)।

সীতা শত্রহন্ত গৃহীতা হইবেন এইটা যদি জানেন তবে শ্রীরাম কি হেতু বিলাপ করিবেন ক্রার যদি এ বিষয় পবিজ্ঞাত জানাতি নৈবং যদি কেন দেব্যঃ
সমো-হি দর্কেরপি জীবতাতৈঃ ॥ ১৪ ॥
অত্যোত্তরং কিং বিদিতং ভবদ্তিস্তদ্ধ হি মে সংশয়ভেদি বাক্যম্ ॥ ১৫ ॥
শ্রীমহেশ্ব-উবাচ।

ধন্যাদি ভক্তাদি পরাত্মনস্থং

যজ্জাতুমীহা তব রামতত্ত্ম।
পুরা ন কেনাপ্যভিনোদিতোহহং

বক্তুং রহস্তং পরমং নিগৃঢ়ম্॥ ১৬॥

দ্বয়াদ্য ভক্ত্যা পরিণোদিতোহহং

বক্ষ্যে নমস্কৃত্য রঘূত্তমন্তে।
রামং পরাত্মা প্রকৃতেরনাদিরানন্দ-একং পুরুষোভ্নোহি॥ ১৭

স্বমায়্যা কুৎস্নমিদং হি স্ফ্রা
নভোবদন্তর্বহিরাস্থিতো যং।

দর্ব্বান্তরস্থো-হি নিগৃঢ়- আ্যা

স্বমায়্যা স্ফ্রিমিদং বিচ্ন্টে॥ ১৮॥

ছিলেন, তাহা হইলে সমস্ত জীবের জনক তুল্য হইয়া জীরাসকোন ৰাক্তি কর্তৃক বা সেব্য হইবেন (১৪) ? ইহার প্রাকৃতির কি, সংশয় ভেদী বাক্য দারা সবিস্তারে ব্যক্ত করুন (১৫)।

শ্রীমহাদেব কহিলেন,—হে পার্কাত! তুনি ধন্যা ও পরনান্ত্রার পরমভক্তা, বেহেতু শ্রীরামতত্ব জানিতে তোমার সমূচিত
চেন্তা হইরাছে; পূর্ব্বে এরপ নিগৃচ পরম রহস্ত বলিবার নিমিত্ত
কেইই আমাকে অনুরোধ করে নাই (১৬)। অদ্য আনি
ভোমার ভক্তিশ্রেমে বশীভূত হইরা রব্তুম শ্রীরাম চরণারবিন্দে
প্রণতিপূর্বক তদীর প্রশ্নের প্রভ্যুত্তর দানে প্রবৃত্ত ধইশাম; রাম
পরমাত্মা প্রকৃতির অনাদি সদানন্দময় অদ্বিতীয় পুরুষোত্তম (১৭)
বিনি নিজ্মায়া প্রভাবে এই চরাচর স্থাবর জন্সম প্রভৃতি সমস্ত
ব্রহ্মাও স্থাই করিরা নভামওলের ন্যার অভ্যন্তরে ও বাহে স্বপ্রকাশ স্বান্তর্থামী নিগৃত আন্ধারণে অবস্থিত করিতেছেন

জগন্তি নিত্যং পরিতো ভ্রমন্তি
যৎসন্নিধে চুম্বকলোহবদ্ধি।
এতন্ন জানন্তি বিমূচ্চিত্তাঃ
স্ববিদ্যা সংবৃত্তমানসস্তে॥ ১৯॥
স্বাজ্ঞানমপ্যাত্মনি শুদ্ধবোধে
স্বারোপয়ন্তীহ নিরস্তমায়ে।
সংসারমেবানুসরন্তিযে বৈ
পুল্রাদিসক্তাঃ পুরকর্মযুক্তাঃ॥ ২০॥
জানন্তি নৈবং হৃদয়্বিতং বৈ
চামীকরং কণ্ঠগতং যথাজ্ঞাঃ॥ ২১॥
যথা প্রকাশো-নতু বিদ্যুতে রবৌ
জ্যোতিঃস্বভাবাৎ পরমেশ্বরে তথা।
বিশুদ্ধবিজ্ঞান্যনে রঘুত্তমেহবিদ্যা কথং স্যাৎ পরতঃ পরাত্মনি॥২২॥

(১৮)। এই সমস্ত জগং চুম্বকলোহের ভায় নিয়ত বাঁহার চতুদ্দিকে ভ্রমণ করিতেছে; (অর্থাৎ চুম্বকপ্রস্তারের সারিধ্য-বশতঃ বেরূপ অটেত্ত জড়পদার্থ লৌহাদি বস্তুর চলনশক্তি জিমারা থাকে, তজাপ অসামান্তমায়াশক্তিবিশিষ্ট বিশ্বভাবন পরমায়া ঈশ্বরের সালিধ্যে এই দেহাদি অতৈক্ত জড়পদা-র্থের চৈত্র জিনায়া থাকে। ইহা মুগ্ধাস্ত:করণ নিজমায়াচ্ছরচিত্র ব্যক্তিরা জানিতে পারে না (১৯), রবং সচ্চিদানক নির্ফিকার নিরস্তমায় নিশ্মলবোধ প্রমান্ত্রা ঈশ্বরের প্রতি নিজের অজ্ঞানতা-রূপ দোষারোপণ করত: প্রারদ্ধ কর্মের ভোগ বশত: পুলাদি বিষয়ে আসক্তচিত হইয়া ঘোরতর সংসারের অনুসরণ করিয়া থাকে (২•)। অজ্ঞ ব্যক্তি যেমন কণ্ঠস্থিত চামীকর জানিতে পারে না, তদ্রপ সর্বভূতহাদয় হিত ঈশ্বরকে সামাত্ত লোকে কিরূপে জানিতে পারিবে (২১)। জ্যোতিঃস্বভাবহেতৃ যেরূপ স্ব্যবিষয়ক জ্ঞান বোধ হয়, তদ্ৰপ ঈখরের কার্য্য প্রকাশহেতৃ ঈশরকারণ জ্ঞান প্রকাশিতহয়, অতএব পরাৎপর পরমাত্মা বিশুদ্ধ-বিকান রঘুত্তন রামচক্রে অবিদ্যার সন্তাবনা কোণায় ? (২২)

বৰা হি চাক্ষো-ভ্ৰমতো-গৃহাদিকং
বিনফদ্কে-ভ্ৰমতীৰ দৃশ্যতে।
তথৈব দেহেন্দ্ৰিরকর্ত্রাত্মনঃ
কৃতং পরো-হৃশ্য জনো-বিমুহ্ছতি॥ ২০॥
নাহো-ন রাত্রিঃ দবিতু-র্যথা ভবেৎ
প্রকাশরপো-ব্যভিচারতঃ কচিৎ।
জ্ঞানং তথাজ্ঞানমিদং দরং হরে
রামে কথং স্থাস্যতি শুদ্ধচিদ্যনে॥ ২৪॥
তত্মাৎ পরানন্দময়ে রঘূত্তমে
বিজ্ঞানরপো হি ন বিদ্যতে তনঃ।
দক্ষানসাক্ষিণ্যরধিন্দলোচনে
মায়াভ্রম্মান বিমোহকারণম্॥ ২৫॥
তত্ত্ব তে কথয়িষ্যামি রহস্যমপি হুর্ল ভৃষ্।
সীতারামমক্রৎসূত্মংবাদং মোক্ষসাধনম্॥২৬

পুরা রাময়ণে রামো-রাবণং দেবকন্টকম্।

হন্বা রণে রণশ্লাঘী সপুত্রবলবাহনম্॥ ২৭ ॥

সীতয়া সহ হৃত্রীবলক্ষণাভ্যাং সমন্বিতঃ।

অবোধ্যামগমদ্রামো-হন্মংপ্রমুথে-র্বতঃ ॥ ২৮ ॥

অভিবিক্তপরিরতো-বশিষ্ঠা দ্যৈ-র্মহান্সভিঃ।

সিংহাসনে সমাসীনং কোটিসূর্য্যসমপ্রভঃ ॥ ২৯ ॥

দৃষ্ট্বা তদা হন্মস্তং প্রাঞ্জলিং পুরতঃ ন্থিতম্।

কৃতকার্যাং নিরাকাক্ষং জ্ঞানাপেক্ষং মহামতিম্ ॥৩০॥

রামং সীতা-মুবাচেদং ক্রহি তত্তং হন্মতে।

নিক্লাবোহয়ং জ্ঞানস্যপাত্রং নৌ নিত্যভক্তিমান্॥৩১॥

তথেতি জানকী প্রাহ তত্তং রামবিনিশ্চিতম্।

হন্মতে প্রপন্নায় সীতা লোকবিমহিনী ॥ ৩২ ॥

कि:व! नयन**ष्ट्रांत्र खगद**णंडः গৃহাদি বক্তসকল দর্শনে অগোচর হয়, পরে ত্রমের অন্যথা হইলে পুনর্ব্বার উহা দৃষ্টির বিষয়ীভূত হৃইয়া থাকে, ভক্রণ দেহেক্সিরকর্তা পরমেখনে কর্তৃক এইরূপ সমস্ত ঘটনা ঘটিতে পারে। ইহাতে সাধারণ करनत मुख रुरेवात विलक्ष मखावना (२७)। अथवा पूर्वा एक **दिक्रण क्रियां क्रियं क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियं क्रियं** क्षन ध्वकाममान ७ क्थन ष्रध्वकाम शास्त्रन, उक्तन कान ७ অজ্ঞান এই ছইটী উক্ত ওছচিত সচ্চিদানক প্রমাতা শ্রীয়াবে কিরপে থাকিতে পারে ? (২৪) অতএব পরানক্ষর বিজ্ঞান-कातन (पर्शार विकास अन व्यवित्र जीतारम विकास विवाह) রমৃত্য রামচক্রে ডমোওণ নাই এবং মারাল্রম্ব প্রযুক্ত অ্ঞান-নাক্ষী অরবিন্দলোচন সেই রামে কেন মোহের কারণ উপস্থিত क्रेटन ? (२¢) अख्यद, रह शार्सिष्ठ ! आमि खामात्र मिक्रे দীতা, রাম ও হনুমান-সংক্রান্ত ৰোক্ষ্যাখন অহুদ্রতি রহত ক্রীর্তন করিতেছি, (ভূমি অবহিতা হইরা প্রবণ কর) (२७)।

পূর্বের বামায়ণে প্রীরামচন্দ্র, সপুত্রবলবাহন দেবকণ্টক রাকণাকে রণে বিনাশপূর্বেক রণশ্লাঘী হইয়া (২৭) সীতা, স্থঞীব ও লক্ষণের সহিত মিলিভ এবং হন্মং প্রমুধ বানরপণে পরিবেটিভ হইয়া নিজ রাজধানী অযোধ্যাপুরী গমন করিয়াছিলেন (২৮)। পরে তিনি বশিষ্ঠ প্রভৃতি মহাআ ধ্বিগণ কর্ভ্ক পরিবৃত্ত ও রাজ্যাভিবিক হইয়া সিংহাসনে উপবেশনপূর্বেক কোটিস্ব্যাভূল্য দীপ্রি ধারণ করিয়াছিলেন (২৯), ভবন তিনি সক্ষুধবর্তী বজাঞ্চলি কৃতকার্য্য নিরাকাক্ষ জ্ঞানাপেন্দী মহামতি হন্মান্কে অবলোকন করিয়া (৩০) (প্রিরংবদা জনকনন্দিনী) সীতাকে (ইলিতঘারা) কহিলেন,—হে প্রিয়ে! ক্ষণৎ প্রাণকুমারকে কিঞ্চিৎ ভব্জানের কথা বল, এ ব্যক্তি নিরক্ষ্ম, ক্ষানের ভাজন এবং আমাদের প্রতি সভত ভক্তিমান্ (৩১)। সর্কলোক-বিমোহিনী জনকনন্দিনী বে আক্ষা বলিয়া অতিবশংবদ শরণাগ্রত সমীরণক্ষ্মকে রামবিনিশ্রিত ভব্তক্ষা বর্গনক্রিতে সমুদাতা হইলেন (৩২)। সীতা কহিলেন,—হে প্রনভনর । ভূমি শ্রীয়ারণ

সীতোবাচ।

রামং বিদ্ধি পরং ব্রহ্ম সচিচদানন্দ মদ্বয়ম্।
সর্ব্যোপাধিবিনিমুক্তং সন্তামাত্রমগোচরম্॥৩০॥
আনন্দং নির্মাণ শান্তং নির্বিকারং নিরপ্তনম্।
সর্ব্যোপিনমাত্মানং স্বপ্রকাশ মকল্মষম্॥ ৩৪॥
মাং বিদ্ধিমূলপ্রকৃতিং স্গস্থিত্যস্তকারিণীম্।
তল্য সন্ধিমাত্তেণ স্বজামীদমতব্রিতা॥ ৩৫॥
তৎসানিধ্যাত্ময়া স্ফং তত্মিন্নারোপ্যতে বুধৈঃ॥৩৬॥
অব্যোধ্যানগরে জন্ম রঘুবংশেহতিনির্মালে।
বিশামিত্রসহায়ত্বং মথসংরক্ষণং ততঃ॥ ৩৭॥
আহল্যাপাপশমনং চাপভঙ্গো মহেশিতুং।
মৎপাণিগ্রহণং পশ্চাদ্ভার্গবদ্য মদক্ষয়ঃ॥ ৩৮॥
আব্যোধ্যানগরে বাদ্যো-ময়া দ্বাদশবার্ষিকঃ।
দশুকারণ্যগমনং বিরাধ্বধ-এব চ॥ ৩৯॥

মায়ামারীচমরণং ছায়াসীতাহৃতিত্তথা।
জটায়ুষো-মোক্ষলাভঃ কবন্ধস্য তথৈব চ ॥ ৪০ ॥
শবর্যাঃ পূজনং পশ্চাৎ স্থানীবেণ সমাগমঃ।
বালিনশ্চ বধঃ পশ্চাৎ সীতান্বেষণমেব চ ॥ ৪১ ॥
সেতৃবন্ধশ্চ জলধো লহ্মায়াশ্চ নিরোধনম্।
রাবণস্য বধো-যুদ্ধে সপুজ্রস্য প্রবাত্মনঃ ॥ ৪২ ॥
বিভীষণে রাজ্যদানং পুস্পাকেণ ময়া সহ।
অযোধ্যাগমনং পশ্চাদ্রাজ্যেরামাভিষেচনম্ ॥ ৪০ ॥
বিবাদীনি চান্থানি ময়েবাচরিতান্থপি।
আরোপয়ন্তিরামেইশ্মিন্ নির্বিকারেই খিলাজনি॥৪৪॥
রামোন গচ্ছতি ন তিন্ঠতি নান্ধশোচত্যাকাঞ্জতে ত্যজতি নোন করোতি কিঞ্ছিং।
আনন্দমূর্ত্তি রচলঃ পরিণামহীনোমায়াগুণানসুগতোহি তথা বিভাতি ॥ ৪৫ ॥

চক্রকে পরমত্রন্ধ, সচিদানন্দ, অদিতীয়, সর্ব্বোপাধি বিরহিত সভামাত্র, অংগাচর, নির্মাণ, নির্ব্বিকার, নিরন্ধন, শাস্তবভাব, সর্ব্ব্যাপী, স্ব প্রকাশ, বিধোতপাপ বলিয়া জানিবে (৩০) (৩৪) এবং আমাকে মূলপ্রকৃতি ওক্ষ্টি স্থিতি প্রালয়কারিণী বলিয়া জান। আমি অতক্রিতা হইয়া রামচক্রের সায়িধ্যরশতঃ এই ত্রন্ধাণ্ড করিয়াছি (৩৫)। রামসহযোগে আমি য়াহা ক্ষ্টি করিয়াছি,পণ্ডিতগণ তাহাই শ্রীয়ামে আরোপিত করিয়া থাকেন (৩৬)। বিশেষতঃ অযোধ্যানগরে অতি পবিত্র র্ব্বংশে শ্রীয়ামের জন্ম, ভগবান্ বিশামিত্র ঋষির সহায়তা এবং ঋয়িগণের যজ্ঞ রক্ষা; (৩৭) পরে অহল্যার শাপমোচন, মিথিলানগরে মহাক্রের ধন্মত্রন্ধ, আমার পাণিত্রহণ এবং ভ্রুবংশশ্রেষ্ঠ ভার্গব বা্মদ্ব্যের দর্শক্ষর (৩৮); তৎপরে আমার সহিত দাদ্ব্র্ব্ব্যাপী জ্বোখ্যানগরবাস, দণ্ডকার্ণ্যাখন এবং বিরাধ্যা রাক্ষন বধ

(৩৯); অনন্তর মায়ামারীচমারণ, ছায়াসীতাছরণ, জটার্র নৃঞ্জিলাভ এবং কবদ্ধের মোক্ষপ্রাপ্তি (৪০); তদনন্তর শ্বরী ১ইছে পূজা গ্রহণ, স্থাীবের সহিত সমাগম, বালি বধ এবং সীতার অধ্যেশ (৪১); পশ্চাৎ জলধিতে সেতৃবন্ধন, লগ্ধানিবোদন এবং যুদ্ধে সপুত্র ছরাত্মা রাবণের বধ (৪২); তৎপশ্চাৎ বিতীয়ণে রাজ্যদান, পুষ্পকর্থারোহণে আমার সহিত অযোধ্যাগমন এবং রাজ্যে রামাভিষেচন (৪০); ইত্যাদি ও অন্যান্ত নানা কার্য্য আমাকর্ত্ক আচরিত হইলেও নির্বিকার অথিলাত্মা সেই রামে আরোপিত হইয়া থাকে (৪৪)। রামচন্দ্র গমন স্থিতি, আচল, পরিণামহীন ও মারাওশান্ত্রত হইয়া দীপ্তি পাইয়া থাকেন (৪৫)।

শ্রীমহেশ্বর-উবাচ!

ততো-রামঃ স্বয়ং প্রাহ হন্মন্তমুপস্থিতম্।
শূণু তত্বং প্রবিক্ষানি হ্যাত্মানাত্ম পরাত্মনাম্॥ ৪৬॥
আকাশস্য যথা ভেদস্তিবিধো-দৃশ্যতে মহান্।
জলাশয়ে মহাকাশস্তদবচ্ছিম-এব হি॥ ৪৭॥
প্রতিবিশ্বাথ্যমপরংদৃশ্যতে ত্রিবিধং নভঃ।
বুদ্ধবিজ্ঞিটেতন্যমেকং পূর্ণং তথাপরম্॥৪৮॥
আভাসস্থপরং বিস্বভূতমেবং ত্রিধা চিতিঃ।
আভাসবুদ্ধেঃ কর্তৃথ্যবিচ্ছিমেহবিকারিণি॥৩৯॥
সাক্ষিণ্যারোপ্যতে ভ্রান্ত্যা জীবত্বঞ্চ তথাবুধৈঃ।
আভাসস্ত মুবা বুদ্ধিরবিদ্যাকার্য্য-মুচ্যতে॥ ৫০॥

শীতা হন্মানকে ইত্যাদি সমস্ত কীর্ত্তনকরিলে সমুথে দণ্ডা-রমান মহামতি বায়ুপুলকে ব্যুনাথ স্বয়ং তত্ত্তানের কথা ক্তিতে উদ্যুত হইলেন। এই কুণা ব্রহ্মাণ্ডভাণ্ডোদরী জগজ্জননী পালাতীকে দেবাদিদেব মহাদেব শ্রবণ করাইতেছেন। হে বায়ু পুল। মূদ্রপ ত্রিবিধ আকাশ দেখিতে পাওয়া যায়, তদ্রুপ আয়ত্ত্ব ও অনায়ত্ত্ব এবং প্রমায়ত্ত্ব ত্রিবিধ কীর্ত্তন করি, শ্রবণ কর (s৬)। সোপাধিক, নিরুপাধিক ও প্রতিবি**ম্বাণ্য** এই ত্রিবিধ আকাশের মধ্যে জল শূন্য জলাশয়ে বা ঘটাদিতে যে আকাশ দৃষ্ট হয় তাহাকে সোপাধিক কহে, আর নিরূপাধিক ষে गर्ভाम खल मृष्टे इस जाशांक महाकाम करह, धवर मर्नगामिए ণে আকাশ তাহাকে প্রতিবিশ্বাণ্য আকাশ বলা যায়। উক্ত ত্রিবিধ আকাশকে প্রথম বৃদ্ধ্যবচ্ছিন্ন চৈতন্য, দিতীয় পূর্ণ অর্থাৎ মহাকাশ, তৃতীয় বিশ্বভূত আভাদরূপ এই ত্রিবিধ জ্ঞান জ্মিয়া পাকে। জ্ঞান ভ্রমপ্রমাসাধারণ হেতু দ্বিবিধ, —ভ্রমাত্মক ও প্রমা-ত্মক; তাহাতে আমি করি বা করিতেছি ও করিব ইত্যাদি আত্যার আভাসবৃদ্ধির কর্তৃককর্ম্মাদি যে জ্ঞান তাহাকে ভ্রমজ্ঞান বলা যায়, এবং ভ্রমবশতঃ অবিচ্ছিন্ন অবিকারী অজ্ঞানসাক্ষী যে আত্যা তাহাতে বুধগণ জীবত্ব আরোপিত করিয়া থাকেন, কিন্তু আভাদবুদ্ধি মিথ্যা অবিদ্যাকার্য্য অর্থাৎ মায়ার কার্য্য (৪৭) (8) (8) (0 •) । वृक्षाविष्ठन्न (व दिन्न विकाश कि निर्मे विकाश कि निर्मे

অবিচ্ছিন্নস্ত তদু সা বিচ্ছেদস্ত বিকল্পিতঃ।
অবিচ্ছিন্নস্ত পূর্ণেন একরং প্রতিপদ্যতে ॥ ৫১ ॥
তত্ত্বসন্যাদি বাকৈয়শ্চ সাভাসন্য মহস্তথা।
ঐক্যজ্ঞানং যদোৎপন্নং মহাবাক্যেন চাল্পনোঃ ॥৫২॥
তদা বিদ্যা স্বকার্য্যেশ্চ ন সংশয়ঃ।
এবং বিজ্ঞায় মন্তক্তো মন্তাবায়োপপদ্যতে ॥ ৫৩॥
মন্তক্তিবিমুখানাং হি শাস্ত্রমাত্বেয়ু মূহ্যতাম্।
ন জ্ঞানং নচ মোক্ষঃস্থাৎ তেযাং জন্মশতৈরপি ॥৫৪॥

ইদং রহস্যং হৃদয়ং ম্যাত্মনোমারেব সাক্ষাৎ কথিতং তবান্ত্য ।
মন্ত্রক্তিহীনার শঠার ন ত্বয়া
দাতব্যমৈন্দ্রাদিপি রাজ্যতোহধিকম্ ॥ ৫৫ ॥

वांठा, कांत्र विराह्म छोन विकन्निक, भर्थार कथन बन्न भागांठा বা কথন জীবপদবাচ্য, পরন্ত এবং বাচ্যবাচকভাবহৈতু বৃদ্ধা-বচ্ছিয় চৈতন্য পূর্ণজ্ঞানের সহিত একত্ব প্রাপ্ত হইলে তং ওম অসি, তৎ জীবাতাাু, ত্বং প্রমাতাাু, অসি একত্বজান অর্থাৎ সেই তুমি ইত্যাদি মহা বাক্য দারা সাভাস বুদ্ধির তেজঃ প্রকাশ হয়, তবে উক্ত মহাবাক্যদারা জীবাত্যা প্রমান্ত্রা উভ্যের যংকালে ঐক্যজ্ঞান উৎপন্ন হয়, তৎকালে আত্যকার্য্যদারা অবিদ্যারূপে निজ निজ মায়া বিনষ্টা হটতে পারে ত্রিষ্যের সংশ্র নাই, অতএব বায়ুপুত্র এবং প্রকারে মন্তক্ত জীবলোক বিজ্ঞাপিত হইলে गদীয় পদ প্রাপ্ত হইতে পারেন (৫১)(৫২)। আমাতে ভক্তি বিমুথ ব্যক্তিরা শাস্ত্রমাত্রেই মুগ্ধ হইতে পারেন এবং তাঁহা-দিগের শতবার জন্ম হইলেও জ্ঞান বা মুক্তিলাভ হয় না (cs)। যে অন্যে হে নির্মালে। আমার আত্যার অর্থাৎ এরামের এই রহস্তহ্বদয় তোমার নিকট কহিলাম, যদি দেবরাজ ইক্র হইতেও অধিক রাজ্য প্রাপ্ত হয় তাহা হইলেও মন্তক্তিহীন বা শঠতা-চারিকে কদাচ দিবে না (ce); কারণ যে জীরামহৃদয় बीर्टन

শ্রীমহেশ্বর-উবাচ।

এতত্তিং ভিহতং দেবি জ্ঞীরামছদরং ময়া।

অতি গুহুতমং হৃদ্যং পবিত্রং পাপশাতনম্ ॥ ৫৬ ॥

সাক্ষাডামেশ কথিতং সর্ব্যবেদাস্তসংগ্রহম্।

যং পঠেৎ সততং জক্ত্যা স মুক্তো-নাত্র সংশয় ॥৫৭॥

বৃহ্মহত্যাদিপাপানি বহুজন্মার্জিতাম্পপি।

নশ্যস্ত্যেব ন-সন্দেহো-রামস্য বচনং যথা॥ ৫৮॥

কাতিভ্রফো-ইতিপাপী পরধন প্রদা-

ক্ষাভন্ত ফো- হাওদাদা সর্বৰ সর্ব রেষু নিজ্যোদ্যতো-বা স্তেয়ী ব্রক্ষানাতাপিভ্বধনিরভো-যোগিরন্দাপকারী। যা সংপূজ্যাভিরামং পঠতি চ হ্বদয়ং রামচন্দ্রন্য ভক্ত্যা যোগীন্দ্রৈ-রপ্যলভ্যং পদ-মিহ লভতে সর্বাদেবৈশ্ব পূজ্যা ॥ ৫৯ ॥

> ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমা-মহেশ্বরসংবাদে আদিকাণ্ডে শ্রীরামহৃদয়ং নাম প্রথ-মোহধ্যায়ঃ ॥ ৬০ ॥ ১ ॥

করিলাম, ইহা অভিগুণ্ডতম ও হৃদ্য, পরম পবিত্র এবং পাপনাশন (৫৬)। সাক্ষাৎ শ্রীরাম কহিষাছেন, এই সর্কবেদাস্তনগ্রহ রামহৃদয়, যে ব্যক্তি নিরস্তর ভক্তি পূর্বক পাঠকরিবেন, তিনি মুক্ত হইবেন ভাহার সংশর নাই (৫৭), প্রভ্যুত রাম্বাক্যাত্ময়ারে বহুজয়ার্জিড যে ব্রক্ষহত্যাদি পাপনাশ হইবে ভাহার ও অভুমাত্র সংশয় নাই (৫৮)। বিশেষ কাভিত্রই,অভিপাত্রকী, পরধন ও পরদারে মিত্য উদ্যত, স্তেমী, ব্রক্ষর, জনক ক্রনীবধে নিরত, যোগিগণের অপকারী ইত্যাদি পাপাচরণ

করিলেও যিনি শ্রীরামকে পৃত্ন করিরা ভক্তিযোগসঙ্কারে উক্ত রামহাদয় পাঠ করেন, গিনি স্পট্দিব পূজ্য অত্তে যোগীক্রগণের অলভ্য প্রমপদ প্রাপ্ত হটবেন (৫১)।

এই অধ্যান্মরামারণের উদানচেশ্বরকথোপকথনে আদি-কাণ্ডের রামহাদ্রনামে প্রথম অধ্যান্ন উক্ত হইল ॥ ৬০॥ ২ ॥

দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

পার্ব্বভূযোচ। ধন্যাম্যুনুগৃহীতাম্মি কুতার্থাম্মি জগৎপ্রভো।

বিচ্ছিনো-মেহতিসন্দেহ গ্রন্থি-র্ভবদকু গ্রহাৎ॥ ১॥ তুন্মুখাদ্গলিতং রামতত্তামূতরসায়নম্।

পিবন্ত্যা মে মনো-দেব ন তৃপ্যতি ভবাপহম্॥ ২॥ শ্রীরামদ্য কথাতত্ত্বং শ্রুতং সংক্ষেপতো ময়া।

ইদানীং শ্রোতুমিচছামি বিস্তরেণ স্ফুটাক্ষরম্॥ ৩॥

শ্রীমহেশর উবাচ।
শৃর্ দেবি প্রবক্ষ্যামি গুহ্মাদ্গুহ্যতরং মহৎ।
অধ্যাত্মরামচরিতং রামেণোক্তং পুরা মম॥ ৪॥
তদদ্য কথয়িষ্যামি শৃর্ তাপত্রারাপহম্।
যচ্ছ ত্বা মুচ্যতে জন্ত রজ্ঞানাদ্য মহাভয়াৎ॥ ৫॥

গান্ধতী কহিতেছেন,—হে জগৎপ্রভা! আপনাকর্ত্ব অনুগ্রীতা, ধন্তা ও ক্বতার্থা হইলাম; যে হেতু ভবদীয় অসাধারণ অনুগ্রহবলে অদ্য আমার চিত্তদোষের অপনোদন হইল (১)। হে দেব! সংক্ষেপত: অপুনর্ভব ভবদীয় মুখারবিন্দগলিত শ্রীরামতত্ত্বপীযুবরসায়নস্থাত্পানে আমার চিত্ত পরিতৃপ্ত হইতেছে না (২)। ইদানীং সবিস্তর অমৃতাক্ষর শ্রীরামচরিত্রশ্রবণে অধিনীর ব্রুপোচিতবলবতীমনোহভিলাবিত-ফল-স্কার্থিনীকুত্মমবতীআশাল্ডার তাদৃক্ফল বিতরণে তুর্ণ কামন পূর্ণা করুন্(৩)। পরে পার্ম্বতীর পূর্ম্বপক্ষের দার্চ্যতা জানিয়া শ্রীমহেশ্বরসিদ্ধান্তাত্মকুল তর্কবিন্যাসবিতরণে সক্ষম হইতেছেন।হে দেবি পার্ম্বতি! আধ্যাত্মিক আধিভৌতিক, আধিদৈবিক এই ভাপত্রয়নাশক এবং গুপ্ত হইতেও গুপ্ততম বেমহৎ অধ্যাত্মরামচরিত্র পূর্ম্বে আমার নিকট শ্রীরাম কহিয়াছিলেন, তাহা অদ্য সবিস্তর কীর্ত্তন করিতেছি; শ্রবণকর। বাহা শ্রবণকরিলে কীরলোক অক্তান বা মহাভয়-

প্রাপ্টোতি পরমায় দিং দীর্ঘায়ং পুত্রসম্ভতিম্ ॥ ৬ ॥
ভূমি-ভারেণ মগ্রা দশবদনমুখাশেষরক্ষোগণানাং
ধ্রা গোরূপমাদে দিবিজমুনিগণৈ: দাকমজাদনস্ত।
গর্বা লোকংরুদন্তী ব্যসনমুপগতং ব্রহ্মণেহপ্যাহ সর্বং
ব্রহ্মাধ্যাতামূহুর্ভংসকলমপিছদাবেদশেষাত্মতন্তান্।
তত্মাৎ ক্ষীরসমুদ্রতীর-মগন-দুর্মাথ দেবৈ-র্বতোদেব্যা চাখিললোকহুৎস্থমজরং সর্বজ্ঞমীশং হরিম্।
অস্তোষীচ্ছু, তিশুদ্ধনির্মালপদেঃ স্তোত্তিঃপুরাণোদ্ভবৈ
ভক্ত্যাগদাদ্যাগিরেতিবিমলৈরানন্দ্রাপ্তেম্রাণোদ্ভবৈ
ভক্ত্যাগদাদ্যাগিরেতিবিমলৈরানন্দ্রাপ্তেম্রাণাদ্ভবি
ততঃ ক্ষুরাৎসহস্রাংশুসহস্রসদৃশ প্রভঃ।
আবিরাদীৎ হরিঃ প্রাচ্যাং দিশাং ব্যপনয়ংস্তমঃ॥৯॥
কথিঞ্ছি ক্রবান্ প্রহ্মা ত্র্দেশ্ক্তাত্মনাম্॥ ১০॥

হইতে মুক্ত হইয়া পরমসম্পত্তি ও দীর্ঘজীবী পুক্র সন্তান লাভ করিতে পারে (৪)(৫)(৬)। দশানন-প্রভৃতি নিথিলঅশেষ রজনী-চরনিকর চরণচার ভারবহনাসহমানা গোরপধরা ধরিত্রী অমর মুনিগণের সহিত কমলাসনের সমীপে ব্যসন বিজ্ঞাপন পুরঃসর রোক্ষদ্যমানা হইলে, প্রজাপতি ব্রহ্মা মুহূর্ভকালমধ্যে অশেষ আত্মতত্ব বিদিত হইয়া দেবতাদিগের সহিত ক্ষীরোদসমুর্দ্র-ভীরে গমনকরিলেন (৭)। অনন্তর ব্রহ্মা বস্থমতী-প্রভৃতি দেবগণসমভিব্যাহারে ভক্তিগদ্গদচিতে, বাস্পাকুললোচনে শ্রুতিজ্ব, বিমলপদ্যুক্ত ও নানাপুরাণোত্তব স্তৃতিছারা সর্বাস্ত্র-বামী সর্বজ্ঞ ও অজর ঈশ্য হরিকে স্তব করিতে লাগিলেন (৮)। পরে দীপ্রিবিশিষ্ট সহস্রাংওসহস্রসদৃশ প্রভ হরি পূর্বাদিক্ নিজ প্রথরকরকদম্বদারা ঘোরতর তিমির দ্রীকরণপূর্বাক আবিভৃত হইলে,দর্শনোৎস্থক বিশ্বকর্তা বিধাতা সাধারণের ত্বদর্শজগৎপাতা হরিকে কথঞ্জিৎ কটে দৃষ্টি করিলেন (৯) (১০)। ইন্দ্রনীল-

ইন্দ্রনীলপ্রতীকাশং স্মিতাস্যং পদ্মলোচনম্।
কিরীটহারকেয়ুরকুগুলৈঃ কটকাদিভিঃ॥ ১১॥
বিভ্রাজমানং শ্রীবৎসকৌস্তপ্রভয়া যুতম্।
স্থবদ্ধিঃ সনকাদ্যৈশ্চ পার্দুদেঃ পরিবেষ্টিতম্॥ ১২॥
শহ্মচক্রগদাপদ্মবনমালাবিরাজিতম্।
স্থবিজ্ঞোপবীতেন স্বর্ণবর্ণান্থরেণ চ॥ ১৩॥
শ্রিয়া ভূম্যা চ সহিতং গরুড়োপরি সংস্থিতম্।
হর্ষগদাগদ্মা বাচা স্থোতুং সমুপ্রচক্রমে॥ ১৪॥
ব্রস্মোবাচ।

নতোহস্মি তে পদং দেব প্রাণবৃদ্ধীন্দ্রিয়াদিভি:।

যশ্চিন্ত্যতে কর্মপাশাদ্ধ্ দি নিত্যমুমুক্ষ্ভি: ॥ ১৫ ॥

মায়য়া গুণময্যা স্থং স্ক্রদ্যবিদি লুম্পদি।

জগত্তেন ন তে লোপঃ স্বানন্দান্মভবাত্মনঃ ॥ ১৬ ॥

তথা শুদ্ধি-র্ন হুন্টানাং দানাধ্যয়ন কর্ম্মভিঃ।

শুদ্ধাত্মন-স্কে যশ্দি সদা ভক্তিমতাং যথা॥ ১৭ ॥

সমবরণ, ঈষৎ-হাস্তবদন, পদাপলাশলোচন, মুকুট হার তাড়া কুণ্ডল বলয় প্রভৃতি নানা মলকারে অলকরিফু, প্রীবৎনকোন্তভ্জন, পার্যদপরিবেটিভ, সনকাদি ঋষিগণকর্ত্বক স্তুরমান (১১) (১২), শগ্র-চক্র-গদা-পদ্ম বনমালা বিরাজিত, পাঁতবজ্ঞো পরীত, পাঁতাঘরধর, ক্ষীরসাগরস্থায়িত, গরুড়োপরি রোচিফুইতাাদি অশেষ অলোকিকরণ ও লাবণ্য দেখিয়া, আত্মাকে শভ্জাবিদানে হর্মপুলকোদগনস্করণরীর স্বয়ন্ত ক্রিভি স্থৃতি ও নানাপ্রাণভাষা উক্তারণপুর:সর নিজনতি পরিপাকাবিধি স্তব্ ক্রিয়াদি স্বান্তাম্বা ভ্রপারতরণি ভ্রদীয় প্রীচরণারবিদ্ধ স্থানে স্থান্ত মান্ত্র ক্রিয়াদি স্বান্তাম্বা ভ্রপারতরণি ভ্রদীয় প্রীচরণারবিদ্ধ স্থানে অভিবাদনকরি, যে পাদপদ্ম চিম্তা করিলে মুমুক্র ব্যক্তিরা কর্মপাশহইতে মুক্ত হবেন (১৫)। আপনি আনন্দান্তভ্র আত্মার ও গুণমন্ত্রী মারাশক্তিদারা ব্রহ্মাণ্ডের স্টেন্ডিতি ও প্রলম্ব করিয়া থাকেন। অভ্যাব ক্রণতে অন্ত উপদ্রব হইবার সন্তাবনা

অত-ন্তবাজ্যি-মে দৃষ্ট-শ্চিত্তদোষাপমুত্তয়ে।
সদ্যোহন্তর্ছ দয়ে নিতংং মুনিভিঃ সাহতৈপ্প্ তঃ॥১৮॥
ব্রহ্মাদৈঃ স্বার্থসিদ্ধার্থ মন্মাভিঃ পূর্ব্বদেবিতঃ।
অপরোক্ষামুভ্তার্থং জ্ঞানিভিন্ত দি ভাবিতঃ॥১৯॥
ফদজ্যি পূজানির্মাল্যতুলসীমালয়া বিভো।
স্পর্দ্ধতে বক্ষসি পদং লব্ধাপি শ্রীঃ সপত্রিবং ॥২০॥
অত-ন্তৎপাদভক্তেমু তব ভক্তিঃ প্রিয়োহধিকা।
ভক্তিমেবাহ্বাঞ্জি ফ্রন্ভক্তাঃ সারবেদিনঃ ॥২১॥
অত-ন্তৎ পাদকমলে ভক্তি-রেব সদাস্ত মে।
সংসারাময়তপ্রানাং ভেষজং ভক্তিরেব তে ॥ ২২॥
ইতি ক্রেবাণং ব্রহ্মাণং বভাষে ভগবান্ হরিঃ।
কিং করোমীতি তে বেধঃ প্রত্যুবাচাতিহ্বিতঃ।২০॥

কি আছে ? দানাপায়ন কথা করিলে মন্দবৃদ্ধি বাজি নিগের চিত্ত তিদ্ধি জনাইতে পারে না; সদাভজিয়ক্ত শ্রহণান ব্যক্তিরাই কর্মনাজেই যশন্ধী হয়েন। অতএব অদ্য ভবদীয় ইট্রেণারবিদ্দির্থাল সমবলোকনকরিয়া মদীয় চিত্তদোষের অপ্নোচন হইল্টি সম্বপ্তণাবলম্বী মূনিগপ হুৎপদ্মে ভবদীয় পাদপদ্ম যোগ করিয়া আয়াকে কৃতকৃত্য নানিতেছেন (১৬) (১৭) (১৮)। আমানিগের অভীষ্টসাধনজন্ত অচিন্তনায় ভবদীয় ইচির্নারবিন্দ পূর্বে বন্ধাদিকর্তৃক সেবিত হইয়াছিল, সম্প্রতি দেবতাদিগের অত্নেথ্য যে তব চরণ, তাহা জ্ঞানিগণ চিত্তে স্ক্র্মণ ভাবনা করিতেছেন্ (১৯)।

হে বিভা! আপনকার শ্রীপাদপদ আমাদিগের পূজানির্মাল্য ও তুলসীমঞ্জরীমালারদারা লব্ধলক্ষীক হইলেও ক্ষীরসাগরস্থতার সপত্নীর স্থায় কি আশ্চর্য্য বনমালা-চিহ্ন বক্ষঃস্থলে
বিরাজমান দেখিতেছি। হে নাথ! তব পাদপদ্মের ভক্তুৰে
ব্যক্তি, সে তব ভক্তিপ্রিয়া লক্ষ্মী-অপেকিত অধিক ভক্ততম;
কারণ ভগবন্তক্ত সার বেদি ব্যক্তিরা,ভক্তিমাত্রেই বাঞ্চাকরেন।
অতএব ভবদীয় পদারবিন্দে আমাদিগের ভক্তি যেন অনপায়িনী
হয়, তাহার বীজ এই যে ভবরোগপীড়িত ব্যক্তিদিগের ভগবৎ
পাদপদ্ম ভক্তি মাত্রই পরমৌষধী হয় (২০) (২২)।

ভগবন্ রাবণো নাম পৌলস্ত্যতনয়ো-মহান্।
রাক্ষসানা মধিপতি-শ্মদ্দত্তবরদর্পিতঃ ॥ ২৪ ॥
ত্রিলোকীং লোকপালাং-শ্চ বাধতে বিশ্ববাধকঃ।
মানুষেণ মৃতি স্তস্ত ময়া কল্যাণকল্পিতা ॥ ২৫ ॥
অতস্ত্রং মানুষো ভূত্বা জহি দেবরিপুং বিভো ॥২৬॥
শ্রীভগবানুবাচ।

কশ্যপদ্য বরো দত্ত স্তপদা তোষিতেন মে।

যাচিতঃ পুত্রভাবায় তথেত্যঙ্গীকৃতং ময়া ॥ ২৭ ॥

দ ইদানীং দশরথো-ভূত্বা তিষ্ঠতি ভূতলে।

তদ্যাহং পুত্রতামেত্য কৌশল্যায়াং শুভোদয়ে ॥২৮॥

চতুর্দ্ধাত্মানমেবাহং স্কামীতরয়োঃ পৃথক্।

যোগমায়াপি নীতেতি জনকদ্য গৃহে তদা ॥ ২৯ ॥

এবতা গারে পিতামধ্রে স্থবে পরিভুপ্ত ভগবান্ হরি কহিলেন্ বে, হে চঙুরানন! আমি ভোগার কি করিব ? এই ইরিবাক্যা-বসানে সপেব ভূতভাবন বিশ্বস্থা স্কুসনা বিধি ভগবাক্যের প্রভুত্তর প্রদানে মাহসী হইলেন (২৩)। হে ভগবন্! পৌলস্ত্য-তন্ম রাবণনামে মহান্ রাক্ষদাধিপতি আছে। সম্প্রতি অক্ষত্ত-বর্দপিত বিশ্ববাধক রাবণ স্থা মন্ত্য ও রসাতল দেবরাজ ইক্রাদি গোকপাল প্রভৃতি সমস্ত ব্যক্ষণ্ডের অশেষ কেশপ্রদান করিতেছে। কিন্তু মানবহুইতে তহোর নিধনক্রণ কল্যাণ ক্রনা পূর্কেই স্থির করিয়ঃছি। ছে প্রভো! এক্ষণে মানবক্রপে অবনীমণ্ডলে অবতীর্ণ ইইয়া দেব ভালিগের শক্র বিনাশক্রন্ (২৪) (২৫) (২৬)।

এই শিভাগহের বাক্যাবদানে মহাক্সভব ত্রিলোকপাবন ভ্রুভারহরণৈক কারণ ভ্রুভাবন ভগবান্ হরি রাবণবধের প্রতি বিধিকে সবিশেষ বিধিবিত্রণে ছিরচিত্ত করিতেছেন। পূর্বের ক্সপনামক প্রভাগতি সাতিশন্ন কঠোর তপস্থার অনুষ্ঠান করিয়া পুলভাব যাজ্ঞাকরতঃ আনাকে অসাধারণ আরাধনা করিয়াছিল। আমি উক্ত ব্যক্তির অলৌকিক আরাধনায় সম্ভূষ্ট হইয়া পুলুত্ব অঙ্গাকার করিরাছি। এক্ষণে উক্ত প্রজাপতি অযোধ্যানগরীতে দশর্থনামে নরপতি বিধ্যাত ইইয়াছেন। উক্ত নুপতির ধর্মপত্নী কৌশল্যা-কঠেরে চতুর্দ্ধা অংশে জন্মগ্রহণ করিয়া রাজা দশর্থের মনোবাহা পূর্ণ করিয়া, (আর যোগ্যায়া সীতা

উৎপৎস্যতে ময়া সার্দ্ধং সর্বাং সম্পাদয়াম্যহম্।
ইত্যুক্ত্যুন্তর্দধে বিষ্ণু-ব্রহ্মা দেবানথাব্রবীৎ॥ ৩०॥
বিষ্ণু-মানুষরূপেণ ভবিষ্যতি রঘোঃ কুলে।
যুয়ং স্বজ্বাং সর্বােহপি বানরেষংশসম্ভবান্॥ ৩১॥
বিষ্ণোঃ সহায়া-ভবত যাবৎ স্থাস্যতি ভূতলে।
ইতি দেবান্ সমাদিশ্য সমাশ্বাশ্য চ মেদিনীং।
যাবাে ব্রহ্মা স্বভবনং বিজ্বঃ স্লথ-মাস্থিতঃ॥ ৩২॥

দেবা-শ্চ সর্কে হরিরূপধারিণং
স্থিতাঃ সহারার্থ মিতস্ততো হরে।
মহাবলাঃ পর্কতিরৃক্ষযোধিনঃ
প্রতীক্ষমাণা-ভগবন্ত মীশরম্॥ ৩২॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বসন্থাদে আদি-কাণ্ডে ব্রহ্মণা সহ রামাবতারোৎপত্তিকথনং

নাম দিতীয়োহধ্যায়ঃ॥ ২॥

নিপিলাদেশোদ্ধৰ জনকরাজভবনে সমৃদ্তা ইইবেন্) অতএন যোগনায়া সীতার সভিত ভূতলে অবতার্ণ ইইয়া,ভূভারহরণকারণ তোমাদিগের সর্ক্রকায়্য সম্পাদনকরিবো। এই কথা ব্রহ্মাকে কহিয়া বিষ্ণু অন্তর্ত ইইলে, জগংশতি ব্রহ্মা ব্রহ্মারা প্রভৃতি সমস্ত দেবতাদিগকে কহিতেছেন্ (২৭) (২৮) (২৯) (১০)।

বিষ্ণু মানবরূপে রঘুক্লে অবতীর্ণ হইবেন্ আর যাবংকাল বিষ্ণু ভূতলে পাকিবেন্, তাবং ভোমরা বানররূপে সমূত্ত হইয়া বিষ্ণুর সহায়তা করিবে (৩১)। এইরূপে প্রজানাথ ব্রহ্মা দেবতা-দিগের আদেশ প্রদানাস্থে, "হে মেদিনি। তং মাজেঃ," এইরূপ বার্ম্বার মেদিনীকে আঘাস প্রদানে নানাবিধ সাত্তনাবাক্যে ত্রিরু চিত্ত করিয়া স্থাচিতে ব্রহ্মা ব্রহ্মণোক গমন করিলেন্(৩২)। অন-ন্তর মহাবলপরাক্রান্থ ও পর্কাত ক্সবোধি দেবতাসমন্ত হরিসহা-য়ার্থ ইতন্ততঃ মর্থাৎ চতুর্দিক্ বানররূপ ধারণ করিয়া ভূতলে ভূত ভাবন ভগবদীশ্বরে প্রতীক্ষায় কালক্ষ্যে সক্ষম হইলেন্ (৩০)। এই শ্রীমদ্যান্মরামায়ণে উমানহেশ্বর কথোপক্থনে আদিকাণ্ডে রামাবতারের উৎপত্তিক্থন দ্বিতীয় অধ্যায় উক্ত হইল।

তৃতীয়োহধ্যায়ঃ।

সূর্য্যবংশে-২ভবদ্রাজা দিলীপ-ইতি বিশ্রুতঃ।
তক্ষ পুজোহভবন্ধান্ধা অজ-ইত্যভিবিশ্রুতঃ॥ ১॥
তক্ষ পুজো-দশরথো-মহাবলপরাক্রমঃ।
য-শ্চক্রে হয়মেধানাং শত-মিন্দ্র সমপ্রভঃ॥ ২॥
অথ রাজা দশরথঃ শ্রীমান্ সত্যপরাক্রমঃ।
অযোধ্যাধিপতি-বীরঃসর্বলোকেয়ু বিশ্রুতঃ॥ ৩॥
অনপত্যত্বহুঃথেন পীড়িতো-গুরুমেকদা।
বিশিষ্ঠং মুনিশার্ছল-মভিবাদ্যেদ-মত্রবীৎ॥ ৪॥

প্রথমত: স্থ্যবংশীর দিলীপনামক এক সম্রাট্ছিলেন। পরে তত্ত পুত্র অজনামক মহারাজ বিখ্যাত ছিলেন। তদনন্তর ত্ত্য পুত্র মহাবল পরাক্রাস্ত শ্রীমান্ দশরথনামধেয় নরপতি শত-অশ্বনেধ-যাগান্তে পৃথিবীতলে পুরন্দরসম-দীপ্ত ও সত্যপরা-ক্রম অযোধ্যাপতি বীর সর্বলোকে প্রথিত ছিলেন (১) (২) (৩)। তাঁহার কি অভূতপূর্ব রাজকার্য্য, কিবা শৌর্য্যবীর্য্যো-मार्घा ७१, किया छेत्रमभू जव ध्वाभागन, किया माना धायन, দেবপূজন, অতিথিদেবন, নিত্যহোমী-গুরুদেব-মুনিবিপ্রপিতৃ-মাতৃভক্তিপরায়ণতা, কি স্থন্দর শ্রোতস্মার্ত-ক্রিয়াচরণ,সর্ববিষয়ে অভিজ্ঞতা ইত্যাদি রাজধর্ম, দানধ্ম, গার্হস্থাধর্ম, দাম্পত্য-ধর্ম প্রভৃতি সমস্ত বিষয়েই মহারাজ কি আশ্চর্যা পারদশী ছিলেন, তাহা অনির্বাচনীয়। মহারাজের কতই গুণ! বোধ হয়, প্রাক্তনসংস্পার ভতৎকালে আবিভূতি হইত। মহারাজের ঐশর্য্যের ইয়তা নাই; কেবল অনপত্যত্থে ত্থেত। একদিবস নুপতি মুনিপৃঙ্গৰ কুলপুরোহিত বশিষ্ঠ গুরুদেৰের শ্রীচরণারবিন্দে সাষ্টাঙ্গ প্রণতিপূর্ব্বকরপ অভিবাদনাতে জিজাসা করিলেন (৪):

স্বামিন্ পুত্রাঃ কথং মে স্থ্যঃ সর্বলক্ষণলক্ষিতাঃ।
পুত্রহীনস্য মে রাজ্যং সর্বাং ছঃখায় কল্পতে ॥ ৫ ॥
নানপত্যস্য লোকোইস্ত শ্রুতি রেষা সনাতনী ॥৬॥
অপুত্রস্য ধনং ব্যর্থং অপুত্রস্য ফলং যশঃ।
অধোগতি-রপুত্রস্য ভবতীত্যকুশুশ্রুমঃ॥ ৭ ॥
ধিগ্জন্ম তেষাং বোগীশ যেযাং গেহেহনপত্যতা।
নিরাশঃ পিতরো-যান্তি হ্যনপত্যস্য নিত্যশঃ॥ ৮ ॥
অতো-হত্রবীদ্বশিষ্ঠ-স্তং ভবিষ্যন্তি স্থতা স্তব।
চত্ত্রারঃ সন্ত্রসম্পন্না-লোকপালা-ইবাপরে॥ ৯ ॥
শান্তাভর্ত্তার মানীয় ঋষ্যশৃঙ্গং তপোধনং।
অস্মাভিঃ সহিতঃ প্ত্রকামেষ্টিং শীঘ্র-মাচর॥ ১০ ॥

সামিন্! দর্মলকণলক্ষিত পুত্রমুখসন্দর্শন সম্পত্তি কোথার ? কারণ পুত্রীন রাজার সমস্তরাজ্য হঃখভোজ্য, পুত্রীন জনের পরলোক নাই, বিশেষ অপুত্রের ধন, ফল, যশ ও যাহা কিছু বৈদিক বা পৌরাণিক, পারলোকিক কার্য্য সমস্তই ব্যর্থ, অস্তে অধাগতি, ইহা আপনার নিকট বিলক্ষণ শ্রুত আছি। হে বোগীশ! সেই সকল পুরুষের ধিক্জন্ম,যাহাদিগের সন্তাননাই! প্রত্যুত্ত পিতৃলোকের পিওলোপ, ইত্যাদি রাজা দশরথের বহু-বিধ বিলাপ শ্রবণ করিয়া ব্যাকৃলিতচিত্ত ক্লপুরোহিত বশিষ্ঠ-মুনি তপোবলে বলিতেছেন (৫)(৬)(৭)(৮)। মহারাজ দিতীরলোকপালসম ও মহাসত্ত্যক্ষর আপনকার চারিটি পুত্র-সন্তান জান্মবে (৯)।

সম্প্রতি শাস্তাপতি তপোধন ঝযাশৃন্ধ মুনিকে আনয়নকরিয়া
আাাাদিগের সহিত শীঘ্র পুত্রেষ্টিযাগামুঠান করন্ (১০)। একদা

একদা স জনার্ষ্টিকারণাৎ স্থমহাতপাঃ।

আনীতো-লোমপাদেন অনার্ষ্টিনির্ভয়ে॥ >>॥

শান্তাং ক্যাং দদৌ তিয়ে দক্ষিণার্থে মহীপতিঃ।

ইতি শ্রুষা দশরথঃ পপ্রচছ মুনিসভ্রমম্॥ >২॥

কো-বা ক্যা স্তঃ কীদৃক্ প্রভাব-স্তুম্য তদদ।

ইতি শ্রুষা বচ স্তন্য মুনিঃ প্রোবাচ সারদম্॥ >০॥

বিভাগুক্স্য বিপ্রষ্কে-স্তুপনা ভাবিতাজ্মনঃ।

আমোঘবীর্যুম্য স্তুতঃ প্রজাপতিসমত্যুতিঃ॥ >৪॥

শৃণু পুত্রো যথা জাত-থায়শৃঙ্কঃপ্রভাপবান্।

মহাহুদং সমাসাদ্য কাশ্যপ স্তুপনি স্থিতঃ।

দীর্যকালপরিশ্রান্ত-খ্যি- দ্বের্যিসভ্মঃ॥ ১৬॥

দীর্যকালপরিশ্রান্ত-খ্যি- দ্বের্যিসভ্মঃ॥ ১৬॥

অনার্ষ্টকারণনশতঃ লোনপাদ মহারাজকর্ত্ব আনীত হইয়া অমহাতপা মূনিপুঙ্গব ঝ্রাশৃন্ধ অনার্ষ্টিদোবশান্তিভ্ন সর্বাঙ্গো-পেত সপ্ততন্ত নির্কিলে সমাপনকরিলে, পূর্ণননোরথ নরপতি লোনপাদনহারাজ কর্মসান্ধতার্থ বাচংব্মম্নিকে শান্তানান্ত্রীক্তা দানকরিলাছিলেন। এইরূপ বশিষ্ঠবাক্য শ্রবণকরিয়া মহারাজ দশরথ মুনিস্ত্রম বশিষ্ঠ মহাশ্যকে স্বাভিপ্রায় প্রকাশকরিতে-ছেন (১১) (১২)। ভগবান্ধ্র্যাশৃঙ্গনামক তপোধন কে এবং কেন্ মহাত্মার তনয়, কীদৃক্পভাব, কিহেতু ঝ্রাশৃঙ্গনাম, এই সমস্ত জানিতে বাসনাকরি, প্রকাশকরিয়া কিন্তরের চিন্তা দূর কর্মন। এইরূপ দশরথের বাক্য শ্রবণকরিয়া মহাত্মত্ব বশিষ্ঠম্নি ধ্রাশৃঙ্গর তাবং বিবরণ কথনে সাদরে সক্ষম হইলেন (১৩)। নরনাথ ঝ্রাশৃঙ্গমূনি কোন্ মহাত্মার তনয়, তাহা প্রকাশকরি, শ্রবণকর্মন। তপোবলপ্রভাবে সর্বাদা পরমাত্মত্ম্বিভাবিত অনোঘরীর্য্য বিভাত্তক বিপ্রাধ্যির পুত্র, তিনি প্রজাপতিসম্প্রভ (১৪)।

পরে উক্ত ম্নির কিরপে প্রভাব ও কিপ্রকারে জন্ম, পুত্রস্বর্প ব্যাখ্যানকরি, প্রবণকর। অসীমতেজা অসাধারণ প্রভাপ
ঝ্যাশৃক্রন্নি বালক হইলেও বৃদ্ধসন্ত (১৫)। মহারাজ একদিবস
মহাহ্রদমধ্যে স্মাধিস্থ দেবর্ষিসন্তম কশ্মপপুত্র বিভাগুক মুনির

তদ্য রেতঃ প্রচন্ধন দৃষ্ট্যাপারসমূর্ববিশীম্।
অপ্লুপম্পৃশতো রাজন্ মৃগী তচ্চাপিবত্তদা ॥ ১৭ ॥

দহ তোয়েন ত্ষিতা গুর্বিণী সাভবত্তঃ।

দা পুরোক্তা ভগবতা প্রক্ষণা লোককর্ত্ণা ॥ ১৮ ॥

দেবকন্মে মৃগী ভূত্বা মুনিং দুয় বিমোক্ষ্যদে।
অমোঘসাদ্যেশ্চিব ভাবিত্বাদৈবনির্মিতৈঃ ॥ ১৯ ॥

তদ্যাং মৃগ্যাং সমভবত্ত্যা পুত্রো-মহান্ধিঃ।
ঝাষ্যশৃঙ্গ-স্তপোনিষ্ঠো বন-এবাভ্যবদ্ধত ॥ ২০ ॥

তদ্যর্থেঃ শৃঙ্গং শির্দি রাজ-নাদী-মহাত্মনঃ।
তেনর্ধ্যশৃঙ্গ-ইত্যেব সদা স প্রথিতোহ্ভবৎ ॥ ২১ ॥

ন তেন দৃষ্টঃ পূর্ব্বোহ্মাঃ পিতু-রম্মত্র মানুষঃ।
তত্মাত্ত্যা মনো-নিত্যং ব্রক্ষচর্য্যেইভবন্ধ প ॥ ২২ ॥

এতিত্মিন্নের কালে তু স্থা তব মহামতে।
তেন কামাৎ কৃতং মিথ্যা ব্রাক্ষণস্যেতি ন প্রভিত্ম॥২৩

দীর্ঘকাল পরিশ্রান্তিবশতঃ (১৬) উর্বানীনারী অপ্রাবলোকনে জলন্মণা রেতঃপাত হয়। পরে তৃষ্ণাতুরা মৃগী দেই জলপান করিয়া গর্ভবতী হইয়াছিল। মহারাজ ঐ মৃগীকে পূর্ব্বে দেবকভাবস্থায় স্প্টিকর্তা ভগবান্ত্রনা কোন অপরাধে অভিসম্পাত করেন (১৭) (১৮)। হে দেবকন্যে। তৃমি মৃগী ইইয়া মৃনিপুত্র প্রস্বকরিলে, অভিশাপ হইতে পরিত্রাণ পাইবে। অব্যর্থ বীর্যাহেতু ও দৈবনির্বারশতঃ দেই মৃগীর গর্ভহইতে বিভাওকম্নিকুমার মহান্ ঋষি তাপসকুঞ্জর ঋষ্যশৃঙ্গমূনি সমৃত্ত হইয়া বনমধ্যে ক্রমশঃ বর্দ্ধিত হন্ (১৯)(২০)। অনন্তর প্রজানাথ ম্নিজননী মৃগীর মন্তকে শৃঙ্গ বিদ্যাননে ম্নিমন্তকেও অবভাই শৃংসাৎপত্তি সন্তাবনাহর, এই কারণ ঋষ্যশৃগনামধের ভূতলে প্রতিষ্ঠিতইইলেন (২১)। পরে উক্ত মৃনি জনকভিন্ন অভ্যানব আর নিরীক্ষণকরেন নাই, এই হেতু ঋষ্যশৃঙ্গ মৃনির চিত্ত সর্বদাই ব্রশ্বচর্যাম্প্রানে পাকিত (২)।

ইত্যবসরে, হে মহামতে ! তব স্থা লোমপাদনামা নুগতি
বান্ধণসম্বনীয় কোন বস্তবিচারে জ্ঞানকৃত মিণ্যা কৃথিয়াছিলেন

স ব্রাহ্মনিং পরিত্যজ্য-ন্তদা বৈ জগতঃ পতিঃ।
প্রোহিতাপচারা-চ্চ তদ্য রাজ্যো-যদ্চ্ছয়া॥ ২৪॥
নববর্ষং সহস্রাক্ষ-ন্ততঃ পীভান্ত তৎপ্রজাঃ।
স ব্রাহ্মণান্ পর্য্যপুচ্ছ-ত্পোযুক্তা-ন্মনীষিণঃ॥ ২৫॥
প্রবর্ষণে হ্লবেক্রদ্য সমর্থান্ পৃথিবীপতে।
কথং প্রবর্ষেৎ পজ্জন্য-উপায়ঃ পরিদৃশ্যতাম্॥ ২৬॥
ত-মুচ্-শ্চেদিতা-ন্তেন হাক্কতানি মনীষিণঃ।
তত্র হেকো-মুনিবর-ন্তং রাজান-মুবাচ হ॥ ২৭॥
ক্পিতা-ন্তব রাজেন্দ্র ব্রাহ্মণা-নিক্ষ্তিং চর।
ঝাষ্যশৃঙ্গং মুনিহ্লত-মানয়ন্ত চ পার্থিব॥ ২৮॥
বালোহয়মনভিজ্ঞোহপি নারীণা-মার্তবেরতঃ।
স চে-দ্বতরে-দ্রাজন্ বিষয়-ন্তে মহাতপাঃ॥ ২৯॥

(২৩) সেই অপরাধে ত্রাহ্মণগণ উক্ত নরপতিকে অসাধারণ দোষে দৃষিত জানিয়া কহিলেন যে, মহারাজ ! পুরোহিতের অপ-চারহেতু আত্মেচ্ছার অধীনতাবশত: সমস্ত ব্রাহ্মণগণকর্তৃক আপনি পরিত্যজা হইলেন, এমত নছে; দেবরাজ পুরন্দরও ভবতের দোযাত্মসন্ধানে ভবদীয় রাজ্যে নববর্ষসহস্রপর্য্যন্ত বারি বিভরণে বিরত হইয়া যুগ্দীয় প্রজাপীড়নে ষত্মবান হইয়াছেন। পরে অতিবিষশ্লবদন লোমপাদ নৃপতি বান্ধণগণের মৃথপন্ম-বিনির্গত এই অশ্রুতবাক্য শ্রুবণকরিয়া, হে পৃথিবীপতে ! ইন্দ্রের প্রবর্ষণে বিশেষ সক্ষম তপোযুক্ত তাবৎ ব্রাহ্মণগণকে জিজ্ঞাসা कतिशा कश्टिलन (य, क्षेक्रांत कि छेशांत्र कतिहल, शब्कं छ जनमान कद्र, देश छे भागा खता बधातरण महभरतम अनारन मनी म ताका রক্ষাকরিতে অনুমতি হয় (২৪)(২৫)(২৬)। অনস্তর তাবন্সনীষিগণ लामशान नद्रशिककिर्दनन, महादाख ! जाशनकात यनि शृर्व-मक्षिত स्कृति थारक एरवरमवत्राक हेन्सजीवमान প্रजागरनत कीवनमान कतिर्जादिन। अंटे कथा मनीयिशन किट्टन मग्राज-একজন মুনিবর লোমপাল নরপতিকে বলিলেন বে, (২৭)। হে পার্থ তামার প্রতি সমস্ত বিপ্র কুপিত আছেন; একণে ষদ্যপি বালক ও সর্কবিষয় অনভিজ্ঞ, তথাপি বছপ্রাচীনসন্যত মহারাজ স্হাতপা বিভাওকম্নিকুমার ঋযাপৃক ম্নিপুলৰ যদি সদ্য প্রবেষ ৎ পর্জ্জন্য-ইতি তে নাম্র সংশয়ঃ।

এতচ্ছু ছা বচো-রাজন্ কৃষা নিক্কতিমাল্পনঃ॥৩০॥

দ পত্বা পুন রাগচ্ছেৎ প্রসমের দিজাতির।

রাজান- মাগতং দৃষ্ট্যা প্রতিসংজন্তির প্রজাং॥৩১॥

ততোহঙ্গপতি-রাহুয় সচিবান্ মন্ত্রকোবিদান্।

ঝায়শৃঙ্গাগমে যক্ত্র-মকরো-মন্ত্রনিশ্চরাৎ॥৩২॥

সোহধ্যগচ্ছ-ত্রপায়-স্ত তৈ-রমাত্যৈ-মহীপতে।

শান্ত্রজ্ঞি-রথিলার্থ জ্ঞৈ-নিত্যঞ্চ পরিনিষ্ঠিতৈঃ॥৩০॥

তত্র ছাজ্ঞাপয়ামাদ বারমুখ্যা-মহীপতিঃ।

বেশ্যাং পর্বত্র নিফাতা- স্তা-উবাচ মহীপতিঃ॥৩৪॥

ঝায়াশৃঙ্গ-মুষেঃ পুক্র-মানয়ধ্ব-মুপায়তঃ।

লোভয়িয়া দ্মাশ্বাদ্য বিষমং মম শোভনাঃ॥ ৩৫॥

প্রমদাগণের আর্ত্তবে আশক্ত হইয়া ভবদীয় রাজ্যে ভ্রভাগমন করেন(২৮) (২৯), তাহা হইলে পর্জ্জন্ম সদ্যঃ প্রবর্গকরিবে এবং ছম্বতি হইতে নিজনিম্বতিলাতে নির্ক্তিয়ে রাজ্যরক্ষা করিতেও শব্য হইবেন, তবিষরের জমুমাত্র সন্দেহ নাই। পরে মুনিবর হইতে সাতিশয় আহলাদজনকবাক্য প্রবণে প্রস্কৃতীয়া লোমপাদ ন্পতি নিজনিম্বতিলাভ করিবার বাসনায় ফলবৎ প্রদক্ষিণাভিবানম্তির্ক্তিয়াঘারা তাবৎ বিপ্রগণকে স্বসন্তই করিয়া নিজ্বাজ্যানী চম্পানগরীপ্রতি সাবধান হইলেন (৩০)।

অনন্তর সমাগতলোমপাদন্পতিদর্শনে প্রজাগণ সমস্ত্রমগাত্রোখান পূর্বক বন্দনাদি করিতেলাগিল (০১)। পশ্চাৎ
অঙ্গণতি লোমপাদ নূপতি সমস্ত্রবিৎ মন্ত্রিকে সাদরে সমাহ্বান
করিয়া রাজ্যে বিভাওকম্নিকুমার ঋষ্যশৃঙ্গম্নির ওভাগমন
বিষয়ে বন্ধসহকারে মন্ত্রণার স্থিরতর হইলে (০২), নিত্যপরিবেষ্টিত নিথিলশাস্ত্রার্থ পারদর্শি অমাত্যবর্গসহিত (সম্যক্) সত্রপার
সমবগত হইয়া কহিলেন, হে কোশলাধিপতে! পরমকার্ফণিক
সভাধিপতি লোমপাদ রাজা স্ক্রিক্মকুশলা ক্তিপয় বারাধ্রণাদিগকে স্বিধ্রে আনিয়া আহ্দেশ প্রদানে সাহসী হইয়া (০০)
(০৪), কহিলেন, ছে কুল্ক্মিঃ! অশেষলোভ প্রদর্শন প্রঃস্ক

তা-রাজভয়ভীতা-শ্চ শাপভীতা-শ্চ যোষিতঃ।
অশক্য-মূচু-স্তৎ কর্ম বিবর্ণগতচেতসং॥ ৫৬॥
তত্র ত্বেকা বারযোষা রাজান-মিদ-মত্রবীৎ।
প্রযতিষ্যে মহারাজ তমানেতুং তপোধনম্॥ ৩৭॥
অভিপ্রেতাং-স্ত মে কামাং-স্ত-মনুজ্ঞাতু-মর্হদি।
ততঃ শক্ষোম্যানিয়িতু-মুয্যশৃঙ্গ-মুষ্যে স্থতম্॥ ৩৮॥
তদ্যাঃ দর্ব্ব-মভিপ্রেত-মনুজানীৎ দ পার্থিবঃ॥ ৩৯॥
নাবি রক্ষা-ম্থা-রোপ্য ফলকারাংশ্চ মোদকান্।
স্বর্সাং-শ্চ স্থগদ্ধীনি মধ্নি রদ্বন্তি চ॥ ৪০॥

বিষমাধাসযুক্ত শ্রীযুক্ত বিভাওক ঋষিত্বত ঋষাশৃক্ষমুনি মহাশ্রের মদীয় রাজ্যে শুভাগননার্থ ষথোচিত যত্ন করিবে (০৫)।
এইরূপ নৃপতি বারাঙ্গণাগণকে আজ্ঞা প্রদান করিলে, বেশ্রাগণ
একে রাজভয়ভীতা, তাহে যোষিদ্বিধায় শাপভয়াদি উভয় ভয়
ভীত হইয়া প্রথমতঃ বিবর্ণগতচিতে বিষপ্রবদ্দনে কর্তব্যকার্য্যে
অপারগতা জানাইল (৩৬)।

পরে বারাঙ্গণাগণমধ্যে কোন একা বারনারী নৃপতিকে কহিতেছে, মহারাজ ! উক্ত তপোধনকে আনিতে সুমর্থাহই, যদি মদীরাভিপ্রায়ে স্বমত সংস্থাপন করেন, তাহা হইলেই আগন্তুক কার্য্যে সাহস করিতে, অর্থাৎ ঋষিপুত্র ঋষ্যশৃঙ্গমূনিকে আনিতে পারি (৩৭) ৷ এই কথা বলিয়া ভৃষ্ণীস্তাবাবলম্বনে নৃপতি সন্মুখে অঞ্জলিবদ্ধা বারনারী দণ্ডায়মানা রহিলে, রাজা কহিলেন, স্কুদরি ! ভদ্রং; তুমি যাহা অভিপ্রায় করিয়াছ, তাহাই উত্তম প্রামর্শ। এই বলিয়া নর্মাথ তন্মতে অহুমত হইলেন (৩৮)(২৯)

ততো-রূপেণ সম্পন্না বয়সা চ মহীপতে। স্ত্রিয়-আদায় কাশ্চিৎ সা জগাম বন-মঞ্জসা ॥ ৪১ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে ঋষ্যশৃঙ্গোপাখ্যানে তৃতীয়ো-হধ্যায়ঃ ॥ ৩ ॥

ভদনস্তর তরণীমধ্যে ফলপত্রবিশিষ্ট ক্কত্রিম নানাবিধ বৃক্ষরোপন করিয়া স্থান স্থান্ধ মধুর রসভাবযুক্ত নোদক পড্ড্ কাদি নানাবিধ ভক্ষ্যভোজামাল্যভাষ্ লাদি লইয়া নানা স্থললিত ভৈরবসন্তাদিষড় রাগ ভৈরবী পুড়তি ষট্তিংশদ্রাগিণীসংগুক্ত যন্ত্রভাত্তিত নিষাদাদি বর্ত্তমান সপ্তান্থর আলাপন তালমান-সহিত নানা রসভাবযুক্ত নাট্যোক্তি সম্পুদায়ক অঙ্গবিক্ষোনপূর্বক নৃত্যগীতাদি কীর্ত্তনকরতঃ বারাঙ্গণাত্ত্র সমভিব্যাহারে রপ্যোবনসম্পন্না প্রধানা বারনারী বনবিচরণে, অর্থাৎ ঋ্ষাণ্ত্রন্ত্রক্ষারাশ্রমে শীল্প গমন করিয়াহিল (৪০) (৪১)।

এই শ্রীমদধ্যাস্থরামায়ণের উমামহেশ্বরকথোপকথনে ঝুধ্যশৃঙ্গ উপাধ্যানে তৃতীয় অধ্যায় উক্ত হইল।

চতুর্থোঽধ্যায়ঃ ৷

মহেশ্ব উবাচ।

সাতৃ স্থিয় কিয়-দ্বং সংস্থাপ্যা-শ্রম-মৃত্রমম্।
সন্দেশালৈ ব নৃপতেঃ অবুদ্ধা হৈব রাঘব ॥ ১ ॥
নানাপুষ্পাকলৈ ব কৈঃ কৃত্রিম-রূপশোভিতম্।
কৃষা নাব্যাশ্রমং রম্যং অভুতং সৌম্যদর্শনম্ ॥ ২ ॥
ততো নিরূপ্যতাং নাব মদুরে কাশ্যপশ্রমাৎ।
বাহয়ামাস পুরুষে বিহারং তস্ত বৈ মুনেং ॥ ৩ ॥
ততো তহিতরং বেশ্যাং সমাধায়েতি কর্তৃতাম্।
দৃষ্ট্যান্তরং কাশ্যপস্য প্রাহিণোদু দ্বিসম্মতাম্ ॥ ৪ ॥
সা তত্র গথা কুশলী তপোনিষ্ঠস্য সরিধা।
আশ্রন্ত সমাসাদ্য দদর্শ ত মুষ্টে হুত্রম্।
উবাচ মধুরং বাক্যং শ্রুক্রং মধুরয়া গিরা ॥ ৫ ॥

কচ্চি-মুনে কুশলং তাপদানাং
পিতা চ তে কচ্চি-দহীনতেজাঃ।
কচ্চিৎ প্রিয়া ন রমতে চাশ্রমেহস্মিন্
ছাঃ বৈ দ্রুষ্টুং সাম্প্রতং চাগতোহস্মি॥ ৬॥

তচিত্তো বৰ্দ্ধতে তাপসানাং
কচিত্তরামূলকলং প্রভূতম্।
কচিত্তরা পীয়তে চৈব বিপ্র
কচিত্ত প্রাধ্যায়ঃ ক্রিয়তে চর্য্যশৃঙ্গ ॥ ৭ ॥
ইতি শ্রুত্বা বচ-স্তদ্য মুনিবেশধরদ্য হি।
উবাচ বাক্যং বাক্যজ্ঞাং মুনিবেশবিধারিণীম্ ॥ ৮
ঋদ্ধ্যা ভবান্ জ্যোতি-রিব প্রকাশতে
মত্যে চাহং ত্বা-মভিবাদনীয়ম্।
পাদ্যং বৈ সংপ্রদাস্যামি যথা
দিধ্যেৎ কর্মকলানি চৈব ॥ ৯ ॥
কৌশ্যাং র্ন্যামাস্যথোপবেশং
কৃষণজিনে বার্তায়াং স্থায়াম্।
ক চাশ্রম স্তব কিং নাম চেদং

ব্ৰাক্ষ্যং ভাঙি তদেব ব্যক্তম্ ॥ ১০ ॥

প্রথমতঃ প্রধানা বারনারী মুনিকুমারাশ্রমসমীপবর্তী কিয়দুরে থাকিয়া লোমপাদ মহারাজের আদেশান্ত্সারে এবং নিজবৃদ্ধিপ্রথিয়বশতঃ কর্ত্রিম নানাপুস্পফলবৃক্ষপত্রাদিবারা মুনিবিহার জনক নাব্যাশ্রম অতিরমণীয় নির্দাণ কবিয়া মুনির অন্তরস্থ অভিপ্রায় জানিবার বাসনায় মুনিবেশধারিণী একটী
বেখা গুপ্তচাঞ্চল্যভাবা মন্দর্গতিদারা ক্রমশঃ মুনির নিকটে
ঘাইয়া অভিমধুর বাক্যে জিজ্ঞাসা করিতেছে (১) (২) (৩)
(৪) (৫),—মুনে! কুশনীতাপসগণমধ্যে ভবৎপিতা অভি-

তেজবী। এ আশ্রমে আপনকার রমণী আপনার সহিত রমণ
বেনত ? আমি আপনকার প্রিয়াকে দেখিবার কারণ সম্পুত্তি
আসিয়াছি (৬)। ভবদীয় তপস্তা বর্দ্ধমানা হইতেছে ? অমুপ্তিম
ফলমূল ভোজন করেন ত ? নিত্যহোম ও বেদবেদাঙ্গ পাঠ হয়
তো (৭) ? এইরূপ মুনিবেশবারিণীর অতিমনোহর বাক্য শ্রবণে
মুনি মুনিবেশবারিণী বেশ্যাকে সাক্ষাৎ জ্যোতিষ্বরূপ দেখিয়া
কহিয়াছিলেন (৮),—আমি প্রণাম করি; পাদ প্রক্ষালনকর্মন;
অদ্য আনার তপস্তার্কল স্থাসিদ্ধহলৈ (০) ; কুশাস্তরণে বা ক্লঞাজিনে যথাস্থ উপবেশন কর্মন; আপনকার আশ্রম কোথায় ?
কি নাম ? বোধহর, সাক্ষাৎ ব্রহ্মণ্যদেব বিরাজ্যান (১০)।

ততো-বেশ্যা প্রত্যুবাচ দিক্তেন্দ্রং

শক্ষাযুক্তা কাশ্যপপ্যাগমে তু।

মমাপ্রমঃ কাশ্যপপুত্র রম্যস্থিযোজনং শৈলমিমং পরেণ ॥ ১১ ॥

তত্র স্বধর্মোহনভিবাদনং মে

ন চোদকং পাদ্য-মুপস্পৃশামি ॥ ১২ ॥

ভবতা নাভিবাদ্যোহহ-মভিবাদ্যো- ভবান্ময়া।

ব্রত-মেতাদৃশং ব্রহ্মন্ পরিষ্বেজ্যো ভবান্ময়া ॥ ১০॥

ইতি প্রত্যা বচ-স্তস্থ পুন-রাহ তপোধনঃ।

ফলানি পকানি দ্যানি তেহহম্

ফলানি পকানি দদানি তেইহম্
ভল্লাতকান্তামলকানি চৈব।
কর্মকানীঙ্গু দকানি তাবৎ
যথোপযোষং ফলমত্র ভুজ্জ্বু ॥ ১৪ ।
সা তানি সর্বাণি বিবর্জ্জয়িত্বা
ভক্ষ্যং মহার্হং প্রদদৌ ততোহস্ত।

মূনি ইত্যাদিরপ পরিচয়গ্রহণে প্রাথিতে হইলে, বিভাওকথির আগমনে অতিশয়শকাকুলচিতা মুনিবেশধারিণী বারনারী কহি-তেছে, হে কাশ্রপপুত্র! আমার আশ্রম অতিরমণীর; এই পর্কতহইতে তিন যোজন পথ দ্রগামী (১১)। ভাহাতে আমার অনভিবাদন নিজক্ম, অর্থাৎ আমরা কাহাকেও প্রণাম করি নাই এবং কাহারও পাদ্যজল স্পর্করি না (১২)।

আপনকার আমি অনভিবাদ্য ও আপনি আমার অভিবাদ্য। হে ব্রন্ধন্! এক্ষণে আমার এই ব্রত, যাহাতে আপনি আমাকে আলিঙ্গন করেন্ (১০)। এই কথা কহিলে, তপোষন মুনি-বেশধারিণী বারনারীকে পুনর্কার কহিতেছেন,—বহু ফল মুল প্রদানকরি, ভক্ষণ কর। বিশেষ ভল্লাতক, হ্রীতকি, আমলকী, কর্ষব, ইঙ্গুদ, নাগরক, জন্বীর, নীবার, কলার, করু, তিল, মুদ্গ, যব, গোর্ম, হৈমন্তিক মূলক, কেমুক, নারিকেল, শ্রীফল, কদল ল্যণী, শকুচ, পনস, আগ্র, মরীচ ইত্যাদি সমস্ত

তান্যযাশৃঙ্গন্য মহার্নানি ভূশং হুরূপাণি রুচিং দহু হিঁ 🎚 ১৫ 🖡 मर्गा চ महानहानि स्वक्तिविख চিত্রাণি বাসাংসি চ ভামুমস্তি। পানানি চাগ্র্যাণি ততো-গৃহীত্বা মুমোদ চিক্রিড় জহাস চোচৈ: ॥ ১৬ ॥ তদা চুচুস্বামলগগুমূলে বিলব্জমানা ফলিতা লতেৰ। পাত্রৈ-শ্চ গাত্রাণি নিষেবমাণা সমাল্লিষ-চদক্-দৃষ্যশৃঙ্গম্ ॥ ১৭ । বিলজ্জমানেব মলাভিভূতা প্রলোভয়ামাস স্থতং মহর্ষে:। অথর্যাশৃঙ্গং বিকৃতং নিরীক্ষ্য পুনঃ পুনঃ পীড্য চ কায়মদ্য। আবেক্যমানা শনকৈ-র্জগাম কুতাগ্নিহোত্রস্য তদাপদেশং ॥ ১৮ ॥

ফলমূল অত্যুত্তম, ভোজনে অতিস্থাছ। মুনি এই বলিয়া বারাসনাকে ফলদান করিলে, (১৪) মুনিবেশধারিণীবার নারী মুনিদত্ত
তাবৎ ফল পরিত্যাগ করিয়া নিজসঞ্চিত শোভিত উত্তমরসাযাদিত নানাবিধ ভক্ষান্তব্য ও স্থপক্ষমাল্য, বিচিত্ত বসন, কপুর
বাসিত্তাস্থাদিঘারা মুনিকে মথেই পরিতৃত্তকরিয়া মুনির সহিত
হাস্থপরিহাক্তআমোদপ্রমোদরপ কিয়ৎকাল বিহার করিলে,
বিলজ্জনানা ফলিতা লতা বজ্ঞপ বৃক্ষকে বারমারপরিবেইনকরে,
তজ্ঞপ বৃক্ষরপ মুনিকে লতারপা বারনারী বারমারম্পচ্সনগাত্তস্পানালিকন প্নঃপ্নংকারপীড়নাদিকরতঃম্নিকে পরমালাদসাগরে নিমগ্র দেখিয়া বিভাতকের আগমনে ব্যাক্লুচিতা বার।
নারী নৌকাশ্রমে প্লায়ন করিল (১৫) (১৬) (১৭) (১৮)।

তস্যাং গতায়াং মদনেন চিত্ত-বিচেতনঃ প্রীতবদৃষ্যশৃঙ্গঃ। তামেব চিতেন গতেন শূরো বিনিঃশ্বদ-মার্ত্তবপু-ব্বভূব ॥ ১৯ ॥ ততো-মুহূর্ত্তং হরিপিঙ্গলাক্ষঃ প্রবেষ্টিতো-রোমভি-রানথাগ্রাৎ। স্বাধ্যায়বান্ ছাউসমাধিযুক্তো-বিভাওকঃ কাশ্যপ-আবিরাসীৎ ॥ ২০ ॥ সোহপশ্য-দাসীন মুপেত্য পুত্ৰং ধ্যায়ন্ত-মেবং বিপরীতচিত্রং। বিনিঃশ্বসন্তং মুহুর্রদ্ধদৃষ্টিং বিভাগুকঃ পুত্র-মুবাচ দীনস্ ॥ ২১ 🛊 नरेत-र्यथा পূर्व-भिवामि পूज চিন্তাপর-শ্চাপি বিচেতন-শ্চ। দিনোহপি মাত্রং ত্বমিহাদ্য কি-মু পুচহামি ত্বাং ক-ইহাভ্যাগতোহভূৎ ॥ ২২ ॥ ন কল্লান্ডে সমিধঃ কি-মু তাত কচ্চি দ্বৃতং চাগ্নিহোত্রং ত্বয়াদ্য। ম্বনির্ণিক্তং ত্রুকৃত্রুবং হোমধেনু: কচ্চিৎ সৰৎসা চ কৃতা হয়াদ্য ॥ ২৩ ॥

পরে মদনমুগ্ধালসাক্ষ ঝযাশৃক প্রভৃতনিঃখাসপরিত্যাগ পূর্বক অসাধারণ পরিশ্রমবশতঃ শুক্ষবদনে বিরাজিত আছেন (১৯)।
ইত্যবসরে অগ্নিহোত্রপরারণ, হরিপিকলাক্ষ, আধ্যায়সফলসমাধি ক্ষপপুত্র বিভাশুক ঋষি ক্ষণকাল মধ্যে আত্মজাশ্রমে আসিয়া (২০) বিপরীতচিত্ত, মৃত্যু ভ্নিঃখাস্যুক্ত, উর্দ্ধিট এবস্প্রকারে ছঃখিত মুখাবলোকনে জিজ্ঞাসা করিভেছেন, (২১) পুত্র! সামান্ত বিচেতন মানবের স্তায় কি হেতু চিন্তাগর দেখিতেছি ? এত্মানে কি অদ্য কোন ব্যক্তি আসিয়াছিল ? (২২) সমিধ্করনা

ইতি শ্রুত্বা পিতৃ স্তদ্য বচো-মুগ্ধাক্ষরং পরম্। উবাচ বাক্যং বাক্যজ্ঞং পিতরং করুণাশ্বিতং ॥২৪॥

ইহাগতো-জটিলো-ত্রন্মচারী
ন বৈ ব্রন্থো নাতিদীর্ঘো-মন্থী।
স্থবর্ণবর্ণঃ কমলায়তাক্ষঃ
স্থতঃ স্থরাণা-মিব লোভমানঃ ॥ ২৫ ॥
স্থান্ধিরপ্য সবিতেব দ্বীপ্তঃ
স্থান্ধ্যাক্ষি-রতীবর্গোরঃ।
নীলা বিবিক্তা চ জটা স্থান্ধা
হিরণ্যরজ্ম্প্রথিতা স্থলীর্ঘা ॥ ২৬ ॥
স্থালম্মানা পুন-রস্য কঠে
বিদ্যোততে বিদ্যু-দিবা-স্তরীক্ষে।
ঘৌ মাংসপিণ্ডা বধরেণ কঠাদলোমশো চাপি মনোহরো চ ॥ ২৭ ॥
বিলগ্নমধ্যশ্চ স নাভিদেশে
কটিশ্চ তস্যাপি বৃহৎ প্রমাণা।

হইয়াছে ? অয়িহোত্র হবনকর্ম সম্পন্ন হইয়াছে ? ক্রক্জবাদি প্রকালন করিয়াছ ত ? সবৎসা হোমধেল প্রভৃতির ভ্রামা হই-য়াছে ? ভাবিদিনের কুশব্রজমৌঞ্জী-মেথলাদির আরোহণ করি-য়াছ ত ? (২০) জনকের এইরপ বাক্য প্রবণকরিয়া করুণাম্বিত বাক্যক্ত জনকের প্রতি ধ্বসুশৃত্র প্রতালের প্রদান করিয়া-ছিলেন্ (২৪)। পিতঃ! এস্থানে একজন জটিল আসিয়াছিলেন্। ভিনি অতিশয় রুম্ব এবং অতিশয় দীর্মও নহেন্। মহামাত্র, স্বর্ণবর্ণ, কমলায়ভাক্ষ, দেবভাগণের লোভ্রমান, (২৫) স্থামিয় রূপ, স্থাংশু সমদীপ্রিশালী, স্ভ্রক্লঞাক্ষি, স্পরিক্ষতা প্র গন্ধামাদিত হিরণারজ্জুগ্রথিত স্থামিজটা (২৬) গগণমশ্বলে বিত্যৎসম শোভায়মান জটিল কণ্ঠদেশে আলম্মানা, আর পারিজাতবিনিন্দিত ওঠাধর, এবং বক্ষঃম্বল বিরাজিত অলোমশ অতিমনোহর মাংস্পিগুছয় (২৭)ও বেদিবিল্যবং বিলয়মধান্থিত অথাস্য চীরাস্তরতঃ প্রভাতি হিরথায়ীব মম মেখলেয়ম্॥ ২৮ 🕯 অফাচ্চ তদ্যান্তুতদর্শনীয়ং विकृष्किতः পाषरग्नाः मःविदर्शेषि । পাণ্যোশ্চ তদ্বক্রচিরং নিবদ্ধৌ কলাপকা-বক্ষমালা যথেয়ং ॥ ২৯ ॥ বিচেইমানসাচ তদ্য নাভি: কুজন্তি হংসাঃ শরদীব মতাঃ। চীরাণি তদ্যান্তু তদশাননি লোমানি তদ্ব-মাম রূপবন্তি॥ ৩০॥ বক্তুঞ্চ তদ্যাদুতদর্শনীয়ং প্রব্যাহ্নতং জ্লাদয়তীব চেতঃ। পুংস্কোকিলস্যেব চ তদ্য বাণী তাং শূণতো মে ব্যথিতান্তরাত্মা॥ ৩১ म भ मगक्षिषा भूनः भंतीतः জটাত্ব গৃহ্বাত্য বন্ম্য বক্ষ্।

বক্তে প বক্তুং প্রণিধার শব্দং চকার তদ্মে জনয়েৎ প্রহর্ষ ।। ৩২ 🛭 ন চাপি পাদ্যং বহুমন্যতে-ছমো ফলানি চেলানি ময়া হৃতামি। এবং ব্রতোহস্মীতি চ মা-মবোচৎ ফলানি পাদ্যানি ন চাদদ-শ্রে॥ ৩৩ । ময়োপযুক্তানি ফলানি তস্য নেমানি তুল্যানি রদেন তেষাং। তোয়ানি চৈবা-তির্নানি মহুং প্রাদাৎ স বৈ পাতু মুদাররূপঃ । ৩৪ ।। পীত্বৈৰ যান্য-ভাষিকঃ প্ৰহৰ্ষো-মমাভব-জূ-শ্চলিতেব চাদীৎ। ইমানি চিত্রাণি চ গন্ধবস্তি লাল্যানি তস্যোদ্গ্রথিতানি পট্টে॥ ৩৫॥ ইচ্ছামি তদ্যান্তিক মেব তাত কা নাম দা ব্ৰতচ্ব্যা সু তদ্য।

নাভিদেশ আর বৃহৎপ্রমাণ নিতম্বদেশ, তাহে স্ক্রবসনাশ্রিত মম মেধলাসমা হিরগায়ী মেধলা জাজল্যমানা (২৮)।

আর ব্রহ্মচারির পদ্যুগলে কি তুরুতদর্শনীর ক্রেঞ্চিবক্
বিরাজ করিতেছে এবং করতলন্ধরে যক্ত্রপ আমার এই অক্ষমালা
তক্ষপ স্থানচির কলাপকন্বর ব্রহ্মচারির পাণিতলন্ধরে নিবদ্ধ
আছে (২৯); এবং শরংকালপ্রাপ্ত প্রমন্ত হংস যাদৃক্ সর্বাদা
শব্দায়মান হইরা থাকে, তাদৃক ব্রহ্মচারির বিচেট্টমান নাভি ও
অক্ষদীররপান আশুর্যাদর্শন লোমাবলি এবং চীর বসন (৩০)।
স্থানারলাদকর কি আশুর্যাদর্শনীয়বিহারবক্তা, বিশেষ পুংস্থোকিলোপম বাণী প্রবণে তদব্ধি আমার অন্তরান্ধা ব্যথিক
আছেন্ (৩১)। উক্ত ব্রহ্মচারী অক্ষদীয় শরার পুনঃ পুনঃ
আলিক্ষন দানে এবং কটাজুট গ্রহণে মনীয় বক্তা অরনত করিয়া

মুখে মুখ প্রণিধানকরত: কি অপূর্বে শব্দ করিয়া আনার প্রকৃষ্ট হর্য জল্পিল, তাহা বলিতে অসমর্থ (৩২); এবং অক্ষন্ত ফলমূল ও চেলবসন উক্ত জটিল বহুমানিত না করিয়া আমাকে কহেন বে,আমার এই ব্রত ভবদত্ত পাদ্য ও ফল মূলাদি স্বীকার করি না (৩৩)। অনস্তর উদাররূপ ব্রস্কচারী আমার পানার্থ উত্তম স্বস্থাহ ও ওঠাবলোপ্য নিজস্ঞিত ফল মূল আমাকে প্রদান করিলেন (৩৪)।

অভাষিক্ত ঋষি প্রহর্ষ হইয়া ব্রহ্মচারিদত ফলমূল তোরাজি পানকরিরামাত্র আমাসম্বন্ধে, বোধ হর, যেন পূলিবী চলিতা হন্ আর পট্ট স্তামারা ব্রহ্মচারিকর্ত্ক প্রথিত আশ্চর্য্যান্ধবিশিষ্ট এই সমস্ত প্রসামান্য (৩৫)। অতএব, হে তাত। এক্ষণে ব্রহ্ম-চারির নিকটে বাসকরিতে ইচ্ছাকরি। পিড়ঃ! এ ব্রভ্চর্যাব কি ইচ্ছান্যহং চরিতং তেন সার্দ্ধং

যথা তপঃ স চরত্যুগ্রকর্মা ॥ ৩৬ ॥

ইত্যেব বাক্যং মুনি-রাত্মজন্য
ক্রেহা মহাবাক্যবিশারদোহদো ।

উবাচ বাক্যং পরিশান্তয়ন্ হি

বিভাণ্ডক-স্তপনা জ্ঞাততত্ত্বঃ ॥ ৩৭ ॥
রক্ষাংসি চৈতানি চরন্তি পুত্র
রূপেণ তেনাভূতদর্শনেন ।
অতুল্যবীর্যাণ্য-তিরূপবস্তি
বিল্লং সদা তপন-শ্চিন্তয়ন্তি ॥ ৩৮ ॥
ন তানি সেবেত মুনি-র্যতাত্মা
ফলানি পেয়ানি মধ্নি তানি ।

মাল্যানি চৈতানি ন বৈ মুনীনাং
গ্রাহ্মাণি চিত্তোৎপলগন্ধবস্তি ॥ ৩৯ ॥

রক্ষাংসি তানীতি নিবার্য্য পুত্রং
বিভাওক স্তপদে নির্জগাম ।
যদা পুন: কাশ্যপো-নির্জগাম
ফলানি হর্তুং বিধিনা বনা দ্বি । ৪০ ।
তদা পন-লে ভিয়িতুং জগাম
সা বারযোষা মুনি-মুষ্যশৃঙ্গং ।
দৃষ্টেব তা-মুষ্যশৃঙ্গং প্রহুক্তঃ
সংভ্রান্তরপো-পত্যপত-ভদানীং ॥ ৪১ ।
প্রোবাচ চেনাং ভবদা শ্রমায়
গচ্ছামি যাব-ম পিতা মেতি ।
ততো বেশ্যা কাশ্যপশ্রৈকপুত্রং
প্রবেশ্য যোগেন বিমুচ্য নাবং ॥ ৪২ ॥
প্রমোদয়ন্ত্যো-বিবিধৈ-রুপায়ৈরাজগা্ব-রঙ্গাধিপরাজধানীং ।

নাম ? ব্রন্ধচারির সহিত এই ব্রতাচরণ করিতে আমি বিলক্ষণ বাসনা করি; যেহেতু সেই ব্রন্ধচারী এই ব্রতাচারণ করিয়াউগ্রাক্তর্যাছেন্ (৩৬)। অনন্তর মহাবাক্যবিশারদ, তপসাজ্ঞাতসমন্ততত্ব বিভাপ্তক মুনি আত্মজের এইরপ বাক্য প্রবণ করিয়া নানাবিধ হিতবাক্যরপ জলসেকঘারা কামবাণানল-দক্ষচিত্ত তনরকে সাম্বনাকরতঃ কহিয়াছিলেন (৩৭),—পুত্র! আশ্র্যাদর্শন হেতু মন্মতে বিবেচনা হর যে, এস্থানে সেই সমস্ত রাক্ষসগণ বিচরণে আসিয়া থাকিবে; কেন না, ভাহাদিগের শোধ্য বীর্যা ঔদার্য্য ক্রপ গুণের তুলনা নাই। স্বাভাবিক তাহারা তপস্থার বিল্লাচরণ সর্ব্বদা করিয়া থাকে (৩৮)। সংবতাম্মা মুনিগণ তাহাদিগের সহিত একত্র কথন বাস করেন নাই এবং অত্মদত্ত কলমূল ও মধুপান করেন্ নাই, তাহা ধর্ম্মান্ত বিশেষ নিষেধ আছে, আর বিশেষ চিত্তোৎপলগন্ধস্থক বাল্য মুনিগণের স্থান্থ (৩৯)। পরে সেই সমস্ত রাক্ষাদ

বলিয়া সাভশয়মেহবশতঃমন্তমাতক্ষবৎ ধৈর্যাগুণাবলম্বনে অসহ-মান পুত্র ঋষাশৃক্ষকে বারম্বার নিবারণক্ষম পিতা কাশুপ বিভাওকম্নি বিধিবোধিত তপভার নিমিত্ত কাননহইতে ফলক্স্মসবিধ্ সঞ্যানবাসনায় যৎকালে আশ্রমান্তর প্রস্তান করেন, তৎকালে ব্রন্ধচারিরপ্রারিণী বারনারী ঋষাশৃক্ষম্নির নিক্ট পুনরায় উপস্থিতা হইল (৪০)।

অশেষ লোভদর্শনুলালসায় যৎকালে বারনারী ঋষ্যশৃদ্ধ
সূনির নিকট উপস্থিতা ইইল। তৎকালে প্রস্থাইচিত ঋষ্যশৃদ্ধ
বারনারীকে দৃষ্টমাত্রেই সদংভ্রাস্তরূপে গাত্রোখান (৪১) কিরিয়া বারনারীকে কহিলেন যে, যাবৎকাল আমার পিতা
এ আশ্রমে না আসিবেন, তাবৎকাল ভবদীয় আশ্রমে আমি
ভতাগমন করিব। পরে বারনারী মুনির নিকট এই কথা শ্রবণমাত্র কোন যোগংলে পর্ণশালার প্রবেশ করিয়া কাশ্রসের
শ্রেষ্টপূত্র ঋষ্যশৃদ্ধনুনিকে সর্ক্রিবিয় আনশক্ত জীবাজ্বসর্মাত্রভেন্তের অভেদচিত্তনরূপ সমাধি ভদ্ধ করিয়া তরণীমধ্যে অবরোহ্ব করাইল (৪২)। পশ্চাৎ অশেষ উপায়ে ঋষ্যশৃদ্ধমুনি-

অন্তঃপুরে তন্ত নিবেশ্য রাজা
বিভাণ্ডকস্থাত্মজমেক পুত্রম্ ॥ ৪০ ॥
দদর্শ দৈবং সহসা প্রবৃত্তীমাপর্য্যমাণঞ্চ জগজ্জদেন ।
স লোমপাদঃ পরিপূর্ণকামঃ
স্থতাং দদৌ ঋষ্যশৃঙ্গায় শান্তাম্ ॥ ৪৪ ॥
ক্রোধপ্রতীকারকরঞ্চ ক্রে
গা শৈচব মার্গেরু চ কর্ষকাণি ।
বিভাণ্ডকস্যাত্রজতঃ স রাজা
পশৃন্ প্রভূতান্ পশুপাংশ্চ বীরান্ ॥ ৪৫ ॥
সমাদিশৎ পুত্রমার্গী মৃহর্ষিবিভাণ্ডকঃ পরিপৃচ্ছেদ্-যদা বঃ ।
স বক্তব্যঃ প্রাঞ্জলিভি-ভ্বদ্ত্তঃ
পুত্রস্য তে পশবঃ কর্ষকঞ্চ ॥ ৪৬ ॥

অথোপজাত দ মুনি শ্চুকোপ
স্বমাশ্রমং ফলমূলং গৃহীতা।
অব্রেষমাণশ্চ ন তত্র পুত্রং
দদর্শ চুকোধ ততো-ভূশং সং॥ ৪৭॥
ততঃ স কোপেন বিদীর্যামাণআশঙ্কমানো-নৃপতে-বিধানম্।
জগাম চম্পাং প্রতিবীক্ষ্যমাণস্ত-মঙ্গরাজং সপুরং সরাষ্ট্রম্ ॥ ৪৮॥
স বৈ প্রান্তঃ ক্ষুধিতঃ কাশ্রপ-স্তান্
ঘোষান্ দেশান্ সাদিচরান্ সম্জান্।
গোপৈশ্চ তৈর্বিধিবৎ পূজ্যমানোরাজেব তাং রাত্রি-ম্বাস তত্র ॥ ৪৯॥
আবাপ সৎকার-মতীব তক্ত
প্রোবাচ কস্য প্রহিতাঃ স্থ গোপাঃ।

म्भि ज्याहारत मा कि भन्न अर्मानमान वाताक्र नाग जका थिल-রাজধানী সমুপস্থিত হইলে, বারাঙ্গাত্রেসমভিব্যাহারে কাশুপ বিভাওকপুত্র ঋষাশৃঙ্গমুনি রাজ্ধানী আদিয়াছেন, এইকথা দৃচমুথাৎ প্রবণমাত্রে সাতিশয়আনন্দিতি নৃণতি অন্তঃপুরমধ্যে মুনিকে প্রবেশ করাইবামাত (৪০) দৈব্য অমৃতবর্ষণকরতঃ জগৎসংসার পরিপুরণ করিলেন্। এই অলোকিক ব্যাপার দর্শনে পূর্ণমনস্কাম লোমপাদনরপতি ঋষ্য-শৃঙ্গন্কে শান্তানামী ক্লাপ্রদান করিলেন (৪৪)। অনন্তর অংথজের অপেষণার্থ রাজ্যে অবশ্যই গুভাগমনকারী বিভাওক-মুনির ক্রোণপ্রতিকারকর কতিপন্ন স্বৎসা ধেমুও কর্ষকগণ প্রভূত পণ্ড এবং বীরপশুপদকল পথিমধ্যে নরপতি লোমপাদ স্থানে স্থানে নিয়োজিত করিয়া (৪৫) তাহাদিগকে লোমপাদ নরপতি এই অনুমতি করিলেন্ ষে, পুত্রমার্গী মহর্ষি বিভা-ওকমুনি এপর্যান্ত আসিয়া, এই সকল পশু ও পশুপাল কোন ताजात ? এই कथा यथन टाभानिशतक जिल्लामा कतिरवन, ত্যন তোমরা কুতাঞ্লিপূর্বক অতিবিনীতভাবে কছিলে যে,

এই সমস্ত পশু ও কর্ষকগণ মহাশয়ের পুত্রের (৪৬)। অনস্তর বহুক্ষণ পুত্রদর্শনলালসায় সাতিশ্বোৎস্ক কলম্লহস্ত অগ্নিহোত্র-পরায়ণ বিভাওকম্নি অবিলম্বে আশ্রমপদপ্রাপ্তে আশ্রমে পুত্রকে না দেথিয়া ইতস্ততঃ অন্বেষণকরতঃ নিভাস্ত ক্রোধ-পরবশ হইলেন্ (৪৭)। পশ্চাৎ ক্রোধাগ্রিবিদীর্য্যাণ মূনি লোমপাদনপতির চরিত্রের চাতুর্যুতা আশঙ্কা করিয়া জ্রবিক্ষেপে সপুর সরাষ্ট্র অঙ্গরাজ অবলোকনকরতঃ চাম্পানগরী প্রতি ধাব-যান হইয়া (৪৮) কিয়দ্ধুরে আসিয়া পথিমধ্যে শ্রাস্ত ও ক্ষ্পিত কাশ্রপ ঘোষ দেশ প্রভৃতি প্রচূর পশ্বাদিবিভূষিত বিলক্ষণ-সম্পত্তিযুক্ত নগর দেখিয়া তত্রস্থ গোপগোপিকা গোপবালককর্ত্রক রাজবৎ যণাবিধি পূজ্যমান মূনি এক রজনীকাল অতিবাহিত করিয়া (৪৯), অতিসৎকারপ্রাপ্ত মূনি তত্ত্বস্থ পশুপালক গোপগণকেজিজ্ঞাসা করিলেন যে,ওহে বাপু গোপগণ। ভোমরা কাহাকর্ভ্রক প্রেরিত হইয়াছ ? এই কথা শ্রবণমাত্র অতিবিনীত ভাবে গোপগণ মূনির নিকট ক্ষতাঞ্জলিভাবে আদিয়া "এই

উচু স্তত তেহভূগেগম্য সর্বে ধনং তবেদং বিহিতং স্কৃতস্য । ৫০॥। এবং সদেশেষভিপূজ্যমান- * खाः-रिम्हरः मृगुन् सर्द्धलाभान्। প্রশান্তভূয়িষ্ঠরজাঃ প্রহাটঃ সমাসসাদাঙ্গপতিং পুরস্থম্ ॥ ৫১ দ পৃজ্জিত-স্তেন নরর্ষভেণ ममर्भ भूजः मिति (मत-शिक्तः। শাস্তাং সুষাং চৈব দদৰ্শ তত্ত্ৰ त्मीनाभिनौभूकत्रखीः यत्थव ॥ ৫२ ॥ আমাংশ্চ ঘোষাংশ্চ হৃতস্য দৃষ্ট্রা শান্তাঞ শান্তস্য পরঃ সকোপঃ। চকার তথ্মৈ চ পরং প্রসাদং বিভাগুকো-ভূমিপতের্নরেন্দ্রঃ ॥ ৫৩ স তত্র নিঃক্ষিপ্য স্বতং মহর্ষি-রুবাচ দূর্য্যাগ্নিদমপ্রভাব:।

সমস্ত ধন আপনার পুত্রের" এই কণা গোপগণ নিবেদন করিল (৫০)। পরে সেই দেশে এইরূপ সর্বভোভাবে পুক্রমান এবং পশুরব ও পশুপালক গোপগোপিকাদিগের মধুরালাপ-শ্রবণে প্রশাস্তভূমির্চরজা প্রহৃষ্ঠাত্মা কাশুপ পুরস্থ অঙ্কপতিকে ক্রমশঃ প্রাপ্ত ইইলেন্ (৫১)

অনন্তর, নরশার্দ্দুল লোমপাদন্পতিপৃতিত মৃনি থেন দেবালয়ে দেবরাজইক্রসমতনর এবং অলোকিকরপদেদী-পামান। সৌদামিনাসদৃশী শাস্তানায়ী পূল্বধুমুবসমবলো-কনে সুস্থচিত পুত্রের পূর্বেক্তি গ্রামপগুলোষবর্গ প্রভৃতি অতৃল ঐর্থ্য দেখিয়া বিভাগুক প্রচণ্ড হইলেও ভূমিপতির প্রতি পরম প্রেসর হইলেন (৫২)(৫০)। তৎপরে লোমপাদন্পতি-রাজ্যে পুত্র ও পুত্রবধ্ রাধিয়া স্থ্য অগ্নিসমপ্রত মহর্ষি মহারা-জার সমস্ত প্রিষকর্ম সম্পাদনান্তে ও তোমার পুত্রোৎপত্তি হইলে জাতে তু পুত্রে বনমাত্রজেথা
রাজ্ঞঃ প্রিয়াণ্যস্য সর্বাণি কৃত্যা ॥ ৫৪ ॥
স তদ্বচঃ কৃতবানৃষ্যশৃঙ্গো
যযৌ চ যত্রাস্য পিতা বস্তৃব ।
শাস্তা চৈনং পর্যাচরদ্যথা বৈ
থে রোহিণী সোম মেবং তথা সা ॥ ৫৫ ॥
অরুদ্ধতী বা স্কুল্যা বশিষ্ঠং
লোপামুদ্রা বাপি তা হুগস্ত্যম্ ।
তথা শাস্তা ঋষ্যশৃঙ্গ বনস্থং
প্রীত্যা যুক্তা পর্যাচরন্ধরেক্তঃ ॥ ৫৬ ॥
ইতি তে সর্বমাথ্যাতং ঋষ্যশৃঙ্গপরাক্রমং ।
তমানয় মহারাদ্ধ যস্তে যক্তং করিষ্যতি ॥ ৫৭ ॥
তথেতি মুনিমানীয় মন্ত্রিভিঃ সহিতঃ শুচিঃ ।
যক্তবর্ষ্মা সমারেভে মুনিভিবীতকল্মবৈঃ ॥ ৫৮ ॥

বানপ্রস্থাশ্রম গমন করিবে (৫৪),পুত্তকে এইরূপ আদেশ প্রদান করিলে অতিবিনীত ঋষাশৃঙ্গ যে আজ্ঞা বলিয়া পিড়বাব্য প্রতিপালনে তৎপর হইলে, বিভাশুক শ্বস্থানে প্রস্থান করিয়া-ছিলেন (৫৫)। পরে বশিষ্ঠসমীপে স্প্রভাগা অকক্ষতী প্র অগস্ত্যান্নিসমীপে রাজকন্তা লোপামুদ্রা, ইইারা যদ্রপ পতি-সেবার্টানে আশস্তা ছিলেন, তদ্রপ গগণমগুলে রোহিণীসমা শাস্তা শশধরসদৃশ বনস্থ ঋষাশৃঙ্গপতি শুক্রমাপরায়ণা ছিলেন (৫৬)। তৎকালে বশিষ্ঠমুনি রাজা দশরপের নিকট এইরূপ সমস্ত ঋষাশৃঙ্গের পরাক্রম নিবেদনকরিরা কহিলেন যে, মহারাজ। বিনি আপনকার যক্ত করিবেন,সেই ঋষাশৃঙ্গমুনির আন্মরনে যজুবানু হউন (৫৭)।

অনস্তর অযোধ্যাপতি শ্রীমান্ দশরণ কৃতায়পিভাবে কৃলপুরোহিত গুরু বশিষ্ট-বাক্যশ্রবণে সচিবস্থিত পরামশ সমাপনাস্তে অঙ্গাধিপরাজধানী চম্পানগরী হইতে বতুনহকারে মহর্ষি বিভাপ্তকম্নিকুমার মহাতপা তপোধন ঋষাশৃঙ্গম্নি স্বপুরে সমানীত হটলে পরমপ্রিক্তভাবে নিতাক্ত্যনিকাহে বীতক্ষ্য উক্ত মুনিগণের সহিত ধ্রাবিধি পুত্রেষ্টিয়ক্ত ক্ষ্ম শ্রেমানেহয়ে তপ্তজাস্নদপ্রভঃ।
পায়দং স্পাত্ত গৃহীজোবাচ হল্যরাট্॥ ৫৯॥
গৃহাণ পায়দং দিবাং পুত্রার্থং দেবনির্ম্মিতং।
লক্ষ্যদে পরমাত্মানং পুত্রত্বেন ন দংশয়ঃ॥ ৬০॥
ইত্যুক্ত্রা পায়দং দত্মা রাজ্যে দোহন্তদ্বেহনলঃ।
ববন্দে মুনিশাদূলী রাজা লব্ধমনোরথঃ॥ ৬১॥
বশিষ্ঠ-ঝ্যাশৃঙ্গাভ্যামনুজ্ঞাতোদদৌ হবিঃ।
কৌশল্যায়ৈ সকৈকয়ৈ হর্মমন্ধি বিভজ্য দং ॥ ৬২॥
ততঃ স্থমিত্রা সংপ্রাপ্তা জগৃহে পৈষ্টিকং চরং।
কৌশল্যা তু স্বভাগান্ধং দদৌ তদ্যৈ মুদান্বিতা ॥৬৩॥
কেকয়ী চ স্বভাগান্ধং দদৌ প্রাতিসমন্বিতা।
উপভুজ্য চরুং সর্ব্যাং দ্রিয়ো গর্ত্ত্বসমন্বিতাঃ ॥ ৬৪॥
দেবতা-ইব তা-রেজুং স্বভাগারাজমন্দিরে॥ ৬৫॥

ছারস্ত করিলেন (৫৮)। পরে অতিশ্রদাভক্তিসহক্ত প্রবৃদ্ধ यक्तीम इंडामन अयामुक्रम्मिक इंक बाह्यमान ३ हेला, उथेका यू নদ্প্ত হব্রাট্স্ব্পাত্ত পায়দ গ্রহণকরিয়া মহারাজকে ক্রিলেন বে,(৫৯) মহারাজ ৷ এইপুত্রার্থ দেবনিশ্মিত দিব্যপায়স গ্রহণ করুন। ইহাতে পর্নাত্মা পুত্রণাভ করিতে পারিবেন, ভাগার সংশয় নাই; (৬০) এইবলিয়া রাজাদশরথকে পায়স প্রদা-নাম্ভে পূর্ণাহৃতি হ্রনদানে অতিসুসমুক্ত অনল অন্তর্হিত হুটলে, লক্ষনোরথ রাজা দশরথ মুনিপুস্ব বশিষ্ট ঋষ্যশৃক্ষ মুনিগণের শ্রুচরণারবিক্ষযুগলে সংষ্টাক্ষে প্রাণিপাত করিলেন (৬১)। অন-স্তুর অবনিপাল বশিষ্ট ঝ্যাশৃঙ্গকত্ত্বক অনুজ্ঞাত হবি গুই অংশে বিভক্ত করিয়া, একাংশ কৌশল্যাকে অপরাংশ কৈকেয়ীকে প্রদান করিলেন্ (৬২)। পরে হর্ষযুক্তা কোশগ্যা নিজাংশের অদ্ধাংশ পৈষ্টিকচরু স্থমিত্রাকে প্রদান করেন আর প্রীতি ভারাপরা কৈকেরীও নিজাংশের অর্দ্ধাংশ চরু স্থমিত্রাকে সংপ্র করিলে, একতা তিস্ত রাজমহিয়া পায়সচক্র ভোজনাত্তে দকলেই গর্কক্ষণ ধারণকরতঃ রূপগুণ ও দিব্যালক্ষার বস্তাদিবিভূষণের সম্ভ্রেলতার অধিকতাহেতু দেবতাসমা রাজ্ভবনে বিরাজ क्तिर ज्लाशिन (७०) (७४) (७८)।

দশমে মালি কৌশল্যা সমুবে পুত্রমব্যয়ং।
মধুমালে দিতে পক্ষে নব্য্যাং কর্কটে শুভে ॥ ৬৬ ॥
পুনর্বস্ব ক্ষাহিতে উচ্চ স্থে প্রহুপক্ষকে।
মেষং পূষণি সংপ্রাপ্তে পুপার্ষ্টিসমাকুলে ॥ ৬৭ ॥
আবিরাদীজ্জগন্নাথঃ পরমাত্মা সনাতনঃ।
নীলোৎপলদলশ্যামঃ পীতবাসাশ্চভুভু দ্ব্রু ॥ ৬৮ ॥
জলদারুণনেত্রান্তঃ স্ফুরৎ কুগুলমণ্ডিতঃ।
সহস্রার্ক প্রতীকাশঃ কিরাটা কু'ক্ষতালকঃ ॥ ৬৯ ॥
শঙ্কাচক্র গদাপদ্মবন্মালাবিরাজিতঃ।
অনুগ্রহাগ্রহুৎস্কেন্দুচকঃ স্মিতচন্দ্রকঃ॥ ০ ॥
করণারসসংপূর্ণোবিশালোৎপললোচনঃ।
শ্রীবৎসহারকেয়ুরন্পুরাদিবিভূদণঃ॥ ৭১ ॥
দ্বী তং পরমাত্মানং কৌশল্যা বিস্মাকুলা
হর্ষাপ্র্ণনিয়না নহা প্রাঞ্জলি-মত্রবীৎ॥ ৭২ ॥

*৬৬ — ৬৭। উক্ত মূলে যদাপি মধ্যাক্ষকাল নাই, তথাপি অভিতেজঃপুঞ্জ র্যস্ববংশীয় প্রীরামচন্দ্রের জন্মকালিন সমস্ত অন্ধকার পালায়ন করিয়াছিল, একারণ অন্ধাদে লেখা হইল যেহেতু পুরাণান্তরে মধ্যাক্ষকাল বিশেষ বর্ণিক আছে, "কিন্থা মধ্যাহে জন্ম ভাবরেবং" ইতি তিথিতকে আছেভটাচায়া মহাশ্যের লিখিত আছে, অতএব অনুবাদ অত্যন্ত নীরসভাবহেতু সধুনা নধ্যাহনকাল উল্লেখ হইল।

दकी भटना विकास

দেবদেব নমস্তভ্যং শশ্বচক্রগদাধর।
পরমায়াচুত্তোহনস্তঃ পূর্ণস্তঃ পুরুষোত্তম ॥ ৭৩॥
বদস্তাগোচরং বাচাও বুদ্ধাদীনামতীন্দ্রিয়ন্।
রাং বাদিবেদিনঃ সতামাত্রং জ্ঞানৈকবিগ্রহন্॥৬৪॥
রমেব মায়য়া বিশ্বং স্ক্রস্যর্বি হংসি চ।
সত্তাদিগুলগম্বুক্তঃ সূখ্য এবামলঃ সদা ॥ ৭৫॥
করোনীব ন কর্তা হং গচ্ছসীব ন গচ্ছসি।
ন শুণোষি শুণোষীব পশ্যসীব ন পশ্যসি॥ ৭৬॥
সপ্রাণোহ্যমনাঃ শুল্র ইত্যাদি শ্রুতির্ব্রবিং।
সমঃ সর্বেষ্ ভূতেষু তিষ্ঠন্নপি ন লক্ষ্যসে॥ ৭৭॥
স্থানেবান্তি তানাং ব্যক্ত-এব স্থ্যেধসাম্।
জঠরে তব দৃশ্যন্তে ব্রহ্মাণ্ডাঃ পর্মাণ্বঃ॥ ৭৮॥

বং মমোদরশংভূত ইতি লোকান্ বিজ্পাদে।
ভক্তেমু পারবশ্যন্তে দৃষ্ট্যং মেবদা রঘুদ্ধ ॥ ৭৯ ॥
সংসারসাগরে ময়া পতিপুত্রধনাদিয়ু।
ভ্রমামি মায়য়া তেহদা পাদমূল মুপাগতা ॥ ৮০ ॥
দেব জ্বজপমেতন্মে সদা তিষ্ঠতু মানদে।
আর্ণোতু ন মাং মায়া তব বিশ্ববিমোহিনী ॥ ৮১ ॥
উপসংহার বিশ্বাজ্মেভজ্রপমলোকিকম্।
দর্শয়র্শ মহানন্দং বালভাবং স্তকোমলম্।
ললিতালিঙ্গনালাপৈ স্তরিষ্যামূহকটং তমঃ ॥৮২ ॥
শ্রীভগবানুবাচ।

যদ্যদিষ্টং তবাস্তাম তত্তত্ত্ব নাম্থা ॥ ৮৩ ॥
অহস্ত ত্রেমাণা পূর্বাং ভূমের্ভারাপকৃত্ত্যে।
প্রাথিতোরাবণং হস্তং মাকুষত্বমুপাগতঃ ॥ ৮৪ ॥
ত্যা দশর্থেনাহং তপ্দারাধিতাঃ পূরা।

সন্দর্শনে বিনীতভাবে কহিতে লাগিলেন (৬৮) (৬৯) (৭০)

হে দেবদেব ! তুভাং নমামি,হে শঙ্খচক্রণদাধর ! ত্বং পরমাত্মা, ও অচ্যত, অর্থাৎ পতন না থাকায় অচ্যত, অন্ত না থাকায় অনন্ত অংশ না থাকায় পূর্ণ, অবক্ষতা না থাকায় পূক্ষোভ্ম(৭০), তুমি বাকোর অগোচর, বৃদ্ধ্যাদির অতীক্রিয়, ভগবদ্বাদিবেদিগণ আপ নাকে জ্বানময়মাত্র শরীর, অর্থাৎ সচিদানন্দবিগ্রহ সন্তামাত্র বলিয়া বিদিত, আছেন (৭৪) ৷ তুমিমায়াদ্বারা সচরাচার ব্রহ্মাণ্ডের স্প্তস্থিতি প্রলয় করণের মুখ্য কর্তা; সত্ত্রজন্তমোগুণযুক্তবপুং, সাক্ষাৎজ্যোতিঃ পদার্থ, স্থ্যবং নির্মাণ (৭৫); তুমি কর্ম্ম কর, কিন্তু । কর্মোর কর্তা নও; তুমি গমন কর, কিন্তু গমনের কর্তা নও; তুমি প্রবণকর; কিন্তু শুন নাই; তুমি দেখেও দেখ নাই (৭৬); তুমি অপ্রাণ, অমন, নিতাণ্ড ভাইত্যাদি ক্রান্তি কহেন । তুমিসর্কপ্রাণিতে সমভাব অবলম্বন করিলেও কাহাকর্ত্বক লক্ষিত হও নাই (৭৭); তুমি অজ্ঞানির জ্ঞানদাতা, অব্যক্তজনের ব্যক্তরূপ; তব জঠরে পরমাণক্রপ সমস্ত ব্রহ্মাণ্ড দৃষ্ট ইইতেছে (৭৮)। তুমি এই হতভাগ্যার উদরে উৎপন্ন হইয়া কি সমস্তলোকবিত্রনা করিতেছ ?

হে রঘুকুলোদ্ব ! অদ্য ভবদীয় ভক্তের প্রতি পারবশ্রতা আমা কর্তৃক দৃষ্ট হইল (৭৯)। ভগদ্বিধিনোহিনী মায়া বাধ্যবশতঃ পতিপুত্রধনাদিরূপসংসারসাগর তীব্রতরঙ্গকল্লোলে অনবরত ভ্রমণ করিয়া অদ্য ভবদীয় শ্রীপাদপদ্মশৃল প্রাপ্ত হইলাম(৮০)।হে দেব। তোমার এইরূপ মম মানসে যেন সর্ক্রদাই থাকে,তাহাতে তব বিশ্ববিমোহিনী মায়া আমায় যেন আবরণ না করিতে পারে(৮১)। হে বিশ্বাস্থান্! এই অলৌকিকরূপলাবণ্যসম্বরণকরিয়া সম্প্রতি নহানন্দজনক বাল ভাব অতিস্ক্রেমালরূপ নয়নপদ্মে আনিয়া আলিঙ্গন ও আলাপনসন্তাষণাদিদ্বারা উৎকটতমোন্রাশিকে বিনাশ করিয়া ভব্যন্ত্রণাহইতে পরিস্তাণ পাই (৮২)।

অনন্তর কৌশলার এবং প্রকারে ন্তবে পরিতৃষ্ট জগবান্ কৌশল্যাকে কহিয়ছিলেন, হে মাতঃ! তোমার বাহা বাহা অভীষ্ট আছে, তাহা তাহাই সিদ্ধ হইবে, তাহার অন্তথা হইবে না (৮৩)। আমি ভূভারহরণ করিবার বাসনায় পূর্বে ব্রহ্মাকর্ভৃক প্রাথিত হইয়া দশাননবধ করিবার নিমিত্ত মানবজন্ম প্রাপ্ত হই-য়াছি (৮৪)। হে অনিনিতে! পূর্বে আমায় পুত্রেচ্ছাকরতঃদশরথ মংপুত্রন্থাভিকাজিলণ্য তথা কুতমনিলিতে ॥ ৮৫॥ রপমেতত্ত্ব্যা দৃষ্টং প্রাক্তনং তপসং ফলং।
মদ্দর্শনং বিমোক্ষায় কল্পতে হাত্যত্ত্র্লভং ॥ ৮৬॥
সম্বাদমাবয়োর্যস্ত পঠেনা শৃণুয়াদপি।
স যাতি মম সারূপ্যং মরণে মংস্কৃতিং লভেৎ ॥৮৭॥
ইত্যুক্ত্ব্যু মাতরং রামোবালোভূত্বা রুরোদ হ ॥৮৮॥
বালোমহেন্দ্রনীলাভো-বিশালাক্ষোহতিস্থলরঃ।
বালারুণপ্রতীকাশোলালিতাখিললোকপঃ ॥৮৯॥
অথ রাজা দশরথং শ্রুত্বা পুত্রভবোৎসবং।
আনন্দার্ণবম্যোহ্সাবায্যে গুরুণা সহ॥ ৯০॥
রামং রাজীবপত্রাক্ষং দৃষ্ট্যা হ্র্রাশ্রুদ্ধে তঃ।
গুরুণা জাতকর্মাণি কর্ত্ব্যানি চকার সঃ॥৯১॥
কৈকেয়ী চাথ ভরতমসূত কমলেক্ষণং।

স্থানি বামার কার্কো পূর্ণেন্দুসদৃশাননো ॥৯২॥
তদা প্রামসহস্রাণি ব্রাক্ষণেভ্যো-মুদা দদৌ।
স্থানি চ রত্বানি বাসাংসি স্থারভীঃ শুভাঃ॥৯০॥
বৃদ্মিনুমন্তে মুনয়ো-বিদ্যয়া জানবিপ্লবে।
তং গুরুঃপ্রাহরামেতি রমণাদ্রাম-ইত্যাপি॥৯৪॥
ভরণান্তরতোনাম লক্ষ্মণং লক্ষ্মণান্থিতং।
শক্রত্বং শক্রহন্তারং এবং শুরুরভাষত ॥৯৫॥
লক্ষ্মণো রামচন্দ্রেণ শক্রত্বো-ভরতেন চ।
দ্বন্দ্রিভূয় চরন্তো তৌ পায়সাংশানুসারতঃ॥৯৬॥
রামস্ত লক্ষ্মণেনাথ বিচরন্ বাললীলয়া।
রময়ামাস পিতরো চেষ্টিতৈম্ ভূভাষিতৈঃ॥৯৭॥
ভালে স্থাম্যাশ্বপর্ণং মুক্রাফল প্রভং।
কণ্ঠে লগ্মণিব্রাতং মধ্যে দ্বীপিনথাঞ্চিতং॥৯৮॥

ও তোমাকর্ত্ব অতিকঠোর তপস্থাচরণ করিলে, আমি উক্ত তপস্থায় আরাধিত হইরা পুত্রত্বাবঅলীকার করি। একণে সেই প্রাক্তনতপস্থার ফলবশত: আমার এই অলোকিকরপ তুমি দর্শন করিলে, অস্তের স্ফুর্ল ভ আমার এই রূপদর্শন কেবল তোমার মৃক্তিনিমিত্ত কল্লিত হইরাছে (৮৫)(৮৬)। যে জন আমাদিগের ফুই জনের কথোপকথনরূপ সম্বাদ পাঠবা প্রবণ করিবেন্ তাঁহারা আমার সারূপরূপদ প্রাপ্ত হইরা মৃত্যুকালে আমার নামশ্বরণ লাভ করিতে সমর্থইইবেন্ (৮৭)। শ্রীরামমাতাকে এইবলিয়াবাল-ভাবপ্রাপ্তে রোদন করিতে বাসনা করিলেন্ (৮৮)। উক্ত বালক মহেন্দ্রনীল পর্কতের স্থার নীলবর্ণ, বিশালচক্ষ্, অতি স্থগঠন হেত্ স্থান্ত:কালের অরুণসদৃশ পদতল, যাহার পালনে সমস্ত লোক প্রতিপালনহয় (২৯)। অনস্তর পুত্রোৎপত্তিজন্য মহামহোৎ সব প্রবণে আনন্দার্গবে ময় রাজা শ্রীমান্ দশর্থ পুত্রম্থ সমব-লোকনার্থ গুরু বশিষ্ঠ মুনির সহিত স্তিকাবাসে গমন করি য়াছিলেন্ (১০)।

পরে পদ্মপলা শলোচন শ্রীরামম্থদর্শনে, পরম হর্ষ সাগ্রো-থিত নয়নধারাভিষিক দশর্থ কুলগুরু বশিষ্ঠমূনি কর্তুক কর্ত্বা

জাতকর্মাদি সম্পাদন করিলে (১১), কৈকেয়ী ভরতকে ও স্থমিত্রা পূর্ণেন্সদৃশানন লক্ষ্ণ আর শক্তম তুইপুত্র প্রস্ব করিলেন্(৯২)। অনস্তর গ্রামসহস্র ও স্বর্ণাদি নানারত্ব সবস্ত্র ধেমু ব্রাহ্মণদিগের বাজা প্রদান করিতে লাগিলেন্ (৯৩)। পশ্চাৎ যে জ্ঞান সাগরে মুনিগণ বিদ্যাহেতু রমণ করেন, তাহাকে রাম বলিয়া গুরু বশিষ্ঠ সম্ভাষণ করিলেন, অথবা রমণাৎ রামরমণ হেতু রামনাম প্রকাশ করিলেন, (১৪)। পরে গুরু ভরণ-ছেতু ভরত, লক্ষণযুক্ত দেখিয়া লক্ষণ, শক্রবিনাশে সক্ষম দেখিয়া শক্রত্ম নাম রাখিলেন্ (৯৫)। এইরূপে পুত্রচতুষ্টয়ের নামকরণ নিষ্পত্তি হইলে, রামের সহচর লক্ষণ,ভরতের সহচর শত্রুত্ব,এইরূপ ঘনীভাবে পায়সাংশাহুসারে ৰিচরণ করিতে লাগিল (৯৬)। অনস্তর শ্রীরাম বাল্যাবস্থায় লক্ষ-ণের সহিতইতস্ততঃ বিচরণকরতঃ কোমল অস্পষ্টাক্ষর বাক্যআর অন্তোক্ত চরিত্রের সুশীলতাচরণদারা জনকজননীকে কি পর্যাস্ত আনন্দচিত্তে রাখিতেন্, তাহা অনির্বাচনীর (৯৭)। প্রীরাম বাল্যা-বস্থায় কি কি বেশভূষণ ছিল,গ্রন্থকার ভাহা বর্ণনা করিছেছেন্। কপালে স্বর্ণময় অখখপত্র আর মুক্তাফলের স্তায় রূপে দেনীপ্য-মান কঠে মণিময় হার,তাহার মধ্যন্থিত ব্যাস্ত্রনথশোভিত বক্ষঃ- কর্ণয়োঃ স্থাপিন্সরাজ্বাক্ষ্যাক্ষ্যান্ত ॥ ৯৯॥
শিক্ষানমণিমঞ্জীরকটিসূত্রাঙ্গদৈর্যুতং ॥ ৯৯॥
শ্বিতবক্ত্রাল্পদশনমিন্দ্রনীলমণি প্রভং।
ক্ষান্ত রিঙ্গমাণং তং তস্তু কালামুসর্বতঃ॥ ১০০॥
দৃষ্ট্য দশরথো রাজা কোশল্যা মুমুদে তদা।
ভোক্ষ্যমাণোদশরথোরামমেহীতি চাদকৃৎ ॥১০১॥
আহ্বয়ত্যতিহার্দ্যনে প্রেম্মা নায়াতি লীলয়া।
আনয়েতি চ কোশল্যামাহ সা সম্মিতা হৃতম্॥১০২
ধাবত্যতি ন শক্ষোতি প্রফুং যোগিমনোহতিগং।
প্রহমন্ স্বয়মায়াতি কর্দ্মান্ধিত পাণিনা॥ ১০৩॥
কিঞ্চিদ্গৃহীতা কবলং পুনবেব পলায়তে।
এবমানন্দসন্দোহো জগদানন্দকারকং।
মায়াবালবপুর্গ্রা রময়ামাস দম্পতীং॥ ১০৪॥

স্থল বিরাজিত নিজ (৯৮)। এবং স্বর্ণময় কর্ণকুণ্ডলস্থিত যে রত্ম, তাহাতে উজ্জ্বলিত গণ্ডযুগল, শব্দারমান মণিময় নৃতন নৃপুর, কটিস্তাস্থিত কেয়ৢরয়্ক্ত (৯৯), কথন কথন ঈষ্ৎ হাস্তাযুক্তবদন্হইতে অল অল দম্ভদ্দ দৃষ্ট হয়, ইক্রনীলমণি সদৃপরূপ শ্রিরাম তত্তৎকালে এইরূপ পুরস্থিত প্রাক্ষানে স্থাভিত থাকি তেন (১০০)।

এই দেখিরা রাজা দশরথ ও কৌশল্যা পরমপ্রীতি প্রাপ্ত হৈতেন্। পরে ভোজন সময়ে ক্ষিতিপতি দশরথ সেহভাব বশত: "রাম! আইস আইস" বলিয়া বারম্বার সাদরে আহ্বান করিলে (১০১), প্রেমলীলাভাব প্রযুক্ত কথন রাম মহারাজের নিকট না আসিলে, মহারাজ কৌশল্যাকে কহিতেন্, "রামকে আনরন কর।" পরে হাজ্তবদনা কৌশল্যা পুপ্রের প্রতিধাবমানা হইতেন (১০২), কিন্তু যোগিগণের অধ্ব্য প্রীরামকে ধরিয়া আনিতে সমর্থা হইতে না। পরে ধ্লিধ্সিরিত হন্ত রাম স্বয়ং হাজ্তবদনে নিকটে আসিয়া এক গ্রাস গ্রহণ করিয়া প্রনরার প্রায়ন করিতেন্। এইরূপে আনন্দরসে পরিপূর্ণ এবং জগদানক্ষারক রাম মারাভাববশতঃ বালবপুঃ ধারণ-করিয়া উক্ত ক্ষেপ্তীকে পরিতৃপ্ত করিতেন্ (১০৩)(১০৪)। অনন্তর কির্থ-

অথ কালেন তে সর্বেব কোঁমারং প্রতিপেদিরে।
উপনীতা-বনিষ্ঠেন সর্ববিদ্যাবিশারদাঃ ॥ ১০৫ ॥
ধকুর্ব্বেদে চ নিরতাঃ সর্ববশাস্ত্রান্তবেদিনঃ।
বস্থুব্ব্বেগতাংনাথা-লীলয়া নররূপিণঃ ॥ ১০৬ ॥
লক্ষ্মণস্ত তদা রামমকুগচ্ছতি সাদরং।
দেব্যদেবকভাবেন শক্রুদ্মো-ভরতস্তথা ॥ ১০৭ ॥
রামশ্চাপধরোনিত্যং ভূণীবাণাশ্বিতঃ প্রস্তুঃ।
অশ্বারুটোচনং যাতি মুগয়ায়ৈ সলক্ষণঃ ॥ ১০৮ ॥
হত্বা ছুইমুগান্ ব্যান্পিত্রে সর্বাং স্থাবেদয়ৎ ॥ ১০৯॥
প্রাতরুত্থায় স্ক্র্মাতঃ পিতরাবভিবাদ্য চ।
পৌরকার্য্যাণি সর্ব্বাণি করোতি বিনয়াশ্বিতঃ॥১১০॥
বন্ধুভিঃ সহিতো নিত্যং ভুক্তা মুনিভিরন্থইং।
ধর্মশাস্ত্ররহ্মানি শৃণোতি ব্যাকরোত্মপি ॥১১১॥
এবং পরমাত্মা মনুজাবতারো-

মনুষ্যলোকাননুত্ত্য স্কান্।

কালাবসানে বালকগণ কুমারাবস্থাপ্রাপ্তে বশিষ্ঠমূনিকর্তৃক উপনীত হইলে, সর্কবিদ্যাবিশারদ ও ধহুর্কেদে নিরত এবং সক্ষশাস্ত্রান্তবিদ্যায় সবিশেষ পারগতা প্রাপ্ত ইয়াছিলেন। একারণ
জগতের নাথ লীলাভাবপ্রকাশ করিবার বাসনায় নররূপ ধারণকরিয়াছিলেন (১০৫) (১০৬)। পশ্চাৎ লক্ষ্মণ সাদরে সেবাসেবকভাবে শ্রীরামের অহুগত হইলে এবং শক্রন্ন ভরতের
সহচর হইলে (১০৭), সামুজ্ঞ রাম ধমুর্বাণতৃণীর ধারণ করতঃ
অখাবরোহণে মুগরানিমিত্ত বনগমনান্তে বস্তু হুট্ট মুগ বিনাশ
করিয়া পিতাকে সমর্পণ করিছেন্ (১০৮) (১০৯)। পরে
প্রতিদিবস প্রাতঃকালে শ্যাহইতে গাত্রোখান করিয়া প্রাতঃক্রত্যসমাপনাত্তে স্থলাত রাম জনকজননীর শ্রীচরণারবৃদ্দে
অভিবাদনানস্তর বিনীতভাবে সমস্ত্রপৌরকার্য্যনির্কাতে ভোজনাস্তে বন্ধুগণের সহিত প্রত্যন্ত মুনিদিগের নিকটে বাইয়া
ধর্ম্মণান্ত্র প্রত্তি নানাকাব্যালন্তার রহক্ত অধ্যরন ও ব্যাখ্যা
করিছেন (১১০) (১১১)। এইক্রপ পরিণাম হীন প্রমান্ত্রা

চক্রেছবিকারী পরিণামহীনো-বিচার্য্যমাণো ন করোতি কিঞ্চিৎ ॥ ১১২ ॥

মন্থকাবতারে সমস্ত মন্থব্যের অধিকারী হইলেও মায়াধীন অনু-গত হইলেন; ক্রিক্ত বিচার করিয়া দেখিলে, শ্রীরাম কিছুই করেন নাই (১১২)। ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর-সংবাদে আদিকাণ্ডে রামাত্যুৎপত্তি-নাম চতুর্থোহধ্যায়ঃ॥

এই অধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাতে রামাদির উৎপত্তিকথনরূপ চতুর্থ অধ্যার উক্ত হইল।

পঞ্চােহধাায়ঃ।

শ্রীমহেশর-উবাচ।
কদাচিৎ কৌশিকোহভ্যারাদযোধ্যাং জ্বনপ্রভঃ।
দ্রুত্বীর পরাত্মানং জাতং জ্ঞারা স্বমায়য়া॥>॥
দৃক্তা দশরথোরাজা প্রভুত্থায়াচিরেণ তু।
বিশিষ্ঠেন সমাগম্য পূজ্যিত্বা যথাবিধি॥ ২॥
প্রভুবাচ মুনিং রাজা প্রাঞ্জলিভক্তিন্ত্রধীঃ।
কৃতার্থেহিম্ম মুনীন্দ্রাহং জ্বাগমনকারণাৎ। ৩॥
ত্বিধা-যদ্গৃহং যান্তি তত্রৈবায়ান্তি সম্পদ্য॥ ৪॥

শীমংশর কহিয়ছিলেন, অষ্টনঘ্টনপ্টীয়নী স্বকীয়মারাশক্তিসহকারে পরমায়া জন্মিরাছেন, এইট অসামান্ত নিজযোগপথাৰলম্বনে সমস্ত জানিয়া কোন দিবস শ্রীয়মসন্দর্শনার্থ বৈশানরোপমরূপ কৃশিকতনয় বিশামিত্রমূনি অযোধ্যাপুরী সমাগত(১)
দেখিরা রাজা দশরথ অচিরে প্রত্যুখান করিয়া বশিষ্ঠমূনির
সহিত বথাযোগ্য পূজ্যপূজনাস্তে (২) ভক্তিনতকন্ধর ভূমিপতিত
বদ্ধানিতাবে মূনিকে কহিয়াছিলেন,হে মুনীক্র! ভবদীয় শুভাগমন কারণ আমি কৃতার্থ হইলাল (৩), বিশেষ ভবছিণ ব্যক্তিগণ
বে স্থানে শুভাগমন করেন সমন্তসম্পত্তির সেন্থানেই আবির্জাব

যদর্থনাগতোহদি ত্বং জহি দত্যং করোমি তং।
বিশ্বামিত্রোহপি তং প্রীতঃ প্রত্যুবাচ মহামতিঃ ॥৫॥
অহং পর্কাণ দক্রাপ্তে ইন্ট্যা যন্ত্রুং স্করান্ পিতৃন্।
যদারেভে তদা দৈত্যা বিল্লং কৃর্কস্তি নিত্যশং॥৬॥
খারীচশ্চ স্থবাহুশ্চ পরে চাকুচরাস্তয়োঃ।
অতস্তরোর্কধার্থায় জ্যেষ্ঠং রামং প্রযুদ্ধ মে॥ १॥

হর (৪)। সম্প্রতি যরিমিত্ত আগমন করিরাছেন,তাহা স্বাভিপ্রার প্রকাশকরুন্। আমি সে বিবরে সত্যপ্রতিপালন করিব। পরে মহামতি প্রীতমনা বিশ্বামিত্র দশরথের প্রতি প্রত্যুত্তর প্রদানে সাহস করিতেছেন্ (৫)। চতুর্দশী অন্তমী অমাবস্তা পোর্ণমাসী ও রবিসংক্রান্তি, এই পঞ্চপর্ককালপ্রাপ্তে দেবলোক ও পিড়লোক তৃপ্তিকরিবার মানসে আমি দর্শপোর্ণমাসাগ প্রভৃতি পিগুপিত্যজ্ঞাণ্য শ্রাদ্ধাদির অনুষ্ঠান যৎকালে আরক্ক করি, তৎকালে মারীচ স্থবাহু প্রভৃতি আর যে কেছ তাহাদিগের অনুচর আছে, সেই সমস্ত রাক্ষসরূপ দৈত্যগণ প্রতিদিবস আসিরা আমার তাবৎ যজ্ঞ নত্ত করে; এই কারণ তাহাদিগের বধের নিমিত্ত শক্ষ্ণান্ত্রর জ্যেষ্ঠ শ্রীরামকে যদি আমার সমর্পণ করেন্ (৬) (৭), তাহা ছইলে মহারাজ আপনকার পরম-

লক্ষণেন সহ ভাত্তা তব শ্রেয়ো ভবিষ্যতি।
বশিষ্ঠেন মহামন্ত্র্য দীয়তাং যৃদি রোচতে ॥ ৮ ॥
পপ্রচছ গুরুমেকান্তে রাজা চিন্তাপরায়ণঃ।
কিং করোমি গুরোরামংক্যক্তবুংনোৎসহতে মনঃ॥৯॥
বক্তবর্ষ সহস্রান্তে কন্টেনোৎপাদিতাঃ স্ততাঃ।
চহারো মম তুল্যান্তে তেষাং রামোহতিবল্লভঃ॥১০॥
রামো যদা গচ্ছতি চেন্ন জীবামি কথঞ্চন।
প্রত্যাধ্যাতোয়দি মুনিঃশাপং দাস্তত্যসংশয়ম্॥১১॥
কগং শ্রেয়োভবেন্মহ্য-মসত্যঞ্জাপিন স্পৃশেৎ ॥১২॥
বশিষ্ঠ-উবাচ।

শৃণু রাজন্দেবগুহাং গোপনীয়ং প্রযন্ততঃ। রামোন মাকুদোজাতঃ পরমাত্মা সনাতনঃ॥ ১০॥ ভূমের্ভারাবতারায় ব্রহ্মণা প্রার্থিতঃ পুরা। সঞ্জব জাতোভগবান্ কৌশল্যায়াং ত্রান্য॥১৪॥

মন্ধল চইবে, সে বিষয় বশিষ্ঠমুনির সহিত সংপরামর্শ করিরা যদি ভরতের অভিপ্রেত হয়, তবে দাতব্য করুন্(৮)। পরে চিস্তাপরায়ণ রাজা দশরথ নির্জ্জনে শুরু বশিষ্টমুনিকে জিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন, শুরো! এক্ষণে আমি কি করি, রামকে নয়ন পথের অতিবাহিত করিতে কোনমতে চিত্ত উৎসাহী হয় না (৯), কারণ বছবর্ষসহস্রাস্তে অভিকন্তে মম তুল্য চারি তনর উৎপন্ন হইরাছে। তাহার মধ্যে রাম আমার অতিপ্রিয়-পাত্র (১০)। রাম বদি মুনির সহিত গমন করেন্, তবে তো আমি কথনই জীবিত থাকিবো না, আর মুনি যদি প্রত্যাথ্যাত হরেন্, তবে নিশ্চয় আমায় অভিশপ্ত করিবেন (১১), তবে কিরুপে আমার নক্ষল হইবে, আর কিরুপেই বা স্ত্যকথা প্রতিপালন করিব, উপার কি ? (১২)।

বশিষ্ঠ কহিলেন্,মহারাজ। প্রবণ কর্মন্। এই দেবভাদিগের শুপুরুঝ। যদ্ধপূর্বক গোপন করিবে। রাম সামাস্ত মানব নহেন, সাক্ষাৎ সনান্তন প্রমাত্মা (১৩), ইনি ভূভার হরণেচ্ছায় পূর্বে বন্ধা কর্তৃক প্রাথিও হইয়া কৌশল্যার কঠরে জন্মগ্রহণ করিয়:- ষস্ত প্রজাপতিঃ পূর্বাং কশ্যপোত্রক্ষাণঃ স্থতঃ।
কৌশল্যা চাদিতিংপূর্বাং দেবমাতা যশস্বিনী ॥১৫॥
ভবন্তো তপ উগ্রং বৈ তেপাতে বহুবৎসরং।
অগ্রাম্যবিষয়ো বিষ্ণুপূজাধ্যানেকতৎপরো ॥ ১৬॥
তদা প্রসমো-ভগবান্ বরদোভক্তবৎসলঃ।
রণীয় বরমিত্যুক্তো স্থং মে পুত্রো ভবানঘ॥ ১৭॥
ইতি প্রয়া যাচিতো-বৈ ভগবান্ ভূতভাবনঃ।
তথেত্যুক্তাদ্যপূত্রাস্তে জাতোরাম স-এব হি॥ ১৮॥
শেষস্ত লক্ষাণো স্বাজন্ রামমেবাস্থপদ্যত।
জাতো ভরতশক্রম্মে শঙ্খচক্রে গদাভ্তঃ॥ ১৯॥
বোগমায়া তু সীতেঙি জাতা জনকনন্দিনী।
বিশ্বামিত্রোহপি রামায়তাং যোজ্য়িতু মাগতঃ ॥২০॥
এতদ্গুহ্যতমং রাজন্ ন শক্তব্যং কদাচন॥ ২১॥

ছেন (১৪)। তৃমি পূর্ব্বে ব্রহ্মারপুত্ত কল্পুপ প্রজাপতি ছিলে এবং वभित्रनो कोमलाा अपूर्व (प्रवमान और्षिन हिल्लन (১৫)। তাহাতে বহুবৎসর অতিকঠোর তপস্তার আশক্তবিধার অনু মাজ্যাদি ঐশর্য্যে অভিলাষ না থাকায় কেবলৈ সেই পরাৎপর পরমাত্মা বিষ্ণুর পূজন ও চিস্কনাদিতেই একা(গ্রচিত্ত ছিল (১৬)। পরে অতিদ্যার্ক্রিত ভক্তবৎসল ভগবান্ স্বস্থান্নবদনে বরদানে ধাবিত হইলে, ভোমরা দম্পতী ভগবান্কে পুত্রভাবরূপ বর যাজ্ঞা করিলে (১৭), সর্বভূতভাবন ভগবান্ \গোলক্বিহারী হরি তথাক্ত <লিয়া স্বীকৃতছিলেন। একারণ অদ্য খতবপুত্রস্ভাবে রামনামক রত্তুকলে অবতীর্ণ চইয়াছেন (১৮)। অধার জীরামের সেবা করিবার বাসনায় স্বয়ং অনস্তদেব লুক্ত্রণনামে বিখ্যাত হটয়াছেন এবং গদাধরের শঙ্খচক্রস্বরূপ ভূর্মত ও শক্রম্ব নাম-ধারণ করিয়াছেন (১৯), আর বোগমায়ুর্শসীতানায়ী কন্তা জনক-রাজভবনে জন্মিয়াছেন, সেই কছার্বার সহিত বিবাহ দিবার অভিকায়ে বিশ্বামিত্রমূনি জীরামকে 👣 ইতে আসিয়াছেন (২০)। যাহা হউক, হে রাজন্! এই গুপ্ততম আক্লাক্য কাহারও নিকটে क्तांठ क्षकांत्र क्तिरत ना (२১)। अकार्त् श्रृष्टीखःकतर्ग मूनिरक

ষতঃ প্রীতেন মনসা পূজয়িত্বাথ কোশিকং। প্রেরয়স্ব রমানাথং রামাঞ্চ সহলক্ষাণং ॥২২॥ विभारिकेरेनन-यूक्त-ख ताका मभत्रथ-खमा। কৃতকৃত্য-মিবাত্মানং মেনে প্রমুদিতান্তরঃ॥ ২৩॥ আহুয় রামরামেতি লক্ষ্মণেতি চ সাদরং। আলিঙ্গ্য মূৰ্ব্যবন্ত্ৰায় কৌশিকায় সমৰ্পয়েৎ ॥২৪॥ ততোহতিহুটো-ভগবান্ বিশ্বামিত্রঃ প্রতাপবান্। আশীর্ভি-রভিনন্দ্যার্থ রাজানং রামলক্ষাণো ॥২৫॥ গৃহীত্বা চাপভূণীরবাণখড়গধরে শুভো। কঞ্চিদেশ-মতিক্রম্য রাম-মাহূয় ভক্তিতঃ ॥ ২৬ ॥ ৈ দদে বিলাঞাতিবলাং বিদ্যে দ্বে দেবনিৰ্শ্মিতে। যয়োগ্র হণমাত্রেণ ক্ষুৎপিপাসা ন জায়তে॥ ২৭॥ তত উত্তীৰ্য্য গঙ্গাং তে তাড়কাবনমাগমন্। বিশ্বামিত্রস্তদা প্রাহ্ রামং সত্যপরাক্রমং॥ ২৮॥ অত্রান্তে তাডকা নাম রাক্ষদী কামরূপিণী। বাধতে লোকমথিলং জহি তামবিচারয়ন্॥ ২৯॥ যণাবিধি পূজা করিয়া সলক্ষণ রমানাথ রামকে প্রেরণ করুন্(২২)। পরে এই রূপ বশিষ্টবাক্য শ্রবণে গ্রন্থীয়া দশরণ আয়াকে ক্তক্তা মানিধা(২০),রাম বাম ! লক্ষ্ণ ! এইরপ সাদেরে সামুজ রামকে আহ্বান করিয়া আলিজন মন্তকাঘাণে জীবনের সার্থ-কত। করিয়া কুশিক কুমার বিশ্বামিত্র মূনির হুতে অকাতরে ममर्थं कि तिर्लंग (२४)।

অনন্তর অতিষ্ঠায়া প্রতাপশালী ভগবান্ বিশ্বামিত্র ঋষি
পরসভ্রশীর্লাদবাকাদারা রাজাকে পরমানলে রাথিয়া চাপতৃণীরবাণগড়গধর রামলক্ষণ সমভিব্যাহারে কিয়দূর অতিবাহিত
করিলে, ভক্তিপূর্বক শ্রীরামকে সমাহবান করিয়া (২৫) (২৬), যে
বিদ্যাগ্রহণমাত্রে ক্ৎপিপাসা জন্মাইতে পারে না, এমত দেবনিশ্মিত বলা আর অতিবলা-নামী ছুইবিদ্যা প্রদান করিয়া(২৭)
গঙ্গার পরকূলবর্তী বিশ্বঘাতিনী তাড়কানামীনিশাচরীর আশ্রমস্থ
বনগমন করিলেন। পশ্চাৎ অমিত ও স্ত্যুপরাক্রম রামকে মুনি
কহিলেন যে (২৮), এই বনমধ্যে তাড়কানামী কামরূপিণী একা
রাক্ষণী সমন্তলোক বাধিত করিয়া আছে; তাহাকে অবিচারে
বিনাশ কর্ষন (২৯)। মুনি এইকছিলে, "তথাস্ত্য" বলিয়া রঘুনন্দন

তথেতি ধনু-রাদায় সপ্তণং রঘ্নন্দনঃ।
টঙ্কারমকরোত্তেন শব্দেনাপূর্য়ন্ বনং॥৩०॥
তচ্ছুজ্বাসহমানা সা তাড়কা ঘোররূপিণী।
ক্রোধসংমুচ্ছি তা রামমভিচুদ্রোব মেঘবৎ॥৩১॥
তাড়কাং তাড়য়ানাস শরেণৈকেন বক্ষসি।
পপাত বিপিনে ঘোরা বমন্তী রুধিরং মুহুঃ॥৩২॥
ততোহতিস্থলরী যক্ষী সর্ব্বাভরণভূষিতা॥
শাপাৎ পিশাচতাং প্রাপ্তা রামপ্রসাদতঃ॥৩৩॥
নত্বা রামং পরিক্রম্য গতা রামাজ্ঞয়া দিবং॥ ৩৪॥

ততোহতিহুক্টঃ পরিরভ্য রামং

মূর্দ্ধান মাজ্রায় বিচিন্ত্য কিঞ্ছিৎ।

সর্ব্বাস্ত্রজালং সরহস্থমন্ত্রং
প্রীত্যাভিরামায় দদৌ মুনীন্দ্রঃ। ৩৫॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানহেশ্বরসংবাদে
আদিকাণ্ডে বিশ্বামিত্রেণ সহ বনগমনতাড়কাবধো-নাম পঞ্নোহধ্যায়ঃ।

ধন্মজ্যারোপণের টফারশব্দে বনমধ্যপরিপূরণ নিনাদ-অসহমানা ঘোররপিণী তাড়কা ক্রোধভরে মৃচ্ছিতা ইইয়া মেঘবৎ রামের প্রতি ধাবমানা ইইল। পরে শ্রারাম তাড়কার বক্ষঃস্থলে এক শরনিঃক্ষেপকরিয়া বনমধ্যে পতিতা ভয়ানকা নক্তঞ্চরী বারস্বার ক্ষধিরবমন করিলে (৩০)(৩১)(৩২), সর্বাভরণ ভূষিতা অতিস্কল্রী যক্ষকত্যা শাপাধীন পিশাচতা-প্রাপ্ত ইইলেও শ্রীরামপ্রসাদাৎ নিদ্ধৃতি পাইবার নিমিন্ত শ্রীরামচরণে প্রণামপ্রদক্ষিণাবসানে রামান্মজ্ঞয়া স্বলে কিগমন করিল (৩৩)(৩৪)। তদনন্তর পরমন্ত্রই বিশ্বামিত্র মৃনিপূস্ব শ্রীরামকে ক্রোড়ে আনিয়া মন্তকান্ত্রাত্ব স্বিশেষ ভৃপ্তিলাভ করিবার মানসে কিয়ৎকাল চিন্তাকরিয়া শ্রীরামকে সরহস্ত সমস্তক সমস্ত অস্ত্রজাল প্রদান করিলেন (৩৫)।

এই শ্রীমদ্ধ্যত্মরামায়ণের উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাণ্ডে বিশ্বামিত্রসহায়তা ও তাড়কাবধনামে পঞ্চম অধ্যায় উক্ত হইল ॥ ৫ ॥ • ॥

यर्छाइशायः।

ভক কাম্যাশ্রমে রম্যে কাননে মুনিদঙ্গলে।
উষিষা রজনীমেকাং প্রভাতে প্রস্থিতাঃ শনৈঃ॥ ঃ॥
দিদ্ধাশ্রমংগতাঃ সর্কে দিদ্ধচারণদেবিতং।
বিশ্বামিত্রেণ দন্দিকা-মুনয়-স্তমিবাদিনঃ॥ ২॥
পূজা-ক মহতী-ককু-রামলক্ষাণয়ো দ্রুতং।
শ্রীরামঃ কোশিকং প্রাহ মুনেদীকা প্রবিশ্যতাং॥ ৩॥
দশ্যেস্ব মহাভাগ কৃত স্তৌ রাক্ষদাধমো।
তথেত্যুক্তা মুনি-র্যন্তু মারেভে মুনিভিঃ সহ॥ ৪॥
মধ্যাহ্লে দদ্শাতে তৌ রাক্ষদো কামরূপিণো।
মারীচশ্চ স্থবাহশ্চ বর্ষন্তৌ রুধিরাহ্নিনী॥ ৫॥
রামোহপি ধনুরানম্য দ্বো বাণো দন্দধে হুধীঃ।
আকর্ণন্তং সমাক্ষ্য বিসদ্ভ্র তয়োঃ পৃথক্॥ ৬॥

তরোরেকস্ত মারীচং ভ্রাময়ন্ দশযোজনং।
পাতয়ামাদ জলধো তদভূতমিবাভবং॥৭॥
কিতায়োহয়িময়োবাণঃ স্থবাত্থ মদহং ক্ষণাং।
অপরে লক্ষ্মণেনাশু হতাস্তদন্ত্বায়নঃ॥৮॥
পুপোঘে রাকিরন্ দেবা-রাঘবং দহলক্ষ্মণং।
দেবত্বনুভয়োনেত্ব স্তর্টু বুং দিদ্ধচারণাঃ॥৯॥
বিশ্বামিত্রস্ত সংপূজ্য পূজাহং রঘুনন্দনং।
আফেনিবেশ্যচালিক্স্য ভক্ত্যা বাস্পাক্লেক্ষণঃ॥১০॥
ভোজয়িয়া দহ ভাত্রা রামং পকফলাদিভিঃ।
পুরাণবাক্যৈ-বিবিধৈ নিনায় দিবদত্রয়ং॥১১॥
চতুর্থেহ্ছনি সম্প্রাপ্তে কোশিকো রাম মন্তবীং।
রাম রাম মহাযক্তং দ্রু মিচ্ছামহে বয়ং॥১২॥

অনস্তর বিশ্বামিত্রপ্রংসর সায়জ শ্রীরাম অতিরম্ণীয় কাম্যাশ্রমন্থ কাননে এক যামিনীকাল গাপন করিয়া পরদিন শ্রভাতে মন্দমন্দগভিষারা (১), সির্বারণদেবিত সিন্ধাশ্রম গমন) করিলেন্। পরে বিশ্বামিত্রকর্তৃক উপদিষ্ট তত্ত্বস্থু মুনিগণ (২ অবিশবে রাম লক্ষণের মহতা পূলা করিলে, শ্রীরাম বিশ্বামিত্র-মুনিকে কহিলেন্, হে মুনে! আমাদিগেরদীক্ষাবিদি প্রাদানকরিয়া (৩), হে মহাভাগ! কোথায় আছে মারীচ হ্রবাহ্ত প্রভৃতি রাক্ষ্যাণণ, দেখাইয়া স্থিরচিত্ত হউন। তদনস্তর শ্রীরামবাক্যে সম্মত্ত মুনি "তথাক্ত" বলিয়া মুনিগণের সহিত্ত যাগারস্ত করিলে (৪), মধ্যাহ্রকালে গাণমগুলে কামরূপ মারীচ হ্রবাহ্ত রাক্ষ্যাধ্যম মাংসশোণিত বর্ষণকরতঃ রামলক্ষ্ণকত্ত্ব দৃষ্ট হইলে (৫), অসাধারণ ধীশক্তিসম্পন্ন শ্রীরাম শ্রাসনে তুইশর একত্ত সন্ধান-করিয়া আকর্ণ করিলে, উক্ত রাক্ষ্যাধ্যের প্রতি তুই বাণ পৃথক নিংক্ষেণ করিলে, উক্ত রাক্ষ্যাধ্যের প্রতি তুই বাণ

বাণ মারীচনামক রাক্ষদকে দৃশগোজন ভ্রমণ করাইয়া জ্লাফিনীপে যৎকালে মারীচ পতন হইল. তৎকাল যেন অদুভ্রাপার হইয়া উঠিল (৭)। পরে দ্বিতীয় অগ্রিময় বাণ ক্ষণকালমধ্যে স্থবাহু রাক্ষদকে ভ্রম্মাৎ করিলে, লক্ষণ তদক্চর নিশাচরগণকে অবিলম্বে অস্তকের অধীন করিলেন্ (৮)। পশ্চাৎ ক্ষমরগণ সলক্ষণরাঘবের প্রতি কুস্থম বারিবর্ষণরূপ পূজাঞ্জনি প্রদানে দেবতন্তিবাদ্যধ্বনি করিতে লাগিলেন্ এবং সিদ্ধচারগণণ স্তব করিতে আরম্ভ করিলেন্ (৯)। অনস্তর বাম্পবাদিধার মুনি ভক্তিপূর্বক আলিঙ্কন দানে স্বকীয় অঙ্কে রাথিয়া লক্ষণসহিত পূজার্হ রল্বনন্দনের ষ্থানিষি পূজাসমাপনাস্তে (১০) বিবিধ প্রক্ষলাদি ভোজন করাইয়া নানাপুরাণবাক্যে দিবসত্রয়কালক্ষ্মে (১১) চতুর্থ দিবস প্রাপ্তে প্রাতঃকত্যাদিনির্ব্বাহে বিশ্বামিত্র মুনি কহিলেন্,রাম। মহায়ক্তন্ত্রাক্রিহে বিশ্বামিত্র মুনি কহিলেন্,রাম। মহায়ক্তন্ত্রাক্রিহে বিশ্বামিত্র মুনি কহিলেন্,রাম। মহায়ক্তন্ত্রাক্রিহে তিছি (১২)। বিদেহ রাজ নগরস্থ মহাল্লা

বিদেহরাজনগরে জনকস্থ মহাত্মনঃ।
তত্ত্র মাহেশ্বর-ঞ্চাপ-মস্তি অস্তং পিনাকিনা।
দ্রুক্ষ্যদি ছং মহাদত্বং পূজ্যদে জনকেন চ॥ ১৩॥
ইত্যুক্তা মুনিভি-স্তাভ্যাং যযৌ গঙ্গাদমীপগং।
গোত্রমস্যাশ্রমং পুণাং যত্ত্রাহল্যা শিলাময়ী॥ ১৪॥
বিশ্যপুষ্পকলোপেতং পাদপৈঃ পরিবেস্থিতং।
মুগপক্ষিগণৈ হীনং নানাজস্তুবিবর্জ্জিতং। ১৫॥
দুট্বোবাচ মুনিং শ্রীমান্ রামো রাজীবলোচনঃ।
কদ্যৈতদাশ্রমপদং তপতাং স্থুখদং মহং॥১৭॥
তত্ত্র পুষ্পফলৈ যুক্তং জন্তুভিঃ পরিবর্জ্জিতম্।
আহলাদয়ত্তি মে চেতো ভগবন্ জহি তত্ত্বতঃ। ১৭।
বিশ্বামিত্র-উবাচ।

শৃণু রাম পুরারতং গোতমো-লোকবিপ্রাহতঃ। সর্ববর্ষ হতাংশ্রেষ্ঠ-স্তপদা-রাধয়ন্ হরিং॥ ১৮॥ তথ্যৈ ব্রহ্মা দদৌ কন্যা-মহল্যাং গোকস্থলরীং।

জনকরাজভবনে সাক্ষাৎ সদাশিবদত্ত অসাধারণওক যাহা মাহেশ্বর ধনুঃ আছে, তাহা একবার দৃষ্টি করিতে যাইলে, বোধ হয়, জনকরাজকর্তৃক সবিশেষ পূচ্যনান হইবেন্ (১০)।

মুনি এই কথা কহিলে, সগন্ধণ শ্রীরাম যেস্থানে অহল্যা শিলাময়ী আছেন, এমন পুণ্যদ ভাগীরগী-সমীপবর্ত্তী গৌতমা-শ্রম গমন করিয়া (১৪), নানামহীরুহ পরিবেষ্টিত দিব্যকলকু স্থম-শোভিত ও মৃগপক্ষি-প্রভৃতি জন্তগণ-শৃত্য স্থানর আশ্রম দেথিয়া রাজীবলোচন রাঘব মুনিকে কহিলেন, এ আশ্রম কোন মহাভ্যার ? তপন্থিগণের অভিন্থখদ, বিশেষ জন্তবিবর্জ্জিত, অথচ ফলপুন্সযুক্ত ; এই আশ্রম দেথিয়া; ভগবন্! মচিতে নিতান্ত আহলাদিত হইয়াছে। ইহার পূর্ববৃত্তান্ত কি ? প্রকাশ করিয়া স্থিরচিত্ত
করিতে অনুমতি হয় (১৫)(১৬)(১৭)। পরে বিশামিত্র
কহিলেন, রাম! পূর্ববৃত্তান্ত শ্রবণকর্পন। এই আশ্রমে থাকিয়া
ধার্ম্মিকশ্রেষ্ট ও সর্বলোক বিথ্যাত গৌতমমুনি তপস্থান্থারা
হরির আরাধনা করেন্(১৮)। পরে ব্রন্ধা মুনির অসাধারণ ব্রন্ধ-

ব্রক্ষচর্য্যেণ সন্তন্তঃ স্থক্র্মবণপরায়ণাং ॥ ১৯ ॥
তয়া সার্দ্ধ নিহাবাৎসাদ্-গোত্রম-স্তপতাম্বরঃ।
শক্রন্ত তাং ধর্ষ রত্ত্র মন্তরং প্রেপ্স্-রন্থহং ॥ ২০ ॥
কদাচি ন্মুনিবেশেন নির্গতে গৌত্রম গৃহাৎ।
তাং ধর্ষ থিয়া নিরগাং জরিতং পুন-রপ্যগাৎ ॥২১॥
দৃন্টা-য়ান্তং স্বরূপেণ মুনিঃ পরমকোপন।
পপ্রস্থ ক-স্তং ছন্টাত্মন্ মন রূপধরো-হধমঃ॥ ২২ ॥
সত্যং ক্রহি নচেদ্-ভন্ম করিষ্যামি ন সংশয়ঃ।
সোহব্রবীদ্দেবরাজোহহং পাহিমাংকামকিক্ষরং॥২০॥
কৃতং জুগুপ্সিতং কর্ম ময়া কুংসিতচ্তেসা।
গোত্রমঃ ক্রোধাতা আক্ষঃ শশাপ দিবিজাধিপং ॥২৪॥
যোনিলম্পট ছন্টাত্মন্ সহস্রভগ্রান্ ভব।
শপ্তা তং দেবরাজানং প্রবিশ্য স্থাশ্রমে ক্রন্তং ॥২৫॥
শপ্তা তং দেবরাজানং প্রবিশ্য স্থাশ্রমে ক্রন্তং ॥২৫॥

চর্যাকুষ্ঠানদর্শনে সহষ্ট হইয়া সেবার্থ লোকস্কলরী অহল্য। নামী ক্সাদান করিয়াছিলেন (১৯)। অনন্তর শুশ্রষণপরায়ণা অহলা। ভার্য্যার সহিত তপত।ম্বর গৌহম এই আশ্রেমে বাস করেন। কিন্তু অহল্যাদত্তননা ইক্র প্রতিদিন এ আশ্রমে যাতায়াড করেন (২০)। এক দিবস কুটার হইতে গৌতম নির্গত হইলে, অর্থাৎ দণ্ডচ চুষ্টয় রজনী দবে প্রাতঃস্নানাদি করিবার মানদে নদ্যাদিতীরগমন করিলে, অবিকল গৌতম বেশবিভাগেধর পুরন্দর অহল্যাকে লইয়া ধাবনান হইতেছে (২১)। মুনি স্বরূপে দেখিয়া কোশপরতন্ত্র গৌতম মূলিবেশধারিকে জিজ্ঞাসা করি-লেন, বে পামর ! কস্তং ? তুই কে ? বে গুটাস্মন্ ! কথং মমরূপ-ধর ? কি তেতৃ আমার রূপ ধারণ করিয়াছিস্ (২২) ? ইচা অসত্য কহিলে, নিঃসংশয় ভত্ম করিব। গৌতম এই বলিলে মুনিবেশ-धाती कहिन, कामिक इत (मवतास डेस आमि, आमारक तका-কর্মন (২৩)। কুৎদিতচিত্তে গহিত কার্য্য কবিয়াছি। পরে দেবরাজ ইন্দ্র এই রূপে গৌতনের বশম্বদ হটলে, ক্রোধতাম্রাক গৌতম, "বে যোনিলম্পট! বে ছ্টাত্মন্! তং সংস্ত্রত্পবান ভব," এইবলিয়া দেবরাজইক্রকে অভিসম্পাতকরতঃ স্বাশ্রমে শীঘ্র প্রবেশ করিয়া (২৪) (২৫), অঞ্চলিবদ্ধা অতি কম্পিতবতী

দৃষ্টাহল্যাং বেপমানাং প্রাঞ্জলিং গৌতমোহত্রবীৎ।
ত্রুফে জং তিষ্ঠ তুর্কৃত্তে শলায়ামাশ্রমে মম॥ ২৬॥
নিরাহারা দিবারাত্রং তপঃ পরমমান্থিতা॥ ৩৭॥
আতপানিলবর্ষ দিসহিষ্ণুঃ পরমেশ্বরং।
ধ্যায়ন্তী রামরামেতি মনসা হুদি সংস্থিতং॥ ২৮॥
নানাজন্তুবিহীনোহয়মাশ্রমো মে ভবিষ্যতি॥ ২৯॥
এবং বর্ষ সহস্রেষু বনেযুপবনেষু চ।
রামো দাশর্থিঃ শ্রীমানাগমিষ্যতি সাকুজঃ॥ ৩০॥
যদা জ্বাশ্রমশিলাং পদাভ্যা-মাক্রমিষ্যতি।
তদৈব ধৃতপাপা জং রামং সংপৃজ্য ভক্তিতঃ॥ ৩১॥
পরিক্রম্য নমস্কৃত্য স্তর্খা শাপা-দিমোক্ষ্যমে।
পূর্ববিশ্বম শুশ্রমাং করিষ্যুসি যথাস্ত্র্খং॥ ৩২॥
ইত্যুক্ত্যা গৌতমঃ প্রাগাদ্ধিমবন্তং নগোভমং।
তদা হুহল্যা ভূতানা-মদৃস্যা স্বাশ্রমে শুভে॥ ৩০॥
তব পাদরজঃস্পর্শং কাজ্কন্তী পাপনাশনং।

আতেহদ্যাপি রঘ্শ্রেষ্ঠতপো-ভূকর মান্থিতা॥ ৩৪ ॥ পাবয়য় মুনে-ভার্যা মহল্যাং ব্রহ্মণঃ স্থতাং॥ ৩৫ ॥ ইত্যুক্ত্রা রাঘবং হস্তে গৃহীত্বা মুনি পুঙ্গবঃ।
দর্শয়ামাস চাহল্যা-মুগ্রেণ তপসা স্থিতাং॥ ৩৬ ॥ রামঃ শিলাং পদা স্পৃষ্ট্রা তা-ঞ্চাপশ্য-ভপোধনাং।
ননাম রাঘবোহহল্যাং রামোহহমিতি চাব্রবীং ॥ ৩৭॥ ততোদ্ফ্রা রঘুশ্রেষ্ঠং পীতকোমেয়বাসসং।
ধরুর্বাণধরং রামং লক্ষ্মণেন সমন্থিতং॥ ৩৮ ॥ শ্রিতবক্ত্রং পদ্মনেত্রং শ্রীবংসান্ধিতবক্ষসং।
নীলমাণিক্যসন্ধাশং দ্যোতয়ন্তং দিশোদশ॥ ৩৯ ॥ দ্ট্রা রামং রমানাথং হর্ষবিক্ষুরিতেক্ষণা।
গোতমস্থ বচং স্মৃত্রা জ্রাত্রা নারায়ণং পরং॥ ৪০ ॥ সংপৃজ্য বিধিব-দ্রাম-মর্য্যাদিভি-রনিন্দিতা।
হর্ষাক্রেজলনেত্রান্তা দণ্ডবং প্রণিপত্য সা॥ ৪১ ॥ উত্যায় চ পুন দৃ ট্রা রামঃ রাজীবলোচনং।

অহল্যাকে দেখিয়া কহিলেন, ছুঠে। ছুশ্চবিত্রে। আমার এই আশ্রমশিলাতে দিবারাত্র অনাহারে পরমতপস্থাচরণ করিয়া থাক (২৬) (২৭)।

শীত গ্রীম্মবর্ষাদি সর্ক্ষণল সহ্য করিয়া কেবল হৃদিন্তিত রাম-রাম পরমেশ্বর চিন্তা করিয়া ধ্যানযোগে কালক্ষমে পাপক্ষয় কর আর জন্যাবিধি এই আশ্রম নানাজন্তবিধীন হইবে (২৮) (২৯)। এইরপে সহস্রবর্ষকাল সমতীত হইলে, বনে ও উপবনে সাহ্জ দাশর্থি শ্রীরাম আসিয়া (৩০), যৎকালে তব আশ্রমশিলাতে পদর্জ প্রদান করিবেন্, তৎকালে হৃদ্ধতি হইতে নিদ্ধৃতি পাইয়া ভক্রিগোগসহকারে শ্রীরামের পূজনন্তবনপ্রণাম-প্রদক্ষিণাদিক্রিয় করিলে, শাপ হইতে মুক্তি পাইবে, পরে পূর্ক্বৎ যথাস্থুণ মম শুশ্রমা করিবে (৩১) (৩২), এইকথা কহিয়া গৌতম যদ্বধি নগাধিরাজ হিমাচলে গমন করিয়াছেন, তদ্বধি অহল্যা সর্ক্ষ পাপক্ষর কর ভবদীয় পদারবিল্রজঃকণাস্পর্শনলালসায় স্বাশ্রমে স্প্রভ্তের অনুশ্ব ভাবে জন্যাপি, হে রল্বংশাবতংস! হৃদ্ধর

তপোনোগালম্বনে আছেন (৩০) (৩৪)। এক্ষণে তপোধন গৌতম মুনির ভার্যা বিশ্বস্ত বিরিঞ্চিতনয়া অহল্যাকে অবি-লম্বে পরিত্রাণ করুন (৩৫), এই বলিয়া মূনিপুক্সব বিশ্বামিত্র শীরামের হগুদ্ধ অবলম্বন করিয়া উগ্রতপ্যোগে একাগ্রচিত্রা পাষালম্বী অহল্যাশিলা দৃষ্টি করাইলে (৩৬), শ্রীয়াম স্থল্লিগ্ধমূর্তি স্থাতিলবিমলশিলার উপরি শ্রীচরণারবিন্দবিস্থাসমাত্রে তপো-ধনা অহল্যাকে দৃষ্টিকরিয়া প্রাণিপাত ক্রিয়াবসানে কহিলেন, 'আমি শ্রীয়াম" (৩৭)। অনস্তর পীতবরণ কৌষেয়বসনবিরাজিত দার্জ ধর্ম্বাণধর ঈষদ্বাস্থাত্র বদন, তাহে পদ্মপলাশবৎ লোচন, বক্ষস্থলবিরাজমান শ্রীবৎসপদ্চিহ্নিত নীল্মাণিক্যবৎ রূপে দিকবিদিক দেদীপ্যমান (৩৮) (৩৯), ঈদৃশ রঘুশ্রেষ্ঠ রমানাথ শ্রীয়ামসন্দর্শনে নয়ন পবিত্র করিয়া হর্ষবিক্ষু রিতলোচনা অহল্যা অমোঘবাক্য পতি বাক্য স্করণ করিয়া পরম নারায়ণজ্ঞানে যথা-বিধি অর্য্যাদিদ্বারা হুরারাধ্য রামের পূজাবসানে বিধোতপাণা স্কলনম্বান্তা অহল্যা দণ্ডবৎ প্রশামাভিবাদনাত্ত গাত্রোখান পুলকাক্ষিতসর্বাঙ্গা গিরা গদ্গদধৈয়ভূয়ৎ ॥ ৪২ ॥

করিরা পুনরার রাজীবলোচন রাম-মুখ নিরীকাণে হর্ধরোমাঞ্চিত শরীরে ভক্তি গদ্গদ বাক্ষ্যে শুব করিতে লাগিলেন্। যথা—

হে মধুস্দন! তব পদতল পরাজিত খত খত বালারণ কিরণ নিকর পালাবভী মুক্ত পদারবিদ্য মকরক্ষ মধুর রস পানানন্দিত শত শত বট্পদদেবিত পরম পবিত্র শিব বিরিঞ্চি বাঞ্চিত নানা নির্ভন্ন নির্ভ্তরণণ শুক্তেশিয়াগণ গৰাকীপার কিল্লর নর নাগ ফল রকোকুল প্রভৃতি শত সহজ্ঞ শাতিল্য কৌতিন্য মাত্ৰা জৈগীৰবা ধৌম্য শৌনকাদি সনক সনন্দ সনাতন কপিলাদি মনুমরীচ্যত্তি পরাশর ব্যাস বিশ্বু হারীত যাজ্ঞবন্ধ্য উদ্দেশে হঙ্গির যম আপস্তম্ব সম্বর্ত্ত কাত্যায়ন শাকটায়ন বৃহস্পতি শহা লিখিত দৃক্ষ শাতাত্তপ কাশ্যপ ভরদ্বাজ বিশ্বামিক গোভমাগন্তা পুলস্তা পুলহ ক্রত্ প্রচেতাদি, চেদিরাজ বস্থাপ, মার্কভেয়াদি মুনিগ্র, নারদাদি ৰ্ষিগণ, অধিসাম্বাদি হব্য কৰা বাহনাদি পিতৃগণ, গলা গোপতি গোমতী গণপতি গৰুৰ্বে গলাধর গোগণ গোতম গালব গণণ গোলোক গোৰ্ম্বন গোষ্ঠ গৰুবহ গদাধৰ পৰা প্ৰতীৰ গোদাবরী গারতী গ্রহগোপ গোকুল কুল সঙ্গুল, রবাদি मश्र वात, ज्यमाहि शक्षातम जिथि, ज्यश्विनामि मश्रविश्मिक नक्क, विक्छानि मश्रविश्मिकि (यान, वर्वानि धकान्म कद्रन, भ्यापि घामन ब्रामि, ब्रानि काल वांबदवलापि समञ्ज, शकापि अपी, त्मांगांकि नक, उक्कवांकि नांग, श्रूरार्क्तांकि मर्के शर्क्षक, जलडत তলচর থচর চরাচর স্থাবর জঙ্গমাদি দমস্ত ব্রহ্মাও ভাতোরের, मारमामत, क्यीतमाश्रत कुलाधत कुशांतम शान छिखांत्रमामन, কশিপু প্রভৃতি প্রবল রিপুদল দমন, দিবাকর স্কুকর কিরণ विजावन श्वां विश्वः मन जवहीत हत्रन हर्मन सहत्र महांक विका-শন সর সঞ্জাদন বিশেষ শেষ শয়ন বিদর কমঠ ব্রাহ নুসিংহ বামন করেকুল-সংহর পরভরাম রাম বলরাম কৃষ্ণ কন্দীত্যাদি দশাবভার রূপধর, মুষ্চিক্তর্ম সূত্ত বাস কর, শোক ভাপ হর, তব চরণ পদ্ধিত শ্রুতি পুরাধ শাঝ্য পাতঞ্জন মীমাংসা বৈশেষিক বেদান্ত বেদান্ধ বেদ তের্কণান্ত সমূহ শোভিত, त्राज्ञारस्योती ध्राज्ञ (मञीतन मक्तिमाधा स्थमाधा माध्यक्रतन মনোজীপ্ত দায়ক, পদতলোপরি নগ্রহিত দশংশ শত শত भारतीय स्थारक मृत्र स्टामिका मम्बन गढ गठ सदक्ष মনিমায় প্রধান বালে বৈছ্যা বন্ধ হীরক নানারত জড়িভ ইচিভ

অহা কৃতার্থাত্ম জগন্ধিবাস তে
পদাগ্রসংলগ্নজঃকণানহং।
স্পান্ম যৎ পদ্ধজুশকুরাদিভি
বিম্গাতে বর্দ্ধিতমানদৈঃ সদা॥ ৪০॥
আহা বিচিত্রং তব রাম চেষ্টিতং
মনুষ্যভাবেন বিমোহয়ন্ জগৎ।
চলক্ষজভাং চরণাদিবচ্ছিতঃ
সম্পূর্ণ আনক্ষময়োহ্পি মারিকঃ॥ ৪৪॥

হুশোভিত ধ্বজবজান শান্ধিত দ্বিমন মুখন মূপুর প্রক্রাদি জনগণ হলর শ্রুতিহুধ্জনক হুখসারণ ত্রিলোকপাবন অশেষ পাতকীগণ নিস্তারণ, হে ভৰতারণ! ভদবঙ্গুষ্ঠাঙ্গুলি নির্গত নিৰ্মাল মৰ্ম পাৰক ছৰ্ম জল হিলোল সুশীতল সমুঞ্জী তুলদীদল গুণরাশি সুশোভিত সুচারু গুরু জামু জন্ম মনোহ-রোক্ন কটিভট বেষ্টিভ কিন্ধিনী জাল বসন ধ্রুববিগ্ধয়, ছিভুজ আজামুলম্বিতবাত নব, নিশিত নীল নীয়দ নব হৰ্জাদল শ্যাম বাম নীলকমলোপমলোচন শুভিযুগল কুওল নাস্কাতিলকাভরণ मिश्रिक श्रांत (क्यूत कितीर करेकामालक्षक कर्यक्रम अध्यान। বিরাজিত ওঠাধর ধর, জিত দাড়িম্দত্তপংক্তি পলায়িত তর্কাণজ্ঞি সমুজ্ঞল হাস্য পরিহাস্য রদন, সিত্রদন, চর্চিত শীৰংস ভড কোছভ শোডিত বক্ষাহল, তিল্কাবলি ভাল बि दृश्यक, किनाइम किनायिनाम क्रिकेन, माध्य जगनियाम मिनाकत कुल हृहामिन धनारेककथाम, धनधाम त्रव्यास्य म्मात्रथ क्रमत्, क्रम्य वीकांक् त लाताह, तह कानकी कीवन, टकमिलिङ्गन, ष्रध्नननन, जनमञ्ज्ञकन, निष्ठाङ्गक्रम, किल्क्लूष-নাশন, তুরত কৃতাত বিধ্বংসন, পরম কৃপাময়, ছে অনাথ नाथ! ॥ ४२॥

অহল্যা আরও কছিলেন—হে জগনিবাস। বর্দ্ধিন্দানস প্রজ্ঞ শক্ষরাদির অনিশ অবেষ্যমাণ আপ্রকার বাহা পদাঞ্জাপলগ্র রজ্ঞাকণা ভাহা স্পর্শ করিয়া অদ্য কৃতার্থা হইলাম্ (৪৩)। হে রাম। তব কি চিত্র চরিত্র, যেহেতু মানব দেহে এই অসার সংশারকে অনবরত অনন্ত মায়াজালে মোহিত করিয়া আবার চরণাদি বিহীনে ক্রিপে নিরন্তর গ্যনাগ্যম ক্রেন এবং আনন্দ্যর

যৎপাদপক্ষজপরাগপবিত্রগাত্রা ভাগীরথী ভববিরিঞ্মুখান্ পুনাতি। সাক্ষাৎ স এব মম দুখিষয়ে যদান্তে কিং বর্ণাতে মম পুরাক্তভাগধেয়ম্॥ ৪৫॥ মর্ত্রাবভারে মনুজাকৃতিং হরিং রামাভিধেয়ং রমণীয়দেহিনম্। ধনুর্ধরং পদ্মবিশাললোচনং ভজামি নিত্যং ন পরান্ ভলিষ্যে ॥ ৪৬ ॥ যৎপাদপঙ্কলরজঃশ্রুতিভির্বিমুগ্যং যশাভিপক্ষজভবঃ কমলাসনশ্চ। যন্নাররসিকোভগবান্ পুরারি ত্তং রাসচন্দ্রমনিশং হৃদি ভাবয়ামি ॥ ৪৭ ॥ যস্তাবতারচরিতানি বিরিঞ্জিলোকে গায়ন্তি নারদমুখা ভবপদ্মজাদ্যা:। আনন্দৰাশ্রুপরিষিক্তকুচাগ্রদীমা. বাগীশ্বরী চ ত্মহং শ্বরং প্রপদ্যে॥ ৪৮॥ নোহয়ং পরাত্মা পুরুষঃ পুরাণ এষ: স্বয়ং জ্যোতিরনন্ত আদ্যঃ।

হইলেও পূর্ণায়িক বলিয়া ভূবনে বিখ্যাত (৪৪)। আর পাদপায়পারাণ স্পর্নারত পরিত্রগাতা তিপথগা ও শিব বিরিক্তি প্রভৃতি
গীর্জাণগণকে যিনি পরিত্র করিয়াছেন্ সেই সনাতন পারমেশ্রম
আমার নরনপথ গোচরের সাক্ষাং প্রত্যক্ষ হইলেন। আহা
পূর্বজন্মকৃত ভাগ্যের কথা কি বর্ণির (৪৫) বিশেষ মর্ভ্যারতারে
মনুজাকৃতি ধন্মর্বাণ্ধর পায়বিশাললোচন রমণীয় দেহ রাম
নামক হরি ভিন্ন অন্য ভজিবার আর আবশ্যকতা নাই (৪৬)।
আর যাহার পাদপায়রজ শ্রুতি অবেষণ করেন এবং যাহার
নাভিপায় হইতে কমলাসনের উত্তর ও যাহার নাম শ্রনে ভগবান্
ত্রিপুরারি রসিক, ঈদৃশ শ্রীরামচন্দ্রকে অনুক্ষণ চিন্তা করি (৪৭)।
আর যে রাম-চরিত্র নারদ প্রভৃতি শিব বিরিঞ্চি দেবগন রক্ষলোকে গান করেন্ এবং আনন্দ রস পরিপূর্ণ হেতু নরন
বারিধারা পরিষিক কুচাপ্রানীমা ব্রশানী, ঈদৃশ রামের শ্রণাগত হই (৪৮) এবং যিনি স্বরং পর্যাত্মা পুরাণ পুরুষ সাক্ষাই জ্যোতিঃ

 শ্রাতকুং লোকবিমোছিনীং যো ধত্তে পরাকুগ্রহ এষ রাম:॥ ৪৯॥ অয়ং হি বিশ্বোদ্ভবসংয়মানা নেকঃ স্বমায়াগুণসম্বিতোয়ঃ ৷ বিরিঞ্কিষ্টাশ্বর নামভেদান্ ধত্তে স্বতন্ত্রঃ পরিপূর্ণ আত্মা॥ ৫০ ॥ নমোস্ত হে রাম তবাজ্যিপঞ্চলং শ্রেয়া ধৃতং বক্ষদি লালিতং প্রয়াহ। আক্রান্তমেকেন জগতায়ং পুরা ধ্যেয়ং মুনীলৈরভিমানবর্জ্জিভিঃ ॥ ৫১ ॥ জগতামাদিভূতত্ত্বং জগত্তং জগদাঞ্চয়ঃ। সৰ্বভূতেষু সংসক্তএকোভাতি ভবান্ পর:॥ ৫২॥ কার বাচ্যস্ত্রং রাম ওঁবাচামবিষয়ঃ পুমান্। বাচ্যবাচকভেদেন ভবানেব জগন্ময়ঃ॥ ৫৩॥ কার্য্যকারণকর্তৃত্বফলসাধনভেদতঃ। একো বিভাদি রাম তং মায়য়া বহুরূপয়া। ৫৪॥ ত্বনায়ামোহিভধিয়স্ত্রাং ন জানন্তি তত্বতঃ।

স্বরূপ অনাদি অনন্ত, তিনিই লোক বিমোহিনী মারামূর্তি ধারণে পরামুগ্রাই বিতরণে অকাতর (৪৯)। যিনি নিজমায়। গুণাবলম্বনে বন্ধাতের কাষ্টি স্থিতি প্রলাবের একমাত্র কারণ ইইরা বিরিঞ্চি বিষ্ণু মহেশ্বর পৃথক্ পৃথক্ নাম ধারণে সক্ষম (৫০)। হে রাম! যে পাদপদ্ম লক্ষ্মী বক্ষাংস্থলে রাথিয়া অক্ষত্রন প্রাপ্তেন্ এবং মে পাদপদ্ম জগত্রর আক্রমণ করিয়াছেন্ এবং অভিমানশূন্য মুনিগণের সভত চিন্তনীয় যে পাদপদ্ম, সেই পাদপদ্মে প্রামা ইট (৫১)।

এবং তুমি জগতের আদিকারণ ও জগনার জগদাশ্র দর্মভূতে সংসক্তরূপে একমাত্রই দীপ্তি পাইতেছ অভএব
আপনকার পর আর কে আছে (৫২) হে রাম! তুমি প্রণব পদ
বাচ্য এবং বাক্যের অগোচর পুরুষ এবং বাচ্য বাচক ভাববিশেষে ভবান্মাত্রই জগনার ও কার্যাকারণ ভাবতেতু কর্তৃত্ব
ফল সাধনে সক্ষম; বহুরূপ মারাহেতু হে রাম! একমাত্র
জগতে দীপ্তি পাইতেছ (৫০,৫৪); ভবদীয় মারা মোহিত বুদ্ধি
বাক্তি সমন্ত জ্পানাক যথাই-ভাবে না জানিয়া কেবল প্রমেশ্বর

মাকুষং স্বাভিমন্যন্তে মায়িনং প্রমেশ্রম্। ৫৫ ॥ আকাশবত্তং সর্বত্ত বহিরন্তর্গতোহমলং। জসঙ্গেইহাচলোনিত্যঃ শুদ্ধোবৃদ্ধঃ সদাৰয়ঃ । ৫৬ । যোষিমূঢ়াহমজ্ঞাতে তত্বং জানে কথং বিভো। তস্মাত্তে শতশোরাম নমস্কুর্য্যা মনন্যধীঃ॥ ৫৭॥ দেবমে যত্র কুত্রাপি স্থিতায়া অপি সর্ববদা। च्रथानकमत्न मळा ভिक्तित्व मनाञ्च तम ॥ ৫৮ ॥ नभर्छ श्रुक्षाधाक नभर्छ ভक्তवरमल। নমস্তেহস্ত হুষীকেশ নারায়ণ নমোহস্ত তে॥৫৯॥ ভবভয়হরমেকং ভাকুকোটিপ্রকাশম্, করধ্তশরচাপং কালমেঘাবভাদম্। কনকরুচিরবস্ত্রং রত্নবৎকুগুলাচ্যং, कमलिविभागतिकः मार्चिः तामगीरः ॥ ७० ॥ স্তুত্রিবং পুরুষং দাক্ষাৎ রাঘবং পুরতঃ স্থিতং। পরিক্রম্য প্রণ্ম্যান্ড নারুজ্ঞাতা যুয়ে সতী।।৬১॥ অহল্যয়া কৃতং স্তোত্রং যঃ পঠেন্ডক্তিদংযুতঃ।

মারা গুণাবলম্বী মানব বলিরা অভিমান্ করে কিন্তু বহিরন্তর্গত সর্ববি নির্মান আকাশ স্বরূপ ও অসন্ধ, অচল, নিত্য, শুদ্ধং, বৃদ্ধং, অথচ দদা অন্ধর (৫৬)। অতএব ঘোবিং বিধায় মৃঢ়া হেতু হে প্রভো তব তত্ব কিরুপে জানিতে পারিব ? হে বিভো তব চরণে অধিনীর শতশত প্রণাম (৫৭) হে দেব! যেখানে দেখানে অবস্থিতি করিলেও যেন তব পাদপদ্মে মদীর ভক্তি অনপারিনী হয় (৫৮)। হে পুরুষাধাক্ষ! হে ভক্তবংদল হাষীকেশ হে নারায়ণ ভূতাং নমঃ (৫৯)। ভব তয় হরণের একমাত্র কারন, কোটি স্ব্য্যাসমরপে জাজলামান, করে শ্বত বাগ ও ধমা, কালমেন্ব দম বরণ, কলখোত স্বর্ণবং বদন, রত্ববিশিষ্ট কুণ্ডল মুক্ত, পামপত্রের ন্যায় শুক্রবর্ণ নেত্র, এই রূপ দামুজ্জ শ্রীরামকে স্তব করি (৬০)। পুরতঃ শিক্ত দাক্ষাৎ রাঘব পুরুষকে এইরূপে স্তব করিরা প্রণাম প্রদাবদানে দামুজ্জাতা অহল্যা দতী হিমাচলন্থ গৌতম পতির পূর্ববং দেবা করিবার মানদে গমন করিলেন (৬১)।

যে ব্যক্তি অহল্যাক্বত শ্রীরামের স্তব ভক্তিপূর্বক পাঠ করিবেন্ তিনি যে কেবল অশেষ পাতক হইতে মুক্ত হইবেন্ স ম্চ্যতে ২ খিলৈঃ পাপৈঃ পরং ব্রহ্মাধিগচ্ছতি ।।৬২
পুত্রাদ্যর্থে পঠেন্ডক্ত্যা রামং হৃদি নিধায় চ।
সংবৎসরেণ লভতে বন্ধ্যায়ামপি পুত্রকম্ ।। ৬৩ ।।
সর্বান্ কামানবাপ্নোতি রামচন্দ্রপ্রসাদতঃ ।। ৬৪ ।।

ব্রহ্মান্থাক্তক্সগোহিপ পুরুষঃ
ত্তিয়ী স্থরাপোহিপিবা,
মাতৃ ভ্রাতৃ বিহিং সকোপি সততং
ভোগৈকবাঞ্ছাতৃর:।
নিত্যং স্তোত্তমিদং জপন্ রঘুপতিং
ভক্ত্যা স্থলা সংস্মরন্
ধ্যায়ন্ মুক্তি মুপৈপতি কিং পুনরসে
স্বাচারযুক্তোনর:।। ৬৫।।
ইতি শ্রীসদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরদংবাদে
আদিকাণ্ডে সদৈন্য-মারীচ-স্থ্বাহ্থ নিধনবিবরণং অহল্যাশাপ্রিমোচনং তৎকৃতং
শ্রীরামস্থোত্তকথনঞ্চ যুঠোহধ্যায়ঃ।

এমং নহে পরম ব্রহ্মপাদও প্রাপ্ত হাইতে পারিবেন (৬২)। আর

শ্রীরামকে হুদরে ভাবনা করিয়া ভক্তিযোগ সহকারে বন্ধাা
যদি পুত্রাদি নিমিত্ত এই স্তব পাঠ করেন্ তাহা হাইলে সম্বংসর
মধ্যে পুত্র লাভ করিতে পারিবেন। বিশেষ শ্রীরাম প্রদাদাৎ
সমস্ত কামনাই সিদ্ধি হাইতে পারে(৬৩) পরস্ত ব্রহ্ম গুরুদারগামী
ব্রাহ্মণের অশীতি রন্তিকা স্থবর্গ চৌর্য্যকারী স্থরাপানে রত
মাতৃ ভাতৃ বিহিংসক ও সতত ভোগ বাহ্বাতুর ইহারাও যদি
রঘুপতি রামকে ভক্তিপূর্বেক শ্রন বা চিন্তা করিয়া প্রতি
দিবস স্থোত্র পাঠ করে, অন্তে নির্ব্বাণপদ প্রাপ্তি হাইতে পারে;
সদাচার নরের কথা কি কহিবো (৬৪) !

এই শ্রীঅধ্যাত্ম রামায়ণে উমা মহেশ্বর কথোপকথনে
আদিকাতে সদৈন্য মারীচ স্থাত্ত নিধন বিষর্থ
অহল্যার শাপমোচন এবং অহল্যাকৃত
শ্রীরামের স্তব কথন ষষ্ঠ অধ্যার
উক্ত হইল॥

সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

প্রীমহাদেব উবাচ।

বিশ্বামিত্রোহপি তং প্রান্থ রাঘবং সহলক্ষনং।
গচ্ছামো বৎস মিথিলাং জনকেনাভিপালিতাম্। >
দৃষ্ট্বা ক্রুত্বরং পশ্চাদযোধ্যাং গস্তমর্হসি।
ইত্যুক্ত্বা প্রযথে গঙ্গা মুতীর্ঘ্য সহরাঘবঃ। ২।
বিদেহস্য পূরং প্রাত্থা ষিরাজঃ সমাবিশৎ।
প্রাপ্তং কৌশিক সাকর্ণ্য জনকোহপি মুদান্থিতঃ। ৩।
পূজাদ্রব্যানি সংগৃহ্য সোপাধ্যায়ঃ সমায্যো।
দগুবৎ প্রনিপত্যাথ পূজ্যামাস কৌশিকম্। ৪।
পপ্রচহু রাঘ্রে দৃষ্টা সর্বলক্ষণলক্ষিতো।
দেয়াতয়ন্তো দিশঃ সর্বাশ্চন্দ্র্য্যাবিবাপরো। ৫।
কল্যৈতো ব্রশার্চ্ লো পুত্রো দেবস্থতোপমো।
মনঃপ্রীতিকরো মে ২দ্য নরনারায়ণানিব। ৬।

অনন্তর বিশ্বামিতথি বিলক্ষণ রাঘৰকে কহিয়াছিলেন বংস জনকণালিতা মিথিলা রাজধানী গমন করিয়া তত্ত্বত্ব মহান্তর দর্শনান্তে আঘোধ্যাপুরী গমন করিবেল এই পার্মার্শ করিয়া সরাঘব এমিরাট গলার পরকূলবর্তি বিদেহপুর প্রাভঃকালে প্রবেশ করিলেম্ পরে জনক রাজা দৃত্যুখাৎ রাজ্যে কৌশিক-মহালয়ের ভভাগমন রার্জাপ্রেরণ হর্ষে নিজপুরোহিত ত্রী যুক্ত-শতানক সোপাধ্যর সমন্তিব্যাহারে ভগবান্ বিশ্বামিত্র ধ্যির ঘথারিধি আর্চনা করিয়া রাজর্বি জনক কৌশিক মহালয়ের নিকট বালকর্বের পরিচয়লাভে সম্যক্ যজুবান্ হইয়া কি আন্চর্যা স্কলিকণ লক্ষিত রূপে দিক্ বিদিক্ দেদীপামান্ জেবসুভোপম যেন সাকাৎ নরনারায়ণ বা অবিনীকুমার কিছা

প্রো দশরথদৈতে জাতরে রামলক্ষণে ॥ ৭ ।
পুরো দশরথদৈতে জাতরে রামলক্ষণে ॥ ৭ ।
মথরক্ষণার্থার ময়ানীতো পিতৃঃ পুরাৎ ।
আগচ্ছন্ রাঘবোমার্গে তাড়কাং বিশ্বঘাতিনীম্ ॥৮॥
শরেণৈকেন হতবাংশ্চোদিতো মিতবিক্রমঃ ।
ততো মমাশ্রমং গন্ধা মম যজ্ঞবিহিংসকান্ ॥ ৯ ॥
স্থাত্প্রমুথান্ হন্ধা মারীচং সাগরে ক্রিপৎ ।
ততো গন্ধাতটে পুণ্যে গৌতমস্যাশ্রমে শুভে ॥১০॥
দৃত্যাহ্ল্যা নমস্কৃত্য তয়া সম্যক্ প্রপ্জিতঃ ।
পাদাসুজরজঃপর্শাৎ সাপি শাপাদিযোচিতা ॥১১॥

বিতীয় চক্রস্থা এই তুই বালক দেখিয়া আদা আমার সাতিশ্য মনঃপ্রীতি ছইয়াছে ভগবান্ কোন মহাত্মার এই নরশাদূল ছুই পুত্র ? এইকথা জনক রাজবিকে জিজ্ঞানা করিলে তংকালে প্রকৃষ্টি বিশামিত্র জনক রাজবিকে প্রত্যুত্তর প্রদানন সাহনী ছইলেন। মহারাজ এই পুত্রম্ব আযোধ্যাধিপতি রাজা দশরথের, রামলক্ষণ নামক ছুই ভাই, শ্বনিদিশের যজ্ঞ রক্ষণার্থ আমাকর্তৃক আনীত হইয়া অমিডবিক্রেম জীরাম পথিছিতা বিশ্বঘাতিনী তাড়কানায়ী নিশাচরী বধানত্ব সিদ্ধাত্মগদ প্রাপ্তে যজ্ঞবিহিংকাক সমৈনা স্থবাত্ত প্রভৃতি খেরারত্বর নিশাচর নিধনাত্তে একবাণে মারীচকে সাল্যপারে নিংকোপ করিয়াছেন গবে স্থবধুনীতীরস্মীপরত্বি অতি পুণাদ গোত্যাশ্রমে আসিয়া ক্রতারাধিতা অহল্যাকে পাদাত্ম রজঃস্পর্শাদনে শাপ হইতে সদ্গতি প্রদান করিয়াছেন। ১১।

ইদানীং দ্রফুকামন্তে গৃহে মাহেশ্বরং ধনুং।
পূজিতং রাজভিঃ দবৈদ্রে ফুমিত্যনুশুশ্রুমঃ।১২॥
অতো দর্শর রাজেন্দ্র শৈবং চাপমনুত্রমং।
দৃষ্ট্যাযোধ্যাং জিগমিষুঃ পিতরং দ্রফুমিচ্ছতি॥১০॥
ইত্যুক্তো মুনিনা রাজা পূজার্হে। বহুপ্রুত্মং।
পূজরামাদ ধর্মপ্রো বিধিদৃষ্টেন কর্মণা॥ ১৪॥
ততঃ দংপ্রেষরামাদ মন্ত্রিণং বুদ্ধিমত্তরং।
শীস্রমানয় বিশ্বেশচাপং রামায় দর্শয়॥ ১৫॥
ততো গতে মন্ত্রিবরে রাজা কোশিকমত্রবীং।
বদি রামোধনুর্ম্মির কোট্যামারোপয়েদ্গুণম্॥১৬॥
তদা মমাত্মজা দীতা দীয়তে রাঘবায় হি।
তথেতি কৌশিকঃ প্রাহ রামমুদ্বীক্যু দক্ষিতম্॥১৭।
শীস্ত্যং দর্শয় চাপাগ্রাং রামায়ামিততেজ্ঞ্বদে।
এবং বদতি মৌনীশে আগতাশ্চাপবাহকাঃ॥১৮॥

হে রাজেক্র ! রাম নিখিল রাজগণপুজিত মাহেশ্ব-ধন্ত-দর্শন লাল্যায় এই স্থানে সমাগত হইয়াছেন (১২)। অতএব এক্ষণে মায়ন্তন হরধন্ত প্রদর্শন করন। রাম লক্ষণ হরকোদণ্ড দর্শন করিয়া আনোধ্যা যাইতে বাসনা করিতেছেন, কারণ বহু দিবস হইল ইহাঁরা পিতাকে দর্শন করেন নাই (১৩)। এই মুনিবাক্যের পর্যাবসানে বিবিধ পর্যাবলাচনা করিয়া ধর্মজ্ঞ জনক রাজা বিধিদৃষ্ট কর্ম্ম হারা প্রজাহ্ব রঘুনন্দনের পূজা করিয়া (১৪) রাম লক্ষণের অবলোকনার্থ বিশেশশরাসন আনিবার জন্ম শীল্প বুজিমন্তর মন্ত্রিক প্রেরণ করিলেন (১৫)।

তদনস্তর হরকোদশু আনয়ন করিবার জন্ম মন্ত্রিবর অন্তঃপুরনথো গমন করিলে পর রাজা কৌশিকমহাশয়কে কহিলেন,
নদি রাম ধরু ধারণ করিয়া প্রান্তভাগে জ্যারোপণ করিতে সমর্থ
২ন (১৬) তাহা হইলে রাঘবকে মদীয়াত্মজা দীতা সম্প্রদান করিব।
তথাস্তবলিয়া ঈষদ্বান্তস্কু রামম্থ নিরীক্ষণ করত কৌশিক কহিলেন (১৭) অমিতবিক্রম শ্রীরামকে সম্বর শিবধন্ত দর্শন করাও।
এই বলিয়া মুনি মৌনভাবাবলম্বনে অবস্থিতি করিলে(১৮) মহা-

চাপং গৃহীত্বা বলিনঃ পঞ্চসাহস্রসংখ্যকাঃ।
ঘণ্টাশতসমাযুক্তং স্বর্গপট্টের্বিভূষিত্রম্।। ১৯।।
দর্শ্যমাস রামায় মন্ত্রী মন্ত্রবিদাংবরঃ।
দৃষ্ট্যা রামঃ প্রহুষ্টাত্মা বদ্ধা পরিকরং দৃঢ়ম্।।২॰।।
গৃহীত্বা বামহন্তেন লীলয়া তোলয়দ্ধসুঃ।
আরোপয়ামাস গুণং পশ্চৎস্বখিলরাজস্থ ।। ২১।।
ঈষদাকর্যয়মাস পাণিনা দক্ষিণেন সঃ।
বভঞ্জাখিলছৎসারো দিশঃ শব্দেন প্রয়ন্।।২২।।
দিশশ্চ বিদিশশৈচব স্বর্গংমর্ত্থ রসাতলম্।
তদদ্ভ্তমভূত্ত্র দেবানাং দিবি পশ্যতাম্।। ২০।।
আচ্ছাদয়ন্তঃ কুস্থুনৈর্দেবাস্তুতিভিরীভূরে।
দেবতুন্দুভ্যোনেত্রন্ভূশ্চাম্পরোগণাঃ।। ২৪।।
দ্বিধাভগ্রং ধনুদ্ ব্যা রাজালিঙ্গ্য রঘুদ্বহম্।
বিশ্বয়ৎ লেভিরে সন্তোমাতরোহন্তঃপুরাজিরে॥২৫॥

বলপরাক্রান্ত পঞ্চ সহস্র সংখ্যক বাহক শতঘণ্টায়োজিত এবং স্থাবপিট্রিভূষিত (১৯) কোদও লইনা সমাগত হইলে মন্ত্রিদারের মন্ত্রী অসীমৃত্রেজা রামের নরনগোচর করাইলে উক্তরেশন্ত দর্শনে প্রস্ত্রীয়া রাম গাত্রীয় কবজাদি পরিকর দৃঢ়কাপে বন্ধন করিয়া (২০) অবলীলাক্রমে বামহন্তে পূর্ক্রোক্ত ওকতর সম্বসম্পন্ন ধূর্জ্ঞটীধরু উত্তোলনকরিলেন; সেই আশ্চর্য্য দর্শনে সমস্তরাজগণের দৃষ্টি সমভাবে হির হইলে (২১) দক্ষিণ হস্তরারা ঈষং আকর্ষণপূর্ক্রক জ্যারোপণ করিলেন অমনি নিথিলছং সার শীরাম কর্ত্ত্বক ধন্ত্রিধি ভগ্ন হইল (২২); তৎকালে ধন্তর শন্দে দিক্ বিদিক্ত স্বর্গমন্ত্রসাতল পরিপূর্ণ হইল, এবং ত্রিদিবস্থ দর্শনকারী দেবতা দিগের উহাতে আশ্চর্য্য জ্ঞান হইল (২৩)।

স্বরগণ শ্রীরামের উপর পুষ্প-বৃষ্টি পরিত্যাগ পূর্ব্বক তথ করিতে লাগিলেন এবং দেব হৃদ্ভি বাদ্য সহকারে অপ্সরোগণ নৃত্য করিতে নিযুক্ত হইল (২৪)। পরে রাজর্ষি জনক হর-কোদণ্ড দিধা ভগ্ন দেথিয়া রঘুকুলোদ্ধ শ্রীরামকে আলিঙ্গন করিলেন এবং পণ্ডিতগণ ও অন্তঃপুরস্থিত রাজমহিবীগণ পর্ম বিশ্বর লাভ করিলেন (২৫)। তদনস্তর ঈ্ষ্কাশ্ভবদনা স্থা- সীতা স্বর্ণময়ীং মালাং গৃহীত্বা দক্ষিণে করে।
শ্বিতবক্তা স্বর্ণনা সর্বাভরণভূষিতা ॥ ২৬ ॥

মুক্তাহারৈঃ কর্ণপত্তিঃ কণচ্চলিতনূপুরা ।

ছুক্লপরিসন্থীতা বন্ধান্তর্যঞ্জিতন্তনী ॥ ২৭ ॥
রামস্তোপরি নিক্ষিপ্য স্বয়মানা মুদং যযৌ ।

ততােমুমুদিরে সর্বের রাজদারাঃ স্বলক্ষ্তাঃ ॥২৮॥
গবাক্ষজালরক্ষে ভ্যোদৃষ্ট্। লােকবিমাহিনীম্ ।

ততােহত্রবীম্মুনিং রাজা পত্তং প্রেষয় সম্বরং ॥২৯॥
রাজা দশরথঃ শীভ্রমাগচ্ছতু সপুত্রকঃ ।
বিবাহার্থং কুমারাণাং সদারঃ সহ মন্ত্রিভিঃ ॥৩০॥

তথেতি প্রেষয়ামাস দূতাংস্ক্রনিতবিক্রমান্ ।

তে গত্বা নরশার্দ্লং রাম্ব্রেয়োন্থবেদ্যান্ ॥ ৩১ ॥

শ্রুত্বা রামকৃতং রাজা হর্ষেণ মহতাপ্লুতঃ ।
মিথিলাগ্মনার্থায় স্বর্যামাস মন্ত্রণম্ ॥ ৩২ ॥

রথমানয় মে শীস্তং গচ্ছাম্যদ্যৈব মাচিরং।। ৩৩।।
বশিষ্ঠস্ত,প্রতোষাতু সদারঃ সহিতোহমিভি:।
রামমাতরমাদায় মুনির্মে ভগবান্ গুরুঃ।। ৩৪।।
এবং প্রস্থাপ্য সকলং রাজর্ধিবিপুলং রথং।
মহত্যা সেনয়া সার্দ্ধমারুছ স্থরিতোষযোঁ।। ৩৫।।
আগতং রাঘবং শ্রুত্বা রাজা হর্ষসমাকুলঃ।
প্রভ্যুত্জগাম জনকঃ শতানন্দপুরোধসা।। ৩৬।।
যথোক্তং পূজয়া পূজ্যং পূজয়ামাস সৎকৃতং।
রামস্ত লক্ষ্মণেনাশু ববন্দে চরণো পিতুঃ।। ৩৭।।
ততোহফোদশরথো রামং বচনমত্রবীৎ।
দিষ্ট্যা পশ্যামি তেরাম মুখং ফুল্লাম্বুজোপমং।।৩৮।।
মুনেরন্তুগ্রহাৎ সর্বাং সম্পন্নং মম শোভনং॥৩৯॥
ইত্যুক্ত,াপ্রায় মূর্দ্ধানমালিক্ষ্য চ পুনঃ পুনঃ।
হর্ষেণ মহতাবিষ্টো ব্রক্ষানন্দং গতো যথা।।৪০।।

গচ্ছস্ত মিথিলাং সর্বে গজাশ্বরথপত্তয়ঃ।

वर्गा मर्काछत्रगण्यिका (२७) मूक्लाशांत উজ्ञानिककी, कर्गलवप्रत्माचना, मक्ताम्रमानिकन्পूता, क्लोमरखन्त्रीयाना, रखमथा

हरें छ श्रेकानिकछनी (२१) मीका मिक्ला शर्ख चर्गमन्नी माना श्रेश् कतिया श्रीतास्मत्र छें अत निःक्लिंग करक निष्क्रिका ७ ज्ञानिका हरें लान । चनक्रा ताक्ष्मिश्चीता (२৮) गराक्ष्मानत्र हरें एक त्नाकितिसाहिनी मीकां कि तिथा मकत्नर जानम् नां कि कित्तन । भारत ताक्षि जनक विधामिक स्थित कश्चिन (२०), कूमान-नित्यत विवाश्य मात्र मामाका मभूकक ताक्षा मभनत्थत्र मिनीय ख्यान भी खं खं गंभन क्रम्म भश्चिक प्रताया ताक्ष्मिनीत्क ख्यानिक्ष भव त्थात्र कक्रम (७०)।

অনন্তর মহামতি বিশামিত্র তথান্ত বলিয়া কতকগুলি ছরিত-বিক্রম দৃত প্রেরণ করিলেন। দৃতগণ কোশলাধিপতির নিকট উপস্থিত হইয়া রামের মঙ্গল নিবেদন করিল (৩১)। রাজা দশরথ শ্রীরামক্কত পূর্বাপর তাবং বৃদ্ধান্ত শ্রবণে নিরতিশর হর্বাবিষ্ট হইয়া মিথিলা গমন জন্ত মন্ত্রীকে স্ত্র হুইতে আদেশ ক্রিলেন (৩২)। কহিলেন, গজ, অখ, রথ ও পত্তি সমস্ত মিথিলা গমন করুক।
শীঘ্র আমার রথ আনয়ন কর; অদ্যই গমন করিব; বিলম্বে প্রয়োজন নাই (৩৩)। গুরু ভগবান্ বশিষ্ঠ মুনি অগ্নিচভূইয় ও রামমাতাকে লইয়া সন্ত্রীক সর্কাত্রে যাত্রা করুন (৩৪)।

রাঙ্গর্ষি এইরূপে সকলকে প্রেরণ করিয়া স্বয়ং বৃহৎরথে আরো-হণপূর্বক মহতী সেনা সমভিব্যাহারে যাত্রা করিলেন (৩৫)।

অনস্তর,রাজা দশর্থ আগমন করিয়াছেন শুনিয়া,হর্ষ সমাকৃল জনক রাজা শতানল পুরোহিত সহ অগ্রবর্ত্তী হইয়া (৩৬) যথা-যোগ্য বিধানে মাননীর রাজার সম্মান রক্ষা করিলেন। প্রীরাম ও লক্ষণের সহিত অবিলম্বে পিত্চরণে অভিবাদন করিলেন (৩৭)। তদনস্তর প্রকৃষ্টাত্মা দশর্থ শ্রীরামকে কহিলেন, রাম আমার ভাগ্য বশতঃ তোমার প্রফুর কমলোপম মুখ দর্শন করিলাম (৩৮) সে সমস্তই বিখামিত্র মুনির অন্তগ্রহ বশতঃ স্থান্সার হইয়াছে (৩৯)। এই বলিয়া মন্তকাত্রাণে পুনঃ পুনঃ ক্রোড়ে লইয়া বেন ব্রহ্মানন্দে পরমান্দিত হইলেন (৪০)। পরে জনক রাজ কর্তৃক আবাসে ততো জনকরাজেন মন্দিরে সংনিবেশিতঃ।

শোভনে সর্বভোগাঢ্যে সদারঃ সংস্থিতঃ স্থা।।৪১।।

ততঃ শুভে দিনে লগ্নে স্থ্যুহুর্ত্তে রঘূত্তমং।

আনয়ামাস ধর্মজঃ সভ্রাতৃপিতৃকং তথা।। ৪২।।

রত্নস্তত্তে স্থবিস্তারে স্থবিতানে স্থতোরণে।

মগুপে সর্বভোগাঢ়্যে মুক্তাপুস্পফলান্বিতে।।৪৩।।

বেদবিদ্যিঃ স্থসংবাসে ব্রাহ্মণৈঃ স্বর্পৃষ্থগৈঃ।

স্থবাসিনাভিঃ পরিতো নিক্ষকণ্ঠীভিরার্তে।। ৪৪।।

ভেরীতুন্মুভিনির্ঘোষে নৃত্যগীতসমাক্লে।

দিব্যরত্নাঞ্চিতে স্বর্ণপীঠে রামং ন্যবেশয়ৎ।। ৪৫।।

বশিষ্ঠং কৌশিকঞৈব শতানন্দপুরোহিতঃ।

যথাক্রমং পূজ্য়িদ্বা রামস্যোভয়পাশ্বিয়াং।। ৪৬।।

স্থারিদ্বা স তত্রাশ্বিং জ্বালয়্বি যথাবিধি।

সীতামানীয় শোভাচ্যাং নানারত্ববিভূষিতাং॥৪৭॥

সভার্য্যোজনকঃ প্রাদাৎ রামং রাজীবলোচনম্।
পাদে প্রকাল্য বিধিবদপোমূর্ক্যগারয়ৎ।। ৪৮।।
যা প্রতামূর্ক্ত্রি সর্বেণ ব্রহ্মণা মূনিভিঃ সদা।। ৪৯।।
ততঃ সীতাং করে প্রছা সাক্ষ্যতাদকপূর্বকম্।
রামায় প্রদদে প্রীত্যা পাণিগ্রছবিধানতঃ॥ ৫০॥
সীতা কমলপত্রাক্ষী স্বর্ণমূক্তাবিভূষিতা।
দীয়তে মে স্থতা ভূভ্যং প্রীতোভব রঘূত্রম॥ ৫১॥
ইতি প্রীতেন মনসা সীতাং রামকরেহর্পরৎ।
মূমোদ জনকো লক্ষ্মীং ক্ষীরাক্ষিরিব বিফবে॥৫২॥
উর্দ্মিলাঞ্চোরসীং কতাং লক্ষ্মণায় তদা দদে।।
তথৈব প্রুত্তকীর্ত্তিক্ষ মাণ্ডবীং প্রাত্তকত্যকাম্।
ভরতায় দদাবেকাং শক্রন্থায়াপরাং দদে।। ৫০।।
চত্যারোদারসম্পন্না প্রাতরঃ শুভলক্ষ্মণাঃ।
বিরেজ্বঃ প্রভ্যা সর্বেব লোকপালাইবাপরে।। ৫৪।।

নিবেশিত সদার সপ্ত দশরথ স্থােশভনীয় সর্বভাগাতা রাজনিদ্রে সংস্থিত ইইয়া স্থা ইইলেন (৪১)। পশ্চাৎ শুভদিনে
বৈবাহিক লগ্ন মুহুর্ত্তে ধর্মজ্ঞ জনক রাজা সভাতৃপিতৃক রঘ্তম
শীরামকে আবাসন্থান ইইতে আনিয়া (৪২) বৃহৎ রত্বত্ত
যুক্ত তােরণ চক্রাতপাচ্ছাদিত ছায়ামগুণে মুক্তাপুশফলাবিভ (৪৩)
দর্মভোগাতাস্থানে স্থবর্গভূষিত বেদবিদ্যান্ধণগবেইত নিককন্তাহবাসিনী-প্রমদা-বিরাজিত (৪৪) ভেরী ছন্তুভি বাদ্যশন্দে মৃত্য
দীত সমাকুল উত্তম রক্ত পুজিত স্থবর্ণ পীর্টোপরি উপবেশন করাইলেন (৪৫)। পরে শতানন্ধ প্রোহিত জনকরাজা শীরামের উভর
শার্ষন্থিত বশিষ্ঠ আর কৌশিককে ক্রনাশ্রে প্রজা করিয়া (৪৬)
ব্থাবিধি প্রজ্ঞলিত বহি স্থাপনান্তে নানারত্ব বিভূষিতা শোভাত্যা
দীতাকে ছায়ামগুণে আনিয়া (৪৭)।

সভার্য্য জনক রাজীবলোচন রামের ষথাবিধি পাদ প্রেক্ষানন করাইয়া, শিব বিরিঞ্চি মুনিগণ যে চরণামৃত মন্তকে ধারণ করেন, সেই চয়ণামৃত নিজ মন্তকে ধারণ করিলেন (৪৮।৪৯) পরে পাণি গ্রহণ বিধানে সীতাকে করে ধরিয়া মনঃ প্রীতি সহকারে সাক্ষত উদকদানপূর্বক শ্রীয়ামকে সম্প্রদান করিয়া কহিলেন (৫০) স্বর্ণমুক্তাবিভূষিতা কমলপত্তাক্ষী মদীয় স্বতা সীতা ভোমায় প্রদান করিলাম, হে রম্বতম! ভূমি সন্তই হও; (৫১) এই বলিয়া ভূপুননা জনক রামকরে সীতা সমর্পণ করিয়া,ক্ষীর সাগর বিভূকে লক্ষী সমর্পণ করিয়া যজ্ঞপ করি হইয়াছিলেন, তজ্ঞপ ভূপ্তি লাভ করিলেন। (৫২) পশ্চাৎ লক্ষণকে উর্দ্বিদা নায়ী ওরসী কভা সম্প্রদান করিলেন; তৎপর ভরতকে শ্রুত্বীর্তি,আর শত্রুত্বকে মাণ্ডবী নায়ী শ্রাত্বকভা প্রদান করিলেন, (৫৩) এই রূপ শত্রুত্বকা প্রাত্তি শান্ত হইলে বিতীয় লোকপালসম উক্ষলভায় বিরাজিত হইলেন। (৫৪) অনন্তর মিথিলাধিপতি বিশিষ্ট এবং বিশ্বা-

ততোহত্ত্ববীদ্দাষ্ঠায় বিশ্বামিত্রায় নৈথিলঃ।

সহতায়া যথোদন্তং নারদেনাভিভাষিত্রম্।। ৫৫।।

যজভূমিবিশুদ্ধ্যর্থং ক্ষ্যতোলাঙ্গলস্থা মে।

সারথাতসমূৎপন্না কৃষ্ঠকা শুভলজ্জনা।। ৫৬।।

তামেবৈক্ষমহং প্রাত্যা পুত্রিকাভাবভাবিতা।

অপিতা প্রিয়ভার্য্যায়ৈ শরচ্চক্রনিভাননা।। ৫৭।।

একদা নারদোপ্যাগাৎ বিবিক্তে ময়ি সংস্থিতে।

রণয়ন্মহতীং বীণাং গায়নারায়ণং বিভূম্॥ ৫৮॥

পুজিতঃ স্থমাসীনো মামুবাচ মুদান্বিতঃ॥ ৫৯॥

নারদ উবাচ॥ ৬০॥

শূণুষ বচনং গুহুং তবাভ্যুদ্মকারণং।

পরমাত্মা স্থবীকেশো ভক্তানুগ্রহকাম্যয়া॥ ৬১॥

দেবকার্য্যার্থিদিদ্ধ্যর্থং রাবণস্থা বধায়চ।

জাতোরাম ইতিখ্যাতো মায়ামানুষরপপ্পক্॥ ৬২॥

আন্তে দাশরথভূপি চতুর্ধা পরমেশ্বরঃ।
যোগসায়াপি সীতেতিজাতা বৈ তব বেশ্মনি॥৬০।
অতস্তঃ রাঘবারৈব দেহি সীতাং প্রয়ন্তঃ।
নান্তেভ্যঃ পূর্বভার্য্যেষা রামস্ত পরমান্মনঃ॥ ৬৪
ইত্যুক্তঃ প্রযথো দেবগতিং দেবমুনিস্তদা।
তদারভ্য ময়া সীতা বিফোর্লক্ষমীতি ভাব্যতে॥ ৬৫
কথং ময়া রাঘবায় জানকী দীয়তে শুভা।
ইতিচিন্তাসমাবিষ্টঃ কার্য্যেমকমচিন্তয়ম্॥ ৬৬॥
মৎপিতামহগেহেয়ু তাসভূত্মিদং ধকুঃ।
ঈশ্বরেণ পুরা ক্ষিপ্তং পুরদাহাদনন্তরম্॥ ৬৭॥
ধকুরেতৎ পণং কার্য্যমিতি চিন্ত্য তথাকৃতম্।
সীতাপাণিগ্রহার্থায় সর্বেষাং মাননাশনং॥ ৬৮।
অৎপ্রসাদান্মুনিশ্রেষ্ঠ রামো রাজীবলোচনঃ।
আনীতোহত্রধকুদ্র ফুং ফ্লিতোমে মনোরথঃ॥৬৯

মিত্রকে নারদক্ষিত স্বস্থতা সীতার বৃত্তান্ত বর্ণন করিতে লাগিলেন : (৫৫) যজভূমি শোধন করিবার জন্ম আমি লাঙ্গলকর্ষণ করিতে ছিলাম ; ঐ সময় সীরাধাত হইতে শুভলক্ষণা কন্তা উৎথিত ছইল ; (৫৬) আমি শরচ্চক্রনিভাননা কন্তাকে পুত্রিকাভাবে গ্রহণ করিয়া প্রীতি সহকারে প্রিয় মহিনীকে অর্পণ করিলাম । (৫৭) অনন্তর একদা একাকী উপবেশন করিয়া আছি এমন সময় নারদ মহতী বীণাবাদনপূর্বক বিভু নারায়ণের গুণগান করিতে করিতে আগেমন করিলেন ; (৫৮) আমি তাঁহার পূজা করিলাম । তিনি আসনে উপবেশনপূর্বক শ্রান্তি দ্র করত তুই হইয়া আমাকে কহিলেন, (৫৯। ৬০) আমি তোমার মঙ্গলের জন্তা এক গোপনীর বণা কহিতেছি শ্রবণ কর ; পরমান্মা হামীকেশ ভক্তজনের প্রতি দল্লাছ প্রকাশ, (৬১) দেবকার্য্য সাধন ও রাবণ বণ করিবার জন্তা নারামান্ত্র রূপ ধারণপূর্বক জন্মগ্রহণ করিয়া রামনামে বিথ্যাত ভইয়াছেন। (৬২) গ্রমেশ্র চারি অংশেদশর্থের চারি পুত্র হইয়া

অবস্থিতি করিতেছেন। আর যোগমায়া সীতা নামে তোমার ে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন। (৬৩) অতএব তুমি যত্ন করিয়া রামব্রক সীতা সম্প্রদান করিবে, অস্ত কাহাকেও দান করিবে না কারণ ইনি পরমায়া রামের পূর্বভার্যা। (৬৪) এই কথা বলি দেবম্নি আকাশপথে প্রস্থান করিবেন। সেই অবধি আমি সীতার বিষ্ণুর লক্ষ্মী মনে করিয়া আসিতেছি। (৬৫) রামকে কি প্রকারে এক কর্ত্তব্য স্থির করিয়াছিলাম। (৬৬) পূর্ব্বকালে পুরদাহের প্রমাদেব আমার পিতামহের নিকট স্থাস স্থরূপ এই ধন্তু রক্ষ করিয়া যান। (৬৭) সীতার বিবাহের জন্তু এই ধন্তু পণ রাজি এইরূপ চিস্তা করিয়া তাহাই করিয়াছিলাম; ইহাতে সকল রাজা মান হানি হইয়াছে। (৬৮) হে মুনিশ্রেষ্ঠ। আপনি প্রসন্ধ হইয় ধন্ত্রপূর্ণনি করিবার জন্ত রাজীবলোচন রামকে এই জানে আন্ত্র করিলেন; আমার মনোরথ সফল হইল। (৬৯) রাম। আ অন্য মে সফলং জন্ম রাম ছাং দীত্য়া সহ। একাসনন্থং পশ্চামি ভাজমানং রবিং যথা ।। १० ।। ত্বৎপাদাম্বধরো ত্রহ্মা স্বষ্টিচক্রপ্রবর্ত্তকঃ। वनिखु ९ भाषमनिनः भ्रज्ञा जूषि जिक्षा विभाः ।। १५ ॥ ত্বৎপাদপাং শুসংস্পর্শাদহল্যা ভর্তৃশাপতঃ। সদ্যএব বিনিমুক্তা কোহস্তম্বভাহধিরকিতা।।৭২॥ তৎপাদপক্ষজপরাগসরাগিযোগি-ব্লক্তিভং ভবভয়ং জিতকালচকৈঃ। যন্নামকীর্ত্তনপরাজিতত্বঃখশোকা দেবাস্তমেব শবণং সততং প্রপদ্যে।। ৭৩।। ইতি স্তত্ত্বা নৃপঃপ্রাদাৎ রাঘবায় মহাত্মনে। দাসাদীনাং কোটিশতং রথানামযুতং তথা।।৭৪॥ অখানাং নিযুতং প্রাদাকাজানামযুতং তথা। পত্তীনাং লক্ষমেকঞ্চ দাসীনাং ত্রিশতং দদৌ।।৭৫।। দিব্যাম্বরাণি হারাংশ্চ মুক্তারত্বময়োজ্লান্। সীতায়ৈ জনকঃ প্রাদাৎ প্রীত্যা হৃহিতৃবৎসলঃ ॥৭৬॥

আমার জন্ম সফল হইল; আমি সীতার সহিত তোমাকে একা-সনে সুর্য্যের স্থায় বিরাজ করিতে দর্শন করিলাম (৭০)।

ভবদীয় শ্রীচরণামৃত ধারণ করিয়া ব্রহ্মা স্থাইচক্রের প্রবর্ত্তক এবং বলিরাজা দফ্রজাধিপ হইয়াছেন। (৭১) তোমার শ্রীচরণারবিন্দ-রেণু সম্পকে অহল্যা অনামাসে পতিশাপ হইতে মুক্তি পাইয়াছেন; অতএব তোমা ভিন্ন আর কে রক্ষা কর্ত্তা আছে ? (৭২) ভবদীয় পাদপদ্মে সবিশেষ মনোযোগি যোগিগণ কালচক্র করিয়া সমস্ত ভবভয় পরাজয় করিয়াছেন্। আর তোমার পরম পবিত্র নামগুণ কীর্ত্তনে দেবগণের সমস্ত ছংখ ও শেক দ্র হয়। অতএব তোমার পাদপদ্মেই সতভ শরণাগত হই। (৭৩) জনক রাজা এই বলিয়া মহায়া রাঘবকে শত কোট দাস ও অমৃত সংখ্যক রথ, (৭৪) নিমৃত অখ, অমৃত মাতঙ্গ, একলক্ষ পদাতি, ও ত্রিশত সংখ্যক দাসী প্রদান করিয়া (৭৫) ছহিত্বাৎসল্যপরায়ণ জনক দিব্য বসন ও মৃক্তারম্ব মাজল হায় সীভাকে দান করিলেন (৭৬) পরে বলিচাদির

বশিষ্ঠাদীন্ স্থসংপৃক্ষ্য ভরতং লক্ষাণং তথা।
পৃজ্যিত্বা যথা ভায়ং তথা দশরথং নৃপম্।। ৭৭ ॥
প্রস্থামাস নৃপো রাজানং রঘুসত্তমম্।
সীতামালিঙ্ক্য রুদতীং মাতরং সাক্র্যলোচনাঃ ॥৭৮॥
অক্রবন্ গদাদং ধীরামুজন্ত্যো হৃহিতু মুখিম্।
খক্রাশুলাবা নিত্যং রামমমুব্রতা॥ ৭৯॥
পাতিব্রত্যমুপালকা তিষ্ঠ বংসে যথা স্থখম্॥৮০॥
প্রয়াণকালে রঘুনন্দনস্থ
ভেরীমুদঙ্গানকভূর্য্যোষঃ।
স্বর্বাসিভেরীঘনভূর্য্যশন্দসংমূর্চিতো ভূতভয়ঙ্করোহভূৎ॥ ৮১॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে আদিকাতে হরধসুর্ভঙ্গ রামাদীনাং বিবাহো নাম সপ্তমোহধ্যায়ঃ॥ ০॥

ও ভরত লক্ষণ প্রভৃতির এবং রাজা দশরথের যথাবিধি যথাক্রমে পূজা করিয়া (৭৭) জনক রাজা রঘুকুলতিলক শ্রীরামকে আযোধ্যা ভবন প্রস্থান করাইলেন। অন্তঃপুরবাসিনী জননীগণ কাঁদিতে কাঁদিতে রোক্ষদ্যমানা সীতাকে আলিঙ্গন করত তাঁহার মূথ মূছাইয়া দিয়া গদাদ স্বরে ধীর ভাবে কহিলেন, বংদে! শ্রশ্র গুশ্রবণে পরারণা হইবে। আর নিত্য শ্রীরামের অন্ত্রগত থাকিয়া পাতিব্রত্য ধর্মাবলম্বনে কালক্ষয় করিবে। (৭৮। ৭৯।৮০)

রখুনন্দনের অযোধ্যাপুরী যাত্রাকালীন ভেরী, মৃদক্ষ, আনক, তুর্য্য প্রভৃতির শব্দ দেবতাদিগের ভেরী ও ভূর্য্য বাদ্যরবে সংম্-ছিত হইয়া ভূতগণের অতি ভয়ন্ধর হইয়াছিল। (৮১)

্ এই শ্রীমদধ্যাত্ম রামায়ণের উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাণ্ডে হরধমূর্ভকে রামাদির বিবাহ নাম সপ্তম অধ্যায়॥ । ॥

व्यक्टिमां ३ था त्रा ।

শ্রীমহাদেব উবাচ।

অথ গছতি জীরামে মৈথিলাদ্যো জনত্রম্।
নিমিত্তান্তাতিঘারানি দদর্শ নৃপদত্তমঃ॥ ১॥
নকা বশিষ্ঠং পপ্রচ্ছ কিমিদং মুনিপুঙ্গব।
বশিষ্ঠস্থপপ্রাহ ভয়মাগামি দূচ্যতে॥ ২॥
পুনরপ্যভয়ন্তেহদ্য শীস্তমেব ভবিষ্যতি।
মুগাঃ প্রদক্ষিণং যান্তি হ্যবশ্যং শুভসূচকাঃ॥ ৩॥
ইত্যেবং বদতস্তম্ভ ববৌ ঘোরতরোহনিলঃ।
মৃষ্ণংশ্চক্ষৃংষি সর্বেষাং পাংশুর্ম্পিভির্দ্ধিয়ন্॥ ৪
ততোদদৃশে ভগবান্ যামদগ্যঃ প্রতাপবান্।
নীলমেঘনিভপ্রাংশু জঁটামন্দলমণ্ডিতঃ॥ ৫॥
ধকুঃপরশুপাণিশ্চ দাক্ষাৎকাল ইবান্তকঃ।
কার্ত্ববির্যান্তকোরামোভ্নুঃ ক্ষত্রিয়মর্দ্দনঃ॥ ৬॥

প্রাপ্তো দশরথস্থাগ্রে কালমৃত্যুরিবাপরঃ।
তং দৃষ্ট্যা ভয়সংত্রস্তো রাজাদশরপস্তদা ॥ ৭ ॥
অর্য্যাদি পূজাং বিস্থত্য ত্রাহি ত্রাহী তিচাব্রবীৎ।
দশুবৎ প্রবিপত্যাহ পুত্রপ্রাণান্ প্রযচ্ছ মে ॥ ৮ ॥
ইতি ব্রুবাণং রাজানমনাদৃত্যু রঘূত্রমং।
উবাচ নিষ্ঠুরং বাক্যং ক্রোধাৎ প্রচলিতেন্দ্রিয়ঃ॥৯॥

যামদগ্য উবাচ।

ত্বং রাম ইতি নান্নাচ চরিদ ক্ষত্রিয়াধম ।
দক্ষুদ্ধং প্রবছাশু যদি ত্বং ক্ষত্রিয়োহদি মে।।১০।।
পুরাণং জর্জ্জরং চাপং ভঙ্কু ত্বং কথদে মুষা।
ইদস্ত বৈফবং চাপমারোপযদি চেদ্ গুণম্।। ১১।।

শীরাম মিথিলা হইতে তিন যোজন পথ আসিলে পথিমধ্যে সহসা উপস্থিত ভরানক নিমিত্ত সকল দেথিয়া (১) রাজা
দশরথ বশিষ্ঠ মুনির শীচরণারবিন্দে প্রণিপাতপূর্ব্ধক জিজ্ঞাসা
করিলেন, হে মুনিপুঙ্গব! একি ? এই বলিলে সর্ব্ধ তত্ত্ববিৎ বশিষ্ঠ
কহিলেন, মহারাজ! হঠাৎ ভয়ের কারণ বটে, (২) কিন্তু আদ্য
অবিলয়েই নির্ভর হইবে; যে হেতু মৃগগণ আমাদিগকে প্রদক্ষিণ
করিয়া যাইতেছে, তাহাতে অবশুই মঙ্গল হইবার সন্তাবনা
আছে। (৩) এই কথা বলিবামাত্র ঘোরতর বায় ধূলি রাশি
বর্ষণে তত্রস্থ সমস্ত লোকের দৃষ্টি হরণ ও পীড়ন করিয়া বহিতে
আরম্ভ করিল। (৪) পর ক্ষণেই প্রতাপশালী কার্ত্বীর্যান্তিকর
ক্ষত্রিয়ন্দিন সাক্ষাৎ অন্তক্ত সদৃশ ভূগুবংশীয় ভগবান্ যমদ্মিতনয় রাম দৃষ্টিগোচর হইলেন। উহার হস্তে ধয় ও পরশু;
মস্তক নীল মেঘ সমিভ অত্যানত জটাভারে মণ্ডিত। (৫।৬)

ভার্গন এই বেশে দ্বিতীয় মৃত্যুর স্থায় দশরথের সন্মুথে উপস্থিত চুইলেন। রাজা দশরথ তাঁহাকে দর্শন করত ভয়ে বিহবল হইরা (৭) অর্ঘ্যাদি পূজা প্রদানপূর্বকি দণ্ডবং প্রণাম করিয়া বারম্বার বলিতে লাগিলেন, ত্রাণ করুন, ত্রাণ করুন; আমার পুত্রের প্রাণদান করুন। (৮)

রাজা এই কথা কহিলে যামদগ্য তাঁহাকে গ্রাহ্ম না করিলা কোধ হেতু বিচলিতেন্দ্রিয় হইয়া রবৃত্তম রামকে নিষ্ঠুর বাকে কহিলেন, (৯) অরে ক্ষত্রিয়কুলাধম! রাম নাম ধারণ করিলা ভূতলে বৃথা পর্যাটন করিতেছিদ্। যদি ক্ষত্রিয়কুলে জন্ম গ্রহণ করিলা থাকিদ, তবে শীঘ্র আমাকে দ্দশ যুদ্ধ প্রদান কর। (১০) পুরাতন, বহু দিবদ এক স্থানে অবস্থিতি হেতু কীট নিছুবিত জর্জের ধন্মভঙ্গ করিলা বৃথা অভিমানী হইয়াছিদ্। এই বৈষ্ণব শ্রাদনে যদি জ্যারোপণ করিতে পারিদ্ধ (১১) তবে হে র্ঘুবংশক্ষ্। তোর দহিত

তদাযুদ্ধং তয়াসার্দ্ধং করোমি রঘুবংশজ।
নাচেৎ সর্বান্হনিষ্যামি ক্ষত্রিয়াস্ত্বকরোম্ম্যহং॥১২॥
ইতি ব্রুবতি বৈ তিম্মিংশ্চচার বস্থা। ভূশং।
অন্ধকারো বভূবাথ সর্বেষামিপি চক্ষুষাং॥ ১৩॥
রামোদাশরথেবীরো বীক্ষ্য তং ভার্গবং রুষা।
ধনুরাচিত্য তদ্ধস্তাদারোপ্য গুণমঞ্জসা।। ১৪।।
ভূণীরাদ্বাণমাদায় সন্ধায়ার্ক্ষ্য বীর্য্যবান্।
উবাচ ভার্গবং রামং ব্রহ্মন্ শূলু বচোমম।। ১৫।।
লক্ষং দর্শয় বাণস্ত হ্থমোঘো রাম্শায়কঃ।
লক্ষং দর্শয় বাণস্ত হ্থমোঘো রাম্শায়কঃ।
লক্ষং বদতি শ্রীরামে ভার্গবো বিকৃতাননঃ।
সংস্মরন্ পূর্বেরভান্তমিদং বচনমন্ত্রবীৎ॥ ১৭॥
•

যামদগ্য উবাচ।

রাম রাম মহাবাহো জানে ত্বাং পরমেশ্বরং। পুরাণপুরুষং বিফুং জগৎস্বর্গলয়োদ্ভবম্॥ ১৮॥

আনি দৃদ্ধ করিব, নতুবা সমস্তই বিনাশ করিব; আমি ক্ষত্রির-কুলের অস্তকর। (১২) পরশুরামরামের প্রতি এই প্রকার কহিলে দেদিনী অতিশয় কম্পমানা ও সমস্তলোকের চক্ষ্ অন্ধকারে আছের হইয়া উঠিল (১৩)।

অনন্তর অসাধারণ বীর দাশরথি রাম ক্রোধ দৃষ্টিতে স্প্রনন্দনকে দর্শন করিয়া তাঁহার হস্ত হইতে ধমু আকর্ষণ করত জ্যারোপণ করিয়া (১৪) তৃণীর হইতে বাণ লইয়া সন্ধানপূর্ব্বক আকর্ষণ করিয়া পরশুরামকে কহিলেন, হে ব্রহ্মন্! আমার বাক্য শ্রবণ কর (১৫) এই রামশায়ক অব্যর্থ; ইহার লক্ষ্য কোথায় দেখাও; ত্রিভ্বন বা ভবদীয় পদারবিন্দরর ভেদ করিব, আমার আজ্যান্সারে শীঘ্র বল। (১৬) শ্রীরামের এই প্রগল্ভ বাক্য শ্রবণে শুস্কবদন ভৃত্তনন্দন পূর্ব্ব বৃত্তান্ত স্বরণ করিয়া কহিতে লাগিলেন। (১৭) হে রাম রাম! হে মহাবাহো! তুমি পরমেশ্বর; আমি জানি তুমি সনাতন পুরুষ ও বিষ্ণু, ব্রহ্মাণ্ডের স্ষ্টি স্থিতি প্রলম্বের

বাল্যেহং তপদা বিষ্ণু মারাধয়িতু মঞ্চদা।
চক্রতীর্থং শুভংগদ্বা তপদা বিষ্ণু মন্বহম্॥ ১৯॥
ভূতোষয়ং মহাত্মানং নারায়ণ মনস্থীঃ।
ততঃ প্রদক্ষোদেবেশঃ শহাচক্রগদাধরঃ।
উবাচমাং রঘুশ্রেষ্ঠ প্রদর্মুথপক্ষজঃ॥ ২০॥

শ্রীভগবানুবাচ।

উত্তিতপদো ব্ৰহ্মনু ফলিতত্তে তপোমহৎ ॥২১॥
মচিচিদংশেন যুক্তস্তৃং জহি হৈহয় পুঙ্গবম্।
কার্ত্রবির্যাং পিতৃহনং যদর্থং তপসঃ প্রমঃ॥২২॥
তত্তত্তি সপ্তকৃত্বস্তৃং হত্ব। ক্ষব্রিয় মণ্ডলং।
কৃৎস্নাং ভূমিং কশ্যপায়দত্বা শান্তি মবাপহ॥২৩॥
ব্রেতাযুগে দাশর্থি ভূত্বারামোহহমব্যয়ঃ।
উৎপৎসে প্রয়াশক্তা তদাদ্রুদ্যমিশং পুনঃ॥২৪॥
মতেজঃ পুনরাদাস্তেত্বয়িদত্তং ময়াপুরা।
তদাতপশ্চরন্লোকে তিষ্ঠত্বং ব্রহ্মণো দিতম্॥২৫॥

এক মাত্র কার্রণ। (১৮) আমি বাল্যাবস্থায় তপস্থা দারা বিফুর আরাধনা নিমিত্ত শুভ চক্রতীর্থে গমন করিয়া তপস্থা দারা বিফুকে প্রতি দিন স্তব করিতাম। (১৯) পরে অনস্ত চিত্তের স্তবে পরিতৃষ্ট মহাত্মা শঙ্খচক্র গদাধর দেবেশ নারায়ণ প্রসন্ন হইলেন। হে রঘুশ্রেষ্ঠ ! সেই প্রসন্নম্থপক্ষজ ভগবান্ আমাকে কহিয়াছিলেন, (২০) হে ব্রহ্মন ! তপস্থা হইতে নিবৃত্ত হও। তোমার মহন্তপস্থার ফল ফলিয়াছে। (২১) মচ্চিদংশ প্রাপ্ত হইয়া হৈহয়পুস্ব পিতৃহস্তা কার্ত্তবীর্য্যকে বিনাশ কর, যন্নিমিত্ত তোমার তপস্থার পরিশ্রম। (২২) তদনন্তর একবিংশতি বার ক্ষত্রিয়মগুল বিনাশ করিয়া সমস্ত ভূমি কশ্রপকে প্রদান করিয়া শান্তি পাও। (২০) ত্রেতাবুগে অক্ষর আমি দাশর্থি রামনামে পরম শক্তি সহকারে উৎপন্ন হইব; তথন পুনর্বার আমাকে দেখিতে পাইরে (২৪) এখন যে তেজঃপুঞ্জ ত্রাধীন করিলাম, তৎকালে সেই সমস্তই পুনর্বার অত্মৎ শরীরে প্রবেশ করিবে; পরে ব্রহ্ম বাক্যানুসারে তপস্তাচরণে অবন্থিতি-পুর্বাক কাল্যাপন করিবে। (২৫)

ইত্যক্তান্তর্দধে দেবত্তথাসকং কৃতং ময়।
সত্রব বিষ্ণু স্ত্বং রাম জাতোহদি ব্রহ্মণার্থিতঃ॥২৬॥
ময়ি হিতস্ত তত্তেজ স্তাইয়ব পুনরাহত্য।
অদ্য মে সফলং জন্ম প্রতীতোহদি মম প্রভো॥২৭॥
ব্রহ্মাদিভিরলভান্তঃং প্রকৃতেঃ পারগোমতঃ।
ছয়ি জন্মাদিষড়, ভাবা ন সন্তাজ্ঞানসন্তবাঃ॥২৮॥
বিবি কারোহদি পূর্ণস্তঃং গমনাদিবিবর্জ্জিতঃ।
যথাজলে ফেণজালো ধ্মোবফ্লো তথা ছয়ি॥ ২৯॥
ছদাধারা ছদ্বিষয়া মায়া কার্যাং স্কুজ্যহো।
যাবন্মায়ারতালোকা তাবন্তাং নবিজানতে॥ ৩০॥
অবিচারিতদিক্রৈমা বিদ্যাবিদ্যাবিরোধনী॥ ৩১॥
অবিদ্যাক্তদেহাদিসংঘাতে প্রতিবিন্ধিতা।
চিচ্ছক্তি জীবলোকেইন্মন্ জীব ইত্যভিধীয়তে॥৩২॥

এই কথা কহিয়া ভগবান্ বিষ্ণু অন্তম্ভ হইলে ভাঁহার আদেশামুসারে সমস্ত বিষয়ে কৃতকার্য্য হইলাম। অতএব হে রাম ! সেই বিষ্ণু ভূমি ; হিরণ্যগর্ভের প্রার্থনার অবতীর্ণ হই-য়াছ (২৬) আমাতে ভবদত যে সমস্ত তেজ:পুঞ্জ ছিল, সে দকলই সংহার করিলে। হে প্রভো আদ্য আমার জন্ম সফল। আজ আমি তোমাকে চিনিতে পারিলাম। (২৭) আপনি ব্রন্ধা-দির অলভ্য এবং প্রকৃতি শক্তির পারগ ; অজ্ঞানজাত জন্মাদি ছয় অবস্থা আপনাতে বিদ্যমান নাই। (২৮) আপনি অনস্ত জ্ঞানসম্ভব নির্বিকার পূর্ণ গমনাদিরহিত। যদ্রপ জলে ফেণজাল ও অনলে ধৃমজাল ভজ্রপ তোমাতে আশ্রয়কারিণী এবং তোমার বিষয় (২৯) মারা কি আশ্রুর্য্য করিয়াছেন यावरकाल लांक नमल ভवनीय मात्राय मूक्ष थात्क, তাवरकाल আপনাকে কেহ জানিভে পারে না। (৩০) অবিচারিত অর্থাৎ স্বাভাবিক বিদ্যা আর অবিদ্যাকৃত হুই প্রকার সিদ্ধি আছে তাহাতে অবিদ্যাকৃত দেহাদি সমূহে প্রতিবিধিতারূপে চিৎশক্তি जीवालाक थाकिल जीवी वित्रा वावक्छ हम। (७३।०२) यांवरकान (मह मन श्रांन । वृक्तानिष्ठ अञ्चिमान शांक, যাবদেহ মনঃ প্রাণ বৃদ্ধ্যাদিষভিমানবান্।
তাবৎ কর্তৃত্ব ভোক্তৃত্ব স্থথ দুংথাদি ভাগভবেৎ॥৩৩॥
আত্মনঃ সংস্কৃতির্নান্তি বৃদ্ধে জ্ঞানং নজান্ধিতি।
অবিবেকান্ত্ যুংযুক্তো সংসারীতি প্রবর্ততে ॥৩৪॥
জড়স্কৃতিৎ সমাযোগা চিতংভূয়াচ্চিতে স্তথা।
জড়সঙ্গা জ্জড়ন্থাই জলাগ্যো মেলনং যথা। ৩৫॥
যাবন্ত্ পাদভক্তানাং সঙ্গুগোখাং নবিন্দতি।
তাবৎ সংসার ছংখোঘামনিবর্ত্তেমরঃ সদা।। ৩৬।।
সৎসঙ্গলক্ষ্যাভক্ত্যা যদান্থাং সমুপাসতে।
তদামায়া শনৈর্যাতি ত্বামেবং প্রতিপদ্যতে ॥ ৩৭।।
ততন্ত্ জজ্ঞানসম্পন্ধঃ সদগুরুত্বস্থলভাতে।
বাক্যজ্ঞানং গুরোলক্ষ্য স্থংপ্রসাদান্দ্মিচ্যুতে ॥৩৮॥
তত্মান্ত্ দভক্তি হীনানাং কল্পকেটে শতৈরপি।
নমুক্তিশক্ষাবিজ্ঞানশক্ষানৈব স্থাং তথা।। ৩৯।।

তাবৎ কর্ত্ব ভোক্ত্ব রূপ অশেষ স্থু ছ:থাদির বিলক্ষণ ভাগী হইয়া আত্মার শ্বরণ ও বৃদ্ধি জ্ঞানাদি হইতে পরিভ্রংশপূর্বক অবিবেকসংযোগে সংসারী বলিয়া প্রথিত হইয়া থাকেন। (৩০। ৩৪) জ্ঞানের সহিত জড়ের সংযোগ হইলে জড়েরও জ্ঞানম্ব জন্মে, আবার জড়ের সহিত সংযোগ হইলে জানেরও জড়ম্ব উৎপন্ন হয়, যেমন জল আর অগ্নির মিলন। (৩৫) মমুষ্য যতদিন তোমার চরণভক্ত সাধুদিগের সঙ্গম্বও লাভ না করে, ততদিন সংসারহংধরাশি হইতে নিবৃত্তি পায় না। (৩৬) যথন মানৰ সংসঙ্গ লাভ করিয়া ভক্তি সহকারে আপনাকে ভজনা করে, তথন অবিদ্যা-রূপ মায়া ক্রমশ দ্র হয়; এই প্রকারে তোমাকে প্রাপ্ত হইয়া থাকে। (৩৭) অনম্বর তাহার ভগবভক্তজানসম্পন্ন সদ্পর্ক সঙ্গতিও লাভ হয়; পরে সদ্পর্ক হইতে বাক্যজ্ঞান লাভ করিলেই ভবৎ প্রসাদাৎ মুক্ত হয়। (৩৮) অতএব ভগবভক্তি বিহীন জনের কোটিশত করেও মুক্তি বা বিজ্ঞান ও স্থুধ লাভ হইতে পারে না। (৩৯)

অতস্ত্ৰৎ পাদযুগলে ভক্তির্মে জন্মজন্মনি।

ত্যাৎস্বদ্ভক্তিমতাং সঙ্গোহবিদ্যাঘাভাং বিনশ্যতি॥৪০
লোকে স্বন্ধক্তিনিরতাস্ত্র্ম্মায়তবর্ষিণঃ।
পুনস্তি লোকমথিলং কিং পুনঃ স্বকুলোদ্ভবান্॥৪১॥
নমোহস্ত জগতাং নাথ নমস্তে ভক্তিভাবন।
নমঃ কারুণিকানস্ত রামচন্দ্র নমোহস্ত তে ॥৪২॥
দেব যদ্যৎ কৃতং পুণ্যং ময়া লোকজিগীয়য়া।
তৎসর্বাং তব বাণায় ভ্য়াদ্রাম নমোহস্ততে ॥৪৩॥
ততঃ প্রদরো ভগবান্ শ্রীরামঃ করুণাকরঃ।
প্রসম্মোহস্মি তব ব্রহ্মন্ যতে মনসি বর্ত্তে ॥৪৪॥
দাস্যে তদখিলং কামং মাকুরুষাত্র সংশয়ম্।
ততঃ প্রীতেন সনসা ভার্গবো রামমন্ত্রবীৎ ॥৪৫॥
যদি মেহসুগ্রহো রাম তবান্তি মধুসূদন।
ব্যক্তসঙ্গত্বপাদপদ্মভক্তিঃ সদাস্ত মে॥ ৪৬॥
বিদ্যান্ত্রি বাম তবান্তি মধুসূদন।

স্তোত্তমেত্ৎ পঠেদ্যস্ত ভক্তিহীনোহিপি সর্বাদ।

স্বদ্ভক্তিস্ত শবিজ্ঞানং ভূয়াদন্তে শ্বিতিস্তব ॥৪৭॥

তথেতি রামেনৈবাক্তঃ প্রিক্রম্য প্রণম্য তম্ ।

পূজিতস্ত দমুজ্ঞাতো মহেন্দ্রাচলমন্বগাৎ ॥ ৪৮ ॥

রাজা দশরথো হুফো রামং মৃত্রমিবাগতম্ ।

আলিঙ্গ্যালিঙ্গ্য হুর্ষেণ নেত্রাভ্যাং জলমুৎস্তজৎ॥৪৯॥

ততঃ প্রীতেন মনসা স্তন্ত্রিতঃ পুরং যথো ॥৫০॥

রামলক্ষ্রণশক্রেম্বরতা দেবসন্মিতাঃ ।

স্বাং স্বাং ভার্যামুপাদায় রেমিরে স্বস্থ্যান্দরে॥৫১॥

মাতাপিত্ভ্যাং সংহুটো রামঃ সীতাসমন্বিতঃ ।

রেমে বৈকুপ্তবনে শ্রেয়া সহ যথাহুরিঃ ॥ ৫২ ॥

যুধাজিক্রাম কৈকেয়ীল্রাতা ভরতমাতুলঃ ।

ভরতং নেতুমাগচ্ছৎ স্বরাজ্যং প্রীতিসংযুক্তঃ ॥৫৩॥

অতএব ভবদীয় পদারবিন্দযুগলে যেন প্রতি জন্মেই আমার ভক্তি অচলা থাকে এবং ভগবদ্ধক্তিতৎপর ব্যক্তিদেগের স্তিত সঙ্গম হয়; এই উভয়ই অবিদ্যা বিনাশ করে। (৪০) জীবলোকে ঈশর ভক্তিনিরত ব্যক্তিরা ভগবানের ধর্ম কর্ম্মরূপ অমৃত বর্ষণ করত তাবৎলোক পবিত্র করিতেছেন, স্বকুলোম্ভব वाकिमिरात कथा आंत्र कि विनव। (82) रह जगनाय! रह ভক্তিভাবন ! হে কারুণিক ! হে অনস্ত ! হে রামচন্দ্র ! তোমাকে নমস্কার। (৪২) ছে দেব! লোকজিগীবাবশতঃ আমি যাহা যাহা পুণা কর্ম করিরাছি, সে সমস্তই তোমার বাণ ছারা নষ্ট হউক্। হেরাম! তোমাকে প্রণাম করি। (৪৩) পরে করুণাদাগর नत्ना जिलाय व्यार्थना कतिरव छाष्टा ममखरे व्याना कृतिव সন্দেহ নাই। অনস্তর প্রীতমনা ভৃগুনন্দন পরশুরাম শ্রীরামকে কহিলেন। (৪৪।৪৫) ছেরাম! হে মধুসুদন! यদি আমার প্রতি আপনকার অমুকম্পা হইয়া থাকে, তাহা হইলে যেন ভবস্তু-ক্তসঙ্গ ও তবদীর পদারবিন্দে আমার ভক্তি থাকে। (৪৬) আর

ভক্তি বিহীন ব্যক্তিও যদি এই স্তবপাঠ করে, তবে ভগবস্তক্তি ও বিজ্ঞান লাভ করিয়া মৃত্যুকালে তোমার নাম শ্বরণ করিতে পারে। (৪৭) পরে শ্রীরাম তথাস্ত বলিলে রামামুক্তাত রাম প্রণাম প্রদক্ষিণ করিয়া মহেক্র পর্বতে গমন করিলেন। (৪৮)

রাজা দশরথ আনন্দিত হইয়া, যেন মৃত্যু মুথ হইতে প্রত্যাগত রামকে বারম্বার আলিঙ্গন করিয়া উভয় নেত্রে আনন্দাশ্র বিসর্জ্জন করিতে লাগিলেন। পরে স্কুছচিত হইয়া প্রীতমনে অযোধাা যাত্রা করিলেন। (৪৯। ৫০) অনস্তর দেবোপম রাম লক্ষণ ভরত শক্রম স্ব ভার্য্যা সমভিব্যাহারে স্ব স্ব ভবনে পরম স্থথে কালক্ষয় করিতে লাগিলেন। (৫১) বৈকুণ্ঠভবনে কমলালয়ার সহিত হরি যক্রপ আনন্দে কালযাপন করেন, তক্রপ পিতা মাতাকে আফ্লাদচিত্তে রাখিয়া সীতা সহ জীরাম সদানন্দে কালক্ষয় করিতে লাগিলেন। (৫২) এই রূপে কিয়ন্দিবস অভিবাহিত হইলে যুধাজিয়ামক ভরতমাতৃল কেকয়নন্দিনী ভ্রাতা প্রীতিভাবে নিজরাজধানীতে ভরতকে লইবার জন্ত সমাগত

প্রেষয়ামাস ভরতং রাজা স্নেহসমন্বিতঃ।
শক্রত্বঞ্চাপি সংযুজ্য যুধাজিতমরিন্দমঃ।। ৫৪।।
কৌশল্যা শুশুভে দেবী রামেণ সহ সীতয়া।
দেবমাতেব পৌলম্যা শচ্যা শক্রেণ শোভনা।।৫৫।।
সাকেতে লোকনাথ-প্রথিতগুণ গণোলোক

সংগীতকীর্ত্তিঃ।

শ্রীরামঃ সীতয়াস্তেইথিল স্থরনিকরানন্দসন্দোহ মূর্ত্তিঃ।

নিত্যশ্রীর্নিবিকারো নিরবধিবিভবো নিত্যমায়া নিরাসো মায়াকার্য্যানুসারী মনুজইব সদা ভাতি দেবোহখিলেশঃ।। ৫৬।।

হঠলে (৫০) অরিন্দম রাজা দশরথ সেহ সহকারে শক্তম সমভি ব্যাহারে মাতুলসহিত ভরতকে প্রেরণ করিলেন। (৫৪) পৌলোমী শচী ও শক্তের সহিত দেবমাতা যজ্ঞপ শোভমানা হন, রাম ও সীতার সহিত কৌশল্যাদেবীও তজ্ঞপ শোভা পাইয়াছিলেন। (৫৫) দেথ কি আশ্চর্যা, লোকনাথ প্রাসদ্ধি গুণগণ সমস্তলোকে সংগীতকীর্ত্তি নিখিলদেবের আনন্দমূর্ত্তি নিতাশ্রী, নির্ব্বিকার অতুল বিভবশালী নিতামায়ানিরাসকারী অথিলেশ্বর দেবমারা কার্যান্ত্র্পারী হইয়া মন্ত্র্যের ন্থায় বিরাজ করিতে লাগিলেন। (৫৬) ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসংবাদে আদিকাণ্ডে পরশুরামস্থা পরাজয়বিবরণে রামাদীনামঘোধ্যায়ামধিবাসো নামাউমোহধ্যায়ঃ ॥ ॰ ॥

मगाश्वरक्षमगानिकाखम्।। •।।

এই অধ্যাত্মরামায়ণের উমামহেশ্বর কথোপকথনে আদিকাওে পরগুরামের পরাজ্য বিবরণে রামাদির অংগাধ্যায় অধিবাদ-নামক অষ্টম অধ্যায়।

আদিকাও সমাপ্ত।

অ যো ধ্যা কা ও ম্।

প্রথমোইধ্যায়ঃ।

শ্ৰীমহাদেব উবাচ।

একদা হথমাসীনং রামং স্বান্তঃপুরাজিরে।
সর্বাভরণসম্পন্ধং রত্নসিংহাসনে স্থিতম্ ॥ ১॥
নীলোৎপলদলশ্যামং কৌস্তভামুক্তকন্ধরম্।
সীতয়া রত্নদণ্ডেন চামরেণাথ বীজিতম্ ॥ ২॥
বিনোদয়তং তামূলচর্ব্বণাদিভিরাদরাৎ।
নারদোহবাতরৎ দ্রুফ্ট্রম্বরাদ্যত্র রাঘবঃ॥ ৩॥
শুদ্ধম্ফটিকসংকাশঃ শরচন্দ্র ইবামলঃ।
অতর্কিতমুপায়াতো নারদো দিব্যদর্শনঃ॥ ৪॥
তং দৃষ্ট্যসহসোথায় রামঃ প্রীত্যা কৃতাঞ্জলিঃ।
ননাম শিরসা ভূমো সীতয়া সহ ভক্তিমান্॥ ৫॥

উবাচ নারদং রামঃ প্রীত্যা পরময়া যুতঃ।
সংসারিণাং মুনিশ্রেষ্ঠ হল্ল ভং তব দর্শনম্।। ৬।।
অস্মাকং বিষয়াসক্তচেতসাং নিতরাং মুনে।
অবাপ্তং মে পূর্বজন্মকৃতপুণ্যমহোদয়ৈঃ।
সংসারিণাপি হি মুনে লভ্যতে সৎসমাগমঃ।।৭।।
অতস্তদর্শনাদেব কৃতার্থোহিস্মি মুনীশ্বর।
কিং কার্য্যং তে ময়াকার্য্যং ক্রহিতৎ করবাণি ভো॥৮॥
অথ তং নারদোহপ্যাহ রাঘবং ভক্তবৎসলম্।
কিং মোহয়দি মাং রাম বাক্যৈল্লোকানুসারিভিঃ॥৯॥

একদা নীলোৎপলদলগ্রাম শ্রীরামচন্দ্র কৌস্কভমণি প্রভৃতি নানাবিধ রক্লাভরণে বিভৃষিত হইয়া নিজ অন্তঃপূর মধ্যে রক্ল সিংহাসনোপরি স্থান্ধি তামূল প্রভৃতি রাজভোগ্য ভোগ দারা চিত্ত বিনোদন করিতেছেন; সীতাদেবী পার্মদেশে দণ্ডায়মানা ইয়া রক্লগুশোভিত চামর দারা বীজন করিতেছেন, এমন সময়ে পরম ভাগবত মহর্ষি নারদ ভগবদর্শনার্থ সেই স্থানে আকাশ পথ হইতে অবভরণ করিলেন। (১।২।৩) শ্রীরামচন্দ্র শরৎকালীন শশধরের ফ্লায়্র দেদীপ্যমান এবং বিশুদ্ধ স্থাটিক মণিসদৃশ সমুজ্ব ও স্থান্থ মহর্ষি নারদের সহযা অসম্ভাবিভ সমাগমনাবলোকনে সচকিত হইয়া গাত্রোখান করিলেন, এবং পরম
শ্রীতি ও ভক্তি সহকারে কুলাঞ্জলি হইয়া সীতাদেবীর সহিত প্রগাম

क्तिरलन (8 । ৫) এবং সাদরে কহিলেন, ভগবন্! সাধারণ সংসারী ব্যক্তির পক্ষে ভবাদৃশ মহাত্মপুরুষদর্শন হল্ল ভ। বিশে-বতঃ বিষয়াসক্তচিত্ত মাদৃশ ব্যক্তির পক্ষে নিতান্ত অসম্ভব; কারণ নিরবকাশ বশতঃ ধর্ম চিস্তা আমাদিগের হৃদয় হইতে একবারে তিরোহিত হইয়াছে। বোধ করি অদ্য পূর্ব্বক্লত পূণ্যবলেই আপনার দর্শনস্থলাভ করিলাম। যাহা হউক অদ্য আমি আত্মাকে কুতার্থ বোধ করিতেছি। একণে অনুমতি করুন আপনার অভিলয়িত কোন কার্য্যান্ত্রানে ব্যাপৃত করিয়া এই পঞ্চতময় দেহকে পবিত্র করিব (৬। १।৮) পরম कानी नात्रम बीबारमत এই त्रभ मञ्चारकारशात (मथिया कहिएलन, ভগবন্! লৌকিক বাক্য দারা আমাকে কি মুগ্ধ করিতেছেন। আপনার প্রসাদে আমার অজ্ঞাত কিছুই নাই। আপনি যে আপনাকে সংসারী করিতেছেন, তাহা মিখ্যা নহে; কারণ তিলোকস্বরূপ গৃহ মধ্যে আপনি প্রধান গৃহস্ত, এবং সমস্ত জগতের আদি কারণ মহামায়া আপনার গৃহিণী। সেই মহা-মারাম্বরূপা প্রকৃতির সহিত আপনার সংস্কৃ হওয়ায় একা প্রভৃতি সন্তানগণ উৎপন্ন হইয়াছেন। স্বর্জন্তমোগুণমন্ত্রী ভবদ-बीना महामात्रा जननीत खगासूत्राद्य विकू नवखन, बका द्रव्याखन,

সংসার্য্যহমিতি প্রোক্তং সত্যমেতত্ত্যা বিভো। জগতামাদিভূতা যা সা মায়া গৃহিণী তব।। ১০।। হৎসন্নিকর্যাড্জায়ন্তে তস্থাং ব্রহ্মাদয়ঃ প্রজাঃ। ত্বদাশ্রয়া সদা ভাতি মায়া যা ত্রিগুণাত্মিকা।। ১১।। সূতেহজব্রং শুক্লকৃষ্ণলোহিতাঃ সর্বাদা প্রজাঃ। লোকত্রমহাগেহে গৃহস্তসুমুদাহতঃ।। ১২।। प्रः विक्षुर्जानकी लक्क्योः भिवसुर जानकी भिवा। ব্ৰহ্মাত্বং জানকী বাণী সূৰ্য্যস্তৃং জানকী প্ৰভা ॥১৩॥ ভবান্ শশাঙ্কঃ দীতাতু রোহিণী শুভলক্ষণা। শক্রস্ত মেব পৌলোমী দীতা স্বাহানলো ভবান্॥১৪॥ যমস্ত ং কালরূপ * চ দীতা সংযমনী প্রভো। নিখ তিন্তঃ জগন্নাথ তামদী জানকী শুভা ॥১৫॥ রামস্ত্রেব বরূণে। ভার্যবী জানকী শুভা। বায়ুস্তৃৎ রাম সীতা তু সদাগতিরিতীরিতা॥ ১৬॥ কুবেরস্তৃং রাম সীতা সর্বসম্পৎ প্রকীর্তিতা।

ও শিব তমোগুণ প্রাপ্ত হইয়াছেন। (১।১০।১১।১২) হে সর্বভূতান্তরাত্মন্! আপনি বিশুদ্ধ পুরুষ, সীতাদেবী প্রমা প্রকৃতি। প্রকৃতি পুরুষ ভিন্ন জগতে কিছুই নাই। আপনি বিষ্ণু, দীভা দাক্ষাৎ লক্ষ্মী; আপনি শিব, দীতা সাক্ষাৎ ভগবতী; আপনি ব্রহ্মা, জনকনন্দিনী সরস্বতী; আপনি জগৎপ্রকাশ আদিত্য, সীতা প্রভা; আপনি চন্দ্র, সীতা রোহিণী; আপনি ইক্র, সীতা শচী; আপনি অগ্নি, সীতা স্বাহা। হে জগদীশ্বর! আপনি সমস্ত ভূতের কালরূপী ৰম, সীতা সংযমনী। আপনি নিশ্বতি, সীতাদেৰী ভামসী। আপনি ৰহুণদেব, সীতা ভার্গবী। আপনি প্রনদেব, সীতা সদাপতি। আপনি যক্ষপতি কুবের, দীতা সর্ব্ধসম্পৎ স্বরূপা। ञाननि माकार क्रजराव, मीला क्रजावी। (১७।১৪।১৫। ১৬। ১৭) লোকে স্ত্রীবার্চকং যাবন্তৎ সর্ববং জানকী শুভা। পুনামবাচকং যাবত্তৎ সর্ববং ত্বং হি রাঘব ॥১৮॥ তশালোকত্তমে দেব যুবাভ্যাং নাস্তি কিঞ্চন ॥১৯॥ ত্বদাভাসোদিতাজ্ঞানমব্যাক্তমিতীর্য্যতে। তস্মান্মহাংস্ততঃ সূত্রং লিঙ্গং সর্ব্বাত্মকং ততঃ॥২০॥ অহঙ্কারশ্চ বৃদ্ধিশ্চ পঞ্চপ্রাণেল্যাণিচ। লিঙ্গমিতুচাতে প্রাক্তৈর্জন্মমৃত্যুত্তথাদিমৎ ॥২১॥ স এব জীবসংজ্ঞ*চ লোকে ভাতি জগন্ময়ঃ। অবাচ্যানাদ্যবিদ্যৈব কারণোপাধিক্রচ্যতে ॥২২।। স্থূলং সূক্ষাং কারণাখ্যমূপাধিত্রিতয়ং চিতেঃ। এতৈর্বিশিষ্টো জীবঃ স্থাদিযুক্তঃ পরমেশ্বরঃ।।২৩।। জাত্রৎস্বপ্নস্থস্তাখ্যা সংস্তির্ঘা প্রবর্ত্ততে। তথা বিলক্ষণঃ সাক্ষী চিল্মাত্রস্তং রঘ্ভম॥ ২৪॥

রুদ্রাণী জানকী প্রোক্তা রুদ্রস্ত্রং লোকনাশকৃৎ॥১৭॥ অধিক কি বলিব, এই জগতে স্ত্রীবাচক যাবং শন্দই জানকীকে ও পুরুষবাচক শব্দ মাত্রই আপনাকে বোধ করাইতেছে; অতএব হে দেবদেব ! এই ত্রিলোক মধ্যে আপনারা ছই জন ভিন্ন অন্ত পদার্থই নাই। হে প্রমান্ত্রন। আপনার সংস্থাধীন জগৎস্জনোমুখী প্রকৃতি অজ্ঞান রূপে পরিণত হয়। ঐ প্রকৃতি रहेरा त्कि उप, त्कि उप रहेरा अरुकात, अरुकात रहेरा অহন্ধার বৃদ্ধি পঞ্চ প্রাণ ও পঞ্চ ইন্দ্রিয় এই সর্বময় লিঙ্গ শরীর উৎপন্ন হয়। ঐ লিঙ্গ শরীরকে জীৰ বলিয়া নির্দেশ করে। ঐ জীব জন্ম মৃত্যু ও স্থাদি ভোগ করিয়া থাকে। ঐ জীবও আপনা হইতে পৃথক নহে, কারণ অজ্ঞান পরিণত প্রকৃতির নাম অবিদ্যা ঐ ব্রন্ধের উপাধি। আপনি যথন উপাধির সহিত মিলিত হন, তথন আপনার জীবসংজ্ঞা হয়, আবার অবিদ্যা মৃক্ত হইলে শুদ্ধ পরমেশ্বর বলিয়া প্রতীতি হয়।(১৮। ১৯।২০।২১। ২২। ২৩) হে সর্বসাক্ষিন! এই সমস্ত জগতে জাগ্রৎ স্বপ্ন স্ত্রপ্তাবস্থাতে সমস্ত প্রাণী বে যে কার্য্য করিয়া থাকে, তাহা আপনার অবিদিত কিছুই নাই। আপনি সকল কার্ব্যের অসা-

স্বস্তুত্তব জগজ্জাতং স্তৃয়িদর্ববং প্রতিন্তিতম ।

হয্যেব লীয়তে কৃতস্মং তত্মাৎ হুং দর্বকারণম্ ॥২৫॥
রজ্জাবহিমিবাস্থানং জীবং জ্ঞাত্বাভয়ং ভবেৎ।
পরাস্থাহহমিতিহ্বাত্বা ভয়ত্বঃথৈবি মূচ্যতে ।। ২৬ ।।
চিন্মাত্রজ্যোতিষা দর্ববাং দর্বদেহেষু বুদ্ধয়ঃ ।
স্থায়ত্মাৎ প্রকাশুন্তে দর্ববি স্থাত্মা ততোভবান্ ॥২৭॥
অজ্ঞানামশুতে দর্ববং স্থায়রজ্জোভুজঙ্গবং ।
স্বজ্জানাম্লীয়তে দর্বং তত্মাৎ জ্ঞানং দদাভাদেৎ ॥২৮
স্বৎপাদভক্তিযুক্তানাং বিজ্ঞানং ভবতি ক্রমাৎ ।
তত্মাৎ স্বভুক্তিযুক্তা যে মুক্তিভাজস্ত এবহি ॥২৯॥

মান্ত সাক্ষীও কলদাতা। (२৪) হে প্রভো! আপনা হইতে এই জগৎ উৎপন্ন ছইয়া আপনাতেই অধিষ্ঠান করিতেছে, এবং সম্যামুসারে আপনাতেই লীন হইতেছে। হে অনস্ত! আপনি এই সকল প্রাণীতে অবস্থিতি করিয়া সকল কার্য্যে তাঁহাদিগকে নিয়োজিত করিতেছেন। দেহীরা ভাস্ত হইরা যাবৎকাল-পর্যাস্ত রজ্জুতে সর্প বৃদ্ধির স্থায় দেহস্থ আত্মাতে জীবের আরোপ করিবে, তাবৎকাল মোহান্ধকারে পতিত হইয়া নিষ্কৃতি পাইবে না। সেই আত্মাতে পরমাত্ম বৃদ্ধি হইলে তাহাদিগের পরমপদ লাভ হইবে। হে সর্বভৃতেশ্বর! আপনি নিজ জ্ঞানময় জ্যোতি-র্ঘারা সকল দেহে অন্তঃকরণবৃত্তি প্রকাশিত করিতেছেন; অতএব সকলের অন্তরাত্মা আপনি ভিন্ন জগতে কিছুই নাই; মৃঢ়েরা অজ্ঞানবশতঃ আপনাতে কতই আরোপ করিয়া থাকে, দে কেবল রজ্জুতে ভূজলারোপ মাত্র। স্থাপনাকে যথার্থ कानित्न (परीत नकन अब्बान प्रीकृठ रम, रमरे (रजू नर्सपा জ্ঞানাভ্যাদে যত্ন করা বিধেয়। হে জগদীখর। সেই জ্ঞানা-ভ্যাসের অস্ত উপায় নাই, কেবল আপনার পাদপল্মে একান্ত ভক্তি থাকিলে জান লাভ করিতে পারা যায়, জ্ঞান হইলেই मुक्ति लाख इत्र। (२०।२७।२१।२৮।२२) आमि जाननात

অহং ছন্তক্ত ভক্তানাং তন্তক্তানাঞ্চ কিং করঃ ।

অতোমামনুগৃহীষ মোহয়স্ব ৰ মাং প্রভা ॥৩০॥

ছন্নাভিকমলোৎপন্নো ব্রহ্মা মে জনকঃ প্রভা ।

অতস্তবাহং পৌত্রোহস্মিভক্তং মাং পাহি রাঘব।।৩১॥

ইত্যুক্তরা বহুশোনত্বা স্বানন্দাক্র্যপরিপ্লুতঃ ।

উবাচ বচনং রাম ব্রহ্মণা নোদিতোহস্মাহম্ ॥৩২॥

রাবণস্থ বধার্থায় জাতোহিদি রঘুসন্তম ।

ইদানীং রাজ্যরক্ষার্থং পিতাত্বামভিষেক্ষ্যতি ॥ ৩৩ ॥

যদি রাজ্যাভিসংসক্তো রাবণং ন হনিষ্যাদি ।

প্রতিজ্ঞা তে কুতারাম ভূভারহরণায় বৈ ॥৩৪॥

তৎ সত্যং কুরুরাজেন্দ্র সত্যসন্ধ স্তুমেবহি ।

শ্রুইত্বলাদিতং রামো নারদং প্রাহ সন্মিতম্ ॥ ৩৫॥

ভক্ত মহাপুক্ষদিগের দাসত্ব স্থীকার করিতেছি, অওএব আমার প্রতি সদায় হউন, বারন্ধার মুগ্ধ করিবেন না। হে প্রভো! আমি আপনার নাভিকমলোৎপন্ন কমলযোনির শ্রীর হইতে উৎপন্ন হইরাছি, অতএব আমি আপনার পৌত্র; এক্ষণে আমাকে রক্ষা করুন। (৩০।৩১)

নারদ ভক্তিসহকারে এইরূপ ন্তব করিয়া কহিলেন, শ্রীরাম !
পিতা কমলযোনি আপনার নিকট আমাকে প্রেরণ করিয়াছেন,
এবং আপনার উদ্দেশে কভিপয় প্রয়োজনীয় বাক্য কহিয়া দিয়াছেন শ্রবণ করুন্। ভগবন্! আপনি রাবণবধার্থ ভূমণ্ডলে জয়ৣগ্রহণ
করিয়াছেন; সম্প্রতি রাজা দশর্ম আপনাকে যৌবরাজ্যে অভিফিক করিবেন্; আপনি রাজ্যভোগাসক্ত হইয়া যদি রাক্ষসাধমের সম্লোচ্ছেদ না করেন তাহা হইলে আপনার ভূভার হরণ
প্রতিক্তা বিফল হইবে (৩২। ৩৩। ৩৪)। শ্রীরামচন্দ্র শ্রবণ
করিয়া ঈশ্বং হাস্তম্পে কহিলেন, নারদ! শ্রবণ কর। আমার
অবিদত কিছুই নাই; পূর্বে যে প্রতিক্তা করিয়াছি, ভাহা
অবিদয়ে সফল করিব; ভোগ দারা অম্বর্গণের প্রারক্ষম
হইলেই আমার প্রতিক্তা ফলোয়্থী হইবে; এজয় সময় অপেক্ষা
করিতেছি। হে দেবর্ষে! ভূমি ক্মলযোনিকে আমার আদেশ
বিজ্ঞাপন কর, যে আগামি দিবদে আমি রাবণবধার্থ ক্তরারণ্যে
যাত্রা করিয়া সেই স্থানে কটাব্রুল ধারী হইয়া চতুর্দল বর্ষ্ শ্রম

শূণু নারদ মে কিঞ্ছিদ্যতেইবিদিতংকচিৎ।
প্রতিজ্ঞাতং চ যৎ পূর্বং করিষ্যে তন্ন সংশয়ঃ॥৩৬॥
কিন্তু কালানুরোধেন তক্তৎপ্রারক্ষণংক্ষয়াৎ।
হরিষ্যে সর্বভূভারং ক্রমেণাস্থরমণ্ডলম্।। ৩৭॥
রাবণস্থা বিনাশার্থং শোগস্তা দণ্ডকাননম্।
চতুর্দশসমান্তত্রে ভ্যষিত্বা মুনিবেশ প্রক্॥ ৩৮॥
সীতামিষেণ তং তুক্তং সকুলং নাশয়াম্যহম্।
এবং রামে প্রতিজ্ঞাতে নারদঃ প্রমুমোদ হ ॥৩৯॥
প্রদক্ষণত্রয়ং কৃত্বা দণ্ডবত্প্রণিপত্য তম্।
অনুজ্ঞাতশ্চ রামেণ যথোঁ দেবগতিংমুনিঃ॥৪০॥

করিব ও সীতাহরণাপরাধে রাবণকে সম্লে উন্লিত করিব।
মহর্ষি শ্রীরামের এইরূপ প্রতিজ্ঞা বাক্যে আনন্দিত হইরা
উাহাকে বারত্রয় প্রদক্ষিণ করণানস্তর প্রণাম করিয়া শ্রীরামের
আক্রাহ্মসারে স্বর্গধামে গমন করিলেন। (৩৫। ৩৬। ৩৭।
৩৮।৩৯। ৪০)

সন্ধাদং পঠতি শৃণোতি সং স্মরেদা যো নিত্যং মুনিবররাময়োঃ স ভক্ত্যা। সংপ্রাপ্নোত্যমরস্বত্বর্লভং বিমোক্ষং কৈবল্যং বিরতি পুরঃসরং ক্রমেণ।। ৪১।।

ইতি শ্রীমদধ্যাতারামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে অযোধ্যাকাণ্ডে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

নারদ ও শ্রীরামচক্র উভয়ের এইরূপ কথোপকখন সমাদ বে ব্যক্তি ভক্তিপূর্বক পাঠ কিম্বা শ্রবণ অথবা শ্রবণ করে, সেই মহাত্মা দেবত্ল ভি মৃক্তিপদ ক্রমশঃ লাভ করিছে পারে। (৪১)

> শ্রীমদ্ধ্যাত্ম রামায়ণে উমামহেশ্ব স্থাদে অযোধ্যাকাণ্ডে প্রথম অধ্যায় :

षि ठौरशक्षाक्षा ।

শ্ৰীমহাদেব উবাচ।

অথ রাজা দশরথঃ কদাচিদ্রহিদ স্থিতঃ।
বশিষ্ঠং স্বকুলাচার্যমাসুয়েদ মভাসত ॥ ১ ॥
ভগবন্! রামমথিলাঃ প্রশংসন্তি মুক্ত্মুক্তঃ।
পৌরাশ্চ নৈগমা রদ্ধা মন্ত্রিগশ্চ বিশেষতঃ ॥২॥
ততং সর্ব গুণোপেতং রামং রাজীবলোচনম্।
জ্যেষ্ঠং রাজ্যেহভিষেক্ষ্যামি র্দ্ধোহহং মুনিপুঙ্গব।।৩॥
ভরতো মাতুলং দ্রুত্বুং গতঃ শক্রেম্বন্থতঃ।
অভিষেক্ষ্যে শ এবাশ্চ ভবাংস্তচ্চানুমোদতাম্।।৪॥
সম্ভারাঃ সংল্রিয়ন্তাং চ গচ্ছ মন্ত্রয় রাঘবম্।
উচ্ছীয়তাং পতাকাশ্চ নানাবর্ণাঃ স্মস্ততঃ।।৫।।

তোরণানি বিচিত্রাণি স্বর্ণমুক্তাময়ানি বৈ।
আহুয় মন্ত্রিণং রাজা স্থমন্ত্রং মন্ত্রিসত্থম্ ।।৬।।
আজ্ঞাপয়তি যদ্যত্বাং মুনি স্তত্তৎসমানয়।
যৌবরাজ্যেইভিষেক্ষ্যামি শ্বোভূতে রঘুনন্দনম্ ।।৭:
তথেতি হর্বাত্র সমুনিং কিঙ্করোমী ত্যভাষত।
তমুবাচ মহাতেজা বশিষ্ঠো জ্ঞানিনাং বরঃ ।।৮।।
শ্বঃ প্রভাতে মধ্যকক্ষে কন্সকাঃ স্বর্ণভূষিতাঃ।

একদা রাজা দশরথ একাকী বিশ্রাম ভবনে সমাহত কুলগুরু বিশিষ্টদেবকে সম্বোধন করিয়া কহিতে লাগিলেন (১) ভগবন্! প্রজাবর্গ সকলেই শ্রীরামচন্দ্রের সর্ব্বদাই প্রশংসা করিয়া থাকেন। বিশেষতঃ প্রবাদিগণ ও শাস্ত্রক্ত বৃদ্ধ মন্ত্রিবর্গেরা শ্রীরামের গুণের নিতান্ত পক্ষপাতী হইয়াছেন (২) এক্ষণে আমি বৃদ্ধ হইয়াছি; অতএব অভিলাষ করি সর্ব্বগুণযুক্ত রাজীবলোচন জ্যেষ্ঠপুত্র শ্রীরামকে যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করিব (৩) বিশেষতঃ এ সময় শক্রদ্ম সহিত ভরত মাতৃল আশ্রমে গমন করিয়াছেন; এই অবসরে আগামী দিবসেই শুভকার্য্য নির্ব্বাহ করিব; ভরত বাটী আসিলে উক্ত কার্য্যে আপত্তি উত্থাপনের সম্ভাবনা হইবে। (৪) মহর্বে! আপনি এ বিষয়ে অনুমোদন করিয়া শ্রীরামের সহিত মন্ত্রণা করুন এবং অ পনার অভিপ্রোয়ানুসারে অভিষেকাপ্রাণী দ্রব্য সকল

সমাহুত হউক (৫) অযোধাানগরীতে নানাবর্ণোপশোভিত পতাকা সকল উড্ডীয়মান হউক এবং ৰিচিত্ৰ স্বৰ্ণমুক্তাময় তোরণ সকল নগরীর শোভা সম্পাদন করক।(৬) রাজা বশিষ্ঠদেবকে এইরূপ বলিতে বলিতে অতিবাাগ্রতা সহকারে মন্ত্রিপ্রেষ্ঠ স্থমন্ত্রকে আহ্বান করিয়া কহিলেন, মন্ত্রিবর ৷ আগামী দিবদে শ্রীরামচক্রকে যৌবরাজ্যে অভিষেক করিব, অতএব মহর্ষি যে যে বিষয় তোমাকে আজ্ঞা করেন তুমি তৎপ্রতিপালনে বত্বান হও। স্থমন্ত্র সাতিশয় সস্থোয় সহকারে তথান্ত বলিয়া ताकाळा भिरताधार्या कतिया दिनष्ठेप्तित्क किर्लिन, सहर्ष ! আমার প্রতি কি আজ্ঞা করিবেন করুন (१।৮) প্রমজ্ঞানী বশিষ্ঠদেব কহিলেন, স্থমন্ত্র । আগামী প্রভাত সময়ে রাজবাটীর মধ্যকক্ষে স্থবৰ্ণালয়ারভূষিতা প্রমূরপবতী ধোড়শ ধোড়শ পোরকক্সা ও স্থচারু দশন চতুষ্টয় শোভিত ঐরাবতবংশোদ্ভব একটা গলরাজ এবং নানাতীর্থোদকপূরিত সহস্রহ স্বর্ণকৃত্ত ও স্থচাক শাদৃদ চর্মাত্রয় এবং বিবিধ মুক্তামণি বিরাজিত ও স্থবৰ্ণদণ্ডশোভিত একটা খেতছত এবং সহস্ৰ২ স্থগৰিমালা ও কতিপয় স্থচাক্তবন্ত্ৰ এবং রাজভোগ্য নানাবিধ রত্নাভরণাদি

তিষ্ঠস্ত যোড়মগজঃ স্বর্ণরত্বাদিভূষিতঃ।।৯।। চতুর্দ্দন্তঃ সম্যাতু ঐরাবতকুলোদ্ভবঃ। নানা তীর্থোদকৈঃ পূর্ণাঃ স্বর্ণকুস্তাঃ সহস্রশঃ ॥১०॥ স্থাপ্যন্তাং নববৈ ব্যাঘ্রচর্ম্মাণিত্রীণিচান্য। শ্বেতচ্ছত্রং রত্নদর্ভং মুক্তামণি বিরাজিতং ॥১১॥ দিব্যমাল্যানিবস্তাণি দিব্যান্যাভরণানিচ। মুনয়ঃ সৎকৃতান্তত্ৰ তিষ্ঠন্ত কুশপাণয়ঃ ॥১২॥ নর্ত্তক্যোবারমুখ্যাশ্চ গায়কা বেণুকাস্তথা। নানাবাদিত্রকুশলা বাদয়স্তনুপাঙ্গনে।।১৩।। হস্ত্যশ্বরথপাদাতা বহিস্তিষ্ঠস্ত সায়ুধাঃ। নগরেয়ানি ভিষ্ঠন্তি দেবতায়তনানিচ ।।১৪।। তেষপ্রবর্ত্ততাং পূজানানাবলিভিরার্তা। রাজানঃ শীত্রমায়ান্ত নানোপায়ন পাণয়ঃ।।১৫।। ইত্যাদিশ্য মুনিঃ শ্রীমান্স্মন্ত্রং নৃপমন্ত্রিণং। স্বয়ং জগামভবনং রাঘবস্যাতি শোভনং ॥১৬॥ রথমারুহ্য ভগবান্ বশিষ্ঠমুনিসভূমঃ।

সমৃদয় প্রস্তুত করা আবশুক; অতএব অবিলম্বে তুমি এ বিষয়ে সচেষ্ট হও এবং ঋত্বিক কর্মাকুশল ঋবিগণ কুশপাণি হইয়া ঐ সানে অবস্থিতি করুন। নর্ত্তকী বারাঙ্গনারা নৃত্যু আরম্ভ করুক। বৈদিক সম্প্রদায়েরা বেদপাঠ আরম্ভ করুন। বাদ্যকরেরা বিবিধ বাদ্যধ্বনি দারা রাজভবন আনন্দময় করুক্। নগরস্থ দেবতাদিগের পূজা আরম্ভ হউক। নিকটবর্ত্তি রাজগণ নানা প্রকার উপহার গ্রহণ করিয়া যাহাতে অযোধ্যানগরীতে আগমন করেন, প্রক্রপ উদ্যোগ কর। (১। ১০। ১১। ১২। ১৩।১৪।১৫)। অনস্তর ভগবান বশিষ্ঠদেব এইরূপ আদেশ করিয়া স্বয়ং রথারোহণপূর্ব্বক শ্রীরাম ভবনাভিমুপে গমন করিলেন (১৬) অবারিতদার কুলগুরু বশিষ্ঠদেব ক্রমশ: কক্ষাক্রম অতিক্রম করিয়া অস্তঃপুর মধ্যে রথ হইতে অবতীর্ণ হইলেন। শ্রীরামচন্দ্র সমাগত মহর্ষিকে প্রাণত্তাদ্গমনানস্তর

ত্রীণিকক্ষাণ্যতিক্রম্যরথাৎক্ষিতিমবাতরৎ ।। ১৭।। অন্তঃপ্রবিশ্য ভবনং স্বাচ্বার্থস্বাদনারিতঃ । গুরুমাগতমাজ্ঞায় রামস্তর্গং কুতাঞ্জলিঃ ।। ১৮।।

নমস্বার করিলেন। জনকনন্দিনী সীতা স্বর্ণপাত্তে পাদ্যোদক আনয়ন করিয়া রত্নাসনোপবিষ্ট মহর্ষির পাদ প্রকালন করিয়া দিলেন। শ্রীরামচন্দ্র সীতার সহিত গুরুপাদোদক মন্তকে धात्र कतिया महर्षित्क कहित्नन्, छभवन्। जाना जामि छवनीय চরণামৃত মস্তকে ধারণ করিয়া কুতার্থ হইলাম। বশিষ্ঠদেব শ্রীরামের এই রূপ ভক্তিগর্ভ বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন, ভগবন্ বৈকুষ্ঠনাথ! আপনার পাদোদক ধারণ করিয়া দেব দব গিরিজাপতি আত্মাকে কৃতার্থ বোধ করিতেছেন। পূজাপাদ মৎ পিতা কমলযোনি ও আপনার চরণামৃত স্পর্শ করিয়া সকল অশুভ হইতে পরিত্রাণ পাইয়াছেন। এক্ষণে আপনি যে আমার প্রতি এই সকল গুরুজনোচিত বাক্য প্রয়োগ করিতে-ছেন্ তাহা কেবল লোক শিক্ষার্থ বোধ হইতেছে। যদাপি আপনার প্রদাদে আমি ধ্যানাবলম্বন করিয়া সকলই জানিতেডি যে আপনি প্রমাত্মা দেবতাদিগের কার্য্য সিদ্ধার্থ রাবণ বংধা-দেশে সাক্ষাৎ কমলাদেবীর সহিত ভূমগুলে জন্মগ্রহণ করিয়া ছেন তথাপি দেবকার্য্য বিদ্ন সম্ভাবনায় এই সকল গুহু বিষয় কাহার নিকট প্রকাশ করিব না। আপনি আমার প্রতি যে প্রকার পৃজ্যভাব প্রকাশ করিয়া থাকেন্, আমি তদমুসারে শিষ্যভাব প্রকাশ করিব। কিন্তু ভগবন্! আমি বিশেষরূপ অবগত আছি যে আপনি গুরুজনের গুরু ও পিতৃলোকের পিতামহ এবং দ্রকান্তর্যামী ও দমস্ত জগতের নিয়ন্তা এবং অবাঙ্ মানসগোচর সেই পরমান্তা শুক্রশোণিত সম্পর্ক ব্যতি-বেকেও শুদ্ধ সত্ময় দেহ ধারণ করিয়া যোগমায়া দারা এই মনুষ্য জগতে মনুষ্যের ভাায় প্রকাশ পাইতেছেন। হে দেব! আমি পূর্বের ব্রহ্মার প্রমুখাৎ শুনিয়াছি যে ইক্ষাকুবংশে প্রমাত্মা জন্মগ্রহণ করিবেন্ তদবধি তোমার আচার্য্য হইব এই অভি-লাষেই অতি গহিত পৌরহিত্য কার্য্যও স্বীকার করিয়াছি তে সর্মভৃতান্তরাত্মন্ ! একণে আমার চির মনোরথ সফল হইয়াছে আপনার নিকট একটী প্রার্থনা করি যে আপনার সর্বলোক মোহিনী মহামায়া প্রভাবে মুগ্ধ হইয়া যেন আপনাকে বিশ্বত না হই যদি গুরুজনের নিষ্কৃতি করিতে বাস্থা থাকে তাহা হইলে আমার এই প্রার্থনীয় বিষয়টী সিদ্ধ করিবেন (১৭।১৮।

व्यकुम् गमा नमक्का मखन्छ किनश्यूकः। স্বৰ্ণপাত্ৰেণ পানীয়মানিনায়াশু জানকী॥ ১৯॥ রত্নাসনে সমাবেশ্য পাদে প্রকাল্য ভক্তিতঃ। তদাপঃ শিরসা ধৃতা সীতয়া সহ রাঘবঃ।। ২০॥ ধন্যোহস্মীত্যব্রবীদ্রামন্তব পাদাযুধারণাৎ। ঞীরামেণৈর মুক্তন্ত প্রহসন্মুনিরত্রবীৎ ॥ ২১॥ তৎপাদ**স**লিলং ধৃত্বা ধন্যোহভূদ্গিরিজাপতিঃ। ব্ৰহ্মাপি মৎপিতা তে হি পাদতীৰ্থহতাশুভঃ॥২২॥ ইদানীং ভাষদে যত্ত্বং লোকানামুপদেশকুৎ। জানামি ত্বাং পরাত্মানং লক্ষ্যা সঞ্জাতমীশ্বরং ॥২৩॥ দেবকার্য্যার্থসিদ্ধ্যর্থং ভক্তানাং ভক্তিসিদ্ধয়ে। রাবণস্থা বধার্থায় জাতং জানামি বাঘব।॥ ২৪॥ তথাপি দেবকার্য্যার্থং গুহুং নোদুঘাটয়াম্যহং। यथा युश भाग्रया मर्क्टश करतायि त्रचूनन्मन ! ॥ २०॥ **তरिथवान्युविधारश्चश्रहर मियान्त्रुर छङ्**तनग्रहर । গুৰু প্ৰনাং স্বং দেব! পিতৃণাং স্বংপিতামহঃ॥২৬॥ অন্তর্যামী জগদ্যাত্রাবাইকস্তৃমগোচরঃ। শুদ্ধসন্ত্রময়ং দেহং ধৃদ্বাস্থান সম্ভবং।। ১৭।। মনুষ্য ইব লোকেহস্মিন্ ভাসি ত্বং যোগমায়য়া। পৌরোহিত্যমহৎ জানে বিগছ হ তুষ্যজীবনং ॥২৮॥ ইক্ষাকুণাং কুলে রামঃ পরমাত্মা জনিষ্যতে। ইতি জ্ঞাতং ময়া পূর্বাং ব্রহ্মণা কথিতং পুরা॥২৯॥ ততোহহমাশ্রা রাম ! তব সম্বন্ধকাঞ্জন্য।। অকার্যং গহিতিমপি ত্রাচার্যন্ত্রিদ্ধয়ে॥ ৩০॥ ততো মনোরথো মেহদ্য ফলিতে। রঘুনন্দন। वृत्रधीन। यहायात्रा नर्क्ताटेककरमाहिनी ॥७५॥

মাং যথ। মোহয়েরের তথা কুরু রঘৃদ্ধ।
গুরুনিক্ষৃতিকামস্তৃং যদি দেহেতদেব মে ॥৩২॥
প্রদক্ষাৎ দর্বমপুর্তেং ন বাচ্যং কুত্রচিনারা।
রাজ্ঞা দশরথেনাহং প্রেষিতোহিন্ম রঘুদ্ধহ ॥৩৩॥
স্থামামস্ত্রয়িতুং রাজ্যে খোহতিবেক্ষতি রাঘব।
অদ্য স্থং দীতয়া দার্দ্মমুপবাদং যথাবিধি ॥ ৩৪ ॥
কৃষা শুচিভূমিশায়ী ভব রাম! জিতেক্সিয়ঃ।
গচ্ছামি রাজদায়িধ্যং স্থং ভুপ্রাতর্গমিষাদি ॥৩৫॥
ইত্যুক্ত্বা রথমারুহ্য যযৌ রাজগুরুক্ত তম্।
রামোহিপি লক্ষাণং দৃষ্ট্বা প্রহদয়িদমত্রবীৎ॥৩৬॥
দৌমিত্রো যৌবরাক্যেমে খোহতিবেকো ভবিষ্যতি।
নিমিত্তমাত্রমেবাহং কর্ত্বা ভোক্তা স্বমেব হি॥৩৭॥

হে রাম, কথাপ্রসঙ্গে তোমার নিকটেই এই সকল গুহু-বার্ত্তা প্রকাশ করিলাম অন্য কোন স্থানে ব্যক্ত হইবে না, সম্প্রতি রাজা দশরণ তোমার নিকট আমাকে প্রেরণ করিয়া-ছেন, জাঁহার অভিপ্রায় যে আগামি দিবদে তোমাকে বেগবরণজ্যে অভিষিক্ত করিবেন, তুমি দীতাদেবীর সহিত অদ্য যথাবিধি উপবাস ও ইন্দ্রিয় সংঘমের অনুষ্ঠান কর এবং বৈধশেচিবলবন করির। ভূমিশয্যা শয়নদ্বারা অদ্য রজনী অতিবাহিত কর, এক্ষণে আমি রাজসন্নিধানে গমন করি, ভুমি নিশাবসান হইলে মহারাজের সহিত সাক্ষাৎ করিবে। ৩৩। । ৩৪। ৩৫। মহর্ষি রামের সহিত এরণ কথোপকথনান্তে রথারোহণপূর্ব্বক রাজসদনাভিমুখে গমন করিলেন। ইত্যবসরে জীরাম লক্ষ্মণকে দর্শন করিয়া ধ্বং হাস্য সহকারে কহি-লেন। ৩৬। বংগ সেমিত্রে, কুলগুৰুবশিষ্ঠদেবের নিকট শুনিলাম পিতা আগামি দিবদে আমাকে গৌবরাজ্যে অভি-ষিক্ত করিবেন, ভাতঃ তুমি আমার অন্তরস্থাণ অপেকা-প্রিয়তম, প্রাণের স্বরূপ বেছেতু সর্ব্বদা তোমাকে দর্শন করিয়া মম ত্বং হি বহিঃপ্রাণো নাত্রকার্যা বিচারণা।
ততো বশির্চ্চেন যথা ভাষিতং তত্তথাকরেছে॥ ১৮॥
বশির্চ্চেইপি নৃপং গত্বা ক্বতং সর্বাং ন্যবেদয়ৎ।
বশিষ্ঠপ্র পুরো রাজ্ঞা ছ্যক্তং রামাভিষেচনম্॥ ৩৯॥
যদা তদৈব নগরে ক্রত্বা কশ্চিৎ পুমান্ জগো।
কৌশল্যায়ৈ রামমাত্রে স্থমিত্রায়ৈ তথৈব চ॥৪০॥
ক্রত্বা ততঃ প্রীত্রমনাঃ কৌশল্যা পুত্রবৎসলা॥৪১॥
লক্ষাং পর্যাচরদেবীং রামস্বার্থপ্রসিকয়ে।
সত্যবাদী দশরথং করোত্যেব প্রতিক্রতম্॥ ৪২॥
কৈকেয়ীবশগঃ কিন্তু কামুকঃ কিং করিষ্যতি।
ইতি ব্যাকুলচিন্তা সা ছুর্গাং দেবীমপুজয়ৎ॥৪৩॥

পরিতৃপ্তি লাভ করিতেছি। অতএব পিতৃদত্তরাজ্যের ভোক্তা ও কর্ত্তা তুমিই জানিবা এবিষয়ে কোন বিবেচ্য নাই, অনস্তর ব্রীরামচন্দ্র গুৰুবাক্যাতুরপ অনুষ্ঠান্দে প্রব্ত হইলেন। ৩৭। । ৩৮। বশিষ্ঠদেবও রাজার নিকটে জীরামের গুৰুভক্তি ও সন্ধিবেচকতাদি নানাগুণের পরিচয়প্রদান করিলেম, এমত সময়ে কোন পেরিজন রাজীবলোচন রামের রাজ্যাভিষেক সম্বাদ অন্তঃপুরমধ্যে কেশিল্যা ও স্থমিতার নিকটে নিবেদন করিল। ৩৯। ৪০। কৌশল্যা ও স্থমিত্রা এই সকল অমৃত-তুল্য সম্বাদ শ্রবণ করিয়া মহামোদ মহাণ্ব নীরপুরে নিমগ্না इहेलन এবং मचानमार्जांक महामूना खुर्गाखर्गान-প্রদান করিলেন, পুত্রবৎসদা কেশিল্যা শুভসম্বাদ জ্ঞবণাবধি শ্রীরামের অর্থসিদ্ধিকামনা করিয়া কমলাদেবীর পূজারন্ত করিলেন। যদিও দেবী কেশিল্যা রাজা দশরথকে সভ্য প্রতিজ্ঞ জানিতেন তথাপি তাঁহার মন কার্যসিদ্ধিপক্ষে নিতান্ত সংশয়াপর ছিল, যে ছেতু রাজাকে কৈকেয়ীবশতাপর এবং কামপরতক্র বলিয়া বিশেষ জানিতেন, স্মতরাং ব্যাকুলচিত্তে বিশ্ববিনাশার্থ সর্কবিশ্ব বিনাশিনী ভগবতীত্বর্গাদেবীর পূজা-त्रस्य क्रिंतिन। ४১। ४२। ४७। ইভাবসরে দেবগণ এই

এতি সামন্ত্রে দেবা দৈবীং বাণামচোদয়ন্।
গচ্ছ দেবি! ভুবো লোকমযোধ্যায়াং প্রযত্নতঃ ॥৪৪॥
রামান্থিকবিদ্নার্থং যতস্ব ব্রহ্মবাক্যতঃ।
মন্থরাং প্রবিশস্বাদে কৈকেয়ীঞ্চ ততঃ পরম্॥৪৫॥
ততো বিদ্নে সমুৎপল্লে পুনরেহি দিবং শুভে।
তথেত্যুক্ত্রা তথা চক্রে প্রবিবেশায় মন্থরাম্॥৪৬॥
সাহপি কুজা ত্রিবকা তু প্রাসাদাগ্রমথারুহৎ।
নগরং পরিতো দৃষ্ট্রা স্বিতঃ সমলস্ক্তম্॥৪৭॥

ব্যাপার দর্শনে শত্রুনাশে হতাশ হইয়া বাগ্দেবীকে কহিলেন দেবি! বিশার আদেশারুসারে অযোধ্যানগরীতে গমন করিয়া ঞ্জীরামচন্দ্রের রাজ্যাভিষেকের বিশ্ব যাংগতে হয় এই প্রকার যত্ন কৰুন প্রথমতঃ মন্থ্রাতে প্রবেশ কৰুন, অনন্তর কৈকেয়ীকে আশ্রর করিরা উক্তকার্য্যের বিশ্বসম্পাদন করুন্। ছইলে আমরা কুতার্থ হইব, আপনিও স্বলেপিকে আগমন করিবেন। বাগদেবী দেবগণের বাক্যে সম্মতা হইয়া প্রথ-মতঃ মন্থরাকে আতায় করিলেন। ৪৪। ৪৫। ৪৬। অতি-কুজাকৃতি মন্ত্রা ঐ দিবসে প্রাসাদোপরি আরোহণ করিয়া দেখিলেন অযোধ্যানগানী বিচিত্রপ্রজপতাকাদি দারা সুশো-ভিত হইয়া যেন হত। করিতেছে। এইরূপ ব্যাপারাব-লোকনে অতি বিস্ময়াবিষ্ট হইয়া প্রাসাদাগ্র হইতে অব-তরণানন্তর্ মন্থরাদাসী ধাত্রীকে জিজ্ঞাসা করিলেন, মাতঃ, অদ্য প্রাসাদ হইতে দেখিলাম অ্যোধ্যানগরী বিচিত্র ধজ-পতকাদিদ্বারা বিচিত্র শোভা ধারণ করিয়াছে এবং কেশিলায় দেবী আনন্দপূর্ণহৃদয়ে সমুপস্থিত বেদজ্ঞবাল্মণগণকে মহামূল্য বিবিধ বিচিত্রবস্ত্রাদি দান করিতেছেন, ইহার কারণ কিছুই জানিতে পারিলাম না। শুদ্ধান্তচারিণী ধাত্রী কহিল মন্থরে, তুমি অবণ কর নাই—আগামি দিবসে রাজা দশরথ গুণাভি-রাম এরামকে যেবিরাজ্যে অভিষক্ত করিবেন, এই কারণে নিযুক্ত রাজপুরুষেরা নগরীকে অলঙ্কৃত করিতেছে, মন্থ্রা সহসা এইরূপ মন্মভেদী সমাদশ্রবণে সাতিশয় হৃদয়বেদনা-দারা বিষ্কু হইয়া ফ্রতপাদকেপে কৈকেয়ী ভবনে গমনান্তর निर्व्धन (मिनि) अर्थाक्रमात्रिमी विभानत्माहन। किरक्त्रीक

নানতোরণসমাধং পতাকাভিরলঙ্ক্ম্।
সর্বেশিৎসবসমাযুক্তং বিশ্বিতা পুনরাগতম্ ॥৪৮॥
ধাত্রীং পপ্রছমাতঃ কিং ? নগরং সমলঙ্ক্ম্।
নানোৎসবসমাযুক্তা কৌশল্যা চাতি হর্ষিতা ॥৪৯॥
দদাতি বিপ্রমুখ্যেত্যে বস্ত্রাণি বিবিধানি চ।
তামুবাচ তদা ধাত্রী রামচন্দ্রাভিষেচনম্ ॥৫০॥
খোভবিষ্যতি তেনাদ্য সর্বাতোহলঙ্ক্তং পুরম্।
তচ্ছুত্বা ত্বিতং গত্বা কৈকেয়ীং বাক্যমন্ত্রবীৎ ॥৫১॥
পর্যাঙ্কত্বাং বিশালাক্ষীমেকাং তে পর্যাবস্থিতাং!
কিং শেষে দুর্ভুগে! মূঢ়ে মহন্তরমুপস্থিতং ॥৫২॥
ন জানীষেহতিসৌন্দর্য্যমানিনী মন্ত্রগামিনী ॥৫৩॥
রামস্তান্ত্রগাজাঙ্কঃ খোহভিষেকো ভবিষ্যতি।
তচ্ছুত্বা সহসোপ্রার কৈকেয়ী প্রিরবাদিনী ॥৫৪॥
তথ্যৈ দিবাং দদৌ স্বর্ণমূপুরং রত্নভূষিতং।
হর্ষস্থানে কিমিতি মে কথ্যতে ? ভরমাগতং ॥৫৫॥

কহিলেন। হে ভ্রুলিং, হে মন্দবুদ্ধে, তুমি এখন কি শারন করিরা রহিয়াছ তোমার অতি ভয়ের কারণ উপস্থিত হইয়াছে।
। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। হে মত্ত গজেন্দ্রগামিনি,
সৌন্দর্য্য মদে মত্ত হইয়া নিজ শুলুগুভ কিছুই জানিতে পার
না, আমি ধাত্রীর নিকট শুনিলাম যে, মহারাজের অমুগ্রহে
শুলুগা তনয় শ্রীরামচন্দ্র আগামি দিবদে যে বরাজ্যে অভিষিক্ত
হইবেন। ৫৩। সরলান্তঃকয়ণা প্রিয়ভাষণী কৈকেয়ী শুলুসন্থাদ শ্রবণে সহসা শ্রা। হইতে গাত্রোখান করিয়া মছরাকে
আনন্দোপহারস্বরূপ দিব্য রত্বনুপুর ও রত্ব ভূষণপ্রদান করিলেন। ৫৪। এবং হর্ষগদগদ বচনে কহিলেন, মন্থরে। আমি
ভোষার বাক্যের সকল মর্মার্থ ব্রিতে পারিলাম না, কারণ
প্রাণাধিক শ্রীরামের রাজ্যাভিষেকরূপ আনন্দজনক ব্যাপারকে
তুমি ভয়ের কারণ বলিয়া উল্লেখ করিতেছে, দেশ রাম আমার
ভরত অপেকা প্রিয়্কারীও প্রিয়ম্বদ নিজগর্ভধারিণী কৌশল্যার

ত্রতাদধিকে। রামঃ প্রিয়ক্তমে প্রিয়ম্নঃ।
কৌশল্যাং মাং সমং পশুন্ সদাশুশ্রমতে হি মাং॥৫৬
রামান্তরং কিমাপারং তব মূঢ়ে বদস্ব মে।
তচ্ছু ড়া বিষসাদাথ কুজা কারণবৈরিণী ॥৫৭॥
শুণু মদ্বচনং দেবি! যথার্থং তে মহন্তরম্।
ডাং তোষয়ন্ সদা রাজা প্রিয়বাক্যানি ভাষতে॥৫৮
কামুকোহতথ্যবাদী চ ড়াং বাচা পরিতোষয়ন্।
কার্যাং করোতি ভস্তা বৈ রামমাতুঃ স্বপুদ্ধলং॥৫৯॥
মনস্তেরিধারের প্রেষয়ামাস তে স্কৃতং।
ভরতং মাতুলকুলে প্রেষয়ামাস সামুজং॥৬০॥
স্থামিত্রায়াঃ সমীচীনং ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ।
লক্ষণো রামমন্থতি রাজ্যং সোহনুভবিষ্যতি।॥৬১॥

কদাচ ত্রুটি করেন না। অতএব হে মুঢ়ে, রাম হইতে তোমার কি ভয়ের আশকা হইল, তাহা আমার নিকট ব্যক্ত কর। ৫৫।৫৬। মন্ত্রা কৈকেয়ীবাক্য প্রবণ্ করিয়া বিষধান্তঃকরণে কহিলেন। দেবি ৷ আমার বাক্য শ্রবণ করুন, ভাষা হইলে ভয়ের কারণ বুঝিতে পারিবেন। ৫৭। দেখুন রাজা দশরথ আপনাকে মিথ্যা প্রিয়বাক্য দারা সভত সম্ভষ্ট করিয়া থাকেন। কিন্তু কৌশল্যা-(प्रवीदक विजनाधन कार्या कतिया महस्ये कदतन विद्यहमा कक्रन রাজাদিগের কি দূরদর্শিত ভরত এম্বানে থাকিলে জীরামের রাজ্যপ্রাপ্তিসম্বন্ধে যদি কোন আপত্তি উত্থাপন হয়. এই কার-নেই শক্তম দহিত ভরতকে পূর্বে মাতৃলালয়ে প্রেরণ করিয়াছেন, স্থমিত্রাদেবীর পক্ষেত কোন অনিষ্টাশঙ্কা নাই, বরং ভাহার ইষ্ট হইতেছে। ৫৮।৫৯।৬০। কারণ নক্ষণ শ্রীরামের নিতাস্ত অনুগামী অবশ্যই রাজ্যাংশভাগী হইবে। অতএব শ্রীরামের রাজ্যাভিষেক পক্ষে স্থমিত্রাদেবীর কোনপ্রতিবাদের আৰ-খকতা নাই। স্তরাং তোমার গলেই ভয়াবহ হইতেছে, বে হেতু শ্রীরামের জাগ্র ভরতের দাসত স্বীকার করিতে হইবে, অथवा नगत हहेट विश्व हरेट हरेट । देनवपरेना वनाश्व যায় না, চিরাভিমানী ভরত অভিমানে প্রাণত্যাগ করিলেও ক্রিতে পারেন, আর ভোমাকেও কৌশল্যার পরিচ্যা ভরতো রাঘ্যন্তাত্রে কিন্ধরো বা ভবিষ্যতি।
বিবাস্তাত বা নগরাৎ প্রাটেশ্ব হাপ্যতেইচিরাৎ॥৬২

ছং তু দাসীব কে\শল্যাং নিতাং পরিচারষ্যসি।
ভতোইপি মরণং শ্রেয়ে যৎসপত্যাঃ পরাভ্যঃ॥৬৩॥
অভঃ শীমুং যতস্বান্ত ভরভস্তাভিষেচনে।
রামস্ত বনবাসার্থং বর্ষানি নবপঞ্চ চ ॥৬৪॥
ভতো কটোইভরে পুত্রস্তব রাজ্ঞি। ভবিষ্যতি।
উপারতে প্রক্রামি পূর্বমেব স্থনিশ্চিতং ॥৬৫॥
পুরা দেবাসুরে যুক্ষে রাজা দশরথঃ স্বয়ং।
ইল্রেণ যাচিতো ধন্বী সহায়ার্থং মহারথঃ॥৬৬॥
কগাম সেনয়া সার্জং তুরা সহ শুভাননে।
যুক্ষং প্রক্রবিভস্তম্য রাক্ষনৈঃ সহ ধন্নিঃ।৬৭॥
তদাক্ষকীলো ন্যপতিছিল্লস্তম্য ন বেদ সঃ।
ছং তুহতং সমাবেশ্য কীলরক্ষে ইতিধৈর্য্যতঃ॥৬৮।

স্থিতবত্যসিতাপাঞ্চী পতিপ্রাণপরীপ্রয়া।
ততে হত্বাহসুরান্ সর্বান্ দদর্শ তামরিন্দমঃ ॥৬৯॥
আন্চর্যাং পরমং লেভে ত্বামালিঙ্গ্য মুদাপ্রিতঃ।
রণীষ্ যতে মনদি বাঞ্জিতং বরদোহস্মাহং। ৭০॥
বরদ্ধং রণীযুত্বমেবং রাজাহবদৎ স্বয়ম্।
ত্বোক্রো বরদো রাজন্ যদি দত্তং বরদ্ধঃং॥৭১॥
তথ্যেব ভিষ্ঠতু চিরং ন্য সভূতং মমান্য।
যদা মেহবসরো ভুয়ান্তদা দেহি বরদ্ধঃং॥ ৭২॥
তথেতুক্রো স্বয়ং রাজা মন্দিরং ব্রজ স্করতে।
ততঃ শ্রুতং ময়া প্রবিনিদানীং স্কৃতিমাগতং॥৭৩॥
আতঃ শীঘুং প্রবিশ্বাদ্য ক্রোধাগারং ক্র্যান্তি।।
বিম্ব্যু সর্বাভ্রণং সর্বাতো বিনিকীর্যা চ।
ভূমাবেবশ্রানা ত্বং ভূফীমাতিষ্ঠ ভামিনী॥ ৭৪॥

কার্য্যে নিযুক্ত হইতে হইবে । ৬১। ৬২। অধিক কি বলিব দেবি, আমি বিবেচনা করি, সণত্নীরদাসীত্ব অপেক্ষা তোমার মরণই শ্রেমস্কর। যদি ভোমার জীবন রাখিতে ইচ্ছা থাকে তাহা হইলে শীঘু ভরতের রাজ্যাভিষেক ও শ্রীরামের চতুর্দশ বর্ষ বনবাস বাহাতে হয় তরিষয়ে যত্ন কর, তাহা হইলে তোমার সাম্রাজ্য হইবেক । ৬৩ । ৬৪। এসম্বন্ধে ভোমাকে স্বযুক্তি প্রেদান করিতেছি, ত্মরণ করিয়া দেখ—দেবাস্ত্র সংগ্রামে সাহাত্য প্রার্থি দেবরাক্ষ কর্তৃক আহুত হইয়া সনৈস্ত রাজ্য দশর্থ তোমার সচিত দেবভবনে গমন করিয়াছিলেন। ৬৫। ৬৬। তৎকালে রাজ্যসগণের সহিত রণোক্রত্ত মহাবীর মহারাজের রথকীল ছিন্ন হইয়া পড়িত হয়, রাজা কিছুই জ্ঞানিতে পারেন নাই। ৬৭। ত্মি পতিপ্রারক্ষার্থ ঐ কীলস্থানে তৎপরিবর্ত্তে নিজহস্তরক্ষা করিয়া ভৎকালে মহারাজের প্রোণরক্ষার্থ ঐ কীলস্থানে তৎপরিবর্ত্তে নিজহস্তরক্ষা করিয়া ভৎকালে মহারাজের প্রোণরক্ষা করিয়াছ। অনস্তর মহারাজ্ব সমর বিজয়লাভ করিয়া তোমাকে আপ্রিক্ষন করিব্র

তুমি এই ঘোরতর ভয়াবহ সমরে কীলপরিবর্তে হস্তপ্রদান করিয়া আমার প্রাণরক্ষা করিরাছ, অতএব তুমি অভিলমিত বরপ্রার্থনা কর॥ আমি তোমাকে বরদ্বয়প্রদানে প্রস্তুত জাছি এই প্রকার অভিসন্থোকর মহারাজের বাক্য প্রবণ করিয়া, তুমি তৎকালে কহিয়া ছিলে যে, মহারাজ দাসীর প্রতি সাত্তকম্প হ ইয়া যদি বরপ্রদানে দৃঢ়প্রতিক্ত হইয়া থাকেন, সে প্রভিক্তা কথনই বিচলিত হইবে না। ঐ বরদ্বয় আমার প্রহণ করাইল, এক্ষণে আপনার নিকট ক্তন্ত রাখিলাম্। যে সমর আমার কার্য্য উপস্থিত হইবে, তৎকালে অভিলম্বিত প্রকাশ করিয়া পুনর্কার গ্রহণ করিব। আমি এই সকল র্ত্তান্ত পূর্ব্বে শুনিয়াছি ইদানী স্থতিপথারাত হইল। অভএব সত্তর কোধালারে প্রবেশ কর, এবং রত্বান্তরণাদি সকল পরিত্যাগ করিয়া মৌনাবলম্বনপূর্বক ভূমিশব্যাবলম্বন কর। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। বিলা বাহান তোমাকে মলিনা ও অভিমানিনী দেখিয়া যখন

যাবৎ সত্যং প্রতিজ্ঞায় রাজাইভীষ্টং করোতি তে। নিশ্চয়ং কুরু কল্যাণি! কল্যাণং তে ভবিষ্যতি। শ্রুত্বা ত্রিবক্রয়োক্তং তন্ত্রদা কৈকয়নন্দিনী ॥৭৫॥ তথ্যমেবাথিলং মেনে দুঃসঙ্গাহিত বিভ্ৰমা। তামাহ কৈকয়ী দুষ্টা কুতন্তে বুদ্ধিরীদৃশী ॥৭৬॥ এবং ত্বাং বুদ্ধিসম্পন্নাং ন জানে বক্রস্থন্দরি। ভরতো যদি রাজা মে ভবিষ্যতি স্থত: প্রেয়ঃ ॥৭৭॥ গ্রামানু শতং প্রদাস্যামি মম ত্বং প্রাণবল্লভা। ইত্যুক্ত্ব। কোপভবনং প্রবিশ্য দহদা রুষা ॥৭৮॥ বিমুচ্য সর্ব্বাভরণং পরিকীর্য্য সমন্তভঃ। कृत्यो भग्नाना मलिना मलिनामृत्यातिनी ॥१२॥ প্রোবাচ খুণু মে কুব্রে যাবদ্রামো বনং ত্রঙ্গেৎ। প্রাণাং স্ত্যক্ষেথবা বজে শ্য়িষ্যে তাবদেব হি ॥ ৮

ভোমার সম্ভোষার্থ অভীষ্টদানে সত্যপ্রতিজ্ঞা করিবেন, তৎ-কালে ঐ বরদম্বারা ভরতের রাজ্যাভিষেক ও চতুর্দদাবর্ষ জীরামের বনবাস প্রার্থনা করিবে। কেকয়নন্দিনী মন্থরার এই সকল নৃশংসভাপূর্ণ বচনাবলীকে হিতকর এবং প্রিয়ভরজ্ঞান করিলেন, কহিলেন মহুরে, তোমার এইরূপ বুদ্ধির প্রতিভা কিরুপে হইল ৷ যদি আমার ভরত রাজ্যাভিষিক্ত হয়েন, ভাহা হইলে ভোমার বৃদ্ধির অহুরূপ পারিভোষিক প্রদান করিব। তুমি আমার প্রাণ অপেকা প্রিয়তমা তোমাকে শত প্রামপ্রদান করিয়া সস্তোষ লাভ করিব। অনস্তর সর্বাভরণ-পরিচ্যতা মলিনবদনা কৈকেয়ী ক্রেখাগার মধ্যে ভূমিশ্যা-अर्व क्तिरान । १६ । १७ । ११ । १४ । १३ । क्रिलन मस्टत्,

ইভ্যুক্ত্বা প্রথয়ে কুজ্ঞা গৃহৎ সাপি তথাকরোৎ ।৮১ ধীরো২তান্তদয়াস্থিতোহ**পিস্বগু**ণাচারাস্থিত<mark>াবাহথবা</mark> নীতিজ্ঞা বিধিবাদদেশিক পরো বিদ্যাবিবেকোইথবা ছুফানামতিপাপভাবিত্রিয়াং সঙ্গং সদাচেদ্রজেৎ। তঘুদ্ধা পরিভাবিতো ব্রন্থতি তৎসাম্যক্রমেণ স্ফুটং অতঃ দঙ্গঃ পরিত্যাক্ষ্যো দুফীনাং দর্রুদৈব হি। मूःमकी हात्र**ः श्रार्था** मार्थामारथश् ताक्यकनाका ॥ ৮७ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে অযোধ্যাকাণ্ডে দ্বিতীয়োহধ্যায়ং।

এই শর্ম করিলাম। প্রীরামের বনগমন করাইব নতুবা প্রাণ-ত্যাগ করিব, এই শ্যা হইতে উঠিব না।৮০। অনস্তর মহিবি. তোমার আবশ্রই কল্যাণ হইবে, এই কথা বলিরা মন্তরা প্রস্থান क्रितिला। ৮১। ऋषीत अञिम्त्राल् এवः वङ्ख्प विनिष्टे 📽 আচারযুক্ত নীতিবেতা এবং গুরুদেবাপর বিদ্যা বিবেকীব্যক্তিও পাপুমতিভ্রষ্টের সহবাদে পাপুর্দ্ধির অনুসারী হইরা ক্রমশঃ হুষ্টপদ্বীতে পদার্পণ করিয়া পাকে। ৮২। অতএব ছুষ্টজন-াংসর্গ সর্ব্বদা পরিহার্য্য তুষ্টসংসর্গীবাক্তিরা স্বার্থ হইতে পরিচ্যুত হর, কৈকেয়ী তাহার প্রত্যক্ষ দৃষ্টাত হইয়াছেন।৮৩।

ব্ৰহ্মাণ্ডপুরাণাস্তর্গত অধ্যাত্মরামায়ণের অযোধ্যাকাণ্ডে विजीत्याश्यामः ।

তৃতীয়ো>ধ্যায়ঃ।

ोমহাদেব উবাচ।

ততো দশরথো রাজা রামাভ্যুদয়কারণাৎ।
আদিশ্য মন্ত্রিপ্রকৃতীঃ সানন্দো গৃহমাবিশং।।।
তত্ত্রাদৃষ্ট্বা প্রিয়াং রাজা কিমেতদিতি বিস্কৃলঃ।
যা পুরা মন্দিরং তস্যাঃ প্রবিষ্টে ময়ি শোভনা।।২॥
হসন্তী মামুপায়াতি সা কিং নৈবাদ্য দৃশ্যতে।
ইত্যাত্মন্যেব সংচিন্ত্য মনসাতি বিদূরতা।।৩।
পপ্রচ্ছ দাসীনিকরং কুতো বঃ স্থামিনী শুভা?।
নায়াতি মাং যথা পূর্বাং মৎপ্রিয়া প্রিয়দর্শনা।৪।।

রাজা দশরণ প্রীরামের অভ্যুদয়ার্থ অমাত্যবর্গকে আদেশ করিয়া বিশ্রামবাদনায় কৈকেয়ীমন্দিরে আগমন করিলেন এবং সে ছানে প্রেয়সীকে পূর্ববং অবলোকন করিয়া বিকলাস্ত-করণে চিস্তা করিতে লাগিলেন। একি সেই দর্বগুণালক্কতা জীবিতেশ্বরী মহিষী অসময় নিজভবনশৃস্ত করিয়া কোন স্থানে অবস্থিতি করিতেছেন, পূর্ব্বে যিনি আমাকে অভ্যুপুর সমাগত দেখিরামাত্র সমাগতা হইয়া সহাস্তবদনে দাদর সম্ভাবণ করি-ভেন, এইক্ষণে সেই প্রিয়ভমা কোথায়, তদাভাবে অভ্যুপুর শ্নাময় দেখিতেছি, রাজা মনে মনে এরপ নানা তর্ক করিয়া দাসীকে জিজ্ঞাদা করিলেন, পরিচারিকে তোমাদিগের রাজ-মহিষী কোথায়! দাসী কহিল, মহারাজ! দেবী ক্রোধভবনে প্রবেশ করিয়াছেন, আমরা ইহার কারণ কিছুই জানিনা জাপনি সেই স্থানে গমন করিলে সকল বিবরণ জানিতে পারি-বেন, রাজা দশরণ ভীতান্তঃকরণে ক্রোধ ভবনে প্রবেশানস্তর নিজহন্ডহারা কৈকেয়ীর গাতিক্ষাৰ্শ ক্রিয়া কহিতে লাগিলেন।১। তামুচুঃ ক্রোধভবনং প্রবিষ্ঠা নৈব বিদ্মহে।
কারণং তত্তদেব ! ত্বং গড়া নিশ্চেতুমহ দি ॥৫॥
ইত্যুক্তো ভর্মন্ত্রন্তো রাজা তদ্যাঃ দমীপগঃ।
উপবিশ্য শনৈদে হিং স্পৃশদ্বৈ পাণিনাহত্ত্বীৎ ॥৬॥

। ২। ৩। ৪।। ৫। ৬। প্রিয়ে । আদ্য কি কারণে তুমি রত্নপর্যাস পরিহার করিয়া ভূপৃঠে শ্যান রহিয়াছ। হে ভীক ! তুমি আমার সহিত আলাপ করিতেছ না এজনা হৃদয়ে বেদনা পাইতেছি। হে চাক্লভাষিণি ! তুমি কি নিমিত্ত মহামূল্য রক্লাভরণাদি পরি-ত্যাগ করিয়া মলিনাম্বরধারণ করিরাছ আমার নিকট স্কল প্রকাশ কর, এক্ষণেই আমি তোমার অভিল্যিত সম্পাদন করিব। হে চার্ক্যঙ্গি! আমি প্রতিজ্ঞা করিতেছি যে, যে পুরুষেরা ন্ত্রীজাতি তোমার অনভিমত, কার্য্য করিয়া ক্রোধোদ্দীপন করা-हैयाटक, त्म वाक्ति এहे मध्य मध्यनीय व्यथवा वधा इहेरव। इ দেবি! তোমার যাহাতে প্রীতি হয়, তাহা হলভ হইলেও সিদ্ধ করিতে প্রস্তুত আছি। প্রিয়ে! তুমি আমার অন্তঃকরণ বিশেষ অবগত আছ আমাকেও আজাকারী বলিয়া জানিতেছ, তবে কি হেতু আমাকে থিন করিতেছ ও আপনি বুথা পরি-শ্রম স্বীকার করিতেছ। দেবি! তুমি অহুমতি কর, ভোমার· কোন প্রিয়কারী দরিদ্রকে ধনবান করিব, এবং ভোমার অহিত-কারী কোন ধনবানকে নিধ্ন করিব, এবং তোমার কোন অহিতকর অবধ্য বাক্তির শিরশ্ছেদ করিব অথবা তোমার প্রিয়-কারী কোন্ বধাছব্যক্তিকে রাজদণ্ড হইতে মুক্ত করিব। প্রিয়ে ৷ অধিক কি বলিব তোমার নিমিও আমি প্রাণপর্য্যস্ত পরিত্যাগা করিতে পারি এবং প্রাণাধিক প্রিয়তম শ্রীরামের উপর শপথ করিয়া বলিতেছি, যে তোমার যাহাতে প্রীতি হর, তাহাই করিব। কৈকেয়ী রাজা দশরবের এইরূপ শপথবাক্য व्यवगानखन त्नव चन्नमार्कन कतिश्रा कहिरलन-महानाक।

কিং শেষে বস্থাপৃষ্ঠে ? পর্যাক্ষাদীন বিহায়চ। মাং ত্বং থেদয়সে ভীরু যতে। মাং নাবভাষদে ॥१। অলঙ্কারং পরিত্যজ্য ভূমে। মলিনবাসসা। কিমর্থং ক্রহি সকলং বিধাস্যে তব বাঞ্চিতং ॥৮॥ কো বা তবাহিতং কর্ত্তা নারী বা পুরুষোহপি বা। স মে দণ্ডাশ্চ বধাশ্চ ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ। না। ক্রহি দেবি ! যথা প্রীতিস্তদবশ্যং মমাগ্রতঃ। তদিদানীং সাধয়িষ্যে মুদুর্ল ভ মপি ক্ষণাৎ ॥১০। জানাদি তুং মম স্বান্তং প্রিয়ং মাং স্ববদে স্থিতং। তথাপি মাং খেদয়সে রুথা তব পরিশ্রমঃ ১১।। ক্রহি ? কং ধনিনং কুর্য্যাৎ দরিদ্রং তে প্রিয়ঙ্করং। ধনিনং ক্ষণমাত্রেণ নিধ নঞ্চ তবাহিতং ৷ ১২।৷ ক্রহি ? কং বা বধিষ্যামি বধাহে । বা বিমোক্ষ্যতে। কিমত্র বছনোক্তেন প্রাণাং দাস্যামি তে প্রিয়ে৷ ১৩ মমপ্রাণাৎ প্রিয়তরে। রামো বাজীবলোচনঃ। তদ্যোপরি শপে ত্রুহি ত্বদ্ধিতং তৎকরোম্যহং॥১৪॥ ইতি ক্রবাণং রাজানং শপন্তং রাঘবোপরি। শনৈবির্বিমৃক্য নেত্রে সা রাজানং প্রত্যভাষত ॥১৫॥ यि मठाव्यि जिल्ला हिन भाषा कुरू व यि । यार्काः (म मकनाः कर्तुः नीघ (मव प्रमर्शि । ১৬॥

দেবাস্থ্রে যুদ্ধে ময়া ত্বং পরিরক্ষিতঃ।
তদা বরদ্ধং দত্তং ত্বয়া মে তুইচেতসা।। ১৭॥
তদ্ধং ন্যাস ভূতং মে স্থাপিতং ত্রি স্থবত।
তবিকেন বরেণাশু তরতং মে প্রিয়ং স্থতং। ১৮॥
এতিঃ সম্ভ্তসন্তারৈর্ঘোবরাক্ষ্যেইভিষেচয়।
অপরেণ বরেণাশু রামো গচ্ছতু দশুকান্। ১৯॥
মুনিবেশধর শ্রীমান্ ক্ষটাবলকল ভূষণঃ।
চতুর্দিশসমান্তর কন্দমূলকলাশনঃ। ২০॥
পুনরারাতু তস্যান্তে বনে বা তির্ভতু স্বয়ং।
প্রভাতে গচ্ছতু বনং রামোরাজীবলোচনঃ। ২৯॥
যদি কিঞ্চিৎ বিলম্বেত প্রাণাং স্ত্যক্ষ্যে তবাগ্রতঃ।
ভব সত্য প্রতিজ্ঞন্ত মেতদেব মমপ্রিয়ম্॥ ২২॥

মদমুষ্ঠিত দেবাখারা সম্ভৱ হইয়াছিলেন, এবং অযাচিত হইয়াও সদভিল্যিত বর্ত্বয়প্রদানে প্রস্তুত হইয়াছিলেন। আমি তৎ-কালে ঐ বরদ্বর স্মাপনার নিকট গ্রস্ত করিয়া রাখিয়াছিলাম। এক্কণে তাহার কার্যোপস্থিত হইয়াছে, অতএব মহারাজ প্রতি-ত্রুত বরদ্বর প্রদানহার। আমাকে চরিতার্থ করুন। প্রার্থনীয় বিষয় প্রকাশ করিতেছি—১এক বরদার। শ্রীরামের চতুর্দশ বর্ষ বন-বাদ অপর বরদারা ভরতের রাজ্যাভিষেক হয়, এই কার্যাদ্ম মহারাজেরই ইচ্ছাধীন জীরাম চতুর্দশ বর্ষান্তে পুন: প্রত্যাগমন कक्रन, अथवा मूनित्व । छ छो। वस्त नशाही हहेशा कनमृत कलानि ভক্ষণদারা দণ্ডকারণো কালাতিপাত করুন ভবিষয় আমার কোন আপত্তি নাই। হে সত্য প্রতিজ্ঞ, রজনীপ্রভাত হইলেই त्राकीयानावन ताम मखकाताना याजा कक्रन, विनम् शहरण আমি আপনার সমক্ষে প্রাণ পরিত্যাগ করিব। আমি স্বার্থপরায়ণা হইয়া আপনার নিক্ট এইরূপ প্রার্থনা করিভেছি ইহাবিবেচনা করিবেন না, আপনি প্রতিজ্ঞা ভক্জনা পাপে কল (इত না হন ইহা আমার অভিপ্রেত জানিবেন। ১৭। ১৮। । ১৯। ২০: ২১। ২২। বাজা কৈকেয়ীর অভিদাকণ ও রোম-

শ্রুতি ভারণং বাক্যং কৈকেয়া রোমহর্ষণং।
নিপপাত মহীপালো বজ্ঞাহত ইবাচল ।২৩॥
শবৈরুদ্ধীল্য নয়নে বিমৃদ্ধ্য পরয়া ভিয়া।
দুঃস্বপ্নো বা ময়া দৃষ্টো হৃথবা চিন্তবিভ্রমঃ ॥ ২৪॥
ইত্যালোক্য পুরঃ পত্নীং ব্যাঘূরীমিব পুরঃস্থিতাং।
কিমিদং ভাষসে? ভজে মম প্রাণহরং বচঃ॥২৫॥
রা মঃ কমপরাধং তে ক্তবান্ কমলেক্ষণঃ।
মমাগ্রে রাঘ্র গুণান্ বর্ণয়দ্য নিশং শুভান্ ॥২৬॥
কৌশল্যাং মাং দমং পশান্ শুশ্রাহাং কুরুতে দদা।
ইতি ক্রবন্ধী তং প্রিমিদানীং ভাষসেহন্যথা॥২৭।
রাজ্যং গৃহাণ পুল্রায় রামন্তিষ্ঠতু মন্দিরে।
অনুগৃত্বীষু মাং বামে রামায়্রান্তি ভয়ং তর ॥২৮॥

হর্ষণ বচন প্রবণ করিয়া বজ্রাহত ভূধরের ভার মেদিনীপৃষ্ঠে পতিত হইলেন ২০। কিয়ৎক্ষণ পরে সভায়ে নয়নদ্বয়ের উন্মীলন ও হস্তবারা মার্জ্জন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিতে লাগি-লেন আমি কি আদ্য ছ: স্বপ্ন দর্শন করিলাম-অথবা বার্দ্ধক্য-বশতঃ ভ্রান্তি হইয়া থাকিবে। পুনুর্ববার দৃষ্টিপাত করিয়া व्याद्ये न मात्र मग्रुत्थ मधात्रमाना रेकरकत्रीरक अवरलाकन করত পূর্ববিদ্নিষাদ পূর্ণান্তঃকরণে কহিলেন। চে ভাজে। একি তুমি বাক্যদারা আমার প্রাণসংহারে উদ্যত হইয়াছ ! রাজীবলোচন রাম তোমার নিকট কি অপরাধী হইয়াছে? পূর্বের তুমি আমার নিকট জ্ঞীরামের কতই প্রশংসা করিতে এবং কেশিল্যা নির্বিশেষে তোমার শুশুষা করায় জীরামের প্রতি কতই সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছ, এক্ষণে কি হেতৃ ভাগার বিপরিতাচরণে প্রব্রু হইয়াছ। হে চাকভাষিণি ভরতের নিমিও রাজ্য গ্রাহণ কর, আমি এই দণ্ডেই প্রদান করিতেছি, **জীরামের বনগমন প্রার্থি ছ**ও। হে ৰামলোচনে, তুমি আমার ও এরামের প্রতি অনুগ্রহণ্পকাশ

ইত্যুক্ত্ব। ২শ্রুপরীতাক্ষঃ পাদয়ে। নি পপাতহ।
কৈকেয়ী প্রত্যুবাচেদং সাপি রক্তান্তলোচনা। ২৯।
রাজেন্দ্র কিং ত্বং ভাল্যোহনি উক্তং তদ্ভাষ্ট্রেইন্যথা
মিথ্যাকরোবিচেৎস্বীয়ংভাষ্ট্রিং নরকোভ্রেৎ ॥ ৩০
বনং ন গচ্ছেৎ যদি রামচন্দ্রঃ

প্রভাতকালেইজিনচীরযুক্তঃ। উদ্বন্ধনংবাবিষভক্ষণং বারুত্বামরিষ্যেপুরভস্তবাহং৩১ সত্য প্রতিজ্ঞাইহমিতীহলোকে

বিভ্যমে সর্বাসভান্তরেষু।

রামোপরি ত্বং শপথং চ ক্কন্তা মিথ্যাপ্রতিজ্ঞো নরকং প্রয়াহি।। ৩২॥

ইত্যুক্তঃ প্রিয়গ দীনো মগ্নো ছংখার্ণবে নৃপঃ। মূচ্ছিতঃ পতিতো ভূমৌ বিদংছো মৃতকো যথা।।

কর, গুৰুজনবল্লভরাম ছইতে ভোমার কোন ভরের আশহা
নাই। রাজা অশ্রুপ্রলোচনে এইরপ বলিতে বলিতে কৈকে
নীর পাদদ্বরে পতিত ছইলেন, কৈকেয়ী আরক্ত নয়নে দৃটিপাত
করিয়া কাহিলেন, মহারাজ আপনি ভ্রান্ত ছইয়া প্রতিজ্ঞা
লজ্মনে উত্তত ছইয়াছেন, জ্ঞানী ছইয়া মিথ্যাবাদীদিগের
পাদবীতে পদার্পন করিতেছেন। যাহাছউক আমি আপনার
নিকট প্রতিজ্ঞা করিতেছি, আগামী প্রভাতে যদি শ্রীরামচন্দ্র
জটাবল্কল ধারণ করিয়া দশুকারণ্যে গমন না করেন, তাহা
ছইলে আমি উদ্বন্ধন অথবা বিষ ভক্ষণ দ্বারা প্রাণপরিযোগ
করিব। তুমি শ্বয়ং আপনাকে সত্যবাদী বলিয়া জনসমাজে
প্রকাশ করিয়া থাক; কিন্তু এক্ষণে রামের উপর শপথ করিয়া
প্রতিজ্ঞাল্জ্যন দেবে নিরয়গামী ছইতেছ । ২০ : ২৪ : ২৫ :
। ২৬ । ২৭ : ২৮ : ২৯ : ৩০ : ৩১ : ৩২ : রাজা কৈকেয়ীর
এইরপ বচনানলে দশ্ধ ছইয়া যোরহুংখাণ্বে মগ্ন ও ভূমিশ্যায়
মৃত্তি ছইলেন এবং একয়াত্রিকে সংবৎসর তুল্য জ্ঞান করিয়া

এবং রাত্রির্গতা তম্ম ছ:খাৎ সম্বংসরোপমা।

অরুণোদয়কালেতু বন্দিনো গায়কা জন্তঃ ।৩৪!।

নিবারয়িত্বা তান্ সর্বান্ কৈকেয়ীরোমমান্থিতা।

ততঃ প্রভাত সময়ে মধ্যকক্ষমুপস্থিতা।। ৩৫।।

ব্রাক্ষাণা ক্ষল্রিয়া বৈশ্যা ঋষয়ঃ কন্যকান্তথা।

ছত্রঞ্চ চামরং দিবাং গজোবাজী তথৈব চ॥৬৬॥

অন্যাশ্চ বারমুখ্যা যাঃ পৌরজানপদান্তথা।

বশির্কেন যথাজ্ঞপ্তং তৎসর্বিং তত্রসংস্থিতং॥৬৭॥

ক্রিয়ো বালাশ্চ র্কাশ্চ রাত্রো নিদ্রাং ন লেভিরে।

কদা দ্রক্ষামহে রামং পীতকোশেয়বাসসং॥৬৮॥

কখঞ্চিৎ অভিবাহিত করিলেন অৰুণোদয়কালে বন্দিগণ স্তুতি পাঠ আরম্ভ করিল। ৩৩।৩৪। কৈকেয়ী রোষসহকারে তাহাদিগকে নিবারণ করিলেন। এদিকে কুলগুৰুবশিষ্ঠ দেবের আজানুসারে ত্রাহ্মণ ক্ষত্তিয় বৈশ্য ঋষিগণ ও ষোড়শ সেরি-কন্যা স্বেডচ্ছুত্র দিব্য চামর গজবাজি প্রভৃতি রাজভোগ্য বস্তু সকল ও অন্যান্য বারাজনাগণ ও জানপদর্ক সকলে সমবেভ হইরা রাজবাটীর মধ্য কক্ষে উপস্থিত হইলোন। ৩৫। ৩৬। । ৩৭। গত রজনীতে নিদ্রা দেবী বালরদ্ধ ও স্ত্রীজাতি প্রভৃতি কাছারও নয়নস্পর্শ করিতে পারে নাই, কারণ তাহার। শ্য্যা-শরান হইরা সভত চিন্তা করিরাছিলেন যে শতকন্দর্পক্মনীর নবহুর্ব্রাদলশ্যাম রাজীবলোচন রাম পীতাম্বর ও কেন্ত্রিভ প্রভৃতি নানাবিধ রত্নাভরণে বিভূষিত হইয়া সহাস্য ব্দনে গ্ৰুৱাজপুষ্ঠে কথন আব্বোহণ করিবেন ঠাছার শিরস্থিত রাজমুকুটের সমুজ্জল প্রভায় দশদিক আলোকময় হইবে। শুভ-লক্ষণ সম্পন্ন সুকুমার লক্ষ্মণ তাঁহার অভিষ্ক্ত মন্তকোপরি খেতছত্ত ধারণ করিবেন কথনইবা প্রভাত হইবে আমরণ म्हि नव्यन्तिन व्यञ्ज्यूक स्मिन्या मन्दर्भन कविशा **আঝাকে পরিতৃপ্ত করিব স্তরাং** এই সকল চিন্তার সবলেই রজনীজাগরণ করিয়া ঔৎস্কা বশত প্রভাত হইতে না

দর্ব্বাভরণসম্পন্নং কিরীটকটকোজ্বলং। কোস্কভাভরণং শ্রামং কন্দর্পশতস্থন্দরং ॥৬৯॥ অভিধিক্তৎ সমায়াতং গজাৰ্চং স্মিতাননং। খেতছত্রধরং তত্র লক্ষাণং লক্ষণান্বিতং ॥४०॥ রামং কদা বা দ্রক্ষ্যামঃ প্রভ:তং বা কদা ভবেৎ। ইত্যুৎস্ক্রকধিয়ঃ সংবর্ধ বভূবুঃ পুরবাসিনঃ ॥১১॥ নেদানীমুখিতো রাজা কিমর্থঞ্জে চিন্তুয়ন। সুমন্ত্রঃ শনকৈঃ প্রায়ান্তত্ত রাজাবতিষ্ঠতে ॥৪২॥ বৰ্ষয়ন জয়শব্দেন প্ৰণমন্ শির্স। নুপং। অভিধিন্নং নৃপং দৃষ্ট্য কৈকেয়ীং সমপুক্তত ॥৪৩॥ प्रित देकटकशि! वर्ध च कि<? तां का मृगार् उद्याचा ।</p> তমাহ কৈকয়ী রাজারাত্রো নিদ্রাং ন লব্ধবান্॥৪৪ রাম রামেতি রামেতি রামমেবামুচিন্তয়ন। প্রহাগরেণ বৈ রাজা হাস্তম্ভ ইব লক্ষ্যতে। রামমানয় শীঘুং ত্বং রাজা দ্রস্থীমহেচ্ছতি ॥৪৫॥

হইতেই শ্রীরামদর্শনার্থ সেই স্থানে উপস্থিত হইরাছিলেন।
এই সময়ে মন্ত্রী প্রধান স্থান্ত মহারাজের সমাগামন না
দেখিয়া চিন্তিতান্ত:করণে অন্তঃপুরমধ্যে রাজসনিধানে গমন
করিলেন, এবং মহারাজের জয়হউক বলিয়া প্রণাম করিলেন।
রাজা কিছুমাত্র উত্তর করিলেন না। স্থান্ত অবস্থাদর্শনে
রাজাকে অভি খিন্ন বিবেচনা করিয়া কৈকেয়ীকে জিজ্ঞাসা
করিলেন । ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। দেবি! জাদ্য
উৎসব সময়ে মহারাজকে মলিন দেখিতেছি। কৈকেয়ী
কহিলেন—স্থান্ত, গভরাত্রিতে মহারাজ শ্রীরামেরই শুভাশুভচিন্তা করভ জাগারণ করিয়াছেন, অভ্রেব অস্থান্তর ন্যায়
োধ হইতেছে, তুনি শীঘ্র শ্রীরামকে এস্থানে আনম্রন কর।
মহারাজ দেখিতে ইচ্ছা করিতেছেন। ৪৪।৪৫।

স্থমন্ত্র উবাচ।

অশ্রুণ রাজবচনং কথং গচ্ছামি ভামিনি।
তচ্ছুণ মন্ত্রিণো বাকাং রাজামন্ত্রিণমত্রবীৎ ॥ ১৬॥
স্থমন্ত্র! রামং ক্রক্ষ্যামি শীঘুমানর স্থন্দরং।
ইত্যুক্তস্ত্রিভং গণ্ণা স্থমন্ত্রো রামমন্দিরং ॥ ৪৭॥
অবারিভঃ প্রবিফোইয়ং ত্রিভং রামমত্রবীৎ।
শীঘুমাগচ্ছ ভদ্রং তে রাম! রাজীবলোচন!॥ ৪৮॥
পিতুর্গেইং ময়াসার্কং রাজা ত্বাং ক্রন্টুমিচ্ছতি!
ইত্যুক্তো রথমারুছ সম্ভ্রমাৎ ত্রিভো বর্ষে॥ ৪৯॥
রামঃ সার্থিনা সার্কং লক্ষ্মণেন সমন্বিভঃ।
মধ্যকক্ষে বশিষ্ঠাদীন পশ্রুদ্রেব তুরান্থিতঃ॥ ৫০॥

স্মচত্র সুমন্ত্র কহিলেন ভামিনি প্রভুর বাক্য প্রবণ না করিয়া কি হেতু জীগামকে আনয়ন করিব, রাজা মন্ত্রীবাক্য শ্রবণ করিয়া কছিলেন, স্থান্ত প্রাণাধিক জীরামকে দর্শন করিতে ইচ্ছা করি, শীত্র আনম্বন কর, স্থমন্ত্র রাজকর্তৃক আদিষ্ট ছইয়া অবারিতদার জীরামভবনে প্রবেশ করিলেন এবং জীরাম-চন্দ্রকে কছিলেন হে রাম ! মহারাজ ভোমাকে দর্শন করিতে উচ্চা করিতেছেন, শীজ্র অণগ্যন কর। জীরামচন্দ্র পিতার আজ্ঞা প্রবণমাত্র ব্যাগ্র হইয়া লক্ষাণের সহিত স্থমন্ত্র চালিত-রথে আরোছনপুর্বক গমন করিলেন, মধ্যকক্ষে সমুপস্থিত বশিষ্ঠাদি ঋষিগণকে কার্য্যানুরোধবশত অতিক্রম করিয়া সত্ত্ব পিতৃভবনে গমন করিলেন। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯।৫০। এবং পিতৃদেবের চরণ বন্দন করিয়া দণ্ডায়মান রছিলেন। রাজ। দশর্থ শ্রীরামকে আলিঙ্কন করিবার নিমিত্ত গাতোতালান করিয়। বাহুদয় বিস্তার করিলেন। কিন্তু তাঁহার সেই আশা विकल हरेल, (यरहजु ज्राक्षाता नय्नव्यत्क महमा क्ष করিয়া মহারাজের দর্শনশক্তির প্রতিবন্ধক হইল। রাজা দেই ক্লে সমস্ত শুন্যময় অবলোকন করিয়া ভূমিতে পতনোমূপ

পিতৃঃ সমীপং সক্ষম ননাম চরণো পিতৃঃ।
রামমালিকিতৃং রাজা সমুখায় সমস্ত্রমঃ ॥৫॥
বাহ্প্রসার্য্য রামেতি ছঃখাম্মধো পপাত হ।
হাহেতি রামন্তং শীঘুমালিক্যাকে ন্যবেশয়ৎ ॥৫২॥
রাজানং মূচ্ছিতং দৃষ্ট্বা চুক্রন্তঃ সর্ব্যরোধিতঃ।
কিমর্থং রোদনমিতি বশিষ্ঠোহিপি সমাবিশৎ।৫৩॥
রামঃ পপ্রচ্ছ কিমিদং রাজ্ঞো দুঃথশু কারণং।
এবং পৃচ্ছতি রামে সা কৈকেয়ী রামমত্রবীৎ ॥৫৪॥
স্থমেব কারণং হাত্র রাজ্ঞো দুঃখোপশাস্তয়ে।
কিঞ্জিৎ কার্যাং স্বয়া রাম! কর্ত্র্যং নৃপতেহিত্থ॥৫৫

হইলেন। এরামচন্দ্র হা মহারাজ বলিয়া পিতাকে মূর্চ্ছাবস্থায় নিজকোড়ে ধারণ করিলেন, পুরনারীগণ রাজাকে মুচ্ছিত দেখিরা রোদন করিতে লাগিলেন। বশিষ্ঠদেব মধ্যকক ছইতে পুরনারীগণের রোদনধনি শ্রবণ করিয়া সত্তর আগসম করি-লেন। ৫১ ৫২।৫৩।৫৪। জীরামচন্দ্র মহারাজের আক-শ্মিক তুঃথের কারণ জিজ্ঞাসা করিলেন, কৈকেয়ী কহিলেন জীরাম তুমিই এক্ষণে মহারাজের ত্বঃথশান্তির উপায় হইয়াচ্, অভএব মহারাজের কিঞ্চিং হিতকার্য্য কর, তুমি সভ্য প্রতিজ্ঞ বলিয়া বাল্যকালে খ্যাতিলাভ করিয়াছ, একনে পিতাকে সত্যবাদী কর, পুর্বে মহারাজ সম্ভট ছইয়া আমাকে অভি-লষিত বর্ষা প্রদানে প্রতিশ্রুত হইয়াছিলেন, মহারাজের এ সভারকা ভোমারই অধীন, রাজা শ্বরং বলিতে লঞ্জিত হইতেছেন। হে ক্ষত্রিরবর সভ্যপাশবন্ধ রন্ধ পিতাকে নরক হইতে পরিত্রাণ কর যে সন্তান পুরাম নরক হইতে পিভাকে উদ্ধাং করে সেই ব্যক্তি পুত্র শব্দের বাচ্য হইরা থাকে। জ্ঞীগামচন্দ্র কৈকেয়ীর এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া শূলাহতের ন্যায় ব্যথিতান্তঃকরণে কহিলেন মাতঃ ! আমাকে আপনি কি উপদেশ দিভেছেন আমি পিতার নিমিত্ত জীবনপর্য্যস্ত দান করিতে পাবি এবং **উদন্ধন ও বিষণানে**ও প্রস্তুত আছি। জানকী ও গার্ভধারিণী কেশিল্যা, এবং সাম্রাজ্য সমস্ত পরি-ত্যাগ করিতে পারি। যে পুত্র পিতার অভিপ্রায় বুঝিরা

কুরু সত্যপ্রতিজ্ঞন্তং রাজানং সত্যবাদিনং। রাজ্ঞা বরদ্বয়ং দত্তং মম সন্তুষ্ঠচেত্তসা॥৫৬॥ इमधीनः जू जदमर्ताः वक्तूः शाः लक्कार् मृशः। সত্যপাশেন সম্বন্ধং পিতরং ত্রাতুমহ সি।।৫৭॥ পুত্রশব্দেন চৈতদ্ধিনরকাজায়তে পিতা। রামস্তরোদিতং শ্রুত্বা শূলেনাভিহতো যথা।।৫৮॥ ব্যথিতঃ কৈক্ষীং প্রাহ কিং মামেবং প্রভাষদে। পিত্রর্থে জীবিতং দাস্তে পিবেয়ং বিষমুল্বণং ॥৫৯॥ সীতাং ত্য**ক্ষ্যেও কৌশল্যাং** রাজ্যং চাপি<mark>ত্যজাম্যহং</mark> অনাজ্ঞপ্তোহপি কুরুতে পিতৃঃ কার্য্যং স উত্তমং ॥৬০ উক্তঃ করোতি যঃ পুত্রঃ সমধ্যম উদাহ্বতং। উক্তোহপি কুৰুতে নৈব সপুত্ৰো মল উচ্যতে ॥৬১॥ অতঃ করোমি তৎ সরিং যন্মামাহ পিতামম। সত্যং সত্যং করোম্যের রামো দ্বিনাভিভাষতে ॥৬২॥ ইতি রাম প্রতিজ্ঞাং সাপ্রদত্ব। বক্তুং প্রচক্রমে। রাম ! ত্বভিষেকার্থং সম্ভারাঃ সম্ভূতাক্ষ যে ॥৬৩॥ তৈরেব ভরতোহবশ্য মতিষেচ্যঃ প্রিয়ো মুম। অপরেণ বরেণ'শু চীরবাসা জটাধরঃ॥ ৬৪॥

আজ্ঞাপ্রভীক্ষা করে না সে উত্তম সন্তান, যে ব্যক্তি আজামুসারে পিতৃবাক্য রক্ষাকরে সে মধ্যম, যে ব্যক্তি আদিই হইরা
পিতৃবাক্য লজ্জ্বন করে সেই সন্তান বিষ্ঠাদির ন্যার পিতার
মলমাত্র অতএব আমি সতাপ্রতিজ্ঞা করিতেছি পিতা আমাকে
যাহা আজ্ঞা করিবেন তাহা ক্বতার্থ হইরা মন্তকে গ্রহণ
করিব রামচন্দ্র স্বীক্বতবিষয়ে কখনই অন্যথা বাক্য বলিবেন
না। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩।
রামচন্দ্রের এইরূপ প্রতিজ্ঞা বাক্য শ্রবণ করিয়া কৈকেরী

বনং প্রয়াহি শীঘুং স্বমস্তোব পিতৃরাজ্ঞরা।
চতুর্দশ সমাস্তত্ত বস মুন্যন্নভোজনঃ।। ৬৫ ॥
এতদেব পিতৃস্তেইদ্য কার্যাং স্থং কর্তু মহ সি।
রাজাতু লক্ষতে বক্তুং স্বামেবং রঘুনন্দন ॥৬৬॥

শ্রীরাম উবাচ।

ভরতক্তির রাজ্যং স্থাদহং গচ্চামি দণ্ডকান্। কিন্তু রাজা ন বক্তীহ মাং ন জানেহত্তকারণং ॥৬৭॥

কহিলেন, হে রাম ভোমার অভিষেকার্থ যে সকল বস্তু আছভ হইয়াছে ঐ সমুদায় বস্তু আমার প্রিয় সন্তান ভরতের রাজ্যাভিষেক সাধন হউক এবং তুমি মুনিবেশ ও জটাবল্কন ধারণ করিয়া চতুর্দশ বর্ষ দণ্ডকারণ্যে বাদ কর; তোমার পিতার এইরপ অভিপ্রায় তুমি এক্ষণে সুসিদ্ধকর, মহারাজ তোমাকে স্বয়ং বলিতে লজ্জিত ছইতেছেন। 🕮 রাম কছিলেন ভরতের রাজ্য হউক আমাি বনগমন করিতে প্রস্তুত আছি, তাহাতে কোন আপত্তি নাই। কিন্তু পিডা যে আমাকে কোন আজা করিতেছেন না, ইহার কারণ কি।৬৩।৬৪।৬৫। ৬৬। জীরামের এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া রাজা দশরথ ছুঃখি-ভাস্তঃকরণে কছিলেন। বৎস রাম! কুপথগামি দ্রৈণ এবং ভ্রাস্তচিত্ত পিতার নিঞাহ করিয়া এই সাম্রাজ্ঞ্য গ্রহণ কর, ভাহাতে ভোগমর পাপস্পর্শ হইবে না, আমাকেও মিধ্যা প্রতিজ্ঞান্তনিত পাপে লিপ্ত হইতে হইবে না। হা রাম! হা প্রাণবল্লভ : হা জগরাথ ! আমাকে পরিত্যাগ করিয়া তুমি কিরূপে ঘোর মরণ্য **গমনে সম**ত হইতেছ, রাজা এইপ্রকার বিলাপ সহকারে শ্রীরামকে আলিগন করিয়া মৃতক্তে রোদন ক্রিডে লাগিলেন, নীভিচ্চ রাম হস্তদার। পিতার সঞ্জলনয়ন ম জ্ঞা শরিষা আস্বাস বাক্যে কহিলেন তাত। রোদন করিতে-চেন কেন ? আমি প্রতিজ্ঞা পালন করিয়া পুনর্বার অংযোধার আগমন कतिन, আপনার আশীর্কাদে রাজ্যাপেক্ষা অরণ্যে অধিক সুগ ও পিতৃ সত্যপালনম্বরূপ মহৎকার্য্য সাধন হইবে। रिकाकत्री अपनीत्र धिम्राज्य कार्यामाधन ४ श्रममञ्जू व्यानी छ

শ্রুটত্বভদ্রাবচনং দৃষ্ট্ব। রামং পুরস্থিতং। প্রাহরাজাদশরথো দুংখিতোত্বংথিতং বচঃ॥ ৬৮॥ স্ত্রীজিতং ভান্তহৃদয়মুন্মার্গপরিবর্ত্তিনং। নিগৃষ্থ মাং গৃহাণেদং রাজ্যং পাপং ন ভদ্ভবেৎ ॥৬৯ এবং চেদনৃতং নৈব মাং স্পৃদেদ্যঘুনন্দন। इंजु:क्का मुश्थमग्र**रक्षा** विललांश मुश्रस्म। । १० ॥ হা রাম ! হা জগন্ধাথ ! হা মম প্রাণবল্লভ !। মাং বিসূজ্য কথং ঘোরং বিপিনং গন্তুমহ সি ॥৭১:। ইতি রামং সমালিষ্য মুক্তকণ্ঠো রুরোদহ। বিমৃজ্যনয়নে রামঃ পিতু: সজলপাণিনা ॥৭২॥ व्याश्वामशामा नृष्य गरिनः मनश्ररकाविषः। কিমত্র ছঃখেন বিভো। রাজ্যং শামতুমেইজঃ॥৭৩। ষ্মহং প্রতিজ্ঞাং নিস্তীর্য্য পুনর্যাস্থামি তে পুরং। রাজ্যাৎ কোটিগুণং সৌখ্যং মম রাজন্বনে সতঃ।। ত্ব সত্যপালনং দেব কার্য্যং চাপি ভবিষ্যতি। কৈকেষ্যাক্ত প্রিয়োরাজন্বনবাসো মহাগুণঃ ॥৭৫॥ इनानीः शतुभिष्क्षाभित्याज्याजूमाजून ऋष्कतः। সম্ভারাশ্বেচাপত্রীয়ন্তামভিবেকার্থমাগতা:।। ৭৬ !।

ক্রেভিয়েকোদ্যোগ স্থগিত হউক, মাতা কেশিল্যাকে আখাস বাল হা গালা ও জানকীকে অন্তনন্ন গালা সাল্লনা করিলা আপনার ফুলব্রবিন্দু বন্দনা পূর্বকি শ্লহাসে। অধ্যই বন গমন করিব। ৬৮।

মাতরং চ সমাশ্বাক্ত অন্ধনীয়চ জানকীং।
আগত্য পাদৌবন্দিত্বা তব যাক্তে স্থং বনং ॥৭৭।।
ইত্যুক্ত্বা তু পরিক্রম্য মাতরং দ্রুক্ট্র্যা যথে।।
কৌশল্যাপি হরেঃ পূজাং কুরুতে রামকারনাং ॥৭৮
হোমং চ কার্য়ামাস ব্রাহ্মণেভ্যো দদৌ ধনং।
ধ্যায়তে বিষ্ণুমেকাগ্রে মনসা মৌনহাস্থিতা। ৭৯॥

অন্তস্থ মেকংঘনচিতপ্রকাশং
নিরস্তদর্ব্বাভিশয়ম্বরপং।
বিষ্ণুং সদানন্দময়ং হৃদজ্জেদা
ভাবয়ন্তীনদদর্শবামং। ৮০॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অযোধ্যাকাণ্ডে তৃতীয়োহধ্যায়।

। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। শ্রীরাম পিতাকে এইরপে কথঞ্জিৎ আখাসিত করিয়া কৌশলাগ দর্শনার্থ গমন করিলেন, কৌশলাগদেবীও শ্রীরামের মঙ্গলার্থে বিফুপ্রুষ্ণ করিতেছেন এবং রাজণদারা ঐ পূজান্সহাম করাইতেছেন রাজণগণকে ধন বস্তাদি প্রদানদারা সম্ভই ও একাগ্রচিতে উপ-বেশন করিয়া ভগবতরনারবিদ্দ গান করিতেছেন, এমন সমধে শ্রীরামচল সেই স্থানে উপস্থিত হইলেন। ৭৮। ৭৯। কেইশল্যা-দেবী জ্ঞানমর সর্বাস্তর্থামী অন্নিতীয় ও সদানন্দস্বরূপ ভগবদ বিষ্ণুকে জদয়পল্লে ধারণ করিয়া বাছ বিষয়ক জ্ঞানে অন্ধ হইয়া সন্মুখস্থিত শ্রীরামচল্রকে জানিতে পারিলেন না। ৮০।

ইতি শ্রীমদধ্যাম্বলামারণে উমামহেশ্বরসম্বাদে অঘোধ্যাকাওে
ভূতীয়াধ্যায়ঃ সমাপ্ত।

চতুর্থো২ধ্যায়ঃ।

এমহাদেব উবাচ।

ততঃ সুমিত্রা দৃষ্টৈ নং রামং রাজ্ঞীং দদস্ক্রমা।
কৌশলাং বোধয়ামাদ রামোহয়ং দম্পস্থিতঃ ॥১॥
শুট্রেব রামনামৈধা বহিদ্ প্তিপ্রবাহিতা।
রামং দৃষ্ট্রা বিশালাক্রমালিক্সাল্পে ন্যবেশয়ৎ ॥২॥
মূর্দ্র্যাবঘ্রায় পশ্পর্শ গাত্রং নীলোৎপলক্ষ্বিং।
ভূজ্জ্বপুত্রেতি চ প্রাহ মিন্টময়ং ক্ষুধার্দ্রিতঃ ॥৩॥
রামঃ প্রাহ ন মে মাততে কিনাব্দরঃ কৃতঃ।
দশুকাগমনে শীঘুং মম কালোহদ্য নিশ্চিতঃ ॥৪॥
কৈকেয়ীবরদানেন দত্যদক্ষঃ পিতা মম।
ভারতায় দদে রাজ্ঞাং মমাপ্যারণামুস্তমং ॥৫॥
চতুর্দ্রশাস্ত্র স্থাবিল্বা মুনিবেশপুক্।
আগেমিধ্যে পুনঃ শীঘুং ন চিন্তাং কর্ত্ব মহ দি ॥৬॥

অনন্তর স্থমিত্রাদেনী জীরামকে দর্শন করিয়া ব্যথ্যতা সহকারে কেশিল্যাদেবীকে প্রবেশধিত করিয়া কহিলেন, দেবি! তোমার প্রাণাধিক রামচন্দ্র আদিয়াছেন কেশিল্যারাম নাম প্রবণমাত্রে নয়নোত্মীলন করিয়া বিশাললোচন জীরামকে আণিজন করিলেন এবং নীলোৎপলদলশ্যাম জীরামের মন্তকান্ত্রাণ ও সর্কাঙ্গ স্পর্শ করিয়া কহিলেন, বৎস রাম! কুধার্ত হইয়াছ এই মিন্টান্ন গ্রহণ করিয়া ভোজন কর॥ ৩॥ জীরাম কহিলেন, মাতঃ আমার ভোজনের অবসর নাই, পিতৃদেব কৈকেয়ীর অভিলবিত বরদানে প্রতিশ্রুত হইয়া ভরতকে রাজ্য প্রদান করিয়াছেন এবং আমাকে চতুক্লা বর্ষ মুনিবেশ ধারণ পূর্বকে দণ্ডকারণ্য গমনে অনুমতি করিয়াছেন, এইক্লণই আমার বনগ্যনার্থ নিশ্চিত হইয়াছে।

তচ্ছুত্বা সহসোদিয়া মৃচ্ছি তা পুনরুপিতা।
আহ রামং স্কুদুংথার্ত্তা দুঃখদাগর সংপ্লুতা॥ १॥
यদি রাম! বনং সত্যং যাসি চেয়য়মামপি।
ছদিহীনা ক্ষণার্দ্ধং বা জীবিতং ধারয়ে কথং॥৮॥
यথা গৌব লিকং বংসং ত্যক্ত্বা তির্চেমকুত্রচিং।
তথৈব ভাং ন শক্রোমি ত্যক্তবং প্রাণাৎ প্রিয়ং মৃতং
ভরতায় প্রদম্নেচং রাজ্যং রাজ্য প্রযক্ত্রতু।
কিমর্বং বনবাদায় ভামাজ্ঞাপয়তি প্রিয়ং ॥১০॥
কৈকেয়া বরদো রাজা সর্বস্বং বা প্রযক্ত্রতু।
ভর্মা কিমপরান্ধং হি কৈকেয়া বা নৃপস্থ বা ॥১১॥

জননি, আপনি চিন্তা করিবেন না, পিতৃআজ্ঞা পালন করিয়া তাতি সত্ত্বর অযোধ্যায় আগমন করিব ॥৬॥ কৌশলার শ্রীরামের নিদারুণ বাক্য শ্রবণমাত্র মূচ্ছিতা হইলেন, কিয়ৎ ক্ষণ পরে সংজ্ঞালাভ করিয়া প্রগাঢ় শোক সন্তপ্ত অন্তঃকরণে কহিলেন, বৎস রাম! যদি পিতার আদেশান্তুসারে বনগমন তোমার নিতান্ত অভিমত হইয়া থাকে তাহা হইলে আমাকে পরিত্যাগ করিয়া একাকী গমন করিও না, কারণ—বৎস বিরহিত শেহর নাায় তোমাকে না দেখিয়া আমি কোন স্থানেও অবস্থিতি করিতে পারিব না, ভাল রাম! রাজা যদি কৈকেয়ীর প্রভি প্রসন্ন হইয়া থাকেন তাহা হইলে ভরতকেই রাজ্য প্রদান কর্মন, কি অপরাধে তোমাকে বনবাস আজ্ঞা প্রদান করিলেন, ভূমিত কথনই মহারাজের ও কৈকেয়ীর নিকট কোন অপরাধ কর নাই, হে প্রাণাধিক! প্রত্রের পক্ষে জন্মদাতা অপেক্ষা গত ধাবিনী অধিকতর গৌরবের পাত্র তাহা তোমার অবিদিত নহে, মহারাজ

পিতা শুরুর্থা রাম তবাহমধিকা ততঃ।
পিত্রাজ্ঞপ্রো বনং গল্পং বারয়েয়মহং স্কুতং ।১২॥
য়িদ গল্পমি মন্ধাকামুল্লজ্ঞ্যা নৃপবাক্যতঃ।
তদা প্রাণান্ পরিত্যক্ষ্য গল্পামি যমসাদনং ॥১৩॥
লক্ষাণোহপি ততঃ শুজা কৌশল্যা বচনং রুষা।
উবাচ রাঘবং বীক্ষ্য দহলিব জগল্পয়ং ॥১৪॥
উন্মন্তং ভ্রান্তমনসং কৈকেয়ীবশ্বর্ভিনং।
বদ্ধা নিহন্মি ভরতং তদ্বন্ধূন্ মাতুলানপি ॥১৫॥
আদ্য পশ্যন্ত মে শৌর্যাং লোকান্ প্রাদহতঃ পুরা।
রাম ত্মজিবেকায় কুরু যতুমরিন্দমঃ ॥ ৬॥
ধনুপ্রাণিরহং তত্ত্ব নিহন্যাং বিশ্বকারিণঃ।
ইতি ক্রবন্তং সৌমিত্রিমালিক্ষ্য রঘুনন্দনঃ ॥১৭॥

তোমাকে বনগমনে অনুমতি করিয়াছেন আমিও তাহার প্রতি-রোধ করিতেছি এক্ষণে বিবেচনা কর পিতৃত্যাজ্ঞা অপেক্ষা মাতৃ-আজ্ঞার গৌরব আছে কি না—শাস্ত্রজ্ঞ হইয়া যদি তৃমি মাতৃ-আজা লজ্ঘন কর ভাহাহইলে আমি প্রাণত্যাগ করিব ।। ৮। ৯। ১०। ১১। ১२। ১०। खनस्त्र लक्ष्मण किना प्रतीत এইরপ কৰুণ গার্ক্তবাক্য ভাবণ করিয়া ক্রোধোদ্দীপুনয়নে যেন ত্রিজগৎ দগ্ধ করিবার নিমিত শ্রীরামের প্রতি দৃষ্টিপাত করি-লেন এবং গম্ভীর স্বরে কহিলেন হে দেব! আপনি অন্ত্রত ক্রন আমি এই দঙ্কেই ভ্রাস্তচিত্ত স্ত্রীজিত ও উন্মত রাজা দশর্থ এবং ভরত ভাহার বন্ধুগণ ও মাতুল্ধণ এই সমস্ত ব্যক্তির প্রাণদংহার করিব। অদ্য চরাচরবাসি জীবগণ আমার ত্রিলোক সংহারক বিক্রম অবলোকন করুন, আমি এই কোদও গ্রহণ করিলাম। আপনার অভিষেক কার্য্যের বিম্নকারী ব্যক্তিগণের মধ্যে কেহই নিছতি পাইবে না, আপনি অভিষেকার্থ यञ्ज क्क्रन। अनक्षत्र त्रपूरीत ताम नचार्यक आनिक्रन कतिया मास्रना वाटका कहिएक नाशिलन । ১৪। ১৫। ১৬ । ১৭। जाठः

শুরোহিস রঘুশাদূল। মমাত্যন্তং হিতেরতঃ।
জানামি সর্কং তে সত্যংকিন্ত তে সময়োন হি ॥১৮
যদিদং দৃশ্যতে সর্কং রাজ্যং দেহাদিকং চ যথ।
যদি সত্যং ভবেত্ত্ত্ত্ত্ আয়াসঃ সফলশ্চ তে ॥১৯॥
ভোগা মেঘবিতানস্থ বিদ্যুল্লেখেব চঞ্চলাঃ।
আয়ুরপ্যায় সন্তপ্তলোহস্থ জলবিন্দুব্ । ২০॥
যথা ব্যালগলস্থোহপি ভেকো দংশানপেক্ষতে।
তথা কালাহিন গ্রস্তো লোকো ভোগানশাশ্ভান্।

করোতি দুংখেন হি কর্মাতন্ত্রং
শরীর ভোগার্থ মহনি শং নরঃ।
দেহস্ত ভিন্নঃ পুরুষাৎ সমীক্ষ্যতে
কো বাত্র ভোগঃ পুরুষেণ ভুক্সতে । ২২॥

বৈধ্যাবলম্বন কর, আমি বিশেষ অবগত আছি যে, তুমি প্রচণ্ড-কোদতে শর সন্ধান করিলে ত্রিজগৎ দক্ষ করিতে পার এবং আমার হিত্যাধনার্থ সকল কার্য্যে প্রস্তৎ আছে। ভ্রাতঃ, ভোমাকে আমি দত্পদেশ প্রদান করি প্রবণ কর, দেখ এই শরীর-সাম্রাঞ্চা প্রভৃতি বাহ্য প্রত্যক্ষ বিষয় পদার্থ সকল যদি সত্য হয়, তাহা হউলে তোমার আ্যাস সফল হইতে পারে, বিবেচনা করিয়া দেখ সকলই অলীক ভোগাদিস্থৰ মেঘমালা স্থিত বিহালেখার ভার চঞ্চল, মহুষোর পরমায়ুও অগি সম্ভপ্ত লৌংস্থিত জলবিধুপ্রায় অচিরস্থায়ী, যে রূপ ভূজগণলন্থিত ভেকও ভুজসদই না হইলে কালকবলে পতিত হয় না, তদ্রপ দেহীমাত্রেই কালরূপ ভূকক্ষগ্রস্ত হইয়াও প্রার্ক্কদশ্বর ভোগাবদান না ২ইলে দেহত্যাগ করে না। অভএব অলীক বিষয়বাদনায় মুগ্ন হটয়া গুরুজনের আজা লজ্মন করা অতি অনুচিত কার্য্য, মনুয্যেরা আত্মশরীরের স্বর্থভোগবাসনায় দিবা-বাত্র অতি কষ্টকর ধনোপার্জনব্যাপার ঘারা আত্মাকে কলুবিড করিতেছে, কি মোহ ! শরীর জড়পঁদার্থ--দে কথন কি স্থাদির ভোকা হইতে পারে? মুথাদির ভোকা পুক্ষ—ঐ পুরুষ হইতে

পিতৃ মাতৃ স্থত ভাতৃ দার বন্ধাদি দঙ্গমঃ। প্রপারামিব জন্তুনাং নদ্যাং কার্চ্চেবিচ্চলঃ।।২৩॥ ছারেব,লক্ষীশ্চপলা প্রতীতা তারুণ্যময়ুর্দ্মবদধ্রবঞ্চ

স্থাপেমং স্ত্রীমুখমায়ুরল্পং
তথাপি জন্তোরভিমান এবং ॥২১॥
সংসৃথিঃ স্থাসদৃশী সদা রোগাদিসঙ্গুলা।
গন্ধাবনগরংপ্রখ্যা মূঢ়স্তামমুবর্ত্ততে॥ ২৫॥
আয়ুব্যং ক্ষীরতে যমাদাদিত্যস্য গভাগতৈঃ।
দৃষ্ট্যানোষাং জরামৃত্যু কথঞ্চিন্নৈব বুদ্ধাতে॥ ২৬॥

্দহের বিভিন্নতা স্পষ্টই প্রতীয়মান হইতেছে, শ্রীবস্থিত পুরুষেরও খণাদি ভোগ নিভাস্ত অসম্ভব, যেহেতু পুক্ষ বিশুদ্ধসভাব— হু চরাং সকলই অলীক বাসনা, বে রূপ পাণীয় নালায় পিপাসা-্যুব জন্তু সকলের এবং মহানদীতে শ্রোভ: সমানীত কার্ছ-সমূহের একত্র সমাগম হয় তক্রপ মনুষাদিগের পিতা মাতা পুত্র ভাতা কলত্র ও বন্ধুগণের সহিত সমাধাম হইয়া থাকে। আশ্চর্যা ! মনুষ্যেরা প্রতিক্ষণেই ছায়ার ন্তায় লক্ষ্মীর অস্থিরত্ব ও জলোন্মির ন্যায় যৌবনের অস্থায়িত্ব আয়ুর অল্লতা ও জীদন্তোগ তথের স্বপ্লোপমত্ব অনুভব করিয়াও অভিমান পরতন্ত্র হটয়। অকিঞ্জিৎকর সুথের জন্য আত্মাকে কতই কণ্টদিতেছে, মৃথেরাই গর্ম্বর্ম নগরবৎ ক্ষণবিধ্বংদী স্বপ্নসদৃশও রোগাদি-সঙ্কুল সংসারে অনুরক্ত হটয়া থাকে ।২৫। স্থাের গমনাগমন সময় সারা াবৎ প্রাণির **আ**য়ুক্তর হইতেছে ইছা অপর ব্যক্তির জ্বরামরণ দর্শনে কি অভুভব হয় না? নিশাবসানে দিবস সমাগম হইলে দিবদ ভোগ্য স্থপান্থভব করিয়া দিবাবদা**নে** র**জনী স্থপমা-**গামে মনুষ্যোরা কতই অনুরক্ত হইতেছে কি আশ্চর্যা! কালের শ্রোভ দেখিয়া ভাহাদের কি কণকালের জন্য প্রমানুক্ষের আশহা হয় না ? এবঞ্চ অপক্ষ কলসস্থিত জলের ন্যায় প্রতি-ক্ষণেই পরমায় ক্ষরণ হইতেছে, রোগ সমূহ প্রবল রিপুর ন্যায় শ্বীরে স্তত প্রহার করিতেছে। জরাও ব্যাঘীর ন্যায় সমুখে প্রার্মানা হইয়া ভর্জন করিতেছে এবং মৃত্যু সময় প্রতীক্ষা

স এব দিবসঃ দৈব রাজিরিত্যের মূল্পি॰
ভোগানমুপতত্যের কালবেগং ন পশ্যতি ॥২৭॥
প্রতিক্ষণং ক্ষরত্যেতদায়ুরাম ঘটামুবং।
সপত্মা ইব রোগৌধাঃ শরীরং প্রহরস্ত্যহো ॥২৮॥
জরা ব্যাঘার পুরতস্তর্জ্যস্তাবতিষ্ঠতে।
মৃত্যুঃ সহৈব যাত্যের সময়ং সম্প্রতীক্ষতে॥২৯॥
দেহে২হং ভাবমাপেয়ো রাজাহং লোকবিশ্রুতঃ।
ইত্যামিম্মত্রতে জন্তঃ ক্রমিবিড় ভ্রম্মংজিতে॥৬০॥
ত্যাস্থি মাংস বিগু ত্রেরেতো রক্তাদি সংযুতঃ।
বিকারী পরিণামী চ দেহ আত্মা কথং বদ ॥৩১॥
যমাস্থায় ভবালোকং দগ্ধু মিচ্ছতি লক্ষণ।
দেহাভিমানিনঃ সর্ব্বে দোষাঃ প্রান্ত্রভা বিশ্ব হি॥৩২।
দেহোহহমিতি যা বৃদ্ধিরবিদ্যাত ভন্যতে॥৩৩

করিতেছে তথাপি মন্থার। ক্লমিবিশিষ্ঠাদিময় দেছে আত্মবৃদ্ধি করিরা আমি জগদিখাতে রাজা ও অভিরূপবান এই সকল
মনে মনে কর্মনা করিয়া থাকেন, কি ভ্রম! ত্বক্ অন্থি মাংস বিষ্ঠা
মূত্র রেত ও রক্ত এই সকল বস্তু পরিপূর্বিত রসাদিধাতু বিকার
যুক্ত ও বিনশ্বর দেহ কি আত্মা হইতে পারে? যেহেতু আত্মা
অবিকারী ও অবিনশ্বর, তুমি যে দেহাভিমান আশ্রম করিয়া সকল
লোকদগ্প করিতেই ইচ্ছা করিতেছ, ঐ দহাভিমান অভি অকিফিৎকর ও সর্বাদেধের আক্র জানিবে 1 ২৬। ২৭। ২৮।
। ২৯। ৩০। ৩১। এ২। হে লক্ষণ! দেহাত্মান আমি দেহাতিরিক্ত চিনার আত্মা, এই প্রকার বৃদ্ধির নাম অবিদ্যা, আমি দেহাতিরিক্ত চিনার আত্মা, এই প্রকার বৃদ্ধির নাম বিদ্যা, পূর্ব্বোক্ত
অবিদ্যা সংসারের কারণ, বিদ্যা কেবল সংসার নিবর্ত্তিকা,
সেই হেতু মুমুক্ষ্ ব্যক্তিদিন্যের বিদ্যাভ্যাদে যত্ম করা উচিত।
সেই বিদ্যাভ্যাদে কাম ক্রোধ প্রভৃতি প্রবল রিপু—ঐ রিপুগণের
মধ্যে ক্রোধ সর্বাপেকার মৃক্তির বিশ্বকারী, ধে ক্রোধপ্রভাবে

অবিদ্যা সংস্তেহে তুর্বিদ্যা তথা নিবর্ত্তিক।
তন্মাদ্যত্বঃ সদা কার্য্যো বিদ্যাভ্যাসে মুমুক্সুভিঃ।
কামক্রোধাদয়ন্তত্ত্ব শত্রবঃ শত্রন্থদনঃ। ৩৪।
তত্তাপি ক্রোধ এবালং মোক্ষবিদ্বায় সর্কাদা।
যেনাতিষ্টঃ পুমান হন্তি পিতৃভাতৃত্বহুৎ স্থীন্।
কোধমূলো মনস্তাপঃ ক্রোধঃ সংসারবন্ধনং।
ধর্মক্ষয়করঃ ক্রোধস্তন্মাৎ ক্রোধং পরিত্যক্ষ॥৩৬॥

অভিভূত হইয়া মহয়েরা পিডা মাডা ভাতা হস্কং ও স্থা এই সকলের বধোপায়ে প্রবৃত্ত হইয়া থাকে। হে লাতঃ! ক্রোধ হইতে মনস্তাপ, সংসার বন্ধন ও ধর্মনাশ হয়। সেই হেতু ক্রোধ পরিত্যাগ কর। ৩৩। ৩৪।৩৫। ৩৬। হে লক্ষণ! ক্রোধ পরম শত্রু তৃষ্ণা বৈতরণী নদীর ন্যায় হস্তরা-সম্ভোষ नक्त वरनत्र नाम्न कल्लान कत्रिया थीरक, धवश मास्ति काम-ধেমুর স্বরূপ দেই হেতু শাস্তি ভজনা কর, তাহা হইলে কেহ শত্রুতাচরণ করিবে না বস্তুগত্যা আত্মা বিশুদ্ধ জ্যোতির্শ্বয় নির্বিকার নিরাকার—দেহ ইত্রিয় মন প্রাণ ও বৃদ্ধি হইতে বিল-कन, मनूरमात्रा यावर कालभवान त्नर टेलिय आन रहेर्ड আত্মাকে বিভিন্ন জ্ঞান না করে, তাবৎকাল পর্যান্ত বারস্থার সংসার-ছঃখাণ্যে ও মৃত্যু মৃথে পতিত হইবে। সেই হেতু তুমি আমাকে সর্বাদ। বুদ্ধাদি হইতে বিভিন্ন জ্ঞান করিবে। কিন্ত लोकिक वावहाद्व माधावन मञ्रूषात नाम व्यक्तित कतिरव কগনও থেদযুক্ত হইবে না, লৌকিক ব্যবহাবে দাধারণ মহুষ্যের नाम् चाहात कतिरन (थन रुअमा मस्रन, किस्र रा वाङि হৃদরে আত্মাকে সর্বদা দেহাদি হইতে বিভিন্ন চিস্তা করে এবং লৌকিক ব্যবহারে সাধারণের অনুস্ত্রাণ করে সেই ব্যক্তি সংসার নিবন্ধন স্থত্ঃথাদি প্রারন ভোগী হইয়াও তাহাতে লিপ্ত হয় না। বিশুদ্ধান্তঃকরণ ব্যক্তি সংসার প্রবাহে পতিত হইয়া लोकिक वावशात्राच्यात्री मकन कार्या कतिला भाषा वा पूर्णा লিপ্ত হয় না। হে লক্ষ্মণ, তুমি বিশেষ যত্নসহকারে মছক্ত এই সমস্ত উপদেশ হৃদয়ে চিন্তা কর তাহা ছইলে কথনই সংসার ছঃখে বাধিত হইবে না। হে মাতঃ, আপনিও মহক বচন পরম্পরা

ক্রোধ এষ মহান শক্ত কা বৈতরণী নদী। मर्छारया नन्मनवनः नाछिरत्व हि कामधूक्॥ ७१॥ তত্মাচ্ছান্তিং ভদ্ধসাদ্য শক্রবেং ভবেন্ন তে। দেহেক্সিয়মনঃ প্রাণবুদ্ধাদিভ্যো বিলক্ষণঃ॥ ৬৮॥ আত্মা শুদ্ধঃ স্বয়ং জেগতিরবিকারী নিরাক্কতিঃ। যাবদেহেন্দ্রিয়প্রাণৈভিন্নত্বং নাল্মনো বিদুঃ॥৩১॥ তাবৎ मः मात्र पूर्वारेशः शीखारकः मृजामः गुजाः। তমাত্ত্বং সর্ব্বদা ভিন্নমাত্মানং হৃদি ভাবয়।। ৪০॥ वृक्तां निष्णा विश्वः मर्ख यसूवर्खेश्व या थिन। ভুঞ্জন প্রারক্ত মথিলং মুখং বা দুঃখমেব বা ॥ ৪১ ॥ প্রবাহপতিতঃ কার্যাং কুর্মান্ন পি ন লিপাতে। বাছে সর্বত কর্তৃত্মাবহন্নপি রাঘব 🛚 ৪২ 🏾 অন্তঃশুদ্ধসভাবস্তং লিপাদে ন চ কর্মভিঃ। এতশ্বয়োদিতং ক্লৎস্নং হৃদি ভাবয় সর্মদা ॥৪৩॥ मःमात्रमुःदेशत्थिदेवकाभारम न कमाहन। ত্বমপ্যম্ব ময়াদিউৎ হৃদি ভাবর নিত্যদা॥ ৪৪॥ ममाग्रमं अञीकाय न कृष्टिंगः शीष्णरमञ्जितः। न मरिनकल मधामः कर्म्ययार्जान्यूवर्खिनाम् ॥ ४० ॥ যথা প্রবাহপতিতপ্লবানাং দরিতাং তথা। চতুর্দ্দশস্মাসংখ্যা ক্ষণকিমিন জায়তে ॥ ১৬॥

হৃদত্বে ধারণ করিয়া আমার পুনরাগমন প্রভীক্ষা করুন, ভাষা হইলে তৃঃথ পাইবেন না। নদীপ্রবাহ পতিত প্রবের ন্যার কর্মমার্গানুসারিদিগের চিরদিন সহাবস্থান কথন সম্ভবেনা, চতু-দিশ বৎসর ক্মণার্দ্ধ কালের ন্যায় অতীত হইবে । ৩৭। ৩৮। ১৯।৪০।৪১।৪২।৪৩।৪৪।৪৫।৪৬। আগনি হৃদ্ধ অনুমন্ত্র মামমৃ! দুঃখং সন্ত্যজ্ঞা দূরতঃ।

এবং চেৎ সুখসস্থাসো ভবিষ্যতি বনে মম॥ ৪৭॥

ইত্যুক্ত্বা দশুবন্ধাতুঃ পাদরোরপতচ্চিরম্।

উপাপ্যাক্ষে সমাবেশ্য আশীর্ভিরভিনন্দয়ৎ ॥৪৮॥

সর্বে দেবাঃ সগন্ধর্বা ত্রন্ধাবিষ্ণুশিবাদয়ঃ।

রক্ষন্ত ত্বাং সদা যান্তং তিষ্ঠন্তং নিজয়া যুতং ॥৪৯॥

ইতি প্রস্থাপয়ামাস সমানিক্ষ্য পুনঃপুনঃ।

লক্ষাণোহপি তদা রামং নত্বা হ্র্যাক্রগদ্পদঃ॥৫০॥

আহ রাম! মমান্তক্ষঃ সংশয়োহয়ং ত্রা হৃতঃ।

যাস্যামি পৃষ্ঠতো রাম! সেবাং কর্তুং তদাদিশ।।৫১

অনুগুরীষ্ মাং রাম! নোচেৎ প্রাণাং স্তাজাম্যহং।

তথেতি রাঘবোহপ্যাহ লক্ষণং যাহি মা চিরং॥৫২
প্রতক্ষে তাং সমাধাতুং গতঃ সীতাপতির্বিভূঃ।

আগতং পতিমালোক্য সীতা স্থান্মতভাষিণী। ৫৩।

হইতে ছংখাপনয়ন করিয়া আমাকে বনগমনে অনুমতি করুন আপনার অনুমতি হইলে আমি বনবাদে অনুমাত কট পাইব না । ৪৭। শ্রীরাম এইরূপ সদর্থপত্ত উপদেশ করিয়া মাতার চবণযুগলে পতিত হইলেন, কৌশল্যাদেবীও শ্রীরামকে ক্রোড়ে করিয়া আশীর্কচন করিলেন। রাম! ব্রহ্মা, বিষ্ণু, মহেশ্বর প্রভৃতি দেবভাগন ও পর্ম্বর্গণ জাগরণ ও নিজাবস্থায় ভোমাকে রক্ষা করুন, অনুত্তর শ্রীরামকে পুনংপুনঃ আলিক্ষন করিয়া বনগমনে অনুমতি করিলেন, লক্ষ্মণও প্রণাম করিয়া হর্ষণদাদবচনে কহিলেন হে দেব! আপনি সহপদেশের দারা চিরসংশ্রাপনোদন করিয়াছেন, এইক্ষণে আপনার সেবার্থ দণ্ডকারণো অনুগমন করিব আমার প্রতি অনুগ্রহ করিয়া এই অভিলাদপূর্ণ করুন, নতুবা প্রোণত্যাগ করিব। শ্রীরাম তথাক্স বলিয়া লক্ষ্মণের আার্থিত বিষয় জনুমোদন পূর্বক কহিলেন হে লক্ষ্মণ, শীজ বনগমনের উদ্যোগ কর বিলম্ব না হয়।৪৮।৪৯।৫০।৫১।৫২। অনস্তর শ্রীরাম জ্ঞানকীকে জারাগিত করিবার জন্য স্বগৃহে প্রস্থান করিলেন; গীতাদেবীও

স্বর্ণপাত্রস্থালিকৈঃ পাদে প্রক্ষাল্য ভক্তিতঃ।
পথচ্ছ পতিমালোক্য দেবঃ কিং দেনয়া বিনা ॥৫৪
আগতোহসি গতঃ কুত্র শ্বেডছত্রঞ্চ তে কুতঃ।
বাদিত্রালি ন বাদ্যন্তে কিরীটাদিবিহজিতঃ॥৫৫॥
সামস্তরাজসহিতঃ সম্ভ্রমায়াগতোহসি কিং,।
ইতি স্ম সীতয়া পৃষ্টো রামঃ সন্মিতমত্রবীৎ॥৫৬॥
রাজ্ঞা মে দশুকারণ্যে রাজ্যং দতং শুভেহখিলং।
অতস্তৎপালনার্থায় শীঘুং যাস্থামি ভামিনি!॥৫৭॥
অদ্যৈব যাস্যামি বনং হন্ত শ্বেজসমীপগা।
স্ব্রেষাং কুরু মে মাতুর্ন মিথ্যাবাদিনো বয়ং॥৫৮॥
ইতি ক্রবন্তং শ্রীরামং সীতা ভীতাহত্রবীদ্বনঃ।
কিমর্থং বনরাজ্যন্তে পিক্রা দন্তং মহান্মনা॥৫০॥

শ্রীরামচন্ত্রকে সমাগত দেখিয়া স্বর্ণপাত্রস্থ সলিল ভারা ভক্তি-পূর্বক পাদ প্রকালন করিয়া দিলেন এবং সহাস্য বদনে জিজাসা করিলেন আর্য্য ! আপনি পরিজন রহিত হইয়া একাকী কোথায় আসিয়াছিলেন; আপনার খেতছত্র ও রাজমুকুটাদি কোথার? অযোধ্যা নগরে নানাবিধ বাদ্যশ্বনি ও অন্যান্য উৎসব কি ২েতু হইতেছে না, আপনি কি ব্রান্থিত হইয়া সামন্ত রাজগণকে পশ্চা-ভাগে রাধিয়া আসিয়াছেন? সীতাদেবী কর্ত্তক এইরূপ জিজ্ঞাসিত হইয়া সহাস্য বদনে জীৱাম কহিলেন।৫০।৫৪/৫৫/৫৬/ হে শুভে ১ মহারাজ আমাকে দণ্ডকারণ্যে রাজ্য প্রদান করিয়াছেন, অভএব দেই রাজ্য পালনার্থ অদ্যই গমন করিব তুমি গুরুজন সরিহিছা হইয়া আমার জননীর ভশ্রষা কর; মাদৃশ ব্যক্তি গুরুজন সন্নিধানে প্রতিশ্রত হইয়া কখনও মিথাবাদি হইতে পারিবেনা।৫৭৫৮। সীতাদেবী জীরামের বাক্য প্রবণ করিয়া কহিলেন দেব। মহারাজ কি কারণে আপনাকে বনরাজ্য প্রদান করিলেন। শ্রীরাম কহিলেন ভাজে ! মহারাজ কৈকেমীকে বরদ্বয় প্রদান করিয়াছেন-এক বর দ্বারা ভরতের রাজ্যাভিষেক অপর বরদ্বারা আমার চতুর্দশব্য

তামাহ রামঃ কৈকেষ্যে রাজা প্রীতো বরং দদৌ।
ভরতার দদৌ রাজ্যং বনবাসং মমান্যে ॥৬০॥
চতুর্দশসমান্তর বাসো মে কিল যাচিতঃ।
তরা দেব্যা দদৌ রাজ্য সত্যবাদী দ্যাপরঃ ॥৬১॥
অতঃ শীঘুং গমিষাামি মা বিশ্বং কুরু ভামিনি!।
ক্রুত্বা তদ্তামবচনং জানকী প্রীতিসংযুতা ॥৬২॥
ভহমপ্রে গমিষ্যামি বনং পশ্চান্ত্বমেষ্যদি।
ইত্যাহ মাং বিনা গন্তং তব রাঘ্ব! নোচিতং ॥৬০।
তামাহ রাঘ্ব: প্রীতঃ স্বপ্রিয়াং প্রিয়বাদিনীং।
কথং বনং ত্বাং নেষ্টেইং বহুব্যানুম্গাকুলং ॥৬৪॥

বন্ধাস হইল ৷ সভাবাদী মহারাজ স্নতরাং পূর্ব প্রতিজ্ঞার আগবন্ধ হইয়াছেন, অতএব আমি শীঘ বনগমন করিব, তুমি বিয়াচরণ করিও না। সীতা রাম বাক্য প্রবণানস্তর প্রীতিসহকারে কহিলেন দেব! আমি অত্যেই বনগমন করিব। অনন্তর ভূমি বনগমন করিবে, আমাকে পরিভ্যাগ করিয়া ভোমার গমন করা উচিত হর না। ৫৯। ৬০।৬১।৬২। ৬৩। জীরামচন্দ্র প্রিয়বাদিনী প্রিয়ার প্রণয় গার্ত্তবচনে পরম প্রীত হইয়া কহি-লেন, প্রিয়ে! যে বদে বহুতর ব্যাত্ত মৃগ ও মানুষভোজী ভীষণমূৰ্ত্তি রাক্ষসগণ সিংহগণ ও বন্যবরাহ সকল সমস্তাৎ সঞ্চরণ করিওেছে সেই বনে তোমাকে কিরপে সহচারিণী করিব,সে স্থানে কটু,তিক্ত ও অন্ন ফল মাত্র ভক্ষণদ্বারা জীবন যাত্রা নির্ব্বাহ করিতে হইবে। পিষ্টক ও ব্যঞ্জনাদি সে স্থানে অতি অপ্রাপ্য, অভএৰ অতি যৎকিঞ্চিৎ কটু ভিক্ত প্রভৃতি ফলদারা কিপ্রকারে ভোমার তৃপ্তিলাভ ইইবে, কোন কোন দিন বা কটু ভিক্তফলও নয়নপোচর হইবে মা, উপবাদ দারা দিনাতিপাত কৰিতে হইবে—কোন কোন স্থানে শৰ্করাও কণ্টক এই সকল বস্তুদ্বার। তুর্গম মার্গ সকল স্মচাক লক্ষিত হইবে না। ঝিলী ও দংশাদি পরিরত চুর্গম গিরিগহ্বর আমাদিগের বাস ভবন হইবে, এবংবিধ নানাপ্রকার দোষে অভিদূষিত দণ্ডকা-

রাক্ষনা ঘোরকপাশ্চ দশ্ভি মানুষভোজিনঃ।

নিংহ ব্যাঘ্ বরাহাশ্চ দঞ্চরন্তি সমস্ততঃ ॥৬৫॥

কট মুফল মূলানি ভোজনার্থং স্থমধ্যমে।

অপুপানি ব্যঞ্জনানি বিদ্যুত্তে ন কদাচন ॥৬৬॥

কালে কালে কলং বাপি বিদ্যুতে কুত্র স্থন্দরি!

মার্গো ন দৃশ্যতে কাপি শর্করাকণ্টকান্থিভঃ ॥৬৭॥

গুহাগস্থ্রসম্বাধং বিল্লীদংশাদিভিযুতং।

এবং বছবিধং দোষং বনং দগুকসংজ্ঞিতং ॥৬৮॥

পাদচারেণ গস্তব্যং শীতবাভাতপাদিমং।

রাক্ষনাদীমনে দৃষ্ট্যী জীবিতং হান্যুসে চিরাং॥

তত্মান্ডজে। গুহে তির্গ শীঘুং দ্রক্ষদি মাং পুনঃ।

রামন্য বচনং শ্রুজা দীতা দুংখনমন্থিতা॥ ৭০॥

রণ্য পাদচারণ দ্বারা গমন করিতে হইবে,শীভ বাত ও আতপ জ্ঞন্য অসহনীয় কক্ট সহু করিতে হইবে। পতিপরায়ণার স্বামি সন্নিধানে সকল কটে নাল করে; কিন্তু সেই যোরতর ভয়ক্ষর বনে তুমি জ্রী জ্বাতি স্থলত ভীক স্বভাৰ-বশত ভীমণমূর্ত্তি রাক্ষসাদি দর্শন করিয়া নিশ্চয় প্রাণ পরিযোগ করিবে। ৬৪ । ৬৫ । ৬৬ । ৬৭ । ৬৮ । ৬৯ । ভারে! এই সকল কারণে ভোমাকে বনগমনে নিবারণ করি, গুহে অবস্থিতি করিয়া' গুরুজনের শুক্রাবা কর শীস্ত্র আমাকে পুনর্দশন করিবে। জ্ঞীরামচলের এইপ্রকার উদাসীন বাকঃ এবণানন্তর সীভাদেবী অতিহঃখিতা হইয়া কুলবালা স্থলভ নৈসর্গ্নিক মার্দ্দিব পরিযোগপূর্ব্যক কিঞ্চিৎ কোপসহকারে কছিতে লাগিলেন ছে ধান্মিক প্রবর ! আপনি পতিপরায়ণা নিজ ধর্মপত্নীকে পরিভাগণ করিতে ইচ্ছা করিতেছেন। হে দ্য়াময় ! আপনি সমুধ্বতি ধাকিলে কেছ কি আমাকে পর:-ভব করিতে পারে? আপনার ভুক্তাবশিষ্ট ঘৎকিঞ্চিৎ ফল-মূলাদি আমি অমৃত ভুলা জান করিয়া ভক্ষণ করিব, তাহা-

প্রভাবাচ ক্ষুরদ্বক্তা কিঞ্চিৎ কোপসমস্থিতা। কথং মামিচ্ছদে ত্যক্তুং ধর্মপত্নীং পতিব্রভাং ॥৭১। जननगामरनायाः भार धर्मारकाश्मि नशालवः। ত্ত্বমীপে স্থিতাং রাম। কো বামাং ধর্ষয়েদ্বনে ২৭ ফলমূলাদিকং বদ্যন্তব ভুক্তাবশেষিতং। তদেবামৃতভুল্যং মে তেন তুফী রমান্যহং ॥৭৩॥ ত্বয়া সহ চরস্ত্যা মে কুশাঃ কাশাশ্চ কণ্টকাঃ। পুপান্তরণতুল্যা মে ভবিষ্যন্তি ন সংশয়ঃ॥ ৭৪॥ অহং ত্বাং ক্লেশয়ে নৈব ভবেয়ং কার্য্যসাধিনী। বাল্যে মাং বীক্ষ্য কশ্চিদ্ধৈ জ্যোতিঃশাস্ত্র বিশারদঃ॥ প্রাহ তে বিপিনে বাসঃ পত্যাসহ ভবিষ্যতি। সত্যবাদী দিকো ভূয়াকামিষ্যামি স্থা সহ ॥৭৬॥ অন্যৎ কিঞ্চিৎ প্রবন্ধামি শ্রুতা মাং নয় কাননং। রামায়ণানি বছশঃ শ্রুতানি বছভিদ্বি হৈছঃ॥ ৭৭॥ সীতাং বিনা বনং রামো গতঃ কিং কুত্রচিদ্বদ ?। অতস্তমা গমিষ্যামি সর্বাথা ত্র সহায়িনী ॥৭৮।।

তেই আমার পরম পরিতৃপ্তি হইবে, আপনি সমুখীন থাকিলে অতিকফকর পদার্থত আমার পরম সুখনাধন হইবে, কুশ-কাশ ও কটক প্রভৃতি কঠিন পদার্থকে কুসুমশ্যাসম জ্ঞান করিব। আমার জন্য আপনার কোন কফ হইবে না। কেবল আপনার দেবাতে নিযুক্তা হইয়া দিন যামিনী যাপন করিব। হে প্রভো! আপনার সহিত আমি বনবাসিনী হইব, ইহা পূর্বেই বিদিত আছি।—একজন জ্ঞোতিষ শাস্ত্র বিশারদ ব্রাক্ষণ বাল্যকালে পিতৃভবনে আমাকে দর্শন করিয়া সহসা কহিলেন এই কন্যাটীর স্থামিসহ বনে বাস করিতে হইবে, ইহা সামজিক লক্ষণদারা বোধ হইতেছে, অত্তর্পর হে দ্বিজ ভক্ত! সেই ব্রাক্ষণকে সত্যবাদী কর্মন অন্য

যদিগচ্ছ বি মাং ত্যক্ত্বা প্রাণাং স্ত্যক্ষ্যামি তেইপ্রত:।
ইতি তং নিশ্চয়ং জ্ঞাড়া সীতায়া রঘুনন্দন: ॥৭০॥
অত্তবীদেবি! গচ্ছ ডং বনং শীঘং ময়া সহ।
অরুদ্ধত্যৈ প্রবছাশু হারামাভরণানি চ ॥৮০॥
বান্ধণেভ্যো ধনং সর্মে দড়া পচ্ছামহে বনং।
ইত্যক্ত্বা লক্ষণেনাশু দিজানাছয় ভক্তিতঃ ॥৮১॥

দদে গবাং রক্ষশতং ধনানি
বস্ত্রাণি দিব্যানি বিভূষণানি।
কুটুস্ববস্তঃ শুভলশীলবন্ত্যো
মুদা দিব্যোর রঘুবংশকেতুঃ ।।৮২।।
অরুক্ষত্যৈ দদে সীতা মুখ্যান্যাভরণানি চ।
রামো মাতুঃ দেবকেভ্যো দদে ধনমনেকধা ।৮৩॥

শ্বকান্তঃ পুরবাসিভ্যঃ সেবকেন্ডান্তথৈবচ।
পোরজানপদেভ্যক ব্রাহ্মণেভ্যঃ সহস্রশঃ ॥৮৪॥
লক্ষণোহপি সুমিত্রাং তু কৌশল্যায়ে সমর্পয়ৎ।
ধন্মঃ পাণিঃ সমাগত্য রামস্যাত্যে ব্যবস্থিতঃ ॥৮৫॥
রামঃ দীতা লক্ষণক জগ্মঃ সর্বেন নৃপালয়ং॥৮৬ঃ

ল্যার ও নিজের দাস দাসীগণ পুরবাসী ও জ্ঞানপদ রন্দকে প্রাচুর পরিমাণে ধন বিতরণ করিলেন, লক্ষ্মণ স্থমিত্রাদেবীকে কৌশল্যাছন্তে সমর্পণ করিয়া প্রচণ্ড কোদণ্ড গ্রাছণপূর্বক জ্ঞীরামের সন্মুখে দণ্ডায়মান হইলেন. জ্ঞীরাম সীতা ও লক্ষ্মণ সকলে সমবেত ছইয়া রাজভবনাভিমুখে গমন করিলেন। জ্ঞীরাম চন্দ্র সহস্র কন্দর্প সদৃশ স্থনর ও ত্র্বাদলশ্যামবর্ণ নিজ শরীরের কমনীয় কান্তিদ্বার। দশদিক উজ্জ্ল করত সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত রাজ্ঞপথে পদার্পণ করিয়া অভূতপূর্ব্ব

জ্ঞীরামঃ সহসীতয় নৃপপথে গচ্ছন্ শনৈঃ সালুজঃ
পোরান্জানপদান্ কুতুইলদৃশঃ সানক্ষ্মীক্ষরন্।
শ্তামঃ কামসহস্রস্কর বপুঃ কান্তা দিশো ভাসয়ন্
পাদন্যাস পবিত্তিতাখিলজগৎ প্রাপালয়ন্তৎপিতুঃ॥

ইতি শ্রীমদধ্যাতারামায়েণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অযোধ্যাকাণ্ডে চতুর্পোহ্ধ্যায়ঃ।

রমণীর রূপ সন্দর্শনার্থ সমাগত পেরি ও জনপদর্দের উপরি আনন্দপূর্ণ দৃষ্টিপাভ করিতে করিতে মহারাজভবনাভিমুখে গমন করিলেন ৮১। ৮২। ৮৫। ৮৪। ৮৫। ৮৬। ৮৭।

> ইতি শ্রীমদধ্যাস্থরামায়ণে উমামেহখরসম্বাদে অযোধ্যাকাণ্ডে চতুর্থ অধ্যায়।

পঞ্চ মাইধ্যায়ঃ।

🕮 মহাদেব উবাচ।

আরান্তং নাগরা দৃষ্ট্রা মার্গে রামং সজানকিং।
লক্ষণেত্ব সমং বীক্ষ্য উচুঃ সর্ব্বে পরস্পারং ॥১॥
কৈকেয়া বরদানাদি শ্রুড়া দুঃখসমার্ক্তাঃ।
বত রাজা দশরথঃ সত্যসন্ধং প্রিয়ং স্কুড়ং ॥২॥
ব্রী হেডোরতাজ্বংকামী তস্য সত্যবভা কুড়ঃ।
কৈকেরী বা কথং দৃষ্ট্রা রামং সত্যং প্রিয়ন্তরং ॥৩॥
বিবাসরামাস কথং ক্রুরকর্মাতিমূল্ধীঃ।
হে জনা নাত্র বস্তব্যং গচ্ছামোহদ্যৈব কাননং ॥৪॥
বত্র রামঃ সভার্যান্চ সালুজো গল্ভমিক্ত্তি।
পশান্ত জ্বানকীং সর্ব্বে পাদচারেণ গচ্ছতীং ॥৫॥

নগরবাদিগাণ দীতা ও লক্ষণ সমভিব্যাহারে রাজপথে
সমাগত জীরামচন্দ্রকে দর্শন করিয়া পারস্পর মুখ নিরীক্ষণ
পূর্বক কথোপকথন করিতে লাগিলেন। রাজা দশরথ
সভাপ্রতিজ্ঞ ও সর্বজনাভিরাম জীরামকে কৈকেয়ীর অভিলামমাত্র পূরণার্থ পরিত্যাগ করিলেন, তিনি জনসমাজে নিজ
সভাচ্যুতি ভীকতা অনর্থের কারণ বলিয়াই প্রকাশ করিয়াছেন; জীজিত পুক্ষের সভ্যবাদীতা কোথার? যে যাহা
হউক স্ত্রীজ্ঞাতি স্থলভ নৈস্থাকি কোমল স্বভাবসম্পারা ও
বিশুবংশসভুতা কৈকেয়ী প্রিয়কারী ও সভ্যপ্রতিজ্ঞ নবদ্র্বাদলস্থাম জীরামকে অবলোকন করিয়া কিরূপে মূচা
প্রপাদলপ্রাম নারীর ন্যায় ইহাঁকে বিবাসিত করিলেন। হে
জাত! এবিষয়ে আ্যান্দের নিন্তা কিছুই নাই, এক্ষণে
বে জারণা মধ্যে সীতা ও লক্ষ্যণ সমভিব্যাহারে জীরাম বাস

পুংভিঃ কদাচিদ্ ষ্টা বা জানকা লোকসুন্দরী।
সাপি পাদেন গচ্ছন্তী জনসংঘেদ্ধনারতা ॥৬॥
রামোহপি পাদচারেণ গজাখাদি বিবর্জিতঃ।
গচ্ছতি দক্ষ্যথ বিভূং সর্বলোকৈকস্বন্দরং ॥৭॥
রাক্ষনী কৈকেয়ী নামী জাতা সর্ববিনাশিনী।
রামস্যাপি ভবেদ্ধুংখং সীতারাঃ পাদ্যানতঃ ॥৮॥
বলবান্ বিধিরেবাত্র পুং প্রযুদ্ধে দুর্দ্ধলঃ।
ইতি ছঃখাকুলে রুদ্দে সাধুনাং মুনিপুঙ্গবঃ॥৯॥
অত্রবীদ্বামদেবোহ্থ সাধূনাং সঙ্গমধ্যাঃ।
মানুশোচ্ধ রামং বা সীভাং বা বচ্মি তত্ত্তঃ॥১০॥

করিতে ইচ্ছা করেন, আমরা সকলে সমবেত হইয়া সেই স্থানে বাস করিব। দেখ দেখ কি হুংখের বিষয়—অন্তর্গ্যাপ্তাপ্তরপা কোমলান্দী জনক নন্দিনী রাজ পথে পদসঞ্চরণ করি-তেছেন। ১। ২। ৩। ৪। ৫। যাঁহাকে জীরাম বাতিরিক্ত জন্য পুরুষেরা কখনই দেখেন নাই, সেই তিলোকস্থদরী সীতা জনসমূহ সঙ্কুল নগরমার্গে অনারতা হইয়া গমন করি-তেছেন সর্ফালে কৈক স্থানর জীরামও গজাখাদি বহিত হইয়া রাজ পথে পদস্করণ করিতেছেন। হা! কৈকেরী রাজসী এই সকল সর্ক্রনাশের আদিকারণ, জীরামচক্ত ও জানকীকে পৃথিবীতে পদন্ধরণ কবিতে হইল। বিধাতার ইচ্ছাই বলবতী—পুরুষের যত্ন কোন কার্যাক্র হয় না রাজপথমধ্যে সাধুসমূহের এইরপা কথোপকথন হইতেছে এমন সময়ে মহাত্রপা বামদেব মুদ্দি তাঁহাদিলোর মধ্যবতী হইয়া কহিতে লাগিলেন। হে সাধুর্মণ। ভোগরা জীরামের ও সীতার এতালাগিলেন। হে সাধুর্মণ। ভোগরা জীরামের ও সীতার এতালাগিলেন। হে সাধুর্মণ। ভোগরা জীরামের ও সীতার এতাল

এষ রামঃ পরো বিষ্ণুরাদিনারায়ণঃ স্মৃতঃ। এষা সা জানকী লক্ষীর্যোগমায়েতি বিশ্রুতা !:১১ অসে শেষস্তমম্বেতি লক্ষ্ণাখ্যক সাম্প্রতং। এষ মায়াগুণৈযু ক্তস্ততদাকারবানিব ॥ ১২॥ এষ এব রজোযুক্তো ত্রকাইভূতিশভাবনঃ। সন্থাবিষ্টন্তথা বিষ্ণুব্ৰিজগৎ প্ৰতিপালকঃ । ১৩।। ত্রষ রুদ্রস্তামদোহতে জগৎপ্রলয়কারণং। এষ মৎদ্যঃ পুরা ভূত্বা ভক্তং বৈবস্বতং মন্থং॥১৪॥ নাব্যারোপ্য লয়স্যান্তং পালয়ামাস রাঘবং। সমুদ্রযথনে পুর্বাং মন্দরে স্থৃতলঙ্গতে।। ১৫।।

দৃশ অবস্থা দেখিয়া শোক করিও না, ইহাঁরা সাধারণ বাক্তি নহেন আমি যথার্থ বলিতেছি জীরামচন্দ্র সেই সনাতনবিষ্ণু --জনক নন্দিনী সাক্ষাৎ লক্ষ্মী, ইনিই যোগমায়া বলিয়া জগতে বিখ্যাত আছেন ৷ এই লক্ষ্মণ সাক্ষাৎ অনন্ত দেব জ্ঞীরামের অনুগমন করিভেছেন; জীরাম পরমাত্মা যৎকালে মায়াগুণ-যুক্ত হন, তথমই সাকার হইয়া থাকেন। ইনিই রজোগুণ সম্পর্কে ব্রহ্মা হইয়া জ্বাৎ স্থায়ী করিয়াছেন, সত্ত্বওণ যোগে বিষ্ণুরূপী হইয়া ত্রিজ্ঞাৎ পালন করিতেছেন, এবং তমো-গুল যোগে ক্রারপী ছইয়া সংহার করিবেন, ইনিই মহাপ্রলয় সময়ে মৎস্যরূপী হইয়া পরমভক্ত বৈবস্বত মনুকে নেকিার আংরোছন করাইয়া রক্ষা করিয়াছিলেন, ইনিই সমুদ্রমন্থ্রন সমায় কুম্মরূপী হইয়া রসাভল-প্রবিষ্ট মন্দর পর্বভকে পৃষ্ঠ-टिन भारत कतिशाहित्यम अवश देशिहे श्रमा मारत मृंकरे-রূপী হইয়া দন্তাগ্রদারা রসাতল-প্রবিষ্টা পৃথিবীকে উত্তো-প্রহলাদকে বরপ্রদান ও মহাবল প্রদীপ্ত ত্রিলোক কণ্টক হিবণ্য किनिश्चत्र वकः छल नथवात्र। विनीर्न कित्रताहित्नन । यरकात्न অধারয়ৎ স্বপৃষ্ঠেং ডিং কুর্মারণী রঘ্তুমঃ। मरी दमांजनः यांजा धानस्य म्करतार्ज्व ।।५७॥ তোলয়ামাস দংফাতো তাং কোণীং রঘুনন্দনঃ। নারসিংহং বপুঃ রুত্বা প্রহ্লাদ বরদঃ পুরা ॥ ১৭ ।। ত্রিলোক কণ্টকং রক্ষঃ পাটয়ামাদ তন্মথৈঃ। পুজরাজ্যং হৃতং দৃষ্ট্য হ্যদিত্যা যাচিতঃপুরা ॥১৮ বামনত্রমুপাগম্য যাচ্ঞয়া চাহরৎপুনঃ।* দুইক্ষজিয় ভূভার নির্জ্যৈ ভার্গবোহভবৎ ॥১৯॥ म এব জগতাৎ নাথ ইদানীং রামতাং গতঃ। वावनामीनि वक्कार्शि काहित्मा निर्मियां ।।२०॥ मानुद्रवर्षनेव मजनः उस्य पृक्षेः पूताञ्चनः। রাজ্ঞা দশরথেনাপি তপসারাধিতো হরিঃ।। ২১॥ পুত্রত্বাকাঞ্জয় বিষ্ণোস্তদা পুত্রোহতবদ্ধরি:। স এব বিষ্ণুঃ জ্রীরামে। রাবণাদি বধায় হি ॥ ২২ ॥

অদিতি বলি কর্তৃক অপহৃত নিজপুত্র রাজ্য ইহাঁর নিকট প্রার্থনা করিয়াছিলেন তৎকালে ইনিই বামনরূপী হইয়া যাচ্ঞাছলে ঐ রাজ্য পুনর্বার গ্রহণ করিয়াছিলেন। ইনিই তুষ্টক জিয়গণ ক্লত ভূভার হরণের নিমিত পরশুনাম হইনাছেম দেই জগরাথ জ্ঞামরপী হইয়াছেন, রাবণাদি কোটা কোটা রাক্ষমগণের উন্মূলন করা জীরানের প্রধান উদ্দেশ্য জানিবে। ভুরাজা রাবণ মনুষ্য হইতে নরণ কামনা করিয়া দেবগণের নিকট বরপ্রাছণ করিয়াছে। রাজা দশর**গ** বিষ্ণুতে প্রত্ত্ত্ব কামনা করিয়া বহু তপ্স্যা দ্বারা বিষ্ণুকে সম্ভুট্ট করিয়াছিলেন। ভক্ত-লন করিয়াছিলেন, ইনিই নরসিংছ শরীর ধারণ করিয়া বৎসল হরিও তাঁহার আরাধনায় সম্ভট ইইয়া পুত্রত্ব শীকাল করিয়াছি,লন, জীরান সেই বিফু বাবণ বংশাদেশে লক্ষ্মণ সহায় হইয়া অদ্য বনগমন করিতেছেন। এই সীভা অফিছিভ গন্তাহদৈয়ব বনং রামো লক্ষণেন সহায়বান্।
এবা সীতা হরেমায়া সৃথিস্থিত্য ন্তকারিণী ॥২৩
রাজা বা কৈকেয়া বাপি নাত্র কারণমন্থপি।
পূর্কেলুর্নারদঃ প্রাহ্ ভূভারহরণায় চ॥ ২৪॥
রামোহপ্যাহ স্বয়ং সাক্ষাৎ শ্বো গনিষ্যামহেং বনং
অতো রামং সমুদ্দিশা চিন্তাং ত্যজত বালিশাঃ॥
রামরামেতি যে নিতাং জপত্তি মনুজা ভূবি।
তেষাং মৃত্যুত্যাদীনি ন তবন্তি কদাহন॥ ২৬॥
কা পুনন্তসা রামস্য দৃঃখশন্তা মহাত্মনঃ।
রামনাস্তৈব মুক্তিঃ সাহি কলো নান্যেন কেনচিৎ॥
মায়া মানুষ্কপেণ বিভ্নম্নতি লোকরহ।
ভক্তানাং ভক্তনার্থায় রাবণ্যা বধায়ত॥ ২৮॥

প্রলয়কারিণী বিষ্ণুমায়া স্মূতরাং বিষ্ণুর অনুগমন করিবেন ৮০ ।১১।২২। ২৩। রাজা বা কৈকেয়ী এ বিষয়ে অসুমাত্র ट्यांची नटह ; शंख निवास महर्षि नांत्रम **आंगमन** कतिहा जुलात হরণ প্রতিজ্ঞা শ্রীরামকে স্মরণ করিয়া দিয়াছিলেন, তাঁহার সমক্ষে শ্রীরামণ্ড স্বীকার করিয়াছেন যে, আমি আগামি দিবদে ভূভারহরণের নিমিত্ত বনগমন করিব, অভএব ভোমরা মুদ্রে ন্যার গ্রীরামের জন্য শোক করিও না। ২৪। ং৫। মনুষোরা যে রামের নাম জ্ঞাপ করিয়া মৃত্যু ভয় হুইতেও পরিত্রাণ পায় সেই রামচন্দ্রের ত্রুংখবিষয়ে আশক্ষা কি অধিক ? কি বলিব কলিতে জ্রীরামের নাম ব্যতীরেকে ষ্মনা নামোকারণে মুক্তি হইবে না। সেই জ্রীরাম লোকদিগকে শিক্ষা দিবার জনা মারাদ্বারা মনুষারূপ গ্রহণ করিরা লোক ব্যবহার রক্ষা করিতেছেম এবং বিভিন্ন কচিবিশিষ্ট সোক-দিগের উপাদনার নিমিত্ত উপাদ্য মূর্ত্তি গ্রাহণ করিয়াছেন: ইহাদারা রাজা দশরখের ইফসৈদ্ধি ও দেবগণের ভিত্তবিদ্বেষী बोबर्बद निधनं जम्मापिक इहेरव ।२७।२१।२৮। महामूनि

রাজ্ঞশ্চভীউনিদ্ধার্থং মানুষং বপুরাশ্রিতঃ।

ইত্যুক্ত্বা বিররামাথ বামদেবো মহামুনিঃ ॥২০॥

শ্রুরা তেইপি দ্বিজ্ঞাঃ সর্বেকিরামং জ্ঞাড়া হরিং বিজুং

জহুক্ ধ সংশয়গ্রন্থিং রামমেবাস্থাচিস্তরন্॥৩০॥

য ইদং চিন্তরেন্নিতাং রহসাং রামনীতরোঃ।

তদ্য রামে দৃঢ়া ভক্তিভ বৈদ্বিজ্ঞানপূর্বিকা॥৩১॥

রহসাং গোপনীয়ং বো যুগং বৈ রাঘবপ্রিয়াঃ।

ইত্যুক্ত্বা প্রথমে বিপ্রস্তেইপি রামং পরং বিদুং॥

ঘতো রামঃ সমাবিশ্য পিতৃগেছমবারিতঃ।

সাত্রজঃ সীতয়া গড়া কৈকেয়ীমিদমব্রবীৎ॥৩৩॥

বাসদেব এই সমস্ত গুলারতান্ত কহিলা বিরত হইলেন, সমবেত বাস্থাপাণ তদাকাগরুগারে শ্রীরানকে সনাতন বিষণু জানিয়া কদয়ন্তির সংশার প্রেন্থি অপনোদন করিলেন এবং একাগ্রচিত্তে শ্রীরামকে চিন্তা করিতে লাগিলেন। ২৯। ৩০। যে সকল বাক্তি বাম ও সীতাদেবীর এই সমস্ত গুলা রক্তান্ত সর্বদর্শ চিন্তা করে তাহানিগের বিজ্ঞান ও শ্রীরামচন্ত্রে দৃঢ়াভক্তি

অবারিত্থার প্রীরামচন্দ্র সীতা ও লক্ষাণের সহিত্ত পিতৃ গৃহে প্রবেশ করিলা সমুখবর্তিনী কৈকেরীকে কহি-লেন মাতঃ! আমরা আপনার অভিমত্ত বনগমনে কৃতসংকল্প হইয়া আসিয়াছি, কিন্তু পিতার অমুমতি অপেক্ষা করি-তেছি। কৈকেরী প্রীরাম্কর্জক এইরগ অভিতিত হইয়া মহসা গাজোত্থানপূর্ক্ষক রাম সীতা ও লক্ষাণকে পৃথক্ পৃথক্ কন্ত্র থণ্ডত্রর প্রদান করিলেন। বাম ও লক্ষাণ উভয়ে পরিধের বন্ত্র ত্যাগ করিয়া চীরথগুপরিধান করিলেন, রাজকুমারী জানকী হন্তে চীরথও ধারণপূর্ক্তিক লজ্জাবনতমুখী হইয়া জ্ঞানকী হন্তে চীরথও ধারণপূর্ক্তিক লজ্জাবনতমুখী হইয়া জ্ঞানকী হন্ত হইতে চীরথও গ্রেণ করিয়া তদীর পরিধের বসনোপরি কেন্টন করিয়া দিলেন। ৩১ । ৩২ । ৩৪ । ৩৪

আগগতাক্ষো বয়ং মাতস্ত্রয়ন্তে সন্মতং বনং ৷ গন্ধং ক্কৃতিধিয়ঃ শীঘুমাজ্ঞাপয়তু নঃ পিতা॥ ৩৪॥ इंजुड़िन महरमाथांत्र हीतानि अन्तर्भ स्रार । রামায় লক্ষণায়াথ দীতায়ৈ চ পৃথক্ পৃথক্।।৩৫॥ রামস্ত বস্ত্রাণ্ডেসুজ্য বনাচীরাণি পর্য্যধাৎ। লক্ষণোহপি তথা চক্রে দীতাতম বিজ্ঞানতী ॥৩৬॥ হত্তে গৃহীত্বা রামস্য লক্ষ্মা মুখনৈকতং। রামো গৃহীত্বা ভচ্চীরমংশুকে পর্য্যবেষ্ট্যুৎ ॥৩৭॥ एक् खेन कक्रमूः मर्स्य ताक्रमाताः मयस्रुठः। বশিষ্ঠন্ত ভদাকণ্য রুদিতং ভৎস রন্ রুষা ॥৩৮॥

। ৩৫ । ৩৬ । ৩৭ । রাজমহিবীগণ এই সকল ব্যাপার অব-লোকন করিয়া উচ্চৈঃশ্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। মহর্ষি-ৰশিষ্ঠ রাজমভিষীগণের সকৰুণ রোদন প্রবণে বাথিত হইয়া क्काथमहकादा रेकरकत्रीरक कहिल्लम। एह प्रमातिरख! पुनि बाक्यांव निकृत किवल जीवारमद वनगमन श्रार्थना कविशाह. রাজা ভাষাই স্বীকার করিয়াছেন, সুতরাং গ্রীরামকে চীরথণ্ড প্রদান করিতে কোমার অধিকার আছে, পতিব্রতা জানকী মদি স্বেচ্ছাবশতঃ জীরামের অনুগামিনী হন, তাহাতে কাহা রও কিঞ্চিমাত্র বক্তব্য নাই; এক্ষণে আমি অনুমতি করিতেছি (य मीलाटमवी **मर्का**खद्रग ज़्विका अ निवायद्रशादिनी इंडेग স্থামীর সহচারিণী হউন, ভাষাতে জীরামের বনবাস ত্রুপ নিবারণ হইবেক।

অনন্তর রাজা দশরথ সুমন্ত্রকে কহিলেন সুমন্ত্র রথ আনয়ন কর, এরামচন্দ্র প্রভৃতি ঐ রথে আরোহণ করিয়া বন গমন কৰুন, ব্ৰাজা এই সকল বলিতে বলিতে রাম সীভাও শক্ষাণের প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া ভূমিতলে পতিত হইলেন এবং অতি হুঃপার্ড হইয়া উচ্চিঃস্ববে রোদন কবিতে আরম্ভ क्रिट्रलन। व्यनस्त्र अमञ्जानी व वत्र मीजामिती अथमजः

কৈকেয়ীং প্রান্থ কে! রাম এব ত্বরা ব্লুভঃ। বনবাসায় দুফোঁ! ত্বং সীতায়ৈ কিং প্রায়ফ সি? ॥৬৯॥ যদি রামং সমম্বেতি সীতা ভক্ত্যা পতিব্রতা। দিব্যামরধরা নিত্যং সর্ব্বাভরণভূষিতা।। ৪০।। त्रमशङ्गिमः त्रामः वनकुःथनिवातिंगी। রাজা দশরবোহপ্যাহ স্থমন্ত্র রথমানর ॥ ৪১॥ রথমারুহ্য গচ্ছন্ত বনং বনচুর প্রিয়াঃ। ইভূক্তা রামমালোক্য সীতাং চৈব সলক্ষণং ॥১২॥ ছঃখারিপতিতে। ত মৌ রুরোদাশ্রপরিপ্লুতঃ। আরুরোহ রথং দীতা শীঘ্রং রামস্ত পশাতঃ ॥৪৩॥ রামঃ প্রদক্ষিণং কুত্বা পিতরং রথমারুহ্ৎ। लक्तनः थस्त्रयूननः धन्त्रस्त्रुनीयूनः उथा ॥ ८८ ॥ গৃহীতা রথমারুহ্য নোদয়ামাদ সার্থিং। তিষ্ঠ তিষ্ঠ সুমন্ত্রেতি রাজা দশরখোহত্রবীৎ ॥৪৫॥ গচ্ছ গচ্ছেতি রামেণ নোদিভোইচোদয়দ্রথং। রামে দূরং গতেরাক্ষা মূচ্ছি তঃ প্রাপতদুবি ॥৪৬॥

আবোহণ করিলেন, লক্ষণ গজান্তম, বনু ও তুণীর হয়তাহণ করিয়া রথারোহণ করিবামাত্র সার্থীকে রথচালনে অনুমতি कब्रिलम, राजा मभवथ वथ ठालम ब्रमि अवनकविशा छेरिकः স্বরে কহিলেন ' হে সুমন্ত্র ! ক্ষণকাল প্রতীক্ষা কর—আছি একবার শ্রীরামকে দর্শন করি। ৩৮। ৩৯।৪০।।৪১।৪২। ।৪৩। ৪৪। ৪৫। জীরাম পিতার আর্ত্তনাদ শুনিয়া কহিলেন-স্মন্ত্র বধ চালন কর, শোক সন্তপ্ত পিতার বাক্য প্রবণ করিও না। জীরামের আদেশারুসারে স্থান্ত কতবেগে त्रथ ठामन कतिरानन, कार्यकाम मर्था जीतारमक द्रथ प्रमान श्रथ অতিক্রম করিল ৷ রাজা দশরথ বছদ্র পর্যান্ত দৃষ্টি নিক্লেপ করিলেন, রথ নয়ন**পথের অ**তীত হইলে রাজা মৃচ্ছিত হইরা **फार्त्वाहर क**रितन क्रीतावड शिठारक व्यमक्रिन करिया। <mark>ভূতনে পতিভ हरेनन। ४७। পুরবাসী বা</mark>দা**র্ছ ও বাছ**ণ,

পৌরাস্ত বালর্কাশ্চ র্কা আক্ষণসভ্যাঃ। তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি রামেতি কোশস্থো রথমস্বয়ঃ।।৪৭॥ রাজা রুদিতা স্বচিরং মানয়ন্ত গৃহং প্রতি॥ কৌশল্যায়া রামমাতুরিত্যাহ পরিচারকান্॥ ৪৮ ॥ কিঞ্চিৎ কালং ভবেত্তত্ত জীবনং তুঃখিতশ্য মে। অত উদ্ধং ন জীবামি চিরং রামং বিনা ক্লতঃ ॥৪৯ ততো গৃহং প্রবিশাৈব কৌশল্যায়াঃ পপাত হ। मुन्हि जन्ठ हिताम तुक्षा जुकीरमनावजिन्दान् ॥ ৫० রামস্ত তমদাতীরং গত্বা তত্তাবদৎ সুখী i জলং প্রাশ্য নিরাহারো রক্ষমূলেহস্বপদ্বিভুঃ ॥৫১॥

শণ রাজার এইরূপ ত্ববস্থা দেখিয়া উচ্চিঃশ্বরে স্থাজ্বকে-আহ্বান করিতে করিতে রথের অনুগমন করিতে লাগিলেন। व्यनखद्र द्रांखा পরিচারকদিগকে বলিদেন, হে পরিচারক গ্ণ। তোমরা আমাকে জ্রীরাম জননী কৌশল্যার মন্দিরে রক্ষা- ४४, छाडा इटेट्ग किथिएकान कीवन तकात मुख्य, कलुढ: ताम বিরহিত হইয়া অধিক কাল জীবিত থাকিব না। পরিচারকের। এইরপ অভিহিত হইয়া রাজাকে কৌশল্যাগৃছে রক্ষা করিলেন, বাজা গৃহ প্রবেশমাত্রেই পতিত ও মুচ্ছিত ইইলেন, কিঞ্চিৎ-কালের পর সংজ্ঞালাভ করিয়া কৌশল্যার প্রতি দৃষ্টি নি**ক্ষে**প করত মৌনী রহিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। এদিকে শ্রীরাম-চক্র, সীতা ওালক্ষণ তমসা নদী তীরে উপস্থিত হইয়া বাদ করিতে লাগিলেন। ধর্মাত্মা রাম দিবাভাগে ভলমাত্র আহার করিয়া उक्नीरवार्ण भौजामियीत महिक निक्तिक दहेरकन, के व्यवसाय লক্ষ্মণ স্থমন্ত্রপদভিব্যাহারে ধহুর্কাণ ধারণ করিয়া তাঁহাদিগকে াকা করিতেন। পুরবাদিগণ শ্রীরামকে অযোধ্যায় পুন:প্রভ্যা-शमन कत्राहिवात खना क्राठमइत हहेशा थी शासन आंशमन शूर्वक শীরামের অবিদূরে বাস করিতে লাগিলেন এবং সকলে এইরূপ মতিপ্রায় প্রকাশ করিলেন যে, জীরাম যদি নগর প্রত্যাগমন

দীতরা দহ ধর্মাত্মা ধনুঃপাণিস্ত লক্ষণঃ i পালয়ামাস ধর্মকঃ সুমক্তেণ সমস্বিতঃ ॥ ৫২ ॥ পৌরা: সর্বে সমাগত্য স্থিতান্তদ্যা বিদূরতঃ। শকः রামং পুরং নেতুং নোচেদ্ গচ্ছামহে বনং।। ইতি নিশ্চয়মাঞ্চায় তেষাং রামো**২তি**বিশ্মিতঃ। নাহং গচ্ছামি নগরমেতে বৈ ক্লেশভাগিনঃ।। ৫৪ ॥ ভবিষান্তীতি নিশ্চিত্য সুমন্ত্রমিদমত্রবীৎ। ইদানীমেব গচ্ছামঃ সুমন্ত্র ! রথমানয় ॥ ৫৫ ॥ ইত্যাজপ্তঃ সুমস্ত্রোহপি রথং বাহৈরযোজয়ৎ। আরুহ্য রামঃ সীতা চ লক্ষণোহপি যযুক্ত তং ॥৫৬ অবোধ্যাভিমুখং গড়া কিঞ্চিদ্যুরং ততো যযুঃ। তেহপি রামমদৃটেট্ব প্রাভরুপায় ছঃখিতাঃ ॥৫৭॥

ে ৫ । ৫ ৩। এরাম তাঁহাদিগের এইরপ অভিপ্রায় জানির। অতি বিশ্বয় সহকারে স্থমন্ত্রকে কহিলেন, স্থমন্ত্র। আমি চতু-র্দশ বর্ষ পূর্ণ না হইলে কদাচ নগর প্রভ্যাগমন করিব না। এই সকল পুরবাসিগণ আমার নিমিত্ত বুথা ক্লেশ ভোগ করিতেছে, অতএব আমি এইক্ষণে স্থানাস্তরে গমন করিতে ইচ্ছা করিতেছি রথ আনমূন কর, স্থমন্ত জীরামের আদেশামুসারে রথ আনমূন করিয়া বাছ যোজনা করিলেন। শ্রীরাম সীতা ও লক্ষাণ সুমন্ত্র আনীতরথে আরোহণ করিয়া প্রস্থান করিলেন। প্রথমত: বনাভিমুখে গমন করিলে পুরবাদিগণ বিদ্যাচরণ করিবেন, জীরাম এইরপ ভিন্ন করিয়া অযোধ্যাভিমুখে রথ চালন করিতে অহ-মতি করিলেন। সুমন্ত্র প্রভুর আদেশাহুদারে কিয়ৎক্ষণ অবোধ্যাভি মূবে রথ চালন করিয়া বনাভিম্বে অধ্দিগকে ধাবিত করিলেন। পুরবাসিগণ প্রাতঃকালে গাত্রোখানানন্তর শ্রীরাম সীতা ও লক্ষণকে অবলোকন না করিয়া অতিহ:খি-তান্ত:কংশু শ্রীরামের রথ নেমি চিহ্নিত প্রদর্শনামুসারে অবো-ধ্যাভিমুখে প্রভ্যাগমন করিলেন এবং অধ্যোধ্যায় আদিয়া প্রতি-ন। করেন, ভাষা হইলে আমরা শ্রীরামের অমুগমন করিব 1৫১। দিন সীতা ও শ্রীরামচক্রকে ব্রুদরে থানে করত সংসার হবে

রথনেমিগতং মার্গং পশ্যমতে পুরংঘনুঃ
কাদি রামং সদীতং তে ধ্যারস্তস্ত রস্তম্যার ৮।
স্থানির্গি রথং শীঘুং নোদরামাদ সাদরং।
ক্ষীতান্ জনপদান্ পশ্যন্ রামঃ দীতাসমন্বিতঃ॥৫৯॥
গঙ্গাতীরং সমাগচ্ছৎ খৃদ্ধিবেরাবিদূরতঃ।
গঙ্গাৎ দৃষ্ট্য নমস্ক্ত্য স্নাড়া সানন্দরানসঃ॥ ৬০॥
শিংশপা রক্ষমূলে স নিষ্দাদরঘূত্মঃ।
ততো গুহো জনৈঃ প্রাড়া রামাগমমহোৎসবং॥৬১
স্থায়ং স্থামিনং দ্রেটুং হ্র্ষাৎ ভূর্ণং স্মাপতৎ।
কলানি মধুপুষ্পাদি গৃহীড়া ভক্তিসংযুক্তঃ। ৬২॥

कलाञ्चलि व्यक्तांन कतिरलन। (८८। (८८। (८५। ८५। ८५। व्योतांम-চন্দ্র নানা জনপদ উত্তীর্ণ হইয়া সীতা ও লক্ষ্মণ সমভিব্যাহারে শুর্গবের পুর সন্নিহিত গঙ্গাতীরে উপস্থিত হইলেন। ভাগীরথী मर्भगानखर ध्वाम ७ ज्ञान करिया श्रीवायहत्त मानमहिएछ শিংশপা বৃক্ষমূলে উপবেশন করিলেন। অন্তর শৃক্ষবের পূরা-ধিপতি গুহক লোক মুথে প্রম্মধা শ্রীরামের আগমনবার্তা শ্রবণানন্তর দশ নার্থ পুলকিত হইয়া দেই স্থানে উপস্থিত হই-লেন। চণ্ডালাধিপতি গুহুক পরমভক্তি সহকারে শ্রীরামচরণে নানাবিধ স্থপাত্ ফল ও মধুপুষ্পাদি উপহার প্রদান করিয়া ভূতলে দপ্তবৎ পতিত হইলেন; ভক্তবৎসল শ্রীরাম নিমভক্ত শুহককে ভূমি হইতে সত্তর উত্থাপিত করিয়া প্রম্পাদরে আলিন্দনানন্তর কুশল জিজাস। করিলেন। গুহক জীরাম কর্ত্ক পৃষ্ট হইয়া ক্লাঞ্জিলিপুটে কহিলেন, হে ভগবন্! অদ্য আমি ও আমার নৈষাদলম ধন্য হইল, যেহেতু ত্রিলোকবাসি-দিগের অভিচ্লুভ অপ্পনার আলিঙ্গন লাভ করিলাম, এই সকল রাজা সম্পত্তি আপনার নিমিত্ত রক্ষা করিয়াছি, আপনি অধীর্থর হইয়া এই কিঙ্করকে ক্লতার্থ করুন। দ্যাময়! নিষাদ নগরে আগমন করিয়া আনার গৃহাদি পবিত্র করুন, আপনার নিমিত চিরসঞ্চিত ফলমূলাদি আনম্ন করিয়াছি গ্রহণ করিয়া **এ**ই मोरमत श्रांक जास्यार व्यक्ता करून । ८२। ७० । ७३।

রামস্তাত্রে বিনিক্ষিপ্য দণ্ডবৎপ্রাপতদ্ভবি। গুহুমুত্থাপ্য তং ভূর্ণং রাঘব: পরিষস্তরে ॥৬ ः॥ সংপৃষ্ঠকুশলো রামং গুহঃ প্রাঞ্জলিরব্রবীৎ। ধন্যোহহমদ্য যে জন্ম নৈষাদং লোকপাবন!।।৬৪।। বভূব পর্মানন্দঃ স্পৃষ্ট্বা তেইঙ্কং রঘূত্তম। নৈষাদরাক্সমেততে কিন্ধরস্ত রঘূত্তম।।। ৬৫ ।। ত্বদধীনং বসমত্র পালয়ামান্রঘ্দহ !। আগচ্ছ যামে। নগরং পাবনং কুরু যে গৃহং ॥৬৬॥ গৃহাণ ফলমূলানি ত্বদৰ্থং সঞ্চিতানি মে। অনুগৃহীয় ভগবন্! দাসস্তেহ্হং সুরোপ্তম! ৷৬৭৷৷ রামস্তমাহ স্বপ্রীতো বচনং শুণু মে সংখ। ন বেক্ষ্যামি গৃহং গ্রামং নববর্ষাণি পঞ্চ ।। ৬৮।। দত্তমনোন নো ভুঞ্জে ফলমূলাদিকিঞ্চন। রাজ্যং মমৈতত্তে সর্বাং স্বং সধা মেহতিবল্লভঃ ॥৬১ विक्नोतः नमानाया क्रियं कृष्याम्त्रां । ববন্ধ লক্ষণেনাথ সহিতো রঘুনন্দনঃ।। ৭০।।

। ৬২। ৬০। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। শ্রীরাম গুহের এইরপ ভক্তি ও প্রাণ্যসহকৃত বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন, হে সথে। শ্রবণ কর আমি চতুদিশ বর্ষ মধ্যে গ্রাম বা গৃহে প্রবেশ করিব না: জন্যদন্ত ফলমূলাদি ও ভক্ষণ করিব না, তৃমি পরমন্থ্যে রাচ্যাদি ভোগ কর, তাহাতে আমার পরম সস্তোষ হইবে। বেহেতু তৃমি আমার অতি প্রিয়তমস্থা। ৬৮। ৬৯। অনন্তর শ্রীরামচন্দ্র ও লক্ষণ চণ্ডালাধিপতি গুছ দারা বটকীর আন-য়ন করিয়া জটামুকুট বন্ধন করিলেন এবং ঐ স্থানে জলমাত্র ভক্ষণ করিয়া রজনীতে লক্ষণ নির্মিত কুশ শ্যাম অ্যোধ্যা-প্রাসাদস্থিত রত্ন পর্যাক্ষ জ্ঞান করিয়া সীতার সহিত শ্রন- জনমাত্রন্ত সংপ্রাশা দীতয়া সহ রাঘবঃ।
আন্তং কুশপর্ণালৈয়ঃ শয়নং লক্ষণেন হি ॥৭১॥
উবাস তত্র নগরপ্রাসাদাত্রে যথা পুরা।
ফুষাপ তত্র বৈদেহ্যা পর্যন্ত ইব সংস্কৃতে॥ ৭২॥
ভতো বিদূরে পরিগৃহা চাপং
স্বাণভূণীরধনুঃ সলক্ষণঃ।

ক্রিলেন, লক্ষণ ও গুহ ধমুর্কাণ ও তুণীর গ্রহণ করিয়া চতুর্দিক

ররক রামং পরিতো বিপশ্যন্ গুহেন সাকিং স্শ্রাসনেন।। ৭৩।।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অযোধ্যাকাণ্ডে পঞ্নোহধ্যারঃ।

অবলোকন করত তাঁহাদিগকে রক্ষা করিতে লাগিলেন। ৭০। : ৭১ : ৭২ । ৭৩।

> ইতি শ্রীমদব্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্থাদে অবোধাশকাতে পঞ্চমোহব্যায়ঃ।

यर्छो ३ शासः।

নৃত্যং রামং সমালোক্য গুছং সোহশ্রপরিপ্লুতঃ।
লক্ষ্মণং প্রাছ বিনয়াদ্ত্রাতঃ! পশ্যসি রাঘবম্॥।॥
শ্রানং কুশপ্রেঘিসংস্তরে সীতয়া সহ।
যঃ শেতে স্বর্ণপর্যন্তে স্বাস্তীর্ণে ভবনোত্তমে॥ ২॥
কৈকেয়ী রামদুঃখন্ত কারণং বিধিনা কৃতা।
মন্তরাবৃদ্ধিমাস্থার কৈকেয়ী পাপমাচরৎ॥ ৩॥
তচ্ছুত্বা লক্ষ্মণঃ প্রাছ সংখ! শুণু বচো মম।
কঃ কন্ত হেডুদুঃখন্ত কন্চ হেডুঃ সুখন্য বা॥ ৪॥
স্বপ্র্রাজিতক্ষ্মিব কারণং সুখদুঃখ্যোঃ। ৫॥

স্থপ্য দুংখপ্য ন কোহপি দাতা
পরে। দদাতীতি কুরুদ্ধিরেষা।
অহং করোমীতি রথাহভিমানঃ
স্বকর্মসূত্রগ্রথিতো হি লোকঃ॥ ৬॥

আনস্থর চণ্ডালাধিপতি গুহ জ্ঞীরামকে কুল-শ্যার শরন দেখির। সজলনয়নে ও বিনীতভাবে লক্ষণকে কহিলেন, হে লাতঃ! অবলোকন করিতেছ যিনি ইতিপূর্ব্বে অযোধ্যাভ্বন-স্থিত মহাম্লা স্থাপথ্যকে শ্রন করিতেন, আদ্য সেই নবদ্ব্বিনি দল্যাম রাম কঠিন কুলপত্র সমূহ বিরচিত শ্যায় সীভাদেবীর সহিত শ্যন করিতেছেন। হা বিধাতা! কৈকেয়ীকে এই সকল অনব্বের কারণ করিয়া দিয়াছেন, কিন্তু এবিষ্য়ে একা কৈকেয়ী নিদান নহে, যেহেতু মহরা তাঁহার বুদ্ধি বৃত্তিকে আন্যথা করিয়া দিয়াছে। লক্ষ্যা গুহুকের এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন সংখ! শ্রবণ কর, এই জগতে এক ব্যক্তি অপরের সুহৃদ্মিত্রাযু দাসীনদ্বেষাসধ্যস্তবান্ধবাং।
স্বায়মেবাচরন্ কর্মা তথা তত্ত্র বিভাব্যতে।। ৭ ॥
স্থাং বা যদি বা ছঃখং স্বকর্মবশগো নর:।
যদ্যযদ্যথাগতং তত্তন্তুক্রা স্বস্থমনা ভবেং।। ৮ ॥
ন মে ভোগাগমে বাঞ্চা ন মে ভোগবিবর্জনে।
স্থাগচ্ছত্বথ মাগচ্ছত্তভোগবশগো ভবে॥ ১ ॥

স্থারের বা ছঃথের কারণ হইতে পারে না; বেহেতু পূর্বজন্ম-ক্লত নিজ কর্মদারা লোকে স্থাবা ছঃথ ভোগ করিয়া থাকে, অমুক ব্যক্তিশারা আমার স্থথ বা হুঃথ হইতেছে এই প্রকার मस्यानिरगंत्र त्रिक कृत्कि विलट्ड हरेटव এवः आमि अग्रर इःथबनक वा स्थबनक कार्या कतिएछि, এই ध्वकात वृक्षित्क অভিমান বলা যায়। ষেহেতুক লোক মাত্রেই কশ্মস্থত্তে অধিত রহিয়া:ছ, অর্থাৎ কাহারও কোন কার্য্যে স্বতঃ প্রভূতা নাই। যেমন স্মত্রধারী পুরুষ স্মত্রসংযুক্তা কাষ্ট পুতলীকে স্তুত্ত চালন দাগা নানাপ্রকারে স্ত্য করাইয়া থাকে, সেইরূপ পরিমেশ্বর কর্মস্থতে আবদ্ধ লোকদিগকে নানা কাথ্যে ভ্রমণ করাইতেছেন ; ষেমন লোকেরা নিজকণ্মবশভঃ শক্রভা বা মিক্রতা লাভ করিয়া ধাকে, স্থধ হুঃখাদি বিষয়ে সেইরূপ দেখিতে ছইবে অর্থাৎ সুখজনক কার্য্য করিলে সুধ, চঃখজনক করিলে অবশ্যই হৃঃশ হইরা থাকে। অভএব স্বক্ষবশ্য লোকের। যে সমর যাহা উপস্থিত হইবে স্থখ বা ছঃখ হউক তাহা অবশ্যই সহনীয় বিবেচনা করিয়া স্মৃচিত্তে বছন করিবে ৷১/২/৩/৪/ ৫/৬/৭/৮/ হে ভাতঃ! আমার সুৰ ভোগে वा ऋष विद्रारम वाक्षा नाहे; ऋष वा इःश्व हर्डेक অবশ্য সছন করিব কদাচ ভোগের বশবভী ছইব মা, ইছা निक्षत्र क्रानि त्य, त्य त्मर्ल त्य काल यांश इहेर व वाकि

যশিন্দেশ চ কালে চ যশাদ্বা যেন কেন বা।
কৃতং শুভাশুভং কর্মা ভোজ্যং তওঁত্র নান্যথা।১০।
আলং হর্ষবিষাদাভ্যাং শুভাশুভফলোদয়ে।
বিধাত্রা বিহিতং যদ্যতদলস্ক্র্যাং সুরাস্থারঃ।। ১১।
সর্বাদা সুখত্বংখাভ্যাং নরঃ প্রভাবকদ্মতে।
শরীরং পুণ্যপাপাভ্যামুৎপন্নং সুখদুঃখবং।। ১২।।
সুখস্যানন্তরং তুঃখং তুঃখদ্যানন্তরং সুখ্য্ ।
দ্বামনভাদ্য কন্ত্রনামলস্ক্র্যং দিনরাত্রিবং॥ ২৩॥
সুখমধ্যে স্থিতং তুঃখং তুঃখমধ্যে স্থিতং সুখ্য্ ।
দ্বামন্যাহন্য সংযুক্তং প্রোচাতে জলপদ্ধবং॥১৪
তন্মাদ্বৈর্থেন বিদ্বাংস ইন্টানিন্টোপপতিয়ু।
ন ক্র্যান্থি ন মুক্তি সর্বাং মায়েতি ভাবনাং।।১৫॥
বিদ্বাহিন মুক্তি সর্বাং মায়েতি ভাবনাং।।১৫॥

যে যে শুভাশুভ কার্য্য করিবে সেই দেশে সেই কালে ভাগ হইতে সেই ব্যক্তি মেই সকল শুভাশুভ কর্মের অবশ্যই ফল ভোগ করিবে। অতএব শুভাশুভ ফল স্ইলে হর্ষ বা বিষাদ করা অনুচিত; বিধাতা যাহা লিখিয়াছেন তাহা দেবতা বা অস্তর কেহই ল্জ্ঞান করিতে পারে না। দেছিমাত্রেরই স্থগ ছঃখ ভোগ অবশাই হইবে যেছেতু এই শরীর পাপ ও পুণ্যদ্বারা উৎপন্ন হইয়াছে, স্কুতরাং এই শরীরাবচ্ছেদে পাপের পরিনাম তুংখ ও পুণোর পরিনাম ত্রথ হইবে তাহার সন্দেহ কি? ত্র্থ-ভোগানন্তর হুঃধ ভোগ হুঃধভোগানন্তর স্বথভোগ দেহিমাত্রের অবশ্যই ছইয়া থাকে; দিবসান্তে যে রজনী সমাগম—রজনী প্রভাতে পুনর্কার দিবদোদর ইহার প্রধান দৃষ্টান্ত হইরাছে। হে ভ্রাতঃ, যে প্রকার জলস্থিত পঙ্কের মধ্যে জল-এ জলমধ্যে প্রস্ক এইরূপে পরস্পরের নিয়ত সম্বন্ধ দেখা যায়, সেইরূপ পুখ তুঃথেরও নিয়ত সম্বন্ধ অর্থাৎ স্থাধের মধ্যে ছুঃখ ও ছঃখে মধ্যেও সুখ থাকে, তুঃখ বহিত সুখ মনুষা দেহে সম্ভব হয় ना-रयमन धेस्रकानिक विमानाता रेकोनिके थाल रहेल কাছারও হর্ষ বা বিষাদ হয় না, তদ্রপ পণ্ডিতেরা স্কার্য্য-বশতঃ ইফানিই প্রাপ্তি হইলে হাই বা মুগ্ধ হন না।৭।৮।৯।১০। ॥১১।১২।১৩।১৪।১৫। গুহুক ও লক্ষাণের এইরপ কথোপকধন

গুহলক্ষণয়ে বিবং ভাষতোর্বিমলং নভঃ।
বভূব রামঃ সলিলং স্পৃষ্ঠা প্রাভঃসমাহিতঃ।।:৬॥
উবাচ শীঘুং স্কৃচাং নাবমানয় মে সথে।
শুজা রামস্য বচনং নিষাদাবিপতিও হঃ॥১৭॥
স্বয়মেব দৃঢ়াং নাবমানিয়ায় স্থলক্ষণাং।
স্বামিয়ারুহতোং নোকা সীতয়া লক্ষণেন চ॥১৮॥
বাহয়ে জ্ঞাতিভিঃ সার্দ্মহমেব সমাহিতঃ।
তথেতি রাঘবঃ সীতামারোপ্য শুভলক্ষণাং॥১৯॥
গুহস্য হস্তাবালয়্য স্বয়ং চারুহদচ্যুতঃ।
আয়ুধাদীন্ সমারোপ্য লক্ষ্মণোহপারেরোই চ॥২০
গুহস্তাস্বাহয়ামাস জ্ঞাতিভিঃ সহিতঃ স্বয়ং।
গঙ্গামধ্যে গতা গঞ্জাং প্রার্থিয়ামাস জ্ঞানকী॥২১॥

হইতে হইতেই নভোমগুল নিশ্বল হইয়া উঠিল। খ্রীরামচক্র প্রভাত দর্শনে আনন্দিত হইয়া সলিলস্পর্শ করিলেন এবং কছিলেন।—হে সংখ! শীত্র স্বদৃঢ়নে কা আনয়ন কর, নিধা-দাধিপতি গুছ শ্রীরামের আদেশাসুসারে স্বয়ং স্থাদৃঢ় শেকি। আনয়ন করিয়া কহিলেন, প্রভো! আপনি এই নৌকায় সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত আরে ছেণ করুন, আমি স্বয়ং জ্ঞাতি-বর্গের সহিত সমবেত হইরা নেকি। চালন করিব। জীরাম তথাস্তু বলিয়া অত্যে সীভাদেবীকে আবোহণ করাইয়া স্বরং গুহকের হস্তাবলম্বন পূর্ব্বক নৌকারোহণ করি **লেন। অনন্তর লক্ষ্মণ ঐ মৌকরে অন্তর্গদিরক্ষা করি**য়া আবোহণ করিলেন। গুহক জাতিবর্গের সহিত এ নেকি। বাহন আরম্ভ কণিলেন, জানকী ভাগীরথীর মধ্যবর্তিনী হইয়া প্রার্থনা করিতে লাগিলেন, দেবি, ভগবতি, ভাগীরিখি গঙ্কে তেগমাকে নমকার করি: অগমরা বনবাস হইতে নির্ভ হইয়া নানাবিধ ফল প্রেপাপছার দার। তোমার পূজা করিব। কিন্তক্ষণ মধ্যে নেকি। ভাগীবধির পরকুলে উপস্থিত হইন। রাম দীতা ও লক্ষণ নৌকা ছইতে উত্তীণ হইয়া প্রস্থান

দেবি গঙ্গে! নমস্তভ্যং নিরুত্তা বনবাসতঃ। রামেণ সহিতাইহং ত্বাং লক্ষণেন চপুজয়ে ॥২২॥ ফলপুজ্পোপহারৈশ্চ নানা বলিভিরাদৃতা। ইত্যক্ত্বা পরকুলং তৌ শূনৈরুতীর্য্য জগ্মতুঃ॥২৩॥ গুহোহপি রাঘবং প্রাহ গমিষ্যামি ত্রা সহ। অনুজ্ঞাং দেহি রাজেন্দ্র নোচেৎপ্রাণাংস্ত্যজামাহং শ্রুতা নৈষাদ্বচনং জ্রীরামস্তমথাত্রবীৎ। চতুর্দ্দশসমাঃ স্থিতা দপ্তকে পুনরপ্যহ্ম। ২৫॥ আয়াস্থাম্যদিতং সত্যং নাস্ত্যং রামভাবিতম্। উত্যুক্ত্রালিস্য তং ভক্তং সমাশ্বাস্য পুনঃপুনঃ ॥ ২৬ গৃহীত্বাহ্র্য্যুৎ চ পাদ্যঞ্চ রামসামীপ্যমাষ্ট্রো। ৩৩॥ নিবর্ত্তরামাদ গুহং দোহপি কৃচ্ছাদ্যথো গৃহম্। তত্র মেধ্যং মৃগং হত্বা পক্ত্রা ছত্বা চ তে ত্রয়ঃ।।২৭ ভূক্তা রক্ষদলে হুপ্তা হুখমাসত তাং নিশাম্। ততো রামস্ত বৈদেহ্যা লক্ষণেন সমস্বিতঃ।।২৮॥

क्रिलिस । ১७ । ১१ । ১৮ । ১৯ । २० । २১ । २२ । २० । গুহক কিঞ্চিৎ অনুগ্রমন করিয়া কহিলেন, ছে সুখে! আমি আপনার অনুগামন করিব, ছে রাজেন্দ্র! অনুমতি কঞ্ন, নচেৎ প্রাণতাাগ করিব। জীরাম কছিলেন, ছে সংখ। ভূমি ছুঃখিত হইও না; চতুর্দশ বর্ষ বন বাসান্তে পুনর্বার তোমার এই স্থানেই প্রত্যাগমন করিব, ইহা সত্য কর্ছিলাম জীরামের বাক্য কখন মিধ্যা হইবে না। অনন্তর গুছককে আলিজন ক্রিয়া বিদায় করিলেন চণ্ডালরাজ অভি কফে নিজগৃছে প্রত্যাগ্যমন করিলেন গুছক গমন করিলে, জীরাম সেই স্থানে মৃগরাহত মৃগমাংস পাক করিয়া দেব ও পিতৃ লোকের উদ্দেশে প্রদানানন্তর নিবেদিতাবশিষ্ট মাংস পত্নী ও অরু-জের সহিত ভোজন করিলেন, এবং রক্ষ্যুলে শয়ন করিয়া রজনী অতিবাহিত করিলেন, প্রাতঃকালে গাজোত্থানান-ন্তর সীতা ও লক্ষণের সহিত ভরম্বাজাল্রমে উপস্থিত হইয়া

িভরদ্বাজাশ্রমপদং গড়া বহিরুপস্থিকঃ!। তত্ত্রৈকং বটুকং দৃষ্ট্ব। রামঃ প্রাহ চ হে বটো ॥ ২৯ রামো দাশর্থিঃ সীতালক্ষ্ণাভ্যাং সমস্থিতঃ। আন্তে বহির্বনস্তেভিয়চ্যতাং মুনিসন্নিধে।। ৩০ তচ্ছ্যা সহসা গত্বা পাদয়োঃ পতিতো মুনেঃ। স্বামিন্রামঃ সমাগত্য বনাদ্হিরবস্থিতঃ ॥ ৩১॥ 🕆 সভার্যঃ সাল্লকঃ শ্রীমানাহ মাং দেবসন্মিভঃ। ভরদ্বাজায় মুনয়ে জ্ঞাপয়স্ব যথোচিতম । তচ্ছ্যা সহসোপায় ভরদ্বাকো মুনীশবঃ।

সমীপবন্ত্রী একজন বটুকে কহিলেন। হে বটো! ভুমি গমন করিয়া মহর্যিকে বিজ্ঞাপন কর, যে সীডা ও লক্ষ্যার দহিত শ্রীরামচন্দ্র উপস্থিত হইগা বহিদেশে দগুরিমান আছেন |২৪।২৫।২৬।২৭ ২৮।২৯: ৩০। অনন্তর বটু মহর্ষি সলিধানে গামন করিয়া কছিলেন হে মহর্ষে! সীতা ও লক্ষাণের সহিত জীৱামচন্দ্র বহির্দেশে উপস্থিত হইয়া আপনাকে বিজ্ঞাপন করিবার জন্য আমাকে আদেশ করিয়া-ছেন। মহর্ষি রাম নাম শ্রবণমাত্র পুলকিত হইয়া পাদ্য অহা আহণপূর্বক রাম সন্নিধানে উপস্থিত হইলেন। অনন্তর জীরামকে যথাবিধি পূজা করিয়া কছিলেন। হে রাজীব-লোচন রাম! আপনারা সকলে আগমন করিয়া চরণ ধূলি-দার্য আমার পর্ণশালা পবিত্র কৰুন. অনন্তর শ্রীরাম সীতা ও লক্ষণের সহিত ভরম্বাজের পর্ণশালায় প্রবেশ করিলেন। মহর্ষি ভরম্বাজ পুনর্ববার দেই স্থানে তাঁহাদিগোর পূজাকর-ণানন্তর আতিথ্য করিয়া কহিলেন, হে রাম! আদ্য আমি আপনার দর্শনে তপঃসিদ্ধি লাভ করিলাম। হে ভগবন্ ! আমি আপনার অনুগ্রহে ভূত ভবিষ্যৎ সকলই জানিতে পারি স্থঃরাং, আপনার বর্তমান ও ভবিষাদবস্থা আমার অবিদিত নছে। অাপনি পরমান্মা ত্রন্মার প্রার্থনানু-मारत माना मनूबाक्रण थात्रण कित्रमा व्यवजीर्ग इरेब्रास्ट्रम, धवर দৃষ্ট্ৰ রামং যথান্যায়ং পুজরিডা সলক্ষণম্। আহ মে পর্ণশালাং ভো রাম ! রাজীবলোচন !। আগল্ড পাদরজ্ঞ পুনীহি রঘুনন্দন!। উত্যুক্তে । তিজমানীয় সীতরা সহ রাঘবে।। ৩৫॥ ভক্তা পুনঃ পূলয়িতা চকারাতিথ্যমূত্রমম। অদাহিং তপসঃ পারং গতোহিমা তব সঞ্চমাৎ ॥ ক্রাতং রাম ! তবোদন্তং ভূতং চাগামিকং চ য় । জানামি ত্বাং পরাত্মানং মাষয়া কার্য্যমান্ত্রম্যাত্র যদর্থমবভীর্ণোহসি প্রার্থিতো ব্রহ্মণা পুরা। यमर्थर वनवांत्ररस्य यहकतिषानि रेव পুরঃ। ৩৮।। জানামি জ্ঞানদৃষ্ট্যাইহং জাতয়া স্বদুপাসনাৎ। ইতঃ পরং ত্বাং কি**ং বক্ষে ক্তার্থো**হহংরঘূত্তম॥৬৯ যন্তাং পশ্যামি কাকুৎস্থং পুরুষং প্রকৃতেঃ পরম্। রাম**ন্তমভিবাদ্যাহ দীতালক্ষাণসংযুতঃ ॥** ৪০ ॥ अनुवाशाख्ता बन्नन्! **नशः क्वजित्रनामनाः।** ইতি সম্ভাষ্যতেহন্যোহন্যমুবিত্বা মুনিসন্নিধৌ ॥ ৪১॥

প্রাতরুপায় য়য়ৢনায়ুতীর্য য়ুনিদারকৈঃ।
কুতাপ্লবেন য়ুনিনা দৃষ্টমার্গেণ রাঘবঃ॥ ৪২॥
প্রথমে চিত্রকুটাজিং বাল্মীকের্যত্ত চাশ্রমঃ।
গতা রামোহধ বাল্মীকেরাশ্রমং ঋষিসংকুলম।
নানায়গদ্বিজ্ঞাকীর্ণং নিত্যপুপ্রফলাকুলম্।
তত্ত দৃষ্ধা সমাসীনং বাল্মীকিং য়ুনিসত্তমম্।। ৪৪
ননাম শিরসা রামো লক্ষ্মণেন চ সীতয়া।
দৃষ্ধা রামং রমানাথং বাল্মীকিলোকিসুন্দরম্।।৪৫
জ্ঞানকীলক্ষ্মণোপেতং জ্ঞায়ুকুটমপ্তিত্তম্।
কন্দর্পসদৃশাকারং ক্যনীয়ায়ুজেক্ষণম্। ৪৬॥
দৃষ্টেরবসহদোত্তঃ বিশ্বয়ানিমিষেক্ষণঃ।
আলিক্ষ্য পরমানন্দং রামং হ্রাশ্রুলোচনঃ॥ ৪৭।
প্রুরিত্বা জ্বাৎপ্রজ্যুং ভ্রুয়াহ্ম্যানিভিরাদৃতঃ।
ফলমূলৈঃ স্থমপুরৈর্ভোজ্যিত্বা চ্লালিতঃ।। ৪৮॥
ফলমূলৈঃ স্থমপুরির্ভোজ্যিত্বা চ্লালিতঃ।। ৪৮॥

। ৪১। পরদিন প্রতিংকালে গাত্রোত্থানানন্তর মুনি বালকগণের সহিত যমুনা পার হইরা প্রাতংশক্ষাত ভরদ্ধান্ধ মুনিকর্জক দর্শিত পথ অবলম্বন পূর্ব্বক মহর্ষি বাল্মীকির ভপোবন শোভিত চিত্রকূটে গমন করিলেন। অনভর রাম সীতা ও লক্ষান মহর্ষি সংকুল—সভতঃ পুত্পফগাদি সমাকীর্ণ এবং নানাবিধ মৃগ ও দ্বিজাতিবর্গ কর্জক পরিবেক্টিত তপোবনে উপন্থিত হইরা বাল্মীকিকে প্রণাম করিলেন। মহাতপা বাল্মীকি কন্দর্প সদৃশ স্থানর ও জটামুকুট মণ্ডিত রাজীবলোচন রামকে জানকী ও লক্ষাণের সহিত সমাগত দেখিরা বিশার সহকারে সহসা গাত্রোত্থানানন্তর সহযালিক্ষন করিয়া পরম ভক্তিও আদর পূর্বক পাদ্যাত্যদারা পূজা করিলেন, এবং স্মধুর ফলমূলাদি আনর্যন করিয়া তাঁছাদিগকে ভোজন করাইলেন। ৪২।৪৩।৪৪।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮। অনস্তর

রাঘবঃ প্রাঞ্জলিঃ প্রাহ্ বাল্লীকিং নির্য়ান্বিতঃ।
পিতৃরাজ্ঞাং পুরস্কৃত্য দশুকানাগতা বয়ম্ ॥ ৪৯ ॥
ভবন্তো যদি জানন্তি কিং বস্দ্যামোইত্রকারণম্।

गত্র মে সুখবাদায় ভ্রেৎ স্থানং বদস্ব তৎ ॥ ৫০ ॥
দীতয়া সহিতঃ কালং কিঞ্চিত্রত্র নয়ামাহম্।
ইত্যুক্তো রাঘবেনাসে মুনিঃ দস্মিতমন্ত্রবীৎ ॥ ৫১
ত্বাসি সর্বভ্রোনি নিবাসদদনানি হি ॥ ৫২ ॥
তবাপি সর্বভ্রোনি নিবাসদদনানি হি ॥ ৫২ ॥
তবং সাধারণং স্থানমুক্তং তে রঘুনন্দন!।
দীতয়া সহিত্যুতি বিশেষং পুচ্ছুত্ত্রব ॥ ৫৩ ॥
তদ্বস্থামি রঘুক্রেষ্ঠ! যতে নিয়তমন্দিরম্।
শান্তানাং সমদ্ধীনামদ্েকুণাং চ জন্তুমু ॥
তামের ভক্রতাং নিত্যং ক্লান্তং তেহধিমন্দিরম্ ॥ ৫৪
ধর্মাধর্মান্ পরিত্যক্র্য ত্বামের ভক্রতোহমিশ্ম্।
দীতয়া সহ তেরাম! তস্য ক্লং স্থ্যুন্ত্রমান্তরম্যা ৫৫

শ্রীরাম ক্লতাঞ্জলি হইরা কহিলেন, হে মহর্ষে আপনি তথা প্রতাবে সকলই বিদিত হইরা থাকিবেন যে, আসরা পিতৃ আজ্ঞ। পালনার্থ দশুকারণ্যে আগমন করিয়াছিও অধিক আপনাকে কি জানাইব। এই ক্ষণে আমাদিগের স্থাবাস যোগ্য স্থান আদেশ কক্ষন, যে স্থানে জানকী সমভিব্যাহারে কিঞ্চিৎকাল বাস করিতে পারি। বাল্মীকি 'জ্ঞীরামের বাক্য শ্রবণানন্তর সহাস্যা বদনে কহিলেন, হে রঘুশ্রেষ্ঠ তুমি সর্ক্ষণকের আবাস স্থান এবং সর্ক্ষভূত্বাণ তোমার আবাসস্থান এইরপ তোমার সাধারণ বাসস্থান কহিলাম। কিন্তু সীতা সহ বস্তি স্থনে বিশেষ করিয়া কহিতেছি শ্রবণ ক্রন। ৪৯। । ৫০। ৫২। ৫২। ৫২। ৫২। হেরাম! যে ব্যক্তি লোভ শ্রুয়া

ত্বনান্ত্রজাপকো যন্ত ত্বামের শরণং গতঃ।
নিদ্ধ দ্বো নিস্পৃহস্তদ্য ক্লারং তে স্থমন্দিরম্। ৫৬
নিরহঙ্কারিণঃ শান্তা যে রাগদ্বেষর র্জিতাঃ।
সমলোফাশ্মকণকান্তেষাং তে ক্লারং গৃহম্॥ ৫৭।
ত্বরি দত্তমনোবুদ্ধির্যঃ সন্তুফঃ সদা ভবেৎ।
ত্বরি সন্ত্যক্তকর্মা যন্তন্মন্তো শুভং গৃহম্॥ ৫৮॥
যোন দ্বেট্যপ্রিরং প্রাপ্য প্রিরং প্রাপ্যন ক্রম্বতি।
সর্বিং মায়েতি নিশ্চিত্য ত্বাং ভক্তেত্বমনো গৃহম্।
ষড়্ভাবাদিবিকারান্থো দেহে পশ্যতি নাত্মনি।
ক্ষুপ্ত্ট্ স্থাং ভরং ত্বংগ প্রাণবুদ্ধোনি বীক্ষতে।
সংসারধর্মেনি মুক্তিন্তন্য তে মানসং গৃহম্॥ ৬১

এবং সরণাগত হইয়া ভোমার মন্ত্র জপ করে, ভাহার মন ভোমাদিগের নিয়ত বাসস্থান এবং শান্তি গুণাবলম্বী নির-হঙ্কার ও রাগদ্বেষ রহিত হইরা যে, ব্যক্তি লোষ্ট কাঞ্চ ও প্রস্তুরে সমজ্ঞান করে, তাহার মন তোমাদিগের বাসস্থান 🗵 হে রঘুনন্দন! যে ব্যক্তি ভোমাভে মন বুদ্ধি ও কৰ্মফল অপ্ৰ করিয়া সর্বাদা সম্ভন্ট থাকে তাছার মন ও ভোমাদিগের বাস স্থান, যে ব্যক্তি অপ্রিয় বস্তুতে দ্বেষ করে না প্রিয় বঞ্ লাভ করিয়াও হর্ষিত হয় না এবং জগতকে মায়া কম্পিত অলীক বিবেচনা করিয়া ভোমাকে ভজনা করে জাঁহার হৃদয় তোমাদিগের বাসস্থান এবং যে ব্যক্তি জন্ম সক্তাবিনাশ হ্রাস রন্ধি ওবৈপরিত্য এই ষড়বিধ বিকার আত্মাতে কম্পেনা না করিয়া নিজ দেহ ধর্ম বলিয়া স্থির করিয়াছে এবং ক্ষুধা তৃষ্ণা সুথভর ও চুংখ প্রভৃতি গুণকে প্রাণ ও বুদ্ধি এই উভ-য়ের ধর্ম বিবেচনা করিয়া পাপ পুণাগদি রূপ দংসার ধর্ম পরিত্যাগ করিয়াছে তাহার মানস তোমাদিণের বাসস্থান হে জগদীশ্বং! যাহারা সর্বব্যাপী এবং অনন্ত সভ্য চৈতনা-স্থাপ ও নিলেপি এবং অনুষয় প্রাণময় বিজ্ঞানময় মনোময় আনন্দময় স্বরূপ নিভ্য স্থানে অবস্থিত পরমাঝাকে তোম

পশ্যন্তি যে সর্বস্তিহাশয়স্থং
ত্বাং চিদৃনং সত্যমনন্তমেকং।
অলেপকং সর্বাগতং বরেণাং
তেবাং হৃদজ্যে সহ সীতয়া বস ॥৬২॥
নিরন্তরাভ্যাসদৃদীক্ষতাত্মনাং
ত্বপাদসেবাপথিনিষ্ঠিতামাং।
ত্মামকীর্ত্ত্যা হতকল্মবাণাং
সীতাসমে তস্য গৃহং হৃদজ্যে॥৬৩॥

রাম ! ত্বস্নামমহিমা বর্ণ্যতে কেন বা কথং।

যৎপ্রভাবদিহং রাম ! ব্রহ্মর্যিত্বমবাপ্তবান্ ॥ ৯৪॥

অহং পুরা কিরাতেরু কিরাতেঃ সহ বর্দ্ধিতঃ।

জন্মমাত্রদিজত্বং মে শুদ্রাচাররতঃ সদা ॥৬৫॥

শদ্রায়াং বহবঃ পুজা উৎপন্না মেইজিভাত্মনঃ।

তত্তশ্চারৈক্ত সঙ্গ্যা চোরহহ্মভবং পুরা ॥৬৬॥

হটতে অভিন্ন জ্ঞান করিয়া থাকে তাহাদিগের হদর
পদ্মে তুমি সীতার সহিত পরম স্থে বাস কর, যাহারা ধ্যানাভ্যাস করিয়া ভোমাতে মন দৃত্তর নিয়োজিত করিয়া ভোমারই পদসেবানুষ্ঠানে সতত রত আছে এবং ভোমার নাম
কীর্ত্তন করিয়া সর্ব্ব পাপ হইতে মুক্তি হইয়াছে তাহাদিগের হৃদয়ে সীতার সহিত বাস কর। ৬৩। হে
রাম! ভোমার নামের অপার মহিমা—কৈছ বর্ণন করিতে
পারে না। তোমার নাম প্রভাবে আমি মহর্ষি হইয়াছি।
পূর্ব্বকালে কিরাভাধিষ্ঠত দেশে ব্রাহ্মণকুলে জন্মগ্রহণ করিয়া
কিরাভ বালকগণের সহিত পরিবর্দ্ধিত হইয়াছিলাম; কালক্রমে শুদ্রাগর্ভে আমার ঔরসে কতিপর সন্তান উৎপন্ন হইল।
অনভ্যে ভাহাদিগের উদর পোষণার্থ চৌরগণের সহিত মিলিড
হইয়া চৌর্যা রক্তি আরম্ভ করিলাম; ৬৬। সর্ব্বদা ধ্যুর্বান

ধয়ুর্বাণধরো নিত্যং জীবানামন্তকোপমঃ।

একদা মুনয়ঃ সপ্ত দৃষ্ট্য মহতি কাননে ॥৬৭॥

সাক্ষাম্ময়া প্রকাশস্তো জ্বলনার্কসমপ্রভাঃ।

তানম্বধাবং লোভেন তেষাং সর্বাপরিজ্বনান্॥৬৮॥

এইীতুকামস্তর্ভাহং তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি চাক্রবম্।

দৃষ্ট্যমাং মুনয়োহপৃচ্ছন্ কিমায়ানি বিজ্ঞাধম!॥৬৯

অহং তানক্রবং কিঞ্চিদাদাতুং মুনিসন্ত্রমাঃ।

পুক্রদারাদয়ঃ সন্তি বহবো মে বুভুক্ষিতাঃ॥৭০॥

ধারণ পূর্বক নানা পশুপক্ষীদিগের হিংদা করা আমার এক মাত্র वावमात्र रहेन । এकना मश्त्रवा मत्या स्र्धात्रि मनुभ (ननीपा-মান ও তেজঃপুঞ্জ শরীর বিশিষ্ট সপ্তর্ষি দর্শন করিয়া তাঁহা-দিগের যৎকিঞিৎ স্বরমূল্য পরিচ্ছদ গ্রহণাভিলাষে অমুগমন क्रिया উচ্চৈ:यद 'ভিষ্ঠ ভিষ্ঠ' এই বলিয়া বারম্বার শব্দ ক্রিকাম, মুনিগণ আমাকে জিজ্ঞাসা করিলেন, রে দ্বিজাধম ! কি ছেতু তুমি অনুগমন করিতেছ ? ডৎকালে উত্তর করিলাম—আমি বহুকুটুখী ও দরিদ্র, আমার স্ত্রী পুলাদি অলাভাবে কুধার্ত হট্যাছে ভাহা-দিগের উদর পোষণার্থ আমি এই গিরিকাননমধ্যে দশুবৃত্তি করিয়া ধন গ্রহণ করিতে প্রবৃত্ত হুইয়াছি। এক্ষণে পরিচ্ছদা-প্রর্ণাশ্যে ভোমাদিগের অনুগ্যন করিতেছি। অন্তর স্নি-গণ আমাকে কহিলেন, রে নরাধম ৷ ভূমি গৃহে গমন করিয়া স্ত্রী পুত্রাদিকে জিজ্ঞানা কর যে, ''আমি তোমাদিগের উদর পোষণার্থ পাপ করিভেছি--ভোমরা ভাগার অংশভাগী হইবে-কি আমি একাকী অনস্তকালের জন্য নিরয়গামী হইব ? রে মুর্থ ! তুমি যাবৎকালপর্যান্ত এই বাক্যের উত্তর গ্রহণ করিরা না আসিবে তাবংকাল আমরা এম্বানে তোমার অপেকা করিব। অনস্তর মুনিবাটকা বিশ্বস্ত হইয়া গুহে গমনপূর্ব্বক পরিবারগণকে মুনিবাক্যান্ত্রাবে জিজানঃ করিলাম্ ভাহারা উত্তর করিল বে 'ভূমি গৃহস্বামী—আমরা বংক্তপাপ পুণ্যের অংশভাগী ক্রথনই নহে, যেহেতু আমরা প্রতিপাল্য--ভোমার উপার্জিভ ধনবারা আমরা অবশা মুপভোগ করিব' । ৩৭ ৷ ৩৮ ৷ ৯৬ ৷ তেবাং সংরক্ষণার্থার চরামি গিরিকাননে।
ততো মামূচুরব্যগ্রাঃ পৃচ্ছ গত্বা কুটুম্বকম্ ॥৭১॥
যো যো ময়া প্রতিদিনং ক্রিয়তে পাপসঞ্চয়ঃ।
যূরং তদ্তাগিনঃ কিম্বা নেতি বেতি পৃথক পৃথক্ ॥৭২
বয়ং স্থাস্যামহে তাবদাগমিষ্যাসি নিশ্চয়ঃ।
তথেত্যুক্ত্বা গৃহং গত্বা মুনিভির্যদুদীরিতম্ ॥৭৩॥
আপৃচ্ছং পুঁল্রদারাদীন তৈরুক্তোহহং রঘ্ভম।
পাপং তবৈব তৎসর্বিং বয়ং তু কলভাগিনঃ ॥৭৪॥
তচ্ছুত্বা জাতনির্কোদো বিচার্য্য পুনরাগমং।
মুনয়ো যত্র তিষ্ঠন্তি করুণাপুর্ণমানসাঃ ॥৭৫॥
মুনীনাং দর্শনাদেব শুদ্ধান্তঃকরণোহমবং।
ধল্রাদীন পরিত্যজ্য দশুবৎপতিতোহস্মাহং॥৭৬॥
রক্ষধং মাৎ মুনিশ্রেষ্ঠা গচ্ছন্তং নিরয়ার্ণবং।
ইত্যগ্রে পতিতং দৃষ্ট্য মামুচুর্য্য নিসন্তমাঃ ॥৭৭॥

উত্তি ঠিতি ঠিত তথং তে সকলঃ সৎসমাগমঃ।
উপদেশ্যামহে ভূতাং কিঞ্চিতেনৈব মোক্যাসে।
পরস্পারং সমালোচ্য দুর তোইয়ং দ্বিজাধমঃ॥৭৮॥
উপেক্ষ্য এব সদ্র তৈত্তথাইপি শরণং গতঃ।
রক্ষণীয়ঃ প্রয়েছেন মোক্ষমার্গোপদেশতঃ॥৭৯॥
ইত্যুক্ত্যা রাম তে নাম ব্যতক্ষেক্ষরপূর্বকং।
একাগ্রমনসাত্রৈব মরেতি জপ সর্কালা॥৮০॥
জাগচ্ছামঃ পুনর্যাবভাবলুক্তং সলা জপ।
ইত্যুক্ত্যা প্রয়েছুঃ সর্ব্যে মুন্তা দিব্যদর্শনাঃ॥৮১॥
অহং যথোপদিষ্টং তৈত্তথাইকর্বমঞ্জনা।
জপল্লেকাগ্রমনসা বাহ্যং বিশ্বতবানহ্ম,॥৮২॥
এবং বছতিথে কালে গতে নিশ্চলক্ষিণঃ।
সর্ব্যক্ষবিহীনস্য বল্পীকোইভূন্মমোগরি॥৮৩॥

নিলাকণ বাক্য জ্ঞাবণ করিয়া অতি তৃঃথিতান্তঃকরণে মুনিগণ দানিধানে পুনঃপ্রত্যাগমন করিবা মাত্র তাঁহাদিগৈর দিবারূপ-দানে পুনঃপ্রত্যাগমন করিবা মাত্র তাঁহাদিগের দিবারূপ-দানে গুলাস্তঃকরণ ছইয়া ধমুর্বাণ পরিত্যাগপূর্বক সেই মহাপ্রেষদিগের চরণে পতিত হইলাম এবং বিনয়সহকারে কহিলাম, হে মহর্ষিগণ! আপনারা আমাকে অপার নরকার্থ ইইতে পরিত্রাণ করন। মছ্যিগিণ আমাকে অপার নরকার্থ ইইতে পরিত্রাণ করন। মছ্যিগিণ আমাকে শরণাগত দেখিয়া কহিলেন, গাজোখান কর—তোমার মঙ্গল হইবে—সজ্জনসংস্থ অবগ্রুই স্ফল হইয়া থাকে। হে বৎশ! আমরা তোমাকে কিঞ্চিৎ উপদেশ প্রদান করিব, তদ্বারা পালু হইতে মুক্ত হইবে। অনন্তর মহর্ষিগণ পরস্পর মুখাবলোকন করিয়া কথোপকথন করিছে লাগিলেন, যে এই ব্রাহ্মণাধ্য অতিত্র ত্ত—সম্বৃত্তরাহিশিপের নিতান্ত গুণার পাত্র—কিন্তু শরণাপন্ন হইয়াছে, স্কুতরাং বিশক্ষমার্গোপদেশ হারা ইহাকে রক্ষা করিতে হইবে। ৭৫।

। ৭৬ বে ৭৭ । ৭৮ । ৭৯ । হে রাম ! অনস্তর মহর্ষি গণ আমাকে তোমার নামাক্ষর বিপর্যার করিয়া জপ করিতে অমুমতি করিয়া করিলেন—যে কালপর্যান্ত আমরা এস্থানে প্নঃপ্রত্যাগমন না করিব, তাবৎকাল তুমি এই মরাশন্দ সতত জপ করিবে, দিবা দর্শন ঋষিগণ আমাকে এইরূপ আদেশ করিয়া গমন করিলেন। আমিও বাহাজ্ঞান রহিত হইয়া মহর্ষি গণের উপ-দেশামুরূপ জপ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম । ৮০ । ৮১ । ৮২ । এই প্রকারে বহুকাল অতীত হইলে আমার নিঃদঙ্গ ও নিক্ষল দেহের উপবিভাগে রহৎ বলীক উৎপত্র ছইল, ক্রমশঃ যুগ্সহত্র অতীত হইলে ঋষিগণ সেই স্থানে প্রক্রপন্থিত হইয়া, বংস ! গাজোখান কর, এই শন্দোচারণ করিয়া আমাকে আহ্বান করিলেন। অনস্তর স্থাদেব নীহার হইতে নির্গত হইয়া যেরূপ স্প্রকাশিত হন আমিও তক্তপ ঋষিগণের প্রশাস্ত

ততো যুগদহস্রান্তে ঋষয়ঃ পুনরাগমন্।
মামুচুর্নিম্ন্রেতি তচ্ছুড়া তুর্নমুখিতঃ ॥৮৪॥
বল্মীকান্নির্গতশ্চাহং নীহারাদিব ভাক্ষরঃ।
মমাপ্যান্থর্মুনিগণা বাল্মীকিন্তুং মুনীশ্ব ॥৮৫॥
বল্মীকাৎ সন্তবো যম্মাৎ তিদ্বীয়ং জম্মতেইভবৎ।
ইতুক্ত্যো তে যযুর্দিব্যগতিং রযুকুলোভম ॥৮৬॥
অহং তে রামনামশ্চ প্রভাবাদীদৃশোইভবম্।
অদ্য সাক্ষাৎপ্রপশ্যামি স্পীতং লক্ষ্মণেন চ ॥৮৭
রামং রাজীবপত্রাক্ষং ডামুক্তো নাত্র সংশয়ঃ।
আগচ্ছ রাম। ভত্তং তে স্থলং বৈদর্শরাম্যুহং ॥৮৮

ভানাকে দেখিয়া কহিলেন, মহরে । যেহেতু বলীক হইতে ােমার পুনর্জন হইল, জ্বত্তৰ অদ্যপ্রত্যুক্ত তােমার বালীকি এই দার্থক নাম হইল, মহর্ষিগণ আমাকে এইরূপ আদেশ করিয়া আকাশমার্দে গমন করিলেন। হে রাম! আমি তােমারই রাম নাম প্রভাবে ঈদৃশাবস্থা প্রাপ্ত হইয়াছি, সে বাহা হউক অদ্য দীতা ও লক্ষণের সহিত তােমাকে প্রত্যক্ষ করিয়া নিশ্চয়ই নজিলাভ করিলাম। হে দাশরথে। এয়ানে আগমন কর, ভােমার মক্ষল হইবে। আমি ভােমার মনাভাই বাদস্থান প্রদান করিছে। বাল্মীকি এই দকল বিনয় বাক্যম্বারা প্রীরামের দ্বােবােৎ পাদন করিয়া শিব্যগণ ও লক্ষ্মণ সম্ভিব্যাহারে ভাগীনরণী ও পর্ব্বত উভয়ের মধ্যভূমিতে গমন করিলেন এবং লক্ষ্মণের জ্বিজ্ঞারাক্ষাহের মহার্ষি বাল্মীকি দেই স্থানে পর্বত নিবাসী ভিল্ল ভাতিযারা একটা পর্ণশালা ও পূর্ব্ব পশ্চিম বিত্তীর্ণ একটা বাস ভবন এবং উত্তর দক্ষিণ বিত্তীর্ণ অপর বাদ ভবন একটা প্রস্তুত্ত করাইলেন, দেবােগম প্রীরাম স্কানকী ওলক্ষ্মণের সহিত সেই

এবমুক্ত্যা মুনিং জ্ঞীমালক্ষণেন সমস্বিতঃ ।
শিষ্যৈং পরিরতো গড়া মধ্যে পর্বভগক্ষােঃ ॥৮৯॥
তত্ত্র শালাং সুবিস্তীর্ণাং কারয়ামাস বাসভুঃ!
প্রাক্পশ্চিমং দক্ষিণােদক শোক্তনং মন্দিরদ্বয়ং ॥
জানক্যা সহিতো রামাে লক্ষণেন সমস্বিতঃ।
তত্ত্ব তে দেবসদৃশা হ্যবসন ভবনোত্তমে ॥৯১॥

বাল্মীকিনা তত্ত্ব স্থপুজিতোহয়ং রামঃ সদীতঃ দহ লক্ষণেন। দেবৈৰ্ম্মুনীল্ডৈঃ দহিতো মুদান্তে স্বৰ্গে যথা দেবপতিঃ দশচ্যা ॥৯২॥

ইতি জ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে
অযোধ্যাকাতে যতেগিহধ্যায়ঃ।

ভবনে বাস করিতে লাগিলেন ৷ ৮৩ | ৮৪ |৮৫ |৮৬ |৮৭ |৮৮ |৮৯ ৷
১০ ৷১১ | দেবরাজ শেরপ স্বর্গধামে শচী ও দেবগণের সহিত বাস করেন শ্রীরামচক্র বালীকি কর্তৃক পূজিত হইরা সীতা লক্ষ্মণ ও মুনিগণ সমভিব্যাহারে সেই রূপে অবস্থিতি করিতে লাগিলেন ৷ ৯২ ৷

रेडि वीमन्धात्राचात्रामात्रत डेमामरङ्ख्यमचारम व्यवसामकात्व वरहाश्यामः ।

मश्रुरमा २ था सह

সুমন্ত্রাহিপি তদাহযোধ্যাং দিনান্তে প্রবিবেশ হ।
বিস্তেপ মুখমাচছাদ্য বাষ্পাকুলিতলোচনঃ॥ ১॥
বহিরের রথং স্থাপ্য রাজ্ঞানং দ্রুই মাযযোঁ।
জয়শব্দেন রাজ্ঞানং স্তত্ত্বা তং প্রণনাম হ॥ ২॥
তত্তো রাজ্ঞা নমস্তং তং সুমন্ত্রং বিদ্ধলোহত্রবীৎ।
সুমন্ত্র! রামঃ কুত্রান্তে সীতয়া লক্ষণেন চ॥ ৩॥
কুত্র ত্যক্তব্রয়া রামঃ কিং মাং পাপিনমত্রবীৎ।
দীতা বা লক্ষণো বাপি নির্দিয়ং মাং কিমত্রবীৎ॥
হা রাম! হা গুণনিধে! হা সীতে! প্রিয়বাদিনি।
দুংখার্পবে নিময়ং মাং শ্রেয়মাণং ন পশ্যদি॥৫॥

বিলপ্যিবং চিরং রাজা নিমশ্যে দুংখনাগরে।
এবং মন্ত্রী রুদন্তং তং প্রাঞ্জলির্কাক্যমন্ত্রবীৎ।।৬'
রামঃ দীতা চ দোমিত্রির্ময়া নীতা রথেন তে।
শৃক্ষিবেরপুরাভ্যাদে গঙ্গাকুলে ব্যবস্থিতাঃ।।৭।।
গুহেন কিঞ্চিলানীতং কলমূলাদিকং চ যৎ।
স্পৃষ্ট্রী হন্তেন সম্প্রীত্যা নাগ্রহীদ্বিদসর্জ তং ॥৮॥
বটক্ষীরং দমানাযা গুহেন রমুনন্দনঃ।
ক্রটামুকুটমাবধ্য মামাহ নূপতে। স্বরুম্ ॥৯॥
সুমস্ত্র! ক্রহি রাজানং শোকস্থেইস্তু ন মৎকুতে।
সাকেতাদধিকং সৌধ্যং বিপিনে নোভবিষ্যতি॥১০

এদিকে সন্ধ্যাসময়ে রোক্ষ্যমান স্থান্ত ব্যাঞ্চল্যারা মুথাচ্ছাদন করিয়া বাম্পাকুলিত লোচনে অযোধ্যানগরে প্রবেশ
করিলেন। অনস্তর বহির্দেশে রথ রক্ষা করিয়া রাজ্যদর্শনার্থ
অন্ত:পুরুমধ্যে গমন করিলেন। রাজ ভবন প্রবেশানস্তর জয়
শব্দ উচ্চারণ করিয়া রাজ্যাকে প্রণাম করিলেন। রাজা দশারথ
প্রণত স্থান্তকে অবলোকন করিয়া বিহ্বলাস্ত:করণে কহিলেন,
হে স্থান্ত শ্রীরাম সীতা ও লক্ষ্মণ কোথায় আছেন, কোন বনে
বা ভাহাদিগকে পরিত্যায়া করিলে? শ্রীরামচক্র প্রভৃতি এই
মহাপাতকী পিতাকে কি বলিয়াছেন
থ রাজা এই কথা বলিতে
বলিতে হা রাম! হা গুণনিধে! হাপ্রিয়বাদিনি সীতে। আমি
হংখাণবে নিমন্ন হইয়া শ্রিয়মাণ হইয়াছি ভোমরা একবার অবলোকন কর, এই প্রকার বছ বিলাপ করিতে আরম্ভ করিলেন।
স্থান্ত করিয়া শৃদ্ধবের নগর সমীপ্রতী গ্লাভীরে উপস্থিত
রপ চালা করিয়া শৃদ্ধবের নগর সমীপ্রতী গ্লাভীরে উপস্থিত

হইয়াছিলাম, সেই স্থানে শ্রীরাম সীতা ও লক্ষণ রথ হইতে অবতরণ করিরা বিশ্রাম করিছে আরম্ভ করিলেন, ঐ সমর চণ্ডালাধিপতি গুহক ফলম্লাদি আনমন করিয়া পরম ভক্তিসহকারে ভোজনার্থ তাঁহাদিগকে অর্পণ করিলেন, শ্রীরাম পরম শ্রীতি লাভ করিয়া ঐ ফলমূলাদি স্পর্শ করিলেন, কিন্তু ভোজন করিলেন না । ১ । ২ । ৩ । ৪ । ৫ । ৩ । १ । ৮ । অনস্বর্ধ গুহকের মারা বটক্ষীর আনমন করাইয়া শ্রীরাম ও লক্ষণ জটামুকুট বন্ধন করিলেন এবং আমাকে অমুমতি করিলেন—হে স্থমন্ত্র ! তুমি অযোধ্যায় গমন করিয়া মহারাজকে কহিবে, বে তিনি আমার নিমিত্ত শোকাকুল না হন । বন মধ্যে আমার অযোধ্যায় বাদ অপেকা অধিকতর স্থথ হইবে এবং মাতা কৌশল্যাকে আমার প্রণাম জানাইয়া বলিবে, তিনি আমার নিমিত্ত শোকার্তা না হন । তুমিও শোক-সন্তপ্ত-বৃদ্ধ পিতাকে

মাতুর্মে বন্দনং ক্রহি শোকং ত্যক্ত মৎক্তে।
আশাসয়তুরাজানং ব্লহং শোকপরিপ্লুতম্ ।।১॥
সীতা চাশ্রুপরীতাক্ষী মামাহ নৃপসত্তম।
তৃংখগদ্গদয়া বাচা রামং কিঞ্চিদবেক্ষতী ।।১২॥
সাফাক্ষং প্রনিপাতং যে ক্রহি শ্বশ্রোঃ পদামুজে।
ইতি প্রক্রদতী সীতা গতা কিঞ্চিদবাজাখী ॥১৩॥
ততন্তেইশ্রুপরীতাক্ষা নাবমাক্রক্তন্তদা ।
যাবদাসাং সমৃত্তীর্য্য গতান্তাবদহং স্থিতঃ ॥১৪॥
ততো তৃংখেন মহতা পুনরেবাহমাগতঃ ।
ততো ক্রদতী কৌশল্যা রাজানমিদমত্রবীৎ ॥১৫॥
কৈকেব্যা প্রিয়ভার্যায়ে প্রসন্মো দত্তবান্ বরম্ ।
ত্বং রাজ্যং দেহি তল্যের মৎপুল্রং কিং বিবাসিতঃ॥

কৃত্বা ত্থাবে তৎদর্বমিদানীং কিং মু রোদিবি ?
কৌশল্যা বচনং শ্রুত্বা ক্ষতে স্পৃষ্ট ইবাগ্নিনা ॥২৭॥
পুনঃ শোকাশ্রুপ্র্লক্ষ্ট কৌশল্যামিদমন্ত্রবীৎ।
তৃঃখেন দ্রিয়মাণং মাং কিং পুনতু থেয়স্যলম্ ॥১৮॥
ইদানীমের মে প্রাণা উৎক্রমিষ্যন্তি নিশ্চয়ঃ।
শপ্তোহহং বাল্যভাবেন কেনচিন্মুনিনা পুরা ॥১৯॥
পুরাহহং যৌবনে দৃপ্তশ্চাপবাণধরো নিশি।
অচরং মৃগয়াসক্তো নদ্যান্তীরে মহাবনে ॥২০॥
তত্তা ক্রিরাত্রসময়ে মুনিঃ কশ্চিত্বাদিতঃ।
পিপাসাহদিতয়োঃ পিত্রোর্জলমানেতুমুদ্যতঃ।
অপ্রয়্জ্জলে কুন্তং তদা শক্ষোহ্তবন্মহান্॥২১॥

শ্বরং আখাদ বাকাছারা আশাদিত করিবে। ৯'১০।১১। অনস্তর প্রজল নরনা জানকী প্রীরামের প্রতি কিঞ্চিল্টিপাত করিয়া এথ মিপ্রিভ গদগদবচনে আমাকে কহিলেন, আর্যা! আপনি শ্বন্ধর ও শ্বন্ধর চরণযুগলে আমার দাটাল্ল প্রণাম জানাইবেন—
সম্পূর্ণরূপে বাক্য সমাপ্তি না হইতেই রোদন করিয়া জানকী অধামুখী হইলেন। অনস্তর সকলে রোদন করিছে করিতে নাকায় আরোহণ করিলেন, যাবৎকালপর্যন্ত তাঁহারা ভাগীরখী পরকুলে উত্তীর্ণ না হইলেন ভাবৎকাল আমি সেই স্থানে দণ্ডারমান হইরা অনিমেধলোচনে তাঁহাদিল্যের প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে লাগিলাম, তাঁহারা দর্শন পথ অতীত হইলে ছতালা ইয়া প্রত্যাগমন করিয়াছি। কেশিল্যা স্থমন্ত্রের বাক্য প্রবণানন্তর্ব উচ্চেঃস্বরে রোদন করিয়া রাজাকে কহিলেন—মহারাজ! আপনি প্রসন্ম ছইয়া কৈকেয়ীকে বর প্রদান করিয়াছেন।
ভাল, তাঁহাকে সমস্ত রাজ্যই প্রদান ককন—আমার রামকে কি কারণে বনবাসী করিলেন? হে প্রভো! আপনি এই

সকল অনর্থের নিদান হইয়া কি হেতু রোদন করিতেছেন?
শক্তাঘাত জনিত ত্রণ-বিবরে অগ্নিম্পর্শ ইইলে যে রূপ যন্ত্রণা
উপস্থিত হয়, রাজা দশরথ কোশল্যাবাক্যে তাদৃশ যন্ত্রণাগ্রন্থ হইয়া শোকাঞ্জপূর্ণলোচনে দৃষ্টিপাত করত কৌশল্যাকে
কহিলেন, হে প্রিয়ে! আমি স্বতই হুঃখে ত্রিয়মাণ হইয়াছি,
প্নর্ব্রার বাক্শল্য দ্বারা আমাকে রুখা ছুঃখিত করিতেছ—
আমার জীবন এইক্ষণে নির্গত হইবে নিশ্চয় জানিয়াছি।
পূর্বকালে এক জন ঋষিকুমার আমাকে অভিসম্পাত করিয়াছিলেন, বোধ করি সেই শাপ এতদিনে ফলোমুখী হইল—
অভিশাপের কারণ কহিতেছি প্রবণ কর।—

একদা রাজিকালে আমি যোবনমদোন্ত হইয়া ধনুর্বাণ ধারণ পূর্বক মৃগয়োদ্দেশে মহাবন সংকূল নদীতীরে জমণ করিতেছিলাম, অর্দ্ধাক্র সময়ে কোন ঋষিকুমার পিপাসাতৃর রহ্ম পিতা ও মাতার নিমিত্ত জলানয়নাখী হইয়া জলমধো কৃত্ত-পূরণ করিতেছিলেন, তৎকালে কুন্তপূরণ-জনিত গল্ভীর শব্দ গঙ্গঃ পিবতি পানীরমিতি মত্বা মহানিশি।
বাণং ধনুষি সংধায় শব্দবেধিনমক্ষিপম্।।২২।
হা হতোহস্মীতি তত্ত্ৰাভূচ্ছব্দো মান্ত্ৰস্কৃতকঃ।
কল্যাপি ন কৃত্যো দোষো ময়া কেন হতো বিধে!
প্রতীক্ষতে মাং মাতা চ পিতা চ জলকাজ্জয়া।
তচ্ছুত্বা ভয়সন্ত্রস্তত্তোহহং পৌরুষং বচঃ।।২৪।।
শনৈর্গত্বাহ্থ তৎপার্খং স্বামিন্! দশর্থোহ্ম্যহং
অজানতা ময়া বিদ্মন্ত্রাভূমহ্লি মাং মুনে!।।২৫।।
ইত্যুক্ত্বা পাদয়োস্তল্য পভিতো গদ্গদাক্ষরঃ।
তদা মামাহ ল মুনির্মাতেষীন্ প্রত্রম!।২৬।।
ব্রহ্মহত্যা স্পৃশেন্ন তাং বৈশ্যোহহং তপ্লি স্থিতঃ।
পিতরৌ মাংপ্রতীক্ষেতে ক্ষুত্ত্ভ্যাংপরিপীড়িতৌ॥

উৎপত্ন হওয়াতে হস্তিক্কত জলপানের শব্দ-ভ্রম জব্মিল, আমি
ধরুতে শব্দ-ভেদী বাণ নিয়োজিত করিয়া ঐ শব্দানুসারে
পরিত্যাগ করিলাম। অনস্তর, 'হা হতোল্মি' ইত্যাকার শব্দ
ভ্রুবণ করিয়া মনুষ্য জ্ঞান করিলাম। ঋষিকুমার আহত হইয়া
কাতর স্বরে কহিলেন, হা বিধাতঃ! আমি কাহারও নিকট
কোন অপরাধ করি নাই, আমাকে বিনাদোষে কোন্ ব্যক্তি
নষ্ট করিল; রন্ধ পিতা ও মাতা পিপাসাতুর হইয়া আমার
পর্থনিরীক্ষণ করিয়া আছেন।১৭।১৮। ১৯।২০।২১।২২।
১২০।২৪। ২৫।২৬। আমি তাদৃশ কাতর বচন শ্রবণানতর সভয় হদয়ে শনৈঃ শনিঃ ঋষিকুমারের পার্শ্ব দেশে উপক্রিত হইয়া কহিলাম, হে প্রভো! আমি রাজা দশরধ—
অজানবশতঃ এই অকার্যা করিয়াছি—আমাকে ক্রমা করিতে
হইবে। অনন্তর ঋষিকুমার আমাকে নিজ্কচরণ যুগলে পতিতও রোক্লামান দেখিয়া কহিলেন, হে স্পতি শ্রেষ্ঠ! তুমি
ভীত হইও না—আমি বৈশ্য-সন্তান, অতএব ব্রক্ষ হত্যা জানিত

তরোস্তম্দকং দেহি শীঘুমেবাবিচাররন্।
ন চেল্বাং ভস্মসাৎকুর্য্যাৎপিতা মেযদিকুপ্যতি॥
জলং দল্পা তু তৌ নত্বা ক্কতং সর্বাং নিবেদয়।
শল্যমুদ্ধর মে দেহাৎপ্রাণাংস্ত্যক্ষ্যামি পীড়িতঃ॥
ইত্যক্তো মুনিনা শীঘুং বাণমুৎপাদ্য দেহতঃ।
সঙ্গলং কলশং ধৃত্বা গতোহহং যত্ত্র দম্পতী।।৩০।।
অতিরদ্ধাবন্ধদৃশৌ কুৎপিপাসার্দিতৌ নিশি।
নায়াতি সলিলং গৃহ্য পুত্রঃ কিম্বাহত্ত কারণম্।।৩১
অনন্যগতিকৌ রক্ষৌ শোচ্যৌ তৃট পরিপীড়িতৌ।
আবামুপেক্ষতে কিমা ভক্তিমানাবয়োঃ স্ততঃ।।৩২॥
ইতি চিন্তাব্যাকুলো তৌ মৎপাদন্যাসজং ধনিং।
গ্রুত্বা প্রাহ্ পিতা পুত্র! কিং বিলম্বঃ ক্কতন্ত্বয়া॥৩৩

পাপে তুমি কলুষিত হইবে না। কিন্তু রুদ্ধ পিতা ও মাতা পিপাসাতুর হইয়া আমার প্রতীক্ষা করিতেছেন—তুমি জল প্রদান করিয়া তাঁহাদিগের প্রাণদান কর, নচেৎ তাঁহারা কুপিত ছইয়া তোমাকে ভন্মসাৎ করিবেন। হে মহারাজ ! ভুমি জলপ্রদানপূর্বক ভাঁহাদিগকে নমস্কার করিয়া আতা ক্রত-কার্য্য নিবেদন কর, তাহা হইলে অজ্ঞানক্কত পাপ হইতে নিকৃতি পাইবে। হে মহারাজ! আমার হৃদর হইতে শলা উদ্ধার কর, আমি প্রাণভাাগ করি—বহুকাল যুত্ত্বণা সঞ করিতে পারি না ।২৭।২৮।২৯৷ অনন্তর আমি মুনিকুমারের দেহ ছইতে বাণ উত্তোলন করিয়া জলপূর্ণ কলস গ্রাহণ পুর্বাক দেই রন্ধ ও পিশাদাত্র অজদম্পতীর নিকট গমন করিয়া তাঁছাদিগের কথোপকখন শ্রবণ করিলাম যে, 'কি ছেত বৎস জল লইরা এখন পর্য্যন্ত আগমন করিল না।' অন্যান্য গতিক শোচনীয় দশাগ্রস্থ পিপাদাভূর ও রন্ধতম পিতা मां जारक कि जेर शका कित्रल ? ना-कथन है अत्रथ हहेरव ना-যেহেতু বৎস আমাদের অতিভক্ত ও ধার্মিক। অনন্তর আমার পাদবিক্ষেপ জনিত শব্দ অবণ করিয়া ব্যাকুলান্তঃকরণে

দেহ্যাবয়োঃ স্থপানীয়ং পিব ত্মপি পুত্রক !।
ইত্যেবং লপতোর্ভোত্যা সকাশগমনং শনৈঃ ॥৬৪॥
পাদয়োঃ প্রণিপত্যাহমক্রবং বিনয়াম্বিতঃ ।
নাহং পুত্রস্থরোধ্যায়া রাজা দশরথোহস্মহেং ॥৩৫
পাপোহহং মৃগয়াসক্রো রাত্রৌ মৃগবিহিংসকঃ ।
জলাবতারাদ্রেইংং স্থিত্বা জলগতং ধনিম্॥৬৬
শুত্রাহং শন্বেধিত্বাদেকং বাণমথাত্যজম্ ।
হত্যেহস্মীতি ধনিং শুত্রা ভয়াতত্রাহ্মাগতঃ ॥৬৭॥
জটাবিকীর্য্য পতিতং দৃষ্ট্রাহং মুনিদারকং ।
ভীতোগৃহীত্বা তৎপাদে রক্ষ রক্ষেতি চাক্রবং ।৬৮

মা ভৈষীরিতি মাং প্রাহ্ ব্রহ্মহত্যাভয়ং ন তে।
মৎপিত্রোঃ দলিলং দল্ধা নত্বা প্রার্থয় জীবিতম্ ॥
ইত্যুক্তো মুনিনা তেন হ্যাগতো মুনিহিংদকঃ।
রক্ষেতাং মাং দয়াযুক্তো যুবাং হি শরণাগতম্ ॥
ইতি শ্রুতা তু দুংখার্ত্তো বিলপ্য বছশোচ্য তং।
পতিতো নো স্রতো যত্র নয় তত্রাবিলয়য়ন্ ॥ ৪১॥
ততাে নীতো স্লভাে যত্র ময়া তে রহ্মদশতী।
স্পৃষ্ঠা স্বতং তাে হস্তাভ্যাং বছশােহথ বিলেপতৃঃ॥
হা হেতি ক্রন্দমানৌ তাে পুত্র পুত্রেভ্যবােচতাম্।
জলং দেহীতি পুত্রেতি কিমর্থং ন দদাস্যলম্ ।।৪৩

র্দ্দদম্পতী কহিলেন, হে প্লু! তুমি কি হেতু জল আনয়নে বিলম্ করিলে, যাহা হউক একণে আমাদিগকে জলপ্রদান করিয়া অবশিষ্ট জল স্বয়ং পান কর। আমি তাঁহাদিগের সক্তন কাত্রোক্তি শ্রবণানস্তর ভীত ও হুঃখিত হইয়া পাদ-দ্বাহে নিপ্তিভ হইলাম এবং বিনীত সহকারে কহিলাম. হে মহাত্মন্ আমি আপনাদিগের পুত্র নহি, অযোধ্যাধি-পতি দশরথ আমার নাম, আমি অতি পাপকার্য্য করিয়াছি— ক্ষমা করিতে হইবে—অদ্য রজনীতে মৃগয়াশক্ত হইরা মৃগ-বধাভিপ্রায়ে জলাবভারের কিয়দ্ধে ভ্রমণ করিভেছি, এমন সময়ে জলমধ্যে শব্দ শ্ৰবণ করিলাম। জল পানার্থ সমাগভ মূগের শব্দ ভ্রম হওয়ায় আমি ঐ শব্দানুসারে শব্দবেধি বাণ পরিত্যাগ করিবামাত্র 'হা হতোন্মি' এই প্রকার মন্মভেদী শব্দ কর্ণগোচর করিলাম, পরম ভীতি সহকারে জলাবভারে উপস্থিত হইয়া দেখিলাম, একটী ঋষিবালক আলুলায়িতকেশে ভূমি-শ্যাায় শ্যান রহিয়াছেন। অনস্তর আমি পরম ভীতি সহকারে তাঁহার পাদগ্রহণপূর্ব্ব ক নিজ নিরপরাধিতা প্রকাশ क्तिया क्रमा धार्थना क्तिनाम। शत्म नत्रामत्र मूनियानक

কহিলেন—তোমার ভয় নাই—ব্রহ্মহত্যা-জনিত-পাপে কলুবিত হইবে না। কিন্তু আমার পিতা ও মাতাকে জলপ্রদানানন্তর নমস্কার করিয়া নিজ জীবন প্রার্থনা করিবেন। ৩০ ।৩১।
। ৩২ । ৩০ । ৩৪ । ৩৫ । ৩৬ । ৩৭ । ৩৮ । ৩৯ । হে মুনে ।
আমি দেই মুনিঘাতি নরাধ্য—খ্যকুমারের বাক্যানুসারে
আগমন করিয়াছি—দয়াপ্রকাশ পূর্বক শরণাগত বিবেচনা
করিয়া আমাকে রক্ষা কর্ফন। অন্ধমুনি-দম্পতী আমার বাক্য
শ্রেবণানন্তর শোকসহকারে বহুতর বিলাপ করিয়া আমাকে
কহিলেন, দশরথ! সেই আমাদিগের প্রিয়তম সন্তান যে স্থানে
পতিত আছে এইক্ষণে আমাদিগের প্রয়তম সন্তান যে স্থানে
পতিত আছে এইক্ষণে আমাদিগের কেই স্থানে লইয়া চল—
আমিও তাঁহাদিগের আদেশে তদত্তই অন্ধনম্পতীকে জলাবতারে আনয়ন করিলাম। অনতর তাঁহারা ভূমি পতিত মৃত
সন্তানকে হন্ডদারা স্পর্শ করিয়া—হা পুত্র, হা পুত্র! ভূমি আমাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া কোথায় গমন করিলে—জল প্রদান
করিয়া আমাদিগকে পরিত্প্র কর, হা বৎস ! কি হেতু বিলম্ব

ততো মামূচতুঃ শীঘুং চিতিং রচয় ভূপতে।
ময়া তদৈব রচিতা চিতিস্তত্র নিবেশিতাঃ।
ত্রয়ত্রাগ্লিরুৎসৃষ্টো দক্ষাস্তে ত্রিদিবং যযুঃ ॥৪৪॥
তত্র রদ্ধঃ পিতা আহ স্ব্যপ্যেবং ভবিষ্যাস।
পুল্রশোকেন মরণং প্রাপ্যাসে বচনাম্ম। ৪৫॥
স ইদানীং মম প্রাপ্তা শাপকালোহনিবারিতঃ।
ইত্যুক্ত্রা বিললাপাথ রাজা শোক সমাকুলঃ ॥৪৬॥
হা রাম! পুল্ল! হা সীতে! হা লক্ষ্মণ! গুণাকর।
স্বিয়োগাদহং প্রাপ্তো মৃত্যুং কৈকেয়িসম্ভবং ॥৪৭
বদম্বেং দশর্থঃ প্রাণাংস্ত্যক্ত্রা দিবং গভঃ।
কৌশল্যা চ স্থমিত্রা চ তথান্যা রাজ্যোবিতঃ ॥৪৮॥

চুক্র ভূশ্চ বিলেপুশ্চ উরস্তাড়ন পূর্ব্বকং।
বিশিষ্ঠঃ প্রথমী তত্ত প্রাতর্মন্তিভিরারতঃ ।৪৯॥
তৈলদ্যোণ্যাং দশরথং কিপ্তা দূতান্থাত্রবীং।
গচ্ছত দ্বিতং সাশা যুধাজিয়গরং প্রতি ॥৫০॥
তত্তাস্তে ভরতঃ শ্রীমান্ শক্রম্ম সহিতঃ প্রভুঃ।
উচ্যতাং ভরতঃ শীঘুমাগচ্ছেতি মমাজ্রমা ॥৫॥।
অযোধ্যাং প্রতি রাজানং কৈকেরীং চাপি পশ্যতু।
ইত্যুক্তা স্থবিতং দূতা গড়া ভরতমাতুলং ॥৫২॥
যুধাজিতং প্রণম্যোচুর্ভরতং সামুক্তং প্রতি।
বশিষ্ঠস্থাত্রবীদ্রাজনং। ভরতঃ সামুক্তঃ প্রভুঃ ॥৫৩॥

করিতেছ ? এইরপ বহুতর বিশাপ করিয়া আমাকে কছিলেন, ছে মহারাজ! অতি সত্ত্বর আপনি চিতা প্রস্তুত করুন। তাঁহাদিগের কথানুসারে আমি তৎক্ষণাৎ চিতা প্রস্তুত করিলাম,
রন্ধদম্পতী মৃতপুত্রকে ক্রোড়ে করিয়া চিতা-শয়নাস্তে আমাকে
কহিলেন, ছে মহারাজ! 'তোমারও আমাদিগের ন্যায়
পুত্রশোকে মরণ হইবে,' যাহা হউক, এক্ষণে চিতাতে অগ্নি
প্রদান কর, আমিও সেইক্ষণে চিতানল প্রজ্জলিত করিলাম।
অনন্তর তাঁহারা সকলে চিতানলদম্ম হইয়া স্বর্গারোহণ করিলেন। ৪০।৪১।৪২।৪০।৪৪। ৪৫। এক্ষণে আমার
দেই শাপ সময় উপস্থিত—নিশ্চয়ই পুত্র শোকে মরণ হইবে।
শোকাকুল রাজা দশরথ এই প্রকার বহু বিশাপানন্তর, হা
রাম, হা পুত্র, হা সীতে, হা লক্ষ্মণ গুণাকর, ভোমাদিগের
বিরহে আমার প্রাণ বিয়োগ হইল। রাক্ষদী কৈকেরী এই
সকল অনর্থের কারণ হইয়াছে, এই কথা বলিয়া প্রানত্যাগ
পূর্বক স্বর্গ গমন করিলেন।

কোশল্যা অমিত্রা প্রভৃতি রাজমহিবীগণ মহারাজের

মৃত্যু দর্শনে বক্ষঃস্থল তাড়ন করিয়া উচ্চৈঃস্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। অনন্তর প্রদিন প্রাতঃকালে বশিষ্ঠ-দেব কতিপয় মন্ত্রিগণের সহিত অন্তঃপুর মধ্যে করিয়া মৃত্রাজনেছ তৈল জোণীতে নিক্ষেপ করিতে আদেশ ক্রিলেন এবং দূভগণকে আহ্বান করিয়া কছিলেন, ছে দূতগণ! তোমরা অতি সত্ত্ব অশ্বারোহণ পূর্বক যুধাজি-ন্নগবে গমর্ন করিয়া ভরতকে আমার আজানুসারে কহিবে যে, তুমি সত্তর অযোধাার আগমন করিয়া রাজা ও কৈকেরীকে দর্শন কর। অনন্তর বশিষ্ঠদেবের আজ্ঞানুসারে দূত্রণণ জতবেণে যুধাজিনগরে গমন করিয়া ভরভ্মাতুল যুধাজিৎ ভরত ও শক্রমকে প্রণামানন্তর কহিলেন, দেব! বশিষ্ঠদেব আজা করিয়াছেন যে, শত্রুষ্ম সহিত রাজকুমার ভরতের অতি দত্তর অযোধ্যায় আগমন করিতে ছইবে! ভরত বশিষ্ঠদেবের আজ্ঞা শ্রবণে অতি ভীত ছইয়া মাতুলাদি-গুৰুজনের অনুমতি গ্ৰছণ পূৰ্ব্বক শক্তম সমভিব্যা-হারে অবোধ্যাভিমুখে গমন করত পথিমধ্যে মহারাজের ও শ্রীরামের সন্থন্ধে বহুতর অনিষ্ট চিন্তা করিতে লাগিলেন।

শীব্রাগন্ততু পুরীমবোধ্যামবিচারয়ন্।
ইত্যাজ্ঞপ্তোহথ ভরতস্থাবিতং ভরবিহ্বলঃ। ৫৪।!
আববৌ গুরুণাদিন্টঃ সহ দৃতৈস্ত সামুজঃ।
রাজ্ঞো বা রাঘ্যসাপে দুঃখং কিঞ্চিদুপস্থিতং। ৫৫।
ইতিচিন্তাপরো মার্গে চিন্তুয়নগরং যযৌ।
নগরং ভ্রতলক্ষীকং জনসম্বাধ্যক্তিং।৫৬॥
উৎসবৈশ্চ পরিত্যক্তং দৃষ্ট্য চিন্তাপরোহভবৎ।
প্রাবিশ্য রাজভবনং রাজলক্ষীবিবর্জিতং।৫৭॥
অপশ্যৎকৈকয়ী তত্ত একামেবাসনেস্থিতাম্।
ননাম শিরসা পাদে মাতুভ ক্রিসমন্তিঃ।৫৮॥
আগতং ভরতং দৃষ্টা কৈকেয়ী প্রেমসম্ভ্রমাৎ।
দুখায়ালিস্ক্য রভ্না স্বাস্থেমারোপ্য সংস্থিতা॥৫৯॥

নিয়ৎক্ষণ পরে অযোধার উপস্থিত হইর: নগর প্রবেশ সময়ে নানাবিধ উৎসব রহিত নগরের পূর্বশোভা অব-লোকন না করিয়া পুনর্বগর অতি চিন্তিত হইলেন। অন-তুর পূর্বশোভাবিরহিত রাজ ভবনে প্রবেশ করিবামাত্র কাকিনী আসননাপবিন্তা কৈকেষীকে দর্শন করিয়া ভক্তি-পূর্বক জননীর চরণে প্রণাম করিলেন। ৪৬ '৪৭। ৪৮। ১৯৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫০ ' ৫৪। ৫৫ ' ৫৬। ৫৭। ৫৮। কেকেষী সনাগত ভরতকে দর্শনানন্তর সম্লেচ সমালিক্ষন করিয়া নিজ্প্রেল্ড সংস্থাপন কবিলেন। কিয়ৎক্ষণ পরে নস্তকাস্থান করিয়া নিজ পিতৃক্লের মঙ্গল জিজ্ঞাসা করিলেন, হে বৎস! আমার পিতা মাতা ও লাতা সকলে কুশলে আছেন ত? হে পুল্ল! অদ্যাবহুভাগো ভোমাকে কুশলী দেখি-লাম। অনন্তর ভরত কৈকেয়ী বাক্যের প্রভাত্তর প্রদান না করিয়া চিন্তাকুলাতঃকরণে জননীকে সয়ং জিজ্ঞাসা করি-লেন—মাতঃ! আমাদিগের পিতা কোন্ স্থানে অবস্থিতি মূদ্ধ্যবিদ্যার পপ্রচ্ছ কুশনং স্বকুলস্য সা।
পিতা মে কুশলী ভাতা গাতা চ শুললক্ষণা। ৬০ ।।
দিন্টা ত্মদ্য কুশলী সরা দুন্টোট্সি পুজ্রক!।
ইতি পৃষ্টঃ স ভরতো মাত্রা চিন্তাকুলেন্দির: ১৯১৮
দূর্যানেন মনশা মাতরং সমপ্চ্ছত।
মাহঃ! পিতামে কুত্রাস্তে একা ত্মিহসংক্তি। ১৯১
ত্রা বিনান মে তাতঃ কলাচিত্রসি স্থিতঃ।
ইদানীং দৃশতে নৈব কুত্র ভিষ্ঠতি মে বদ ১৯৩॥
অদৃষ্ট্যা পিতরং মেহদ্য ভরং দুঃখং চ জ্যারতে।
অথাই কৈকরী পুজ্রং কিং দুঃখেন তবান্য! ॥৯০॥
বা গতিধ শ্বশীলনামশ্বমেধাদিয়াজিনাং।
তাং গতিং গতবান্দ্য পিতা তে পিতৃবৎসল! ১৯০৪
তজ্বুলা নিপপাতোর্টাং ভরতঃ শোকবিস্থলঃ।
হা তাত! ক গতোহদি তং তাজ্যামাং রজিনাণবৈ॥
অসমপ্রিব রামার রাজ্জে মাং ক গতোহদি ভো।

করিতেছেন ওমিই বা সামান্যা রমণীর নাায় কি কারণে একাকিনী নির্জন দেবা করিতেছ গুমহারাজ লোমা বাতিরেকে ক্যনই একাকী নির্জন সেবা করিতেন না, এজনে উছিবকে তোমার ভবনে দর্শন না করিছা অভি বাংকল হইয়াছি! মাতং! বিলম্ব করিবেন না পিতা কোন স্থানে আছেন বলিয়া আমাকে নিরুদ্বিশ্ব কর্মন ভাষার অদর্শনে আমার ভয় ও তুংথ উৎপান্ন হইভেছে। কৈকেয়ী কলিলেন, বংসা ভোমার ভ্য়ংথের কারণ কিছুই নাই হে পিতৃবংসল। মহারাজ অর্থান্য বাজক ধার্ম্মিকদিগের সমুচিত সদ্গতি লাভ করিয়াছেন। কে। ৬০। ৬১। ৬২। ৬০। ৬৪। ৬৫। অনন্তর ভরত পিতার শোচনীয় দশা শ্রবণে শোকবিহ্বল ইইয়া সক্রণ রোদন করত বিলাপ করিতে লাগিলেন,—হা তাত, আমাকে

ইতি বিস্তানিতং পুলং পতিতং মুক্তমূর্দ্ধি । ৬৭॥

উপাপ্যামৃদ্ধ্য নয়নে কৈকেরী পুল্রমন্ত্রবীৎ।

সমাশ্বাসি হি ভদ্রং তে সর্কাং সম্পাদিতং ময়া ॥৬৮

তামাহ ভরতন্তাতো ত্রিয়মাণঃ কিমন্ত্রবীৎ।

তমাহ কৈকরী দেবী ভরতং ভরবর্জিতা ॥৬০॥

হা রাম! রাম্সীতেতি লক্ষ্মণেতি পুনঃ পুনঃ।

বিলপ্রের স্থানিরং দেহং ত্যক্তা দিবং য্যৌ॥৭০॥

তামাহ ভরতো হেহ্ম! রামঃ সন্ধিহিতো ন কিং।

তদানীং লক্ষ্মণো বাপি সীতা বা কুত্র তে গতাঃ॥৭১

গুঃসাগেরে বিসর্জন করিলেন!ছা পুত্র বংসল, আমাকে শ্রিরামের হত্তে সমর্পণ না করিয়া কোথায় গমন করিলেন গ্ অনন্তর কৈকেয়ী ভূমিশায়িত আলুলায়িত কেশ ও বিহ্বলান্তঃ-করণ ভরতকে ভূমি হইতে উত্থাপিত করিয়া হস্তদারা তাঁহার নয়ন্দ্র মার্জনান্তর কহিলেন, হে বংস! আশাসিত হও; আমা কর্ত্বতোমার সমস্ত মঙ্গল সম্পাদিত হইরাছে।৬৬। । ৬৭। ৬৮। ভরত কৃতিলেন, মাতঃ । পিতা মরণ সময়ে কি বলিয়াছিলেন ? কৈকেয়ী ভরতবাক্যের তাৎপর্যার্থ অবগত না হইয়া নির্ভয়ান্তঃকরণে কহিলেন, মহারাজ্ব মরণ সমরে, হা রাম, হা দীতে, হা লক্ষ্মণ ! এই বাক্য পুনঃ পুনঃ উচ্চারণ করিব। পর্বে গমন করিয়াছেন। ভরত কহিলেন, মাতঃ! তৎকালে জীরাম সীতা ও লক্ষণ কোনৃ স্থানে ছিলেন, তাঁহারা কি মহা-বাজের সন্নিহিত ছিলেন না ? কৈকেয়ী কহিলেন, বৎস! অবৰ কর,—মহারাজ জ্রীরামের যৌবরাজ্যে অভিষ্কোর্থ উদযোগ করিয়াছিলেন, আমি ভোমার নিমিত রাজ্য প্রার্থনা করিয়া মহারাজের অভিপ্রেত কার্য্যের বিশ্লাচরণ করিয়াছি। পূর্ব্বে মহা-বাঘ আমার সেবায় সম্ভষ্ট হইয়া বরদ্বয় প্রদানে প্রতিশ্রুত ছিলেন, ভাগার একটা বরষারা তোমার নিমিত্ত সমস্ত রাজ্য ্রাহণ করিয়াছি—অপর বরদারা জ্রীরামের জ্বটাবলল ধারণপূর্কক চতুর্দশবর্ষ বনবাস ইইরাছে। ধর্মপ্রায়ণ রাম পিতৃ আছে। শ্রবণ

रेकटकयुरवाह।

রামস্য যৌবরাজ্যার্থং পিজা তে সম্ভ্রন্থ কৃতঃ।
তব রাজ্যপ্রদানায় তদাহহং বিঘ্নমাচরং ॥৭২॥
রাজ্ঞা দতং হি মে পূর্বাং বরদেন বরদ্ধাং।
যাচিতং তদিদানীং মে তরোরেকেন তেইখিলং॥
রাজ্যং রামস্য চৈকেন বনবাদো মুনিব্রতং।
ততঃ সত্যপরো রাজা রাজ্ঞাং দত্য তবৈব হি ॥৭৯॥
রামং সম্প্রেষয়ামাদ বনমেব পিতা তব।
দীতাইপ্যন্থগতা রামং পাতিব্রত্যমুপাশ্রিতা ॥৭৫॥
দৌজাল্রং দর্শয়ন্ রামমন্থাতোইপি লক্ষ্যাং।
বনং গতেষু সর্বেষু রাজা তানেব চিন্তুয়ন্॥৭৬॥
প্রলপন্রাম রামেতি মমার নূপস্ত্র্যঃ।
ইতি মাতুর্বচঃ শ্রুয় বজ্ঞাহত ইব জ্ব্যঃ ॥৭৭॥
পপাত ভূমো নিঃসংজ্রন্থং দৃষ্ট্যা দুঃখিতা তদা।
কৈকেয়ী পুনরপ্যাহ বৎদ। শোকেন কিং ? তব॥
বি

মাত্র তোমাকে রাজ্যপ্রদান করিয়া বনগমন করিয়াছেন, প্রিপ পরায়ণা জানকী ও প্রাতৃবৎসল লক্ষ্মণ তাঁহার অনুগ্রন করিয়াছেন, তাঁহাদিগের বনগমনানস্তর মহারাজ হা রাম, ২০ লক্ষ্মণ ইত্যাদি বহু বিলাপ করিয়া মৃত্যুমুখে পতিত হইয়াছেন

ভরত কৈকেয়ীর নিদাকণ বাক্য শ্রবণানন্তর অচেতন হুইবল বজাহত তকর তাম ভূতলে পতিত ইইলেন। কৈকেয়ী ভরতেব তাদৃশাবস্থা দর্শন করিয়া হুঃখিতান্তঃকরণে কহিলেন, বংস গাজোখান কর, তোমার হুঃখের কারণ কি? বিপুল সমার্থী ভোগের সময় কি হুঃখ হইতে পারে? ভরত এইপ্রকারে ম্বিভি বাক্য শ্রবণানন্তর মাতাকে যেন কোধানলে দগ্ধ করিবার আশ্রে আরক্ত নমন্বয় বিক্ষারিত করিয়া কহিলেন। ৬৯। ৭০ রাজ্যে মহতি সম্প্রাপ্তে দুংখন্যাবসরঃ কুতঃ।

ইতি ব্রুবন্তীমালোক্য মাতরং প্রদহন্নির ॥৭৯॥

অসম্ভাষ্যাহিনি পাপে মে ঘোরে ত্বং ভর্তৃঘাতিনী।

পাপে ত্ব্দর্গর্ত্তজাতোহহং পাপবানিম সাম্প্রতং।

অহমগ্রিং প্রবেক্ষ্যামি বিষং বা ভক্ষয়াম্যহং॥৮০॥

যজ্যেন বাথ চাত্মানং হত্তা যামি যমক্ষয়ং।

ভর্তৃঘাতিনি! দুষ্টে ত্বং কুম্ভীপাকং গমিষানি॥৮১॥

ইতি নির্ভ্ব্যা কৈকেরীং কৌশল্যাভ্বনং যথে।।

সাপি তং ভরতং দৃষ্টা মূক্তকণ্ঠা ক্ররোদ হ ॥৮২॥

নিমান জনিত পাপে নিশ্চাৰ করিব। বে পাপীয়দি ভর্থাতিনি! তোমার সহিত সন্তাঘণ করিলে পাপস্পর্শ হয়—আমি তোমার তারে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি বলিয়া আগ্রাকে পাপিষ্ট বোধ করি-ভেছি। অতএব অদ্য অগ্নি প্রবেশ, বিষভক্ষণ বা খড়গাঘাত দারা এই বেহু নই করিয়া যম সদনে গমন করিব। বে হুটে! ভোমার ভর্তৃ-বিনাশন জনিত পাপে নিশ্চয়ত কুন্তীপাক নরক ভোগ হুইবে।

ভরত কৈকেরীকে এই প্রকার ভৎসন। করিয়া কৌশলা।
ভবনে গমন করিলেন। কৌশলাা দেবীও ভরতকে অবলোকন
করিয়া মৃক্তকণ্ঠে রোদন করিতে আরম্ভ করিলেন।৮০৮১/৮২।
ভরতও কৌশলা চরণে পতিত ইইয়া তুলা রোদন করিতে লাগিলেন; কিয়ংক্ষণ পরে পতিপরায়ণা রাম-মাতা ভরতকে আলিঙ্কন
করিয়া শোকাশ্রু মিপ্রিত লোচনে দৃষ্টিপাত পূর্বক কহিলেন—
পূল! ভূমি বিদেশস্থ পাকায় এই সকল অনর্থ ঘটনা ইইয়াছে।
হে বৎস! তোমার মাতার কার্য্য সকল অবণ করিয়াছ—আমার
রামচন্দ্র সীতা ও লক্ষণের সহিত জ্বটাবল্বল ধারণ করিয়া বনগমন করিয়াছেন—হা রাম, হা রঘুবংশনাথ! ভূমি যে পরমাত্মা
আমার উদরে জন্ম গ্রহণ করিয়াছ তাহা আমি জানি, তথাপি
আমার মন কোন প্রকারে হঃখ ইতে নির্ভ হয় না। হে রাম!
নিশ্চয় জ্বানিলাম—বিধিলিপি কখনই খণ্ডন হয় না। ভরত
জ্বিপ বিলাপ-কারিনী ও শোক-সন্তথা কৌশল্যার চরণছয়

পাদরোঃ পতিতন্তস্যা ভরতোহপি তদারুদন।
আলিঙ্ক্য ভরতং সাধী রামমাতা মশস্বিনী॥৮৩॥
রুশাতিদীনবদনা সাক্র্যনেত্রেদমন্ত্রবীৎ।
পুত্র ! স্বরি গতে দূরমেবং সর্ব্বমভূদিদং।
উক্তং মাত্রা শ্রুতং সর্বাং ত্রয়া তে মাতৃচেক্তিতং ॥৮৪

পুজঃ সভার্যে। বনমেব যাতঃ
সলক্ষণোমে রঘুরামচন্দ্রঃ।
চীরাম্বরো বদ্ধজটাকলাপঃ
সন্ত্যজা মাং দুঃখ সমুদ্রমগ্নাং ॥৮৫॥
হা রাম! হা মে রঘুবংশনাথ!
জাতোহিদি মে ত্রং পরতঃ পরাত্মা।
তথাপি দুঃখং ন জহাতি মাং বৈ
বিধিবলীয়ানিতি মে মনীবা।॥৮৬॥

স এবং ভরতো বীক্ষ্য বিলপন্তীং ভূশং শুচা পাদে গৃহীত্বা প্রাহেদং শৃণু মাতর্বচো মম ॥৮৭॥ কৈকেয্যা যৎক্বতং কর্ম্ম রামরাজ্যাভিষেচনে অন্যদ্বা যদি জানামি সা ময়া নোদিতা যদি॥৮৮॥

ধারণ করিয়া পুনর্কার কহিলেন, মাতঃ : প্রবণ করুণ— প্রীরামের রাজ্যাভিষেক সময়ে কৈকেয়ী যে সকল ব্যবহার করিয়াছেন, তাহা যদি আমার বিদিতপূর্দ্ধ হয়, তাহা হইলে আমি ব্রহ্মহত্যাশত জ্ঞানিত পাপে অবশু কল্মিত হইব, অধিক কি বলিব, ভূতকার্য্য সকল যদি আমার বিদিত বা অভিমত হয়, তাহা হইলে অক্র্মতী সহিত কুলগুরু বশিষ্ঠ দেবের হত্যাজনিত পাপে আমি লিপ্ত হইব। ভরত এইপ্রকার শপ্য করিয়া অতিশ্র

পাপং মেংস্ত তদা মাতঃ ! ব্রহ্মহত্যাশতোদ্তবং ।
হতা বশিষ্ঠং থড়েন অরুস্কাত্যা সমস্থিতং ॥৮ন॥
ভূয়াত্তৎপাপ মথিলং মম জানামি যদ্যহং ।
ইত্যেবং শপথং কৃত্যু রুরোদ ভরতন্তদা ॥৯০॥
কৌশল্যা তমথালিক্ষা পুত্র ! জানামি মা শুচঃ ।
এত্তিমিন্নন্তরে শুড়া ভরতন্য সমাগমং ॥৯১॥
বশিষ্ঠো মন্ত্রিভিং দার্কং প্রথমে রাজমন্দিরং ।
রুদন্তং ভরতং দৃষ্ট্যা বশিষ্ঠং প্রাহ দাদরং ॥৯২॥
রুদ্ধো রাজা দশরথো জ্ঞানী সত্যপরাক্রমঃ ।
ভুকুণ মর্ত্য স্থাং স্ক্রমিষ্ট্যা বিপুলদক্ষিণেঃ ॥৯৩॥
অর্থমেধাদিভির্যজ্ঞেল ক্রা রামং স্কৃতং হরিং ।
অর্থ স্ক্রণাম ব্রিদিবং দেবেন্দ্রান্ধানং প্রভঃ ॥৯৪॥

রোদন করিতে লাগিলেন ১৮৩ ৮৪।৮৫।৮৬।৮৭। ৮৮। ৮৯ ।৯০।
কৌশল্যা দেবী তাঁহাকে সম্বেহালিজন করিয়া কহিলেন, বংস!
শপ্থ করিতে হইবে না বাল্যাব্ধি তোমার চরিত্র কাহারও
অবিদিত নাই।

অনস্তর বশিষ্ঠদেব ভরত সমাগম শ্রেবণানস্তর স্থমন্ত্র প্রভৃতি
কৃতিপায় মন্ত্রীগণের সহিত রাজভবনে উপস্থিত হইরা রোক্তলামান ভরতকে দর্শন করিয়া কহিলেন, বৎস ভরত। অতি
বৃদ্ধতম পরম জ্ঞানী ও সতা পরাক্রম রাজা দশর্থ অশ্বমোগাদি যজ্ঞদারা বিষ্ণুত্রপী সন্থান লাভ করিয়া সর্বাস্থ ভোগান্তে যথাসময়ে স্থাগামন করিয়াছেন, সে হানেও অমরেন্দ্রের সহিত অদ্ধাসনোপবিত্ত হইয়া দেবগণের সদস্থকার্য্য বিচারে স্বর্গতির সাহাত্য করিবেন, অভ্এব অশোচ্যাবস্থ ও মোক্তাজন পিকার জন্ম বৃধা শোক করিতেছ, বাঁহারা আত্মাকে তং শোচনি রথৈব ত্বমশোচ্যং মোক্ষভাজনং।
আত্মা নিত্যোহব্যয়ঃ শুদ্ধো জন্মনাশাদিবজিতিঃ॥৯৫
শরীরং জড়মত্যর্থমপবিত্রং বিনশ্বরং।
বিচার্য্যমানে শোকস্য নাবকাশঃ কথঞ্চন ।৯৬॥
পিতা বা তনরো বাপি যদিম্ভ্যুবশংগতঃ।
মূঢ়ান্তমন্তশোচন্তি স্বাজ্মতাড়ন পূর্বকং।।৯৭॥
নিঃসারে থলু সংসারে বিয়োগো জ্ঞানিনাং যদা।
ভবেবৈরাগ্যহেতুঃ স শান্তিসৌথ্যং তনোতি চ।।৯৮
জন্মবান্ যদি লোকেহিন্মন্ তহি তং মৃত্যুরন্থগাৎ।
তন্মাদপরিহার্য্যোহ্যং মৃত্যুজন্মবতাং সদা।।৯৯॥

শুদ্ধ ও নিতা স্কর্যাং জন্ম মৃত্যুরহিত এবং শ্রীরকে জ্বছ, অভি অপবিত্র ও বিনাশী বোধ করে, ভাহাদিগের কোন কালে শোক হয় না। ৯১ । ৯২ । ৯৩ । ৯৪ । ৯৫ ।৯৬। পিতাবাপুত্ৰ কাল-কবলে পতিত হইলে মৃঢ়েরাই নিজ বক্ষঃতল তাড়ন পূর্বক শোক कतिया थाकः। त्मथ এই अमात मश्मात्त क्वानि वास्किता वक्त-জন বিয়োগ কামনা করিয়া থাকে, বেহেতু বন্জন বিয়োগ বৈরণগ্য ও.শান্তি সুখের কারণ হইয়া থাকে। হে ভরত! জাত ব্যক্তিদিগের অবশ্যুই মৃত্যু হইবে, স্করাং জ্ঞ্মাত্রেরই মৃত্যু স্বাভাবিক ধর্ম, স্বকীয় কর্ম্মাতুদারে নিয়মিত দময়ে তাহাদিগের এই সমস্ত বিষয়ে অভিজ্ঞ হইয়াও অনভিজ্ঞের ন্যায় বন্ধুজন বিয়োগ জনিত শোকে কাতর ছইতেছ—দেখ, কোটি কোট ব্ৰহ্মাও বহুধা বিনষ্ট হইয়াছে—এই সৃষ্টিও বারস্বার পরিবর্তিত হই-C एक मार्गत मकन ममात्र एक श्हेत्रा थारक, व्याञ्च वानिगरन কণ বিধবংসী বিদীবনে কি আহা হইতে পারে ? চঞ্চল পত্রান্ত **म**श्नक्ष अन्नविस्त्र नाम कण छत्र शत्राम् अगमार नहे रहेत्र। থাকে, ভাহার স্থায়িত্বিষয়ে কাহারও কি বিশাব আছে?

বিজ্ঞানমপাবিদ্বান্যঃ কথং শোচতি বান্ধবান্ । ১০০।
বিজ্ঞানমপাবিদ্বান্যঃ কথং শোচতি বান্ধবান্ । ১০০।
বিজ্ঞান্তকে টয়োঃ নফাঃ সৃষ্টয়ো বহুশো পতাঃ।
শুষান্তি সাগরাঃ সর্মে কৈবান্থা কণজীবিতে ॥ ০১॥
চলপত্রান্থলগ্লামু বিন্দবৎ কণভঙ্গুরং।
আয়ুস্তাজতাবেলায়াং কন্তত্র প্রত্যয়ন্তব ॥ ১০২॥
দেহী প্রাক্তনদেহোম্বাকর্মণা দেহবান্ পুনঃ।
তাদেহোম্বেন চ পুনরেবং দেহঃ সদান্মনঃ ॥ ১০০॥
যথা তাজতি বৈ জীণং বাসো গুজাতি কৃতনং।
তথা জীণং পরিত্যজ্ঞা দেহী দেহং পুনর্নবং ॥ ১০৪॥
ভজত্যেব সদা তত্র শোকস্যাবসরঃ কৃতঃ।
আন্মান দ্রিয়তে জাতু জায়তে ন চ বর্ছতে ॥ ১০৫॥
বড় ভাবরহিতোহনন্তঃ সত্যবিজ্ঞানবিগ্রহঃ।
আনন্দরপো বুদ্ধাদিসাকী লয়বিবর্জিতঃ। ১০৬॥

এক এব পরো ছাজা ইন্থিতীয়ঃ সমন্তিঃ।

ইত্যাল্লানং দৃদ্ধ জাড়াতাত্বা শোকং কুরু ক্রিয়াং॥
তৈলজোন্যাঃ পিতৃর্দেইনুৎপৃত্য সচিবৈঃ সই।
কুত্যং কুরু মধা ন্যায়মন্দ্রিভিঃ কুলনন্দন!॥১০৮॥
ইতি সম্বোধিতঃ সাক্ষাদ্তর্কনা ভরতন্তদা।
বিস্জ্যাজ্ঞানজং শোকং চক্রে স বিধিবৎক্রিয়াং॥
গুরুণোক্তপ্রকারেণ আহিতাগ্রেম্বা বিধি।
সংক্ত্য স পিতৃর্দেইং বিধিদুক্টেন কর্মনা।॥১১০॥
একাদশেহহনি প্রাপ্ত ব্রাহ্মনান্ বেদপারগান্।
ভোজ্যামান বিধিবজ্জনাহথ সহস্রদাঃ॥১১১।
উদ্দিশ্য পিতরং তত্র ব্রাহ্মনান্তা ধনং বছ!
দদৌ গ্রাং সহস্রাণি গ্রামান্ বুজামরাণি চ॥১১২॥
অবসৎ স্বগৃহে তত্র রাম্যেবাস্থিন্তর্য়ন্।
বিশির্থেন সহ ভাতা মন্ত্রিভিঃ পরিবারিভঃ॥১১৬।

প্রাক্তন দেছ কত কর্ম বশতঃ অংশার দেছান্তর সম্প্র হয়—এ
দেহান্তর কৃত কর্ম-প্রাহ দার। প্ন: পুনর্কার দেহান্তর প্রাপ্তি
চইয়া পাকে, স্তরাং আত্মা দেহ-সংসর্গ পরিভাগি করেন না।
১৯৮১৯৭। ৯৮। ৯৯। ১০০ ১১০১। ১০২। ১০৩। যেকপ
মনুষ্যেরা জীর্ণরের পরিভাগে করিয়া নৃতন বন্ধ পরিধান করে,
জনেশ আত্মার স্তুর্বা জন্ম, র্দ্ধি বা ছাস কিছুই হয় না
যেহেতু তিনি সর্ক্রপর্বাহর বিকার রহিত এবং অপরি চিছ্ন মহিমা—
সভ্য-জ্ঞান্মর ও আনন্দ স্বরূপ এবং যাবং প্রাণিদিশের জন্তঃকরণভ্তিত সদ্স্তুদ্বির সাক্ষী, অবিনাশী ও অন্থিরা। ছে বংস!
স্ক্রিদহন্তিত এক আ্যান্তে স্ত্তরক্তরে বিদিত হইয়া শোক

পরিত্যাগ কর এবং সময়েতিত কার্য্যান্থটানে তংপর হও। হে
ধর্ম পরারণ! অমাত্যগণের সমভিব্যাহারে কৈল-দ্রোণী ছইতে
রাজ-দেহ উদ্ধাব করিলা দাহাদি কার্য্যের উদ্যোগ কর। ভরত
নিজগুরু বশিষ্ঠ দেবের জ্ঞানগার্ভ উপদেশ অবণে জ্ঞান লাভ
করিয়া অজ্ঞান জনিত শোক পরিত্যাগ করিলেন। অনস্তর
সাগ্মিক ক্ষজিলাদিগের বিধানান্থা র পিতৃদেহ সংস্থার করিয়া
একাদশ দিবদে শত সহত্র বেদপারগ ব্রাহ্মণদিগকে ভোক্ষন
করাইলেল এবং পিভার পারতিক স্থোদেশে ব্রাহ্মণগ্রাক্ত বহুপরিমাণে ধন, গোসহত্র, নানা জ্ঞানদদ ও রত্রাভরণাদি প্রদান করিয়া বশিষ্ঠ শক্ষম ও ক্তিপর মন্ত্রী কর্তৃক
পরিস্থত হইরা ভরত স্থাহে বাস করিতে লাগিলেন ।১০৪।

রামেহরণ্যং প্রয়াতে সহ জনকস্কৃত।
লক্ষ্মণাভ্যাং স্থযোরং মাতা মে রাক্ষ্মীব
প্রদহতি হৃদয়ং দর্শনাদেব সদ্যঃ।
গচ্ছাম্যারণ্যমন্য ছিরুমতিরখিলং

দূরতোহপাদ্য রাজ্যং রামং সীতাদমেতং স্মিতক্লচিরমুখং নিত্যমেবান্সদেবে ॥১১৪॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে অযোধ্যাকাতে সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

১০৫। ১০৬। ১০৭। ১০৮। ১০৯! ১১০! ১১১। ১১২। ১১৩।
ভ্রাত্ বৎসল ভরত অযোধ্যা ভবনে বাস করিয়া রাজ কার্ব্য
পরিত্যাগ করিলেন, প্রত্যুত অনবরত চিন্তা করিতেন যে,
রাক্ষসীর ন্যায় কৈকেরীকে দর্শন করিয়া আমার হৃদয় দয়
ছইভেছে, অতএব এস্থানে বাস করিব না—অদ্যুই রাজ্য

পরিত্যাগ পূর্ব্বক রাম সীতা ও লক্ষণ যে বনে গমন করিরা-ছেন সেই বনে গমন করিরা ছির চিত্তে ও সহাস্য বদনে সীতার সহিত শীরামচন্দ্রের চরণ সেবা করিব। ১১৪।

> ইতি জীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অযোধ্যাকাতে সপ্তমো২ধ্যারঃ।

অফীমো ২ধ্যায়ঃ

बिमहारमव छेवाह ।

বশিষ্ঠো মুনিভিঃ সার্দ্ধং মস্ত্রিভিঃ পরিবারিভঃ।
রাজ্ঞঃ সভাং দেবসভাসন্ধিভামবিশদ্বিভূঃ ॥১॥
ভত্রাসনে সমাসীনশ্চভুমু থ ইবাপরঃ।
আনীয় ভরতং তত্র উপবেশ্য সহাম্মুজং ॥২॥
অবীদ্বনং দেশকালোচিভ্মরিক্দমং।
বৎস! রাজ্যেহভিষেক্ষ্যামন্ত্রমদ্য পিতৃশাসনাৎ।
কৈকেষ্যা যাচিতং রাজ্যং ত্বর্দের্থ পুরুষর্যভ!।
সত্যসক্ষো দশর্থঃ প্রতিজ্ঞায় দদ্যে কিল ॥৪॥

অভিবেকো ভবস্থা মুনি জিলান্ত পূর্ববিকং।
তচ্ছুত্বা ভরতোহপ্যাহ মম রাজ্যেন কিং মুনে।।৫॥
রামো রাজাধিরাজক বয়ং তল্যেব কিন্ধরাঃ।
শ্বঃ প্রভাতে গমিষ্যামো রামমানেতুমঞ্জনা।।৬॥
আহং যৃয়ং মাতরক কৈকেয়ীং রাক্ষনীং বিনা।
হনিষ্যাম্যধুনৈবাহং কৈকেয়ীং মাতৃগন্ধিনীং ॥৭॥
কিন্তু মাং নো রঘুশ্রেষ্ঠঃ স্ত্রীহন্তারং সহিষ্যতে।
তচ্ছে।ভূতে গমিষ্যামি পাদচারেণ দশুকান্॥৮॥

অনন্তর কুলগুরু বশিষ্ঠদেব মুনিগণ এবং কতিপয় রাজ
মন্ত্রী সমজিব্যাহারে দেবসভা সদৃশ স্থাদৃশ্য রাজসভা মধ্যে
প্রবেশ করিয়া দ্বিতীয় কমল্যোনির ন্যায় আসননে উপবেশন
করিলেন এবং ভরত ও শক্রম্বকে আনয়নানন্তর সেই স্থানে
উপবেশন করাইয়া দেশকালোচিত বচনাবলী বিন্যাস করিতে
আরম্ভ করিলেন—হে বৎস ভরত! অদ্য ভোমাকে স্বর্গীয়
মহারাজের আজামুসারে যৌবরাজ্যে অভিবিক্ত করিব; হে
পুরুষর্বভ! কৈকেয়ী ভোমার নিমিত্ত মহারাজের নিকট রাজ্য
প্রার্থনা করিয়াছিলেন, সত্য প্রতিজ্ঞ রাজ্য দশর্থ পূর্বন
প্রতিজ্ঞাবশবর্তী হইয়া সমস্ত রাজ্য ভোমাকে প্রদান করিয়া
ছেন, এক্ষণে সমুপত্তিত মুনিগণ বথাবিধি দক্রোচ্নারণ পূর্ব্বক

অভিষেক কার্য্য সম্পাদন করুন। ভরত মহর্ষির বাক্য প্রবণ করিয়া কহিলেন, হে গুরো! রাজ্যে প্রয়োজন নাই—আমরা রাজ্যধিরাজ শ্রীরামের দাস, অতএব তাঁহার দাসত্ব কার্য্য দ্বারা এই অসার দেহকে পবিত্র করিব, হে মহর্ষ্যে! আগামি প্রভাতে আমি মাতৃগণ এবং সমুপন্থিত শ্বিষাণ সমভিব্যাহারে আপনাকে অপ্রসর করিয়া শ্রীরামের প্রত্যানয়নার্থ বনগমন করিব, কৈকেয়ীকে সমভিব্যাহারে লইবার কথা দূরে থাকুক প্রত্যুত এই দণ্ডেই সেই রাক্ষসীর প্রাণসংহার করিব—মাতৃসমন্ধার গোরব রক্ষা করিব না। ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬। ৭। কিন্তু ইহাও বিবেচনা করিতেছি যে, প্রীহত্যা করিলে শ্রীরাম আমাকে শ্রীচরণে স্থান দিবেন না, যাহাছ্টক আপনারা আগামন করুন বা নাককন, আমি শক্রমকে সমভিব্যাহারে লইয়া আগামি দিবদেই পদস্কারণ দ্বারা দণ্ডকারণ্য গমন করিব। ৮। রযুকুল প্রদীপ শ্রীরামচন্দ্র যতদিন প্রত্যাগমন না

শক্রমুদহিতন্ত্র্থ য্য়মায়ান্ত বা নবা। द्रार्या यथा वरन याज्यश्रहर वन्कनायतः ।।।। कनभूनक्र ठाहातः भक्तप्रनहित् भूता !। ভূমিশায়ী कটাধারী যারজামে। নিবর্ততে ॥:०॥ ইতি নিশ্তি ভরত স্থীমেবাৰত স্থিন। সাধু সাধিতি তং সর্ফো প্রশশংক্রমুদান্বিতঃ ॥১১ ততঃ প্রভাতে ভরতং গচ্ছন্তং সর্কাদৈনিকাঃ। অকুজগ্মঃ সুমত্ত্রেণ নোদিতাঃ সামকুজরাঃ ॥.২॥ কৌশল্যাদ্যা রাজদারা বশিষ্ঠপ্রমুখা বিজাঃ। দ্রাদয়দ্রে ভুবং সর্ব্বে পৃষ্ঠতঃ পাশ্ব তোহগ্রতঃ ॥১৬ নিবেলাপায়ননিত্তা ভর্ভস্য সমন্ততঃ ॥ ১৯॥ শ্সিবেরপুরং গড়া গঙ্গাকুলে সমন্তঃ। উবাস মহতী সেনা শক্রম্বপরিচোদিতা।।১।।

ক্রিবেন, ভাবৎ কাল আমি শক্রপ্রের সহিত জ্বটা বল্কল ধারণ - ফল মূলাদি ভক্ষণ ও ভূমি শ্যার শ্যুম করিয়া সেই জরণা মধ্যেই দিনপাত করিব । ৯ । ১০ । ভরত এইরপ কথনানন্তর মেমিবলম্বন করিলে সমুপস্থিত সভাবর্ষেরা উংহ'কে ব্যৱস্থার সাধুবাদ প্রদান করিছে লাগিলেন। ১১। পার্দিন প্রকৃষ সময়ে ভরতকে বনাভিমুখ প্রস্থানোদাত দেথিরা সুমার কর্তৃক আদেশিত হস্তার সুশোভিত দেনা সমুদর, কৌশ্লা প্রভৃতি রাজন্মিয়ীগণ ও বশিষ্ঠ প্রভৃতি ছিজ্ঞাণ মহোবসৰ শোলাহল দ্বাবা দশদিক প্রতিধ্নিত করমানন্তর ভরতের অগ্রাপৃষ্ঠ ও পার্ম দেশ সমাক্ষাদিত ক্রিয়া অন্নগমন করিতে আরম্ভ করিলেন ১২। ১৩। শক্রয় পরিধক্ষিত দেন: দকল শৃঙ্গবের পুর সমীপবর্ত্তী ভাগিরখী কুলে উপস্থিত হটয়। ঐ দিবস সেই স্থানে বাস করিলেন।১৪।

•আগতং ভরতং শ্রুত গুলঃ শক্ষিত্য।নসঃ। মহত্যা সেন্যা সাদ্ধ্যাগতো ভরত: কিলঃ।।১৫।। পাপং কর্ত্ন বা ষাতি রামস্যাতি দিতাতানঃ। পতা ত**জ্দয়ং ভে**জয়ং য**দি শুদ্ধগু**রিব্যতি॥১৬॥ शक्षार त्ना ८६९ मधाकृषा नाव खिर्रुख मायुषाः।। জ্ঞাতয়ো মে সমায়তাঃ পশ্যন্তঃ সর্বতো দিশং ॥১৭ ইতি সর্বান্ সমাদিশা গুংহা ভরতমাগতঃ। উপায়নানি সংগৃহ্য বিবিধানি বহুন্যপি ॥১৮॥ প্রবিষা জ্ঞাতিভিঃ সার্দ্ধং বছাভিবি বিধাযুধিঃ।

চণ্ডালাধিরাজ গুহক লোক মুখে-সলৈনা ভরতের সমা-গমন বার্তা প্রবণ করিয়া সংশ্রিক চিত্তে জ্ঞাতিবর্গকে আদেশ করিলেন –হে বন্ধুগণ বৈধিকরি ভরত শ্রীরামের অনিফ্রাচরণ নিমিত্তই সদৈন্যে বনগমন করিভেছেন। যাহাছউক এক্লে নিকটবন্ত্রী হইলেই ভরতের হৃদয়ভাব অবগত হইব, যদি তাঁহার পবিত্র হৃদয় বুঝিতে পারি ভাহা হটলে পদাপার-গমনে কোন বিয়াচরণ করিব না, নচেৎ ভোমরা শক্রাদি ধারণ পূর্ব্বক সাংগ্রামিক নেকিবরোহণ করিয়া সাবধানে চতুদ্দিক অবলোকন করতঃ তদীয় দৈন্যগণের গলপপারগমনে বিদ্ব করিবে। ১৫। ১৬। ১৭। অনন্তর গুছক বিবিধাক্সধারী বহু সংথাক জ্ঞাতিবৰ্গের সহিত উপতিত হইয়া বত্বিধ উপহার প্রদানানন্তর ভাবত ও শক্রম্বাক অবনত মন্তক দ্বারা প্রণাম করিলেন। চীরাম্বর জটামুকুট্ধারী নংজলধর শ্যাম ভরত কতিপর মন্ত্রিগণের সহিত আসনে উপবেশন করিয়া সাতিশয় শোকসহকারে সতত 'রাম' 'রাম' এই শব্দ উচ্চারণ করিতেছিলেন, সুতরাং বাহ্নজান-শক্তির অভাব বশতঃ স্মাগত গুছককে জানিতে পারিলেন না, গুছক ভরতকে ভাদুশাবভাগর দেখিয়া কহিলেন, হে সংখ! আমি গুছক

দুকী ভরতমাদীনং সানুজং সহ মন্তিভিং।

চীরাম্বরং ঘনশ্যামং জটামুকুটধারিণং ।২০।

রামমেবানুশোচন্তং রামরামেতি বাদিনং।

ননাম শিরসা ভূমো গুহোচহমিতি চারবীৎ।২১।
শীঘু মুপ্রাপ্য ভরতো গাড়মালিঙ্গ্য সাদরং।

পুকীইনাময়মব্যগ্রং স্থায়মিদমরবীৎ ।২২॥
ভাতত্তং রাঘ্বেণ তা সমেতঃ স্মবস্থিতঃ।

রামেণালিঙ্গিতঃ সাজনিয়নেনামলাক্সনা। ২০।

ধন্যোচ্সি কুতকুত্যো সি যত্ত্বরা পরিভাষিতঃ।

বামো রাজীবপ্রাক্ষো লক্ষ্মণেন চ সীত্রা ।২৪॥

যত্র রামস্যা দুইত্তর মাং নয় স্বত্ত !।

সাত্রা সহিতো যত্র স্থাত্তদর্শয়স্ব মে ।২৫॥

২ং রামস্য প্রিয়তমো ভক্তিমানসি ভাগ্যবান্।

ইতি সংস্মৃত্য সংস্মৃত্য রামং সাশ্রুবিলোচনঃ॥২৬

উপস্থিত হইরাছি। ১৮। ১৯। ২০। ২১। তারত প্রবাদাত্ত প্রণত গুছকের মন্তক ভূমি হইতে স্বরং উত্তোলন করিরা গাঢ়ালিজন পূর্বক তাঁহাকে পরম সাদরে অনামর' জিজ্ঞাসা করিরা কহিলেন, হে জাঙঃ! এ জগতে তোনাকেই কেবল পন্য ও রুতার্থ বােধ করিতেছি, যেছেতু বিমলান্তঃকরণ প্রশাম কর্তৃক সজল নয়নে অথলাকিত ও আজানুলম্বিত বাহ-গাল দারা সাদরে আলিজিত হইরাছ এবং সীতা ও লক্ষ্মণ সহিত জ্ঞারামকে বন্ধভাবে সম্ভাষণ করিয়াছ। ২২।২৩। ২৪। বাহা হউক, হে সংখ! তুমি তাঁহাকে যে স্থানে দর্শন করিয়া-ছিলে সেই স্থানে আমাকে লইয়া চল, এবং রাজীবলোচন রাম সীতাদেবীর সহিত যে স্থানে শয়ন করিয়াছিলেন সেই স্থান আমাকে দর্শন করাও, হে জাতঃ! তুমি অতি ভাগ্যবান, গুহেন সহিত্ত যে বামঃ স্থিতে। নিশি।

যথে দদর্শ শর্মস্থাং কুশসমাস্ত্ । ২৭॥

সীতা ভরণসংলগ্ন প্রতি কিন্তু ভির্প্তিতং।

দুঃখসন্ত প্রস্কু মারী যা সাতৃ কিনক নিদিনী।

প্রামাদে রত্নপর্যান্ধে কোমলান্তরণে শুভে॥২৯॥

রামেণ সহিতা শেতে সা কথং কুশবিকীরে।

সীতা রামেণ সহিতা দুঃখেন মম দোষতঃ॥৩০॥

বিশ্বাং জাতোহিমা কৈকেন্যাং পাপরাশিসমানতঃ

মল্লিমিন্তনিদং ক্লেশং রাম্য্য প্রমাল্মনঃ॥৩:॥

যে ভাগ্যবলে শ্রীরামের প্রতি একান্ত ভক্তি ও তাঁহার প্রিয়-বন্ধুত্ব লাভ করিয়াছ। ভরত এইরূপ কাত্রোক্তি করিতে করিতে সজল নয়নে জ্রীরামকে স্মরণ করতঃ গুছকের সহিত সীতা রামের নিশাশয়ন প্রদেশে গমন করিয়া কুশসমাস্ত্ত এবং জানধীর রত্নাভরণাঙ্কিত শ্রীরামের শায়নস্থান অবলোকন করিয়া অভি সন্তপ্ত চিত্তে বিশাপ করিতে। লাগিলেন। २৫। ২৬।২৭।২৮। হা বিধাতঃ ! তোমার মনে কি এই ছিল ? যিনি পূর্বের অযোধ্যা ভুবনস্থ প্রাসাদোপরি বিরাজিত এবং স্থ:কা-মল আন্তরণ শোভিত স্থচাক রত্নপর্যাঙ্গে শ্রীরামের সহিত শয়ন করিতেন, দেই কোমলান্ধী জনক রাজকুমারী এক্ষণে কুশনিশ্বিত শ্যাায় শ্য়ন করিতেছেন, বিধাতাকেই বা কি বলিব—আমি এইক্ষণে পরমাত্মা রামের ক্লেশের কারণ ছইয়াছি। হা বিধে! আমাকে ধিঞ-বেখেতু পাশিয়দী কৈকেয়ীর গর্ভে জন্ম গ্রহণ করিয়াছি ৷ অহো! মহান্মা লক্ষাণের জন্ম অদ্য সফল হইল, যেহেতু তিনি অরণ্য মধ্যেও সহর্ষচিত্তে শ্রীরামের অনুগমন করিতেছেন; আংনি যদি জ্ঞীরামচন্দ্রের দাসগণের দাসের দাসত্ব স্থীকার করিতে পারি, আহাহতি সফলং জন্ম লক্ষাণদা মহাত্মনঃ।

নামমেৰ সদান্তেতি বনস্থমপি ক্ষানীঃ॥৩২॥

আহং রামসা দাসা যে তেযাং দাসদা কিঙ্কারঃ।

যদি সাং সফলং জন্ম মুন্ন ভূরায় সংশারঃ॥৩২॥

ভাতর্জানাসি যদি তহুও গ্রুম্ব যমাখিলং।

বত্র তিষ্ঠতি তত্তাহং গচ্চাম্যানেতুমঞ্জদা॥৩৮॥

গুহল্বং শুদ্ধক্লদারং জ্ঞাত্মা সম্প্রেমন্ত্রনীদৃশী॥৩৫॥

রামে রাজীবপত্রাক্ষে সীতায়াং লক্ষ্মণে তথা।

চিত্রকুটা জিনিকটে মন্দাকিন্যাবিদূরতঃ॥৩৬॥

মুনীনাসাশ্রমপদে রামন্তিষ্ঠতি সাল্লঃ।

জানকা সহিতো নন্দাং স্থেমান্তে কিল প্রভুঃ॥৩৭

তত্ত্র গজ্যাহং শীঘুং গঙ্কাং তর্ত্রিহার্ছ দি।

ইতুক্তো ত্রিতং গড়া নাবঃ পঞ্চশতানি হ॥৩৮॥

ইতুক্তো ত্রিতং গড়া নাবঃ পঞ্চশতানি হ॥৩৮॥

ভাষা হইলে আমার জন্ম দফল হইবে। ২৯।৩০।৩১।
৩২।৩২। ভরত এইরপ বল বিলাপানন্তর গুছককে কছিলেন,
হে লাভঃ! শ্রীরামচন্দ্র এক্ষণে কোন্ স্থানে অবস্থিতি করিছেছেন তুমি যদি বিদিত থাক ভাষা হইলে ব্যক্ত কর, আমি
এই দণ্ডেই তাঁহাকে আনমনের নিমিত্ত গমন করিব। ৩৪।
চণ্ডালাধিপতি গুছক ভরতকে প্রবিত্ত কদম জানিরা সম্মেহ
বচনে কছিলেন, হে দেব! রাজীবলোচন রাম মীতা ও
লক্ষণের প্রতি ভোমার যেরপ ভক্তি অনুভব করিছেছি
তদ্ধারা বোধ হয় তুমিই এ জগতে একমাত্র ধন্য। যাহা হউক
এক্ষণে শ্রীরামচন্দ্র পীতা ও লক্ষ্মণের সহিত চিত্রকুট্ট পর্বাত
সমীপাবতী গলাতীরস্থ তপোবনে পরমানন্দে বাস করিছেছেন ।৩৫।৩৬।৩৭। ছে সংখা আদ্য আমরা সকলেই সে
স্থানে গমন করিয়া আত্মাকে প্রিত্র করিব, আপনি গল্পা-

দ্মানয়ৎ সদৈন্দ্য তর্কুং গঙ্গাং মহানদিং।
স্বয়মেবানিনায়ৈকাং রাজনাবং গুহস্তদা॥৩৯॥
মারোপ্য ভরতং তত্ত্ব শক্তম্মং রামমাতরং।
বশিষ্ঠং চ তথাহনত্ত্ব কৈকেয়ীং চান্যোষিতঃ॥৮০॥
তীর্বা গঙ্গাং যথো শ ঘুং ভরদ্বাজাশ্রমং প্রতি।
দূরে স্থাপ্য মহাদৈন্যং ভরতঃ সানুজো গথো॥৮১॥
মাশ্রমে মুনিমাসীং জ্লন্মির পাবকং!
দৃষ্ট্বা ননাম ভরতঃ সাফাঙ্গমতিভক্তিতঃ॥ ২॥
জ্ঞাড়া দাশরথিং গ্রীত্যা পূজয়ামাস মৌনিরাট্।
পপ্রচ্ছ কুশলং দৃষ্ট্বা জ্ঞাবক্কলধারিণং॥৪৩॥
রাজ্যং প্রশাসতস্তেহদ্য কি মত্তক্কলাদিকং।
জ্ঞাগ্রহিনি কিমর্থং ত্বং বিপিনং মুনিসেবিতং॥

ভরণার্থ নে কারোহণ করুন। গুছক ভবতের সহিত এইরপ কথেপকথনানন্তর সৈন্য গণের গঙ্গাতরণার্থ জ্ঞাতিবর্গ দ্বারং পঞ্চশত নে কা আনয়ন করাইয়া ভরতের নিমিত্ত স্বরুগ এক রাজ্যোগ্য নে কি। আনয়ন করিলেন ৩৮। ৩৯ ।

অনস্তর ভরত, শক্রন্থ, কেশিলা ও বশিষ্ঠদেব গুহকানীত নৌকায়—,কৈকেয়ী ও অনান্য রাজমহিবীগণ অপর নৌকাহ আরোহণ করিয়া ভাগিরথী তরণানন্তর সত্তর মহর্ষি ভরদা-জের আশ্রমাভিমুখে প্রস্থান করিলেন। তপোবনের অনতিদ্ধে মহাসৈন্য স্থাপন করিয়া ভরত ও শক্রন্থ উভরে মুনি সরিধানে গমন করিলেন।৪০ ৪১। অনন্তর ভরত প্রজ্জলিত পাবক সদৃশ ভেজ্পী ভরদ্বাজ্ঞকৈ আশ্রমোপবিষ্ট অবলোকন ক্রিয় সাফাল্ল প্রণিপাত করিলেন। ৪২। মেনিবত্রগারী মহর্ষি ভর্ দ্বাজ সমাগত জটাবলকলধারী দাশর্ষ ভরতকে যথাযোগা অভ্যর্থনানন্তর কুশল জিজানা করিয়া কহিলেন, হে যুবরাজ! তুমি পিতৃদত্ব রাজ্যের শাসনকার্য্য পরিত্যাগ করিয়া জটা তর্দ্ধান্তন প্রতঃ শংশ্রাকের নং

সর্বাহ্ন করি ভানা নি ভগবন্! সর্বভূতাশয় স্থিতঃ ॥৪৫॥

তথা নি পৃচ্চ নে কিঞ্চিত্ত দমুগ্রহ এব মে।

কৈকেয়া যৎকৃতং কর্মা রামরাজ্ঞাবিঘাতনং ॥৪৬॥

বনবাদাদিকং বাপি ন হি জানামি কিঞ্চন।
ভবৎপাদযুগং মেহদ্য প্রামাণং মুনিদহম!॥१९॥

ইত্যুক্ত্বা পাদযুগলং মুনেঃ স্পৃষ্টার্ত্তমানদঃ!
ভলাতুমহ নি মাং দেব! শুদ্ধো বাশুদ্ধ এব বা ॥৪৮॥

মম রাজ্যেন কিং স্থামিন্! রামে তিন্ঠতি রাজ্ঞানি
কিন্ধরোহহং মুনিশ্রেন্ঠ ! রাম্যুক্ত শাশ্বতঃ ॥৪৯॥

অতো গত্বা মুনিশ্রেন্ঠ রামদ্য চরণান্তিকে।
প্রতিত্বা রাজ্যদন্তারান্ সম্প্রাইত্রব রাঘবং ॥৫০॥

অভিষেক্ত বশিষ্ঠাল্যৈ পৌরজানপদেঃ দহ।
নেষ্টেইবোধ্যাং রমানাথং দাসঃ দেবেইতিনীচবং ॥
ইত্যুদীরিতমাকর্ণা ভরতস্য বচো মুনিঃ।
আলিক্ষ্য মূর্দ্ধ্রবিঘ্যায় প্রশাশংস সবিস্ময়ঃ ॥র ২॥
বংস ! জ্ঞাতং পুরৈবৈতভ্যুদ্ধিং জ্ঞানচক্ষুষা।
মা শুচস্তং পরো ভক্তঃ শ্রীরামে লক্ষ্মণাদিপি ॥৫৩॥
আতিবাং কর্জুমি ছামি সবৈন্যস্য তবানঘ!।
অদ্য ভুক্ত্বা সবৈন্যস্তং শ্বো গন্তারামসন্মিধিং ॥৫৪॥
যথা জ্ঞাপয়তি ভবাংস্তথেতি ভরতোইব্রবীং।
ভরদ্ধাজন্ত্রপঃ স্পৃষ্ঠ্য মৌনী হোমগৃহে স্থিতঃ ॥৫৫॥
দধ্যে কামদুঘাং কামবর্ষিণীং কামদে। মুনিঃ।
অসুক্তকামধুক্ সর্বাং যথাকামমলৌকিকং ॥৫৬॥

বলকল ধারণ পূর্বকে তপস্থি জন সেবিত গছন কানন মধ্যে অদ্য কি হেতু আগমন করিয়াছ ? ভরত ভরদ্বাজের বাক্য শ্রবণ করিয়া সজল নয়নে কহিলেন, হে মহর্ষে ! আপনি সর্বভৃতের অন্তর্যামী, তপঃপ্রভাবে আপনার অবিদিত কিছুই নাই, এই ক্ষণে মাপনি আমাকে গে কিঞ্চিৎ জিজ্ঞাসা করিতেছেন তদ্বারা কেবল অনুপ্রার প্রকাশ হইতেছে। যাহাহউক আপনার প্রষ্ঠ-ব্যের প্রত্যুক্তর প্রদান করিতেছি। হে মহর্বে! আপনার পাদ-স্পর্শ করিয়া কহিতেছি যে, রামচন্দ্রের রাজ্যাভিষেক কার্য্যে কৈকেয়ী যেরপ বিঘাচৰণ করিয়াছেন এবং শ্রীরামচন্দ্র চতুর্দ্দশ বর্ষ কালের জন্য সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত বনবাসী হইয়াছেন, এই সকল বিষয়ে আমি অনুমাত্র বিদিত ছিলাম না, হে মহা-ক্ষন! এ সম্বন্ধে আমি দোষী—কি নিৰ্দ্দোষী আপনি সকলই জানিতেছেন, হে প্রভা! জীরামচন্দ্র সত্ত্বে আমি কিবাজ্যভার গ্রহণ করিতে পারি ? যেহেতু আমি জীরামচন্তের নিত্য দাস, হে মুনিসত্তম! এইক্ষণে মনোমধ্যে এইরূপ স্থির করিয়াছি যে, বনমধ্যে আমি জ্ঞারামচরণে পতিত হইমা রাজ্যভার প্রদান

পূর্ব্বক বশিষ্ঠদেব, পূর্বাসিগণ ও জনপদর্দ্ধের সহিত মহাসমারোহে তাঁহাকে অভিষিক্ত করিয়া অ্যোধায় প্রভাগামন
করিব এবং অতি নীচ দাসের ন্যায় আজ্ঞানুবভী হইয়া
রাজাধিরাজ জ্ঞীরামচল্রের চরণ সেনা করিব।৪৩ ৪৪।৪৫।৪৬।
৪৭।৪৮।৪৯।৫০।৫১। অনন্তর মহর্ষি ভরদ্বাজ সম্মেহালিজন
পূর্ব্বক ভরতের মন্তকান্তাণ করিয়া বিশ্বর সহকারে বভতর
প্রশংসা করিয়া কহিলেন, হে বৎস! পূর্ব্বেই আমি জ্ঞানচক্ষ্
দারা এই সকল ভবিষাদ্বতান্ত বিদিত হইয়াহি, অতএব শোক
পরিত্যাগ কর, তুমি লক্ষ্মণ অপেক্ষা জ্ঞীরামের ভক্ত ।৫২।৫৩।
ছে দাশরথে! আমার জাশ্রমে অবস্থিতি করিয়া আতিথা
গ্রেহণ কর — সৈন্যাণ সমন্তির্যাহারে অদ্য এন্থানে ভোজনাদি কার্যা সম্পাদন করিয়া আগ্রামি দিবসে বাম সন্নিধানে
গমন করিবে, অনন্তর ভরত তথান্ত বলিয়া মুনিবাক্যে সন্মন্ত
ছইলেন। মুনিশ্রেষ্ঠ ভরদান্তর তৎক্ষণাৎ হোমগৃছে প্রবেশানন্তর মৌনব্রতাবলম্বন পূর্ব্বক জলস্পার্শ করিয়া কাম-প্রস্বিনী

ভরতদ্য দদৈনাস্য যথেকং চ মনোরথং।
তথা ববর্ষ দকলং তৃপ্তান্তে দর্বদৈনিকাঃ ॥৫৭॥
বিনষ্ঠং পৃদ্ধরিত্বাত্রে শাস্ত্রদূষ্টেন কর্মাণা।
পশ্চাৎ দদৈনাং ভরতং তুর্পরামাদ যোগিরাট্॥৫৮
ট্রিরা দিনমেকন্তু আকুন্মে স্বর্গদরিতে।
ভাতবাদ্য পুনঃ প্রাতভর্ত্রাক্তং সহামুক্তঃ।
ভরতন্ত কৃতানুক্তঃ প্রথথো রামদরিধিং॥৫৯॥
চিত্রকূটমন্ত্রপ্রাপ্য দূরে সংস্থাপ্য দৈনিকান্।
রামদন্দর্শনাকাজক্রী প্রথথো ভরতঃ স্বয়ং॥৬০॥
শত্রুবে স্থমন্ত্রেণ গুহেন চ পরত্রপঃ।
ভপ্তিমণ্ডলং সর্বহং বিচিন্থানো ন্যবর্ত্ত॥৬১॥
অদৃষ্ট্রারামভ্রনমপৃচ্ছদ্বিমণ্ডলং।
কুত্রান্তে দীতরা সান্ধং লক্ষাণেন রঘ্তুমঃ॥৬২॥

কামধেলকে চিন্তা করিতে লাগিলেন। অনন্তর মুনিবরের তপঃ-প্রভাবে কামধেনু আগমন করিয়া সদৈন্য ভরতের উপ-ভোগ যোগ্য অতি মনোহর অলে কিক বস্তু সকল প্রদান করিলেন। ৫৪। ৫৫। ৫৬। যোগিরাজ ভরদ্বান্ধ প্রথমতঃ বশিষ্ঠ দেবের যথা শাস্ত্র পূজা করিলেন, অনস্তর সদৈন্যে ভরতকে নানা-বিধ উপভোগাই দিব্য বস্তু প্রদান করিয়া পরম সম্ভুষ্ট করিলেন। ৫ বার্চা ভরত পরিজন সম্ভিব্যাহারে স্থর্গস্চুশ মনোহর তপো-বনে একদিন বাস করিয়া প্রদিন মহর্ষির অভিবাদনানস্তর ভদীয় অনুজ্ঞানুদারে রুণমুদলিধানে গম্ম করিলেন। অনন্তর চিত্রকুট-প্রতে আংরোছণ করিয়া কিঞ্জিুরে দৈনা স্থাপন পূর্বকি শক্রন্ত স্ত্রমন্ত্র ৩ গুছক সমভিব্যাহারে রামদর্শনাভিলাধে গমন করিলেন। ভবভ কিয়ক্র প্যান্ত গমন করিয়া কেবল সাদিমগুল দেখিতে লাগিলেন জীরামের বাসভবন কাছারও দৃষ্টিগোচর ২ইল না, অ্তলংহতাশ হইবা প্রতিনিবৃত হইলেন। ভরত কিয়দ্ধ প্রতি-নিবৃত ছইয়া ঋষিগণকৈ পুন জিজ্ঞানা করিলেন, হে তপোধনগণ! সীতা ও লগাণের সৃষ্ঠিত জীরামচন্দ্র কোনু স্থানে বাদ করিতেছেন ৫৯। ৬০।৬১ ৬২। ব্রষ্ণিশ কছিলেন—চিত্রকুট পর্বতের পশ্চাৎ

উচুরত্থে গিরেঃ পশ্চাদ্গঙ্গ।য়াৎ উত্তরে তটে। বিবিক্তং রামসদনং রম্যৎ কানন্মগুতিং। ৬৩। সফলৈরাঅপন্দৈঃ কদলীখগুসমৃতং।

(কদলীবশুমশুক্তং ইত্যপি পাঠঃ)
চম্পকৈঃ কোবিদারৈশ্চ পুলাগৈর্বিপুলৈন্তথা ॥৬৪॥
এবং দর্শিত মালোক্য মুনিভির্ত্তরতোহগ্রন্থঃ।
হর্ষাদ্যযৌ রঘুশ্রেষ্ঠ ভবনং মান্ত্রণা সহ। ৬৫॥
দদর্শ দূরাদ্তিভাস্থরং শুভং
রামসা গেহং মুনিরন্দসেবিতং।
রক্ষাগ্রসংলগ্নন্থকেলাজিনং
রামাভিরামং ভরতঃ সহানুজঃ॥ ৬৬॥

ইতি জ্রীমনধ্যাত্মরামায়ণে উম্থান্তেশ্বর সংবাদে অযোধ্যাকাণ্ডে অফ্টান্ড্রগায়ঃ।

ভাগিরথীর উত্তর ভীরে জীরামচক্র বিচিত্র কাননমণ্ডিত রমণীর অতি নির্জন বাদ ভবন প্রস্তুত করিয়াছেন, যাহার চতুন্দিকে আল পনস এবং কদলী প্রভৃতি তরুগণ কলভরে অবনত হুইলা বিচিত্র শোভা সম্পাদন করিতেছে এবং চম্পক কোবিদারক পুরাল প্রভৃতি পাদপগণ পুম্পিত হুইলা চতুন্দিক আমোদিত করিতেছে। ৬০। ৬৪। অনন্তর ভরত পরমানন্দিত হুইলা পরিজন সমভিবাদিরে মুনির্গণ সন্দর্শিত শ্রীরামভবনাভিমুথে গমন করিলেন, ভরত শক্রমের সহিত কিয়ন্দর সামনানশুর মুনিজন সমাবীর্ণ অতি সমুজ্জল জীরামভবন অবলোকন করিয়া সমীপত্র বৃক্ষশাখা সংলগ্ধ জীরামের বন্ধল ও মুলচন্দ্রাদি সকল সজল নয়নে বারস্থার অবলোকন করিতে লাগিলেন। ৬৫। ৬৬।

ইতি জ্ঞামদবাগন্ধরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অব্যোগাকাতে অপ্তমোহবাগিঃ।

নবমো>ধ্যায়

শ্রিমহাদের উবাচ।

অথ গড়াইশ্রমপদসমীপং ভরতোমুদা। দীতারামপদৈযুক্তিং পবিত্রমতিশোভনং ॥১॥

স তত্র বজ্ঞান্ধুশবারিজ্ঞাঞ্চিতপ্রজাদিচিক্সানি পদানি সর্বতঃ।
দদর্শ রামসা ভুবোহতিমঙ্গলান্যচেক্টরৎপাদরজঃ স সামুজঃ॥২॥
আহো স্থান্যোহঃমমূনি রামপাদারবিন্দান্ধিতভূতলানি।
পশ্যামি যৎপাদরজোবিমৃগ্রং
ব্রহ্মাদিদেবৈঃ প্রুতিভিন্চ নিতাং।।।
ইতদ্ভেতপ্রেমরসাপ্লুতাশরো
বিগাতচেতা রঘুনাথভাবনে।

সমন্তব ভব ত পরমাজ্ঞাদে সীতা-বামের চবণচিক্ত শোভিত স্থচাক পবিত্র জীশ্রম পদেগমন করিয়া ভবন সমীপে ধবজবজ্ঞাকুশ
শ্রাদিরপ শ্রীরামের পাদচিক্ত দর্শন করিলেন । অনন্তর শ্রীরামের
শাদচিক্তিত ধূলি সমূকোপরি পতিত হইরা গাত্র লুঠণ করিতে ২
িচপ্তা করিতে লাগিলেন । অহো! ব্রহ্মাদি দেবগণ ও শ্রুতিগণ ।
বাঁহার চরণধূলিকণা সভাত অবেষণ করিয়া থাকেন, সেই
শ্রীবামের চরণারবিন্দ চিক্তি ভূমিতল দর্শন করিয়া আমরা অতি
বন্য হইলাম। ভবত প্রেমবদ পরিপ্রিভাস্কঃকরণে এই সকল
নানা প্রকার চিস্তা করিতে শ্রীরামের আশ্রমে উপস্থিত হইয়া

আনন্দজাশ্রুমপিতস্তনান্তরঃ
শনৈরবাপাশ্রমসন্নিধিং হরেঃ ॥৪॥
স তত্র দৃষ্ট্বী রঘুনাথমাস্থিতং
দূর্ববাদলশ্যামলমায়তেক্ষণং ।
জটাকিরীটং নববল্কলাম্বরং
প্রসন্নবক্ত্বং তরুণারুণদূর্তিং ॥৫॥
বিলোকয়ন্তং জনকাত্মজাং শুভাং
সৌমিত্রিণা সেবিতপাদপদ্ধজং ।
তদাভিদুদ্রাব রঘূত্তমং শুচা
হর্ষাচ্চ তৎপাদযুগং ত্রন্যেহীৎ ॥৬॥
রামস্তমাক্ষব্য স্থামিবিঞ্চ নেত্রকৈঃ
জলৈরথাক্ষোপরি সন্ন্যবেশরৎ
পুনঃপুনঃ সম্পরিষম্বক্ষে বিভুঃ ॥৭॥

আনলাশ্রপূর্ণ লোচনে শ্রীরামকে দর্শন করিলেন। বালাকণ সম্জ্ঞান নামুক্রিদলশ্যাম ভটাবন্ধলধারী শ্রীরামচন্দ্র আসনোপবেশন
করিয়া সহাস্যবদনে দীতাদেবীর প্রতি আয়ত দৃষ্টিপাত করিতেতেন, শুভ লক্ষণ-সম্পন্ন লক্ষ্যণ দাসের ন্যায় তাঁছার চরণ সেবা
করিতেছিলেন, এমন সময়ে ভরত শোকাবেগ বশভঃ জ্ঞাতবেগে গমন করিয়া পরমানন্দে শ্রীরামের চরণ্ডায় ধারণ করিলেন। ১০২০ ৩। ৪০০ ৩। অন্তরে শ্রীরাম স্থণীর্ঘ বাহ্-বৃগল
দ্বারা ভরতকে আলিজনানন্তর নয়নজ্ঞা বর্ষণহারা অভিষক্ত

অথ তা মাতরঃ দর্কাঃ দমাজগ্মু স্বরাশ্বিতাঃ।
রাঘবং দ্রুফু কামাস্তাস্ত্রার্জা গোর্যথা জলং ॥৮॥
রামঃ স্বমাতরং বীক্ষ্য দ্রুফু প্রথার পাদরোঃ।
ববন্দে সাক্র সা পুত্রমু লিক্যাতীব দুঃখিতা॥৯॥
ইতরাক্ষ তথা নত্বা জননী রঘুনন্দনঃ।
ততঃ সমাগতং দৃষ্টা বশিষ্ঠং মুনিপুঙ্কবং ॥১০॥
সাফ্টাঙ্গপ্রনিপত্যাহ ধন্যোহশীতি পুনঃপুনঃ।
যথাহ মুপবেশ্যাহ দর্কানেব রঘু দহঃ ॥১১॥
পিতা মে কুশলী কিয়া মাং কিমাহাতিছঃখিতঃ
বশিষ্ঠন্তমুবাচেদং পিতা তে রঘুনন্দন!। ১২॥

স্বিয়োগাভিতপ্তায়া স্থানের পরিচিত্রন্।
রাম!রামেতি সীতেতি লক্ষাণেতি মমার হ ॥১৩।
শ্রুণা তৎকর্ণশূলাভং গুরোর্ফ্রচনমঞ্জ্যা।
হা হতোহম্মীতি পতিতো রুদন্রামঃ সলক্ষাণঃ ॥
ততোহকু রুকুত্বঃ সর্বা মাতরুক্ত ভথাপরে।
হা তাত! মাং পরিত্যজ্ঞা রুগভোহসি ঘূণাকর॥১
অনাথোহিমি মহাবাহো মাং কো বা লালয়েদিতঃ।
সীতা চ লক্ষাণকৈর বিলেপভুরতো ভূশং। ১৬॥
বশিষ্ঠঃ শান্তবচনৈঃ শময়ামাস তাংশুচং।
ততো মন্দাকিনীং গল্বা স্থাত্ব। তে বীতকল্মষাঃ।।১৭।
রাজ্ঞে দত্বর্জনং তত্র সর্বেতে জলকাজ্জ্বিণে।
পিণ্ডাল্লির্ফ্রাপয়ামাস রামো লক্ষ্মণসংযুতঃ॥১৮॥

করিয়া স্বকীয় ক্রেণড়ে উপবেশম করাইলেন, এবং সেহ সহ-কারে বারম্বার আলিমন করিতে লাগিলেন। ৭। অমস্তর ভূষিত গাভীগণ জল দর্শন করিয়া যেরপ জতবেগে গমন করে. কৌশল্যা প্রভৃতি মাতৃগণও শ্রীরামতে দর্শন করিবার নিমিত তজ্ঞপ ত্রালিত ছইয়া সেই স্থানে উপপ্তিত ছইলেন ।৮। শ্রীরাম নিজ জননী কৌশল্যাকে দর্শন করিবামাত্র সহস্য গাতোখান করিয়া তাঁহার পদ-যুগল বন্দনা করিলেন। অতি হুঃথার্তা কৌশল্যাদেবীও জ্রীরামকে জালিম্বন করিয়া রোদন করিতে লাগিলেন। ৯। অনন্তর রঘুনন্দন অন্যান্য মাতৃগণকে গুণাম করিয়া সমাগত বশিষ্ঠদেবকে দর্শনানম্ভর সাষ্টাঞ্চ প্রণিপাত করিলেন এবং বাবস্থার কহিলেন, হে গুরো! আমি ধন্য হইলাম যেহেতৃ এই বিজন বনে আপনার দর্শন লাভ করিলাম। অনন্তর तपुरुष द्वामहत्त कुक्कन ७ अन्याना श्रीतकनिगरक यंशार्याता উপবেশন করাইয়া জিজাসা করিলেম।১০।১১। আমাদিগের পিতৃদেব কুশলে অপছেন ? ছঃথান্ত হইয়া আমাকে কি কোন আদেশ করিয়াছেন ? বশিষ্ঠনের কহিলেন, হে রঘুননান ! রাজা

দশরণ ভোমার বিবহে অতি হঃথিত হইয়া গদগদচিতে হা রাম!
হা লক্ষ্মণ ! হা দীতে! এই প্রকারে বহু বিলাপ করত মৃত্যুমুখে
পতিত হইয়াছেন ৷ ১২৷ ১৩৷ শ্রীরাম ও লক্ষ্মণ কর্ণশূল সদৃশ গুরু
বাকা সহসা প্রবণ করিয়া হা হতোশ্মি! এইরূপ বহু বিলাপ ও
রোদন করত ভূতলে পতিত হইলেন ৷ ১৪৷ শ্রীরামের রোদন
ধরনি শ্রবণ করিয়া রাজমহিষীগণ ও অন্যানা সকলে উচ্চঃস্থরে রোদন করিতে লাগিলেন ৷ অনস্তর দীতা ওশাক্ষ্মণ বহুতর
বিলাপ করিতে আরম্ভ করিলেন, হা তাত দয়ানিধে! আমাদিগকে পরিত্যাগ করিয়া আপনি কোথায় গমন করিলেন? হা
মহাবাহো! আমরা এইক্ষণে অনাথ হইলাম, আমাদিগকে অনা
কোন্ ব্যক্তি রক্ষা করিয়েন ? ৷১৫৷১৬৷ অনস্তর বিশিষ্ঠদেব
শাস্ত বাক্যমারা সকলের শোকশান্তি করিলেন ৷ কিয়ৎক্ষণ পরে
সকলে সমবেত হইয়া মন্দাকিনী গমনানন্তর স্নাত ও ক্নতাহিক
হইয়া মৃতমহারাজের ভৃপ্তি সাধনার্থ জলাঞ্জি প্রদান করিলেন ৷

ইঙ্গদীকল পিণ্যাকর চিতামাধুসং প্লু তান্।
বয়ং যদরাঃ পিতরস্তদরাঃ স্মৃতিনোদিতাঃ। ১৯॥
ইতি চঃখাশ্রুপূর্ণাক্ষঃ পুনঃ স্লাড্বা গৃহং যথে।।
সর্বের রুদিড়া স্ফ চরং স্লাড়া জগ্মু স্তথাশ্রমম্ ॥২০॥
তিমিংস্ত দিবদে সর্বের উপবাসং প্রচক্রেরে।
ততঃ পরেচ্যুর্কিমণে স্লাড়া মন্দাকিনীজলে॥২১॥
উপবিষ্টং সমাগম্য ভরতো রামমন্ত্রবীৎ।
রাম রাম মহাভাগ! স্বাড্মানমভিষেচয়॥২২॥
রাজ্যং পালয় পিত্রান্তে জ্যেষ্ঠ স্থং মে পিতা তথা।
ক্ষিত্রিয়াণ্যময়ং ধর্মো যৎপ্রজাপরিপালনং ।২ ।।
ইন্ট্যা যক্তৈরিভ্রিথঃ পুল্লামুৎপাদ্য তন্ত্রে।
রাজ্যে পুতং সমারোপ্য গমিষ্যাদি তত্রো বনং ।২৪

ইদানীং বননাসস্য কালো নৈব প্রসীদমে।

মাতৃমে ছৃদ্বং কিঞ্চিৎ স্মর্ত্তং নাহ সি পাহি নং॥
ইতুক্তো চরণো প্রাত্তঃ শ্রেস্যাধায় ভক্তিতঃ।
রামস্য পুরতঃ সাক্ষাদগুর মুপতিতো ভুবি ২৬।
উপ্যাপ্য রাঘবঃ শীঘু সারে প্রাক্তেং তিভক্তিতঃ।
উপাপ্য রাঘবঃ শীঘু সারে প্রাক্তেং করি ।
ইনাচ ভরতং রামঃ ক্ষেহাদনয়নঃ শ নৈঃ॥২৭॥
গুণু বৎস! প্রবক্ষ্যামি জ্যোক্তং যত্তথৈব তং।
কিন্তু মামত্রবীততো নব বর্ষাণি পঞ্চ চ॥ ২৮।
উবিত্বা দগু করেণো পুরং পশ্চাৎ সমাবিশ।
ইদানীং ভরতায়েদং রাজ ং দক্তং ময়া থিলং। ২ন।
ততঃ পিত্রৈব স্থব্যক্তং রাজাং দক্তং তবৈব হি।
দগুকারণ্যরাজ্যং মে দক্তং পিত্রা তথৈব চ।।৩০।।

শ্রীরাম ও লক্ষ্মণ সেই স্থানে ইম্বুদী ফল ও পিণ্যাক দারা পিও নিশাণ করিলেন এরং আমরা এক্ষণে যেরূপ অল্ল ভক্ষণ করি তেছি পিতৃলোক দেইরূপ অন্ন ভোজন ককন এট কথা বলিয়া মধুমিত্রিত ঐ পিণ্ড মৃতমহারাজকে প্রদান করিলেন।১৭।১৮।১৯ অনন্তর পুনর্বার স্নান করিয়া তুঃখাজ্ঞাপূর্ণ নয়নে দৃষ্টিপাত করতঃ গৃহে প্রভাগমন করিলেন, অদ্য পরিজনগণও কিঞ্ছিৎ কাল রোদন করিয়া পুনঃ স্থানানন্তর গৃহে প্রত্যাগমন করিলেন, এবং বশিষ্ঠদেবের আজ্ঞাত্মারে ঐ দিবস ঐ স্থানে সকলে উপবাস্ত বিশ্রাম করিলেন। প্রদিন প্রাতঃকালে বিমল গঙ্গাজলে স্থানাদি কুতা সমাপন করিয়া জ্ঞীরামচক্র উপবেশন করিয়াছেন এমন সময়ে ভরত সেই স্থানে আলমন করিয়া কহিতে আরম্ভ করি-লেন—হে মধাভাগ! আপনি ঘৌবরাজ্যে অভিধিক্ত ছউন, আপনি আমাদিগের জ্যেষ্ঠ অতএব পিতার নাায় পিতৃরাক্তা প্রতিপালন করা আপনারই সম্চিত কার্য্য, হে ধর্মাত্মন ! প্রজা-পালনই ক্ষত্রিয়দিগের প্রধান ধর্ম-আপনি ধার্মিক ক্রখনই अक्षर्त्व भताबाब इटेर्जन ना ।२०।२५ । २२ । २७ । जाभनात यहि

বনগমন নিতান্ত অভিমত হুইয়া থাকে ভাহাও ক্ষ্ত্রির্দিগের ধর্ম, কিন্তু তাহার সময় বিশেষ নির্ণীত আছে—ছে মহাবাহে।। किकिए काल शाकाशीनन, रहित्य राष्ट्रामा छुठान, এवर वर्णधावा রক্ষার্থ সম্ভানোৎপাদনাদিকার্য্য সমাধা করিয়া অনুরূপ সম্ভানে রাজ্য ভার প্রদান পূর্বক বনগমন করিবেন। ২৪। এক্ষণে আপনার বনগমন করিবার সময় নছে, হে দ্যাময় ! আপনি আমার প্রতি প্রদন্ন হইয়া কৈকেয়ীর অকার্যা স্মরণ করি-বেন না, হে প্রভো! আমাদিগকে রক্ষা করুন, ভরত এইরূপ কহিতে কহিতে ভক্তিপূর্বক শীরামের চরণযুগল মন্তকে ধারণ করিয়া সন্মুখে দণ্ডবৎ পতিত হইলেন। ২৫। ২৬। শ্রীরাম স্লেহ-সহকারে ভরতের মন্তকোত্তলন পূর্বক তাঁলাকে নিজ কোড়ে উপবেশন করাইয়া মৃত্স্বরে কহিলেন, বৎস। শ্রবণ কর তুমি যাহা কহিলে সকলই সভা, কিন্তু পিতা আমাকে আজ্ঞা করিয়াছেন যে, তুমি চতুর্দশবর্ষ দণ্ডকারণ্যে থাস করিয়া অবোধাায় পুনরাসমন করিবে, আমি ভরতকে সমস্ত রাজ্য প্রদান করিলাম। অতএব পিতার স্পষ্ট অভিপ্রায় যে, তোমাকর্তৃক রাজ্ঞা পালন ও আমা কর্তৃক দওকারণ্য রক্ষা হয়, পি তার ব'ক্যা সামাদিগের শিরোধার্যা

অতঃ পিতুর্বিচঃ কার্য্যাবাভ্যামতিবত্নতঃ।
পিতৃর্বিচনমূলজ্ব্য স্বতস্থো যস্ত বর্ত্তে।।৩২॥
স জীবন্নেব মৃতকো দেহাব্দে নিরয়ং ত্রজেৎ।
ভক্ষাদ্রাজ্যং প্রশাধি সুহি বয়ং দশুকপালকঃ।।৩২
ভরতন্ত্রবীদ্রামং কামুকো মূঢ্ধীঃ পিতা।
ত্রীক্রিতো ভ্রান্তহ্লয় উন্মত্রো যদি বক্ষ্যতি।
তং সত্যমিতি ন গ্রাহ্থ ভ্রান্তবাক্যং যথা সুধীঃ।
রাম উবাচ।

ন স্ত্রীজিভঃ পিতা ব্রয়ান্নকামী নৈব মূঢ়ধীঃ।
পূর্বাং প্রতিশ্রুতং তদ্যৈ সভাবাদী দদে ভয়াৎ।।
অসত্যাদ্রীতির্ধিকা মহতাং নরকাদপি।
কর্বামীতাহমপ্যেতৎ সতাং তদ্যৈ প্রতিশ্রুতং।।

কথং বাচ্যমহং কুর্য্যামসত্যং রাঘবো হি সন্ ?।

ইত্যুদীরিতমাকর্ণ্য রামস্য ভরতো (পুরতো

ইত্যুদি পাঠঃ) হত্তনীৎ । ৩৬।

তথৈব চীরবসনো বনে বৎস্যামি স্তত্তত্ত্ব !।

চতুর্দিশসমাস্ত্রং তু রাজ্যং কুরু যথা স্থুখং । ৩৭।

রাম উবাচ।

পিত্রাদন্তং তবৈবৈতদ্রাজ্যং মহাং বনং দদে।।

ব্যত্যয়ং যদ্যহং কুর্য্যামসত্যং প্র্রেবৎ স্থিতং।

ভরত উবাচ।

অহমপ্যাগমিষ্যানি সেবে তাং লক্ষ্মণো যথা।
না চেৎ প্রায়োপবেশেন ত্যজাম্যেতৎকলেবরং
ইত্যেবং নিশ্চয়ং কৃত্বা দর্ভানান্তীর্গ চাভপে।
মনসাপি বিনিশ্চিত্য প্রাধ্য খোপবিবেশ সং ॥ ৪০৪

রযুক্লে জন্মগ্রহণ করিয়া কিরূপে পূর্ক প্রতিশ্রুত অন্তথ্য করিব। ভরত শ্রীরামের এইরূপ দারণ বাকা শ্রবণ করিম। কহিলেন । ৩৪। ৩৫। ৩৬। তে রঘুবংশাবতংল ! আমি আপনারণ প্রতিনিধি ছইয়া চতুদিশবর্ষ জটা—বর্মন ধারর ও বনবাদ করিব। আপনি পরম স্থাথে রাজ্য ভোগ করুন । ৩২। রাম কহিলেন পিতা ভোমাকে রাজ্য ভ আমাকে অরগ্য প্রদান করিয়াছেন। যদি আমরা ইহার বৈপরীতা করি তাহা হইলেও পিতা মিথ্যা হইতে নিঙ্গুতি পাইবেন না । ৩৮। অনস্তর ভরত কহিলেন, হেরঘুনন্দন ! আপনি যদি বনবাদে দুঢ়া প্রতিজ্ঞ হইয়া থাকেন, তাহা হইলে আমিও লক্ষ্মণের ন্যার আপনার অনুগামী হইয়া চরণ দেবা করিব, ইহাতে অপ্রদান অসমতি হইলে আমি প্রয়োপবেশনদারা এই শরীর পরিভ্যাণ করিব । ৩৯। অনস্তর ভরত প্রয়োপবেশনে রুত্দক্ষর হইয়া আভিপ্দস্তিও ভূতকে বিন্যস্ত কুশোপরি পূর্ব্বাদ্য হইয়া উপবেশন করিব-

জরতস্যাপি নির্দ্ধিকং দৃষ্ট্বা রামোইতিবিম্মিতঃ।
নেত্রাস্থসংজ্ঞাং গুরবে চকার রঘুনন্দনঃ॥ ৪১॥
একান্থে ভরতং প্রাহ বশিষ্ঠো জ্ঞানিনাং বরঃ।
বৎস! গুছং শুনুষ্কেদং মম বাক্যাৎ স্থনিশ্চিতং ॥৪২
রামো নারায়ণঃ সাক্ষাদ্ত্রক্ষণা যাচিতঃ পুরা।
রাবণস্য বধার্থায় জাতো দশর্থায়্মজঃ॥৪৩॥
যোগমায়াপি সীতেতি জাতা জনকনন্দিনী।
শেষোইপি লক্ষণো জাতো রামমস্থেতি সর্বদা॥৪৪
রাবণং হন্তুকামান্তে গমিষ্যন্তি ন সংশয়ঃ।
কৈকেষ্যা বরদানাদি যদ্যন্নিষ্ঠুরভাষণং ॥৪৫॥
সর্বাহ দেবকৃতং নো চেদেবং সা ভাষ্যেৎকর্থং!
তত্মান্তাজাগ্রহং ভাত। রাম্যা বিনিবর্ত্তনে ॥৪৬॥

্লন ।৪০। শ্রীবাসচন্দ্র ভরতের আগ্রহাতিশায় দর্শনে অভি বিশ্বরাপর হটয়া বশিষ্ঠদেবকে নেত্র ভঙ্গি দারা সংক্রত করিলেন। ৪১। জানীশ্রেষ্ঠ বশিষ্ঠদেব ভরতকে নিৰ্জ্জন প্রদেশে আহ্বান করিয়া কহিলেন—হে বংস! অভিগ্রহা র্ত্তান্ত আমার নিকট.

শ্রীরাম সাক্ষাৎ বৈকুঠ নাথ নারায়ণ, রাবণ বধার্থ কমলযোনি কর্ত্বক প্রাথিত হইয়া দশরথগ্ছে জন্ম প্রহণ
করিয়াছেন, যোগমায়াও সীতারপে জনক গছে শরীর পরিগ্রহ করিয়াছেন, জনস্তদেব লক্ষমণ রূপে জন্মপ্রাহণ করিয়া
সর্বাণ শ্রীরামের জন্মগমন করিতেছেন। ৪২। ৪৩। ৪৪।
এক্ষণে ইহারা সকলেই রাবণ বধার্থ নিশ্চয় লক্ষায় গমন
বিবেন, কৈকেয়ী এ সম্বন্ধে যে সকল নিষ্ঠুর ব্যবহার করিয়াছেন সেসকল দেবতাদিগের অভিমত্ত কার্যান্তেৎ ধর্মপ্রায়ণা
কৈকেয়ী কিহেতু এরপ নিষ্ঠুর ব্যবহার করিবেন ? অত্তর্রব ছে ভরত! জীরামের প্রত্যান্যনার্থ আগ্রহাতিশয় ত্যাণা
করিয়া পরিজন সম্ভিব্যাহারে ক্ষমোধ্যায় প্রতিনিত্ত ছও।
রাবণকে সমূলে উন্ম লিত করিয়া শীত্র প্রত্যাণমন

নিবর্ত্তর মহাদৈনৈাত্রাভৃতিঃ সহিতঃ পুরং।
রাবণং সকুলং হলা শীঘুমেবাগমিষ্যভি॥ ৪৭॥
ইতি শ্রুলা গুরোর্কাকাঃ ভরতো বিশ্বয়াস্থিতঃ।
গল্পা সমীপং রামস্য বিশ্বায়াহিত্রলাচনঃ ॥ ৪৮॥
পালুকে দেহি রাজেন্দ্র! রাজ্যায় তব পূজিতে।
তয়োঃ সেবাং করোম্যের যাবদাগমনং তব ॥ ৪৯॥
ইত্যুক্ত্রা পালুকে দিব্যে যোজ্বয়ামাস পাদয়োঃ।
রামস্য তে দদে রামো ভরতায়াতিভক্তিতঃ ॥ ৫০॥
গৃহীলা পাদুকে দিব্যে ভরতো রল্পুষিতে।
রামং পুনং পরিক্রম্য প্রাণমাম পুনং পুনং ॥ ৫১॥
ভরতঃ পুনরাহেদং ভক্ত্যা গদ্যাদয়া গিরা।
নবপঞ্চমমান্তে তু প্রথমে দিবসে যদি ? ॥ ৫২॥
নাগমিষ্যদি চেদ্রাম। প্রবিশামি মহানলং।
বাচ্মিতোর তং রামো ভরতং সম্যুবর্ত্তয়ৎ ॥ ৫৩॥

করিবেন। ৪৫। ৪৬। ৪৭: ভরত গুরুদেবের বাকা প্রবণাননন্তর অতি বিশ্বয় সহকারে প্রীরামের নিকট গমন করিলা কহিলনে, হে রাজেন্দ্র । আপনি পরমার্চনীর পাছুকাদ্বর আমাকে প্রদান করুন, আপনি লাবৎকাল প্রত্যাগমন না করিবেন ভাবৎকাল ঐ পাছুকাদ্বর সেবা করিয়া রাজ্যপালন করিব। ৪৮।৪৯। অনন্তর ভরত শ্রীরামের চরণদ্বর পাছুকা যোজনা করিলেন, প্রীরাম ভরতের অভিভক্তি দর্শনে সাতিশয় প্রীত হইয়া পাছুকাদ্বর প্রদান করিলেন। ৫০। ভরত রল্পাদি ভূষিত দিবা পাছুকা যুগল গ্রহণ করিয়া প্রীরামকে প্রদক্ষণ পূর্বক প্রকার প্রণাম করিলেন। এবং ভক্তিগদাদ বাকো কহিলেন, হে প্রভো! চতুর্দশবর্ষ সমাপ্তির অব্যবহিত পর দিবসে আপনি যদি অযোধ্যায় আগমন না করেন, ভাহা হইলে আমি নিশ্চয় অনলে প্রবেশ করিব। প্রীরাম উগহার প্রার্থনায় সামত হইয়া ভরতকে নির্ভ করিলেন । ৫১। ৫২। ৫২।

সদৈন্যঃ স বশিষ্ঠ-চ-শক্তপ্নসহিতঃ স্থীঃ।
মাতৃতিমল্লিভিঃ সাদ্ধং গমনায়োপচক্রমে ॥৫৪॥
কৈকেয়ী রামমেকান্তে স্ক্রমেক্তপ্লাকুলা।
প্রোঞ্জলিঃ প্রাহ হে রাস্ক্ তবরাজ্যবিঘাতনং ॥৫৫॥
কৃতং ময়া ছফীধয়া মায়ামোহিতচেতসা।
ক্ষমস্ব মম দৌরাগ্রাং ক্ষমালারাহি সাধবঃ॥৫৬॥
জং সাক্ষাদ্বিফুরবাক্তঃ পরমালা সনাতনঃ।
মায়ামানুষকপেণ মোহয়স্থিলং ক্রগৎ।
ভবৈর প্রেরিতো লোকঃ কুরুতে সাধ্যাধু বা॥৫৭॥

অনন্তর ভরত, বশিষ্ঠ, শত্রুত্ম, মন্ত্রিবর্গ, মাতৃগণ ও সৈন্যগণ কর্তৃক পরিব্রত ছইয়া প্রত্যাগমনের উদ্যোগ করিলেন। ৫৪। কৈকেয়ী নির্জন স্থানে জীরামকে আহ্বান করিয়া কভাঞ্জলি-পুটে কহিলেন, হে রাম ! আমি তোমারই মায়ায় মুঝ হইয়া তোমার অহিতাচরণ করিয়াছি, এক্ষণে নিজ্ঞণে আমার পূর্বকৃত দেরিবাত্তা ক্ষমা করিতে হইবে, ক্ষমাশীল সাধু পুরুষের শক্তর প্রতিও ক্ষমা করিতে পরাব্রুখ হয়েন না। । ৫৫। ৫৬। হে গুণাকর ! ডুমি সাক্ষাৎ পরমাক্সা-সমাতন বিষ্ণু-সত্ম গুণনর, নিজমৃতি গোপণ করিয়া মায়ামনুষ্য রূপে সমস্ত জাগৎকে মুগ্ধ করিতেছ। লোক সকল তোমাকর্ছক প্রেরিভ হইরা স্থ ও অস্থ কার্য্য সমস্তই করিভেছে, এই বিশ্ব তোমারই অধীন স্তরাং অস্বতন্ত্র বশত স্বয়ং কি কেছ কোন কার্য্য করিতে পারে? যেমন স্থত্ত সরঙ্গ কৃত্তিম পুত্তলিকা কুহক বাজির হত্ত চালনদারা হত্য করিয়া থাকে, ভজপ বহুরূপিণী মায়া তোমারই ইচ্ছার অধীন হইয়া এই সংগার মধ্যে স্ত্য করিতেছে—হে প্রভো! দেবতাদিগের কার্য্য সিদ্ধার্থ ভোমাকর্ত্ক প্রেরিত হইয়া আমি অতি পাপ কার্য্য করিয়াছি: এক্ষণে বিশেষ রূপে ভাষগত ছইলাম যে তুমি দেবতা-দিগেরও বাধানাতীত পদার্থ, ছে বিশ্বেশ্বর! ছে অনস্ত ! ছে জগরাণ! আমি ভোমাকে নমকার করি, আয়াকে পূর্বারুত

বিশ্বনিসদং বিশ্বনস্বতন্ত্রং করোতি কিং? ।

যথা ক্রন্তিননর্তক্যো নৃত্যন্তি কুহকেচ্ছ্রা ।।৫৮॥

স্বদ্ধীনা তথা মায়া নর্জ্কী বছ্রূপেণী।

স্বর্ধের প্রেরিতাহং চ দেবকার্য্যং করিষ্যতা ॥৫৯॥

পাপিষ্ঠং পাপমনসা কর্মাচরমরিন্দম!।

অদ্য প্রতীতোহিদি মম দেবানামপ্যগোচরঃ॥৬০॥

পাহি বিশ্বেশ্বরানস্ত ! জগল্লাথ! নমোহস্ত তে।

ছিল্পিসেইময়ং পাশং পুত্রবিজ্ঞাদিগোচরং ॥৬১॥

সক্ত্রানামলথন্তেরন স্থামহং শরণং গতা।

কৈকেয্যা বচনং শ্রুত্রা রামঃ দন্মিতমন্ত্রীৎ ॥৬২॥

যদাহ মাং মহাভাগে ন নৃতং সত্যমেব তং।

মর্রের প্রেরিতা বাণী তব বক্ত্রান্থিনির্গ্তা ॥৬৩॥

দেবকার্য্যার্থসিদ্ধ্রের্থমন্ত্র দোষঃ কুতন্তব ?।

গচ্ছ স্বং ক্রিদি মাং নিত্যং ভাবয়ন্তী দিবানিশং॥

পাপ হইতে পরিত্রাণ কর, হে ভগবন্! আমি তোমার দারণাপার হইলাম—ভত্নজ্ঞান রূপ আঁস দ্বারা আমার ধন প্রাদি স্থেছ রূপ রজ্জুকে ছিন্ন কর। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। শ্রীরামচন্দ্র কৈকেয়ীর এই প্রকার জ্ঞানগর্ভ বাকা শ্রবণ করিয়া সহাস্য বদনে কহিলেন—হে মহাভাগো! আপনি আমাকে যাহা কহিলেন ভাছা মিখ্যা নহে, সকলই সত্য—আমিই দেব কার্য্য সিদ্ধার্থ হুই সরস্বতীকে প্রেরণ করিয়া ছিলাম, তিনিই আপনার মুখ হইতে বহির্গত হইয়া এই সকল অনর্থ ঘটনা করিয়াছেন, এ বিষয়ে আপনার দোষ কি? হে মাতঃ! আমার নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিছে হইবে না একণে গমন ক্রুল, কিন্তু নির্মান হইয়া জামাকে প্রকান্তিক ভল্তিবিলাভ ছইবে। আমি সকল পদার্থে সমজ্জান করিয়া খাকি, এই জগতে আমার ছেব্য রা প্রিরপদার্থ কিছুই নাই, যেরপ

সর্বত্তি বিগত সেহা মন্তক্ত্যা মোক্ষ সেই চিরাধ।
আহং সর্বত্তি সমদৃক ছেষ্যো বা প্রিয় এব বা ॥৬৫
নান্তি মে কল্পকল্যের ভজতোহমুভজাম্যহং।
মন্মায়ামোহিত ধিয়ো মামম্ব! মনুজাকৃতিং ॥৬৬॥
মুখদুংখাদ্যমুগতং জানন্তি ন তু তত্ত্বতঃ!
দিন্ত্যা মন্দোচরং জ্ঞানমূৎপন্নং তে ভবাপহং॥৬৭॥
স্মরন্তী তিষ্ঠ ভবনে লিপাদে ন চ কর্মাভিঃ।
ইত্যুক্ত্রা সা পরিক্রম্য রামং সানন্দবিস্ময়া ॥৬৮॥
প্রণম্য শতশো ভূমো যথো গেহং মুদান্বিতা!
ভরতন্ত্ব সহামাত্যৈর্মাতৃতি গুরুণা সহ॥৬৯॥
আব্যাধ্যামগ্যমন্ত্রিয় রামমেবামুচিন্ত্রন্।
পৌরজানপদান সর্বান্যোধ্যায়ামুদার্ধীঃ॥৭০॥

পুজরিত্বা যথা রামং গন্ধপুল্পাক্ষতাদিভিঃ।
রাণেদারৈরথিলৈঃ প্রত্যহং নিয়তব্রতঃ ॥৭২॥
ফলমূলাশনো দান্তো ক্রটাবলকলধারকঃ।
অধঃশারী ব্রক্ষারী শক্তামহিতস্তদা ॥৭৩॥
স্থাপরিত্বা যথান্যায়ং নন্দিগ্রামং যযৌ শ্বয়ং।
তত্রসিংহাদনে নিত্যং পাদুকে, স্থাপা ভক্তিতঃ ॥৭১
রাজকার্য্যাণি সর্ব্যাণি যাবস্তি পৃথিবীতলে।
তানি পাছকয়োঃ সম্যক্ নিবেদয়িত রাঘবঃ ॥৭৪॥
গণয়ন্ দিবসান্যের রামাগমনকাঞ্জয়া।
স্থিতো রামার্পিতমনাঃ সাক্ষাভুক্ষম্নির্যথা ॥৭৫॥
বামস্ত চিত্রকুটান্তো বসন্মুনিভিরারতঃ।
নীতয়া লক্ষণেনাপি কিঞ্ছিৎকালমুপাবসং ॥৭৬॥

দারাবি পুরুষের মারা কম্পিত পদার্থে দ্বেষাত্ব বুদ্ধি বা প্রিয়ত্ব
জ্ঞান হয় না, আমার ও মনোরত্তি তদ্রপ জানিবেন ; কিন্তু যে
ব্যক্তি আমাকে অনন্য চিত্তে সত্ত তজনা করে আমিও
তাহার প্রতি অনুগ্রহ করিয়া থাকি, হে মাতঃ যাহারা
আমারই মারা-বিমোহিত হইয়া আমাকে প্রাক্ত মনুব্য
বিবেচনা করে তাঁহারা আমাকে যথার্থ রূপে জানিতে পারে

। যাহাইউক অদৃষ্ট বশতঃ আপনার তত্ত্তান উৎপন্ন
হিলাছে পুনর্জন্ম হইবে না। এক্ষণে অযোধ্যায় গমন
করিয়া আমাকে দতত স্মরণ পূর্বেক গৃহে অবস্থিতি কক্ষন,তাহা
হইলে সংসার বন্ধন হইতে মুক্ত হইবেন। কৈকেণ্টী জীৱামের
সক্রপদেশ বাক্য শ্রবণ করিয়া আনন্দ ও বিস্ময় সহকারে
প্রদক্ষিণ করতঃ জীরামকে অবনত মন্তকে প্রণাম করিয়া
অযোধ্যা গমনে ক্রতসংকল্প হইলেন।

মহামতি ভারত জীরামকে চিন্তা করতঃ অমাত্য মাতৃগণ ও বশিষ্ঠদেব সমভিব্যাহারে সত্তর অংবাধ্যার গমনানন্তর পুর-বাসিগণ ও জনপদ বর্গকে তথায় রক্ষা করিয়া স্বরং নন্দি- প্রাথম গমন করিলেন, এবং কেকরী নন্দন সেই স্থামে রাজসিংহাসনোপরি রামপাছকা-যুগল ভক্তি পূর্বক রক্ষা করিয়া গন্ধ পূস্প অক্ষত ও অন্যান্য রাজভোগ্য উপচারদ্বারা জ্রীরামপূজার ন্যায় প্রতিদিন পাছকা পূজা করিতে আরম্ভ করিলেন। এইরপে ভরত শক্তয়ের সহিত জটা বল্কল ধারণ, ফল মূল ভক্ষণ, ভূমিশয়ন ও ব্রক্ষচর্য্যানুষ্ঠান করিয়া দিনাভিপাত করিতে লাগিলেন। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৩। এবং সমস্ত পৃথিবা রাজ্যের যাবতীয় কার্যা প্রতিদিন রামপাছকা সন্নিধানে নিবেদন করিয়া রাজপ্রতিনিধির ন্যায় স্বয়ং নির্বাহ করিছেন। দিবসের অধিকাংশ সময় সাক্ষাৎ ব্রক্ষরির ন্যায় প্রীরাম্ব্রন্তের মনোনিবেশ করিয়া জ্রীরাম্বর প্রভ্যাগমন দিন গণনা করিতেন।

এ দিকে জীরামচন্দ্র মুনিগণ সমারত ছইয়া দীতা ও লক্ষণের সিছিত চিত্রকূট পর্বতে কিঞ্ছিৎ কাল বাদ করিতে লাগি- নাগরাশ্চ সদা যান্তি রামদর্শনলালসাং।
চিত্রকুটস্থিতং জ্ঞাড়া সীতয়া লক্ষাণেন চ ॥৭৭॥
দৃষ্ট্বী ভজ্জনসন্থাধং রামস্তর্ভাজ তং গিরিং।
দশুকারণগিমনে কার্য্যমপ্তর্ভাজ তং গিরিং।
দশুকারণগিমনে কার্য্যমপ্তর্ভাজ্মন্। ৭৮॥
দ্বাজ্মপাৎ সীতয়া জাত্রা হাত্রেরাশ্রমমৃত্যং।
সর্বত্র সুধসন্থাসং জ্ঞানস্থাধনজিতং ॥৭৯॥
গড়া মুনিমুপাদীনং ভাসয়ন্তং তপোবনং।
দশুবৎপ্রশিপত্যাহ রামোইহ্মভিবাদয়ে।।৮০।
পিতৃরাজ্ঞাং পুরক্তা দশুকানহ্মাগতঃ।
বনবাসমিষেণাপি ধনোইহং দর্শনাত্তর ॥৮১॥
শুজারামাস বিধিবস্তক্ত্যা পরময়া মুনিঃ।।৮২।।

লেন, নগরবাদীগণ চিত্রকূট্র শ্রীরামচন্দ্রকে অবগত ছইয়া প্রতিদিন তর্দর্শনাভিলাষে সেইস্থানে গমনাগমন করিতে আরম্ভ করিল। 🕮 রামচন্দ্র চিত্রকূট পর্ব্বতে নগর বাদীগণের সমাগম দর্শনে মছর্ষিগণের আশ্রমোপরোধ সম্ভাবনা এবং নিশাচর পুর্ন দওকারণ্য গমন নিভান্ত প্রয়োজন বিবেচনা করিয়া চিত্র-কূট পরিত্যাগ পূর্বক সীতা লক্ষ্মণের সহিত অতি নির্জন এবং সুধ্বাসতের অতি মুনির আশ্রমে গমন করিলেন । ৭৪। ৭৫। ।৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। অনন্তর ব্রহ্মোপাদনা নিরভ তপোধন জ্যোতি স্তরূপ পরম তেজ্ঞাস্থি মছর্ষিকে দণ্ডবং প্রণাম করিয়া কহিলেন, হৈ মহর্ষে! অভিবাদন করি, আমি রামচন্দ্র পিভার আজ্ঞানুসারে বনবাস ছলে দণ্ডকারণা আগামন করিয়াছি, যাহাহউক আদ্য আপনার দর্শনে ধন্য হইলাম। মহর্বি জীরাম বাক্য অবণ মাত্র জীরামকে পরম বিষ্ণু জানিয়া পরমা ভক্তি महकारत यथाविधि शृंखा कतितन धरः वना कन मूनानि হারা অভিগ্য করিয়া আসনোপবিষ্ট শ্রীরামকে পরম সন্তোয সহকারে কহিলেন, হে রাম! আমার অনসূরা নামী ধর্ম-পরায়ণা বধীয়দী ভার্য্যা স্থদীর তপ ছারা অন্তঃপুর মধ্যে

বনৈর ফলৈঃ ক্তাতিথ্যমুপ্রিটং রঘ্ ভমং।

সীতাং চ লক্ষ্য শৈল্প সন্তুটো বাক্যমন্ত্রবীৎ ॥৮৩॥
ভার্যা মেইতীর সমৃদ্ধা হাল্পুরেতি বিশ্রুতা।
তপশ্বস্তী সুচিরং ধর্মজ্ঞা ধর্মবৎসলা ॥৮৪॥
অন্তুত্তিতি তাং সীতা পশ্বস্তুরিনিস্কুদন!।
তথেতি জানকীং প্রাহ্ রামো রাজীবলোচনঃ ॥৮৫
গচ্ছ দেবীং নমক্ত্য শীঘুমেহি পুনঃ শুভে।
তথেতি রামবচনং সীতা চাপি তথাইকরোৎ ॥৮৬।
দশুবৎপতিতামগ্রে সীতাং দৃষ্ট্রাইতি ক্র্টিধীঃ।
অনুসুরা স্মালিঙ্গা বৎদে! সীতেতি সাদরং ॥৮৭।
দিব্যে দদে কুণ্ডলে দ্বে নির্মিতে বিশ্বকর্মণা।
দুকুলে দ্বে দদে তল্যৈ নির্মালে ভক্তিসংযুতা ॥৮৮
অঙ্করাগঞ্জ সীতায়ৈ দদে দিব্যং শুভাননা।
নত্যক্ষান্তেইঙ্করাগেণ শোভা ত্বাং ক্মলাননে ॥৮৯

কালাভিপাত করিভেছেন জানকী সেই স্থানে গমন করিয়া তাঁহাকে অবলোকন কৰুন। প্রীরামচন্দ্র মুনিবাক্যে সন্মান্ত হইয়া জানকীকে কহিলেন, হে শুভে! তুমি অন্তঃপুর বাসিনী দেবী অনস্থাকে প্রণাম করিয়া শীন্ত এইস্থানে প্রভাগাম্মন কর। সীতা প্রীরামের বচনামুসারে অন্তঃপুর্মধ্যে গমন করিয়া অনস্থাদেবীকে দশুবৎ প্রণাম করিলেন, অনস্থা সীতাকে দশুবৎ পতিত দেখিয়া সহর্গালিজনানন্তর সাদরে কহিলেন, বংলে সীতে! গাতোপান কর।৮০/৮১।৮২।৮০
।৮৪।৮৫।৮৬।৮৭। অনন্তর অনস্থা বিশ্বকর্মা নিশ্বিত কনক কুণ্ডলহয় নির্মাণ তুকুল যুগল এবং দিবা অন্তরাগ দ্রবা সকল ভক্তি সহকারে জানকীকে প্রদান করিয়া কছিলেন, হে জানকি! এই অন্তরাগ লেপন করিলে কম্মিন কালে ভোমার সোন্দর্য্য হানি হইবে না, ছে কম্মাননে! পাতিব্রতা অবল্যন

পোতিত্রতাং পুরস্কৃত্য রামমন্বেহি জানকি ! ।
কুশলী রাঘবো যাতু ত্রা সহ পুনগৃহিং ॥৯০
তোজারিতা যথা ন্যায্যং রামং সীতাসমন্বিতং
লক্ষণঞ্চ তদা রামং পুনঃ প্রাহ কৃতাঞ্জনিঃ ॥৯১
রাম ! ত্রেষর ভুবনানি বিধায় তেষাং

রাম ! স্বমেব ভুবনানি বিধায় তেষাং সংরক্ষণায় স্থরমানুষ্তির্যাগাদীন্।

করিয়া স্বামির অনুগ্রমন কর, শ্রীরামচন্দ্র নিরাপদে বনবাস হুইতে নিরত হইয়া তোমার সহিত পুনর্পার গৃছে গ্রমন করুন। অনস্তর মহর্ষি শ্রীরাম, সীতা ও লক্ষ্মণকে যথাযোগ্য ভোজন করাইয়া শ্রীরামকে ক্লভাঞ্জলি পুটে কহিলেন, হে রাম! তুমি অধিল ভুবন নির্মাণ করিয়া তাহার রক্ষার নিমিত্ত বারস্বার দেহান্ বিভর্ষি ন চ দেহগুণৈর্বিলিপ্ত-স্বত্তো বিভেত্যখিলমোহকরী চ মায়া॥ ১২

इं ि श्रीमन्ध्राञ्चतामात्राम केमामट्यात मः वाटन व्यट्याधाकाटल नवटमाञ्चातः।

দেব দেহ, মনুষা দেহ, ও তির্যাগাদি দেহ ধারণ করিতেছ, কিন্তু কাম ক্রোধাদি রূপ দেহ গুণ ভোমাকে স্পর্লাভ করিতে পারেনা এবং অধিল মোহকারিণী মারাগ্রাভাবে বাছ ইয়া দূরে পলারন করে। ৮৮। ৮৯।৯০।৯১।৯২।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে অবোধাকাতে উমামছেশ্বর সম্বাদে নবমেহিধ্যায়ঃ।

অরণ্য কা ও ম্।

প্রথমোইধ্যায়ঃ

অথ তত্ত্র দিনং স্থিয়া প্রভাতে রঘুনন্দনঃ।
নায়া মুনিং সমামত্ত্য প্ররাণারোপচক্রমে ॥১॥
মুনে ! গচ্চামহে সর্বে মুনিমগুলমণ্ডিতং।
বিপিন্ধ দপ্তকং যত্ত্র সমাজাতুমিহাহ সি ॥২॥
মার্গপ্রদর্শনার্থায় নিয়ানাজ্ঞপ্রুমহ সি ।
ক্রম্যা রামসা বচনং প্রহস্যাত্তিম হায়শাঃ॥৩॥
সর্বেস্য মার্গদ্রকী ত্বং তব কো মার্গদর্শকঃ।
তথাপি দর্শয়িষ্যন্তি তব লোকানুসারিণঃ॥৪॥
ইতি শিষান্ সমাদিশ্য স্বয়ং কিঞ্জিন্তমন্থগাছ।
রামেণ বারিতঃ প্রীত্যা অত্তিঃ স্বভ্বনং যথো॥॥

ज्वानिमाजः ততো গছা ममर्ग महलीः नमीः।

 चाजः निमाञ्चनाटमः तामा ताकीवालाग्नः ॥॥

 नमाः मखता किन्छ्लारम् विमाण्य न वा।

 चेष्ट्रेष्ठ विमाण्य मिन्छल्लारम् विमाण्य न वा।

 चेष्ट्रेष्ठ विमाण्य मिन्छल्लारम् त्र्यम्यम् । ।।।

 चात्रियामरः युष्णाम् वस्त्रम्य क्ष्णाम् ।

 चावि मनारत्राला भीजाः तायरलक्ष्णाः।

 चावि मनारत्राला भीजाः तायरलक्ष्णाः।

 त्रामाचिनिक्ताः मर्स्य क्ष्णा त्राज्वत्रथाक्षमः।

 त्रामाचिनिक्ताः मर्स्य क्षणा त्राज्वत्रथाक्षमः।

 चार्वणः विलिनः स्थातः विल्लीकक्षात्रनाक्षिणः।

 नानाभूगंगंनोकीरः मिःह्वां प्राक्तिविषयः॥।।।

 नानाभूगंगंनोकीरः मिःह्वां प्राक्तिविषयः॥।।

 नानाभूगंगंनोकीरः मिःह्वां प्राक्तिविषयः॥।।।

 चार्वणः विलिनः ।।

 नानाभूगंगंनोकीरः मिःह्वां प्राक्तिविषयः॥।।।

 चार्वणः विलिनः ।।

 चार्वणः विलिनं ।।

 चार्वणः विलिनं ।।।

 चार्वणः विलिनं ।।

 चार्वणः विलिणः ।।

 चार्वणः विलिणः ।।

 चार्वणः विलिणाः ।।

 चार्वणः विलिणाः ।।

 चार्वणः विलिणाः ।।

 चार्वणः विलिणः ।।

 चार्वणः विलिणः ।।

 चार्वणः विलिणः ।।

 चार्वणः विलाणः ।।

প্রীরামচন্দ্র দীতা ও লক্ষাণের সহিত অতিমুনির আশ্রমে এ দিবস বাস করিবা প্রভাতকালে স্নানানন্তর মহর্ষিকে প্রণাম পূর্বক প্রস্থানোদ্যোগ করিলেন এবং বিনীত বচনে কহিলেন মহর্বে! আমরা মুনিগণসমাকীণ দশুকারণা গমন করিছে অভিলাষ করিয়াছি আপনি অনুমতি করুন, এবং আমাদিগের অপরিচিত পথ প্রদর্শনার্থ শিষ্যগণকে আদেশ করুন, উষ্টিরা আমাদিগকে পথ প্রদর্শন করাইবেন। মহা যশা অত্রিমুনি প্রীরামের বাক্য প্রবণ করিয়া ঈহৎ ছান্য পূর্বক কছিলেন, হেরাম! তুমি সকলের পথ-প্রদর্শক অপর কোন্ বাক্তি ভোমার পথ-প্রদর্শক হইবে? যাহা ছউক, এক্ষণে তুমি লোক ব্যবহারের অনুসারী হইয়াছ—স্তরাং আমার শিব্যের। তোমাকে পথ প্রদর্শন করাইবেন। ১।২।৩। ৪। অনন্তর মহর্ষি শিষ্যগণকে প্রীরামের পথ প্রদর্শনার্থ জ্যাক্তা করিয়া হয়ংও প্রীরামের জনুগমন কর্মিতে লাগিলেন।

শ্রীরাম বিষ্ণান্দর গমনানন্তর মহর্ষিকে নিবারণ করিলেন—
তপোধন অতি শ্রীরাম কর্তৃক নিবারিত হইরা স্বাহে প্রত্যাগমন করিলেন। অনস্তর রাজীবলোচন রাম ক্রোশ পরিমিত
পথ অতিক্রম করিয়া সমুখস্থিত অতি প্রবলতর' নদী দর্শনে
শিষাদিগকে কহিলেন; হে মহাত্মগণ! এই নদী তরপ্রের
উপায় আছে কি না? মুনি-শিষাগণ কহিলেন এম্বানে
নৌকা আছে, আমরা নেকি বাহন করিয়া ক্ষণকাল মথ্যে
তোমাদিগকে পরপারে উত্তীণ করিব। অনন্তর রাম, দীতা ও
লক্ষ্মণ সকলে নেকিব্যাহণ করিলেন, মুনিকুমারেরা ক্ষণকাল
মণ্যে তাঁহাদিগকে নদীপারে উত্তীণ করিয়া দিলেন, শ্রীরামচন্দ্র
মহর্ষির শিষাগণকে বিনয় বচনাদি দ্বারা সন্তন্ত করিয়া বিদায়
করিলেন, তাঁহারাও সেই স্থান ছইতে প্রতিনিক্কত হইরা
মহর্ষির আগ্রমে গমন করিলেন। ৫। ৬। ৭। ৮। ১। শ্রীরামচন্দ্র সীতা ও লক্ষ্মণ সম্ভিত্যাহারে বিশ্লীক্ষ্মারপূর্ণ ও নানা-

রাক্ষদৈঘে রেকপৈশ্চ দেবিতং রোমহর্ষণম্।
প্রবিশ্য বিপিনং ঘোরং রামো লক্ষ্মণমন্ত্রবীৎ ॥১১
ইতঃ পরং প্রয়ন্ত্রন গন্তব্যং সহিত্যেন মে।
ধন্তপ্রিণন সংযোজ্য শরানপি করে দধৎ ॥১২॥
অরোধাস্যাম্যহং পশ্চান্ত্রমন্ত্রেহি ধনুর্যরঃ।
আবর্যাম্যাম্যহং পশ্চান্ত্রমন্ত্রেহি ধনুর্যরঃ।
আবর্যাম্যাম্যহং পশ্চান্ত্রমন্ত্রের্যান্তরালাঃ॥১৬॥
চক্ষ্ণারয় সর্বন্ত দৃষ্টং রক্ষোভয়ং মহৎ।
বিদ্যাতে দওকারণ্যে প্রভ্রত্রম্বিন্দমে ।॥১৬॥
ইত্যবং ভাষমাণে তৌ জন্মতুঃ সার্ব্যাজনম্।
তব্রৈকা পুদ্ধরিণান্তে কল্লারকুমুদোৎপলৈঃ॥১৫
অসুক্রিণান্তে কলারকুমুদোৎপলৈঃ॥১৫
অসুক্রিং শীতলোদেন শোভ্যানা ব্যদ্শ্যত।
তৎসমীপ্রথা গড়া পীড়া তৎসলিলং শুভ্র ।১৬
উর্স্তে সলিলাভ্যানে ক্ষণং ছায়ামুপাপ্রিভাঃ।
তত্যে দদৃশ্বায়ান্তং মহাদত্বং ভয়নেকং ॥১৭॥

বিধ মৃগ সমাকীণ সিংহ বাজে এবং ভীষণ মৃর্টি রাক্ষসগণ ঘারা অভিভীষণ—সভরাং সাধারণের রোমহর্ষণ দশুকারণো প্রবেশ করিয়া লক্ষ্মণকে কহিলেন, হে লক্ষ্মণ! এই স্থানে ধরুর্বাণ ধারণ পূর্ব্বক অতি সাবধানে আমার অনুসমন কর—মায়া যেরপ জীবাস্থা ও পরমাত্মার মধ্যবর্ত্তিনী, তজপ এক্ষণে সীভা আমানিগের মধ্যবর্ত্তিনী হইয়া গমন করুন, এবং চতুর্দ্দিকে দৃষ্টি সঞ্চালন কর, হে অরিন্দম! আমি পূর্ব্বে শুনিয়াছি দশুকারণো অভিশয় রাক্ষ্য-ভয় আছে। জীবাম ও লক্ষ্মণ এইরপ কথোপকথন করিতে করিতে সার্বিক যোজনপথ অভিক্রম করিয়া কলার কুমুদ কমল প্রভৃতি জল-পূজা শোভিত স্থাতিল জলপূর্ণ জলাশয় দশন করিলেন, অনন্তর তাহারা সরোবর সমাপে গমন করিয়া স্থাতিল জলপানী এবং সমীপত্ম ছায়াবলম্বন পূর্বক বিশ্রাম করিতে লাগিলেন।

করালদং ঐবদনং ভীষয়ন্তং স্বগজ্জিতিঃ।

বামাংশে নান্তশূলাগ্রগ্রথিতানেকমান্ত্রম্ ॥১৮॥
ভক্ষয়ন্তং গঙ্গবাঘুমহিবং বনগোচরং।
জ্যারোপি তং ধন্তুর্বা রামো লক্ষ্মণমত্রবীৎ ॥১৯॥
পশ্য ভাতম হাকায়ো রাক্ষ্মেশাহয়মুপাগভঃ।
আয়াতাভিমুখং নোহগ্রে ভীরণাং ভয়মাবহন্॥২০
সজ্জীর তথন্ত্রিষ্ঠ মা ভৈর্জনকনন্দিনি !।
ইত্বা বাণমাদায় স্থিতো রাম ইবাচলঃ । ২১॥
স ভু দৃষ্ট্যা রমানাথং লক্ষ্মণং জানকীং তদা।
অট্রাসং ততঃ রুড়া ভীষয়ন্দিমত্রবীৎ।২২॥
কৌ যুবাং বাণভূণীরজ্ঞটাবলকলধারিণে।
মুনিবেশধরো বালো স্ত্রীসহায়ো স্কুর্ম দে।।২৩॥

এই সমবে মহাবল পরাক্রান্ত ভয়ানক দন্তযুক্ত ভীষণগৰ্জন নিশাচর শূলাণ্ডা-প্রাধিত বহুসংখ্যক মানুষ্দেছ বামক্ষাক্ষ নিক্ষেপ: করিয়া হন্তী, মহিষ প্রভৃতি আরণ্যক জস্ভ সকল ভক্ষণ করিতে করিতে সেই স্থানে আগমন করিতে লাগিল। শ্রীরামচন্দ্র ভীষণমূর্ত্তি রাক্ষসকে দর্শন করিবামাত্র গ্রুতে জ্যারোপণ করিয়া লক্ষ্মণকে কৃছিলেন । ১০ । ১১ । ১২ । ১०।১৪।১৫।১७।১२।১৮।১৯। **(इ** जोडः! घर-লোকন কর এই মহাদীর্ঘকার রাক্ষ্য ভীক জনের ভয়বর্জন করতঃ আমাদিণের সমুখীন হইতেছে, অতএব স্থসজ্জিত ধনুর্পারণ করিয়া এই স্থানে দণ্ডায়মান হও, ছেন্জানকি! তোষার কোন ভয় নাই। শ্রীরাম লক্ষ্মণকে এইরূপ আদেশ করিয়া সরং ধনুর্ববাণ ধারণ পূর্বক অচলগিরির নাার সেই স্থানে দণ্ডায়মান রহিলেন। অনন্তর গাক্ষসাধন শীরাম, সীতা ও লক্ষ্মণকে দর্শন করিয়া অট্টাট্রাস্য পূর্ব্বক কহিতে লাগিল. হে বালকদ্বর! ভোমাদিগের নাম কি ? ভোমাদিগকে প্রম সুন্দর এবং আমার মুগ্রাসের উপাযুক্ত দেখিতেছি—কি কারণে জটা বল্কল ধনুর্ব্বা এবং ভূণীর ধারণ কৰিয়া পঞ্চী মুন্দরে বত মে বক্ত প্রবিষ্টকবলোপমো।
কিমর্থমাগতে ঘোরং বনং ব্যালনিদেবিত্ব ॥২৪॥
শ্রুরা রকোবটো রামঃ শ্রুমান উবাচ তম্।
অহং রামস্তরং জ্রাডা লক্ষানো মম সন্মতঃ॥২৫॥
এবা দীতা মম প্রাণবল্লভা বয়মাগতাঃ।
পিতৃবাক্যং পুরক্ত্য শিক্ষণার্থং ভবাদৃশাং।২৬।
শ্রুরা তদ্রামবচনমট্রাসমধাকরোও।
ব্যাদার বক্তং বাছভ্যাং শ্রুমাদার সত্রঃ॥২৭॥
মাং ন স্থানাদি রাম ! তং বিরাধং লোকবিশ্রুতং।
মন্তরাম্ম নরঃ সর্বে ত্যক্ত্বা বনমিতো গতাঃ॥২৮॥
বিদ জীবিত্মিচ্ছান্তি ? ত্যক্ত্বা সীতাং নিরায়ুধো।
পলায়তং ন চেৎ শীঘুং ভক্ষয়ামি যুবামহং।।২৯।

ইত্যুক্তা রাক্ষনঃ সীতামাদাতুমভিত্তকেবে।

রামশ্চিচ্ছেদ তদ্বাস্থ্য শরেণ প্রহ্মরিব।।৩০।।

ততঃ ক্রোধপরীভাত্মা ব্যাদার বিকটং মুখং।
রামমভাদ্রবদামশ্চিচ্ছেদ পরিধাবতঃ।
পদদ্বয়ং বিরাধন্য তদ্দু ত্মিবাভবৎ ॥৩১॥

ততঃ দপ ইবাদ্যেন প্রসিত্থ রাম্মাপতং।

ততঃ দপ ইবাদ্যেন প্রসিত্থ রাম্মাপতং।

তিছেদ রুধিরোঘণ পাতা ধরণীতলে।

ততঃ সীতা স্মালিক্ষ্য প্রশশংস রঘ্তুমং॥৬৬॥

ততো ছুন্ফুভয়ো নেছ্দিবি দেবগণেরিতাঃ।

নন্তুশ্চাপ্সরো ক্রটা জগুর্গক্রিকিয়রাঃ॥৩৪।

দমভিব্যাহারে মুনিবেশে এই হিংল্র জন্ত পরিপুরিত ভয়ন্তর দশুকারণ্যে আগমন করিয়াছ? জীরাম রাক্ষসের বাক্য প্রবণানন্তর বিশায়াপত্র ইইয়া কহিলেন, ছে নিশাচর! আমার নাম রাম, ইনি আমার জাতা লক্ষণ, এই আমার প্রাণবন্ধভা সীতা; এক্ষণে আমরা পিতার আজানুসারে তোমাদিগের দমনার্থ এই স্থানে উপস্থিত ছইয়াছি । ২০ । ২: । ২২ । ২৩ । ২৪ । ২৫ । ২৬ । রাক্ষ্য জীরামের বাক্য জাবণানন্তর অতি সত্তর শুল গ্রহণ করিয়া মুথবিস্তার পূর্বক অট্টাট্রহাস্য করিল এবং গান্তীর স্থার কহিল, হে রাম! তুমি আমার লোক প্রসিদ্ধ নাম জাবণ কর নাই? আমার নাম বিরাধ, যাহার ভয়ে শ্বিগণ দণ্ডকারণ্য পরিত্যাগ করিয়া গমন করিয়াছে; গ্রহ্ণণে ভোমাদিগের বিদি জীবনাশা থাকে তাহা ছইলে অন্ত শন্ত তোমাদিগেকে ভক্ষণ

করিব। রাক্ষণ এই কথা কছিয়া জানকীকে গ্রহণ করিবার নিমিও জতবেগে জাগমন করিতে লাগিল। প্রীরামচন্দ্র হাস্য করিতে করিতে বাণ দ্বারা তাহার বাহ্বয় ছেদন করিলেন। অনন্তর রাক্ষণ ক্রোধভরে মুখ বিস্তার করিয়া প্রীরামের প্রতি জতবেগে ধাবিত হইল। প্রীরামচন্দ্র ওৎক্ষণাৎ শর্বারা তাহার পদ্বয় ছেদন করিলেন, সেই সময় বিরাধের শরীর অতি অন্তুত্ত দর্শন হইল—সর্পের ন্যায় মুখবাদান করিয়া প্রীরামকে গ্রাস করিবার আশায়ে সর্পের ন্যায় মুখবাদান করিয়া প্রীরামকে গ্রাস করিবার আশায়ে সর্পের ন্যায় বক্ষঃস্থল দ্বারা আগমন করিতে লাগিল। প্রীরামচন্দ্র অর্কচন্দ্রাকৃতি বাণহারা তাহার মন্তক ছেদন করিলেন। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১। ৯২। ঐ মন্তক রক্তাক্ত হইয়া ভ্তলে পতিত হইল। অনস্তর সীতাদেবী প্রীরামকে আলিঙ্গন করিয়া বহুতর প্রশংসা করিতে লাগিলেন, এই সময়ে দেবগণ হুই হইয়া আকাশ মার্গে হুন্দুক্তি ধ্বনি করিতে লাগিলেন গ্রহ হইয়া আকাশ মার্গে হুন্দুক্তি ধ্বনি করিতে লাগিলেন এবং অপ্রমাণণ নৃত্য করিতে আরম্ভ করিল, গ্রহ্ব ও ক্রমণণ গণ মহোৎসব সহকারে সন্ধীত করিতে লাগিলেন। ৩০। ৩৪।

বিরাধকায়াদভিস্থন্দরাক্কতিবিভাজমানো বিমলামরার্তঃ।
প্রভপ্তগমীকরচারুভুষণো
ব্যদৃশ্যভাগ্রে গগনে রবির্যথা॥৩৫।
প্রণম্য রামং প্রণভার্ত্তিহারিণং
ভবপ্রবাহোপরমং মৃণাকরং।
প্রণম্য ভূয়ঃ প্রণনাম দশুবৎ
প্রপন্নসর্বার্তিহবং প্রসন্নধীঃ॥৩৬॥

বিরাধ উবাচ।

শ্রীরাম ! রাজীবদলায়তাক্ষ !

বিদ্যাধরোহহং বিমলপ্রকাশঃ।

দুর্ব্বাদসা কারণকোপমূর্ত্তিনা

শপ্তঃ পুরা সোহদ্য বিমোচিতস্তরা ॥৩৭।।

ইতঃপরং ভচ্চরণারবিন্দরোঃ

স্মৃতিঃ দদা মেহস্ত ভবোপশান্তরে।

জনতার বিরাধের শরীর চইতে স্থবর্ণালকার ভূবিত কান্তিময় একটা পরম সুন্দর শরীর নির্গত চইয়া গগনমণ্ডলে দিতীয় ববির নাম্ম শোভা ধারণ করিল। জ্ঞীরাম সীতা ও লক্ষাণ তৎক্ষণাৎ বিজ্ঞরাপন হইরা জানিমেষ লোচনে সেই অন্তুত ব্যাপার অব-লোকন করিতে লাগিলেন। নিশাচর শরীরান্তর পরিগ্রহ করিয়া শরণাগত-প্রতিপালক দ্বাময় রামকে ভববন্ধন মোচনার্থ প্রেন্থাকরবৃত্ত দণ্ডবৎ প্রথম করিয়া কহিলেন।৩৫ ৩৬।

ছে রাজীবলোচন রাম! আমি বিদ্যাধর কুলে জন্মগ্রহণ করিয়াছি, পূর্ববিলাদে প্রবিদাশ মুনি অকারণে আমার প্রতি কোপ প্রকাশ করিয়া অভিশৃপাৎ করিয়াছিলেন, তদবধি ব্রহ্মশাঁপে পাতিত হইয়া এতাবৎকাল রাক্ষণ রূপে এই দণ্ডকারণো সঞ্চরণ করিয়াছি, অদ্য আপনি ব্রহ্মশাপ হইতে মুক্ত করিলেন, হে দয়ময়! আমি এক্ষণে আপনার নিকট এই প্রার্থনা করি বে,

স্থামসংকীর্ত্রমের বাণী
করোতু মে কর্ণপুটং স্থানীয়ম্॥৩৮॥
কথামৃতং পাতু করদ্বাং তে
পাদারবিন্দার্চনমের কুর্যাও।
শারশ্চ তে পাদ্যুগপ্রণামং
করোতু নিত্যং ভবদীয়মেরং ॥৩২॥
ভাং ভগবতে বিশুদ্ধজান মূর্ত্রে।
বিয়ায় রামান সীজার্যমায় বেশ্বে ১০০॥

নমস্ত ভাং ভগবতে বিশুদ্ধ জ্ঞান মূর্ত্তরে।
আত্মারামায় রামার দীতারামায় বেধদে ॥৪০॥
প্রপন্ধং পাহি মাং রাম! যাস্যামি ত্বদমুক্তয়া।
দেবলোকং রঘুশ্রেষ্ঠ! মায়া মাং মা রুণোতু তে॥
ইতি বিজ্ঞাপিততেন প্রদর্মো রঘুনন্দনঃ।
দদৌ বরং তদা প্রীতো বিরাধায় মহামতিঃ॥৪২॥

অদ্যাবধি আমার মন আপনার পাদপ্রযুগলে সর্ক্রদ। অনু-রক্ত থাকে কদাচ বিস্মৃত না হয়, এবং আমার বাণী আপানার নাম সন্ধীর্ত্তন পরিত্যাগ করিয়া র্থালাপে কালাতিপাত না করে, ছে রাম! আমার কর্ণ যুগল আপনার কথা-মৃতপানে সর্বাদা রত থাকে, এই কর যুগাল আপনার পাদপন্ম পূজার বিরক্ত ন। হয় এবং আমার মন্তক নিভাই আপনার পাদযুগলে প্রণাম করে—ছে ভক্তাভীক্টদ! আমার এই সকল অভিলাষ দয়া প্রকাশ পূর্বেক স্থাসিদ্ধ করিবেন---হে ভগবন্! আপনাকে নমস্বার করি বেছেতু আপনি আত্মারাম বিশুদ্ধ জ্ঞানময় ব্রহ্মপদার্থ, এক্ষণে রামরূপে জন্মগ্রছণ করিয়া সীতারূপিণী প্রকৃতির সহিত মিলিত হইয়াছেন—ছে রাম! আমি আপনার শর্ণীপর হইয়াছি, অভএব আমাকে রক্ষা করুন। হে রঘুত্রেষ্ঠ! এক্ষণে দেবলোকে গমনার্থ আপনার অনুমতি অপেকা করিতেছি—হে প্রভো! আপনার নিকট কাতর হইয়া বারস্বার প্রার্থনা করি যে, আপনার বিশ্ব-মোছিনী মারা পুনর্বার আমার জ্ঞানপথ রোধ না করে।৩৭। ৩৮।৩৯।৪•।৪১। শ্রীরামচন্দ্র এই প্রকার বিবিধ স্তববাকো সম্ভস্ট গুচ্ছ বিদ্যাধরাশেষমায়াদোষগুণী জিভাঃ।
তথ্য সদর্শনাৎ সদ্যো মুক্তো জ্ঞানবতামরঃ॥৪৩।
মন্ত্রজিদু ল ভা লোকে জ্ঞাতা চেন্মু জিদায়তঃ।
অতত্ত্বং ভক্তিসম্পান্নঃ প্রং যাহি মমাজ্ঞা॥৪৪॥

রামেণ রক্ষোনিধনং স্থারেং শাপাদিমুক্তির্বরদানমেবং।

ছইরা বিরাধকে অভিলষিত বর প্রদান করিলেন, ছে বিরাধ!
তুমি গমন কর, পুনর্বার আমার মারা গুণে আবদ্ধ ছইবে না—
হে জ্ঞানিবর! তুমি আমাকে দর্শন করিরা অবশ্যই মোক্ষলাভ
করিবে, বেছেতু এই জগতে মুক্তিদায়িনী মন্তক্তি অভি তুল্লভ
হইলেও ভোমাতে বিলক্ষণরূপে লক্ষিত ছইতেছে। শ্রীরামচন্দ্র
বিরাধকে রাক্ষদদেছ বিনাশানন্তর ব্রহ্মশাপ ছইতে যুক্ত

বিদ্যাধরতং পুনরেব লকং
রামং গৃহলেতি নরোহথিলার্থান্ ॥৪৫॥
ইতি শ্রীমদধ্যাতারামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে
অরণ্যকাণ্ডে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

করিয়া অভিলয়িত বর প্রদান করিলেন, বিরাধও পুনর্কার বিদ্যাধর দেহ লাভ করিল—ইহা বিচিত্র নহে। প্রমন্ত্রক্ষ জীরামকে স্তব্বাক্যে সন্তুফ্ট করিলে জীবান ইহা অপেক্ষা স্ত্রপ্রাপ্ত অভীষ্ট বস্তুও অনায়াসে লাভ ধরিতে পারে। ৪২ ৪০। ৪৪। ৪৫।

ইতি ঐমদধ্যাম্বরামারণে উমামতে মুর সম্বাদে ভার প্রকাণ্ডে প্রথমোহ্দারের।

দ্বিতীয়ো২ধারঃ।

बिगहादमव डेवाह।

বিরাধে স্বর্গতে রামো লক্ষাণেন চ দীতয়।
জগাম শরভঙ্গা বনং দর্বস্থাবহং ॥১॥
শরভঙ্গন্তা দৃষ্ট্বা রামং সৌমিত্রিণা দহ।
আগ্রাতং দীতয়া দার্জং দদ্রমাদুথিতঃ সুধীঃ ॥২॥
অভিগমা সুসম্পূজা বিইতরেমূপবেশয়ৎ।
আতিথ্যমকরোত্তেষাং কন্দমূলফলাদিভিঃ॥৩॥
প্রীত্যাহ শরভঙ্গোহিপি রামং ভক্তপরায়ণং।
বহুকালমিহৈবাসং তপদে কুতনিক্ষঃঃ॥৪॥
তব দন্দর্শনাকাজ্জ্জী রাম! তং পরমেশ্বঃ।
আদ্য মন্তপদা দিলং যৎ পুণ্যং বহুবিদ্যতে।
তৎ দর্বিং তব দাস্যামি ততো মুক্তিং ব্রকামহেং॥

বিরাধের স্বর্গামনানন্তর জ্ঞীরামচন্দ্র দীতা ও লক্ষ্মণের সহিত মিলিত হইয়া মহর্ষি শরভঙ্গের পরম রমণীয় তপোবনে গমন করিলেন—তপোধন শরভক্ষ শ্রীরাম দীতা ও লক্ষ্মণকে গমাগত দেখিয়া সমন্ত্রমে গাত্রোত্থানানন্তর প্রত্যুক্ষামন করিলেন এবং পাদ্যাগ্যাদি বারা তাঁছাদিগের পূজা করিয়া আসম প্রদান করিলেন। শ্রীরামচন্দ্র দীতা ও লক্ষ্মণের সহিত আসনোপবেশন করিয়া মহর্ষিক্ত আতিথ্য স্বীকার করিলেন। অনন্তর মহর্ষি শরভক্ষ ভক্তবংশল রামকে পরম প্রীতি সহকারে কহিলেন—ছে রাম! আমি তোমার পাদপদ্ম দর্শনাভিলায়ে তপ্রসানিরত হইয়া বক্তকাল এই বনে কালাতিপাত করিতেছি, এক্ষণে চিরাজ্ঞিলায় সিদ্ধ ছইল—হে পরমেশ্বর! আমি স্ফুলীর্ছ তপ্রসাহারা যে সকল পূণ্য সঞ্চয় করিয়াছি—জাছা তোমাতে

অর্পণ করিলাম—তদ্ধার। অবশ্যই মুক্তিলাভ করিব। ১।২। ৩।৪।৫। পরম বিরাগী যোগৈক সাধন শরস্ক চির-সঞ্চিত্ত স্থলীর্ঘ পুণ্যফল জীবামে সমর্পণানন্তর তাঁছাদিগকে প্রণাম করিবা চিতারোছণ করিলেন, এবং ভক্তি সরতচিত্তে সর্বান্তর্যামী নবছুর্বাদলশ্যাম রাজীবলোচন রামের চীরাম্বরারত স্থলিশ্ব জটাকলাপ মণ্ডিত পরম রমণীর মৃত্তি চিন্তা করিতে করিতে কহিলেন, এই জিলোক মধ্যে দরামর জীবাম ভির ভক্তজনের অভিলাম পুরণে কেছ সমর্থ নছে—ভক্তবংসল রাম ভক্তের মনোরতি অবগত হইরা আমার অন্তঃকরণে স্থাহিছ আবিভূতি ইইরাছেন; যাছা ছউক একণে আমি স্থকীয়

পশ্যতিদানীং দেবেশো রামো দাশরথিং প্রভু:
দক্ষ্য সদেহং গচ্ছামি ব্রহ্মলোকমকল্মবঃ ॥৯॥
অবোধ্যাধিপতিমেঁইস্ত ক্ষদরে রাঘবঃ সদা।
যদ্যোক্ষে ভিতা সীতা মেঘদ্যের তড়িল্লতা ॥১০॥
ইতি রামং চিরং ধ্যাত্বা দৃষ্ট্য চ পুরতঃ স্থিতম ।
প্রজ্বাল্য সহসা বহিং দক্ষ্য পঞ্চাত্মকং বপুঃ ॥১১।
দিয়েদেহধরঃ সাক্ষাৎযয়ে লোকপতেঃ পদম্।
ততো মুনিগণাঃ সর্বের্দ শুক্রারণ্যোদিনঃ ।
আজ্মা রাঘবং দেষ্ট্ং শরভঙ্কনিবেশনম্॥.২॥
দৃষ্ট্য মুনিসমূহং তং জানকীরামলক্ষ্যণাঃ ।
প্রণেম্থ সহসা ভূমে সাক্ষামানুষ্কিপিণঃ ॥১৬॥
আশীভিরভিনন্যাথ রামং সর্বহাদিস্থিতম্ !
উচঃ প্রঞ্জেলয়ঃ সর্বের্ধ ধ্যুর্ব্বাণধরং হরিম্॥১৪॥

ভূমের্ভারাবভারায় জাভোহিদ ব্রহ্মণাথিত;।
জানীমন্ত্রং হরিং লক্ষ্মীং জানকীং লক্ষ্মণং তথা॥
শেষাংশং শঙ্খাচক্রে দ্বে ভরতং সাম্মুজং তথা।
অতশ্চাদৌ ঋষীণাং ডং দুঃখং মোক্তুমিহাই দি॥

আগচ্ছ যামে: মুনিদেবিতানি
বনানি দর্বাণি রঘুত্ম ! ক্রমাৎ।
দ্রুত্বুং সুমিত্রাস্থতজানকীভ্যাং
তদা দয়াশ্মৎ সুদৃঢ়া ভবিষাতি ॥:৭॥
ইতি বিজ্ঞাপিতো রামঃ কুতাঞ্জলিপুটেবিভুঃ!
জগাম মুনিভিঃ দার্দ্ধং দ্রুত্বুং মুনিবনানি দঃ ॥১৮॥
দদর্শ তত্র পতিতান্যনেকানি শিরাংদি দঃ।
অস্থিভূতানি দর্বত রামেঃ বচনমত্রবীৎ ॥১৯॥

দেহ দক্ষ করিয়া ব্রহ্মলোকে গমন করিব—দেবদেব দাশরথি
স্বাং অবলোকন কর্মন । ৬ । ৭ । ৮ । ৯ । আমার অন্য কোন
অভিলাধ নাই, সেই অঘোধাধিপতি রামচল্র আমার হৃদরে
সর্কান সারিহিত হউন—ঘাহার বামভাগে মেঘ সন্নিহিত
বিদ্যালভার ন্যায় জনকনন্দিনী সীভা বিরাজ করিতেছেন ।
জনমুর মহর্ষি শরভঙ্গ সমুখন্তিত জ্রীরামচন্দ্রকে দর্শন করিতে
করিতে প্রজ্ঞলিত চিভানলে দেহ দন্ধ করিয়া দিবা দেহ ধারণানত্তর ব্রহ্মলোকে গমন করিলেন; এই অবস্বের দণ্ডকারণ্যবাসী মুনিগণ জ্রীরাম দর্শনাভিলাধে শরভঙ্গাশ্রমে আগমন
ক্রিলেন। মারামনুষ্যরূপী রাম সীভা ও লক্ষ্মণ সকলে সমাগত
মহর্ষিমণ্ডল সহসা অবলোকন করিয়া দণ্ডবং প্রণাম করিলেন।
১০।১২।১২। মহর্ষিণণ সর্কান্তর্গামী ধনুর্কাণধারী হরিকে
আশীর্কান দারা অভিনন্দন করিয়া কৃতাঞ্চলিপ্রটে কহিলেন,
তে বৈকুণ্ঠনাধা। ভূভারহ্রণ্ডের নিমিত ব্রহ্মার প্রার্থনানুসারে

আপনি মনুষারপে জন্মগ্রহণ করিয়াছেন এবং লক্ষ্মী জানকীরপে — অনন্তদের লক্ষ্মণরপে এবং আপনার করক্ষনন্তির শক্ষ্ম ও চক্র ভরত শক্রম রূপে অবতীর্ণ হইরাছেন, আমর। এই দকল রক্তান্ত পূর্ব্বেই অবগত হইরাছি, অভএব হে ভগবন্। আপনি এক্ষণে দশুকারণ্যবাসী মুনিগণের ব্রুখমোচন করুন, ছে রাম! আপনি সীতা ও সেমিত্রি সমভিব্যাহারে আগমনকরিরা মুনি-সেবিভ অরণ্য সকল ক্রমশঃ অবলোকন করুন, তাহা হইলে আমাদিগের অবস্থা জানিতে, পারিবেন এবং আপনার নৈস্থিকি দয়ার্জহদয়ে আমাদিগের প্রতি অবশ্যই দয়ার সঞ্চার হইবে। প্রীরামচন্দ্র রুভাঞ্জনিপুটে শ্বরিগণ কর্ত্বক এই প্রকার বিজ্ঞাপিত হইরা তাহাদিগের সহিত তপোন্বন দশানার্থ গমন করিলেন। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। কিরদ্ধর গমনান্তর ভূমিপভিত অন্থিময় নরমন্তক অবলোকন করিরা জিজ্ঞাণ করিলেন, হে মহর্ষিগণ, এই সকল অন্থিময় মন্তক কাহাদের — কিল্পন্ট বা ভূতলে স্থিত হইতেছে?

অস্থানি কেশামেতানি কিমর্থং প্রতিতানি বৈ। '
তমূচুমুনিয়ো রাম! ঋষীণাং মন্তকানি হি ॥২০॥
রাক্ষসৈতিকিতানীশ! প্রমন্তানাং সমাধিতঃ।
অন্তরায়ং মুনীনাং তে পশ্যম্ভোহন্ম চরম্ভি হি ॥২১॥
প্রত্যাকার মুনীনাং স ভয়দৈন্যসমন্বিতং।
প্রতিক্রামকরোজামো বধায়াশেষরক্ষসাং ॥২২॥
পুজ্যমানঃ সদা তত্র মুনিভির্বনবাসিভিঃ।
জানক্যা সহিতো রামো লক্ষ্মণেন সমন্বিতঃ ॥২৩॥
উবাস কতিচিত্তত্র বর্ষাণি রঘুনন্দনঃ।
এবং ক্রমেণ সম্পান্ ঋষীণামাশ্রমান্ বিভুঃ ॥২৪
স্থতীক্ষ্ম্যাশ্রমং প্রাগাৎ প্রথ্যাতম্বিসংকুলম্।
সর্বত্তিপ্রশাস্থারং স্বকিশ্রম্থাবহ্ম্॥২৫॥
রাম্মাগতমাকণ্য স্থতীক্ষ্ম স্বয়্মাগতঃ।

শ্বিণাণ কহিলেন, হে রাম! রাক্ষন ভক্ষিত শ্বিণাণের মন্তক
সকল ভূতণে লক্ষিত হইভেছে, হে দরাময়! স্শংস রাক্ষসগণ তপঃ প্রমত্ত শ্বিণাণের তপোবিয় করত এই খোরতর
অরণ্য মধ্যে সর্বাদা সঞ্চরণ করিভেছে, এক্ষণে আপিনি
এই বিপদ হইতে জানাদিগকে রক্ষা করুন। জীরামচন্দ্র
শ্বিণাণের ভয়ভূঃশমিশ্রিত বাক্য প্রবণানন্তর রাক্ষসকুলের
সমূলোচ্ছেদনে প্রতিজ্ঞা করিয়া অরণ্যবাসী তপোধনগণের
আগ্রায়স্নারে সীতা ও লক্ষ্যুণের সহিত কতিপয় বর্ষ সেই
প্রদেশে বাস করিতে লাগিলেন ।১৯৷২০৷২১৷২২৷২৩৷২৪৷
অনন্তর শ্রীরামচন্দ্র সেইস্থানে কিঞ্চিৎ কাল অতিবাহিত করিয়া
সর্বাপ্রস্থপ্রদ স্ববিখ্যাত মহর্ষিক্লমন্তিত স্কতীক্ষ আশ্রামে
গমন করিলেন। রামমন্ত্রোপাসক আগন্তাশিষ্য স্কতীক্ষমূনি
শ্রীরানের সমাগমনবার্তা শ্রবণ করিয়া ক্ষং প্রভূলগমনানস্তর

অগক্তিশিষ্যো রামদ্য মস্ত্রোপাদনতৎপরঃ। বিধিবৎ পূজয়ামাদ ভক্ত্যুৎকণ্ঠিতলোচনঃ॥২৬॥ স্থতীক্ষ উবাচ।

' তথ্যপ্রক্রাপ্যহমনন্ত গুণাপ্রমের !

সীতাপতে ! শিববিরিঞ্চিনমান্ত্রিতান্তের ! ।

সংসারসিন্ধুতরণামলপোতপাদ !

রামাভিরাম ! সততং তব দাসদাসঃ ॥২৭॥

মামদ্য সর্বজ্ঞ গতামবিগোচরস্তুং

তথ্যাররা স্থতকলত্রগৃহান্ধকুপে

মগ্রং নিরীক্ষ্য মলমুকালপিওনোহপাশান্তব্দক্র দরং স্বয়মাগতোহসি ॥২৮॥

তথ্যস্তক্র দরের ক্রতালয়োহপি

তথ্যস্তক্র প্রাতি নারা

সেবান্থ্রপ্রকাদেহিসি বথা মহীপঃ । ২৯॥

বিশ্বস্য স্টিলয়সংস্থিভিহেতুরেক
ত্রং মারয়াত্রিগুণয়া বিধিরীশ্বিষ্ণ ।

নিনি মেষচক্ষে জীরামকে পুনঃপুনঃ দর্শন করত ভক্তিযোগে ফ্রানিবিধি পূজা করিয়া কহিলেন ।২৫।২৬। হে অনস্ত গুণাশ্রয়! হে অপ্রেমের ! হে নীতাপতে ! ভোমার পাদপদ্ম যুগল সংসারসাগর তরণে পোত স্বরূপ এবং শিব ও প্রন্ধাদি দেবগণের আশ্রয় ! হে রাম ! আমি চিরদিন ভোমার মন্ত্র জপ করিভেছি ৷ হে অভিনাম ! আমি ভোমার দাদের চিরদাদ ৷ হে রাম ! আমি ভোমার বাদের চিরদাদ ৷ হে রাম ! আমি ভোমার রই মারাপ্রভাবে ত্রী পুত্রগৃহাদিস্বরূপ অন্ধৃত্বে পতিত হইরাছি এবং নলমূত্রাদি পরিপূর্ণ অকিঞ্চিৎকর শ্রীরে দর্শনা আল্লাভি

ভাসীশ! মোহিতধিয়াং বিবিধাক্কতিন্ত্ং

যন্ত দ্বিঃ সলিলপাত্ত গতো ছনেকঃ ॥৩০॥
প্রভাকতোহদ্য ভবতশ্চরণার বিন্দং
পশ্যামি রাম! ভমসঃ পরতঃ ছিতস্য
দৃগুপতন্ত্মসভাসবিগোচরোহিপি।
ত্বমন্তপ্রক্তদয়েয়ু সদা প্রসমঃ ॥৩১॥
পশ্যামি রাম! তব ক্রপমক্রপিণোইপি
মায়াবিভয়নক্তং সুমন্তব্যাবশ্য ।
কন্দর্পকোটিমুভগং কমনীয়চাপবাগং দয়ার্ছ ছদয়ং শ্রিতচাক্রবক্তং ॥৩২।
সীতাসমেতমজিনাম্বরমপ্রধৃষ্যং
সৌমত্তিগা নিয়ভদেবিভপাদপদ্মম্
নীলোৎপলত্যাতিমনন্ত গুণং প্রশাস্তং
তত্তাগধেরমনিশং প্রণমামি রামং॥ ৩৩॥

মান করিয়া থাকি। হে দ্যামর ! তুমি সর্বজ্ঞনের অতীন্দ্রির পদার্থ, কেবল আমাকে উদ্ধার করিবার অন্তই মায়া মহ্যারপ্রপারণ করিয়া এই স্থানে আগমন করিয়াছ। হে ভগবন্! তুরি সমস্ত ভূতের অন্তঃকরণে জাগরণ করিছেছ, কিন্তু সমস্ত জ্ঞানিক বিহিত ব্যক্তিতে মায়াপ্রকাশ এবং তজপরায়ণ ব্যক্তিতে মায়া সংহার করিয়া থাক, অভএব প্রজারা রাজ্ঞা হইতে যেরপ সেবাস্দৃশ ফললান্ড করে মহুমোরাও তোমা হইতে তোদৃশ সেবাছ্নরপ কললান্ড করিয়া থাকে; তুমি একাকীই সমস্ত জগতের স্প্রিক্তির সংহারের কারণ, কেবল সদ্দ রক্ত ভুমোঞ্জণমন্ত্রী মায়ার্রপ উপাধি ভেদে বিশ্ব ব্রহ্মা শিব এই ত্রিতর মূর্তিধারণ করিয়া এই জ্ঞানত ভিন্নবং প্রকাশ পাইতেছ। ছে ঈশ্বর। মৃদ্ চিত্তেরা তোমার বিভিন্ন আরুতি দেখিয়া ঈশ্বরকে স্লিলপাত্রিছত রিব্র জ্যার অনকবিধ জ্যান করে। হে জ্ঞানীশ্বঃ অদ্য তোমার

জানন্ত রাম ! তব ৰূপমশেবদেশকালা
ভূগোধিরহিতং ঘনচিৎপ্রকাশং
প্রভ্যক্ষতোহদ্য মম গোচরমেতদেব ।

ৰূপং বিভাতু হৃদয়ে ন পরং বিকাজ্জে ॥ ৩৪।
ইত্যেবং স্তবতন্তদ্য রামঃ সন্মিতমন্ত্রবীৎ।
মুনে ! জানামি তে চিন্তং নির্মালং মন্তুপাসনাং॥
অতোহহমাগতো দ্রফুং মদতে নান্দাধনম্।
মন্মস্ত্রোপাসকা লোকে মামেব শরণং গতাঃ ॥ ৩৬।।

চরণারবিন্দ প্রাক্তাক করিরা বিবেচনা করিলাম যে, তুমি অসদ্ব্যক্তির দৃষ্টি পথের অগোচর হইলেও ভন্মক্ত জপদারা যে সকল অসভ্যক্তির হৃদয় পবিত্র হইয়াছে তাহাদিণের প্রতি সর্বলাপ্রসম আছে। ছে পরমাত্মন্! আমি বিশেষরূপ অবগত আছি যে, তুমি রূপাদি বিষয় রহিত, কিন্তু অদ্য ভোমার ধনুর্বাণধারী অজিনাম্বরশোভিত সহাস্ত্রদন এবং কোট-কন্দর্প কমনীয় রূপসম্পন্ন নীলেশ্ৎপল্পলপ্রভ এবং অনন্ত গুণ-দয়ার্জমূর্ত্তি ও লক্ষণ সেবিত পাদপদ্মযুগল এবং ঘদীয় বাম-ভাগস্থিত সীতাদেবীকে অবলোকম করিতেছি, অতএব পুরাকৃত নিজ ভাগাকেই প্রণাম করি! হে পরমাত্মন্! অক্ত যোগিরা ভোমাকে বাল্পনোতীত শুদ্ধ চৈতন্য স্বরূপ এবং দেশকালাদি দারা অপরিছিন্ন বোধ করিয়া তাহাতেই প্রীতি-লাভ করুন, কিন্তু আমার তাছাতে প্রীতি নাই—কেবল দুখ্য-মান তোমার এই রামরূপ আমার হৃদয়ে সর্বদা বিরাজিত इडेक । दर व्यक्ति ! व्यामि এত हिन ब्लायनात्र निक्रे किहूरे व्योर्थना क्षि ना । २१। २४। २৯। ७०। ७১। ७२। ७०। ७८। শ্ৰীরামচল্র মহর্বির এই প্রকার স্তব্বাক্যে সম্ভই হইবা ঈবৎ হাস্তপূর্বক কহিলেন, ছে মুনে! মছপাসনা দারা ভোমার চিত্ত ভিদ্ধি হইয়াছে জানিয়া আমি তোমার দর্শনার্থ এছানে আসি-মাছি, রাম ভক্তি বাভিরেকে জগতে অন্যাসাধন নাই, যাহারা नित्रत्भक्क हरेत्रा जामात्र मरहाशामन। करत्र अवः जामात्ररे नत्राः নিরপেক্ষা নান্যগভাব্তেষাং দৃশ্যোইছ্মস্বছ্ম।
ভোত্তিমেতৎপঠেদ্যস্ত ত্বংকুতং মৎপ্রিয়ং দদা॥৩৭
দন্তক্তিমে ভবেত্তদ্য জ্ঞানং চ বিমলং ভরবং।
ত্বং মমোপাদনাদেব বিমুক্তোইসীছ দর্মতঃ।৩৮।।
দেহান্তে মম দাযুজ্যং লক্ষ্যদে নাত্র দংশয়ঃ।
গুরুং তে দ্রুকুমিচ্ছামি হ্যগস্তাং মুনিনায়কং।
কিঞ্জিৎ কালং তত্ত বস্তুং মনো মে ত্বয়ত্যলম্।।৩৯

গত হইয়া অন্য মৃত্তির উপাদন। করে না—আমি সভত তাহাদিগের নয়নগোচর থাকি, যে ব্যক্তি আমার প্রীতিজনক ত্বং
কৃতস্তব সর্বাদা পাঠ করিবে, দেই ব্যক্তির আমাতে ছারিভক্তি
এবং নির্দাল জ্ঞানলাভ হইবে। হে মুনে! তুমি আমার উপাদনা দারা সর্বাচোভাবে বিমৃক্ত ছইয়াছ, দেহাস্তে নিশ্চয় আমার
সাযুদ্ধা লাভ করিবে, যাহা হউক তোমার গুরু মুনিপ্রেষ্ঠ অগস্থের দর্শন করিতে ইচ্ছা করি এবং তাঁহার নিকটে কিঞ্ছিৎ
কাল বাস ক্রিব এইরূপ আমার নিভাস্ত অভিলাব ছইয়াছে।

স্তীক্ষোহপি তথেতাহে খোগমিক্সসি রাঘব!। অহ্মপ্যাগমিষ্যামি চিরাদৃষ্টো মহামুনিঃ ॥৪০॥

> অথ প্রভাতে মুনিনা সমেতো রামঃ সসীতঃ সহ লক্ষণেন চ। আগেক্ত্যসম্ভাষণলোলমানসঃ। শনৈরগন্ত্যানুজমন্দিরং যথে। ॥৪১॥

ইতি শ্রীমনধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসংবাদে অরণ্যকাণ্ডে দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

স্তীক্ষ শ্রীরামব‡ক্যে সমত হইরা কহিলেন—আগামি দিবসে
আপনি সেই ছানে গামন করিবেন আমি বছদিন গুরু দর্শন
করি নাই, অতএব আপনার অমুগমন করিব, অনস্তর পরদিন প্রভাতকালে অগস্ত্যে দর্শনোৎস্ক শ্রীরামচন্দ্র, দীতা, লক্ষণ
ও্রুস্তীক্ষ সমভিব্যাহারে অগস্ত্যাশ্রমাভিমুখে গমন করিবেন।
১৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ১৪। ৪১।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানহেশ্বর সন্থাদে অরণ্যকাঞ্চে বিতীরোহ্যায়ঃ।

তৃতীয়ো২ধ্যায়ঃ।

অথ রামঃ স্থাক্ষেন জানক্যা লক্ষণেন চ।

অগস্তাস্যানুজন্থনং মধ্যাক্ষে সমপদ্যত ।।১।।

তেন সম্পৃত্তিঃ সম্যক্ ভুক্ত্বা মূলকলাদিকং।

পরেদুঃ প্রাতরুত্থায় জগ্ম স্তেইগস্তামগুলম্ ॥২॥

সর্বর্ত্তিকলপুত্পাত্যং নানামৃগগণৈযুত্থ।

পক্ষিশং ধৈশ্চ বিবিধৈন দিতং নন্দনোপমম্ ॥৩॥

বক্ষবিভিদেবধিভিঃ সেবিতং মূনিমন্দিরৈঃ।

সর্বতোইলঙ্কু ভং সাক্ষাদ্ ব্রহ্মলোকমিবাপরম্।।৪॥

বহিরেবাজ্রমস্যাথ ভিত্তা রামোইব্রবীশ্মুনিং।

স্থান্তিক্ষ গচ্ছ তুং শীঘ্মাগতং মাং নিবেদয়॥৫॥

অগস্তামুনিবর্যায় সীতয়া লক্ষণেন চ।

মহাপ্রসাদ ইত্যক্তবা স্থান্তিক্ষা প্রথমে গুরোঃ॥৬॥

আশ্রমং ত্রয়া তত্ত ঋষিসঞ্জনসমারতম্।
উপবিষ্টং রামভকৈর্বিশেষেণ সমাযুতম্।।।।।
ব্যাখ্যাতরামমন্ত্রার্থং শিষ্যোভ্যশ্চাতিভক্তিতঃ।
দৃষ্ট্বাগল্ডাং মুনিশ্রেজং স্থতীক্ষ্ণং প্রথমে মুনেঃ।।৮।
দশুবৎপ্রণিপত্যাহ বিনয়াবনতঃ স্ব্ধীঃ।
রামো দাশরথিত্র কান্! সীতয়া লক্ষণেন চ।
আগতো দর্শনার্থং তে বহিস্তিষ্ঠতি সাঞ্জি:॥৯॥

শীঘুমানয় ভদ্রন্তে রামং মম হৃদিস্থিতং।
তমেব ধ্যায়মানেহিং কাজক্ষমাণেহেত্র সংস্থিতঃ।

অনন্তর শ্রীরাম, নীতা লক্ষ্মণ ও স্থতীক্ষের সহিত গমন করিতে করিতে মধ্যাহ্নকালে পথিমধ্যে অগন্ত্যানুজের আশ্রম প্রাপ্ত হইলেন, অগন্ত্যানুজ মহিদি তাঁহাদিগের যথাবিধি পূজা করিয়া ফলমূলাদি দারা আতিথ্য করিলেন, উচ্ছারাও ঐ স্থানে ঐ দিবদ বিশ্রাম করিয়া পারদিন প্রত্যুয়ে গাঝোখানানন্তর প্রস্থান করিলেন এবং কিয়দ্দূর গমনানন্তর দর্ম প্রকার ফলপুপ্রশোভিত, নানাবিধ মৃগগণ সঙ্গুল, বিবিধ বিহদ্দম কলনাদ্পূর্ণ বিতীয় নন্দনকাননোপম এবং দেবর্ষি ত্রন্ধর্মণ সেবিত ক্রমলোক সদৃশ ও চতুদ্দিকে মুনি মন্দির দারা সমলঙ্কুত অগন্ত্যাশ্রমে উপস্থিত হইলেন। ১। ২। ৩।৪। শ্রীরামচন্দ্র আশ্রমের বহির্দেশে দণ্ডায়মান হইয়া স্থতীক্ষ মুনিকে কহিলেন, তেই মহর্ষে ! তুমি শীত্র গমন করিয়া অগন্ত্যের নিকট দীতা

লক্ষাণের সহিত আমার সমাগম সম্বাদ নিবেদন কর, স্থাতীক্ষমূনি প্রীরামের আজ্ঞা অতিসাদরে শিরোধারণ করিয়া অগস্ত্যাশ্রমে প্রবেশ করিলেন এবং অনতিদূরে অবলোকন করিলেন
যে, আসনোপবিষ্ট মহর্ষি অগস্ত্য জ্রীরামতক্ত মহর্ষি গণ কর্তৃক
পরিবৃত্ত হইয়া শিষ্যগণকে প্রীরাম মন্ত্রবাশ্যা উপদেশ করিতেছেন। অনস্তর স্থতীক্রম্নি গুরুসনিশ্বানে গ্রন করিয়া দণ্ডবৎ
প্রনিপাতানন্তর বিনয় বচনে কহিলেন—হে ব্রহ্মন্! দাশর্মাণ
জ্রীরামচন্দ্র, সীতা লক্ষণের সহিত কতাঞ্জলি হইয়া আপনার
দর্শনার্থ বহির্দ্দেশে দণ্ডায়মান আছেন। বে। ৬ 1৭।৮। ৯।
অগস্ত্য রামনাম প্রবণমাত্র ব্যগ্র হইয়া কহিলেন। হে স্থতীক্ষ্
তোমার মঙ্গল হউক—এক্ষণে আমার হাদয়াধিষ্টিত প্রীরামচন্দ্রকে
এই স্থানে আনয়ন কর, যাঁহার দর্শনাভিলাবে ধানাবলম্বন
করিয়া অরণামধ্যে বাদ করিতেছি। অগস্ত্যমূনি স্থতীক্ষকে

ইত্যক্তা স্বয়মুখায় মুনিভিঃ সহিতো জ্বতং।
অভায়াৎপরয়া ভক্তা গড়া রামমথাত্রবীৎ ॥১১॥
আগচ্ছ রাম! ভচুত্তে দিন্ট্যা ভেহদা সমাগমঃ।
প্রিয়াতিথির্মমপ্রাপ্তাং দৃদ্যা হেমসকলং দিনমং॥১২
রামোহিপি মুনিমায়ান্তং দৃন্ট্যা হর্ষসমাকুলঃ।
সীতয়া লক্ষণেনাপি দণ্ডবৎপতিতো ভুবি ॥১৩॥
জ্বতমুখাপ্য মুনিরাট রামমালিঙ্গা ভক্তিতঃ।
ভক্ষামস্পর্শজাহ্লাদস্রবয়েত্রজলাকুলঃ॥ ১৪॥
গৃহীড়া করমেকেন করেণ রঘুনন্দনম।
জ্বগাম স্বাশ্রমং হৃট্টো মনসা মুনিপুঙ্গবং॥১৫॥
স্বথাপবিন্টং সম্পূজ্য পূজ্য়া বছবিশুর্ম।
ভোজয়িত্বা যথান্যায়ং ভোক্তৈর্বিন্যরনেকধা॥১৬।

মুখোপবিউনেকান্তে রামং শশিনিভাননং।

কৃতাঞ্জলিকবাচেদমগত্যো ভগবান্ধিঃ॥১৭॥

ঘদাগমনমেবাহং প্রতীক্ষন্ সমবস্থিতঃ।

ঘদা ক্ষীরসমুদ্রান্তে ব্রহ্মণা প্রাথিতঃ পুরা॥ ১৮॥

ভূমের্ভারাপমুত্ত্যর্থং রাবণদ্য বধায় চ।

তদাদিদর্শনাকাঞ্চ্ফী তব রাম! তপশ্চরনং।

বসামি মুনিভিঃ সার্দ্ধং ত্বামেব পরিচিন্তয়ন্॥ ১৯॥

সৃষ্টেঃ প্রাণেক এবাদীয়ির্ফিকশোইমুপাধিকঃ।

ঘদাশ্রমা ছিষয়া মায়া তে শক্তিরচ্যতে॥ ২০॥

ঘামেব নিগুণং শক্তিরায়ণোতি যদা তদা।

অব্যাক্তমিতি প্রান্থকিদান্তপরিনিষ্ঠিতাঃ॥ ২১॥

মূলপ্রক্তিরিত্যেকে প্রান্থমায়িতি কেচন।

অবিদ্যা সংস্তির্কক্ষ ইত্যাদি বহুধোচ্যতে॥ ২২॥

এইরপ আদেশ করিয়া স্বয়ং ঋষিগণের সহিত জ্ঞারাম সমীপে উপস্থিত হইলেম, অনস্তর পরম ভক্তিসছকারে কুশল জিজ্ঞাসানস্বর জ্ঞারামকে কহিলেন, হে রাম। আগমন কর, অদ্য আমি
বহুভাগো ডোমার সমাগম লাভ করিয়াছি, একণে চিরাভিল্যিত অভিথি সংকার করিয়া দিন সফল করিব। জ্ঞারামচন্দ্র সমাগত আগস্ত্য ঋষিকে দর্শন করিয়া সীতা লক্ষণের
সহিত ভূতলে দশুবং পতিত হইলেন, মুনিরাজ অগস্ত্য শ্রীরামকে
সত্ত্র ভূমি হইভে উত্থাপিত করিয়া ভক্তিসহকারে আলিঙ্গন
করিলেন এবং ব্দক্ষপ্শ জনিত আনন্দাঞ্চপূর্ণলোচনে বারমার
দৃষ্টিপাত করত নিজ্বহন্তমারা জ্ঞারামের কর গ্রহণ করিয়া নিজ্পুহে
ভাঁহাদিগকে আনম্বন করিলেন।১০০১০।১২।১৯০১৪।১৫।

অনন্তর মছর্ষি প্রীরামকে আসনোপবেশন করাইর। বছ-বিস্তর পূজানস্তর বছবিধ বনা ফলমূলাদি দ্বারা মথাযোগ্য-ভোজন করাইলেন, এবং সীতা লক্ষণকেও সেইরূপ যথাযোগ্য ভোজন করাইরা শ্রীরামকে নির্জনস্থানে আনরনপূর্কক আসন প্রদান করিলেন। পূর্ণচন্দ্র সদৃশ জ্রীরামচন্দ্র আসন্দাপবেশন করিলে অগন্ত্যমুনি কৃতাঞ্জিলপুটে তাঁছাকে কহিলেন। ১৬।। ১৭। ছে ভগবন্! যৎকালে কমলযোনি ভূলারাপনাদনের নিমিত্ত ক্ষীর সমুদ্র তীরে আপনাকে প্রার্থানা করিয়াছিলেন—তৎকালাবিধি আমি তোমার দর্শনাকাজ্রী হইরা অনন্যাচিত্তে তপোমুষ্ঠান করত এই অরণ্যমধ্যে মুনিগণের সহিত্ব বাস করিতেছি। হে পরমাত্মন্। স্থির পূর্বকালে তোমাতে মায়ারূপ উপাধির সম্বন্ধ না থাকার এই জগৎ প্রপঞ্চ উৎপন্ন হর নাই, তৎকালে ভূমিই গুণাতীত এক মাত্র পদার্থ ছিলে, অন্ত পদার্থ কিছুই ছিলনা। স্থাইকালে অদীর শক্তিরূপ মায়া তোমাকে আবরণ করে, বেদান্তিকেরা ঐ শক্তিকে তদবস্থায় অবাাক্তবলিয়ানির্দেশ করে। ১৮।১৯।২০।২১। সাঝেরা তাছাকে মূল প্রকৃতিবলে,কোন কোন পণ্ডিতেরা অবিদ্যাসংসার ও বন্ধন এইরূপ নানাবিধ সংজ্ঞা দ্বারা তাঁছাকে নির্দেশ করেন,

আহস্কারো মহগুড়সংরুতন্তিবিধোহতবৎ।
সাত্তিকো রাজসন্চৈর তামসন্চেতি তণ্যতে । ২৩
তামসাৎ সুক্ষতিস্মাত্তাণ্যাসন্ ভূতান্যতঃ পরম্।
স্থুলানি ক্রমশোরাম ! ক্রমোন্তরগুণানি হ ॥ ২৪
রাজসানীন্তিয়াণ্যের সাত্তিকা দেবতা মনঃ।
তেত্যোহতবৎ স্ত্ররূপং সিঙ্কং সর্ফারতং মহৎ,।।২৫
ততো বিরাট্ সমুৎপন্নঃ স্থুলান্ত্তকদম্কাৎ।
বিরক্তঃ পুরুষাৎ সর্কাৎ জ্বার্জ্কমং ॥২৬॥

মূলপ্রকৃতি হইতে বৃদ্ধিতত্ব উৎপন্ন হয়, 🗳 বৃদ্ধিতত্ত্বে নামান্তর মহতত্ব, মহতত্ব হইতে অহস্কার উৎপন্ন হয়--- ঐ অহকার তিবিধ; দাভিক, রাজদ, তামস (অর্থ ৭ৎ) মূলপ্রকৃতির সূত্র রজ স্তমে। গুণ থাকার তত্ৎপদ্ন মহত্তত্বেরও ঐ ত্রিবিধ গুণ সংক্রমিত হয়। ক্রমণ মহতত্বজন্য অহস্বারেও কারণ গুণারুসারে ঐ তিবিধ গুণ উৎপল হয়, ভামস আহহার হইতে শব্দ স্প্শ রূপ রুদ গ্রু এই পাঁচটী স্থল্মত মাত্র উৎপন্ন হন্ন , স্থান্দমতন্মাত্র হইতে সুল পঞ্চ-ভূত উৎপন্ন হয়—অর্থাৎ শব্দ হইতে আকাশ; শব্দ ও স্পশ হইতে বায়ু; শব্দ, স্পর্ণ ও রূপ হইতে তেজ ; শব্দ স্পর্ণ রূপ রম হইতে জুল; শব্দ পাশ রূপ রুস ও গন্ধ এই পঞ্চ ইতে পৃথিবী উৎপন্ন হয়। ২২ । ২৩ । ২৪ । রাজ্ঞদ অহ-ছার হইতে ইব্রিয় উৎপন্ন ছয়—তশ্বধ্যে বাক্, পাণি, পাদ, পায়ু, উপস্থ এই পাঁচটী কর্মেন্সিয়—চক্ষু, শ্রোত্ত, ত্বক্, রসনা, ভ্রাণ এই পাঁচটা জ্ঞানেন্দ্রিয়—সাত্ত্বিক অহঙ্কার হইতে চক্ষুর অধিষ্ঠাতারবি, শ্রোত্তের দিক্, ত্বগেব্রিয়ের বায়ু, রসনার বৰুণ, জাণেন্দ্রিয়ের অশ্বিনী কুমার, বাক্যেন্দ্রিয়ের অগ্নি, পাণির ইন্দ্র, পাদের উপেন্দ্র, পাউর মিত্র, উপস্থের ব্রহ্মা, এই সকল ইন্দ্রিরাধিষ্ঠাত্রী দেবতা ও মনোরূপ অন্তরেন্দ্রির উৎপন্ন হয়। স্ক্ষম তথ্যত্রাদিরপ অহলারের কার্য্য হইতে স্ক্রম সমক্টিরপ रित्रभागार्क नामक निक्रमंत्रीय छेरश्रस इत्र, छादाय नामाख्य স্থা, সেই স্তা হইতে স্থূল সমষ্টি রূপ বিরাট পুৰুষ উৎপন্ন হর-বিরাট পুক্ষ হইতে স্থাবর জন্ম সমস্ত উৎপন হইগাছে;

তথ্যধ্যে দেবতা তির্যাগ্যোনি ও মনুষ্যরূপ জন্ম পদার্থ কাল-সহক্ত অদৃষ্টের বশবর্ত্তী হইয়া উৎপন্ন হইয়াছে। হে জগ-দীশ্বর! এই জগতে তুমি ভিন্ন কিচুই নাই, তুমি কথন রজোগুণ রূপ উপাধিযোগে ব্রহ্মা ছইয়া জগতের নিশ্মাণ করিভেছ, কখন সত্ব গুণ যোগে বিষ্ণু হইয়া পালন করিভেছ, প্রলয় কালে ত্যোগুণময় ক্রেরপী হইয়া সমস্ত জগতের সংহার করিতেছ। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। যৎ কালে প্রাণিগণের বুর্দ্ধি সত্ঞ্গাব-লম্বিনী হয় তৎকালে তাহাদিগের ছাত্রাদবস্থা, রজোগুণাব-ৰখিনী হইলে স্বগাবন্থা, তমোগুণাবনখিনী হইলে তাহাদের সুযুপ্ত্যবস্থা হইয়া থাকে। হে রাম ! তুমি সাক্ষিস্তরপ হইয়া তাহাদিগের ঐ সকল অবস্থা অবলোকন করিতেছ, অর্থাৎ তোমার কোন কালে অবস্থান্তর হয়না, বেচ্ছেতু তুমি নিত্য চৈতনাশ্বরূপ। ছে রঘুনন্দন! যৎকালে ভোমার জগৎ স্টিরপ লীলা করিতে ইচ্ছা হয় তৎকালে শায়া ভোষাকে অবশ্ঘন করে; হে পরমাত্মন্! তুমি নিওণি কিন্তু মারা সম্বন্ধ ছইলে সগুণের ন্যায় তোমার প্রকাশ হর। ছে জগদীশ্বর ! ভোমার মারাই সংসার বন্ধন ও মুক্তি ছন্তজিনিরতা ষে চ তে বৈ বিদ্যাময়াঃ স্মৃতাঃ।

অবিদ্যাবশগা ষে ভু নিত্য সংসারিণক তে।

বিদ্যাভ্যাসরতা যে ভু নিত্য মুক্তান্ত এব হি।।৩২
লোকে ছন্তি নিরতান্ত স্মান্তোপাসকাক যে।

বিদ্যা প্রাদুর্ভবৈতে ষাং নেতরেষাং কদাচন।।৩৩
অতস্ত্রন্ত কিল্লা মুক্তা এব ন সংশয়ঃ।
ছন্ত সম্ভা মুক্তা এব ন সংশয়ঃ।
ছন্ত সমৃতহীনানাং মোকঃ স্বপ্লেহপি নো ভবেছ।
কিং রাম! বছনোকেন সারং কিঞ্চিল্রবীমি তে।
সাধ্যক্ষতিরেবাত্র মোকহেত্রু দাক্ষতা।।৩৫।।
সাধবঃ সম্চিতা যে নিস্পৃহা বিগতৈষিণঃ।
দাস্তাঃ প্রশাস্তান্ত ক্রা নিরন্তাথিলকামনাঃ॥ ৩৯।

উভরের সাধন, যেহেতু মায়া দিবিধ, একের নাম অবিদ্যা— অপরের নাম বিদ্যা। অবিদ্যা বশবর্ত্তী লোকেরা প্রবৃত্তিমার্গে রত হয়, স্মতরাং তাছাদের মৃক্তি হয়না—ক্রমশঃ সংসার বন্ধন হয়,বিদ্যাবশবর্জী লোকেরা নিরুত্তি মার্গে রত হইয়া তোমাতে দৃঢ় ভক্তি লাভ করে স্বতরাং ভাহাদের মোক হয়, যাহারা ভক্তিপূর্বক তোমার মন্ত্রোপোসনা করে তাছারাই বিদ্যাবশ-বর্তী হইয়া থাকে। অভএব ত্বমস্ত্রোপাসক ভক্ত দিগের নিশ্চয় মুক্তি লাভ হইবে—তম্ভক্তি শূন্য ব্যক্তি দিগের স্বপ্নেও মুক্তিলাভ ছইবে না। ২৯। ৩০। ৩১।৩২।৩৩।৩৪ হে রাম। থাহারা বিপদে সম্পাদে সমচিত্ত নিস্পৃহ, তপঃক্লেশ সহিষ্কৃ, শান্তিগুণাবলম্বী, এবং তোমার ভক্ত হর্ব বা বিধাদ সময়ে হঠ वा विषक्ष नट्ड अवर मर्समा निर्द्धन चात्न कामनाविष्ठ इहेशा বন্দচিতা করে, যম, নিয়মাসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার, ধ্যান, भारता अममाधि त्रभ नाना खन युक्त इत्र, जाहा ताहे अहे क्रगांक माधू, माधू मन्नरे (भाष्क्रत कांत्रन (यर्ड्जू मल्मक इरेल छज् ক্ষা ভাবণে অনুরাগ হয়,অনুরাগ হলৈ ভোমাতে দৃঢ় ভক্তি, ভিক্ত इरेलरे विश्रम विकान-विकान रहेल अवगारे मुक्ति

ইউপ্রাপ্তিবিপত্ত্যোশ্চ সমাঃ সঙ্গবিবর্জিতাঃ। সংন্যস্তাখিলকর্মাণঃ সর্বাদা ভ্রমাতৎপরাঃ॥ ৩৭॥ যমাদি গুণসম্পন্নাঃ সন্তুকী যেন কেনচিৎ। नरमक्रा ভरामाहि जरकथा द्यवर्ग त्रिः। ७৮ ॥ সমুদেতি ততো ভক্তিন্ত্রি রাম। সনাতনে। ছন্তকারুপপন্নায়াং বিজ্ঞানং বিপুলং ক্ষুটম্।।৩৯। উদেতি মুক্তিমার্গোহয়মাদ্যশুত্রদেবিতঃ। তশাদ্রাঘব ! সভক্তিস্তুয়ি মে প্রেমলক্ষণা !।। ৪০।। সদা ভুয়াদ্ধরে ! সঙ্গস্তুতক্তেযু বিশেষতঃ। चारा (म मकलः समा खर रमन्मर्भनाम जूर ॥ ४) ॥ খদ্য মে ক্রডবঃ সর্ফো বভূরুঃ সকলাঃ প্রভো।! দীর্ঘকালং ময়া তপ্তমনন্যতিনা তপঃ। তদ্যেহ তপ্রে। রাম ! ফলং তব যদর্চনম্ ॥ ৪২॥ मना य मीठशा मार्चः ऋनत्य वम तार्घव গচ্তত্তিষ্ঠতো বাহপি স্মৃতি: স্যাম্মে সদা উরি॥৪৩ ইতি স্তুত্বা রামনাথমগন্ত্যো মুনিসন্ত্যঃ। দদে চাপং মহেক্তেণ রামার্থে স্থাপিতং পুরা।।৪৪ লাভ হয়,পণ্ডিতের। এই প্রধান মুক্তিমার্গ সেবা করিয়া থাকেন। ছেরাম! আমি ভোমার নিকট প্রার্থনা করিযে, ভোমাতে আমার প্রেম রূপ ভক্তি ও সাধুদল হউক। হে দাশরথে ! অদ্য (क्रांमात नर्मात अपात अप अ यांग यळानि मकन इरेजारइ, দীৰ্ঘকাল অনন্যচিত্তে যে সকল তপোনুষ্ঠান করিয়াছি অদ্য ত্বদীয় পূজাকরণ দেই সকল তপদ্যার ফল বিবেচনা করিতেছি ।৩৫।৩৬।৩৭।৩৮।৩৯।৪०।৪১।৪২। বাহা হউক রাম! ভোমার निक्रे चामि धार्थना कति या, जूमि नीजात्मवीत महिल আমার হৃদয়ে সর্বাদা বাস কর, এবং আমি গমন ও উপবেশন কালে ভোমাকে হৃদয়ে স্মরণ করিতে পারি। অগস্তামুনি এই রূপ স্তব করিয়া শ্রীরাম চন্দ্রকে একটী অতুল্য কোদও অক্সয়

অক্ষয়ে বাণভূণীরে খজো রত্ন বিভূষিতঃ ॥ ৪৫॥

আহি রাঘব! ভূভারভূতং রাক্ষমগুলং ॥ ৪৫॥

যদর্থমবতীর্ণোহলি মার্য়া মনুজাক্কতিঃ।

ইতো যোজন্যুথ্যে ভু পুণ্যকাননমণ্ডিতঃ ॥ ৪৬॥

অন্তি পঞ্চবটীনায়া আশ্রমো গোডমীতটে।

নেতব্যক্তর তে কালঃ শেষো রত্নুকুলোছহ!॥৪৭॥

তবৈব বহুকার্য্যাণি দেবানাং কুরু সৎপতে!॥৪৮।

শ্রুত্ব তদাগন্ত ভাষিতং বচঃ স্তোত্তঞ্চ তত্বার্থসমন্তিং বিভুঃ মুনিং সমাভাষ্য মুদান্বিতো যথে। প্রদর্শিতং মার্গমশেষবিদ্ধরিঃ॥ ৪৯ য

ইতি এমদধ্যাত্মরামায়ণে অরণ্যকাণ্ডে উমামহেশ্বর সম্বাদে তৃতীয়োহধ্যায় ।

তৃণীর বাণ ও রত্ন ভূষিত খজা প্রদান করিলেন, যাছা প্রীরামকে দিবার নিমিত্ত স্থরপতি পূর্বকালে অগস্তোর নিকট স্থাপিত করিয়াছিলেন। অনুস্তর অগস্তামুনি কছিলেন হে রাম: আপনি ভূতারছরণের নিমিত্ত অগতীর্ণ হইরাছেন, এক্ষণে ভূতারস্থান বাক্ষস বংশ সমূলে উচ্ছিন্ন করুন, এ স্থান হইতে যোজন দায় পরিমিত পথ অতিক্রম করিয়া গোতনী নদীতটে পঞ্চবটী নামক আশ্রম দেখিতে পাইবেন, সেই স্থানেই চতুদ্দিবর্বের

অবশিষ্ট কাল অতিবাহিত করতঃ দেবতাদিগের বহুতুর কাষ্ট্র সাধন করন। জীরাম চন্দ্র অগন্তোর বাক্য ও তৎক্রতসদর্থ পূর্ণ-স্তব প্রবর্ণানন্তর আনন্দ সহকারে মুনিকে সম্ভাবণ করিয়া তৎপ্রদর্শিত পথাবলম্বন পূর্বক পঞ্চবটীমুখে গমন করিলেন। ৪৩। । ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯।

ইভিশ্রীমদধ্যাত্মরামান্ত্রণে উমামহেশ্বরসম্বাদে অরণ্যকাণ্ডে তৃতীরোহধ্যার।

চতুর্থো>ধ্যায়ঃ।

সূত উবাচ।

মার্গে ব্রহ্মনদর্শাথ শৈলখৃষ্কমিব ছিত্রম্।
রন্ধং জটায়ুষং রামঃ কিমেতদিতি বিস্মিতঃ॥ ১॥
ধনুরানয় সৌমিত্রে! রাক্ষসোইয়ং পুরঃ ছিতঃ!
ইত্যাহ লক্ষণং রামো হনিষ্যাম্যুষিভক্ষকম ॥ ২॥
তচ্ছুত্বা রামবচনং গুধুরাট, ভয়পীড়িতঃ।
বধার্হোইহং ন তে রাম! পিতুল্ডেইহং প্রিয়ঃ সধা॥
জটায়ুর্নমে ভদ্রন্তে গুধোইয়ং প্রিয়ক্রত্ব ॥ ৪॥
পঞ্চবট্যামহং বস্ত্যে তবৈব প্রিয়কাম্য়া।
মৃগয়ায়াং কদাচিত্ব প্রায়েতে লক্ষ্মণেইপি চ॥ ৫॥

স্ত কহিলেন—তদন্তর রাম গমন করিতে করিতে পথিমধ্যে পর্বেত শৃক্ষ সদৃশ রক্ষ জাটায়ুকে সন্দর্শন করিরা অতি বিস্মর সহকারে লক্ষনণকে কহিলেন—হে সেমিত্রে! দেখ-দেখ আমাদিগের পুরোজাগে একটা রাক্ষস রহিয়াছে, অতএব শীঅ ধতুরানরন কর আমি ঐ শ্বিভক্ষককে বিনাশ করিব। জীরামের বাক্য শ্রবণ করিয়া গ্রেরাজ ভয়ব্যাকুলিত হইয়াকহিলেন, হে শ্রিরাম! আমি ভোমার পিতার পরম বন্ধু জাটায় নামক পকী—তোমার হিতকারী, অতএব ভোমার অবধ্য। তোমারই হিত কামনোদেশে পঞ্চবটী বনে বাস করিতেছি, দেখ কোম দিন লক্ষ্মণদেব মৃগ্রায় গমন করিলে আমি জনক মন্দিনী জানকীকে পরম যত্বের সহিত রক্ষা করিব। রামচন্ত্রে গ্রের এই বাক্য শুনিরা সম্বেহে কহিলেন হে গ্রেরাজ! তুমি

দীতাজনককন্যা যে রক্ষিত্ব্যা প্রয়েত্তঃ।
প্রান্ত তদ্গৃধুবচনং রামঃ সম্প্রেছমন্ত্রীৎ॥॥॥
সাধু গৃধুমহারাজ! তথৈব কুরু মে প্রিয়ম্।
অতিব যে সমীপছো নাভিদূরে বনে বসন্॥ १॥
ইত্যামন্তিত মালিক্য যথে পঞ্চবটাং প্রভূঃ।
লক্ষণেন সহ ভাতা দীত্রা রত্মন্দনঃ॥ ৮॥
গড়া তে গৌতমীতীরং পঞ্চবট্যাং স্থবিস্তর্ম।
মন্দিরং কার্যামান লক্ষণেন সুবুদ্ধিন।॥ ৯॥

সাধু, তবে এই বনের অনতি দ্রে থাকিয়া আমার প্রিয় কার্য্য উত্তমরূপে সম্পন্ন কর। এই প্রকার আমন্ত্রণ করিয়া রয়ুনন্দন রাম তাহাকে আলিঙ্গন পূর্বক লক্ষাণ ও সীভা সমভিব্যাহারে পঞ্চবটা গমন করিলেন। তাঁহারা গোদাবরী তীরে আগমন করিলে রাম ধীশক্তি সম্পন্ন লক্ষ্মণ কর্ত্তক পঞ্চবটা বনে প্রশস্ত বাস গৃছ নিশ্মাণ করাইলেন। ১।২।৩।৪।৫।৬।৭।।৮।৯। তাঁহারা সেই কদম্ব পনস চূত প্রভৃতি পাদপ সমায়ুক্ত, লোকোপদ্রব ও রোগ বিরহিত গঙ্গার উত্তর তীরে অবন্থিতি করিতে লাগিলেন। জ্রীরাম জনকান্মজ্ঞা জ্ঞানকীর আনত্রন করতঃ সর্ব্ব শাস্ত্র বিশারদ লক্ষ্মণের সহিত দেব লোক ইক্রের ন্যায় পরম স্থান্থ অবন্থিতি করিতে লাগিলেন। লক্ষ্মণজ্ঞীরাদের সেবার জন্য প্রতিদিন কন্দ-মূল ও ফলান্দি আহরণ করিয়া তাঁহাদিগকে প্রদান করিতে লাগিলেম এবং ধুর্ব্বাণ ধারণ করতঃ নিত্য নিত্য রাত্রি জ্ঞাগরণ করিতেন। তাঁহারা তিন জনে গোদাবরীর নিশ্মল সনিলে অবগাহন

তত্র তে ন্যবসন্ সর্কে গঙ্গারা উত্তরে ভটে। কদমপ্ৰসামাদিকলব্লক্ষমসকুলে॥ ১০॥ বিবিক্তে জনসমাধবর্জিতে নীরুজস্থলে। বিনোদয়ন্ জনকজাং লক্ষাণেন বিপশ্চিত। । ১১॥ অধ্যবাস সূথং রামোদেবলোক ইবামরঃ। कम्मभूलकलामीनि लम्बारगाश्युमिनः उरशाः॥ १२॥ चानीয় প্রদদে রামদেবাতৎপরমানসঃ। ধমুর্ব্বাণধরে। নিত্যং রাত্রো জাগর্ত্তি সর্ব্বতঃ ॥ ১৩॥ স্থানং কুর্ববন্ত্যন্থদিনং ত্রয়ন্তে গৌতমীজলে। উভয়োর্মধ্যনা সীতা কুরুতে চ নমানমো ॥ ১৪॥ আনীয় সলিলং নিত্যং লক্ষণঃ প্রীতমানসঃ। সেবতেহহরহঃ প্রীত্যা এবমাসন্ স্থুখং ত্রয়ঃ ॥ ১৫ একদা লক্ষণো রাম্যেকান্তে সমুপস্থিতম্। বিনয়াবনতো ভূড়া পপ্রচ্ছ পরমেশ্বরম্।। ১৬॥ ভগবন্! শ্ৰোতুমিচ্ছামি মোক্ষলৈকান্তিকীং গতিম ত্তঃ কমলপত্রাক ! সজ্জেপাছক্ত মহ সি ? ॥১৭॥

পূর্ব্বক স্নান করিতেন, এবং রাম ও লক্ষ্মণের মধ্যবর্ত্তিনী হইরা সীতা গমনাগমন করিতেন। লক্ষ্মণ প্রীতান্তঃকরণে গোতমী নদী ছইতে জলানয়ন করিয়া জ্রীরাম ও সীতার সর্বাদা সেবা করিতেন; । ১০ ৷ ১১ ৷ ১২ ৷ ১৩ ৷ ১৪ ৷ ১৫ ৷

একদিন বিশ্বপতি রাম একাকী উপবেশন করিয়া আছেন ইত্যবসরে লক্ষ্মণ সবিনয় প্রণিপাত করিয়া তাঁছাকে জিজ্ঞাসা করিলেন হে ভগবন্! আপনি ভিন্ন ভূমওলে আর কেছই বক্তা নাই, অতএব আমি আপনার নিকট মোক্ষের ঐকান্তিক কারণ প্রবণ করিতে বাসনা করিতেছি—হে কমল লোচন! ভাছা কি সংক্ষেপে কছিবেন ? হে রঘু কুল শ্রেষ্ঠ! ভক্তি ও বৈরাগ্য দারা পরিবর্দ্ধিত মননাদিরপ জান ও নিদিধাসন জানং বিজ্ঞানসহিতং ভক্তিবৈরাগ্যরংহিতম্। আচক্ষ্ব মে রঘুশ্রেষ্ঠ ! বক্তা নান্যোইন্ডি ভূতলে ॥১৮

প্রিরাম উবাচ।

খৃণ্ বক্ষ্যামি তে বৎস ! গুহাদ্গুহতরং পরম্।

যদ্ভিলায় নরো জহাৎ সদ্যো বৈকল্পিকং ভ্রমন্।
আদি মায়াস্বৰূপং তে বক্ষ্যামি তদনন্তরম্।
ভোনস্য সাধনং পশ্চাৎ জ্ঞানং বিজ্ঞানসংযুত্য ॥২০
জ্ঞোং চ পরসাত্মানং যক্জ্ঞাত্বা মুচ্যতে ভ্রাৎ।
ভ্রমাত্মনি শরীরাদাবাত্মবৃদ্ধিস্ত যা ভবেৎ॥ ২১॥
বৈব মারা তরৈবাসে সংসারঃ পরিকল্প্যতে॥২২॥
কপে দ্বে নিশ্চিতে পূর্বং মায়ায়াঃ কুলনন্দন!॥২৩

জনিত আত্মসাক্ষাৎকার স্বরূপ বিজ্ঞান এই ভূইটা বিশেষ করিয়া আমাকে বলুন।১৬ / ১৭ / ১৮ /

শ্ৰীরাম কছিলেন—হে বৎস! যাহা অবগত হইলে লোক মাত্রই বৈকম্পিক ভ্রম (অর্থাৎ অলীক জগতের সভ্য স্বরূপে প্রতীতি) হইতে সদ্য মৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়, তাহার নিগৃঢ় বিষয় বর্ণনা করিব শ্রবণ কর। ছে লক্ষণ! অত্যে মায়া স্বরূপ কহিব-তাহার পর জ্ঞানের সাধন—ভদনস্তর বিজ্ঞান সংযুক্ত জ্ঞানের বিষয় বর্ণনা করিব—পরিশেষে জ্ঞাতব্য পরমাত্মার কথা বলিব—ছে'লক্ষন। ঐ সমস্ত অবগত ছইলে সংসার ভয়ের লেশমাত্র থাকে না। শরীর প্রভৃতি সমুদর পদার্থ আমার নছে, কিন্তু ঐ সকল আমার বলিয়া প্রতীতি হওয়ার নাম মায়া এবং উছা হারাই সংসার পরিকম্পিত হইয়া থাকে; হে কুল-নলন! ঐ মারার আদি হুই রূপ নির্দিষ্ট আছে,—বিকেপ শক্তি ও আবরণ শক্তি, ইছার মধ্যে প্রথমটী মহজ্বাদি ব্রহ্মা পর্য্যন্ত স্থূল ও স্ক্ষা ভেদে বিশ্বকে প্রকাশ করে, এবং অপর-টী অখিল জ্ঞান আবরণ করিয়া অবস্থিতি করে। ছে লক্ষণ! চৈতন্য অপ্রকাশিত থাকিলে মনুষ্যেরা বিক্ষেপ শক্তি কম্পিত জগতকে সভ্য বলিয়া প্রত্যয় করে। জান্তি বশতঃ রজ্জুত্

বিক্ষেপাবরণে তত্ত্ত প্রথমং কম্পারেচ্ছাগৎ।

ক্রিষ্ণাদ্যা প্রক্ষাপর্য স্থান্থ স্থান্দ ক্রিন্ত । ২৪॥

অপরং ত্বিলং জ্ঞানং ক্রপমারত্য তিষ্ঠতি।

মার্য়া কম্পিতং বিশ্বং পরমাত্মনি কেবলে ॥ ২৫॥

রক্ষে ভুক্ত কর্ড ভ্রা বিচারে নান্তি কিঞ্চন।

ক্রায়তে দৃশ্যতে বদ্যৎ স্মর্যাতে বা নরৈঃ সদা॥ ২৬

অসদেব হি তৎসর্বং যথা স্থান্মনোরখো।

দেহ এব হি সংসারব্রক্ষমূলং দৃঢ়ং স্মৃত্য ॥ ২৬॥

তন্মুলঃ পুজ্রদারাদিবক্ষঃ কিস্তোহন্যথাত্মনঃ ॥ ২৭॥

দেহস্ত স্থানাং পঞ্চন্মাত্রপঞ্চক্ষ্।

অহঙ্কারশ্চ বুদ্ধিশ্চ ইন্দ্রিয়াণি তথা দশা॥ ২৮॥

চিদাভাসো মনশ্চৈব মূলপ্রকৃতিরেব চ।

এতৎক্ষেত্রমিতি জ্রেয়ং দেহ ইত্যভিধীরতে॥ ২০॥

ষেমন ভুজস্ব জ্ঞান হয়, সেইরূপ অধিষ্ঠান তম্বজ্ঞান বিচার করিলে কিছুই নাই; মনুষোরা যাহা কিছু শ্রবণ করে—দর্শন করে, অথবা শারণ করে, দে সমস্তইন্তপ্র-দৃষ্টবস্তুর ন্যায় মিথ্যা। এই দেহ সংসাররূপ রক্ষের দৃঢ় মূল স্বরূপ, এবং তাহাই পুল্র দারাদির উৎপত্তির মূল—অতএব ঐ.দেহ না থাকিলে আত্মার কিছুই নাই। অর্থাৎ পুল্রাদির উৎপত্তি হয় না। দেহ হুই প্রকার—স্থূল ও স্থান। স্থূল দেহ স্থূলপঞ্চত (অর্থাৎ ক্ষিতি জল তেজ বায়ু আকাশ এই সমস্ত পদার্থন্ময়) স্থান শারীরের নাম বিজদেহ—ঐ লিজদেহ স্ক্ষাভূত (অর্থাৎ রূপরস গান্ধ স্পার্শ শান্ধ) এবং অহলার বৃদ্ধি ও পাঁচটী কর্মোন্তার পান্ধ পদার্থের স্বরূপ, ঐ দেহেতে মনুষোরা অহং বৃদ্ধি করিয়া থাকে। হে লাভঃ! মনুষ্যাদি শারীর বিকৃতি (অর্থাৎ জন্য), উশ্বর শারীর মূলপ্রকৃতি (অর্থাৎ নিত্য), এই শারীর স্কুপদার্থ, এই কারণে পশুভেরণ ইহাকে ক্ষেত্র বিশ্বা

এতৈর্বিলক্ষণো জীবঃ পরমাত্মা নিরাময়ঃ।
তক্স জীবক্স বিজ্ঞানে সাধনান্যপি মে শুণু ॥ ৩০ ॥
জীবক্ষ পরমাত্মা চ পর্যায়ো নাত্র ভেদধীঃ।
মানাক্রাবস্তথাদন্তহিংসাদিপরিবর্জনম্ ॥ ৩১ ॥
পরাক্ষেপাদিসহনং সর্বত্রাবক্রতা তথা।
মনোবাক্রায় সন্তক্ত্যা সন্তরোঃ পরিসেবনম্ ॥ ৩২ ॥
বাহ্যাত্যন্তরসংশুদ্ধিঃ স্থিরতা সংক্রিয়াদিয়ু ।
মনোবাক্রায়দগুক্ষ বিষয়েয়ু নিরীহতা ॥ ৩০ ॥
নিরহক্ষারতা জন্মজরাদ্যালোচনং তথা।
অসক্তিঃ স্নেহশুন্যত্বং পুক্রদারধনাদিয়ু ॥৩৪॥
ইক্টানিক্টাগমে নিতাং চিক্তক্স সমতা তথা।
ময়ি সর্বাত্মকে রামে হ্যনন্যবিষয়া মতিঃ ॥ ৩৫ ॥

নির্দেশ করেন, জীব দেহ হইতে বিভিন্ন, জীব হইতে নিরা-ময় প্রমাত্মার বৈলক্ষণ্য নাই। হে কুলনন্দন! আমি সেই জীবের বিজ্ঞান সাধন কিঞ্চিৎ বলিতেছি শ্রবণ কর। ১৯।২০। 1251 221201 28 1261201291251251201 মুমুক্ষুব্যক্তিরা জীব ছইতে প্রমাত্মাকে কথনই ভিন্ন জ্ঞান করিবে না এবং অভিমান দম্ভ হিংসা প্রভৃতি মানসিক রভি পরিত্যাগ করিবে। পরক্লভ নিন্দা সহন কাম্মনোবাক্য দারা ভক্তি দারা সদ্গুৰু সেবন ও সর্ব্বপ্রাণির সহিত সরল বাব-হার করিবে এবং বাছ ও আস্তরিক শৌচ অবলম্বন করিবে। পরের অনিষ্ঠ চিন্তা, পরনিন্দা ও পরকে হস্তাদিদ্বারা প্রহার করিবে না, এবং নিরহঙ্কার ছইয়া দেছের জন্ম জরা মবন আলোচনা করিবে স্লেছ্শূন্য হইয়া পুত্র দারা ধনাদির আসক্তি পরিতাাগ করিবে এবং ইফীনিফ সমাগমে চিত্তকে সমভাবে রাখিয়া আমাতে অন্যান্য বিষয়ামতি অর্পন क्तिर्व। ७५ । ७२ । ७० । ७८ । ७৫ । সম্বাধ রহিত বিশুদ্ধভানে বাস করিয়া প্রাকৃত জনসমূহের

জনসম্বাধরহি : শুদ্ধদেশনিষেবণ ন ।
প্রাক্তের্জনসঞ্জৈশ্চ হারতিঃ সর্বাদা ভবেৎ ॥৩৬॥
আক্সানে সদোদ্যোগো বেদাস্তার্থাবলোকনন্।
উক্তৈরেতের্ভবেজ্জানং বিপরীতৈর্বিপর্যায়ঃ ॥৩৭॥
বৃদ্ধিপ্রাণমনোদেহাহস্ক্ ভিভ্যো বিলক্ষণঃ ।
চিদাস্থাহং নিত্যশুদ্ধো বৃদ্ধ এবেতি নিশ্চয়ম্ ॥৩৮॥
যন জ্ঞানেন সংবিত্তে তজ্জানং নিশ্চিতং চু মে।
বিজ্ঞানঞ্চ তদৈবৈতৎ সাক্ষাদম্ভবেদ্যদা ॥ ৩৯॥
আত্মা সর্বত্ত পুর্ণঃ স্থাচিদানন্দাস্মকোহব্যয়ঃ ।
বুদ্ধাদ্যুপাধিরহিতঃ পরিণামাদিবর্জ্জিতঃ ॥ ৪০॥
স্প্রকাশেন দেহাদীন্ ভাষয়য়নপারতঃ ।
এক এবাদ্বিতীয়শ্চ সত্যজ্ঞানাদিলক্ষণঃ ॥ ৪১॥

সহবাস পরিত্যাগ করিবে। অনবরত আত্ম তত্ত্বজানে উদ্-(वर्गत अमरत नमस्त्र त्वमा अन्यास्त्र वर्षात्मा करित्व। ट्र वरम ! क्रांतिक्कू वाक्तित्र। **এই**क्रश कार्या कतिस्म अनात्रारम জ্ঞান লাভ করিতে পারে, ইহার বৈপরীত্যাচরণে বিপরীত ফল লাভ হয় ৷ হে ভ্ৰাতঃ ! আঝা, বুদ্ধি, প্ৰাণ, মন, দেহ, ও জহ-স্কার হইতে অতিরিক্ত চিদাঝ্যুরূপ এবং নিত্য ও শুদ্ধ এই প্রকার নিশ্চয় যে জ্ঞান হইতে উৎপন্ন হয়, ঐ জ্ঞানের নাম জ্ঞান—প্রমা**ত্মা সাক্ষাৎকা**রেল্প নাম বিজ্ঞান, ঐ বিজ্ঞান দার। সর্বব্যাপী স্ক্রিদান্ত স্বরূপ অব্যয় নিরুপাধি এবং সর্বাদা দ্মানাবস্থাপন্ন অপ্রকাশ দারা দেহাদি প্রকাশক, স্করাং স্বয়ং প্রকাশ বিশিষ্ট সঙ্গর্মছত অদিতীয় সভাজ্ঞানস্থরপ এবং স্বকীয় প্রভা দারা সমস্ত জগতের ক্রেক্টা সেই পরমাত্মাকে জানিতে পারা যায়। হে লক্ষণ! যংকালে মনুষ্যেরা আচার্য্যলাজ্যোপ-দেশানুসারে জীবাজা পরমাঝা দরের অভেদ জান করে, তৎকালে তাহাদিগের মূল অবিজ্ঞা স্থুল ও ইন্দ্রিয়াদিরণ স্ক্ষা-পদার্থের সহিত প্রমাকাতে লীন হয়, ঐ অবিভালয়াবছাকে মোকাবস্থা বলিয়া পণ্ডিতের। নির্দেশ করিয়াছেন। ছে

শ্বসঙ্গং স্বপ্রজ্যে দ্রুটা বিজ্ঞানেনাবগম্যতে।
আচার্যাশাস্ত্রোপদেশাদৈক্যজ্ঞানং বদা ভবেৎ ॥৪২
আজনোজনিপরয়ে মুলাবিদা ভদৈব ছি।
লীর্যুতে কার্যাকরণৈঃ সহৈব পরমাজনি ॥ ৪৩॥
সাবস্থা মুক্তিরিভুক্তো ভ্যপচারোইয়মাজনি ।
ইদং মোক্ষর্মপথ তে কথিতং রুত্মক্ষন ! ॥ ৪৪।
জ্ঞানবিজ্ঞানবৈরাগ্যসহিতং মে পরাজ্মনঃ।
কিং ডেতদ্ তুর্লভং মন্যে মন্তুক্তিবিমুখাজানাম্ ॥৪৫
চক্ষুত্মতামপি যথা রাজ্রো সম্যক্ ন দৃশ্যতে।
পদং দীপসমৈতানাংদৃশ্যতে সম্যোগেব ছি ॥ ৪৬॥
এবং মন্তুক্তিবুক্তানামাতালা সম্যক্ প্রকাশতে।
মন্তুক্তেঃ কারণং কিঞ্জিক্ষ্যামি শৃণু তত্ত্বতঃ ॥৪৭॥
মন্তুক্তেঃ কারণং কিঞ্জিক্ষ্যামি শৃণু তত্ত্বতঃ ॥৪৭॥

রঘুনন্দন! তোমাকে এইরপ জান বিজ্ঞান ও বৈরাগ্য মিশ্রিভ মোক্ষপদার্থ কহিলাম। কিন্তু মন্তক্তি রহিত ভক্তদিগের এই মোক্ষ অতি হল্ল ভা ০৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪২। ৪৯। ৪৫। যেরপ চক্ষুমান্ ব্যক্তি রাত্রিকালে সম্যক্ দর্শন করিতে পারে না, কিন্তু দীপদংযোগ হইলে অনায়াদে দেখিতে পার, তজ্ঞপ মন্তক্তি যোগ থাকিলে আত্মাকে মনুষ্যেরা অনায়াদে দেখিতে পার, এইক্ষণে মনুষ্যান যে প্রকারে আমাতে ভক্তিলাভ করিতে পারে ভাহার কিছু উপার ব্যক্ত করি শ্রবণ কর।

যাহারা নিরস্তর মন্তক্তের সহিত সঙ্গ ও আমার ভক্তের সেবা, একাদশীতে উপবাস এবং আমার পর্বাদিনে উৎসব করে এবং আমার কথা রামায়ণের পাঠ ও ব্যাধ্যা শুনিতে অনুরক্ত এবং আমার নামকীর্তন ও পূজাদি কার্য্যের অনুষ্ঠান করিয়া থাকে, সেই সকল সভত যোগীপুরুষদিগের আমাতে অব্যভিচারিণী ভক্তি জ্বাহার থাকে, ভক্তি জ্বাহালে কোন বস্তুর অভাব থাকে না, যেহেতু ভক্তিংইতে জ্বান, বিশ্লান মন্তক্তনকো মৎদেবা মন্তক্তানাং নিরম্ভরম।

একাদশ্রপাদাদি মম পর্বাহ্যমাদনম্ । ৪৮॥

মৎকথাশ্রবণে পাঠে ব্যাখ্যানে সর্বাদা রক্তিঃ।

মৎপূজাপরিনিষ্ঠা চ মম নামামুকীর্ত্তনম্ ॥ ৪৯॥

এবং সতত্যুক্তানাং ভক্তিরব্যভিচারিণী।

মরি সঞ্জারতে নিত্যং ততঃ কিমবশিষ্যতে ॥ ৫০॥

অতো মন্তক্তিযুক্তশ্র জ্ঞানং বিজ্ঞানমেব চ।

বৈরাগ্যং চ ভবেজ্ছীন্তং ততো মুক্তিমুবাপ্লুয়াং।

কথিতং সর্বমেতত্তে তব প্রশ্নানুসারতঃ।

অন্মিশ্বনঃ সমাধার মন্তিষ্ঠেৎ স তু মুক্তিভাক্।।৫২।

ন বক্তব্যমিদং যত্নাৎ মন্তক্তিবিমুখার হি।

মন্তক্তার প্রদাতব্যমাহুয়াপি প্রযন্ততঃ। ৫০॥

ও বৈরাগ্য অভিসন্তর উৎপন্ন ছইয়া থাকে, বিজ্ঞানাদি হইলে
মুক্তিলাভ ছয় । ৪৬ । ৪৭ । । ৪৮ । ৪৯ । ৫০ । ৫১ । ছে বৎস !
তোমার প্রশাল্দারে এই সকল গুফ বিষয় ব্যক্ত করিলাম ।
যে ব্যক্তি আমার এই সকল উপদেশবাক্যে মনোনিবেশ
করিবে সেই ব্যক্তি মুক্তিলাভ করিবে, । অতএব হৈ লক্ষমণ !
তুমি মন্তক্তি বিরহিত ব্যক্তিদিগের নিকট আমার এই
উপদেশ মত্ব পূর্বেক বাক্ত করিবে এবং আমার ভক্তপুক্ষদিগকে আহ্বান করিয় এই সমন্ত কহিবে। হে ভাতঃ ! যে

য ইদন্ত পঠেন্নিত্যং শ্রদ্ধাভক্তিদমন্বিতঃ। অজ্ঞানপটলধান্তং বিধুয় পরিমুচ্যতে॥ ৫৪॥

ভক্তানাং মম যোগিনাং
ম্বিমলস্বাস্তাতিশাস্তাত্মনাং
মৎদেবাভিরতাত্মনাং চ
বিমলজানাত্মনাং স রিদা।
সঙ্গং যঃ কুরুতে সদোদ্যতমতিঃ সংসেবনানন্যধীর্মোকস্তম্য করে ভিতোহমনিশং
দুশ্যো ভবে নান্যধা॥ ৫৫॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমাসহেশ্বরসন্থাদে
অরণ্যকাণ্ডে চতুর্থঃ

ব্যক্তি মৎক্রত উপদেশ শ্রদ্ধান্ত ক্তিসহকারে প্রতিদিন পাঠ করে
সেই ব্যক্তি অজ্ঞান রূপ অন্ধ্রকার ছইতে মুক্ত ছয়।৫২/৫৩/৫৪।
যে সকল ব্যক্তি মৎসেবনে অনন্য বৃদ্ধি হইয়া মন্তক নির্মানান্তঃকরণ শান্তপ্রকৃতি এবং মৎসেবাপরায়ণ পরমজ্ঞানী যোগীগণের সন্ধ করে, আমি সর্বাদা তাছাদিগোর দর্শন পথে অবস্থিতি করি; এবং হুল্ল ভ মুক্তিপদার্থ তাছাদিগোর করস্থিত জানিবে। ৫৫।

ইতি শ্রীমদ্ধ্যাক্সরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে চতুর্থোধ্যায়ঃ।

পঞ্চমা>ধ্যায়ঃ।

তিমিন্ কালে মহারণ্যে রাক্ষদী কামকপিণী।
বিচচার মহাসন্ত্রা জনস্থাননিবাসিনী॥ ১॥
একদা গৌতমীতীরে পঞ্চবট্যাঃ সমীপতঃ।
পদ্মবক্তাঙ্গুশাস্কানি পদানি জগতীপতেঃ॥ ২॥
দৃষ্টা কামপরীতাত্মা পাদসোন্দর্যুমোহিতা।
পশুন্তী সা শনৈরায়াদ্রাঘবস্থা নিবেশনম্॥ ৩॥
তত্র সা তং রমানাথং সীতয়া সহ সংস্থিতম্।
কন্দর্পসদৃশং রাক্ষিদৃষ্টা কামবিমোহিতা॥ ৪॥

রাক্ষমী রাঘবং প্রাহ কম্য ? ত্বং কং ? কিমাশ্রমে ?

युटका कठावन्कनारेमाः माधाः किटखुळ ? तम वम ॥ व

সেই কালে দওকারণাবাসনী মহাবলপরাক্রান্তার কামরপিণী এক রাক্ষসী মহারণ্যমধ্যে সর্মদা বিচরণ করিতেন।
একদা প্র রাক্ষমী পঞ্চবটা স্মীপবর্ত্তী গোভমী নদী ভারে শ্রীরামচন্দ্রের প্রজ্ঞ বজ্ঞাঙ্কুশ চিছ্লিভ চরণচিছ্নসোন্দর্য্য সন্দর্শনে কাম
মোহিত হইরা চরণ চিক্লের অনুসরণ করতঃ শ্রীরাম ভবনে
উপন্থিত হইল। অনন্তর রাক্ষসী গীতাদেবীর সহিত একাসনোপবিষ্ট কন্দর্প সদৃশ শ্রীরামকে দর্শন করিয়া কামভাবে
জিজ্ঞানা করিল—তুমি কোন্ ব্যক্তির সন্তান এবং ভোমার নাম
কি কারণেইবা জ্ঞাবলকল ধারণ করিয়া আশ্রমে বাস
করিতেছ গ এছানে বাস করিবার উদ্দেশ্যই বা কি গ এই সকল
র বাস্ত আমার নিকট ব্যক্ত কর। আমি স্পণিধানা মীকামর পিণী
রাক্ষনাধিপতি মহান্থা রাবণের ভাগিনী ধরনামক অপর
জ্ঞাতার সহিত এই অরণ্য মধ্যে বাস করিয়া থাকি। ১। ২। ৩।

অহং শূর্পণখা নাম রাক্ষনী কামকপিণী।
ভগিনী রাক্ষনেন্দ্রন্য রাবণন্য মহংজ্বনঃ॥ ॥
খবেণ সহিতা ভাত্রা বসাম্যত্ত্রেব কান্নে।
রাজ্ঞা দত্তঞ্চ মে সর্বাং মুনিভক্ষা বসাম্যহম্॥ ৭॥
জাং তু বেদিতুমিচ্ছামি বদ মে বদতাম্বর!।
ভামাহ রামনামাহমযোধ্যাধিপতেঃ হৃতঃ॥ ৮॥
এষা মে সুন্দরী ভার্য্যা সীতা জনকনন্দিনী।
স তু ভ্রাতা কনীয়ান্ মে লক্ষ্মণোহতীব সুন্দরঃ॥ ।
কিং ? ক্বতান্তে ময়া ক্রহি কার্য্যং ভুবনস্থন্দরি!।
ইতি রাম্বচঃ শ্রুড়া কামার্ত্রা সাত্রবীদিদম্॥ ১০॥

18।৫।৬।৭। একলে তোমাকে জানিতে ইচ্ছা করি। হে বদভাস্বর! নিজ নাম ও ধাম ব্যক্ত কর। জ্ঞারামচক্র কহিলেন হে স্থন্দরি! আমি অযোধ্যাপতি রাজা দশরথের পুত্র আমার নাম রাম—এই পরমাস্থন্দরী জ্ঞানকনন্দিনী সীতা আমার ভার্যা। এবং আমা অপেকা অতি স্থন্দর লক্ষণ আমার কনিষ্ঠ ভাতাতিনি ও এস্থানে আছেন—হে ত্রিভ্রু মোঁহিনি! আমা দারা তোমার কি কার্য্য সাধনে ইচ্ছা আছে তাহা ব্যক্ত কর। কামার্তা রাক্ষ্যা জ্ঞারমের এইরূপ বাক্য জ্ঞাবণ করিয়া ক্ছিল—হে রাম! আগমন করিয়া আমার সহিত গিরিকানন মধ্যে রমণ কর—হে কমলফ্রাচন! আমি এক্ষণে অতি কামার্তা ছইয়াছি

এহি রাম। ময়া সার্দ্ধং রমস্ব গিরিকাননে।
কামার্জাহং ন শক্রোমি ত্যক্তবৃং ত্বাং কমলেক্ষণম্।১১
রামঃ সীতাং কটাক্ষেণ পশ্যন্ সন্মিতমন্তবীং।
ভার্য্যা মমৈষা কল্যানী বিদ্যুতে হ্যনপায়িনী। ১২
ত্বং তু সাপত্যুদ্ধেশন কথং স্থাস্যার্দ্ধি মুন্দরি!।
বহিরান্তে মম ভাতা লক্ষ্মণোহতীব স্থাদরঃ। ১ গা
তবামুর্রপো ভবিতা পতিস্তেনের সঞ্চর।
ইত্যুক্তব্যু লক্ষ্মণং প্রাকৃত্যু সঙ্গছ্যাবোহদ্য মা চিরম্।
ভাতুরাজ্ঞাং পুরক্ত্যু সঙ্গছ্যাবোহদ্য মা চিরম্।
উত্যাহ রাক্ষনী ঘোরা লক্ষ্মণং কামমোহিতা॥১৫॥

অতএব তোমাকে কোন রূপে ত্যাগ করিতে পারিনা।৮।১ ১০ ৷ ১১ ৷ অনন্তর প্রীরামচন্দ্র সীতার প্রতি কটাক্ষ নিক্ষেপ করিয়া সহাস্য বদনে রাক্ষ্সীকে কহিলেন—হে স্থলরি ! আমার এই কলানি ভার্যা বিদ্যমান আছে ইহাকে কোন ক্রমে ত্যাগ করা উচিত নহে, তুমি আমাকে পতিভাবে স্বীকার করিয়া যাব-জ্ঞীবন দাপত্না ছঃথেকি জন্য পীড়িতা হইবে? এক্ষণে ভোমাকে সত্পদেশ প্রদান করিতেছি আবেণ কর-- আমার জাতা পরম স্থুন্দর লক্ষণ বহির্দেশে আছেন তিনিই তোমার অমুরূপ পতি इटेर्दिन छाटात निह्छ वह कानन भएग मक्षत्र कद्र। ताकनी এরিকার বাক্যজাবণানস্তর বহির্দেশে গমন করিয়া লক্ষ্মণকে কহিলেন--হে হুলর ! ভুমি জ্যেষ্ঠ ভাতার অনুমত্যানুসারে আমার পতি হও, একণে আমরা উভয়ে মিলিভ হই বিলয় করিওনা। লক্ষ্মণ রাক্ষমীর বাক্তা প্রবণ করিয়া কাইলেন-ছে সাধিব! আমি শ্রীরামচন্দ্রের দাস তুমি আমাকে পৃতিত্বে বরণ করিলে জাঁহার দাদ্য স্বীকার করিতে হইবে ইহা অপেকা হ:খতর আর কি আছে ?—হে ভদ্রে ! তুমি জ্ঞীরামচন্দ্রের নিকট গমন কর, তিনি ভ্লাখিল ব্রহ্মাণ্ডের ঈশ্বর, অতএব তদ্বারা

তামাহ লক্ষণঃ সাধি! দাসোহহং তন্ত ধীমতঃ!!
দাসী ভবিষাসি জন্ত ততো দুঃখতরং মু কিম?॥১॥
তমেব গচ্ছ ভক্ষং তে স তু রাজাখিলেশ্বরঃ!
তচ্ছুজা পুনরপ্যাগাদ্রাঘবং দুইটমানসা॥১॥
কোধাদ্রাম ! কিমর্থং মাং প্রাময়স্যুনবস্থিতঃ।
ইদানীমেব তাং সীতাং ভক্ষরামি তথাগ্রতঃ॥১৮॥
ইত্যক্ত্বা বিকটাকারা জানকীমন্থধাবতী।
ততো রামাজ্রা খজ্সমাদার পরিগৃহ্যতাম্॥১৯।
টিচ্ছেদ নাসাং কর্ণো চ লক্ষ্মণো লঘুবিক্রমঃ।
ততো ঘোরধনিং রুজা রুধিরাক্তবপুদ্ধতিম্।। ২০॥
কন্দমানা পপাতাগ্রে খর্স্য পর্যাক্ষরঃ।
বিক্রেট্নিতি তামাহ খরঃ খর্তরাক্ষরঃ।। ২১॥

ভোমার মঙ্গল হইবে। রাক্ষণী লক্ষ্মণের বাক্যক্সবণানন্তর জীরামের নিকট আগমন করিয়া ক্রোধ সহকারে কহিল—হে রাম! তুমি অব্যবস্থিত চিত্তের ন্যায় কি জন্য মিথাবাক্যপ্রারা আমাকে জ্রমণ করাইতেছ এক্ষণে ভোমার অগ্রেই দীতাকে জ্রুপ করিব। ১২। ১৯। ১৫। ১৯। ১৭। ১৮। অনস্তর রাক্ষণী বিকটাকৃতি ধারণ করিয়া জানকীর প্রতি ধাবিত ছইল। অমিত পরাক্রম লক্ষ্মণ জীরামের আজাহুদারে রাক্ষণীকে গ্রহণ করিয়া শাণিত ঋজাহারণ তাহার নামিকা ও কর্ণযুগল ছেদন করিলেন। অনন্তর ক্ষরিরার্জ দেহা রাক্ষণী ঘোরতর ধ্বনিসহকারে ক্রন্থন ও থরের প্রতি কঠোরবাক্যোচ্চারণ করিতে করিতে থরের নিকট গমন করিল। অনন্তর শ্বনেশ করিয়া করিয়া তোমার এইরূপ অবন্থা করিয়াছে তুমি ভাহার নাম ব্যক্ত কর ? বদ্যাপি সে ব্যক্তি কালসদৃশ পরাক্রমণালী হয়, ভাছা ইইলেও ফ্লকালমধ্যে তাহাকে বধ্ব করিব। ১৯। ২০।

কেনৈবং কারিতানি ত্রং মৃত্যোবজ্ঞান্তবর্তিনা।
বদ মে তং বধিষ্যামি কালকল্পমিপি ক্ষণাৎ ॥ ২২ ॥
তমাহ রাক্ষনী রামঃ দীভালক্ষণসংশ্বতঃ।
দশুকং নির্ভয়ং কুর্বানাস্তে গোদাবরীতটে ॥ ২৩ ॥
মামেবং কৃতবাংস্তদ্য ভাতা তেনৈব চোদিতঃ।
যদি ত্বং কুলজ্ঞাতোহিনি বীরোহনি ? জহি তৌ রিপূ
তরোম্ভ ক্ষরিং পাস্যে ভক্ষয়ে তৌ স্থুদুর্মদৌ।
নোচেৎপ্রাণান্ পরিত্যজ্য যাদ্যামি যমসাদনম্॥২৫
তচ্ছু তা ত্বিতং প্রাণাৎ খরঃ ক্রোধেন মুচ্ছি তঃ।
চতুর্দশসহস্রাণি রক্ষনাং ভীমকর্মণাম্ ॥ ২৬ ॥
চোদয়ামাস রামস্য সমীপং বধকাঞ্জারা।
খরশ্চ ত্রিনিরালৈচব দূষণলৈচব রাক্ষসঃ ॥ ২৭
সর্বে রামং যয়ঃ শীঘুং নানাপ্রহরণোম্ভতাঃ।
প্রক্রি বিমার বিদ্বাহিন্তব রাক্ষরি । ২৮

া ২১। হং। স্থাণথা কহিল—রাম সীতা ও লক্ষাণের সহিত দণ্ডকারণ্যে নির্ভিয় করিয়া গোদাবরী তটে অবস্থান করিতেছে। রামের কনিষ্ঠ লাতা লক্ষাণ জ্যোষ্ঠের আজ্ঞার আমার এইরূপ অবস্থা করিয়াছে। যদি তুমি রাক্ষ্যকুষে জ্বাগ্রহণ করিয়াথাক ও যথার্থ বীর হও তবে সেই শক্রম্বরকে বিনাশ কর, আমি তাহাদিগের রুধির পানও মাংস ভক্ষণ করিব। আর যদি তাহাদিগেক উপেক্ষা কর, তবে আমি প্রাণ পরিত্যাগ করিয়া যমালয়ের অতিথি ইইব ।২৩ ।২৪ ।২৫ । থর প্রবণানস্তর ক্রোধে অধীর হইরী বহির্গত হইল। অনস্তর রামের বিনাশ বাসনায় চতুর্দশসহস্ররাক্ষ্য সৈত্য প্রেরণ করিয়া দূষণ ও ত্রিশিরার সহিত নানা অন্ত্রশন্তে সজ্জিভ হইয়া স্বয়ং রামের নিকট গমন করিল। দৈন্যগণের কোলাহল প্রবণ করিয়া রাম লক্ষ্যণকে কহিলেন—হে লক্ষণ! ঐ শুন ভীষণ কোলাহল হইতেছে,নিশ্চম রাক্ষ্যণ আগমন করিতেছে। অদ্য আমার সহিত ভয়ানক

ভারতে বিপুলঃ শব্দো ফ্নমায়ান্তি রাক্ষসা:।
ভবিষ্যতি মহলুদ্ধেং ফ্নমস্ত ময়া সহ।। ২০।।
দীতাং নীত্বা গুহাং গত্মা তত্র তির্ত মহাবল!।
হন্তমিচ্ছাম্যহং সর্বান্ রাক্ষসান্ ঘোরন্ধপিণঃ ॥ ৩০
ভার কিঞ্জিয় বক্তব্যং শাপিতোহদি মমোপরি।
তথেতি দীতামাদায় লক্ষণো গহ্মরং যথো॥ ৩১
রামঃ পরিকরং বদ্ধা ধন্মরাদায় নির্কুর্ম্।
ভূণীরাবক্ষয়শরো বদ্ধা যত্তোহভবৎপ্রভুঃ।। ৩২।।
তত ভাগত্য রক্ষাংদি রামদ্যোপরি চিক্ষিপুঃ।
ভাগি বিচিত্রাণি পাষাণান্ পাদপানপি।।৩৩।
তানি চিচ্ছেদ রামোহপি লীলয়া তিলশঃ ক্ষণাৎ।
ততো বাণসহস্রেণ হত্ম তান্ সর্বরিশক্ষমান্॥৩৪।।
খরং ত্রিশিরসং চৈব দূষণং চৈব রাক্ষমম্।
ভ্রমান প্রহরার্ছেন্ সর্বানেব রঘুত্রমঃ।। ৩৫।।

যুদ্ধ করিবে। হে মহাবল! তুমি দীতাকে লইরা পর্বত গুহার মধ্যে অবস্থান কর। আমি বোর দর্শন রাক্ষদগণকে বিনাশ করিব তুমি এ বিষয় কোন আপত্তি করিও না আমার দিবা। লক্ষ্মণ রামবাক্য স্বীকার করিয়া সীতার সহিত পর্বত গুহার গমন করিলেন। রামচন্দ্র কঠোর কোদণ্ড ও অক্ষয় শার তৃণীর ঘ্য ধারণ করিলেন, ও বন্ধপরিকর ইইয়া যুদ্ধ করিব আশারে অবস্থান করিতে লাগিলেন। অনন্তর রাক্ষদগণ আগমন পূর্বক রামের উপর অন্তর্শন্ত্র শিলাখণ্ড ও রক্ষ সকল পরিভাগি করিতে লাগিল। রামচন্দ্র অবলীলাক্রমে ক্ষণ মধ্যে সেই সকল অন্তর্শনি ভিলপ্রমাণে ছেদন করিলেন। এবং প্রহার্দ্ধমধ্যে খর দূষণ ত্রিশিরা ও সমন্ত রাক্ষ্ম গণকে বিনাশ করিলেন। ২৬।২৭।২৮।২৯ শিত । ৩১। ৩২।

লক্ষণে হিপি গুহামধ্যাৎ দীতামাদায় রাঘবে।

সমর্প্য রাক্ষদান দৃষ্ট্বা হতান্ বিশ্বয়মায্যে । ৩৬।

সীতা রামং সমালিক্য প্রদয়মুখপক্ষজা।

শস্ত্রগানি চাক্ষেরু মমার্জ জনকাত্মজা॥ ৩৭॥

সাপি ছুদ্রাব দৃষ্ট্বা তান্ হতান্ রাক্ষদপুক্ষবান্।

লক্ষাং গড়া সভামধ্যে ক্রোশন্তী পাদসয়িধে ॥ ৩৮

রাবশন্ত পপাতোর্গাং ভগিনী তস্য রক্ষদঃ।

দৃষ্ট্বা তাং রাবণঃ প্রাহ ভগিনীং ভয়বিহ্মলাম্॥ ৩০

উত্তিষ্ঠোন্তিষ্ঠ বৎসে। তং বিরূপকরণং তব।

কৃতং শক্রেণ বা ভদ্রে ! যমেন বর্জণেন বা ॥ ৪০॥

কুবেরেণাথ বা ক্রহি ভস্মীকুর্য্যাং ক্ষণেন তম্ ।

রাক্ষদী ভমুবাচেদং তং প্রমন্ত্রো বিমৃত্ধীঃ ॥ ৪১॥

তিতাত ৪। তথা অনন্তর লক্ষণ গুহামধ্য হইতে সীতাকে লইয়া বামচন্দ্রের নিকট সমর্পণ করিলেন ও নিহত রাক্ষস্থানকে অব-লোকন করিয়া অভিশন্ন বিন্দিত হইলেন। সীতা প্রসন্ধ মুখে রামকে আলিন্ধন করিয়া রামের শরীরের অস্ত্র ক্ষত দেশে হস্ত মার্জন করিতে লাগিলেন। ৩৬। ৩৭। রাক্ষস্থানকে নিহত দেখিয়া রাবণস্থান শূর্পণখা ভরে পলান্ধন করিল এবং লঙ্কারা-গমন পূর্বক সভামধ্যে রাবণচরণ সমীপে ভূমিতলে পতিত হইয়া রোদন করিতে লাগিল। রাবণ ভাহাকে ভরবিহ্বলা দেখিয়া কহিল হে বৎদে! উঠ, উঠ, ভোমার বিরূপতার কারণ কি বল। ইন্দ্র, যম, বক্ষণ, বা কুবের, কে এ কার্য্য করিয়াছে বল? আমি ভাহাকে ক্ষণকাল মধ্যে ভ্র্মাবশেষ করিব।

শূপণিখা কহিল—তুমি একণে প্রমত্ত হইরাছ—তোমার বুদ্ধি বিলুপ্ত প্রায় হইয়াছে—কি রূপে রাজ্য রক্ষা করিবে? হার, রাক্ষসশক্ত রাম শ্বর, দ্বণ, ত্রিশিরা ও চতুর্দশসহত্র দৈন্যবাণকে যুদ্ধে বিনাশ করিয়াছে। জনস্থানে মুনিবাণ নির্ক্তিয়ে বিচরণ করিতেছে, তুমি ইহার কিছুই বিদিত নহ— পানাসকঃ স্ত্রীবিজিতঃ বণ্ডঃ সর্বত্ত লক্ষ্যদে
চারচক্ষবিহীনস্ত্যং কথং রারা ভবিষাসি ॥ ৪২॥
খরশ্চ নিহতঃ সঙ্গো দুষণস্ত্রিশিরাস্থা।
চতুর্দশসহস্রাণি রাক্ষসানাং মহাত্মনাম ॥ ৪৩॥
নিহতানি ক্ষণেনৈব রামেণাস্তর্শক্রণা।
জনস্থানমশেষেণ মুনীনাং নির্ভরং কৃত্ম।
ন জানাসি বিমুদ্স্মত্রব ময়োচ্যতে॥ ৪৪॥

রাবণ উবাচ।

কো বা রামঃ কিমর্থং বা কথং তেনাস্থরাহতাঃ।
সম্যক্রথয় মে তেষাং মূলঘাতং করোম্যহম্॥ ৪৫॥

শূর্পণখোবাচ।

জনস্থানাদহং যাতা কদাচিদ্গোতমীতটে। তত্ত্ব পঞ্চবটী নাম পুরা মুনিজনাশ্রয়া॥ ৪৬॥

এইজন্য ভোমাকে বিমৃত বলিভেছি। ৩৮। ৩৯। ৪৯। ৪৯। ৪৯। ৪১। ৪৯। রাবণ কছিল—রাম কে, কি প্রয়োজনে—কেন রাক্ষসগণকে বিনাশ করিল? তুমি তাহা সবিস্তরে বল—আমি তাহাকে সমূলে বিনফ করিব। ৪৫।

শৃপণখা কহিল—আমি একদা জনস্থান হইতে গোদাবরী
তীরে গমন করিতেছিলাম। মুনিগণের আবাসস্থান পঞ্চতী
কাননে দেখিলাম প্রকুল্ল রাজীবলোচন ধমুর্কাণধর, জটাবল্পন বিভূষিত, পরম রূপবান রাম সেই স্থানে বিরাজ্ঞ করিতেছেন। তাঁহার কনির্চ লক্ষ্মণও তাঁহার ন্যায় স্থানর, তাঁহার ভার্যা আয়ত লোচনা—দিতীয় লক্ষ্মীর ন্যায় স্থানরী।
দেবলোক, গর্ক্বলোক, ভুজন্দ লোক, বা মনুষ্যলোকে তাদ্শী
স্থানী রমণী আমি কখন দেখি নাই, শ্রবণও করি নাই। সে

তত্তাশ্রমে ময়া দৃষ্টো রামো রাজীবলোচনঃ।
ধনুর্বাপ্পরঃ শ্রীমান্ জটাবলকলমপ্তিতঃ॥ ৪৭॥
কনীয়ানমুজস্ত লক্ষণেহিপি তথাবিধঃ।
তত্তা ভার্য্যা বিশালাকী রূপিনী শ্রীরেবাপরা॥৪৮॥
দেবগন্ধর্বনাগানাং মন্থ্যাগাং তথাবিধা।
ন দৃষ্টা ন শ্রুতা রাজন্! তোতয়ন্তী বনং শুভা॥৪০
আনেতুমহমুত্যুক্তা তাং ভার্যার্থং তবানঘ!
লক্ষণো নাম ভদ্ত্রাভা চিচ্ছেদ মম নাসিকাম্॥৫০
কর্ণে চিনোদিভন্তেন রামেন স মহাবলঃ॥
তত্তোহহমভিদুংখেন রুদন্তি ধরমন্থ্যাম্॥ ৫১॥
সোহপি রামং সমাসাদ্য যুক্ষং রাক্ষসমূথপৈঃ!
ভতঃ ক্ষণেন রামেণ ভেনিব বলশালিনা॥ ৫২॥

সেই কামিণীকে তোমার ভার্মণ করিব বলিয়া আনিতে উদ্যোগ করিলে রামের কনিও লক্ষমণ রামের আজ্ঞার আমার নাসিকা ও কর্ণ ছেদন করিরাছে। অনন্তর আমি রোদন করিতে করিতে থরের নিকট গমন করিলাম। থরও রামের সাছিত যুদ্ধ করিয়া রাম কর্তৃক ক্ষণমধ্যে সেনা ও সেনাপভির সহিত বিনম্ভ ইইরাছে। আমার বোধ হয় রাম ইল্ছাকরিলে নিমিবার্কে ত্রৈলোক্য ভন্মাবশেষ করিতে পারে সন্দেহ নাই। যদি রামের ভার্যা ভোমার প্রণারণী হয় তবেই ভোমার জীবন সফল, অভএব হে রাজেন্দ্র! পদ্মপত্র বিলোচনা, সর্কলোক স্কল্পরী সীভা রাহাতে ভোমার প্রেরসী হয় ভাহার চেন্টাকর। তৃমি রামের সাক্ষাতে আব্দান করিছে পারিবে না। মারাজ্ঞালে রামকে মোহিত করিয়া অপনকী লাভ করিতে পারিবে। রাবণ জ্বন করিয়া মধুর বাক্য, রক্ষান ও দান্ধারা শূর্পণথাকে সমান্বন্ত করিয়া শ্রনাগারে গমন করিল। তথার কর্ত্ব্য চিন্তা করিতে করিতে রাজিকালে

সর্ব্বে তেন বিন্তা বৈ রাক্ষনা ভীমবিক্রমাঃ।

যদি রামো মনঃ কুর্য্যাজৈলোক্যং নিমিষার্দ্ধভঃ ॥৫৩
ভন্মীকুর্য্যায় সন্দেহ ইতি ভাতি মম প্রভো!।

যদি সা তব ভার্য্যা স্থাৎ সফলং তব জীবিতম্॥৫৪॥

মতো যতম্ব রাজেন্দ্র ! যথা তে বল্লভা ভবেৎ।

সীতা রাজীবপত্রাক্ষী সক্রলোকৈকমুন্দরী ॥ ৫৫॥

সাক্ষাজামস্থ পুরতঃ স্থাতুং তুং ন ক্ষমঃ প্রভো!

মায়য়া মোহয়িত্বা তু প্রাপ্যাসে ভাং রঘূভ্যম্॥৫৬॥

শ্রুত্বাক্যৈন্দ্র দানমানাদিভিত্তথা।

আশ্বাস্থ ভগিনীং রাজা প্রবিবেশ স্বকং গৃহম্।

তত্র চিস্তাপরো ভূত্বা নিজাং রাত্রো ন লক্কবান্॥৫৭

একেন রামেণ কথং ? মন্ত্র্যাল

মাজেণ নক্ষঃ সবলঃ খরো মে ।

আতা কথং ? মে বলবীর্যাদর্শ
যুতো বিনক্টো বত রাঘবেণ ॥ ৫৮ ॥

यদ্বা ন রামো মনুজঃ পরেশো

মাং হস্তুকামঃ সবলং বলোঘিঃ ।

সম্প্রার্থােইস্তু রঘোঃ কুলেইমুৎ ? ॥৫৯

নিজাপুথ অনুভব করিতে পারিলনা। ৪৬।৪৭।৪৮।৪৯।। ৫৯।৫৯।৫২।৫২।৫৯।৫৪।৫৫।৫৬।৫৭। রাম একাকী সামান্য মধুব্য হইরাও আমার জাতা ধরকে কি রূপে সসৈন্যে বিনাশ করিল অথবা রাম মন্ত্র্য কহেন, আমাকে বিনাশ করিবার জাত বন্ধা কর্ত্ব প্রার্থিত হইরা মনুব্য রূপে রয়ুবংশে জন্মগ্রহণ ক্রিরাইছন। যদি প্রমাক্ষা রাম আমাকে বিনাশ

বধাে বদি ভাং? পরমাজনাহং
বৈকুণ্ঠরাজ্যং পরিপালয়েইছম।
নাচেদিদং রাক্ষসরাজ্যমেব
ভোক্ষ্যে চিরং রামমতে। ব্রজামি।।৬০
ইত্যং বিচিন্ত্যাধিলরাক্ষসেশ্রেং
রামং বিদিন্তা পরমেশ্রং হরিম্।

বিরোধবুইদ্ধাব হরিং প্রারামি জ্বাহ্য ভগবান প্রসীদেশ ॥ ৬১ ট

ইক্তি **শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্রসম্বাদে** অরণ্যকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

করেন তবে চিরকালের নিমিত্ত বৈক্ঠ রাজ্য পরিপালন করিব অর্থাৎ দাযুজ্য রূপ মোক্ষ প্রাপ্ত ছইব। আর যদি রাম মুখ্য হয় ভবে এই রাক্ষ্য রাজ্য ভোগা করিব। অভএব বিরোধ বুজিডেই রামের নিকট গমন করি। রাক্ষ্যেক্স রাবণ এই রূপ চিন্তাকরিয়া রামকে জগদীশ্বর বলিরা ছির করিল। আরও ভাবিল ভাঁছার নিকট বিরোধ বুদ্ধিতেই গমন করা উচিত। যেছেতু জগদীশ্বর ভক্তিতে শীত্র প্রসন্ন হন্মা। ৫৮।৫৯। ৬০।৬১।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমানছেশ্বরস্থাদে অরণ্যকাণ্ডে পাঞ্চমাছঅধ্যার।

ষঠে বিষয়ে

বিচিটেন্ত্যবং নিশায়াং সং প্রভাতে রথমাস্থিতঃ।
রাবণো মনসা কার্য্যমেকং নিশ্চিত্য বুদ্ধিমান্॥।।
যথৌ মারীচসদনং পরং পারমুদস্তঃ।
মারীচন্তত মুনিবজ্জটাবলকলধারকঃ।। ২॥
ধ্যায়ন্ হৃদি পরাত্মানং নির্গুণং গুণভাসকম্।
সমাধিবিরমেহপশ্যদ্রাবণং গৃহমাগভম্॥ ৩॥
ক্রতাতিখং সুখাসীনং মারীচো বাক্যমন্ত্রবীং॥ ৪॥
সমাগমনমেতন্তে রথেনৈকেন রাবণ!।
চিন্তাপর ইবাভাসি হৃদি কার্যাং বিচিন্তরন্॥ ৫॥

বুদ্ধিমান রাবণ রাত্রি কালে উক্ত রূপ চিন্তা করতঃ "রাম ছইতে স্ত্যুই উত্তম" ইহা ছির করিয়া প্রভাতে রথারোহণ পূর্ব্ধক সমুদ্রের পর পার বন্ত্রী মারীচ নিকেতনে গমন করিল। মারীচ সেই স্থানে মনির ন্যায় জটা বল্কল ধারণ করিয়া হৃদয়ে নিগুণ পরমান্মার ধ্যান করিতে ছিল। ধ্যানানন্তর রাবণকে সমাগত দেখিয়া শীত্র গাত্রোখান পূর্ব্ধক আলিজন, যথাবিধি পূজা ও আতিখ্য সৎকার করিল। অনন্তর রাবণ স্থাবিধি পূজা ও আতিখ্য সৎকার করিল। অনন্তর রাবণ স্থাবিধি পূজা ও আতিখ্য সৎকার করিল। অনন্তর রাবণ স্থাবিধি পূজা ও আতিখ্য সৎকার করিল। অনন্তর রাবণ ব্যাবিধি পূজা ও আতিখ্য সংকার করিল। অনন্তর রাবণ স্থাবিধি পূজা ও আতিখ্য সংকার করিল। তানন্তর রাবণ স্থাবিধি পূজা ও আতিখ্য সংকার করিল। তানন্তর রাবণ স্থাবিধি পূজা ও আতিখ্য সংকার করিল। তাননির বান করিয়া আগমন করিয়াছেন ও হাদয়ে বেন কোন মহৎ কার্য্যের চিন্তা করিতেছেন। গোপনীয় না ছইলে তাহা প্রকাশ করুন। যদি ঐ কার্য্য করিলে আমাকে পাপস্পর্শ না করে ও ন্যায় সঙ্গত হয় তবে আমি আপনার প্রিয় কার্য্য সম্পাদন করিব। ১। ২। ৩।৪।৫।৬)

ক্রাহি মে ন হি গোপ্যঞ্ছেৎকরবানি তব প্রিয়ম্।
ন্যায্যং চেৎ ক্রহি রাজেন্দ্রা ব্রজিনং মাং স্প্রদার হি
বাবণ উবাচ।

অন্তি রাজা দশরথং সাকেতাধিপতিং কিল।
রামনামা সুতস্তম্য জ্যেষ্ঠঃ সত্যপরাক্রমং ॥ १॥
বিবাসয়ামাস সুতং বনং বনজনপ্রিয়ম্ ॥ ৮॥
ভার্যয়া সহিতং ভাজা লক্ষণেন সমন্বিতং।
স আন্তে বিপিনে ঘোরে পঞ্চবট্যাশ্রমে শুভে।
তস্য ভার্যা বিশালাক্ষী সীতা লোকবিমোহিনী॥৬
রামো নিরপরাধান্মে রাক্ষ্যান্ ভীমবিক্রমান্।
খরং চহত্বা বিপিনে সুখ্যাস্তেহতিনির্ভয়ঃ ॥১০॥

রাবণ কহিল, "অযোধ্যাধিপতি দশরথ নামে রাজা ছিলেন। অমিত পরাক্রম রাম তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র। রাজা রামকে ভার্যা ও ভাতা লক্ষ্মণের সহিত বনবাসী প্রিরধনে নির্বাসিত করিয়াছেন, সেই রাম খোর পঞ্চবটী বনে আশুম করিয়া অবস্থান করিতেছেন। ভুবন মোহিণী আয়ভলোচনা সীতা তাঁহার ভার্যা; রাম নিরপরাধে প্রভূত পরাক্রম রাক্ষ্মপণ ও থরকে বিনাশ পূর্বক নির্ভন্ন হইয়া স্থথে বাস করিভেছেন, আমার ভাগনী স্থপনধা তাঁহার কোন অপকার করে নাই, তথাপি তুরাজ্মারামতাহার নাসিকাও কর্ণচ্ছেদ করিয়া নির্ভরে

ভিনিন্যা মে শূর্পণখ্যা নির্দেষায়াশ্চ নাসিকাম্। কর্ণে চিচ্ছেদ দুঝাত্মা বনে ভিন্ততি নির্ভন্নঃ।। ১১। অভস্তমা সহায়েন গড়া ভৎপ্রাণবল্লভাম্। আনমিব্যামি বিপিনে রহিতে রাঘবেণ ভাম্॥ ১২ ত্বং ভু মায়াম্গো ভূড়া ছাশ্রমাদপনেষ্যাম। বলমং চ লক্ষণং চৈব তদা সীতাং হরাম্যহম্॥ ১৩ ত্বং ভু তাবৎ সহায়ং মে কড়া ছাগ্যমি পূর্ববৎ। ইত্যেবং ভাষমাণস্তং রাবণং বীক্ষ্য বিশ্মিতঃ॥ ১৪ কেনেদমুপদিউত্তে মূল্ঘাতকরং বচঃ! স এব শত্রবধ্যক্ষ যন্ত্রমাশং প্রতীক্ষতে॥ ১৫॥ রামস্য পৌরুষং শৃত্য ভিত্রমদ্যাপি রাবণ!। বালোহিপি মাং কৌশিক্ষ্য যজ্জসংরক্ষণায় সঃ॥১৬ আগভন্তিযুবিকেন পাত্মামাশ সাগরে। যোজনানাং শতং রামন্তদাদিভয়বিহ্বলঃ॥ ১৭:॥

অবস্থান করিভেছে। ৭। ৮।৯।১০।১১। অত এব তুমি আমার দহার হইলে আমি গমন করিরা, যে সমর রাম বনে না থাকিবে দেই সমর তাহার প্রাণবল্লভা সীতাকে হরণ করিয়া আনরন করিব। তুমি মারামর মৃগ হইরা রাম ও লক্ষণকৈ আশ্রেম হইতে দূরে লইরা যাইলে আমি সীতাকে হরণ করিব। তুমি আমার সাহায্য করিয়া পূর্ব্ববৎ অবস্থান করিবে"। মারীচ রাবণের এবত্থাকার বাক্য প্রবণ করিয়া কছিল—"দীতা বরবর্ণিনী তাঁছাকে হরণ করা উচিত—এই সর্বনাশকর বাক্য কে তোমাকে উপদেশ দিয়াছে? যে ব্যক্তি এইরূপে তোমার বিনাশ কামনা করিতেছে সে ভোমার শক্ত, স্ভরাং বধার্হ। ১২।১৩।১৪।১৫। ছেরাবণ! আমার চিত্ত অদ্যাপি রামের পুক্ষকার স্মরণ করিয়া অতিমাত্র বিকল হইতেছে। রাম বাল্যাবস্থার বিশ্বামিত্রের যক্ত রকার নিমিত্ত ভূপোব্রে

শ্বা শৃত্বা তলৈবাহং রামং পশ্চামি সর্বতঃ ॥ ১৮
দণ্ডকেইপি পুনরপ্যহং বনে
পুর্ববৈরমনুচিন্তরন্ ক্লনি ।
তীক্ষণুকভ্গরূপমেকদা মাদৃশৈবিছভিরারতোইভারাম্ ॥ ১৯ ॥
রাঘবং জনকজাসমন্বিতং
লক্ষণেন সহিতং ত্বরান্বিতঃ ।
আগতোইমথ হন্তমুক্ততো মাং
বিলোক্য শর্মেকমক্ষিপ্ ॥ ২০ ॥
তেন বিশ্ব ক্লদ্যোইইমুক্তমন্
রাক্ষদেক্ত ! পতিতোইশ্মি দাগরে ।
তথ্পভ্তাইমিদং সমাপ্রিতঃ
স্থানমূর্জিতিমিদং ভ্রাদ্দিতঃ ॥ ২১ ॥

গামন করিয়া এক বাণে আমাকে শত্ষোজন দূর সাগারে পাতিত করিয়াছেন, আমি ভদবধি ভয় বিহ্বল হইয়া রামের সেই কার্য্য অনবরত স্মরণ করতঃ চতূর্দ্দিক রাম-ময় দেখিতেছি। ।১৬। ১৭। ১৮। একদা আমি পূর্ববির স্মরণ করিয়া পূর্ণবার মাদৃশ রাক্ষ্য গণে বেফিড হইয়া তীক্ষ্যক্ষ মৃগ রূপধার মাদৃশ রাক্ষ্য গণে বেফিড হইয়া তীক্ষ্যক্ষ মৃগ রূপধার পূর্বক দশুকারণ্যে গমন করিয়াছিলাম। আমি ত্রাদ্বিত হইয়া গীতা ও লক্ষ্মণের সহিত রামকে বিনাশ করিতে উদ্যত হইলে, রাম আমার প্রতি একটা বাণ নিক্ষেপ করিলেন। ছে রাক্ষ্যেক্স আমার প্রতি একটা বাণ নিক্ষেপ করিলেন। ছে রাক্ষ্যেক্স আমি সেই বাণে বিক্ষান্য হইয়া শোণিত বমন করিতে করিতে সাগরে পতিত হইলাম। সেই অবধি আমি ভয়পীড়িভান্তঃকরণে রামের অনাগমন ছেতু নির্ভিয়ে এই স্থান আশ্রের করিয়া কাল যাপন করিতেছি। ভোগাশধন রাজ্য, রত্ব, রমণী, রথ, প্রভৃতির শক্ষ শ্রণ করিলে ক্রিয়ে ভীত হইয়া রামকেই চিন্তা করি, বে ছেতু এই সকল

রামমেৰ সততং বিভাবয়ে ভীতভীত ইব ভোগরাশিতঃ। রাজরভুরমণীরথাদিকং শ্রোত্তয়োর্যদি গতং ভয়ং ভবেৎ॥ ২২॥। রাম আগত ইহেতি শঙ্করা বাহ্যকার্য্যমপি সর্ব্যমতাজ্ঞম । নিজয়া পরিরতো যদা স্বপে রামযেব মনসানুচিন্তরন্।। ২৩॥ স্বপ্লদৃষ্টিগতরাঘবং তদা বোধিতো বিগতনিদ্র আস্থিতঃ। তদ্বানপি বিমুচ্য চাগ্ৰহং রাঘবং প্রতি গৃহং প্রয়াহি ভো!॥ ২৪॥ রক্ষ রাক্ষসকুলং চিরাগতং তৎস্তে সকলমেব নশ্বত। তব হিতং বদতো মম ভাষিতং পরিগৃহাণ পরাত্মনি রাঘবে ॥ ২৫ ॥

শব্দ 'রীম,' শব্দের ন্যায় রকার যুক্ত। 'রাম এই স্থানে আসিয়াছেন' এই শক্ষাতে আমি বাছ্য কার্য্য সকল পরিত্যাগ করিয়াছি। আমি নিজিত হইলেও রাম আমার নয়ন পথের পথিক হন অমনি বীতনিত্র হইরা উপবেশন করি। অতএব আপনিও রাম চল্রের প্রতি ক্রোধ ত্যাগ করিয়া গৃহে প্রতিশমন করন।১৯।২০।২১।২২।২৩।২৪। আবহমণন রাক্ষ্য কুল-রক্ষা করুন রামের প্রতি আক্রোশ করিবেন না তাহা ছইলে সকলই বিনক্ট হইবে। আমার ছিত বাক্য গ্রহণ করুন। রামচক্র পর্মাত্মা তাহাতে বিরোধ বুদ্ধি করিবেন না, প্রত্যুত ভক্তভাবে তাঁহাকে ভক্তন। করুন, তিনি পরম কাহণিক।

ত্যজ বিরোধমতিং ভরু ভক্তিতঃ
পরমকারুণিকো রঘুনন্দনঃ।
অহমশেষমিদং মুনিবাক্যতো
শূণ্বমাদিযুগে পরমেশ্বরঃ॥ ২৬॥
বিশ্বমাদিযুগে পরমেশ্বরঃ।
কিং তবেপিতমহং করবাণি তং।
বিশ্বমোকিয়বিন্দলোচন!
ছং প্রয়াহি ভুবি মান্তবং বপুঃ।
দশরথাত্মজভাবমঞ্জদা
ক্ষহি রিপুং দশকক্ষরং হরে!॥ ২৭॥

অতো ন মান্তবো রামঃ সাক্ষান্নারায়ণোহব্যয়ঃ।
মারামান্তববেশেণ বনং যাতোহতিনির্ভন্তঃ॥ ২৮॥
ভূতারহরণার্থার গচ্ছ তাত ! গৃহং স্থাম।
ফ্রুণারহরনার্থার গচ্ছ তাত ভাবত ॥ ২৯॥
পরমাত্মা যদা রামঃ প্রার্থিতো ব্রহ্মণা কিল।
মাং হন্তং মানুষো ভূষা যত্মাদিহ সমাগতঃ॥৩০

আমি মৃহামনি নারদ মুখে শুনিয়াছি যে, সত্য যুগে ব্রহ্মা
বিষ্ণুর নিকট প্রার্থনা করিলে ভগবান্ ছরি কছিলেন
"তোমার অভীষ্ট কি বল ? আমি ডাহা সম্পাদন করিব"
ব্রহ্মা কছিলেন "হে পুগুরীকাক্ষ! আপনি মনুষ্য শরীর
ধারণ পূর্বক দশরথের পুত্ররূপে ধরণীতে অবতীর্ণ হইয়া শীজ্র
আমাদিগের শক্রু রাবণকে বিনাশ করুন। ২৫। ২৬। ২৭।"
অভএব রাম মনুষ্য নছেন সাক্ষাৎ অবিনাশী নারায়ণ—ভূভার
হরণ জন্য মারাদ্বারা মনুষ্য দেহ পরিপ্রান্থ করিয়া নির্ভর
চিত্তে বনে আগ্রন করিয়াছেন। হে তাত! রামের সহিত
বিরোধ পরিত্যাগ করিয়া গৃছে গমন কর"।

त्रायन मात्रीराज याका अवन कतिया कहिल " ताम यहि

করিষাভ্যুচিরাদের সভ্যসন্ধণপ ঈশরঃ।
ভাতোহহং যত্নতঃ সীভামানেষ্যাম্যের রাঘ্রাহাছ।।৩১
বধে প্রাপ্তে রণে বীর ! প্রাপ্যামি পরমং পদম্।
যদ্বা রামং রণে হল্পা সীভাং প্রাপ্যামি নির্ভন্তঃ॥৩২
ভাতোত্তির্চ মহাভাগ ! বিচিত্রম্গরূপপৃক্।
রামং সলক্ষ্যাং শীঘু মাশ্রমাদভিদ্রতঃ ॥ ৩৩॥
ভারেষ্য গচ্ছ তং শীঘুং স্থাং ভিন্ত যথা পুরা।
ভাতঃ পরং চেদাৎকিঞ্জিন্তাবসে মদ্বিভীষণম্॥ ৩৪॥
হনিষ্যামাসিনাহনেন ত্বামত্রৈর ন সংশরঃ।
মারীচন্তভ্বচঃ শ্রাভা স্থাত্মন্যানুচন্তরহ ॥ ৩৫॥
যদি মাং রাঘ্যো হ্ন্যাভ্দা মুক্তো ভ্রার্থাছ।
মাং হন্যাদ্যদি চেদ্রুইন্তদা মে নির্য্যো ধ্রুবম্।।৩৬

পরমাত্মা ঈশ্বর হন ও আমাকে বিনাশ করিতে ব্রহ্মান কর্ত্ব প্রার্থিত ছইয়া মনুষ্য রূপে সমাগত হইয়া থাকেন, তবে অচিরেই আপনার সঙ্কপা সত্য করিবেন। অতএব আমি স্যত্বে সীভাকে ছরণ করিব; পরে রাম সংগ্রামে যদি আমার মৃত্যু ছয়, তবে শ্রেষ্ঠ পদ প্রাপ্ত ছইব—অর্থাৎ মুক্ত হইব। অথবা রামকে রণে নিছত করিয়া নির্ভয়ে জানকী লাভ করিব। ।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।অতএব হে মহাভাগা। উঠ, বিচিত্র মৃগরূপ ধারণ করিয়া রাম ও লক্ষ্মণকে আশ্রম ছইলের লইয়া যাও; অনস্তর পূর্ব্ব কালের ন্যায় স্থপে অবস্থান কর। ইহার পর যদি আবার ভয়েয়াৎপাদক কোন কথা বল তবে এই অসি দ্বারা এই স্থানেই নিঃসন্দেহ তোমাকে বিনাশ করিব"।

মারীচ রাবণের বাক্য শ্রাবণ করিয়া মনে মনে চিন্তা করিল—"যদি রামচন্দ্র আমাকে বিনাশ করেন তবে এই ভবার্ণিব ছইভে মুক্ত ছইব। আর যদি রাবণ আমাকে বিনাশ করে ভাষা ছইলে নিশ্চয় আমার নরক হইবে" ৩৩। ৩৪।

ইতি নিশ্চিত্য মরণং রামাদুখার বেগতঃ।

অববীদ্রাবণং রাজন্! করোম্যাক্তান্তব প্রভা । । ৩৭

ইত্যুক্তবা রথমাস্থার গড়ে রামাশ্রমং প্রতি।

শুদ্ধজাস্বদপ্রখ্যো মৃগোহভূদ্রে প্রবিন্দ্রকঃ॥ ৩৮॥
রত্ত্বা মণিখুরো নীলরজুবিলোচনঃ।

বিদ্যুৎপ্রভো বিমুগ্ধান্যো বিচচার বনান্তরে॥ ৩৯॥
রামাশ্রমপদস্থান্তে সীতাদ্ফিপথে চরন্।। ৪০॥

ক্ষণং চ ধাবত্যবতিষ্ঠতে ক্ষণং
সমীপমাগত্য পুনর্ভরারত:

এবং স মায়ামৃগবেশরপধৃক্।

চচার সীতাং পরিমোহয়ন্ খল: ॥ ৪১॥

ইতি এমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অরণ্যকাণ্ডে বর্ষ্চোহধ্যায়ঃ।

এ৫। ৩৬। এই রূপে রাম হইতে মৃত্যুই উৎকৃষ্ট স্থির করিয়া সম্বর গালোখান পূর্বক কছিল "হে রাজন্! আমি আপনার আজ্ঞা সম্পাদন করিব" ইছা বলিয়া রূপে আরোছণ পূর্বক রামাশ্রমে গমন করিল। পরে মারীচ এক আশ্চর্য্য মৃগরূপ ধারণ করিল। এ মৃগের বর্ণ স্থবর্ণ সদৃশ, গাত্ত রোপ্য ময়—বিন্দুরাজিতে বিরাজিত. শৃঙ্গ রতুময়, খুর মণিময়, নেত্র নীল রতুরচিত, তাছার প্রতা বিভাগে সদৃশ, বদন অভীব স্কলর। রামের আশ্রমের নিকট সীতার দৃষ্টিপথে মৃগা রূপ ধারী মারীচ কখন ধাবিত হয়, কখন অবস্থান করে; কখন বা নিকটে আসিয়া ভীত হয়, এই রূপে সীতাকে বিমোহিত করিতে লাগিলা ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
যতে হিধ্যায়ঃ।

সপ্তমোইধ্যায়ঃ।

অথ রামোহপি তৎদর্কং জ্ঞাত্বা রাবণ চেন্টিতম্। উবাচ দীতামেকান্তে শৃণু জ্ঞানকি! মে বচঃ। রাবণো ভিক্কুরপেণ আগমিষ্যতি তেইন্তিকম্। তত্ত ছার্যাং ত্বদাকারাং স্থাপরিত্বোটজে বিশা। ২॥ অ্যাবদৃশুরপেণ বর্ষস্তির্চ মমাজ্ঞরা। রাবণস্থা বধান্তে মাং পূর্কবিৎপ্রাপ্যানে শুভে!॥ ৩।

শ্রুত রামোদিতং বাক্যং সাহপি তত্ত তথাইকরোৎ
মায়াদীতাং বহি: স্থাপ্য স্বরমন্তর্গধেইনলে॥ ৪
মায়াদীতা তদাপশুন্মৃগং মায়াবিনির্মিতম্।
হদন্তী রামমভ্যেত্য প্রোবাচ বিনয়াস্থিতা ॥ ৫ ॥

অনন্তর রামত সেই দকল রাবণের চেষ্টা জানিতে পারিয়া
সীতাকে নির্জ্জনে কহিলেন, হে জানকি! প্রবণ কর—রাবণ
ভিক্তক রূপে ভোমার নিকট আগমন করিবে। তুমি নিজ আকার
সদৃশীচ্ছার কূটীর মধ্যে রক্ষা করিয়া অগ্নিপ্রবেশ পূর্বক আমার
আজ্ঞান্তসারে এক বর্য অদৃশ্য ছইয়া বাস কর। আমাকর্তৃক
রাবণ নিহত হইলে, পুনর্বার তুমি পূর্বে শরীর প্রাপ্ত ছইবে।
। ১। ২। ও। জানকী রাম বাকা জ্ঞাবণ করিয়া তাহাই করিলেন,
মারা সীতা বাহিরে রক্ষা করিয়া আপনি অনলে অন্তর্জ্জিত।
হইলেন, সেই সময় মারা সীতা একটী মায়া ক্রিত মৃগ দেখিয়া
হাসিতে ছাসিতে রামের নিকট আসিয়া সবিনয়ে কহিলেন।
ছে রাম! দেখুন কেমন আক্রম্যে রত্নবিভূষিত কনকময় মৃগ
অকুতোভয়ে বিচরণ করিভেছে। উহার গাত্রে চিত্র বিচিত্র বিন্দু
সকল বিরাজ করিতেছে। জাপনি প্রে মৃগ্টী বন্ধ করিয়া আমাকে

পশ্য রামমৃগং চিত্রস্থাকং রত্নভূষিতম্।
বিচিত্রবিন্দৃতির্যু ক্রপ্পরস্তমকুতোভয়ম্। ৬॥
বন্ধা দেহি মম ক্রীড়ামৃগো ভবতু সুন্দরঃ।
তথেতি ধল্পরাদায় গচ্ছন্ লক্ষণমত্রবীৎ॥ १॥
রক্ষ ত্বমতিযক্ষেন সীতাং মৎপ্রাণবল্লভাম্।
মায়িনঃ সন্তি বিপিনে রাক্ষসা ঘোরদর্শনাঃ॥ ৮॥
অভ্যেহত্রাবহিতঃ সাধীং রক্ষ সীতামনিন্দিতাম্।
লক্ষণো রামমাহেদন্দেবায়ং মৃগরপপৃক্।
মায়ীচোহত্র ন সন্দেহ এবংভূতো মৃগঃ কুতঃ॥ ৯
ক্রিরাম উবাচ।

যদি মারীচ প্রবায়ং তদা হিন্ম ন সংশয়ঃ। মুগশ্চেদানয়িষ্যামি সীতাবিশ্রামহেডবেঁ।। ১০।।

দিন, ঐ ' স্থন্দর মৃণের সহিত আমি ক্রীড়া করিয়। রামচন্দ্র তাছাই স্থীকার করিয়া ধতুর্বাণ গ্রহণ পূর্বক গমন কালে লক্ষণকে কহিলেন, তুমি যত্ন সহকারে আমার প্রাণপ্রিয়া সীতাকে রক্ষাকর, এই কাননে ঘোর দর্শন মায়াবি রাক্ষস সকল আছে, গ্রজনা অস্থানে সাবধান হইয়া সাধবী অনিন্দিতা সীতাকে রক্ষাকর। লক্ষ্মণ কহিলেন, দেব! যাহা দেখিতেছেন ইহা ময়নহে, মৃগরূপ ধারী মারীচ ইছাতে সন্দেহ নাই; রত্নবিভূষিত কনকময় মৃণের সম্ভাবনা কোথা? । ৪। ৫। ৬। ৭।৮। ৯। ব্রীরামচন্দ্র কহিলেন—এই মৃগ যদি মারীচ হয়, তবে নি:সংশই ইহাকে বিনাশ করিব, আর যদি প্রকৃত মৃগ হয়, তবে সীতার

গমিষ্যামি মৃগং বদ্ধা হ্যানয়িষ্যানি সত্ত্বঃ।

ত্বং প্রযন্ত্রেন সন্তিষ্ঠ সীতাসংরক্ষণোস্ততঃ।

ইত্যুক্ত্বা প্রযথে রামো মারামৃগমন্থক্ততঃ।

মারা যদাশ্রা লোকমোহিনী জগদাক্তিঃ॥ ১২॥

নির্বিকারশ্চিদাত্মাপি পূর্ণোহপি মৃগমন্থগাৎ।

ভক্তান্থকম্পী ভগবানিতি সত্তং বচো হরিঃ॥ ১৩

কর্ত্ব্রু সীতাপ্রিয়ার্থার জানম্প মুগং যথে।।

অন্যথা পূর্ণকামস্ত রাম্দ্য বিদিতাত্মনঃ॥ ১৪॥

মৃগেণ বা স্ত্রিয়া বাপি কিং কার্যাং পরমাত্মনঃ।

কদাচিদ্দৃশ্যতেহভ্যাশে ক্ষণং ধাবতি লীয়তে॥১৫॥

দৃশ্যতে চ ততো দূরাদেবং রামমপাহ্রেৎ।

ভতো রামোহপি বিজ্ঞার রাক্ষদোহয়মিতি ক্ষুটম্

বিব্যাধ শর্মাদায় রাক্ষ্যং মৃগন্ধিশিম্।
পপাত রুধিরাক্তাদ্যো মারীচঃ পূর্বেনপ্রৃক্ ॥ ১৭ ॥
হা হতোহিন্দ্র মহাবাহো! ত্রাহি লক্ষ্ণণ! মাং জ্বতম্
ইত্যুক্ত্বা রামবদ্বাচা পপাত রুধিরাশনঃ ॥ ১৮ ॥
यয়ামাজ্ঞোহিপ্ মরণে স্মৃত্বা তৎসাম্যুমাপ্লুয়াং!
কিমৃতাগ্রে হরিং পশ্যন্ তেনের নিহতোহসুরঃ ॥১৯
তদ্দেহাদুপিতং তেজঃ সর্বলোক্ষ্য পশ্যতঃ।
রামমেবাবিশদ্বেরা বিস্ময়ং পর্মং যয়ৢঃ ॥ ২০ ॥
কিং কর্ম্ম রুত্বা কিং প্রাপ্তঃ পাতকী মুনিহিংসকঃ?।
অথবা রাঘ্যক্তায়ং মহিমা নাত্র সংশয়ঃ ॥ ২১ ॥
রামবাণেন সংবিদ্ধঃ পূর্বং রাম্যুম্মরন্।
ভয়াৎ সর্বং পরিত্যক্ষ্য গৃহবিস্তাদিকং চ য় ॥ ২২॥

ক্রীড়ার নিমিত্ত আনরন করিব। আমি সত্তর গমন পূর্ব্বক মৃগকে বন্ধ করিয়া আনরন করিব, তুমি সমত্রে সীতারক্ষণে বন্ধপরিকর হুইয়া অবস্থান কর। রামচন্দ্র ইহা বলিয়া মৃগের পশ্চাৎ পশ্চাৎ ধাবমান হুইলেন। লোক বিমোহিনী জগৎ কপে পরিণতা মায়া যাহার আগ্রেয়ে অবস্থান করিতেছেন, সেই নির্ব্বিকার, জ্ঞানময়, পূর্ণ এক্ষ হরিণের পশ্চাৎ গমন করিলেন, ইহাতে "ভগবান্ হরি যে ভক্তবৎসল" এই কথা সপ্রমাণ হুই-তেছে, যেহেতু "ইহা মৃগ নহে মারীচ" জানিয়াও যেন দীতার প্রিয়সাধন জনাই মৃগের পশ্চাৎ ধাবিত হুইলেন। তাহা না হুইলে পূর্ণমনোরপ আক্তন্ত্র বিশারদ পরমান্ধা রামচন্দ্রের মৃগে বা জ্রীতে কি প্রয়োজন? অনন্তর মায়ামৃগ কথন রামের নিকটে বিচরণ করে, কথন ধাবিত হয়, কথন দৃষ্টিপথের অতীত হয়, কখন বা দূর হুইতে লক্ষিত হয়, কথন দৃষ্টিপথের রাক্ষপ' জ্বানিয়া শর্প্রহণ করিল। অনন্তর রামও "এ নিশ্চয় রাক্ষপ' জ্বানিয়া শর্প্রহণ পূর্ব্বিক মৃগরগী রাক্ষপকে বিদ্ধা

করিলেন। তথন মারীচ মৃগরপ পরিত্যাগ পূর্কক পূর্করেপ ধারণ করিয়া পতিত হইল। ২০।১১।১২।১৩।১৪।১৫ ১৬।১৭। তাহার মুখ হইতে শোণিত নির্গত হইতে লাগিল; অনন্তর মারীচ জীরামের ন্যায় উচ্চিঃম্বরে "হা হতোম্মি! হে মহাবাহো লক্ষ্মণ! আমাকে শীত্র রক্ষা কর" এই কথা বলিয়া মৃত ইল।১৮। অপণ্ডিত ব্যক্তিও মরণ সময় রামনাম ম্মরণ করিলে রামের সাম্যা প্রাপ্ত হয়। মারীচ রামচক্রকে দেখিতে দেখিতে তাহারে বাণে নিহত হইয়া যে সাজ্য্য প্রাপ্ত হইয়াছে তাহাতে সন্দেহ নাই। অনন্তর মারীচের দেহ হইতে একটা তেজঃ উপ্তিত হইয়া রাম শরীরে প্রবেশ করিল। দেবগণ এইরপ ব্যাপার দর্শণে অতিশয় বিস্যিত হইলেন, মুনিহিংসক পাপী কি কার্যা করিয়া কি পদ প্রাপ্ত হইল, অথবা রামচন্তের মহিমাই এইরপ ইহাতে সংশয় নাই। মারীচ পূর্কের রামবাণে বিদ্ধা হইয়া ভয়ে গৃহ বিতাদি সমস্ত পরিত্যাগ পূর্কক সর্কার স্কারের রামকে ধ্যান করিতে করিতে বিধুত পাপা হইয়াছিল,

ছাদি রামং দদা ধ্যাত্বা নিধু তাশেষকল্মবঃ!

অত্তে রামেণ নিহতঃ পশ্যন্ রামমবাপ সঃ ॥২৩॥

দিলো বা রাক্ষনো বাপি পাপী বা ধার্মিকোইপি বা

ত্যজন্ কলেবরং রামং স্মৃত্বা যাতি পরং পদম্॥২৮
ইতি তেইন্যোন্যমাভাষ্য ততো দেবা দিবং ষ্যুঃ
রামস্তচিন্তরামাদ দ্রিয়মাণোইসুরাধমঃ॥ ২৫॥

হা লক্ষণেতি মন্বাক্যমনুকুর্বশ্মমার কিম্ ?।

শুত্বা মন্বাক্যসদৃশং বাক্যং সীতাইপি কিং ভবেৎ ?
ইতি চিন্তাপরীভাত্বা রামো দ্রান্যবর্ত্ত।

দীতা তন্তাষ্যতং শুক্রা মারীচন্ত ত্রাত্বনঃ॥ ২৭॥

ন্মভরাং অন্তিমকালে রাম কর্ক নিছত ছইরা রামরূপ দেখিতে দেখিতে রামের সাম্য প্রাপ্ত ছইরাছে। ব্রাহ্মণ হউক, রাক্ষস হউক, পাপী ছউক, বা ধার্মিক হউক, রাম নাম ম্মরণ পূর্মক শরীর ভাগা করিলে অবশাই মোক্ষ প্রাপ্ত হয়। ১৯। ২৭। ২১।২২।২৩।২৪।

দেবগণ এইরপ পরম্পর কথোপকখন করিয়া শুর্গ গামন করিলেন। রাক্ষনাধন্ধ মারীচ মৃত্যুকালে "হা লক্ষ্মণ" এই প্রকার আমার বাকোর অনুকরণ কেন করিল, জানকী আমার শ্বর সদৃশ এইরপ শ্বককণ শ্বর প্রবণ করিয়া কতেই উবিগ্রা ছইবেন, রাম এই প্রকার চিস্তা করিতে করিতে প্রতিনির্ভ ছইলেন। এদিকে সীতা হুরাশ্রা মারীচের সেই বাক্য প্রবণ করিয়া ভীতা ও হুঃখিতা ছইয়া শ্রমণকে কহিলেন—ছে লক্ষ্মণ! শীস্ত্র গামন কর? তোমার ভ্রাতা রাক্ষ্ম কর্ত্বক পীড়িত ছইয়াছেন, তাঁহার "হা লক্ষ্মণ" এই বাক্য প্রবণ করিতেছ না? লক্ষ্মণ কহিলেন, দেবি! উহা কথনই রামের বাক্য নছে, কোন রাক্ষ্ম ত্রিয়মাণ ছইয়া ঐ বাক্য প্রযোগ করিয়াছে। যে রাম ক্র্ম ছইলে ক্ষণকাল মধ্যে ত্রেলোক্য বিনাশ করিতে সক্ষম, সেই দেব পুল্কিত রামচন্দ্র দীন বাক্য কেন বলিবেন? সীতা লক্ষ্মণের

ভীতাতিদু:খনংবিয়া লক্ষনং ত্বিদমন্ত্রীৎ।
গচ্ছ লক্ষন ! বেগেন ভাতা তেইমুরপীড়িতঃ॥ ২৮
হা লক্ষনেতি বচনং জাতুস্তে ন গুণোবি কিম্ ।।
তামাহ লক্ষনো দেবি ! রামবাক্যং ন ভদ্ভবেৎ॥২৯
যঃ কশ্চিদ্রাক্ষনো দেবি ! শ্রিয়মাণোহন্তরীছচঃ।
রামস্তৈলোক্যমপি যঃ কুদ্ধো নাশয়তি ক্ষণাৎ॥৩০
ল কথং দীনবচনং ভাবতেইমরপুজিতঃ।
ক্রেলা লক্ষনমালোক্য লীভা বাস্পবিলোচনা॥৩২
প্রাহ্ লক্ষন। দুর্দ্ধে ভাতুর্যুদনমিচ্ছলি।
প্রেষিতো ভরতেনৈব রামনাশাভিকাজিক্ষণা॥৩২॥
মায়েতুমাগতোহদি তাং রামনাশ উপস্থিতে।
ন প্রাপ্যানে তাং মামন্ত পশ্য প্রাণাংস্কাম্যাইম্।৩৩
ন জানাভীদৃশং রামো তাং ভার্য্যাহরণোদ্যতম্।
রামাদন্যং নস্পৃশামি ত্বাং বা ভরতমেব বা ৩৪॥

বাক্য প্রবণ করিয়া অত্যন্ত কুছ ছইলেন, তাঁহার নয়ন মুগল বাষ্প জলে সমাকীর্ণ ছইল—কহিলেন, রে তুর্ব্ব ছে লক্ষণ ! তুমি জাতার বিপৎ কামনা করিতেছ, ভরত রাজ্য লোভে রামের বিনাশ কামনা করিয়া রামকে বনে পাচাইয়াছে, তুম কি জীরামের বিনাশানন্তর আমাকে গ্রহণ করিবার জন্য বনে আসিয়াছ ? কিন্তু ইহা নিক্ষয় জানিবে যে, রাম বিপন্ন হইলে কখনই তুমি আমাকে গ্রহণ করিতে পারিবে না—এই দেখ, এখনি আমি প্রাণ পরিত্যাগ করি ৷২৫৷২৬৷২৭৷২৮৷২৯৷০০৷০১৷
৷০২৷০০ ৷ তুমি যে তাঁহার ভার্যাপহারী য়াম. ইহা অবগত লছেন ৷ তুমি ইহাও জানিবে যে আমি রামি ভিন্ন ভোমাকে বা ভরতকে স্পর্শন্ত করিব না ; ইছা কছিয়া স্বীয় বাহুয়য় ছারা বক্ষতাত্ব পূর্মক রোদন করিতে লাগিলেন ৷ লক্ষন ইহা

কর্জা বধামানা সা স্বাছ্ত্যাং রুরোদ হ।
তচ্চ্ ত্বা লক্ষণং কর্ণে। পিধারাতীব দুঃখিতঃ ॥ ৩৫
মামেবং ভাষসে চণ্ডি। ধিক্ ত্বাং নাশমুতেষাসি।
ইত্যুক্ত্বা বনদেবীভাঃ সমর্প্য জনকাত্মজাম্॥ ৩৬।।
ঘযে। দুঃখাতিসংবিয়ো রামমেব শনৈঃ শনৈঃ ।
ততােহন্তরং সমালােক্য রাবণাে ভিক্সুবেশধৃক্॥ ৩৭
সীতা সমীপমগমৎ ক্ষুরুদণ্ডকমণ্ডলা় ।
সীতা তমবলােকাান্ড নত্বা সম্পূজ্য ভক্তিতঃ ॥ ৩৮॥
কন্দমূলকলাদীনি দত্ত্বা স্বাগতেমত্রবীৎ।
মুনে । ভূংক্ষ্ কলাদীনি বিশ্রমন্থ যথা স্থেম্॥ ৩৯॥
ইদানীমেব ভর্তা মে হাগমিষ্যতি তে প্রিরুম্।
করিষ্যতি বিশেষেণ তির্দ্ত ত্বং যদি রােচতে॥ ৪০॥

শ্রবণ করিয়া হস্ত হারা কর্ণদ্বর আচ্ছাদন পূর্বক হুঃখিত চিত্তে ক্রহিলেন—হে কোপনে! তুমি আমাকে এইরপ হর্বাকা বলিভেছ তোমাকে ধিক, বোধকরি তোমার ঈদৃশ বৃদ্ধিভ্রংশ কোন অনিষ্ট পাতের তেতু হইবে। এই কথা বলিয়া বম দেবতাগণের নিকট সীতাকে সমর্পণ করিয়া অতিশয় হুঃখিতান্তঃকরণে অলে অলে রাম সন্নিধানে গমন করিলেন। ইত্তাবসরে রাবণ দশুকমণ্ডলু ধারণ পূর্বক ভিক্ত্বেশে সীতার নিকট উপস্থিত হুইলেন। সীতা ভিক্ত্ককে সমাগত দেখিয়া ভল্তিভাবে প্রণাম ও পূজা করিয়া কন্দম্ল ফলাদি প্রদাননন্তর স্থাগত জিল্ডানা করিলেন, আর কহিলেন—হে মুনে! আপনি এই ফলাদি ভোজন করিলেন ও মদি ইচ্ছা হয় তবে এই স্থানে স্থাবিজ্ঞাম করন, শীত্তই আমার স্থামী আগমন পূর্বক আপনার বিশেষ প্রিয় সম্পাদন করিবেন একণে মদাপি আপনার বিশেষ প্রিয় সম্পাদন করিবেন একণে মদাপি আপনার অভিকৃতি হয় তবে এই ছানে অবস্থান করন। ৩৪।

ভিক্ষুরুষাচ।

কা ত্বং কমলপত্তাক্ষি ! কো বা ভৰ্ত্তা ভবানঘে !। কিমৰ্থমত্ত্ৰ তে বাশো বনে রাক্ষসসেবিতে ? ॥ ৪১॥ ক্ৰুহি.ভড়ে ততঃ সৰ্ববং স্বব্নভান্তং নিবেদয়।

পীতোবার্চ।

অবোধ্যাধিপতিঃ শ্রীমান্ রাজা দশরথো মহান্।
তম্ম জ্যেষ্ঠা সুতো রামঃ সর্বলক্ষণলক্ষিতঃ ॥ ৪২ ॥
তম্মাহং ধর্মতঃ পত্নী সীতা জনকমন্দিনী।
তম্ম জাতা কনীয়াংশ্চ লক্ষ্মণো ল্রান্ত্বৎসলঃ ॥ ৪২ ॥
পিতুরাজ্ঞাং পুরস্কৃত্য দশুকে বস্তুমাগতঃ।
চতুর্দশসমাস্তাং তু জ্ঞাতুমিচ্ছামি মে বদ ॥ ৪৪ ॥

ভিক্ষুরুবাচ।

পৌলস্ত্যতনয়োহহং তু রাবণো রাক্ষনাধিপঃ। ত্বৎকামপরিতপ্তোহহং ত্বাং নেতৃং পুরমাগতঃ॥৪৫

কমল প্রাক্ষি!তুমি কে? তোমার ভর্তাই বা কে? ছে আন্যে! কি জন্য ভোমরা এই রাক্ষণ সঙ্কুল কাননে বাদ করিতেছ। ছে ভক্রে! এই সকল আত্ম রক্তান্ত সবিস্তরে বর্ণন কর। সীতা কছিলেন। আমি অযোধ্যাধিপতি জীমান্ মহারাজা দলরখের জ্বোন্ত পুত্র সর্বন্ত গাকর রামচন্দ্রের সঙ্কুলিনি—জনক রাজ হৃহিতা—নাম সীতা, আমার সন্থিত রামচন্দ্রে ও তাঁহার কনিষ্ঠ লাতা লক্ষণ পিতার আজ্ঞায় দশুকারণ্যে চতুর্দেশ বৎসর বাস করিতে আসিয়াছেন। আপনি কে? জ্বানিতে আমার অতিমাত্র ইচ্ছা হইয়াছে, অভএব আপনার পরিচয় প্রদান কক্ষন। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪।

ভিক্ক কহিলেন। আমি পৌলন্ত্য তনম রাক্সেশ্বর রাবণ—ভোমার সৌন্ধেয় বিমুগ্ধ হইয়া তোমাকে স্বনগরে মুনিবেশেণ রামেণ কিং করিষ্যাদি মাং ভজ।
ভুংক্ষ্ ভোগাম্ময়া সার্কাং তাজ ফুংখং বনোদ্ভবম্ ৪৬
ভুজা তত্বচনং সীতা ভীতা কিঞ্চিদুবাচ তম্।
যদ্যেবং ভাষদে মাং ডং নাশমেষ্যাদি রাঘ্বাং ॥৪৭
আগমিষ্যতি রামোহিশি ক্ষণং তির্ন্ত সহাস্তুজঃ।
মাং কো ধর্ষয়িতুং শক্তো হরেভার্ষ্যাং শশো ষধা।
রামবাণৈবিভিন্নভুং পতিষ্যাদি মহীতলে।
ইতি সীতাবচঃ গ্রুত্মা রাবণঃ ক্রোধমুছি তঃ ॥৪৯॥
স্বর্পং দর্শরামাদ মহাপর্বতদন্নিভম্ ।
দশাস্থং বিংশতিভুজং কালমেঘদমদ্যুতি ॥ ৫০॥
তদ্ষ্যা বনদেব্যাদ্চ ভুতানি চ বিতত্তমেঃ।
ততো বিদার্য্যধরণীং নথৈক্ষ্কু ত্যু বাছভিঃ ॥ ৫১॥

তেরি রিয়া রথে কিন্তা যথ কিন্তা বিহারসা।
হা রাম ! হা লক্ষণেতি রুদন্তী জনকাপ্সজা ॥ ৫২।
ভরোদিগ্রমনা দীনা পশ্যন্তী ভুবমেব সা।
ভুদ্বা তৎক্রন্দিতং দীনং সীতারাঃ পক্ষিসভ্রঃ ॥৫৬
কটায়ুরুপ্রিতঃ শীন্তং নগাঞান্তীক্ষুভুগুকঃ ।
তির্চ্চ তির্চেতঃ তং প্রাহ কো গচ্ছতঃ মমাগ্রতঃ ॥৫৪
মুবিদ্বা লোকনাথস্থ ভার্যাং শূন্যাদ্বনালয়াং ।
শুনকো মন্ত্রপুতং দং পুরোডাশমিবার্বরে ॥ ৫৫।।
ইত্যুক্ত্বা তীক্ষুভুগুন চুর্ণরামাস ভদ্রথম্ !।
বাহান্ বিভেদ পাদাভ্যাং চুর্ণরামাস ভদ্রথম্ ॥ ৫৬।
ততঃ সীতাং পরিত্যজ্য রাবণঃ খড়্মমাদদে ।
চিচ্ছেদ পক্ষে সামর্যঃ পক্ষিরাজস্থ ধীনতঃ ॥ ৫৭

লইবার জন্য আসিয়াছি। মুনিবেশধারী রাম তোমার কি
করিবে? তুমি আমাকে ভজনা করিয়া আমার সহিত স্থ
ভোগ কর। বনবাস নিতান্ত ক্রেশকর অতএব তাহা পরিভাগ কর। সীতা ভিক্সুর বাক্য শুনিয়া অভিশয় ভীতা
হইলেন এবং কহিলেন তুমি যথন আমাকে এইরপ কুবাক্য
কহিতেছ তথন রাম তোমাকে অবশাই বিনাশ করিবেন।
তুমি ক্ষণকাল অপেক্ষা কর, রাম লক্ষাণের সহিত সত্তর আগ্রামন করিবেন। তুমি মনে করিও না যে আমার প্রতি বল
প্রকাশ করিবে। সিংহের ভার্যার প্রতি সামান্য পশু কথনই
অত্যাচার করিতে সক্ষম হয় না। তুমি রাম বাণে বিভিন্ন হইয়া
মহীতলে পতিত হইবে। রাবণ সীতার বাক্য শ্রেবণ করিয়া
কোধে অধীর হইল, এবং শৈলসদৃশ সমুন্নত দশ বদন ও
বিংশতি বাহু শোভিত কালমেখ সদৃশ কান্তিযুক্ত খীয় দেহ
সীতাকে দেখাইল ১৪ এ৪ ৬১৪ ৭৪৮। ৪৯। ৫০। রাবণের
সেই করাল মুর্ভি দেখিয়া বন দেবতা ও বনস্থ প্রাণি সকল

সদ্ভেশ্ত হইল। ভয়ানক মূর্ত্তি রাবণ নথ দারা ধরণী বিদীর্থ করিয়া (সীতা ভূমিতে থাকিলে কাছার সাধা যে তাঁহাকে উত্তোলন করে।) সীতাকে বাহু দারা উত্তোলন পূর্বক রথে নিক্ষেপ করিয়া শীত্র গগনমার্গে গমন করিতে আরম্ভ করিল। জনক কুমারী সীতা ভয়ে একান্ত অধীরা ও দীনা হইয়া পৃথিবীতে দৃষ্টিপাত করিতে করিতে হা রাম! হা লক্ষণ! বলিয়া উচ্চঃম্বরে রোদন করিতে লাগিলেন। সীতার হৃদয় বিদারক ক্রন্দন ধনি শ্রণ করিয়া পর্বত হইতে তীক্ষণভূত পক্ষীন্দ্র জটায়ু শীত্র উপদ্থিত হইলেন—আরে পামর! থাক, থাক, আমার সন্মুথে শ্ন্য বন হইতে রামচন্দ্রের ভার্যা অপ্তর্যক করিয়া কে গমন করিতে পারে?কুরুর কি কথন মন্ত্রপূত্ত যজীয় পুরোডাল ভোজন করিতে সক্ষম হয়—এই বলিয়া তীক্ষ চঞ্চ্ দারা রাবণের রথ চূর্ণ করিল এবং চরণ প্রহারে অশ্ব ও ধরু বিভিন্ন করিয়া দিল। তথন রাবণ ক্রেক্ষ হইয়া সীতাকে পরিত্যাগ পূর্বক থজা দারা জটায়ুর পক্ষম হ ছেদন

প্রপাত কিঞ্চিচ্ছেষেণ প্রাণেন ভূবি পক্ষিরাট্।
পুনরন্যরপেনাশু দীতামাদার রাবণঃ ॥ ৫৮ ॥
কোশন্তী রামরামেতি ত্রাতারং নাধিগছতী।
হা রাম! হা জগরাধ! মাং ন পশ্যদি দুঃখিতাম?
রক্ষনা নীরমানাং স্বাং ভার্যাং মোচর রাঘব!।
হা লক্ষণ মহাভাগ! ত্রাহি মামপরাধিনীম্॥ ৬০
বাক্শরেণ হতন্তং মে হন্তমহ দি দেবর!।
ইত্যেবং কোশমানাং তাং রামাগমনশঙ্করা॥ ৬১॥
স্থাম বায়ুবেগেন দীতামাদার দত্তরঃ।
বিহারদা নীরমানা দীতা পশ্যদধোমুখী॥ ৬২॥

পর্বতাগ্রন্থিতোন্ পঞ্চ বানরান্ বারিজাননা।
উত্তরীয়ার্দ্ধিতেওন বিষ্চ্যান্তরণাদিকম্ ॥ ৬৩॥
বন্ধা চিক্ষেপ রামায় কথয়ন্ত্রিতি পর্বতে।
ততঃ সমুদ্রম্প্রভাগ লক্ষাং গত্বা স রাবণঃ ॥ ৬৪॥
স্বান্তঃপুরে রহস্তে তামশোকবিপিনেহক্ষিপং।
রাক্ষনীতিঃ পরিবৃতাং মাতৃবুদ্ধানুপালয়ং॥ ৬৫॥

ক্লশাতিদীনা পরিকর্মবর্জিতা
দুংখেন শুষ্যদ্বদনাতিবিহ্বলা।
হা রাম! রামেতি বিলপ্যমানা
দীতা স্থিতা রাক্ষসরক্ষমধ্যে॥ ৬৬॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণো উমামহেশ্বর সম্বাদে অরণ্যকাণ্ডে সপ্তমোহধ্যমঃ।

করিয়া দিল। পক্ষীস্ত্র আহত হইয়া পতিত হইলেন, কিন্তু ঠাহার প্রাণ বহির্গত হইল না। রাবণ সীতাকে লইয়া অনা রথে আরোহণ পূর্বক গমন করিতে লাগিল। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮।

সীতা "রাম রাম" বলিয়া বারস্থার রোদন করিতে লাগিলেন। কিন্তু সে সময় তিনি কাহাকে রক্ষক দেখিলেন না। হা রাম! হা জগরাথ! আমি নিতান্ত ভঃখকর অবস্থায় পতিত ছইয়াছি, আপনি কিছুই দেখিতে পাইতেছেন না; আপনার ভার্যাকে রাক্ষস হরণ করিতেছে, শীঘ্র মোচন করুন, হা লক্ষণ মহাভাগ। আমাকে মোচন কর, আমি তোমাকেবাক্-শরে বিদ্ধ করিয়াছি, হে দেবর। তুমি তাহা ক্ষমা কর। সীতা এইরূপে বিলাপ ও পরিতাপ করিতে লাগিলেন। রাবণ শ্রীয়ামের আগসনালস্থায় সীতাকে গ্রহণ করিয়া অতি সন্তর বায়্বেণে আকাল মার্গে গমন করিতে লাগিল। পদ্মন্থী জানকী অধামুখী ছইয়া দেখিলেন একটা

পর্বতের অগ্রদেশে পাঁচটা বানর অবস্থান করিতেছে। সীতা অঙ্গ হইতে আভরণ উপোচন করিয়া স্বীয় উত্তরীয়ার্দ্ধে বদ্ধ করিয়া "রামকে আমার বৃত্তান্ত বলিও" এই অভিপ্রায়ে পর্বতোপরি তাহা নিকেশ করিলেন।

অনস্তর রাবণ সমুদ্র উল্লেজ্জ্বন পূর্ব্বক লক্ষার গমন করিয়া স্বীয় অন্তঃপুরবন্ত্রী নির্জ্জন আশোক কাননে সীতাকে রক্ষা করিল। এবং রাক্ষণীগণকে তাঁছার রক্ষণাবেক্ষণে নিযুক্ত করিয়া মাতৃ-ভাবে তাঁহাকে প্রতিপালন করিতে লাগিল। সীতা রাক্ষ্য সমূহ মধ্যে অবস্থান করিতে লাগিলেন। তিনি নিতান্ত ক্ষণা ও দীন ভাবাপনা হইলেন। শরীর সংস্থারাদিতে তাঁছার আস্থা ছিলনা। ত্রংথে বদন মণ্ডল বিশুক্ত হইন্তে লাগিল, ভরে বিহবলা ছইলেন, সর্ব্বদা 'হোরাম! হারাম! বলিয়া বিলাপ করিতে লাগিলেন। ৫৯।৬০।৬১।৬২।৬৩। ৬৪।৬৫।৬৬।

ইতিশ্রীমদধ্যাত্ম রামারণে উমামছেশ্বর সম্বাদে অরণ্যকাতে সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

অফ মো২ধ্যায়

রামো মারাবিনং হত্বা য়াক্ষদং কামৰূপিণম্।
প্রতন্তে স্বাশ্রমং গন্তং ততো দূরাদদর্শ তম্॥ ১॥
আরাতং লক্ষণং দীনং মুখেন পরিশুবাতা।
রাঘবশ্চিন্তরামাদ স্বাত্মন্যের মহামতিঃ॥ ২॥
লক্ষণস্তর জানাতি মারাদীতাং ময়া ক্রতাম্।
জ্ঞান্তাপ্যেনং বঞ্চয়িত্বা শোচামি প্রাক্রতো যথা॥ ৩॥
যত্তহং বিরতো ভূজা ভূকীং স্থাস্তামি মন্দিরে।
তদা রাক্ষদকোটীনাং বধোপায়ঃ কথং ভবেৎ ?॥
যদি শোচামি তাং দু:খনন্তপ্তঃ কামুকো যথা?।
ভদা ক্রমেণানুচিন্তন্ দীতাং যাস্তেইস্রালয়ম্।
রাবণং দকুলং হল্বা দীতামগ্রে স্থিতাং পুন:॥ ৫॥

মহামতি শ্রীরামচন্দ্র কামরপী মায়াবী রাক্ষসকে বিনাশ করিয়া আগ্রামাভিমুখে প্রস্থান করিতেছেন। এমন সময়ে মলিন বদন ও ছুঃখিভাস্তঃকরণ লক্ষ্মণকে দূর হইতে পথিমধ্যে অবলোকন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিতে লাগিলেন। ১।২। আমি মায়া সীতাকে পর্ণশালায় রক্ষা করিয়া আসিয়াছি তাহাতে রাক্ষসাদি কর্তৃক প্রকৃত সীতার কোন বিশ্ব হইবার সম্ভাবনা নাই, কিন্তু লক্ষ্মণ এই সকল ঘটনা কিছুই জানেন না। আমি ভূত, ভবিষ্যত ও বর্ত্তমান সকল ঘটনা জানিয়াও লক্ষ্মণের নিকট প্রাকৃত মনুষ্যের ন্যায় প্রবঞ্চনা করিয়া শোক প্রকাশ করি। যদি উপস্থিত সময় সীতার নিমিত্ত শোক প্রকাশ না করিয়া (মেমিনী হইয়া) আশ্রমে বাস করি তাহা হইলে আর অন্য কোন্ ছলে কোটি রাক্ষ্ম কুল বিনাশ করিব। । ৩ বি এ সময় হইতে কামুক পুক্ষের স্থায় দ্রঃখ সম্ভপ্ত

মরৈব স্থাপিতাং নীত্ব। যাতাহযোধ্যামতন্দ্রিতঃ।
অহং মন্থ্যভাবেন জাতোহয়ি ব্রহ্মণার্থিতঃ॥ ৬।
মন্থ্যভাবমাপন্ন: কিঞ্চিংকালং বদানি কে।
ততো মারামন্থ্যদা চরিতং মেহনুষ্ণৃতাম্॥ ৭।
মুক্তিঃ স্থাদপ্রাদেন ভক্তিমার্গানুবর্তিনাম্।
নিশ্চিত্যবং তদা দৃষ্ট্য লক্ষ্মণং বাক্যমন্ত্রীৎ॥৮॥
কিমর্থমাগতোহদি তং দীতাং ত্যক্ত্যাম্ম প্রিয়াম।
নীতা বা ভক্ষিতা বাপি রাক্ষ্মের্জনকান্ম্রা। ২।
লক্ষ্মণঃ প্রাপ্তালিঃ প্রাহ্ম দীতায়া ছ্র্মিটো রুদন্।
হা! লক্ষ্মণেতি বচনং রাক্ষ্মোকং প্রুহুণ তয়া॥ ১৯

হটরা শোক করিতে আরস্ক করি, তাহা হইলে জনশঃ সীতার অনুসন্ধান ছলে রাজসালার গমন করিতে পারিব। লক্ষার গমন করিবা মাত্র রাবণকে সবংশে নফ করিয়া আমারই আজ্ঞানুসারে অগ্নি প্রবিষ্ঠা প্রকৃত সীতাকে পুনর্বার অগ্নি হইতে গ্রহণ পূর্বকৈ অযোধ্যার প্রতিগমন করিব। আমি ব্রহ্মার প্রথিনানুসারে মনুষ্য ভাবে জন্মগ্রহণ করিয়াছি, অত্তব পূথিবীতে মনুষ্য ভাব প্রকাশ করিয়া কিছু কাল বাস করিব। এই জগতে আমার মনুষ্য চরিত প্রকাশিত হইলে যাহারা ভক্তিমার্গানুসারী হইরা উহা প্রবণ করিবে, তাহাদিগের আনায়াসে মুক্তি লাভ হইবে। প্রীরামচক্র মনে মনে এইরপ্র নিক্ষর করিয়া সমীপাগত লক্ষ্মণকে কহিলেন। ৫। ৬। ৭।৮। হে লক্ষ্মণ। তুনি আমার প্রিয়তমা জানকীকে পরিতাগে করিয়া কিছে আগমন করিলে? হে ভাতঃ! এতক্ষণে রাক্ষ্মণেরা জনকনন্দিনীকে হরণ বা ভক্ষণ করিয়াছে। ১। অনস্তর লক্ষ্মণ

ত্বন্দ্ৰ ক্ষা মাং গছে তি ত্বাব্ৰবীং। কদন্তী সা ময়া প্ৰোক্তা দেবি ! রাক্ষসভাষিতম্। নেদং রামস্য বচনং স্বস্থা ভব শুচিস্মিতে ! ॥ ১১॥ ইত্যেবং সান্তি তা সাধী মন্ত্ৰী প্ৰোবাচ মাং পুনঃ। যত্ত্বং ছ্বিচো রাম ! ন বাচাং পুরতন্তব ॥ ১২॥ কণ্ঠে পিধায় নির্গত্য যাতোহহং ত্বাং সমীক্ষিত্ম। রামস্ত লক্ষাণং প্রাহ তথাপ্যন্তিতং ক্ষতম্।। ১৩॥ তয়া স্ত্রীভাষিতং সত্যং কৃষা তাক্ত্যা শুভাননাম্। নীতা বা ভক্ষিতা বাপি রাক্ষ্টের্নাত্ত সংশয়ঃ।।১৪

ইতি চিন্তাপরো রামঃ স্বাশ্রমং ত্রিতো যথো।
তত্ত্যাদৃষ্ট্য জনকলাং বিললাপাতিদুঃখিতঃ ॥ ১৫ ।
হা প্রিয়ে! ক গতাসি ত্বং ? নাসি পূর্ব্যবদাশ্রমে ।
অথ বা মদ্বিমোহার্থং লীলয়া ক বিলীয়সে ? ॥ ১৬ ।
ইত্যাচিন্তস্থনং সর্বাং নাপশ্যং জানকীং তদা ।
বনদেব্যঃ কুতঃ সীতাং ক্রবন্তু মম বল্লভাম্ ॥ ১৭ ॥
মৃগাশ্চ পক্ষিণো রক্ষা ! দর্শয়ন্ত মম প্রিয়াম্ ।
ইত্যেবং বিলপয়েব রামঃ সীতাং ন কুত্রচিৎ । ১৮

কভাঞ্জলি ছইয়া রোদন করিতে করিতে জানকীর গুর্মাণক্য নকল শীরামের নিকট কহিতে লাগিলেন। হে রাম! জনক-নিদ্নী সীতা "হা লক্ষণ।" এ প্রকার আপনার বাকা সদৃশ রাক্ষদের কপট বাক্য শ্রবণ করিয়া রোদন করিতে করিতে আমাকে কহিলেন "লক্ষাণ ভূমি শীন্ত আর্গ্যপুত্তের নিকট গমন করিয়া উপস্থিত বিপদের প্রতিকার কর।" অনন্তর আমি আর্ষ্যা জানকীকে কহিলাম,—"দেবি! আপনি বাহা প্রবণ ক্তিলেন উহা কথনই এরামচন্দ্রের বাক্য নহে, সেই মারামুগ-এলধারী কপটী রাক্ষদাধনের বাকা, হে গুচিসিতে! ইথর্যাবলম্বন ককন কোন চিন্তা করিবেন না"।১০।১১। আমি.এই রূপে দেবীকে বহুতর শাস্ত্রনা করিলাম, সাধ্বী জনকননিনী আমার বাক্যে বিশ্বাস না করিয়া আমাকে যে সকল হর্কাক্য বলিয়া-ছেন তাহা অপিনার অত্যে বলিতে পারি না। ১২। হে দেব! আমি সেই সময় হস্ত যুগল দ্বারা কর্ণদ্বয় আচ্ছাদ্ন প্রক্রিক পর্ণ-শালা হইতে নিৰ্গত হইয়া আপনাকে দেখিতে আসিয়াছি ত্রীরাম কহিলেন, ভ্রাতঃ! অতিশর অনুচিত কার্য্য করিয়াছ। যেহেতু স্থী জনের বাক্য সভ্য জ্ঞান করিয়া সেই ভভাননা জানকীকে পরিত্যাগ পূর্বাক এস্থানে আসিয়াছ, নিশ্চরই দীতাকে রাক্ষ্যেরা গ্রহণ বা ভক্ষণ করিয়াছে 1>৪ 1

জীরামচনদ্র এই প্রকার চিন্তাকুল হইয়া অভি সত্তর আশ্রমে গমনানন্তর সীভাকে সেম্থানে অবলোকন না করিয়া অভি তুঃথিতান্তঃকরণে বিলাপ করিতে লাগিলেন I১৫৷ হা প্রিমে, তুমি কোথায় গমন করিয়াছ। পূর্ব্ববৎ ভোমাকে আ**শ্রমে দে**থিতে পাইতেছি না ।ছে প্রিয়ে! তুমি কি আমাকে মুগ্ধ করিবার জন্য লীলাচ্ছলে কোন স্থানে লুকায়িতা হইয়াছ ? 15%। অনন্তর জীরামচন্দ্র সমস্ত বন মধ্যে জ্বানকীকে অবেষণ করিলেন, কিন্তু কোন স্থানে দেখিতে না পাইয়া—বনদেবতা ও বনবাসি প্রাণি সকলকে জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন। হে বনদেবিগণ! হে মুগ্রণ! ছে প্রিক্রণ ! হে তরু সকল ! আমার প্রাণ বল্লভা জানকী কোন স্থানে আছেন তোমরা আমাকে অবলোকন করাও। সর্বজ্ঞ শ্রীরাম এই প্রকার বহুতর বিলাপ করিতে করিতে নানা স্থান অন্বেষণ করিতে লাগিলেন। সীতা कान माटन बाहन हैश नर्स श्रकात कानियां कानियां না। শীরামচন্দ্র আবনদময় হইয়াও শোক করিতে লাগিলেন। এবং অচল (অর্থাৎ ধৈর্যাশালী) শ্লেষ অর্থ, চলৎশক্তি বহিত ছইয়াও নান। স্থানে ভ্রমণ করিতে লাগিলেন। এবং নির্মান নিরহঙ্কার পূর্ণানন স্বরূপ হইয়াও আমার সীত।

কোথার? ইছা বলিয়া অতি ত্রংথ সহকারে বিলাপ করিতে

नर्ककः नर्कशं कालि नाशभाउउपूनमनः আনন্দোহপ্যস্থশোচত্তাং অচলোহপ্যমুধাবতি ॥১৯ निर्मारमा नित्रक्हारतो २ ११ थे धानस्म क १ वान्। মম জায়েতি দীভেতি বিললাপাতি দুঃখিতঃ ॥ ২০ এবং মারামন্থচর**রসকো**হপি রঘৃত্তমঃ। আদক্ত ইব মূঢ়ানাং ভাতি তত্ত্ববিদাং নহি ॥ ২১ ় खवर विविश्वन् नकनर वनर वामः नलकानः। ভগ্নং রথং ছত্তচাপং কুবরং পতিতং ভূবি ॥ ২২ ।। मुखे। लक्कानभारङ्गः श्रमा लक्कान! (कनिष्ट । নীয়মানাং জনকজাং তং জিত্বানো জহার তাম্ ৩২ তচ্ছুত্বা রাঘবো দীনং কণ্ঠপ্রাণং দদর্শ হ॥ ২৯॥ ততঃ কঞ্চিদ্ধবো ভাগং গড়া পর্ববতসন্নিভম। क्रिविताक्तवशूर्कस्वा द्वारमा वाकामशाखवीर ॥ २४ ॥

लाजिल्लम। ১१। ১৮ १ २२। २०। मृत्वता धरे नकल वर्गाभाव অবলোকন করিয়া রঘুনন্দনকে বিষয়াসক্ত পুরুষের ন্যায় বিবেচনা করিল। কিন্তু তত্ববিৎ পণ্ডিতেরা মায়া মনুষ্য लोलाकाती अनामक भद्रमाञ्चा विलया स्थित कवित्रा हित्तन। । ২১। অনন্তর জীরামচন্দ্র লক্ষ্মণের সহিত সমস্ত বন অস্থে-বণ করিতে করিতে দেখিলেন যে, এক থানি ভগ্ন রথ, ও একটা ভগ্ন ছত্ৰ, ও ভগ্ন ধনু পৃথিবী তলে পতিত বছিয়াছে। । ২২। জীরাম এইরপ বিশায়কর রণ চিক্ত দর্শন করিয়া লক্ষাণকে কছিলেন—ভ্রাতঃ! অবলোকন কর—এই সকল রণ চিহ্ন षात्रा निक्ठत (वाथ इटेएल्ड्स (य, (कान इत्राचा क्रमकनिक-নীকে হরণ করিয়া পলায়ন করিতেছিল, অপর কোন বীর পুৰুষ তাহাকে যুদ্ধ ক্ষেত্ৰে জয় করিয়া সীতাকে গ্রহণ করিয়াছে। ২৩। অনস্তর জ্ঞীরাম অপর কোন পথে গমন कतिया এবং পक्षीत्म क्रोहासू क्षित्राक्त, भर्वे मन्न मसूत्रक, শরীর দর্শনানন্তর লক্ষ্যুণকে কছিলেন ।২৪। হে ভ্রাতঃ ! দেখ

এষ বৈ ভক্ষয়িত্বা তাং জানকীং শুভদর্শনাম। শেতে বিবিজেইতিতৃপ্তঃ পশ্য হিন্মা নিশাচরম ৷ ২৫ চাপমানর শীঘুং মে বাগঞ্চ রঘুনন্দন !। তচ্ছুত্বা রামবচনং জটায়ুঃ প্রাহ ভীতবৎ ॥ ১৬ ॥ মাং ন মারয় ভদ্রং তে ব্রিয়মাণং স্বকর্মাণা। অহং জটায়ুটে ভার্যাহারিণং সমন্ত্রটভঃ ॥ ২৭ ॥ রাবণং তত্ত্র যুদ্ধং মে বভূবারিবিমর্দ্দন!। তশ্য বাহন্ রথং চাপং ছিত্তাহং তেন ঘাতিতঃ ॥२৮ পতিতোহিমি জগনাথ! প্রাণাংস্ত্রক্যামি পশ্য মান্ হস্তাভ্যাৎ সংস্পৃশন্ রামোবুংখাশ্রুতলোচনঃ॥ ৩০

এই হুরাক্মা দর্শনা জানকীকে ভক্ষণ করিয়া অতি ভৃপ্তি সহকারে নির্জ্জনে শয়ন করিতেছে। অতএব এই নিশাচরকে এই দত্তেই বিনাশ করিব। তে লক্ষ্যাণ শীত্র ধনুর্বাণ আনয়ন কর ; জটায়ু শ্রীরাম বাক্য শ্রবণানস্তর ভীত হইয়া কহিল, হে মহাবাহো! আমাকে বিনাশ করিও না, আমি নিজ কণ্ট দারাই বিনষ্ট হইরাছি. হে রাম! তোমার মঙ্গল হউক, আদি ক্রোধ সহকারে তোমার ভার্যাপহারী রাবণের অনুগমন করিয়াছিলাম— ছে অরিমর্দন ! পৃথিমধ্যে তাহার সহিত আমার যুদ্ধ হইরাছিল—আমি রণক্ষেত্রে ভাহার অশ্ব, রথ, 🤉 ধনুঃ তুও প্রহার দ্বারা ছিন্ন করিয়াছিলাম, অনন্তর হুরাত্ম। মহাবল পরাক্রান্ত রাক্ষম আমাকে নিদারুণ প্রহার করিয়া ভূমিভলে নিক্ষেপ করিয়াছে । হে জলরাথ ! একণে আমি প্রাণভ্যাগ করি তুমি সন্মুখে দণ্ডায়মান হইয়া আমাকে দর্শন কর। প্রীরামচন্দ্র অবণ করিয়া কণ্ঠাগড় প্রাণ জটায়ুকে অব-লোকন করিলেন্। এবং ড্র:খাত্ত মোচনানন্তর ছত্ত্যুগল वांता क्वेंगबूद शांक म्लान कदिया कहिएनन। २৫। २७। २१। २৮।२२।७०। ८६ कृष्ठी ह्या! जूमि वन आमात्र ऋवनमा

জটায়ে। ক্রহি মে ভার্য্যা কেন নীতা শুভাননা।

মৎকার্য্যর্থং হতোহিনি ত্বমতো মে প্রিয়বান্ধবঃ॥৬১
জটায়ুঃ সয়য়া বাচা বজ্রাদ্রক্তং সমুদ্বমন্।
উবাচ রাবণো রাম! রাক্ষসো ভীমবিক্রমঃ॥ ৬২॥
আদায় মৈথিলীং সীতাং দক্ষিণাভিমুখো যযৌ।
ইতো বজুং ন মে শক্তিঃ প্রাণাংস্ত্যক্ষ্যামি তেইগ্রতঃ
দিন্ট্যা দৃন্টোহিনি রাম! তং ব্রিয়মাণেন মেহনঘ!।
পরমাত্মানি বিষ্ণুত্বং মায়ামনুজন্ধপুক্॥ ৩৪॥
অন্তকালেইপি দৃন্ধী তাং মুক্তোইহং রঘুসত্তম!।
হস্তাভ্যাং স্পৃশ মাং রাম! পুনর্যান্থামি তে পদম্
তথেতি রামঃ পশ্পর্শ তদক্ষং পাণিনা স্ময়ন্।
ততঃ প্রাণান্ পরিত্যক্স জটায়ুঃ পতিতো ভূবি॥
রামস্মন্ত্রণাচিত্বা বন্ধুবং সাক্র্যনোচনঃ।
লক্ষণেন সমানাঘ্য কাষ্ঠানি প্রদদাহ তম্॥ ৬৭॥

ভার্যাকে কোন্ ব্যক্তি হবণ করিয়াছে—হে সংধ ! আমারই কার্যার্থ বিনষ্ট হইয়াছ—এই হেতু তুমি আমার প্রিয়্রভ্য স্থা হইতে রক্তবনন করিতে করিতে মুদ্রবচনে কছিল—হে রাম! ভীম বিক্রম রাক্ষণাধিপতি রাবণ জানকীকে হরণ করিয়া দক্ষিণাভিমুখে গমন করিয়াছে, আর অপিক বলিতে আমার শক্তি নাই, এক্ষণে তোমার অত্যেপ্রাণ পরিভাগা করি ।৩২। ৩৩। হে অনঘ! তুমি মায়ামনুষাক্রপারী সাক্ষাৎ পরমান্মা বিষ্ণু, বহুভাগা বলে মরণকালে ভোমাকে দর্শন করিয়া মুক্ত হইলাম। ৩৪। হে রঘুনন্দন! নিক্র করকমল হারা আমাকে স্পর্শ কর, তাহা হইলে তোমার পরেম পদ প্রাপ্ত হইব। ৩৫। জ্রীরামচন্দ্র জটায়ু বাকো স্বাক্ত ইয়া বিশ্বয় সহকারে হস্তবারা ভাহার অঙ্গ স্পর্শ করিলেন। জটায়ুও তৎক্ষণাৎ প্রাণ পরিভাগে করিয়া পরম পদ প্রাপ্ত হইলেন পাঞ্চভে তিক দেহমাত্র ভূতলে পতিত রহিল। ৩৬ জ্রীরামচন্দ্র পরমবন্ধার নাায় জটায়ুর প্রতি শোকাঞ্চ পরিভাগে

রাত্বা দুংখেন রামোহপি লক্ষাণেন সমন্তিতঃ।
হত্বা বনে মৃগং তত্ত্ব মাংসথগুন সমন্ততঃ॥ ৬৮
শাদ্বলে প্রাক্ষিপদ্রামঃ পৃথক পৃথগনেকধা।
ভক্ষন্ত পক্ষিণঃ সর্বের ভূপ্তে। ভবতু পক্ষিরাট ॥৩৯॥
ইত্যুক্ত্বা রাঘবঃ প্রাহ জটায়ো! গচ্ছ মৎপদম্।
মৎসারূপ্যং ভক্ষাদ্য সর্বলোকস্ত পশ্চতঃ॥ ৪০॥
ততোহনভরমেবাসো দিব্যরূপধরঃ শুভঃ।
বিমানবরমারুছ ভাস্বরং ভানুসন্থিভম্॥ ৪১॥
শঙ্খাচক্রগদাপদ্মকিরীটবরভূষণৈঃ।
প্রোতয়ন স্প্রেকাশেন পীতাম্বরধরোহ্মলঃ॥ ৪২॥
চতুর্ভিঃ পাশ্ব দৈব্বিক্ষোন্তাদ্শৈর্ভিপ্জিতঃ।
ন্ত্রাঞ্জিপুটো ভূত্বা তুক্টাব রঘুনন্দনম্॥ ৪৩॥
ক্রাঞ্জিপুটো ভূত্বা তুক্টাব রঘুনন্দনম্॥ ৪৩॥

করিয়া লক্ষণধারা কাষ্ঠানয়ন করাইয়া তাঁছাকে দক্ষ করি-লেন। ভণ। অনন্তর লক্ষণের সহিত ছঃখিতান্তঃকরণে স্নান করিয়াবন মধ্যে বহুতর মৃণ বধ করিলেন। শ্রীরামচন্দ্র ঐ মৃলমাংস খণ্ড খণ্ড করিয়া দুর্বল সমাকীর্ণ ভূমিতলে পৃথক্ পৃথক্ নিক্ষেপানম্ভর কহিলেন—পক্ষিপাণ এই সকল মাংসথও ভক্ষণ কৰুক তাহ। হইলে পক্ষিরাগ জটায়ু পরিতৃপ্ত হইবেন। । ৩৮। ৩৯। অনন্তর জটায়ুকে স্বোধন করিয়া কহিলেন-হে জটায়ে৷ সকল লোকে অবলোকন কৰুন, তুমি অগ্ৰ আমার সারপ্য ভজনা কর। ৪০। দিবা রূপধারী জটায়ু পীতাম্বর পরিধানপূর্বক সূর্যাসদৃশ সমুজ্জল বিমানে আরোহণ করিলেন। তৎকালে উাধার শঙ্গতক্রগদাপদা ও কিরীট প্রভৃতি ভূষণের অসামান্য প্রভায় দশদিক্ আলোকময় হইল। । ৪১। ৪২। এবং ঐরপ সর্কাভরণভূষিত চারিটী বিফুদ্ত উপস্থিত হইয়া জটায়ুকে দেবা করিতে লাগিলেন। যোগি-গণও দেই স্থানে উপস্থিত ছইয়া বলবিধ শুব বাক্যে দিব্যরূপ-धारी क्लोब्राक खर कहिए व्यात्रेख कर्त्रालन।

क हो युक्वाह।

অগণিত গুণমপ্রমোদ্যং

সকলজগৎ স্থিতিসংয্যাদিহেতুম্।
উপরমপরমং পরাত্মভূতং
সতত্মহং প্রণতোহিন্ম রামচক্রম্॥ ৪৪
নিরবধিস্থমিনিদরাকটাক্ষং
ক্ষপিতসুরে ক্রচতুমু খাদিদু:খম্।
নরবরমনিশং নতোহিন্ম রামং
বরদমহং বরচাপবাণহত্তম্॥ ৪৫ ॥
ত্রিভূবনকমনীয়ে ক্রপমীত্যং
রবিশতভাসুরমীহিতপ্রদানম্।
শরণমনিশং সুরাগমূলে
ক্রতনিলয়ং রঘুনন্দনং প্রপদ্যে॥ ৪৬ ॥

পক্ষীক্র জটায়ু রঘুনন্দন রামকে মহোধন করির। ক্তা
ঞ্ললিপুটে স্তব করিতে লাগিলেন। ৪০। যাহার জনস্ত শক্তি

এবং দেশকালাদি দারা যাহাকে পরিচ্ছেদ করা যায় না—যিনি

সকলের আদি ও সমস্ত জগতের স্ফিন্থিতি সংহার কর্তা সেই

শান্তিগুণমর পরমাত্মাত্মকণ রামচক্রকে আমি সতত প্রণাম

করি। ৪৪। এবং মনুষ্যেরা যাহা হইতে নিত্য স্থলাভ

করিতে পারে এবং যিনি কমলাদেবীর এক মাত্র কটাক্ষ স্থান,

ব্রহ্মা ইক্র প্রভৃতি দেবগণ বিপৎকালে যাহার শর্ণাপর

হইয়া সমস্ত ভৃঃশ হইতে পরিত্রাণ পাইরা থাকেন, সেই

বরপ্রদ ধনুর্বাণ ধারী মারা মনুষ্যরূপী রামকে সত্ত প্রণাম

করি। ৪৫।

যিনি ত্রিভূবনৈক স্থলবরপের শতস্থাসম সমুজ্জল শোভাষ জগৎ আলোকময় কবিজেছেন, এবং ভক্ত জনের
চিত্তে বাস কবিয়া ডাহাদিগের সকল মতীষ্ট প্রদান কবিয়া
খাকেন, আমি সেই স্তৃতিভাজন রঘুনলনের শ্রনাপার

ভববিপিনদবাগ্নিনামধেরং
ভবমুখদৈবতদৈবতং দয়ালুম্।
দম্ব্রপতিসহস্রকোটিনাশং
রবিতনয়াসদৃশং হরিং প্রপদ্যে॥ ৮৭॥
অবিরতভবভাবনাতিদূরং
ভববিমুখৈরু নিভিঃ সদৈব দৃশ্যম্।
ভবজলধিসুভারণান্তিযুপোতং
শরণমহং রঘুনন্দনং প্রপদ্যে॥ ৮৮॥
গিরিশগিরিস্থভামনোনিবাসং
গিরিবরধারিণমীহিতাভিরামম্।
স্থরবরদ লুকেন্দ্রেগিভাগির্যুৎ
স্থরবরদং রঘুনায়কং প্রপদ্যে॥ ৪৯॥
পরধনপরনারবর্জিভানাং
পরগুণভূতিযু ভুকীমানসানাম্।

হইলাম। ৪৬। যাহার নাম রূপ পাবক ছারা সংসার-রূপ ভীষণ কানন দক্ষ হয়, যিনি মহাদেব প্রভৃতি দেবগাণেরও দেবভা স্বরূপ এবং যিনি সহজ্ঞকোটি দৈতা নাশ করিয়া পৃথিবীর ভার হরণ করিয়াছেন, আমি সেই যমূনাজল সদৃশ নীলকান্তি শোভিত পরম দয়াময় হরির শরণাপার হইলাম। ৪৭। যিনি সংসার বাসনা সম্পার ব্যক্তিগণের অতি ছল্ল ভ এরং সংসার বিমুখ মুনিগণের সর্বানা নয়নগোচর হইয়া থাকেন, যাহার চরণরপ অসামান্য তর্নী ভব সাগর তরণের এক মাত্র উপায়, আমি সেই রয়ুনন্দন রামের শরণাপার হইলাম। ৪৮। যিনি হরপার্বতীর মানসমন্দ্রির সতত বাস করিতেছের এবং স্বরপতি ও অস্করপতি গণ সতত যাহার চরণ সেবায় নিযুক্ত আছের, আমি সেই গোবর্জনধারী স্বন্ধণের ও বরদাতা রয়ুনাথের শরণাপার হইলাম। ৪৯। যাহারা

পরহিতনিরতাত্মনাং স্থানেরাং
রঘুবরমন্থ কলোচনং প্রপাদ্য ॥ ৫০ ॥
মিতরুচিরবিকাসিতাননাজ্ঞমিতিস্থলভং স্থারাজনীলনীলম্।
সিতক্ষলক্ষ্চাক্রনেত্রশোভং
রঘুপতিমীশগুরোগুরুং প্রপদ্য ॥ ৫১
হরিক্মলজশন্ত কপভেদাৎ
ত্বমিহ বিভাসি গুণুত্রয়ান্মরক্তঃ।
রবিরিব জলপ্রিতোদপাত্তেদুমরপতিস্তাতিপাত্রমীশমীডে॥ ৫২ ॥

রতিপতিশতকোটিস্করাকং শতপথগোচরভাবনাবিদূরম্। যতিপতিক্সদরে সদা বিভাতং

রঘুপতিমার্ত্তিইং প্রভুং প্রপদ্যে। ৫৩॥

ইত্যেং স্তবতন্ত্র প্রসমোহভূত্যভূত্যঃ।

উবাচ গচ্ছ ভদ্রং তে মম বিফোঃ পরং পদম্॥৫৪

শৃণোতি য ইদং স্তোত্রং লিখেছা নিয়তঃ পঠেৎ।

স যাতি মম সারপ্যং মরণে মৎস্মৃতিং লভেৎ।৫৫

ইতি রাঘবভাষিতং তদা শ্রুতবান্ হর্ষসমাকুলো দ্বিজঃ
রঘুননদনসামমাস্থিতঃ প্রযথো ত্রহ্মসুপুক্তিং পদম্॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরস্থাদে

অরণ্যকাণ্ডে অফমোহধ্যায়ঃ।

পরদারে লোভ করে না, এবং পরের গুণ কীর্ত্তন ও পরের সম্পদে যাহাদের চিত্ত সন্তুট হয়, সেই পরহিত্তরত ব্যক্তিরাই যাঁহাকে সেবা করিতে পারে, আমি সেই অরুজলোচন রঘুনাথের শরণাপন হইলাম। ৫০। যে রামচল্রের বদন কমল সর্কাদা হাস্তদারা বিক্সিত, যাঁহার নেত্ত্রযুগল শেতপদ্মের শোভা ধারণ করিতেছে, আমি সেই ইন্ত্রনীলমণি সদৃশ কান্তি সম্পন্ন, ভক্তজনের অভিস্থলত এবং ব্রহ্মার ওক রঘুপতির শারণাপন হইলাম। ৫১। হে রাম! যেমন জলপ্রিত পাত্রে এক রবি প্রতিবিশ্বিত হইয়া বিভিন্নরূপে প্রতীত হইয়া থাকে, তুমি সেইরপ সম্ব রক্তঃ তমো গুণ ভেদে বিষ্ণু, ব্রহ্মা, শিব এই তিন প্রকার মূর্ত্তি ধারণ করিয়া জগতে বিভিন্নরূপে প্রকাশ পাইতেছ—বস্তুগত্যা তুমি একক। হে ভগবন্! তুমি দেবরান্তেরও স্তর পাত্র ভোমাকে আমি স্তব্ব করি। ৫২। যিনি শতকোটি কন্দর্পের ন্যায় পরম স্কন্দর

মূর্ভি দার। সমস্ত জগৎ মুগ্ধ করিতেছেন, যিনি নানা পথগামী চিত্ত বিশিষ্ট মনুষাদিগের অভি হল্ল ভ বস্তু, কিছু ষতিগণের চিত্তে সর্বাদা বিরাজ করিয়া থাকেন, আমি সেই সর্ব্বহুঃখ-হারী মহাপ্রভুরঘুপতির শরণাপার হইলাম। ৫৩।

শীরাম জটায়ু কত শুবে সন্তুষ্ট হইরা কহিলেন, ঘটারো!
তোমার মন্দল ছইবে। একণে বিষ্ণুর পরম ধামে গমন কর
।৫৪। যে ব্যক্তি এই জটায়ু কত শুব আবণ বা লিপিবন্ধ করিবে,
কিম্বা সংঘত ছইরা প্রতিদিন পাঠ করিবে, সেই ব্যক্তি মরণ সময়ে
আমার শ্বন্দলাভ করিয়া অন্তে সারপ্য লাভ করিবে। ৫৫।
পরমানন্দিত পক্ষীন্দ্র জটারু জীরামের এইরপ বাক্য শ্রবণানশুর
শীরামের সমতা প্রাপ্ত হইরা বৈকুঠধামে গমন করিলেন।৫৬।
ইতি জীমদ্যাক্রামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে অরণ্যকাতে

व्यक्टिमांश्यावः।

নবমোইধ্যায়

ততো রামো লক্ষণেন জগাম বিপিনান্তরম্। পুনদু : খং সমাশ্রিত্য সীতাম্বেষণতৎপরঃ ॥ ১॥ তত্রান্ড্রসমাকারো রাক্ষদঃ প্রত্যদৃশ্যত। বক্ষন্তেব মহাবক্ত্রুশ্চক্ষুরাদিবিবর্জিতঃ॥ ২॥ বাছু যোজনমাত্তেণ ব্যাপৃতে তিন্য রক্ষমঃ! কবদ্বো নাম দৈতে ক্রে সর্ব্বসন্ত্রবিহিৎসকঃ॥ ৬॥ তদ্বাস্থোর্মধ্যদেশে তৌচরস্তৌরামলক্ষণী। मनर्भे जूर्यशम्बः अम्वाङ्शतिदविष्ठेरको । ४ ॥ রামঃ প্রোবাচ বিহসন পশ্য লক্ষণ ! রাক্ষসম। नितः शानविशैरनाश्यः यमा वक्तम जाननम्।। १।

বাছভ্যাং লভ্যতে যতাত্ত দুক্ষন্ স্থিতো ধ্রুবম্। আবামপ্যেতয়োর্হেরার্মধ্যে সঙ্কলিতে ধ্রুবম্। ১:। গন্তুমন্ত্র মার্গোন দৃশ্যতে রঘুনন্দন !। কিং কর্ত্তব্যমিতোই স্মাভিরিদানীং ? ভক্ষরেৎ স নৌ लक्ष्मि व प्रतिहरू कि श्री विष्ठा (तुन ? तः घव ! । আবামেকৈকমব্যথ্যে ক্ছিন্দ্যাং রক্ষোভূজে ধ্রুবম্ তথেতি রাম: খড়েরন ভুক্তং দক্ষিণমচ্ছিনৎ। তথৈব লক্ষ্মণো বামং চিচ্ছেদ ভুজমঞ্জদা।। ১।। ততোহতিবিমিতো দৈত্যঃ কৌ যুবাং স্থুরপুঙ্গবে\ : মদ্বাছচ্ছেদকৌ লোকে দিবি দেবেষু বা কুতঃ॥ ১০

অনস্তর শ্রীরামচন্দ্র ছংখিতান্তঃকরণে সীতান্তেষণ করিতে করিতে লক্ষ্মণের সহিত বনান্তরে গমন করিলেন। ১। সেই স্থানে একটা বিচিত্ররূপ রাক্ষণ তাঁহাদের নয়নগোচর ছইল। ঐ রাজদের বজঃছলে একটা বৃহৎ মুখ, উহার চক্ষু কর্ণ কিছুই নাই, তাহার বাজ্যন্ন যোজন পরিমিত, ঐ সর্ক্ক প্রাণি হিংসক[া]। ৭। লক্ষ্মণ কহিলেন। হে রাঘব! আপনি এ বিষয়ে 🔯 দৈতে।ক্র কবন্ধ নামে বিখ্যাত ছিল। উহার বিস্তৃত বাহ-দয়ের মধ্যস্থলে শ্রীরাম লক্ষ্মণ উভয়ে বিচরণ করিতেছিলেন। কিন্তু তাঁহার। প্রথমতঃ কিছুই জানিতে পারেন নাই। যথন জ্ঞীরাম জানিলেন (য, তাঁছারা রাক্ষস-বাভ ছারা পরিবেফিত হইরাছেন; তথন লক্ষ্মণকে হাস্ত করিতে করিতে কছিলেন। লক্ষ্মণ ৷ এই রাক্ষ্যের বিচিত্ররূপ অবলোকন কর—ইহার মস্তক ভ চরণ নাই, বক্ষাস্থলে একটা বৃহৎ মুথ, যোজন বিস্তুত বাহ-

যুগল ছারা যাহা সংগ্রহ করে ভাহাই ভক্ষণ করিয়া এই বনে বাদ করিতেছে। ভাষারাও ইহার বাহুদ্বরে মধাস্থলে পতিত হইয়াছি হৈ রবুনন্দন ! রাক্ষ্ণের বাত্রয় মধ্য হইতে নির্বামনের অন্যপথ নাই, এক্ষণে আমরা কি করি, ছরাঝঃ এই দণ্ডেই আমাদিগকে ভক্ষণ করিবে।২।৩।৪।৫।৬। বিচার করিয়া বিলম্ব করিতেছেন? আমরা ছই জনে এক একটা করিয়া রাক্ষদের বাহুযুগল ছেদ করি বিশস্ব করিবেন ন। ৮। রাম লক্ষাণের বাক্তে। সন্মত হইয়া শাণিত থজা घोत्रा त्राकारमत्र मिक्किन रुख (इन कदिएनन । नक्कान ७९-ক্ষণাৎ তাহার বাম হস্ত ছেদ করিলেন। ৯। অনন্তর দৈভোক রাক্ষ্ম অতি বিশ্বরাপর হইরা কহিল—তোমাদিণের ছু^ই জনের নাম কি ? কোথা হইতে বা আদিয়া আমার বাত্বর তভোহত্তবীদ্ধসম্মের রামো রাজীবলোচনঃ।

অবোধ্যাধিপতিঃ শ্রীমান্ রাজা দশরথোমহান্॥১১

রামোহহং তদ্য পুজোহদৌ ভাতা মে লক্ষনঃ স্থবীঃ

মম ভার্য্যা জনকজা দীতা ত্রৈলোক্যস্থলরী ॥১২॥

আবাং মৃগয়য়া যাতো তদা কেনাপি রক্ষদা।

নীতাং দীতাং বিচিম্বন্থো চাগতো ঘোরকাননে।১৩

বাজভ্যাং বেফিভাবত্র তব প্রাণরিরক্ষয়া।

ছিম্মে তব ভুজো ডং চ কো বা বিকটন্ধপধৃক্?।

কবন্ধ উবাচ।

वत्ताश्रहः यमि त्रायस्त्रमाशरकाश्या समास्त्रिकम्। পুরা গন্ধরিরাজোংহং ৰূপযৌবনদর্গিতঃ॥ ১৫॥

ভোলন করিলে। অভি আশ্চর্য্যের বিষয় যে, দেবলোকে দেবভারা আমার বাহুছেদনে সমর্থ হন নাই, মইুলোকে আমার
বাহুছেদনকারি বাক্তির সমাগম কি রূপে হইল!। ১০। অনঅর বাজীবলোচন রাম সহাস্য বদনে কহিলেন—আমরা
অলোধ্যাধিপতি মহারাজ দলরখের পুত্র, আমার নাম রাম, এই
স্তর্ত্তি লক্ষণ আমার কনিষ্ঠ ভাতা, ত্রৈলোক্য স্থানরী জনকনিদিনী আমার ভার্যা। আমাদিগের সহিত বনে আদিয়াভিলেন। এক দিন আমরা ত্রইজনে মুগরার্থ গমন ক্রিরাছিলাম, ঐ অবসরে কোন হুরাত্মা রাক্ষ্য তাঁহাকে হরণ করিয়াছিলাম, ঐ অবসরে কোন হুরাত্মা রাক্ষ্য তাঁহাকে হরণ করিয়াছিআমরা তাঁহার জবেষণ করিতে করিতে এই ঘোর বনে আদিমার্চি। ১১। ১২। ১০। হে দৈতোক্তে! আমরা জোমার বাহুমধ্য পতিত হইয়া প্রোণ রক্ষার্থ জায় বাহুযুল ছেদ করিয়াছি।
তে মহাবল। তোমার বিকট রূপ দেখিয়া আম্মরা বিস্করাপন
ইইরাছি এক্ষণে নিজ্পরিচয় প্রদান করিয়া আমাদিগের
অভিলায় পুরণ কর। ১৪।

কবন্ধ কহিল, ছে রাম! অদ্য তুমি আমার সমুখে আদিয়া দর্শন দিয়াছ ইছাতে ধনা হইলাম। আমার পূর্বে ব্ভান্ত শ্রুবন কর, আমি গন্ধকদিণের রাজা, পূর্বকাবে

বিচরন্ লোকমথিলং বরনারীমনোহরঃ।
তপদা ব্রহ্মণো লক্ষমবধ্যত্বং রঘূত্তম ! ।। ১৬ ॥
ভ্ৰমণবক্রং মুনিং দৃষ্টা কদাচিদহদং পুরা।
ক্রুদ্ধোহদাবাহ দুষ্ট ! ডং রাক্ষদো ভব দুর্মতে ! । ১৭
অফাবক্রঃ পুনঃ প্রাহ বন্দিভো মে দয়াপরঃ।
দাপস্থান্থ মে প্রাহ তপদা স্তোতিতপ্রভঃ ॥ ১৮॥
ব্রেতাযুগে দাশরপিভু তা নারায়ণঃ স্বর্ম।
আগমিষ্যতি তে বাহু ছিদ্যেতে যোজনায়তৌ ॥১৯॥
তেন শাপাদ্ধিনিমু ক্রো ভবিষ্যদি যথা পুরা।
ইতি শপ্তোহ্মদ্রাক্ষং রাক্ষদীং তন্ত্রমান্ত্রনঃ ॥ ২০
কদাচিদ্বেরাজানমভ্যদ্রব্যহং ক্র্যা।
সোহপি বজেণ মাং রাম ! শিরোদেশেইভ্যতাড্রহ

বরান্ধনা মনোহর রূপ ও যৌবন দর্পে মত্ত হইয়া সমস্ত লোক বিচরণ করিতাম। এবং ভৎকালে কমল যোনি আমার ধোরতর কঠিন তপদ্যায় সম্ভট হইয়া আমাকে व्यवशृषु दंत्र निश्नां हिल्लन । ১৫ । ১৬ । (इ त्रपूनन्तन ! এक দিন মহাপ্রভাব অষ্টাবক্র মুনিকে দেখিয়া হাস্য করিয়া ছিলাম, মহাতপা অষ্টাবক্ৰ কুদ্ধ হইয়া আমাকে অভিসম্পাভ করিলেন--"রে তুর্মতে, তুষ্ট-সভাব! তুই রাক্ষদ হইয়া কালাতি-পাত কর্"। ১৭। আমি শাপ বাক্য প্রবণ মাত্র ব্যাকুল হইয়া তপোধনকে বছবিধ বিনয় ও বন্দনাদি দারা পরিতৃষ্ট করিলাম। অনস্তর দর্শ সভাব সম্প্র, তপং প্রদীপ্ত ঋষিবর আমাকে শাপান্ত সময় কহিলেন যে, ''ত্রেডাযুগে ভগবান নারায়ণ দাশরথি রূপে স্বয়ং অবতীণ হইয়া এই স্থানে আগমন করিরা তোমার যোজন পরিমিত বাভ দর ছেদন করিবেন ; ভূমি সেই কালে পাপ হইতে মূক্ত হইরা পূর্ব্বরূপ প্রাপ্ত হইবে।" মহর্ষি আমাকে এইরূপ কহিয়া অন্তর্হি ত হইবা-মাত্র আমি আপনাকে রাক্ষসাকৃতি দেখিতে লাগিলাম।

হে রবুনদ্ন : এক দিন আমি কোধ পূর্বক রাকসরপে দেবরাজের অনুস্বণ করিরাছিলাম। অনস্তর দেবরাজ কুফ তদা নিরো গতং কুক্ষিং পাদে চরঘুনদ্দন!।
ব্রহ্মদন্তবরান্মৃত্যুর্নাভূম্মে বজুতাড়নাৎ॥ ২২॥
মুখাভাবে কথং জীবেৎ ? জয়মিত্যমরাধিপম্।
উচু: দর্বে দয়াবিষ্টা মাং বিলোক্যাম্ভবর্জিতম্॥২১
ততো মাং প্রান্থ মঘরা জঠরে তে মুখং ভবেৎ।
বাহু তে যোজনাযামে ভবিষতে ইতো ব্রক্ত ॥ ২৪
ইত্যক্তোহত্র বদয়িতাং বাছভ্যাং বনগোচরান্।
ভক্ষরাম্যধুনা বাহু খণ্ডিতো মে ত্বয়ানঘ!॥ ২৫॥
ইতঃপরং মাং শ্বভান্থে নিক্ষিপাগ্রীন্ধনারতে।
জাগ্রিনা দছ্মানোহছং ড্য়া রঘুকুলোত্তম।॥ ২৬॥

হইয়া আমার মন্তকে বজ্রাখাত করিলেন, ঐ বজ্রায়াত শ্বারা আমার মন্তক ও পাদবয় কুকিদেশে প্রবিষ্ট হইল, কেবল ব্রহ্ম-দক্ত বর প্রভাবে বক্সাবাতেও মৃত্যু ইংল না। ১৮। ১৯। ২০। ২১।২২। আমাকে মুখরহিত দেখিলা সকল লোকেই দরা-প্রতন্ত্র ছইয়া দেবরাজকে কছিল, হে দেবরাজ! এই রাক্ষ্য মুখবর্জিত হটয়া কিরুপে জীবনধারণ করিবে ?। ২৩। অনস্কর দেবরাজ কছিলেন, ছে ব্লাক্ষণ! তোমার বক্ষঃভ্লে মুধ ও বাস্ত্র্য যোজন পরিমিত হইবে এক্ষণে গ্র্যন কর। ২৪। (ছ রাম! আমি দেবরাজ কর্তৃক এইরূপ অভিহিত ছইয়া ভৎ-কলোবধি এই স্থানে বাস করিছেছি এবং বিস্তৃত বাছযুগল ঘারা বনা জন্ত সকল গ্রাহণ করিয়া ভক্ষণ করি ৷ এক্ষণে ভোমা কর্তৃক আমার জীবন সাধন সেই বাস্ত যুগল খণ্ডিত ২টল। হে কঞ্লাময় ! বিলম্ব করিও না অতি সত্তর আমাকে वहछत्र कार्छमन्भर्क (महीभागान भावत्कद्र खावन निधा मन्द স্থারত গর্ভমুথে নিকেপ কর। ছে রত্ত্ম। তোমা কর্ত্ক অগ্নি খারা দত্ম হইলে আমি পূর্বারূপ প্রাপ্ত ইইয়া সীভার সকল বৃত্তান্ত কহিব। রাক্ষম এইরূপ কহিয়া নিরুত্ত হইলে লক্ষাণ অতি শীজ্র একটা বৃহৎ গার্ত্ত মিশ্মাণ করিয়া তন্মধ্যে ভাছাকে

পূর্বেরপমন্থাপ্য ভার্য্যমার্গং বদামি তে।
ইত্যুক্তে লক্ষণেরাশু শত্রং নির্মার তত্ত্র তম্ ॥ ২৭॥
নিক্ষিপ্য প্রাদহৎকার্কৈন্ততো দেহাৎ সমুপ্রিতঃ।
কন্দর্পদদৃশাকার: সর্বাভরণভূষিতঃ ॥ ২৮ ॥
রামং প্রদক্ষিণং কুতা সাফ্যক্ষং প্রাণিপত্য চ।
কৃতাঞ্জলিক্রবাচেদং ভক্তিগদ্গদ্যা গিরা॥ ২৯ ॥
গন্ধর্ব উবাচ।

স্তোতুমুৎসহতে মেহন্য মনো রামাতিসম্ভ্রমাৎ।

ত্বামনন্তমনাদ্যন্তং মনোবাচামগোচরম্॥ ৩০॥

স্কাং তে ৰূপমব্যক্তং দ্বেহ্বয়বিলক্ষণম্।

দ্ঞাপমিতরৎ সর্বাং দৃশ্যং জড়মনাত্মকম্।

তৎকথং ব্বাং বিজ্ঞানীয়াদ্ব্যতিরিক্তং মনঃ? প্রভো

বুদ্ধ্যান্মভানয়োবৈক্যং জীব ইত্যভিধীয়তে।

বুদ্ধ্যাদিসাক্ষী প্রক্ষৈব তমিল্লির্কিব্রেহ্খিলম্॥৩২॥

রাক্ষনের দেহ হইতে কলপ সদৃশ পরম স্থলর সর্বাভরণ ভূষিত একটা পুরুষ নির্গত ছইরা প্রীরামকে প্রদক্ষিণ করণা নস্তর সাফাঙ্গ প্রণিপাত করিয়া ক্রভাঞ্জাল পুটে ভজিগদান বাক্যে কহিল। ২৯। হে রাম! তোমাকে সর্বব্যাপী অনানি অনন্ত এবং বাক্য ও মনের অগোচর জানিয়াও আমার মন অভিশয় প্রীতি হেতু স্তব করিতে উৎসাছ করিতেছে। ৩০। ছে ভগবন্! সে সকল স্তব বাক্য বিফল মাত্র, ভোমার হিরণা গর্ভ মূর্ত্তি ও বিরাট মূর্ত্তি হইতে বিভিন্ন যে জ্ঞান স্বরূপ স্থাপ্রতি হোহা যোগিদিগেরও ভূজের এতত্তিন দৃশ্যে বস্তু মাত্রেই জডপদার্থ, স্মৃতরাং ভোমা হইতে বিভিন্ন মন ভোমাকে কিরপে জানিবে। ৩১।

ক্ষতি শীজ্র একটা বৃহৎ গর্তু নিশ্মাণ করিয়া তনধ্যে তাছাকে চিত এবং চিত্তে আন্ধ প্রতিবিদ্ধ এই উভয়ের অভেদ জ্ঞান নিশ্বেপ পূর্বক কাঠ দারা দাহ করিতে লাগিলেন। অনন্তর বিষয় পদার্থ, জীব, ঐ জীব এই সমস্ত জড় পদার্থের সাক্ষী নছে। আরোপ্যতেইজানবশান্ত্রিকারেইখিলাক্সনি।
হিরণগের্লস্তে স্ক্রাং দেহং স্কুলং বিরাট্ স্মৃত্যু।
ভাবনাবিষয়ো রাম! স্ক্রাস্তে ধ্যাস্মঞ্চলম্।
ভূতং ভবং ভবিষ্ঠে ষত্রেদং দৃশ্যতে জগণ ॥ ৩৪॥
স্থ লেইগুকোশে দেহে তে মহদাদিভিরারতে।
সপ্তভিক্তরগুণৈঃ বৈরাজো ধারণাশ্রয়ঃ॥ ৩৫॥
গ্রেব স্ক্রিকবল্যং লোকাস্তেইব্যুবাঃ স্মৃতাঃ।
পাতালং তে পাদমূলং পৃাক্ষি স্তব মহাতলম্॥৩৬॥

🖶দ চৈতন্য আংকপ বেকাপদার্থই সমস্ত জ্বড় জগতের সাক্ষীও ও অন্তর্যামী, বেহেতু বাল্পনের অগোচর সেই এক পদার্থে এই দমন্ত বিশ্বাও অবস্থান করিতেছে, হে রঘুনন্দন ! মনুষ্যেরা আপনাকে সেই নির্কিকার সর্কস্বরূপ ব্রহ্মপদার্থ জানিয়া আপনাতে অজ্ঞানবশতঃ সমস্ত লিঙ্গদেহ সম্ফ্রিরপ হিরণ্য গর্ভ স্তির ও স্লুল দেহ সম**ন্টিরপ** বিরা**ট্**মূর্তির আবোপ করিয়া থাকে।৩২।৩৩। হে রাম! আপুনি নিশ্চিত্ত নহেন যে তেতু আপনার স্মরণকারি ব্যক্তিদিগের স্থপদ প্রদানরূপ মঙ্গল চিন্তা আপনার সদয় পুগুরীকে সর্বদা জাগরণ করিতেছে, ভূত ভবিষ্যৎ, বর্ত্তমান সমস্ত পদা**র্থও ঐ চিন্তার বিষয়। ৩৪** । হে ভগৰন্! আপনার মহক্তখাদি পরিবৃত স্থূলতম বিরাভ দেহে বিশ্বধারণা শক্তি আ'চে, হে জগদীশ্বর! আপনিই সকলের মুক্তি দাতা এই সমস্ত লোক আপনার বিরাড মূর্ত্তিরই অবয়বে বাস করিতেছে, যে হেতু পাতাল ঐ দেহের পাদমূলে, মহাতল পাফি দিশে, ওল্ফরয়ে রসাতল, এবং ওল্ফোর জাতুর অধোভাগে তলাতল, জামুদ্বয়ে সুতল, উক যুগলে বিতল, উক দেশের উদ্ধিজ্ঞঘনের অধোভাগে অতল। হে রাম! এই পৃথিবী ঐ দেছের জন ঘন দেশে আছে, ভূবর্টলাক নাভিদেশে, हेबः इत्न वर्गत्नाक, अवः श्रीवात्मरम महत्मीक। ह्व त्रश्-নন্দন! ঐ দেহের মুখমগুলে জনলোক, তপোলোক ললাট-দেশে। হে প্রভো! ঐ দেছের মন্তকে সভ্যালাক আছে। ে রঘ্শ্রেষ্ঠ ! ইশ্রাদি লোকপালগণ আপনার বারুদেশে বাস

রসাতলতে গুল্ফো তু তলাতলমিতীর্যতে। জান্থনী হ'তলং রাম ! উরু তে বিতলং তথা॥ ৩৭॥ অতলঞ্জ মহী রাম ! জঘনং নাভিগং নভঃ। উরস্থলন্তে জ্যোতীংবি গ্রীবা তে মহ উচ্যতে ॥৬৮॥ বদনং জনলোকস্তে তপত্তে শঙ্খদেশগম। সত্যলেকো রঘুশ্রেষ্ঠ! শীর্ষণ্যান্তে সদা প্রভো!॥ इञ्चामरत्रा लाकंशांना वाइवस्ड मिनः अञ्जी। অখিনৌ নাসিকে রাম ! বক্তুন্তেইগ্লিরুদাইতঃ ॥৪০ চক্ষুত্তে সবিতা রাম ! মনশ্চন্দ্র উদাহ্যতঃ। জু ভঙ্গ এব কালন্তে বুদ্ধিন্তে বাক্পতির্ভবেৎ॥ ১১ ক্রটোইকার্রপত্তে বাচশ্চন্দাং সি তেহ্ব্যয় !। যমন্তে দংফ্রদেশস্থো নক্ষত্রাণি দ্বিকালয়ঃ॥ ৪২॥ হাসো মোহকরী যায়া সৃষ্টিন্তেইপাঙ্গমোক্ষণম্। भर्माः भूतत्खर्भमानः भृष्ठे जागं देनी तिष्ठः ॥ ४० ॥ নিমিষোম্মেষণে রাত্তির্দিবা চৈব রঘূত্তম!। সমুদ্রাঃ সপ্ত তে কুক্ষি নাড্যো নজ্যস্তব প্রভো ! ।।৪৪

করিতেছেন এবং কর্ণগুলে দশদিক, অধিনীকুমার নাসিকাছনে, অধি বক্তু মধ্যে, চকুছয়ে হুর্যা, মনে চক্ত এবং জড় মধ্যে নিমিষাদি কাল, বুদ্ধিতে রহস্পতি, এবং অহলারে কক্ত বাস করিতেছেন। বাকো ছলগাণ অর্থাং বেদসকল। ছেরাম! ঐ দেহের দশনের মূলদেশে রুতান্ত আছেন, এবং দন্তমধ্যে নক্ষত্রণ বাস করিতেছেন। ছে ভগবন্! ঐ দেহের হাস্যে সর্ব্ধেমাহকরী মারা আছে, এবং নয়নাপালে স্কৃতি, সন্মুথে ধর্মা, পল্টাস্থাগো অধর্ম্ম, এবং নয়নের নিমিষে রাত্রি, উন্থীলনে দিবা। ছে রঘুনন্দন! সপ্তসমুদ্র ঐ দেহের কুন্দিদেশে, নদী সকল নাড়ীমধ্যে; এবং ঐ দেহের রোম সকল রক্ষ ও ওগির,

রোমাণি রক্ষেষধয়ো রেতো র্টিন্তব প্রতা! ।
মহিমা জ্ঞানশক্তিন্তে এবং স্কুলং বপুস্তব।। ৪৫ ॥
য়দিমং স্থলকপে তে মনঃ সংধার্যতে নবৈঃ।
জ্ঞানারাসেন মুক্তিঃ স্থাদতোহন্যন্নহি কিঞ্চন।। ৪৬ ॥
আতোহহং রাম! কপন্তে স্থূলমেবামুন্তাবরে।
য়িমান্তাতে প্রেমরসঃ সরোমপুলকো ভবেৎ ॥৪৭॥
তদৈব মুক্তিঃ স্থাদ্রাম! যদা তে স্থূলভাবকঃ।
তদপ্যান্তাং তবৈবাহমেতজ্ঞপং বিচিন্তরে॥ ৪৮ ॥
ধনুর্বাণধরং স্থামং জ্ঞাবিক্সল্থ্রিতম্।
জ্পীব্যবয়সং দীতাং বিচিন্তন্তং সলক্ষ্যণম্॥ ৪৯ ॥
ইদমেব সদা মে স্থান্মানসে রঘুনন্দন!।
সর্বজ্ঞঃ শক্ষরঃ সাক্ষাৎপার্বভ্যা সহিতঃ সদা ॥৫০।

তজ্ঞপনেবং সততং ধ্যায়ন্নান্তে রঘূত্তম !।

মুমূর্ণাং সদা কাশ্বাং তারকং ব্রহ্মবাচকম্ ॥ ৫১ ॥
রাম রামেত্যুপদিশন্ সদা সম্ভূইমানসঃ।

অতস্তং জানকীনাথ ! পরমাত্মা স্থানিশ্চিতঃ ॥ ৫২॥

সর্ব্বে তে মায়য়া মূঢ়াস্তাং ন জানস্তি তত্ত্বতঃ।

নমস্তে রামভদ্রায় বেধসে পরমাত্মনে ॥ ৫৩॥

অব্যোধ্যাধিপতে ! তুভ্যং নমঃ সৌমিব্রিসেবিত !

বাহি ব্রাহি জগন্নাথ ! মাং মায়া নার্ণোতু তে ॥ ৫৪

রাম উবাচ।

তাইটাইইং দেবগন্ধর্বে । ভাজা স্থামে চ তেইনয়া ॥

তুষ্টোইহং দেবগন্ধর্বে ! ভক্তা স্তত্যা চ তেইনয়া। যাহি মে পরমং স্থানং যোগিগম্যং সনাতনম্।।৫৫

বেত সকল র্ষ্টি, এবং ঐ দেহের মহিনা জ্ঞানশকি! হে রাম চন্দ্র এই প্রকার আপনার স্থূলশরীরে যাহারা মন অর্পণ করে তাহাদিগের অনায়াসে মুক্তিলাভ হয়। হে রাম! আপনার বিরাড্মুর্ত্তি হইতে জ্ঞাতিরিক পদার্থ জ্ঞাতে কিছুই নাই, জ্ঞাত্রর এই রামরূপকেই বিরাজ্রপ বলিয়া ভাবনা করিতেছি। যে রাম রূপ ধাান করিলে প্রেমরুস ও প্রেমরুস হইতে সর্কারীরে রোমাঞ্চ উৎপন্ন হর । ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। হে ভগবন্! যদি রামরূপকে বিরাজ্রপ ভাবনা করিয়া মনু-বোরা মুক্তি লাভ করিতে না পারে এবং কেবল সেই বিরাজ মুর্ত্তি লাভ করিতে না পারে এবং কেবল সেই বিরাজ মুর্তি ভাবনাই মুক্তির কারণ হয়, তাহা হইলে আমি মুক্তির জন্য রামরূপ ভ্যাগ করিয়া কেবল বিরাজ্রপ ভাবনা করিতেই জ্ছা করিনা। কিন্তু এই প্রার্থনা করি যে, আপনার ধন্ব্র্ণাণধারী জ্যাবল্কল ভূষিত নবদূর্বাদলশ্যাম রামরূপ সীতাব্রণ সমরে যেরূপ অবস্থা প্রাপ্ত হর্যাছে, সেই অবস্থায়

লক্ষাণের সহিত আমার হৃদয়ে সর্বদা জাগরিত হউক। হে রঘুনন্দন! সর্বজ্ঞানী ভূত ভাবন ভবানীপতি ভবানীর সহিত মিলিত হইয়া সর্বাদা আপুনার এই রামরূপ ভাবনা করিতেছেন এবং কাশীক্ষেত্রে মুদূর্ব্যক্তির কর্ণবিবরে ব্ল-বাচক রাম নাম স্বরূপ তারক মন্ত্র উপদেশ করিরা প্রমানন্দ্ লাভ করিতেছেন। ছে জানকীনাথ! এই সকল কারণে আপনাকে প্রমান্মা বলিয়া আমি নিশ্চয় করিয়াছি, মূঢ়-ব্যক্তিরা আপনার বিশ্বমোহিনী মারার মুগ্ধ হইরা আপ-নাকে জানিতে পারে না। হে অযোগাপতে! আপনি স্ফিক্তা প্রমেশ্বর, আপনার সৌমিত্রি সেবিত রামরূপকে নমক্ষার করি। হে জগন্নাথ! আমাকে রক্ষা করুন, আপনার मर्कालाक दर्भाहिनी भांता आभारक आवत्र ना करत्र 18b1 8 2 1 । ৫०। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। तामहत्त्व कहित्नम, (ह शक्सर्य-রাজ! আমি তোমার এইরূপ ভক্তি এবং স্তব বাকাদারা সন্তফ হইলাম। এক্ষণে ভূমি আমার সেই নিত্য পরম ধামে গমন কর, যাহা যোগিগাণ বছতর তপদ্যা দারা লাভ করিয়া

জগন্তি যে নিত্যমনন্যবুধ্যা ভক্ত্যা ওদুক্তং স্তবমাগমোক্তম্ তেহজ্ঞানসমূতভবং বিহায়

মাং যাস্তি নিত্যানুত্তবান্থমেরম্।। ৫৬।।
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
ত্মরণ্যকাণ্ডে নবমোহধ্যারঃ।

জয়লীভ করিয়া অজ্ঞানজনিত সংসার বন্ধন পরিত্যাগ পূর্বক অন্তকালে আমাকে প্রাপ্ত হয়। ৫৬।

থাকে। ৫৫। হে জ্ঞানিবর! যে সকল ব্যক্তি অনন্যমনে ভক্তিপূর্বক ত্বংক্ত স্তব পাঠ করে, তাহারা ইহলোকে সর্বত্ত ইতিশ্রীমদধ্যাত্ম রামান্নণে উমামছেশ্বর সন্থাদে অরণ্যকাপে নবমোহধ্যায়ঃ।

मनाद्या ३ था ।

লক্ষ্য বরং স গন্ধবিঃ প্রয়াশুন্ রামমন্ত্রবীৎ।
শবর্ষান্তে পুরোভাগে আশ্রমে রঘুনন্দন ! ॥১॥
ভক্তা ত্বৎপাদকমলে ভক্তিমার্গবিশারদা।
তাং প্রয়াহি মহাভাগ ! সর্বাং তে কথ্যিষ্যতি ॥ ২॥
ইত্যুক্ত্বা প্রথমো সোহিপি বিমানেনার্ক্বর্চ সা।
বিষ্ণোঃ পদং রামনামন্মরণে ফলমীদৃশম্॥ ৩॥

ত্যক্তবা তদ্বিপিনং ঘোরং সিংহব্যাস্তাদিদৃষিত্র শনৈর্থাশ্রমপদং শবর্ষ্যা রঘুননদনঃ॥ ৪॥ শবরী রামমালোক্য লক্ষণেন সমস্থিতম্। আরাস্তমারাদ্ধর্যে প্রভুগ্থায়াচিরেণ সা॥ ৫॥

গন্ধর্রাজ শ্রীরামের নিকট বর্রণাভ করিয়া গমন করিতেং শ্রীরামকে কছিলেন ছে রঘুমন্দন! ভক্তিমার্গানুসারিণী শবরী নাম্মী ভাপদী আপনার পাদপদ্মে ভক্তি সহকারে মনোনিবেশ করিয়া সন্মুখবর্তী আশ্রমে বাদ করিতেছেন। ১। আপনি উংহার নিকট গমন করুন, তিনি দীতা বৃত্তান্ত সমস্তই আপ-নার নিকট সবিস্তবে ব্যক্ত করিবেন। ২। গদ্ধর্বরাজ শ্রীরামকে এইসকল র্বাস্ত কহিয়া সুর্যাসদৃশ সমুজ্জন বিমানে আরোহণ পূর্ব্বক বৈকৃষ্ঠধামে গমন করিলেন। মনুষ্যের।
রাম নাম স্মরণ করিলে অনায়াসে এইরপ ফল লাভ
করিতে পারে। ৩। অনস্তর রয়ুনন্দন লক্ষ্মণের সহিত সিংহ
ব্যান্তাদি দ্বিত সেই ভয়ন্তর বন পরিত্যাগ করিয়া মৃত্ মন্দ
গমনে শবরীর আশ্রমে উপস্থিত হইলেন। ৪। ভক্তিপরায়ণ।
শবরী লক্ষ্মণের সহিত শ্রীরাম্কে সমাগত দেখিয়া সহসা
সাদ্রে গাভোখানান্তর শ্রীরাম্যের পাদ্ধুগালে পতিত হইলেন।

পতিত্বা পাদরোরত্রে হর্ষপূর্ণাশ্রুলোচনা।
স্থাগতেনা ভিনন্দ্যাথ স্থাননে সংন্যবেশয়ৎ ॥ ৬॥
রামলন্দ্রণয়োঃ সম্যক্ পাদে প্রকাল্য ভক্তিতঃ।
তক্ষলেনাভিষিচ্যাক্ষমথার্ঘ্যাদিভিরাদৃতা ॥ ৭ ॥ '
সম্পূক্ত্য বিধিবজামং সম্পেমিত্রি সপর্যায়া।
সংগৃহীতানি দিব্যানি রামার্থং শবরী মুদা ॥ ৮ ॥
কলান্যমৃতকণ্পানি দদে রামায় ভক্তিতঃ।
পাদে সংপূক্ত্য কুসুমেঃ সুগদ্ধৈঃ সামুলেপনৈঃ ॥ ৯
কভাতিথাং রঘুশ্রেষ্ঠমুপবিষ্ঠং সহামুক্তম্ ।
শবরী ভক্তিসম্পন্না প্রাঞ্জনির্কাক্যমত্রবীৎ ॥ ১০ ॥
ভাত্রাশ্রমে রঘুশ্রেষ্ঠ । গুরবো মে মহর্ষয়ঃ।
ভিত্তাঃ শুক্রমণং তেষাং কুর্বান্তী সমুপস্থিতা ॥ ১১

৫। এবং আনন্দাক্ষ পূর্ব লোচনে আগাত সম্ভাষণানন্তর রাম
ও লক্ষ্মণকে উন্তমাসনে উপবেশন করাইরা ভক্তি পূর্বক
ভাঁছাদের পাদ প্রক্ষালন করিয়া দিলেন। অনন্তর শ্বরী
রাম লক্ষ্মণের পাদ প্রক্ষালন জল দ্বারা নিজ্ঞ সর্বাস্থ অভি
যিক্ত করিয়া অর্থাদি দ্বারা যণাবিধি উভয়ের পূজা করিলেন, এবং তপঃ প্রভাবে জীরামের ভবিষাদাগমন জানিতে
পারিয়া যে সকল অমৃত তুল্য ফল সঞ্চয় করিয়া ছিলেন
ভাহাও জীরামকে ভক্তি পূর্বক প্রদান করিয়া স্থান্ধ ও চন্দন
মিশ্রিত নানাবিধ কুসুম দ্বারা জীরামের পাদ পূজন পূর্বক
আভিথা করিলেন, জীরামও আতিথা স্থীকার করিয়া লক্ষ্মণের
সহিত সেই আশ্রমে অবন্ধিতি করিলেন।

অনন্তর ভক্তিমতী শবরী কুলাঞ্জলি ছইয়া জীরামকে কৃছিলেন। ৬:৭৮।৯১০। ছে রঘুলেন্ত! পূর্বেকালে এই আগ্রমে আবার পরম গুকু মহর্বিণণ বাস করিছেন, আবি তাঁহাদিণের দ্বোব নিমিন্ত এইস্থানে উপস্থিত ছিলাম।১১। মহর্বিণণ এই

বহুবর্ষসহস্রাণি গতান্তে ব্রহ্মণঃ পদম্।
গমিষ্যভোহকবন্ধাং তং বদাকৈব দমাহিতা ॥ ১২ ॥
রাম্যে দাশরথর্জাতঃ পরমাত্মা দনাতনঃ।
রাক্ষ্যানাং বধার্থায় ঋষীণাং রক্ষণায় চ ॥ ১৩ ॥
আগমিষ্যতি চৈকাগ্রধ্যাননিষ্ঠা ছিরা ভব।
ইদানীং চিত্রকূটাজাবাশ্রমে বদতি প্রভুঃ ॥ ১৪ ॥
যাবদাগমনং ভস্ক ভাবদ্রক্ষ কলেবরম্।
দৃষ্ট্যেব রাঘবং দক্ষ্যা দেহং যাদ্যুদ্দি তৎপদম্ ॥১৫॥
তবৈধাকরবং রাম ! ত্বন্ধানৈকপরায়ণা।
প্রতীক্ষ্যাগমনং তেহন্ত দকলং গুরুভাষিত্রম্॥১৯॥
তব দন্দর্শনং রাম ! গুরুণানিপে মে নহি।
মোধিমা ঢ়াইপ্রেয়াত্মন্ ! হীনজাভিদমুদ্বা ॥ ১৭ ॥

হানে বহু সহস্র বর্ষ বাস করিয়া ব্রহ্মলোক গমন করিয়া-ছেন, গমন কালে তাঁহারা আমাকে এই আদেশ করিয়াছিলেন যে, "বংদে! তুমি সমাধি অবলম্বন করিয়া এই স্থানেই বাদ কর।১২। সনাতন প্রমাত্ম।রাক্ষ্য কুলের বিনাশ ও ঋষিগাণের রক্ষার নিমিত দশরথের পুত্র চইরাজন্ম গ্রেছণ করিয়াছেন . তিনি সহর এম্থানে আগমন করিবেন, তুমি স্থির চিত্তে ধ্যানা বলম্বন করিয়া সেই বিষ্ণুর সমাগমন প্রতীক্ষা কর। এক্ষণে সেই প্রভু চিত্রকূট পর্বভের আশ্রমে বাস করিতেছেন। ১৩। ১৪। যে কাল পর্যান্ত ভগবান্ এক্সানে না আসিবেন ভাবং কাল শ্রীর ধারণ কর, ভগবানকে স্মাগ্রভ দেখিবা মাত্র অনল মধ্যে নিজ দেছ দয় করিয়া বিফুধাম বৈকুঠে গমন করিবে''। ২৫। ছে রাম! আমি ভোমার শারণ মাত্র অব-লম্বন করিয়া গুরুপদেশানুসারে ভোমার আগমন প্রতীকা क्रिटिकि, अक्रां शक्यों का मकत रहेता । । (इ क्रांदन्! আমার গুৰুগণও আপনার দর্শন লাভ করিতে পারেম নাই, হে অপ্রয়োক্ত্র ! আমি অতি মৃঢ়া ক্রীজাতি এবং হীন কুল-সম্ভৰা, আপুৰার দাসের শত সংখ্যোত্তর দাসের দাসীই

তব দাসন্ত দাসানাং শতসঙ্গোন্তরস্য বা।
দাসীত্বেনাধিকারোংক্তি কুতঃ সাক্ষান্তবৈব হি ॥১৮
কথং রামান্ত মে দৃষ্টন্তং মনোবাগগোচরঃ।
ভোতুংন জানে দেবেশ! কিং করোমি? প্রাণীদ মে
শ্রীরাম উবাচ।

পুংস্তে দ্বীতে বিশেষে। ব। জাতিনামাশ্রমাদয়ঃ।
ন কারণং মন্তজনে শক্তিরেব হি কারণম্॥ ২০॥
বদজ্ঞানতপোভির্বা বেদাধ্যয়নকর্মাভিঃ।
নৈব দ্রকীমহং শক্যো মন্তক্তিবিমুখৈঃ দদা॥ ২১॥
তন্মান্তামিনি। সংক্ষেপান্তক্ষ্যেইং ভক্তিসাধনম্।
দতাং দঙ্গতিরেবাত্র সাধনং প্রথমং স্মৃতম্॥ ২২॥

কার্য্যেও অধিকারী নহি, অভএব আপনার দর্শন আমার পক্ষে
নিভান্ত অসম্ভব। ১৭। ১৮। ছে দাশরথে। আসনি বাদ্ধানর
অগোচর পদার্থ—তবে কিরুপে আমি আপনার দর্শন লাভ
করিলাম। ছে দেবদেব। আমি কিছুই জানিনা কি স্তব
করিব, আপনি নিজ্ঞাণে আমার প্রতি প্রসন্ন হউন। ১৯।

ত্রীরাম কহিলেন, হে বংসে। ন্ত্রী জাতি বা পুরুষ, সজ্জাতি বা অসক্ষাতি, প্রসিদ্ধা বা অপ্রসিদ্ধ নামা, উভ্যাশ্রমাবলম্বী বা অধ্যাশ্রমাবলম্বী হউক, ভক্তি থাকিলেই আমার
ভক্তনে অধিকারী হইতে পারে, আমার ঐ সকল বাজিতেই
সমজান আছে। ২০। হে তাপিনি! মন্তুক্তি বিমুখ ব্যক্তিরা
যক্ত, দান, তপ্রসা, ও বেদ বিহিত কর্মাম্প্রান করিলেও
কথন আমার দর্শন লাভ করিতে পারে না । ২১। হে
ভামিনি! সেই হেতু মন্তুজ্জির উপার ভাষার নিকট সংক্ষেপে
ব্যক্ত করি শ্রবণ কর।—

न्दम् महाक्तित अथम छेनास-मक्ति विवस दामांत्र नामि

বিতীয়ং মহকথালাপন্ত্তীয়ং মদ্পুণেরণম্।
ব্যাখ্যাতৃত্বং মদ্বনাং চতুর্বং লাখনং ভবে ॥ ২৩॥
আচার্যোপাসনং ভদ্রে ! মদ্বুধ্যামায়য়া দদা ।
পঞ্চমং পুণুলীলত্বং যমাদিনিয়মাদি চ ॥ ২৪ ॥
নিষ্ঠা মৎপূক্ষনে নিত্যং ষষ্ঠং দাখনমীরিতম্ ।
নম মন্ত্রোপাসকত্বং লাক্ষং দপ্তমমূচ্যতে ॥ ২৫ ॥
মত্তেক্ষিকা পূজা দর্বভূতেষু মন্যাভিঃ ।
বাহার্যের্যু বিরাগিত্বং শমাদিসহিত্বং তথা ॥ ২৬।
অফানং নবমং ভত্ত্বিচারো মম ভামিনি ! ।
এবং নববিধা ভক্তিদাধনং যদ্য কদ্য বা । ২৭ ॥
ক্রিয়ো বা পুক্ষন্যাপি তির্যাগ্যোনিগত্ব্য বা ।
ভক্তিঃ সঞ্জায়তে প্রেমলক্ষণা শুভলক্ষণে ! । ২৮॥
ভক্তে সঞ্জায়তে প্রেমলক্ষণা শুভলক্ষণে ! । ২৮॥
ভক্তে সঞ্জাত্বাত্রায়াং মতন্ত্রান্তবন্তথা ।
মমান্তব্যিক্ষা মুক্তিস্তব্রেব জন্মিনি ॥ ২৯ ॥
মমান্তব্যিক্ষা মুক্তিস্তব্রেব জন্মিন ॥ ২৯ ॥

চার্চা দিতীর উপার—মন্তণ কার্ত্তন তৃতীর উপার—মচারিত প্রকাশক উপনিষ্দ্রাথ্য। চতুর্থ উপার—এবং অকপটে ওকতে ঈশ্বর বৃদ্ধিক আচার্ট্রোপাসনা পঞ্চম উপার—পবিত্র শ্বতার ও যম আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার নিরম, ধ্যাম, ধারণা, সমাধি এবং প্রতিদিন মং পূজনে তৎপরতা এই করেকটা মন্তক্তির বই উপার—আমার মন্ত্রোপাসনা সপ্তম উপার এবং মন্তক্ত জনের পূজা, সর্বভূতে ঈশ্বর বৃদ্ধি, বাহ্য বস্তুতে বৈরাগ্য ও অক্তরেক্রিয় নিগ্রহ, বহিরেক্রিয় নিগ্রহ এই কএকটা অক্টম উপায়—ভন্ত্রমদি খেত কেতো এই সকল বাক্য দার্গর ব্রহ্মতন্ত্র নিরমণ মন্তক্তির নবম উপায়—হে ভাতলক্ষণে! জীপ্রকাব বা তির্বাগ্রমানিগত যে কোন ব্যক্তির এই নববিধ ভক্তি সাধ্যম সক্ষার হইলে আমাতে প্রেম লক্ষণা ভক্তি উৎপর হ্যা ২২।২০।২৪।২৫।২৬।২৭।২৮। ভক্তি উৎপর হুইলেই ব্রহ্মতন্ত্র নিরমণ হয় তেরু নিরমণ হুইলে ভাহারা এই

স্যান্ত স্থাৎকারণং ভক্তির্মোক্ষস্যেতি স্থানিকিতম্।
প্রথমং সাধনং যস্য ভবেন্তস্য ক্রমেণ তু॥ ৬০॥
ভবেৎ সর্বাং ততো ভক্তিমুক্তিরের স্থানিকিতম্।
যক্ষামেন্তক্তিযুক্তা ত্বং ততোহহং তামুপস্থিতঃ।। ৩১
ইতো মর্দর্শনামুক্তিত্তর নাস্ত্যন্ত সংশয়ঃ।
যদি জানাসি মে ক্রহি সীভা কমললোচনা।। ৩২।
কুব্রান্তে কেন বা নীতা প্রিয়া মে প্রিয়দর্শনা १।৩৩
শবর্ষ্যুবাচ।

দেব ! জানাদি সর্ব্যক্ত সর্বাং ত্বং বিশ্বভাবন । !
তথাপি পৃচ্ছদে ষম্মাং লোকাননুসূতঃ প্রভো!।।৩৪
ততোইহমভিধাস্যামি নীতা তত্তাধুনা স্থিতা।
রাবণেন স্থাতা দীতা লক্ষারাং বর্ত্তেইধুনা।।৩৫।।

জ্ঞান্থ মৃক্তি লাভ করিতে পারে, জ্বন্ম জন্মান্তর প্রতীক্ষা করিতে হর না। ২৯।

হে তামিনি! দেই হেতু ভক্তিই মুক্তির একমাত্র কারণ নিশ্চয় জানিবে, যে সকল ব্যক্তি দিগের প্রথম ভক্তি সাধন ঘটনা হয়, ক্রমশঃ তাহাদিগের অবশিষ্ট উপার সকল সম্পান হইয় থাকে, স্তরাং তাহারা ভক্তি ও তদনস্তর মুক্তি নিশ্চয় লাভ করিতে পারে। হে ভক্তে! যেহেতু তোমার আমাতে ঐকান্তিক ভক্তি জন্মিয়াছে, সেই হেতু আমি স্বয়ং এ স্থানে উপস্থিত হইয়া তোমার নয়ন গোচর হইলাম। ৩০। ৩১। আমার এই দশনেই ভোমার নিশ্চয় মুক্তি লাভ হইবে, সম্প্রতি আমার কমল লোচনা সীভা কোন স্থানে আছেন—প্রিয়দর্শনা প্রিয়াকে কোন্ ভ্রমায়াই বা হরণ করিল, মদি তুমি এ বিষয় কিছু অবগত থাক তবে আমার নিকট ব্যক্ত কর। ৩২। ৩০। শবরী কহিলেন—হে প্রভো! হে দেব! হে বিশ্বভাবন! আপনি সর্মজ্ঞ—সকলই জানেন—তথাপি লোক ব্যবহারকুসারী হইয়া আমাকে এবিষয় যদি জ্ঞিজাসা করিলেন, স্বভরাং বলিতে হইল, হে ভগবন্! রাক্দেশ্বর রাবণ সীভাকে হরণ করিয়াছে এক্ষণে

ভৈঃ সমীপে রামান্তে পশ্পানাম সরোবরম্। প্রায়ুক্নিরিনাম তৎসমীপে মহানগং।। ৩৬।।
চতুর্ভিমন্ত্রিভিঃ সার্দ্ধং স্থুঞীবো বানরাধিপঃ।
ভীতভীতঃ সদা তত্র তিষ্ঠত্যতুলবিক্রমঃ॥ ৩৭॥
বালিনশ্চ ভয়াদ্রাতুন্তদগম্যমুবের্ভয়াৎ।
বালিনন্তব্র গচ্ছ তং তেন সখ্যং কুরু প্রভো!॥৩৮
স্থুঞীবের্ণ স সর্বং তে কার্য্যং সম্পাদয়িষ্যতি।
অহমিনিং প্রবেক্ষ্যামি ত্রাথ্রে রঘুনক্ষন!॥৩৯॥
মুহূর্তং তিষ্ঠ রাজেন্দ্র! যাবদ্ধা কলেবরম্।
যাস্থামি ভগবয়াম তর বিক্ষোঃ পরং পদম্॥৪০॥
ইতি রামং সমামন্ত্রা প্রবিবেশ হুতাশনম্।
ক্ষণায়িধুয় সকলমবিস্তাক্রতবন্ধনম্॥ ৪১॥

তিনি লক্ষায় অবস্থিতি করিতেছেন। ৩৪ ।৩৫। হে রাম ! এই স্থানের অনভিদূরে পম্পানামক সরোবর আছে এ পম্পা সমীপে ঋষামৃক নামক মহাপর্বত — ঐপর্বতে মহাবল পরাক্রম বানর রাজ অতি ভীত হইরা চারিজন মন্ত্রির সহিত বাস করি তেছেন। বানর রাজ জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা বালি কর্ত্তক পরাজিত ও ছত দক্ষি হইয়া তাঁহার ভয়ে যে ঋষ্যমৃক পর্বত আঞ্জ করিয়াছেন এ ঋষামূক পর্বত বালির অগম্য স্থান, যেছেড় বালি ওস্থানে আগমন করিলে ভূতপূর্বে মহর্ষি শাপ নবীভূত ছইয়া ফলবান হইবে। এক্ষণে আপিনি সেই স্থানে গমন করিয়া বানর রাজ স্থগ্রীবের সহিত সথ্য করুন, তিনি আপনার অভিলয়িত সমস্ত কার্য্য সম্পাদন করিবেন। ছে রঘুনন্দন! যাবৎ কাল আমি আপনার সমুখে অগ্নি প্রবেশ পূর্বক भदीत मध कतिया रेवकूछ शारम शमन ना कति, रमरे मूह्र्ड কাল এ স্থানে আপনি অবস্থিতি করুন। ৩৬।৩৭।৩৮। । ৩৯। ৪০। শ্বরী শ্রীরামচন্দ্রের সহিত এইরপ সম্ভাষণা ন্তর অগ্নি প্রবেশ করিয়া কণ কালের মধ্যে অবিদ্যা জনিত সংসার বাসনা পরিত্যাগ পূর্বক **এ**ীরামের

রামপ্রসাদাচ্ছবরী মোক্ষং প্রাপাতি দুর্ল ভম্।
কিং তুর্লভং জগরাথে শ্রীরামে ভক্তবৎদলে।
প্রদরেহধমজন্মাপি শবরী মুক্তিমাপ সা। ৪২॥
কিং পুনর্ত্রাক্ষণা মুখ্যাঃ পুণ্যাঃ শ্রীরামচিন্তকাঃ।
মুক্তিং যান্তীতি তদ্ভক্তিমুক্তিরেব ন সংশয়ঃ॥৪৩॥
ভক্তিমুক্তিবিধায়িনী ভগবতঃ শ্রীরামচন্দ্রন্থ হো!।

অতি তুর্ল যুক্তি লাভ করিলেন । ৪০ ! ভক্ত বংসল ।

ভগরাধ জীরামচন্দ্র প্রদান হইলে জগতে কি কোন বস্তু তুর্ল ভ

হতে পারে ? দেখ নীচকুল সম্ভবা শবরীও শ্রীরাম প্রসাদে

অভি গুর্ল ভ মুক্তিপদ লাভ করিল । শ্রীরামোপাসক পুণ্যশীল

প্রেরান বংশসমূত বাহ্মণের। সে মুক্তিলাভ করিবে ভাহাভে

সন্দেহ কি ? যেহেতু জীরাম ভক্তিই মুক্তির সাধন । ৪২ । ৪৩ ।

৫১ সাব্যাণ ! এই জগতে রাম ভক্তিই মোক্ষের একমাত্র

লোকাঃ কামদুঘাং দ্রিপদ্মযুগলং সেবধমত্যুৎস্কাঃ নানাজানবিশেষমন্ত্রবিততিং ত্যক্তা স্থদূরে ভূশম্। রামং শ্রামতনুং সারারিহ্নদয়ে ভাস্তং ভঙ্গধং বুধাঃ

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে
দশমোহধ্যায়ঃ।

উপায়। অভএব তোমরা সকলে যজের সহিত অভীষ্টপ্রদ শ্রীরামচন্দ্র-চরণারবিন্দযুগল সেবা কর। হে পণ্ডিতগণ। যাগ স্কাদি মন্ত্র সকল পরিভ্যাগ করিয়া কেবল মহাদেবের হৃদররজু স্কাপ নবদ্ধবাদলখাম রামকাপ অনবরত ভাবনা কর, তাহা হইলে অবশ্য মুক্তি লাভ হইবে। ৪৪।

ইভি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্ব সন্থাদে অর্ণ্যকাতে দশ্মোহধাবঃ !

ইতি জীমদধ্যারুরামায়ণে অরণ্যকাওঃ সমাপ্তঃ।

কি कि क्या का ও ম।

প্রথমোহধারঃ

🗃 মহাদেব উবাচ।

ততঃ সলক্ষণো রামঃ শনৈঃ পশ্পাসরস্ত টম্।
ভাগত্য সরসাং শ্রেষ্ঠং দৃষ্ট্য বিস্ময়মাযথে ॥ > ॥
ক্রোশমাত্রং স্থবিক্তীর্ণমগাধামলশম্বরম্।
উৎফুল্লাম্ম জকজ্লার কুমুদোৎপলম গুতম্।। > ॥
হংসকারগুবাকীর্ণং চক্রবাকাদিশোভিতম্।
জলকুকুটকোয়ন্তিকৌঞ্চনাদোপনাদিতম্।। ৩ ॥
নানাপুজ্পলতাকীর্ণং নানাফলসমারতম্।
সতাং মনঃ স্বচ্ছজলং পদ্মকিংজল্কবাসিতম্॥ ৪ ॥
তত্রোপস্পৃশ্য সলিলং পীড়া শ্রমহরং বিভুঃ।
সামুজঃ সরস্ভীরে শীতলেন পথা যথে ॥ ৫ ॥

অনস্তর রাম ও লক্ষ্মণ ধীরে ধীরে পদ্পা সরোবর ভীরে
গমন পূর্বক ভাছার অরপম শোভা সন্দর্শন করিয়া অতিমাত্র
বিশ্বিত ছইলেন। সেই সরোবর কোশ পরিমাণে বিস্তীর্ণ;
ভাহার সলিল অগাধ ও অতীব নির্মাণ; ভাছাতে কমল,
কুম্দ, কহলার প্রভৃতি কুসুম সকল বিক্ষিত থাকার অপূর্বব শোভা ছইরাতে এবং হংস, কারগুর, চক্রবাক্ প্রভৃতি পক্ষিণণ সমাকীণ সেই মহাসরোবরে কোষ্টি, ক্রোঞ্চ প্রভৃতি জলচর পক্ষিণণ কলনাদ করিতেছে। ভাহার কুলপ্রদেশ বিবিধ ফল কুসুম শোভিত লভাক্ষালে সমারভ; সংপুক্ষের অন্তঃ- ঝব্যমূক গিরেঃ পাখে গিছলো রামলক্ষণে।
ধর্মবাণকরো দান্তো জটাবলকলম গুতো।
পশুন্তো বিবিধান্ রক্ষান্ গিরেঃ শোভাং স্থবিক্রমো
স্থাবিস্ত গিরেমু রি চতুর্ভিঃ দহ বানরৈঃ।
হিত্তা দদর্শ তো যান্তো আক্রেরাহ গিরেঃ শিবঃ।
ভরাদাহ হনুমন্তং কো তৌ বীরবরো ? দখে।
গচ্ছ জানীহি ভদ্রং তে বটু ভূজা বিজাকৃতিঃ॥৮॥

নম্পার্কে অতিমাত্র স্থবাসিত হইয়াছে। রামচক্র ও লক্ষননেই সরোবরের স্থানীতল সলিল পান দারা শ্রম নিবারণ করিব।
ছায়ার শীতল পথে গমন করিতে লাগিলেন। ১ । ২ । ৩ ।৪। ৫ ।
জটাবল্কল বিভূবিত ধনুর্বাণধর বিক্রমশালী ইক্রিয় স্থা
পরাধ্যুথ রাম ও লক্ষ্মণ ঋষামৃক পর্বতের পাশ্বে গমন করিতে
করিতে বিবিধ রক্ষরাক্রি ও মহীধ্রের শোভা সন্দর্শন করিতে
লাগিলেন। ৬ ।

সূত্রীব, হতুমান্ প্রভৃতি চারিটা বানরের সহিত সেই পর্বতোপরি বাস করিতেছিলেন। সূত্রীব রাম ও লক্ষনণকে সমাগত দেখিলা ভয়ে মহীধরের শিথার দেশে আবোহণ পুর্বাক হতুমান্কে কহিলেন "হে সংখ! এই দুইটা বীরভ্রেষ্ঠ কে?—তুমি বাক্ষণ বেশ ধারণ পূর্বাক জানিয়া আইস! তোমার মঙ্গল হউক। উহারা কি আমাকে বিনাশ করিবার নিমিত্ত বালি কর্ক্ক প্রেরিত হইয়া আগমন করিয়াছে? যাহা

বালিনা প্রেষিতে কিন্তা মাং হন্তং সমুপাগতে।
তাত্যাং সম্ভাষণং কুড়া জানীহি হৃদয়ং তয়োঃ ॥

যদি তে দুইহৃদয়ে সংজ্ঞাং কুরু করাগ্রতঃ।
বিনয়াবনতো ভূড়া এবং জানীহি নিশ্চয়ম্॥ ১০॥
তথেতি বটুরপেণ হন্দান্ সমুপাগতঃ।
বিনয়াবনতো ভূড়া রামং নজেদমন্ত্রীৎ ॥ ১১॥
কৌ যুবাং পুরুষব্যান্ত্রো যুবানো বীরসম্মতো।
ভোতয়ন্তে দিশঃ সর্বাঃ প্রভয়া ভাক্ষরাবিব ॥ ১২
যুবাং ত্রৈলোক্যকর্তারাবিতি ভাতি মনো মম।
যুবাং প্রধানপুরুষে জগদ্ধেভূ জগম্ময়ে ॥ ১০॥
মায়য়া মানুষাকারে চরন্তাবিব লীলয়া।
ভূভারহরণার্থায় ভক্তানাং পালনায় চ॥ ১৪॥

অবতীর্ণাবিহ পরে চরস্তে ক্লি জারুতী।
জগৎস্থিতিলয়ে সর্বাং লীলয়া কর্তুমুদ্যতো ॥ ১৫॥
স্বতন্ত্রো প্রেরকো সর্বাহ্ণদেশ্বরে।
নরনারায়ণো লোকে চরন্তাবিতি মে মতিঃ ॥ ১৬॥
শ্রীরামো লক্ষ্মণং প্রাহ পর্ট্রেশিণম্।
শব্দশাস্ত্রমশেষণ শ্রুতং নুনমনেকধা ॥ ১৭॥
অনেন ভাষিতং রুৎস্কং ন কিঞ্চিদপশব্দিতম্।
ততঃ প্রাহ হন্মন্তং রাঘবো জ্ঞানবিগ্রহঃ ॥ ১৮॥
অহং দাশর্থী রামন্ত্রয়ং মে লক্ষ্মণোহনুজঃ।
সীতয়া ভার্যয়া সার্দ্ধং পিতুর্ব্বচনগোরবাৎ ॥ ১৯॥
আগতন্ত্র বিপিনে স্থিতোহহং দণ্ডকে দ্বিজ !।
তত্র ভার্যয় ক্রাতা রক্ষ্মা কেনচিম্মম।
ভামস্বেই মিহায়াতো ত্বং কো বা ক্ষ্ম বা বদ ॥২০॥

ষ্টক সম্ভাষণ করিয়া উহাদিণের হৃদর অবগত হও। যদি উহারা হুফ্ট বুদ্ধিতে আগমন করিয়া থাকে, তবে হস্ত সংহতে আমাকে অৰগত করাইবে। তুমি বিনয় নত্র হইয়া উহা-দিগের সহিত আলাপ করিবে '। ৭।৮।৯।১০।

হত্মান্ স্থাীবের বাকা শ্রবণ করিয়া ব্রাহ্মণ রূপ ধারণ পূর্বক রামের নিকট উপস্থিত ইইলেন ও বিনয়াবনত ইইয়া কহিলেন "আপনারা কে? স্থা বেমন প্রভাষারা দশদিক্ আলোকিত করেন—আপনারাও সেই রূপে দশদিক্ আলোকিত করিতেছেন। আপনাদিনের আকারে সম্পূর্ণ বীরভাব লক্ষিত ইইতেছে। আপনাদিনের আকারে সম্পূর্ণ বীরভাব প্রক্ষ বলিয়া প্রতীতি হয়। আমার বোধ হয় আপনারা ত্রিলাকের অধীর্য ও জ্গতের একমাত্র কারণ—জ্বগন্মর প্রধান প্রক্ষ অর্থাৎ নারায়ণের অবতার, তাহার কোন সন্দেহ নাই। বস্মতী-ভার বিমোচন ও ভক্রগণের। প্রতিপালন নিমিত্ত

মারা প্রভাবে মনুষ্যভাবে অবতীর্ণ হইয়া ক্ষজ্রিয়াকারে বিচরণ কারতেছেন। আমার বোধ হয় আপনারা জগতের স্থিতি ও প্রলয়ের কারণ-—দেই স্বাধীন সর্বলোক হৃদয়বাদী নরনারায়ণ, লীলা প্রকাশের নিমিক্ত এই জগতে বিচরণ করিতেছেন '। ১১।১২।১৩।১৪।১৫।১৬।

রামচন্দ্র লক্ষণকে কহিলেন "হে বংস! দেখ এই ব্রাহ্মণ কিরপ শব্দ শাস্ত্রে জ্ঞানবান্, যে সকল বাক্য প্রয়োগ করিল তাহার একটিও অপভংশ শব্দ নহে"। অনন্তর হত্ত্য মান্কে কহিলেন "হে ব্রাহ্মণ! জামি মহারাজ দশরথের পুত্র রাম, ইনি আমার কনিষ্ঠ লক্ষ্মণ, পিতৃ বাক্য পালন নিমিত্ত ভার্য্যা সীতার সহিত্ত দওকারণ্যে আসিয়াছিলাম। সেই কাননে কোন রাক্ষ্য আমার ভার্য্যাকে হরণ করিয়াছে। তুমি কে? কাহার প্রেরিত? সবিস্তার বর্ণনা কর ১২৭১৮১১৯২০।

বটুরুবাচ।

সূত্রীবো নাম রাজা যো বানরাণাং মহামতিঃ।
চতুর্ভিমন্ত্রিভিঃ দার্ছং গিরিমূর্ধনি ভিষ্ঠতি॥ ২১॥
ভাতা কনীরান্ সূত্রীবো বালিনঃ পাপচেতদঃ।
তেন নিক্ষাশিতো ভার্য্যা হৃতা তন্তেহ বালিনা ২০
ভদ্তরাদৃষ্যমূকাখ্যং গিরিমান্ত্রিত্য সংস্থিতঃ।
অহং সূত্রীবসচিবো বায়ুপুজাে মহামতে।॥ ২০॥
হন্মান্নাম বিখ্যাতাে অঞ্জনাগর্ভসম্ভবঃ।
তেন দখ্যং ত্বরা যুক্তং স্থ্রীবেণ রঘূত্তম !॥ ২৪॥
ভার্য্যপহারিণং হন্তং দহারত্তে ভবিষ্যতি।
ইদানীমেব গচ্ছাম আগচ্ছ যদি রোচতে॥ ২৫॥

এরাম উবাচ।

অহমপ্যাগতন্তেন সখ্যং কর্ত্তুং কণীশ্ব !। স্থ্যস্তস্তাপি যৎকার্য্যং তৎকরিষ্যাম্যসংশয়ম্।।

ব্রাহ্মণ কহিলেন, "বানরগণের অধীশ্বর মহাস্থা স্থগীব চারিটী মন্ত্রির সহিত এই পর্বতে বাস কুরিভেছেন। মহাস্থা স্থগীব পাপ চিন্ত বালির কনিষ্ঠ ভাতা। বালি স্থগীবকে রাজ্য হইতে বহিচ্চৃত করিয়া ভাঁছার ভার্যাকে হরণ করিয়াছে। আমি স্থগীবের সচিব—অঞ্জনা গর্ভসম্ভূত সমীরণাত্মছ—নাম হত্মান্। বালি ভয়ে ঋষামৃক পর্বত আশ্রম করিয়া অবস্থান করিতেছি। হে রামচন্দ্র! আপনি সেই স্থগীবের সহিত মৈত্রী ককন, তিনি আপনার শক্ত-বধে সহায় হইবেন। যদি ইক্ছা হয় তবে আগমন ককন বিলম্ব করিবেন না"। ২১। ২২। ২৪। ২৫।

শ্রীরামচন্দ্র কছিলেন ''হে কপীশর ! আমি স্থাতীবের সহিত সংগ্য করিতেই আগমন করিরাছি ৷ আমার সহিত ডাহার সংগ্য সংস্থাপন হইলে আমি ভাহার প্রিরকার্য্য অর্থাৎ হন্মান্ স্বস্থপে ছিতো রামমথান্তবীৎ।
আরেহতাং মম কলো গচ্চামঃ পর্বভোপরি। ২৭
যত্র তিষ্ঠতি স্থ্রীবো মন্ত্রিভির্বালিনো ভয়াৎ।
তথেতি তন্থারুরোই কলাং রামোইথ লক্ষাণঃ॥২৮
উৎপপাত গিরেমূর্দ্ধি কণাদেব মহাকপিঃ।
রক্ষদ্ধায়াং সমাপ্রিত্য স্থিতো তো রামলক্ষাণে ২৯
হন্মানপি স্থ্রীবমুপগম্য কৃতাঞ্জলিঃ।
ব্যেতু তে ভয়মায়াতো রাজন্। প্রীরামলক্ষাণে ॥৩০
শীঘু মুন্তিষ্ঠ রামেণ স্থাং তে যোজিতং ময়া।
আমিং সাক্ষিণমারোপ্য তেন স্থাং জ্বতং কুরু ॥৩০
ততোহতিহর্ষাৎ স্থ্রীবঃ সমাগম্য রঘূত্রমম্।
রক্ষশাথাং স্বয়ং ছিত্বা বিষ্টরায় দদে মুদা॥ ৩২ ॥

বালি বধ নিশ্চয় করিব''। অনন্তর হনুমান্ সীয় রূপ পরিএছ
করিয়া রামচন্দ্রকে বলিলেন ''আপনারা আমার ক্ষন্ধে আরে।
হণ করুন আপনাদিগকে পর্বতোপরি লইয়া যাইব । তথায
মন্ত্রিগণের সহিত স্থানিব বালিতয়ে অবস্থান করিতেছেন''।
অনন্তর রাম ও লক্ষণ হনুমানের স্কন্ধে আরোহণ করিলেন।
মহাবল হনুমান্ ক্ষণকাল মধ্যে ভাহাদিগকে পর্বতোপরি
লইয়া রক্ষছায়ায় অবস্থান করাইল। পরে স্থানীবের নিকট
উপস্থিত হইয়া রভাঞ্জলিপুটে কছিল ''হে রাজন্! আপনি ভর
পরিত্যাগ করুন, শ্রীরামচন্দ্র ও লক্ষণ আগমন করিয়াছেন,
শীত্র গমন পূর্বক অয়ি সাক্ষি করিয়া তাঁছার সহিত স্থা
সংস্থাপন করুন । ২৬ । ২৭ । ২৮ । ২৯ । ৩০ । ৩১ । অনন্তর
স্থানীর অতিমাত্র আনন্দিত হইয়া রামের নিকট গমন পূর্বক
স্থান অতিমাত্র আনন্দিত হইয়া রামের নিকট গমন পূর্বক
স্থান ব্রক্ষণাখা ভয় করিয়া বামচন্দ্রকে আসন প্রদান করিলেন।
হসুমান্ও এক বৃক্ষণাখা ছেদন করিয়া লক্ষ্মণকে উপবেশন

হন্মান্ লক্ষাণায়াদাৎ স্থাবায় চ লক্ষাণঃ।
হর্ষেণ মহতা বিফাঃ সর্ব্ব এবাবত ছিরে ॥ ৩৩॥
লক্ষাণস্ত্রবীৎ সর্বাং রামর্ত্তাল্ডমাদিতঃ।
সনবাসাভিগমনং সীতাহরণমেব চ । ৩৪॥
লক্ষাণাক্তং বচঃ শ্রুত্বা স্থাবারামমন্ত্রবীৎ।
অহং করিষোরাজেন্দ্র ! সীতায়া: পরিমার্গণম্।৩৫
সাহায্যমপি তে রাম! করিষো শক্রঘাতিনঃ।
শুণু রাম! মমাদৃষ্টং কিঞ্চিত্তে কথয়াম্যহম্॥ ৩৬॥
একদা মল্প্রিভঃ নার্দ্ধং স্থিতোহহং গিরিমুদ্ধনি।
বিহায়সা নীয়মানাং কেনচিৎপ্রমদোত্ত্যাম্॥৩৭॥
কোশন্তী রামরামেতি দৃষ্ট্রাম্মান্ পর্বতোপরি।
আমুচ্যাভরণান্যাশ্র স্বোস্তরীয়েণ ভামিনী॥ ৩৮॥
নিরীক্ষ্যাধঃ পরিত্রের কোশন্তী তেন রক্ষ্যা।
নীয়াহং ভূষণান্যাশ্র গুহায়ামক্ষিপং প্রভো!।৩০॥
নীয়াহং ভূষণান্যাশ্র গুহায়ামক্ষিপং প্রভো!।৩০॥

করাইলেন। লক্ষ্মণও তাহার এক দেশে স্থগীবকে উপবেশন করাইলেন। লক্ষ্মণ রামের বনবাস ও সীতা হরণ প্রভৃতি সমুদ্য র্জ্ঞান্ত বর্ণন করিলেন। স্থগ্রীব লক্ষ্মণোক্ত বাক্য শ্রবণ করিয়া রামচন্দ্রকে কহিলেন 'হে রামচন্দ্র! স্থামি সীতার অব্যেষণ ও আপনার শক্ত বিনশীশে বিশ্বের সাধায়্য করিব। হেরামচন্দ্র! আমি যাহা দেথিয়াছি তাহা সবি-শুরে কহিতেছি শ্রবণ করুন।

একদা আমি মরিগণের সহিত পর্কভোপরি অবস্থান করিতেছিলাম, সেই সময়ে এক পাপাঝা একটা রমণীকে ছরণ করিয়া আকাশ পথে গমন করিতেছিল। সেই বরবর্নিনী হা রাম! হা রাম! বলিয়া রোদন কবিতে করিতে আমাদিগকে দর্শন করিয়া অঙ্ক হইতে আভরণ উন্মোচন পূর্বক উত্তরীয়ার্দ্ধে বন্ধন করিয়া নিক্ষেপ করি-লেন। হে প্রভা! আমি সেই আভরণ গুলি লইয়া গুহা ইদানীমপি পশ্য ত্বং জানীহি তব বা নবা।

ইত্যুক্ত্বানীয় রামায় দর্শয়ামাস বানরঃ।। ৪০॥

বিমৃচ্য রামস্তদ্ধ্বা হা সীতেতি মুভ্রমুঞ্চঃ।

হুদি নিক্ষিপ্য তৎসর্বাং রুরোদ প্রাক্তবা যথা।।৪১

আখাস্থ রাঘবং ভাতা লক্ষ্মণো বাক্যমন্তবীৎ।

আচিরেণৈব তে রাম ! প্রাপ্যতে জানকী শুভা।

বানরেক্রসহায়েন হত্বা রাবণমাহবে।। ৪২॥

মুগ্রীবোহপ্যাহ হে রাম! প্রতিজ্ঞাং করবাণি তে।

সমরে রাবণং হত্বা তব দাস্থামি জানকীম্।। ৪৩॥

ততো হনুমান প্রজ্বাল্য তয়োরগ্রিসমীপতঃ।

তারুভৌ রামস্থ্রীবাবগ্রে সাক্ষিণি তিষ্ঠতি ॥ ৪৪॥

বাহু প্রসার্য্য চালিক্ষ্য পরক্পরমকল্যমে।।

সমীপে রঘুনাথক্ত মুগ্রীবঃ সমুপাবিশ্ব ॥ ৪৫॥

মধ্যে রক্ষা করিয়াছি; এখন আপান দর্শন করুন ঐ গুলি দীতার আতরণ কি না। অনস্তব স্থাীব বস্ত্র বন্ধ অলঙ্কার গুলি জ্ঞীরামচন্দ্রকে প্রদান করিলেন। রামচন্দ্র বস্ত্র গ্রেষ্টি শিথিল করিয়া দীতার অলঙ্কার বলিয়া স্থির করিলেন এবং তাহা হৃদয়ের স্থাপন করিয়া দামান্য মনুষোর মত 'হা দীতা' হা দীতা'! বলিয়া রোদন করিতে লাগিলেন। ৩২। ৩০। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

লক্ষনণ শ্রীরামকে সাস্থনা করতঃ কহিলেন "হে আর্যা!
আপনিশোক করিবেন না, বানরেন্দ্র স্থ্রীবের সাহায্যে আমরা
অচিরে রাবণ বিনাশ পূর্কক জানকীকে লাভ করিব"।
স্থ্রীবও কহিলেন "ছে রামচন্দ্র! আমি প্রভিজ্ঞা করিভেছি
সংগ্রোমে রাবণকে বিনাশ করিয়া আপনার জানকী আপনাকে
দিব।" অনস্তর হস্মান্ অগ্নি প্রজলিত করিলে রাম ও স্থ্রীব
পরস্পর বাহু প্রসারণ পূর্কক আলিঙ্গন করিলেন। পরে স্থ্রীব
রামের নিকট উপবেশন করিয়া আক্রেভান্ত কীর্ত্তন করিছে

সোদশং কথয়ামাদ প্রণয়াজঘুনায়কে

সংখ ! শৃণু মমোদন্তং বালিনা মৎকৃতং পুরা ॥ ৪৬'।

ময়পুলোহথ মায়াবী নায়া পরমন্তর্মদঃ ।

কিন্ধিন্দ্যাং সমুপাগত্য বালিনং সমুপান্ধয়ৎ ॥৪৭।

সিংহনাদেন মহতা বালী তু তদমর্ঘণঃ ।

নির্যযৌ ক্রোধতান্ত্রাক্ষো জ্বান দৃঢ়মুর্ফিনা ॥ ৪৮ ॥

ছুজাব তেন সমিয়ো জগাম স্বপ্তহাং প্রতি ।

অমুদুজাব তং বালী মায়াবিনমহং তথা ।

ততঃ প্রবিষ্টমালোক্য প্রহাং মায়াবিনং রুষা ॥ ৪৯

বালী মামাহ তিষ্ঠ তং বহির্গজ্বাম্যহং প্রহাম ।

ইত্যুক্ত্বাবিশ্য স গুহাং মাসমেকং ন নির্যযৌ ॥৫০॥

মাসাদৃন্ধং গুহাদ্বারান্নির্গতং রুধিরং বছ ।

তদ্ভী পরিতপ্তাক্ষো মৃতো বালীতি দুংগিতঃ ॥৫১

গুহাদ্বারি শিলামেকাং নিধায় গৃহমাগতঃ।
ততোহক্তবং মৃতো বালী গুহায়াং রক্ষনা হতঃ।।৫২
তচ্ছুদ্বা দুঃধিতাঃ সর্বে মামনিচ্ছস্তমপুতে।
রাজ্যেহভিষেচনং চক্রুঃ সর্বে বানরমন্ত্রিণঃ॥ ৫৩॥
শিক্তং তদা ময়া রাজ্যং কিঞ্চিৎকালমরিন্দম!।
ততঃ সমগেতো বালীমামাহ পরুষং রুষা॥ ৫৪॥
বছ্ধা ভৎর্ময়িদ্বা মাং নিজ্মান চ মুক্টিভিঃ।
ততো নির্গত্য নগরাদধ্যবং পরয়া ভিয়া।। ৫৫॥
লোকান্ সর্বান্ পরিক্রম্য খাষ্যমূকং সমাত্রিতং
খাষেঃ শাপভয়াৎ সোহপি নায়াতীমং গিরিং প্রভে!!
তদাদি মম ভার্যাং স স্বয়ং ভুংক্তে বিমূচ্ধীঃ।
আতো তুঃখেন সন্তপ্তো হৃতদারো হৃতাভ্রয়ঃ॥৫৭॥

লাগিলেন—ছে সথে! পূর্কে বালি আমাকে যে রূপে নিরা-ক্বত করিয়াছে ভাহা শুবণ করুন।

অতি মারাণী পরমহর্মাদ নামক মরপুত্র অস্তর কিছিন্না।
নগরে আগগমন করিয়া সিংহনাদ করত বালিকে সমরে
আহ্বান করিল; বালি তাহার সিংহ নাদে উত্তেজিত
হইরা অতিমাত্র ক্রোধভরে নির্গত হইল ও স্থাদ্য মুষ্টি
দ্বারা তাহাকে প্রহার করিল। মারাণী সেই মুষ্টি
প্রহারে অতিশার ব্যথিত হইয়। আপনার গুহায় প্রবেশ
করিল। বালী ও আমি ভাহার অন্ত্রন্ন করিলাম। অনন্তর
মস্তরকে গুহামধ্যে প্রবিষ্টা দেবিয়া বালী আমাকে কহিল
"তুমি গুহাদ্বারে অবস্থান কর আমি ইহার মধ্যে প্রবেশ করি"
এই বলিয়া সে গুহামধ্যে প্রবেশ করিল; আমি এক মাস
গুহাদ্বারে অবস্থান করিলাম, কিন্তু বালী ইহার মধ্য হইতে
নির্গত হইল না। এক মাসের পর গুহা হইতে প্রভূত
শোণিত নির্গত হইল। আমি তদ্ধানি বালীর মরণ অব-

ধারণ করিয়া নিভান্ত ভূঃখিত হইলাম। অনন্তর এক খণ্ড প্রস্তর দ্বারা গুহান্থ কন্ধ করিয়া গৃহে প্রভ্যাগমন পূর্বক কহিলাম—রাক্ষন গুহামধ্যে বালীকে নিহত করিয়াছে; ভাহা শ্রবণ করিয়া সকলে অত্যন্ত ভূঃখিত হইল। আমি অনিচ্ছুক হইলেও মন্ত্রিগণ অঞ্জাকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিল। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১।

"হে শক্রনিস্বন! আমি কিঞ্ছিৎ কাণ রাজ্য শাসন করিতে লাগিলাম। সমন্তর বালী সমাগত হইয়া আমাধেক পক্ষব বাক্যে ভৎ সনা করিয়া মুক্তি প্রহার করিল। আমি ভয়ে নগর হইতে বহির্গত হইয়া সমস্ত লোক পরিভ্রমণ পূর্ব্বক এক্ষনে ঋষ্যমূক পর্কতে বাস করিভেছি। বালী ঋষির শাপে এই পর্বতে আগমন করিতে সক্ষম নহে। হে প্রভো! ঐ বিস্তু সেই প্র্যান্ত আমার ভাষ্যাকে ভোগ করিতেছে। আমি

বসাম্যন্ত ভবৎপাদসংস্পর্শাৎ স্থ্রিভোম্ম্যংম্। মিত্রতুঃখেন সস্তক্ষো রামো রাজীবলোচনঃ। ৫৮॥ ছনিষ্যামি তব ছেষ্যং শীঘ্রং ভার্য্যাপহারিণমু । .ইতি প্রতিজ্ঞামকরোৎ সুগ্রীবস্ত পুরস্তদা॥ ৫৯॥ সুগ্রীবোহপ্যাহ রাজেন্দ্র ! বালী বলবতাং বলী। কথং হনিষ্যতি ভবান্ দেবৈরপি দুরাসদম্॥ ৬০॥ শৃণু তে কথয়িষ্যামি তদ্বলং বলিনাম্বর !। कनाहिष्तुन्फू जिनीय यहाकारत्रा यहावनः ॥ ७১॥ কিঞ্জিলামগমজাম ! মহামহিষৰপথক্। যুদ্ধায় বালিনং রাত্রো সমাহ্বয়ত ভীষণঃ॥ ৬২॥ च्छ्जाश्मश्याताश्मी वाली शत्रप्रकाशनः। মহিষং শৃষ্কয়োর্থ পাতয়ামাস ভূতলে। ৬০।। পালেনৈকেন তৎকায়মাক্রম্যাক্ত শিরো মহৎ। হপ্তাভ্যাং ভাময়ং শ্ছিত্বা তোলয়িত্বাক্ষিপভূবি ॥৬৪॥

জভদারও আশ্ররবিহীন হইয়া বাস করিতেছি। অদ্য আপনার ान **मःम्भार्म कशक्रिः इश्थ मृत इहेन**"। द्राङ्गीवरनाठन রামচন্দ্র মিত্রভ্বঃখে অতিশয় সম্ভপ্ত হইয়া কহিলেন, "নথে! খানি শীন্তই ভোমার ভার্যাপহারী শত্রুকে বিনষ্ট করিব "। 160140160160100180

सूधीव कहिलन, "हि बामहत्तः! वाली वीद्रशालब मध्य ্ষ্দিতীয়, দেবগণও তাহাকে পরাজয় করিতে সক্ষম নহেন। শাপনি সেই বালীকে কিব্লপে বিনাশ করিবেন? ছে বীর-শ্রেষ্ঠ ! আমি বালীর বলবীর্য্যের বিষয় কিঞ্চিৎ বলিতেছি বৰণ করুন। এক সময় ছন্তুভি নামে এক মহাবল অস্ত্র মহিৰ রূপ ধারণ করিয়া রাত্রিকালে বালীকে যুদ্ধে আহ্বান ক্রে, বালী ভাছার দর্প সহ্য না করিয়া অভিশয় ক্রোধ পূর্বক শৃঙ্গদ্বয় ধারণ করিয়া মহিষকে পৃথিবীতে পাতিত 4রিল। পারে এক পদ দারা তাহার শরীর আক্রমণ করিয়া করিতে চরণের অস্কুষ্ঠের হারা তাহা দশ গে**জন দূ**রে নিক্ষেপ

প্রপাত তচ্ছিরো রাম ! মাত্রশাশ্রমগ্রিথো : যোজনাৎপতিতং তম্মামানেরাশ্রমমগুলে।। ৬१॥ রক্তর্ফিঃ পপাতোচৈদ্ ই। তাং ক্রোধমূচ্ছি তঃ। মাতকো বালিনং প্রাহ যদ্যাগস্থানি যে গিরিম।।৬৬ ইতঃপরং ভগ্নশিরা মরিষ্যাদি ন দংশয়ং। এবং শপ্তস্তদারভ্য ঝব্যমূকং ন যাত্যদৌ।। ৬৭।। এতজ্ঞাত্বাহ্মপ্যত্র বদামি ভয়বর্জিতঃ। রাম ! পশ্য শিরস্তম্য দুন্দুভেঃ পর্বতোপমম।৬৮॥ তৎক্ষেপণে যদা শক্তঃ শক্তন্তং বালিনো বধে। ইত্যক্তা দর্শয়ামাস শিরস্তদ্গিরিসন্নিভম ॥ ৬৯ ॥ দৃষ্টা রামঃ স্মিতং কুড়া পাদাঙ্গুষ্ঠেন চাকিপং। দশযোজনপর্য্যন্তং তদন্ত তমিবাভবৎ ॥ ৭০ ॥

হস্তনম দারা মন্তক ঘূর্ণিত ও ছিন্ন করিয়া পৃথিবীতে নিক্ষেপ করিল। সেই মস্তক এক যোজন দূরে মাতক নামক মহর্ষির আশ্রমে পতিত হওরায় তথায় প্রভুত শোণিত রুঠি হইল। **उम्मिश्न महर्षि (क्वार्थ अधीत हहेश) वालीक कहिलन—रि**म তুমি অদ্য হইতে এই পর্বতে আগমন কর তবে নিশ্চয় ভগ্ন-শিরা হইরা কাল কবলে পতিত হইবে। মুনিশাপ বশতঃ বালী সেই অবধি ঋষামৃকে আগমন করিতে পারে না; আমি ও তাহা জাত হইয়া নিউয়ে এই পর্বতে বাস করিতেছি। হে রাম। ঐ দেখুন ত্বন্দুভির পর্বত প্রমাণ মস্তক পতিত রহিষাছে। আপনি যদি উহা নিক্ষেপ করিতে শক্ত হন—ভবে নিশ্চয় বালী বধে সক্ষম হইবেন "। এই কথা বলিয়া স্থাীব সেই रेजन मन्निक मस्तक हर्मन कर्ष्याहराने । ७०। ७५ । ७०। ७८ । ७८ । ७७ । ७१ । ७७ । ७० ।

রামচন্দ্র ত্বন্দুভির মস্তক দর্শন করিয়া ঈষৎ হাস্য করিতে

সাধু সাধিতি তং প্রাহ্ স্থ্রীবো মন্ত্রিভিঃ সহ।
পুনরপ্যাহ স্থ্রীবো রামং ভক্তপরায়ণম্।। ৭১ ।।
এতে তালা মহাসারাঃ সপ্ত পশ্য রঘূত্তম !।
একৈকং চালয়িত্বাসৌ নিঃপত্রান্কুরুতেইঞ্জসা।।৭২॥
यদি স্বমেকবানেন বিদ্ধা ছিদ্রং করোপি চেহ'।
হতস্তরা তদা বালী বিশ্বাসো মে প্রক্লায়তে।
তথেতি ধন্তরাদায় সায়কং তত্র সন্দধে।। ৭৩॥
বিভেদ চ তদা রামঃ সপ্ততালান্মহাবলঃ।
তালান্ সপ্ত বিনির্ভিন্ত গিরিং ভূমিং চ সায়কঃ ॥৭৪
পুনরাগত্য রামস্ত ভূগীরে প্রবিৎ স্থিতঃ।
তত্তোহতিহর্ষাৎ স্থ্রীবো রামমাহাতিবিস্মিতঃ॥৭৫
দেব ! স্বং জগতাং নাথঃ পরমাত্মা ন সংশয়ঃ।
মৎপূর্ব্বক্বতপুণ্যোধ্যঃ সঙ্গতোহদ্য ময়া সহ।। ৭৬॥

করিলেন। সুগ্রীব তাহা দর্শন করিয়া মন্ত্রীগণের সহিত সাধুবাদ প্রদান পূর্বক পুনর্বার ভক্তবংসল রামকে কহিলেন, 'হে রঘুকুলতিলক! ঐ দেখুন অত্যে সাতটা মহাসার তাল রক্ষ রহিয়াছে—বালী বাভ্রলে উহার এক একটাকে চালিত করিয়া পত্র বিরহিত করিতে সক্ষম। আপনি যদি এ সাতটা তালরক্ষ এক বাণে ছিন্ন করিতে পারেন ভবেই আমার বিশ্বাস হল যে, আপনি বালীকে নিহত করিতে পারিবেন। রামচন্দ্র প্রাবের বাক্য স্থীকার করিয়া ধন্ত্যাহণ পূর্বক তাহাতে শর যোজনা করিলেন ও অনায়াসে সাতটা তাল রক্ষ এক বাবে বিভিন্ন করিলেন। রাম-নিক্ষিপ্ত-বাণ সপ্ততাল, মহী-ধর ও ধরণী বিভিন্ন করিয়া পূর্ববং তৃণীর মধ্যে অবস্থান করিতে লাগিল। রামচন্দ্রের সেই ব্যাপার নিরীক্ষণ করিয়া স্থ্রীব অতিশ্র আনন্দিত ও বিশ্বিত হইয়া কহিলেন, 'হে দেব! আপনি জগতের ঈশ্বর—পরমান্ধা তাহাতে সন্দেহ নাই; পূর্বন-

ত্বাং ভক্ত বি মহাত্বানঃ সংসারবিনির্ভয়ে।
ত্বাং প্রাপ্য মোকসচিবং প্রার্থিরেইইং কথং ভবমং
দারাঃ পুজা ধনং রাজ্যং সর্বাং জ্মায়য়া কৃত্ম।
অতোইইং দেবদেবেশ! নাকাক্ষেইন্যৎপ্রসীদ মে
আনন্দান্মভবং জাদ্য প্রাপ্তোইইং ভাগ্যগৌরবাং।
মৃদর্বং যতমানেন নিধানমিব সৎপতে!॥ ৭৯॥
আনাদ্যবিস্তাসংসিদ্ধং বন্ধনং ছিয়মদ্য নঃ।
যজ্জদানতপঃকর্মপুর্তেকাদিভিরপ্যসৌ॥ ৮০॥
ন জীর্যাতে পুনর্দার্ডাং ভক্লতে সংসৃতিঃ প্রভো!।
ত্বৎপাদদর্শনাৎ সদ্যো নাশমেতি ন সংশয়ঃ॥ ৮১॥
ক্রণান্ধ্যপি যক্তিত্তং জ্রি ভিস্তত্যচঞ্চলম্।
ভস্তাজ্ঞানমনর্থানাং মূলং নশ্ততি তৎক্ষণাং॥ ৮২

জন্মার্জ্জিত পুণ্যকলে আমি আপনাকে প্রাপ্ত হইয়াছি। ৭০:। १८। १२। १०। १८। १৫। १७। महाचा वाक्तिगर मध्या গ্রাম্থ্য শিথিণ করিবার নিমিত্ত আপনাকে পূজা করিয়: থাকেন, আমি দেই মোক্ষপ্ৰদ আপনাকে প্ৰাপ্ত হইয়া কখন সংসারে লিপ্ত হইব না—ক্সী, পুত্র, ধন, রাজ্য, সকলই আপন মারা কম্পিত। হে দেব! আপনি প্রসন্ন হউন, আমি উঠা প্রার্থনা করি না। মৃত্তিকার নিমিত্ত ভূমি থনন করি: করিতে প্রভুত রত্তরাশি প্রাপ্ত হইলে লোক বেমন আনন্দ: মুভব করে, অন্য ভাগ্যবলে অাপনাকে প্রাপ্ত ছইরা সেইরু অনির্বাচনীয় আনন্দানুভব করিতেছি। মারাজনিত বি^{ন্তু} বাসনারপ বন্ধন অদ্য বিচ্ছিন্ন ছইয়াছে; যজ্ঞ, দান, ভপস্ত জলাশারোৎসর্গাদি করিলেও যাহা শিখিল হয় না, প্রত্যুত দৃঢ়ভা ভজনা করে, সেই ভয়ানক সংসার বন্ধন আপনাঃ **চরণ দর্শন মাত্র বিনষ্ট হয় । ৭**৭ । ৭৮ । ৭৯ । ৮০ [।]৮১ । যাহার চিত্ত চঞ্চল ভাবে ভোমাকে ক্ষণকাল ধ্যান করে তাছার অনর্থ মূল অজ্ঞান একবারে বিন্ত হয় । ৮২। অতএ

তত্তিষ্ঠতু মনো রাম ! ত্রি নান্তে মে সদা ॥৮৩॥ | সর্বাহ ব্রহৈত্ব মে ভাতি ক মিত্রং क চ মে রিপুঃ। রামরামেতি ঘদাণী মধুরং গায়তি ক্ষণম। স ব্রহ্মহা স্থরাপো বা মুচ্যতে সর্ব্বপাতকৈঃ ॥৮৪॥ न कारङक्कश्तिङा शः त्राय ! न ह नात्र स्थानिक म्। ভক্তিমেব **मना काष्ट्रिक इ**शि वश्वविद्याहनीम् ॥৮৫। ত্বনারাক্তসংদারস্তদংশোহহং রঘূত্তম!। স্বপাদভক্তিমাদিশ্য ত্রাহি মাং ভবসন্ধটাৎ।। ৮৬॥ পূর্বাং মিত্রায়ু দাসীনান্ত্রমায়ারতচেতসং। ष्यानत्त्रारुम् । ७व९ शाममर्भनाटमव द्राघव !।। ৮१।।

্হ রামচন্দ্র ! আমার মন অন্যত্ত ন। থাকিয়া সর্বাদ। ভোমাতে অবস্থান কৰুক।৮৩।

বে ব্যক্তি মধুর স্বরে রাম রাম বলিয়া ক্ষণকাল গান করে, দে একহা বা স্বরাপারী হউক না কেন দকল পাপ হইতে মক্ত হয়। হে রাম! আমি শত্রু বিজ্ঞয়, স্ত্রী ও স্থাদি কিছুই প্রার্থনা করি না, কেবল ভবপাশ বিমোচনী বছুক্তিই সর্ব্বদা প্রার্থনা করি। ছে রগুশ্রেষ্ঠ ! আমি আপনার অংশ এবং আপ-নারই মারায় সংসারে লিপ্ত হইয়াছি, অভএব স্বীয় পাদপদ্মে ভক্তি প্রদান করিয়া এই ভবপাশ হইতে মোচন করুন। পূর্বে কাহাকে মিত্ৰ-কাহাকে শক্ত ও কোন ব্যক্তিকে বা উদাদীন বলিয়। বিবেচনা করিতাম, যেতেতু আপনার মার্যায় আরুড ছিলাম। এক্ষণে আপনার চরণ দর্শনে সকল পদার্থ এক্ষময় বলিয়া বিবেচনা করিভেছি আর কেছই আমার মিত্র বা শক্ত নাই। লোক যত দিন আপনার মাধার আবৃত থাকে তাবৎ কাল জগতে কাছাকে শত্ৰু বা কাছাকে মিত্ৰ, কোন ব্যক্তিকে বা উদাদীন বলিয়া বিবেচনা করে, এবং যাবং কাল স্বন্ধ-মিত্রাদি ভাব তিরোছিত ন। হয়, তাবৎ কাল মনুষ্যদিশের মৃত্যুভরে কাতর হইতে হয়, অতএব যে ব্যক্তি সেই মায়াকে সেবা করে সে ভরানক অব্ধকারে নিমগ্র হয়। পুর দারাদি ৰকনের একমাত্র মূল মায়া—হে রযুত্তম! আপনি নিজ দাসী

যাব জ্বনারয়া বদ্ধাবদ্ধাবিশেষতা ॥ ৮৮॥ সা যাবদন্তি নানাত্বং তাবদ্ভবতি নান্যখা। যাবন্নানাত্বমজ্ঞানান্তাবৎকালকুতং ভয়ম।। ৮৯॥ অতোহবিতা মুপান্তে যঃ সোহস্বতমি মজ্জতি। মায়ামূলমিদং সর্বাং পুজ্রদারাদিবক্ষনম্। অতোৎসারয় মায়াং ত্বং দাসীং তব রঘুত্তম !॥ २०। ত্বৎপাদপদ্মার্পিত্চিন্ত ব্লক্তিন্তুল্লামসঙ্গীতকথাস্থ বাণী

> ত্বদ্ধক্রমেবানিরতৌ করে মে ত্বদক্ষসকং লভতাং মদক্ষ্ ॥ ৯১ । বন্ম, ব্ৰিভকান্ স্বগুৰুং চ চক্ষুঃ পশ্বত্বস্থ স শ্লোভ কর্ণঃ। वृष्क्रमाकर्मानि इ शानयुगार ব্রজত্ত্বং তব মন্দিরাণি । ১২।

সরুপ দেই মায়াকে উৎসারিত করিয়া আমার প্রতি অহকম্পা अक्रांच कक्ना 68 1 66 1 60 1 60 160 160 100 100 100 वर्ष চন্দ্র ! আমার চিত্ত বৃত্তি আপনার চরণে নিমগ্র হউক—আমার বাক্য আপনার নাম সংকীর্ত্তনে নিযুক্ত হউক--আমার বাছগয় ভবদীয় চরণ দেবায় অঞ্সর হউক এবং আমার অক আপনার অস্মঙ্গ লাভে সফল ছউক। ৯১। (হ রঘুনন্দন ! আমি এই প্রার্থনা করি যে, আমার নয়ন্ত্র আপনার রামরুং এবং রামরূপ ভক্ত সাধুজন ও গুরুদেবের মূর্ত্তি—এই সকল भार्थ पर्मात मक्ता इंड थाटक **ध्वर कामांत्र कर्न** यूना आभाग जीला अवर्ग मर्वना शिव्छ रह धदः भागात भान অঙ্গানি তে পাদরজোবিমিশ্র-তীর্থানি বিজ্ঞত্বহিশক্তকেতো!। শিরস্তুদীয়ং ভবপদ্মস্কালৈ-

যুগল সর্বাদ। আপেনার জ্ঞীমন্দির গমন করিতে বিরত না ছয়।

৯০। হে গকড়ধ্বজ্ঞ। আপেনার পাদর্জ মিল্রিভ জল ধারণ
করিয়া আমার সর্বাঙ্গ পবিত্র হউক এবং আমার মস্তক

জু কীং পদং রাম ! নমস্বজন্ত্রম্ ॥ ৯৩॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সম্বাদে
কিদ্ধিন্দ্যাকাণ্ডে প্রথমোহধ্যারঃ।

আপনার ভববিরিঞ্চি সেবিভ পাদপল্লে সর্ব্বদা প্রণিপাঞ্ করুক। ৯৩।

> ইতিশ্রীমদধ্যাক্ম রামায়ণে উমামছেশ্বর সন্থাদে কিন্ধিশ্যাকাণেও প্রথমোহধ্যারঃ।

দ্বিতীয়োইধ্যায়ঃ।



উপং স্বাত্মপরিষ্শ্বনিধূ তি।শেষকলাষম্।
রানঃ স্থাবিমালোক্য সম্মিতং বাক্যমন্ত্রবীৎ ॥ ১॥
মারাং মোহকরীং তম্মিশ্বিতমন্ কার্য্যসিদ্ধয়ে।
স্বাধে ! ভাতুক্তং যর্ভমাং সত্যমেব ন সংশয়ঃ॥ ২॥

শ্রীরামচন্দ্র স্থানীবকে স্বকীর শরীরালিক্ষন দারা সর্ব্ধ পাপ হইতে বিমৃক্ত দেখিরা স্বকার্য্য সিদ্ধির জন্য কপীস্ত্রের প্রতি সর্ব্ধনোহকরী মারা বিস্তার পূর্ব্ধক সহাস্য বদনে কহিলেন, সংখ! তুমি আমার নিকট রাবণ বধাদি রূপ গুৰুতর কার্য্য সম্পাদনে যে অঙ্গীকার করিলে, তাহা কদাচ মিখ্যা ইইবে না । ১ । ২ । কিন্তু আমাকে গোক সকলে কিন্তু লোকা বদিষ্যন্তি মামেবং রঘুনন্দনঃ।
কৃতবান্ কিং কপীন্দায় সত্যং কৃত্যাগ্নিসাক্ষিকম্॥৩
ইতি লোকাপবাদো মে ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ।
তন্মাদাহ্যুয় ভদ্রং তে গড়া যুদ্ধায় বালিনম্॥ ৪॥
বাণেনৈকেন তং হত্বা রাজ্যে ত্বামভিষিঞ্জয়ে।
তথেতি গড়া সুঞ্জীবঃ কৈদ্ধিক্ষ্যোপবনং ক্রতম্॥৫॥

কহিবে যে, রামচন্দ্র অগ্নি সাক্ষি করিয়া কপীল্রের কার্য্য সাধনে যে প্রতিজ্ঞা করিয়াছেন তাহার কি করিলেন ? তোমার কার্য্য সাধনে বিলম্ব হইলে নিশ্চয়ই আমার উক্ত রূপ লোকাপবাদ হইবে, অতএব তুমি সত্তর গমন করিয়া যুদ্ধার্থ বালীকে আহ্বান কর অবশ্যই তোমার মঙ্গল হইবে, আমি এক বাণ কৃত্বা শব্দং মহানাদং তমাহ্বরত বালিনম্।

তৃদ্ধুত্বা প্রাত্তিনদং রোষতান্ত্রবিলোচনঃ॥ ৬॥
নির্ক্রগাম গৃহাচ্ছীব্রং স্থগ্রীবো যত্র বানরঃ।
তমাপতন্তং স্থগ্রীবঃ শীব্রং বক্ষম্ভতাড়য়ৎ॥ ।॥
স্থাপমপি মুফিভ্যাং ক্ষমান ক্রোধমুচ্ছি তঃ।
বালী তমপি স্থগ্রীব এবং কুমৌ পরস্পারম্॥ ৮
অযবেতামেকরপৌ দৃষ্ট্বা রামোহতিবিশ্বিতঃ।
ন মুমোচ তদা বাণং স্থগ্রীববধশঙ্করা॥ ৯॥
ততো ছুদ্রাব স্থগীবো বমন্ রক্তং ভ্রাকুলঃ।
বালী স্বভ্বনং যাতঃ স্থগীবো রামমব্রীৎ॥ ১০॥

ধারা বালীকে নষ্ট করিয়া তোমাকে কিন্ধিন্ধা রাজ্যে অভি-যিক্ত করিব। স্থাীব তথাস্ত বলিয়া জ্ঞীরান বাক্যে সম্মতি প্রকাশ পূর্বক শীন্ত কিন্ধিন্ধার উপবনে গমনানন্তর মহাভীষণ শব্দ ধারা চতুর্দ্দিক্ প্রতিশ্বনিত করিয়া বালীকে যুদ্ধে আফ্রান করিলেন।

মহাবীর বালী জাতার সেই ভীষণ বব প্রবণ করিয়া ক্রোধক্যায়িত লোচনে গৃহ হইতে শীজ্র নির্গত হইয়া যে প্রদেশে স্থাীব অবস্থান করিতেছেন সেই স্থানাতিম্থে আগমন করিতে লাগিলেন। মহাবল স্থাীব বালীকে সমালত দেখিয়া নিজ বক্ষংস্থল তাড়ন করিতে লাগিলেন। ৩।৪। । ৫।৬।৭। মহাবীর বালীও ক্রোধান্ধ হইয়া স্থাীবকে মুটি প্রহার করিলেন। স্থাীবও কুদ্ধ হইয়া বালীর প্রতি অবিষ্ক করিলেন। ভাই প্রকারে পরস্পার মুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিলেন। ৮। জীরামচন্দ্র একরূপ বানরম্বরের মধ্যে বালীকে বিশেষরূপে জানিতে না পারিয়া স্থাীব বধাশক্ষায় বাণ পরিভাগে করিতে পারিলেন না। ৯। অনন্তর স্থাীব মহাবল পরাক্রান্ত বালীর মুক্তি প্রহার সহ্য করিতে অশক্ত হুইয়া বক্ত বমন করিতে করিতে ভয় বিহ্বলান্তঃকরণে পলায়ন করিতে লাগিলেন; বালীও স্মভবনাভিমুথে গাননোন্দেলাগ করিতে লাগিলেন; বালীও স্মভবনাভিমুথে গাননোন্দেলাগ করিতে লাগিলেন; বালীও স্মভবনাভিমুথে গাননোন্দেলাগ

কিং মাং ঘাতয়দে রাম! শত্রণা ভাতৃরপিণা?।

যদি মন্ধননে বাঞ্ছা সমেব জহি মাং বিভো!॥ ১১

এবং মে প্রত্যয়ং কৃষা সত্যবাদিন রঘূত্তম!।

উপেক্ষসে কিমর্থং মাং শরণাগতবৎসল!॥ ১২॥

শুদ্রা স্থ্রীববচনং রামঃ সাশ্রুবিলোচনঃ।

আলিক্ষ্য মান্ম ভৈবীন্তং দৃষ্ট্যা বামেকর্মপিণো॥১৩

মিত্রঘাতিত্বমাশক্ষ্য মুক্তবান্ সায়কং নহি।

ইদানীমেব তে চিক্তং করিষ্যে ভ্রমশান্তয়ে॥ ১৪॥

গড়াহ্বয় পুনঃ শত্রুং হতং দ্রন্ধানি বিপুং ক্ষণাৎ

ইত্যাশ্বাস্থ্য স্থ্রীবং রামো লক্ষ্মণমন্তবীৎ।

স্থ্রীবস্থা গলে পুপ্সমালামাম্ব্য পুপ্পিতাম॥ ১৬॥

স্থ্রীবস্থা গলে পুপ্সমালামাম্ব্য পুপ্পিতাম॥ ১৬॥

রাম! তুমি ত্রাত্রপী শক্র দারা আমার প্রাণ বিনাশে ইচ্ছা করিয়াছ, যদি আমাকে নফ্ট করিতে তোমার নিতান্ত ইচ্ছা হইরা থাকে, তাছাংইলে স্বয়ং আমাকে বিনষ্টকর। ১১ । ছে সত্যবাদিন্!ছে শরণাগত বৎসল!ছে রঘূত্রম! তুমি প্রথমতঃ বাক্য দ্বারা আমার বিশ্বাসোৎপাদন করাইয়া কি কারণে আমাকে উপেক্ষা করিলে?। ১২।

শ্রীরাম স্থ্রীববাক্য শ্রবণানন্তর সজলনয়নে তাহাকে আলিঙ্গন করিয়া কহিলেন—সংখ! তুমি ভয় করিও না, আমি তোমাদিগের এক জাতীয় আয়তি অবলোকনে বিশেষ রূপে তোমাকে জানিতে অসমর্থ হইয়া মিত্র বধাশক্ষায় বাণ পরিত্যাগ করি নাই, এইকানে ভ্রম শান্তির জন্য তোমার গাত্রে বিশেষ চিহ্ন করিয়া দিব তুমি পুনর্বার সেই স্থানে গমন পূর্বেক শক্রকে আহ্বান কর এই দণ্ডেই বালিকে নিহত দেখিবে! আফি রামচন্দ্র শপ্রথ করিয়া কহিতেতি যে তোমার শক্রকে ক্ষণকাল মধ্যে বিনষ্ট করিব। ১৩। ১৪। ১৫।

জীরামচন্দ্র স্থাবিকে এইরপে আশাসিত করিয়া লক্ষ্মণকে কহিলেন, হে ভাতঃ! তুমি স্থানির গলদেশে স্থাপিত

প্রেষয়স্ব মহাভাগ! স্থগ্রীবং বালিনং প্রতি। লক্ষণস্ত তদা বদ্ধা গচ্ছ গচ্ছেতি সাদরম্।। ১৭।। প্রেষয়ামাস হাত্রীবং সোহপি গড়া তথাকরোৎ। পুনরপ্যন্ত তং শব্দং কৃতা বালিনমান্তরং । ১৮॥ তচ্চুড়া বি**স্মিতো বালী ক্রোধেন মহতা** রতঃ। বন্ধা পরিকরং সমাক্ গমনায়োপচক্রমে ॥ ১৫ ॥ গচ্ছস্তং বালিনং তারা গৃহীত্বা নিষিষেধ তম্। ন গন্তব্যং ত্বয়েদানীং শঙ্কা মেইতীব জায়তে।। ২০ ইদানীমেব তে ভগ্নঃ পুনরায়াতি সত্তরঃ। महारम्। वलवार खम्म किन्नुनर ममान्यक्षा २५॥।

পুষ্পমালা প্রদান করিয়া বালীর প্রতি যুদ্ধার্থ প্রেরণ কর। লক্ষ্মণ শ্রীরামের আদেশানুসারে স্থ্রীবের গলদেশে পুষ্প-মালা প্রদান করিয়া সাদরে কছিলেন, ছে কপীক্র! এক্ষণে তুমি যুদ্ধার্থ গমন কর। স্থ্রতীব লক্ষ্মণের বাক্যানুসারে ুদার্থ পূর্বেস্থানে উপস্থিত হইয়া পূর্ববৎ খোরতর চীৎকার इदद दानीक आस्तान कदिएक नाजित्नन। ১७। ১৭। ১৮। মহাবল পরাক্রান্ত বালী পুনর্বার স্থাীবের অদ্ভুত শব্দ প্রবণা-নন্তর বিশায় ও ক্রোধে পরিপূর্ণ হইয়া যুদ্ধ বেশ ধারণ পূর্বক 📗 युक्टकर् वाभन करिएक डेरक्स्पा करिएनन । ১৯ ।

অনন্তর ধালীর প্রিয়ত্মা ভার্যা তারা সামির কর ধারণ পূর্বক তাঁছাকে যুদ্ধ করিতে বত প্রকারে নিষেধ করিয়া কহিলেন, হে নাথ ! তুমি যুদ্ধ করিতে গমন করিও না, আগমার অভিশয় শল্প উপস্থিত ইংয়াছে, যেছেতু সুত্রীব কিয়ংক্ষণ পূর্বেই তোমা কর্ত্তক পরাজিত ও পলায়িত হইয়া পুনর্বার জি শীঅ যুদ্ধার্থ **আগমন করিয়াছে ইহাতে নিশ্চ**য় বোধ ক্ষতেছে যে, সুখীৰ একণে একাকী নছে কোন প্ৰবল সন্থায় সম্পর হট্য়া যুদ্ধ করিতে আসিয়াছে। অনস্তর বালী তারাকে কহিল, হে সুক্র! তুমি সুগ্রীবের প্রতি আশক্ষা করিও না,

'বাদী ভাষাহ হৈ স্বক্ত শক্ষা তে ব্যেতু তদ্গতা। প্রিয়ে! করং পরিত্যক্ত্য গচ্ছ গচ্ছামি তং রিপুন্ হত্বা শীঘুং সমায়ান্তে সহায়ন্তক্ত কো ভবেৎ। সহায়ী যদি সুগ্রীবস্ততো হড়োভরং ক্ষণাৎ।। ২৩ আয়ান্তে মা শুচঃ শুরঃ কধং তির্চেদ্গৃহে রিপুম জ্ঞাত্বাপ্যাভ্যমানং হি হত্বা যাস্যামি স্কুন্দরি ! তারোবাচ ৷

মত্তোহন্য করু রাজেন্দ্র ! শ্রুজা কুরু যথোচিতম্ আই মামঙ্কদঃ পুত্তো মৃগয়ায়াং শ্রুতং ৰচঃ।।২৫॥ অযোধ্যাধিপতিঃ জ্রীমান্ রামে। দাশর্থিঃ কিল। লক্ষণেন সহ ভাতা দীত্য়া ভার্যয়ো সহ।। ২৬।। আগতো দণ্ডকারণ্যং তত্ত্র দীতা হৃতা কিল। রাবণেন সহ ভাতা মার্সাণোহথ জানকীম্॥ ২৭ 🗉

আমিও যুদ্ধক্ষেত্রে গমন পূর্বেক শত্রু বণ করিয়া শীব্র প্রকাশ গমন করিব; কোন্ ব্যক্তি দেই ছুরান্থার সহায়তা করিবে यपि (कह ভাষার সহায়তা করে, তাহা হইলে ফণকাল মধে: উভয়কে নষ্ট করিয়া শীব্র প্রত্যাগমন করিব। হে স্থন্দবি বীর পুরুষেরাশক্র কর্তৃক আছেত হইয়া কথন কি স্থহে অব স্থান করিতে পারে? অভএব তুমি শোক পরিত্যাগ কর, শীস্ত শক্ত বিনাশ করিয়া প্রত্যাগমন করিব। ২০। ২১। ২২ ।২৩ । ২৪। তারা কছিলেন, হে রাজেন্দ্র! আমার অন্য কিছু বক্তব্য আছে প্রবণ করিয়া যাহা উচিত হয় কঞ্ন।

বংস অন্দ এক দিবস মৃগয়া হইতে প্রত্যাগত হইরা আ মাকে কছিয়াছিল, মাডঃ আমি মৃগয়া গমন করিয়া প্রবং করিয়াছি যে, অযোধ্যাধিপতি দশরপাক্ষ শ্রীমান্ রামচক্র কনিষ্ঠ ভ্রাতা শক্ষণ ও নিজ ভার্য্যা সীতার সহিত দশুকারণ আগমন করিয়াছিলেন, সেই স্থানে রাক্ষ্যাধিপ রাবণ ছল পূর্কক বে প্রিয়ে! এক্ষণে আমার কর পরিত্যাগ করিয়া গমন কর, । তাঁহার ভার্যা দীভাকে হরণ করিয়াছে, এক্ষণে দেই রাম ও

ভাগতো খ্যামুকাজিং স্থাবেশ সমাগতং।

চকার তেন স্থাবিঃ স্থাং চানলসান্ধিকম্। ২৮॥
প্রতিজ্ঞাং রুতবান্ রামং স্থাবার সলক্ষাণঃ।
বালিনং সমরে হত্বা রাজানং তাং করোম্যহম্॥২৯
ইতি নিশ্চিত্য তৌ যাতৌ নিশ্চিতং শৃণু মছচঃ।
ইলানীমেব তে ভগ্নং কথং পুনরুপাগতং॥ ৩০॥
ভতত্ত্বং সর্বাথা বৈরং ত্যক্ত্বা স্থাবিমানর।
যৌবরাজ্যেইতিষিঞ্চাশু রামং তং শরণং ব্রন্ধ ॥৩১
পাহি মামঙ্কদং রাজ্যং কুলঞ্চ হরিপুস্বব !।
ইত্যক্ত্বাপ্রুম্বী তারা পাদয়োঃ প্রনিপত্য তম্।
হস্তান্তাং চরণো তা রুরোদ ভয়রিষ্কলা।
ভামালিঙ্ক্য তদা বালী সঙ্গেহিমিদমন্ত্বীৎ॥ ৩৩॥

লক্ষণ কিছিল্যা পর্কতে আগমন করিয়া সূত্রীবের সহিত মিলিত ছইয়াছেন। সূত্রীবত তাঁছাদিগের সহিত সথ্য করিয়াছেন। রাম ও লক্ষণ সূত্রীবের সথ্য ভাবে আবদ্ধ ছইয়া অগ্নি দাক্ষি করিয়া প্রতিজ্ঞা পূর্বক সূত্রীবকে কহিয়াছেন যে, সমরাঙ্গণে বালীকে বিনম্ভ করিয়া ভোমাকে কিছিল্ফা রাজ্য প্রদান করিব। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ছৈ নাথ! ভাছারা এইরূপ নিশ্চর করিয়া আসিয়াছে নতুবা ইতিপূর্বে পরাজিত ছইয়া পুনর্বার মুদ্ধার্থ কেন আসিবে? ছে মহারাজ। আমার বাক্যানুসারে বৈর পরিত্যাগ পূর্বক স্থত্রীবকে আনর্মন করিয়া শীজ্র ঘেণ্বরাজ্যে অভিষ্কু কর এবং জ্বীরামের শরণাগত হও, ছে কণীক্র! আমাকেও পুত্র অঙ্গদ, রাজ্য ও বংশ এই সমস্ত বক্ষা কর, অজ্যপূর্ণমুখী ভারা বিনয় বচনে এইরূপ কছিয়া বালীর পাদমুগলে পভিত ছইলেন।

অনস্তর নিজ হস্তযুগল দারা বালীর চরণচয় ধারণ করিয়া

ভরবিহ্বলান্তঃকরণে বোদন করিতে লাগিলেন। অনস্তর

স্ত্রীস্বভাবাদ্বিভেষি স্থং প্রিয়ে! নান্তি ভয়ং ময়।
রামো যদি সমায়াভো লক্ষণেন সমং প্রভুঃ। ৩৪
তদা রামেণ মে সেহো ভবিষাতি ন সংশয়ঃ।
রামো নারায়ণঃ সাক্ষাদ্বভীর্ণোইখিলপ্রভুঃ॥ ৩৫॥
ভূভারহরণার্থায় শ্রুভং পূর্বাং ময়ানঘে!।
স্বপক্ষঃ পরপক্ষো বা নান্তি ভক্ত পরাত্মনঃ॥ ৩৬॥
আনেষ্যামি গৃহং সাধি! নত্বা ভক্তরণাস্কু শম্।
ভজতোহস্বভজত্যেষ ভক্তিগম্যঃ স্থ্রেশ্বরঃ॥৩৭
যদি স্বয়ং সমায়াভি স্থ্রীবো হিন্মি তং ক্ষণাং।
যদুক্তং ধৌবরাজ্যায় স্থ্রীয়ন্তাভিষেচনম্॥ ৩৮॥

বালী তারাকে আলিক্সন করিয়া সম্মেছ বচনে কহিলেন।
। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩।

প্রিরে! তুমি স্ত্রী জাতি বলিয়া ভয় করিতেছ, কিন্তু আমার
কোন ভয় নাই, মহাপ্রভু শ্রীরামচন্দ্র যদি লক্ষাণের সহিত্ত
আগমন করিয়া থাকেন ভাহাইলে তিনি স্থানীব অপেক্ষা
আমার প্রতি নিশ্চয় অধিকতর মেহ প্রকাশ করিবেন, কারণ
স্থানীব অপেক্ষা আমাদারা তাঁহার অধিক কার্যা সিদ্ধির সভব।
হে অন্যে! আমি পূর্ব্বে শুনিরাছি যে, অথিল ব্রন্ধাণ্ড পতি
ভগবান নারায়ণ ভূভার হরণের নিমিন্ত রামরূপে অবতীর্ণ
হইয়াছেন, পরমান্ধা রামের স্থাপক্ষ বা পরপক্ষ কেছই নাই।
। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ছে সাধিব! ভোমাকে নিশ্চয় বলিতেছি যে.
আমি শ্রীরামচন্দ্রের চরণ কমলে প্রণাম করিয়া তাঁহাকে গ্রেভ্
আনয়ন করিব, যেতেতু ভক্ত বৎসল দেব দেব দাশরিথ ভক্ত
জানের অভীষ্ট সিদ্ধি করিয়া থাকেন। ৩৭। গদি স্থানীব
একাকী আসিয়া থাকে ভাহা হইলে ক্ষণকালের মধ্যে ভাহার
প্রাণ বিনাশ করিব। প্রিরো! তুমি পূর্ব্বে কছিয়াছ যে স্থানীবক্ষে আনয়ন করিব। প্রিরো! তুমি পূর্ব্বে কছিয়াছ যে স্থানী-

কথমানুরমানোংহং যুদ্ধার রিপুণা প্রিয়ে!।
শ্রোহং সর্বলোকানাং সন্মতঃ শুক্তলকণে!॥৩৯
ভীতভীতমিদং বাক্যং কথং বালী বদেৎ প্রিরে।
তন্মাচ্ছোকং পরিত্যজ্য তিষ্ঠ স্থন্দরি! বেশ্মনি॥৪০
এবমাশাস্ত তারাং তাং শোচন্তীমশ্রুলোচনাম্।
গতো বালী সমৃত্যুক্তঃ স্থাবিস্ত বধার সঃ॥ ৪১॥
দৃষ্টা বালীনমারাস্তং স্থাবিস্ত বধার সঃ॥ ৪১॥
দৃষ্টা বালীনমারাস্তং স্থাবি ভীমবিক্রমঃ।
উৎপপাত গলেবদ্ধপুষ্পমালঃ পতঙ্গরৎ।। ৪২॥
মুটিভাগে তাড়রামাস বালিনং সোহপি তং তথা।
আহলালী চ স্থাবিং স্থাবি বালিনং তথা॥৪৩॥
রামং বিলোকরম্বের স্থাবা যুমুধে যুধি।
উত্যেবং যুধ্যমানো তো দৃষ্ট্য রামঃ প্রভাপবান্॥

বাণমানায় ভূণীরাদৈশ্রং ধনুষি সন্দধে।
আক্ষা কর্ণপর্যন্তমনৃস্থো কৃদ্ধগুণ হরিঃ।
নিরীক্ষ্য বালীনং সম্প্রক্ষাং তদ্ধৃদয়ং হরিঃ।
উৎসমর্ক্রাণনিসমং মহাবেগং মহাবলঃ॥ ৪৬॥
বিভেদ সশরো বক্ষো বালিনঃ কম্পয়ম্মহীম্।
উৎপপাত মহাশকং মুঞ্জন্ স নিপপাত হ॥ ৪৭॥
তদা মুহূর্ত্ং নিঃসংজ্ঞো ভত্বা চেতনমাপ সঃ।
ততো বালী দদর্শাগ্রে রামং রাজীবলোচনম্।
ধনুরালয়্য বামেন হস্তেনান্যেন সায়কম্॥ ৪৮॥
বিজ্ঞাণং চীরবসনং জ্ঞামুকুটধারিণম্।
বিশালকক্ষসম্ভাজ্বনমালাবিভূষিতম্॥ ৪৯॥
পীনচার্ফায়তভুজং নবদুর্ক্রাদলচ্ছবিম্।
সুত্রীবলক্ষণাভ্যাং চ পার্য্রাঃ পরিদেবিতম্॥৫০।

ভলক্ষণে! সর্ব লোক সমাজে আমি শ্র বলিয়া বিখ্যাত এক্ষণে শক্ত কর্তৃক যুদ্ধার্থ আহুত হইর। কিন্তপে ভর স্তৃত্ব ভোমার ঐ বাক্যে অমুমোদন করিব ? হে স্করে! অভএব শোক পরিত্যান করিয়া গৃহে অবস্থিতি কর আগমি যুদ্ধার্থ গ্রমন করি। ৩৮। ৩৯। ৪০।

অনস্তর মহালব পরাক্রান্ত বালী শোকাচ্চ্রপূর্ণ লোচনা ভারাকে এইরূপে আখাসিত করিয়া স্থ্রীব বধের অন্য উল্লোগী হইয়া গমন করিলেন। ৪১। পুস্প মালা শোভিত ভাম পরাক্রম স্থ্রীব বালীকে সমাগত দেখিয়া পতঙ্গের ন্যায় লক্ষ প্রদান পূর্বক মৃষ্টি হারা তাড়না করিলেন, বালীও স্থাবিকে দেইরূপ মুষ্টি প্রহার তাড়না করিলেন, বালীও স্থাবিকে দেইরূপ মুষ্টি প্রহার করিল এই রূপে পরস্পরের খোরতর প্রহার আরম্ভ হইল। ৪২।৪৩। স্থ্রীব যুদ্ধ করিতে করিতে মধ্যে মধ্যে জীরামের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিতে লাগিল। মহাপ্রতাপশালী জীরামচন্দ্র ভূণীর হুইতে এক্টা

শুন্দ্রবাণ প্রছণ করিয়া নিজ ধন্তে সন্ধান করিলেন। অনন্তঃ
বৃক্ষ্ণসূহের অন্তরালে অদৃশ্যভাবে অবস্থিত ভগবান্ হবি
বালীর বক্ষঃস্থল লক্ষ্ণ করিয়া প্রতাণ পরিত্যাগ করিলেন। বত্র
সদৃশ বীর্যাশালী দেই বাণ মহাবেগে গমন করিয়া বালীব
কক্ষঃস্থল ভেদ করিল। অনন্তর মহাবীর বালী বক্ষঃস্থল
আহত হইয়া ঘোরতর চীৎকার ধনি করিতে করিতে পৃথিবীতে পতিত হইল। বস্থাতীদেবী কপীল্রের পতন বেগ
সহনে অসমর্থা হইয়া বারস্থার কম্পিতা হইতে লাগিলেন।
বালী মুহুর্ত্ত কাল অচেতন থাকিলেন, অনন্তর সংজ্ঞা লাভ
করিবামাত্র দেখিলেন জটা মুকুট্থারী বিশাল বক্ষঃস্থা
বিরাজিত বনমালালন্ধ ত এবং চীর বসন, আজামুলন্ধিও
মনোহর পীনবান্থ নবদ্র্কাদলশ্যাম রাজীবলোচন রাম বামহন্তে ধনু ও দক্ষিণ হন্তে বাণ ধারণ করিয়া সমূথে দণ্ডায়মান
রহিয়াছেন, স্থাবি ও লক্ষ্মণ তাঁহার পাশ্ব দেশে দণ্ডায়মান
হিয়াছেন, স্থাবি ও লক্ষ্মণ তাঁহার পাশ্ব দেশে দণ্ডায়মান
হিয়া সেবা করিতেছেন।৪৪।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮।৪৯।৫০।

বিলোক্য শনকৈঃ প্রাহ্ন বালী রামং বিগর্হয়ন্।
কিং ময়াপক্তং ? রাম! তব যেন হতোহস্মাহয়্॥৫১
রাজথর্মমবিজ্ঞায় গর্হিতং কর্মা তে কৃতম্।
রক্ষথণ্ডে তিরো ভূড়া তাজতা ময়ি সায়কম্॥৫২॥
যদঃ কিং লপ্যাসে রাম! চোরবৎ কৃতসঙ্গর:।
যদি ক্ষত্রিয়দায়াদো মনোর্বংশসমুদ্ধরঃ॥৫৩॥
যদ্ধং কৃড়া সমক্ষং মে প্রাপ্যাসে তৎফলং তদা।
স্থাীবেণ কৃতং কিং তে? ময়া বা ন কৃতং কিমু?
রাবণেন ক্ষতা ভার্যা তব রাম! মহাবনে।
স্থাীবং শরণং যাতস্তদর্থমিতি শুশুম॥৫৫॥
বত রাম! ন জানীবে মদ্ধলং লোক্ষিপ্রভ্রম্।
বাবণং সকুলং বদ্ধ্যা স্থাতং লক্ষয়া সহ॥৫৬॥

অনস্তর বালী জীরামকে দেথিবামাত্র নিন্দা করিয়া নুত্র বচনে কছিল, হে রাম! আমি ভোমার নিকট এমন কি অপরাধ করিয়াছি, যে অপরাধে আমাকে নষ্ট করিলে—বোধ করি তুমি রাজধর্ম না জানিয়া এইরূপ গহিত কর্ম **,**করিয়াছ। হে বাম ! ডুমি চেতিরর ন্যায় বৃক্ষের অন্তরালে লুকায়িত হইয়া আমার প্রতি বাণ কেপ করিলে—এই অধর্য যুদ্ধে কি থানা-ণাভ করিতে পারিবে ? তুমি ক্ষজ্রিয় সস্তান বিশেষতঃ মনুর ংংশে জন্ম গ্রছণ করিয়াছ, ভোষার উচিত কার্যা হয় নাই, লি সম্থ যুদ্ধে আমার প্রাণ বিনাশে সক্ষম হইতে ভাহা 🥯 লৈ তোমার যশোলাভ হইভ। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। হ র্বুনন্দন! আমি শুনিয়াছি মহারণ্য ছইতে রাবণ তোমার ভাষ্যা ছরণ করিয়াছে, তাঁহার উদ্ধারের নিমিত্ত সুগ্রীবের শরণাপন্ন হইয়াছ, তাহা কি আমার দারা হইত না ংহে রাম ! তুমি আখার লোক-বিখ্যাত বীর্যা কি জান না ? আমি যদি हिन्द्रों कित जो हो हरेल मूर्ड्ड कि मर्सा मवश्म द्रावनरक विक করিয়া লক্ষার সহিত এছানে আনরন করিতে পারি। হে

व्यनशिम सृष्ट् विश्वाक्षित किक्क्षिम ताथव !।

विश्व के कि लार्किश्वम कथारम त्रधूनम्मन !।। ११।

वानतः वाधवक्षश धर्मः कः लजारम वन ।

वानतः वाधवक्षश वानिनः ताधवाद्धवि ।

वर्मम्य वाश्वा लार्किश्वमः म्हतामि म मतामनः ।। १०० व्यम्मकातिनः ह्या मक्ष्मः भानतामारम् ।

व्हिणा जिनि बार्ज्जाश है हेव ज्या सूचा !। ७० ।।

ममा वा तमक जामारमकामि विमृत्योः ।

भाजकी म जू विष्क्षतः मवत्या ताक्षिः मना ।। ७५ ।।

पाजकी म जू विष्क्षतः मवत्या ताक्षिः मना ।। ७५ ।।

पाजकी म जू विष्कृतः मवत्या ताक्षिः मना ।। ७५ ।।

पर किज्ञासकानीत्य महात्या विहत्ति यह ।

लाकः भूनानाः मक्षादेत्रत्रज्ञासाि ज्ञायदाह ॥ ७०।।

রাম! তুমি ধর্মিষ্ঠ বলিয়া জগতে বিখ্যাত—বল দেখি ব্যাধের
ন্যায় গুপু ভাবে বানর বধ করিয়া কি ধর্ম লাভ করিবে?
অভক্ষ্য বানর মাংস ভোমার ভক্ষণেও উপযোগী হইবে না।
। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। বালী এইরূপে বহুতর ভংস না
করিলে প্রীরাম কহিলেন ছে বানরেক্র! আমি ধর্মরক্ষার্থ শরাসন গ্রহণ করিয়া এই জগতে বিচরণ করিতেছি, অধর্মকারী
ব্যক্তিকে নফ্ট করিয়া ধার্মিক ব্যক্তিকে প্রতিপালন করাই
আমার কার্যা, ছে কপীন্ত্র! কনাা, ভগিনী, ভাতৃদ্ধারা ও পুত্রবধু এই চারই তুল্য এই চারিটার মধ্যে যে কোন একটাতে যে
ব্যক্তি উপগত হয়, দেই মহাপাতকী ধার্মিক রাজগণের বধ্য
ইহা নিশ্চয় জানিবে। ৫৯। ৬০। ৬০। ৫০ পশুরাক্ষ! তুমিও
কনিষ্ঠ ভ্রাভার পত্নিক বলপূর্মক রমণ করিতেছ এই ছেতৃ
ধর্মধারাত্রসারে তোমাকে নফ্ট করিলাম। তুমি বানর জ্ঞাতি
বলিয়া কিছুই জাননা—মহন্যক্তিরা নিজপদ সঞ্চার হারা জ্ঞাং

তচ্ছুত্বা ভয়সন্ত্রতো জ্ঞাত্বা রামং রমাপতিম্।
বালী প্রণম্য রভসাদ্রামং বচনমত্রবীৎ ॥ ॥ ৬৪ ॥
রাম রাম ! মহাভাগ । জ্ঞানেত্বাং পরমেশ্বরম্।
অজ্ঞানতা ময়া কিঞ্চিদুক্তং তৎ ক্ষন্তুমহ পি ॥ ৬৫ ॥
সাক্ষাত্ত্বত্বমাতেন বিশেষেণ তবাগৃতঃ ।
ত্যজাম্যস্থাহাযোগিদুর্লভং তব দর্শনম্॥ ৬৬ ॥
যন্ত্রমান বিবশো গৃহন্ ব্রিয়মাণঃ পরং পদম্।
যাতি সাক্ষাৎ স এবাত্ত মুমুর্বোর্মে পুরঃ স্থিতঃ ॥৬৭
দেব ! জ্ঞানামি পুরুষং তাং প্রিয় জ্ঞানকীং শুভাম্।
রাবণস্থা বধার্থায় জাতং তাং ব্রহ্মণার্থিতম্॥ ৬৮ ॥

পবিত্র করিয়া সঞ্চরণ করিভেছে। অতএব তাহাদিগের কার্য্যে নিন্দা করিতে নাই, বালি গ্রীরামের এই বাক্য শুনিবামাত্র প্রীরামকে সনাতন বিষ্ণু জানিয়া অভি ভীত ছইলেন> অনন্তর শ্রণাম করিয়া প্রমানন্দে শ্রীরামকে কহিলেন।৬২।৬৩।৬৪। ছে রাম ! হে মহাভাগ ! তিক্ষণে তোমাকে প্রমেশ্বর বলিয়া জানিলাম, ইতিপুর্বের অজ্ঞান বশতঃ তোমাকে বে কিছু পরুষ বাক্য কহিরাছি তাহা নিজগুণে ক্ষমা করিতে হইবে।৬৫। হে ভগৰন্! তোমার শরাখাত দারা তোমারই সমূথে এক্ণে প্রাণভাগ করিব, এরূপ সময় কথন ছইবে না—্যেহেতু এক্ষণে যোগি ত্বল'ভ ভোমার দর্শন লাভ করিয়াছি।৬৬। হে ব্লাম! যদি লোকেরা মরণ সময়ে অবশেন্দ্রিয় হইয়া তোমার নাম জ্ঞপ করে তাহা হইলে মরণাস্তে বৈকুণ্ঠধাম গমন করে—দেই তুমি আমার মরণ সময় অদ্য সন্থে বিরাজ্ত করিছেছ ইহার পর আমার ভাগ্য কি ? । ৬৭। হে দেব ! তুমি পরম পুকষ রাবণ বধার্থ ব্রহ্মা কর্ত্ক প্রার্থিত ছইয়া ভূতলে জন গ্রহণ করিরাছ, জানকীও সাক্ষাৎ লক্ষ্মী ইহা অবগত হইয়াছি।৬৮।

অনুজানী হি মাং রাম ! যান্তং ত্বপদ্যুত্তমন্।

মম তুল্যবলৈ বালে অঞ্চদে ত্বং দরাং কুরু ॥ ৬৯ ॥

বিশল্যং কুরু মে রাম ! হৃদরং পাণিনা স্পৃশন্।

তথেতি বাণমুদ্ধৃত্য রামঃ পাশা পাণিনা।

ত্যক্ত্যা তথানরং দেহমমরেন্দ্রেভবং ক্ষণাব ॥ ৭০

বালী রযুক্তমশরাভিহতো বিমৃষ্টো রামেণ শীতলকরেণ সুখাকরেণ। শদ্যো বিমৃচ্য কপিদেহ্মবশুলভ্যং প্রাপ্তঃ পরং পরমহংসগণৈতুরাপম্॥৭১॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্ধিশ্ব্যাকাণ্ডে ত্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

একণে অনুজ্ঞা করুন আপনার বৈকুণ্ঠধানে গমন করি এবং আমার তুল্য বাভ্রীহ্য সম্পন্ন অসদের প্রক্রি রূপা দৃষ্টি রুক্তন। ৬৯। হে দাশরথে! আপনি স্বরং কর কমল দ্বারা আমার বক্ষঃস্থল স্পর্শ করিয়া শাল্য উদ্ধার করুন। জ্রীরাম কপীত্রের বিনয় বচনে সন্তফ্ট হইয়া তাহার হৃদয় ছইতে স্বরং শল্য উদ্ধার করিলেন, বানর রাজ্ঞ বানর দেহ পরিত্যাগ করিয়া কণকাল মূখ্যে অমরেক্র দেই ধারণ করিলেন ভদতে মুক্তিলাভ করিবেন। ৭০। রাম-শর-পীড়িত বালী রঘুনাথের স্থধাকর সদৃশ শীতল কর স্পর্শে তৎক্ষণাৎ বানর দেই পরিত্যাগ পূর্বাক পরমহংসগণের ছ্ল্রাপ্য কিন্তু রাম ভ্রুপির অবশ্য প্রাপ্য শেই বৈকুণ্ঠধান প্রাপ্ত ছইলেন। ৭২।

ইতি শ্রীমনধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্দিন্দ্যাকাতে দিতীরোহধ্যারঃ।

তৃতীয়ো>ধ্যায়ঃ।

নিহতে বালিনি রণে রামেণ পরমান্ত্রনা।
ছক্তবুর্ব্বানরাঃ সর্বের কিছিদ্ধাাং ভরবিজ্ঞলাঃ ॥ ১
তারামূচুম হাভাগে ! হতো বালী রণাজিরে।
অঙ্কদং পরিরক্ষাদ্য মস্ত্রিণঃ পরিনোদয় ॥ ২ ॥
চতুর্বারকপাটাদীন্ বদ্ধা রক্ষামহে পুরীম্।
বানরাণাং তু রাজ্যানমঙ্গদং কুরু ভামিনি ! ॥ ৩ ॥
নিহতং বালিনং শ্রুত্বা তারা শোকবিমূচ্ছি তা।
অতাড়য়ৎ স্বপাণিত্যাং শিরোবক্ষণ্ট ভূরিশঃ ॥ ৪ ॥
কিমঙ্কদেন রাজ্যেন নগরেণ ধনেন বা ? ।
ইদানীমেব নিধনং যাস্থামি পতিনা সহ ॥ ৫ ॥

বানরেন্দ্র থালী পরমাত্মা জীরাম কর্জ্ক রণ ভূমিতে
নিংত হইলে তাঁহার অমুচর বানরগণ ভরাকুলিত চিত্তে কিছিক্যার প্রতিগমন,করিয়া তারাকে কছিল—হে মহাভাগো! মহারাজ বালী অদ্য রণভূমিতে শ্রীরাম কর্জ্ক নিহত হইরাছেন—
আপনি এক্ষণে কুমার অঙ্কদকেও মন্ত্রিগণকে রাজ্কবার্য্য করিতে
আদেশ কন্ধন, আমরা চতুর্যারের কপাট বন্ধ করিয়া এই নগরী।
রক্ষা করিব । ১ । ২ । ৩ । অনন্তর তার্য কপীক্র বালীর
অভত সম্বাদ প্রবণ করিয়া শোকমৃচ্ছি তান্তঃকরণে বার্যার
পাণি যুগল দ্বারা মন্তক্ত বক্ষঃস্থল তাতন করিতে করিতে
কহিলেন—হে বানরগণ! আমার পুত্র, রাজ্য, নগর ও ধনে

কিছুই প্রয়োজন নাই, এক্ষণেই আমি পতির সংমরণ প্রাপ্ত হুইব । ৪ । ৫ । অনন্তর আলুলায়িতকেশী রোক্লামান। ইত্যক্ত্বা স্বরিতা তত্র রুদন্তী মুক্তমুর্ধ জা।

যথে তারাতিশোকার্তা যত্র ভত্ কলেবরম্ ॥ ৬ ॥

পতিতং বালিনং দৃষ্ট্বা রক্ত্বাঃ পাংশুভিরার্তম্ ।

রুদতী নাথনাথেতি পতিতা তক্ত পাদয়োঃ ॥ ৭ ॥

করুণং বিলপস্তা সা দদর্শ রুঘুনন্দনম্ ।

রাম! মাং জহি বাণেন যেন বালী হতস্ত্রা ॥ ৮ ॥

গচ্ছামি পতিসালোক্যং পতির্মামভিকাজকতে ।

স্বর্গেহিপি ন স্থাং তক্ত মাং বিনা রুঘুনন্দন! ॥ ৯ ॥

পত্নীবিয়োগজং দুঃখমনুভূতং স্বরান্য! ।

বালিনে মাং প্রয়ন্তাং পত্নীদানফলং ভবেৎ ॥১০॥

ভারা শোকাকুলান্তঃকরণে মৃতপতির কলেবর দর্শনার্থ সেই রণ ভূমিতে উপস্থিত ইইয়া বানর রাজ্জের ধূলীধূদরিত এবং শোণিত-শিক্ত শরীর দন্দর্শনানন্তর তাঁহার চরণম্বরে পতিত হইয়া—হানাথ! হানাথ! এই প্রকার বহুতর বিলাপ করিতে লাগিলেন ।৬।৭। অনস্তর সমূখার্যাত রঘুনাথকে অবলোকন করিয়া কহিলেন—হে রাম! যে বাণ ম্বারা মহারাজের প্রাণ সংহার করিয়াছ সেই বাণ ম্বারা আমাকেও বিনষ্ট কর ।৮। আমি শীজ্র পতি সরিধানে গমন করিব—প্রাণপতি আমাকে প্রার্থনা করিতেছেন, হে রঘুনন্দন! মহারাজ্ঞ বালী আমাকে প্রার্থনা করিতেছেন, হে রঘুনন্দন! মহারাজ্ঞ বালী আমাকে কণকাল দর্শন না করিলে অর্গেও স্থাকুত্রব করিতে পারেন না। ভোমাকে অধিক কি বলিব পত্নী-বিয়োগ জনিত হংখ ভূমি শ্বয়ং অনুত্রব করিতেছ—শীজ্ব আমাকে বিনষ্ট করিয়া মহারাজ্যের নিকট প্রেরণ কর তাহা ছইলে ভূমি পত্নী দান জনিত ফল, লাভ করিবে। ৯।১০। অনন্তর স্থানিরে

ন্থগ্রীর ! বং মুখং রাজ্যং দাপিতং বালিঘাতিনা । বামেণ রুময়া সার্দ্ধং ভুংক্ষু সাপত্বর্ক্তিম্ ॥ ১১ ॥ ইত্যেবং বিলপন্তীং তাং তারাং রামো মহামনাঃ। সান্ত্র্যামাস দয়য়া তত্ত্বজ্ঞানোপদেশতঃ ॥ ১২ ॥

बिताय डेवाह।

কিং ভীরু ! শোচনি ব্যর্থং ? শোকস্থাবিষয়ং পতিম্ পতিস্থবায়ং দেহো বা জীবো বা বদ তত্ত্বতঃ ॥ ১৩ ॥ পঞ্চাত্মকো জড়ো দেহস্তম্মাসরুধিরাভি্মান্ । কালকর্মগুণোৎপন্নঃ সোহপ্যাস্থেহদ্যাপি তে পুরঃ ॥ মন্যদে জীব্যাত্মানং জীবস্তর্হি নিরামন্নঃ । ন জায়তে ন মিয়তে ন তিষ্ঠতি ন গচ্ছতি ॥ ১৫ ॥

প্রতি অবলোকন করিয়া কহিলেঁন—ছে স্থ্রীব! এক্ষণে তুমি বালী ঘাতী রামচন্দ্র কর্ম্বক অর্পিত নিকণ্টক রাজ্ঞা ও নিজ পত্নী ক্ষার সহিত্য পরম স্থে ভোগ কর। ১১।

মহামতি রামচন্দ্র ভাগার বিলাপ বাক্য শ্রবণানন্তর দয়ার্জ হইয়া তত্ত্বজ্ঞানোপদেশ দ্বারা তাঁহাকে সান্ত্রনা করিতে লাগিলেন প্রীরাম কহিলেন, হৈ ভীক ! তুমি অশোচা পতির নিমিত্ত রুণা কি শোক করিতেছ ? যথার্থ বল দেখি এই রণভূমিশয়িত দেহ কিম্বা জীব উভয়ের মধ্যে পতি বলিয়া কাহাকে স্থির করিয়াছ। ১২। ১১। যদি দেহকে পতি বল ভাহা হইলে শোকের বিষয় কিছুই নাই, যেহেতু তুক্, মাংম, কধির ও অস্থি দ্বারা পরিপ্রিত্ত পঞ্চ ভূলাক্ষক জড় দেহ কাল অদৃষ্ট ও সন্তাদি গুণযোগে উৎপন্ন হইয়াছে, ঐ দেহ অদ্যাপি ভোমার সম্মুথে বিদ্যানান রহিয়াছে। ১৯। যদি জীবাস্থাকে পতি বলিয়া দ্বির করিয়া থাক ভাহা হইলেও শোকের বিষয় কিছুই নাই, যেহেতু নিরাময়—ভাহার জ্বন, মরণ, গতি বা স্থিতি কিছুই নাই। ১৫। ক্লীব নহে—

ন দ্রী পুমাস্বা বঙ্গো বা জীবঃ সর্বাগতোহবারঃ।

এক এবাদ্বিতীয়োহয়মাকাশবদলেপকঃ।

নিত্যা জ্ঞানময়ঃ শুদ্ধঃ স কথং শোকমহ তি ॥১৬॥

তারোবাচ।

দেহোংচিৎকান্তবদ্ধাম ! জীবো নিত্যশ্চিদাত্মক:।
স্থাদুংখাদিসম্বন্ধ: কস্য স্থাদ্ধাম ! মে বদ ॥ ১৩॥
জীৱাম উবাচ ।

অহস্কারাদিসম্বন্ধো যাবদেহেন্দ্রিয়ে সহ।
সংসারস্তাবদেব স্থাদাত্মনস্ত্রবিবেকিন: ॥ ১৮ ॥
মিথ্যারোপিতসংসারো ন স্বয়ং বিনিবর্ত্ততে।
বিষয়াস্ক্যায়মানস্থ স্বপ্লে মিথ্যাগমো যথা॥ ১৯॥

পরস্তু আকাশের ন্যায় সর্বব্যাপী নিলেপি স্কৃতরাং দ্বিতীয় ব্যক্তির সম্বন্ধ রহিত এবং নিভা জ্ঞানময় নির্দাল এক পদার্থ সর্বাভূতে সমভাবে বিরাজ করিতেছেন তাহার নিমিক্ত কি শোক করিতেছ ?। ১৬। তারা কছিলেন—হে রাম! যদি এই দেহ কার্ছের ন্যায় অচেতন এবং জীবাস্থা জ্ঞানময় নিত্য-পদার্থ তবে সংধ ত্বঃখাদি ভোগ কাহার হয় ? একণে আমাব এই সংশয় ছেদ কর। ১৭।

জীরাম কহিলেন, যাবৎ কাল জীবাকা অবিবেক বশতঃ
দেহ ও ইন্দ্রিরাদিতে মদীয়ত বুদ্ধি পরিত্যাগ না করেন
তাবৎ কাল পর্যান্ত তিনিই স্থণ ভ্রংথাদি ভোগ করিয়া
থাকেন।১৮। ছে স্থন্ধরি! মনুষ্যেরা বিষয় ভাবনা করিতে
করিতে নিজিত হইয়া বেমন স্পপ্রাবস্থায় ঐ চিন্তিত বিষয়ের
মিখ্যা সমাগম লাভ করে এবং ঐ অবস্থায় ঐ অলীক বস্তু
হইতেও স্বরং নিবৃত্ত হইতে পারে না, কিন্তু জাঞাদবস্থার
বিবেক শক্তি দারা নির্ত্ত হয়, সেই রূপ জীব দেহাভিমানাবস্থায় মিখ্যা সংসার আবোপ করিয়া ঐ অবস্থায় স্বরং
তাহা হইতে নির্ত হইতে পারে না ১১৯। ছে বংসে! জীবাকা

অনাভিবিদ্যাদয়নাত্ত কার্যাহঙ্গু তে তথা
সংসারোহপার্থ কোইপি আ জাগ ছেবা দিসস্কু লঃ ॥২০
মন এব হি সংসারো বন্ধ শৈচব মনঃ শুভে । ।
আত্মা মনঃ সমানত্বমেত্য তদ্গত বন্ধভাক্ ॥ ২১॥
বথা বিশুদ্ধঃ স্ফটিকোইলক্তকা দিসমীপতঃ ।
তত্ত দ্বিত্তা ভাস্তি বস্তুতো নাস্তি রপ্তনম্ ॥ ২২॥
বুদ্ধী ক্রিয়া দিসামীপ্যাদাত্মনঃ সংস্তির্বলাং ।
আত্মা স্থানিস্কু মনঃ পরিগৃষ্ঠ তদুদ্ধবান্ ॥ ২৩॥
কামান্ জুষন্ গুলৈর্মান্তঃ সংসারে বর্ত্তেহবাণঃ ।
আদে মনো গুণান্ সূত্যা ততঃ কর্মাণ্যনেকধা ॥২৪
শুক্র লোহিত্রকানি গতয়ন্ত সেমানতঃ ।
এবং ক্রম্বণাক্ষীবো ভ্রমত্যাভূতসংপ্লবম্ ॥২৫॥

সর্বোপদং ছতে জীবো বাদনাভিঃ স্বকর্মভিঃ।
আনাদ্যবিদ্যাবশগন্তির্ভত্যভিনিবেশতঃ ॥ ২৬॥
সৃষ্টিকালে পুনঃ পূর্ববাদনামানদৈঃ দহ।
জায়তে পুনরপ্যবং ঘটাষন্ত্রমিবাবশাঃ॥ ২৭॥
যদা পুণ্যবিশেষেণ লভতে সঙ্গতিং সতাম।
মন্তকানাং সুশাস্তানাস্তদামদ্বিষয়া মতিঃ॥ ২৮॥
মৎকথা শ্রবণে শ্রন্ধা দুর্নভা জায়তে ততঃ।
ততঃ স্বন্ধবিজ্ঞানমনায়াদেন জায়তে। ২৯॥
তদাচার্যপ্রোন্দন বাক্যার্থজ্ঞানতঃ ক্ষণাৎ।
দেহেন্দ্রিয়মনঃ প্রাণাহঙ্গ তিভাঃ পৃথক স্থিতম্।
স্বান্ধান্থভাবতঃ সত্যমানন্দান্ধানমন্ত্রম্।
জ্ঞাত্য সদ্যা ভবেন্ধুক্তঃ সত্যমেব মর্যোদিতম্॥ ৩১

অবিদ্যা প্রভাবে দেহাভিমানী হইয়া রাগ দ্বেষাদি সঙ্কুল মিখ্যা সংসারে আবন্ধ হন। ২০। ছে কপীন্দ্রপত্নি! অন্তঃকরণের সংসারের কারণ ও স্থু হঃথাদি ভোক্তা জীবান্ধা অন্তঃকরণের সহিত মিলিত হইয়া তদগত স্থু হঃখাদি ভো্যু করিয়া থাকেন। ২০। অলক্ত সন্ধিছিত নির্মাল ক্ষটিক মণি স্বভাবতঃ প্রক্রবর্গ হইলেও অলক্তের প্রতিবিষ্ণ সম্পর্কে যে রূপ রক্ত বর্ণ লক্ষিত হয়, ডক্রপ বিশুদ্ধ আন্মা অন্তঃকরণ ও ইন্দ্রিয়াদি সনিধানে সংসারী বলিয়া প্রতীত হইয়া থাকেন। ছে চাক্ষ ভাবিনি! জ্ঞানাদি গুণ বিশিষ্ট আন্মাকে অন্তঃকরণ দারা অনুমান করিয়া স্থির করিতে হয়, ঐ আন্মা অন্তঃকরণ সম্বন্ধ বশতঃ অন্তঃকরণের অবিবেক রূপ গুণ লাভ করিয়া বিষয়াদি ভোগা করতঃ রাগ্রেষাদি রূপ অন্তঃকরণ গুণ আবন্ধ হইয়া অনিজ্পুক হইয়া ও সংসারে লিপ্ত হইয়া থাকেন, জীবান্ধা রাগ হেবাদি রূপ অন্তঃকরণ গুণ লাভ করিয়া সদসংকর্ণহা করেন,

দেই সদদৎকার্য্য বশতঃ তাহার সদসক্ষতি লাভ হয়, জীব খণ্ড প্রলয় পর্যান্ত এই রূপে ভ্রমণ করেন, খণ্ড প্রলয় সময়ে বাসনা ও অদ্ফের সহিত অন্তঃকরণে মিলিত হুইয়া (অর্থাৎ উভয়ে একতা লাভ করিয়া) অনাদ্য বিদ্যান্তলীন হুইয়া থাকেন পূন্র্বার স্টে কালে পূর্ব্বাসনা ও অদ্ফের সহিত আবিভূতি হন, এইরূপে জীবাঝা কুলাল চক্রের নাায় ভ্রমণ করিতেছেন । ২২। ২৩। ২৪ । ২৫ । ২৬ । ২৭ । যে সময় জীব পূর্বাক্তর প্রায় বলে মন্তক্ত শান্ত প্রকৃতি সাধু জনের মধ্যে জয় প্রহণ করেন, সেই কালে আমাতে ভক্তি এবং আমার লীলা অবংগ অতিশয় আদ্ধা লাভ করেন; অনস্তর ভক্তি হুইলেই তাহার অনারাসে ঈশ্বর অরপ বিজ্ঞান হয়, বিজ্ঞান ইইবামাত্র জীবাঝা আচার্য্যোপদিষ্ট শান্ত প্রবণ ও মনন ও নিদিধ্যাসনাদি ঘারা সত্য আনলময় আব্রাকে জীবাঝা হুইতে অভিয় এবং দেহ ইন্সিয়, মন, প্রোণ, ও অহন্ধার হুইতে বিভিন্ন জ্ঞান করিয়া সদ্যই মুক্তি লাভ করেন ইহা আমি নিশ্চয় উপদেশ করিলাম।

তবং ময়োদিতং সম্যালালাচয়তি যোহনিশম্।
তত্ত্ব সংসারদুঃখানি ন স্পৃশস্তি কদাচন।। ৩২ ॥
ত্ব্যপ্রত্বেষ্ট্রা প্রোক্তমালোচয় বিশুদ্ধধীঃ।
ন স্পৃশ্বদে ছঃখল্পালৈঃ কর্ম্মবন্ধাদ্বিমোক্ষ্যদে ॥৩৩।
পূর্বজন্মনি তে স্কুক্র ! কুতা মন্ত্র্জিক্তমা।
অতস্তব বিমোক্ষায় রূপং মে দর্শিতং শুতে ।॥৩৪
ধ্যাত্বা মদ্রুপমনিশমালোচয় ময়োদিতম্।
প্রবাহপতিতং কার্যাং কুর্বত্যপি ন লিপ্যমে।। ৩৫
শ্বিরামেণোদিতং সর্ব্বং শ্রুত্বা তারাতিবিম্বিতা।
দেহাতিমানলং শোকং তক্ত্বা নত্বা রঘুত্তমম্॥ ৩৬
শাত্মানুভবসন্ত্বী জীবন্মুক্তা বভূব হ।
ক্ষণসঙ্কমমাত্রেণ রামেণ প্রমাত্মনা॥ ৩৭ ।

অনাদিবদ্ধং নিধুর মুক্তা সাপি বিকল্মবা।

মুগ্রীবোহপি চ তচ্চুত্বা রামবক্তাৎসমীরিতম্।।৩৮
জহাবজ্ঞানমখিলং স্বস্থচিক্তোহতবন্তদা।
ততঃ মুগ্রীবমাহেদং রামো বানরপুক্ষবম্।। ৩৯।।
ভাতুর্জ্যেষ্ঠন্ত পুজেণ যত্নক্তং সাম্পরারিকম্।
কুরু সর্বং যথানায়েং সংক্ষারাদি মমাজ্ঞরা।। ৪০।।
তথেতি বলিভিমু থৈকানিরেঃ পরিনীয় তম্।
বালিনং পুস্পকে কিপ্তা সর্বর জোপচারকৈঃ।।৪১
তেরীদুন্তুভিনির্ঘোধৈত্র ক্লিনৈর্ঘানিরিভিঃ সহ।
যুথপৈর্বাণরৈঃ পেইরস্তঃগর্য়া চাঙ্কদেন চ।। ৪২।।
গত্বা চকার তৎসর্বং যথাশান্তং প্রযুক্তঃ।
স্রাত্বা জ্বাম রাম্ন্য স্থীপং মন্ত্রিভিঃ সহ।।

। ১৮। ১৯। ৩০। ৩১। যে ব্যক্তি এই সমস্ত আমার উপদেশ বাক্য গ্রাহণ করিয়া অনবরত মনে মনে আলোচনা করে, সংসার ত্রঃথ তাছাকে কদাচ স্পর্শ করিতে পারিবে না, ছে ভামিনি! তুমিও পবিত্রাস্তঃকরণ হইয়া মতুপদিষ্ট বাক্য সকল মনে মনে আলোচনা কর তাছা ছইলে সংসাররপ ফুংথ রাশি তেশমাকে স্পর্শ করিতে পারিবে না এবং তুমি কর্মা বন্ধন ছই-তেও মুক্তি লাভ করিতে পারিবে।৩২/৩৩। হে সুত্র ! পূর্বজন্মে তুমি আমার প্রতি একান্ত ভক্তি প্রকাশ করিয়াছিলে সেই কারণে তোমাকে মুক্ত করিবার জন্য রামরূপে দর্শন দিলাম। হে শুভে! তুমি একণে আমার রাম রূপ ধ্যান করভঃ মত্প-मिक्के वर्षका ज्ञकन मान मान व्यातनाह्ना करा, जारा इरेल সংসার-প্রবাহ-পতিত কার্য্য সকল করিয়াও সংসারে লিপ্ত হইতে হইবে না। ৩৪। ৩৫। তারা অতি বিষয়ে সহকায়ে জীরামের উপদেশ বাক্য শ্রবণ করিয়া দেহাভিমান জনিত শোক পরিভ্যাগ পূর্ব্বক রঘূনন্দনকে প্রণাম করিলেন। ৩৬। এবং নির্তৃশয় ত্রনানল অহভব করতঃ জীবন্যুক্তদিগ্রের ন্যায়

অবস্থা প্রাপ্ত হইলেন। জীরামচন্দ্র কণকাল মধ্যে তারার সংসার বন্ধন ছেদ করিয়া ভাহাকে নিম্পাপ ও নির্বাণ নোক ভাজ করিলেন; মছাত্মা স্থাতীবও জীরাম মুখ বিনির্গত সহুপ-দেশ বাক্য প্রবর্গানন্তর অজ্ঞান রাশি ছইতে মৃক্ত হইয়া স্কুস্থ অনন্তর রামচন্দ্র বানর-পুন্ধব স্থতীবকে চিত্ত হইলেন। আহ্লান করিয়া কহিলেন। ৩৭।৩৮।৩৯। হে সথে! তুমি ভ্রাতৃস্পুত্র অঙ্গদ দার। জ্ঞাষ্ঠ ভ্রাভা বালির পারলে কিক সংস্কারাদিকার্যা যথাবিধি সম্পাদন কর, সুগ্রীব তথাস্তু বলিরা জীরামবাকো সমাত হইয়া কতিপয় প্রধান বানর দ্বারা বালির মৃত দেহ বহন করাইয়া পুষ্পক সদৃশ বিমানে সংস্থাপন করা-ইলেন। পরিচারকেরা স্থাীবাজ্ঞায় রাজার ন্যায় সেই মৃত দেহের পরিচর্কা করিতে লাগিল এবং বানরগণ **চতুর্দি**কে ভেরী ও হন্দুভিধমি দারা কিছিস্কা। নগর পরিপূর্ণ করিল। অন-ন্তর স্থাব, কতিপয় ব্রাহ্মণ এবং মন্ত্রিগণ ভারা ও অঙ্কণ সমভিব্যহারে বিমানারত মৃত বালি-দেহের অফুগমন করিজে নত্বা রামস্থ চরণো ফুঞ্জীবং প্রাহ ক্ষেত্রীং।
রাজ্যং প্রশাধি রাজেন্দ্র! বানরাণাং সমৃদ্ধিমৎ। ৪৪
দাসোহহন্তে পাদপদ্মং সেবে লক্ষ্মণব্র্চিরম্।
ইত্যুক্তো রাঘবঃ প্রাহ ফুঞ্জীবং সন্মিতং বচঃ॥ ৪৫
ডুমেবাহং ন সন্দেহং শীব্রং গচ্ছ মনাজ্যা।
পুররাজ্যাধিপত্যে ডুং স্বান্থানমভিষ্টের ॥ ৪৬॥
নগরং ন প্রবেক্ষ্যামি চতুর্দিশসমাঃ সংখ!।
আগমিষ্যভি মে ভ্রাভা, লক্ষ্মণঃ পত্তনং ভব॥ ৪৭॥
অক্ষদং যৌবরাজ্যে ত্বমভিষ্টের সাদরম্।
অহং সমীপে শিশরে পর্যভক্ত সহামুক্তঃ॥ ৪৮॥
বৎস্থামি বর্ষদিবসান্ ভতন্ত্বং ষত্রবান্ ভব।
কিঞ্ছিৎকালং পুরে স্থিত্বা সীতারাঃ পরিমার্গণে॥৪৯

লাগিলেন কিয়দুর গ্রমনানস্তর সমুচিভস্থানে অক্স দারা যথা-বিধি সেই মৃতদেহ সংস্থারাদি কার্য্য করাইলেন। অনন্তর স্থাীৰ সানাদিকাৰ্য্য সমাপন পূৰ্ব্যক কভিপায় মঞ্জির সহিত শ্রীরাম চরবে প্রণাম করিয়া সহর্ষ জন্মে কহিলেন-ছে রাজেন্দ্র ! তুমিই এই সমৃদ্ধি সম্পন্ন বানর রাজ্য শাসন করে, আমি লক্ষ্মণের ন্যায় আছে কেবর্তী ছইয়া চিরকাল তেখনার পাদপদ্ম দেবা কবিব। এীবামচন্দ্র স্থাীবের এইরূপ ভ্রিকগর্ভ বাক্য অবণানন্তর ঈষৎ গাস্য কবিয়া কছিলেন—ছে সথে ! তুমি আমা-২ইতে অভিন্ন ইংগতে সন্দেহ নাই, অভএৰ শীজ্ঞ গমন করিয়া আমার আজামুদারে কিফিক্টাপুর রাজ্যাধিপত্যে আত্মাতে অভিষিক্ত কর । ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪: ৪৫। ৪৬। হে কণীক্র! আমি পিভার আক্রাত্ববর্তী হইয়া চতুর্দণ বৎসর কাল নগার প্রবেশ করিব না, এই নিমিত্ত সে স্থানে আমি অব্যং গ্রমন নাকরিয়া লক্ষ্মণকে প্রেরণ করিব, ভ্রাতা লক্ষ্মণ] তোমার গৃহে অবলা গমন করিবেন—হে স্বথে ! তুনি অঞ্চকে দমাদর পূর্ব্বক যৌবরাজো অভিষিক্ত করিবে, যাহা হউক একণে আমি লক্ষাণের সহিত নিকটবন্তী পর্যাত শিখরে এক

সাফাঙ্গং প্রণিপত্যাহ স্থ্রীবো রামপাদয়ে।

যদাজ্ঞাপরদৈ দেব ! ভত্তবৈধ করোমাহম্।। ৫০॥

অনুজ্ঞাতত্ত্ব রামেণ স্থ্রীবস্ত সলক্ষণঃ।

গত্বা পুরং তথা চক্রে যথা রামেণ চোদিতঃ॥

স্থ্রীবেণ তথা ন্যাযাং পুজিতো লক্ষণস্তদা।

আগত্য রাঘবং শীঘ্রং প্রণিপত্যোপতস্থিবান্।।৫২

ভতো রামো জগামাশু লক্ষণেন সমস্বিতঃ।

প্রবর্গনিরেক্ষরং শিখরং ভূরিবিস্তরম্॥ ৫৩॥

তত্ত্বিকং গল্পরং দৃষ্ট্বা ক্ষাটিকং দীপ্তিমচ্ছুভুম্।

বর্ষবাতাত্বসহং ফলমূলসমীপগম্।

বাসায় রোচয়ামাস তত্ত্ব রামঃ সলক্ষণঃ॥ ৫৪॥

বংশর কাল বাস করিব, তুমি অপ্পকাল মাত্র পুর নধ্যে অবস্থান করিয়া পশ্চাং সীতাশ্বেষণে ষত্রবান হও। অনন্তর স্থ্রীব রামচরণারবিন্দে সাফাঙ্গ প্রনিপাত করিয়া কহিলেন—হে দেব! আপনি যেরপ আজ্ঞা করিলেন আমি তাছাই করিব, অনন্তর স্থ্রীব লক্ষ্মণের সহিত কিছিয়া। নগবে গমন করিয়া শ্রীরামের আদেশাস্থরপ সকল কার্যা নির্বাহ করিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। মহাবীর লক্ষ্মণ স্থ্রীব কর্ত্তক যথোচিৎ পুদ্ধিত হইয়া শ্রীরাম সন্নিধানে আগ্যমন পূর্বক তাহাকে প্রণাম করিলেন। ৫২। অনন্তর শ্রীরামচন্দ্র লক্ষ্মণের সহিত মিলিত হইয়া প্রবর্ষণ নামক পর্বতের অতি বিস্তৃত্ত ইরা প্রামানচন্দ্র দেই স্থানে ক্ষ্মিক মণিমর স্থাক প্রতা সমূলল রষ্টি, বায়ু ও স্থাত্রপ নিবারক থকটা গহরর এবং সেই গহরর সন্নিহিত বন্দ্রিত স্থাত্র ফল মূলাদি প্রেচুর পরিমানে অবলোকন করিয়া লক্ষ্মণের সহিত প্রায়রের বাস করিতে বাসনা করিলেন।এ০। ৫৪। রখুনন্দন

দিব্যমূলকলপুষ্পাসংযুক্তে
মৌক্তিকোপমজলে\ঘপল্লে।

চিত্তবৰ্ণমূগপক্ষিশোভিতে পৰ্বতে

ে পর্বতে বাস করিয়া ছিলেন ঐ পর্বতের বিবিধ স্থচাক ফল মূল পুস্পা এবং মুক্তাসদৃশ নির্মাণ জল ছারা পরিপ্রিড বহুত त्रचुकूटनाख्याश्वम< । ee ।।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
কিন্ধিন্দ্র্যাকাণ্ডে তৃতীয়োহধ্যায়ঃ।
সবোবর ও নম্নানন্দ্রন্ধন বিচিত্র বর্ণ পশ্চিণণ স্থানে স্থানে
লক্ষিত হইত । ৫৫।

ইতি শ্রীমদধ্যাস্মরামায়ণে উমামছেশ্বরসম্বাদে কিন্ধিল্যাকাণ্ডে তৃতীয়োহধ্যায়ঃ।

চতুর্থয়োঽধ্যায়ঃ।

তত্র বার্ষিকদিনানি রাঘবো।

লীলয়া মণিগুহামু সঞ্জরন্।
পক্ষমূলকলভোগতোধিতো
লক্ষণেন সহিতোহ্বসৎ মুখম্॥ ১॥
বাতনুমঞ্জলপূরিতমেঘান্তরস্তনিতবৈদ্যুতগর্ত্তান্।
বীক্ষাবিমায়মগাদ্গজ্যথান্যদ্বাহিতমুকাঞ্চনকক্ষান্

শ্রীরামচন্দ্র সেই পর্বতে ইতন্তত মণিময় গুছা মধ্যে সক্ষরণ করতঃ সুপক্ষ ফলমূল ভোজন দারা পরিতৃপ্ত হইয়। সীতা ও লক্ষ্মণের সহিত পরম স্থাপে এক বর্ষ কাল অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। ১। সেই স্থানে শ্রীরামচন্দ্র কোন দিবস তড়িত সংযুক্ত এবং শক্ষারমান বাতসঞ্চালিত সজল জলদাবলী সন্দর্শন করিয়া সুবর্ণময় পৃষ্ঠান্তরণ শোভিত গালযুথ ভামে বিশ্বরাপর ছইতেন। ২। এবং ঐ স্থানের নব মাস

নবঘাসং সমাসাদ্য হৃষ্টপুষ্ঠমৃগদ্বিজ্ঞাঃ।
ধাবস্তঃ পরিতোরামং বীক্ষ্য বিক্ষারিতেক্ষণাঃ॥ ভ
ন চলন্তি সদা ধ্যাননিষ্ঠা ইব মুনীশ্বাঃ!
রামং মানুষকপেণ গিরিকাননভূমিষু॥ ৪॥
চরন্তং পরমাত্মানং জ্ঞাত্বা সিদ্ধাণা ভূবি।
মৃগপক্ষিগণা ভূত্বা রামমেবানুদেবিরে॥ ৫॥

ভক্ষণ ভারা ছাই প্রশাস্ত মৃগ পাকি গণ ইতন্তত বিচরণ কালে পথি মধ্যে জ্ঞারামকে দর্শনান্তর ধ্যানস্থ মুনিগণের নাগর নিস্পান হইরা অনিমেধ লোচনে অবস্থান করিত এবং সিদ্ধ গণ গিরি-কানন সঞ্চারী রামকে মানুষ রূপী প্রমান্ত্রা করিয়া মৃগা ও পক্ষি রূপ ধারণ পূর্বক জ্ঞারামের অমুগমন করিতে লাগিলেন। ৩। ৪। ৫। একদা ধ্যাননিষ্ঠু জ্ঞারামচন্দ্র দৌমিত্রিরেকদা রামমেকাতে ধ্যানতৎপরম। সমাধিবিরমে ভক্তা প্রণয়াদ্বিনয়াম্বিডঃ॥ ৬॥ অব্ৰবীদেৰ ! তে বাক্যাৎ পূৰ্ব্বোক্তাদ্বিগতো মম। অনাদ্যবিদ্যাসম্ভতঃ সংশয়ো হৃদি সংস্থিতঃ ॥ ৭ ॥ उनानी इका क्षिष्ठामि किशामादर्गन बाघव !। जवनाताधनः (लाटक यथा कुर्वास्त्र (यातिनः ॥ ৮ ॥ ইদমেব সদা প্রাছর্যোগিনো মুক্তিসাধনম্। নারদোহপি তথা ব্যাসো ব্রহ্মা কমলসম্ভবঃ ॥১॥ ব্ৰহ্মক্তাদিবৰ্ণানামাশ্ৰমাণাং চ মোক্ষদম। স্ত্রীশূজাণাং চ রাজেজ ! স্থলভং মুক্তিসাধনং। তব ভক্ত্যায় মে ভাত্তে ক্রহি লোকোপকারকং ॥১০ শ্রীরাম উবাচ।

মম পূজাবিধানস্য নাস্তোহন্তি রঘুনন্দন !। তথাপি বক্ষ্যে সংক্ষেপাদ্যথাবদম্বপূর্ব্বশঃ॥ ১১॥

সমাধি সমাধানন্তর নির্জনে উপবেশন করিলে লক্ষ্মণ ভক্তি ও প্রণয় সহক্রত বিনয় বচনে কহিলেন—হে দেব ! আপনি আমাকে পুর্বেষে যে সকল জ্ঞানোপদেশ করিয়াছেন, ভদারা আমার অবিদ্যা জনিত হৃদর সংশয় বিচ্ছিন হইয়াছে: কিন্তু যোগিগুণ যেরপ লেকিক পূজাদি নিয়মাতুদারে আপনার আরাধ করে ঐ প্রকার প্রজার নিয়ম এবণ করিতে ইচ্ছা করি। ৬ এ হে ভগবন্! নারদ, বাাস, কমলযোনি ব্রহ্মা এই সকল স্থেশীমি গণ পুজার নিয়মানুসারে আপনার আরাধনাকে মুক্তি 🚮 সাধন বলিয়াছেন। ৮।৯। হে দরামর! ব্রাক্ষণ, ক্ষত্রিয় প্রভৃতি চ_রীতুর্ব্বর্ণ শিলা নির্মিত মদীয় প্রতিমাতে স্নাল করাইবে মুম্মরাদি প্রতি-ও ব্রী জাতিরও মোক্ষের স্থলভ উপায়, স্বতরাং সর্বালা_স ^{কোপ}ি গাভে মার্জন করিবে, তদনন্তর স্থাতি শাস্ত্রোক্ত গন্ধ পুলাদি কারক সেই পূজার নিয়ম গুলি আপনার ভক্ত এ ই কনিষ্ঠ ভাতার প্রতি রূপা প্রকাশ করিয়া ব্যক্ত করুন। ১০ ৣ। 🕮 রাম ক্ষিলেন—হে ভ্রাতঃ! আমার পূজা নিয়মের ফুর্নীমা নাই, ভথাপি সংক্ষেপে আমুপুর্বিক কিঞ্চিৎ নিয়ম বঞ্^{শিতেছি} অবণ

সগৃহেগাক্তপ্রকারেণ দ্বিজত্বং প্রাপ্য মানব:। मकानारम खरतार्माजः नज् । महक्रिमःयुटः ॥ ১২ তেন সক্ষণিতবিধিশ্বামেবারাধয়েৎ সুধীঃ! क्रमस्य वानरल वार्ट्ह श्रिक्यारमी विভावस्त्री 100॥ শালগ্রামশিলায়াং বা পুজয়েশ্মামতব্দিতঃ। প্রাতঃস্নানং প্রকুর্বীত প্রথমং দেহশুদ্ধয়ে।। ১৪।। বেদতল্তোদিতৈর্মক্তিমুল্লেপনবিধানতঃ। मक्तानिकम्म यज्ञिङ्यः ७९कूर्यग्राविधिना तूरः॥১०॥ मक्षण्यात्मी कुक्षीं छ निधार्थः कर्मागाः सुधीः। স্ওরং পুজরেজক্রা মলুধ্যা পুজকে। মন ॥ ১৬ 1 শিলায়াং স্পনং কুর্য্যাৎপ্রতিমান্ত প্রমার্জনম্। প্রসিদ্ধৈর্গন্ধপুষ্পাল্যৈর্মৎপুজানিদ্ধিদায়িকা ॥১৭ ॥ ষ্মায়িকোইনুর্ত্ত্যা মাং পূজয়েল্লিরতন্ততঃ। প্রতিমাদিষ লঙ্কারঃ প্রিয়ো মে কুলনন্দন ! ॥১৮॥

কর —মনুষ্যেরা যথা শাস্ত্রানুসারে দিজত্ব লাভ করিরা সদ্গুক সন্নিধানে ভক্তি পূর্বক মন্ত্র গ্রহণ করিবে, অনন্তর গুরুদর্শিত विधानाजूमादत आभारकहे शृक्षा कतित्व, के शृक्षा निष मानत्म বা আগ্নতে কিন্তু। স্থবৰ্ণ রজভাদি প্রতিমাতে ব্রাহ্মণে সূর্যামগুলে কিস্ব। শাণগ্ৰাম শিলাতে অভি প্ৰশস্ত ফলদায়ক। ছে লক্ষ্মণ! পণ্ডিত ব্যক্তি প্রথমতঃ দেহ শুদির নিমিত্ত যথা শাস্ত্র মৃতিকা লেপনাদি বিধানানুসারে প্রাতঃস্থান—তদনন্তর যথাবিধি সন্ধ্যোপাসনাদি করিবে, ভদনন্তর কশ্ম সিদ্ধির নিমিত্ত সংকম্প করিয়া আমা ছইতে অভিন্ন বৃদ্ধিতে গুরু পূজা করিবে, তদনন্তর পচার ঘারা ঐ প্রতিমাতে আমার পূজা করিয়া মহুযোরা ইভফ্ট সিদ্ধি লাভ করিবে, কিন্তু দ্স্তাদি শূনা ছইয়া সংখ্য পূর্ণিক গুরুপদিষ্ট বিধানারুদারে পূজা করিলেই উক্ত ফলপ্রাপ্ত रहे। मजुरा, अजिसे कन रहेर्द मा। (इ कूलमलन! अधि-

অগ্নে যালেত হবিবা ভাকরে শুণ্ডিলে যালেও।
ভিক্তেনাপক্ষতং প্রীতৈয় শ্রন্ধা মম বার্যাপি ।১৯॥
কিং পুমর্ভক্যভোজ্যাদিগদ্ধপুশাক্ষতাদিকং।
প্রজাজবানি সর্বাণি সংপাদির সমারভেৎ গংলা
টিলাজিন কুশৈঃ সম্যুগাদনং পরিকল্পয়েও।
ভিক্তোপবিশ্য দেবকা সংমুখেশুদ্ধমানসঃ॥ ২১॥
ভিকোপবিশ্য দেবকা সংমুখেশুদ্ধমানসঃ॥ ২১॥
ভিকোপবিশ্য দেবকা সংমুখেশুদ্ধমানসঃ॥ ২১॥
ভিকোপবিশ্য দেবকা সংমুখেশুদ্ধমানসঃ॥ ২১॥
ভিকোপবিশ্য শ্রেক্র্রাভিত্তিবাল্তর স্থাতি স্বাল্তর মতন্তিতঃ॥
কলশং স্পুরো বামে ক্ষিপেও পুশ্পাদি দক্ষিণে।
ভর্মিপালিপ্রালানার্থং মধুপ্রত্বিমেব চ॥ ২৪॥

তথৈবাচমনার্থং জু ন্যানেৎপাত্রচতুইরম্।
হ্রৎপত্মে ভানুবিমলাৎ মৎকলাং জীবসংক্রিতাম
ধ্যায়েৎসদেহমথিলং তরা ব্যাপ্তমরিক্ষম!।
তামেবাবাহয়েরিত্যং প্রতিমাদিরু মৎকলাম্॥২৬॥
পাভার্ঘ্যাচমনীয়াভৈঃ স্নানবন্ত্রবিভূষণেঃ।
বাবচ্ছক্যোপচারের্বা স্বর্চয়েরামমায়য়া ॥ ২৭।।
বিভবে সিভি কপুরকুস্কুমাগুরুচক্ষেনঃ।
ভারেশ্বস্থবিরতাং স্থালকুসুইমঃ শুভৈঃ॥২৮॥
দশাবরণপূজাং বৈ হ্যাগমোজাং প্রকারয়ের।
নীরাজনৈপূপদীপৈনিবিদ্যবিবিধৈশুথা॥ ২৯॥
শ্বন্ধাপহরেরিভাং শ্রন্ধাভূগহম শ্বঃ।
হোমং কুর্যাৎপ্রেষ্ট্রন বিধিনা মন্ত্রকেবিদঃ ॥৩০॥

মাদিতে পুজা করিতে ছইলে পুস্পাদি উপচার আবশ্যক, অমি, স্মা ও ছাঙ্গলে মতের আবশ্যকত। (অর্থাৎ মৃত্রারা অনলাদিতে ছোম করিবে) হে ভ্রাতঃ! ভোনাকে অধিক কি বলিব—ভক্ত ব্যক্তি কেবল জলদারা যদি আনাকে শ্রদ্ধা পূর্বক পূজা করে ভাছা হইলেও আমার প্রীতি হয়, ভক্তি থাকিলে ভক্ষা, ভোজা, গয়, পুস্প, অক্ষত ধূপ, দীপ. নৈবেদা প্রভৃতি কোন উপচারের প্রভাজন থাকেনা, যাখ ছউক এক্ষণে পূজা নিয়ম বলিভেছি শ্রবণ কর—হে লক্ষ্মণ! সাধক ব্যক্তি প্রথমতঃ সমস্ত পূজার দ্রব্য সংগ্রহ করিবে, তদনন্তর কুশাসনোপরি অজনাসন—ভত্নপরি কল্পাসন আন্তৃত করিয়া ভত্নপরি বিশুর্য চিত্তে উপবেশন পূর্বক দেবভা সমুখে মাতৃকান্যাস ও আর্ম মাতৃক ন্যাস করিয়া বাছ ন্যাস, অন্তন্যাস, কেশ্ব ক্তাদি নশ্ম তদনন্তর ত্নাসা, বিক্রুপঞ্জর ন্যাস ও মন্ত্র ন্যাস করিবে। এড শ্রাক্তে পূজা করিতে ছইলেও এই সকল ন্যাসের আবশ্যতা এবং পূজক ব্যক্তি স্বর্ণীয় বামভাগে জলপূর্ণ একটী কল্স এবং

দক্ষিণ ভাগে পুজাদি ও অহ্য পাত্র পাদ্য, পাত্র মধুপর্কপাত্র
এবং আচমনীয় পাত্র এই চারিটী পাত্র রক্ষা করিবে এবং নিজ
হৃদর পাত্র মদীর কলাকে জীবরপো ভাবনা করিবে, হে অবি
কম ! পূজক বাক্তি নিজ দেহকেও মদীর কলাহারা ব্যাপ্ত জ্ঞান
করিরা প্রতিমাদিতে ঐ কলাকে আবাহন করিবে। ১১ ৷ ১২
১০ ৷ ১৪ ৷ ১৫ ৷ ১৬ ৷ ১৭ ৷ ১৮ ৷ ১৯ ৷ ২০ ৷ ২১ ৷ ২২ ৷
১০ ৷ ২৪ ৷ ২৫ ৷ ২৬ ৷ অনস্তর দস্তাদি শ্রা হইয়া পাদ্য,
অহ্ ৷ আচমনীয়, আনীয়, বস্ত্র, অলক্ষার প্রভৃতি যথা শক্তি উপ
চার হ বারা আমাকে পূজা করিবে; পূক্ষক বিভবশালী হইলে
কপ্রাা কুমকুম, অগুরু চন্দন এবং স্থানর স্থান্ত প্রাাক্তি
দিববিধ নৈবেদ্য ও পঞ্চবিধ নীরাক্তনাদি হারা আমাকে
পূজা করিবে এবং দশ্লী আবরণ দেবতার অগন্তা সংহিত্যিক
পূজা করিবে এবং দশ্লী আবরণ দেবতার অগন্তা সংহিত্যিক
পূজা কর্মান্ত আবশাক ৷২৭ ৷ ২৮ ৷২৯ হে বৎস ! পূজক ব্যক্তি
আদ্ধা প্রশিক্ত যদি আমাকে ঐ সকল উপচার প্রদান করে তাহ
হলৈ গ্রহক্ষা ক্রিব যেহেতু আমি শ্রন্ধার বন্ধীভূত কর্মর, ৫

खनरखारनाक्रमादर्गन क्रिकानमितिख्यः।

जुरुवान्य नमरखन शृश्युरक्रनाथेन त्यः॥ ७०॥

खथरनाश्यानमाद्यो ना हक्रमा द्विमा छथा।

छख्काम् नम्प्रथाः मिन्नाज्यनेज्यिकम्॥ ७२॥

थारमननमधाद्यः हामकाल मना त्यः॥

शार्यमननमधाद्यः हामकाल मना त्यः॥

शार्यमननमधाद्यः हामकाल मना त्यः॥

शार्यमननमधाद्यः हामकाल मना त्यः॥

शार्यमनक्ष्यः विद्या हामणायः ममाश्रावः॥ ७० ॥

स्थनामः ह छात्र नद्या खीछिममञ्जिष्णः॥ ७० ॥

सम्र्यामः ह छात्र नद्या खीछिममञ्जिष्णः॥ ७० ॥

सम्र्यामः छ छात्र नद्या खीछिममञ्जिष्णः॥ ७० ॥

सम्र्यामः छ उष्णा हिन्ना खीछिममञ्जा ॥ ७० ॥

खनरम् जुरुकी छानिख्या भागाः निषाम ह ॥ ७० ॥

লাতঃ। মন্ত্র বিশারদ পূজক বাক্তি পূজান্তে আমার প্রীতির িমিত্ত যতু পূর্বকৈ যথা বিধি ছোম করিবে।৩০। তে শ্ববিন্দম! গোম করিতে ছটলে কুণ্ডেব আবিশ্যকতা, ঐ কুণ্ড আগস্তা সংছিতোক্ত বিধানাত্মারে পণ্ডিত ব্যক্তিরা নির্মাণ করিবে। অনন্তর আমার মূল মন্ত্র দারা অথবা পুরুষস্ক্ত দারা হোম করিবে, ছে ল্রাভঃ ৷ এই যে কুণ্ডে ছোমের বিধি কছিলাম ইছা শুদ্রাদি ও নির্ম্পাক ত্রাক্ষণের কর্তব্য, দায়িক ত্রাক্ষণেরা নিজ উপাস্য অগ্নিজে বত রূপ চক মারা ছোম করিবে, ভাখাদের কুগু নিশ্মানের আবশ্যকতা নাই। হে বংস ! পণ্ডিত বাব্দিরা হোম কালে অনল মধ্যে আমার সম্ভপ্ত স্থবর্ণ সদৃশ সমুজল এবং সর্বালহার ভূষিত রূপ চিন্তা করিবে—অনন্তর হসুমৎ প্রভৃতি मनीत्र शार्तन वर्गाक विन क्षानाम कवित्रा शाम मगाख कवित्व। । ৩১। ৩২। ৩৩। (হ ভাতঃ ! অনন্তর পুগক ব্যক্তি বাক্য मश्यम शूर्वक आभारक ठिखा कर र मनीय मृत मह अंश कदिरत, ভদনম্বর সুপ্রীত মনে কর্পূরাদি মি খ্রত তামুল আমাকে প্রদান করিয়া মৎপ্রীতার্থে স্বয়ং নৃত্য গীত ও স্তব পাঠাদি ফ্রিবে, অনম্ভর আমাকে হৃদয়ে ভাবনা করতঃ ভূমিতলে দণ্ডবৎ

শিরভাধার মদতং প্রসাদং ভাবনামরস্।
পাণিভ্যাং মৎপদে মুর্দ্ধি গৃহীতা ভক্তিসংযুতঃ ॥ ৩৬
রক্ষ মাং ঘোরসংসারাদিত্যুক্তা প্রণমেৎ স্থবীঃ।
উদ্ধানরেস্তথা পূর্বং প্রতাগ্জ্যোভিষি সংসারন্॥ ৩৭
এবমুক্তপ্রকারেণ পূজ্যেদ্বিধিবদাদি।
ইহামুত্র চ সংসিদ্ধিং প্রাপ্রোভি মদমুগ্রহাৎ ॥ ৩৮॥
মন্তক্তো যদি যামেবং পূজাং চৈব দিনে দিনে।
করোতি মম সারপাং প্রাপ্রোভাব ন সংশারঃ ৪৩৯

ইদং রহস্তং প্রমং চ পাবনং
মারৈ সাক্ষাৎকথিতং সনাতনম্।
পঠত্যজ্যস্ত্রং যদি বা শৃণোতি যঃ
স সর্মপুজাফলভাত্ন সংশয়ঃ ॥ ৪০॥

প্রণামানস্তর আমার প্রদাদিত পূজাদি আমাকর্জ্ক অপিত ভাবনা করিয়া মস্তকে ধারণ করিবে এবং মনে মনে ভজ্কি পূর্বেক ইছা ভাবনা করিবে যে, ইফ্ট দেবের চরণ যুগল নিজ পাণি যুগল ঘারা গ্রহণ করিয়া মস্তকে ধারণ করিলাম; অনস্তব পরম জানী পূজক রুভাঞ্জলি পূটে ছে ভাগবন্! আমাকে গোল দংসার হইতে পরি আল ককন—এই রূপ আমার নিকট প্রার্থনা করিয়া প্রণাম করিবে, তদনস্তব হৃদয়স্থ জীব হইতে আবাহিত মহকলাকে বিসর্জন করিবে অর্থাৎ ঐজীবেতে প্রবিষ্ট ভাবনা করিবে। ৩৪।৩৫।৩৬।৩৭। হে লক্ষ্মণ! মন্তক্ত ব্যক্তি যদি একনবার উক্ত প্রকারে আমাকে পূজা করে তাগ ছইলে ইছ কালে ও পর কালে সিদ্ধি প্রস্তাহ্ব আমার সাজপা প্রার্থ হয়। তালতঃ! ভোমার সমক্ষে আমি লে অভিপাশন প্রম গুহা সনাতন পূজা বিধি কছিলাম—ইছা যে ব্যক্তি সভত পাঠ বা প্রবণ করিবে দে বাজি নিশ্বেষ সক্ষ পূজার ফল

এবং পরাত্বা শ্রীরামঃ ক্রিয়াযোগমন্ত্রমন্।
পৃক্টঃ প্রাহ্ সভক্তায় শেষাংশায় মহাত্রনে ॥ ৪১ ॥
পুনঃ প্রাক্তবজামো মায়ামালয়্য দুংখিতঃ।
হা দীতেতি বদমেব নিজাং লেভে কথঞন ॥ ৪২ ॥
এতিম্মিয়ন্তরে তত্র কিছিল্যায়াং সুবুদ্ধিমান্।
হন্মান্ প্রাহ্ সুত্রীবমেকান্তে কিপিনায়কম্ ॥ ৪৩॥
খুণু রাজন্! প্রবন্ধ্যামি তবৈব হিতমুত্তমম্।
রামেণ তে কৃতঃ পূর্বমূপকারে। হানুত্রমঃ ॥ ৪৪ ॥
কৃতম্বত্রুয়া মুনং বিস্মৃতঃ প্রতিভাতি মে।
ত্রহুতে নিহতো বালী বীরক্রৈলোক্যসন্মতঃ।।৪৫

রাজ্যে প্রতিষ্ঠিতোহনি ত্বং তারাং প্রাপ্তোহনি তুর্লভাম্। স রামঃ পর্কতন্তাব্রে
ভাত্রা সহ বসন্ সুধীঃ ।। ৪৬ ।

হদাগমনমেকাগ্রমীকতে কার্য্যগোরবাৎ ।

হং তু বানরভাবেন স্ত্রীসকো নাবর্ধ্যসে ॥ ৪৭ ॥

করোমীতি প্রতিজ্ঞায় সীতায়াঃ পরিমার্গণম্ ।

ন করোধি ক্রতন্ত্রভং হন্যদে বালিবদ্জতম্।॥ ৪৮ ॥

হন্মদ্বচনং শ্রুত্বাহা হর্মন্তং ব্রোদিতম্ ॥ ৪৯ ॥

শীব্রং কুরু মদাজ্ঞাং ছং বানরাগাং তরন্থিনাম্ ।

সহস্রাণি দশেদানীং প্রেষয়ান্ত দিশো দশ ॥ ৫০ ॥

সপ্তদ্বীপগতান্ সর্কান্ ব্রেরানানয়ন্ত তে ।

পক্ষমধ্যে সমায়ান্ত্রসর্কে বানরপুক্ষবাঃ ।। ৫১ ॥

ভাগী ছইবে। ৪০। খ্রীরামচন্দ্র জিজ্ঞাসিত হইরা পরম ভক্ত শেষাবভার মহাত্মা লক্ষ্মণের নিকট উক্ত প্রকাব ক্রিয়া যোগ কহিলেন, অনস্তর ক্ষণেই প্রাকৃত মনুষ্বের ন্যার মারাবলম্বন পূর্বক অতি ভ্রঃথ সন্থকারে 'হাসীতে,' এইপ্রকার বস্তু বিলাপ করিতে কবিতে কোন প্রকাবে নিজিত হইলেন। ৪১।৪২। এই সমযে কিজিক্ষা নগবে নিজেনাপ্রিক্ট কশি নারক

এই স্মরে কিজিস্কাণ নগরে নির্জনোপবিষ্ট কিপা নারক স্থাীবকে সুবৃদ্ধি ছন্মান কহিলেন। ৪৩। ছে মহারাজ! আপনার পরম ছিত কিছু বলিতেই শ্রবণ করুন—প্রথমতঃ শ্রীরামচন্দ্র আপনার অভিশয় উপকার করিরাছেন, এক্ষণে আমার বিবেচনা হর আপনি তাহা বিশ্বত হইয়া ক্রভরের ন্যায় নিশ্চিত্ত রহিয়াছেন। ছেমহাভাগ! সেই উপকার সামান্য নহে, দেখুন শ্রীরাম ত্রিলোক বিধ্যাত মহাবীর বালিকে ভোমার নিমিত্ত রণ ভূমিতে নিহত করিয়া ভোমাকে কিছিক্কাা রাজ্যে অভিষিক্ত করিয়াছেন এবং তাঁহারই সাহায়ে পরম হলভা তারাকে প্রাপ্ত হইয়াছ একণে সেই

শ্রীরামচন্দ্র অনুজের সহিত পর্বাত শৃদ্ধে বাদ করিয়া গুরুতব কার্যাসুরোধ বশভঃ ভোমার পথ নিরীক্ষণ করিতেছেন তুমি বাদরত্ব হেতু জীতে আদক্ত হইয়া কিছুই বিবেচনা করিতেছ না। ৪৪ ।৪৫ । ৪৬ । ৪৭ । তুমি শ্রীরামের নিকট দীতাহে বণে প্রতিক্রাক বিরাছ একণে কিছুই করিতেছ না; মহারাজ তুমি অতি কৃতত্বের ন্যার ব্যবহার করিতেছ, অতএব শ্রীরাম-চন্দ্র অতি গল্পরে বালির ন্যার ভোমাকে বিনয়্ট করিবেন। ৪৮ । স্থ্রীব হন্মানের বাক্য শ্রবণানন্তর তরাকুল হটরা কছিলেন, ছে কপিশ্রেষ্ঠ ! তুমি যাহা কছিলে তাহা সত্য অত এব শীজ্র আমার প্রতিজ্ঞা প্রতিপালন কর এই মহাবীর দশ সহজ্র বানর দৈন্য দশ দিকে শীজ্র প্ররণ কর । ৪৯ । ৫০ । ইছারা গমন করিয়া সপ্তম্বীপত্ব বানর সমূহকে প্রস্থানে আনম্যন কর্মক। এবং বামর সৈন্য মধ্যে আমার এই আজা প্রচারিত হউক যে, এক পক্ষ মধ্যে কৃতকার্য্য হইরা সকলে এই স্থানে প্রজ্ঞাগ্যমন করে বিনি পক্ষমধ্যে প্রজ্ঞাগ্যমন

যে পক্ষমতিবর্ত্তন্তে তে বধ্যা মে ন সংশারঃ।
ইত্যাক্তাপ্য হম্মন্তং স্থাবা গৃহমাবিশাৎ ॥ ৫২ ॥
স্থাবাক্তাং পুরক্ত্য হম্মাশ্বন্তিসভ্ষঃ।
তৎক্ষণাৎ প্রেষয়ামাস হরীন্দশদিশঃ স্থাঃ ॥৫৩॥
ক্ষণিভগুণসভ্যান্ বায়ুবেগপ্রচারান্
বনচরগণমুখ্যান্ পর্বতাকার্ত্বপান্।

না করিবেন তিনি নিশ্চয় আমার বধ্য ইইবেন স্থাীব হন্নানকে এরপ আদেশ করিয়া গৃছে প্রবেশ করিলেন । মন্ত্রির হন্মান্ স্থানিবের আজামুসাবে দশ দিকে বানর সৈন্য ক্রেরণ করিলেন । ৫১ । ৫২ । ৫০ । প্রন্নন্ন হন্মান্ অসীমগুণ প্ৰনহিতক্যারঃ প্রেষয়ামাস দূতান্ অতিরভদতরাত্মা দানমানাদিস্পান্ ॥৫৪॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্ধিস্ক্যাকাণ্ডে চতুর্বোহ্ধ্যায়ঃ।

ও বিক্রম সম্পার বায়ু সদৃশ বেগগামী পর্বতে প্রমাণ বনচর শ্রেষ্ঠ বানরগণকে অর্থ ও সম্মান প্রদান দারা পরিতৃষ্ট করিয়া দেভিত-কার্য্যে প্রেরণ করিলেন। ৫৪।

ইতি শ্রীমদধাক্ষরামায়ণে উনামছেশ্বর সন্থাদে কিকিন্ধাকাণ্ডে চতুর্থোহধাায়ঃ।

পঞ্চমাঽধ্যায়ঃ।

রামস্ত পর্বভন্তাতো মণিদানে নিশামুখে।
দীতা বিরহক্ষং শোকমদহরিদমত্তবীৎ॥ ১॥
পশ্ত লক্ষণ ৷ মে দীতা রাক্ষদেন হৃতা বলাং।
মৃতামৃতা বা নিক্ষেতং ন জানেহদ্যাপি ভামিনী॥২

অনন্তর জীরামচন্দ্র সেই পর্বতে শৃংঙ্গাপরি মণিময় সাম্তে বিষয় হইয়া রঞ্জনী সমাগম কালে সীতা বিরহ জানিত শোকা-বেগ সহম করিতে অকম হইয়া লক্ষ্মণকে কহিলেন। ১। হে লক্ষ্মণ! আমার প্রাণদ্যিতা জানকী বলপূর্বক রাক্ষ্মণ জীবতীতি মম জ্রয়াৎকশ্চিদ্বা প্রেয়কুৎসমে।

যদি জানামি তাং সাধীং জীবন্তীং যত্ত কুত্র বা।।৩।

হঠাদেবাহরিষ্যামি সুধামিব প্রোনিধেঃ।

প্রতিজ্ঞাং খুণুমে ভাতর্যেন মে জনকাল্মজা।। ৪।।

কর্ত্ত অপষ্ণতা হইরা এতদিন পর্যান্ত জীবিত আছেন কি না ইহা নিশ্চর করিতে পারিতেছিনা। যদি কোন ব্যক্তি দীতা জীবিতা আছেন এই সম্বাদ্টী আমাকে প্রদান করে শে বাক্তিকে আমি পরম প্রিয়কারী বন্ধ্ বিলয়া গণ্য করিব। যদি যে কোন স্থানে সীতা জীবিতা আছেন, ইহা জামি জানিতে নীতা তং ভত্মদাৎ কুর্যাং দপুজবলবাহনম্।

হা দীতে ! চন্দ্রবদনে বসন্তী রাক্ষদালয়ে ॥ ৫ ॥

দুংথাতা মামপশুন্তী কথং প্রাণান্ ধরিষাদি ? ।

চন্দ্রেং পি ভাকুবদ্ধাতি মম চন্দ্রাননাং বিনা ॥ ৬॥

চন্দ্র ! তুং জানকীং স্পৃন্ধী করৈর্মাং স্পৃশশীতলৈঃ

স্থাবাহিপি দয়াহীনো তুঃখিতং মাং ন পশুতি ॥

রাজ্যং নিদ্ধন্টকং প্রাপ্য জীভিঃ পরির্তো রহঃ ।

কৃতয়ো দৃশ্যতে ব্যক্তং পানাসক্রোহতিকামুকঃ ॥ ৮

নারাতি শরদং পশ্যম্পি মার্গমিত্ং প্রিরাম্ ।

প্রেরিপকারিণং দুষ্টঃ কৃতছো বিশ্বিতো হি মাম্॥

পারি তাহা হইলে তাঁহাকে যে কোন উপায়ে হচাৎ আনয়ন করিব, যেরূপ দেবগণ পরোনিধি ছইতে হাধা আনম্মন করিয়া ছিলেন। হে ভ্রাতঃ ! আমি প্রতিজ্ঞা করিতেছি শ্রবণ কর—যে ভরণত্মা আমার প্রিয়ত্তমা জানকীকে ছরণ করিয়াছে ভাছাকে দমুলে ভন্মশাৎ করিব। হা জনকনন্দিনি গীতে! হা চক্রমুখি। ভূমি রাক্ষসালয়ে অবস্থিতি করিয়া আমার অদর্শন জনিত ত্র:খাতুত্ব করতঃ কিরপে জীবন ধারণ করিবে—হে প্রিয়ে! আমিতো তোমার বিরহে বিকল হইয়াছি অধিক কি বলিব ভোমার বিরহে শীতরশ্মি চক্রকে ও প্রচণ্ড-কর মার্ভণ্ড বলিয়া আমার জান হইভেছে। ২। ৩। ৪ ৫।৬। হে স্থাংশো! ভূমি যে সকল শীত কিরণ দারাজানকীর গাত্রস্পর্শ করিতেছ ঐ সকল কিরণ দ্বারা আমাকে স্পর্শ কর—তাহা হইলে আমি অপেক্ষাক্লত স্থপ্তণ লাভ করিতে পারি ৷ হে লক্ষাণ ! নির্দ্ধয় সূত্রীবও নিষণ্টক রাজ্য লাভ করিয়া নির্জ্জন স্থানে স্ত্রীগণ পরিবৃত হইয়া সন্তোগ সুথ অনুভব করিতেছে—আমার তুঃথ এক বারও অব্লোকন করিল না। (ছ ভ্রাতঃ! পানাসক্ত অতি কামুক সেই স্থাীবকে ক্লডম বলিয়া সম্পঞ্চ বোধ হইভেচে, যেহেতু উপদ্থিত শার্থ কাল অবলোকন করিয়াও সীভারেষণের নিনিত্ত সেই পাপাস্থ। আগমন করিডেছে না,

ইন্মি স্থাবিমপোবং সপুরং সহবান্ধবম।
বালী যথা হতো মেহদ্য স্থাবিবাহিপি তথা ভবেৎ
ইতি রুকং সমালোক্য রাঘবং লক্ষ্মণোহত্তনীৎ।
ইদানীমেব গড়াহং স্থাবিং দুর্ফমানসম্।। ১১ ।।
মামাজ্ঞাপয় হড়া তমায়াস্যে রাম তেইন্তিকম্।
ইত্যুক্ত্বা ধমুরাদায় খজ্ঞাং তূণীরমেব চ ।। ১২ ।
গল্পমন্ত্যুদ্যতং বীক্ষ্য রামো লক্ষ্মণমন্ত্রবীৎ।
ন হস্তবস্তোয়া বৎস ! স্থাবিধা মে প্রিয়ঃ দখা ॥১৩॥
কিন্তু ভীষয় স্থাবিং বালিবন্ধ হনিব্যুদ্যে।
ইত্যুক্ত্বা শীঘুমাদায় স্থাবিপ্রক্রিভাষিত্রম্ । ১৪ ॥
আগত্য পশ্চাদ্যৎকার্য্যং তৎকরিষ্যামাসংশ্যুম্।
ভথেতি লক্ষ্মণোইগজ্জ্বুরিতো ভীমবিক্রমঃ । ১৫ ।
ভথেতি লক্ষ্মণোইগজ্জ্বুরিতো ভীমবিক্রমঃ । ১৫ ।

বোধ করি দেই ক্লড মংক্রত পূর্ব্বোপকার বিশ্বত হইরও থাকিবে। ৭।৮০৯। ছেলক্ষণ থেরপ আমি বালীকে বধ করিরাছি, ভদ্রপে সবান্ধব সংগ্রীবকেও কিক্ষিক্ষা নগরের সহিত নির্মাল করিবে। ১০।

আনস্তর লক্ষণ জীরামচল্রকে ক্রুক দেথিয়া কহিলেন, ছে দেব!
আপনি আজা করুন আমি এই দণ্ডেই কিছিলা। গমন করিয়া
ঘুষ্টচেতা স্থ্যীবকে বিনাশ করিয়া আপানার নিকট পুনঃ
প্রত্যাগমন করিব। অনন্তর জীরামচন্দ্র লক্ষ্মণকে ধরুঃ, খজা
ও তৃণীর গ্রহণ পুর্বেক কিছিলা। গমনোদাত দেখিয়া কহিলেন,
হে বংদ! তুমি আমার প্রিয় দথা স্থ্যীবকে বালীর নাায়
বধ করিও না, কিন্তু ভাছাকে ভর প্রদর্শন করাইবে, ভর
প্রদর্শনান্তর স্থাীব যাহা কহিবেন ভাছা এছানে আসিয়া
আমাকে কহিবে। অনন্তর যাহা কর্ত্বর ভাহা করিব। ভীমবিক্রম লক্ষ্মণ ভথান্ত বলিয়া প্রীরানের আজা শিরোধারণ

কিছিল্ক্যাং প্রতি কোপেন নির্দ্ধির বানরান্। ।

সর্বিজ্ঞা নিত্যলক্ষীকো বিজ্ঞানাত্মাপি রাঘবঃ। । ১৬

সীতামস্থ্রশোচার্তঃ প্রাক্কতঃ প্রাক্কতামিব।

বুদ্ধ্যাদিদাক্ষিণস্তম্ভ মায়াকার্য্যাতিবর্ত্তিনঃ।। ১৭ ।।

রাগাদিরহিতন্তান্ত তৎকার্যং কথমুদ্ধবেৎ।

ব্রন্ধাণোক্তমূতং কর্তুং রাজ্ঞো দশরথন্ত হি।। ১৮।।

তপসঃ ফলদানায় জাতো মানুষবেশপৃক্।

মায়য়া মোহিতাঃ সর্বের্গ জনা অজ্ঞানসংযুতাঃ।। ১৯

কথমেষাং ভবেশ্বোক্ষ ? ইতি বিষ্ণুবিচিন্তয়ন্।

কথাং প্রথমিতুং লোকে সর্বলোকমলাপহাম্॥ ২০

রামায়ণাভিধাং রামো ভূতা মানুষচেন্টকঃ।

কোধং মোহং চ কামং চ ব্যবহারার্পদিদ্ধয়ে॥২১॥

পূর্ব্বক বানরগণকে যেন ক্রোধানলে দক্ষ করিবার আশ্রে কিন্ধিয়া। গমন করিলেন। এদিকে সর্ব্দক্ত প্রীরামচন্দ্র লক্ষ্মী-রূপ নিজ শক্তির সহিত সভত মিলিত এবং বিজ্ঞানমর চইরা ও প্রাক্ত মহুষ্য যেরূপ প্রাক্ষত স্ত্রীর নিমিত্ত শোক করে, তজ্ঞপ দুংশ সহকারে সীতার নিমিত্ত শোক প্রকাশ করিতে লাগিলেন, হে শ্রোতৃগণ। বৃদ্ধাদি সাক্ষী মায়াভীত রাগ দ্বোদি রহিত পরমাত্মা রামের এই প্রকার চিত্ত বিকার কথনই সন্তব নহে—এই প্রকার আশঙ্কা তোমাদিগের হৃদর মধ্যে কখনই উৎপন্ন না হর। যেহেতু বৈকুণ্ঠনাথ নারায়ণ ব্রহ্মার প্রার্থনা সিদ্ধি এবং রাজা দশরথের ভপাসার ফল প্রদান করিবার নিমিত্ত স্বর্থ মহুষ্যরূপে অবতীর্ণ হইরা মহুষ্যবদ্ববহার করিয়াছেন এবং ভগবান্ বিষ্ণু একদা চিন্তা করিলেন যে, মদীয় মায়া-মোহিত অজ্ঞানী মনুষ্যদিগের কিরপে মুক্তি লাভ হইবে—অনন্তর কিরৎক্ষণ পরে দ্বির করিলেন যে, সর্ব্বলোক পাবনী রামান্থ নামক মদীন্ধ কথা জগতে প্রচারিত হইলে অজ্ঞানী দিগোর

তত্তৎকালোচিতং গৃহ্ণন্ মোহমত্যবশাঃ প্রকাঃ।
অন্ধরক ইবাশেষগুণেষু গুণবিজ্ঞিতঃ ॥ ২২ ॥
বিজ্ঞানমূর্ত্তিবিজ্ঞানশক্তিঃ সাক্ষ্যগুণাস্থিতঃ।
অতঃ কামাদিভিনিত্যমবিলিপ্তো যথা নভঃ ॥২৩॥
বিশ্বন্তি মুনয়ঃ কেচিজ্ঞানিদ্ধ সনকাদয়ঃ।
ভদ্ভাব নির্মালাস্থাসঃ সম্যক্ জানন্তি নিত্যদা ॥ ২৪ ॥
ভক্তচিতামুসারেণ জায়তে ভগবানজঃ।
লক্ষ্যণোহপি তদা গড়া কিন্ধিন্ধ্যানগরান্তিকম্ ॥ ২৫
জ্যাঘোষমকরোভীবং ভীষয়ন্ সর্ববানরান্।
তং দৃষ্ট্বা প্রাক্ষতান্তত্ত বানরা বপ্রমূর্ধ নি ॥ ২৬ ॥
চক্রুঃ কিলকিলাশকং পৃতপাধাণপাদপাঃ।
তান্ দৃষ্ট্বা ক্রোধতাদ্রাক্ষো বানরান্লক্ষ্মণস্তদা ॥২৭

অবশ্য মুক্তি ছইবে। তদনস্তর ক্ষণেই ভগবানু ছরি মনুষ্য রূপ হইয়া নৌকিক ব্যবহারোপদেশার্থ তৎ তৎ কালোচিত ক্রোধ, মোহ ও কাম প্রকাশ করিয়া মোছ বশীভূত প্রজাগণকে মুগ্ধ করিরাচ্ছেন : বিজ্ঞানরূপ শক্তি সম্পন্ন এবং সমুং বিজ্ঞান স্ত্রপ সর্ব জগতের ভভাভভ সাক্ষী ভগবান্হরি নিভণি श्हेशां अञ्चर्तां भूर्लक छन ज्ञांत्र कार्या कति ए हम नहीं, কিন্তু কাম ক্রোধাদিতে লিপ্তা নছেন, যেরপ আকাশ-বায়ক সঞ্চালিত মলাদি বস্তু সংযোগ হইলেও তদারা লিপ্ত হয়েন না। কোন কোন মহর্ষিরা কদাচিৎ সেই অদিতীয় পুরুষের সাক্ষাৎকার লাভ করিয়াছেন। ছরিভক্তি পরায়ণ সনকাদি ঋষিশাণ সর্বাদাই ভাঁহার সাক্ষাৎকার করিয়া থাকেন। যে **१९० ७ क वर्मन एका वार्यान् एक घटनव हिन्छ इ जित्र अनूमात्री** হইয়া তদীয় চিত্তে আবিভূতি হন। এদিকে বীরচ্ডামণি लक्ष्मण किकिस्ना नगद मगील गमन कविशा वानद्रगरनद छत्र সম্পাদনার্থ ভয়ন্কর প্রচণ্ড জ্ঞাশব্দ করিতে লাগিলেন। প্রাকৃত বানরেরা লক্ষ্মণকে দর্শনানন্তর রুক্ষ, প্রস্তর গ্রেছণ পুরুক প্রাচীরোপরি আরোহণ করিয়া কিল কিল শব্দ করিছে

নির্মান কর্তু মৃত্যুক্তো ধনুরানম্য বীর্যাবান্।
ততঃ শীন্তং সমাপতা জ্ঞাতা লক্ষাণমাগতম্॥ ২৮॥
নিবার্যা বামরান্ সর্বানকদো মন্ত্রিসন্তর্মঃ।
গতা লক্ষাণসামীয়ং প্রাণনাম স দণ্ডবং ॥ ২৯॥
ততোহক্ষদং পরিষ্ক্রা লক্ষাণঃ প্রিয়বর্দ্ধনঃ।
উবাচ বংস। গচ্ছ তং পিতৃব্যার নিবেদর ॥ ৩০॥
মামাগতং রাঘ্বেণ চোদিতং রৌদ্রমুর্জিনা।
তথেতি ত্রিতং গতা স্থাবার ন্যবেদরং॥ ৬১॥
লক্ষাণঃ ক্রোধতান্তাক্ষঃ পুরত্বারি বহিঃ স্থিতঃ।
তচ্চুত্বাতীব সন্তর্জঃ স্থাবা বানরেশ্বরঃ॥ ৩২॥
আহুর মন্ত্রিণাং শ্রেজং হন্ত্রমন্তর্মধাহরবীং।
গচ্ছ ভ্যঙ্গদেনাশু লক্ষ্মণং বিনয়ান্থিতঃ॥ ৩৩॥

লাগিল। তৎকালে মহাবীর লক্ষ্মণ তাহাদিগকে দর্শন করিয়া क्षांक्षि क्यांक्रिज लांहन इरेलन। ১১। ১२। ১৩। ১৪: ১৫। 781241281681581581581581561581561501 ২৭। এবং বানরগণকে নির্মাল করিবার নিমিত প্রচও কোদত আকর্ষণ করিতে লাগিলেন। অনন্তর মক্তিভাষ্ঠ অঙ্গদ সেই স্থানে আগমনানন্তর লক্ষ্মণকে দর্শন করিয়া বামর-● गंगरक नियोद्रंग करिलिन धरः लक्कारनद निकहे गमन कदिया তাঁহাকে দণ্ডবৎ প্রণাম করিলেম। ২৮। ২৯। ক্তদ নস্তব্ধ প্রিয়বন্ধন লক্ষ্মণ অঙ্গদকে আলিজ্বন করিয়া কহিলেন, বংস ! তুমি পিতৃব্যের নিকট গমন করিয়া নিবেদন কর যে, জীরাম চল্দ্র কুদ্ধ হটয়। লক্ষ্মণকে কিদিদ্ধাায় প্রেরণ করিয়াছেন। অঙ্গদ তথাত্ত বলিয়া শীভ্ৰ গমন পূৰ্ব্বক হুগ্ৰীবের মিকট নিবে-দন করিল। 'মহারাক্ত! ক্রোধাফণিত লোচন মহাবীর লক্ষ্মণ নগরের বহিষ্বারে অবাস্থতি করিতেছেন'। বানররাজ স্থ্রীব অঙ্গদের বাক্য অবণানস্তর অভ্যন্ত সম্ভ্রন্ত হট্রা মন্ত্রীবর হন্মানকে আহ্বন করিয়া কহিলেন, হে ছমুমন্! তুমি অঙ্গদের সহিত শীঅ বহিৰারে গমন পূর্বক কুছ মহাবীর সক্ষণকে

সাত্ত্বরন্ কোপিজং বীরং শনৈরানর মন্দিরম্।
প্রেষয়িত্বা হন্মন্তং ভারামাই কপীশ্বরং॥ ৩৪॥
ত্বং গচ্ছ সান্ত্রন্ত্রী তং লক্ষনণং মৃদুভাবিতৈঃ।
শান্তমন্তঃপুরং নীত্বা পশ্চাদর্শার মেইনত্বে!॥ ৩৫॥
ভবত্বিভি ভতন্তারা মধ্যকক্ষং সমাবিশং।
হন্মানঙ্গদেনৈর সহিতো লক্ষ্মণান্তিকম্॥ ৩৬॥
গত্বা ননাম শিরুষা ভক্তা স্বাগতমন্ত্রবিং।
এহি বীর! মহাভাগ ভবদ্গৃহমশঙ্কিতম্॥ ৩৭॥
প্রবিশ্ব রাজদারাদীন্ দৃষ্ট্যা স্থ্রীবমের চ!
ঘদাজ্ঞাপয়সে পশ্চান্তংসর্বাহ করবাণি ভো!॥৩৮॥
ইত্যুক্তা লক্ষ্মণং ভক্ত্যা করেগৃহ্ব স্বান্তিঃ।
আনরামান নগরমধ্যাদ্যাজগৃহং প্রতি॥ ৩৯॥
পশ্বংন্তর মহাসোধান্ যুথপানাং সমন্ততঃ।
জ্বাম ভবনং রাজ্ঞঃ স্থ্রেক্রভবনোপমম্॥ ৪০॥

স্বিনয় মৃত্ন বচনে সান্ত্রনা করিয়। এতানে আনয়ন কর।
স্বাীব হন্মানকে প্রেরণ করিয়া বালী-পালী তারাকে কহিলেন
হে অনঘে! তুমিও গামন কর; মহাবীর লক্ষণকে মৃত্নপুর
বচন হারা শাস্ত করিয়া অস্তঃপুর মধ্যে আনয়ন পূর্বক
আমাকে দর্শন করাও। ৩০ । ৩১ । ৩০ । ৩৪ । ৩৫ ।
তারা তাহাই হউক বলিয়া মধাককে গমন করিয়া অবস্থিতি
করিলেন। হন্মান অঙ্গদের সহিত লক্ষ্মণ সন্নিধানে গমন
করিয়া পরম ভক্তি সহকারে প্রণামানস্তর স্থাগত ক্রিজাসা
করিলেন, হে মহাভাগ। আগমন করন—হে মহাবীর। আপনি
আপনার গৃহে নিঃশক্ষচিত্তে প্রবেশ করিয়া রাজপরিবার এবং
স্থাবিকে দর্শন করুন পশ্চাৎ যাহা আজা করিবেন ডাহাই
করিব । ৩৬ । ৩৭ । ৩৮ । প্রন নন্দন হন্মান্ এই রুণ
কহিয়া ভক্তি পূর্বক সক্ষ্মণের কর গ্রহণ করিয়া নগর মধা
হইতে রাজ্য গৃহে আনয়ন করিলেন। ৩৯। লক্ষ্মণ চতুর্দিকে

মধ্যকক্ষে গতা তত্ত্ব তারা তারাধিপাননা।
সর্বাভরণসম্পন্না মদরক্তান্তলোচনা।। ৪১।
তবাচ লক্ষ্মণং নত্তা স্মিতপূর্ব্যাভিভাষিণী।
বাহি দেবর! ভত্তং তে সাধুন্তং ভক্তবৎসলঃ॥ ৪২॥
কিমর্থং কোপমাকার্যভিক্তে ভৃত্যে কপীশ্বরে।
বহুকালমনাশ্বাসং দুংখমেবানুভূতবান্।। ৪৩।
উদানীং বছদুংখৌঘান্তবন্তিরভিরক্ষিতঃ।
ভবৎপ্রদাদাৎ সুত্রীবঃ প্রাপ্তদোধ্যো মহামভিঃ॥৪৪
কামাদক্রো রঘুপতেঃ দেবার্থং নাগতো হরিঃ।
আগমিব্যন্তি হরয়ো নানাদেশগতাঃ প্রভো!। ৪৫
প্রেবিতা দশদাহস্রা হরয়ো রঘুন্তম!।
আনেতুং বানরান্ দিগ্ভোমহাপ্রবিত্সন্ধিভান॥৪৬

বানুরমুখপতিদিগের মহাপ্রাদাদ সকল অবলোকন করিতে করিতে ইন্দ্রভবন সদৃশ রাজভবনে গমন করিতে লাগিলেন। । ৪০। মদাকণিতলোচনা সর্বাভরণভূষিতা স্থাণগুমুথী জারা মধাকক্ষ সমাগত লক্ষণকে প্রণাম করিয়া ঈষৎ হাস্পূর্বক কহিলেন—তে দেবর ভাগমন কর তোমার মঙ্গল হউক। হে মহাবাহো! তুমি সাধু এবং ভক্তবংশল হইয়া প্রমভক্ত নিজ্ঞদাস কপিরাজের প্রতি কি কারণে কোপ করিয়াছ। দেখ দেবর! কপিরাজ নিরাখাদ হইয়া বহুকাল হঃখামুভব করিয়াছেন। ইদানী আপনারাই উহাকে হঃখতরক্ষ হইজে রক্ষা করিয়াছেন, আপনাদিগেরই প্রসাদে এক্ষণে মহামতি স্থানি স্থালাভ করিয়া কামাশক্তিবশতঃ রঘুনাথের সেবার্থ গমন করিতে পারেন নাই, কিন্তু তাহার কার্যো কখনই উদাস্ত করেন নাই। হে রঘুত্তম! ইতিপুর্বেই নানা দেশগত বানর গণের আনম্বার্থ দশ্যহত্ত্ব প্রানর সৈন্য প্রেরণ করিয়াছেন, অভ্যান বানর সৈন্য প্রেরণ করিয়াছেন, অভ্যান মান্তি ক্ষান্ত করিয়াছেন,

স্থাবিঃ স্বর্মাগত্য সর্ব্বানর্যুথপৈঃ।
বধরিষাতি দৈত্যোঘান রাবনঞ্চ হনিষ্যতি॥ ৪৭॥
ছরৈব সহিতাহদৈরে গস্তা বানরপুল্পবঃ।
পশ্যান্তর্ভবনং তত্র পুজদারস্ক্রন্থত্য ॥ ৪৮॥
দৃষ্টা স্থাবিমভারং দত্ত্বা নয় সহৈব তে।
ভারায়া বচনং শ্রুজা রুশক্রোধোহণ লক্ষনঃ। ৪৯॥
জগামান্তঃপুরং যত্র স্থাবো বানরেশ্বরঃ।
রুমামালিস্য স্থাবঃ পর্যক্রে পর্যাবস্থিতঃ॥ ৫০॥
দৃষ্টা লক্ষনমতার্থং উৎপপাতাতিভীতবং।
তং দৃষ্টা লক্ষনঃ ক্রুদ্ধো মদবিহ্বলিতেক্ষণম্। ৫১
স্থাবং প্রাহ ছর্তি। বিশ্বতোহদি রঘূর্ত্বম্।
বালী যেন হতে। বীরঃ দ বাণোহদ্য প্রতীক্ষতে ॥৫২

ংইতে এন্থানে আগমন করিবে; ঐ বানরগণ আগমন করিব।
মাত্র কপিরাজ তাহাদিগকে সমভিবাহারে করিরা গমন পূর্বক রাক্ষসাধ্য রাবণ এবং ওদমুচর দৈত্যগণকে আগুবিনাশ কবি বেন। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭।

হে মহাভাগ! বানররাজ অদ্য ভোমারই সহিত শ্রীরাম
চরণ দর্শনার্থ গমন করিবেন যাহা হউক এক্ষণে অন্তঃপুর
মধ্যে প্রবেশ পূর্ব্বক স্ত্রী, পুত্র ও বন্ধু কর্তৃক পরিরত স্থাবিকে
দর্শন করিয়া অভয় প্রদান পূর্ব্বক নিজ সমভিব্যাহারে লইয়া
জ্রীরাম সন্নিধানে গমন করুন। দয়ালু লক্ষ্মণ ভারার বচনে
সম্ভট ইইরা জ্রোধ সংহার করিলেন। অনপ্তর অস্তঃপুর মধ্যে
প্রবেশ পূর্ব্বক স্থাবি ভবনে উপত্তিত ইইয়া দেখিলেন বানর
রাজ প্রিয় দয়িতা কুমাকে আলিঙ্কন করিয়া পর্যান্ধে অবস্থান
করিতেতেন, বানর রাজ লক্ষ্মণকে দেখিবামাত জতি ভীত্তের
ন্যায় পর্যান্ধ ইইতে অভিশ্র লক্ষ্ম প্রদান করিলেন, সক্ষ্মণ
মধুপান-মন্ত স্থাবিকে দেখিরা ক্রোধ সহকারে কছিলেন।
রে ত্র্র্ব্ ভ ! তুমি এক্ষণে রহুনাথকে বিস্মৃত ইইয়াছ, অরে

ত্বমব বালিনো মার্গং গমিষ্যালি ময়। হতঃ।

এবমত্যন্তপরুষং বন্দন্তং লক্ষ্মণং তদা ॥ ৫৬ ॥

উবাচ হন্দুগান্ বীরঃ কথমেবং প্রভাষদে ?।

হত্যোহধিকতরো রামে ভক্তোয়ং বানরাধিপঃ ॥৫।
রামকার্যার্থমনিশং জাগর্তি ন তু বিস্ফৃতঃ।

আগতাঃ পরিতঃ পশ্ম বানরাঃ কোটিশঃ প্রভো!।
গমিষ্যন্ত্যিচিরেণের দীতায়াঃ পরিমার্গণম্।

সাধ্যিষ্যতি সুগ্রীবো রামকার্য্যদেশ্য হঃ। ৫৬ ॥

শ্রুত্রীবোপ্যর্য্যপান্তাদিন্ত্রক্ষ্মণং সমপ্রুষ্যং ॥ ৫৭।

সুগ্রীবোপ্যর্য্যপান্তাদিন্ত্রক্ষ্মণং সমপ্রুষ্থং ॥ ৫৭।

আগলিষ্ট্য প্রাহ্ রাম্ন্য দাদেশহহং তেন রক্ষিতঃ।
রাম্ম্য তেজসা লোকান ক্ষণার্কেনের জেষ্যতি।৫৮

বানর ! যে বাণ দারা বালী নিধন প্রাপ্ত হইয়াচে-দেই বাণ একণে তোমারই মৃত্যু প্রতীক। করিতেছে এই দণ্ডেই তুমি আমাকর্ক নিহত হইয়া নিশ্চয় বালীর অসুগমন করিবে। বীরবর হন্তুমান উক্ত প্রকার অভি প্রক্ষ ভাষণে প্রব্রক্ত লক্ষ্যুণকে কহিলেন, হে মহাভাগ! আপনি কি ছেতু মছারাজের প্রতি এই রূপ পরুষ বাক্য প্রয়োগ করিতেচেন ? এই বানর রাজ জীরাম চরণে তোমা অপেক্ষা অধিকতর ভক্তি করিয়া থাকেন এবং দিবারাত্র শ্রীরাম কার্য্যার্থ জাগরিত আছেন, কথনই রাম কার্যা বিশাত হন নাই। হে প্রভো! ঐ দেখুন নানা দিগ্-দেশ হইতে সমাগত কোটি কোটি বানর্থাণ কর্ত্তক দশদিক্ পরিপুরিত হইতেছে। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১ - ৫২।৫৩। ৫৪। । ৫৫। অচিরকাল মধ্যেই সমস্ত বানরগণ সীভাবেষণে গমন করিবে, মহারাজ হৃত্রীবত সমস্ত রাম কার্যা সুসিদ্ধ করিবেন। । ৫৬। সুমিত্রা ভনর লক্ষ্যাণ হরুমানের উক্তরূপ বাক্য প্রবন করিয়া লজ্জিত হইলেন। অনস্তর স্থাীব পাদার্ঘাদি দার। লক্ষাণের যথোচিত পূজা পূর্ব্বক আলিমন করিয়া কছিলেন, হে বীরেক্স! আমি শ্রীরাম রক্ষিত দাস, অতএব আমার প্রতি ক্ষমা করিতে হইবে। হে প্রতো! জীরামের তেজই ক্ষণাৰ্দ্ধ কাল মধ্যে চতুৰ্দ্দশ লোক জয় কয়িবে-- আমি ও বানর-

সহায়মাত্রমেবাহং বানরৈঃ সহিতঃ প্রভাে!।
সৌমিত্রিপি স্থাবং প্রাহ কিঞ্চিম্ময়াদিতম্ ।।
তৎ ক্ষমস্ব মহাভাগ ! প্রাণয়াদ্রাবিতং ময়া।
গচ্চামোহদৈরে স্থাবি! রামস্তিষ্ঠতি কাননে॥ ৬০
এক এবাতিদুঃখার্ত্রো জানকীবিরহাৎ প্রভুঃ।
তথেতি রথমারুছ লক্ষণেন সমস্বিতঃ॥ ৬১॥
বানরৈঃ সহিতো রাজা বামমেবাম্বপদ্যত॥ ৬২॥
ভেরীমূদকৈর্বজ্ঞক্ষবানরৈঃ
শ্বেতাতপ্রৈর্বজিনেশ্চ শোভিতঃ।
নীলাঙ্কদাদ্যেই মুমৎপ্রধানেঃ
সমারতো রাঘ্বমভ্যগান্ধবিঃ॥ ৬॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উম্মেহেশ্বর সন্থাদে কিন্ধিন্তা কাতে পঞ্মোহধ্যায়ঃ।

গণ উপলক্ষ মাত্র। সেমিত্রি লক্ষ্মণ স্থানিবর বিনয় বচনে সন্তট্ট ইইগা কহিলেন, হে মহাভাগ। আমি আপনাকে প্রশ্বনাভঃ যাহা কিছু বলিয়াছি তাহাও আপনা ক্ষমণ করিবেন হে বানরেন্দ্র! উদ্বোগী হও আমরা অদ্যই প্রীরাম সনিধান গমন করিব, যেহেতু সীতা-বিবহু-কাতর রহুনাথ একারা কাননে অবস্থিতি করিতেছেন। স্থানিব তথাস্ত বলিয়া লক্ষ্মণ বাক্যে সমতি প্রকাশ পূর্বক লক্ষ্মণের সহিত রথারোহণ করিয়া বানরগণ সমভিব্যাহারে প্রীরামের নিকট গমন করিলেন। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২। যৎকালে হতুমান, নীল ও অঙ্গদ প্রভৃতি বানরগণ ও ঋক্ষণণ বেটিত হইমা বানর রাজ গমন করিতে লাগিলেন—তৎকালে চতুর্দ্ধিকে বত্তব ভেরী ও মৃদদ শ্বনি ইইতে লাগিল এবং বানরেরা কেছ শ্বেতাও পত্র ধারণ করিল—কেছবা ব্যজন হারা কপিরাজ্বকে বীজন করিতে লাগিল। ৬৩।

ইতি শ্রীমদধ্যাক্ষরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে কিছিদ্ধাকাতে পঞ্চনাহধ্যায়ঃ।

यदर्श ३ था अ

দৃষ্ট্বা রামং সমাসীনং গুছাদ্বারি শিলাতলে।

চৈলাজিনধরং শ্রামং জটামৌলিবিরাজিতম্ ॥ ১॥

বিশালনয়নং শান্তং স্মিতচারুমুখামু জম্।

সীতাবিরহসন্তপ্তং পশ্যন্তং মৃগপক্ষিণঃ॥ ২॥

রথাৎ দূরাৎসমুৎপত্য বেগাৎ স্থাবিলক্ষাণৌ।

রামস্য পাদয়োরত্রে পেততুর্ভক্তিসংযুতৌ॥ ৩॥

রামঃ স্থাবিয়ালিক্ষ্য পৃষ্ট্বানাময়মন্তিকে।

শ্বাপরিত্বা যথান্যায়ং প্রজ্ঞামাস ধর্মবিৎ॥ ৪॥

ততোহত্তবীদ্রঘুপ্রেষ্ঠং স্থাবা ভক্তিনন্ত্রধীঃ।

দেব। পশ্য সমায়ান্তীং বানরাণাং মহাচমূম্॥৫॥

কুলাচলাদ্রিসন্ত, তা মেরুমন্দরসন্নিভাঃ।
নানাদ্রীপসরিচৈছলবাসিনঃ পর্বতোপমাঃ॥ ৬॥
অনপ্রাতাঃ সমায়ান্তি হরয়ঃ কামকপিণঃ।
সর্বিদেবাংশসন্ত,তাঃ সর্বে যুদ্ধবিশারদাঃ॥ ৭॥
অত্র কেচিদ্গজবলাঃ কেচিদ্দশগক্ষোপমাঃ।
গজাযুতবলাঃ কেচিদনোইমিতবলাঃ প্রভো!॥৮॥
কেচিদঞ্জনকূটাভাঃ কেচিৎকণকমন্নিভাঃ।
কেচিদ্রুলবদনা দীর্ঘবালান্তথা পরে॥ ৯॥
শুদ্ধস্কটিকসন্ধাশাঃ কেচিদ্রাক্ষসসন্নিভাঃ।
গর্জন্তঃ পরিতো যান্তি বানরা যুদ্ধকাঞ্জ্ঞিণঃ॥১০॥

স্থীব ও লক্ষণ রথারোহণ পূর্ব্বক দেই পর্বতে আগমন করিয়া দেথিলেন জ্ঞাজ্ট বিরাজিত অজিনম্বরধানী বিশাল লোচন এবং সহাস্যবদন নবদ্ব্বাদলশ্যাম রামচন্দ্র সীতা বিরহ সপ্তপ্ত হইয়া গুহদার ছিত লিলাভলে উপবেশন পূর্বক ইতন্ত সঞ্চরমাণ মৃগা পক্ষিগণের প্রকৃতি দর্শন করতঃ কথঞ্চিৎ চিত্ত বিনোদন করিতেছেন, অনন্তর উভয়ে দ্র হইতে রখাবতরণ করিয়া জ্ঞীরাম সন্থিানে আগমন পূর্বক তাঁহার চরণ সমীপে ভক্তি সহকারে পতিও হইলেন। ১। ২। ৩। ধর্মজ শ্রীরাম স্থাবিকে আলিজনানন্তর আনাময় জিজ্ঞাসা করিয়া নিকটে উপবেশন করাইলেন এবং অভ্যাগভ নম্ম মধাবার করিবান করাইলেন এবং অভ্যাগভ নম্ম মধাবার করিবান করাইলেন জ্বং মানভক্তি পরামণ স্থাীব রম্মাথকে কহিলেন—ছে দেব! আপনি অবলোকন করন এই সকল ক্লাচল গিরি সন্তত্ত

মেকমন্দর সদৃশ সমূরত নানা দ্বীপবাসী এবং নানা নদ নদী বাসী ও পর্বত বাসী অসংখ্য কামরূপী বানর কটক আগমন করিতেছে, ইছারা সকলেই দেবাংশ সম্ভূত এবং যুদ্ধবিশারদ। ৪। ৫। ৬। ৭। হে প্রতা ইছার কতিপয় কপি এক ছন্তির, কতিপয় কপি দশ হন্তির, কতিপয় কপি অযুত হন্তির, বল ধারণ করে; কেহ কেহ বা অপরিমিত পরাক্রম সম্পান্ন আছে।৮। এবং ইহার মধ্যে কতিপয় বানর অঞ্জন রাশির ন্যায় ক্ষর্বর্ণ—কতিপয় বানর কনক রাশির ন্যায় সমুজ্জল এবং কতিপয় বানরের বদন রক্তবর্ণ—কতিপয় বানরের দেশ আতি দীর্ঘ এবং কতিপয় বানরের বদনর রক্তবর্ণ—কতিপয় বানরের কেই মনির ন্যায় উল্লেল ও ভক্ল বর্ণ—কতিপয় বানর রাক্তনাক্রতি; এই সমুদ্ধ বানরেরা মুদ্ধার্থী হইয়া চতুর্দ্ধিকে গমন করিছেছে। হে রম্বনাশ!

জনাজাকারিণঃ সর্বে কলমূলাশনাঃ প্রভো!।

ক্ষাণামধিপো বীরো জাষবান্নাম বৃদ্ধিমান্॥১১॥

এব মে মন্ত্রিণাং শ্রেষ্ঠঃ কোটিভল্লুকরন্দপঃ।

হন্থানের বিখ্যাতো মহাসন্ত্রপরাক্রমঃ॥ ১২॥

বার্পুজোহতিভেজ্পী মন্ত্রী বৃদ্ধিমতাং বরঃ।

নলো নীলক্ষ্ণ গ্রন্থো গ্রাক্ষো গ্র্মাদনঃ॥ ১৩॥

শরভো মৈন্দবকৈর গজঃ পনস্পর চ।

বলীমুখো দ্ধিমুখঃ স্থ্রেণস্তার এর চ॥ ১৪॥

কেসরী চ মহাসন্ত্রঃ পিতা হন্থমতো বলী।

এতে মে যুথপা রাম। প্রাধান্যেন মরোদিতাঃ॥১৫

মহাত্মানো মহাবীর্যাঃ শক্রভ্ল্যপরাক্রমাঃ।

এতে প্রত্যেকতঃ কোটিকো ট্রানর্যূথপাঃ॥১৬॥

এই বানর কটকের আহারাদি নির্বাহার্থ আপনার কোন
চিন্তা করিতে ইইবে না, ইহারা বন্য ফল মূলাদি ভক্ষণ
করিয়া আপনার আজা প্রতিপালন করিব—হে রঘুবীর!
এই ভন্তুকরাজ মহাবীর বুদিমান জাস্থ্যান আমার মন্ত্রিজনের
মধ্যে শ্রেষ্ঠ, কোটি ভল্লু ক দৈন্য ইহার আজা প্রতিপালন
করে, এবং এই মহাবল পরাক্রান্ত বুদিমান এবং অভি তেজ্বী
প্রিথাভ প্রনলন হন্মান্—ইনিও আমার মন্ত্রি এবং নল,
নীল, গ্রন্থ বাক্ষ, গল্পমাদন, গরভ, দৈল্লব, গল্প, পন্স, বলীমুথ,
দিন্ত্রি, প্রবেণ, তার এবং হন্মানের পিতা মহাবল পরাক্রেন্ত কেশ্রী ইহারা আমার সেনাপতি। হে রাম ! এই সকল
ইন্ত্রণ্য পরাক্রমশালী মহাবলিষ্ঠ মহামহিম প্রধান প্রধান
বানরগণের নাম আপনার নিক্ট ব্যক্ত করিলাম, ইহারা
আভোকে কোটি কোটি বানরগণের নামক। হে রখুবীর

তবাজ্ঞাকারিণঃ সর্বের্ধ সর্বের্ধ দেবাংশদন্তবা:।

এম বালিস্কতঃ শ্রীমানকদো নামবিশ্রুতঃ ॥ ১৭ ॥

বালিজুল্যবলো বীরো রাক্ষসানাং বলাস্তকঃ।

এতে চান্যে চ বহবস্থদর্থে ত্যক্তজীবিতাঃ ॥ ১৮ ॥

যোদ্ধারঃ পর্বতাগ্রৈশ্চ নিপুণাঃ শক্রঘাতনে।

আজ্ঞাপর রঘুশ্রেষ্ঠ ! সর্বের তে বশ্বর্তিনঃ ॥ ১৯ ॥

রামঃ স্কুত্রীবমালিক্য হর্ষপূর্ণাশ্রুলোচনঃ।

প্রাহু স্কুত্রীব ! জানাসি সর্বরং ত্বং কার্য্যগোরবম্॥

মার্গণার্থং হি জানক্যা নিযুক্তকু যদি রোচতে।

শুজা রামস্য বচনং স্কুত্রীবঃ প্রীতমানসঃ॥ ২১ ॥

প্রেষরামাস বলিনো বানরান্বানর্যভঃ।

দিক্ষু সর্ব্যাস্থ বিবিধান বানরান্প্রেষ্য সভ্রম্॥ ২২

দেবাংশ সন্তুত এই সকল বামরগণকৈ আপানার আজাকারী বলিয়া জানিবেন। হে প্রভা! এই স্থবিখ্যাত বালিপুর বালিতুল্য পরাক্রমশালী মহাবীর এবং রাক্ষসগণের বলনাশক শ্রীমান্ অলদ আপনার সম্মুথে দণ্ডায়মান আছেন। এই সকল এবং অপরাপর বহুতর মহাবীর বানর যুখণ আপনার নিমিত্ত জীবন পর্যান্ত পরিত্যাগ করিতে প্রস্তুত্ত আছেন। ৯।১০।১১।১২।১০।১৪।১৫।১৬।১৭।
১৮। এই সকল মহাবীর পর্বত শৃঙ্গদারা যুদ্ধ করিয়ঃ
শক্র নিশাতন করিতে অতি নিপুন। হে রঘু শ্রেষ্ঠ ! একণে আপনি নিজবশবতী বানরগণকে আজা ককন।১৯। অনতর শ্রীরাম স্থ্রীবকে আনন্দাশ্রেপ্রবিলাচনে আলিঙ্গন করিয়ঃ
কছিলেন—হে সপে! তুমি সমন্ত কার্যা গোরৰ অবগত আছে।
২০। এক্ষণে আনকীর অবেষণার্থ যদি ভোমার বাসনা খাকে তবে বানরগণকে তদর্থ নিযুক্ত কর। শ্রীরামের বাকা প্রবং

निक्नार निम्मणार्थर क्षराचन महावलाम। वृत्राज्य काश्ववख्य रन्यख्य महावलम् ॥ २७॥ ननः स्रु स्वनः भव्रजः रेममः विविवत्मव ह। **প্রেব্যামাস মুগ্রীবো বচনং চেদ্**মত্রবীৎ ॥ २৪॥ विविश्वस्त श्रवरङ्ग जरस्य जानकीः श्रजाम। मामापर्वताक् निवर्षक्षः मच्छाननभूतः मताः ॥ २०॥ শীতামদৃষ্ট্য বলি বে। যাসাদৃদ্ধং দিনং ভবেৎ। তদা প্রাণান্তিকং দশুং মতঃ প্রাপ্সাথ বানরাঃ ॥২৬ ইতি প্রস্থাপ্য স্থতীবো বানরান্ ভীমবিক্রমান। রামস্য পাখে জ্রীরামং নত্ত্বা চোপবিবেশ সং ॥২৭ পচ্ছত্তং মাক্তিং দৃষ্ট্য রামে: বচনমন্ত্রবীৎ। অভিজ্ঞান।র্থমেত্রে হ্যঙ্গীয়কমুক্ষম।। ২৮।। মন্নামাক্ষরসংযুক্তং দীতারৈ দীয়তাং রহঃ। অস্মিন কার্য্যে প্রমাণং হি ভ্রমেব কপিসভ্য!। জানামি সন্তু[ং] কে সর্বাহ পদ্ধাঃ শুভন্তব ॥২৯

গণকে নানা দিকে সত্তর প্রেরণ করিলেন। দক্ষিণ দিকে
সক্ষদ, স্বাধ্ বান্, হন্মান্ প্রভৃতিকে যত্ত পূর্থক প্রেরণ করিলেন
এবং বক্ষমাণ বাক্যও বলিলেন। ২১। ২২। ২০ হে৪। ছে
বানরগণ! শুভদারিনী সাঁতাকে অন্বেরণ কর এবং আমার
আভা পালন করত মাসেক মধ্যে সাঁতাবলোকন পূর্বক
প্রত্যাগমন না করিলে আমা কর্ত্ব প্রাণান্তিক দণ্ড লাভ
করিবে। স্ব্রেটীব উক্ত প্রকার ভীমপরাক্রম বানরগণকে প্রেরণ
করত শ্রীরামকে প্রণাম করিরা তৎপার্খ দেশে উপবেশন করিপেন। অনন্তর শ্রীরাম গমনোদ্যত মাক্তিকে দর্শন করিরা
ক্রিলেন—হে মাক্তে! আমার নামান্তিত এই উত্তম
অন্ধ্রীরক বিশ্বাসার্থ নির্দ্ধন স্থানে সীতাকে প্রদান করিবে।
হে ১৮। ২৭। ২৮। ছে ক্রিসন্তম! তুনি সীতাকে রাম
নামানিত অস্ক্রীয়ক প্রদান করিলেই প্রামাণ্য প্রাপ্ত ইইবে,

এবং কপীনাং রাজ্ঞা তে বিসৃষ্টাঃ পরিমার্গনে।
সীতারা অঙ্গদমুখা বভ্রমুস্তত্র তত্ত্ব হ । ৩০।।
ভমস্তো বিদ্যাগহনে দদৃশুঃ পর্বতোপমম্।
রাক্ষ্যং ভীবণাকারং ভক্ষয়স্তং মৃগান্ গজান। ৩১
রাবণোহয়মিতি জ্ঞাত্বা কেচিদ্যানরপুষ্ণবাঃ।
জন্মঃ কিলকিলাশবং মুঞ্জো মুফিডিঃ ক্ষণাৎ।
নায়ং রাবণ ইত্যুক্ত্বা যযুরন্যমহন্তনম্।
তৃষার্তাঃ সলিলং তত্ত্ব নাবিন্দন্ হরিপুষ্ণবাঃ।৩০।
বিভ্রমস্তো মহারণো শুদ্ধকণ্ডোর্ডভালুকাঃ।
দদৃশুর্গহ্বরং তত্ত্বত্বাার্তং মহৎ।।৩৪।।

অর্থাৎ রাম প্রেরিত দূতত্ব রূপে দীতার প্রমিতি জনক ছইবে : আমি তোমার সমস্ত বল ও প্রাক্রম অবগত আছি ভূমি গমন কর-আমার বাক্যাধীন তুর্গম পথও ভোমার স্থাম ছইবে ।২৯। উক্ত প্রকার বানর রাজ স্থাীব কর্ত্ত প্রেরিড অঙ্গদ প্রভৃতি বানরগণ বিন্ধা পর্বতে পরি বন মধ্যে দীতার অঘেষণার্থ ভ্রমণ করিতে করিঙে পর্বত তুল্য ভরানকারুতি এবং মৃগ ও হস্তির ভক্ষক এক রাক্ষস মৃত্তি অবলোকন করি-লেন। কতিপার বানর রাক্ষসের শরীর গৌরব দর্শন করিয়া এই রাবণ, এরপে অমুমান করত কিল কিল শব্দ অর্থাৎ অবাক্ত নানা প্রকার রব করত মুক্তি দারা রাক্ষদকে ভাড়ন করিলেন। । ०० । ०১ । ०२ । जायन चार्क वीर्यामानी अहे मामाना মৃষ্টি ছারা ভাজনে ভাষার ক্লেলের সম্ভব কি—অভএব এ পৌলন্তা-তনর নহে-এই বলিয়া তৃষ্ণার্ত বানরগণ স্থানা-স্তব্নে গমন করত পানীর লাভে বঞ্চিত ছইল। ৩৩। বান্ত্রপর র্জে মহারণ্যে ইতন্তত ভ্রমণ করত কণ্ঠ ওঠাও ভালুকার শুক্ত প্রপ্ত হইয়া তুণ লতাদি যারা আছোদিত : ভয়ানক এক গহরর

আদ্র পক্ষান্ ক্রেঞ্ছং সায়িঃসূহান্ দদ্শুন্ততঃ।
আত্রান্তে সলিলং ফুনং প্রবিশামো মহাগুহাম্॥৩৫
উণ্ডল্বা হকুমানগ্রে প্রবিবেশ তমন্বয়ুং।
সর্কের পরস্পরং পুতা বাহুম্ বাছভিরুৎসুকাঃ।৩৬
আদ্রকারে মহদ্রং গত্তাহপশ্যন্ কণীশ্বরাঃ।
জলাশয়াশ্বাণিনিভত্তোয়ান্ কল্পজ্বনাপমান্॥৩৭॥
রক্ষান্ পক্কলৈন্দ্রাশ্বাধুজোণসমন্বিতান্।
গ্রান্ সর্বপ্রণোপেতান্ মণিবস্তাদিপ্রিতান্॥৩৮॥
দিব্যভক্ষাম্পহিতাক্মানুধেঃ পরিবিজি তান্।
বিশ্বিতান্ত্র ভবনে দিবের কণকবিষ্টরে॥৩৯॥
প্রভারা দীপ্রোন্যন্ত্র দদ্শুঃ ব্রিরমেকলাম্।
ধ্যায়ন্তীং চীরবসনাং যোগিনীং যোগমান্থিতাম্।

मर्भन कत्रिल । ७८। र्ल गस्त्रत इहेट आर्जिनक रक्कीक व्यव ভংগের নির্থমন দশনে বানরেরা অনুমান করিল যে, ইহার অভান্তরে নিশ্চয় জ্বল আছে, অভএব আমরা ক্রভনি≈চয় ইহার মধ্যে প্রবেশ করিব। ৩৫। এই প্রকারে আন্দোলন করিয়া ছতুমান্ পুবঃসর বানরগণ পরস্পার বাভ দারা বাভ বন্ধন করত শৃঙ্গলাবদ্ধ হইয়া ঐ গহ্বরে প্রবেশ করিল। । ৩৬।কলিগণ অত্যন্ধতম কূপ মধ্যে অভি দূর গমন পূর্বক মণি তুল্য নির্মাল জ্ঞলালয় এবং কম্পত্র প্রায় স্থপক ফল ভারাবনত বৃক্ষ সকল দর্শন করিল—মণি বস্ত্রাদি দ্বারাপরি-भून प्रसुधा वर्कित नामा विश्व एका-सवा पूक्त शृह मकन । मर्ग न করিয়া আশ্চর্য্য জ্ঞান করিল এবং কোন গৃহ মধ্যে বিচিত্ত স্থবর্ণা-मत्ना श्रवि डेशविको योशनाधिनी, वल्कन श्रविधाना याशि-নীকে দর্শন করিরা ভক্তি পুরঃসর ভীত হইরা প্রণাম করিল। ঐ দেবী বানরগণকে বলিলেন—হে বানরগণ ! ভোমরা কি কারণে—কোন হান হইতে আগমন করিয়াছ এবং কাছার कर्क्क (अतिष्ठ ? इनुशान् मिनीत व्यवन कतित्रा विनन--

প্রবেশ সহাভাগাং ভক্তা ভীত্যা চ বানরাঃ।

দৃষ্ট্য ভাষানরান্দেবী প্রাহ্ ষ্যং কিমাগভাঃ॥৪১॥

কুতো বা কদ্য দূতা বা মৎস্থানং কিং প্রধর্ষথ ?।

তচ্ছুত্বা হনুমানাহ শৃণু বক্ষ্যামি দেবি! তে ॥৪২॥

অযোধ্যাধিপতিঃ জ্রীমান্রাজা দশর্থং প্রভুঃ।

তদ্য পুজ্রো মহাভাগো জ্যেষ্ঠোরাম ইতি শুভঃ॥

পিতৃরাজ্ঞাং পুরক্ষৃত্য সভার্যঃ সামুজ্ঞো বনম্।

গতস্তত্র ক্তা ভার্যা তদ্য সাধী দুরান্ধনা॥ ৪৪॥

রাবণেন ততো রামঃ স্থ্রীবং সামুজো ধ্যো।

স্থ্রীবো মিত্রভাবেন রাম্যা প্রিয়বলভাম্॥ ৪৫॥

মৃগয়ধ্বমিতি প্রাহ্ ততো বয়মুপাগতাঃ।

ততো বনং বিচিন্ধত্যো জানকীং জলকাঞ্জিকণঃ॥৪৬
প্রবিষ্টা গন্ধরং ঘোরং দৈবাদত্র স্মাগতাঃ।

তং বা কিমর্থমত্রাদি কা বা ত্বং বদ নঃ শুভে! ॥৪৭

হে দেবি! বলিডেছি শ্রবণ ককন। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪০। ৪১। ৪২। অযোধাাধিপতি দশরধ নামক বিখ্যাত রাজ্ঞা আছেন—তাঁহার জ্যেষ্ঠ পুত্র মহাবল পরাক্রান্ত শ্রীরামচন্দ্র নামে বিখ্যাত, তিনি পিডার আজ্ঞা পালনার্থে ভার্যা জানকী এবং অসুজ্ঞ লক্ষ্মণের সহিত বনে গমন করিয়াছেন, ঐ বন মধ্যে জীবাম সহচারিণী পতিব্রতা সীতাকে তুরাত্মা বাবণ অপ্রত্যা করিয়াছে। অনস্তর অসুজ্ঞ লক্ষ্মণের সহিত জীরামচন্দ্র প্রথীবকে সখ্যভাব হারা প্রাপ্ত হইলেন, ঐ স্থাীব বানরগণকে বলিল—হে বানরগণ রামপ্রিয়তমা সীতাকে অন্তেমণ কর্ম অনস্তর আমরা বন মধ্যে ইতন্ত্রত সীতাকে অন্তেমণ কর্ম অনস্তর আমরা বন মধ্যে ইতন্ত্রত সীতাকে অন্তেমণ কর্ম অলাকাজ্ঞী হইয়া এই ত্রানক গহরর মধ্যে প্রবেশ পূর্ক্ষ দৈব ক্রমে আগ্রমন করিয়াছি। হে দেবি! তুমি কে ? কি কারণ এ স্থানে অবস্থিতি করিতেছ তাহা আমাদিগের নিক্ষ ব্যক্ত কর । ৪৩। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ১৭।

যথেষ্টং ফলমূলানি জগ্ধা পীত্বামৃতং পয়ঃ ॥ ৪৮ ॥
আগচ্ছত ততো বক্ষ্যে মম ব্রত্তান্তমাদিতঃ ।
তথেতি ভুক্ত্বা পীত্বা চ ক্রমান্তে সর্ববানরাঃ ॥ ৪৯ ॥
দেব্যাঃ সমীপং গড়া তে বদ্ধাঞ্জলিপুটাঃ ভি্তাঃ ।
ততঃ প্রাহ হমুমন্তং যোগিনী দিব্যদর্শনা ॥ ৫০ ॥
হেমা নাম পুরা দিব্যবাপিনী বিশ্বকর্মাণঃ ।
পুত্রী মহেশঃ নৃত্যেন ভোষয়ামাস ভামিনী ॥ ৫১ ॥
ভূটো মহেশঃ প্রদেদাবিদং দিব্যপুরং মহৎ ।
অত্র স্থিতা সা স্থানতী বর্ষাণামযুতাযুত্ম ॥ ৫২ ॥
তত্তা অহং সথী বিফুতৎপরা মোক্ষকাঞ্চিক্নণী ।
নামা স্বয়ংপ্রভা দিব্যগন্ধবিত্তনয়া পুরা ॥ ৫৩ ॥

গচ্ছন্তী জ্বন্ধলোকং সা মামাছেদং তপশ্চর।
তবৈর নিবদন্তী হং দর্ব্বপ্রাণিবিবর্জিতে ॥ ৫৪ ॥
ত্রেতাযুগে দাশর্মিভূছা নারায়ণোহ্ব্যয়ঃ।
ভূভারহরণার্থায় বিচরিষ্যতি কাননে ॥ ৫৫ ॥
মার্গম্ভো বানরাম্ভন্থ ভার্য্যামায়ান্তি তে গুহাম্।
পূজ্য়িছাথ তান গড়া রামং জ্বড়া প্রযন্ত ॥ ৫৬ ॥
যাতাসি ভবনং বিফোর্যোগিগম্যং দনাতনম্।
ইত্যেহং গন্তুমিচ্ছামি রামং জেন্টুং ভ্রাম্বিতা ॥ ৫৭
যূরং পিদধ্যক্ষীণি গমিষ্যথ বহিপ্ত হাম্।
তথৈব চক্রুন্তে বেগাদ্গভাঃ পূর্বস্থিতং বনম্॥ ৫৮॥
সাপি ভাক্ত্যা গুহাং শীত্রং যথৌ রাঘ্বস্থিমিয়।
তত্রে রামং সমুগ্রীবং লক্ষ্যাঞ্চ দদর্শ হ ॥ ৫০ ॥

অনন্তর ছক্ট মানসা যোগিনী বানরগণকে ভৃষণপীড়িত

দর্শন করিয়া বলিলেন—হে বানরগণ! তোমাদিগের ইচ্ছামুকপা ফল মূল ভক্ষণও পুরা তুল্য জল পান করিয়াআগমন কর,

আমার আদ্যোপান্ত সমস্ত বিবরণ পরে বলিব। ,বানরগণ

দেবীবাক্য অমুমোদন করিয়া সহর্য চিত্তে বন্ধাঞ্জলি হইয়া

দেবী সমীপে দণ্ডায়মান হইল। অনন্তর ঐ চার্বজী যোগিনী

হস্মানকে লক্ষ্য করিয়া বক্ষ্যমাণ বিবরণ বলিতে আরম্ভ

করিলেন—হে হন্মন্! পূর্ব্বকালে মনোহর রূপবতী হেমা

নামী বিশ্বকর্যার কন্যা নৃত্য গীত দারা মহাদেবকে পরিতোয

করিয়াছিলেন—আণ্ডভোষ তুর্ফ হইয়া হেমাকে এই উৎক্রফ

পুরী প্রদান করিলেন। অনন্তর হেমা এই পুরীতে অযুতা
সূত বর্ষ বাস করিয়াছেন। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। তৎ
কালে আমি মোক্ষাভিলাষিণী ও বিষ্পু সেবায় অম্বরকা হইয়া

সেই হেমার সথী ছিলাম—আমি গক্ষর্ব পুত্রী, আমার সাম

ষয়শ্রভা । ৫০। হেমা বন্ধলোকে গমন কালে আমাকে বলিলেন যে, প্রাণি মাত্র রহিত এই স্থানেই বাদ করিয়া তপদ্যাচরণ কর । ৫৪। অব্যয় (অর্থাৎ জন্ম মরণ রহিত) নারায়ণ তেতা যুগে রাজা দশরখের গৃহে জন্ম গ্রহণ পূর্বাক পৃথিবীর ভার অপহরণ নিমিত বনে গমন করিবেন। । ৫৫। বানরগণ দেই রামের ভার্যার অন্তেহণার্থী হইয়া এই গছ্বর মধ্যে প্রবেশ করিবে, তাহাদের অভ্যর্জনা পূর্ব্বক প্রয়ন্ত্র রাখবের স্তুতি বিধান করিয়া যোগী মাত্রের গম্য বিস্তুর সদনে হাইবে। অভ্যাব রাম দর্শনার্থ গমন করিতে অভিলাষ করিতেছি । ৫৬। ৫৭। তোমরা নিদ্রিত হও অনন্তর গুছার বহিদে শে গমন করে বানরগণ এই বাক্য শ্রবণ করিয়া পূর্বাবন্থিত বনে গমন করিল। ৫৮। ঐ যোগিনীও শীত্র গুছা পরিত্যাগ পূর্বক জীরাম সমীপে গমন করিরা লক্ষ্মণ ও স্থ্রীবের সহিত রঘুনাধ্যে দশন

ক্ষণ প্রদক্ষণং রামং প্রণমা বছশ: সুধীঃ।
আহ গদ্গদয়৷ বাচা রোমাঞ্চিতত সুক্রছা॥ ৬০॥
দাসী তবাহং রাজেন্দ্র! দর্শনার্থমিহাগতা।
বছবর্ষসহস্রাণি তপ্তাং মে ভূশ্চরং তপঃ॥ ৬১॥
গুলায়াং দর্শনার্থং তে ফলিতং মেহস্ত তন্তপঃ॥
শাস্ত হি ডাং নমস্তামি মায়ায়াঃ পরতঃ স্থিতম্॥ ৬২
সর্বভূতেয় চালক্ষ্যং বহিরস্তরবস্থিতম্।
ব্যাগমায়াজ্বনিকাচ্ছয়ো মায়্মধ্বিগ্রহঃ॥ ৬০॥
ন লক্ষ্যসেইজ্ঞানদৃশাং শৈল্ম ইব রূপধৃক।
মহাভাগবতানাং ডং ভক্তিযোগবিধিৎসয়া॥ ৬৪॥

ভবতীর্ণাইসি ভগবন্! কথং জানাসি ? তামসী
লোকে জানাতু যঃ কন্চিন্তব তত্ত্বং রঘূত্তম ! ।।৬?।
মনৈতদেব কপং তে সদা ভাতু ক্সদালয়ে ।
রাম ! তে পাদযুগলং দর্শিতং মোক্ষদর্শনম্ ॥৬৬।
অদর্শনং ভবার্ণানাং সন্মার্গপরিদর্শনম্ ।
ধনপুত্তকলত্তাদিবিভূতিপরিদর্পিতঃ ।
অকিঞ্চনধনং স্থাদ্য নাভিধাতুং জনোইইতি ॥৬৭।।
নির্ভ্রেণমার্গার নিম্মিলমধনায় তে ॥ ৬৮ ॥
নমঃ স্বাল্পাভিরামায়ঃ নির্ভ্রণায় গুণাল্পনে ।
কালক্সিনমীশানমাদিমধ্যান্তবর্জিতম্ ॥ ৬৯ ॥
সমং চরন্তং সর্বত্তে মন্যে ত্বাং পুরুষং পরম্ ।
দেব ! তে চেক্টিতং কন্চিন্ন বেদ ন্বিভ্রনম্ ॥ ৭০

ধ্বিয়াছিলেন । ৫৯। অনন্তর ভক্তি হারা বোমাঞ্চিত গাত্রা व्हेश र्याशिनी अनिकित शूर्यक श्रामहस्राक वह अकांत्र প্রণাম করত গদগদ বাক্যে বলিলেন। ৬০। ছে রামচক্র! আমি ভোমার দাসী—ভোমার দর্শনার্থ আগমন করিয়াছি। তোমার দর্শনার্থ গছবর মধ্যে বহুকাল পর্যান্ত যে ভুষর ভপদ্যা করিয়াছি অনা ভোমার দর্শনে সেই ভপ্দ্যা ফল-বভী হইল। তুমি মায়া রহিত মহাস্থা—তোমাকে নমস্থার করি। । ৬১। ৬২। এবং,ভুমি দকল ভূত মধ্যেই অদৃশ্য ভাবে বহি-র্ক্তেশ এবং অন্তঃকরণে অবস্থিতি করিভেছ তোমার মায়া-রূপ যবনিকা দ্বারা মনুষ্যেরা আছেন্ন, অতএব তাহারা কি প্রকারে ভোমাকে জানিতে পারিবে 🖰। ৬৩। যে প্রকার জীবেশ ধারি পুরুষকে ভাস্ত বুদ্ধিরা পুরুষ বলিয়া জানিতে পারে না সেই প্রকার জ্ঞান নেত্র বিছীন ব্যক্তি তোমাকে পরম পুক্ষ বলিয়া জানিতে পারে না, অর্থাৎ তত্ত্ব জ্ঞানবিদ্যাক্তিরা ভক্তি যোগ দায়া তোমাকে জানিতে ইচ্ছা করতঃ জান চক্ষু দ্বারা পরম প্রুব বলিয়া জানিতে পারে। ৬৪। অনন্তর

দেবী বলিলেন—তে ভগবন্! তুমি এই পৃথিবীতে অবতীর্থ হইরাছ, আমি অজানার্তা, ভোমাকে কি প্রকারে জানিতে পারিব, যেছেতু ত্রিভ্রন মধে। কোন্ জন ভক্তি গোগদাবা ভোমাকে, ঈশ্বরূপে জানে?।৬৫। ছে রামচন্দ্র! মুক্তির কারণীভূত তোমার পদ মুগল আমি দর্শন করিলাম, ভোমার এই পরম রূপ আমার ক্ষন্ম মধ্যে সর্বাদা বিরাজ্ঞ্যান হউক ।৬৬। ভ্রসংসারের প্রক্রি নিবারণ এবং মুক্তি পথ দর্শী ভোমার পাদপানকে অকিঞ্জন ধন প্র কল্রাদি গর্কিত ব্যক্তি কি প্রকারে জানিতে পারিবে?।৬৭। ছে রব্রুম! তুমি ক্ষমা ও ভাগবান দিগের পথ শ্বরূপ এবং দ্রিদ্রের ধন শ্বরূপ ভোমাকে নমস্কার করি। তুমি কাল শ্বরূপ মহাদেব এবং আদি, অন্তঃ মধ্য রহিত অগ্র সকল ভূতে সমভাবে অবস্থান কর লোকে ভোমাকে অব্যর প্রুষ বলিয়া জানে। অতএব ভোমার আচি

ন তেহন্তি কল্চিদ্যিতো ছেষ্যো বা পর এব চ। কথং ছাং দেব। জানীয়াং ন্তোভুং বাহবিষয়ং বিভুন্ ্তশ্বারাপিহিতাত্মানস্তাৎ পশুস্তি তথাবিধন ।। ৭১। অজস্তাকর্ত্রীশস্ত দেব[া] তির্যাঙ্ নরাদিয়ু। জন্মকর্মাদিকং ষদ্যন্তদত্যন্তবিভূমনম্ ॥ ৭২।। ত্বামাত্রকরং জাতং কথাপ্রবণনিক্ষয়ে। কেচিৎ কোশলরাজস্থ তপস ফরঃসিদ্ধয়ে॥ ৭৩।। কৌশল্যায়া প্রার্থ্যমানং জাতমাছঃ পরে জনাঃ। দুষ্টরাক্ষসভূভারহরণায়ার্থিতে। বিভুঃ।। ৭৪।। ব্ৰহ্মণা নরৰূপেণ জাতো ২য়মিতি কেচন। স্ণৃত্তি গায়ন্তি চ যে কথান্তে রঘুনন্দন !।। ৭৫ ॥ পশ্ববি তব পাদাব্রু ভবার্ণবস্থতারণম্। ত্ত্মারাগুণবদ্ধাহং ব্যতিরিক্তং গুণাশ্রয়ম।। ৭৬।।

নমস্তামি রঘুশ্রেষ্ঠং বাণাসনশরান্বিভম্। লক্ষণেন সহ ভাতা স্থাীবাদিভিরম্বিতম্।। ৭৭।। এবং স্ততো রঘুশ্রেষ্ঠঃ প্রদন্নঃ প্রণতাঘহৃৎ।; উবাচ ধোগিনীং ভক্তাং কিন্তে মনসি কাজ্জিকতম্। দা প্রাহ রাঘবং ভক্ত্যা ভক্তিং তে ভক্তবৎদল!। যত্র কুত্রাপি জাতায়া নিশ্চলাং দেহি মে প্রভো!। বছকেরু দদা সঙ্গো ভুয়ান্মে প্রাকৃতে বুন। জিহ্বা মে রামরামেতি ভক্ত্যা বদতু সর্বদা।। ৮০ মানসং শ্রামলং ৰূপং সীতা লক্ষ্ণদংঘূতম। ধন্ত্ৰবাণধরং পীতৰাসনং মুকুটোজ্জ্বলম্।। ৮১॥

হে রাম ! এই জ্বাৎ সংসার মধ্যে কোন্জন তোমার প্রিয় বা বেষা এবং শত্রু নংে--কেবল ভোমার মারা ছারা মোছিত क्रानिवारे (क्रामारक के अकाव क्रानि । १८। इस एवं ! ভোষার জ্বন্ম নাই এবং তুমি কিঞ্জিনাত্র কারণ নহ অথচ সক-শের নিয়ন্তা, অতএব ভূজাদ ও মনুষ্য প্রভৃতির মধ্যে জন্ম আদি তোমার যে যে কর্ম সকলই বিভ্রমা মাত্র ।৭২। তুমিই নিত্য পদাৰ্থ, ৰাক্য সিদ্ধির নিমিত্ত কোন কোন পণ্ডিভগণ ৰলিয়। থাকেন যে, তুমি দশরথের তপ্রদার ফলসিদ্ধির হেতু জ্বায়ছ। 1৭৩_| অন্যান্য পণ্ডিতগণ বলিয়া থাকেন কৌশল্যার সনোরথ দিদ্ধির নিমিত্ত, এবং পৃথীর ভার স্বরূপ হৃষ্ট রাক্ষসগণ বিনাশ করিতে প্রার্থিত হইয়া জন্ম গ্রহণ করিয়াছ। ৭৪। হে রঘু-নন্দন! যে ব্যক্তিরা ভোমার বাকা প্রবণে ও গুণাসুকীর্তনে অনুবক্ত হয়, ভাছারা অফেশে অপার ভবদাগর উতীর্ণ হইবার

নিমিত্ত তোষার পাদপ্ম-তরণী প্রাপ্ত হয়। আমি তোমার बर्गानारिनी मासारमाहिका ७ जिन्हीना, खन्त्राः भारत बक **অ**থচ সকল গুণাশ্র—ভোমাকে জানিতে ও **স্ত**ব করিছে অসমর্থা। হে পুক্ষোত্তম! তুমি অনুস লক্ষ্মণ ও স্থাতীবের সহিত বিরাজমান—তোমাকে নমস্কার করি। ৭৫। ৭৬। ৭৭। এইরপ স্তৃতি দারা রবুপতি প্রমন্ন হুইয়া সমুম্প্রভাচক বলিলেন-ভোমার মনের অভিনাষ প্রকাশ কর। ৭৮। অনস্তর যোগিনী কুভাঞ্জি হইরা রঘুনাথকে কহিতে লাগি-লেন—হে ভক্তজন মনোরঞ্ন! নিক্ষ বা উৎকৃষ্ট স্থানে আমার জন্ম হউক ভাষাতে কিঞ্চিনাত্র অনুভাপ করি না, কিন্ত ভোমাতে নিশ্চলা ভব্তি থাকে, ও তোমার ভক্তের সঙ্গ রহিত যেন না হই – আমার রসনা নিরন্তর রাম নামামূত পানে যেন দ্বা অভিলাষিণী হয়, আমার চিত্তও খেন পীত বদন কৌস্বভ প্রভৃতি ভূষণ সমূহ হারা ভূষিত তোমার এই মনোহ্ব শ্যামল রূপ নিরন্তর অরতে পরাযুধ না হয়। ছে ভক্ত-वर्तन ! उनाजी कराज अना वदाखिलांचिनी नःइ। १२। ৮०

সঙ্গদৈন্ পুরৈভু কোহারিঃ কৌস্তভকুগুলৈঃ।
শাস্তং স্মরতু মে রাম ! বরং নান্যং র্ণে প্রভো ॥
শীরাম উবাচ।

ভবত্বেবং মহাভাগে । গচ্ছ তং বদরীবনম্ । তত্ত্বৈর মাং স্মরন্তী তং ত্যক্তেদং ভূতপঞ্চম্। মানেব প্রমাত্মানং অচিরাৎপ্রতিপদ্যসে॥ ৮৩॥

1৮১।৮২। দয়াল্ রাম যোগিনীর স্তৃতি বাক্য হারা প্রীত হইয়া বলিলেন—হে প্রমন্ত কদয়ে! তোমার মনোরথ অবি-লছেই পূর্ণ হইবে, ভূমি বদবীবন প্রাপ্ত হইয়া আমাকে অরণ করত এই পঞ্জীতিক দেহ পরিত্যাগ পূর্বক আমাকে প্রাপ্ত শ্রুতা রঘূত্তমবচোহমূত সারক প্রম্
পদা তদৈব বদরীত রুখও জুই ম্।
তীর্থং তদা রঘুপতিং মনসা সারস্তী
ত্যক্ত্বা কলেবরমবাপ পরং পদং সা॥ ৮৪ ॥

ইভি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে কিন্ধিন্ধ্যাকাণে বর্ষমোহধ্যায়ঃ

ছটবে । ৮৩ । রঘুত্তমের অমৃত কম্প বাণী শ্রবণ করিয় । যোগিনী বদরীকাশ্রম গমন পূর্ত্তক পতিতপাবন জ্ঞীরামচন্ত্রকে ধ্যান করত কলেবর পরিত্যাগ করিবামাত্র দেব তুল ভ বৈকুণ্ঠ ভবন বাসিনী ছটল । ৮৪ ।

> ইভি শ্রীমদধ্যক্ষরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে কিছিন্ধাকাতে মটোহধ্যায়ঃ :

मश्रुदमा ३ शायः।

অথ ভত্ত সমাসীনা ব্লুক্থতেষু বানরাঃ I চিন্তরত্তো বিমুছন্তঃ দীতামার্গকর্শিতাঃ।। ১॥ তত্তোবাচাঙ্গদঃ কাং শ্চিদ্বানরান্ বানরর্যতঃ। ভ্ৰমতাং গল্পারেইস্মাকং মাসো কুনং গতোইভবৎ মীতা নাধিগতামাভিন ক্লতং রাজশাসনম্। ধদি গচ্ছামঃ কিন্ধিন্ধাং ? সুত্রীবোহস্মান হনিধ্যতি বিশেষতঃ শক্রস্কুতং মাং মিষাল্লিছনিষ্যতি। মন্ত্রি তদ্য কুতঃ প্রীতি ? রহং রামেণ রক্ষিতঃ ॥ ৪ ॥ **সর্কাদে**।ভাগ্যসহিতং পুরং দেবপুরোপমম্। ইদানীং রামকার্য্যং মে ন কুতং তান্মিষং ভবেৎ। ভক্ত মদ্ধননে चूनः <u>स</u>्जीतका पूराकानः॥ e॥

মাতৃকল্পাং ভাতৃভাষ্যাং পাপাত্মানুভবভ্যমে। ন গচ্ছেয়মতঃ পার্যং তন্ত বানরপুঞ্চনঃ !॥ ७ ।। ত্যক্ষ্যামি জীবিতং চাত্র যেন কেনাপি মৃত্যুনা। ইত্যক্ষনয়নং কেচিৎ দৃষ্ট্বা বানরপুক্ষবাঃ ॥ ৭ ॥ বাথিতাঃ সাঞ্নয়না যুবরাজমধাক্রন্। ৮॥ কিমর্থৎ তব শোকোহত ? বয়ং তে প্রাণরক্ষকাঃ। ভবামো নিবসামোহত্র গুহায়াথ ভয়বর্জিভাং।। ৯ শনৈঃ পরস্পারং বাকাং বদতাং মারুতান্মজঃ॥ ১।।

জনস্তর সেই বন মধ্যে সীভার অন্তেষণ শারা ক্লিফ ও িলাকুণ হৃদর যুবরাজ প্রভৃতি কপিগণ মুগ্ধ হইয়া বুঁক সমূহ ষ্পৰলম্বন করত বানর শ্রেষ্ঠ বালী নন্দন মর্কটগণকে বলিলেন। হে মর্কটগণ ! এই গহরর মধ্যে বিচরণ করিতে করিতে আমা-দিবোর নিশ্চয় এক মাস অভিবাহিত হটল। ১।২। আমরা বাজাক্তা পালনে অসমর্থ হইরা কিফিরাভিমুখে গমন করিলে ञ्**ञीय याभारमद्र निक्त्य्रहे श्रामाञ्चिक मश्र क**दित्व ; वित्मयकः মামি শক্ত তময় বলিয়াই সুগ্রীব কোপানল হারা আমাকে বিনাশ করিবে, যেহেতু আমার প্রতি হুরাত্মা সুগ্রীবের প্রীতি উৎপাদনের কারণ মাত্রও লক্ষিত ছইতেছে না; আমি রঘুনাথ কর্ত রক্ষিত হইয়া আছি, ইদানীং রাম কার্যা সম্পাদনে অসমর্থ, স্মতরাং সেই তুরাস্মা চির বৈরি স্বজীব যে আমাকে বিনাশ করিবে ডাছার সন্দেহ নাই। ৩। ৪।।৫। অতএব মাতৃ তুল্য ভ্ৰাতৃ-ভাষ্যান্ত্ৰণামী হুৱান্ত্ৰা স্থাীবের পার্থ বিত্তী ছইব না, অধি প্রবেশাদি যে কোন উপায় দারা পারি এ জীবন নিশ্চয়ই পরিত্যাগা করিব ; কতিপয় বানরগণ বীরবর অঞ্চলকে এইরূপ থিন্যমান ও সজল নয়ন অবলোকন করিয়া ছুঃথি-ভাত্তঃকরণে আত্থান ৰাক্য দার। সাত্তনা করিছে লাগিল।

ছে যুৱৱাৰ ! আপনি কিঞ্মিত্তে শোকাৰ্ড ছইবেন না, जामता এই वामत मधनी जानमात कीत्रन मण्टण यहवान करेया এই ভন্নবৰ্জিত গুহাৰ অভ্যন্তৰে স্বৰ্গ তুলা পুৰীতে সৰ্ব্ধদা বাদ করিব। কশিগণের প্রশার এরপ বাকা প্রবণ করিমা

শ্রুত্বাঙ্কদং সমালিক্য প্রোবাচ নরকোবিদঃ
বিচার্যাতে কিমর্থং ? তে ছুর্মিচারো ন যুজাতে ॥১১
রাজ্ঞাহত্যন্ত প্রিয়ন্ত্বং হি ভারাপুত্রোহতিবল্লভঃ।
রামস্ত লক্ষ্মণাৎ প্রীতি ন্তার্ম নিভাং প্রবর্ধ তে ॥ ১:
অতো ন রাঘ্যান্তীতিন্তব রাজ্ঞো বিশেষতঃ।
অহং তব হিতে সজো বৎস। নান্যং বিচারয় ॥১৩
গুহাবাসন্ট নির্ভেদ্য ইত্যুক্তং বানরৈন্ত যৎ
তদেত জামবাণানামভেদ্যং কিং জগজ্ঞরে ? ॥ ১৪॥
ধে ডাং দুর্বোধয়ন্ত্রোতে বানরা বানর্ধভ!।
পুল্লদারাদিকং ত্যক্ত্রা কথং স্থাক্তন্তি তে ড্রা॥ ১৫

হতুমান যুবরাজকে আাণিঙ্গন করতঃ বলিল, হে নীভিজ্ঞ ! এ রূপ কার্যাচরণ নীতিজ্ঞের উপযুক্ত নহে। ৯।১০।১১। বেছেতু তুমি তারার তনয়ও স্থাীবের অভান্ত প্রিয়, এবং ত্রীরামচক্র লক্ষ্মণের প্রতি যেরপ বাংসল্য প্রকাশ করেন, ভোমার প্রতি তাঁহার ততোধিক বাৎসল্য দৃষ্ট হয় ।১২। অতএব ভক্ত বংসল রামচন্দ্র ও কপিরাজ স্থগ্রিব হইতে তোমার ভারের কারণ মাএ লাকিত হইতেছে না। হে বংগ! আমি সর্বলাই তোমার হিত কার্যা সাধ্যে অনুরক্ত হইলাম অন্য বিচারে কোন প্রয়োজন নাই, হে যুবরাজ ! তুমি বিবেচনা कृतिया एमध अल्लान किश्वान विलिख्टिह (य, व्यामन निर्ल्स গুহা মধ্যে বাস করিব (অর্থাৎ স্কুগ্রিব সন্নিধানে কলাচ পামন করিব না) এই বাক্য কোন রূপে প্রমিতি জনক ছইতে পারে না, যেহেতু এই ত্রিভূবন মধ্যে কোন্ বস্তু আছে যাহা জীরাম বাণের অভেদ্য? জীরাম শরসন্ধান করিলে গুহা মধ্যে কপি-গাণের নির্ভব্নে বাস করা কি রূপে সম্ভব হইতে পারে ? যে বানরগণ তোমাকে তুর্ব্দি প্রদান ছারা ভ্রম বর্দ্ধন করি-রাছে তাহার। পুত্র দারাদি বর্জিত হইরা এই গুহামধ্যে ভোমার সৃহিত কি প্রকারে বাস ক্রিয়া কাল যাপন ক্রিবে?

ভাষ্য প্রহাত মং বক্ষ্যে রহস্তং পূণ্ যে স্কৃত !।
রামো ন মানুষো দেবং সাক্ষায়ারায়ণাইব্রয়ঃ ॥১৬
সীতা ভগবতী মায়া জনসংমোহকারিণী।
লক্ষণো ভুবনাধারঃ সাক্ষাচ্ছেষঃ ফণীশ্বঃ ॥ ১৭ ॥
বক্ষণা প্রার্থিতাঃ সর্কে রক্ষোগণবিনাশনে।
মায়ামানুষভাবেন জাতা লোকৈকরক্ষকাঃ ॥ ১৮ ॥
বয়ং চ পার্যদাঃ সর্কে বিক্ষোকৈকুঠবাসিনঃ।
মনুষ্যভাবমাপয়ে স্বেচ্ছয়া পরমাজনি ॥ ১৯ ॥
বয়ং বানয়র্বপেণ জাতান্তলাৈর মায়য়া।
বয়ং তু তপসা পূর্বাং আরাধ্য জগতাং পতিম্॥২০
তেনৈবানুগৃহীতা স্মঃ পার্যদন্ত মুপাগতাঃ।
ইদানীমপি তলৈবে সেবাং কুত্বিব মায়য়া॥ ২১ ॥

। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। হে কপিবর অঙ্কন ! অন্য গোপনীয় রহস্য কহিভেছি মনোযোগ পূর্বক শ্রবণ কর, যিনি কীবোদ সাগরে ভ্রুক্ত শয়নে শায়িত আছেন তিনিই সাক্ষাং অধ্যায় নারায়ণ রামচন্ত্র, এই জগৎ সংসার ঘাঁছার মায়াওই দ্বারা বদ্ধ হইয়া আছে তিনিই জনক নন্দিনী সীতা, যিনি এই সপ্ত দ্বীপা পৃথিবীকে সহস্র ফণা দ্বারা ধারণ করিতেছেন তিনিই অনস্তদেব লক্ষ্মণ—ই হারণ কেহই মানব নহেন, কেবল এই জগৎ সংসার উদ্ধার ও অবনীর ভার স্বরুপ রাক্ষ্ম কুল নির্মূল করিবার জন্য প্রজাপতি ব্রহ্মা কর্তৃক প্রাথিত হইয়া মানব লীলা অবলম্বন করিতেছেন। ১৬। ১৭। ১৮। পূর্বেকালে আমরা অতিশয় কঠোরতর তপাসা করিছা জগৎ পিতা নারায়ণের আরাধনা করিলে ঐ দ্যামর ভর্ত্ব বংগল দ্যাপরতন্ত্র হইয়া বলিলেন হে তাপ্সগণ! তোমরা এই তপ্স্যার প্রহাব বশতঃ নির্ম্তর আমার স্মীপ্রতী হইয়া মদীয় সেবায় ও জভীই কার্ম্য দুল্পাদনে নিযুক্ত

পুনবৈর্প্তমাদাভা হুখং ছাদ্যামহে বয়ম্। ইত্যঙ্গদমথাখান। গতা বিদ্ধাৎ মহাচলম ॥ ২২ ॥ विविश्वराख्यास्य मनरेकर्कानकीः प्रक्रिगाश्चर्यः। তীরে মহেন্দ্রাক্ষগিরেঃ পবিত্তং পাদমাযযুঃ॥ ২৩॥ *দৃষ্ট্*∤ **मমুদ্রং দুঃপারমগাধং ভয়বর্দ্ধনম্**। বানরা ভয়সংত্রস্তাঃ কিং কুর্মা ইতি বাদিনঃ । ২৪॥ নিষেদুরুদধেন্তীরে দর্বে চিন্তাসমন্বিতাঃ। মক্তরামান্ত্রন্যোন্যক্ষদান্তা মহাবলা:॥ ২৫॥ ভ্রমান্তমের নো মাসো গতোহতৈর গুহান্তরে।

হুইয়া কাল্যাপন কর। অনন্তর ভক্ত বংগল দক্ত এই বর গ্রহণ করিয়া বৈকুণ্ঠনাথের পার্ষদ হইলা ছিলাম, বর্ত্তমান সময়ে পরমাত্ম। বিষণু অবনী মণ্ডলের ভার উদ্ধার করিবার জন্য মানব দেহ ধারণ করিয়াছেন সুতরাং ভাষা ছইলে আমরাও মায়া দ্বারা বানর দেছ ধারণ করিয়া তৎকার্যা সম্পাদন করতঃ পুনৰ্কার বৈকুণ্ঠ ধামে গানন্দ চিত্তে বাস করিয়া কাল্যাপন বরিব। এই প্রকার যুবরাজকে নানা প্রকার আশ্বাদ বাক্য প্রদান করিলেন। অনন্তর বানরগণ জান চীর আবেষণ করতঃ বিশ্বা পর্বত প্রাপ্ত হইয়া ক্রমে ক্রমে লবণ সমুদ্রের তীরে মহেন্দ্র পর্বতোপরি গমন করিল। ১৯।২০।২১। ২২। ২৩। অনম্বর বানরগণ পর্বভাক্তি মক্ত, কুন্তীর প্রভৃতি জলচর জন্ত সমাকীৰ্ণ অভলম্পৰ্শ ভয়ানক সমুদ্ৰ দৰ্শনে ভন্ন সম্ভন্ত भागम रहेया विवत्भद्र नाम खक्र निधिन कविया क्रिक् वा भावन-किर वा छे भारतमान कविन.; किन्छ मरावन श्वासकम অঙ্গল প্রতুতি বানরগণ মন্ত্রণা করিবার জন্য উপবিষ্ট ছইল। 1281 २६। अनल्ड वानत निर्गत **এই ज्ञान मस्त्र ।** दित हरेन-আমাদিগের বৃথা ভ্রমণে নির্দিষ্ট কাল অভিবাহিত হুইল, অদ্যাবধি রাবণকে ও দীভাকে দর্শন করিতে পারিলাম না,

স্ত্রীবন্তীক্ষণণ্ডোই আলিহন্ত্যের ন সংশয়ঃ। স্ত্তীববধতে। হস্মাকং শ্রেয়ঃ প্রায়োপবেশনম্॥ ২৭ ইতি নিশ্চিত্য তত্ত্বৈব দর্ভানান্তীর্য্য সর্ববৃত্য:। উপাবিবেশুন্তে দর্কে মরণে ক্রতনিশ্চরাঃ॥ ২৮ । এত**িমন্নন্তরে তত্ত মহেন্দ্রাভিত্যন্ত**রাৎ । নির্গত্য শনকৈরাগাদ্গৃধ্ঃ পর্বতসন্মিতঃ ॥ ২৯॥ দৃষ্ট্রা প্রায়েপবেশেন স্থিতান্ বানরপুঞ্চবান্। উবাচ শনকৈগুর্বঃ প্রাপ্তো ভক্ষোহদ্য মে বছঃ॥৩० **এ** किक्नाः क्रमार्मिकान् चक्रमामि नितन नितन । ন দৃষ্টো রাবণো বাহন্ত দীতা বা জনকাজ্জা॥ ২৬॥ শ্রুজা তদ্গুধুবচনং বানরা ভীত্যানদাঃ । ৬১॥ ভক্ষরিষ্যতি নঃ সর্বানসে গুরো ন সংশয়ঃ। রামকার্যাং চ নাম্মাভিঃ ক্বতং কিঞ্জিরীশ্বরাঃ ! ৬২

> অভএৰ মহাবাজ স্থাীৰ দৃত্তর দও দ্বাৰা আমাদিলের প্রাণা-खिक मण विधान कतिरवन ईहार्ड मन्मिर मांज नारे; कि है স্ত্রীব কর্ত্ব প্রাণ দণ্ড অপেক্ষা প্রাংগপবেশন দ্বারা প্রাণ তাগ করাই শ্রেয়জ্বর, এই রূপ মরণে রুত নিশ্চয় হইয়া স্ব স্ব मंत्रीदि कर्मम त्निपन कित्रता कृमाम्तापति छेपदिशन कित्रता। 1281291241

> এই সময়ে পর্বতে সনৃশ এক গ্র কোধ পরতক্ত হইয়া মহেন্দ্র গিরির অভ্যন্তর হইভে বছির্গত হইয়া বানর লেক্টেন্গ প্রায়োপবেশনে উপবিষ্ঠ আছে অবলোকন করত কহিল, অদ্য আমি বিপুণ ভকামের্য প্রাপ্ত হইয়াছি, অতএব এক একটা করিয়া প্রতিদিন সকলকে ভক্ষণ করিব। বানরসমূহ গুঞ্জের বাকা আহবণ করিয়া ভীত্মনা হওত পরম্পার কৃছিতে नांशिन (य, श्रें विकास वामानिश्व मकन कि क्या कि विद् অতএব আমাদিণের কর্তৃক রামকার্য্য কিছুই হইল না—সুর্জ্রী-বেরও কোন হিতকার্যা করিতে না পারিয়া রুখা বিনাশ

স্থাবিদ পি চ হিতং ন কৃতং স্বান্ধনামপি।

রথানেন বধং প্রাপ্তা গচ্ছামো যমসাদনম্।। ৩৩॥

অহো জটায়ুর্ধ স্মান্ধা রামস্যার্থে মৃতঃ স্থাঃ।

মোকং প্রাপ দুরাবাপং যোলিনামপ্যরিক্ষমঃ।॥৩৪

সম্পাতিস্ত তদা বাক্যং শ্রুড়া বানরভাষিতম্।

কে বা যুরং মম ভ্রাড়ুঃ কর্ণপীযুষসন্ধিভ্রম্॥ ৩৫॥

জটায়ুরিতি নামান্তা ব্যাহারস্তঃ পরস্পরম্।

উচ্চতাং বো ভরং মা ভূমান্তঃ প্রবগসন্তমাঃ।॥ ৩৬

ভমুবাচাক্ষদঃ শ্রীমানুষ্মিতো গুধুসন্ধিধা।

বামো দাশর্থিঃ শ্রীমান্ লক্ষণেন সমন্বিতঃ॥ ৩৭।

সীতয়া ভার্যয়া সার্দ্ধং বিচ্চার মহাবনে।

ভস্য সীতা স্কৃতা সাধী রাবণেন সুরাজ্বনা। ৩৮।।

প্রাপ্ত হইয়া যম সদলে গমন করিলাম। হায়, ধীশক্তিপস্পায়, ধথাাথা জটায়ু রামকাধ্যে নিধন প্রাপ্ত হইয়া যোগিগণের ভুল ভি মোক্ষ লাভ করিয়াছেন ।২৯।৩০।৩১।৩২।৩০।৩৪।

তখন সম্পাতি বানর ভাষিত বাক্য শ্রবণ করিয়া ভাছাদিগকে কহিল—ভোমরা কে, কর্ণামৃততুল্য আমার ভ্রাভার
কথা কহিভেছ? হে বানর শ্রেষ্ঠগণ! অদ্য ভোমরা পরস্পর
ভাটায়ুর নাম উল্লেখ কর, আমা হইতে ভোমাদিগের কোন
ভর নাই। শ্রীমান্ অক্ষদ উথিত হইয়া তৎসন্নিধানে গমনপূর্ব্বক
কহিতে লাগিলেন—রাজা দশর্থের পুত্র জ্রীমান্ রামচক্র
কনিষ্ঠ লক্ষাণ ও ভার্য্যা দীভার সহিত মহারণ্যমধ্যে বিচরণ
করিতেছিলেন। একদা পর্ণকৃটির মধ্যে দীভাকে সংস্থাপর
করিয়া শ্রীয়াম ও লক্ষাণ মৃগয়ার্থ বহির্নাত ছইলে ভুগাল্মা রাবণ
পাত্রভা দীতাকে অপহরণ করিল, ঐ সময় মহাবল পরাক্রান্ত
পক্ষিরাল জটায়ু আকাশ পথে "হা রাম। হা রযুত্তম।"
এই রূপ কাকণ্য বিলাপ বাক্য শ্রবণ করিয়া আকাশ পথে
গমন করতঃ দীভার সংরক্ষণার্থ দশানন রাবণের সহিত্ তুমুল

যুদ্ধ করিয়া প্রাণ পরিত্যাগ করিয়াছিলেন। । ৩৫। ০৬। ০৭। ০৮। ৩৯। ৪০। জনন্তর জীরামচন্দ্র জটায়ুর অগ্রিন্দ করিয়ার রাম-সাযুষ্য প্রাণ্ডি ছইল। পরে জীরাম অগ্রিমার করিয়া কপিবর স্থ্রেলীবের সছিত মিত্রতা করিলেন। ৪৯। এবং মহাবল পরাক্রান্ত কপিরাক্ত বাগিকে বিনাশ করিয়া স্থ্রেলীবকে বানর রাজ্যে অভিযক্ত করিলেম। ৪০। অনন্তর বানর শ্রেষ্ঠ স্থ্রেলীব সীতার অংশ্ববণার্থ আমাদিগকে প্রেরণ করতঃ আদেশ করিলেন যে, ভোমরা মাস মধ্যে প্রভাগিন্দ না করিলে প্রাণান্তিক দণ্ড প্রান্ত হুইবে। আমরা রাজ শাসন প্রতিপালনার্থ ভ্রমানক বন ও গুছা মধ্যে ভ্রমণ করিয়া মাসাভিবাহিত করিয়াছি, কিন্তু আদাশি সীতা ও রাবণের বার্তাও জাবণ করিলাম না, অভএব প্রারোশবেশনে লবণ সমুজ্ব ভীবে জীবন বিসর্জন করিতে উদ্যাত হইমাছি। ৪০।৪৪।৪৫।

যদি জানাসি হে পকিন্! সীতাং কথয় নঃ শুভাম্
অঞ্চল বচঃ শ্রুড়া সম্পাতি শ্রু ইমানসং ॥ ৪৬ ॥
উবাচ মৎ প্রিয়ো ভাতা জটায়ুঃ প্রবেগশ্বরাঃ!।
বছবর্ষদহস্রান্তে ভাতৃবার্ত্তা শ্রুড়া ময়া।। ৪৭ ॥
বারুহায়ং করিষেঃহহং ভবতাং প্রবেগশ্বরাঃ!।
ভাতৃঃ সলিলদানায় নয়ধং মাং জলান্তিকম্।
পশ্চাৎ সরিং শুভং বক্ষ্যে ভবতাং কার্যাসিছরে।
তথেতি নিম্যুক্তে তীরং সমুদ্রদ্যা বিহঙ্গমম্।
সোহপি তৎসলিলে স্নাত্রা ভাতৃর্নত্বা জলাঞ্জলিম্।।
পুনঃ স্বন্থানমাসাদ্য স্থিতো নীতো হরীশ্বরৈঃ।
সম্পাতিঃ কথয়ামাস বানরান্ পরিহর্ষয়ন্।। ৫০ ॥
লক্ষা নাম নগর্যাক্তে ত্রিকুটগিরিমূর্জনি।
ভত্রাশোকবনে সীতা রাক্ষসীতিঃ স্বর্কিতা॥ ৫১॥
সমুদ্রমধ্যে সা লক্ষা শত্রোজনদূরতঃ।
দৃশ্যতে যে ন সন্দেহঃ সীতা চ পরিদৃশ্যতে॥ ৫২॥

হে পশ্চিরাক্ত ! শুভদায়িণী মা জানকী ! বাবণ কর্জ্ক হতা হইয়া কোন স্থানে বাদ করিভেছেন যদি আপনি জ্ঞাত থাকেন তবে প্রকাশ করুন, অঙ্গদের এই রূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া হৃষ্ট মানদ দম্পাতি কছিল—হে বানরগণ ! বহু কাল পরে প্রিয়ভম জাতা ভটায়ুব বার্তাশ্রবণ কবাইলে, অভ এব দীতার অংশ্বেণ কার্য্যে বাকা ঘারা ভোমাদিগকে সাহায্য করিব, কিন্তু সম্প্রতি প্রিয়ভম জাতা জ্ঞায়ুর তর্পণ করিবার জন্য আমাকে জ্ঞাশম্ম সমীপে লইয়া চল, পরে ভোমাদিগের কার্যা দিল্লার্থ সমস্ত সম্বাদ বিস্তার করিয়া কছিব; অনস্তর পক্ষিবর সম্পাতি বানরগণ কর্ম্বক সমৃদ্র তীরে নীত হইলে ঐ জ্ঞান মধ্যে স্মান ও তর্পণ করতঃ প্নর্ক্রার স্বস্থানে সমানীত হইয়া বানরগণের হর্ম সমুৎপাদন করতঃ কহিলেন ছে বানরগণ ! সমৃদ্র মধ্য দেশে থিকুট পর্ক্ষতোপরি লক্ষ্য নামী পুরী আছে, ভন্মধ্যে অশোক বনে রাক্ষদী বর্ম্বক পরিরক্ষিতা হইয়া বামপ্রিয়ভমা সীতা বাস করিতেছেন, পক্ষি জাতিব দূরদৃষ্টি বশতঃ শত যোজন দূর গৃধ্বাদ্দ্রদ্থিমে নাত্র সংশয়িত্বং ক্ষম ।
শতবোজনবিজীর্ণং সমুদ্রং যক্ত লক্ষ্যেরে ॥ ৫৬ ॥
স এব জানকীং দৃষ্ট্রা পুনরায়াক্সতি এই ম ।
অহমেব দুরাত্মানং রাবণং হন্তমুৎসহে ॥ ৫৯ ॥
ভাতৃহস্তারমেকাকী কিন্তুপক্ষবিবর্জিতঃ ।
যতপ্রমিতি যত্নেন লক্ষিতৃং সরিতাম্পতিম ।
ততো হন্তা রঘুতোর্ফো রাবণং রাক্ষসাধিপম্॥ ৫৫

লঙ্কাং প্রবিশ্যাথ বিদেহকন্যকাম্। দৃষ্ট্বা সমাভাষ চ বারিধিং পুন-স্ততুং সমর্থ: কতমো বিচার্য্যতাম্॥ ৫৬॥

শতযোজনায়তং

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে কিন্ধিশ্যাকাণ্ডে সপ্তমোহ্ধ্যায়ঃ।

পথে অবছিতা লহাপুরী ও তম্বাবর্তিনী সীতাকে আমি দর্শন করিতে পারি অতএব সন্দেহ কর্ত্বর নহে। যে জন এই শত্ত যোজন বিস্তীর্গ সমুদ্র লজ্জনে সমর্থ হইবে সেই সীতাকে দর্শন করিয়া প্রত্যাগমন করিতে পারিবে; কি করি আমি পক্ষবিহীন না হইলে আতৃহস্তা তুরাক্মা রাবণকে একাকীই বিনাশ করিয়া যম সদনে প্রেরণ করিতাম। ছে কপিগণ! তোমরা এই সমুদ্র লজ্জনে বত্রবান হও আর রম্বুপতি জীবামচন্দ্র ঐ হরামার রাবণকে বিনাশ করুন। ৫৫। সম্প্রতি এই শত্ত যোজন বিস্তৃত বারিধি লজ্জন পূর্ককে লহাপুরী প্রবেশ করিয়া বাম-প্রিক্রতমা সীতাকে দর্শন ও সম্ভাবণ পূর্কক প্রত্যাগমনে ভোমাদিগের মধ্যে কে সমর্থ—পরস্পর বিচার করিয়া নিশ্চধ করে। ৫৬।

ইতি জীমদধ্যাক্সরামায়ণে উমামছেশ্বরসম্বাদে কিছিল্যাকাণ্ডে সপ্তমোহধাায়ঃ!

অফ্টমো২ধ্যায়ঃ।

অথ তে কৌতুকাবিকাঃ সম্পাতিং সর্ববানর ।
পপ্রচ্ছুর্তগবন ! ক্রহি সমুদন্তং ত্বমাদিতঃ ॥ ১ ॥
সম্পাতিঃ কথয়ামান স্বত্তাস্তং পুরাক্বতম।
অহং পুরা জটায়ুশ্চ ভাতরে কাটোবনো ॥ ২ ॥
বলেন দর্পিতাবাবাং বলজিজ্ঞাসয়া খগো ।
স্বর্থামঞ্জমপর্যান্তং গল্ভমুৎপতিতো মদাৎ ॥ ৩ ॥
বছযোজনসাহস্রং গতৌ তত্র প্রতাপিতঃ ।
ক্রটায়্তং পরিত্রান্তুং পশ্কেবাচ্ছাল্য মোহতঃ ॥ ৪ ॥
স্থিতোহহং রশ্মিভিদ্প্রপক্ষাহ্মিন্ বিক্রামূর্জনি ।
পতিতো দূরপতনাম্মূচ্ছি তোহহং কপীশ্বরাঃ ॥ ৫ ॥

অনস্তর বানরগণ আনন্দিত ছইয়া সম্পাতির প্রতি কহিল,
হে পদ্বিরাজ! আমরা আপনার পক বিহীন অবলোকনে
বিশ্মিত ইইলাম, অতএব আসনি স্বকীর রন্তান্ত সকল প্রকাশ
করিয়া আমাদিগের সংশ্য ছেদ করুন। ১। অনস্তর সম্পাতি
প্রাক্ত স্বকীয় রন্তান্ত কহিতে প্রবৃত্ত ইইল—পূর্ব্ব কালে
প্রাক্ত স্বকীয় রন্তান্ত কহিতে প্রবৃত্ত হইল—পূর্ব্ব কালে
প্রাক্ত স্বকীয় করিবার জন্য স্বামণ্ডল গামনে উদ্লোগী হইয়া
বিভাগ পরিভাগে মোহ প্রাপ্ত হইল, আমিও জটায়ুর
ভীবন রক্ষা করিবার জন্য পক্ষম্ব প্রসারণ করেত অগ্নি তুল্য
স্বা্ কিরণে দগ্ধ-পক্ষ হইয়া এই বিক্যাপর্ব্বতের উপরিভাগে
পতন নিবক্ষন মৃদ্ধিতি হইয়া দিনত্তর প্রান্ত এইরূপ অচৈতন্য
হইয়া ছিলাম—শ্বনীয় দেশে—কি পর্ব্বতোপরে বাস করি ছেছি

দিনত্তরাৎ পুনঃপ্রাণসহিতে। দক্ষপক্ষকঃ।
দেশং বা গিরিকুটান্ বা ন জানে জান্তুয়ানসঃ॥ ৬॥
শনৈরুদ্মীল্য নয়নে দৃষ্ট্য তল্লাশ্রমং শুভুম্
শনৈঃ শনৈরাশ্রমশু সমীপং গতবানহম্।। ৭॥
চন্দ্রমা নাম মুনিরাট দৃষ্ট্য মাং বিন্মিতোহ্বদং।
সম্পাতে! কিমিদং তেহদ্য বিরূপং কেন বা রুত্রম্
জানামি স্বামহং পূর্বিমতান্তং বলবানসি।
দক্ষো কিমর্থং তে পক্ষো ? কথাতাং যদি মন্যসে॥
ততঃ স্বচেটিতং সর্বাং কথমিতাতিত্বথিতঃ।
অক্রবন্ মুনিশাদূলং দক্ষেহ্ইং দাববহ্নিনা।। ১০॥
কথং ধার্য়িতুং শক্ষো বিপক্ষো জীবিতং ? প্রেন্থে
ইত্যুক্তোহ্থ মুনিবীক্য মাং দ্য়াদ্র্বিলোচনঃ।। ১১

জানিতে অসমর্থ ছিলাম। ২।৩। ৪।৫।৬। অনন্তর আমি চৈতনঃ
প্রাপ্ত ছইয়া অনতি দূরদেশে অপূর্বণ এক পূরী দর্শন করিয়া
মতি ক্লেশ পুরংসর ঐ পুরীর সমীপে গমন করিলাম। ঐ
আশ্রমাধিপতি মুনি শ্রেষ্ঠ চল্রমা আমাপেক দর্শন করত বিশ্বিত
হইয়া কহিলেন—হে সম্পাতে! আমি পূর্বের ভোষাকে
অসীম পরাক্রম বলিয়া জ্ঞাত ছিলাম, আদ্য কি কারণে ভোমাকে
পক্ষ বিহীন অবলোকন করিতেছি প্রকাশ কর। ৭৮৮৯। অনন্তর
আমিমুনিবর চল্রমার প্রতি পক্ষ দাহের কারণ সমস্ত বিরুত
করিয়া কহিলাম।

হে মুনিবর! আমি দাবানলে দম্ম হইয়া কি প্রকারে জীবন ধারণ করিব? মুনিরাজ চন্দ্রমা আমার এই কাত-রোক্তি শ্রবণ করিয়া দ্যার্জ চিত্তে কহিলেন, হে বংদ।

শুণু বৎস ! বচো মেইদাঞ্জা কুরু যথেপিচম্। দেহমুসমিদং ছঃখং দেহঃ কর্মসমূদ্রবঃ । ১২ ।। কর্ম্ম প্রবর্ত্ততে দেহেইহংবুধা পুরুষম্ভ হি। অহঙ্কারন্ত্রনাদিঃ স্থাদবিদ্যাসন্ত্রবো জড়ঃ॥ ১৩॥ চিচ্চাররা সদা যুক্তস্তপ্তারঃপিশুবৎসদা। ভেন দেহস্ত তাদাঝ্যাদেহশ্চেতনবান্ ভবেৎ ॥১৪॥ দেহো২হমিতি বুদ্ধিঃ স্যাদাত্মনো২হঙ্গতের্মলাৎ। তনা লং এষ সংসারঃ সুখতুঃখাদিসাধকঃ ॥ ১৫ ॥ আত্মনো নির্কিকারস্ত মিথ্যাতাদাৎম্যতঃ সদা। (नरहारुहर कर्माकर्डाहियि मिक्ष भारति । 13% জীবঃ করোতি কর্মাণি তৎফলৈর্বাধ্যতেহবশঃ। উদ্ধাধো ভ্রমতে নিতাং পাপপুণ্যাত্মকঃ স্করম্।। ১৭

क्र ७९ मशाधिकः शूनाः यक्रमानानि निन्धिः म। ষর্গং গত্বা মুখং ভোক্ষো ইতি সঙ্কল্পবান্ভবেৎ।। তথৈবাধ্যাসভম্ভত্র চিরং ভুক্ত্বা স্থখং মহৎ। ক্ষীণপুণ্যঃ পতত্যৰ্কাক অনিচ্ছন্ কৰ্মচোদিতঃ ॥১৯ পতিত্বা মণ্ডলে চেন্দোন্ডতো নীহারসংযুতঃ। ভূমে পতিতা ত্রীফাদৌ তত্ত ভিত্তা চিরং পুন:।২০ ভূত্ব। চতুৰ্মিধং ভোক্যং পুৰুষৈভূ কাতেঃ ততঃ। রেতো ভূড়া পুনস্তেন শ্লতো স্ত্রীয়োনিদিঞ্চিতঃ॥ ২১ যোনিরক্তেন সংযুক্তং জরায়ুপরিবেটিতম্। দিনেনৈকেন কললং ভূড়া ৰড়ত্বমাপ্লুয়াৎ ॥ ২২ ॥ তৎপুনঃ পঞ্জাত্তেণ বুদ্দাকারতামিয়াৎ। সপ্তরাত্তেণ তদপি মাংসপেশীন্বমাপ্লু রাৎ ॥ ২৩ ॥

গামার বক্ষামাণ বাকোর তত্ত্বার্থ গ্রেছণ করিয়া যাই। ইচ্ছা ভর করিবে। তে পজি রাজ। দেখ পুরুষের দেহ জন্যই সমস্ত ডুঃখ ভোগ হয়, ঐ দেহ পূর্লজন্ম রুভ কর্ম জনা দ্হোহং অর্থাৎ দেহ আামি—এই রূপ জ্ঞান জন্য পুরুষের ংগ প্রবর্ত হয়। কিন্তু মহস্কার (সর্থাং আমি দেহ,) এই রূপ ানের আশ্রর অনাদি জীব, অজ্ঞানের আশ্রয় লইলে ভূাগকে জড় কিম্বাহ্মচেতন বলে। কিন্তু মায়া বিশিষ্ট জীবাহ্মা অচেতন স্ট্রে**ও শির্ভিত** জ্ঞানময় প্রমাঝার **আতা সংযুক হই**য়া দহ ৬ আত্মার অভিন্ন জ্ঞান হইলে চৈতন্য প্রাপ্ত হয়। বেকপ অমি সন্তপ্ত লেছিপিও অমি না হইলেও অমি কার্য্য तलाम्ट्र ममर्थ इस । ५० । ५५ । ५२ । ५० । ५३ । अहहात्र মর্থাৎ আমি কর্ত্তা এই রূপ জ্ঞান হইলেই আমি দেহী এইরূপ জান হয়—তজ্জন্য সূথ ছঃখাদির কারণ এই সংসার অর্থাৎ শরীর পরিগ্রছ হয়, নির্বিকার জীবায়ায় ও দেহে অভিন্ন জ্ঞান ংশতঃ আমি দেহী ও কর্তা এই রূপ ভাত হইয়া পাপ পুলা কলাচরণ করতঃ ঐ কর্মাধীন হইয়া পাপাক্ষা চিরকাল । মাংসপিও, পঞ্চদশ দিবৰে এ মাংস পিও ক্ষিরাক্ত ১ইয়া

অধোদেশে বাদ করিয়া থাকে. পুনাত্ম। স্থর্গলোকে বাদ করিয়া थाटक ; আমি বভ প্রকার স্বর্গ সাধন যজ, দানাদি কদ্ম করিরাছি তজ্জনা স্বর্গে গানন করিয়া পরম স্থথ ভোগ করিব-জীবাঝা এইরূপ অভিলাষ করিরা থাকেন। পরে এ কর্ম ফল স্বর্গ ভোগা হইলে পুনাক্ষয় বশত চন্দ্রনওলে পতিত হয়—অনন্তর চক্রমণ্ডল হইতে নীহার (অর্থাৎ निनित्र) मश्यूक इहेगा वहे भृथी मछल धानानि मना मर्या अविके रत्र । ७९ । ७७ । ७९ । ७७ । २० । २० । অনন্তর ঐ শসা নির্মিত চর্কা, চোষ্য, লেহা, পেয় এই চতুর্বিধ দ্রব্যরূপে পরিণত হইয়া পুরুষ কর্ত্তক ভক্ষিত হইলে রেভ (অর্থাৎ শুক্র) রূপে সমুৎপন্ন ছইরা ঋতু কালে যোনি মধ্যে ক্ষরিত হয়। অনন্তর শোণিত সংযুক্ত ও জরায় বেষ্টিত ছইয়া এক দিনে কলল ছইয়া তৃতীয় দিবলে কাঠিনা প্রাপ্ত হয়। অনন্তর পঞ্চন নিবদে বুৰুদ্বোৰ, সপ্তম দিবদে

পক্ষমাত্রেণ সা পেশী রুধিরেণ পরিপ্লু তা।
তস্যা এবাস্কুরোৎপত্তিঃ পঞ্চবিংশতিরাত্রিয়ু ॥২৪॥
গ্রীবা শিরশ্চ ক্ষন্ধশ্চ পৃষ্ঠবংশস্তথোদরম্।
পঞ্চধাঙ্কানি চৈকৈকং জায়ন্তে মাসতঃ ক্রমাৎ ।২৫
পাণিপাদে তথা পার্ম্মঃ কটির্জানুস্তথৈব চ।
মাসদ্বয়াৎপ্রজায়ন্তে ক্রমেণের ন চান্যথা ॥ ২৬॥
বিভিন্মানৈঃ প্রজায়ন্তে ক্রমেণানং সন্ধায়ঃ ক্রমাৎ।
সর্কাঙ্কুল্যঃ প্রজায়ন্তে ক্রমান্মাসচতুষ্টয়ে ॥ ২৭॥
নালা কর্ণে চ নেত্রেচ জায়ন্তে পঞ্চমাসতঃ।
দত্তংক্তির্নথা গুহুং পঞ্চমে জায়তে তথা ॥ ২৮॥
অর্কাক্ শ্রাসতশ্ভিতং কর্ণয়োর্ভ্রিতি ক্রুটম্।
পায়ুর্মেট্রম্পস্থং চ নাভিশ্চাপি ভবেয়্পাম্। ২০॥
সপ্তমে মাসি রোমাণি শিরঃ কেশাস্তথিব চ।
বিভক্তাবয়বতং চ সর্কাং সম্পদ্যতেইন্টমে।। ৩০॥

জঠরে বর্ষতে গর্ত্তঃ স্ত্রিয়া এবং বিহয়য় !।

পঞ্চয়ে মাদি চৈতনাং জীবঃ প্রাপ্রোতি দর্মণঃ ।

নাভিস্ত্রাপারধেশ মাতৃভুক্তায়দারতঃ ।

বর্ধ তে গর্ভনঃ পিপ্তো ন ভিয়েত ক্ষকর্মভঃ ॥ ৬২ ॥

মুত্রা দর্মানি জন্মানি পূর্বকর্মাণি দর্মণঃ ।

জঠরানলতপ্রোহয়মিদং বচনমত্রবীৎ ॥ ৬৬ ॥

লানাযোনি সহস্রেমু জায়মানোহতবান্ ।

পুত্রদারাদিসমূলং কোটিশঃ পশুবাদ্ধবান্ ॥ ৬৯ ॥

কুতুরভরণাদক্ত্যা ন্যায়ান্যায়ৈর্ধনার্জনম ।

কৃত্রভরণাদক্ত্যা ন্যায়ান্যায়ের্ধনার্জনম ।

কৃতং নাকারবং বিশ্রুচিন্তাং স্বপ্রেইপি দুর্ভগঃ ॥ ৬

ইদানীং তৎকলং ভুপ্তে গর্ভক্তংখং মহতরম্ ।

অশাখনত শাশ্বতবদেহে ভ্রুগ্রামান্তিঃ ॥ ৬৬

অকার্য্যাণেবে কৃত্রবান্ ন কৃতং হিত্রমান্ত্রনঃ ।

ইত্যেবং বছ্রধা দুঃখমনুভুয় স্বকর্মাভঃ ॥ ৬৭ ॥

পঞ্চবিংশতি দিবদে অশ্বুবজ্ব প্রাপ্ত হয়। অনন্তব ত্রিংশদিবদে

ঐ অশ্বুরের প্রাবা, মন্তক, ক্ষরা, পৃষ্ঠ ও উদর এই পাঁচ অগ্রে

সমুংপর হয়। ২:। ২:। ২০। ২৪। ২৫। এবং দ্বিতীয়

মাসে হস্তা, পাদা, পাশা, কোটি ও জাল ক্রমে ক্রমে সমুংপর

হয়, তৃতীর মাসে শরীরের সন্ধি জাল ক্রমে ক্রমে সমুংপর

হয়, তৃতীর মাসে শরীরের সন্ধি জাল ক্রমে ক্রমে সমুংপর

হয়, তৃতীর মাসে শরীরের সন্ধি জাল চতুর্থ মাসে হস্তা ও

পাদের সমস্ত অপুলী—পঞ্চম মাসে নাসিকা, কর্ণ, নেত্র, দন্ত

শ্রেণী, নশা, গুজ্লদেশ ও গর্ভজ্পিও সমুংপর হয়, মন্ত মাসে

কর্ণের বিবর ও পায়ু উপস্থ নাভি—সপ্তম মাসে লোম, মন্তক,

ক্রেশ—অক্রম মাসে সমস্ত অব্যব পৃথক্রপে সম্পান হয়,

হে সম্পাতে! এই প্রকার উদর মধ্যে গর্ভ ক্রমে ক্রমে বর্দ্ধিট

হয়, সপ্তম মাসে চৈতনা প্রাপ্ত হুইরা নাভি স্ত্রে দ্বারা মাতৃভুক্তারের সারাংশ ভোক্তন ক্রতে স্বীর ক্রম্ম ফল ভোগেন

জন্য জীবন ধারণ করে । ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১।
। ৩২। জঠবানল পরিতপ্ত এই জীব পূর্ব্য পূর্ব্য জন্ম বিবংশ
অর্থাং গাভ যাতনাদি ও পূর্ব্যক্ত শুভাশুভ কর্ম মরণ করিয়া
বক্ষামাণ প্রথম্ব কহিল—আমি পাপাত্মা, পশু কীটাদি সহপ্রযোনি জ্রমণ করত গর্ভযাতনা হংখ ও পূজ্জদারাদি সংস্থাজন্য নানাপ্রকার সম্ম অনুভব করিয়াছি এবং পূজ্জদারাদি
ভরণ পোষণে অসমর্থ হইয়া সং ও অসং ক্রমাচরণ করণ
ধনোপাত্মন করিয়াছি কিন্তু সুখ, মোক্ষ দাভা জ্ঞানীখবন্দ সপ্রেও চিন্তা করি নাই, সংপ্রতি ঐ ক্রমন্টল অভিশ্ব হুংখ ভোগ করিতেটি এবং অনিত্য দেছে নিত্যজ্ঞান করিয়া নানা কদা নিদ্ধু যণং যে স্থাদ্ পর্ত্তান্ধিরয় সন্নিভাৎ।

ইত উর্দ্ধং নিত্যমহং বিষ্ণুমেবামুপুল্ল রেও ॥ ৩৮ ॥

ইত্যাদি চিন্তারন্ জীবো যোনিষম্ভপ্রপীজিতঃ।

লারমানোহতিলুঃথেন নরকাৎপাতকী যথা ॥ ৩৯ ॥
পূতিত্রবান্ধিপতিতঃ ক্ষমিরেষ ইবাপারঃ।

ততো বাল্যাদিতঃখানি দর্ফে এবং বিভুপ্ততে ॥৪০॥
তর্মা চৈবান্মভূতানি সর্ফার বিদিতানি চ।

ন বর্ণিতানি মে গুধু! যৌবনাদিষু সর্ফাতঃ ॥ ৪১ ॥
এবং দেহোহহমিত্যমাদভ্যাদান্ধিরয়াদিকম্।
গর্জ্ববাসাদিদুঃখানি ভবন্ত্যভিনিবেশতঃ ॥ ৪২ ॥
ভস্মাদেহদ্রাদন্যমাত্মানং প্রক্তেঃ পরম্।
ভল্মা দেহাদিমমভাং ত্যক্ত্বাত্মজ্ঞানবান্ ভবেৎ॥৪৩
জাগ্রদাদিবিনিভুক্তং সত্যজ্ঞানবান্ ভবেৎ॥৪৩
জাগ্রদাদিবিনিভুক্তং সত্যজ্ঞানবিদ্ধান্ধন্ম।
শুদ্ধং বুদ্ধং তদা শাস্তমাত্মানমবধারয়েই॥ ৪৪ ॥

অর্থাৎ হাগ দানাদি শুভ কর্মমাত্রই ক্বত হয় নাই, এই প্রকার
দীয় কর্মাধীন হইয়া বছধা হুঃপানুভব করত, নরক সদৃশ
গর্ভ হইতে ক্থন নিক্ষত হইয়া প্রতি দিবস জ্ঞাণীশ্বকে
পূজা করিব, এইরপ চিন্তা করত জীবাজ্মা হুর্গক ক্ষত বিনির্গত
ক্রমির ন্যায় গর্ভ ইইতে অতি হুঃখে নিঃস্থত হইয়া বাল্য,
যৌবন ও বাদ্ধক্য সমুংগর হুঃখ উপভোগ করে। হে
সম্পাতে! তুমি যৌবনাদি কালোৎপার বর্ণনাতীত হুঃখ সমূহ
বিশেষ কপে বিদিত আছ, এবং "আমি দেহ" এইরপ
ভভিন্ন জ্ঞান প্রযুক্তই নরক ও গর্ভবাদাদি হঃখ ভোগ
করিতে হয়, অভএব জ্ঞীবাজ্মা দেহ হইতে ভিন্ন নিশ্চয়
করিয়া দেহ ও পুল্লারাদি অনিত্য বিষয়ে মমতা পরিভাগে করত ভবজান লাভ করে। ২০। ২৪। ২৫। ২৬।
। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩। এবং জ্ঞামার দেহ,
ক্যামার পুল্ল কলতাদি এইরপ জ্ঞান রহিত জ্ঞীব জাথ্যত, স্বপ্ন

চিদান্থনি পরিক্ষাতে দৃষ্টে মোহেইজ্ঞসন্তবে।
দেহং পততু বারক্ষকর্মবেগেন ভিন্ততু ॥ ৪৫ ॥
বোগিনো ন হি দুঃখং বা স্থুখং বাজ্ঞানসন্তবম্।
তত্মাদেহেন সহিতো যাবৎপ্রারক্ষণকরং ॥ ৪৬ ॥
ভাবত্তির্চ স্থুখন ছং পৃতক্ষপুক্সর্পবৎ।
অন্যত্মক্যামি ভে পক্ষিন! শুণু মেপরমং হিতম্ ॥ ৪৭
ত্রেতাযুগে দাশর্থিভূ না নার্যার্থাইব্যরং।
রাবণ্যার দশুকানাগ্যিষ্যতি ॥ ৪৮ ॥
দীতয়া ভার্যায়া সার্দ্ধং লক্ষ্মণেন সমন্ত্রিভঃ।
তত্তাশ্রেমে জনকজাং আতৃভ্যাং রহিতে বনে ॥
রাবণদেচারবন্ধীতা লক্ষায়াং স্থাপয়িষ্যতি।
তক্তাঃ স্থাবিনির্দেশাদ্বানরাঃ পরিমার্গণে ॥ ৫০ ॥

ও সুসুপ্তি এই অবস্থাত্তয় রহিত সতা জ্ঞানাদির লক্ষণ—
অর্থাৎ ভ্রমাদি শূন্য, পাপ পুণ্য বিধীন যথার্থ জ্ঞান গোচর ও
বিষয় বাসনা শূন্য বলিয়া আত্মাকে নিশ্চয় করিবে ঐ জ্ঞান
দ্বারা অজ্ঞান জনের নোহ বিনষ্ট হয়। পরে ভোকতা
প্রারন্ধ কর্ম বিদ্যমান থাকিলে ঐ কর্মফল ভোগ করিবার
ক্ষনা জীব দেহের সহিত বিদ্যমান থাকে—ঐ কর্মভুক্ত হইলে
ঐ সময় দেহ ক্ষিত্যাদি পঞ্চতুতে লয় প্রাপ্ত হয়। হে
সম্পাতে! যেহেতু যোগিগণের অজ্ঞান জন্য হঃও ও পুজ্র,
কলত্রাদি দারা সাধারণ স্থাবের অমুভব হয় না, অতএব বাবৎ
কাল প্রারন্ধ কর্ম বিনষ্ট নাহয়, ভাবৎকাল দেহ ধারণ করভ,
যোগ দারা তল্প্রায়ণ হইয়া পরমানন্দে কালাভিবাহিত কর,
হে প্রিকর ! অন্য এক আশ্চর্যা প্রসানন্দ কালাভিবাহিত কর,

ত্তেতাযুগো ভগবান নারায়ণ অযোধ্যাধিপাত রাজা দশরথের পুত্র রূপে আবিভূতি হইয়া সহচারিণী সীতা ও অফজ
লক্ষ্মণের সহিত দণ্ডকারণো আগমন করিবেন—ছুরাআা রাবণ
ক্রে বন মধ্যে শ্রীরাম ও লক্ষ্মণ বিহীন আত্রম হইতে জনক
নন্দিনী সীতাকে চোবের নাায় হবণ করিয়া লক্ষাপুরীতে সংস্থা-

আগিনিষ্যন্তি জনধেন্তীরং তত্ত্র সমাগমঃ।

ত্ত্বা তৈঃ কারণবশান্তবিষ্যতি ন সংশয়ঃ॥ ৫১॥

তদা দীতান্তিতিং তেভাঃ কথয়স্ব যথার্থতঃ।

তদৈব তব পক্ষো দ্বাবুৎপৎক্ষেতে পুনর্ণবৌ॥ ৫২॥

সম্পাতিকবাচ।

বোধরামাস মাং চন্দ্রনামা মুনিকুলেশ্বরঃ।
পশ্যন্ত পক্ষো মে জাতে। ন্তনাবভিকোমলো॥৫৩
স্বন্তি বোহস্ত গমিষ্যামি সীতাং ডক্ষ্যথ নিশ্বরম্।
যতুং কুরুধং দুর্লজ্বাসমুদ্রশু বিলম্ভানে ॥ ৫৪।।

পন করিবে। অনন্তর স্থ্রীবের আদিট হইয়াবানরগণেরা সীতার অংশ্বেগার্থ সমুদ্র তীরে সমাগত হইলে তোমার সহিত সাক্ষাৎ হইবে। তৎকালে জনকনন্দিনী সীতার বাসস্থান বানরগণকে জানাইবা মাত্র তোমার ন্তন পক্ষম্বর সম্পেন্ন হইবে বি৪৪।৪৫। ১৪৮।৪৭।৪৮।৪৯ বি৫।৫১।

সম্পাতি কহিল—মুনিবর চক্রমা আমাকে এইরপ বাক্য কহিয়াছিলেন। হে বানরগণ! তোমরা দেথ ঐ মুনির বাক্যা-রুসারে সম্প্রতি আমার ন্তন, অভি কোমল পক্ষর সমুৎপন্ন হইয়াছে, এক্ষণে ভোমাদিগের মঙ্গল হউক, আমি এম্থান হইতে অন্তর্থিত হইলাম। তোমরা এই ত্লাজ্যা সমুদ্র ষয়াম'মৃতিমাত্ত(তাহপরিমিতং সংসারবারাংনিধিং
তীর্ত্ব গিছতি ছর্জনোহপি
পরমং বিষ্ণোঃ পদং শাশ্বতম।
তব্যৈব স্থিতিকারিণক্রিজগতাং
রামস্থ ভক্তাঃ প্রিয়াঃ
যুয়ং কিং ন সমুদ্রমাত্তরণে
শক্তাঃ কথং ? বানরাঃ!॥ ৫৫॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে কিন্ধিন্ধ্যাকাণ্ডে অফমোহধ্যায়ঃ।

লজ্মনে চেষ্টা করত জলধি সমুত্তীর্ণ হইরা সীতাকে নিশ্চরত্ব দর্শনি করিবে। যে শ্রীরামের নাম স্মরণ করিবা মাত্র সংসার সমুদ্র সমৃতীর্ণ হইরা পাপাত্মাও সনাতন বিজ্পদ লাভ করিরা থাকে, হে বানরগণ। ঐ ত্রিজ্ঞগৎ পাতা শ্রীরামের প্রিয়তম ভক্ত হইরাও কি এই ক্ষুদ্র জলধি অব্তরণে সক্ষ হইবেনা?। ৫০। ৫০। ৫৪। ৫৫।

ইতি জ্রীমনধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে কিন্ধিক্ষ্যাকাণে অফামোহধ্যায়ঃ।

নবমোইধ্যায়ঃ।

গতে বিহায়দ। গৃধুরাজে বানরপুক্ষবাঃ।
হর্ষেণ মহতা বিক্টাঃ দী তাদর্শনলালদাঃ॥ ১॥
উচুঃ দমুদ্রং পশুদ্রো নক্রচক্রভরঙ্করম্।
তরঙ্কাদিভিক্লমন্ধমাকাশমিব দুর্গ্রহম্॥ ২॥
পরস্পরমবোচন্দ্র কথমেনং তরামহে।
উবাচ চাঙ্গদন্তর পূর্বং বানরোত্তমাঃ!॥ ৩॥
ভবন্তোহতান্তবলিনঃ শূরাশ্চ ক্রতবিক্রমাঃ।
কো বাত্র বারিধিং তীর্জা রাজকার্যাং করিষ্যতি?
এতেষাং বানরাণাং দঃ প্রাণদাতা ন দংশয়ঃ।
অতোভিষ্ঠতু মে শীঘ্রং পুরতো যো মহাবলঃ॥ ৫॥
বানরাণাং চ দর্বেষাং রামস্থ্রীবয়েররপি।
দ এব পালকো ভূয়ামাত্র কার্যাণ বিচারণা॥ ৬॥
উত্যুক্তে যুবরাজেন ভূফীং বানরদৈনিকাঃ।
আসম্মোচুঃ কিঞ্চিদপি পরম্পরবিলোকিনঃ। ৭॥

পক্ষিরাজ সম্পাতি বিমান মার্গে গমন করিলে সীতা-দর্শনিনা বানরগণ ছফ চিত্ত ছইল এবং নজাদি নানা জলচরাকীর্ণ ভয়ানক ও আকাশের ন্যায় অপার হুল জ্ব্য সমুজ্র দর্শনি করিয়া বানরগণ পরস্পার কছিল—আময়া কি প্রকারে এই হুল জ্ব্য মহাসমুদ্র সমুত্তীর্ণ হইব। যুবরাজ অঞ্চদ কহিলেন, হে বানরগণ! শ্রবণ কর—মহাবল পরাক্রম ভোমাদিগোর মধ্যে কোন বীর সমুদ্র লজ্বন করিয়া সীতা-দর্শনরূপ রাজ্ব কার্যা সম্পাদন করিতে সক্ষম ছইবে? অভএব যে বীর আমার সম্মুণে শীজ্র উপন্থিত হইবে, সেই এই সমস্ত বানরক্ষিণার নিশ্চয় প্রাণ রক্ষা করিবে, এবং প্রাণ প্রিয়ভ্যা

व्यक्त देवाह।

উচ্চতাং বৈ বলং সর্ক্রেঃ প্রত্যেকং কার্যাসদ্ধরে।
কেন বা সাধ্যতে কার্যাং জানীমস্তদনন্তরম্॥ ৮॥
অঙ্গদন্য বচঃ শ্রুত্বা প্রোচুর্বীরা বলং পৃথক্।
যোজনানাং দশারত্য দশোন্তরগুণং জঞ্জঃ॥ ৫॥
শতাদর্ক্রাগ্জাম্বাংস্ত প্রাহ মধ্যে বনৌকদাম্।
পুরা ত্রিক্রিমে দেবে পাদং ভূমানলক্ষণম্॥ ১০॥
ত্রিঃসপ্তক্রত্যেহহমগাং প্রদক্ষিণবিধানতঃ।
ইদানীং বাধ কগ্রস্তো ন শক্রোমি বিলঞ্জ্যিভূম্॥ ১১

জানকীর বিরহানল-পরিতপ্ত-হৃদয় **জারামের** ও তৎসং।
স্থাবির প্রাণ রক্ষক হইবে। বানরগণ মুবরাজ অঙ্গদের
এই বাক্য প্রবণ করিয়া পরস্পর মুখাবলোকন করত বাক্য
শ্ন্য হইয়া উপবিষ্ট হইল।১।২।৩।৪।৫।৬।৭।

বানরগণকে বাক্য রহিত দর্শন করিয়া অক্ষদ পুনর্বার কহিলেন—হে বানরগণ। একণে তোমাদিগের মধ্যে কোন বীরের কতিপর যোজন উল্লভ্যনে দামর্থ্য তাহা প্রকাশ কর। কপিগণ স্বরাজ অঙ্গদের এই বাক্য প্রবণ করিয়া প্রত্যেক বানর স্বাস্থ্য প্রকাশ করত কেহ দশ যোজন, কেছ বিংশতি যোজন, কেছ বিংশত যোজন কেছে বিংশত যোজন, কেছ বিংশত যোজন করেম দশ যোজনাধিক লক্ষনে দামর্থ্য প্রকাশ করত নবতি যোজন পর্যান্ত লক্ষ্যনে দামর্থ্য প্রকাশ করত নবতি যোজন পর্যান্ত লক্ষ্যনে দামর্থ্য প্রকাশ করেল, তমধ্যে মহাবল পরাক্রান্ত জাম্বুবান্ ক্ছিল—হে জঙ্গদ পূর্বকালে দৈত্যরাজ বলিকে ছল করিবার জ্বন্য জগ্রান্ প্রকালে দৈত্যরাজ বলিকে ছল করিবার জ্বন্য জগ্রান্ প্রকালে প্রথবী পরিমিত চরণ বিস্তৃত করিয়াছিলেন, ক্রেমার আমি পৃথিবীকে একবিংশতি বার প্রদক্ষিণ করত

चक्र (मार्थ) ह (मार्थ क्षेत्र क्षेत्र भावः भावः भावः ।
भूनर्ल ७, घनमामर्थाः न कानामान्ति वा नवा ॥ ১२ ॥
उमार काश्ववाश्वीतस्यः ताका (ना नियामकः ।
न मूक्यः द्वाः निर्धाकुः (मदः ममर्थाशिव यद्धानि
चक्रम हेवाः ।

এবং চেৎপুর্বাৎ দর্ম্মে স্থপ্দ্যামো দন্ত বিষ্টরে।
কেনাপি ন কুতং কার্যাং জীবিজুং চ ন শকাতে।
তমাহ জাম্বাম্বীরো দর্শরিষ্যামি তে স্কৃত !।
যেনাস্মাকং কার্যাসিদ্ধিভবিষ্যত্যচিরেন চ।। ১৫॥
ইত্যুক্ত্বা জাম্বান্ প্রাহ হন্মন্তম্বস্থিতম্।
হন্মন্! কিং রহস্তৃকীং স্থীয়তে কার্যাগোরবে॥১৬

প্রণাম করিয়াছিলাম, সম্প্রতি বার্দ্ধর সময় বলিয়া শত যোজন
সমুদ্র লভ্যন করিতেও সামর্থ্য হয় না। পরে যুবরাজ্ব অঙ্গদ
করং কছিলেন আমি এই সমুদ্র উল্লভ্যন করিতে সমর্থ বটে
কিন্তু প্রতিলভ্যন করিতে সমর্থ কি না ভাষা নিশ্চয় কহিছে
পারি না। অনন্তর জাস্থুবান্ অঙ্গদকে কছিল—হে যুবরার্জ!
আগনি আমাদিগের নিয়োগ কর্ত্তা রাজা, আপনি যদ্যপি এই
সমুদ্র লভ্যনে সমর্থ হন ভগাপি আপনাকে নিয়োগ করা
যুক্তিসিদ্ধ নছে।৮।৯।১০।১১।১২।১১।

মহাবল পরাক্রমশালী বানরগাণ বারিধি লজ্মনে অসমর্থ ইটলে যুবরাজ অঙ্গদ হু:থিতান্ত:করণে কহিলেন, হে বানরগাণ! সম্প্রতি আমরা সমস্ত মিলিত হইরা দর্ভবিষ্টরে প্রায়োপবেশন করত: নিশ্চই জ্ঞাবন পরিত্যাগ করিব। অনন্তর জামুবান যুবরাজকে নানা প্রকার আখাস বাক্য প্রদান করিয়া কহিল, হে বৎস! অচির কাল মধ্যে এই সমুদ্র উল্লেখ্যন দক্ষ বীরবর ভোমার সন্থে উপদ্মিত হইবে এই মাত্র বলিয়া হন্মানকে কহিল—হে মহাবল! তুমি বান্ধু তনয় বান্ধু তুল্য পরাক্রম-শালী এবং রাম কার্য্য সম্পাদ্নার্থই ক্লন্ম প্রেছণ কবিলাছ, প্রান্তেইক্তেনের সামর্থাং দর্শরাদ্য মহাবল !
 বং সাক্ষাদ্বায়ুতনরো বায়ুতুলাপরাক্রমঃ ।। ১৭ ॥
 রামকার্য্যর্থমের ত্বং জনিতোইসি মহাত্মনা।
 জাতমাত্রেণ তে পূর্বাং দৃষ্টোস্ত স্থং বিভাবসুম্।১৮
 পকং ফলং জিম্কামীত্যুৎপ্লুতং বালচেইরা।
 যোজনানাং পঞ্চশতং পতিতোইসি ততো ভূবি॥১৯
 অভস্তমাহাত্মাং কো বা শক্রোভি বর্ণিভূম্।
 উত্তির্চ কুরু রামস্ত কার্যাং নঃ পাহি স্তৃত্রতঃ ॥ ২০ ॥
 শত্যা জান্বতো বাক্যং হন্তুমানভিহ্বিতঃ।
 চকার নাদং সিংহ্ন্য ব্রহ্মাণ্ডং কোটয়ন্নির ॥ ২১ ॥
 বভূব পর্বতাকার স্ত্রিবিক্রম ইবাপরঃ।
 লঙ্ ঘ্রিত্বা জলনিধিং কুতা লঙ্কাং চ ভ্রম্মাণ ॥ ২২

হে হয়মান্! তুমি জন্ম গ্রহণ করিবামাত্র বালসভাব বশত তামজনাশক সহস্রাহশুকে পক কল বলিয়া গ্রহণ করিছে অভিলাব করিয়া পাঞ্চশত যোজন উল্লেখ্যন করঙঃ পৃথিবীতে পতিত হইসা ছিলে অতএব কোন ব্যক্তি ভোমার বল মাহান্ম্য বর্ণন করিতে সক্ষম হয়? হে স্ক্রত! তুমি গাত্রোম্থান কর এবং সমুদ্র লঙ্ঘন রূপ রাম কার্য্য সম্পাদন করিয়া আমানিদ্যকে রক্ষা কর। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। পবন নন্দন হন্মান মুদ্রিবর জাত্মবানের কাক্য শ্রবণ করিয়া বার পর নাই আনন্দিত হইলে ব্রহ্মাণ্ড সন্তেদক লিংহনাদের নাগ্য ঘোরতর চীৎকার করিয়া উঠিল, অনন্তর বামন রূপী বিষ্ণুর নাায় পর্যবিভাকার পর্যিগ্রহ পূর্বক কহিল এই চল্লি ডা মহানিধি অবলীলাক্রেমে উল্লেখ্য পূর্বকে রাবণের লক্ষাপুরী ভ্রমিভূতা করিব; অভঃপর থে হ্রাত্মাকে স্বংশে বিনাশ কবিয়া জনক ছহিছা বাম দল্লিভাকে আনম্বন ক্রিব।

বাবণং সকুলং ইড়ানেষো জনকনন্দিনীম।

দ্বিদ্যা বন্ধু গলে রজা রাবণং বামপানিনা ॥ ২৩ ॥

লক্ষাং সপর্বভাং ধৃড়া রামদাত্রে কিনামাইম।

ঘলা দৃষ্টে ব যাস্যামি জানকীং শুভলক্ষনাম॥ ২৪ ॥

প্রান্ত ইন্থুমতো বাক্যং জাম্বানিদমন্ত্রীৎ।

দৃষ্টে বাগচ্ছ ভদ্রং তে জীবন্তীং জানকীং শুভাম্।

পশ্চাদ্রামেণ সহিতো দর্শয়িষ্যদি পৌরুষ্ম্।

কল্যাণং ভ্রতান্ত প্রামন্ত্রি বিহায়সা॥ ২৬ ॥

গচ্চন্তং রামকার্যার্থং বায়স্ত্রামনুগচ্ছতু।

ইত্যাশীর্ভিঃ সমাসন্ত্রা বিসৃষ্ট: প্লবগণধিপৈঃ ॥২৭॥
মহেন্দ্রাদ্রিশিরো গড়া বভূবাদু তদর্শনঃ ॥ ২৮॥
মহানগেন্দ্রপ্রতিমো মহাত্রা

স্থবর্ণবর্ণোইরুণচারুবক্তঃ।
 মহাফণীক্রাভস্থনীর্ঘবাছ র্বোতাত্মকোইদৃশ্যত সর্বাভূতৈঃ॥ ২৯॥

ইতি ঐমদধ্যাত্মবাষায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
কিন্ধিদ্যাকাণ্ডে নবমোহধ্যায়ঃ।

করিয়া জনকনন্দিনী সীতাকে আনম্বন করিব অথবা রাবণের গলদেশে রজ্ বন্ধন করিয়া বাম হস্তে লক্ষাপুরী ধারণ কবত শ্রীবাম সমীপে নিক্ষেপ করিব, অথবা শুভলক্ষণা জগলাতা সীভাকে দশন করিয়া প্রভাগমন করিব শুন্তি হবাকা প্রবণ করিয়া কছিল, হে হন্মন! রাম-প্রিয়তমা দীভাকে দশন করিয়াই প্রভাগমন কর—ভোমাব মঙ্গল হউক; পবে শ্রীরামের সহিত মিলিত হইয়া বল প্রাক্রমজানাইবে এবং রাম কর্মির সম্পাদনার্থ ক্ষকাশ প্রেগমন সময়ে অতুল

বলশালী প্রন ভোষার অন্থামী ছইয়া সমুদ্র উল্লেড্যনে সাহায়। করম, আমি এই আশিব্যাদ করি। অনস্তর প্রন তনম মহেল্রু প্রতির উপরি ভাগে গমন করিয়া আরক্তিম ব্রন, ভুক্তদ্ দদৃশ বাহু যুগল ও প্রভিত প্রায় শরীর ধারণ করত স্ক্রিয়াধা রুগে অন্ত রূপ প্রদশন করাইল।২৫০২৬০ ২৭ ১৮০ ২৯ ০

> ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামছেশ্বরসহাদে কিন্দিন্যাকাণ্ডে নবমোহ্ধায়ঃ।

ইভি এমদধ্যতাুরামারণে কিন্ধিষ্যাকাওঃ দমাপ্তঃ।

युन्द ज्ञां को ७ म्।

প্রথমোহধারঃ।

बियहारिय डेवाह।

শতবোজনবিন্তীর্ণং সমুদ্রং মকরালয়ম্।
লিলস্ক্যয়িধুরানন্দসন্দোহো মারুতাত্মজঃ॥১॥
ধারা রাম পরাত্মানমিদং বচনমত্রবীৎ।
পশুন্ত বানরাঃ দর্বে গচ্ছন্তং মাং বিহায়সা॥২॥
অমোঘং রামনিমুক্তং মহাবাণমিবাধিলাঃ।
পশ্যাম্যস্তৈব রামশ্র পত্নীং জনকনন্দিনীম্॥৩॥
কতার্বোহহং কুতার্বোহহং পুনঃ পশ্যামি রাঘবম্।
প্রাণপ্রযাণসময়ে যক্ত নাম সক্ত স্মরন্॥৪॥
নরস্তীত্বি ভবান্ডোধিমপারং যাতি তৎপদম্।
কিং পুনস্কু দুতোংহং তদক্ষাক্রনিমুদ্রিকঃ।। ৫॥

মহাদেব পার্কতীকে কহিলেন—শৃত্যোজন বিস্তীন ভলধি
সমুল্লগুবনে অভিলাষ করিয়া পবন তনর প্রমায়া শ্রীরামকে
চিন্তা করত বক্ষামাণ প্রবন্ধ কহিল—হে বানরগণ! আমি
অব্যর্প জীরাম বাণ শ্বরূপ আকাশ পথগামী ছইরাছি অবলোকন কর, আমি অদ্যই জনক নন্দিনী সীতাকে দর্শন
করিয়া পুনর্কার পতিতপাবন শ্রীরামচল্রকে দর্শন পূর্বক জীবনকে
ধন্যবাদ প্রদাম করিন, যে রামের নাম একবার মাত্র শ্বরণ
করিলে প্রাণ প্রয়াণ সময়ে পাপাত্মাও অপার ভব্যমুদ্র
সমুতীর্ণ ছইয়া তৎপাদপত্ম পরিপ্রাপ্ত হয়—সেই ভগবান্
চল্লের করাছুরীয়ক যুক্ত ও দাদ তৎপাদপত্ম শ্বরণ করিয়া এই

তমেব হৃদরে ধ্যাতা লক্ষ্যাম্য শ্বারিধিম্।

ইত্যুক্ত্বা হৃদ্ধান্ বাহ্ প্রসার্যায় তবালধিঃ ॥ ৬॥

ঋজুপ্রীবোর্ছ দৃষ্টিঃ সন্ধাকুঞ্চিত পদন্তঃ।

দক্ষিণাভিমুখস্তৃণং পুপ্লুবেহনিলবিক্রমঃ ॥ ৭॥

আকাশাল্বপিতং দেবৈবীক্ষামাণো জগাম সঃ!

দৃষ্ট্বাহনিলম্বতং দেবা গচ্ছস্তং বায়ুবেগতঃ ॥ ৮॥

পরীক্ষণার্থং সল্প্রস্থা বানরে বায়ুবিক্রমঃ ॥ ৯॥

পরীক্ষণার্থং সল্প্রস্থা বানরো বায়ুবিক্রমঃ ॥ ৯॥

লক্ষাং প্রবেষ্টুং শক্ষো বা ন বা জানীমহে বলম।

এবং বিচার্যং নাগানাং মাতরং মুরুসাভিধাম্॥ ১০॥

অব্রবীদ্বেবতার্কঃ কৌতুহলসমন্থিতঃ।
গচ্ছ ত্বং বানরেক্রস্য কিঞ্ছিদ্বং স্মাচর ॥ ১১ ॥

কিঞ্চিৎকর বারিধি উল্লঙ্খনে কি অসমর্থ হইবে ? অনীল বিক্রম প্রবন তনর এই বাকা বলিরা প্রাসারিত বাহ যুগল, স্থাই লাস্ক উদ্ধিদেশে সঞ্চালন পূর্বক উদ্ধি দৃষ্টে ও আকুঞ্চিত পাদ যুগলে দক্ষিনাভিমুখী হইরা উল্লক্ষন করিল। ১।২।৩।৪।।৫।৬।৭। অনস্তর মহাবল পরাক্রম বায়ু তনরকে আকাশ প্রে বায়ুবেগে গমন করিতে অবলোকন করিরা, দেবগণ নাগমাত। স্বসাকে কহিলেন—এ নিবিড় মেদ সদৃশ বানর প্রাচিব বেক্টিডা ও সহত্র সহত্র বীরগণ পরিরক্ষিতা লঙ্কা।পুরী প্রবেশ করিতে সমর্থ হয় কি না, তাহা প্রীক্ষা করিবার

ক্রাত্বা ভরা বলং বৃদ্ধিং পুনরেহি ত্রাম্বিতা।

ইত্যুক্তা লা যযৌ শীন্তং হসুমন্বিত্বরণাৎ ॥ ১২ ॥

আরত্য মার্গং পুরক্তং স্থিতা বানরমন্তরীৎ।

এহি মে বদনং শীন্তং প্রবিশ্ব মহামতে। ॥১৩॥

দেবৈন্তং কম্পিতো ভক্ষং ক্রুধানম্পীভিতাত্বনঃ।

তাম'হ হসুমান্ব্যাভরহং রামদ্য শাসনাৎ ॥ ১৪ ॥

গচ্ছামি জানকীং দ্রেষ্টুং পুনরাগম্য সত্তরঃ।

রামায় কুশলং ভস্যাঃ কথ্যিত্বা তৃদাননম ॥ ১৫ ॥

নিবেক্ষ্যে দেহি মে মার্গং স্বর্গাইয়ে নমোহস্ত তে।

ইত্যুক্তা পুনরেবাহ স্বর্গা ক্রুধিতাম্মাহম্ ॥ ১৬ ॥

প্রবিশ্য গচ্ছ মে বক্তং নোচেন্ত্রাং ভক্ষয়াম হেম্।

উত্যুক্তো হনুমানাহ মুখং শীঘুং বিদারয় ॥ ১৭ ॥

প্রবিশ্ব বদনং তেইন্ত পচ্ছামি ত্বরাক্তিঃ।

ইত্যুক্তা বোজনারামদেহো ভূতা পুরস্থিতঃ। ১৮॥

দৃষ্টা ইন্থুমতো রূপং স্থুরসা পঞ্চবোজনম্।

মুখং, চকার ইন্থুমান্ ত্বিগুণং রূপমাদখং॥ ১৯॥

তহশ্চকার স্থুরসা বোজনানাং চ বিংশতিম্।

বক্তাং চকার ইন্থুমাংক্তিংশদ্যোজনসন্মিতম্।। ২০।

ততশ্চকার স্থুরসা পঞ্চাশদ্যোজনারতম।

বক্তাং তদা ইন্থুমাংস্ত বভূবাঞ্চ্চদিরিক্তঃ।। ২১॥

প্রবিশ্ব বদনং ত্রমাং পুনরেত্য পুরস্থিতঃ।

প্রবিশ্বে নির্গতোইইং তে বদনং দেবি। তে নমঃ।।

এবং বদন্তং দৃষ্টা সা ইন্থুমন্তম্বাহরবীং।

গ্রন্থ বামর রামন্য কার্যাং বুদ্ধিমতান্বর।। ২০।

জ্বনা ভূমি কিঞ্চিরিয় স্মাচরণ কর 🕟 ৮ 🕆 ৯ 1 ১০ । ১১ । ঔ বানবের বল বুদ্ধি ও পরাক্রম জ্ঞাত হইয়া অবিলম্বে পুনরাগমন করিবে ; স্থরদা দেব বাক্য শ্রবণ করিয়া মাক্তির আকাশ পথ সংক্রম করত অবস্থান করিয়। হন্মানকে কহিল—হে মহামভে ! আমার বিস্তীর্ণ মূখ বিবরে শীত্র প্রবেশ কর, দেবগণ ভোমাকে কুধা পীডিত জনের ভক্ষ দ্রব্য বলিয়া করনা করিয়াছেন। মাকৃতি স্বসার এই বাকা শ্রবণ করিয়া কছিল—হে মাডঃ ! আমি क्रां भिला अद्भारमद अपनिष्ठे दहेश जानकी जन्मर्गनार्थ शमन করিতেছি, সত্তর প্রভাগেমন করত দাশরথিকে জানকীর মঙ্গল বার্দ্তা **অবগত ক**রাইয়া তোমার মুথ বিৰয়ে প্রবেশ করিব; সম্রতি **স্বামার পথ সম্বর**ণ নি**শ্ব ক্ত ককন,জাপনা**কে প্রণাম করি। মাক্তির এই বাকা শ্রবণ করিয়া পুনর্বার স্করনা কহিল --ছে হনুমন্! আমি: অভাত কুষাণীডিভা—নামার মুথ মধ্যে প্রবেশ করিয়া লম্বাপুরী গমম কর, তাম। না করিলে নিশ্চর ভোমাকে **७६० क्रिया जामाद क्यानम निर्मालन क्रिया ३२ १ ५७ ।** 38 1361361391

বীরবর সুরসাব এই বাকা শ্রণ করিয়া কহিল—ছে স্বসে! আপনি মুথ প্রসারণ করন আমি সত্তর মুথ প্রবেশ করিয়া লক্ষাপুরী গমন করিব। অনস্তর সুরসা কপিবরের শরীর পরিমাণ দর্শন করিয়া পঞ্চ বোজন পরিমাণ মুথ প্রসারণ করিলেন, বীরবর হন্মান্ও তদর্শনে দশ যোজম বিস্তীণ শরীর ধারণ করিল, স্বসা বিংশতি যোজন মুখ বিস্তার করিলে মহাবীর পাবন কুমার ত্রিংশ যোজন পরিমিত শরীর ধারণ করিল। অনস্তর সুরসা পঞ্চ বোজন মুথ বিস্তীণ করিলে কুশাত্রিক বৃদ্ধি স্চতুর পাবন তনয় হন্মান অলু ও পারিমিত স্কা দেহ ধারণ করত সুরসার অনির্কাচনীয় মুথ বিবরে প্রবেশ পূর্বক পুনর্বার নির্গত ও স্বরসার সন্মুথে উপন্থিত হইয়া প্রণাম করিল। অনস্তর স্বরসা কপিবরের বল ও চতুরতা অবগতে হইয়া সহর্বে কহিলেম—ছে স্বর্গজা! তৃমি সত্ত্ব গমন করিয়া অচির কালেই রাম কার্যা সম্পাদন কর। ছে

লেবৈঃ সম্প্রেষিতাহং তে বলং জিজ্ঞামুভিঃ কপে। নানামণিমরেঃ শ্রেকঃস্তমেশপরি নরাকুতিঃ। দৃষ্টা সীভাং পুনর্গহা রামং দ্রক্ষ্যাদ গচ্চ ভো ! ॥ প্রাহ যান্তং হন্তুমন্তং মৈনাকোহহং মহাকপে ! ॥ . ইত্যক্ত্য সা যথে দেবলোকং বায়ুস্তঃ পুনঃ। জগাম বাধুমার্গেণ গরুক্মানিব পক্ষিরাট্।। ২৫।। সমুদ্রে হপ্যাহ মৈনাকং মনিক ঞ্চনপর্বতিম। গচ্ছতোৰ মহাসত্ত্বো হতুমামুক্তাত্মাজঃ। ২৬॥ বামস্য কার্য্যলিষ্কার্থং তস্য স্থং সচিবে। ভব। मगरेद्रव्यदि তো यसार भूतारः मागरतार्ज्यम ॥२ १ তস্যান্বয়ে বভূবাদৌ রামো দাশরথিঃ প্রভুঃ। ত্য্য কার্য্যানুসদ্ধ্যর্থং গচ্ছত্যেষ মহাক্রপিঃ॥ ১৮ ত্বমুত্তিষ্ঠ জলাত্ত গ্ং ত্বয়ি বিশ্রাম্য গচ্ছতু। म তথেতি প্রাদূরভূজনমধ্যানাহোনতঃ।। ২৫।।

সনুদ্রেণ সমাদিষ্টস্তৃদ্বিশ্রামার মারুতে ! i আগচ্ছামৃতকণ্পানি ক্ষমা প্ৰকল্যানি যে।। ৬১॥ বিশ্রাম্যাত্র কণং পশ্চাদ্ গমিষ্য সি যথাসুখম । এবমুক্তোহথ তং প্রাহ ইন্থুমান্মারুতাত্যুদ্ধঃ।। ৩১॥ গচ্ছতো রামক গ্রাধিং ভক্ষণং মে কথং ভবেৎ १। विद्यारमा वा कथः (म महामः? शंखवहः ज्ञित्रः महा॥ ইত্যুক্তা স্পৃষ্টশিখরঃ করাগ্রেণ যথে। কপিঃ। কিঞ্চিদুরং গতস্যাস্য ছায়াং ছায়াগ্রহোইগ্রহীৎ ॥ সিংহিকা নাম সা ঘোরা জলমধো স্থিতা সদা। আকাশগামিনাং ছায়ামাক্রম্যাকুষ্য ভক্ষয়েৎ ॥৩৫

্প্রেরিভা ছইয়া জাগমন করিয়াছি, ভোমার বিশাচরণ করিবার জন্য স্থাপত। হই নাই। তুমি জগন্মতা সীভাকে দৰ্শন করিয়া প্রত্যাগমন করত জ্ञীরামকে দর্শন করিবে । ১৮। .৯। २०।২১। २२! २७। २৪। সুরস্থিট বাকা বলিয়া (नवरलारक शंभन कदिराजन, जनखर महाराल मुलान हन्मान् প্রস্পতি গরুড়ের ন্যায় আকাশ প্রে গ্রন করিল। পরে প্রিমধ্যে আকাশ প্রথামী মাক্তিকে দর্শন করিয়া সরিৎ-পতি মণি কাঞ্চনময় মৈনশকের প্রতি কহিলেন—ছে গিরিবর ্মনাক! সগর বংশা সমুৎপান রঘুপতির কার্য্য সিদ্ধার্থ বায়ু ভনম লক্ষাপুরী গমন কবিতেছেন, আমিও ঐ সগর রাজ কর্তৃক বর্জিত ইইরাছি । ২৫ । ২৬ । ২৭ । অতএব তুমি অতি সহর মহাসত্ত্ব মাক্তির বিভাষার্থ সমুখিত হও, মাক্তি ভোমার উপরিভাগে বিশান পূর্বক গমন করুন। গিরিবর জলপির অপুত্রা বছন করত জলমধা হইতে নানা ুমণিময়শৃঙ্গ সংশো-

ক্ষপিবর ! ভোমার বল বীর্যা পরীক্ষার্থ আমি দেবগণ কর্ক্ক ভিড সমুথিত হইয়া ঐ পর্ব্বভের উপরিভাগে নর রূপ ধরেণ পূর্ব্বক আকাশ পথে জ্রভগামী মাঞ্চিকে কহিল, ছে কপিবর 🖰 আমি মৈনাক জলধি কৰ্ডক উপদিষ্ট হুইয়া তোমাৰ বিশ্ৰামাথ জলু হইতে উত্থিত হইয়াছি, তুমি এস্থানে আবামন কৰিয়া অমৃত ময় ফল মূলাদি ভোজন করত কিঞ্চিৎ কাল বিশ্রাম कदिया यथा भूरथ धमन कदा वाबू उनस रेमनारकद वहे जल বাক্য প্রবণ করিয়া কহিল--হে গিরিবর! আমি বাম কাষ্য সম্পাদনার্থ আগত হইয়াছি, ক্লতকার্যা না হইয়া জামার ভক্ষণ ও বিশাম কোন প্রকার উপযুক্ত নছে; এই বলিয়া গিরি-বরের সন্মান রক্ষার্থ হস্ত ছারা মৈনাক ম্পর্শ করত মাক্তি গমন করিল। অনন্তর কিয়দ্র গমন করিলে জলধি নিবা-দিনী সিংছিকা রাক্ষদী আকাশগামী মাঞ্জিব ছায়া আক্ষণ क्रबंड 'डक्करन देशा<mark>ंडा' इहेल</mark> ।२৮।२৯।०० !७১ | ७२ | ७० !७८। অনন্তর মহাবল হতুমাৰ ঐ সিংছিকা কর্ত্তক আকর্ষিত হইয়া সবিশ্ববে মনে মনে এই চিন্তা করিতে লাগিল যে, কোন বিস্ব

তরা গৃহীতো হন্মাংশিচন্তরামাদ বীর্য্যান্।

কেনেদং মে ক্তং বেগরোধনং বিল্লকারিণা।। ৬৬

দশ্যতে নৈব কোহপ্যত্র বিশ্বরো মে প্রজারতে।

এবং বিচিন্ত্য হন্মানধোদৃষ্টিং প্রদারয়ৎ।। ৬৭।।

তত্র দৃষ্ট্য মহাকারাং দিংহিকাং ঘোরন্ধিণীম্।

পপাত সলিলে ভূর্ণং পদ্যামেবাহনক্রনা। ৬৮।।

পুনকংপ্লুত্য হন্মান্ দক্ষিণাভিমুখে। যথে।

তত্যে দক্ষিণমাদাদ্য কুলং নানাকলক্রমম্।। ৬৯॥

নানাপক্ষিম্গাকীর্ণং নানাপুশ্পলতারতম্।

ততো দদর্শ নগরং ত্রিক্টাচলমূর্দ্ধনি।। ৪০।।

প্রাকারের্ব্রন্থভির্ম্বরুং পরিখাভিশ্ব সর্বতঃ।

প্রবেক্ষ্যামি কথং লক্ষাং? ইতি চিন্তাপ্রোহ্তবৎ

কারী গমন পথ স্যুক্তন্ধ করিল, কই এখানেত কাহাকেও অব-লোকন করিতে হি না! অনস্তর অধোভাগে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া দেখিল পর্বতাকার সদৃশী—ঘোর রূপিণী সিংহিকা নামী এক রাক্ষণী ভাছার গতি রোধ করিয়াছে, অতঃপর ত্বরিত পদে সাগর সলিল মধ্যে পতিত হইয়া মহাবীঘা হন্মান্ দৃত পদাঘাতে ঐ রাক্ষণীকে শমন ভবনে প্রেরণ করিল। পরে হস্মান সমুদ্র পারে উত্তীর্ণ হইয়া বিবিধ ত্মপক কল-ভারাবনত পাদপ ও নানা বিহলম সমাকীর্ণ ও শ্বেত্র পাঁত লোহিতাদি বর্ণ বিশোভিত লকাগুল্মাদি পরিবেন্টিত তীর সম্প্রাপ্ত ইইয়া জিক্ট পর্বত-শৃক্ষোপরি একটা নগরী সন্দর্শন করিল এবং বছবিধ ত্ম্বর্গ ও পারিথা সমাযুক্তা লক্ষাপুরী মধ্যে কি প্রকারে প্রবেশ করিব—এই রূপ চিন্তা করণানম্ভর হির করিল যে, স্ক্রম শরীর পরিগ্রেছ করিয়া রাবণ পালিত লক্ষা মধ্যে রক্ষনী যোগে প্রবেশ করিব এই রূপ স্থির

রাত্রৌ বেক্ষ্যামি স্ক্রেমাইছং লক্ষাং রাবণপালিতাম
এবং বিচিন্ত্য তত্ত্বৈব স্থিত্বা লক্ষাং জগাম সঃ ॥৪২॥
ধৃত্বা স্ক্রেমাং বপুর্দ্বারং প্রবিবেশ প্রতাপবান্।
তত্ত্ব,লক্ষাপুরীং সাক্ষাদ্রাক্ষনীবেশধারিনী ॥ ৪৩॥
প্রবিশন্তং হন্দ্রান্তং দৃত্যু লক্ষা ব্যতর্জয়ৎ।
কন্তং বানরক্রপেণ মামনাদৃত্য লক্ষিনীম্॥ ৪৪॥
প্রবিশ্ব চোরবদ্রাত্রো কিং ভবান কর্জু মিচ্ছতি ?
ইত্যুক্তা রোষতান্ত্রাক্ষী পাদেনাভিজ্যান তম্॥৪৫
হন্দ্রানপি তাং বামম্তিনাবজ্ঞয়াহনং।
তদৈব পত্তিতা ভূমৌ রক্তম্দ্রমতী ভূশম্॥ ৪৬॥
উপ্রায় প্রাহ্ব দা লক্ষা হন্ত্রমন্তং মহাবল্লম্।
হন্দ্রন্থ গচ্ছ ভদ্রং তে জিতা লক্ষা ত্রান্ত্র ॥৪৭॥
পুরাহং ব্রহ্মণা প্রোক্তা হ্যন্তাবিংশতিপর্যয়ে।
তেতারুগে দাশর্থী রামো নারায়ণোহ্ব্রঃ ॥৪৮॥

করিয়া প্রভাপশালী অনিল তনর রহদাকার আকুঞ্চিত করণানন্তর লক্ষার দারে প্রবেশ করিল। সেই লক্ষাপুরী সাক্ষাৎ রাক্ষনী বেশ ধারিণী—তথার হন্মানকে প্রবেশ করিতে অবলোকন করিয়া লক্ষেণী নামী রাক্ষনী ভাহাকে কহিল, তুমি বানররূপ ধারণ করিয়া আমাকে অবমাননা করত চোরের ন্যায় রজনী যোগে এখানে আদিয়াচ—এই বলিয়া রোঘবশা লক্ষেণী হন্মানকে দৃঢ্ভর পদাঘাত করিল। অনভর হন্মানও ঐ লক্ষেণীর বক্ষঃ প্রদেশে নাম হন্ত হারা মুষ্টাাঘাৎ করিল, ব্যথিত হন্মান লক্ষেণী ক্ষির বমন করিতে করিতে ভূতলে পভিতা হইল। ৪২। ৮৩। ৮৮। ৪৫। ৮৬। জনভর লক্ষেণী সমুথিতা হইয়া মহাবল নাকভিকে কহিল—তে হন্মান্! তোমার মঙ্গল হুটক তুলি লক্ষাপুণী জয় করিতে স্মর্থ হুটবে গমন কর। ৪৭।

পূর্বকালে জগৎ ক্ষ্টা একা আমাকে কহিয়া ছিলেন, স্নাতন নাগায়ণ পৃথিবীর ভাষানোল্যের জন্য আমা কুষ্ঠ জনিষ্যতে যোগমায়া সীতা জনকবেশ্মনি।
ভূতারহরণার্থায় প্রার্থিতোহয়ং ময়া কচিৎ ॥৪৯॥
সভার্যো রাঘবো জাত্রা গমিষ্যতি মহাবনম্।
তত্র সীতাং মহামায়াং রাবণোহপহরিষ্যতি ॥৫০॥
পশ্চাদ্রামেণ সাচিব্যং স্কুত্রীবস্য ভবিষ্যতি।
স্ক্রীবো জানকীং দ্রষ্টুং বানরান্ প্রেষ্য়িষ্যতি॥৫১
তত্রৈকো বানরো রাত্রাবাগমিষ্যতি তেইজিকম
ডয়া চ ভৎ নিভঃ সোহপি ডাং হনিষ্যতি মু্ফিনা॥
তেনাহতা ডং ব্যথিতা ভবিষ্যতি ন সংশ্রঃ ॥ ৫৩॥
তথ্যাজ্বয়া জিতা লক্ষা জিতং সর্ব্যং ড্রান্য!।
রাবণ্ডঃপুরবরে ক্রীড়াকাননমূত্রমম্॥ ৫৪॥
তথ্যধোহশোক্বনিকা দিব্যপাদপ্রস্কুলা।

জন্তি তস্যাৎ মহাব্লফঃ শিংশপা নাম মধাগঃ॥৫৫ প্রোর্থিত হইগা, ত্রেতা যুগো অযোধ্যাধিপতি রাজা দশরণের গতে জন্মগ্রহণ করিবেন এবং যোগমায়। ভগবতী, রাজ: জ্ঞাক গৈছে জন্ম পরিগ্রহ ক্রিবেন। দাশর্থি জ্ঞীরাম ভার্যাণ জনকনন্দিনীও অনুজ্ঞ লক্ষ্মণের সহিত মহাবিশ্যে আগেমন করিলে, রাবণ মহামায়। সীভাকে অপছরণ করিবে। পরে বানরেন্দ্র স্থগ্রীনের সহিত প্রমাকা শ্রীরামেরমিত্রতা হইবে, স্থগ্রীব জগুলাতা সাভাকে অন্নেষণ করিবার জন্য বানরগণকে প্রেরণ ক্রিবেন। ৪৮ । ৪৯ : ৫০ । ৫১ । এ বানরগণ মধ্যে কোন এক ব্যানৰ রজনীযোগে তেমের সমীপে আগমন করিলে, েমে কর্ত্তক ভংগিত হটবামাত্র তোমার বক্ষঃস্থলে বাম ৩ন্ত দ্বারা মুক্তি প্রদান করিবে । হে জন্বে । যে সময় তুমি তে মুক্ট্যাঘাৰ দ্বারা বাধিভাজা হইবে সে সময় দশানৰ নিশ্চ-য়ই ব্য শ্রনে গমন ক্রিবে। হে বীরবর! এক্ষণে ভোমার মুট্টাঘাত দারা আমি ব্যথিতাকা হইয়াছি, অভএব এই লক্ষা-পুরী ও অন্য সমস্ত তার্য কর্ত্তক নিশ্চরই পরাভূত ইইয়াছে।

তত্তান্তে জানকী ঘোররাক্ষনীভিঃ সুরক্ষিতা।
দৃথৈ ব গচ্ছ ত্রিতং রাঘবার নিবেদর ॥ ৫৬ ॥
ধন্যাহমপ্যদা চিরার রাঘবস্মৃতির্মমানীদ্রবপাশমোচনী।
তদ্ভক্ষকোহপ্যতিত্বাভা মম
প্রসাদতাং দাশর্থিঃ দদা হৃদি ॥৫৭॥
উল্লক্তিতেহকো প্রনাত্মজন
ধরাস্কুতারাশ্চ দশাননস্য।
পুক্ষোর বামাক্ষিভুক্ষত তীবং
রামস্য দক্ষাক্ষমতীক্রিরসা॥ ৫৮॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসম্বাদে স্তন্দ্রাকাণ্ডে প্রথমোহধ্যায়ঃ।

হে কপিবর! রাবণের অন্তঃপুরস্থ ক্রীড়া কানন মধ্যে নামার পরিশোভিত অশোক বন আছে ঐ বনে শিংশপানামক মহাতকঃ মূল দেশে রাক্ষসীগণ কর্ত্বক পরিরক্ষিত। হইরা রাম প্রাণাধিকা জগামাতা জানকী অবস্থান করিতেছেন তুমি সীতা দর্শন করিয়া প্রীরাম সমীপে সম্বর গমন করত তাহার কুশল বার্তা নিবেদন কর ।৫২।৫৩।৫৪।৫৫।৫৬। ভববর্মন নাশক শ্রীরামশ্বরণ করিয়া অদ্য আমি জীবনকে ধনাবাদ প্রদান করিলাম এবং তুমিও জীরামের পরম ভক্তন, ভোমাকে প্রদান করিলাম এবং তুমিও জীরামের পরম ভক্তন, ভোমাকে প্রদান করিলাম প্রস্কৃত্ব লাভ করিলাম; অত্তর্ব পর মান্তা শ্রীরাম প্রস্কৃত্ব লাভ করিলাম; অত্তর্ব পর মান্তা শ্রীরাম প্রস্কৃত্ব হুল ভবা সমূদ্র উল্লিভ্যত হইলে জানকী ও দশাননের গ্রম মেত্র ও ব্যমাধ এবং অতীন্দ্রির শ্বীরামের দক্ষিণ ভুক্ত ও দক্ষিণ নেত্র অতিশ্ব

ইতি জ্ঞানদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহের্যর সংবাদে স্থান্যবিহত প্রথমোহধ্যায়ঃ।

দ্বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ।

- 20=

ততো জগাম হনুমান লক্ষাং প্রমশোভনাম্।
রাত্রো সূক্ষতনুভূ তা বল্লাম পরিতঃ পুরীম্ ॥ ১ ॥
সীতান্মেণকার্যার্থী প্রবিবেশ নূপালয়ম্।
ত র সর্মপ্রদেশেয়ু বিবিচা হনুমান্ কপিঃ ॥ ২ ॥
নাপশ্যক্ষানকীং স্মৃত্বা ততো লক্ষাভিভাষিতম্।
জগাম হনুমান্ শীঘ্রমশোকবনিকাং শুভাম্ ॥ ৩ ॥
মুরপাদপস্থাধাং রত্নাপানবাপিকাম্।
নানাপক্ষিমৃগাকীর্ণাং স্বর্ণপ্রাসাদশোভিতাম্। ৪
কলৈরানন্ত্রশাথাপ্রপাদপৈঃ পরিবারিতাম্।
বিচিম্বন্ জানকীং তত্র প্রতিরক্ষণ মরুৎসূতঃ। ৫
দর্শন্তিংলিহং তত্র চৈত্যপ্রাসাদমুক্ষম্।
দৃষ্টা বিস্ময়মাপয়ে। মণিস্তম্ভশতান্তিতম্ । ৬।

দমতীত্য পুনর্গত্বা কিঞ্চিদ্রং স মারুতিঃ।

দদর্শ শিংশপারক্ষমত্যন্তনিবিভক্ষদম্। ৭!

অদৃষ্টাতপমাকীর্ণং স্বর্ণবর্ণবিহক্ষমম্।

৽মালে রাক্ষনীমধ্যে স্থিতাং জনকনন্দিনীম্। ৮।

দদর্শ হনুমান্ বীরো দেবতামিব ভূতলে।

একবেলীং রুশাং দীনাং মলিনাম্বরধারিলীম্। ন।

ভূমো শয়ানাং শোচন্তীং রামরামেতিভাষিলীম্।

ত্রাতারং নাধিগজ্জীমুপবাসরুশাং শুভাম্। ১০।

শাখান্তজ্বমধ্যক্ষো দদর্শ কপিকুঞ্জরঃ।

কুতার্পেহিহং রুতার্পেহিহং দৃষ্ট্য জনকনন্দিনীম্।১১

মরৈব সাধিতং কার্যাং রামস্যা পর্মাত্মনঃ।

ত তঃ কিলকিলাশব্দো বভূবান্তঃপুরাছহিঃ। ১২।

অনন্তর যামিনী যোগে স্ক্রম শরীর পরিগ্রহ পূর্ব্বক মাক্তি লক্ষাপুরীর চতুদিকে ভ্রমণ করিতে করিতে সীতার অস্থেষণ মানসে রাবণের ভবন মধ্যে প্রবেশ করিল, কিন্তু কোন স্থানে জগন্যাতা সীতাকে দশন না পাইয়া লক্ষেণী পরিভাষিত সীতার অবস্থা স্থান্থণ কল্পে রক্ষ পরিরত রত্ন সোপান নাস্ত সরোবর স্থানাভিত, নানা প্রকার পক্ষী ও মৃগ গণ সমাকীর্ণ, স্থপক ফল ভারাবনত অম রক্ষাদি বেষ্টিত ভ স্বর্ণ নিশ্মিত প্রাসাদাদি পরিলোভিত অশোক বন মধ্যে গমন করিল; অনন্তর এক এক করিয়া সমস্ত বৃক্ষের মূল-দেশে সীতাকে অন্থেষণ করিতে করিতে মণি নিশ্মিত শুড় শত সংযুক্ত আশ্চর্যা এক প্রাসাদ দশন করিয়া বিশ্মমাপার

হইল! ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬। পরে এ প্রাদাদ অভিক্রম করিয়া কিয়দূর গমন করিলে. রবিকর নিবারক নিবিড্ভর পত্রারত শিংশপা নামক এক রক্ষ দর্শন করিল, ঐ রক্ষ মূলে রাক্ষসীগণ মধাবর্তিনী দীনভাবাপায়া মলিন বঙ্গনা উপ-বাসকৃশা "হা রাম! হা রাম!" ইত্যাকার শব্দায়মানা সীতাকে পৃথিবী মণ্ডল সমাগত দেবতার প্রায় পত্র মধ্যে ল্কারিত মাকৃতি দর্শন করিয়া হর্ষ পূর্বেক কহিল, আমি অদ্য জগল্লী জানকী সন্দর্শনে কৃতার্থ হইলাম ও পর্মাত্মা শ্রীরামের কার্যা সাধন করিলাম। অনন্তর রাব্রের অন্তঃপুর বহির্দেশে রাক্ষ্য গ্রের অব্যক্ত নানাবিধ শব্দ শ্রবণ করিয়া মনে মনে কিমেতদিতি সন্ত্রীনো ব্রহ্মপত্রেরু মারুতিঃ।
আরান্তং রাবণং তত্র স্ত্রীক্ষনৈং পরিবারিতম।১৩।
দশাস্থ বিংশতিভুক্তং নীলাঞ্জনচয়োপমম।
দৃষ্টা বিস্ময়মাপত্রো পত্রথণ্ডেম্বলীরত। ১৪।
রাবণো রাঘবেণাশু মরণং মে কথং ভবেৎ।
দীতার্থমপি নায়াতি রামঃ কিং কারণং ভবেং।
ইত্যেবং চিন্তরমিত্যং রামমেব দদা হৃদি।
তিমিন দিনে পররাত্রো রাবণো রাক্ষসাধিপঃ।১৬
স্বপ্লে রামেণ দন্দিষ্টঃ কন্চিদাগত্য বানরঃ।
কামরূপধরং সুক্ষো বৃক্ষাগ্রন্থোহ্মপশ্যতি। ১৭।
ইতি দৃষ্টান্ত,তং স্বপ্লং স্বাস্মন্যেবানুচিন্ত্য সঃ।
স্বপ্লঃ কদাচিৎসত্যঃ স্যাদেবং তত্র করোম্যহম।১৮

আশ্রুর্য বোধ করিলেন, পরে রাক্সী রুল পরিবেইছি, নীল পর্বত সদৃশ কলেবর বিংশতি ভূজ দশাস্য রাবণকে সমাসত অবলোকন করিয়া মাক্তি বিশ্বরাপর ছইল এবং পত্র খণ্ডে অতি হক্ষারপে লীন ছইয়া রহিল ৷ ৭ ৷ ৮৷ ৯৷ ১০ ৷ ৷ ১১ ৷ ৷১২ ৷ ১৩ ৷ ১৪ ৷

অনন্তর রঘুপতি প্রীরামচন্দ্র ছইতে কি প্রকার আমার
নিধন ছইবে এবং পরমাত্মা—সীতার অস্বেষণ করিবার জন্য
কি কারণ এস্থানে সমাগত ছইলেন না; দশানন হাদিপায়ে
এই প্রকার সর্বাদা প্রীরামকে চিস্তা করত এক দিবস রাত্রি শেষে
স্বপ্র দেখিলেন যে, অনির্বাচনীয় স্বেচ্ছাধীন রূপ ধারণে সমর্থ—
রাম প্রেরিত এক বানর এই লঙ্কাপুরী সমাগত হইয়া স্ক্রম
রূপ ধারণ পূর্বক বৃক্ষাগ্রদেশে লুকায়িত ছইয়া জনকনন্দিনী
সীতাকে নিরীক্ষণ করিভেছে। রাবণ এইরূপ আক্রহা স্বপ্র
দেখিয়া—স্বপ্র কোন সময় সত্য ছয়, অতএব অন্দোক বন
নধ্যে গমন করিয়া রাম বিরহ হুঃখিতা সীতাকে হুর্বাক্য
রূপ বাণ ছারা তাড়না করিলে অত্যন্ত হুঃথিতা দেখিয়া

জ্ঞানকীং বাক্শরৈর্বিধ্য দু:থিতাং নিতরামহম।
করোমি দৃষ্টা রামায় নিবেদয় তু বানরঃ। ১৯।
ছিত্রেবং চিন্তয়ন সীতাসমাপমগমদ্জ্রভম।
ন্পুরাণাং কিন্ধিণীনাং শ্রুড়া সিঞ্জিতমঙ্গনা। ২০।
মীতা ভীতা লীয়মানা স্বাক্সনেরে স্থমধ্যমা।
অধোমুখ্যশ্রুনয়না স্থিতরামার্পিতান্তরা। ২১।
রাবণোহপি তদা সীতামালোক্যাহ স্থমধ্যমে!।
মাং দৃষ্টা কিং রখা সূত্রু! স্বাক্সনের কিলীয়দে ।
রামো বনচরাণাং হি মধ্যে তিষ্ঠতি সাল্পারঃ।
কদাচিদ্রশাতে কৈন্চিৎকদাচিলের দৃশ্যতে। ২০।
ময়া তু বহুধা লোকাঃ প্রেষিতান্তম্য দর্শনে।
ন পশ্যন্তি প্রমত্রেন বীক্ষ্যমাণাঃ সমন্তত্য। ২৪!
কিং করিষ্যান রামেণ ? নিস্প্রেণ স্বাণ ভুয়ি।
ভুয়া সদালিক্ষিতোহপি সমীপস্থাহপি সর্বাদা। ২৫

ঐ বানর শ্রীরামতে জানাইবে। দশানন মনে মনে এইরপ্রিলা করিরারাক্ষসীগণের সহিত সীতার সমীপে সত্তর গমন করিল, ঐ সনয় রাক্ষসীগণের নৃপুর ও কিছ্কিণীর শব্দ শ্রবণ করিলে ত্রায়া সুমধামা, তীতমানসা, অঞ্চনয়না, অধাবদনা জানকী প্রমায়া শ্রীরামে মানদার্পণ করিয়া অবস্থিতা হইলেন। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯।২০।২১। রাবণ সীতাকে নিরীক্ষণ করিয়া কহিল—হে সুমধ্যমে! তুমি আমাকে দেখিয়ার্থা কেন সঙ্কাচিতা হইরা রহিলে—শ্রীরাম বনচর জন্ত মধ্যে লক্ষমণের সহিত অবস্থিতি করিতেছে; কখন জন সমাজে উপস্থিত হয়, কখন বা অদৃশ্য হইয়া থাকে। ২২।২৩। শ্রীরামকে দশন করিবার জন্য আমি বহুবিধ চর ও অন্তর্নণণ চতুর্দিকে যতু পূর্বক প্রেরণ করিয়াছি তাহারা চতুর্দিক্ অবেষণ করিয়াছে শ্রীরামকে দেখিলে পায় নাই। তে

ক্রদ্যেইনা ন চ স্নেইন্থরি রামন্য জায়তে।

হৎকুতান্ সর্বভোগাংশ্চ হৃদ্গুণানপি রাঘবং।২৬
ভুঞ্জানোইপি ন জানাতি কুত্রো নিপ্তণাইধনঃ।
হুমানীতা ময়া সাধী দুঃখশোকসমাকুলা।। ২৭ ॥
ইদানীমপি নারাতি ভক্তিহীনঃ কথং ব্রজেৎ?।
নিঃসল্বো নির্মামো মানী মূঢ়ঃ পণ্ডিভ্রমানবান্। ২৮॥
নরাধমং হৃদ্বিমুখং কিং করিষ্যান ? ভামিনি!।
হুষ্যতীর সমাসক্তং মাং ভুজস্বাস্থ্রোত্তমম্ ॥ ২৯ ॥
দেবগন্ধ্রনাগানাং যক্ষকিরর্যোষিতাম্।
ভবিষ্যানি নিয়োক্তী হুং যদি মাং প্রতিপ্রান্য।

ভদ্মারা সুধসভ্যোগ করিবে : দেও যে জ্রীরামকে ভূমি দর্বদা আলিঙ্গন করিয়াছ এবং যে সন্ধদাই তোমার সমীপে অবস্থান 🕫 বিয়াছে, এক্ষণে তোমার জন্য সেই রামের স্নেছ মাত্র সম্ৎ- 🖟 পন্ন হয় নাৰ্হে স্কুক্ৰ ! দেখ বাম তোমা কৰ্ত্তক নানা বিধ ভোগা দ্রবা এবং তোমার গুণ উপভোগ করিয়াও ভোমাকে স্মরণ করে না অতএব দেই নৱাধম, কতন্ত্র পামর ও নিগুণি বলিয়া _{াণ্য} হইতে পারে। তুমি আমাকর্ত্তক **অপ্রভা হ**ইয়া **অবধি** দুংখ ও শোক সন্তপ্তে অবস্থান করিতেছ; বে হীন বীর্য্য অদ্যাপি ভোমাকে অৱেষণ করিতে অসমর্থ সে তোমাকে কি প্রকার উপভোগ করিবে? ছে ভামিনি। দেখ বলবান, দায়াবী ও মানী পুরুষকেই কামিনী পতি বলিয়া বরণ করিয়া शांत्क किन्तु के द्वारमंत्र मामश्री, मात्रा छ मधान माजिल नाहे, ষতএব ঐ নরাধম তোমার প্রতি বিমুখ তাহাকে পাইয়া কি মুখ সম্ভোগ করিতে? দেখ আমি অসুর জাতির শিরোমণি, তোমাতে সাতিশয় আসক হইয়াছি; অতএব আমাকে ভজনা করিলে দেব, গন্ধকা, নাগা, মক্ষ, রক্ষ, কিন্তুর-প্ৰের ব্রাসনা সকল ভোমার আজাস্বর্তিনী হইবে। ২৪। 381201241261221 0º1

রাবণশ্য বচঃ শ্রুত্বা সীতামর্থসমন্থিতা।
উবাচাধোমুখী ভুত্বা নিধায় ভূণমন্তরে॥ ৩১॥
রাঘবাদ্বিভাতো ভূনং ভিক্ষুরূপং ত্বা ধৃতম্।
রহিতে রাঘবাভ্যাং তং শুনীব হবিরপ্রে॥ ৩২॥
হুত্বানসি মাং নীচ! তৎ কলং প্রাপ্সাসেইচিরাং।
যদা রামশরাঘাতবিদারিতবপূর্ভবান্॥ ৩৩॥
জ্বাস্ত্রে মানুষং রামং গমিষ্যসিষ্মান্তিকম্।
সমুজং শোষ্মিত্বা বা শরৈর্বিদ্বার্থ বারিধিম্।। ৩২
হন্তং ত্বাং সমরে রামে। লক্ষাণেন সমন্থিতঃ।
আগমিষ্যত্যসন্দেহো দ্রক্ষ্যে রাক্ষ্যাধ্য !॥ ৩৫॥
আগমিষ্যত্যসন্দেহো দ্রক্ষ্যে রাক্ষ্যাধ্য !॥ ৩৫॥
আগম্বার্থ সহবলং হত্বা নেষ্যতি মাং পুর্ম্।
শ্রুত্বা রক্ষঃপতিঃ কুদ্রো জানক্যাঃ পর্বাক্ষরম্॥ ৬৬
বাকং ক্রোধ্যমাবিষ্টঃ ধজ্যমুক্তমা সত্তরঃ।
হন্তং জনকরাজ্যা তন্যাং ভাশ্বলোচনঃ॥ ৩৭॥

অনন্তর রাবণের ঐ বাক্য শ্রবণ করিয়া নিঃসহায়া
মধোবদনা জানকী তৃণ মাত্র সহায় করিয়া কহিলেন, রে
ছরাআন্! তুই ভীত হইয়া ভিক্ষুক বেশ ধারণ করত শ্রীরাম ও
লক্ষণের অসমক্ষে, কুরুরে যে প্রকার যজ্ঞ স্থলীয় দেব ভোগঃ
সংগোপনে ভোজন করে, সেই রূপ আমাকে হরণ করিয়াছিল।
রে পামর! তুই অন্তির কালেই ইহার সম্চিত কল পাইনি,
রে বাক্ষসাধম! রঘুপতি শ্রীরামচন্দ্র তোমাকে সমরে বিনাশ
করিবার মানসে অনুজ লক্ষ্মণের সহিত আগামন পূর্কক মহানিধি শোষণ অথবা শর দ্বারা পরিবর্জন করত ভোকে সপুত্র
বিনাশ করিয়া আমাকে সপুর মধ্যে লইয়া যাইবেন সেই সমর
রাম কি রূপ মন্ত্রমা তাহা জ্বাত হইবি) জানকীর এইরূপ বাক্য
শ্রবণ করিয়া ভীম পরাক্রমা দশানন জোধাবিস্ট হইয়া
কহিল—রে পাপীরসি জানকি! ভোকে এই ওজ্গাঘাত
দ্বারা রাম দশনের বাসনা পূর্ণ কবিব এই বলিয়া হজ্য

মন্দোদরী নিবার্যাহ পতিং পতিহিতে রতা।
ত্যকৈনাং মানুবীং দীনাং ছুংথিতাং কুপণাং কুশাম্
দেবগন্ধবিনাগানাং বদ্ধঃ সন্তি বরাঙ্গনাঃ ॥ ৩৮ ॥
তামেব বররন্তাতৈচমদমত্তবিলোচনাঃ ॥ ৩৯ ॥
ততোহত্তবীদ্দাগ্রীবো রাক্ষণীধিকিকতাননাঃ ।
বথা মে বশগা সীতা ভবিষ্যতি সকামনা ।
তথা যতধং ত্রিতং তর্জনাদরণাদিভিঃ ॥ ৪০ ॥
দিমাসাভ্যন্তরে সীতা যদি মে বশগা ভবেৎ ।
তদা সর্বাম্থোপেতা রাজ্যং ভোক্ষ্যতি সা ময়া ॥
যদি মাসত্ত্বাদ্ধিং মক্ষ্যাং নাভিনন্দতি ।
তদা মে প্রাত্রাশার হত্য কুক্ত মানুষীম্ ॥ ৪২ ॥

ইত্যুক্ত্যা প্রথমী দ্রীভী রাবণোহন্ত:পুরালয়ম্।
রাক্ষস্যো জানকীমেতা ভীষয়ন্তঃ স্বতর্জনৈঃ ॥৪৩॥
তবৈকা জানকীমাহ যৌবনং তে রথা গতম্।
রাবণেন সমাসাল্য সফলং তু ভবিষাতি॥ ৪৪॥
অপরা চাহ কোপেন কিং বিলম্বেন ? জানকীমা
ইদানীং চ্ছেদ্যতামঙ্গং বিভজ্য চ পৃথক্ পৃথক্॥ ৪৫।
অন্যা তু থজামুদ্যম্য জানকীং হন্তমুদ্যতা।
অন্যা করালবদনা বিদার্য্যাম্যমভীষয়ৎ॥ ৪৬॥
এবং তাং ভীষয়ন্তীন্তা রাক্ষমীর্কিক্ষতাননাঃ।
নিবার্য ত্রিজটা রন্ধা রাক্ষমী বাক্যেত্রনীৎ॥ ৪৭॥
শৃর্ধং দুইরাক্ষয়োমদ্বাক্যং বো হিতং ভবেৎ॥৪৮

প্রহার করিতে উদাত হুখন, মন্দোদরী ক্রোধ কম্পিভ কলে-ৰৱ প্ৰাৰণকে শান্তনা কৰত কহিতে লাগিলেন্—হে স্বামিন্! রাম-প্রাণাধিকা জামকী হ্রপ্রফেণনিত শ্রাপায় শায়ন করিতেন, রাম-বিরহ কাতরা, দীন ভাবাপনা, কুশাসী, দেবগণ দেবগ দেই জগলক্ষী এট কণ্টক্ষয় শিংশপা ক্লের নিয়দেশে ভূমি শারিনী ছইয়। বাদ করিভেছেন। ধে প্রিয়৸ণ : তুমি মদনো-শ্রন্তা দেব গন্ধর্ম নাগ বরাধন। কর্তৃক আলিপিত হইয়াও মতে। জনকনন্দিনীকে স্মৃহা করিতেছ। ছুরাত্মা রাবণ মন্দো-দর্বার এই বাক্য শ্রবণ করিয়া বিকট বদন রাক্ষ্ণী গণকে क्रिम १७२१७२१७०१०११०११७५१७५१७५१८४ াক্ষনীলণ ! যাহাতে জনকনন্দিনী স্বেচ্ছাধীনা ছইয়া আমার বশীভূতা হয়, ভয় প্রদর্শন ও সমাদরাণি দ্বারা দেই প্রকার ের্থ (5 ট্রাকর । ৪০ । যদি মাদ দ্বর মধ্যে দীত। আমার নশ্বত্তিনী হয়, তবে আমার সহিত প্রমন্থ্যে রাজ্য সম্ভোগ করিবে। ৪১। এবং বদি মাসহর মধ্যে আমাকে ভজনা না করে তবে ঐ মান্ত্রী দীতাকে বজা হালা বধ করিয়া আমার প্রাতঃকালীন ভোজনার্থ কম্পনা কবিব। রাবণ এইরূপ

আদেশ করিনা প্রীর্ণের সহিত অক্ট্রার গমন করিল অনন্তর রাক্ষসীগপ বাবণ কর্ক আদিটা হইনা সীভাব সমীতে আগমন করিনা নানা প্রকার ভং সনা দ্বারা ভয় প্রদর্শন করিনে লাগিল, তন্মধা কোন রাক্ষসী সীভাকে কহিল—হে চার্কান্ধি ভোমার এ যৌবন রুখা গত হইল, কিন্তু রাজা দশানন ভোমাকে সভ্যোগ করিলে ঐ যৌবন সকল হইবে—অন্ত এক রাক্ষসী কোর পূর্বক কহিল—হে জানকি! যদি সভা রাবণকে ভজনা না কর তবে এখনত ভোমার সমস্ত শরীর বিভাগ করিয়া ভক্ষণ করিবার জনা উদ্যভা হইল। অন্য এক রাক্ষসী ভ্রানক মুখব্যাদান পূর্বক ভয় প্রদর্শন করিল। ৪২। 18৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬।

এই প্রকার সীতার ভরপ্রদর্শনী ক্রন্ধা রাক্ষ্যান্থকে ত্রিজটা নান্নী এক রন্ধা রাক্ষ্যী কছিল—রে হুফা রাক্ষ্যান্থ ভোষাদিনের হিত বাধ্য প্রধণ কর —জগজ্জননী সীতাকে ন ভীষরধং রুদতীং নমস্কুরুত জানকীম্।

ইদানীযেব মে স্বপ্নেরাম: কমললোচনঃ॥ ৪৯
আরুইছরাবতং শুলুং লক্ষ্মণেন সমাগতঃ।

দপ্ধা লক্ষাং পুরীং সর্কাং হল্বা রাবণমহেবে॥ ৫০
আরোপ্য জানকীং স্বাদ্ধে স্থিতো স্বন্দোহগমূর্ধনি
রাবণো গোময়হ্রুদে তৈলাভ্যক্তো দিগন্বরঃ॥ ৫১॥
আগাহৎপুল্রুপেতিশ্রু রুদ্ধা বদনমালিকাম্।
বিভীষণস্ত রামস্থ সন্নিধে স্ক্রুমানসঃ॥ ৫২॥
সর্বাং করোতি রামস্থ পাদয়েভেক্তিসংযুতঃ।

সর্বাথ রাবণং রামো হল্বা সকুলমঞ্জনা ॥ ৫০॥
বিভীষণায়াধিপতাং দল্বা সীতাং শুভাননাম্।
আঙ্কে নিধায় স্পুরীং গমিষ্যতি ন সংশ্রুঃ॥ ৫৪॥
বিজ্ঞারা বচঃ প্রন্থ ভীতান্তা রাক্ষ্যস্তিরঃ।

ভূষীমাসংস্তত্র তত্র নিদ্রাবশমুপাগতাঃ ॥ ৫৫ ॥
তর্জিতা রাক্ষমীভিঃ সা সীতা ভীতাতিবিহ্বলা।
ত্রাতারং নাধিগচ্ছন্তী দুঃখেন পরিমূচ্ছি তা।। ৫৬ ।
অক্রভিঃ পূর্ণনয়না চিন্তয়ন্তীদমন্ত্রবীৎ।
প্রভাতে ভক্ষয়িষ্যন্তি রাক্ষস্যো মাং ন সংশয়ঃ
ইদানীমের মরণং কেনোপায়েন মে ভবেং। ৫৭

এবং স্বদুংখেন পরিপ্লুতা সা।
বিমুক্তকণ্ঠং রুদতী চিরায়।
আলম্য শাখাং রুতনিশ্চয়া মৃতে
ন জানতি কঞ্চিপায়মঞ্চনা।। ৫৮।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে স্থান্দরাকাণ্ডে দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

দুর্গনা কবিও না প্রণাম কর । অদ্য এইরপ সাশ্রহ্য স্থা দর্শন কবিয়াছি দে, ' পরমাত্মা কমললোচন শ্রীরাম লক্ষণের সহিত ঐবাবত অস্থাবোহণ করিয়া আগমন করত সমস্ত সঙ্গাপুরী ভক্ষদাং করিয়া রণভূমিতে সবংশ বাবনকে বিনাশ কবিলেন এবং শ্রীরাম সীতাকে ক্রোড়ে স্থাপন করত পর্বতো-পরি পরিলক্ষিত হইতে লাগিলেন । পুস্তাদি ব্লুগণের সহিত বিব্যন তৈলাক্ত রাবণ স্বীয় স্বীয় মন্তক ছেদন করিয়া গোময়পূর্ণ গর্ত মধ্যে অবগাছন করিতেছে, বিভীবন হর্ম চিত্রে গক্তি পুরংগর শ্রীরামের পাদ সেবা করিতেছে। শ্রীরাম সত্ত্ব সবংশ রাবনকে বিনাশ কবিয়া বিভীবনকে সমস্ত রাজ্যাধি-প্র প্রদান করত সভিবিধ ক্রোড়ে স্থাপন করিয়া অবোধ্যা প্রী গ্রমন করিলেন । বিজ্ঞার এইরপ স্থাব ব্রান্ত শ্রাবণে

ভীত্যানদা হট্রা দমস্ত রাক্ষদ পত্নী নিজ্ঞা প্রাপ্তা হইল তা দমর জানকী রাক্ষদীগণের ভর্জন বাক্যে ভর্মব্যাকুলা হইলা ছিলেন এবং কাছাকেও হঃখবিমোচনকারী না দেখিলা সজ্জান নরনে স্বান্ত কহিলেন, স্থা বিধাতঃ : এই রাজি প্রভাগ ইইলে ভ্রানকা রাক্ষদী দকল নিশ্চরই আমাকে ভক্ষা করিবে, সম্প্রতি এই রাজি মধ্যে কি প্রকারে আমার মধন ইইবে—এই প্রকার উচ্চৈঃস্বরে কদ্যমানা অভিভঃখিতা জানকী মরণের জন্য উপায় না দেখিরা শিংশপারক্ষের শাধ্যক্ষণ পূর্বাক মরণে ক্রভনিশ্চরা ইইলেন ৪৭।৪৮।৪৯।৫০।৫১ ৫২।৫১।৫৪।৫৫।৫৬।৫৭।৫৮।

> ইতি জীমন্ধ্যাক্সরামায়নে উমামহেশ্বরসম্বানে স্থান্বাকাণ্ডে দিতীয়োহধ্যায়ঃ।

তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ

উদ্বন্ধনেন বা মোক্ষ্যে শরীরং রাঘবং বিনা।

জীবিজেন ফলং কিং দ্যাশ্মম রক্ষোহধিমধ্যতঃ ।১

দীর্ঘা বেণী মমাত্যর্থমুদ্ধনায় ভবিষাতি।

এবং নিশ্চিতবুদ্ধিং তাং মরণায়াথ জানকীম্ । ২ ।

বিলোক্য হমুমান্ কিঞিদ্বিচাইর্য্যতদভাষত।

শনৈঃ শনিঃ স্থামনপো জানক্যাঃ শ্রোত্রগং বচঃ ও

ইক্ষাকুবংশসন্তুতো রাজা দশরথো মহান্।

অযোধ্যাধিপতিস্তম্য চন্তারো লোকবিশ্রুতাঃ । ৪ ।
পুত্রা দেবসমাঃ সর্ক্রেঃ লক্ষণেরপলক্ষিতাঃ ।

রামশ্চ লক্ষ্মণশৈচব ভরতদৈচব শক্রহা । ব ।

ক্ষেণ্ডো রামঃ পিতুর্বাক্ষেণ্ডকারণ্যোগতঃ ।

লক্ষ্মণেন সহ জাতা সীত্রা ভার্যায়া সহ । ৬ ।

প্রাণাধিক জীরাম বিরহে রাক্ষসগণের মধাবর্তিনী হইয়া
আমার জীবন ধারণ বিফল, সত্তব আমার স্থলীর্ঘ বেণী
উদ্বন্ধনের জন্য কম্পিত হইবে, জানি উদ্বন্ধন হারা নিশ্চর এ
জীবন পরিত্যাগ করিব। জানকী এই প্রকার মরণে রুক্নিশ্চয়া
হইলে স্বুদ্ধি হন্মান স্থক্ষ্ম রূপ ধারণ করত তাহার কর মূলে
কহিল—প্রসিদ্ধ ইক্ষাকু বংশোৎপন্ন রাজ্ঞা দশর্থ সর্ব্ধ লক্ষ্ণ
সম্পন্ন দেব সদৃশ পুত্র চতুষ্টয় উৎপাদন করিলেন এবং কিয়ং
কাল রাজ্য শাসন করত সত্য পাশে বদ্ধ হইয়া জ্যোষ্ঠ তনয়
রামচক্রকে বন গমনে আদেশ করিলেন, ধর্মপ্রায়ণ রগুনাথ
পিত্রাজ্ঞা পালন করত সমুক্ত লক্ষ্মণ ও ভার্য্যা জ্ঞানকীর সহিত্
গৌত্রী নদীর তীরে পঞ্চবটী মধ্যে বাস করিয়াছেন। জ্মনপ্তর

উবাস গৌতমীতীরে পঞ্চবট্যাং মহামনাঃ।

তন্ত্র নীতা মহাভাগা নীতা জনকনন্দিনী। ৭।
রহিতে রামচন্দ্রেণ রাবণেন দুরাত্মনা।
তত্যে রামোহতিদুংখার্ত্তো মার্গমাণোহধ জানকীম
জটায়ুষং পক্ষিরাজমপশুর্ধ পতিতং ভুবিঃ।
তথ্যে দত্ত্বা দিবং শীঘ্রং ঋষামূকমুপাগতম্। ৯।
স্থাবিশ কতা মৈত্রী রামশু বিদিতাত্মনঃ।
তদ্যাধ্যাহারিণং হত্বা বালিনং রঘুনন্দনঃ। ১০।
রাজ্যেহভিষেচ্য স্থাবিং মিত্রকার্যাং চকার সঃ।
স্থাবিস্ত সমানাষ্য বানরান্ বানরপ্রভুঃ। ১১।
প্রোরস্ত সমানাষ্য বানরান্ পরিমার্গণে।
সীতারাস্থ্র চৈকোইহং স্থাবিস্চিব্রা হরিঃ। ১০।

রামও লক্ষ্ণ মৃণয়ার্থ গমন করিলে হুরাঝা রাবণ দীতাকে অপছরণ করিল; অনন্তর দীতা-বিরহ-সন্তপ্ত জ্ঞীরণম অনুজ্ঞান দহিত ভার্যার অন্তরণ করিতে করিতে বনমধ্যে পক্ষ বিহীন মৃত প্রায় জটায়ুকে দেখিলেন। অনন্তর জটায়ুকে মুক্তি প্রান্থান করিয়া প্রয়ামূক পক্ষতোপরি গমন করিলেন। ১।২।৩।৪।
। ৫।৬।৭।৮। ৯। জ্ঞাবান বল্নাথ স্থ্রীবের সহিত্
মিত্রতা সম্পাদন করিয় জাত্দারাপহারী হুরাঝা বালিকে নিধন পূর্বেক স্থিবিকে রাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন, কপিরাধ্ব স্থিবিও বান্তরগণকে সীতার অন্তেমণার্থে চতুর্দিকে প্রেরণ করিলেন, তল্মধ্যে আমি বাজ্ঞ শাসন প্রতিপালনের নিমিন্ত

সম্পাতিবচনাচ্ছীন্তমূলক্তা শত্ৰোজনম। সমুদ্রং নগরীং লঙ্কাং বিচিম্বন জানকীং শুভাম।। শনৈরশোকবনিকাং বিচিম্বন্ শিংশপাভরুম্। অদ্রাক্ষৎ জানকীমত্র শোচন্তীং ছঃধসংপ্লুভাম্ ॥১৪ রামদ্য মহিষীং দেবীং ক্লুতকুতেগৃহহুমাগত:। ইত্যুক্তে পররামাধ মারুতির দ্বিমতরঃ।। ১৫ भी जो करमन उदमर्तर क्षा द्वा विष्ययमायस्यो। কিমিদং মে আকু তং ব্যোমি বায়ুনা সমুদীরিতম্ ॥১৬ স্বপ্নো বা মে মনোভান্তির্বনি বা সভামের তৎ। নিদ্রা মে নান্তি দুঃখেন স্থানামোত্ত কুতো ভ্রমঃ ?। যেন মে কর্ণপীয়ুষং বচনং সমুলীরিজম্। স দৃশ্যতাং মহাভাগঃ প্রিয়বাদী মমাগ্রতঃ ॥ ১৮ ॥

শত ষোজন সমুদ্র উল্লেখ্যন করিয়া এই লঙ্কাপুণীর অভান্তরে ক্লানাত্র সীতাকে অংশ্বয়ণ করত ক্রেমে ক্রমে এই অশোক বন মধ্যে শিংশপা ভরুমূলে অত্যন্ত হুংপ ভাগিনী রাম-মহিষী দশন করিয়া কভার্থ হইলাম, এট বলিয়া বুদ্ধিমান মারুতি নিরুত্ত হইল, জ্ঞানকী বানর ভাষিত এই বাকা শ্রবণ করত বিশ্ববাবিষ্টা হইয়া কহিলেন, আমি আকাশ পর্থে কি'বায়ুর बक् अवन कदिलांग, कि यश मर्भन कदिनांग, कि आमाद लाखि উপস্থিত ছইল, রাম বিরহানল সম্ভুপ্তা হইয়া আমি নক্সন পথে নিম্রা দেবীকেও স্থান প্রদান করিতেছি না, তবে সপ্রের মন্তব কি—ভাত্তিরও কোন কারণ দেখিভেছি না, যে জন আদৃশ্য ভাবে আমার কর্ণ-বিবরে মধুনময় বাকা বর্ষণ করিলে, সেই প্রিয়ন্ত্র দুশ্য ভাবে আমার অঞ্জন্ত হও। ১০। ১১। ১২। : ১৩। ১৪। ১৫। ১৬।১৭।১৮। শিংশপা রংকর পত্র খণ্ডে সংলীন হইয়া ছন্মান জান কীর এই রূপ হুঃপিত বাকা শ্রবণ করিয়া চিট্টক পক্ষীর তুলা রক্ত বর্ণ বদন ও পীত বর্ণ শারীর | তুমি বানর জ্ঞাতি, তোমার সহিত মহুখা জাতি জ্ঞীরামের সংসর্গ

শ্ৰুতা ভক্ষানকীবাক্যং হন্দ্যান্ পত্ৰখণ্ডতঃ। অবতীর্যা শনৈঃ শীভাপুরতঃ সমবস্থিতঃ ॥ ১৯ ॥ কলবিক্ষপ্রমাণাকে। রক্তান্যঃ পীতবানরঃ। নমাম শনকৈ: নীভাং প্রাঞ্জলি: পুরতঃ স্থিকঃ। ২০। দৃষ্টা তং জানকী ভীজা রাকণে। হয়মুপাগতঃ। মাং মোহয়িভুমায়াতো সায়য়া বানরাক্তিঃ॥ ২১॥ ইত্যেবং চিন্তরিত্বা সা তৃষ্টীমাসীদধোমুখী। भूनतभार जार मीजार (नवी ! यद्धार विभक्करम ॥> २ নাহং তথাবিধো মাতস্তাজ শঙ্কাং মন্ত্রিছিতাম। দাসোহহং কোশলেন্দ্র রাম্ম্য প্রমাতান: ॥২৩॥ मिहित्वार्ट्य हतीन्त्रस्य सूबीवस्य एउटारा 🗀 বায়োঃ পুজোহ্মখিলপ্রাণভূত্যা শোভনে ! ॥২৪॥ তচ্ছত্বা জানকী প্রাহ হন্মসং কুতাঞ্জিম্। বানরাণাং মন্তব্যাণাং সাঞ্জতির্ঘটতে কথম্?॥২৫

ধারণ করত ঐ পত্র যণ্ড হইডে নির্গত ছইয়া জাগালাভা জান-কীঃ দৰ্মুখে অৰ্ডিভি কৰত কুতাঞ্জলি ছইন্না বারস্বার প্রণাম করিল, জানকী মাফভিকে দর্শন করিয়া ভীতান্তঃকরণে চিন্তা করিতে লাগিলেন, ছুরাস্ম। রাবণ আমাকে মুশ্ব করিবার জনা মারা দ্বারা বানর শরীর ধারণ করত সমুখে সমুপস্থিত হইয়াছে, এই প্রকার চিন্তা করিয়া অধোবদনা ও বাকা রহিতা ছটলেন: পুনর্কার হনুমান কহিল—হে মাতঃ! আপনি আমার আফতিকে মাঘাবী রাবণ বলিরা যে শক্ষা করিতেছেন ঐ শক্ষা পরিত্যাগ করুন, জামি রাবণ নছি। হে শুভদে! আমি প্রনাত্মা জীরামের দাস-জ্বতের প্রাণ স্বরূপ বায়ু-তাহার তনর হন্মান, আমি তোমার সন্মুখেই উপস্থিত হইয়াছি। জ্ঞানকী চনুমানের বাক্য ভাবণ করিয়া কছিলেন, চে মারুডে ! যথ তং রামচন্দ্রন্য দাসোহহমিতি ভাষনে ?।
তামাহ মারুতিঃ প্রীতো জানকীং পুরতঃ স্থিতঃ॥২৬
খবামুকমগাদ্রামঃ শবর্ষ্যা নে দিতঃ সুধীঃ।
সুথীবো খব্যমুকস্থো দৃষ্টবান্ রামগক্ষাণো ॥ ২৭॥
ভীতো মাং প্রেষয়ামাম জ্ঞাতুং রামস্য ক্ষ্ণতম্।
ব্রহ্মসারিবপুর্বু গি গভোহহং রামসন্নিধিম্॥ ২৮॥
জ্ঞাত্বা রামস্য মন্তাবং ক্ষ:ক্ষাপরি নিধার তৌ।
নীত্বা সুথীবসামীপ্যং মধ্যং চাকরবস্তয়াঃ॥ ২৯॥
সুথীবস্য ক্ষ্তা ভার্যা বালিনা তং রঘূত্তমঃ।
জ্যানৈকেন বাবেন ভতো রাজ্যেহভাষেচয়ৎ॥ ৬০
সুথীবং বানরালাং সংপ্রেষয়ামাম বানরান্। ৬১।
দিগ্ভ্যো মহাবলান্ বীরান্ ভবত্যাঃ পরিমার্গণে।
গচ্চস্তং রাঘ্রো দৃষ্ট্য মামভাষত স্ব দর্ম্॥ ৬২॥

স্থানি কার্যামশেবং মে স্থিতং মারুতনন্দন!।
ক্রাহি মে কুশলং সর্লং সীতারৈ লক্ষাণসা চ॥ ৩৩
অঙ্গুলীরকমেত্রেমা পরিজ্ঞানার্থমুক্তমম্।
সীতারে দীরতাং সাধু ময়ামাক্ষরমুদ্রিতম্॥ ৩৪॥
ইত্যুক্ত্বা প্রদদেশ মহুং করাআদঙ্গুলীরকম্।
প্রথক্তেন ময়া নীতং দেবি! পশ্চাঙ্গুলীরকম্। ৩৫।
ইত্যুক্তা প্রদদেশ দেবৈয় মুদ্রিকাং মারুতাল্পলঃ।
নমস্কৃত্বা স্থিতো দূরাদ্ধাঞ্জ্লিপুটো হরিঃ॥ ৩৬॥
দৃষ্ট্বা সীতা প্রমুদিতা রামনামান্ধিতাং তদা।
মুদ্রিকাং শিরসা ধৃত্বা প্রবদানন্দনেত্রন্ধা । ৩৭।
কপে। মে প্রাণ্ডাল তং বুদ্ধিমানসি রাঘবে।
ভক্তোংসি প্রিয়কারী তং বিশ্বাদেংস্থি তবৈর হি

কি প্রকার সংঘটন হইল । ১৯ ।২০ ।২১ । ২১ ।২০ । ।২৪ ।২৫ । অনস্তঃ হৃষ্ট মানস মাক্তি জানকীকে কহিল, পেরাম পরায়ণে ! জ্রীম শ্বন্মুখ পর্যন্তে লক্ষ্মণের সহিত্ত আগমন করিয়াছিলেন, অনস্তর ঐ পর্যন্তে লক্ষ্মণের সহিত্ত আগমন করিয়াছিলেন, অনস্তর ঐ পর্যন্তে স্থানিব, জ্রীরাম ক লক্ষ্মণকে দশন করত ভীত হইরা জ্রীরামের মানসিক ভাব অবগত হইরা জ্রীরাম ও লক্ষ্মণকে তাহার মানসিক ভাব অবগত হইয়া জ্রীরাম ও লক্ষ্মণকে স্ক্রোপরি হাপন পূর্বক স্থানিব সহিত্ব থাবিধি মিক্তা সম্পাদিত হইলে রম্বুবর জ্রীরাম স্থানের ভার্যাপকারী বালিকে এক মাত্র বাল হারা যম সদলে প্রেরণ করিয়া স্থানিকে বানর রাজ্যাভিষিক্ত করিলেন। অনস্তর বানর রাজ্য স্থানিক আপনার অক্ষেমণার্থ মহাবল প্রাক্রেম বানরগানকে নানা দিকে প্রেরণ করিলেন, ঐ সময়

শ্রীরাম অনের পূর্বেক আমাকে কছিলেন—হে পান তনয় বিনাধারা অনেক কার্য্য সম্পাদিত হইবে আমার কুলল বার্ত্তাকে জানাইবে, তোমাকে রাম প্রেরিত দৃত বলিয়া জ্ঞানিবার জন্য আমার নামাঙ্কিত অন্ধুরীয়ক প্রাণাধিকা সীতাকে প্রদান করিবে—এইরপ কহিরা আমাকে করাত্রা হইতে অন্ধুরীয়ক সমর্পণ করেন। হে দেবি ! ঐ অন্ধুরীয়ক যর পূর্বেক আনয়ন করিয়াছি অবলোকন করন—এই বলিয়া কপিষর মারুতি সীতাকে অন্ধুরীয়ক প্রেরিক প্রেরিত ক্রিয়াছি ত্রবলোকন করিল, পরে সীতাকে প্রণান করেত কিয়ন্দ্রে ক্রতাঞ্জেলি হইয়া দণ্ডায়মান হইল।২৬:
১২৭ ২৮ ২২০ ৩০ ৩১ ৩২ ৩৩ ৩৪ ।

ঐ রাম নামারিত অসুরীস্থক দর্শনে জ্ঞানকী এইটমন। হটর। আনন্দাঞ্জ বিসর্জন করিতে করিতে মাকভিকে কছিলেন— হে কপি বর । তুমি বুদ্ধিমান্, রামের ভক্ত ও প্রিয়কারী নোচেমাৎদল্লিখিং চানাং পুরুষং প্রেষয়েৎ কথম ?

হন্মন্ ! দৃষ্টমথিলং মম দুংখাদিকং ত্রা। ৩৯।

লার্মং কথয় রামায় ষথা মে জায়তে দয়।

মালবরাববিপ্রাণাঃ স্থানান্তি মম সন্তম !। ৪০।

নাগমিষাতি চেলামো ভক্ষয়িষাতি মাং থলঃ।

আতঃ শীজ্ঞং কপীক্রেণ স্থাবিণ সমস্থিতঃ। ৪১।

বানরানীকলৈঃ সার্ছং হত্ব রাবণমাহবে।

সপুল্লং সবলং রামো যদি, মাং মোচয়েৎ প্রভুং॥

তত্তস্য সদৃশং বীর্মাং বীর ! বর্ণয় বর্ণিতম্।

অবা মাং তারয়েজায়ো হত্য শীল্থং দশাননম্। ৪০।

তথা যতম্ব হন্মন্। বাচা ধর্মমবাপ্রুহি।

হন্মানপি তামাহ দেবি ! দৃষ্টো যথা ময়া। ৪৪।

বাবঃ সলক্ষণং শীল্মাগমিষ্যতি সায়ুধঃ।

মুগ্রীবেণ সদৈনোন হত্ব। দশমুখং বলাহ। ৪৫।

সমানেষ্যতি দেবি! ত্বামগোধ্যাং নাজ সংশয়:।

তমাহ জানকী রামঃ কথং বারিধিমতেজম্। ৪৬।

তীত্বরাস্ত্রেমেয়ালা বানরানীকপৈঃ সহ?।

হন্মানাহ মে ক্ষাবারুছ পুরুষর্বজৌ। ৪৭।

আয়াস্তঃ সদৈনকে মুগ্রীবো বানরেশ্বঃ।

বিহায়সা ক্লেনেব তীত্বা বারিঘিমতেজম্। ৪৮।

নিদ্হিষ্যতি রক্ষোঘাংজ্থ্রুতে নাজ সংশায়ঃ।

অমুক্রাং দেহি মে দেবি! গজ্বামি ত্রয়ান্বিতঃ।৪৯

দেবি! কিঞ্কিনিভিজ্ঞানং দেহি মে যেন রাঘবং।৫০।

দেবি! কিঞ্কিনিভিজ্ঞানং দেহি মে যেন রাঘবং।৫০।

বলিরা আমার বিশ্বাস ইইয়াছে, নচেং জ্রীরাম অন্য পুক্ষকে
কেন আমার নিকট প্রেরণ করিবেন? হে ইন্মন্! আমার
প্রমন্ত হঃবই অবগত ইইয়াছ —আমার প্রতি দয়া করিরা
শীলামকে সমস্ত হঃব জালাইবে। প্রাণাধিক জ্রীরাম মাসহয়
মধ্যে আমান না করিলে রাক্ষ্পগণ নিক্ষর আমাকে ভক্ষণ
করিবে। ক্রিভেএব স্থ্রীব ও সমস্ত বানরকুলের সহিত
শীরাম্ যদি স্বংশ রাবণকে রণ ভূমিতে বিনাশ করিয়
আমাকে মোচন করেন ভবে বীর্মাণ ও তাঁছার বল পরাক্রম
বর্ণন করিবে। পে ইন্মন্! রঘুপতি শীরাম যে কোন উপায়ে
স্বংশ রাবণকে বিনাশ করিয়া সত্তর আমাকে পরিত্রাণ
করিতে পারেন গেই উপায়ই কহিবে—ভদ্মারা তেনোর পুণা
ঘ্রিতে পারেন গেই উপায়ই কহিবে—ভদ্মারা তেনোর পুণা
ঘ্রিতে

अनखत रनुमान् मी ठाक करिन-- र ८५वि ! आमि श्रीत

সমীপে গমন করিলেই শক্ষাণ ও সদৈন্য স্থাীবের সহিত্ত প্রীরণন ধনুকাণ ধারণ করিয়া আগমন পূর্বাক সবংশ রাবণকে নিধন করিয়া অচির কাল নধ্যে তোমাকে অ্যোধ্যাপুরী লইয়া ঘাইবেন—তাহাতে ভিল্মাত্র সংশয় নাই।

জানকী কহিলেন—হে মাকতে! অমেয়াত্মা জীরাম ও লক্ষণ বানরকুলের সহিত কি প্রকাবে এই শত গোজন বিস্তার্ণ, গল্প জ্বা বারিধি সম্ভরণ করিয়া আগমন করিবেন।

হস্মান্ কছিল—হে মাতঃ : পুল্গোত্তম রহুনাথ ও লক্ষণ আগার কল্পক্ষেত্র হইয়া আগামন করেবেন এবং সসৈন্য কলীখর স্থাীব আকলি পথে ক্ষণকাল মধ্যে এই বারিধি উত্তর্গ হইয়া নিশ্চরই রক্ষকুল ধংশ করিবেন : হে দেবি ! আমাকে আদেশ ক্রন—আমি বিরহান্য-সম্ভ্রু সামুক্ত প্রীরামকে দর্শন করিয়া শীঅই আগানার স্থীপে প্রভ্যাগ্যন করিয়। ছে মাতঃ ! এক্ষণে শ্রীরামের বিশ্বাস যোগ্য কোন জব্য আমাকে প্রদান করন।

বিশ্বনেশ্বাং প্রবড়েন ততো গন্তা সমূৎফুকঃ।
তত কিঞ্চিছিচার্যাথ দীতা কমললোচনা। ৫১।
বিমূচ্য কেলপালান্তে স্থিতং চূড়ামণিং দদো।
অনেন বিশ্বনেজামন্তাং কপীন্দ্র! সলক্ষণঃ।। ৫২॥
অভিজ্ঞানার্থমন্যক্ষ বদামি তব স্কব্রত!।
চিত্রকুটার্মরো পূর্বমেকদা রহিনি স্থিতঃ।
মদক্ষেলির আধার নিজাতি রমুনন্দনঃ। ৫৩।
ঐক্রং কাকস্তদাগত্য নথৈস্তঙ্গেন চাসক্ষথ।
মৎপাদাক্ষ্ র্থমারক্তং বিদদারামিষাশারা। ৫৪।
ততো রামঃ প্রবুধ্যাথ দৃষ্ট্যা পাদং কৃতব্রণম্।
কেন ভজে! কৃতং চৈভছিপ্রিয়ং মে সুরাজ্মনা।৫৫।
ইত্যুক্ত্যা পুরতো পশ্বদার্যমন্যাং পুনঃ তুনঃ।
অভিজ্ঞবস্তং রক্তাদাং নথতুগুং চুকোপ্য। ৫৬।

ভূনমেকমুপাদার দিব্যান্তেনাভিযোজ্য তথ।

চিক্ষেপ লীনার রামো বারসোপরি তজ্জ্বনম্। ৫৭

অভ্যন্তবদ্বারশক ভীতো লোকনে ক্রমৎপুনঃ।

ইন্দ্রক্রাদিভিক্ষাপি ন শক্যো রক্ষিতৃং তদা। ৫৮
রামস্য পাদরোরগ্রেইপতস্তীত্যা দরানিধেঃ।
শরণাগতমালোক্য রামস্তমিদমন্ত্রবীথ। ৫৯।

অমোঘমেতদক্তথ যে দত্তৈ কাক্ষমিতো ব্রজঃ।

সবাং দত্ত্বা ততঃ কাক এবং পৌরুষবানপি। ৬০।

উপেক্ষতে কিমর্থং মামিদানীং সোইপি রাঘবঃ?।

হনুমানপি তামাই প্রান্ত, সীতান্নভাষিতম। ৬১।

দেবি ! তাং যদি জানাতি স্থিতামন্ত্র রঘুত্রমঃ।

করিষাতি ক্ষণাদ্রশ্ব লক্ষাং রাক্ষসমন্তিতাম্। ৬২॥

অনস্তর কমলাক্ষী জানকী কেলপাল হইতে চূড়ামণি
মোচন করিয়া মাকভিকে প্রদান করত কছিলেন—হে কপীন্তা!
ব্রীরাম ও লক্ষাণ এই শিরোরজু দর্শনে ভোমাকে বিশ্বাস
করিবেন। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩

। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২।
হে পুরত! বিশ্বাসোৎপাদন জন্য ভোমাকে অন্য কোন বিষয়
কহিতেছি প্রবণ কর—"একদা চিত্রকূট পর্বতে অবস্থিতি
সময়ে রঘুনন্দন মদীয় অঙ্কে মন্তক সংস্থাপন পূর্বক নিদ্রা
যাইতে ছিলেন, ইভি মধ্যে ইস্ত্র পুরু বায়স রূপ ধারণ পূর্বক
নথ তুও দ্বারা আমার পাদাক্ষুষ্ঠে আঘাত করিয়া রক্ত্রণাভ
করিয়াছিল। অনন্তর রঘুপতি আমার ব্রণ-সংযুক্ত পাদ সন্দ্রশন করিয়া কহিয়া ছিলেন, হে ভক্তে! কোন্ হুরাত্মা আমার
এই বিপ্রিয় কার্যা করিল! ইভাবসরে রক্তাক বায়সকে সন্মুথে
দর্শন করিয়া কের্গাবিষ্ট হুইলেন। এবং দিবা তৃণাত্ত

সংখ্যেকন কারয়া তাছার উপরে পরিত্যাগা করিলেন। বাফন রাম বাণ দর্শনে ভীত হইয়া ইন্দ্র লোক গমন করিলেও ইন্দ্র ব্রহ্মাপ্রভৃতি দেবগণ তাহাকে রক্ষা করিতে সমর্থ ছইলেন না পরে অনন্য উপায় হইয়া কাক করুণা সিন্ধু রামের পাদাথে পতিত ছইল, প্রীরাম বায়সকে শরণাগত অবলোকন করিয়া কহিলেন—আমার এই অন্ত্র অমোঘ, অতএব তুমি একটা চক্ষু প্রদান করিয়া প্রস্থান কর, অনন্তর কাক, দক্ষিণ চক্ষু বিহীন ছইয়া গমন করিল' ছে মহাসক্তঃ একণে রঘুপতি আমাকে কি কারণে উপেক্ষা করিতেছেন? । ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬।৫৭।

হত্মান সীতা ভাষিত বাক্য প্রবণ করিরা ভাঁছাকে কহিল, স্থে দেবি! আপেনি এখানে অবস্থিতি করিভেছেন যদি রঘূত্তম জানিতে পারেন ভাষা হুইলে রাক্ষ্য মতিভা লক্ষা পুরী ক্ষত্ জানকা প্রাহতং বৎস! কথং ত্বং যোৎস্যদেহসূরৈঃ?
অতিস্ক্রবপুঃ দর্কে বানরাশ্চ ভবাদৃশাঃ॥ ৬৩॥
শুত্রা তদ্বচনং দেবৈর পূর্বেরপমদর্শরং!
মেরুমন্দরসঙ্কাশং রক্ষোগণবিতীষণম্॥ ৬৪॥
দৃষ্ট্রা সীতা হন্দুমন্তং মহাপর্বতিসন্ধিভম্।
হর্ষেণ মহতাবিফা প্রাহ তং কপিকুঞ্জরম্॥ ৬৫॥
সমর্বেংমি মহাসত্ত্ব! দ্রুজান্তি তাং মহাবলম্।
রাক্ষ্যান্তে শুভঃ পন্থা গচ্ছ রামান্তিকং দ্রুতম্।
বুভুক্ষিতঃ কপিঃ প্রাহ দর্শনাৎপারণং মম।
ভবিষাতি ফলৈঃ সর্বৈন্তব দৃষ্টো স্থিতৈর্হি মে॥৬৭
তথেত্যুক্তঃ স জানক্যা ভক্ষরিত্বা ফলং কপিঃ।
ততঃ প্রস্থাপিতোহগচ্ছজ্জানকীং প্রনিপত্য সঃ।
কিঞ্চিদ্দূরম্থো গড়া স্বাত্মনেবানুচিন্ত্র্যুৎ।। ৬৮॥

কার্য্যার্থমাগতো দুতঃ স্থামিকার্য্যাবিরোধতঃ।
আন্তংকিঞ্চিদসম্পাদ্য গচ্ছত্যধম এব সং। ৬৯।
আজোহহং কিঞ্চিদন্যক্ত কৃত্বা দৃষ্ট্বাথ রাবণম।
সম্ভাষ্য চ ততো রামদর্শনার্থং ব্রজাম্যহম্। ৭০।
ইতি নিশ্চিত্য মনসা বৃক্ষপণ্ডান্ মহাবলং।
উৎপাট্যাশোকবনিকাং নির্ক্ষামকরোৎ ক্ষণাৎ ৭
সীতাশ্রমনগন্ত্যক্ত্বা বনং স্থন্যং চকার সং।
উৎপাট্যক্র বিপিনং দৃষ্ট্বা রাক্ষপ্রোধিতঃ॥৭২॥
অপুচ্ছন্ জানকীং কোহসে বানরাক্তিক্তেটঃ॥

জানক্যুবাচ।

ভবতা এব জানতি মায়াং রাক্ষসনির্মিতাম । নাহমেনং বিজানামি দুংখশোকসমাকুলা। ৭৪

বাল মধ্যে ভক্ষপথ করিবেন: তচ্ছুবণে জানকী কহিলেন হে বংস! বানরগণ ভোমার ন্যায় অতি স্ক্রম কায়, অভএব তুমি অস্থ্যদিগের সহিত কি রূপে যুদ্ধ করিবে? হত্মান সীতা দেবীর বাক্য শ্রবণ করিয়া রক্ষগণ ভয়দর্শী মেরুমন্দর সদৃশ পূর্ব্ব রাক্য শ্রবণ করিয়া রক্ষগণ ভয়দর্শী মেরুমন্দর সদৃশ পূর্ব্ব রাক্য শ্রবণ করিল, সীতা হত্মানের মহাপর্বত সমিভ শরীর সন্দর্শনে অভ্যন্ত হর্ষাবিষ্টা হইয়া কপি-কুলরকে কহিলেন—হে মহাসক্ষ্য ভোমাকে মহাবল দেখিয়া রুঝিলাম তুমি যুদ্ধ করিতে সমর্থ হইবে। এক্ষণে তুমি সত্তর রাম স্মীপে গমন কর, পথি মধ্যে ভোমার মঙ্গল হইবে। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫। ৬৬। অনস্তর অনিল তনয় জ্ঞানকীকে কছিল আপনার দর্শন লাভ করিয়াছি বটে, কিন্তু আমে উপবাদী প্রযুক্ত স্থার্ভ হইয়াছি, এক্ষণে পারণ করিব। হে দেবি! আপনার সন্মুথবর্ভী সমস্ত ফল আমার পারণোপযোগী হইবে। পরে শীতা ঐ ফল ভক্ষণে আদেশ করিলে হত্মান্ নানা বিধ ফল ভক্ষণ করিয়া সীতাকে প্রণাম কল্পত প্রস্থান করিল, পরে

কির্দ্র গমন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিল—যে দুভ স্থামি কার্যার্থ সমাগত হইরা ঐ কার্যা অবিরোধে সম্পাদন পূর্বক যদি অন্য কোন কার্যা না করিয়া গমন করে, জবে ঐ দুভ অধম বলিয়া গানা ছইরাথাকে। অভএব অন্য এক অন্তুভ কার্যা সম্পাদনানন্তর রাবণকে দর্শন ও সভাযণ করিয়াই শ্রীরাম দর্শনে গমন করিব। মহাবল পরাক্রম মারুভি মনে মনে এইরপ নিশ্চয় করিয়া রুক্ষ সকল উৎপাইন করত ক্ষণ কাল মধ্যে সীতার নিকট্ছ বন ভিন্ন গমন্ত বন রক্ষ শূন্য করিল। ঐ সময় রাক্ষ্যীগণ হন্ত্যানকে দেখিয়া কছিল, হে জানকি! বানরের ন্যায় অন্তুভরূপ কে এই অশোক-বন উৎপাইন করিভেছে গ্রহণ ৬৮। ৬৮। ৬৯। বিত্যা

জানকী কহিলেন, হে রাক্ষসীয়াণ ! রাক্ষসের মারা প্রভাব ভোমরাই জানিতে পার—আমি শোক ছঃখ পরিতপ্তঃ হটরঃ ইত্যুক্তান্ত্রিতং গত্বা রাক্ষান্তো তরপীজিতা:।

হন্মতা কতং সর্বাং রাবণার ন্যবেদরন্। ৭৫।

দেব ! কশ্চিমহাসন্ত্রো বানরাকৃতিদেহভূথ।

সীতরা সহ সম্ভাষ্য হ্যুশোকবনিকাজকণাথ।
উৎপাট্য চৈত্যপ্রাসাদং বভঞ্জামিতবিক্রমঃ।। ৭৬॥
প্রাসাদরক্ষিণ সর্বান্ হয়া তত্রিব ভস্থিবান্।
তচ্ছুত্বা ভূর্ণমুখার বনভঙ্কং মহাপ্রিয়ম্॥ ৭৭॥
কিন্ধরান্ প্রেষরামাস নিযুতং রাক্ষ্যাধিপঃ।
নির্ভিয়চৈত্যপ্রাসাদপ্রথমান্তরসংস্থিতঃ।। ৭৮॥
হন্মান্ পর্বতাকারো লোহস্তম্ককতারুখঃ।
কিঞ্চিলাঙ্গ্লচলনো রক্তাস্যো ভীষণাকৃতি॥ ৭৯॥
আপতন্তং মহাসজ্বং রাক্ষ্যানাং দদর্শ সঃ।
চকার সিংহনাদং চ শ্রুত্বা তে মুমুহভূশম॥ ৮০॥

জাছি অতএব এই বানরকে কি প্রকার জানিব। অনন্তর ভ্ররণাকুলা রাক্ষণীগণ রাবণ সমীপে সত্ত্বর গমন করিয়া মাকতি কত সমস্ত কার্যাই নিবেদন করিল। হে রাক্ষণাধিণ ! মহাবল পরাক্রম বানর-দেহধারী এক বীর সীভার সহিত পরস্পর সম্ভাষণ করত ক্ষণকাল মধ্যে অলোক-বন উৎপাটন করিয়া হৈত্য প্রাসাদ চূর্ণায়মান করিয়াছে এবং ঐ প্রাসাদ রক্ষক রাক্ষ্যগণকে বিনাশ করিয়া নির্ভিগ্ন প্রাসাদের প্রথম থণ্ড মধ্যে অবস্থান করিতেছে। অনন্তর ভ্রন্ত প্রভাষা প্রথম বল রক্ষ্যাধিপ দশানন অভান্ত অপ্রিয় বন-ভক্ষ বৃত্তান্ত প্রবাণ করত উল্থিত হইয়া নিযুত সংখ্যক কিঙ্করগণকে প্রেরণ করিল। পরে পর্ব্বতাকার লেহি শুস্ত স্বর্গণ আমুধ্ধারী ভ্রুচানকাতি হক্তান্য হনুমান্ অপ্য অপ্য সমূহ দর্শন করিয়া ব্যারতর সিংহনাদ করিল, কিঙ্করগণ ঐ ভয়ানক নিনাদ প্রবাণ

হক্ষবোদধো দৃষ্ট্বা রাক্ষনা ভীষণাক্ষতিম।

নির্জন্ন বিষিবিধান্তোধিঃ সর্বাক্ষনঘাতিনম। ৮১।

তত উপায় হস্মান্ মুদ্গরেণ সমস্ততঃ।

নিষ্পিপেষ ক্ষণাদেব মশকানিব মুখপঃ॥ ৮২॥

নিহতান্ কিঙ্করান্ শ্রুড়া রাবণঃ ক্রোধমুচ্ছিতঃ।
পঞ্চেরনাপতীংস্তত্র প্রেসয়ামাস ছর্মানান্॥ ৮৩॥

হক্ষানপি তান্ সর্বান্ লোহস্তন্তেন চাহনং।

ততঃ ক্রুড্রো মন্ত্রিস্তান্ প্রেসয়ামাস সপ্ত সঃ॥ ৮৪

আগতানপি তান্ সর্বান্ প্রবিদ্ধানরেশরঃ।

ক্ষণান্নিঃশেষতো হড়া লোহস্তন্তেন মাক্ষতিঃ।
প্র্রিস্থানমুপাপ্রিত্য প্রতীক্ষন্ রাক্ষসান্ স্থিতঃ।

ততো জ্বগাম বলবান্ কুমারোহকঃ প্রতাপবান্॥৮৬

করিয়া মূচ্ছ। প্রাপ্ত ছইল। অনস্তর চৈ হন্য প্রাপ্ত কিম্বরগা গ্রহ্মস ধ্রংসকারী ভয়ানকাক্ততি মাক্তিকে দেখিয়া নানা প্রকার অন্ত্র শক্তর ধারণ প্রহার করিতে লাগিল। পরে কপিবর উথিত ছইয়া যেমন মূথপ মশককে নিম্পেষণ করে সেই প্রকার মাক্তি भना बात्रा ब्राक्रमभागरक निरम्भवन कविन। १०। १८। १४: 1981 99 । 96 । 92 । ६० । ६० । ६० । १८ । भारत मार्गनन কিঙ্কর গণের নিধন বার্তা এবণে কোধ মুচ্ছিত হইয়া মত্তবার্পর পঞ্সেনাপতি প্রেল ক্রিল, ছরুমান্ লেহিগদা দারা এ সেনাপভিগণকে যম সদনে প্রেরণ করিল। অনস্তর ক্রোধাবিষ্ট ছইয়া রাবণ সাত জন মন্ত্রিভনয়কে প্রেরণ করিল বানরেশ্বর পূর্বের ন্যায় ভাহাদিগকে আসিতে অবলোকন করিয়া লেছি দণ্ড হারা ক্ষণকাল মধ্যে ভাহাদিগকে বিনাশ পূর্বক রাক্ষস বৃন্দ নিরীক্ষণ করত পূর্বস্থানে উপবেশন করিল। অনন্তর মহাবল পরাক্রম রাবণ্টনর অক্রুমারকে সমাগত দেখিয়া মাক্ষতি আকাশ পথে উল্লেফন করত ঐ রাক্ষদের मल्डरकाश्वति मुकात बात्रा जाकृत कतिन, श्वत के मुकानाश्वर

ভমুৎপপাত হন্তমান্ দৃকীকাশে সমুদ্গরঃ। গগনাস্থ্রিতো মূর্দ্ধি মুদ্দগরেণ ব্যতাড়য়ৎ ॥ ৮ ৭ । হত্বা তমক্ষং নিঃশেষং বলং সর্বাৎ চকার সঃ ॥৮৮॥ ততঃ শ্রুত্বা কুমার্দ্য বধং রাক্ষ্যপুঙ্গবঃ। ক্রোধেন মহতাবিষ্ট ইব্রুদ্ধেতার্মব্রবীৎ ॥ ৮৯॥ পুত্র! গচ্ছামাহং তত্র ষ্মান্তে পুত্রহা রিপুঃ। হত্বা তমথবা বদ্ধা আনিয়িষ্যামি তেইন্তিকম্ ॥ ৯০॥ ইন্দ্রজিৎপিতরং প্রাহ ত্যন্ত শোকং মহামতে।। ময়ি স্থিতে কিমর্থং ত্বং ভাষদে ছুঃখিতং বচঃ ?। বদ্ধানেষ্যে ক্রভং তাত। বানরং ব্রহ্মপাশতঃ। ইত্যুক্ত্বা রথমারুহা রা**ক্ষরৈরছভিত্র তঃ।** ১২। জগাম বায়ুপুজ্ব্য সমীপং বীরবিক্রমঃ। ততোহতিগর্জ্জিতং শ্রুত্বা স্তম্ভযুদ্যম্য বীর্যাবান্।৯৩

মৃচ্ছি ভ হইয়া অক্ষকুমার কণকাল মধ্যে ধরণীতলে পতিত হইল, মহাবল মাক্তি অক্সুমার ও সমস্ত রাক্ষ্য সৈন্যগাণকে বিনাল করিলে দলামন কুমারের নিধন বার্তা শ্রবণে অভিলয় ्रकाधाविष्ठे ३३ त्रा इ<u>स</u>ख्य (क कश्मि— (१ शूख ! ^१ व शून প্রাণাধিক কুমারের নিধনকারি মহারিপু অবহিত আছে, শানি ঐ স্থানে গামন করত ঐ শক্তকে নিধন করিয়া অথবা রজ্জু দ্বারা বন্ধন করিয়া ভোমার সমূবে আন্যন করিব। ইন্দ্রজিৎ কহিল—ছে মহামতে! শোক পরিত্যাগ কর্মন, আমি ক্লীবিত থাকিতে কি নিমিত্ত হঃখিত হুইতেছেন ?—হে ভাত ! ঐ বানরকে ব্রহ্মপাশ দারা বন্ধন করিয়া সত্ত্রই আপনার मभीरभ जानमन करिव। महायल हेलांबिश नगाननरक धहेन्नभ ক্ষিমা বস্তুত্ব রাক্ষ্মগণের সহিত র্থারোহণ করত মাক্তির ন্মীপে গমন করিল।৮৩।৮৪ ৮৫ ৮৬।৮৭।৮৮।৮৯ ৯০।৯১।৯২। ইইরা 🗳 পরমান্তা 🕮রামের পাদগদ্ম লাভ করিরা থাকে,

উৎপপাত নভোদেশং গরুক্সানিব সাক্লভিঃ। ততো खमखः नक्ति इस्मखः भिलीमूर्यः। २८। বিদ্ধা তদ্য শিরোভাগং ইযুভিশ্চাইভিঃ পুন:। হৃদয়ং পাদবুগলং ষড়্ভিরেকেন বালধিম্।৯৫। ভেদয়িত্বা ততো ঘোরং সিংহ্নাদ্মথাকরে। । ততোহতিহধান্ত্রাংস্তন্ত্রমুদ্যম্য বীর্যাবান্। ১৬ क्यान मात्रिंश मार्थः त्रथः ठाठूर्गत्रः कनार। ততোইন্যং রথমাদায় মেঘনাদো মহাবলঃ। ১৭ শীত্রং ত্রন্ধান্তমাদায় বন্ধা বানরপুঙ্গবম্। নিনায় নিকটং রাজ্ঞে। রাবণস্য মহাবলঃ। ১৮ যস্য নাম সভতং জপস্থি যে-হজ্ঞানকর্মাকৃতবন্ধানং ক্ষণাৎ। সদ্য এব পরিমুচ্য তৎপদং যান্তি কোটিরবিভাস্বং শিবম্।৯৯।

मुकाब भारत भूक्वक भक्तिराज गकरकृत नाम उर्कर्तर ভ্ৰমণ করিতে লাগিল ঐ সময় ইন্দ্ৰজিং শিলী মূথ পাশ ছার: হতুমানকে বন্ধন করিয়া অফ বাণ হ'রা মন্তক, ছয় বাল बाबा वक्कः इन, এक वान बाबा शानगुगन विक कतिया অভি খোরতর সিংহনাদ করিল। পরে হতুমান্ সহর্বে মুদ্রাঃ घाता व्ययं अ [मात्रियिक पूर्वात्रभान कतिया क्रमकान मादा यव मन्दन अवत् कतिम। अनस्त मरावीया स्माम ब्रथास्त्र আরোহণ করিয়া ব্রহ্মান্ত হারা মাকভিকে বন্ধন পূর্ব্বক রাক্ষ্যা-**धिश म्लानत्मत्र मभीत्र शमन कत्रिम। त्य विदारमद्र नाम** নিরস্তর সরণ করিলে লোকে অজ্ঞানত্বত কর্ম-পাশ হইতে বিমৃক্ত মহাবল মাক্তি ইল্লেঞ্জিতের গ্র্জন লব্দ প্রবণ করিছা মাক্তি সেই , জীরামের পাদপ্য দর্শদা ছংপালে সংস্থাপন

তদ্যৈৰ রামন্য পদাস্কং সদা হৃৎপদ্মমধ্যে সুনিধায় মাক্তিঃ।

করিয়া **সর্কাণা সমস্ত বন্ধনে নির্মৃক্ত আছে, অতএ**ব সামান্য পা**শ দা**রা ভাছাকে বন্ধন করা বিফল। ৯৩; ৯৪। ৯৫।৯৬।৯৭। ১৯৮। ৯৯। ১০০। সদৈৰ নিৰ্ম্মুক্তসমস্তবন্ধান² কিন্তুস্য পাশৈরিতবৈশ্চ বন্ধানৈ: ? ॥ ১০০

ইতি শ্রীমনধ্যাত্মরামারণে উনামহেশ্বরদম্বাদে স্থানরাকাণে তৃতীরোহধ্যার:।

ইতি জ্ঞীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে স্থলাকাতে তৃতীয়োহধ্যায়ঃ।

চতুৰ্থো ২ ধ্যায়ঃ।

যান্তং কপীন্তং গৃতপাশবন্ধনং
বিলোকয়ন্তং নগরং বিভীতবং ।
অতাড়য়মুটিতলৈ সুকোপনাঃ
পোরাঃ সমস্তাদমুজান্ত ঈক্ষিভুম । ১ ।
ব্রহ্মান্ত্রপ্রমান্ত্রপ্রজ্ঞান্ত হৃম্মানপি কল্পরজ্ঞান্ত
প্রতা ধ্যৌ কাধ্যবিশেষগৌরবাং । ২ ।

মহাদেব কহিলেন।—মেঘনাদ কর্ত্ব ব্রহ্মণাশ নিবদ্ধ ইইয়া
মারতি লক্ষাপুরী দেবিতে দেবিতে ভীত জনের ন্যার গমন
করিতে লাগিল, ঐ সময় পুরবাদী রাক্ষদগণ মাকতিকে
দেবিবার জন্য ইচ্ছুক ছইয়া মুক্তি ঘারা ভাতন করিতে
লাগিল। ব্রহ্মণাশ্বহ্মদত বর নিবদ্ধন ক্ষণ কাল মাকতিকে
পর্শ করত সত্ত্বই অন্তর্হিত হইল। হুম্মাশ্বহ্মণাশ
ক্ষেতিতি হইয়াছে জানিয়াও রাবণকে দেবিবার জন্য
ব্জ বদ্ধ প্রায় গ্যন করিল। ইক্রেজিৎ মাক্তিকে সভা

সভান্তরস্থা চ রাবণস্থ তং
পুরো নিধায়াই বলারিজিন্তনা।
বন্ধো ময়া প্রকাবরেণ বানরঃ
সমাগতোইনেন ইতা মহাস্করাঃ॥ ৩॥
যদুক্তেমপ্রার্য্য ! বিচার্য্য মন্ত্রিভিরিধীয়তামেষ ন লোকিকো হরিঃ।
ততো বিলোকগাই সরাক্ষমেশ্বরঃ
প্রাইস্তমপ্রে ভিত্তমপ্রনাদ্রিভম্। ৪।

মধ্যস্থ রাবণের স্মাপে আনম্যন করিয়া কহিল, ছে আর্যা! আমি এই হ্নুমানকে একপাশ দারা বন্ধন করিয়া আনম্যন করিয়াছি—মহাস্থর রাক্ষ্যপণ এই মাক্ষতি কটুক নিহত হইরাছে, অতএব মন্ত্রিগণের সন্থিত বিচার করিয়া যে যুক্তি হয় বিধান কক্ষন, কিন্তু এই বানরকে সামান্য বলিয়া গণ্য করিবেন না। অমন্তর রাক্ষ্যাধিপ সমুখ্য প্রহন্তকে সংযোধন করিয়া কহিল, হে প্রহন্ত ! এই বানরকে জিজ্ঞাসা কর, কি কারণ—কোন হান হইতে স্মাগত হইয়াছে, এবং কি কারণে বল দার্য বন সমূহ ও রাক্ষ্যগণকে বিনাশ করিয়াছে ।

श्रह शृटेक नगरमी किमानं । কিমত্র কার্য্যং কুত এব বানরঃ। বনং কিমৰ্থং সকলং বিনাশিতং रुजाः किमर्थः सम ताकना वलार । व । ততঃ প্রহন্তো হযুমন্তমাদরাৎ পপ্রচ্ছ কেন্দ্র প্রাহিতোহসি ? বানর !! ভরং চ তে মাস্ত বিমোক্ষাদে ময়া সত্যং বদস্বাথিলুরাজসন্নিধৌ। ৬। ততোহতিহধাৎপ্রনাত্মজা রিপুং নিরীক্ষ্য লোকত্রয়কণ্টকাস্থুরম। বক্তবুং প্রচক্রে রঘুনাথসৎকথাং ক্রমেণ রামং মনসা স্মরশ্বছঃ॥ १॥ শুণু স্ফুটং দেবগণা ভামিত্র হে রামশু দুতোঽহমশেবছাৎস্থিতেঃ। যক্তাখিলেশন্য হৃতাধুনা ত্য়া ভার্য্যা স্বনাশায় শুনেব সদ্ধবিঃ॥ ৮ ॥ স রাঘবোহভোত্য মতঞ্চপর্কতং सूजीवरेमजीयनमञ्च महिर्धे।

অনন্তর প্রহন্ত মাক্তিকে সমাদরে জ্জিসা করিলু—হে বানর!
তুমি কোন্ জন কর্ত্ত প্রেরিভ হইয়াছ, নির্ভয় ইইয়া নিথিল
বাজ্যাধিপতি দশাননের সমীপে সভ্য বাক্যে প্রকাশ কর—
ভোমাকে বন্ধন ইইতে মোচন করিব। ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬।

অনন্তর হুমুমান ত্রিভ্বনের কণ্টক শ্বরপ বাবণকে দর্শন করিয়া বারখার শ্রীরামকে মনে মনে শ্বরণ করত জীরামের সং-কথা কহিতে আরম্ভ করিল—হে দেবামিত্র' যে জগদীর্খর জীরা-মের ভাগ্যা জাগজননী সীতা কুরুর কর্জ্ক যজীয় হবি প্রায় ভোমা কর্ত্ব আশ্ববিনাশার্থ অপস্তা হইরাছেন, আমি সেই শ্রীরাম

কুত্রিকবার্ণেন নিহত্য বালিণং সুগ্রীব্যেবাধিপতিং চকার উমী ন। न वानवानामधित्या महावजी महाव**रेणका** नत्रपृथरका हि जिः। রামেণ সার্কং সহ লক্ষণেন ভো প্রবর্ষণে হমর্বযুক্তো হব ভিন্ত ।। ১০ ॥ সঞ্চোদিতান্তেন মহাহরীশ্বরা ধরামৃতাং মার্গরিতৃং দিশো দশ। তত্তাহমেকঃ প্রনাত্মজঃ কপিঃ সীতাং বিচিম্বন্ শনকৈঃ সমাগতঃ। ১১। দৃষ্টা মরা পদ্মপলাশলোচনা শীতা কপিড়াদ্বিপিনং বিনাশিতম্। দৃষ্টা ততোহহং রভদা সমাগতানু মাং হন্তকামান্ ধৃতচাপদায়কান্॥ ১২ ॥ ময়া হতান্তে পরিরক্ষিতৃং বপুঃ थिएता हि (मरहार्श्यमामहिनाद थएका !।

প্রেরত দৃত। ঐ রঘ্বর পর্বতোপরি আগমন করিয়া স্থাীবের
সহিত আনল সমক্ষে মিত্রতা করত এক মাক্র বাণ দারা বাণিক্ষে
নিধন করিয়া ঐ স্থাীবকে রাজ্যাধিপতি করিয়াছেন। বানরগণের অধিপতি মহাবল পরাক্রম স্থাীব মহাবল সম্পার কোটি
বানর গৃগ ও শ্রীরাম লক্ষ্মণের সহিত অবস্থিত হইয়া ধরাআছা
দীতার অত্বেষণার্থ মহা প্রতাপশালী কপিগণকে নানা দিকে
প্রেরণ করিয়াছেন, তন্মধ্যে আমি প্রন তনর এক বানর
দীতার অত্বেষণার্থ এই স্থানে স্মাগত হইয়াছি । ৭। ৮।
১০। ১০। ১১।

অনস্তর আমি পদাপলাশলোচনা জনক ত্হিতা জানকীকে
নিরীক্ষণ করিয়া বনচর বানবের স্থভাব বশত বন সমূহ নফ
করিয়াছি, অসুরগণ ঐ বিনাশিত বন সমূহ দর্শন করিয়া

ব্ৰদ্ধান্তপাশেন নিবধ্য মাং ডভঃ
সমাগমন্ত্রেঘনিনাদনামকঃ ॥ ১৩ ॥
স্পৃতি ব মাং ব্রহ্মবরপ্রাক্তাবতন্তাক্ত্রা গভং সর্ব্রমবৈদ্যি রাবণ ! ।
ভথাপ্যহং বন্ধ ইবাগতো হি তং
প্রবন্ধ্যমং করুণারসাদ্ধীঃ ॥ ১৪ ॥
বিচার্যা লোকন্তা বিবেকতে। গতিং
ন রাক্ষ্যীং বুদ্ধিমুপৈছি রাবণ ! ।
দৈবীং গতিং সংস্তিমোক্ষহেত্কীং
সমাশ্রয়াতন্তেহিতায় দেহিনঃ । ১৫ ।
তং ব্রাহ্মণোক্ষ্ ভূমবংশসন্তবঃ ।
পৌলক্ত্যপুজোইদি কুবেরবাদ্ধবঃ ।

দেহাত্মহুদ্ধাপি চ পশ্য রাক্ষসে।
নান্তাত্মহুদ্ধা কিয়ু রাক্ষদো ন হি ॥ ১৬ ॥
শরীরবৃদ্ধীন্দ্রিরভূপেনস্ততি—
র্ব তেন চ ত্বং তব নির্ফিকারতঃ।
অভানহেতোশ্চ তবৈব সম্ভতে
রসন্ত্মস্তাঃ অপতো হি দৃষ্ঠবং ॥ ১৭ ॥
ইদং তু সত্যং তব নান্তি বিক্রিয়া
বিকারহেতুর্ন চ তেহম্বরতঃ।
নথা নভঃ সর্ফাগতং ন লিপাতে
তথা ভবান দেহগতোহপি স্ক্রকঃ।
দেহেন্দ্রিরপ্রাণশরীরসঙ্গতভাত্মতিবৃদ্ধাথিলবন্ধভাগ্ভবেং ॥ ১৮ ॥

ধরুবর্ষাণ ধারণ পূর্বক আমাকে বিনাশ করিবার জন্য বিহ্নতের নাায় সত্তর সমাগত হইলে আমি স্কীয় শরীর সংবক্ষণার্থ ভাছাদিগকে শমন ভবনে প্রেরণ করিয়াছি, কারণ সমস্ত জীবেরই দেছ অতিশর প্রিয়তম। পরে মেখন্বদ আমাকে ব্রহ্মপাশ দারা বন্ধন করিয়া এক্তানে আনয়ন করিয়াছে। ছে দশানন। ঐ বন্ধপাশ বন্ধ দত্ত বরাভিভূত হেত আমাকে স্পর্শ করিয়াই অন্তহিত হইল, ভাহা क्यानिवां व्योगि (जागांक हिप्लाशाम मिनाव क्या मवार्क চিত হইয়া পাশবন্ধ প্ৰায় তোমার নিকট সমাগত হইয়াছি, হে मश्चन! जूमि विटवक वृक्षि बादा श्वत्रवार्थ विज्ञात कत्रज অনর্থতেতু রাক্ষ্ম বৃদ্ধি পরিত্যাগ করিয়া জীবের মৃক্তির চেতুভূভা ेन्दी शिंह ममाबार कर- (र म्यानन ! एन्ड्रे बाब्रा बरेक्न অভিন্ন বৃদ্ধি দারা রাক্ষসত্ত প্রযুক্ত এই মুক্তিমার্গে আমার অধিকার হইতে পারে না একখাও বক্তবা হইতে পারে না, যে হেড়ু তুমি উত্তম বংশ সম্ভুত-মুনিবর পুলন্তা-চনর ও কুবের ৰান্ধব ত্রান্ধণ, অভএব ত্রান্ধণের সর্বপাই মৃক্তি

বার্গে অধিকার বিদ্যমান আছে। দেহ হইতে আত্মা অতিবিক্ত এরপা তেদ বৃদ্ধি করিলেও তুমি রাক্ষম নহ কিছ ব্রাহ্মণ জন্য শরীর বিশিষ্ট আত্মাও ব্রাহ্মণ বলিয়া অস্ট্রীরুত্ত হইবে, অতএব তুমি নির্ব্বিকার জ্ঞানময় আত্মা স্থরপাই নির্দ্দেশ ইবলে শরীর, বৃদ্ধি ও ইব্রেয় ছংখ সমুছের সম্বন্ধী নহে এবং শরীরাদিও তোমার নহে এবং নিজিত জনের স্বপ্র দৃষ্ট মণি রক্সাদি প্রায় অজ্ঞানের কারণীভূত পূক্র দারাদিও সংপদার্থ নহে, হে দশানন! বিকার ও বিকারের কারণ কিছুমাত্রত তোমাতে লক্ষিত হইতেছে না এই যথার্থ কহিলাম। যে প্রকার আকাশ ক্ষিত্যাদি সমস্ত পদার্থ সঙ্গত হইরাও কোন এক পদার্থে সংলিশু নহে, দেই প্রকার তুমি স্ক্র রূপে দেহগত হইরাও ঐ দেহে সংলিশ্র নহ, দেহত আমি এই রপা অন্তেদ জানী পৃক্ষই এই অপার তব সংসারে নিবন্ধ, হইরা থাকে জানমন্ধ অন্তন্য অনম্বন্ধ স্থিক আনমন্ধরপা, এইরপা দেহ ভিন্ন জানবান্ হইলেই জীবান্ধা ঐ তববন্ধন হইটে

विश्वाख (स्वास्य कार्य कर्ता সানন্তাবোহ্ছমিতি প্রয়ুচাতে। দেহোহপানাত্মা পৃথিবীৰিকারজো ন প্ৰাণ আত্মানিল এব এব সঃ॥ ১৯॥ মনোপ্যহস্কারবিকার এব নো न गि वृष्टिः शक्र खर्कित्वा । আছা চিদানক্ষময়োইবিকারবান দেহাদিসজ্ঞাদ্যাভিরিক্ত ঈশ্বরঃ ॥ ২০॥ निवक्षता मुक्त छेशाधिकः मना জ্ঞাত্ত্বৈৰ মাজানমিতে। বিমুচ্যতে। অতো ২হমাত্যন্তিকমোক্ষসাধনং বক্ষ্যে পুণুদ্ধাবহিতো মহামতে! ॥ ২১॥ বিষ্ণোহি ভক্তিঃ সুবিশোধনং ধিয়-स्टा स्टब्डानम्हीर निर्मालम्। বিশুদ্ধতন্ত্ব নুভবো ভবেত্ততঃ मयाधिनिषा भव्रयः भनः खटकर॥ २२॥

মৃক্তি লাভ করিয়া খাকেন এবং নেছ পৃথিবীর বিকার জন্য দাক্ষা ছইতে ভিন্ন বায় স্থাপ-প্রাণ্ড আক্ষা ছইতে ভিন্ন প্রকার স্থাপ ননত আক্ষা ছইতে ভিন্ন প্রকার করিব আক্ষা ছইতে ভিন্ন প্রকার করিব আক্ষা ছইতে ভিন্ন কিন্তু আক্ষাকে নির্মাকণর মির্ম্ভান আনন্দ স্থাপ লাভ্য বলিয়া নিক্ষা করিলেই জীব ভব বন্ধন ছইতে বিমৃক্ত ছইয়া খাকে। অভএব, হে মহামতে! ভোমাকে অভান্ত মুক্তি লাখন উপদেশ প্রদান করিতেছি অবণ কর --প্রমাক্ষা সন্তিন বিক্তুতে ভক্তি হই লই

আতা ভলমান হরিং রখাপতিং
রামং পুরাণং প্রকৃত্তে পরং বিভূম্
বিস্কৃত মৌর্যাং কদি শক্তাবনাং
ভলম রামং শরণাগতিপ্রিয়ম।
দীতাং পুরকৃত্তা সপুল্লবান্ধবো
রামং নমক্তা বিমৃচ্যদে ভরাহ॥ ১৩
রামং পরাম্বানমভাবরন্ কনো
ভক্তা কদিছং ফ্থনপ্রমন্ত্রান্ধনো
ভবাস্ব্রেদ্রাক্রনা
ভবাস্ব্রেদ্রাক্রনা
ভবাস্ব্রেদ্রান্মরকিভারিবং।

জ্বি সংশোধন হয়। পরে অত্যন্ত নির্মান জান সমুৎপন্ন হর জনন্তর বিশুজ তত্ত্বামূত্ব হয়, পরে সম্যক তত্ত্ব জ্ঞান লাভ করিমা জীবাজা প্রমন্তক্ষ পদে সংলীম হয়— কে দশানন! আদ্য মুর্থতা ও শক্ত ভাব পরিভাগা করিয়া প্রবাভ্যন রমাপতি শরণাগত-প্রিয় জীরামকে তজনা কর এবং পুত্র বান্ধবযাণের সহিত মিলিভ হইরা জানকীর সহিত জীরামকে মম্বার্থকরিরা সমস্ত ভীতি হইতে মুক্তি লাভ কর, হে রাক্ষপাধিপ! যে জন প্রমান্ধা স্থ ক্ষরপ জীরামকে অংপত্রে ভাবনা করেনা— ঐ ত্বাজ্যা জড় মতি— কি প্রকারে ত্রংথ ক্ষরপ ভ্রমানা বিশিষ্ট এই ভবাধ্বি সমুত্রীণ হইতে পারিবে? বদি ঐ শরণাগত-প্রিয় শীরামকে ভ্রমানা না কর তব্ব জ্ঞান ক্ষরপ জ্ঞার দ্বানা ভীবান্ধা-সহায় হীন শক্ত প্রার্থনি ক্রত হইবে, যাহার জ্ঞান সমুৎপন্ন না হর ভাহাব ক্ষরণ

নরস্তধাহধঃ সক্তেশ্চ পাতকৈবিমোক্ষারা ন চ তে ভবিষ্যতি ॥ ২৫ ॥
ভাষা মৃতাস্থাদসমানভাবিতং
তদ্বায়ুস্নের্দেশকক্ষরোহস্পরঃ ।
অম্ব্যমাণোহভিক্ষা কণীশ্বং
কগাদ রক্তাস্তবিলোচনো জ্বলন্ ॥ ২৬ ॥
কথং মমাগ্রে বিলপস্থভীতবং ?
প্রবঙ্গমানামধ্যোহসি ছুইধীঃ ।
ক এব রামঃ কত্যো বনেচরো ?
নিহ্মি স্থ্রীব্যুতং নরাধ্যম্। ২৭ ।
জ্বাং চাদ্য হন্তা জনকাত্যুজ্বাং ততে।
নিহ্মি রাঝং সহলক্ষ্যণং ততঃ ।
স্থ্রীব্যুত্থে বলিনং কপীশ্বরং
স্বানবৈত্ত্র্যুগ্রিত্বেণ বানর ! ।

শ্রুত্ব দশ্জীববচ: স মারুতিবির্দ্ধকোপেন দহলিবাসুরম্। ২৮॥
ন মে সমা রাবণকোটয়োহধমা
রামস্ত দাসোহমপারবিক্রমঃ।
শ্রুত্বাতিকোপেন হস্মতো বচো
দশাননো রাক্ষসমেকমন্তবীৎ॥ ২০॥
পাশে স্থিতঃ মারয় ধণ্ডশঃ কপিং
পণ্যন্ত সর্কেইসুর্মিত্রবান্ধবাঃ।
নিবারয়ামাস ততো বিতীষণো
মহাসুরং সায়ুধমুদ্যতং বধে। ৩০।
রাজন বধাহোঁ ন ভবেৎকথঞ্চন!
শ্রেতাপযুক্তৈঃ পররাজবানরঃ।
হতেইস্মিন বানরে দূতে বার্তাং কো বা নিবেদয়েং

পাতক হইতে বিমুক্তি শক্ষাও হইতে পারিবে না । ১২ ! ১৩ ! । ১৪ | ১৫ | ১৬ | ১৭ | ১৮ | ১৯ | ২০ | ১১ | ২২ | ২৩ | । ২৪ | ২৫ |

দেবতা বিরোধী হ্রাক্সা দশানন মাক্তির এই অমৃত কল্প হিতকর বাক্য অবণ করত ক্রোধে জলদ্মি প্রায় হইয়া আরক্তিম নয়নে মাক্তিকে কহিল—রে হৃষ্ট বুদ্ধে তুমি বানরাধম হইয়া আমার নিকট নির্ভ্তরে প্রলাপ করিভেচ, সেই রাম কে? বনচারী—তুমিই বা কে? আদ্যুই তোমাকে যম সদনে প্রেরণ করিয়া অনক-তনয়া সীতাকে বিনাশ করিব, পরে রাম লক্ষণ ও বানরগণের সহিত কপীখর স্থাীবকে অচির কাল মধ্যে বিনাশ করিব! অনস্তর মাক্তি দশক্ষ রাবণের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া কোপানলে ভাহাকে ভক্ষসাং করিতে উদ্যত হইয়া কহিল, রে রাবণ ! আমি ত্রিভ্রনেশ্ব শ্রীরামের বিক্রমশালী দাস বটে, কিন্তু ভোমার মত কোটি রাবণও আমার তুলা ছইতে পারে না। দশানন মাক্তরে বাক্য শ্রবণে অতি কোপাত্রিত হইয়া পার্ম্ম থক রাক্ষসকে কহিল, হে রাক্ষস! এই বানরকে খণ্ড থণ্ড করিয়া যম সদনে প্রেরণ কর। দেবতাগণ, মিত্রগণ ও বান্ধরগণ অবলোকন করক। অনন্তর মারুতির নিধনে সমুদ্যত মহাবল রাবণকে নিবারণ করত বিভীষণ কহিল—হে রাজন্! পররাজ্য হইতে সমাগত বিক্রমশালী বানর কদাচ বধার্হ হয় না, এই রাম-দূত বানর নিহুত হইলে যে ক্রীরামকে উদ্দেশ করিয়া বানর বধে সমুদ্যক

चार्छ। वधमभः किश्चिमनाकिष्ठत्र वानदेवः। সচিক্ষে। গচ্ছৰু হরিষ্ণ দৃষ্ট্রা যাস্যতি জ্রুভম্॥ বামঃ স্থূগ্রীব**দহিতন্ততো যুদ্ধং ভবেত্তব।** বিভীষণবচঃ শ্রুত্বা রাবণোষ্ঠপ্রেডদেরবী । ৩৩॥ বানরাণাং হি লাঙ্গুলে মহামানো ভবেৎকিল। অতো বস্তাদিভিঃ পুদ্ধং বেষ্টরিত্বা প্রয়ত্বতঃ ॥৩৪॥ বহ্নিনা যোজ্যিত্বৈং ভ্রাময়িত্বা পুরেইভিতঃ। বিসর্জ্যত পশান্ত সর্ফে বানরযুথপাঃ॥ ৩৫॥ তথেতি শণপট্টেশ্চ বক্তৈর নাৈরনেকশঃ! रिजनारिकस्विचेशामाञ्चलाङ्गः माक्रस्जिन् वृम्॥७७॥

পুচ্ছাত্রে কিঞ্চিনলং দীপ্রিভাথ রাক্ষ্যাঃ। রজ্জ্জিঃ স্থৃদৃঢ়ং বদ্ধা ধৃত্বা তং বলিনোইসুরাঃ ১৩৭৪ नमखान्बामशामाञ्चरम्हादारशमिति वानिनः। जूर्वधादेवर्धावत्रखखाज्त्रत्खा मूक्मू कः ॥ ०৮ ॥ ह्यूय शिल ७९ मर्खर त्राष्ट्र किक्षिक्रिकीर्यु ।। গড়া তু পশ্চিমদারসমীপং তত্ত্র মারুতিঃ॥ ৩৯॥ स्टका वजूव वरकारका निःमृजः श्रुनत्रभारमो। বভূব পর্বভাকারস্তত উৎপ্লুত্য গোপুরম্॥ ৪০॥ তত্তৈকং স্তম্ভ্রমাদায় হত্বা তানু রক্ষিণঃ ক্ষণাৎ। বিচার্য্য কার্য্যশেষং সঃ প্রাসাদাত্রাদ্ গৃহাদ গৃহম্॥ উৎপ্লুত্যোৎপ্লুত্য দন্দীপ্তপুচ্ছেন মহতা কপিঃ। দদহে লক্ষামথিলাং সাট্টপ্রাসাদতোরণাম্ ৪ ৪২ ॥

হইয়াছ ঐ রামকে সীভার বার্তাইবা কে বিজ্ঞাপন করিবে ? **অত**এব বানব্ৰকে বধ **অপেক্ষা কোন এক চিহ্নে চিহ্নিভ করাই** কর্ত্তব্য, বানর এইরূপ চিহ্নিত হইয়া রাম সমীপে গমন করুক্ত; ্যরূপ চিহ্ন দর্শন করিয়া শ্রীরাম স্মগ্রীবের স**হিত সত্ত**র আগমন করিলে তাহার সহিত তোমার যুদ্ধ হ*টা*বে, রাবণ বিভীষণের বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিল-হে রাক্ষ্সগণ! বানরেরা লাঙ্গুলে অভ্যস্ত অভিমান করিয়া থাকে অভএব মূতাক্ত বস্ত্র ধারা লাঙ্গুল বেক্টিত করিয়া অগ্নি প্রজালন করত পুরমধ্যে চতুর্দ্ধিগে ঘূর্ণিত করিয়া পরিত্যাগ কর, বানরগণ मर्मन कदिरव । २७ । २१ । २৮ । २৯ । ७० । ७১ । ७२ । ७७ । 1 10 1 80

মহাবল অসুরগণ তাহাই কর্ত্তব্য বিবেচনা করিয়া মূতাক শণ বস্ত্র পট্ট বস্ত্র ও অন্যান্য নানাপ্রকার বস্তু দ্বারা মাকতির লাগুল দূঢ়রূপে বেষ্টিত করিয়া তদপ্রভাগে

মাৰুতিকে দৃঢ় রূপে বন্ধন করিয়া "এই বানর চেরি" এই কথা কহিতে কছিতে চতুর্দিকে ভ্রমণ করাইতে লাগিল, এবং নানাবিধ বাদ্যোদম করত পুনঃপুনঃ তাড়ন করিতে আরম্ভ করিল। হন্তুমান রাবণের কিঞ্চিৎ অনিষ্ট করিবার বাসনায় রাক্ষ্যের ছুঃসহ ব্যাপারও কিঞ্চিৎ কাল সহ্য করিল। পরে পুৰীর পশ্চিম ছারে গমন করিয়া সূত্র রূপ ধারণ করত রজ্জুবন্ধন হইতে নিঃস্ত হইয়া পুনব্দার প্রতাকার শরীর ধারণ করিল, অনন্তর পুংদ্বারের উপরিভাগে উলক্ষন করিয়া একস্তম্ভ গ্রাহণ করত ফণকাল মধ্যে রাক্ষস্থাণকে চূর্ণ বিচূর্ণ করিয়া ফেলিল! বুদ্ধিমান মান্ততি অপর কি কর্ত্তব্য এইটি বিশেষ নপ চিন্তা করিয়া প্রাসাদের উপরি ভাগ হইতে প্রতি গৃহে ক্রমণ উল্লম্ফন করত প্রজালিত মহা কিঞ্চিছিল প্রজ্ঞানিত করিয়া দিল। পরে রজ্জ্ঞারা লাজ্লি দারা অটালিকা ও ভোরণের সহিত সমস্ত লঙ্কাপুরী

হা তাত! পুত্র! নাথেতি ক্রন্দমানাঃ সমস্কতঃ।
ব্যাপ্তাঃ প্রাসাদশিখরেইপ্যার্কা দৈতাযোগিতঃ ॥
দেবতা ইব দৃশ্যন্তে পতন্ত্যঃ পাবকেইথিলাঃ।
বিভীয়ণগৃহং ত্যক্ত্যা সর্বাং গন্মীকৃতং পুরুষ। ৪৪।
তত উৎপ্লুতা জলঘো হনুমাঝারতাত্মজঃ।
লাঙ্গুলং মজ্জরিত্বান্তঃ স্বস্থচিতো বভূব সং। ৪৫।
বারোঃ প্রিয়দখিতাক সীতরা প্রার্থিতোইনলঃ।

ন দদাহ হরে: পুচ্ছং বভূবাত্যস্তশীতল:। ৪৬।
যন্ত্রামনং স্মরণধূতসমন্তপাপাস্তাপত্রানলমপীহ তরস্তি সন্তঃ।
তক্তৈব কিং রঘুবরস্তা বিশিষ্টদূতঃ
সন্তপ্যতে কথমসৌ প্রাক্তানলেন ?। ৪৭।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর দহাদে স্থান্দরাকাণ্ডে চতুর্পোইধ্যায়ঃ।

ভশ্বদাৎ করিল। বহি পরিবাধ্য হইলে সমস্ত পরবাসী
াক্ষদগণ হা তাত! হা পুত্র! হা নাথ। ইড়াবার শব্দ করত চতুর্দিকে রোদন করিতে লাগিল। প্রাদাদ শৃল্পো-পরি সমার্কার রাক্ষ্যীগণ অগ্ন মধ্যে নিপতিত হইয়া দেবতা প্রোয় প্রতীয়মান হইতে লাগিল, বিভীষণের গৃহ বাতীত সমস্ত লক্ষাপুরী ভশ্মিভূতা হইল। অনস্তর হনুমান মাক্তি উল্লেখন করিয়া জল মধ্যে লাঙ্গুল নিম্ম করত স্কন্থ চিত্তা-গ্রভব করিল। হনুমান্ বহির প্রিয় স্থা প্রযুক্ত বিশেষতঃ সীতা দেবীর প্রার্থনা হেরু অনল মাক্তির লাঙ্গুল দহন করে

নাই অভএব অভাপ্ত শীভল হইল। গাঁহার নাম অবদ করিলে সমস্ত পাপ নিশ্ব ভাইরা তৎক্ষনাৎ ভাপর্যানল অর্থাৎ আধান্তিক ভৌতিক ও দৈনী অনল, সন্তব্য কবিজে পারে এই রামের প্রধান দৃত মাক্তি সাধারণ বৃহ্চি দ্বো কেন পরিতপামান ইইবে গুড্ড।ত্য ভিনাত্ম। ১৯ । ৪০ । ৪৯ । ৪২ : ৪১ : ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ |

> ইতি **জ্ঞানদ্যাত্মরামারণে উনামহের্বস্থা**ল স্থাকাণ্ডে চতুর্বোহ্গারঃ !

প্রকমোইধ্যায়ঃ।

ততঃ সীতাং নমস্কৃত্য হকুমানত্রবীদ্বচঃ।

আজ্ঞাপরতু মাং দেবি ! ভবতী রামদন্নিধিম্ ।>
গচ্ছামি রামস্তাং দুষ্টুমাগমিষ্যতি সামুদ্ধঃ।
ইত্যক্ত্য ত্রিঃ পরিক্রম্য ক্লানকীং মারুতাত্মজঃ ।২।
প্রণম্য প্রস্থিতে। গন্তং ইদং বচনমত্রবীৎ।
দেবি ! গচ্ছামি ভদ্রং তে ভূগং দ্রক্ষাদি রাঘবম্॥৩
লক্ষ্মণং চ দত্বপ্রীবং বানরাযুতকোটিভিঃ।
ততঃ প্রাহ হন্মন্থং জানকী দুঃখকর্শিতা॥ ৪॥

ডাং দৃষ্ট্য বিক্ষ্তং ছঃখ্যিদানীং ত্বং গমিষ্যদি।

ইতঃ পরং কথং বর্ত্তে রাম্বার্ত্তিং বিনা ৪॥৫

মহাদেব কহিতেছেন।—এই প্রকারে লক্ষাপুরী ভন্মীকতা হইলে মাকতি জগনাভা জানকীকে প্রণাম করিয়া কহিল—হে দেবি! আমি জীরাম সন্নিধানে গমন করি আমাকে আজা করুন—জীরামচন্দ্র লক্ষাণের সমভিব্যাহারে আপনাকে দেখিবার জ্বনা সত্ত্ব এই স্থানে আগমন করিবেন। এই বলিয়া প্রন তনম সীতাকে বারত্তম প্রদক্ষিণ পূর্বক প্রণাম করিয়া কহিল—হে দেবি! আমি এন্থান হইতে গমন করি, আপনার মনের বাসনা পূর্ণ হইবে, অচির কাল মধ্যেই রাম, লক্ষ্মণ ও অযুত কোটি বানরগণের সহিত স্থাীবকে দর্শন করিবেন। অনন্তর জানকী মাক্তিকে কহিলেন—হে হমুমন্! আমি তোমাকে দেখিয়া অবধি সমস্ত হঃথই বিন্যুত হইয়াছি, এক্ষণে জীরাম সন্ধিধানে গমন কর, কিন্ত ইহার পরে জগতের জীবন খরণ জীরামের বার্তা শ্রবণ করিয়া কি প্রকারে জীবন খারণ করিব ?! ১ | ২ | ৩ | ৪ | ৫ ।

মারু ভিক্রবাচ।

বস্তেবং দৈবি ! মে ক্ষন্ধমারোহক্ষণমাত্রতঃ।
রামেণ যোজয়িষ্যামি মন্যেদে যদি জানকি ! । ৬
রামঃ সাগরমাশোষ্য বদ্ধা বা শরপঞ্জরিঃ।
সীভোষাচ।

আগত্য বানরৈঃ সার্দ্ধং হড়া রাবণমাহবে।। ৭।।
মাং নয়েদ্যদি রামদ্য কীর্ত্তি বতি শাশ্বতী।
অতো গচ্ছ কথং চাপি প্রাণান্ সন্ধারয়াম্যহ্ম॥
ইতি প্রস্থাপিতো বীরঃ সীত্য়া প্রণিপত্য ভাম্।
জগাম পর্বতিস্যাত্যে গন্ধং পারং মহোদধেঃ॥ ১।

মাকৃতি কহিল—হে দেবি! যদি রাম বিরহে এগ প্রকার শোক ব্যাকুলা হয়েন, তবে আমার ক্ষান্ত্রপরি আরো হণ কক্তন ক্ষণকাল মধ্যেই আপানাকে রামের সহিত মিলন করাইয়া শোকানল নির্বাণ করিব।

সীতা কহিলেন—হে প্রনাজ্যজ ! যদি তোমার ক্ষব্ধারোহণ পূর্বক রাম সন্নিধানে গমন করি-তাহা হইলে রামের অন্তঃকরণ আমার প্রতি কুৎসা প্রবর্তনানা হইবে—শ্রীরাম কহিবেন যে অবলা জানকী ন্ত্রী হইয়৷ বানরের ক্ষর্কারোহণ করিয়া আমার নিকট আগমন করিয়াছে—হে ভ্রাতঃ ! দ্রী জাতির দেরিয়ায়া দর্শন কর—হে বানরসত্তম ! তোমার ক্ষব্ধারোহণ করিয়া গমন না করিবার জ্বনা কারণও কহিতিছে প্রবণকর ৷ যদি জ্বীরাম এই মহাসমুদ্রে সেতু বন্ধন করিয়া বানরগণের সহিত এখানে আগমন পূর্বক শ্বর সমূহ

তত্ত্ব গল্পা মহাদল্বঃ পাদাভ্যাং পীজ্য়ন্ গিরিম্।
জগাম বায়ুবেগেন পর্বতশ্চ মহীতলম্। ১০।
তত্ত্যে মহীসমানত্বং ত্রিংশদ্যোজনমুচ্ছিত্রঃ।
মাক্রতির্গগনাস্তক্ষো মহাশব্দং চকার সঃ।। ১১॥
তং প্রুল্বা বানরাঃ দর্বে জ্ঞাল্বা মাক্রতিমাগতম্।
হর্ষেণ মহতাবিন্ধাঃ শব্দং চক্রুমহাম্বনম্। ১২।
শব্দেনের বিজ্ঞানীমঃ ক্রতকার্যাঃ সমাগতঃ।
হন্মানের পশুধং বানরা বানর্ধভ্রম্॥ ১০॥
তবং ক্রবৎস্থ বীরেষু বানরেষু স মাক্রতিঃ।
অবতীর্যা গিরেমুর্শ্বিরু বানরানিদ্যন্তবীৎ। ১৪।

দৃষ্ট্বা সীতা ময়া লক্ষা ধর্ষিতা চ সকাননা।
সম্ভাষিতো দশগ্রীবস্ততোহহং পুনরাগতঃ॥ ১৫॥
ইদানীমের গচ্ছামো রামস্থ্রীবসন্নিধিম।
ইত্যুক্ত্বা বানরাঃ সর্বের হর্ষেণালিক্ষ্য মারুতিম। ১৬।
কেচিচ্চ্ চুম্বুলাক্ষ্ নন্ত্ কেচিদুৎস্কলঃ।
হন্মতা সমেতান্তে জগ্মঃ প্রস্তবণং গিরিম্। ১৭।
গচ্ছন্তো দদৃশুর্বরা বনং স্থ্রীবরক্ষিতম্।
মধুসংক্তং তদা প্রাক্তরক্ষদং বানর্ষভাং॥ ১৮॥
কুষিতাঃ ম্মো বরং বীর! দেহ্যসুক্তাং মহামতে।
ভক্ষরামঃ কলান্যদ্য পিবামোহমৃতবন্মধু। ১৯।
সন্তুক্তা রাঘবং দ্রন্তং গচ্ছামোহদৈরে সামুজম্।২০

षात्र। युषा कतित्र। मदश्म मभाननरक विमाम कतित्र। व्यामाटक আহণ করেন তাহা হইলে ত্রিভুবনে রামের চিরছারিনী কীর্ত্তি সংস্থাপিত ছইবে। অতএব ছে কপিবর! তুমি রামের নিক্ট গমন কর কোন রূপে ক্লেশের সহিত জীবন ধারণ করিব। এই প্রকার সীতা কর্ত্ব আপদিষ্ট হইয়া ছনুমান্ সীভাকে প্রনিপাত করিয়া সমুদ্রের উত্তর পারে গমন করিবার জন্য পর্বভের ভাগ্রভাগে গমন করিল, মহাবল মাক্তি ঐ পর্বতে গমন করত পাদ দ্বারা পর্বতকে পীডিত কবিয়া উল্লেক্ষ্ম করত বায়ুবেণে সমুদ্র লঙ্খন করিয়া গমন করিল, ঐ সময় জিংশং যোজন সমূত্রত পর্ববত মাক্তির পাদভরে নত হইয়া পৃথীতলের সমভাবাপর ছইল। মান্ততি আকাশপথে উত্তিত হইয়া ঘোরতর নিনাদ করিল, ঐ নিনাদ ধনি প্রবৰ্ণে মাক্তি সমাগত ছইতেছে নিশ্চর করিয়। বানরগণ অতিশয় হৃষ্ট চিত্তে প্রতিশ্বনি করিয়া কহিল—আমরা ঐ শব্দ শ্রবণ করিয়। ক্লডকার্য্য মারুভি সমাগত হইয়া**ছে নিশ্চয়** করি-फिक्कि, ६६ वानवर्गन धारे वानवाताक क्यूमानरक प्रमान कत, ইত্যুবসাৰে মাৰুভি পৰ্বডোপৱিভাগে আনন্দিত চিত্তে এই

প্রকার ভাষ্যমান্ বানরগণ মধ্যে অবতীর্ণ ইইয়া ভাষ্যদিগকে কহিল—হে কপিগণ ! আমি জনকনন্দিনী সীতাকে দুর্গন করিয়। আসিয়াছি এবং কাননের সহিত লক্ষাপুরী ভল্মিভূতা ইইয়াচে, পরে দুর্শাননকে সম্ভাষণ করিয়া পুনর্কার প্রভাগমন করিয়াছি। এক্ষণে আমরা সকলে মিলিত ইইয়া জীরাম ও করিয়াছি। এক্ষণে আমরা সকলে মিলিত ইইয়া জীরাম ও করিয়াছর সিয়িলে গামন করিব, বানরগণ এই বাক্য শ্রবন করিয়া হর্ষ মানসে মাক্তিকে আগলিসন করিয়া লাক্ষ্যলে চুন্থন করিতে লাগিল, কেহু বা হুতা করিতে লাগিল। পরে মাক্তির সহিত বানরগণ প্রস্তাব করিছে গ্রমন করেত কপিরাজ ক্ষরীর সংরক্ষিত মধু বন দুর্শন করিয়া যুবরাজ অজ্পদক্ষে কহিল—হে বীর ! আমরা অত্যন্ত ক্ষুধা পীডিত ইইয়াছি—আজ্ঞাকজন অল্য মানা প্রকাব ফল ভক্ষণ ও মধু পান করিয়া সন্তোব চিত্তে শ্রীরাম ও লক্ষ্মণকে দেপিবার জন্য গ্রমন করি। । ৬। ৭। ৮। ৯ 1 ১০ । ১১ । ১০ । ১৪ । ১৫ । ১৬ ।

व्यक्त देवां ।

হনুমান্ কৃতকার্য্যেছরং পিবতৈত্ৎপ্রসাদতঃ।

ক্রক্ষং ফলমূলানি ত্বিজং হ্বিসভ্নাঃ। ২১।

ততঃ প্রবিশ্ব হ্রয়ঃ পাতুমারেভিরে মধু।
রক্ষিণস্তাননাদৃত্য দধিবজেণ নোদিতান্। ২২।
পিবতন্তাজ্য়ামাস্ত্রানরান্ বানরর্যভাঃ।

ততস্তামা ফিভিঃ পাদৈশ্চ্গ্রিডা পপুর্মধু। ২৩।
বানরান্ রুরুধুঃ সর্বান্ নিজপ্ল শ্চাপি ভূরুইেঃ।

ততঃ সর্বে মহৌজক্ষা ধৃত্বাদধিমুথং কপি। ২৪
ব্যপোথয়ন্ ধরণ্যাং বৈদ্ধিবক্ত স্যাচাননম্

চপোটেমু ফিভিশ্চাপি ভূশং জন্মুঃ কপীশ্বাং॥ ২৫

ততঃ কৃচ্ছাৎ সমুপ্রায় কপি পোথিত বক্ত্রকঃ।

ততো দিধমুখঃ ক্র দ্ধঃ স্থাবিস্য স মাজুলং।
কগাম বক্ষিভিঃ সার্দ্ধং যত্র রাজা কপীশ্বরং ॥২৯॥
গড়া তমত্রবীদ্দেব! চিরকালাভিবক্ষিতমু।
নক্ষং মধুবনং তেইল্য কুমারেণ হন্ত্মতা॥ ২৭॥
শুড়া দিধমুখেনোক্তং স্থাবা ক্ষমানসং।
দৃষ্ট্বা গতো ন সন্দেহঃ দীতাং প্রননন্দনং॥ ২৮॥
নো চেম্মধুবনং জেইং সমর্থ: কো ভবেম্ম।
তত্রাপি বায়ুপুত্রেণ রুতং কার্যাং ন সংশয়ঃ। ২৯।
শুড়া স্থাবিবচনং ক্ষটো রামস্তমন্ত্রবীং।
কিম্চাতে ড্রা রাজন্! বচঃ দীতা কথাস্বিতম্ ?॥
স্থাবিস্ত্রবীদ্বাক্যং দেব! দৃষ্টাবনীস্থতা।
হন্ত্মৎপ্রমুখাঃ সর্ব্রে প্রবিষ্টা মধুকাননম্। ৩১।

অনন্তর যুবরাজ অঙ্গদ কহিলেন—তে হরিসভ্নগণ! হনুমান্দীতা দর্শনে ক্তকার্য্য হইয়া সমাগত হইয়াছে এক্ষণে দেই জন্য অন্তরে পানরগণ এবং নানা প্রকার স্থপক ফল মূল ভক্ষণ কর। অনন্তর বানরগণ বন-রক্ষক বানরগণকে অনাদর পূর্বক বনমধ্যে প্রবেশ করিয়া অমৃভোপম মধুপান করিতে আরম্ভ করিল, প্রে সময় বন-রক্ষক বানরগণ দিয়িমুখের আদেশ প্রাপ্ত হইয়া মধুপায়ী বানরগণকে ভাড়ন করিতে লাগিল। পরে ভাড়িত বানরেরা মুষ্টি ও পদাঘাত দ্বারা রক্ষকগণকে চুর্ণারমান করিয়া প্র মধুপান করিতে লাগিল। অনন্তর দ্বিমুখ ও অন্যান্য রক্ষকগণ জত বেগো গমন করিয়া চতুর্দিকে অবভ্রিভ মধুপায়ী বানরগণকে রোব পূর্বক বৃক্ষ হারা তাড়ন করিছে লাগিল। পরে মহাবল মাক্তি প্রভৃতি বানরগণ দিয়মুখকে খারণ করিয়া ধরণীতলে ভাহার মুখ নিস্পেষণ করিল। অনন্তর

পীডিদ বক্তা দনিমূথ ক্লেশ ক্রমে ধরণী হইতে সমুখিত হইরা অতিশয় ক্রোধ পূর্বক রক্ষকগণের সহিত কলিবাজ সুপ্রীব সন্নিধানে গমন করিয়া কহিল—হে দেব! যুববাজ অঙ্গদ ও মারুতি কর্কুক চিররন্ধিত মধুবন বিনাশিত হইয়াছে। দধিমুখের বাকা শ্রবণে কলিবাজ প্রফুলান্তঃকরণেকছিল—মারুতি নিশ্চরই শীভাকে সন্দদর্শন করিয়া সমাগত হইয়াছে, নতুবা আমার মধুবন বিনাশ করিতে কোন্ জন সমর্থ হইবে ই দৃতাপ্রোগণ্য বায়ু জনর নিশ্চরই শীভাপহারকের আনিফ কার্য্য সম্পাদন করিয়াছে। ২১। ২২। ২০। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭।

শীরাম স্থাীবের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া সাহলাদচিত্তে কহিলেন—হে রাজন্! আমার প্রাণাধিকা সীতার কথা কি কহিতেছিলেন! স্থাীব কহিল—হে দেব! সীতাকে দর্শন প্র্রেক মাকতি প্রভৃতি প্রত্যাগত বানরগণ মধুবনে প্রেরিট হইরা বররক্ষক বানরগণকে তাড়ন করত ফল মূল সমস্ত ভক্ষণ

ভক্ষরতি সা সকলং তাড়য়তি সা বক্ষিণঃ।

অক্তা দেব ! কার্যাং তে জকুং মধুবনং মম। ৩২॥
ন সমর্থান্তাে দেবী দৃষ্টা সীতেতি নিশ্চিত্ম।
রক্ষিণাে বাে ভয়ং মাস্ত গড়া ক্রত মমাজ্ঞরা। ৬৩।
বানরানকদমুখানানয়ধং মমাত্রিকম্।
ভক্তা স্থাবিবচনং গড়া তে বায়ুবেগতঃ। ৩৪॥
হনুমৎপ্রমুখান্চুর্গছতেশ্বরশাসনাং।
জক্টামিছতি স্থাবিং স রামাে লক্ষ্ণান্তিতঃ। ৩৫।
য়ুয়ানতীব দৃষ্টান্তে ত্রয়ন্তি মহাবলাঃ।
তথেতায়রমাসাদ্য য্যুন্তে বানরােভ্যাঃ। ৬৬॥
হনুমন্তং পুরক্তা যুবরাজং তথাকদম্।
রামন্ত্রীবয়ার্থ্রে নিপেতৃভুবি স্তর্ম। ৩৭।

হন্মান্ রাঘবং প্রাহ দৃষ্টা সীতা নিরাময়া।

সাফালং প্রাণিপভাতো রাম: পশ্চাদ্ধরীশ্বম্। ৬৮
কুশলং প্রাহ রাজেন্দ্র। জানকী তাং শুচাদ্বিতা।
অশোকবনিকামধ্যে শিংশপামুলমান্রিতা॥ ৬৯॥
রাক্ষনী ভিঃ পরিব্রতা নিরাহারা কুশা প্রক্রো!।
হা রাম! রামরামেতি শোচন্তী মলিনাম্বরা। ৪০।
একবেণী ময়া দৃষ্টা শনৈরাশ্বাদিতা শুভা।
রক্ষণাখান্তরে শ্বিত্বা স্থক্মমপ্রেপণ তে কথাম্।।৪১॥
ক্রমারভ্য তবাত্যর্থং দশুকাগমনং তথা।
লশ্মনেন হরণং জানক্যা রহিতে ত্রি॥ ৪২॥
স্ত্রীবেণ যথা মৈত্রী কুতা বালিনিবর্হনম্।
মার্গণাঞ্চ চ বৈদেস্থা স্ত্রীবেণ বিদর্জিতাঃ ॥৪৩॥
মহাবলা মহাসত্ত্বা হররো জিতকাশিনঃ।
গতাঃ সর্ব্রের সর্বের বৈ ভব্রেকোহ্ছমিহাগভঃ॥ ৪৪।

করিরাছে,যেহেতু কপির্গণ আপানার কার্যা সম্পাদর মা করিরা মধুবন বিনাশ করিতে কথনই সমর্থ হর না, অভএব কপিগণ সীভাকে নিশ্চরই সম্পান করিরাছে। পরে স্থগীর রক্ষকগণকে সংখাধন করিরা অঙ্গদপ্রভৃতি বানরগণকে আমার সন্থিধনে করিরা অঙ্গদপ্রভৃতি বানরগণকে আমার সন্থিধনে আনায়ন কর—কপিরাজ স্থগীর কর্ত্বক সমাদিষ্ট ইইয়া রক্ষক গণ বায়ুবেগো গল্পন স্থগীর কর্ত্বক সমাদিষ্ট ইইয়া রক্ষক গণ বায়ুবেগো গল্পন পূর্ব্বক বানরগণকে কহিল—হে বানরগণ! কণীপ্রর স্থগীবের আদেশাসুসারে রাজ্ঞ সল্লিধানে গামন কর, স্থগীব জীরাম ও লক্ষ্মণ ভোমাদিগের প্রতি পরিতৃষ্ট ইইয়াছেন ও ভোমাদিগকে দর্শন করিছে ইচ্ছুক ছইয়াছেন ও ভোমাদিগকে দর্শন করিছে ইচ্ছুক ছইয়াছেন গেবর বানরগণ মাফতি ও অঙ্গদকে অগ্রসর করিয়া জ্ঞতাবেগ আকাশপথে বামন পূর্ব্বক শীরাম ও স্থগীবের সমীপে উপজ্ঞিত ইইল।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।৩০।৩৪।৩৫। জনস্তর মাকৃতি শীরাম ও স্থগীবেক সাইছিল প্রণাম

করিরা কহিল—আমি নিরামরা সীতাকে দেখিরা আদিরাছি হে রাজেলা ! শোকাষিতা জানকী আপনাকে কুশল বার্তা কছিরাছেন, হে প্রভা ! অশোক বন মধ্যে শিংশপার্কারর মূলবর্তিনী রাক্ষসী পরিবৃতা, নিরাহারা, কুশা হঃ রাম ! হা রাম ! ইত্যাকার শব্দারমানা, মলিন বদনা, কোন কোন রাক্ষসী কর্ত্ক আখাদিতা সীতাকে দেখিরা স্থান রূপ ধারণ পূর্বেক বৃক্ষের শাখা মধ্যে লুকায়িত হইরা কামাবিধি রাম রত্তান্ত, রামের দশুকারণাে সমাগমন ও রাম বিহীন বন হইতে দশানন কর্ত্ক জানকীর হরণ রন্তান্ত, স্থানিবের সহিত মিত্রতা পূর্বাক রাম কর্ত্ক বালীর নিধন বার্তা, সীতার অংশবনার্থ প্রতীব কর্ত্ক মহাবল বানরগণকে নানা বেশে প্রেরণ বার্তা প্রতি বানরগণ মধ্যে স্থানিবর মন্ত্রী

অহং স্থীবদচিবো দাদোহহং রাঘবশু হি।

দৃষ্ট্য যজ্জানকী ভাগ্যাৎপ্রস্নাদঃ কলিতোহদ্য যে।

ইত্যদীরিতমাকর্ণা দীতা বিক্লারিতেক্ষণা।
কেন বা কর্ণপীযুষং প্রাবিতং মে শুভাক্ষরম্ ॥৪৬॥

যদি সতাং তদা যাতু মদদর্শনপথং তু সঃ।

ততোহহং বানরাকারঃ স্ক্র্মন্তপেণ জানকীম্ ।৪৭।

প্রবিহং দীত্রা কন্ত্রিস্ত্যাদিবছবি স্তরম্ ॥ ৪৮॥

মরা দর্মং ক্রমেণের বিজ্ঞাপিতমরিন্দম্!।

পশ্চান্মরার্পিতং দেব্যৈ ভবদ্ত্যাঙ্গু লীয়কম্ । ৪৯॥

তেন মামতিবিশ্বস্থা বচনং চেদমত্রবীৎ।

যথা দৃষ্টান্মি হনুমন্! পীডামানা দিবানিশম্। ৫০
রাক্ষসীনাং তর্জ নৈস্তৎসর্বাং কথয় রাঘবে।

ময়্মেক্তং দেবি ! রামোহপি ছচ্চিন্তাপরিনিষ্ঠিতঃ॥

পরিশোচত্যহোরাত্রং ছদ্বার্তাং নাধিগম্য সঃ।

ইদানীমেব গড়াহং স্থিতিং রামায় তে ক্রবে॥ ৫২
র মঃ শ্রবণমাত্রেণ স্থাবেণ সলক্ষ্মণঃ।

বানরানীকপৈঃ দার্ঘমাগমিষাতি তেইন্তিকম্। ৫৩ ;
রাবণং সকুলং হড়া নেষ্যতি ছাং স্বকল্পুরম্।

অভিজ্ঞাং দেহি মে দেবি! যথা মাং বিশ্বসেদ্বিভূঃ

ইত্যক্ত্বা সা শিরোরত্বং চূড়াপাশে স্থিতং প্রিয়ম্।

দত্ত্বা কাকেন যদ্রত্বং চিত্তকুটগিরো পুরা। ৫৫।

জীবামের দাস আদি এক বানর এই সন্ধাপুরীভে সমাগত কইরাছি, বেছেতু ভাগা বলতঃ সীতাকে দেবিরাছি এবং আদা ভাগাবশভঃ আসনকে দেবিরা আমার আগামন সফল হুইরাছে, এই রূপ বাকাবনী কহিয়াছিলাম। ৩৬ । ৩৭। ৩৮। ১৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৬।

চঞ্চল নরনা জানকী মাক্ষতির এইরূপ ৰাক্য শ্রনণ করিয়া কছিলেন—কর্ণপীযুষ স্থরূপ রাম নামাধিত এই শুভ বাক্য কে আমাকে শ্রনণ করাইল ? যদি সভাই শ্রীরামের বর্তাবহ কোন বানর সমাগত হইরা থাকে তবে আমার দৃষ্টি পথে সমাগত হইরা অবস্থিতি ককক। হে প্রস্তো! পরে ফুদ্র বানররূপ ধারণ করিয়া সীতার দৃষ্টিগোচর হইয়া ক্তাঞ্জলিপ্টে তাহা:ক শ্রেণাম করিয়া কিয়দ্রে অবস্থিত রহলাম। অনস্তর তুমি কে, কোথা হইতে সমাগত ছইয়াছ এইরূপে জানকী আমাকে নানা প্রকার প্রশ্ন করিলেন। ছে অরিন্দম! পরে ক্রমে ক্রমে সমস্ত বৃতান্ত গীতাকে বিজ্ঞাপন করিয়া ঐ রাম নামান্ধিত স্বর্ণাম্থীয়ক প্রদান করিলাব। জনস্তর অভিশন্ধ বিশ্বাস

পূর্বক জ্ঞানকী আমাকে কছিলেন—ছে ছমুমন্! দিবারাও রাক্ষ্পী কর্ত্বক তওঁ দিতা হইরা আমি যে প্রকারে কালাতিপাত করিতেছি ভাছা শ্রীরামের নিকট্ট সমস্ত জানাইবে। আমি কছিলাম—হে দেবি! তোমার চিস্তাপরায়ণ শ্রীরামচন্দ্রও আপনার সংবাদ প্রাপ্ত না হইরা দিবা রাত্র শোক ব্যাকুল হইরা বহিয়াছেন অতএব অদ্যই আমি গমন করিয়া আপনার সমস্ত বৃত্তান্ত শ্রীরামের নিকট অবগত। করিব। রাম্যচন্দ্র শ্রবণ মাত্রই লক্ষ্যাণ স্থতীব ও জন্যান্য বীরগণের সহিত তং সরিধানে আগমন করিয়া সবংশ রাবণকে বিনাশ করত আপনাকে স্থকীয় পুরে লইয়া যাইবেন। হে দেবি। প্রেড্ শ্রীরাম যদ্বারা এই সমস্ত বিশ্বাস করিছে পারেন এইরূপ একটি চিহ্ন আমাকে প্রদান কর্কন। পরে চূড়া পার্মস্থ অতি মনোহর শিরোরত্ব আমাকে প্রদান করিলেন—সঞ্চল নয়না জানকী চিত্রকূট পর্বতের উপরিভাগের কাকের র্ত্তান্তর তদপ্যাহাশ্রপূর্ণাকী কুশনং ক্রহি রাঘবম।
লক্ষণং ক্রহি মে কিঞ্চিদ্দুরুক্তং ভাষিতং পুরা ॥৫৬
তৎ ক্ষমস্বাজ্ঞভাবেন ভাষিতং কুলনন্দন!।
তারয়েশ্বাং যথা রামস্তথা কুরু রুপান্বিতঃ। ৫৭।
ইত্যুক্তা রুদতী দীতা ছংখেন মহতারতা।
ময়াপ্যাশ্বাদিতা রাম! বদতা দর্বমেব তে॥ ৫৮
ততঃ প্রস্থাপিতো রাম! ত্বদমীপমিহাগতঃ।
তদাগমনবেলায়াং অশোকবনিকাং প্রিরাম্॥৫৯॥
উৎপাট্য রাক্ষদাংস্তত্ত্ব বহুন্ হত্বাক্ষণাদহম্।
রাবণস্থ স্কুতং হত্বা রাবণেনাভিভাষ্য চ॥ ৬০॥
লক্ষামশেষতো দগ্ধা পুনরপ্যগমং ক্ষণাৎ।
শুত্বা হন্মতো বাক্যং রামোহত্যন্তপ্রক্রমীঃ॥৬১
হন্মংস্তে রুক্তং কার্যাং দেবৈরপি স্কুম্বরম্।
উপকারং ন পশ্বামি তব প্রভ্যুপকারিণঃ॥ ৬২॥

বলিয়া কহিলেন—ছে মাকতে! জ্রীরামকে আমার মঙ্গল বিজ্ঞাপান করিবে এবং কুলনন্দন লক্ষ্মণকে কহিবে—আমি পূর্ব্বে
অজ্ঞানত্ব বশতঃ যে ভূব্বাকা কহিয়াছি তাহা ক্ষমা করেন এবং
দরামর রামচন্দ্র যে প্রকারে হউক সত্তর আমাকে এই ভূংথানিব
হুইতে মুক্ত করেন আমার এই নিবেদন জ্ঞানাইবে। হে
রঘুত্তম! অতি ভূঃথিতা জনকনন্দিনী আমাকে এইরূপ কহিয়া
রোদন করিতে লাগিলেন। ঐ সময় আমি নানা প্রকার
বাক্য বারা সীতাকে আশ্বাস প্রদান করিয়া আপনার সন্নিধানে আগমন করিবার সময় রাবণের প্রিয়তম আশোক বন
উৎপাটন পূর্বক রাবণ তনয় অক্ষ্কমার ও অন্যান্য রাক্ষ্যগণকে বিনাশ করিয়া রাবণের সহিত আলাপ করনানন্তর সমস্ত
লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করিয়া ক্ষণকাল মধ্যে সমাগত গ্রহ্মাছি।
মাক্ষতির এই সমস্ত বাক্য শ্রবণে হৃষ্টিভিত হুইয়া রামচন্দ্র
কহিলেন—হে মাকতে! তুমি দেবতাদিগেরও ছুঃসাধ্য সমুদ্র

ইদানীং তে প্রাফ্রাম সর্বাস্থং মন মারুতে!।
ইত্যালিক্ষ্য সমারুষ্য গাঢ়ং বানরপুক্ষবম্॥ ৬০॥
সাদ্র নেত্রো রঘুশ্রেষ্ঠঃ পরাং প্রীতিমবাপ সঃ।
হন্মনন্তম্বাচেদং রাঘবো ভক্তবৎসলং॥ ৬৪॥
পরিরন্তা হি মে লোকে তুর্লভঃ পরমাত্মন।
অতস্তং মন ভক্তোহসি প্রিয়োহসি হরিপুক্ষবঃ! ৬৫
যৎপাদপদ্মযুগলং ভুলসীদলাদ্যৈঃ
সম্প্রা বিষ্ণুপদ্বীমভুলাং প্রয়ান্তি।
তেনৈব কিং পুনরুদে পরিরক্ষমূতী

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়নে উমামহেশার সমাদে স্থানেরাকাতে পঞ্চমোধ্যায়ঃ।

রামেণ বায়ুতনয়: ক্লুতপুণ্যপুঞ্জঃ ? ॥ ৬৬ ॥

শত্রনাদি নানা প্রকার উপকার করিবাছ, এক্ষণে কোন বস্তু দ্বারা তোমার প্রত্যুপকার করিব? তোমাকে সর্বাহ প্রদান করিলাম। পরে কপিবর মাক্ষতিকে গাঢ় আলিঙ্কন করিয়া বজল নয়ন রঘুবর অত্যস্ত পরিভৃপ্ত হইয়া কহিলেন— হে বানবোত্তম। তুনি আমার প্রিয়তম ভক্ত হইয়াছ সেই কারণে পরমায়া সরপ আমার হল্লভ আলিঙ্গন লগভ করিয়াছ। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। । ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬২।৬৩।

অনন্তর মহাদেব কহিলেন— ধাঁহার পদাধুজ দ্বর তুলগী, পুজা, চলনাদি দারা পূজা করিয়া মুণিগণ বিষ্ণুতা প্রাপ্ত হইয়া থাকেন, সেই রাম কর্ত্ক কি ক্লতপুণ্যরাশি এই বায়ু-তনয় সমালিকিত হইল। ৬৪। ৬৫। ৬৬।

> ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামছেশ্বরসম্বাদে স্থল্যাকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

যুদ্ধ কাওম্

প্রথমোহধাায়ঃ

এ। মহাদেব উবাচ।

যথাবন্ত বিতং বাকাং প্রুত্বা রামো হন্ত্মত:।
উবাচানস্তরং বাকাং হর্ষেণ মহতার্তঃ ॥ ১ ॥
কার্যাং কৃতং হন্ত্মতা দেবৈরপি স্থাদুষ্করম্।
মনসাপি বদন্যেন স্মর্জুং শক্যং ন ভূতলে ॥ ২ ॥
শতযোজনবিস্তীর্ণং লক্ষ্ময়েৎকঃ পয়োনিধিম্।
লক্ষাঞ্চ রাক্ষ্মতি প্রোং কো বা ধর্ষরিজুং ক্ষমঃ ॥৩॥
ভূত্যকার্যাং হন্তমতা কৃতং সর্বমশেষতঃ।
স্থাীবস্থাদ্শো লোকে ন ভূতো ন ভবিষ্তি॥ ৪।

অহং চ রঘুবংশশ্চ লক্ষণশ্চ কপীশ্বরঃ।
জানক্যা দর্শনেনাদ্য রক্ষিতাং স্মো হন্মতা ॥ ৫ ॥
দর্মবং মুক্তং কার্যং জানক্যাঃ পরিমার্গণম্ ।
দমুদ্রং মনদা স্মুত্বা দীদতীব মনো মম ॥ ৬ ॥
কথং নক্রঝবাকীর্গং দমুদ্রং শতবোজনম্ ।
লক্ষ্মিত্বা বিপুং হন্যাং কথং দ্রক্ষ্যামি জানকীম্ ? ॥ ৭
শেহ্বা তু রামবচনং স্থাবিঃ প্রাহ রাঘবম্ ।
দমুদ্রং লক্ষ্মমিষ্যামো মহানক্রঝবাকুলম্ ॥ ৮ ॥
লক্ষাঞ্চ বিধমিষ্যামো হনিষ্যামোহদ্য রাবণম্ ।
চিন্তাল্রাঞ্জ রঘুপ্রেষ্ঠ ! চিন্তা কার্যবিনাশিনী ॥ ৯ ॥

মহাদেব কহিলেন— শ্রীরামচন্দ্র হুনুমানের বাকা প্রবশানন্তর যার পর নাই হর্বাবিষ্ট হুইয়া কহিলেন—দেবতারা যে কার্য্য মহা কষ্টে সম্পাদন করিতে পারেন, অদা সেই কার্য্য মাক্তি দারা স্বসম্পন্ন হুইয়াছে, ধর্ণীমগুলে অপর কেছ মনে মনেও চিন্তা করিতে সমর্থ হয় না, কোন্ বাজি এই শত গোজন পরিমিত মহাসমুদ্র উল্লেখন করিয়া লক্ষা ও রাক্ষ্য সমূহ ধংশ করিতে সমর্থ হুইত ? পবন-ডনয় সর্ক্র বিধায়ে ভূত্যের কার্য্য সমাধা করিয়াছে—অভ্ঞব ইহলেশকে প্রত্যীব্রের নাায় ভৃত্য কাহার কখন হয় নাই এবং কথন হুইবেও

না। অদ্য হর্মান্ জানকী দর্শন করিরা আমাকে, রঘ্বংশ, লক্ষণ ও স্থােবিকে রক্ষা করিয়াছে। আপাডভঃ জানকী দর্শন কার্য্য সর্বভাতােবে সম্পন্ন হইয়াছে, কিন্তু আমার মন সমুদ্র শ্বনণ করিরা সাভিশন ভীত হইতেছে, শত বাজন বিস্তৃত ও নজােদি সমাকীর্ণ এই সমুদ্র কিরপে উত্তীর্ণ ছইয়া বন্ধরা-কন্যা জানকীকে বা কি প্রকামে দর্শন করিব ? কপীশ্বর স্থােবি প্রিরাম বাক্য শ্রবণ করিয়া তাঁছাকে কছিলেন, আমি মহানক্রােদি পূর্ণ সমুদ্র উল্লেফন করিব, হে রঘুশ্রেই! আপনি চিন্তা পরিত্যাগ ককন—কারণ চিন্তা কার্যা বিনাদিনী,

এতান্ পশ্য মহাদত্ত্বান্ শ্রান্ বানরপুসবান্।

হৎপ্রিয়ার্থং সমুপ্ত কোন্ প্রবেষ্ট্রাপি পাবকম্॥১০॥

সমৃত্রত্বনে বৃদ্ধিং কুরুষ্ প্রথমং ততঃ

দৃষ্ট্বী লক্ষাং দশগ্রীবো হত ইভ্যেব মন্মহে। ১১ বি
নহি পশ্যাম্যতং কঞ্চিজিয়ু লোকেয়ু রাঘব!।

গহীতধন্ত্বো যতে তির্কেদিভিমুখো রণে॥ ১২॥

সর্বথা নো জ্যো রাম! ভবিষ্যতি ন সংশ্রঃ।

নিমিত্রানি চ পশ্যামি তথাভূতানি সর্বলং॥ ১৩॥

স্থ্রীব্বচনং শ্রুড়া ভক্তিবীর্যাসমন্বিভম্

অঙ্গীরুত্বাব্রীদ্রামো হন্মুমন্তং পুর:ছিত্রম্। ১৪।

যেন কেন প্রকারেণ লক্ষ্যামো মহার্ণবম্।

শক্ষাস্থর্বপং মে ব্রহি ছংসাধাং দেবদানবৈঃ॥১৫॥

জ্ঞাদ্বা তক্ত প্রতীকারং করিষ্যামি কপীশ্ব !।

শ্রুষা রামক্ত বচনং হন্দুমান্ বিনয়ান্থিকঃ॥ ১৬॥

উবাচ প্রাঞ্জলির্দেব ! যথাদৃষ্টং ত্রনীমি তে

লক্ষা দিব্যা পুরী দেব ! ত্রিকুটশিখরে স্থিতা॥ ১৭

স্বর্ণপ্রাকারসহিতা স্বর্ণাট্টালকসংযুতা।

পরিখাভিঃ পরির্ভা পূর্ণাভির্নির্মলোদকৈঃ॥ ১৮॥

নানোপবনশোভাত্যা দিব্যবাপীভিরারতা।

গৃহৈর্বিচিত্রশোভাত্যৈম্নিক্তজ্ঞময়ৈঃ শুটভঃ। ১৯!

পশ্চিমদ্বার্মাসান্ত গজ্বাহাঃ সহস্রশঃ

উত্তরে দ্বারি তির্কন্তি সাশ্ববাহাঃ সপত্রয়ঃ॥ ২০॥

তির্কন্ত্যরুদ্পংঞ্জাকাঃ প্রাচ্যাম্পি তথেব চ।

রক্ষিণো রাক্ষ্যা বীরা দ্বারং দক্ষিণ্যাশ্রিতাঃ॥ ২১

আমি লক্ষা বিশ্বংস করিয়া বাবনকে বিনাশ করিব—দেখুন এই সমস্ত মহাসত্ত্ব আমিত ভেজা বানর শ্রেষ্ঠ আপনার প্রির কলো করিবার জনা জলন্ত পাবক মধ্যে প্রবেশ করিছেও সমতাত আছে—ই মহামতে! প্রথমতঃ সম্ভ উত্তীর্ণ হইবার জনা উপার দেখুন—পরে লক্ষা পরিদর্শন করিয়া দশ্জীবিকে নিনাশ করিব ইহা আমরা নিশ্চর করিয়াছি ১১।২।৩।

্হ রাঘব। স্বর্গ, মর্জ পাতাল এই ক্রিজ্বন মধ্যে কোন
ত নি ধুনুর্বাণ গ্রহণ করিয়া আপেনার সহিত সমরে অগ্রবর্ত্তী
চলব এরপ নয়ন গোচর হয় না। হে রামচক্র । আমি সকল
বিশ্বেই মজল দেখিতেছি—আমাদিগের সর্বতোভাবে জ্বয়
লাভ হইবে তাহাতে সন্দেহ নাই। রামচক্র ভক্তি ও বীর্যা
পুল স্থ্রীব-বচন জ্ববন করিয়া বন্ধুব্বর্তী হন্ধুমান্ সমক্ষে
অস্থিকার পূর্বক কহিলেন মহাবি শোষন করিয়াই হউক—

বা সেতৃ বন্ধন করিয়াই হউক—বা দেব দানবগণ সত ছঃসাধযুগে প্রবেশ করিয়াই ১উক—বে কোন উপায়ে মহাসমুদ্ধ উত্তীপ

ইইব। অতএব ওক্ষণে লঙ্কার স্বরূপ গুল্প বর্ণন কর—১ কবীধর! ঐ সমস্ত অবগত ইইয়া আমি প্রতিবিধান করিব।

52 : ১৩ : ১৪ : ১৫ : ১৬ :

হনুমান্ জীরাম বাক্য প্রবণ করিয়া বদাঞ্জলি পূর্মাক বিনর
সহকাবে কছিল—হে দেব! আমি সেরুপ দেপিরাছি ভাষাই
বণন করিব, লক্ষা স্বর্গ তুল্য পুরী, ত্রিকুট পর্মান্ত-শিপরে
অবস্থিতা, স্বর্গ নির্মিত প্রাচীরে পেইটিনা, স্বর্ণাট্রালিকার
পরিপূর্ণা, নির্মাল সলিলপূর্ণা পরিপা ঘারা পরিবেইটিনা, নানা
উপবন পরিশোভিতা, উত্তম দোপান্যুক্ত দিবাবাপী পরির্ভা,
মনিমর শুস্ত বিশিষ্ট গৃহ সমূহের বিচিত্ত শোভার স্কুশোভিতা
হে দেব! লক্ষার পশ্চিম ঘারে সহস্র সংখ্যক হস্তী, উত্তর ছাবে
গোটক, পূর্বেরারে সর্ম্ব দ সংখ্যক হয় হস্তী এবং দক্ষিণ ঘারে

নধ্যকক্ষেহপাদং আবাতা গজাশ্বরথপত্রঃ।
রক্ষয়ন্তি দলা লক্ষাং নানাস্ত্রকুশলাঃ প্রভা । ।২২।
দংক্রমৈর্নিবিধৈল স্কা শতল্পীভিশ্চ দংযুতা।
এবং স্থিতেইপি দেবেশ! শুণ্ মে তত্ত্র চেন্টিতম্ ॥
দশাননবলোঘদ্য চতুর্থাংশো ময়া হতঃ।
দগ্ধ্যা লক্ষাং পুরীং স্বর্ণপ্রাদালো ধর্ষিতো ময়া ॥২৪
শতল্পঃ সংক্রমাশ্চেব নাশিতা মে রল্পুরুম!।
দেব ! স্বদ্ধনাদেব লক্ষা ভ্রমীকৃতা ভ্রেছ ॥ ২৫ ॥
প্রস্থানং কুরু দেবেশ! গচ্ছামো লবণামুধেঃ।
ভীরং সহ মহাবীরের্নিনিরোধান বিদ্যালবাদেরঃ।
হত্ত্বীর দৈনিকান্ দ্রিন্ন প্রস্থানায়াভিনোদয়॥ ২৭।

ইদানীমেব বিজয়ো মুহূর্ত্তঃ পরিবর্ত্তে।
অমিন্মূ হূর্ত্তে গড়াহং লক্ষাং রাক্ষসকল্পাম্।। ২৮।
সপ্রাকারাং সুদুর্ধ যাং নাশরামি সরাবণাম্।
আনেষ্যামি চ সীতাং মে দক্ষিণাক্ষি ক্ষুরত্যধঃ॥
প্রয়াতু বাহিনী সর্বা বানরাণান্তর স্বিনাম্।
রক্ষন্ত যুগপাঃ সেনামগ্রে পৃর্ষে চ পাশ্ব য়োঃ॥ ৩০॥
হনুমন্তমথারুছ গচ্ছামাগ্রেহঙ্গদং ততঃ।
আনহ্ লক্ষ্যণো যাতু স্থ্রীব! ডং ময়া সহ॥ ৩১॥
গজো গবাকো গবয়ো মৈন্দো দ্বিদি এব চ।
নলো নীলঃ সুষেণশ্চ জাশ্বাংশ্চ তথাপরে॥ ৩২॥
সর্বের গচ্ছন্ত সর্বত্র সেনাপাঃ শক্রঘাতিনঃ।
ইত্যাক্রাপ্য হরীন রামঃ প্রতম্বে সহলক্ষ্ণং॥ ৩০

মন্বিশালী রাক্ষসমাণ অবস্থিত ইইয়া লক্ষাপুরী সভত বজা নিবিতেছে। হে প্রভো! প্রনীর কক্ষ মধ্যে নানান্ত কুশলী, শসংখ্যা মাজাশ্ব, রখা, পদাতী সর্ব্বদাই লক্ষা রক্ষা করিতেছে। তে দেবেশ! বিবিধ শতন্মী সংযুক্ত থাকিলেও আমি লক্ষা মধ্যে ধেরূপ বাবহাব করিয়াছি তাহা শ্রবণ ক্রুন। ১৭ / ১৮/ ১৯ / ২০ / ২১ / ২১ / ২৩ /

সামি দশাননের চতুর্থাংশ বল বিনাশ করিয়াছি এবং
দক্ষা দক্ষ করিয়া স্থাটালিকা উৎপাটন করিয়াছি, হে
বছুত্তন! শতম সম্বলিত সিংহ দার আমা কর্ত্ত বিনষ্ট ইয়াছে।
সে দেব! আপেনি দর্শন করিবা মাত্র লক্ষা ভস্মীভূতা ইইবে,
আন্তর পমনোদ্যম করুন, আমরাও মহাবলশালী বানরগণ
সম্ভিব্যাহারে লবণ সমুদ্রে তীরে গমন করি। রঘুনন্দন
হস্থান্ বাক্য শ্রবণ করিয়া কহিলেন—হে হনুমন্ স্থাবিইদন্য দ্দহতে কলা গমনের নিমিত্ত সাহ্বান করা, এপনই

বিজয় লাভ হইবে—রাক্ষসপূর্ণ প্রাকার বেষ্টিত লক্ষাপুরীতে মৃতত্ত মধ্যে গমন করিয়া সবংশ রাবলকে বিনাশ করণানন্তর আমার দীকাকে আনয়ন করিব, যেহেত্ আমার দক্ষিণাক্ষি ও অধঃ স্ফুরিত হইতেছে। বানর দৈন্য সমস্ত লক্ষাপুরী গমন করক এবং জম্বুবান সদৃশ সেনাপতিগণ সৈনোর অগ্র, পশ্চাও পার্ম্ব বর্ত্তী হইয়া তাহাদিগকে রক্ষা কর্কক—অনস্তর আমি হল্মানের ক্ষকে আবোহণ করিয়া অগ্রোগমন করি, পরে লক্ষ্মও অপন করে, গমন করক, কিন্তু হে স্থাবি ! তুমি আমার সহিত্ত গমন করি; অবশেষে গয়, গবাক্ষ, গবয়, দৈন্দ, নল, নীল, সুমেণ, জাম্বুবান প্রভৃতি শক্তযাতী সেনাপালগণ গমন করক। জ্বীরামচন্ত্র বানরগণকে এই রূপ আদেশ করিয়া লক্ষ্মণ সমতিবাহারে প্রত্যান করিবেন। ২৪ বিধান ও বিধান হিল বাহারে প্রত্যান করিবেন। ২৪ বিধান ও বিধান হিল বাহারে প্রত্যান করিবেন। ২৪ বিধান ও বিধান হিল বাহারে প্রত্যান করিবেন। ২৪ বিধান ও বিধান হিল বিধান বি

মুগ্রীবসহিতো হর্ষাৎ সেনামধ্যগতো বিভূঃ।
বারণেন্দ্রনিভাঃ শর্কে বানরাঃ কামন্ধিপিঃ। ৩৪।
ক্ষেলন্তঃ পরিগর্জন্তা জগ্মুন্তে দক্ষিণাং দিশম্।
ভক্ষয়ন্তো যয়ুঃ সর্কে ফলানি চ মধুনি চ॥ ৬৫॥
ক্রবন্তো রাঘবন্তাগ্রে হনিষ্যামোহন্তা রাবণম্।
এবং তে বানরপ্রেষ্ঠা গচ্ছন্ত্যভুলবিক্রমা । ৬৬॥
হরিভ্যামুহ্মমানে তৌ শুশুভাতে রঘুন্তমে।
নক্ষত্রৈঃ সেবিতৌ যদ্বচন্দ্রস্থাবিবান্বরে। ৬৭।
আর্ত্য পৃথিবীং ক্রৎস্নাং জগাম মহতী চমুঃ।
প্রক্ষোন্তান্ত পুচ্ছাগ্রান্ উদ্বহন্ত পাদপান্।৬৮।
দৈলানাগ্রেহয়নুক্ত জগ্মুন্থাক্তবেগতঃ।
ক্রম্প্রাতাক্ত সর্ক্র বানরাঃ পরিপ্রিভাঃ। ৩৯।
ক্রটান্তে জগ্মুরভ্যর্থং রামেণ পরিপালিভাঃ।
গভা চমুর্দিবারাত্রং ক্রিয়াসক্জভ ক্ষণম্। ৪০।

কাননানি বিচিত্রাণি পশ্যমালয়সহয়েঃ।
তে সহং সমতিক্রম্য মলয়ং চ তথা গিরিম্। ৪১।
আব্যুশ্চানুপূর্বেরণ সমুদ্ধং ভীমনিঃস্বন্য্।
অবতীর্য্য হন্ত্যমন্তং রামঃ মুগ্রীবসংযুতঃ।। ৪২।।
সলিলাভ্যাশমাসাল্য রামো বচনমত্রবীৎ।
আগতাঃ ম্মো বয়ং সর্বের সমুদ্ধং মকরালয়ম্। ৪৩
ইতো গল্তমশক্যং নো নিরূপায়েন বানরাঃ।
অত্র সেনানিবেশোইস্ত মন্ত্র্যামোইন্স তারণে। ৪৪।
শুদ্ধা রামন্ত বচনং মুগ্রীবঃ সাগরান্তিকে।
সেনাং ন্যবেশয়ৎ ক্ষিপ্রং রক্ষিতাং কপিকুপ্রবৈঃ।।
তে পশ্যন্তো বিষেদুন্তং সাগরং ভীমদর্শনম্।
মহোয়ততরক্ষাত্যং ভীমনক্রভয়ক্ষরম্। ৪৬।

শ্রীরামচক্র হর্ষাবিষ্ট ছইরা স্থাীব সহ সৈনোর মধ্যবর্তী ছইলেন এবং গজেন্দ্র সদৃশ কামরূপী অতুল বিক্রমশালী বানর সমস্ত মহা গর্জন, ফল ভক্ষণ ও মধুপান করিতে করিতে বৃদ্ধগতিতে দক্ষিণাভিমুখে গমন করিতে লাগিল এবং শ্রীরাম স্বারধানে কহিল আমরা অদাই বাবণকে বিনাশ করিব।

অনস্তর জীরাম বেগে মাকতি ক্ষরে ও লক্ষ্মণ অঙ্গদ ক্ষমে আরু অ্যান ছইলে গগন মার্গস্থ চল্ল স্থাের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিলেন এবং অন্যান্য বানরগণ নক্ষত্র সদৃশ বােধ ছইতে লাগিল। অসংখ্য বানর দেনা পৃথিবী ব্যাপৃত করিয়া গমন করিল। অসংখ্য বামর সর্বাত্র পরিপুরিত হইয়া বায়ু-কোণে পর্যতাগোছণ করিতে লাগিল। রাম কর্ম্কে পরিপালিত

ছইয়া বানর চমু হান্টান্ডঃকরণে দিবারাত্র অবিরল ভাবে গমন করিছে লাগিল। ক্রমে বিচিত্র কানন অবলোকন করিছে করিতে সহু পর্ব্বেড ও মলর গিরি সমুত্তীর্ণ হইরা ভীম-গর্জন সমুদ্র তীরে উপস্থিত হইল, অনস্তব জীরাম ও সূত্রীব অবভবন করিলে জীরামচন্দ্র দলিল সন্নিধানে গমন পূর্ব্বক কহিলেন. আমরা এক্ষণে মকরালর সমৃদ্র নিকটে সমাগত হইরাছি এবং বানরগণ এখান ছইতে গমন করিতে অক্ষম ছইরাছে স্প্তরাং আপাত্তঃ এখানে শিবির সন্নিবেশ করিয়া সমুদ্র ভারণ জনঃ প্রামর্শ করা থাউক। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪০। ৪৪।

স্থাীব জীরামচক্রের বাক্য শ্রবণ করিয়া সাগরতীরে কপি কুঞ্জরদ্বারা স্বরক্ষিতা শিবির সন্ধিবেশিত করিলেন অগাধং গগণাকারং সাগরং বীক্ষা ছু:বিতাঃ।
তরিষ্যাম: কথং ঘোরং সাগরং বরুণালয়ম্?।৪৭
হন্তব্যোহস্মাতিরতৈত্ব রাবণো রাক্ষসাধমঃ।
ইতিচিন্তাকুলাং সর্বের্ম রামপাশ্রে ব্যবস্থিতাঃ।৪৮
রামঃ সীতামনুস্মৃত্য দু:বেন মহতারতঃ।
বিলপ্য জানকীং সীতাং বছধা কার্য্যমানুষং।৪৯।
অন্ধিতীয়শ্চিদাবৈত্বকঃ পর্মাত্মা সনাতনঃ।
যন্ত জানাতি রামস্য স্বরূপং তল্পতো জনং॥ ৫০।।
তয়ঃ স্পৃশতি দুঃধাদি কিম্তানক্ষমব্যয়ম্?।
ছংখ শোকে ভয়ক্রোধলোভ্যোহ মদাদয়ঃ।।৫১।
অক্তানলিক্ষানোতানি কুভঃ সন্তি চিদাত্মনি?।
দেহাভিমানিনো দুঃধং নাদেহস্ত চিদাত্মনঃ।৫২।

সম্প্রসাদে দ্বরাভাবাৎ স্থধাত্তং হি দৃশ্যতে।
বুদ্যাদ্যভাবাৎ সংশ্বদ্ধে তুঃখং তত্ত্র ন বিদ্যতে।
আহো দুঃখাদিকং সর্বাং বুদ্ধেরের ন সংশ্বঃ ॥ ৫৩।
রামঃ পরাক্ষা পুরুষঃ পুরাণো
নিত্যোদিতো নিতাম্বথো নিরীহঃ।
তথাপি মায়াগুণসঙ্গতোহসৌ
সুখীব ছঃখীব বিভাব্যতে বুধৈঃ॥ ৫৪॥

रेषि औभनधाणात्रामात्रत्व डेमामत्रभात मचाटन युक्तकात्थ श्रथतमाधाग्रः।

্দনাগণ অত্যাত তরঙ্গময় নজাদিপূর্ণ অতলম্পর্শ ভরানক সমুদ্র নিরীক্ষণে ছংথিত ছইয়া কি প্রকারে এই ভরানক সমুদ্র সম্ভরণ করিয়া অদ্যই রাক্ষদাধম দশাননকে বিনাশ করিব—এই কপ চিস্তাকুল ছইয়া জীরামের পার্ম দেশে অবন্থান করিছে লাগিল। জীরাম সাডিশর ছংখ সম্ভপ্ত ছইরা সীতাকে শ্বরণ করিত বিলাপ করিতে লাগিলেন এবং মনুষ্য না হইরাও মনুষ্যের ন্যার বছবিধ কার্য্য করিতে লাগিলেন । ৪৫ । ৪৬ । ৪৭ । ৪৮ । ৪৯ ।

বে জান অভিতীয় চিদানন্দ স্নাতন প্রমাত্মা স্বরূপ জ্বিরামকে প্রম তত্ত্ব স্বরূপে চিস্তা করে ভাছার ভ্রংথাদি ম্পর্ল ছর না, আনন্দ ও অব্যর জ্ঞান স্বরূপ প্রীরামের অজ্ঞানের চিক্ত স্বরূপ তুঃথ, হর্য, ভর, ক্রোধ, লোভ, মোহাদি কি হেতু সমুংার হইবে? কারণ দেহাভিমানির অর্থাৎ দেহই আমি ইত্যাকার জ্ঞানী জনেরই তুঃথাদি সমুৎপত্ন হইরা গাকে, অদেহ পরমান্থার তুঃথাদি সমুৎপত্ন হয় না পরমান্থার হন্দা ভাব বলত স্থমাত্রই দৃষ্ট হইকেছে। সংগুদ্ধ পরমান্থার হঃখ হেতু জ্মাদি বিরহ নিবন্ধন তুঃখ দৃষ্ট হয় না, অভত্রব কুঃখ, মোহাদি সমস্তই জ্ম জন্য ইহাতে সংলয় নাই, যদিচ জ্রীরাম পরমান্থা, নিত্যস্থপ, নিশেচইই ন্যথার্থ বটে তথাপি পত্তিত জনের। প্রিয়ামকে মান্না সংস্থা বশত স্থমী ও তুঃখী প্রার পরিগণিত করিয়া থাকেন। ৫০। ৫১। ৫২।

ইতি জীগদ গোক্সরামারণে উমামহেশ্বরসন্থাদে

যুদ্ধকাণ্ডে প্রথমোহধ্যারঃ I

দ্বিতীয়ো২ধ্যায়ঃ

लक्षा शाः तां तां तां पृष्टे क्रिं क्रिं

রবিণশ্য বচঃ শ্রুদ্বা রাক্ষসান্তমথাক্রবন্।
দেব ! শক্ষা কুতো রামান্তব লোকজিতো রণে ? ॥৬
ইন্দ্রন্ত বন্ধা নিক্ষিপ্তঃ পুজেণ তব পত্তনে।
জিত্বা কুবেরমানীর পুজ্পকঃ ভুজ্যতে ত্বা।। ৭ ।।
যমো জিতঃ কালদপ্তান্তরং নাভূত্য় প্রভো!।
বরুণো ভ্রুতেনৈব জিতঃ সর্ব্বেইপি রাক্ষ্যাং। ৮।
ময়ো মহাসুরো ভীত্যা কন্যাং দত্ত্বা স্বয়ং তব।
ত্বাশে বর্ত্তেইদ্যাপি কিমুতান্যে মহাসুরাং ? ॥ ৯
হন্মদ্বর্ষণং যত্ত্ব তদবক্ষাক্বতং চনঃ।
বানরোইয়ং কিম্মাক্মিম্মিন্ প্রেক্ষদর্শনে ॥ ১০ ॥

মহাদেব কহিলেন—দশানৰ লক্ষাপুনীতে মাকতি কর্ছক দেবতাদিগের ভ্রমাণ্ড কার্যা সম্পন্ন দশনে লচ্ছিত ছইরা অধাবদনে সমস্ত মন্ত্রিগণকে আহ্বান করিয়া কহিল—হে মন্ত্রিগণ হে সকল কার্য্য করিয়াছে ভাষা ভোমরা দর্শন করিয়াছ—মাকৃতি ছরাক্রমা লক্ষাপুরী, প্রবেশ করিয়া সীতা দর্শন পূর্বাক মহাবল রাক্ষমণ ও মন্দোদরী তনয় অক্ষ্র ক্মারকে বিনাশ করিয়া সমস্ত লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করত ক্ষারকে বিনাশ করিয়া সমস্ত লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করত ক্ষারকে বিনাশ করিয়া সমস্ত লক্ষাপুরী ভত্মসাৎ করত ক্ষারকে বিনাশ করিয়া সম্ভ ভল্লভ্যন পূর্বাক গমন করিয়াছে, এক্ষণে আমাদের কি করা কর্তব্য ভাষার মন্ত্রণা কর—রাবণের বাক্য প্রবাণ করিয়া রাক্ষ্যাণ কছিল—হে দেব! আপনি ভ্রম বিজ্ঞেমী, কি জন্য রামকে শক্ষা করিডেছেন? আধানার পুত্র মেবনাদ দেবরাজ ইন্তাকে পাশ ছারা বন্ধন করিয়া নিক্ষেপ

করিয়াছিল এবং ধনাধিপ কুবেরকে পরাজয় করিয়া পুল্পক রথ আনয়ন করিয়াছে, ভাহা আপনি উপভোগ করিতেছেন। হে প্রভো! আপনা কর্জক যমও পরাজিত হইয়াছে, অভএব কালদণ্ড ছইভেও আপনার ভয় নাই, অলপতি বরুণ আপনার হুয়ার ধনিতেই পরাজিত ছইয়াছে, ভুবন জয়ী ময়দানব পরাজিত হইয়া আপনাকে কন্যা দান করিয়া অদ্যাপি আপনার বশীভূত হইয়া আছে, নিশ্চয়ই অন্যান্য অলুর্বাণ আপনা কর্জক পরাভব ছইবে—যে হুমান্ লঙ্কাপুরী পরাভব করিয়াছে, ঐ সামান্য বানরকে বিনাশ করিলে পৌক্ষম মাত্রই লক্ষিত হয় না—এইয়প বিবেচনা করাতেই সে আমাদিগের রক্ষিত লঙ্কাপুরী ধর্ষণ করিয়া জীবন ধারণ পূর্বক গমন করিয়াছে, আমরা প্রমন্ত হইলে কি ঐ বানর লঙ্কাপুরীকে পরাভব করিতে ইত্যুপেক্ষতমন্মাভিধ র্বণং তেন কিং ভবেৎ।
বরং প্রমন্তাঃ কিং তেন বঞ্চিতাঃ ন্মো হন্মতা?।।
জানীমো যদি তং দর্ফে কথং জীবন্ গ্রিষ্যুতি?
আজ্ঞাপয় জগৎক্ষংশ্লমবানরমমান্ত্রম্য। ১২।
কুত্বা যাম্মামহে দর্ফে প্রত্যেকং বা নিয়োজয়।
কুত্তকর্গন্তদা প্রাহ রাবণং রাক্ষদেশ্রম্য। ১৩।
আরক্ষং যত্ত্বয়া কর্মা স্বাজ্যনাশায় কেবলম্।
ন দৃষ্টোহদি তদা ভাগ্যাত্তং রামেণ মহাত্মনা। ১৪
যদি পশ্যতি রামন্তাং জীবন্নায়াদি রাবণ!।
রামোন মানুষো দেবঃ সাক্ষান্নারায়ণেহবয়েঃ॥১৫
সীতা ভগবতী লক্ষ্মী রামপত্নী যশস্বিনী।
রাক্ষানাং বিনাশায় ত্রানীতা স্ক্মধ্যমা। ১৬।

বিষপিগুনিবাগীর্য মহামীনো যথা তথা।
আনীতা জানকা পশ্চাত্ত্রা কিং বা ভবিষ্যতি। ১৭
যদ্যপ্যকুচিতং কর্মা ত্বয়া ক্রতমজানতা।
সর্বাং সমং করিষ্যামি স্বস্থচিত্তো তন প্রভা!।১৮
কুম্ভকর্ণবচঃ শ্রুত্বা বাক্যমিশুজিদন্তবীৎ।
দেহি দেবি! মমানুজ্ঞাং হত্বা রামং স লক্ষ্যণম্।
সুত্রীবং বানরাংকৈচব পুনরায়াস্য তেইন্তিকম্।। ১৯

তত্তাগতো ভাগবতপ্রধানো
বিভীষণো বুদ্ধিমতাম্বরিষ্ঠঃ।
শ্রীরামপাদদ্বর্থকতানঃ
প্রণম্য দেবারি মুপোপবিষ্ঠঃ॥ ২০॥
বিলোক্য কুন্তশ্রবণাদিদৈত্যান্
মন্তপ্রমন্তানিতিবিশ্বরেন।

সমর্থ হইত ? এবং আমরা সকলে এ বানরকে বিদিত হইলেই কি জীবন ধারণ করিয়া গমন করিতে পারিত ? হে রাজন্! আদেশ ককন, আমরা সমস্ত রাক্ষসগণ মিলিভ হইরা নিখিল জগতের কানর ও মনুষ্য সমস্ত বিনাশ কবিরা প্রভ্যাগ্যন করিব, আমাদিগের এক এক রাক্ষসকে নিযুক্ত করিলেই সমস্ত বানর ও মনুষ্গণ বিনাশিত হইবে | ১ ব ব ত ৪ ব ব ব

অনন্তর কুন্তকর্ণ রাক্ষসেশ্বর রাবণকে কছিল—হে আর্য্য!
আপনি যে কার্যা করিতে আরম্ভ করিয়াছেন, তাহা কেবল
আত্মবিনাশার্থই পরিকম্পিত হইয়াছে—ভাগ্য বশত রামচন্দ্র
আপনাকে দেখিতে পান নাই, মহাত্মা রাম আপনাকে দর্শন
করিলে জীবন ধারণ পূর্মক আপনাকে আর প্রত্যাগমন
করিতে হইত না—হে দশানন! রামচন্দ্র মহুবা নহেন—

অনাদি স্বরং নারারণ দেব মহুষা রূপে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন, এবং ভগবতী লক্ষ্মী স্বরং দীতা রূপে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন গে প্রকর মহামীন আত্মবিনাশার্থ বিধমিশ্রিত মাংগপিও ভক্ষণ করিয়া থাকে. দেই প্রকার আপনি রাক্ষণ কুলের বিনাশার্থ স্বধামা রাম-পত্নী দীতাকে আনরন করিয়াছেন এক্ষণে কি হইবে তাহাও নিশ্চর করা যার না—বদ্যপিও না জানিয়া অনুচিত কর্ম করা হইয়াছেতথাপি মামি দেসমুদারের প্রতিকার করিতে প্রস্তুত আছি—হে শ্রভা! আপনি স্বস্থ মানদে অবস্থিতি কহন। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। কুস্তুকর্পের বাকা শ্রবণ করিয়া ইন্দ্রজিৎ কহিল—হে দেব আদেশ ক্ষণে আমি লক্ষ্মণের সহিত রাম লক্ষ্মণ ও বানর গণকে নিধন করিয়া ক্ষণকাল মধ্যে আপানার সমীপে আগগমন করিব। ও সম্য প্রীরাম পদার্পিত মান্স, স্বৃদ্ধি বৈশ্বব্রেম বিদ্ধীরণ

বিলোক্য কামাতুরমপ্রমন্ত্রা
দশাননং প্রাহ বিশুদ্ধরুদ্ধিঃ॥ ২১॥
ন কুন্তুকর্ণেক্র কিটে চ রাজন্!
তথা মহাপার্শ নহোদরে তৌ।
নিকুন্তুকুন্তো চ তথাতিকারঃ
স্থাপুং ন শক্তা যুধি রাঘবস্থা॥ ২২॥
সীতাতিধানেন মহাগ্রহেণ
গ্রস্তোহসি রাজন্! ন চ তে বিভোক্ষঃ।
তামের সংকুল মহাধনেন
দক্ত্বাতিরামার সুখী ভব তুম্।। ২৩॥
যাবন্ন রামস্য সীতাঃ শিলীমুখা
লক্ষামতিব্যাপ্য শিরাংি রক্ষসাম্।
ছিন্দন্তি তা দ্রম্নায়কস্য ভো!
তাং জানকীং তুং প্রতিদাতুমহ্সি। ২৪

মাবন্ধগাভাঃ কপয়ো মহাবলা
হরীন্দ্রভুল্যা নখদংক্ট্রোধিনঃ।
লঙ্কঃং সমাক্রম্য বিনাশয়স্তি নো
তালক্রভং দেহি রঘুত্তমায় তাম্। ২৫।
যাবন্ধ রামেণ বিমোক্ষসে ত্বং
গুপ্তঃ স্থুরেন্দ্রৈরিপ শক্ষরেণ।
ন দেবরাজাক্ষগতে। ন মৃত্যোঃ
পাতাললোকানপি সংপ্রবিক্ষঃ। ২৬।
শুভং হিতং প্রিজং চ বিভীষণবচঃ খলঃ।
প্রতিজ্ঞাহ নৈবাসৌ দ্রিয়্মাণ ইবৌষধম্। ২৭।
কালেন নোদিতো দৈত্যো বিভীষণমথাইত্রবীং।
মদ্দত্তভোগৈঃ পুষ্টাকো মৎসমীপে বসন্ধ্রি। ২৮

বাবণকে প্রণাম পূর্বক উপবেশন করিল এবং কুন্থকর্ণ প্রভৃতি
দৈত্যগণকে অভিশয় প্রমত্ত দর্শনে বিশ্বয়াপন হওত নিন্তর বৃদ্ধি
কামাতুর দর্শাননকে কহিল হে দেবারে! কুন্তকর্ণ ইন্দ্রজিৎ
এবং মহাপার্থ মহোদর নিকুন্ত কুন্ত ও অভিকায় প্রভৃতি
মহাবল রাক্ষ্য পে যুদ্ধ মধ্যে রাম সম্মুখে অবস্থিতি করিতে
কেচই সমর্থ হইবে না হে গাজন! সীতা নামক মহাব্যাহ অর্থাৎ রাত্ত ভোমাকে প্রাস্ক করিয়াছে—ঐ প্রাস্ক হৈতে
ভোমার মুক্তিহইবে না; অতএব মহাবল রামচন্দ্রের সংকার
পূর্বক সীতা সমর্পণ করিয়া পর্ম সূথে কাল যাপন কর, যাবৎ
কাল বাম-নিক্ষিপ্ত শিলী মুখ বাণ লহার প্রবেশ করিয়া
বাক্ষ্যগণের মন্তক সমুহ বিচ্ছিন্ন না করিবে সেই পর্যাধ্ব

দানকী সনর্পণে তোমার অধিকার থাকিবেক. যে পরান্ত সিংছ তুল্য নথদণ্ড যোদ্ধা পর্বতাকার কপিগাল লক্ষাপুর্বা আক্রমণ করিয়া আমাদিগকে বিনাশ না করে ভাবৎকাল মধ্যে রম্বরে সীতা সমর্পণ কর, ঐ মনোভিরাম শ্রীরামে সীতা সমর্পণ না করিলে, মহাদেব ও অন্যান্য সমস্ত দেবতা রুল কর্ত্বির রক্ষিত ছইলে—কি দেবরণক্ষ ইন্দ্রের ও প্রলয়কারি যমরাজ্বের ক্রোড়গত ছইলে—কি পাভাললোকে প্রবেশ করিলেও শ্রীরাম হইতে বিমুক্ত হইতে পারিবে না। যে প্রকার মুর্বাজন যম কর্ত্বি আকৃষ্ট হইলে রোগা নাশক ঔষধী সেবনে বিরভ ছইয়া থাকে, সেই প্রকার পাপাত্মা দশানন বিভীষণের ছিলকর ও পবিত্রতম বাক্য উপেক্ষা করিয়া কহিল, এই বিভীষণ আমার অন্ন ভোক্তন যারা প্রথাক ছইয়া এবং আমার সমীগে প্রতীপমাচরত্যেষ মথৈব হিতকারিণ:। মিত্রভাবেন শক্রমে জাতো নাস্ত্যত্ত সংশয়ঃ।২৯। चनार्यं क्रव्राचन मक्ष्वियं न युक्रारा । বিনাশমভিকাজ্জনি জ্ঞাতীনাং জ্ঞাতরঃ সদা। ৩০ (यांश्नारख्विष्यः जन्नाष्ठाकारमकः निभावतः। হিমা ভিমান কাণে এব ধিক্ ত্বাং রক্ষাক্ষাধ্মম্॥ वावत्तरेतव मूक्तः मन् शक्रवः म विजीवनः । উৎপপাত সভামধ্যাৎ গদাপাণিমহাবলঃ॥ ৩২॥ চত্তিমন্ত্রিভিঃ দার্দ্ধং গগনস্থোংত্রবীদ্বচঃ। ক্রোধেন মহতাবিষ্টো রাবণং দশকন্ধরম । মা বিনাশমুপৈছি ত্বং প্রিয়বাদিনমেব মাম ॥৩৩ धिकरतािष ज्याि पर खारकी बाजा निष्टुः मयः

কালো রাঘবরূপেণ জাতো দশর্থালয়ে॥ ৩৪॥ কালী দীতাভিধানেন জাতা জনকনন্দিনী। তারুভাবাগতাবত ভূমের্ভারাপুরুম্বে ॥ ৩৫ ॥ তে देनव প্রেরিভন্তং জু न খুলোষি হিতং মম। শ্রীরামঃ প্রক্রতেঃ দাক্ষাৎপরস্তাৎ দর্বদা স্থিত: ॥ বহিরস্তুশ্চ ভূতানাং সমঃ সর্দ্বত্ত সংস্থিতঃ। নামৰপাদিভেদেন তন্ত্ৰমায় ইবামলঃ ৷ ৩৭ ৷ যথা নানাপ্রকারেয়ু রক্তেব্যুকো মহানলঃ। তত্তদাক্তিভেদেন ভিদ্যতে জ্ঞানচকুষাম্॥ ৬৮॥ পঞ্কোষাদিমেদেন তত্ত্বমুর ইবাবভে। নীলপীতাদিযোগেন নিৰ্মালঃ ক্ষটিকো যথা॥ ৩৯

অবস্থিতি করিয়াও অহিভকারি রামের অনুকূলভাচরণ করি-তেছে, হুরাক্সা আমার মিক্রতা প্রকাশ পূর্বক শত্রু হইয়া জন গ্রহণ করিয়াছে ভাগতে সংশয় মাত্র নাই, অভএব এ মূর্প ক্লভন্নকে আমার সংদর্গ রাখা যুক্তিসিদ্ধ নছে, জ্ঞাতিগণ জ্ঞাতিগণের বিনাশ ইচ্ছা করিয়াই থাকে, কিন্তু নিশাচর মধ্যে অনাযে কোন জন আমার নিকট এই রূপ বাক্য কছিবে তাহাকে তৎক্ষণাৎ বিনাশ করিব। হে বিভীষণ! তুমি রাক্ষ্য কুলের অধন—তোমাকে ধিক্।২৯।৩০।৩১।

রাবণ এইরূপ কটু বাক্য কহিলে মহাবল বিভীষণ গদা গ্রহণ পূর্ব্বক মন্ত্রি চতুষ্টারের দহিত সভা হইতে উথিত হইয়া গমন করিল এবং গাগনমগুলে অবস্থিতি করত অতিশয় ক্রোধাবিষ্ট হুইয়া দশাননকে কছিল—হে রাবণ! তুমি বিনাশ প্রাপ্ত হটবে না, আমি ভোমার প্রিয় বাক্য কহিয়াছি,

ভাৰা, পিতৃ তুল্য ভোমাকে আর অধিক কি কহিব-- মন্তকারী কাল রাজা দশরথের গৃহে রামরূপে জন্ম গ্রেহণ করিয়াছেন এবং অন্তকারিণী কালী সীতা রূপে জনক গৃছে জন্মগ্রহণ করিয়া-ছেন, তাঁহার। উভয়ে মিলিত হইয়া পৃথিবীর ভার হরণ করিবার জন্য সমাগত ছইয়াছেন, তুমি ঐ কাল প্রেরিত ছইয়া আমার হিতকর বাকা শ্রবণ করিতেছ না। @নরাম প্রকৃতির দাক্ষাং পরম পুরুষ-নর্ব ভূতের বহির্দেশে ও অন্তঃকরণে সমভাবে অবস্থিতি করিভেছেন, কেবল ভিন্ন ভিন্ন নাম ও ভিন্ন আফুতি বশত একমাত্র নিশ্নল প্রদাত্ম ভিন্ন ভিন্ন রূপে প্রতীয়মান হইতেছে---যেমন নানাবিধ রক্ষ সমূহ মধ্যে প্রজলিত মহায়ি রক্ষ মস্তের আকৃতি ভেদ বশত অজ্ঞান চকু দারা ভিন্ন ভিন্ন রূপে দৃশা চট্যা থাকে সেই প্রকার ক্ষিত্রি, জল, তেজ, বায়ু, আকাশ এই পঞ্ছু শল্পক দেছের ভেন বশত ঐ দেহাবস্থিত অদিতীয় প্রমপ্কবও ভিন্ন ভিন্ন রূপে ভথাপি আমাকে ধিকার করিভেছ—তুমি আমার জ্যেষ্ঠ বিকাশিত হন, যেরপ এক মাত্র ক্ষ্টিক-পিও নীল পীতানি

দ এব নিত্যমুক্তোষ্পি স্বমায়াগুণবিষিতঃ।
কালঃ প্রধানং পুরুষোধ্ব্যক্তং চেতি চতুর্বিধঃ॥
প্রধানপুরুষাভ্যাং দ জগৎ কৃৎস্নং সৃজত্যজঃ।
কালৰপেণ কলনাং জগতঃ কুরুতেহ্ব্যয়ঃ॥ ৪১॥
কালৰপী দ ভগবান্ রামৰপেণ মায়য়া॥ ৪২॥
বেল্লণা প্রাধিতো দেবস্তুদ্ধার্থমিহাগতঃ।
তদন্যথা কথং কুর্যাৎ দেবস্তুদ্ধার্থমিহাগতঃ।
হনিষ্যতি ডাং রামস্ত দপুজ্বলবাহনম্।
হন্যমানং ন শক্ষোমি দ্রুষ্ণু রামেণ রাবণ !॥ ৪৪

ত্বাং রাক্ষসকুলং কুৎস্নং ততে। গচ্ছামি রাঘবং। মরি যাতে সুখী ভূত্বা রমস্ব ভবনে চিরম্ । ৪৫ ॥

> বিভীষণো রাবণবাক্যতঃ ক্ষণাৎ বিসূজ্য সর্বাং সপরিচ্ছদং গৃহং। জগাম রামদ্য পদারবিক্ষরোঃ সেবাভিকাঞ্জনী পরিপূর্ণমানসং॥ ৪৬॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
যুদ্ধকাণ্ডে দিতীয়োহধ্যায়ঃ।

লানা বর্ণের ছায়াগত ছইলে নীল ক্ষ্টিক, পীত ক্ষটিক ইড়াদি রূপে ব্যবহৃত হইয়া থাকে, সেই প্রকার নিত্যযুক্ত নির্মূল পার-মাঝা ফ্রকীয় মারা গুণ ছারা প্রতিবিশ্বিত ছইয়া কাল প্রধান পুরুষ অব্যক্ত এই চতুর্ভাগে বিভক্ত ছইয়া প্রধান ও পুরুষ শক্তি ছারা সমস্ত জগৎ স্জ্ঞান করেন। কাল স্বরূপ ভগবান্ পরমেশ্বর বিরিঞ্চি কন্থাক প্রাথিত ছইয়া স্বকীয় মায়া হারা রাম শরীয় ধারণ পূর্প্তক ভোমাকে বিনাশ করিবার জন্য এই পৃথিবী মণ্ডলে সমাগত ইইয়াছেন, সন্ত্য-সঙ্কপ্প প্রমেশ্বর কি প্রকারে ভাহার জন্যথা করিবেন—হে রাবণ গ্রীরাম আসিয়া পুল্ল সৈন্যাদির সহিত ভোমাকে ও সমস্ত রাক্ষসকুল যে বিনাশ করিবেন ভাহা দর্শন করিতে আমি সমর্থ হইব না, অভএব আমি জীরাম সমীপে গমন করিলে তুমি স্বকীয় ভবনে পরম স্থাপ কাল যাপন কর। অনস্তর বিভীয়ণ রাবণের বাক্য প্রবণ করিয়া ক্ষণকাল মধ্যে গৃহাদি সমস্ত পরিভাগে পূর্বক প্রীরাম পাদ সেবাভিলাধী হইয়া সাংলাদ্চিত্তে গমন করিল। তিহ । ৩০। ৩০। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪১। ৪২। ৪৩।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে

যুদ্ধকাণে বিভীরোহধ্যায়ঃ।

তৃতীয়ো২ধ্যায়ঃ।

বিভীষণো মহাভাগশচতু ভি শান্তি ভি: সহ।
আগত্য গগনে রামসমুখে সমবস্থিত: ॥ ১॥
উচৈক্রবাচ ভো স্বামিন্! রাম! রাজীবলোচন!
রাবণসামুজোংহং তে দারহতু বি ভীষণ: ॥ ২॥
নামা ভাতা নিরস্তোহহং আমেব শরণং গতঃ।
হিতমুক্তং ময়া দেব! তস্য চাবিদিতালুন: ॥৩॥
সীভাং রামায় বৈদেহীং প্রেষ্ঠে পুনঃ পুনঃ।
উক্তোহিপি ন শৃণোত্যেষং কালপাশবশং গতঃ ॥৪
হন্তং মাং থজামাদায় প্রাদ্রবদ্ধাক্ষসাধ্যঃ।
ততে৷ চিরেণ সচিবৈশ্চতু ভিঃ সহিতো ভয়াৎ ॥ ৫

বাদেব ভবনোক্ষার মুমুক্কু: শরণং গতঃ।
বিভীষণবচঃ শুজা স্থাবা বাক্যমন্ত্রী । । ।।
বিশ্বাসাহে নি ভেরাম! মায়াবী রাক্ষ্যাধমঃ।
সীতাহতু বি শেষেণ রাবণসাানুক্ষো বলী ॥ ৭ ॥
মান্ত্রিভিঃ সায়ুধৈরস্মান, বিবরে নিহনিষ্যতি ॥ ৮ ॥
তদাজ্ঞাপয় মে দেব! বানরৈর্হ ন্যতাময়ম্।
মথেবং ভাতি তেরাম! বুদ্ধাা কিং নিশ্চিতং বদ
শুজা স্থাবিষদং রামঃ সন্মিত্মন্ত্রবী । । ।।
যদীজ্ঞামি কপিশ্রেষ্ঠ! লোকান্ সর্বান্ মহেশুরান
নিমিষার্দ্ধেন সংহন্যাং সূজানি নিমিষার্ধ্ তঃ ॥১০॥
আতো ময়াভয়ং দত্তং শীঘ্রমানয় রাক্ষ্যম্ ॥১১॥

মহাদেব কহিলেন—মহামতি বিভীষণ মন্ত্রি চতুষ্টরের
সহিত গাগন মণ্ডলে রাম সন্থ্য অবস্থিত হইয়া উচিচঃস্বরে
কহিল—হে স্বামিন্! আমি আপনার ভার্যাপহারী দশাননের অনুজ বিভীষণ নামা রাক্ষ্য ভ্রান্ত কর্তৃক পরিভাক্ত হইয়া আপনার শরণাগত হইলাম, হে দেব! আমি
ভ্রান্ত্রা রাবণের এই রূপ হিতকর বাক্য পুনঃ পুনঃ কহিয়াছি
সে, হে দশানন! তুমি জগদীশ্বর শীরামে সীতা সমর্পণ কর,
রাক্ষ্যাধ্য ভ্রান্ত্রা কাল পাশের বশতাপন্ন হইয়া ঐ হিতকর
বাক্য উপেক্ষা করিয়া থজা গ্রেহণ পূর্বেক আমাকে নিধন
করিতে সমাগত হইয়াছিল, অনন্তর ভীত হইয়া মন্ত্রি
চতুক্টরের সহিত এই অপার ভ্রসংসার সন্তরণ পূর্বেক মুক্তি
লাভ করিবার আশায়ে আপনার শ্রণাগত ইইয়াছি। স্থাীব

বিভীষণের এই বাক্য শ্রুবণ করিয়া কছিল—হে ঞ্জিরাম! এই
মায়াবী রাক্ষ্যাধ্য বিশ্বাস যোগ্য ছইতে পারে না, কারণ
ত্রাত্মা রাবণের কনিষ্ঠও অত্যন্ত বলবান্," ঐ অন্তথারী মলিগণ দ্বারা আমাদিগকে পর্বত গুহার মধ্যে নিক্ষেপ করত
বিনাশ করিবে। হে দেব! আদেশ করুন বানরগণ বিভীষণকে
যম সদলে প্রেরণ করুক—হে রাম! আমার এইরূপ অনুমান
হইতেছে আপনি যাহা ভির করিয়াছেল ভাছা প্রকাশ করুন।
পারে স্প্রীবের বাক্য শ্রুবণ করিয়া শ্রীরাম হাস্য বদনে
কহিলেন—হে কপিবর! আমি ইচ্ছা করিলে ঈশ্বের সহিত
এই ত্রিভ্রন নিমেবার্দ্ধ মধ্যে বিনাশা ও স্ক্রন করিতে পারি

সক্দেব প্রপন্নার তবাস্মীতি চ যাচতে।
অভয়ং সর্বভূতেভাগ দদাম্যেতদুতং মম ॥ ১২ ॥
বামস্য বচনং শ্রুত্বা স্থ্রীবো ক্রন্টমানসঃ।
বিভীষণমথানায্য দর্শরামাস রাঘ্বম্ ॥ ১৩ ॥
বিভীষণস্থ সাফাঙ্গং প্রণিপত্য রঘুত্তমম্।
হর্ষগক্ষাদ্রা বাচা ভক্ত্যা চ পররাম্বিতঃ ॥ ১৪ ॥
বামং শ্যামং বিশালাকং প্রদন্তম্বশক্ষ ।
ধনুব গিধরং শান্তং লক্ষাণেন সমন্বিতং ॥ ১৫ ॥
কৃত্যঞ্জলিপুটো ভূত্বা স্থোভূং সমুপচক্রমে ॥১৬॥
বিভীষণ উবাচ।

নমস্তে রাম! রাজেন্দ্র! নমঃ দীতামনোরয়! নমস্তে চণ্ডকোদণ্ড! নমস্তে ভক্তবৎদল!॥ ১৭। নমাহনস্তায় শাস্তায় রামায়ামিততেজদো।

ফুগ্রীবমিত্রায় চ তে রঘূণাং পতয়ে নমঃ॥১৮।

জগদূৎপত্তিনাশানাং কারণায় মহাত্মনে।

ত্রৈলোক্যগুরবেহনাদিগৃহস্থায় নমো নমঃ॥১৯॥

ফুমাদির্জগতাং রাম! ত্মেব স্থিতিকারণম।

ফুমস্তে নিধনস্থানং স্বেচ্ছাচারস্ত্মেব হি।২০।

চরাচরাণাং ভূতানাং বহিরস্তশ্চ রাঘব!।

ব্যাপ্যব্যাপকর্মপেণ ভবান্ ভাতি জগম্ময়ঃ।২১

ফুমায়য়া হৃতজ্ঞানা নফীজ্মানো বিচেত্সঃ।
গতাগতং প্রপদ্যস্থে পাপপুণ্যবশাৎসদা।২২।

অভএব তোমাকে অভয় প্রদান করিলাম তুমি শীত্র ঐ নিশাচরকে আনয়ন কব, যে জন 'আমি আপনার শরণাগভ ্ইলাম'
এইরূপ প্রার্থনা করিবে আমি ভাষাকে অভয় প্রদান করিব,
আমার এইরূপ সঙ্কাপিত ব্রভ বিদ্যমান বহিয়াছে। ১।২।
তারা হোডা ৭।৮।১।১০।১১।১২।

রামের এইরূপ বাক্য শ্রবণে স্থাবি হর্ষ প্রকাশ পূর্ব্বক বিভীষণকে আনমন করিয়া শ্রীরামকে দর্শন করাইল, বিভী-ষণ সাফ্টাঙ্গে প্রণাম করিয়া ক্লভাঞ্জলিপুটে গদগদ বচনে ভক্তি সহকারে প্রসন্ধান ধনুর্বাণধারী শ্রীরামকে স্তব করিছে আরম্ভ করিদ। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬।

হে রাম ! ছে রাজেন্দ্র ! তোমাকে প্রণাম করি—তুমি প্রচণ্ড
ধমুধ বিরণ করিরাছ, তোমাকে প্রণাম করি—তুমি ভক্ত জনে
বাৎসল্য বিতরণ করিতেছ অতএব ভোমাকে প্রণাম করি—তুমি
সাক্ষাৎ অনন্তদেব ও শান্ত মূর্ত্তি ভোমাকে প্রণাম করি—তুমি

সর্ব্ব সাধারণের মনোরম্য ও অপরিমিত তেজ্ঞশালী ভোমাকে প্রণাম করি—তুমি কপিরাজ স্থ্রীবের অতিশয় প্রিয় মিত ভোমাকে প্রণাম করি—তুমি রঘুকুলের কর্ত্তা তোমাকে প্রণাম করি—তুমি জগৎ সংসারের উৎপত্তি ও বিনাশের কারণ স্বরূপ তোমাকে প্রণাম করি—ভূমি স্বর্গ মর্ত্ত পাভাল ত্রি-ভ্বনের গুকদেব ভোমাকে প্রণাম করি –তুমি অনাদি গৃহস্ত তোমাকে প্রণাম করি—হে রাম তুমি জগতের উৎপত্তি ও স্থিতির কারণ ও অন্তকালে নিধন স্থান, তোমাকে প্রণাম করি—তুমি খেচ্ছা বশত সমস্ত কার্য্য করিতেছ, হে রাঘব তুমি চর ও অচর ভূতদিগের বহির্দেশে ও অন্তঃকরণে ব্যাপা ও ব্যাপক রূপে জগমায় অর্থাৎ নশ্বর পদার্থের প্রায় প্রকাশিত হইরাছ। জীবাঝা তোমার মারা দারা হত জ্ঞান ও বিনই চিত্ত হইয়া পাপ পুণা বশতঃ অনব্যত জন্ম ও মর্ণ প্রাপ্ত হুইবে, যেমন ভ্রম বশত শুক্তি (অর্থাৎ ঝিমুক) রজভরণে প্রতীয়মান হট্য়া থাকে ঐ রূপ মিথ্যা বিনশ্বর এই জগৎ সংসার সত্যরূপে প্রতীয়মান হইবে। ১৭। ১৮। ১৯।২০। 125 | 22 |

তাবৎসতাং জগন্তাতি শুক্তিকারক্সতং যথা।

যাবর জ্ঞারতে জ্ঞানচেত্সা নাম্বগামিনা।।২৩।।

ঘলজানাৎসদা যুক্তাঃ পুজ্ঞদারগৃহাদিয়ু।
রমন্তে বিষয়ান্ সর্বানন্তে ছু:খপ্রদান্ বিভো!।। ২৪

হুমিল্রোইগ্লির্যমো রক্ষো বরুণশ্চ তথানিকঃ।

কুবেরশ্চ তথা রুদ্রস্থমেব পুরুষোন্তমঃ।। ২৫।।

দুমণোরপাণীয়াংশ্চ শুলাৎ শুলতরঃ প্রভো!

দুং পিতা সর্বালোকানাং মাতা ধাতা দ্বনেব হি।।

আদিমধ্যান্তরহিতঃ প্রিপূর্ণোইচুতোইব্যয়ঃ।

দুং পাণিপাদরহিতশ্চকুঃশ্রোক্রবিবর্জিতঃ।। ২৭।।

শ্রোতা দ্রুফী গৃহীতা চ জ্বনন্ত্রং ধরান্তকঃ।

কান্তেয়া ব্যতিরিক্তন্ত্রং নির্গুণো নিরুপাশ্রয়ঃ।

তে প্রভা তিনামকে না জানিয়াই মূচ জনেরা পূজ, দারা, গৃহা দিতে আশাক হইয়া তুঃপদায়ক সমস্ত বিষয়ে রমণ করিয়াথাকে। বাস্তবিক দেবরাজ ইন্দ্র অগ্নি, যম, রক্ষ, বহুণ, বায়ু, কুবের, পুরু-মোত্তম নারায়ণ প্রভৃতি সমস্ত দেবতাগণই ভোমার অংশ প্রহণ করিয়া স্ফ্যাদি কার্যা সম্পাদন করিতেছেন, এবং তুমি স্ক্রম ইতৈও স্ক্রমতর ও স্থূল হইতেও স্থূলতর এবং সমস্ত লোকের মাতা পিতা ও ধাতা অগাৎ সমুদায় জীবকে সম ভাবে পালন করিতেছেন। হে রাম! তুমি আদি, মধ্য ও অন্তর্মনিত অবায় ও অচ্যুত, তুমি হস্ত, পদ, চক্ষু ও কর্ণ বিছীন অগচ সকল বিষয়ই প্রবণ করিতেছ—দর্শন করিতেছ—প্রহণ করিতেছ এবং অয়য়য়, প্রাণময়, মনয়য়, বিজ্ঞানময় ও আন্নাময় প্রথ কোশ ব্যতিরিক্ত নিশ্ত গ গ্রাধারান্তর রহিত।

নির্মিকপো নির্মিকারো নিরাকারো নিরীশবঃ।

বড়ভাবরহিতোহনাদিঃ পুরুব প্রাক্ততেঃ পরঃ।। ২৯।

নাররা গৃহ্যমাণস্তং মন্ত্রবা টব ভাব্যদে।

জ্ঞাড়া ডাং নির্গুণমজং বৈক্ষবা মোক্ষগামিনঃ।।৩০

অহং ড্রুপাদস্থাক্তিনিশ্রেণীং প্রাপ্য রাঘব!।

ইচ্ছামি জ্ঞানযোগাবং সৌধমারোচুমীশ্বর!।।৩১

নমঃ সীতাপতে! রাম! নমঃ কারুণিকোত্তম!।

রাবণারে! নমস্তভাং ত্রাহি মাং ভ্রমাগরাই॥৩২

ততঃ প্রসন্ত্র: প্রোবাচ শ্রীরামো ভক্তবংসলং।

বরং রণীযুভদ্রস্থে বাঞ্জ্ঞিং বরদোহস্মাইম্।।৩৩।।

বিজ্ঞীষণ উবাচ।

ধন্যোহিশ্ম ক্লভক্ষভ্যোহশ্মি ক্লভকার্য্যেহশ্মি রাঘব ! ত্রৎপাদদর্শনাদের বিমুক্তোহশ্মি ন সংশয়ঃ : । ৩৪

হেরাম! তুমি নির্নিকপ্প, বিকারশ্বা, নিরাকার, নিরীধর ও প্রকৃতির ষড ভাব রহিড, জনাদি প্রম পুরুষ, তুমি মায়া ছাব। গৃহ্যমাণহইয়া মহয়া তুলা ভাবনা করিয়া থাক, কিন্তু বৈয়য়বেরা ভোমাকে নিগুণময় জানিতে পারিয়া মোক্ষ প্রাপ্ত হয়। হে রাছব! আমি ভোমার পাদপা্মে ভক্তিরপী আরোহিণী প্রাপ্ত হইয়া জ্ঞান যোগারপ প্রাসাদে আরোহণ করিতে বাসনা করি। হে রাম! তুমি সীতাপতি—ভোমাকে নমস্থার করি—তুমি করুণাময় ভোমাকে নমস্থার করি—পে রাবণ শত্রো! ভোমাকে নমস্থার করি—আমাকে ভবসাগর হইতে পরিজ্ঞাণ কর। ভক্তবৎসল শ্রীরামচক্ত বিভীষণের বাক্য শ্রবণ প্রসাহইয়া কহিলেন—ভোমার মঙ্গল হউক— প্রকাশে ভোমার বাঞ্ছিত বর, গ্রহণ কর ঘেছেতু আমি ভোমাকে বর প্রদান করিব। ২০। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯।

বিতীয়ণ কহিল—হে রাঘব! তোমার পাদপাম দশনে

नास्ति यहमहामा धानाः नास्ति यहमहामाः छि ।
नास्ति यहमहामा लाक द्राम ! प्रमू र्द्धिमर्गनाः ।।
कर्मावस्विनामाम् प्रमू क्लानः छि लाम्कन्म् ।
प्रम्यानः श्रद्धमानः श्रद्धमानः श्रद्धानः श्रद्धमानः श्रद्धमानः श्रद्धमानः श्रद्धमानः श्रद्धमानः श्रद्धमानः श्रद्धमानः ।।
न याक द्राम ! द्राक्षमा ! द्र्यः विषयमः छवम्।
प्रमू वाक्षमा मक्ता छि द्रित्व मास्ति काम्पम् ।
श्रिक्षमानि ए छक्तः ! द्रम्यः मम निक्ष्णमम् ।
श्रद्धमानः श्रद्धमानाः विषयमानाः ।
स्वाति विषयमानाः श्रद्धमानाः विषयमानाः ।।
स्वाति विषयमानाः विषयमानाः ।।
स्वाति विषयमानाः ।।

সেওি মেত ৎপঠে ছান্ত লিখেনাঃ শৃণুয়ানপি।
মংগ্রীতয়ে মমাভীষ্টং সান্ধপ্যং সমবাপ্লু য়াৎ ॥ ৪৩ ॥
ইত্যুক্ত্বা লক্ষাণং প্রাহ শ্রীরামো ভক্তভক্তিমান্।
পশ্যতিদানীমেবৈষ মম সক্ষর্শনে ফলম্॥ ৪২ ॥
লক্ষারাজ্যেংভিষেক্ষ্যামি জলমানয় সাগরাং।
যাবক্ষম কথা লোকে তাবজাজাঃ করোত্বসে।।
ইত্যুক্ত্বা লক্ষাণেবাস্থু হ্যানায়্য কলশেন তম্॥ ৪২ ॥
লক্ষারাজ্যাধিপত্যার্থমভিষেকং রমাপতিঃ।
কারয়ামাস সচিবৈর্লক্ষাণেন বিশেষতঃ ॥ ৪৫ ॥
সাধু সাধিতি তে সর্বের বানরাস্তেষ্ট্রুর্ভ্শম্।
স্থ্রীবোহিপ পরিষ জ্যবিভীষ্পম্থাত্রবীৎ ॥ ৪৬ ॥

তামি ধন্য হইলাম—ক্তক্ত্য হইলাম আমার মনোরথ
পূর্ণ হইল—এবং আমি বিমুক্ত হইলাম তাহাতে কোন সন্দেহ
নাই। হে রাম! তোমায় মূর্তি দর্শনে এই ত্রিভ্বন মধ্যে আমা
সদৃশ ধন্য নাই—আমা সদৃশ শুচি নাই এবং আমাতুল্য লোকও
নাই। হে রঘুনন্দন! সংসার-কন্ম বিনাশ হেতু আমাকে
ভক্তি লক্ষণ বিজ্ঞান ও তোমার পরমার্থ ধান প্রদান কর।
হে রাম, রাজেন্দ্র! আমি বিষয় সম্বলিত স্থ প্রত্যাশা করিনা
কেবল তোমার পাদামুক্তে আমার ভক্তি যেন সর্বানাই নাস্ত
থাকে। প্রীরাম তাহার এই যাক্য শুনিরা প্রীতান্তঃকরণে
রাক্ষসকে কহিলেন।—হে ভক্তঃ! আমরা রহস্য কহিতেছি

আমি মন্তক শান্ত বীভরাগী যোগীদিগের হদর মধ্যে নীতার সহিত সর্বাদা বাদ করিয়া থাকি তাহাতে কোন সন্দেহ নাই, সেই নিমিত্ত তৃমি সর্বা পাণ খূন্য ও জিতে ব্রিয় হইয়া আমাকে ধান করিয়া ঘোর সংসার দাগর হইতে নাক্ষ

লাভ করিতেছ—বে ব্যক্তি আমার স্থোত্ত পাঠ করে, লিংখ অথবা শুবণ করে সে আমার প্রীতি ছেতু মমাভিল্যিত সাযুক্ত প্রাপ্ত ইইয়া থাকে। ভক্তবৎসল শ্রীরাম এই প্রকার করিয়াছে লক্ষমণকে বলিলেন—এই বিভীষণ আমাকে সন্দর্শন করিয়াছে অতথিব ইহার প্রেছিক ফল দর্শন করে। এক্ষণে সাগার হইতে জলানয়ন কর আমি ইহাকে লক্ষা রাজ্যে অভিষেক করিব— যাবৎ কাল পর্যন্ত চন্দ্র, স্থাও পৃথিবী দেদীপ্যমান্ থাকিবে এবং আমার কথা প্রচার থাকিবে তাবৎ কালাবিধি বিভীষণ রাজ্য ভোগা ককক। অনন্তর লক্ষ্মণ কলশ পূর্ণ জ্বল আনয়ন করিলে লক্ষ্মীপতি রাম মহাত্মা লক্ষ্মণের সহিত একত্রিত হইয়া সস্তিব বিভীষণকে লক্ষা রাজ্যে অভিষক্ত করিলেন। বানর সমন্ত পরিতৃষ্ট হইয়া ভাঁহাকে সাধুবাদ প্রদান করিতে লাগিল। অনন্তর স্থাীব তাহাকে কহিলু—হে বিভীষণ।

বিভীষণ ! বয়ং সর্কে রামস্য প্রমান্মনঃ। কিঙ্করান্তত্তে মুখন্তং ভক্তগা রামপরিগ্রহাৎ। ৪৭। রাবণদ্য বিনাশে তং সাহাযাৎ কভুমহ/সি। বিভীষণ উবাচ।

ব্দহং কিয়ান সহায়তে রামশ্র পর্যাত্মনঃ। কিন্তু দাস্যং করিষ্যেহং ভক্ত্যা শক্ত্যা ত্বমায়য়া॥ ৪৮ দশ্জীবেণ দন্দিষ্টঃ শুকো ৰাম মহাস্থুরঃ। সংস্থিতো ছম্বরে বাক্যং স্থাীব্যদ্য ব্বীৎ ॥ ৪৯ ॥ মাব্ধিষ্টেতি রামস্তান্ ব্রেয়ামাস বানরান্॥ ৫৫ ॥ জামাহ রাবণো রাজা ভাতরং রাক্ষসাধিপঃ। মহাকুলপ্রস্তত্ত্ং রাজাসি বনচারিণাম। ৫০॥ মম ভাতৃদমানস্তং তব নাস্ভার্পবিপ্লবঃ। অহং যদহরং ভার্য্যাং রাজপুত্রস্ত কিন্তব ?॥ ৫১।

कि किका। यादि इति छिलेका भका। न रेनवरेजः। প্রাপ্তং কিং মানবৈর পাদত্ত্ত্বর্মানর মুখপৈ: ? ॥ ৫২ তং প্রাপয়ন্তং বচনং ভূর্বমুৎপ্লাত্য বানরাঃ। প্রাপদান্ত তদা ক্ষিপ্রং নিহন্তং দৃঢ়মুষ্টিভিঃ।।৫৩।। বানরৈর্হন্যমানস্ত শুকো রামন্থাত্রবীৎ। ন দূতান্ মৃত্তি রাজেন্দ্র । বানরান্ বারয় প্রভো:। রামঃ শ্রুত্বা তদা বাক্যং শুক্ষা পরিদেবিত্য। **পুনরম্বরমাসাদ্য শুকঃ মুগ্রীবম্বী** । ক্রহি রাজন ! দশগ্রীবং কিং বক্ষ্যামি ? ব্রজান্যহম স্থগ্রীব উবাচ।

যথা বালী মম ভাতা তথা ডং রাক্ষসাধম !। হন্তব্যন্ত্রং ময়া যত্নাৎ সপুজ্রবলবাহনঃ। ৫৭ । '

আমরা সকলেই পরমান্তা গ্রীরামের কিঙ্কর, তন্মধ্যে তুমি প্রধান ৰূপে শ্ৰীরাম কর্তৃক পরিগৃহিত ছইয়াছ, অতএব একণে বাবণ বিনাশের সাহায্য করা উচিত হইতেছে। ৩৯। ৪০। 1 68 1 68 1 38 1 88 1 68 1 58 1 58 1

বিভীষণ কহিলেন--অপুমি পরমাত্মা জীরামচল্রের কি দাহায্য করিব ? কেবল যথা ভক্তি ও শক্তি দ্বারা অকপটরপে তাহার দাসাত্মত্তি করিব। ইত্যবসরে ওক নামক মহাস্কর দ্রশানন কর্ত্তক প্রেরিড হুইয়া আকাশ পথে অবস্থান পূর্বক প্রতীবকে কহিতে লাগিল—রাক্ষণাধিপতি রাবণ তোমাকে বলিরাছেন যে, তুমি মহন্বংশ সম্ভূত বালর্দিগের রাজা, আমার লাত তুল্য, আমা কৰ্ক তোমার অর্থনাশ নাই, তবে আমি ষে রাজপুত্রের ভাষাপেছরণ করিয়াছি তাহাতে তোমার কি হট্রাছে? তুমি বালরদিগের সহিত কিছিয়াায় প্রভাা-

গমন কর। কারণ দেবতারাও লঙ্কা জন্ম করিতে সক্ষম নঙ্কে তবে অত্যপপ বল-যুক্ত বানর-যুগপ দহ একতা হটয়া মানব কি প্রকারে লক্ষা জায় করিবে? শুকের বচন প্রবণ করিরা বানর সকল উল্লম্ফন পূর্ব্বক মুফ্ট্যাঘাত ছারা ভাছাকে বিনাশ করিতে উদ্যত হইল। অনন্তর শুক বানরগণ ছারা বিনষ্ট হইতে দেখিয়া রামকে বলিল —হে রাজেন্দ্র ! দৃত অবধা, অত-এব প্রভো! বানরগণকে নিবারণ করুন। ত্রীরামচন্দ্র ভাহার বাক্য শ্রবণ করিয়া উদ্যত-স্বভাব বানর সকলকে নিরুত্ত করিলেন, শুক আকাশ পথে পুনরায় গমন করিয়া স্থাবিকে কহিল—হে রাজন্! আমি এখনই গমন করিব, অভএব দশা-ननत्क कि विनिव ? । १४৮ । १२ । १८ । १८ । १८ । १८ । 100 1001

স্ত্রীব বাঙ্গছলে কছিল—ছে রাক্ষ্পাধ্য ! ধেমন বানী আমার ভ্রাতা তুমিও সেইরপ—এবং আমাকর্তক তুমি ও সপুত্র

ক্রহি মে রামচন্দ্রস্য ভার্যাৎ ক্রত্বা ক যাস্যাসি?
ততো রামাজ্ঞরা ধৃত্বা শুকং বন্ধান্তরক্ষরৎ ॥ ৫৮ ॥
শাদু লোহপি ততঃ পূর্কেং দৃষ্ট্রা কপিবলং মহৎ।
যথাবৎকথয়ামাস রাবণায় স রাক্ষরঃ॥ ৫৯ ॥
দীর্ঘচিন্তাপরো ভূতা নিঃশ্বসন্ত্রাস মন্দিরে।
ততঃ সমুদ্রমাবেক্ষা রামো রক্তান্তলোচনঃ। ৬০ ।
পশ্য লক্ষণ। দুটোহসৌ বারিধির্মামুপাগতম্।
নাভিনন্দতি ছুন্টাত্মা দর্শনার্থং মমানঘ!। ৬১ ।
জানাতি মানুষোহয়ং মে কিং করিষ্যতি বানরৈঃ?
অদ্য পশ্য মহাবাহো! শোষয়িষ্যামি বারিধিম।॥
পাদেনেব গমিষ্যন্তি বানরা বিগতজ্বরাঃ।
ইত্যুক্ত্রা ক্রোধতাত্মাক্ষ আরোপিতধনুর্ধরঃ॥ ৬০।
তূলীরাদ্বাণমাদায় কালাগ্রিসদৃশপ্রভম্।
সন্ধায় চাপমাক্ষয় রামো বাক্যমথাত্রবীৎ॥ ৬৪ ।।

পশ্যন্ত সর্ব্বভূতানি রামদ্য শর্কিক্রমন্।

ইদানীং ভন্মদাৎকুর্যাং সমুদ্রং সরিতাশিতিম্ ।৬৫

এবং ব্রুবতি রামে তু দ শৈলবনকাননা।

চচাল বস্থাদেশিক দিশক তমসারতাঃ।।৬৬।।

চুকুতে সাগরো বেলাং ভয়াদ্যোজনমত্যগাং।

তিমিনক্রব্যা মীনাঃ প্রত্যাং পরিত্ত্রস্থ:।৬৭।

এতন্মিয়ন্তরে সাক্ষাৎসাগরো দিব্যর্বপধৃক্।

দিব্যাভর্বসম্পান্ধ: স্বভাস্য ভাস্যন্ দিশঃ।।৬৮।।

স্বান্দ্রদ্বার্ত্বানি করাভ্যাং পরিগৃহ্ সঃ।

পাদয়োঃ পুরতঃ কিন্তু । রামদ্যোপায়নং বহু।৯৯

দশুবৎপ্রণিপত্যাহ রামং রক্তান্তলোচনম্।

ত্রাহি জগয়াধ! রাম! বৈলোক্যরক্ষক!।৭০

জড়োইং রাম! তে সৃষ্টঃ সৃজ্তা নিখিলং জগং।

স্বভাবমন্যথা কতুই কঃ শক্তো ং দেবনির্মাত্ম্।

স্বভাবমন্যথা কতুই কঃ শক্তো ং দেবনির্মাত্ম্।

দশ্রীব বিনাশ যোগ্য—হে শুক, তুমি রামচন্দ্রের ভার্য্যাপ-হরণ করিয়া কোথায় যাইবে। অনস্তর জীরামের আদেশ অনুযায়ী স্থ্রীব বানরদিগের দাগা তাহাকে বিনাশ করিলেন। অনস্তর শাদ্দূলও বহুতর কপি সৈন্য দর্শন করিয়া রাবণকে যথায়থ বলিয়া যায় পর নাই চিন্তাপরতন্ত্র হইল। ৫৭। ৫৮।

অনন্তর জ্বীরামচ্ক্র সমুদ্রাবলোকন করিয়া আরক্তলোচনে
লক্ষণকে বলিলেন—দেথ লক্ষ্মণ, ঐ হুফীআ, পাপিফ বারিধি
মদ্দর্শনার্থ সন্নিকটবর্ত্তী হইয়াও আমার অভিনন্দন করিতেছে
না যেহেতু সে কৃতনিশ্চয় হইয়াছে বে ঐ মানব বানর সহিত
মিলিত হইয়া আমার কি করিতে পারিবে? হে মহাবাহেণ!
আমি অদ্য বারিধি শোষণ করিব এবং বানরগণ পদত্রজ্ঞেই
লক্ষায় গমন করিবে, ইহা বলিয়া শ্রীরাম ক্রোধে লোহিত
লোচন হইয়া কালাগ্রিমূর্ত্তি পরিগ্রহণানস্তর তুণীর হইতে বাণ

প্রহণ করিয়া ধহুকে জ্যারোপ করিয়া কহিলেন—সমস্ত জীব রামের শর বিক্রম দর্শন করুক আফ সরিৎপতি সমুদ্রকে ভক্ষ-সাৎ করিয়া, শ্রীরামচন্দ্র এইরপা বলিয়া শরসন্ধানজন্য চাপা-কর্ষন করিলেন বন, পর্বত, কর্ম ও মর্ত্ত কল্পমান এবং দশ-দিক ভমসাচ্চন্ন ছইল—সাগার ভরপ্রযুক্ত যোজনপর্যান্ত শুরু ছইলে তিমি নক্রাদি মৎস্য সমস্ত পরিতপ্ত ছইয়া জল হইডে বহির্গত ছইল। কিয়ৎক্ষণ পরে সাগার ক্ষরৎ দিব্য রূপধারী, দিব্যাভরণ ভূষিত হইয়া জীরামচন্দ্রের জন্য নানাবিধ রুত্রাদি উত্তোলমপূর্ব্বক স্বছস্তে গ্রহণ করণানস্তর ক্রোধাক্তলোচন রামচন্দ্রকে প্রবিপাত করিয়া কহিল—তিলোক রক্ষক রাম ! পরিত্রাণ করুন, ছে রামচন্দ্রা! এই নিধিল জ্বণৎ ভোমারই স্প্রটবস্তা, স্মৃতরাং আমি জ্বডপদার্থ অতএব দেবনিন্ধিত স্বভাব অন্যথা করিতে কে সমর্থ ছইতে পারে? পঞ্চভূত বিশিষ্টক্থল- স্কানি পঞ্চতানি জড়ান্যের স্বভাবতঃ।
স্কানি ভবতৈতানি ওদাজাং লক্ষ্যন্তি ন।। ৭২।
ভামসাদহমো রাম। ভূতানি প্রভবন্তি হি।
কারণান্যমান্তেষাং জড়বং তামসং স্বতঃ।। ৭৩।
নিপ্ত পন্তং নিরাকারো যদা মায়াগুণান্ প্রভো!।
লীলয়াঙ্গীকরোষি তং তদা বৈরাজনামনান্। ৭৪
গুণাস্থানো বিরাজন্চ সন্ত্রাদ্দেরা বভূবিরে।
রক্ষোগুণাৎ প্রক্রেশাদ্যা মন্যোভূতপতিস্তর ॥৭৫॥
ভামহং মায়য়া চছয়ং লীলয়া মামুষাকৃতিম্। ৭৬।
জড়বুদ্ধির্জড়ো মূর্যঃ কথং জানামি নিপ্ত পম্ ।
দশু এব হি মূর্যাণাং সন্মার্গপ্রাপকঃ প্রভো!।
শরণং তে ব্রজামীশ। শরণ্যং ভক্তবৎসল!।
জভরং দেহি যে রাম! লক্ষামার্গং দদান্যি তে ॥৭৮।

পদার্থ সমস্ত স্থালাবিকই জড়, অতএব তোমার স্টিসমূহ ভোমার দড় রূপ আজ্ঞা কথনই লজ্ঞ্বন করে না—হে রাম্! পদার্থ নিচৰ প্রথমতঃ তামসারত থাকিরা অহঙ্কারে প্রমত হয় স্তবাং কায়গুণাসুরোধে জড়গুরপ অহঙ্কার স্থভাবতই উৎপার হয়—হে প্রভো! তুমি নিগুণ ও নিরাকার হইয়া লীলা ধারা মায়া গুণসমস্ত প্রকাশ করিরাছ—তোমার সত্থ্যও ইতে দেবতা সকল, রজগুণ ছইডে সনকাদি প্রজেশ সমস্ত এবং তম হইতে সংহার কর্তা ক্রমে উৎপার হইয়াছেন—আমি নায়া ঘারা আছির এবং তুমি লীলা প্রযুক্ত মানবর্ত্তী হইয়াছ, আমি জড়বুজি—মূর্থ, তুমি নিগুণ, আমি তোমাকে কিরপে জানিব—হে প্রভো! সৎ পথ প্রশ্বিক—তুমি মূর্গদিবোর দণ্ড স্থাপ —হে সর্ব্বে প্রাণি ও অমরগণশ্রেষ্ঠ, জ্বাদীশ্বর রাম!

এীরাম উবাচ

অমোঘোহরং মহাবাণঃ কমিন্দেশে নিপাত্যতাম।
লক্ষং দর্শর মে শীব্রং বাণস্থামোঘপাতিনঃ ॥ ৭৯॥
রামস্থা বচনং প্রুড্ডা করে দৃষ্ট্রা মহাশরম্।
মহোদধির্মহাতেজা রাঘবং বাক্যমন্ত্রবীং ॥ ৮০॥
রামোজরপ্রদেশে ভু জ্বমকুল্য ইতি প্রুড:।
প্রদেশস্তন্ত বহরং পাপাত্মানো দিবানিশ্য ॥৮১॥
বাধস্কে মাং র ! তত্ত্ব তে পাত্যভাং শরঃ।
রামেণ সৃষ্টো বাণস্ত ক্ষণাদাভীরমপ্রলম্ ॥৮২॥
হত্ত্বা পুনঃ স্মাণত্য ভূলীরে পুর্ববং স্থিতঃ।
ভত্তোহন্ত্রবীদ্রঘুপ্রেষ্ঠং সাগরো বিনয়ান্থিতঃ ॥ ৮৩॥

তুমি পশুদিণোর যক্তি স্থান নে তে ভক্তবৎসল! তুমি ভজের আগ্রা দাতা, স্মৃত্যের কারা সার্বাপন্ন কইলাম—হে প্রীরাম! আমাকে অভার দান কর—তোমার লকা প্রারেশের পথ প্রদর্শন করাইতেছি। ৬০। ৬১। ৬২। ৬০। ৬৪। ৬৫। ৬৬। ৮৭। ৬৮। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২। ৭০। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭। ৭৮।

জীরাম কছিলেন—আমার এই মহাবাণ অব্যর্থ, অভএব শীত্র লক্ষ্য দর্শন কর—ইহা কোন্ দেশে দিপতিত হইরা ইহার অমোঘ বল প্রকাশ করিবে? মহাতেজা বারিধি শ্রীরাম বাক্ত প্রবাশনতার রাম হত্তে মহাশর দর্শন করিয়া কহিল—হে রাম ! উত্তর দেশে ক্রমকুল্য নামক প্রদেশ আছে সেখানে অনেক পাপাত্মা আমাকে ক্লেশ প্রদান করে অভএব হে রঘুল্রেন্ড : ভূমি শর সেই দিকে পরিত্যাগ কর।

অনন্তর রামশর আভির মণ্ডল সমূহ বিনাশ করিরা পুনরাল গামন পূর্বক তৃণীর মধ্যে পূর্ববিৎ অবস্থিত হইল। অনন্তর সাগর নলঃ সেভুং করোত্বস্মিন জলে মে বিশ্বকর্মাণঃ। স্থুতো ধীমান্ সমর্থোহ স্মন্ কার্য্যেল কবরে। হরিঃ। কীর্ত্তিং জানন্ত তে লোকাঃ সর্বলোকমলাপহাম্। ইত্যক্তা রাঘবং নতা যযৌ সিন্ধুরদৃশ্যতাম্ 🗝৮৫ ততো রামস্ত স্থুগ্রীবলক্ষণাভ্যাং দমস্বিত:। नलभारकाशमूष्ठीखः वानरेतः म्पूरकाता। ৮७।

ততোঃ তিহ্নটঃ প্লবগেন্দ্রযুথপৈ-মহানগেন্দ্রপ্রতিষৈষ্যুতোহনলঃ। ববন্ধ দেতুং শতযোজনায়তং স্বিস্তৃতং পর্বতপাদপৈদৃ দৃম্। ৮৭॥

इि 🕮 सम्याज्ञतासात्रत्व छैसास्ट श्वत मचारम যুদ্ধকাণ্ডে ভূতীয়োহধ্যায়:।

বিনয়াবনত হইয়া রাখবকে কহিল—বিশ্বকর্মার ধীশক্তি সম্পার ্ৰ ব্ৰদাৰ বৰ ধাৰা দেতু বন্ধন কাৰ্য্যে দক্ষতা প্ৰাপ্ত হইয়াছে: অতএব সে আমার এই জলে সেতু বন্ধন কৰুক, লোক সমস্ত তোমার সর্বলোক পাপছারিণী কীর্ত্তি অবগত হউজ, সির্ এইরূপ বলিয়া জীরামধ্যে প্রণাম করত অন্তর্গান ছইলে ঞীরাম লফাণ ও স্থঞীব সমায়ত ছইয়া নলকে কংলেন তুমি

বাদর স**দ্ধে মিণিত ছইর। সেতৃ** বন্ধন কর। তংশবণে বানরেন্দ্র নল সাভিশয় ভুফাস্তঃকরণ হট্যা নহাপর্বাডশুছেমুকে গমন করিয়া পর্বভেছ পাদপ সমূহের দহিত বহুন পুর্বব স্থবিস্ত শতথোজনায়ত সেতু বন্ধন করিল: 🕥 😥 🕫 🗅 164 649 124 184 164 164 164 164 1

> देखि ब्रीनमधास्त्रासात्रमः हेम। १८८५ र যুদ্ধ কান্ডে ভৃতীয়েশংখ্যার: 🔻

চতুর্থো২ধ্যায়ঃ।

দেতুমারভমাণস্ত তত্ত্র রামেশ্বং শিবম্। নংস্থাপ্য পুজয়িত্বাহ রামে। লোকহিতায় চ ॥ ১ ॥

প্রাণমেৎ দেতুবন্ধং যো দৃষ্ট্রা রা ংশ্বর্থ লিবম্ । ব্ৰহ্মহত্যাদিপাপেভ্যো মুচ্যতে মদনুগ্রহাৎ॥ ২ ।

হিত কামনায় রামেশ্বর শিব সংস্থাপন পুর্বাক পুজা করিয়া। প্রণাদ করিবে সে আমার অনুগ্রহ তেতু এক হতা। পাপ

সেতু বন্ধন কার্য্য আরম্ভ ছইলে **জ্ঞারমচন্দ্র সর্বলো**ক বিশিলেন যে ব্যক্তি সেতৃবন্ধ রামেশ্বর শিবকে দর্শন করিয়

সেতৃবন্ধে নরঃ স্নাত্বা দৃদ্বী রামেশ্বরং হরম্
সঙ্গপনিরতো ভূত্বা গত্বা বারাণদীং নরঃ ॥ ৩ ॥
আনীয় গঙ্গাদলিলং রামেশমভিষিচ্য চ ।
সমুদ্রে ক্ষিপ্তভারো ব্রহ্ম প্রাপ্রোভাসংশয়ম্॥ ৪
কুতানি প্রথমেনাক্ষা যোজনানি চতুর্দশ
ছিতীয়েন তথা চাক্ষা যোজনানি তু বিংশভিঃ ।
ভূতীয়েন তথা চাক্ষা যোজনানেকেবিংশভিঃ ॥॥॥
চতুর্বেন তথা চাক্ষা ঘারিংশভিরিভি প্রচতম্ম ৬ ॥
পঞ্চমেন ব্রয়োবিংশদ্যোজনানি সমন্ততঃ ।
ববন্ধ সাগরে সেতুং নলো বানরসন্তমঃ ॥ ৭ ॥
ভেনৈব জন্মঃ কপয়ে। যোজনানাং শতং ক্রতম্
অস্থ্যাতাঃ স্থবেলাদিং ক্রেপ্তঃ প্রব্যোত্তমাঃ ॥৮ ॥
আর্ক্স মাকভিং রামো লক্ষ্মণোহ্বপাক্ষদং তথা।
দিদুক্ষু রাঘ্যো লক্ষ্মাক্রিয়াচলং মহৎ ॥ ৯ ॥

দৃষ্ট্বা লক্ষাং স্থাবিক্তীণাং নানাচিত্রপ্বজাকুলাম্।
চিত্রপ্রালাদসদ্বাধাং স্বর্ণপ্রাকারতোরণাম্ ॥ ১০ ॥
পরিশাভিঃ শভদ্মীভিঃ শংক্রমৈশ্চ বিরাজিতাম্
প্রাস্পদোপরি বিস্তীর্ণপ্রদেশে দশকস্বরঃ ॥ ১১ ॥
মান্ত্রভিঃ দহিকো বীরৈঃ কিরীটদশকোজ্জ্লঃ ।
নীলাদ্রিশিখরাকারঃ কালমেঘসমপ্রভঃ ॥ ১২ ॥
রত্ত্বদেশে দিত্ত্রেরনেকৈঃ পরিশোভিতঃ ।
এতস্মিন্ত্রের বদ্ধো মুক্তো রামেণ বৈ শুকঃ ॥ ১১
বানরৈস্তাড়িতঃ সমাক্দশাননমুপাগতঃ ।
প্রাহ্বন্য বাবণঃ প্রাহ্ পীজ্তিঃ কিম্পরৈ ? শুকঃ ! ১৪॥
রাহণস্থ বচঃ শ্রুড়ো শুকো বচনমন্ত্রীৎ
দাগবস্যোজ্বের তীরেইক্রবস্থে ব নং ক্রিট্রা বিশ্বার্থ টিং ।
তত্ত উৎপ্লাভ্য কপ্রো গৃহীত্বা মাং ক্ষণ বিশ্বাহ

হইতেও মোচন হইবে। যে নর সেতুৰকে সান করিয়া বামেশর শিবকে দর্শন করে এবং ছির চিত্ত হইরা বারাণসী গমন পূর্বক গঙ্গাজল আনেয়ন করত রামেশ্বকে অভিষেক করিবে সে নিশ্চয়ই পরম প্রহ্ম প্রাপ্ত হইবে ।১।২।৩।৪।

বানর সন্ত্রম নল প্রথম দিবসে চতুর্দশ যোজন, বিতীয় দিবসে বিংশতি যোজন, তৃতীয় দিবসে একবিংশতি যোজন, চঙ্গ দিবসে অরোবিংশতি বোজন, পঞ্চম দিবসে অয়োবিংশতি নোজন সেতু বন্ধন করিল। কপিগণ তাহাদ্বারা শত যোজন গমন করিল এবং অসংখ্য বানরশ্রেষ্ঠ ত্রিকূট পর্বত আচ্ছন্ন করিয়া কেলিল। ৫। ৬। ৭।৮।

জনস্বর শ্রীরাম মাক্তি ক্ষকে এবং লক্ষ্মণ অঙ্গদেশপরি

শুক রাধণ বাক্য শ্রবণ করিরা বলিল—সপ্তরের উত্তর তীবে

মৃথিভির্নখদবৈশ্ব হন্তং লোপ্তং প্রচক্রমুঃ।
ততা মাং রাম! রক্ষেতি ক্রোলন্তং রঘুপুক্রবং ॥১৬
বিস্ক্রভামিতি প্রাহ্ বিস্ফোইহং কপীশ্বরৈ:।
ততোইমাগতো ভীত্যা দৃষ্টা তদ্ধানরং বলম্॥ ১৭।
রাক্ষরানাং বলে ঘক্ত বানরেন্দ্রবলক্ত চ।
নৈতরোর্ধিন্যতে সন্ধিদে বদানবয়ারিব ॥ ১৮ ॥
পুরপ্রাকারমায়ান্তি কিপ্রমেকতরং কুরু।
দীতাং বাব্দে প্রথছাক্ত মুদ্ধং বা দীয়তাং প্রভা!
মামাই রামন্তং ক্রহি রাবণং মন্তঃ শুকং!।
যদ্ধলং চ সমাপ্রিত্য দীতাং মে ক্রতবানিদা ॥ ২০ ॥
তদ্দশির মথাকামং সনৈন্যঃ নহ বান্ধবঃ।
শ্বঃকালে নগরীং লক্ষাং সপ্রাকারাং সতোরগাম্।
রাক্ষনং চ বলং পশ্য শব্রৈব্বিধংসিতং ময়া।
স্যোরব্রোব্যহং মোক্ষ্যে বলং ধারয় রাবণ! ॥ ২২

উপস্থিত ছইয়া কথা কহিবামাত্র কপিগণ উল্লফ্ন পূর্ব্বক ক্ষণকাল মধ্যে আমাকে আক্রমণ করত মুঠি ও নখ দন্ত বারা হলন
করিতে উপক্রম করিল—অনন্তর আমি হা রাম, হা রঘুনন্দন
বলিয়া চীৎকার করিলে। প্রীরাম আমাকে বিমোচন করিছে
আদেশ প্রদান করিলেন কপিগণ আমাকে মুক্ত করিয়া দিল—
পরে সেই সমস্ত বানর সৈন্য অবলোকন করিয়া ভীভান্তঃকরণে আগমন করিয়াছি, এক্ষণে রাক্ষ্য ও বানর সৈন্য
পর্যাবেক্ষণ করিয়া বুঝিলাম বে, যেমন দেব ও দানবদিশের
সন্ধি কথনই নাই সেই রূপ ইহাদিগের মধ্যে সন্ধি কথনই
হইতে পারে না। রাম সসৈন্যে পূর্ব্ব প্রাকার সমীপবর্ত্তী
হইতেহেন অতএব যত শীস্ত্র পারেন মৃক্ষ সক্ষা করন, না

ইত্যুক্তোপররামাধ রাম: কমললোচন:।

একস্থানগতা যত্র চন্থার: পুরুষর্যতা:॥ ২৬ ॥

ক্রীরামো লক্ষ্মণশৈচর মুগ্রীরশ্চ বিত্রাবণ:।

এত এব সমর্থান্তে লক্ষাং নাশরিত্বং প্রতাে!॥ ২৪
উৎপাট্য ভন্মীকরণে সর্বে তির্দ্ধন্ত বানরা:।

তক্ত যাদৃগ্রকং দৃষ্টং রূপং প্রহরণানি চ ॥ ২৫
বিধিয়তি পুরং সর্ববং একস্থিন্তিত তে ত্রয়:।

পশ্য বানরসেনাং ভামসংখ্যাতাং প্রপূরিভাম্।২৬
গর্জন্তি বানরান্তত্র পশ্য পর্বতিসন্নিভা:।

ন শক্যাক্তে গণরিভূং প্রাধান্যেন ত্রবীমি ভে ॥ ২৭

এব যাহভিমুধাে লক্ষাং নদন তিইতি বানর:।

যুপপানাং সহস্রাণাং শতেন পরিবারিত:। ২৮

মুগ্রীবসেনাধিপতিনীলাে নামাগ্রিনশ্বন:।

এব পর্বতশ্বাভ: পত্মকিঞ্জক্ষসন্নিভ:। ২০।

হয় রামকে সীতা সমর্পণ ককন—রাম আমাকে বলিয়াছেন যে, হেশুক! তুমি রাবণকে বলিও যে, তুমি বে সৈন্যাশ্রম করিয়া আমার সীতাকে ছরণ করিয়াছ যথেচচুক ছইয়া সৈন্য ও বান্ধব সহিত ভাছা সন্দর্শন করাও—হে রাবণ! দেখ আমি ঘোর রাগ পরিত্যাগা করিয়া প্রাতঃকালে ভীর ও প্রাচীর বেটিত লছা নগরী এবং রাক্ষ্য বল বিনাশ করিব, রাম এই বলিয়া নিবৃত্তি হইলেন। হে প্রভা! জীরাম, লক্ষ্মণ, স্থাীৰ ও বিভীষণ এই চারি পুরুষ সিংছ যথন একত্রিত হইরাছে তথ্পন তাছারা লছা বিনাশ করিতে সমর্থ হইরাছে—এবং প্রীরামের যেরূপ বল ও প্রহরী দর্শন করিলাম তাহাতে বানরগণ লছা উৎপাট্টন করিয়া দক্ষ করিছে সমুৎস্কক ছইরা আছে। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২০। ২৪। ২৫।

তাহাৰা ভিন জনে একত হইয়া থাকুক তাহা হইলে সমস্তই কাৰ্য্য সকল হইবে। এক্ষণে অ্যাণ্য বানর সৈন্যে পরিপূণ ক্ষেটিয়ত্য ভিসং রক্ষো লাঙ্গুলং চ পুন: পুন: ।

যুবরাজোহঙ্গদো নাম বালিপুজোহতিবীর্যারান্ ॥৩০

যেন দৃষ্ট্য জনকজা রামস্তাভীব বল্লভা।

হনুমানেষ বিক্ষাতো হতো যেন তবাত্মজ: ॥ ৩১

খেতো রজতসঙ্কাশো মহারুদ্ধিপরাক্রম: ।

তূর্ণং সুঞীবমাগম্য পুনর্গ ছিতি বানর: ॥ ৩২ ॥

যন্তেষ সিংহসঙ্কাশ: পশ্যত্যতুলবিক্রম: ।

রন্তো নাম মহাসন্তো লঙ্কাং নাশয়িতুং ক্রম: ॥ ৩৩

এষ পশ্যতি বৈ লঙ্কাং দিধক্ষন্তিব বানর: ।

শরভো নাম রাক্রেন্দ্র বিদক্তথা ।

নলশ্চ সেতুকত্র নিম বিশ্বকর্মস্পতো বলী । ৩৫

বানরাণাং বর্ণনে বা সংখ্যানে বা ক ঈশ্বর: ।

শূরা: সর্ব্যে মহাকারা: সর্ব্যে যুদ্ধাভিকাজ্ক্রিণ: ।৩৬

হইরাছে অবলোকন কর—দেখ ঐ পর্বত সন্নিহিত বানর সমূহ গর্জন করিতেছে, আমি বলিতেছি তোমার কেইই সেধানে যাইতে সক্ষম নহে; পর্বত শৃঙ্গ সদৃশ উচ্চ ও পশ্ম-কিঞ্জাক-প্রভ ঐ স্থগ্রীব সেনাধিপতি মহাবলশালী যুবরাজ্ঞ অক্ষদ বারম্বার ভূপৃষ্ঠে লাস্কুল আঘাত করিতেছে—ঐ দেখ মহাধীশক্তি সম্পন্ন অতুল বিক্রমশালী যে বানর স্থগ্রীব সমীপে শীস্ত্র আদিয়াই পুনর্বার গমন করিতেছে উহার নাম স্বেত, দেখ দেখ ঐ যে সিংহ সদৃশ মহাবলশালী বানর সমস্ত অব-লোকন করিতেছ ও সর্বপ্রধান লহা বিনাশ করিতেও সক্ষম উহার নাম রম্ভ—ঐ দেখ যে বানর দিক সমস্ত দগ্ধ করিতেছে ও গেটী যুখপের নায়ক উহার নাম শর্ভ—মহাবলশালী পানশ, মৈন্দ, দ্বিদিদ, এবং মহাবলী বিশ্বকর্মার পুক্র নল প্রভৃতি বানরদিগের বল বর্ণন করিতে বা সংখ্যা করিতে কোন্ ব্যক্তি সমর্প্র হইবে—ভাহার। সকলেই মহাকায় ও মহাশ্র যুদ্ধ করিতে

শক্তা: সর্বে চুর্গয়িতুং লক্ষাং রক্ষোগর্গৈ সহ।

এতিবাং বলসংখ্যানং প্রত্যেকং বচ্মি তে শুনু ॥

এষাং কোটিসহস্রানি নব পঞ্চ চ সপ্ত চ।

তথা শঙ্খসহস্রানি তথারু দশতানি চ।। ৩৮।।

স্থ্রীবসচিবানাং তে বলমেতৎপ্রাকীতি তম্।

অন্যেষাং তু বলং নাহং বক্তৃং শক্তোহিম্ম রাবন রামো ন মামুষঃ সাক্ষাদাদিনারায়নঃ পর:।

সীতা সাক্ষাজ্জগদ্ধেতু শিচ্ছক্তির্জিগদান্মিকা॥ ৪০॥

তাভ্যামেব সমুৎপন্নং জগৎ স্থাবরজঙ্গন্ম।

তত্মাদ্রামশ্চ সীতা চ জগতস্তম্বু মশ্চ তৌ॥ ৪১॥

পিতরে পৃথিবীপাল। তয়োবৈরী কথং ভবেৎ ?

অজানতা ত্বয়া নীতা জগন্মাতৈব জানকী। ৪২।

ক্ষণনাশিনি সংসারে শরীরে ক্ষণভঙ্গরে।

পঞ্চত্তাত্মকে রাজন্ / চতুর্বিংশতিভত্ত্বকে। ৪৩।

অভিলাষী, লকা ও রাক্ষনগণকে চুর্ণ করিতে সক্ষম একণে তাহাদের প্রত্যেক সংখ্যা বর্ণন করিছেছি প্রবণ কর—ইহাদিগের কোটি সহস্র নব, পঞ্চ, সপ্ত, শব্ধ ও অর্ক্র্যুদ সহস্র সেনা বল আছে স্থাীব সচিবদিগের সৈন্যা বল কহিলান, কিন্তু ছেরাবণ! অন্য সমস্তের বল অগণ্য অতএর বলিতে অসক্ষম। শ্রীরামচন্দ্র মাহ্য নহেন তিনি সাক্ষাৎ পরম পুরুষ আদি নারান্য—সীতা জগৎ স্বরূপা সাক্ষাৎ আদাশক্তি—তদ্বারাই স্থাবর ও অক্সমান্থক সংসার সমূৎপন্ন হইরাছে। হে পৃথিবীপাল! সেই মাতা পিতার কিরপে শক্র হইরাছে। ছে পৃথিবীপাল! সেই মাতা পিতার কিরপে শক্র হইরাছে। ছে পৃথিবীপাল! ক্রমতা প্রতান করিরাছ—হে রাজ্মন্। এই ক্রমতাতা জানকীকে আনরন করিরাছ—হে রাজ্মন্। এই ক্রমণ-বিশ্বংশি সংসারে ও ক্ষণভক্ষ্র দেহ মধ্যে মূল প্রকৃতি মহৎ অহরার মনঃ পঞ্চত্যাত্র, পঞ্চজানেক্সির, পঞ্চক্ষেক্তির, পঞ্চক্ষেত্রির, পঞ্চক্ষেত্রির, পঞ্চক্ষেত্রির, পঞ্চমহাতৃত এই চতুর্বিংশতি প্রকার তন্ত্ব অবস্থিত আছে,

বৈবাস্থা ব্যতিবিক্তম্য কামে তব জড়াত্মকে ?। ৪৪

যৎকৃতে ব্রহ্মহত্যাদিপাতকানি কৃতানি তে।
তোগভোক্তা তু যো দেহং স দেহোহত্ত পতিষ্যতি
পূল্যপাপে সমায়াতো জীবেন সুখছুংখয়োঁঃ।
কারণে দেহযোগাদিনাত্মনং কুরুতোহনিশম,। ৪৬

যাবদেহোহমি কর্ত্তামীত্যাত্মাহং কুরুতেহবশং।
অধ্যাসান্তাবদেব স্যাজ্জম্মনাশাদিসন্তবং ॥ ৪৭ ॥
তত্মাত্তং তাজ দেহাদাবভিমানং মহামতে!।
আত্মাতিনির্মালং শুদ্ধো বিজ্ঞানাত্মাচলোহব্যয়ং।৪৮
স্যাজ্ঞানবশতো বন্ধং প্রতিপদ্য বিমুক্তি।
তত্মাত্ং শুদ্ধভাবেন জ্ঞাত্মানং সদা স্মর।৪৯।
বিরতিং ভল স্ক্তি পুজ্ঞদারগৃহাদিয়।
নির্যেষ্পি ভোগঃ স্থাচ্ছু ফুকর্তনাবপি। ৫০।

দেহং লবধা বিবেকাত্যং দ্বিজ্বন্থ চ বিশেষতঃ।
তত্ত্বাপি ভারতে বর্ষে কর্মভূমৌ স্বদুর্কভম্। ৫১।
কো বিদ্বানাতাুসাৎকৃত্বা দেহং ভোগান্ত্রগো ভবেৎ
অভন্তঃ ত্রাহ্মণো ভূত্বা পৌলস্তাতনয়শ্চ সন্। ৫২।
অজ্ঞানীব সদা ভোগানসুধাবসি কিং মুধা?।
ইতঃ পরং বা ত্যক্ত্বা ত্বং সর্মসঙ্গং সমাশ্রয়। ৫৩।
রামমেব পরাত্মানং ভক্তিভাবেন সর্মদা।
সীভাং সমর্প্য রামায় তৎপাদান্তুরো ভব।। ৫৪।।
বিমুক্তঃ সর্ম্বপাপেভ্যো বিষ্ণুলোকং প্রয়ান্যমি।
নো চেদ্রামিষ্যসেহধাধঃ পুনরার্ত্তিবর্জিতঃ।
অক্ষীকুরুষ্ব মদ্বাক্যং হিত্তমেব বদামি তে। ৫৫।

তোমার জড়াছ হ দেহে মল মাংস অছি প্রভূত তুর্গন্ধ ব্যক্তিরিক্ত আর কোন্ পদার্থ আছে? যে দেহ ত্রন্ধ হত্যাদি কার্যা
করিয়াছে—যে দেহ শ্বরং ভোগ ভক্ষক এরপ শুলে দেহ পতন
হর। স্থ্য তঃথাদির কারণ হেতু পুণ্য ও পাপ জীবের সজে
সঙ্গে আসিরা উপন্থিত হয় স্থতরাং পুণ্য ও পাপে দেহ
যোগাদির সন্থিত আপনার স্থাও তঃথ ভোগ করিয়া থাকে।
বাবৎকাল দেহ আমার ও আমি কর্তা এবং আত্মাকে বলীভূত
করি তাবৎকাল অহমার হেতু জন্ম নালাদির সম্পূর্ণ সস্তব।
হে মহামাতঃ! সেই নিমিত্ত দেহাভিমান পরিভাগে কর—
ভাষা অতি বিমল ও শুদ্ধ হউক, আপনার অজ্ঞানতা বশ্ত
লামীরাদি সম্বন্ধ হইয়াও পুনঃ পুনঃ কর্মে প্রবর্ত হয়, সেই হেতু
লামীরাদি সম্বন্ধ হইয়াও পুনঃ পুনঃ কর্মে প্রবর্ত হয়, সেই হেতু

তুমি বিশুদ্ধ ভাবে পরমান্ত্রাকে জানির। তাঁহাকে সর্বাদাই মরণ কর—পুত্র ত্রা গৃহাদি সুখ ভোগে ও নরকের কর্ম ভোগে বিরত হও—দেথ এই কর্ম ভূমি ভারতবর্ষে সূত্র্য ভারতা করির। দেহভোগায়বর্ত্ত্রী হর ? অভ-এব তুমি পুলস্তত্ত্রর ব্রাহ্মণ হইরা অজ্ঞানীর ন্যার সর্বাদাই রখা ভোগাহ্রত হইতেছ? এক্ষণে সর্বাদ্য পরিভাগে পূর্বাক পরমান্ত্রার আশ্রয় গ্রহণ কর—সর্বাদা ভক্তিভাব বারা পরমান্ত্রা শ্রীরামকে সীভা সমর্পণ করিরা ভাঁহার পাদপদ্মের অনুচর হও, ভাহা হইলে তুমি সর্ব্য পাপ হইতে বিমৃক্ত হইরা বিষ্ণু লোকে গমন করিবে নচেৎ উদ্ভমণোক হইতে বজি ভি হইরা অধঃ পভিত হইবে—এক্ষণে আমার বচনে অঙ্গীকার কর কারণ ভোমার হিত বাক্য কিছেভিট। সংসঙ্গ গ্রহণ

সৎসঞ্চতিং কুরু ভজস্ব হরিং শরণাং শ্রীরাঘবং মরকতোপলকান্তিকান্তম্। সীতাসমেত্যমিশং ধৃভচাপবাণং सूखीवलकानवजीयनतमविजाष्टि, म्। ८७।

ইতি এমদধ্যাত্মবামায়ণে উমামহেশ্রসম্বাদে যুদ্ধকাণ্ডে চতুর্থোহধ্যার:।

করিরা মরকত মণির তুল্য শ্যাম কায় শ্রীহরি রামচক্রের শরণ লও এবং স্থাীৰ লক্ষণ বিভীমণ যাহার চরণ দেবা করিতেছে ভূমি সেই ধহর্পাণধারী সদীতা জীরামচজ্রের চরণ শীজ (भवा कर । २७। २१। २৮। २৯। ७०। ७১। ७२। ७०।

108 108 108 108 109 109 100 100 100 100 1 188 | 80 | 80 | 89 | 87 | 85 | 60 | 65 | 62 | 60 | 148 | 44 | 45 |

> ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামছেশ্বর সংবাদে ষুদ্দকাণ্ডে চতুর্পোহধ্যায়ঃ।

পঞ্চমা২ধ্যায়ঃ।

শ্ৰুতা সুক্ষুখোদ্গীতং বাক্যমঞ্চাননাশনম্। রাবণঃ ক্রোধতাত্রাকো দহন্নিব তমত্রবীৎ 🕽 ১। व्यमुकीवा स्कूर्वत् एक ! श्वक्रवस्तावतम कथम्?। শালি তাহং ত্রিজগতাং ত্বং মাং শিক্ষর লক্ষদে ? । মহাপ্রসাদ ইত্যুক্ত্বা বেপমানো গৃহং যথে। ৪।

উদানীমেব হন্মি ডাং কিন্তু পূর্ব্বকৃতং তব। স্মরামি তেন রক্ষামি ত্বাং যদ্যপি বধোচিতম্। ৩। ইতোগচছ বিষুঢ়! জমেবং শ্রোতুং ন মে ক্ষমম্।

রাবণ শুক মুখে অজ্ঞান লাশক বাকা, শুবণ করিয়া ক্রোধ ক্ষায় লোচনে ভাহাকে কছিল—রে স্মন্ত্রু ছে! তুই জামার সেবক হইয়া কি রূপে গুরুর ন্যার আমাকে সন্তাধণ করিছে-ছিল্? আমি ত্রিঞ্গৎ পাসন করি তুই আমাকে শিক্ষা

मिटिक हिम् हेकारिक कि राज्य ना करता मा ? **अथ**नि राज्य दि বিনাশ করিতাম, কিন্তু ডোর পূর্ব্বজ্ঞয়া রুত কার্য্য শ্বরণ করিয়া. তুই বধ্য হইলেও তোকে রক্ষা করিলাম। রে মৃঢ়। তুই এ স্থান হইতে পলায়ন কর তোর বাক্য শুনিতে আর ইচ্ছা হয় না, ইছা আমার পরম দৌভাগ্য বলিল্লা শুক গৃছে গমন শুকোংপি ভ্রাহ্মণ: পূর্বাং ভ্রন্ধিটো ভ্রন্ধবিত্তমঃ
বানপ্রস্থবিধানেন বনে ভিষ্ঠন্ স্থকর্মকং । ৫।
দেবানামভির্দ্ধার্থং বিনাশার স্থরিষ্বাম্।
চকার যজ্ঞবিত ভিমবিচ্ছিল্লাং মহামতিঃ। ৯।
রাক্ষশানাং বিরোধোইভুচ্ছকো দেবহিতোদ্যতঃ।
বজুদংইটুইতি খ্যাভন্তবৈকো রাক্ষশো মহান্। ৭।
অন্তরং প্রেপ্ স্থরাতিষ্ঠচ্ছু কাপকরণোদ্যতঃ।
কদাচিদাগতোইগন্ত্যন্তস্যাশ্রমপদং মুনেঃ। ৮।
তেন সংপ্রিভোইগন্ত্যো ভোজনার্থং নিমন্তিঃ।
গতে স্নাভুং মুনে কুম্বসম্ভবে প্রাপ্য চাম্তরম্। ৯।
অগন্ত্যন্তপ্রক্ সোইপি রাক্ষশং শুকমত্রবীৎ।
যদি দাস্যদি মে ভ্রন্মন্। ভোজনং দেহি সামিষ্য্।
বহুকালং ন ভুক্তং মে মাংসং ছাগাঞ্চসম্ভবম্।
ভথেতি কার্য়ামান্য মাংসভোজ্যং স্বিশ্তর্ম। ১১

করিল। শুক ও পরম ধার্মিক ত্রাহ্মণ ছিলেন, এবং বাণপ্রত বিধানানুসারে স্বকর্ম হেতুবনে অবস্থিতি করিয়া সুরবিদ্বেষীর বিনাশ এবং দেবতাদিগের র্দ্ধির জান্য বিস্তর জ্ঞা করিয়া ছিলেন। ১।২।৩।৪।৫।৬।

দেবহিত্তরত শুকের প্রতি রাক্ষ্য দিগোর বিশেষ বেষ বৃদ্ধি থাকার, বক্রদং ট্র নামে- ত্রৈলোক্য বিখ্যাত এক রাক্ষ্য শুকের অপকারে উদাত ছিল। এক দিন অগস্ত্য ঐ মুনির আ্লাশ্রমে সমাগত হইলে তৎকর্ত্তক সংপৃত্তিত ছইয়৷ ভোজনের নিমিত্ত অগস্তাকে নিমন্ত্রণ করিল। কুন্ত যোগো অবশর ক্রমে স্মানকরিয়৷ অগস্তা রূপ ধারণ পূর্বক ঐ রাক্ষ্য শুক্তকে কহিল। ছে ব্রহ্মন্! যদি আমাকে ভোজন করান তবে সামিব ভোজন করিব। আমি বহুকাল হইল ছাগাদির মাংস ভোজন করি নাই অতএব আমাকে প্রচুর পরিমাণে মাংস ভোজন করিও।

উপবিষ্টে মুনো ভোক্ত রাক্ষসোহতীব স্থানরম্।
শুকভার্যাবপুর্য তাং চান্তমে হিরন্ খলং ! ১২।
নরমাংসং দদৌ তথ্যৈ স্থপকং বছবিন্তরম্।
দক্তিবান্তর্দধে রক্ষন্ততো দৃষ্ট্যা চুকোপ সং । ১৩।
আমেধ্যং মানুষং মাংসমগন্ত্যঃ শুকমন্ত্রবীৎ ।
আভক্ষ্যং মানুষং মাংসং দন্তবানদি চুর্মাতে ! ॥১৪
মহাং ত্বং রাক্ষ্যো ভূত্বা ভিষ্ঠ ত্বং মানুষাশনঃ ।
ইতি শপ্তঃ পুরো ভীত্যা প্রাহাগন্ত্যং মুনে ! ত্বরা ॥
ইদানীং ভাষিতং মেহল্ল মাংসং দেহীতি বিস্তরম্ ।
তথৈব দত্তং মে দেব ! কিং মে শাপং প্রদাস্যাসি? ।
শুজা শুক স্যা বচনং মুহুর্জং ধ্যানমান্থিতঃ ।
আজাত্বা রক্ষংকৃতং সর্বাং ততঃ প্রাহ শুকং স্থাই ।১৭
তবাপকারিণা সর্বাং রাক্ষ্যেন কৃতং ত্বিদ্ম্ ।
আবিচার্ট্যব মে দন্তঃ শাপন্তে মুনিস্ত্রম ! ।১৮ ।

মুনি ভোজন করিছে উপবেশন করিলে, রাক্ষস অতীব স্থান ও ক ভার্যার শরীর আজ্মণ করত তাছাকে পাকশালা হইছে বাহির করিয়া প্রস্থান করিল। তাহাকে প্রচুর পরিমাণে নর মাংস প্রদান করিয়াছিল। অনস্তর রাক্ষস দর্শন করিয়াছিল। অনস্তর রাক্ষস দর্শন করিয়া অত্যন্ত কুপিত হইয়াছিল, অগস্ত্য অমেধ্য মানুষ মাংস দেখিয়া শুক্কে কহিল—রে ভুর্মতে! তুই আমাকে অভক্ষ্য মনুষা মাংস দিলি অভএব তুই মনুষ্য ভোজী রাক্ষস হইয়া অবস্থান কর। এইয়ণ অভিশপ্ত হইয়া সে কহিল—হে মুনে! অদ্য আমাকে প্রক্রণ অভিশপ্ত হইয়া সে কহিল—হে মুনে! অদ্য আমাকে প্রক্র মাংস দিয়াছি, অভএব আমাকে কেন অভিশাপ দিলেন। শুকের বাক্য শ্রবণ করিয়া মৃত্র্ত মধ্যে ধ্যান অবলম্বন প্রক্র রাক্ষরত এই সমস্ত জ্ঞাত হইয়া স্বর্ত্বি অগস্ত্য শুক্কে কহিল। বি । ৮। ৯। ১০। ১১। ১২। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭।

হে মুনিসভায় ! ভোমার অপকারি রাক্স কর্তৃক এই

তথাপি মে বচোহমোঘমেবমেব ভবিষ্যতি।
রাক্ষ্যং বপুরাস্থায় রাবণস্য সহায়রুৎ। ১৯।
তির্চ্চ তাবদ্যদা রামো দশাননবধায় হি।
আগনিষ্যতি লক্ষায়াঃ সমীপং বানরৈঃ সহ।। ২০।।
প্রেষিতো রাবনেন সং চারো ভূতা রধূত্রমম্।
দৃষ্ট্য শাপাদ্বিনিষ্ ক্রো বোধয়িত্রা চ রাবণম্ ॥ ২১॥
তল্পজ্ঞানং ততো মূল্রঃ পরং পদমবাপ্স্থাসি।
ইত্যুক্রোহগন্ত্যমূলিনা শুকো ব্রাক্ষ্যপ্রমা। ২২॥
বভূব রাক্ষ্যঃ সদ্যো রাবণং প্রাপ্য সংস্থিতঃ।
ইদানীং চারুজ্বপেণ দৃষ্ট্য রামং সহামুদ্ধম্॥ ২৬॥
রাবণং তত্ত্বিজ্ঞানং বোধয়িত্বা পুনক্ত তম্।
প্র্বিবদ্রাক্ষণো ভূত্বা স্থিতো বৈধানধাঃ সহ॥ ২৪

সমন্ত কার্য্য করা হইরাছে এবং আমিও অবিচার পূর্ব্বক ভোমাকে শাপ প্রদান করিলেও আমার বচন অবোঘ হইবে স্তরাং রাবণের সহার সম্পন্ন হইরা তুমি রাক্ষ্য শরীর প্রাপ্ত হইরা দশানন বিনাশের নিমিন্ত জ্রীরাম চক্ত্র, বানরগণ সমজিবাহারে বড দিন পর্যান্ত লঙ্কাপুরী মধ্যে আগমন না করিবেন ভাবৎকাল তুমি ঐ অবহার অবহান কর, পরে তুমি বানর কর্তৃক প্রেরিভ হইরা জ্রীরামচক্তকে দর্শন পূর্বক রাবণকে তত্ত্ব জ্ঞান প্রদান করিলে শাপ হইতে বিমুক্ত হইবে। আনন্তর মুক্ত হইরা তত্ত্ব জান প্রাপ্ত ক্রীরা পরমণদ প্রাপ্ত হইবে। বাক্ষণসভ্য তক্ত জ্ঞান লাভ করিরা পরমণদ প্রাপ্ত হইবে। বাক্ষণসভ্য তক্ত জাবনের মিক্ট অবস্থিতি করিল অধুনা সহামুদ্ধ জ্রীরামচক্তকে চাক্ত রূপে দর্শন করিরা রাবণকে পূনঃ তত্ত্বিভালানন্তর পূর্বের নাার ব্রাক্ষণ হইরা বান-

প্রস্থার অবস্থান করিল। অনস্তর নীতিনিপুণ বুদ্ধিদান রাজমাতার প্রিয় পিতা বৃদ্ধ মাল্যবান্ মহারাক্ষস আগগন করিয়া প্রসাস্তচিতে রাক্ষ্সবিতকে কহিলেন—হে রাজন্! প্রবণ কর—অদা আমার বাকা প্রবণ করিয়া যথাভিল্যিত কার্য্যকর।১৮।১৯।২০।২১।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।

হে দশানন! যে দিনে রাম বল্লভা জানকী নগরীতে প্রবেশ করেন সেই দিনাবধি জামি পুরীমধ্যে ঘোরতর উৎ-পাত সমূহ দেখিতেছি। অভএব ইহা কেবল সর্ব্বনাশের মূল নিশ্চর বলিতেছি জাপনি শ্রবণ করুন। স্থাভীর ভীশন ঘনাবলি কঠোর গর্জনে বজ পভন শব্দ প্রতিপ্রনিত হউতেছে ৪ নিরস্তর উষ্ণদোনিত অভিবর্ষণ করিতেছে। আগরও দেখুন দেব দেবীর প্রতিমৃত্তি সকল বিলাপ পরিতাপ করত সচঞ্চল হইতেছে। প্রত্যেক রাক্ষ্যদিগের পুর্বতিণী কালিকা পাণ্ড্-বর্ণ দন্ত বিক্ষিত করিয়া সমুদার রাক্ষ্যদিগকে ভক্ষণ করিব বলিয়া হাস্ত করিতেছেন। আর বিভাল ও নকুলের সহিত্ত খরা গোষু প্রজায়ন্তে মূষকা নকুলৈঃ সহ॥ ৩০॥
মার্জারেণ তু যুধান্তি পল্লগা গরুড়েন তু।
করালো বিকটো মুগুঃ পুরুষঃ কুষ্ণপিঞ্চলঃ॥ ৩১॥
কালো গৃহাণি সর্বেষাং কালে কালে ওবেক্ষতে।
এতান্যন্যানি দৃশ্যস্তে নিমিন্তান্যুদ্ধবন্তি চ। ৩২।
অতঃ কুলস্য রক্ষার্থং শান্তিং কুরু দশানন!।
সীতাং সৎকৃত্য সধনাং রামায়াশু প্রযুদ্ধ ভো!।৩৩
রামং নারায়ণং বিদ্ধি বিদ্বেষং ত্যন্ত রাঘবে।
যৎপাদপোত্যাপ্রিত্য জ্ঞানিনো ভবসাগরম্ ॥৩৪
তরন্তি ভক্তিপুতান্তা। ততো রামো ন মানুষঃ।
ভক্তস্ব ভক্তিভাবেন রামং সর্বক্রদালয়ম্॥ ৩৫॥
যদ্যপি তুং দুরাচারো ভক্তা পুতো ভবিষ্যদি।

মদ্বাক্যং কুরু রাজেন্ত ! কুলকে শিলতেতবে ॥ ৩৬ ততু মাল্যবতো বাক্যং হিতমুক্তং দশাননঃ । ন মর্বয়তি ছুফাত্বা কাল্য্য বশমাগতঃ ॥ ৩৭ ॥ মানবং কুপণং রামং একং শাখামৃগাশ্রয়ম্ । সমর্থং মন্যমে কেন ? হীনং পিত্রা মুনিপ্রিয়ম্ । রামেণ প্রেষিতো মুনং ভাষ্যে হুমনর্গলম্ । গছ রুদ্ধোহির বন্ধুন্তং সোঢ়ং সর্বাং স্বয়ে দিত্র ॥ ইতো মহকর্ণপদবীং দহত্যেভদ্বচন্তব । ইত্যুক্তা সর্বাদিনিই সহিতঃ প্রস্তিতন্তদা ॥ ৪০ ॥ প্রাদাশত্রে সমাসীনং পশ্যন্ বানর্গৈনিকান্ । যুদ্ধারাযোজরং সর্ব্রাক্ষ্যান্ সমুপন্থিতান্ । ৪১ । রামোহপি ধন্ধাদার লক্ষ্মণেন সমাস্ক্তম্ ।

মুষিকদিগের কলহ, গরুড়ের সহিত সপের বিবাদ, ভরানক বিকটাকৃতি পিদ্ববর্গ কালস্বরূপ এক পুরুষ সায়ং প্রাভ এই উভয় সময়েই প্রভাক গৃহেতে আবিভূতি হইতেছে। এই প্রকার বিবিধ নিমিক্ত সমূহ সমুদ্ধ্ ত হইয়াছে অবলোকন করিলাম। ২৭।২৮।২৯।৩০।৩১।৩২।

হে দশানন! এই কারণবশতঃ কুলের হিতসাধনার্থ শান্তি
বিধান করুন। আর এই দীনা সীতাদেবীকে সবিনয়ে প্রজ্যাপূর্ণ করুন। আপনি রামচন্দ্রকে নারায়ন বলিয়া জানিবেন
অতএব রাঘবে বিহেষ পরিত্যাগ করুন। কারণ ভক্তিপূতাত্মা জ্ঞানীগণ গাঁহার প্রপদ নেকা আশ্রের করিয়া ভবসাগর উত্তীর্ণ হইয়া থাকেন—সেই রাম তিনি সানব নহেন;
তিনি সর্বান্তর্থামী, অতএব তাঁহাকে ভক্তিভাবে ভ্রুনা করুন।
হে রাজেন্দ্র! কুলের মঙ্গলসাধনার্থ আমাব বাক্য রক্ষা

করুন। যদিও আপনি আচার ভ্রন্ট, তথাপি আপনার দেহ ভক্তিসহকারে পবিত্র হইবে। ৩০। ৩৪। ৩৫। ৩৬।

হৃষ্টাত্ম। দশানন কালের বশ্বতাপন্ন হইরা মাল্যবান কৰিত হিতবাক্যে অভিনন্দন করিলেন না। অধিকন্ত কহিলেন— সামান্য ঝানরাশ্রিত হর্জল মানবমাত্র; কোন ব্যক্তি জাতার সমর্থ গণনা করে? আর নিশ্চর জানিলাম যে, সেই রামের প্রেরিত হইরা তুমি যে সমস্ত কণা বলিলে, ইহা কেবল বন্ধু ও রূদ্ধ বলিরা সন্থ করিলাম এক্ষণে এহান হইতে গমন কর। কারণ তোমার বদন বিনিঃস্ত বচনাবদী আমাকে দহন করি-তেছে। এই বলিরা মন্ত্রিগণ সমন্তিব্যাহারে তথা হইতে প্রস্থান করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩৯।৪০।

অনস্তর রাজা প্রাসাদে বাণরগণ উপবেশন করিরাছে দেখিরা সমুধস্থিত সমস্ত রাক্ষ্য দিগকে যুদ্ধার্থ উদ্যোগ করিজে আদেশ করিলেন। ক্রোধ পরিপূর্ণ হৃদরে রামচক্র ও লক্ষ্যণ দৃষ্ট্বা রাবণমাদীনং কোপেন কল্যীকৃতঃ ॥ ৪২ ॥
কিরীটীনং সমাদীনং মম্ব্রিভি: পরিবেষ্টিভম্।
শশাক্ষার্থ নিভেনের বাণেনৈকেন রাঘরঃ ॥ ৪৩ ॥
খেতছত্রসহস্রাণি কিরীটদশকং তথা।
চিচ্ছেদ নিমিষার্জেন তদন্ত ত্রিবাভবং ॥ ৪৪ ॥
লজ্জিতো রাবণস্তৃণং বিবেশ ভবনং স্বকম্।
আহুর রাক্ষদান্ সর্বান্ প্রহন্তপ্রম্থান্ থলঃ ॥ ৪৫ বানরেঃ সহ যুদ্ধার নোদরামাদ সত্রঃ।
ডতো ভেরীমৃদকাদ্দিরিঃ পণবানকণোমুখেঃ ॥ ৪৬ ॥
মহিষোইটঃ খরৈঃ শিংইছেশীপিভি: কৃতবাহনাং।
খজ্লশ্লধনুঃপাশর্ফিভোমরশক্তিভি: ॥ ৪৭ ॥
লক্ষিতাঃ সর্বতো লক্ষাং প্রতিদারমুপার্যুঃ।
তৎপূর্বমের রামেণ নোদিভা বানর্য্রভাঃ ॥ ৪৮ ॥

উদ্যম্য গিরিশৃঞ্চাণি শিধরাণি মহান্তি চ।

তরুংশ্চোৎপাট্য বিবিধান্ যুদ্ধার হরিষ্থপাঃ ॥৪৯
প্রেক্ষমাণা রাবণস্থ তান্যনীকানি ভাগশঃ।
রাঘ্বপ্রিরুকামার্থং লক্ষামারুরুছন্তদা ॥ ৫০ ॥
তে ক্রেমঃ পর্বতাগ্রৈশ্চ মৃষ্টিভিশ্চ প্রবঙ্গমাঃ।
ততঃ লহস্র্থাশ্চ কোটিষ্থাশ্চ যুথপাঃ ॥ ৫১ ॥
কোটাশত্যুতাশ্চান্যে রুরুধুন গরং ভূশম্।
আপ্লবন্তঃ প্লবন্তুশ্চ গর্ভন্ত প্রবঞ্চমাঃ ॥ ৫২ ॥
রামোজয়ভ্যতিবলো লক্ষ্যশ্চ মহাবলঃ।
রাজা জয়তি স্থ্রীবাে রাঘ্রেণামুপালিতঃ ॥ ৫০ ॥
ইত্যেবং ঘােষয়ন্তুশ্চ সমং যুষ্ধিরেহ্রিভিঃ।
হন্মানক্ষদশ্চৈব কুমুদাে নীল এব চ ॥ ৫৪ ॥
নলশ্চ শর্ভশ্চিব বৈমন্দা দ্বিবিদ এব চ ।

দহিত ধনুর্বান গ্রহণপূর্বক মন্ত্রিন পরিবেঠিত মুকুটধারী রাবণকে অবলোকন করিয়া শশাক্ষনিত একমাত্র সরাঘাতে খেতছত্ত্ব শোভিত মস্তকভূষিত দশমুকুট নিমেষার্দ্ধ বধ্যেই থণ্ড থণ্ড করিলেন কিন্তু তৎকালে অতি অন্তুত ব্যাপার সম্পন্ন হইয়াছিল। ৪১ । ৪২ । ৪৩ । ৪৪ ।

প্রছন্ত প্রমুখ সমন্ত রাক্ষণনিগকে আহ্বান করত ক্রেমতি বাবেণ লজ্জিত হইয়া সত্তর স্থীর ভবনে প্রবেশ করিলেন। তৎ-কালে পলব, অলক, গোমুখ, ভেরী, মৃদদ্ধ প্রভৃতি বাদ্যোদ্যমে সম্পূরিভ হইয়া বানরগণের সহিত দলবদ্ধ হইয়া রাম্চন্দ্র যুদ্ধার্থ উদ্যোগ করিলেন। মহিষ, উষ্ট্র, ধর, সিংহ, সার্দ্ধূল আদি বাহনে আরা হইয়া ঘোদাগণ ধানা, শেল, শ্ল, ধয়্প্রাশ, বহিন, তোমর, শক্তি প্রভৃতি অল্পে ভৃষিত হইয়া সর্বাতো-

ভাবে চতুর্দিক অবলোকন করত লক্ষায়ারে উপস্থিত হইল।
কিন্তু বানরগণ তৎপুর্বেই রামের আদেশাস্থসারে প্রেরিত হইরা
বিপুল গিরিশৃক সকল উত্তোলন ও বিবিধ রক্ষসমূহ উৎপাটন করত রাবণের তৎপ্রদেশস্থ সেই গৈন্যদল অবলোকন
করিয়া তৎকালে রাম্বের হিতসাধনার্থ লক্ষা পুরীতে আরোহণ করিয়াছিল। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০।

তদ্দনন্তর উর্দাধঃ শক্ষপ্রদান ও তর্জন গর্জন করত দেই
বারনগণ বিপুল পর্বতেশৃক ও রক্ষসমূহ উপলক্ষিত মাত্রেই
প্রাণাঢ় রূপে সহস্র সহস্র কোটা কোটা দলবদ্ধ হইয়া নগারকে
অবরোধ করিল। অতি বীর্ঘাবান রামচন্দ্র, মহাবল লক্ষ্মণ ও
জয়মুক্ত হউন এবং মহারাজ স্মগ্রীব রাঘবামুপালিত হইয়।
জয়লাত কর্মন। এই প্রকাবে চতুর্দিক্ ঘোষণা করত পরম

জাম্বান্ দধিবক্তুশ্চ কেশ্রী তার এব চ ॥ ৫৫॥

জন্যে চ বলিনঃ সর্বের যৃথপাশ্চ প্লবক্ষমাঃ।

দারাণ্ডেপ্লাত্য লক্ষায়াঃ সর্বতো করুপুর্ভূশম্।

তদা রক্ষৈমহাকায়াঃ পর্বতাগ্রিশ্চ বানরাঃ॥ ৫৬॥

নিজমুস্থানি রক্ষাংলি নথৈদিন্তেশ্চ বেগিতাঃ।

রাক্ষসাশ্চ তদা ভীমা দারেভাঃ সর্বতো রুবা॥৫৭

নির্গত্য ভিগ্রিপালৈশ্চ খড়েরঃ শূলৈঃ পরশ্বিঃ।

নিজমুর্বানরানীকং মহাকায়া মহাবলাঃ॥ ৫৮॥

রাক্ষসাংশ্চ তথা জমুর্বানরাজিতকাশিনঃ।

তথা বভূব সমরো মাংসশোণিতকর্দমঃ॥ ৫৯॥

রক্ষসাং বানরাণাং চ সম্মভ্বান্ত্রেপমঃ।

তে হর্মেশ্চ গলৈকৈব রথৈঃ কাঞ্চনসন্থিতঃ। ৬০।

রক্ষোব্যান্তা যুযুধিরে নাদয়স্তো দিশো দশ।
রাক্ষসাশ্চ কপী আশ্চ পরস্পরক্ষ বৈবিণঃ ॥ ৬১ ॥
রাক্ষসান্ বানরা জন্ধ বিনেরাং শ্চৈব রাক্ষসাঃ।
রামেণ বিষ্ণা দৃষ্টা হরয়ো দিবিজাংশজাঃ। ৬২
বভূর্বলিনো ক্ষাস্তদা পীতামৃতা ইব।
সীতাভিষর্বপাপেন রাবণেনাভিপালিতান্। ৬৩।
হত একান্ হতবলান্ রাক্ষ নান্ জন্ম রোজসা।
চভূর্বাংশাবশেষেণ নিহতং রাক্ষমং বলম্। ৬৪।
স্বিন্যং নিহতং দৃষ্ট্য মেঘনাদোহথ ছ্ট্ডীঃ।
ব্রক্ষদন্তবরঃ প্রমানস্তর্ধনিং গভোং হ্রঃ। ৬৫।
সর্বান্তবরঃ প্রমানস্তর্ধনিং গভোং হ্রঃ। ৬৫।
নানাবিধানি শস্ত্রাণি বানরানীক্মর্ণয়ন্। ৬৬।

শক্ত রাক্ষসদিগের সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিল। তৎকালে হম্বমান, অক্ষদ, ক্মুদ, নীল, লন, শরভ, নৈন্দী, ছিবিদ, জাম্ববান, প্রভৃতি মহাকার বলবান বানরগণ বৃক্ষ ও পর্বজাদি
হারা লক্ষাহারে উপন্থিত হইরা নিবীড় রূপে সর্বতোভাবে
প্রতিরোধ করিল। এবং নশ্ব ও দন্তহারা প্রবলবেগে ভীমাকৃতি রাক্ষসদিগকে ছির ভিন্ন করিল। তদর্শনে মহাকার মহাবলবান রাক্ষসগণ হারদেশ বিনির্গত হইরা রোষপত্রবশে,ভিণ্ডিপাল, পাশ, পরও শুজা, প্রভৃতিহারা কৃতিপর বানর সৈন্য সংহার
করিল। এবং বানরগণও পরান্ত হইরা পুনরার আক্রমণ
করিল এই প্রকারে সমর ভূমি মাংস ও শোণিভহারা কর্জমমন্ন
হইরা উঠিল। অতএব রাক্ষ্য ও বানর এই উভন্ন দলমধ্যে অভি
আশ্চর্যা উপমা সন্ত ত হইরাছিল, এইরপে পরস্পর ক্রমাভিদাবী বানর ও রাক্ষ্য দল অ্বর্ণস্থল রথ, গ্রন্ত, অব, প্রভৃতিতে

পরিপূর্ণ ও দশদিক প্রমদিত হওত রণাতিমুখে উদ্বোগ করিল। ৫১/৫২/৫৩/৫৪/৫৫ / ৫৬ / ৫৭ / ৫৮ /৫১ /৬০ ৬১

দেবাংশজাত ধানরগণ রাক্ষসদিগকে বিনাশ করিলে রাক্ষসগণও তাহাদিগকে সংহার করিল। ইহা রামচন্দ্র অব-লোকন করিবামাত্রেই তৎকালে হ্রীনবীর্যাবানরগণ ভেজন্বী হইরা যেন অমৃত পান করিয়াছে এইরপ হুইচিতে সীতা-দেবীর গাত্রস্পর্শজনা সংজাত পাপপূর্ণ কলেবর রাবণের প্রতিপালিত রাক্ষসগণ শ্রীজ্ঞত্ব ও হীনবীর্যা হওরাতে তাহা-দিগকে চতুর্থাংশের অবশিষ্টাংশ বলহার। সমস্ত রাক্ষসদল নিহত হইল। ৬২। ৬৩। ৬৪।

ইত্যবসরে মেঘনাদ ভূইমতি সমুদার আত্মসৈন্য নিছত দেখিরা ব্রহ্মদন্ত বরপ্রাপ্তে অন্তর্জ্ঞান হউলেন। নামাবিধ-শাস্ত্র স্থানিক্ষত হইরা নভোমগুলে ব্রহ্মান্ত্রছারা নানাপ্রকার অন্তপ্রযোগ করত বানর কটক সমাক্রপে উৎপীড়িত হওয়াতে ববর্ষ শরকালানি তদদ্ভুতমিবাভবৎ।
রামোহপি মানয়ন্ প্রাক্ষমন্ত্রমন্ত্রবিদাশরঃ। ৬৭।।
কাণং তৃষ্ণীমুবাসাথ দদর্শ পতিতং বলন্।
বানরাণাং রঘুল্রের্চান্চুকোপানলসন্ধিভঃ। ৬৮।
চাপমানয় সেমিত্রে! প্রক্ষান্ত্রেণাস্থরং কাণাং।
ভক্ষীকরোমি মে পশ্য বলমদ্য রঘুদ্ধম!। ৬৯।
মেমনাদোহপি ভক্ষুত্বা রামবাক্যমতন্ত্রিভঃ।
ভূপং জগাম নগরং ময়য়য় মায়িকোহস্থরঃ॥ ৭০
পতিতং বানয়ানীকং দৃষ্ট্বা রামোহতিত্বঃথিতঃ।
উবাচ মায়তিং শীঘ্রং গত্বা ক্ষীয়মহোদ্ধিন্। ৭১
তত্র দ্রোণগিরিনাম দিব্যোধ্বিসমূভ্বঃ।
ভমানয় দ্রভং গত্বা সঞ্জীবয় মহামতে !॥ ৭২॥
বানরৌঘান্ মহাসত্ত্বান্ কীর্ত্তিন্তে স্থিরা ভবেং।
আক্রাপ্যমাণমিত্যুক্ত্বা জগামানিলনক্রনঃ॥ ৭৩॥

আনীর চ গিরিং সর্বান্ বানরান্ বানরর্যতঃ।
জীবরিত্বা পুনস্তত্ত স্থাপরিত্বা যথে জ্বতম্ ॥ १৪॥
পুর্ব বৈটেরবং নাদং বানরাশাং বলৌঘতঃ।
ক্রুত্বা বিশারমাপয়ো রাবণো বাক্যমন্ত্রীৎ ॥ ৭৫॥
রাঘবো মে মহান্ শক্তঃ প্রাপ্তো দেববিনির্মিতঃ।
হন্তং তং সমরে শীন্তং গচ্ছন্ত মম যুথপাঃ॥ ৭৬॥
মন্ত্রিণো বাদ্ধবাঃ শুরা যে চ মৎপ্রিরকাজ্জিক।।
দর্বে গচ্ছন্ত যুদ্ধার তরিতং মম শাসনাৎ॥ ৭৭॥
যে ন গচ্ছন্তি যুদ্ধার তীরবঃ প্রাণবি প্রবাং।
তান্ হনিষ্যাম্যহং সর্বান্ মচ্ছাসনপরাজ্ব ধাম্ ॥ ৭৮
তচ্ছুত্বা ভয়সন্ত্রতা নির্জ্বগুরণকোবিদাঃ।
আতিকারঃ প্রহন্ত মহানাদমহোদরে । ৭৯।

শরজাল বিস্তার করিলেন। অনস্তর সমন্ত্র প্রথমিন অস্ত্র বিসারদ ক্রোধোজনিত দ্বিতীয় অনলরপধারী। রঘুবীর রাম-চন্দ্র ও ব্রাহ্ম অস্ত্রকে স্মরণ করত ক্ষণকালজন্য তুঠীভাব অব-লম্বন করিলেন পরে সৈন্যসমূহ নিপতিত অবস্থা অবলোকন করিলেন।৬৫/৬৬/৬৮/৬৯/৭০

রামচন্দ্র অতি হঃখিত চিত্তে বানর সৈন্যসমূহ নিপাতিত দেখিয়া ক্ষারসমুদ্রতটে শীজ গমন করিয়া পরন পুল্ল হন্-মানকে বলিলেন। দিব্য ঔষধিসমুদ্ধূত জোণ নামক প্রক পর্বেত আছে। হে মহামতে! তথায় সত্তর গমনপূর্বাক সেই ঔষধি আনমন করিয়া জীবন রক্ষা কর। ইহাতে তুমি অবি-চলিত কীর্তিলাত করিবে। তদনস্তর অনিলনন্দন বে আজ্ঞা এই কথা বলিয়া গমন করিল। তৎপরে ঐ পর্বত আনরন করিয়া সমস্ত বানরগণের জীবন প্নজীবিত করাইয়া প্ন-রায় সেই স্থানে সেই পর্বত সংস্থাপন করত সত্ত্ব প্রভাগনগমন করিলেন। রাবণ পূর্ববিৎ বানরদিগাের ভৈরব নাদ প্রবা করত বিশায়াপার হইয়া কহিলেন। আমার প্রবল শক্ত এই রাঘবকে বিনাশ করিবার জন্য ভৌমরা শীজ দলবদ্ধ হইয়া সমরে গমন কর। যাহারা হিতাভিলায়া বীর্য্যবান বাদ্ধব ও মন্ত্রী ভাহারা সকলে আমার শাসন বশভঃ সত্ত্র যুদ্ধার্থ গমন কর। যাহারা প্রাণভরে ভীত হইয়া যুদ্ধার্থ গমন না করিবে ভাহারা আমার শাসন বিমুখ হইলেও সকলকেই বিনাশ করিব নাংগ্রহা গ্রহা গ্রহার ভাবহান ভাবহান গ্রহা

একণে অতিকায়, প্রহস্ত, মহানাদ দেবশক্র, মিকুস্ত, দেবা-

দেবশক্রনিকৃত্তশ্চ দেবাস্তকনরান্তকৌ।

অপরে বলিন: সর্বে যুর্যুদ্ধায় বানরৈ:।৮০।
এতে চান্যে চ বহব: শুরা: শতসহস্রশ:।
প্রতিশ্য বানরং দৈনাং মমন্ত্র লদর্পিভা:।৮১।
ভূপুতৈতি প্রিলিক্ত বাবৈ: খকৈ: পরশ্ববি:।
ভান্যেক বিবিধেরক্তৈনির্জন্ম হার্যুথপান্।৮২।
তে পাদপৈ: পর্বাতানির্বাক্তিয় হার্যুথপান্।৮২।
প্রানেণ নিহতা: কেচিৎ সুত্রীবেণ তথাপরে।
হন্মতা চাঙ্গদেন লক্ষণেন মহাত্মনা।৮৪।

যূথপৈর নিরাণাং তে নিহতাং সর্বরাক্ষসাং। রাম্তেজঃ সমাবিশ্য বানরা বলিনোহভবৎ। ৮৭ রামশক্তিবিহীনানামেবং শক্তি কুতো ভবেৎ।৮৬

সর্বেশ্বঃ সর্ব্যয়ে বিধাতা

মায়ামনুষ্ত্বিভূষনেন।

সদা চিদানন্দময়োহপি রামো

যুদ্ধাদিলীলাং বিতনোতি মায়াম্।৮৭।

ইতি গ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বসম্বাদে

যুদ্ধকাণ্ডে পঞ্চমোহধ্যায়ঃ।

স্তক, নরাস্তক, অন্যান্য বলবান রাক্ষ্মগাণ সেই বাক্য শ্রবণ করিয়া বানরদিগের সহিত সমরাভিমুখে গমন করিল।৭৯।৮০।

অন্যান্য শন্ত সহত্র বহুদংখ্যক বীর্যাবান রাক্ষসসমূহ বানর সৈনা দলে প্রবেশ করিয়া প্রচণ্ড প্রবল প্রভাগে মন্থন করিতে লাগিল। ভূশণ্ড, ভিণ্ডিপাল, পর্ভ, খজা, প্রভৃতি নানাবিধ অন্ত দারা দিংহ সমত্ল্য যুখপতি বানরগণকে সংহার করিল। কিন্তু সেই বানরগণ বৃক্ষ, পর্বাত, নখা, দন্তা, প্রভৃতি দারা সমস্ত রাক্ষসদিগের প্রাণ সমূহ বিমোচিত করাইল। ইত্যবসরে রামচক্ত্র কতক্ঞালিকে নিহত করিলেন। স্থানীৰ, ছমুমান, অঙ্গদ, মছাত্মা লক্ষ্মণ, অপর কভিপর বিনাশ করিলেন। বানরগণ দলবদ্ধ ছইরা সেই সমস্ত রাক্ষ্য-গণকে সংহার করিলে, রামশক্তি প্রাপ্ত ছইরা সকলেই অবনীল ছইল।৮১৮২।৮৩/৮৪।৮৫/৮৬।

সর্ব্যাক্স। সর্ব্যের বিধাতা রামচন্দ্র তিনি সচ্চিদানন্দরশী ছইলেও মনুষাদিগাের অনুকরণ করিবার জন্য মায়াদ্বারা সমর প্রভৃতি কম্পিত ক্রীড়া বিস্তার করিতেছেন।৮৭

ইভি @মদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশর সংবাদে
যুদ্ধ কাডেপাকমোহধ্যাসঃ।

यटिका ३ था गा गा गा

শ্রুত্ব বৃদ্ধ বলং নইমতিকারমুখং মহৎ।

রাবণো ছংখসন্তপ্ত কোধেন মহতারত:। ১।

নিধায়েক্ত জিতং লঙ্কারক্ষণার্থং মহাদ্যুতি:।

স্বরং জগাম যুক্ষার রামেগ সহ রাক্ষন:। ২।

দিব্যং স্যুক্ষনমারহ্য সর্কাশস্ত্রাস্ত্রসংযুত্ম।

রামমেবাভিদুদ্রাব রাক্ষসেক্রো মহাবল:। ৩।

বানরান্ বহুশো হত্বা বাণৈরাশীবিষোপ্তম:।

পাত্রামাস স্কুত্রীব প্রমুখান্ যুধনারকান্। ৪।

গদাপাণিং মহাসন্তং তত্ত্ত দৃষ্টা বিভীষণম্।

উৎসমর্জ মহাশক্তিং মর্দত্তাং বিভীষণে। ৫।

তামাপতন্তীমালোক্য বিভীষণবিঘাতিনীম্।
দত্তাভয়েহয়ং রামেণ বধাহে নামমাভুরং। ৬।
ইত্যুক্তা লক্ষণো ভীমং চাপমাদার বীর্যবান্।
বিভীষণস্য পুরত: স্থিতোহকক্ষ ইবাচনং। ৭।
সা শক্তিল ক্ষণভন্থং বিবেশামোঘশক্তিতঃ।
যাবস্তঃং শক্তয়ো লোকে মায়ায়াং সম্ভবন্তি হি।৮।
তাদামাধারভূতস্য লক্ষণস্য মহাত্মনং।
মায়াশক্ত্যা ভবেৎ কিং বা ? শেষাংশস্য হরেন্তনো
তথাপি মামুষং ভাবমাপরস্তদমুব্রতঃ।
মূচ্ছি তিং পতিতো ভূমো তমাদাভুং দশাননং।১০।

রাবণ যুদ্ধে বহুদেন! এবং মহাবল মহাকার ,অভিকার
নিধন ছইরাছে প্রবণ করিয়া, ভৃঃখ শোকে সম্ভপ্ত ও অভিশর ক্রোধারিত ছইলেন। ইন্দ্রক্রিডকে লহারক্রার্থে আলেশ
করণানতর অরং সেনাগণ সমভিবাছারে বিবিধ অন্তর শন্তর
সংযুত দিব্য রথে আরোহণ করিয়া, রাম সহ যুদ্ধার্থে রামন
করিলেন। অতঃপর রাম কটক লিম্বানে উপনীত হইরা, সর্প
সদৃশ বিবিধ বাণহারা অত্যে অশেষ বানরগণ বিনাশ করত,
স্ফুটীক্রশরে যুখপতি স্থাীবকে ভ্মিতলে নিপাতিত করিবেন,
অমনি সন্মুখে গদাপাণি বিভীবণকে অবলোকন করত
ক্রোধান্ধ হইরা ভাছার নিধন সাধনে মহদানবদন্ত শক্তি
ক্রিক্রেপ করিলেন। বিভীষণত্র সেই ছীবননাশী শর স্বীয় নিধন

সাধনে সমাগত দেখিরা, ভারে রাম লক্ষ্মণ সরিধানে গমন করিলেন। তাঁহারা উভরেই বিভীষণকে অভর প্রদান করিয়। লক্ষ্মণ, ধন্ত্র্রিরণ করত বিভীষণের অগ্রে আচলের ন্যার দণ্ডারমান হইলেন। সেই আমোঘশক্তি লক্ষ্মণ ও সেই শক্তির আঘাতে মুক্তি তহইরা ধরাতে নিপ্তিত হইলেন। আছা। জগানীখনের কি মহিমা; যিনি অয়ং অনস্তদেব, সর্ব্ব জীবের শক্তিধর হইরাও সামান্য শক্তির আঘাতে বিচেতন প্রায় হইলেন। কেবল কাল মাহাজ্যে সাধারণ মন্ত্র্যা ভাব ধারণ করিরাছেন বিলয়াই এরপ ঘটিল; নতুবা সকলের মূলত্বরূপ সাক্ষাণ অনস্তদেবকৈ কে বিশ্ব করিয়া ভূতলশারী করিতে সক্ষম হর বিয়াই।এ।৪।৫।৬:৭৮৮।৯।১০।

হতৈত্তালয়িতুং শক্তো ন বভুবাতিবিশ্বিতঃ।
সর্বাস্য জগতঃ সারং বিরাজং পর্মেশ্বরং। ১১।
কথং লোকাশ্রমং বিষণং তোলয়েল্লঘু রাক্ষনঃ?
গ্রহীতকামং সৌমিজিং রাবণং বীক্ষ্য মারুতিঃ।১২
আজঘানোরসি জেজো বক্তকশেন সৃষ্টিনা!
তেন ঘুটিপ্রহারেণ জামুজামপতভুবি। ১৩।
আসিলে নেজ্রশ্বশৈক্ষ্মন্ ক্ষরিং বছ।
বিভূবিমাননম্নো রখোপশ্য উপাবিশং। ১৪।
আথ লক্ষ্যমান্রখনান্ত্রান বিশ্বশিক্ষ্যান্রগবাদি তিম্।
আনম্ভাম্যামীপ্রং বাছভ্যাং পরিস্হ্য তম্। ১৫
হন্মতঃ মুহুক্তেন ভক্ত্যা চ পর্মেশ্বঃ।
লঘুত্মগমন্দেবো গুরুণাং গুরুরপ্রকং। ১৬।

দশানন লক্ষ্মণকে ভূমিতলে নিপাতিত দেখিয়াতাঁহাকে হস্তদারা উত্তোলন পূর্বেক লইয়া যাইতে উদাত হইলেন কিন্তু
ভূলিতে অসক্ষম হইয়া যার পর নাই বিশ্বিত হইলেন। আহা!
যিনি সমস্ত জগভের দার পরমেশ্বর,—বাক্ষদ হইয়া সেই
সর্বলোকের আশ্রয় অনস্তদেবকে উত্তোলন করিতে কিরপে
সমর্থ হইবে? মাক্ষভতনর রাবণকে অমিতানলন গ্রহণে ইচ্ছুক
সন্দর্শনে সাতিশয় কুপিত হইয়া তাহাকে বক্রসদৃশ এক মুস্টান্
ঘাত করিল। রাবণ হন্মানের মুক্তি প্রহাবে ভূপতিত হইলেন। অনস্তর মুখনৈত্ত ও প্রবণ মধ্য ছইতে বহুপরিমানে
ক্ষির বমন করিতে করিতে ও বিঘ্রতি নয়নে র্থোপরি উপবেশন করিলেন; ইতাবসরে হন্মান্ ভক্তিপূর্থক রাবণার্দিত
লক্ষ্মণ দেবকে উত্তোলন করিয়া প্রস্থান করিল।১১।১২।১৩।১৪।

অনন্তর রাবণ, কিঞ্চিত সুস্ত হট্যা, ক্রোধে শরাসম আছণ পূর্ব্বক, রাম সন্নিধানে গমন করিল। ভদ্দর্শনে রাম ও অত্যন্ত রাগান্তিত ছইয়া, কোদগুনামক শরাসন আছণ পূর্বক

শা শক্তিরপি তং ত্যক্তা জ্ঞাত্বা নারায়ণাংশজ্ম। রাবণস্য রথং প্রাগাদ্রাবণোহপি শনৈস্ততঃ।১৭। मः कामवाना कथार वानामनमत्था क्या। রামমেবাভিত্তাব দৃষ্ট্রা রামোহপি তং ক্রধা ৷১৮ আরুছ জগতাং নাথো হতুমন্তং মহাবলম্। तथ**ष्ट्** तावनर मृख्<mark>ना चिक्त्र</mark>काव ज्ञाचवः ॥ ১৯ ॥ জ্যাশব্দসকরোত্তীত্রং বজ্রনিশ্পেষ্নিষ্কুর্ম। রামো পত্তীরয়া বাচা রাক্ষণেক্রমুবাচ হ। ২০। রাক্ষদাধন ! ডিষ্ঠান্য ক গমিষ্যদি মে পুর: ?। कृषाপরাধমেবং মে मर्स्ट्रेज भमन्तिन । २५ १ (यन वार्षम निरुठ। वाक्रमांत्य क्रमालरत्। তেনৈৰ ত্বাং হনিষ্যামি ডিষ্ঠাদ্য মম গোচৰে ১৯১ জীরামদ্য বচ:শ্রুতা রাঘণো মার্কার্জম্। বহস্তং রাঘবং সংখ্যে শরৈন্তীক্ষেরতাড়য়ৎ। ২৩। হতস্যাপি শরৈতীক্ষৈর্বায়ুস্থনাঃ স্বতেজসা। वावर्ष ज श्वनत्खरका ननमं ह महाकि । 28 ।

হত্মানের আরে আরোহণ করত, বক্সম জ্ঞা। শব্দে জগৎ পূর্ণ করিলেন। ভাগছাতে প্রাণীমাত্তেই কম্পিত কলেবরে বিশ্বিত হইতে লাগিল।১৫/১৬/১৭/১৮/১৮/১৯

অনস্তর রাম গন্তীর বাকো রাবণকে বলিতে লাগিলেন; ওরে রাক্ষসাধম! তুই ক্ষণেক আনার সমুখে থাক, তোকে শীদ্রই শমনাক্রয়ে প্রেরণ করিতেছি। রাবণ, জীরামের এইরপ সগাব্ধ-বাক্য শ্রাৰণ করিবা, জোধে প্রতীক্ষ্ণ শর্কালে প্রন পুত্রেবিদ্ধ করেও তাড়না করিতে লাগিল। অমনি হত্মান ও নিমেষমধ্যে স্বীর পরীর বর্ষিত করিয়া তৃত আরম্ভ করিল

ততো দৃষ্ট্বা হত্মন্তং সন্তাণং রঘুসন্তম:।
কোধমাহারয়ামাল কালকন্ত ইবাপরঃ। ২৫।
লাখং রথং ধকং স্কং শজেবিং ধন্তরঞ্জনা।
ছত্তং পতাকান্তরনা চিচ্ছেদ লিতনারকৈ:। ২৬।
ততো মহাশরেণাশু রাবণং রঘুসন্তম:।
বিব্যাধ বক্তকেশ্যেন পাকারিরিব পর্বতম। ২৭।
রামবাণহতো বীরক্তচাল চ মুমোহ চ।
হন্তান্নিপতিভক্তাপন্তও নমীক্ষ্য রঘুন্তম:। ২৮।
অধ চল্ডেদ তিছেদ তৎকিরীটং রবিপ্রভম্।
অন্তলানামি গচ্ছদ্মিদানীং বাণপীড়িভ:। ২৯।
প্রবিশ্ত লক্ষামাখান্ত খ: পশ্যাদি বলং মম।
রামবাণেন সংবিদ্ধো হ্রদর্পোহ্ব রাবণ:॥ ২০॥

মহত্যা লজ্জ্যা যুক্তো লক্ষাং প্রাবিশদাতুরঃ।
রামেহিপি লক্ষণং দৃষ্টা মুচ্ছি তথ্ পতিতং ভূবি॥
মামুবরমুপালিত্য লীলয়ানুশুশোচ হ।
ততঃ প্রাহে হন্মন্তং বৎন! জীবদ্ধ লক্ষণম্ ॥ ৩২ ॥
মহৌবধীং লমানীয় পূর্ববং বানরানিপি।
তথেতি রাঘবেণাক্যো জগামাশু মহাকিপিঃ॥ ৩৩
হন্মান্ বায়ুগেন ক্ষণাতীজ্বা মহোদধিম্।
এতিমিল্লন্তরে চারা রাধণায় ন্যুবেদল্লন্॥ ৩৪ ॥
রামেণ প্রেষিতো দেব! হনুমান্ ক্ষীর্লাগরম্।
গতো নেতুং লক্ষণস্থ জীবনার্থং মহৌধধীঃ॥ ৫৫॥
প্রায়ে তারবচনং রাজা চিন্তাপরোহতবং।
জগাম রাজাবেকাকী কালনেমিগৃহং ক্ষণাং ॥ ৩৬ ॥

কিন্ত ক্ষতদেহ মাক্ষতিকে দর্শন করিরা, রাম রোশ পরবশ কইরা, তীক্ষণরে রাবণের অব, রথ, রঞ্জ, স্ত, ধমুঃ, শর, ছত্ত ও পতাকা ছেদ করিরা, তথনই অশনিসদৃশ বিবিধ বাবে বৈরী শবীর ক্ষতবিক্ষত করিয়া কেলিলেন ৷২০৷২১৷২২৷২৩৷ !২৪৷২৫৷২৬/

অনন্তর ইন্ত্র থেমন অচলকে ভেদ করিয়াছিলেন, দেইরূপ রাম, রাবণকে বিদ্ধ করিলে, বিভীবণাথানা, বিচল হইরা খীর সন্দ্রনাপরে কণকাল মোহ প্রাপ্ত ছইল। অমনি ভাছার হন্ত হইতে শরাসম নিপতিত দর্শনে রাম, অবচিন্ত বাণে—রাব-ণের শরাসন ও স্থাসম প্রভা বিশিষ্ঠ কিরীট, থও খও করিয়া ফেলিলেন। আর বলিতে লাগিলেন; ওরে ভ্রম্টদশা-নন! তুই এক্ষণে আমার শর্জালে প্রপীড়িত হইরাছিস্; আজা করিভেছি, অদ্য গৃহে গমন কর। কলা স্বস্থ হইরা আবার আমার বল দেখিস্। অমনি বিক্ষিতাক্ষ হতদর্প রাক্ষসপতি শক্ষার বিন্তবেদনে, অভিসত্তর শহার রাজভবলাভিমুশে গমন করিলেন।২৭।২৮।২৯।৩০। অনস্তর, রগুবর, লক্ষাণকে মুচ্ছি ত ও ভূমিওলে বিশুঠিত দেখিয়া, কালবশে নরভাবপ্রযুক্ত বহুশোক করিতে লাগিলেন এবং হুমানকে আহ্বান করত কহিলেন। বংগ হন্মান্! শীত্র মহোষধি আনিয়া, লক্ষাণের ও যুদ্ধাহত কপিকুলের প্রাণয়ক্ষা কর। প্রনাক্ষক্ত যে আজ্ঞা বলিয়া, ক্ষণকালের মধ্যে বায়ুবেগে মহাসমুদ্রের পর পাবে উত্তীর্ণ হইল। ইতিমধ্যেই রাবণের চর, লক্ষাণের প্রাণদানের নিমিত্ত মহেধি আনিতে সমুদ্র পারে হন্মান, গমন করিতেছে; এই সমস্ত কথা রাবণ-সন্ধিবনে নিবেদন করিলে; দশানন, চিন্তাযুক্ত হইলেন।৩১।৩২।৩৩।৩৪।৩৫।

জনস্তর নিশীব সমরে রাবণ, একাকী কালনেমি গ্রে গমন করিয়া, পুরের্বাক্ত সমুদার কথা কালনেমি সমিধানে বর্ণন করিলে; কালনেমি, অর্থাদিয়ারা পূজা করিয়া কভাঞ্জনি-পুটে এই কথা বলিছে লাগিলেন। ৩৬। গৃহাগতং সমালোক্য রাবণং বিন্দায়ান্থিতঃ।
কালনেমিরুবাচেদং প্রাপ্তলির্জারিছালঃ।
অর্য্যাদিকং ততঃ রুত্বা রাবণস্থাপ্রতঃ ছিতঃ॥ ৩৭॥
কিন্তে করোমি ? রাজেন্দ্র! কিমাগমনকারণম্?
কালনেমিরুবাচেদং রাবণো ছঃধপীজ্তঃ॥ ৩৮॥
মমাপি কালবশতঃ কউমেতছপন্থিতম্।
ময়া শক্ত্যা হতো বীরো লক্ষ্যণঃ পতিতো ভূবি॥
তং জীবয়িতুমানেতুমোষধীর্হন্তমান্ পতঃ।
যথা তম্ভবেভিন্নং তথা কুরু মহামতে!॥ ৪০॥
মায়য়া মুনিবেশেণ মোহয়ম্ব মহাকপিম্।
কালাত্যযো যথা ভূয়াৎ তথা কুতিছি মন্দিরে॥৪১॥
রাবণম্য বচঃ শুত্রা কালনেকিরুবাচ তম্।
রাবণেশ ! বচো মেহস্ত শুণু ধারয় তত্ত্বতঃ॥ ৪২॥

তে রাজন্! আপলার কি কার্য্য সাধন করিতে হই:ব

এবং এরপ নিলীথ সময়ে আপনার আগমনেরই বা কারণ

কি? তথন লকাধিপতি রাবণ, ছংখানলে দগ্ধ-হৃদয় ছইয়া,

কালনেমিকে কহিতে লাগিল। দেখ মাতুল! কালমাছাত্মগুণে আমার এই সমস্ত মানসিক ছংখ উপছিত হইয়াছে;

মহাবীর লক্ষ্মণ, আমার শক্তিশেল দারা আহত ছইয়া,
ভূতণে নিপতিত হইয়াছে; প্রধান কপি ছ্মুমান্ ভাহার

জীবন রক্ষার নিনিত, ঔঘধী আনয়ন করিতে গ্রুমান্ত।

গ্রুমন করিয়াছে। এক্ষণে হে মছামতে! বাহাতে ভাহার বিদ্ন
উপন্থিত হয়, সেই মন্ত করিতে হইবে। অতএব ভূমি, মুনিবেশ পরিগ্রহ পূর্মক, সেই মহাক্লিকে মোছিত করিয়া,

বাহাতে কাণ বিশ্ব হয়, সেইরূপ করিও ৷৩৭৷৩৮৷৩৯/৪০৷৪১৷
ভন্তর রাগণের বাক্যবশানে, কাণনেমি কহিতে

नाशिन-ए कर्क् वर्था । चना चामाव बाका खरन कवित्रा, ভাহা রক্ষা কর। আমাধিও প্রতিজ্ঞা করিছেছি; ভোমার প্রিয় কার্য্য না করিয়া কথনই জীবন ধারণ করিতে পারিব না তে রাজনৃ! পূর্বে মৃগরপধারী মারীচ বেরণ হইয়াছিল, আমারও শরীর সেইরূপ হইবে। কিন্তু দেথ-পুত্র, পৌত্র; বন্ধু, বান্ধ্ব প্রভৃতি রাক্ষরকুগ নিষুণি হইলে, ভোমার জীবনে আবার প্রয়োজন কি? আবার তুচ্ছ রাজ্য ধনে কিছা পরবধূ দীতা দইয়া কি ফলোদর আছে? অতএব হে মহাবাহো! व्याभाव श्वामार्ल, बिदामारक भीका, ध्वर विकीयनाक बाका প্রদান করিয়া শ্বরং একাকী মুনিগণের মনোহর আশ্রমপাদে গ্ৰমন করত, প্ৰতিদিন প্ৰাভঃকালে নিশ্বন সলিলে স্থান ও मञ्जादिकनोति बादा (पर পবিত कर। ७९পরে ইঙর বাহ্য বিষয় ও সর্ব্ব সঙ্গ পরিভ্যাগ পূর্বেক, একান্তে স্থাসনে আদীন रहेता, भंतीत मश्यक कत्र। ४२। ४०। ४४। ४৫। ४७। ४५। অভঃপর পাপবিহীৰ কলেবরে বাহ্য বিষয় ছইতে অক্চিরকে ফিরাইরা, সংযত অন্তঃকরণে আঝাকে প্রকৃতির

প্রকৃতেভিন্নমাত্মানং বিচারয় সদানঘ। চরাচরং জগৎ কৃৎস্থ দেহবৃদ্ধী ক্রিয়াদিকম্। ৪৯। আবিকান্তৰপৰ্য্যন্তং দৃষ্ঠতে শ্ৰেষ্ঠতে চ যৎ। দৈষা প্রকৃতিরিভূক্তো দৈব মায়েতি কীতি তা ॥৫০॥ দর্গ ভিতিবিনাশানাং জগদ্রক্ষ ভাবেণ্ম। লোহিতখেতকুফাদিপ্রকা: সৃজ্তি সর্বদা । ৫১॥ কামকোধাদিপু প্রাপ্তান্ হিং দাভৃষ্ণাদিকন্যকা। নোহয়ত্যনিশং দেবমাত্মনং স্বৈর্টণরিভুম্ ॥ ৫২ ক চু হ'ভাক্ত হুমুখান্ স্বগুণানামনীশ্বরে। আংরোপ্য স্বৰশং কৃত্বা ভেন ক্রীড়তি সরিদা । ৫৩ শুদ্ধোহপ্যাত্ম। যুৱা যুকো পশুতী ব স । বহিঃ। বিস্মৃত্য চ স্বমাস্থানং মায়াগুণবিমোহিতঃ। ৫৪। যদা সদ্ভক্ষণা যুক্তো বোধ্যতে বোধ্ৰুপিণা। নির্ত্তৃটিরাশ্রানং পশ্তত্যের সদা ক্টম্। ৫৫। की वन्ना कः मना रमही सूहारक धाक्ररेक छ रैनः। ত্মপ্যেবং সমাত্মানং বিচার্যা নিয়তে ক্রিয়ঃ। ৫৬

প্রক্তেরন্যতালানং আছা মুক্তো ভবিষাদ।

ধ্যাতৃং যদ্যদমর্থাইদি সপ্তণং দেবমাশ্রয়।। ৫৭।

হৎপদ্মকর্ণিকে স্বর্ণপীঠে মণিগণান্বিতে।

মৃতৃশ্লীক্ষতরে তত্ত্র জানক্যা দহ সংস্থিতম্। ৫৮।

বীরাসনং বিশালাক্ষং বিদ্যুৎপূঞ্জনিভাষরম্।

কিরীটহারকেয়ুরকোস্প ভাদিভিরন্বিতম্। ৫৯॥

মূপুরি: কটকৈর্ভাতং ভবৈব বন্যালয়া।

লক্ষণেন ধনুত্ব দ্বুকরেণ পরিসেবিতম্। ৬০।

এবং ধ্যাত্বা সদাতালাং রামং স্কিহ্নদিন্থিতম্।

ভক্ত্যা পরময়া যুক্তোম্চাতে নাত্র সংশয়ঃ॥ ৬১

খুণু বৈ চরিতং তন্ত ভক্তৈনিভ্যমনন্যীঃ।

এবং চেৎকৃতপ্র্বাণি পাপানি চ মহাস্ত্যাপ।

ক্ষাদেব বিনশ্রম্ভি যথাইয়েন্ড্লরাশয়ঃ॥ ৬২॥

বিভিন্ন ভাব প্রাপ্ত করাও। এই সমুদার চরাচর জাগৎ
দেহ, বৃদ্ধি ইন্দ্রিয়াদি এবং আব্রদ্ধ শুস্থ পর্যান্ত বাহা
কিছু অবলোকন করিছেছ বা প্রবণ করিছেছ; সেই
সমুদারকে প্রকৃতি বলে। আবার বিজ্ঞ পশ্চিতেরা, সেই
প্রকৃতিকে মারা বলিয়া ব্যাখ্যা করেন। সেই মহামারা
স্থি স্থিতি বিনাশেব এবং জগৎরূপ রক্ষের মূল স্বরূপ।
তিনিই শ্বেড, পাত, নীল, গোহিত প্রভৃতি বিবিধ বর্ণের জীব
সমূহ স্প্রী বরিতেছেন। কাম ক্রোণাদি রিপুরাণ তাঁহার

কন্যা। সেই ৰায়া, নিজন্তবে অহনি নি আজাবেবকে মুশ্ব করিতেছেন। এবং কর্তৃত্ব, ভোজ্ ও প্রভৃতি স্থচর এবং স্থীয় ওণ সমূহ, আয়ারূপী ঈশ্বরে আরোপ করিয়া, আর উক্ত সকলকে নিজ বশে রাখিয়া সর্মানা সেই আয়া দেবের সহিত ক্রীড়া করিতেছেন। অতএব তুমি সর্মানা জানবান্ গুরু হারা উপদেশ লইয়া, কার্যা কর তাহা হইলে স্বয়ং জাবন্মুক্ত হইয়া উদ্ধার পাইবে, নভুবা এ পাপ দেহে আর ফল নাই। দেখ আপনার জনপন্মে সেই জানকীর সহিত বীরাসনে সংস্থিত; ধহুর্মান করে লক্ষ্মণ্ডারা পারসেবিত ত্রান্দ্র গ্যামলবর্ণ, ক্রিটি, হার, কেন্তুর কেন্তুভানিদ্বারা অনহ ত,

ভদ্স রামং প্রিপূর্ণমেকং বিহার বৈরং নিজ্ভক্তিযুক্তঃ। ক্লাস্মা তাবিতভাবৰপ-

বনমালা—বিরাজিত রাম্মণ চিতা করিয়া, আত্মাকে ওছা কর

মনামরূপং পুরুষং পুরাণমূ॥ ৬৩। ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে যুদ্ধকাণ্ডে ষর্ম্পোইধ্যায়ঃ।

তাহা হইলে, তুমি ইহকালে ও পরকালে উদ্ধার পাইবে। ৪৮। |৪৯|৫০|৫১|৫২|৫৩|৫৪|৫৫|৫৩|৫৭|৫৮'৫৯।৩০।৩১।৩২।৬২

> वेकि विषयमधान्यतामात्रत्न छेमामस्वयतमचारम युष्यकारण यहर्षाव्यातः।

मश्रुद्यार्थगायः।

কালনেমিবচঃ শ্রুণা রাবণোষ্মুডসন্নিভ্ম।
জন্মাল ক্রোধতান্ত্রাক্ষা সর্পিরন্তিরিবাগ্নিমভ॥ ১॥
নিহ্মি ডাং দুরাত্মানং মজ্যাসনপরাজ্যুখম।
পরেঃ কিঞ্চিৎ গৃহীড়া ডং ভাষদে রামকিক্ষরঃ॥
কালনেমিরুবাচেদং রাবশং দেব! কিং ক্রুধা?।
ন রোচতে নো বচনং যদি ? গড়া করোমি তৎ। ৬

অনম্ভর রাবণ, কালনেমির এতাদৃশ অমৃততুলা বাকা শ্রবণ করত প্রতাক্ত হতাদনের ন্যায় ক্রোধে চক্ষুম্বর তাম্রবর্ণ করিরা থেলিয়া উঠিলেন এবং কহিলেন—তুই রাম কিহুরের ন্যায় আমাকে সম্ভাষণ করিতেছিস্, বুঝিলাম তুই আমার শাসনের বিপরিত কার্যা করিতেছিস্ অভএব তুই ভ্রাচার তোকে এফ-এই বিনাশ করিব। কালনেমি রাবণকে কহিল—হে দেব! ভোমার ক্রোধে আবশাক কি ? যদি আমার বাক্ষে তোমার ইত্যক্ত্বা প্রথমে শীন্তং কালনেমির্মহামুরঃ।
নাদিতো রাবণেনৈব হন্মদ্বিঘ্নকারণাথ ॥ ৪ ॥
দ গড়া হিমবৎপার্খং তপোবন্মকল্পারং।
তত্ত্র শিব্যোঃ পরিব্রতো মুনিবেশ্বরঃ খলঃ॥ ৫ ॥
গচ্চতো মার্গমানাদ্য বায়ুস্থনোর্মহাত্যুনঃ।
তত্তো গড়া দদর্শাথ হন্মানাশ্রমং সুভ্রা। ৯ ।

মনোমত না হয় তবে তুমি যাহা বলিতেছ আমি তাহাই করিব।
আনস্তর মছাম্মর কালনেমি প্রননন্দনের বিশ্ব সাধন মানদে
আতি ত্বান্নিত হইয়া গমন করিলে, এবং হিমাদ্রির পার্য বর্ত্তী
ইইয়া শিষাগাণ পরিবেক্তিত হওয়ানন্তর মুনিবেশ পরিগ্রাহ
পূর্বাক তপোবন কম্পানা করিয়া লইলে মছাম্মা পাবন তনয়ের
গশুরা পথ প্রাপ্ত হইল। অনস্তর প্রনাম্মক মুনিমঙলাকীর্ণ
অন্তব আশ্রম পদ সন্দর্শন করিয়া মনে মনে চিন্তা করিতে

চিন্তা না দ্ কান্য শ্রিমান্ প্রননন্দনঃ।
পুরা ন দ্ কামেত স্মে মুনিমণ্ডল মুন্তমম্॥ १॥
মার্গো বিজংশিতো বা মে জমো বা চিন্তসম্ভবঃ।
মন্ত্রা প্রকাশেশতঃ। ৮।
পীড়া জলং ততো বামি জোণাচল মন্ত্রমম্।
ইত্যুক্ত্বা প্রবিবেশাথ সর্বতো যোজনায়ম্। ১।
আশ্রমং কদলীশালখর্জুরপনসাদিভিঃ।
সমারতং প্রকাশেনিম্র কাম্বনিমিঃ সরাক্ষরং॥ ১১॥
বৈরভাববিনিম্ কাং শুদ্ধং নির্মললক্ষণম্।
তিমিন্মহাশ্রমে রম্যে কালনেমিঃ সরাক্ষরং॥ ১১
ইন্রুযোগং সমাস্থায় চকার শিবপুলনম্।
হত্মানভিবাদ্যাহ গৌরবেণ মহাস্থরম্॥ ১২॥
ভগবন্। রামদূতোহহং হন্মায়াম নামতঃ।
রামকার্যোণ মহতা ক্ষীরাকিং গন্তম্ভতঃ॥ ১০॥

লাগিল যে, আমার গমন পথের ভ্রংশ ও চিত্ত বৈকলা হইবার সম্ভব, অতএব এই মুনির দিবা আশ্রমপদে গম্ন করিরা
তথার জল পান করতঃ হিমাজি গমন করিব এই ভাবিরা
যোজন বিস্তৃত আশ্রম পদে প্রবেশ পূর্বক দেখিল যে আশ্রমটী
কদলী, শাল খর্জুর, পনস, আম প্রভৃতি বিবিধ স্থপক ফল
ভারাবনত রক্ষে পরিপূর্ণ এবং বৈরভাব বিনিমুক্তি ও সর্বাধা
তদ্ধ ও নির্মাণ—তথার মারাবেশধারী কালনেমি, রাক্ষসগণ
পরিরত হইরা ইক্রজাল বিস্তার করতঃ শিবপূলা করিতেছিল, হন্মান সেই মহাম্মরকে অভিবাদন করিয়া কহিল—
হে ভগবন্! আমি প্রীরামচন্দ্রের দৃত, আমার নাম হন্মান্
আমি রাম কার্য্য সাধনে গমন করিভেছি; কিন্ত এক্ষণে আমি

ভ্বা মাং বাধতে ব্রহ্মন্! উদকং কুত্র বিদ্যতে।

যবেচ্ছং পাতুমিচ্ছামি কথ্যতাং মে মুনীশ্ব ! ॥১৪

তচ্ছুত্বা মাক্রতের্ব্রাক্যং কালনেমিগুমত্রবীং।

কমগুলুগতং ভায়ং মম ত্বং পাতুমহ সি॥ ১৫॥

ভুংক্ষু চেমানি প্রকানি ফলানি তদনন্তরম্।

নিবসন্ত সুখেনাত্র নিদ্রামেহি ত্রান্ত মা॥১৯॥

ভূতং ভব্যং ভবিষ্যঞ্চ ক্ষানামি তপ্সা স্বয়ম্।

উপ্রিতো লক্ষণং সর্বের বানরা রামবীক্ষিতাঃ॥১৭

তচ্ছুত্বা হনুমানাহ কমগুলুজ্বলেন মে।

ন শাম্যত্যধিকা ভূক্ষা ভতো দর্শর মে জলম্ ১৮

ভথেত্যাক্রাপ্রামান বটুং মারাবিক্রিপাত্রম্।

তৃষ্ণার অত্যন্ত কাতর হইরা জল অয়েষণ করিতেছি; হে
মুনীশ্ব! কোন হানে সলিল আছে, আমাকে বলিয়া দিন,
আমি তাহা পাল করিয়া স্মৃত্ব হই।৭।৮।৯।১০১১।১০।১৪।
অনস্তর কালনেমি পবল তনয়ের এইরূপ কথা শ্রবণ করিয়া
মধুর বাক্যে কহিছে লাগিল। আমার এই কমগুলু মধ্যে
জল আছে, যত ইচ্ছা হয় পান করিয়া পরে এই সমস্ত ফল
ভক্ষণ কর। পরে স্মৃত্ব হইরা আমার আশ্রমে বাস করত
সূথে নিদ্রা যাও। আমি তপদ্যার বলে ভূভ ভবিষাৎ
সকলই জানি। বোধ করি এতক্ষণ মহাবীর শক্ষমণ ও
যুদ্ধাহত বানরগণ জীবিত হুইরা শ্রীরামকে দর্শন করিতেছে।
হত্তমান, কালনেমির এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিয়া প্রস্কুলান্তঃকরণে কহিছে লাগিল—মুনিবর! আমার সমধিক তৃষ্ণা
হইয়াছে, আপনার কমগুলু জনে এত্ঞা নিবারণ হইবে না।
অভএব একটা ব্রাহ্মণ তনরকে আজা কঞ্চন আমাকে জলাদার দেখাইয়া দেয়। অমনি বটুবেশধারী জানৈক রাক্ষম,

বটো ! দর্শর বিস্তীর্ণং বায়ুস্থনোর্জ্বশাশরম্ ।১৯।
নিমীল্য চাক্ষিণী ভোরং পীত্বাগচ্ছ মমাস্থিকম্ ।
উপদেক্ষ্যামি তে মন্ত্রং যেন জক্ষ্যাসি চৌষধীঃ ॥ ২০
তথেতি দর্শিতং শীস্ত্রস্থান সলিলাশরম্ ।
প্রবিশ্য হন্ত্রমান্ তোরমপিবন্ধীলিতেক্ষণঃ ॥ ২১
ততক্ষ্যান্ত্র মকরী মহামারা মহাকপিম্ ।
অগ্রসন্তং মহাবেগাৎ মাক্রতিং ঘোরন্ধপিণী ॥ ২২
ততো দদর্শ হন্ত্রমান্ গ্রসন্তীং মকরীং ক্ষা ।
দাররামাস হস্তাভ্যাং বদনং সা মমার হ ॥ ২৩ ॥
ততোহন্তরীক্ষে দদৃশে দিব্যন্ধপধরাক্ষনা ।
ধান্যমালীতি বিধ্যাতা হন্ত্রমন্ত্রমথান্তবীৎ ॥ ২৪ ॥

प्रश्यमानान श्मां भाषा विश्वकास्य क्षेत्र । ।
मेखा श्यास्य स्व एक कृष्टें का न मिर्सा श्राह्म हा ।
ताव गंधी श्रिक्ष क्षेत्र के कुंद क्षेत्र के ।
ताव गंधी श्रिक्ष के । । १५
स्वित्य गंधि । । १५।
स्वित्य गंधि । १५।

কালনেমির আজ্ঞায় বায়ুপুত্রকে সন্নিহিছ ব্লহৎ জলাশয় দেখাইয়া বলিল—হত্মন্! ভূমি জলপান করিয়া অভি সত্তর আইস, কারণ মন্ত্র শিক্ষা করিয়া ঔষধী অন্বেষণ করিয়া লইবে।১৫।১৬।১৭।১৮।১৯।২০।

অনন্তর তৃষ্ণাতুর মহাবীর পাবনপুত্র রক্ষদর্শিত জলাশরের জলে প্রবেশ করিবামাত্র, ভীমরুপিনী মকরী তাহার পদ গ্রাস করিল। তদর্শনে হস্তমান্ রাগান্থিত হইয়া, স্থীর পদগ্রাসিনী ঘোররুপিনী মকরীকে হস্ত হারা ধারণ করিয়া বদন বিদারণ পূর্বক শমন সদনে প্রেরণ করিবামাত্র অন্তরীক্ষে পরমরূপ লাবণাবতী এক কামিনী দর্শন করিল, পরে সেই দিব্যান্ধনা, ক্ষণকাল আকাশ মার্গে অবস্থিতি করিয়া হুম্মানকে আন্থাপরিচ্যাদি সমস্ত বিষয় বর্ণন করিছে লাগিল—হে কণীশর! পূর্বের আমি ধান্যমালী নামী অপসরা ছিলাম, কোন বিশেষ কারণ বশতঃ অভিশপ্তা হুইয়া এই জল মধ্যে বাস করিতে

ছিলাম। অন্য আপনার প্রসাদে সেই শাপ হইতে বিমুক্ত হইরা পূর্ব্বদেহ প্রাপ্ত হইলাম; কিন্তু হে অনঘ! তুমি যাহার আশ্রমে আসিরাছ, সে মহাস্তর কালনেমি; তোমার বিদ্ধ করিবার মানদে রাবণ কর্ত্বক প্রেরিত হইরা মুনিবেশ ধারণ করত এই কম্পিত আশ্রমে বাস করিছেছে। অতএব এক্ষণে তুমি ত্বরিত প্রেরিত আশ্রমে বাস করিছেছে। অতএব এক্ষণে তুমি ত্বরিত প্রেরিত প্রেরিত প্রেরিত প্রেরিত প্রেরিত প্রেরিত প্রেরিত প্রেরিত প্রাপ্ত তোমার সংস্পর্শে বিশ্বত পাপা হইরা ব্রহ্মলোকে গামন করি, এই বলিরা দিব্য রূপধারিণী কামিনী স্বর্গে গামন করিল। হন্মানও সেই আশ্রমে আসিরা উপ্রিত হইল, কালনেমি তাহাকে কহিছে লাগিল—হে বানর সন্থম! তোমার এত অধিক বিলম্বের কারণ কি? এক্ষণে আমার নিকট হইতে মন্ত্র গ্রহণ করিরা গুরু ক্ষণো প্রেদান করা ২১ ।২২।২৩ ।২৪।২৫ । ২৩ ।২৭ ।২৮ ।২৯ ।

গৃহাণ দক্ষিণামেতামিত্যুক্তা নিজ্বান তম্।
বিসূজ্য মুনিবেশং সং কালনেমিম হাস্তরঃ। ৩১।

য়ুমুধে বায়ুপুজেন নানামায়াবিধানতং।
মহামায়িকদূতোহসে হমুমাম্মায়িনাং রিপুঃ॥৩২।
জ্বান মুফিনা শীক্ষি ভয়মুধা মমার সং।
ততঃ ক্ষীরনিধিং গত্বা দৃষ্টা জোনং মহানিরিম্।
অদৃষ্ট্বা চৌষধীক্তর গিরিমুৎপাট্য সত্তরঃ।
গৃহীত্বা বায়ুবেগেন গত্বা রামস্য সন্নিধিম্। ৬৪।
উবাচ হমুমান্ রামমানীভোহয়ং মহানিরিঃ।
যত্ত্বাক্তং কুরু দেবেশ! বিলয়ো নাত্র যুজ্যতে। ৩৫
ক্রাত্বা হন্ত্মতো বাক্যং রামঃ সন্তুষ্টমানসঃ।
গৃহীত্বা চৌষধীঃ শীঘুং সুষেনেন মহামতিঃ। ৩৬।

চিকিৎসাং কারয়ামাস লক্ষ্মণায় মহাত্মনে।
ততঃ সুপ্রোত্মিত ইব বুদ্ধা প্রোবাচ লক্ষ্মণঃ। ৩৭
তির্চ তির্চ ক গস্তাসি হন্মীদানীং দশানন!।
ইতি ক্রবন্ তমালোক্য মুর্ম্ম বিঘায় রাঘবঃ। ৩৮।
মারুতিং প্রান্থ বৎসাদ্য ত্বৎপ্রসাদান্ মহাকপে?
নিরাময়ং প্রপশ্যামি লক্ষ্মণং ভ্রান্তরং মম। ৩৯।
ইত্যুক্ত্মা বানরৈঃ সার্দ্ধং স্থুগ্রীবেণ সমস্থিতঃ।
বিভীষণমতেনৈর যুদ্ধায় সময়স্থিতঃ।। ৪০।।
পাষাণৈঃ পাদপৈশেকব পর্ব্বতাগ্রিশ্চ বানরাঃ।
যুদ্ধায়াভিমুখা ভুদ্ধা যযুঃ সর্ব্বে যুযুৎসবঃ। ৪১॥
রাবণো বিব্যথে রামবাণৈর্বিদ্ধা মহাস্করঃ।

কালনেমির এই কথা শ্রবণ করতঃ মহাবীর হনুমান দৃঢ় রূপে মৃষ্টি বছ করিয়া 'এই ভোমার গুরু দক্ষিণা লও' বলিয়া মুট্ট্যাঘাছে ভাষাকে বিচলিত করিয়া কেলিল। মহাস্থর কালনেমিও বিবিধ মায়াজাল বিস্তার করিয়া বায়ুপুজের সহিত গুদ্ধ করিতে আরম্ভ করিল। কিন্তু মায়াবী-শক্ত মহামায়িক হনুমান আর এক মুট্টাঘাতে কালনেমির মন্তক চূর্ণ করিয়া ুকলিল, কালনেমিও মুহুর্ভ মধ্যে পঞ্চত্ব প্রাপ্ত হইল।

অনন্তর মহাস্তর হতুমান ক্ষীর সমুদ্র তীরে গমন করিয়া দ্রোণ গিরি সন্দর্শন করিল। তথায় ঔষধী অদর্শনে গিরি উৎপাটন পূর্বাক মন্তকে ধারণ করিয়া বায়ুবেগে রাম সিধানে গমন করিল; এবং কহিল—হে রঘুনাথ! আমি এই মহা-গিরি আনর্যন করিয়াছি, এক্ষণে যাহা যুক্তিযুক্ত হয় ভাহাই কর্মন, আর বিল্পের প্রয়োজন নাই ৩০০৩২০২০৩০৪। ৩৫। শীরামচন্দ্র হন্ত্যানের এই বাকা শ্রবণ করিয়া আৰম্পিত হইলেন। পরে সুবেণ দ্বারা ঔষধী গ্রহণ করত মহাদ্যা লক্ষ্মণের চিকিৎসা আরম্ভ করিলেন। ক্ষণকাল মধ্যে লক্ষ্মণ
বীর জীবন প্রাপ্ত হইয়া সুপ্রোথিতের ন্যায় উথিত হইলেন,
এবং কহিলেন—ওরে দশানন! তুই কোথার যাস্? ক্ষণকাল
অবস্থান কর, আমি ভোরে শীস্তই যমালয়ে প্রেরণ করিতেছি
লক্ষ্মণ এই কথা বলিছেছেন—ইত্যবস্বে শীরামচন্দ্র তাঁছাকে
আলিঙ্গন দিয়া মন্তক আন্তাণ করিলেন। ৩৬। ৩৭। ৩৮।

অনন্তর শ্রীরামচন্দ্র, বায়ুপুত্রকে বলিয়াছিলের; বংস হুমুমান্! অদ্য ভোমার প্রসাদে আমার ভাতা নিবর্তাধি হইল; অতথ্য আশীর্কাদ করি, তুমিও সুত্থ থাক। পবন নন্দনকে এই কথা বলিয়া, বযুবংশাবতংগ শ্রীরাম, বিভীষণের পরামর্শে সুপ্রীয় সহ কপিকুল সমন্তিব্যাহারে যুদ্ধ করিতে রণভূলে উপস্থিত হইলেন। অমনি প্রস্কু আজ্ঞার পাষাণ, পাদপ ও পর্ব্বাতা হস্তে ধারণ করিয়া বিবিধ বানর নিকর, সর্ব্বাত্রে মাতঙ্গ ইব সিংহেন গকড়েনেব পল্লগং। ৪২।
অভিভূভোইগমজাঙ্গা রাঘবেশ মহাত্মনা।
সিংহাসনে সমাবিশ্য রাক্ষ্যানিদ্মন্তবীৎ ॥ ৪৩॥
মানুষেনৈব মে মৃত্যুমাহ পূর্বাং পিতামহং।
মানুষো হি ন মাং হন্তং শক্তোইন্তি ভূবি কশ্চন।
ততো নারায়ণং সাক্ষামানুষোইভূল সংশয়ং।
রামো দাশর্থিভূত্য মাং হন্তং সমুপন্থিতং। ৪৫।
অনরণ্যেন যৎপূর্বাং শপ্তোইহং রাক্ষ্যোশা।
উৎপৎস্যতে চ মদ্বংশে পর্মাল্মা স্নাতনং। ৪৯।
তেন ত্বং পুল্লপৌজৈশ্চ বাদ্ধবৈশ্চ সমন্থিতং।
হনিষাসে ন সন্দেহ ইভুক্ত্যা মাং দিবং গতং॥৪৭।

স এব রামঃ সঞ্জাতো মদর্থে মাং হনিষ্যতি ।
কুন্তুকর্ণস্ত মূঢ়াতানা সদা নিজাবশংগতঃ ॥ ৪৮ ।
তং বিবোধ্য মহাসন্ত্রমানয়ন্ত মমান্তিকম্।
ইত্যুক্তান্তে মহাকায়ান্তর্গুণ গড়া তু যতুতঃ। ৪৯ ।
বিবোধ্য কুন্তপ্রবর্গুণ নিস্কারাবণসন্মিধিম্।
নমস্ক্ত্য স রাজানমাসনোপরি সংস্থিতঃ । ৫০ ।
তমাহ রাবণো রাজা ভাতরং দীনয়া গিরা ।
কুন্তুকর্ণ ! নিবোধ তং মহৎকন্টমুপস্থিত্ম । ৫১ ।
রামেণ নিহতাঃ শুরাঃ পুর্জাঃ পৌজ্ঞান্চ বাদ্ধবাঃ ।
কিং কর্মবামিদানীং মে ? মৃত্যুকাল উপস্থিতে ।৫২

পাৰন করত, রাক্ষসগণ সক্ষে সমর আরম্ভ করিল। যেমন মাতক সিংহ কর্ক্ক, এবং প্রগ গকড় কর্ত্ক আক্রমিত হর; সেইরূপ মহাস্থর লকাধিপতি রাবণ, রাম কর্ত্ক আক্রমিত ও ও রাম শরে জর্জ্জবিত হইয়া, প্রাণ ভরে স্বীর জ্বনে প্রবিষ্ট হইল। ৩১। ৪০। ৪১। ৪২।

তনন্তর দশানন, রত্ন খচিত স্থাচিত্র স্বর্ণ সিংহাসমে উপ-বিষ্ণ হইরা, সভাস্থ রাক্ষসদিগকে এই বলিয়াছিল; দেখ সভাস্থ পারিষদগণ! পূর্বে পিতামছ ব্রহ্মা আমাকে বলিয়া ছিলেন। যে, 'মনুকা হল্তে তোমার মৃত্যু হইবে। আর ও পূর্বে স্থ্য বংশীর জনৈক ভূপতি, কোন বিশেষ কারণে আমাকে অভিশম্পাৎ করেন যে, ওছে রাক্ষসেশ্বর! আমি নিশ্চর বলিতেছি জানিবে—সাক্ষাৎ পরমাত্মা সনাতন আমার বংশে জন্ম গ্রহণ করিয়া, ভোমাকে পুল্ল, পেতি এবং বান্ধবাদির সহিত, যুদ্ধে নিঃসন্দেহ নিহত করি বেন'। পিতামহ আমাকে এই সমল্ভ কথা বলিয়া, শ্বর্ণে গমন

করিলেন। আমিও বোধ করি সেই পারমাত্মা, আমার জন্য রঘুকুলে দশরথের ঔরসে রামরূপে জন্ম গ্রাহণ করিরান্দময়ে আমাকে সমূলে নিমূল করিবেন। নতুবা এই ভূমওলে এমন কোন নর দেখিতে পাইনা যে যুদ্ধে আমাকে সবংশে বিনাশ করে। সে যাহা হউক এক্ষণে হে রাক্ষস নিকর! মূঢ়াত্মা কুস্তকর্ণ সর্বাদাই নিম্রোভিভূত আছে তাহাকে বোধ প্রদান করিরা, আমার নিকটে আন্যান কর। ৪৩। ৪৪। ৪৫।

রাক্ষস পতি রাবণ, এই আজা করিবামাত্র, রাক্ষস গণ তারিত পদে গমন করত নিজা ভঙ্গ করাইরা কুন্তকর্গকে রাবণ সন্নিধানে আনরন করিল কুন্তকর্গও জ্যেষ্ঠ জাতাকে প্রণতি প্রঃসর, তদাজা ক্রমে এক অপূর্ব্ব আসনে উপবিষ্ঠ ছইলেন। তথন রাবণ, ভাতাকে দীন বচনে কছিতে লাগিল। দেখ, কুন্তকর্ণ! তোমার অসময়ে নিজা ভঙ্গ করিবার কারণ এই, আমার অভ্যন্ত হুঃখের সময় উপস্থিত ইইয়াছে; স্থ্রোা-বংশোদ্ভব দশরথ ভনর রাম, পুত্র পৌত্র, বন্ধু বাক্ষবাদি বহু রাক্ষসদিগকে রণে নিহ্নত করিয়াছেন; ভাহাতে লক্ষা একে এব দাশরধী রামঃ স্থাবিদহিতো বলী।

সমুদ্রং দবল জীর্ছা মূলং নঃ পরিক্লত । ৫৩।

যে রাক্ষদা মুখ্যতমান্তে হতা বানরৈবুধি।

বানরাণাং ক্ষয়ং যুদ্ধে ন পশ্যামি কদাচন। ৫৪॥

নাশয়স্ব মহাবাহো! যদর্থং পরিবোধিত:।

ভাতৃরর্থে মহাসত্ত্ব! কুরু কর্মা স্তত্ত্বরুম। ৫৫।

শুজা তদ্যাবেণক্রম্ভ বচনং পরিদেবিতম্।

কুস্তকর্ণো জহাসোহৈত্বেচ্নং চেদমত্রবীং। ৫৬।

পুরা মন্ত্রবিচারে তে গদিতং যন্ময়া নৃপ!।

তদ্য তামুপ্গতং কলং পাপ্স্য কর্ম্নগীঃ। ৫৭।

পুর্বিমেব ময়া প্রোক্তো রামো নারায়ণঃ পরঃ।

সীতা চ যোগমায়েতি বোধিতোহপি ন রুধানে। ৫৮

একদাহং বনে সানো বিশালায়াং ছিলো নিশি।

দৃষ্টো ময়া মুনিঃ সাক্ষায়ায়দো দিব্যদর্শনঃ। ৫৯।

তমক্রবং মহাভাগ। কুতো গস্তাসি মেবদ।

ইত্যুক্তো নারদঃ প্রাহ দেবানাং মন্ত্রণে স্থিতঃ।

তব্রোৎপল্লমুদন্তং তে বক্ষ্যামি শুণু তত্ত্বতঃ।

যুবাভায়ং পীজ্তা দেবাঃ সর্বের বিষ্ণুমুপাগতাঃ।

উচুন্তে দেবদেবেশং স্তত্ত্বা ভক্ত্যা সনাহিতাঃ।

জহি রাবণমক্ষোভ্যং দেব! বৈলোক্যক্তক্ম্যাঙ্কং

বারেই রাক্ষ্য ও বীর শ্না হইয়াছে। এক্ষণে কি করা কর্ত্বা কিছুই থির করিতে পারিতেছি না। বোধ হয় আমার মৃত্যু কালও সমাপত হইয়াছে, কারণ দেই দাশরথি রাম, বীরবর কপিকুল-ভিলক স্থ্রীবের সহিত মিলন করত সলৈনো মহা শম্ত পার হইয়া, লঙ্কায় আগমন পূর্ব্বক, আমাকে সমূলে নিমূল করিতেছেন। যে যে প্রধান প্রধান রাক্ষ্য ছিল, ভাহারা যুদ্ধে নামর ধারা শমন সদনে গমন করিয়াছে। কিন্তু এই আশ্র্যা দেখিতেছি, রণে বানরের ক্ষয়,নাই। অভএব, হে মহাবাছো! কপিকুল ক্ষয় করত বৈরী বিনাশরণ, ত্রুজর কার্যা সিদ্ধ কর, তাহা হইলে আমি পরম পরিভোষ লাভ করিব।

অনস্তর কুন্তকর্ণ রাবণের এইরুপ বাক্য প্রবণ করিয়া, উচ্চিঃস্বরে হাস্য করত এই কথা বলিয়াছিল। মহারাজ! পূর্বেমন্ত্র বিচারে আমি আপনাকে ধে কথা বলিয়াছিলাম, এক্ষণে আমার সেই বাক্য সফ্ল হইল পাপের ফল উপগত হইয়াছে: পূর্ব্বে আমি বলিয়াছিলাম—রান মানুষ নয় সাক্ষাং নারায়ণ; আর সীতাও মানবী নয় সাক্ষাং যোগমায়া, ইহা আপেনি জানিয়াও বুঝিলেন না। এক দিন নিশীথ সময়ে আমি মহারণ্য মধ্যে পর্বতে শিথরস্থ এক বৃহৎ শিলার উপরে বাস করিতেছিলাম, এমং কালে নারদ মুনিকে সেই স্থান দিয়া গমন করিতে দেখিয়া তাঁহাকে জিজ্ঞাসা করিলাম; হে মহাভাগ! এমন সময়ে আপেনি কোথায় গমন করিতেছিল আমাকে বলুন ? ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪।৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯।

অতঃপর কৃতত্বর্গের বাক্য শ্রবণ করিয়া নারদ মূনি কহিতে লাগিলেন—হে রাবণানুজ! আমি তোমার বলিছেছি শ্রবণ কর—তোমাদের দারা সকল দেবতারা নিপীড়িত হইয়া বিফুকে অগ্রগামী করত দেবেশের নিক্ট গমন করিয়াছিলেন এবং সকলে সমাহিত ংইয়া তাঁহাকে বিবিধ স্তব করভ বলিয়াছেন—হে দেব! দেবতা ও তিলোক কটক দশাননকে

মানুষেণ মৃতিস্তস্ত কল্পিত। ব্রহ্মণ। পুরা।
অতস্তং মানুষো ভূতা কহি রাবণকণ্টকম্। ৬৩
তথেত্যাহ মহানিফুঃ সতাসস্কল্প ঈশ্বঃ।
জাতো রঘুকুলে দেবো রাম ইত্যভিবিশ্রতঃ। ৬৪।
স হনিষ্যতি বঃ সর্বানিত্বাক্তা প্রযথো মুনিঃ।
অতো জানীহি রামং জং পরং ব্রহ্ম সনাতনম্। ৬৫
ত্যক্র বৈরং ভক্ষস্বান্ত মারামানুষক্রপিণম্।
ভক্রতো ভক্তিভাবেন প্রদীদ্ভি রঘুভ্রমঃ।৬৬।
ভক্তিজনিত্রী জ্ঞানস্ত ভক্তিমোক্ষপ্রদায়িনী।
ভক্তিহীনেন যৎকিঞ্জিং কুভং সর্ব্যস্থস্যম্য। ৬৭।

অবতারাঃ স্থবহবো বিক্ষোলীলামুকারিণঃ।
তেষাং সহস্রসদৃশো রামো জ্ঞানময়ঃ শিবঃ। ৬৮
রামং ভক্ততি নিপুণা মনসা বচসানিশম্।
অনায়াদেন সংসারং তীর্হা যাত্তি হরেঃ পদম ।৬৯

যে রামমের সততং ভূবি শুদ্ধসন্ত্রা
ধ্যায়ন্তি তথ্য চরিতানি পঠন্তি সন্তঃ।
মুক্তান্ত এব ভবভোগমহাহিপাশৈঃ
নীতাপতেঃ পদমনন্তমুখং প্রয়ান্তি॥ ৭০॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
যুদ্ধকাণ্ডে সপ্তমোহধ্যাত্রঃ।

বিনাশ করুন। পুর্ন্ধে ব্রন্ধ। বলিয়াভিলেন দে, 'রাবণ মনুষ্য মান্ত বিনষ্ট হইবে'; অভএব আপনি মনুষ্যরাণী হইয়া অর্থ, মন্ত্য ও গালগুলের কণ্টিয় বিনাশ করুন। এড্চছ্রুবণে, জ্বল দীশ্ব মহাবিষ্ণু 'তথান্ত্র' বলিয়া বিন্ত হইলে, দেবতা সকলেই স্বাস্থ্যনান প্রস্থান করিলেন।

অনন্তর ত্রিলোক নাথ মহাবিষ্ণু রঘুবংশে জ্মাগ্রহণপূর্বক রাম নামে খ্যাও হইরা, কোন বিশেষ কারণে লঙ্কার আগগমন করতঃ তোমাদিগকে বিনাশ করিবেন, এই বলিয়া দেবর্ষি শেরদ প্রস্থান করিলেম।—অভএব এক্ষণে প্রীরামকে পারম এক্ষ সনাবন জানিবেন, স্মহরাং বৈরভাব পরিভাগে করিয়া সেই মায়া মান্ত্যরূপী রামচন্দ্রকে আদাই ভজনা কক্ষা এবং ভিল্ডোবে শরণাপর হইলে রঘুবংশাবতংগ শ্রীরাম প্রসার হইবিন, কারণ ভিল্ডিই জানের জন্ম প্রস্বিনী ও ভিল্ডিই মোক্ষ প্রদাবিনী জানিবেন; তবে ভিল্ডি হীন ইয়া ধে কোন কার্যা

করা যার সে সমস্তই অসতের সমান! বিষ্ণু সীয় লীলাবশতঃ
নানারপে অবভার হইয়া ধরণীতলে অবভীর্ণ হইরাছেন,
তর্মাধ্য শ্রীরামচন্দ্র সহস্রাংশে জ্ঞান ধারণ করিয়া থাকেন
সেই জন্য জ্ঞানী ব্যক্তিরা মন ও বাক্যায়ার দিবানিশি শ্রীরামবেভ্রুত্রনা করতঃ অনায়াসে এই ভবসাগর উত্তীর্ণ হইয়া শ্রীহরির
পাদপদ্ম প্রাপ্ত হয়। যে সকল ব্যক্তি বিশুদ্ধচিন্ত হইয়া
শ্রীরামকে ধ্যান করে এবং তাঁছার চরিত্র পাঠ করে তাছারা
সংসার ভোগরপ মহাপাশ হইছে,বিমুক্ত হইয়া সীভাপতির
পাদ কমলরপ স্থা প্রাপ্ত হইয়া খাকে। ৬০। ৬১। ৬২। ৬৩ঃ
১৬৪। ৬৫। ৬৬। ৬৭। ৬৮। ৬৯। ৭০।

ইতি জীমদধ্যাস্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসম্বাদে
যুদ্ধকাণ্ডে সপ্তমোহধ্যায়ঃ।

অফমো২ধ্যায়ঃ

কুম্বর্গবচঃ শ্রুত্বা ভুকুটীবিকটাননঃ।

দশানীবো জগাদেদমাসনাত্ত্ পতরিব ॥ ১ ॥

ত্বমানীতো ন মে জ্ঞানবোধনায় সুবুদ্ধিমান্।

ময়া কুতং সমীকতা যুদ্ধস্ব যদি রোচতে? ॥ ২ ॥

নো চেদ্গচ্ছ সুযুপ্তর্থং নিদ্রা ত্বাং বাধতেহধুনা।

রাবণস্য বচঃ শ্রুত্বা কুম্বর্গে। মহাবলঃ। ৩।

কুইটাহয়মিতি বিজ্ঞায় তুর্গং যুদ্ধায় নির্ম্বো।

ন লজ্বয়িড়া প্রাকারং মহাপর্বভেসন্থিতা। ৪।

নিম্বেমা নগরাভূর্গং ভীষরন্ হরিদৈনিকান্।

স ননাদ মহানাদং সমুদ্রমভিনাদয়ন্॥ ৫ ॥

বানরান কাল্যানাস বাভভ্যাং ভক্ষয়ন ক্র্যা।

কুষ্ঠ কর্ণং তদা দৃষ্টা সপক্ষবিব পর্বভন্ ॥ ৬ ॥

ছক্তবুর্ব নিরাং সর্ব্বে কালান্তক মিবাথিলাঃ।

ভনস্তং হরিবাহিন্যাং মুদ্গরেণ মহাবলম্। ৭।

কালয়স্তং হরীন্ বেগাৎ ভক্ষয়স্তং সমস্তভঃ।

চূর্ণয়স্তং মুদ্গরেণ পাণিপাদৈরনেকধা॥ ৮॥

কুষ্তকর্ণং তদা দৃষ্টা গদাপাণিবি ভীষণঃ।

নিনাম চরণো ভশু ভাতুর্জ্যেষ্ঠশু বুদ্ধিমান্॥ ৯॥

বিভীষণোহহং ভাতর্দ্মে দয়ং কুরু মহামতে।।

রাবণস্ত ময়া ভাতর্বজ্ধা পরিবোধিতঃ॥ ১০॥

দীতাং দেহীতি রামায় রামঃ সাক্ষাজ্জনাদিনঃ।

ন শুণোতি চ মাং হন্তং খড়রমুদ্যম্য চোক্ষবান॥১১

মহাদেব কহিয়াছেন—বিকটানন দশানন ক্ষুকর্ণের বাক্য শাকা শুনিয়া জভজে হেন জাগং বিদ্যা করিবার র্জনা উথিত হুইয়া বলিলেন—তুমি স্কুদ্ধি হইয়া আমাকে জ্ঞান প্রদান করিবে বলিয়া ভোমাকে আদ্যান করি নাই, মংকৃত যুদ্ধ করিতে বদি ভোমার অভিকৃতি হয় ভবে যুদ্ধযাত্রা কর, নচেং ভূমি নিজা যাণ্ড, কারণ এক্ষণে নিজা তোমাকে কই দিভেছে। মহা-বীর ও পর্বত্তকায় কুন্তকর্ণ রাবণবাক্য শ্রবণ করিয়া ব্রিলেন. ফে, জ্যেষ্ঠ অভিশয় কুন্ধ হইয়াছেন। অনন্তর ত্রিত পদে প্রাকার উল্লেখন পূর্বাক যুদ্ধার্থ বহির্গত হইল; বানর সৈন্যাগণকে বিভীষিকা প্রদেশন ও স্করীয় মহানাদে সমুজ্রের প্রভিশ্বনি উপ্রতি করিতে করিতে সত্র নগর হইতে নির্গত হইল;

অনন্তর ক্রোধপরতন্ত্র হইয়া বানরনিগকে ধারণ করতঃ ভক্ষণ করিতে লাগিল; পরে বানরগণ পর্বাত্ত সদৃশ কুন্তকর্ণকে কালান্তকের ন্যায় বানর-দৈন্য মধ্যে বিচরণ করিতে অবলোকন করিয়া পলায়ন করিতে আরম্ভ করিল। পদাপাণী বিভীন্ধণ সম্মুখে কুন্তকর্ণকে সন্দর্শন করিয়া জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার চরণ্যুগলে প্রণতি পুরঃসর কহিতে লাগিলেন; হে ভ্রাত মহা মতে! আমি বিভীষণ, আমাকে কুপা করুল। আর পূর্ত্বে আমাদিগের উভয়ের জ্যেষ্ঠ লক্ষাপতিকে বলিয়াছিলাম—ভাত! জীরামকে সীতা সমর্পণ করুন, কারণ তিনি সাক্ষাৎ গোলক পতি জনার্দ্দন। জ্যেষ্ঠ আমার এই কথা ভানিবানাত্র ক্রেগণান্ত

ধিক তাং গছেতি মাং হত্বা সদা পাপিতিরারতঃ
চতুর্তিমন্তিতিঃ দার্ছং রামং শরণমাগতঃ ॥ ১২।
তচ্চ তা কুন্তকর্ণোহিপি জ্ঞাত্বা ভাতরমার্গতম্।
সমালিঙ্গ্রা চ বংল ! তাং জীব রামপদাশ্রারং ॥ ১৯॥
কুলসংক্রকণার্থায় রাক্ষ্যানাং হিতায় চ।
মহাভাগবতোহিল তাং পুরা মে নারদাচ্চ তুম্।
গচ্ছ তাত ! মমেদানীং দৃশ্যতে ন চ কিঞ্চন ।
মদীয়ো বা পরো বাপি মদমত্বিলোচনঃ ॥ ১৫ ॥
ইত্যুক্তোহশ্রুম্থো ভাতুশ্রেণাবভিবন্দা দঃ।
রামপাশ্রম্পাগতা চিন্তাপর উপস্থিতঃ ॥ ১৯॥
কুন্তকণ্হিপি হস্তাভ্যাং পাদাভ্যাং পেষয়ন হরীন্

চচার বানরীং সেনাং কালগ্ন্ গন্ধছন্তিবং ॥ ১৭ ॥
দৃষ্ট্যা তং রাঘবঃ ক্রুদ্ধো বায়ব্যং শস্ত্রমাদরাং ।
চিক্ষেপ কুন্তকর্পায় তেন চিচ্ছেদ রক্ষসং ॥ ১৮ ॥
সমুদ্গরং দক্ষহন্তং তেন ঘোরং ননাদ সঃ ।
সহন্তঃ পতিতো ভূমাবনেকানর্দয়ন, কপীন্ ॥ ১৯ ॥
পর্য্যন্তমান্তিতাঃ সর্বের বানরা ভয়বেপিতাঃ ।
রামরাক্ষসয়োর্যুদ্ধং পশুন্তঃ পর্যাবন্ধিতাঃ ॥ ২০ ॥
কুন্তকর্ণশিহ্মহন্তঃ শালমুদ্যুদ্ধ বেগতঃ ।
সমরে রাঘবং হন্তং ছুদ্রাব ভমথোইচ্ছিনং ॥ ২১ ॥
শালেন সহিতং বামহন্তমৈন্দ্রেণ রাঘবঃ ।
ছিন্নবাভ্মথায়াতং নর্দন্তং বীক্ষা রাঘবং ॥ ২২ ॥

প্রহার করিতে উদ্যত হইলেন, এবং কহিলেন—গুরে মূচ্মতে রাক্ষসাধম! তোরে ধিক্, তুই এক্ষণেই আমাকে পরিত্যাপ করিয়া পাপাঝা চারিজন মন্ত্রীর সহিত রামের শরণাগত হ, নতুবা আমার হন্তে তোর পরিত্রাণ নাই। এই বাক্যজ্ঞবণে ক্ষকণ, আমার কনিষ্ঠ ভাতা আসিয়াছে জানিয়া সম্যক প্রকারে আলিঙ্গন প্রদান করতঃ কহিছে নাগিলেন। বৎস! তুমি রাম পদাশ্রী হইয়া, প্রাণ রক্ষা কর। পূর্বের আমি নারদ মুখে শুনিয়াছিলাম; তুমিই বংশ রক্ষার্থে এবং রাক্ষসের হিতের নিমত্ত দীর্ঘ জীবন প্রাপ্ত ইইয়া, মহাভাগ্যধর হইবে। অনন্তর মধ্মপারায়ণ বিভীষণ,মহাকায় মহাবীর কুন্তকর্ণের এইরূপ অমৃত্তময় বাক্য প্রবণ করিয়া কহিছে লাগিল; হে ভাতঃ! তবে এক্ষণে আপনি গমন ককন; আমি আপনার কি অপবের মঙ্কল দেখিতেছি না। এই বলিয়া, অক্রপূর্ণ নয়নে মধ্যম সহোদরের চরণে অভিবাদন পূর্ব্বক, রামপাধ্যে উপনীত

হ্ইয়া চিতা করিতে লাগিল । ১। ২। ৩। ৪।৫।৬।৭।৮। ১৯।১০।১১।১২।১৩।১৪।১৫।১৬।

এদিকে ভীষণাকৃতি কুন্তুকর্ণ, হস্তপদ্ধারা বানরগণকে প্রেণপূর্দ্ধক, বানরীসেনার মধ্য দিয়া বিচরণ করতঃ, নলবনে মত্তমাতজ্বের ন্যায়, বন্তুপাত সদৃশ, বারস্থার হুতৃহ্বার ছাড়িতে লাগিল। তাহাতে সমস্ত দৈনাই বিনম্ভ ইইতে লাগিল। তদ্দর্শনে রাম মহাকুদ্ধ হইয়া, ভৎক্ষণাৎ বাষ্ণ্য অস্ত্রহাবা কুন্তকর্পের মুল্গর বিশিষ্ট দক্ষিণ হস্ত খণ্ড করিয়া ফেলিলেন। সেই সমস্ত শরীর থণ্ড, উভয় পক্ষীয় বহু সেনাস্ক ধরাশাথী ছইল। তদ্দর্শনে অমনি তর্কম্পিত বানরগণ, সমুদ্রভিরন্থ প্রাকারে উপবিষ্ট হইয়া রাম রাক্ষ্যের ভূম্ল সংগ্রাম অবলোকন করিতে লাগিল। ১৭।১৮।১৯।২০।

এমৎকালে মহাণীর ছিলৈকহন্ত কুন্তকর্ণ, অতি প্রকাশু এক শালরক্ষ বাম হন্তে ধারণ করিয়া রঘুনাথকে প্রহার করিতে, তৎসন্ধিধানে বেগে গমন করিলে, জীরাম, বিবিধান্ত প্রয়োপ- দ্বাবধ চন্দ্রে নিশিতাবাদায়াশ্ত পদ্বয়ম।

চিচ্ছেদ পতিতো পাদৌ লক্ষাদ্বারি মহাস্বনো ॥২৩

নিক্তপাণিপাদোহপি কুন্তকর্ণোহতিভীষণা।

বড়বাম্পবদ্বজুং ব্যাদায় রঘুনন্দনম্॥ ২৪॥

অভিচুদ্রাব নিন্দন রাজ্শচন্দ্রমণং যথা।

অপ্রয়ৎ সিতাগ্রিশ্চ সায়কৈস্তদ্রমুল্যমা। ২৫॥

শরপুরিভবক্ত্রোহসো চুক্রোশাভিভয়দ্পরং।

অথ স্ব্যপ্রতীকাশমৈন্দ্রং শরমনুল্রম্মা। ২৬॥

বজ্রাশনিসমং রামশিচক্ষেপাস্বরমৃত্যবে।

স তৎপর্বভিসন্ধাশং ক্ষুরৎকুপ্তলদংফ্রক্ম্। ২৭॥

চকর্ত্রক্ষোধিপতেঃ শিরো ব্রুমিবাশনিং।

তচ্চিরং পতিতং লক্ষাদ্বারি কায়ো মহোদধোঁ ॥ ২৮
শিরোইস্থ রোধয়দ্বারং কায়ো নক্রান্যচূর্ণয়ৎ।
ততো দেবা: স ৠয়য়ো গন্ধর্বাঃ প্রাণাঃ ধর্গাঃ ॥ ২৯
সিদ্ধা যক্ষা গুছ্কান্ড অপ্সরোভিন্দ রাঘবম্।
ঈড়িরে কুমুমাসারৈর্ম্বিস্থন্টাভিনন্দিতাঃ ॥ ৩০
আজগাম তদা রামং দ্রমুং দেবমুনীশ্বরং।
নারদো গগনাত্ত্রং স্বভাসা ভাসয়ন্ দিশঃ ॥ ৩১
রামনিন্দীবর্শ্তামমুদারাশ্বনুর্দ্রয়ম্।
ঈশতাশ্রবিশালাক্ষ্মেন্দ্রাপ্রাঞ্চতবাছকম্ ॥ ৩২।
দয়ার্দ্রদ্বী পশ্যন্তং বারনরান্ শ্রপীড়িতান্।

দয়ার্ড দৃষ্ট্যা পশ্যন্তং বারনরান্ শরপীজিতান্।
দৃষ্ট্যা গদ্গদয়া বাচা ভক্তাা স্থাডুং প্রচক্রমে।৩৩
নারদ উবাচ।

(मवटमव ! कशञ्चाथ ! পরমাত্মন্ ! मनाजन ! ।

দ্বারা, শাল-তক সহ তাহার বাম হন্তও ছেদল করিরা ফেলিলেন। পরে কর বিহীন কুন্তকর্ণ, পদ হারা বান্ধী সেনাদিগকে পেষণ করিতে লাগিল। তথনি রাম্চন্দ্র ছই নিশিত অর্দ্ধচন্দ্র বানে ভাহার পদদর ছেদল করিরা, মহাশব্দে লক্ষার ভারণ দারে নিক্ষেপ করিলেন, তথাচ কর পদ শ্না ভীষণাকার কুন্তকর্ণ, বাড়বানল সদৃশ বিকটাকার বদল বাাদান করিয়া ভয়ন্তর চীৎকার ধ্বনি করভঃ স্থবংশু আাসেস্কু ক বাজ্র ন্যায়, রগুনন্দনকে আস করিতে উদ্যুত হইয়া বায়ুবেগে ভৎসন্নিধানে আগমন করিলে, রহুত্তম, স্থ্যাপ্রভিতা সদৃশ ভয়ানক প্রন্দ্র বাণ ধারণ পূর্বক, অশ্বনিনাদে ক্ষেপণ করিয়া, ভাহাকে শমন সদনে প্রেরণ করিলেন। কভকগুলি প্রভাৱিত শর, কুন্তকর্ণের দম্বপংক্তি মধ্যে প্রবেশ করিয়া ভাহার মন্তক বিচ্ছিন্ন করভঃ সন্ধার দারবেশে নিক্ষেপ করিলা, এবং দেহ সমুদ্র মধ্যে পভিত

क्रेब्रा, मांगंद्र गर्ज्य नक्तांनिक शरक्ष (श्वाणिष्ठ कदिन। २১। । २२। २७। २८। २४। २५। २৮।

অনন্তর দেব, ঋষি, গদ্ধর্ম, পদ্ধগা, যক্ষা, গুহাক, সিদ্ধ, এবং অপসরাগণ প্রভৃতি সকলেই মহা আনন্দিত হইয়া শূনামার্গ হইতে প্রীরামের উপরে পুষ্পর্কি করিতে লাগিলেন; আর কুন্তকর্ণ রণে নিধন হইল দেখিরা দেবর্ষি নারদ সহ যত দেব-গাল, গাল মার্গে আগমন পূর্মক, কোদগুধারী, স্বত্তারবর্ণ বিশালাক্ষ্ক, উদার চরিত, সন্দীবর শ্যামকলেবর, বল্কলান্তর, জটাধারী প্রীরামচন্ত্রকে শর নিপীড়িত বানরগণের উপর সদস্র চিত্ত দেখিয়া, ভক্তি সহকারে গদগদবচনে স্থৃতি পাঠ করিতে আরম্ভ করিলেন। ২৯। ৩০। ৩১। ৩২। ৩৩।

অত্যে নারদ বলিতে লাগিলেন; হে দেবদেব অগরাধ!

নারায়ণাপিলাধার ! বিশাসাক্ষিয়মোহস্ত তে ॥৩৪
বিশুদ্ধজানৰপোহপি ত্বং লোকানতিবঞ্জন্।

যায়য়া মন্ত্রাকার: সুধছু:খাদিমানিব ॥ ৩৫ ॥
ত্বং মায়য়া পূছ্মান: সর্বেষাং হৃদি সংস্থিত:।

য়য়ং জ্যোতিংস্বভাবস্তং ব্যক্ত এবামলাত্রনাম্। ৬৬
উন্মালয়ন্ সৃক্তেভয়েতে রাম ! জগজয়ম্।
উপসংক্রিরতে সর্বং ত্রা চক্ষুর্নিমালনার ॥ ৬৭ ।
য়য়য়ন্ সর্বিমিদং ভাতি মতকৈতভয়রাচয়ম্।

য়য়ায় কিঞ্জিলোকেই সিন্ তব্যৈ তে ভ্রমণে নমঃ।
প্রায় কিঞ্জিলোকেই সিন্ তব্য তে ভ্রমণে নমঃ।
প্রায়িতং পুরুষং কালং ব্যক্তাব্যক্তস্বর্গিণম্।

বং জানন্তি মুনিশ্রেষ্ঠাস্তব্যে রামায় তে নমঃ।

বং জানন্তি মুনিশ্রেষ্ঠাস্তব্যে রামায় তে নমঃ।

সং

বিকাররহিতং শুদ্ধং জ্ঞানন্ধং শ্রুভিজ্নে।।
ত্বাং সর্ব্বেগদাকারমূর্ত্তিং চাপ্যাহ সা শ্রুভিঃ ॥ ৪০
বিরোধো দৃশ্যতে দেব! বৈদিকো বেদবাদিনাম্।
নিশ্চয়ং মাধিগজ্জি ত্বপ্রসাদং বিনা বুধাঃ। ৪১।
মায়য়া ক্রীড়তো দেব! ন বিরোধো মনাগপি।
রিশাজালং রবের্যছদ্শ্রতে জ্লবদ্ধুমাৎ ॥ ৮২ ॥
আভিজ্ঞানাত্তবা রাম্! ত্রি সর্ব্বং প্রকল্প্যতে।
মনদো নিষ্মো দেব! ন্ধং তে নিভ্লং প্রম ॥
কথং দৃশ্যং ভবেদেব! দৃশ্যভাবে জপেৎ কথ্ম্
শ্রুত্ববিতারের নুপাণি নিপুণা ভুবি ॥ ৪৪॥
ভজ্জি বুদ্ধিসম্পন্ন:স্তর্স্যের ভবার্থম্য।
কামক্রোধাদয়ন্ত্র বহুবঃ প্রিপ্তিনঃ ॥ ৪৫॥

তুনিই পরনার। সমাতন সাক্ষারারারণ, নিশিল জাগতের কাধার ভূচ, এবং বিশ্বসংসাবের সাক্ষিশ্বরাশ— অতএব তোমাকে নমস্তার করি। তুনিই নির্মাল জানস্বরূপ বলিয়া সদা সমস্ত লোকের অভিবাঞ্জনীয়— কেবল মারা দারা মহুষা নেচী হট্রা, স্থা ভ্রেপজোগী হট্রাছ। তুমিই মায়াদ্বারা অভি গোপনে সকলের হৃদরে বাস করিছেছ; আর তুমিই নিশ্লাস্মাদিগার নিকট স্বাহ জ্যোতিঃস্বরূপ হট্রা, প্রকাশিত আছ। তুমি চক্ষু উনীলন করিয়া, ত্রিভূবন স্ক্রমপূর্বক পালন করিছেছ; আবার আপনিই চক্ষুনিমীলন করিয়া, জ্বালয় সংহার করিছেছ। এবং বাঁহাতে এই চরাচর বিশ্ব, প্রকাশ শাইতেছে, সেই ব্রহ্মস্বরূপ প্রমাস্মাকে বার্মার নম-করি।

মুনিগণ, যাঁধাকে প্রান্ততি, প্রথা, কাল এবং ব্যক্তাব্যক্ত-স্কাপ বলিয়া জাগেন ; বিকার শ্ল্য, নির্মাণ জ্ঞানত্রপী, সর্বা জগতাকার, বেদাদি বিবিধ শাস্ত্রময়, মৃত্তিমান দেই ব্রহ্মকে। আমি বাংখার নমস্কার করি।

হে দেব! বেদবাদীর বৈদিক নিষয়ে অর্থাৎ বেদমগে বিরোধ লক্ষিত হর, কিন্তু আপনার অন্ত্রাহ ব্যতীত পণ্ডভো তাহা হইতে কথনই উত্তীর্ণ হইতে পারে না। আপনার মায়া প্রযুক্তই দেবভারা দর্মনা ক্রীড়া কিল্লা থাকেন; বস্তুত তাঁহালা মন মধ্যেও কোন বিরোধ উপদ্থিত কলেন না। স্থর্বের রশ্মিজালে যেমন ভ্রম হেতু জগৎকে জলবং পরিলক্ষিত হইতে থাকে সেইরপা ভ্রান্তিজ্ঞান বশতঃ ভোমাতেই সমস্ত্র পরিক্ষিপতি হয়। মন মধ্যে মনের বিষর পরন নিগুনিমর বে ভোমার রামক্রপ ক্রি প্রকারে দৃশ্য হয় ই এবং দৃশ্যমান না হইলেইবা লোকে আপনাকে কিরপে ভ্রমনা করিতে সক্ষম হয় ই অন্তন্ত্র আপনি এই ধরাধানে রামক্রপে অবতীর্ণ হইয়াছেন বলিয়া

ভীষয়ন্তি সদা চেতো মার্জারা মূষকং যথা।
ত্বন্নাম স্মরভাং নিভাং ত্বজ্ঞপমপি মানসে ॥ ৪৬ ॥
ত্বংপুজানিরভানাং তে কথামৃতপরাত্মনাম্।
তত্তকসঞ্চিনাং রাম! সংসারো গোষ্পদায়তে । ৪৭।
অতত্তে সঞ্জং রূপং ধ্যান্থাইং সর্ব্রদা হৃদি।
মুক্তশ্বামি লোকেযু পুর্জ্যোইং সর্ব্রদৈবতৈ:॥
রাম! ত্ব্যা মহৎকার্যাং ক্লুতং দেবহিতেছ্ব্যা।
কুল্তকর্পবধেনাত্ত ভূভারোহ্যং গতঃ প্রভো! ॥৪৯
খো হনিব্যতি সৌমিন্তিরিক্রক্তেভারমাহরে।
হনিব্যতে ব্যামন্ত্রং পরখো দশকল্পরম। ৫০।

পশ্যামি সর্বাং দেবেশ ! সিক্ষি: সহ নভো গত:।

অনুগ্রীষ্ মাং দেব ! গমিষ্যামি সুরালয়ম্। ৫১।

ইত্যুক্তা রামমামন্ত্র নারদো ভগবান্ ঋষি:।

যযৌ দেবৈ: পূজ্যমানো ব্রহ্মলোকমকল্মষম্ ॥৫২
ভাতরং নিহতং শুজা কুস্তকর্ণং মহাবলম্।

রাবণ: শোকসন্তপ্তো রামেণাক্লিইকর্মণা ॥ ৫৩ ॥

মুচ্ছিত: পতিতো ভূমারুপায় বিললাপ হ।

পিতৃব্যং নিহতং শুজা পিতরং চাতিবিহ্বলম্ ॥ ৫৪

ইন্দ্রজিৎ প্রাহ শোকার্তং ত্যুজ শোকং মহামতে!

মগ্রি জীবতি রাজেন্দ্র! মেঘনাদে মহাবলে ॥ ৫৫

ুদ্মিন্বাজিরা সেই নবমেঘ সদৃশ ভোষার রূপ, মন মধ্যে চিম্বাকরত% এই মুস্তর ভবসাগর মক্রেশেই উত্তীর্ণ হইতেছে। মাওর্ক্রার মুখিকনিগকে ভর প্রবর্শন করিলে, ভাহারা যেমন গর পলারন করে দেইরপায়ন মধ্যে আপনার নাম স্মরণ, किशा जाभनात निक्लम त्रभ हिसा कतिला, उरक्षभार काम কোধাৰি বিপ্সমূহ স্থানান্তবিত হয়। অভন্য মনুবাগৰ, মানদে ভোমার দেই অ্থাময় নাম অরণ, োমার দেই অন্থ-প্ম রূপ চিন্তা করতঃ ভোনার পুজায় নিরম্ভর নিরত পাকিয়া, এবং ভোষার অমৃত ভুল্য কথা আবেশ করিয়া, এই ছুন্তর ভব-সাগরকে গোপাদের নায় জ্ঞান করে। হে দেব! এই জন্য আমি সর্বাণা হৃদয়ে তোমার সেই সন্তণ রূপ চিন্তা কংডঃ দেব-গৰের পূজ্য হইয়া ত্রিলোকে পরিভ্রমণ করিয়া থাকি। হে প্রভা! অদ্য আপনি সমরে কুম্বরণ কৈ নিহত করিয়া, ্রেবভারিগের কি মহুৎ কার্যাই সিদ্ধ করিয়াছেন। এক্ষণে আমি বণিতেছি-কলা যুদ্ধে মছাবীর সেমিত্রি ইন্তাজিৎকে এবং প্রশ্ব আপুনি দশান্নকে নিধন করিবেন; নভে†•

গত বিদ্ধান্ত দেবলোক তাছা সন্দৰ্শন পূৰ্বক সান্দ্ৰ জয়ধনি কঃতঃ ত্ৰোপারি পুষ্পার্কী কাইবেন। হে ভূভার-ছর। একণে আপানি স্থাসের হইরা আছো করুন; আনি স্থালয়ে গমন করিব। এই বলিয়া দেব ঋষি নারদ ব্রহ্মলোকে গমন করিলেন। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। [৪২।৪০|৪৪।৪৫।৪৬।৪১।৪৮।৪৯।৫০।৫১।৫১।

অনন্তর দশানন রণে রঘুনাথ ঘারা মহাবল কুন্তকণ প্রভা নিহত হইয়াছে অবণ পূর্বেক, শোকসন্তপ্ত হৃদয়ে মূচ্ছিত হইয়া ভূমে পতিত হইলেন। কিয়ৎক্ষণ পরে সংজ্ঞা লাভ করিয়া সিংহাসনে উপবেশন পূর্বেক, বহু বিলাপ ও পরিভাপ করিছে লাগিল। এমং কালে ইন্দ্রজিং, পিতৃষ্য নিহত হইয়াছে অবণ পূর্বেক পিতাকে শোকে বিহবণ অবলোকন করতঃ, পিতৃ সমীপে কভাঞ্জিলি পুটে দঙায়মান হইয়া কছিকে লাগিল। হে মহামতে। শোক পরিত্যাগ ককন; দেবা-ভক, মহাবল পরাজায় ইন্দ্রজিং মেঘনাদ জীবিত থাকিছে আপনার আর হঃধের অবসর কোথায় ? অভএব মাপ্রি पूःथमापमतः कुछ (प्रवास्क ! महामत् ।

त्वा हु (छ पूःथमिनः स्वास्त छ महीপ्र । १६।

मर्काः ममीकतियामि हिनयामि ह ते तिशृन्।

श्वा निकृष्णिनः महास्तर्भावषा क्रणामनम्। १९।

लव् श तथापिकः छत्याप्र (स्वास्तः ।

हेजू स्त्रा प्रतिष्ठः श्वा मिक्षिः हवनस्तम्। १६।

तस्त्रमानाभावत्र (त्वा तस्त्रमान्य स्त्रमानः।

निकृष्णिनास्र (स्त्रो तस्त्रमान्य स्त्रमान्य ।

विक्षित्र स्त्रमान्य एक्ष्य (स्त्रमान्य एक्षिष्ठम्। ५०।

श्वा त्रामात्र मकनः (हामात्र स्वः प्रतास्तः।

ममानार्ष्ठ (हत्तात्मार्थः (स्वनाप्तः प्रतास्तिः।

क्रा स्वा स्त्रा स्त्रमान्य प्रतिष्ठः।

क्रा स्वा स्त्रा स्त्रमान्य (स्वनाप्तः स्त्रास्तिः।

क्रा स्त्रमान्य स्त्रा स्त्रमान्य प्रतिष्ठः।

क्रा स्वा स्त्रमान्य स्त्रा स्त्रमान्य स्त्रास्ति ।

क्रा स्वा स्त्रमान्य स्त्रास्ति ।

क्रा स्त्रमान्य स्त्रास्ति ।

আতঃ শীত্রং লক্ষণের ঘাতরিষ্যামি রাবণিম।
আজ্ঞাপর ময়া সার্দ্ধং লক্ষ্মণং বলিনাং বরুম।
হনিষ্যতি ন সন্দেহো মেঘনাদং তবানুক্তঃ ॥ ৬১।
জীরামচন্দ্র উবাচ।

অহমেব গমিষামি হন্তমিন্দ্রজিতং রিপুম্।
অগ্নেয়েন মহাজ্রেণ সর্বাক্ষসঘাতিনা। ৬২।
বিভীষণাহিপি তং প্রাহ নাসাবনার্নিহনাতে।
যন্ত দাদশবর্ষাণি নিজাহারবিবর্জিতং। ৬৩।
তেনৈব মৃত্যুনি দি ফো ব্রহ্মণাসা ছ্রাল্লানং।
লক্ষণস্ত অযোধ্যায়া নির্গম্যায়াজ্ব্যা সহ। ৬৪।
তদাদি নিজাহারাদীল জ্বানাতি রঘূত্ম!।
সেবার্থং তব রাজেন্দ্র! জ্ঞাতং সর্ব্যদিং ম্য়া। ১৫

এই সমস্ত মিথ্যা শোক পরিত্যাগ পূর্ব্বক স্বন্থ ছউন। আমি
প্রতিজ্ঞা করিয়া বলিতেছি; আপনার সমস্ত রিপু বিনাশ
করিয়া, অবিলয়েই লকাছ সমস্ত কর্ব্বর কুলকে স্থা করিব
এক্ষণেই রথাদি প্রাছণ পূর্ব্বক নিকুন্তিলা যজ্ঞাগারে গমন
করতঃ প্রজ্জলিত ভভাশনে আছতি প্রদান করিয়া, তাঁছাকে
গন্তোষ করিব। তাছা হইলেই ভিনি আমাকে সমরে অরাতি
অজেয় বর প্রদান করিবেন। এই বলিয়া নেঘনাদ রক্তাহার
রক্তমাল্য ধর হইয়া সর্ব্বাক্ষে বক্ত চন্দন অন্তলেপন করছঃ সত্তর
নিকুন্তিলা যজ্ঞাগারে প্রবেশ পূর্ব্বক, মেনি ভাবে যজ্ঞের
আয়োজন করিতে লাগিল। এ দিকে বিভীষণও মেঘনাদের
চেন্তিত সমস্ত প্রবণ করিয়া, জীরাম সন্নিধানে গমন পূর্বক
গরাত্বা ইন্দ্রজিতের অভিপ্রেত সমস্ত বিদয় কীর্ত্তন করিতে
লাগিল। কে প্রত্বা রঘুনাথ! অদ্য ইন্দ্রজিৎ নিকুন্তিলা বজ্ঞাগারে যজ্ঞ সমাপন করিলে, সুরাস্বর কেইই তাহাকে যুদ্ধে

পরাজর করিতে পারিবেন না। অতএব আমার সহিত বীরাত্র-গণ্য লক্ষ্মণকে যাইতে আজাককন; আমরা উভয়ে নিকুন্তিলার গমন পূর্বক, যে রূপে হউক রাবণী নিধন দাধন করতঃ পুন-রার এই স্থানে আগমন করিব। আপনার অভন্ত নি:দ-ন্দেহই মেম্মনাদকে বিনাশ করিবেন। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬।

অনন্তর শ্রীরাম ভাষাকে বলিলেন, দেখ সথে বিভীষণ!
আমিই নিকুন্তিলায় গমন করিয়া সর্বরাক্ষসঘাতী আগ্নেয় নামক
মহান্ত দ্বারা পরম শক্ত ইস্তুজিতের নিধন সাধন করিব।
শ্রীরামের এই বাক্য শ্রবণ করিয়া, অমনি বিভীষণও ভাঁছাকে
বলিলেন প্রভো! ভ্রাত্মা ইস্তুজিৎ অন্যের বধ্য নয়; যে
ব্যক্তি দ্বাদশ্বর্য নিজাহার পরিভাগে করিয়াছে; সেই জ্বন,
মহাবল ইস্তুজিৎকে বিনাশ করিতে পারিবে; পূর্বে স্থিকছা

তদ: জ্ঞাপর দেবেশ !লক্ষাণং স্বর্য়া ময়া।
হনিষ্যতি ন সম্পেহঃ শেষঃ সাক্ষাক্ষরাধরঃ। ৬৬।
স্থানের সাক্ষাজ্জগতামধীশো
নারারণো লক্ষ্যণ এব শেবঃ।

বুবাং ধরা ভারনিবার ণার্থং
জাতে জিগস্লাটক সূত্রধারে । ৬৭।।
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসমাদে
যুদ্ধকাণ্ডে অফ্রামাহধ্যায়ঃ।

প্রধা এইরপ নির্দ্ধিট করিরাছিলেন। হে রঘূত্তম! যে সময়ে নগবীর লক্ষনণ, আপনার সমতিব্যাহারে অযোধ্যা হইতে নির্যত্তহন, সেই দিবস হইতেই আহার নির্দ্ধা পরিভাগে করতঃ, আপনার আজাবহু হইরা দিন্যামিনী অভিবাহিত করিরাছেন, আমি তাহা বিশেষরূপে অবগত আছি। যিনি নাক্ষাৎ অনন্ত দেব, তাঁহার কি না সাধ্য হইতে পারে? অভ্নৱ আজা করুন, আমরা উভরে শীঘ্র তথার গমন করিরা, প্রবল রিপুইন্ডেজিংকে বিনাশ করি। আপনি সাক্ষাৎ জগত

ভের একাধীপ নারায়ণ এবং শক্ষমণ ঠাকুর সাক্ষাও অনস্ত্র-দেব; ইংগ কি একবারও মনোমধ্যে বিবেচনা করেন না । কেবল মাত্র ভূজারহরণ জন্য, আপনারা ছই জ্বনে, জগংকপ রঙ্গভূমির স্ত্রধার স্বরূপ হইয়া, ইহ সংসাবে নরদেহ ধার্ন করতঃ জন্ম এহণ করিয়াছেন। ৬২। ৬০। ৬৪। ৩৫। ৬৬ ৬৭।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সংবাদে
যুদ্ধকাতে অফীমোহধ্যায়ঃ।

নর্মো>ধ্যায়ঃ।

বিভীষণবচঃ শ্রুত্বা রামো বাক্যমথাত্রবীৎ। জানামি তদ্য রোজদ্য মায়া ক্লৎস্নাং বিভীষণ!। ১

স হি অন্ধান্তবিচ্ছুরো নায়াবী চ মহাবলং। জানামি লক্ষণস্যাপি স্বৰূপং মম দেবন্ম। ২।

অনস্তর জীরাম, বিভীষণের এইরূপ বাক্য শ্রবণ করিরা গহাকে বলিজে লাগিসেন; দেখ সখে বিভীষণ! আমিড কিবার মহাবল ইম্রজিতের মায়। দর্শন করিয়াছি; সে রিস্তর ব্রহ্মান্র শিক্ষা করিয়াছে। এবং কেবল আমার স্বরূপ মহা-বীর লক্ষাণের ক্ষমতা বিশেষরূপে জ্ঞাত আছি; কিন্তু ভবি-যাতে সেই মায়াবী কোন বিশেষ বিশ্ব না ঘটায়; এই চিন্তার জ্ঞাত্বৈবাসমহং তুকীং ভবিষ্যৎকার্য্যগোরবাৎ।
ইত্যুক্ত্বা লক্ষ্যণং প্রাহ্ রাম্যে জ্ঞানবভাম্বরঃ। ৩
গচ্ছ লক্ষ্যণ! দৈন্যেন মহতা জহি রাবণিম।
হন্মৎপ্রমুখে: সর্বৈর্থপৈ: সহ লক্ষ্যণ!। ৪।
জাম্বানৃক্ষরাজোহয়ং সহ দৈন্যেন সম্তঃ।
বিভীষণক্ষ সচিবৈঃ সহ তামভিযাস্যতি। ৫।
অভিজ্ঞস্যা দেশস্য জ্ঞানাতি বিবরাণি সঃ।
রামস্য বচনং শ্রুত্বা লক্ষ্যণং স্বিভীষ্ণঃ। ৬।
জ্ঞাহ কাম্মুকং শ্রেষ্ঠমন্যন্তীমপ্রাক্রমাং।
রামপাদামুজং স্পৃশ্য ক্রন্টঃ দেশমিত্রির্বেবীৎ।।
অত্য মৎকার্ম্কাঃ শ্রা নির্ভিন্য রাবণিম্।
গমিষ্যন্তি হি পাতালং স্লাতুং ভোগবতীক্রলে।৮।

ক্ষণকাল স্থির হইয়াছিলাম। এই বলিয়া, জ্ঞারাম, ভৎক্ষণাৎ বীরচুড়ামণি লক্ষ্মণকে আজ্ঞা করিলেন—লক্ষণ। ভূমি শীজ্ঞ সৈন্যগণ সমভিব্যাহারে গমন করিয়া, রাবণীকে বিনাশ কর।

অনন্তর শক্ষমণ, মহাবীর হন্মান্ প্রম্থ অংশ্য বানরীসেনা এবং ক্ষক্ষপতি প্রম্থ বিবিধ ক্ষক্ষদেনা, সমভিব্যাহারে করিয়া মেহানাদ সহ যুদ্ধ জন্য, গামন করিতে উদ্যত হুইলেন, অমনি বিভীষণ মন্ত্রীবর্গে পরিবেটিভ হুইয়া, তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিবার উপক্রম করিতে লাগিলেন। ইভাবদরে কার্মুক লইয়া, লক্ষ্মণ, অত্যে জ্রীরামের যুগলচরণ গ্রহণ করভঃ, প্রফুল্ল হ্লমের বিভিত্ত লাগিলেন—হে দেব! অদ্য আমার কার্মুক নিম্মুক্ত শর সমূহ প্রবিণকে ভেদ করিয়া, রসাভলে ভোগানুক্তীর পরিত্ত জলে আন করিবার জন্য গমন করিবে। লক্ষণ,

এবমুক্ত্রা স সোমিত্রিঃ পরিক্রম্য প্রাণমাতম্।
ইন্ডজিরিধনাকাজকী যথে পরিত্রিক্রমঃ । ১ ॥
বানরৈর্বিজ্লাইসৈর্হন্মান্ পৃষ্ঠতোইস্বগাৎ।
বিভীষণত সহিতো মক্তিভিন্তরিতং যথো ॥ ১০ ॥
জাষ্বৎপ্রমুখা ঋক্ষাঃ সোমিত্রৎ পুরয়াস্বপ্তঃ।
গত্বা নিকুজিলাদেশং লক্ষ্মণো বানরৈঃ সহ ॥ ১১ ॥
অপশ্রভলসংজ্লাতং দূরাজাক্ষ্মসঙ্কুল্য।
ধন্তরায়্ময়্য সোমিত্রিইভেন্ট্রেবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥
অক্লেন্ট্রেগিজাইভিন্তুর্রিবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥
অক্লেন্ট্রেগিজাইভিন্তুর্রিবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥
অক্লেন্ট্রেগিজাইভিন্তুর্বিবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥
অক্লেন্ট্রেগিজাইভিন্তুর্বিবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥
অক্লেন্ট্রেগিজাইভিন্তুর্বিবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥
অক্লেন্ট্রেগিজাইভিন্তুর্বিবিক্রমঃ ॥ ১২ ॥
অক্লেন্ট্রেগিজাইভিন্তির জাষ্বান্ রাক্ষ্মাধিপঃ ।
তদা বিভীষণঃ প্রাহ্ সোমিত্রিং পশ্র রাক্ষ্মান্ ॥১৩
যদেউজাক্ষ্মানীকং মেঘশ্যামং বিলোক্যতে ।
অক্যানীকস্ত মহতো ভেদনে যতুবান্ ভব । ১৪ ।

প্রীরামকে এই বলিয়া, প্রণতি পুর: সর প্রদক্ষিণ করতঃ
ত্বরিতপদে ইক্রজিরিধনাশায় তথা হইতে প্রস্থান করিলেন।
ক্মানি বছপ্রকার বানর নিকর তাঁহার পশ্চাৎ পশ্চাং গামন
করিতে লাগিল, অমাত্যচয় সমভিব্যাহারে বিভীষণ, এবং
ক্ষক্ষণণ পরিবেক্টিত জাত্ববাশ্ ত্বাহিত হুইয়া, সৌমিত্রির অন্তর্গামী হইল। ক্রমে লক্ষ্মণ, অমাত্য, গ্রহ্ম এবং বানরীসেনং
সমভিব্যাহারে নিক্জিলা দেশ প্রাপ্ত হুইলেন। তথায় উপভিত হইয়া দূর হইতে দেখিলেন বহুসংখ্যক রাক্ষ্য একত্ত
সমবেত হুইয়া রহিরাছে। তথন বাহুবিক্রশালী সৌমিত্রি
কার্ম্ব প্রহণ পূর্বাক্ অহা আরোপন করিতে লাগিলেন।
ভদ্মানে অঙ্গদবীর, জাত্ববাশ্ এবং বিভীষণকে বলিয়াছিল;
দেখুন, যদি মহাবীর লক্ষ্মণ, যুদ্ধে প্রস্ত হুইলেন তবে
আমাদের আর বিলন্থের আবশাক কি? যেহেতু নিবিভ
মেঘাকার রাক্ষ্যসৈন্য স্ক্রমজ্জিত হুইয়া সম্মুখে দণ্ডার্মান
রহিষাছে; এক্ষণে অতিশীন্ত ভেদ করিতে যত্ববান্ হুও,

রাক্ষনেনদ্রতোপ্যান্থিন্ ভিলে দৃশ্যো ভবিষাতি।
অভিদ্রবাশ্য যাবদৈ নৈতৎকর্ম সমাপ্যভে। ১৫॥
কহি বীর! দুরাত্মানং হিংসাপরমধার্মিক্ম।
বিভীষণবচঃ শুড়া লক্ষনঃ শুভলক্ষণঃ। ১৬।
বর্ষ শরবর্ষাণি রাক্ষনেন্দ্রভং প্রতি।
পাষাণৈঃ পর্বভাগ্রেশ্চ রক্ষেশ্চ হরিষুথপাঃ॥ ১৭॥
নির্জন্মুর্নানরানীকং তদা শব্দো মহানভূং।
স সংপ্রহারস্তম্লঃ সঞ্জতে হরিরক্ষসাম্। ১৯।
ইন্দ্রজিতং স্ববলং সর্বমন্ত্রিশাহ বিলোক্য সং।
নির্কুদ্ধলাঞ্চ হোমঞ্চ তাজনু। শীঘ্রং বিনির্গতঃ। ২০

রথমারুছ সধনঃ জোধেন মহতাগমৎ।

সমান্ত্ররিত্বা সেমিত্রিং যুদ্ধার রণমূর্দ্ধনি। ২)।

সৌমিত্রে! মেঘনাদোহহং মরা জীবর মোক্ষ্যসে।

তত্ত্র দৃষ্ট্বা পিতৃব্যং স প্রাহু নিষ্ঠ্রভাষণম্ ॥ ২২

ইহৈব জাত: সংরদ্ধঃ সাক্ষাদ্ভাতা পিতৃর্মম।

যত্তং স্বজনমূৎসূজ্য পরভূত্যত্মাগত: ॥ ২৩॥

কথং জ্বামি পুলার? পাপীরানসি দুর্মাতি:।

ইত্যক্তা লক্ষ্যণং দৃষ্ট্বা হন্সংপৃষ্ঠত: স্থিতম্ ॥ ২৪

উদ্যদাযুধনিস্ত্রিংশে রথে মহতি সংস্থিত:।

মহাপ্রমাণমূদ্যমা ঘোরং বিক্ষারয়ন্ ধন্তঃ ॥ ২৫॥

তাহা হইলে হিংসাপর অতি অধান্দিক হুরায়া রাবণ পুত্র, লক্ষাণের লক্ষ্য হইয়া, অতি সম্বর বধ্য হইবে। নতুবা সে অনলে পূণান্ততি প্রদান করিলে, কেছই তাহাকে নট্ট করিতে সক্ষম হইবে না। এদ আমরা সকলেই, হুটমিতির বিম্নাশার সত্ত্ব সমরে প্রস্তুত হই। এইরপ প্রামশেরি পর, সকলেই প্রাণপণে, পাবাণ, পাদপ ও পর্বতাগ্র হস্তে ধারণ করিয়া, রাক্ষ্য সেনাগণ সমভিব্যাহারে মুগপৎ যুদ্ধ করিতে লাগিল। তাহাতে মেঘনাদের সমস্ত সৈনাই শমন সদনে গমন করিল। ১৪। ৫। ৬। ৭।৮। ৯। ২০। ১১। ১২। ১০।১৪।। ১৫।

অনস্তর মহাবল ইব্রুক্তিৎ মেঘনাদ, স্বীয় সৈন্যগণ বিনষ্ট ৬ বজ্ঞের বস্তু বিল্ল উপস্থিত অবলোকনে মহা ক্রুদ্ধ হটলা, হোম পরিত্যাংগ করতঃ, নিকুন্তিলা যজাগার ছইতে বেগে বহির্গত হইল; এবং আপিনার সুসজ্জিত স্যান্তনে আরোছন পূর্বেক, ধনুৰ্ব্বাণ প্ৰাছণ করিয়া দে\মিজিকে যুদ্ধে আহ্বান করত: সমরাঙ্গনে প্রবিষ্ট হইল এবং কহিতে লাগিল—হে সৌমিতে। मगदा गात्राकी वी भाषनाम छे शिष्ट इहेत्रा ए, कार्यक दिव হও একণেই যথোচিত প্রতিফল প্রদান করিতেছি ৷ ইত্য-বসরে, পিভৃষ্য বিভীষ্ণকে সম্মুখে উপদ্বিত অবলোকন করিয়া অভি নিষ্ঠুর বচনে বলিতে লাগিল—হে চুর্মতে ! পরাল্ল-ভোগী! তুমি আমার পিতার সাক্ষাৎ ভাতা, অতএৰ একণেই আমার সমুধ হইতে পলায়ন কর, থেফেভু ভূমি মহারাজ লকাধিপতি রাবণের কনিষ্ঠ হইয়া, আত্মীয় শুজন পরিত্যাগ পূৰ্ব্বক আনোর দাসত্ব স্বীকার করছ: পুজের অনিষ্টাচরণে উদাত হইরাছ, এই কারণ আমি আর কথনই তোমার মুখ দর্শন করিব না। পিতৃব্য বিভীষ্ণকে এইরূপ বাক্য প্রয়োগা-নস্তর হ্রাত্মা মেঘনাদ, মহাবীর লক্ষ্মণকে হ্রুমান ক্ষ্মস্থিত मन्मर्मन कत्रष्टः, আপনার উৎকৃষ্ট রথে আরোহণ পূর্বেক, স্তীক্ষায়ুধ এবং অসি হন্তে ধারণ করিয়া তাঁহাকে প্রহার

অদ্য বো মামকা বাণাঃ প্রাণান্ পাস্যন্তি বানরাঃ।
ততঃ শরং দাশরথিঃ সন্ধায়ামিত্রকর্ষণঃ। ২৬।
সমর্জ রাক্ষমেনজায় জ্বালুং সর্প ইয় শ্বসন্।
ইন্দ্রজিদ্রক্তনয়নো লক্ষ্যণং সমুদৈক্ষত ॥ ২৭ ॥
শক্রাশনিসমস্পর্টার্লক্ষ্যণেনাহতঃ শরৈঃ।
মুহুর্ত্বমন্তর্বন্যুটঃ পুনঃ প্রত্যাক্ষ্তেন্দ্রিয়ঃ॥ ২৮ ॥
দদর্শাবন্থিতং বীরং বীরো দশরথাত্মজ্ञ ।
সোহতিত্রাম সৌমিত্রিং ক্রোধসংরক্তলোচ্তঃ ২০
শরান্ ধনুষি সন্ধায় লক্ষ্যণং চেদ্যত্রবীৎ।
যদি তে প্রথমে যুদ্ধে ন দৃষ্টো মে পরাক্রমঃ॥ ৩০
অদ্য ত্বাং দশ্রিষ্যামি তির্ষ্ঠেদানীং ব্যবন্থিতঃ।
ইত্যক্তা সপ্ততিবাণিরভিবিব্যাধ লক্ষ্যণম্। ৩১।

করিকে উদ্যত হইলে রঘুবংশাবতংস লক্ষ্মণ, ক্রোধান্থিত ভ্জন্পের ন্যায়, সীয় শর ও শরাসন গ্রহণ পূর্ব্বক, তাহা নিবারণ করিতে যত্মবান্ হইলেন এবং মেখনাদকে বলিতে লাগিলেন— বে হ্রাক্ষন্! অদ্য আমার শর সমূহের শক্তি সন্দর্শন কর, বিপক্ষ বিনাশ করিয়া বানর দিগকে রক্ষা করিবে।।২০।২১।

| ২২ | ২৩ | ২৪ | ২৫ | ২৬ | ২৭ | ২৮ |

এই কথা বলিয়। অয়াতিমর্দন দাশরথি লক্ষ্মণ, সুতীক্ষ্ণ শর্মনিকরে মেঘনাদের সর্বাদ্ধ কতে বিক্ষণ করিয়া ফেলিলেন। সেই অশনি সম শরাঘাতে ইন্দ্রজিৎ, ক্রোধে নয়নদ্বয় রক্তবর্গ ও ঘ্ণায়মান করতঃ ক্ষণেক ছির হইয়া রহিল, পরে স্থীয় শর ও শরাসন গ্রহণ পূর্বক, মহাবীর লক্ষ্মণকে বলিতে লাগিল, ওছে রামামুজ ! যদি তুমি প্রথম মুক্ষে আমার পরাক্রম না দেখিয়া থাক, তবে ক্ষণকাল এই স্থানে ছির হও, অভি শীত্রই দেখাইতেছি। এই বলিয়া মেঘনাদ অগ্রে শাণিত সপ্তবাণ বারা লক্ষ্মণকে, দশ শরে হতুমানকে এবং শত

দশতিশ্চ হন্দ্যন্তং তীক্ষধারে: শরোত্তমৈ:।
ততঃ শরশতেনৈব সংপ্রমুক্তেন বীর্যবান্॥ ৩২ ॥
কোধদিগুণসংরক্ষো নির্বিভেদ বিভীষণম্।
লক্ষ্মণোহিপি তথা শত্তং শরবর্ষরবাকিরহ। ৩৩ ।
তত্ম বাণৈ: স্থুসংবিদ্ধং কবচং কাঞ্চনপ্রভম্।
ব্যশীর্যত রথোপত্থে তিলশং পতিতং ভুবি॥ ৩৪॥
ততঃ শরসহস্রেণ সংক্রুদ্ধো রাবণাত্মজঃ।
বিভেদ সমরে বীরং লক্ষ্মণং ভীমবিক্রমম্। ৩৫ ।
ব্যশীর্যতাপতদিব্যং কবচং লক্ষ্মণস্য চ।
ক্রতপ্রতিক্রতান্যোহনাং বভুবভুরতিক্রতো॥ ৩৬॥
অতীক্ষ্মং নিশ্বসন্থে তৌ মুদ্ধে তাংভুমুলং পুনং।
শরসংরভস্কাক্ষে সর্কতো ক্ষরোক্ষতে।। ৩৭
দস্বীর্যকালং তৌ বীরাবন্যোনাং নিশিতৈঃ শবিঃ।
অন্ত্রেয়তাং মহাদত্থে জন্মাজয়বিবজ্জিতে। ৩৮

শরে পিভূবা বিভীষণকে বিদ্ধ করিয়া, অশেষান্ত্রদারা কপি-কুলকে ছিন্ন ভিন্ন করিয়া ফেলিল। ২৯।৩০।৩১।৩২।

তদ্দর্শনে বীরকুলরবি লক্ষ্মণ, মহাজ্যুদ্ধ হইয়া, সুশাণিত বিবিধ বাণ দ্বারা, মেঘনাদের কাঞ্চন-প্রভ-কবচ থণ্ড থণ্ড করিয়া সান্দন হইতে ভূমিতলে নিক্ষেপ করিলেন। তাহাতে রাবণাক্ষজ্ঞ, দণ্ডাহত বিষধ্বে ন্যায় মহাজ্যুদ্ধ হইয়া, সহন্দ্র শর-দ্বারা লক্ষ্মণের দিবা কবচ থণ্ড থণ্ড করিয়া, বাণাণ্ডো সর্ব্ব শরীর ক্ষিরাপ্ত করিয়া কেলিল; এইরূপে বীরহরের তুমুল তর সংগ্রামে মেদিনী মূহ্মুন্ত চঞ্চলা হইতে লাগিল তিও। ৩৪।

এমংকালে লঘুহস্ত মহাবীর লক্ষমণ, স্থভীক্ষ পঞ্চবাণ দারা বাব-ণির সাবিধি, অখদম, রথ এবং কার্ম্ব ছেদন করিয়া ফেলি- এতি নিমন্তরে বীরো লক্ষণঃ পঞ্চতিং শরৈ: !।

রাবণে: সার্থিং সাখং রথং চ সমচূর্ণয়ৎ ॥ ৩৯ ॥

চিচ্ছেদ কার্মাকং তদ্য দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম।

দোহনাস্ত কার্মাকং তদ্য দর্শয়ন্ হস্তলাঘবম।

দোহনাস্ত কার্মাকং তদ্য সক্ষাং চক্রে ত্রাম্বিতং।

তচ্চাপমপি চিচ্ছেদ লক্ষ্যপত্রিতিরাশুরা: ।

তমেব ক্রিয়ধয়ানং বিন্যাধানেকদায়কৈ: । ৪১ ।

পুনরন্যং সমাদায় কার্মাকং তীমবিক্রমঃ ।

ইন্দ্রজিল্লক্ষণে বাণেঃ শত্রোদিত্যসন্মিতেং । ৪২ ।

বিভেদ বানরান্ স্দান্ বাণেরাপুরয়ন দিশঃ ।

তত ঐদ্রেং সমাদায় লক্ষ্যণো রাবণিং প্রতি ॥৪৩॥

সক্ষায়াক্র্যা কর্ণান্থং কার্মাকং দ্রুনির্স্রম ।

উবাচ লক্ষ্যণো বীরং মারন্ রামপদাস্ক্রম । ৪৪ ॥

ধর্মায়ো সত্যসক্রশ্চ রামো দাশরথির্যদি ।

ব্রলোক্যামপ্রতিম্বন্তদেনং জহি রাবণিম্ ॥ ৪৫ ॥

ইত্যুক্ত্বা বাণমাকণাদ্বিক্ষ্য তমজিক্ষাগম্।
লক্ষ্মণঃ সমরে বীরঃ সমজেন্দ্রজিতং প্রতি । ৪৬॥
সশরঃ সশিরস্তাণং শ্রিমজ্জ্বলিতকুগুলম্।
প্রমধ্যেক্রজিতঃ কারাৎ পাত্রামাস ভূতলে ॥৪৭
ততঃ প্রমুদিতা দেবাঃ কীর্ত্যুক্তার রঘূত্তমম্।
বর্ষ প্রপ্রবাদি স্তবন্তুক্ত মুহুমুহুঃ ॥ ৪৮ ॥
জহর্ষ শক্রো ভগবান্ সহ দেবৈর্মহর্ষিভিঃ।
আকাশেহপি চ দেবানাং শুদ্রুবে জুন্তুভিস্বনঃ।৪৯
বিমলং গগণং চাদীৎ স্থিরাভূত্তিশ্বধারিণী।
নিহতং রাবনিং দৃন্টা জয়জল্পসমন্বিতঃ ॥ ৫০॥
গভশ্রমঃ স সোমিত্রিঃ শঞ্জামাপ্রয়দ্রণে।
সিংহনাদং ততঃ কুতা জ্ঞাশক্ষ্মকরোদ্বিভূঃ ॥ ৫১॥
তেন নাদেন সংস্কী বানরাশ্চ গতশ্রমাঃ।
বানরেক্রেশ্চ সহিতঃ স্তুব্ভিক্ ক্রিমানসৈঃ ॥ ৫২॥

ান। তথনি মেঘনাদ অনা শাংশদন গ্রহণ করিলে, রামানুজ লাহাও ওদতে থণ্ড থণ্ড করিয়া, বাণ দ্বারা, মেঘনাদকে রথাধ্য ধ্যাবিগোন এবং লঘুহন্ত প্রদর্শন পূর্বক, ভাহার কার্ম্ম চেদন করিলেন; মেঘনাদও ভৎক্ষণাৎ কার্ম্ম ক গ্রহণ করিবানাত্র লক্ষ্মণ দেবও শীঘ্র হন্তে ভিনটী শ্র দ্বারা ভাহাও থণ্ড করিলেন। অনন্তর মহাবল রাবণ অনা চাপ ধারণ পূর্বক শত স্থ্য প্রভা সমন্বিভ বাণ দ্বারা লক্ষ্মণকে এবং বাণ সমূহ ঘারা দশ দিক আছেল্ল করিয়া বানরগণকে বিদ্ধা করিল। অনন্তর লক্ষ্মণদেব ঐক্রবাণ গ্রহণ করিয়া ভাহা স্ক্রান করিবার আশার স্মৃত্ কার্ম্ম ক আকর্ণ সমাকর্ষণ পূর্বক, ভাহাকে কিলেন, রে পামর। তুই শীঘ্র বাম-পাদ-পদ্ম ধাণন করিয়া নে

নতুবা এখণেই তোবে শমন সদনে প্রেরণ করিতেছি। বীব চূড়ামণি লক্ষ্মণ, এই বলিয়া, ঐ আদিত্য সন্ধ্রিভ এক বাণ্যাবা, মেঘনাদের শরীর হইতে দীপ্তমান কুণ্ডণ বিশিক্ত উঞ্চীয় বদ্ধ মন্তক ছেদন করিয়া ভূতলে নিক্ষেপ করিলেন। তদ্দর্শনে দেবতারা স্থানন্দে ভূন্দুভিশ্বনি করত, লক্ষ্মণের উপবে মুক্তমুক্তঃ পূজ্পবর্ষণ পূর্কাক স্তব আরম্ভ করিলেন। অনা দিকে দেবতা সকল মহর্ষিণণে পরিবেষ্টিত হইরা, ভগবান, ইন্দ্র, কুস্মম বিকীরণ সহ আনন্দে লক্ষ্মণের যশঃ কীর্তন করিতে লাগিলেন। এদিকে রাবণি নিহত দর্শনে, গগণ নিশ্মল ভাব এবং বস্মতী ক্রিভাব ধারণ করিল। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪২। ৪৩।

অনন্তর লক্ষণ সীরহতে মেঘনাদ বিনষ্ট হইল দেখিরা, আনন্দিতাতঃকরণে শৃভাধনিও সিংহনাদ করতঃ কার্মা, কে ট্রুগর লক্ষণং পরিতুটাত্মা দদর্শাভ্যেত্য রাঘবম্।

হনুমদ্রাক্ষণাভ্যাং চ দহিতো বিনয়াশ্বিতঃ ॥ ৫৩
ববন্দে ভাতরং রামং জ্যেষ্ঠং নারায়ণং বিভুম্।

ত্থপ্রসাদাদ্রঘুশ্রেষ্ঠ ! হতো রাবণিরাহবে ॥ ৫৪ ॥
শ্রুত্য তল্লক্ষণান্তক্ত্যা তমালিক্স্য রঘূত্যঃ।

মুদ্ধ্যবিদ্রায় মুদিতঃ সম্মেহমিদমন্ত্রীৎ ॥ ৫৫ ॥

সাধু লক্ষণ ! তুটোহম্মি কর্মা তে জ্ব্ধরং কৃতম্।

মেঘনাদস্থ নিধনে জিতং সর্বম্রিন্দম ! ॥ ৫৬ ॥

অহোরাত্রৈক্রিভিবর্বিঃ কথংচিদ্বিনিপাততঃ।

নিঃসপত্বঃ কুতোহম্মাদ্য নির্যাস্থাতি হি রাবণঃ ॥৫৭

পুজ্রশোকানারা যোদ্ধৃং তং হনিষ্যামি রাবণম।
মেঘনাদং হতং শ্রুড়া লক্ষাণেন মহাবলম। ৫৮।
রাবণং পতিতো ভূমৌ মূচ্ছিতঃ তুনকুথিতঃ।
বিললাপাতিদীনাত্মা পুজ্রশোকেন রাবণঃ॥ ৫৯॥
পুজ্রনা গুণকর্মাণি সংস্মরমু পর্যাদেবয়ৎ।
অদ্য দেবগণাঃ সর্বে লোকপালা মহর্ষয়ঃ॥ ৬০॥
হতমিশ্রুজিতং জ্ঞাড়া মুখং স্বপ্যান্তি নির্ভয়াঃ।
ইত্যাদিবছশং পুজ্রলালসো বিললাপ হ।
ততঃ পরমসংজুলো রাবণো রাক্ষ্যাধিপাঃ।
উবাচ রাক্ষ্যান্ সর্বান্ নিনাশয়িযুরাহবে॥ ৬২॥
স পুজ্রধসন্তপ্তঃ শূরঃ ক্রোধবশং গড়ঃ।
সম্বীক্ষ্য রাবণো রুদ্ধ্য হন্তং সীতাং প্রদুক্তবে॥ ৬২॥

প্রদান করিলেন। সেই ভয়ক্কর আনন্দ স্থচক শক্ষে, বানরগণ গতপ্রম হইরা, লক্ষ্যুণের চতুদ্দিকে পরিবেফীন করতঃ আহলাদে ভয় জ্যা হনি আরস্ত করিল। অতঃপর সেশিমিত্রি, বিভীষণ, জাদুবান, এবং কপিকুলকে দমভিব্যাহারে করিয়া রাম স্নানিধানে উপান্থিত হইলেন; এবং প্রেষ্ঠের চরণ্চয় বন্দনা করতঃ কহিতে লাগিলেন: তে রয়ুনাথ। আমি আপনার প্রদাদে অদ্য ইন্দ্রাজিৎকে যুদ্ধে নিহত করিয়াছি। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪।

এই কথা শুনিবামাত্ত রঘুবর রাম, অন্তক্তকে সানন্দে সমাক প্রকারে আবিজিন প্রদান পূর্বক, মস্তকাত্তাণ ও মুখ-চুম্বন করেতঃ বলিতে লাগিলেন, লক্ষাণ! তুমি সাধু! আমি তোমার এইরপ ছ্ফর কার্যা দশনে, অত্যন্ত তুই হইয়াছি; হে অরিন্দম! এক্ষণে জানিলাম যে, অবিলম্বেই অক্সেয় রাবণ অগ্যাদিগার হস্তে নিঃসন্দেহ নিধন প্রাপ্ত হইবে। কিন্ত বলিভেডি যথন রাবণ প্রশোকে কাত্র হইয়া, আগমন্ করিবে: সেই সময় অভি সাবিধানে যুদ্ধ করিও; কারণ সে এদিকে লকাধিপতি রাবণ, মহাবল মেঘনাদ রণে নিহন হইরাছে জ্রবণ করতঃ, বাতাহত রক্ষের ন্যায় মূচ্ছ্রিত হঠঃ. ভ্রণে পতিত হইল এবং পুনর্বার উপিত হইয়া, শোকাকুলির চিত্তে বত্বিশাপ ও পুত্রের গুণ কর্মাদি স্মরণ করতঃ বিজ্ঞাপ করিতে লাগিল। আর বলিল—অদ্য যুদ্ধে ইন্দ্রভিৎ নিহত হইরাছে শ্রবণ করিরা, মহর্মিণ দেবগণ ও লোকপাল সকলে নিশ্চরই অন্তরে স্থানন্দ অমুভ্রকরতঃ জয় ধনিতে জগৎ পূর্ণ করিবে ইত্যাদি বহু বিশাপের পর পরম ক্রেম্ব হাক্ষসেশ্বর রাবণ, সন্ধিহিত রাক্ষসদিগকে বলিল—ওয়েরাক্ষসগণ! তোমরা আমার সঙ্গে চল; অদ্য অত্যে সীতাকে বিনাশ করিয়া, পুত্র শোক নিবারণ করিব। এই বলিয়া তীক্ষ্ণ ধার অতি সূহৎ এক অসি হস্তে ধারণ করত জতে প্রেম্ব সন্ধিনে গ্রমন করিতে লাগিল। ৫৮। ৫৯। ৬১। ৬২। ৬২। ৬২। ৬২। ৬২। ৬২। ৬২। ৬২।

খজাপানিমধায়ান্তং ক্রু দ্বা দশানন্য।
রাক্ষনীমধ্যা দীতা ভয়শোকাকুলাভবৎ ॥ ৬ × ॥
এতিমিন্নদ্বরে ওশু দ্বিবো বুদ্ধিমান্ শুটিঃ।
স্থপাশো নাম মেধাবী রাবশং বাক্যমন্ত্রীৎ।। ৬৫
নত্ত্ব নাম দশগ্রীব ! সাক্ষাদ্বৈশ্রবণান্ত্রজঃ।
ভেদবিদ্যান্তভন্নাভঃ সকর্মপরিমিন্ঠিভঃ॥ ৬৬ ॥
অনেকগুণসম্পন্নঃ কথং স্ত্রীবধ্যিচ্ছি দি?।
স্থাপান্তিঃ সহিতো ঘৃদ্ধে হুছা রামং চ লক্ষ্মণ্য।
প্রাপ্ শুদে জানকীং শীন্ত্রিমিত্রুকেঃ স ন্যুবর্ত্তিত ॥৬৭

ততো দুরাত্মা মুহ্নদা নিবেদিতং
বচঃ মুধর্মাং প্রতিগৃহ্য রাবণঃ।
গৃহং জগামাশু শুচা বিমুদ্ধীঃ
পুনঃ দভাং চ প্রথমো মুহ্বদ্তঃ।৬৮।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
যুদ্ধকাতে নবমোহধ্যায়ঃ।

এদিকে রাক্ষনী পরিবেকি গা সীতা দশাননকে ধ্জাহন্তে কণান্তের নায় আগমন করিতেচে, দর্শন করিয়া ভয়-বারিলিভ চিত্তে কম্পান্তিতা কলেবরা হইলেন। ইতাবসরে স্থপান্থ নাম। রাবণের জনেক বৃদ্ধিসম্পান্ন কপাবান্ মন্ত্রী, তাথার সম্ব্রে দণ্ডারমান হইয়া বলিতে লাগিল; হে লক্ষাধিপ দশ্রীব! আপনি ব্রহ্মকুলেজন গ্রহণ করতঃ, বেদজ, নিষ্ঠাপর, রাদ্ধান্ এবং বহুগুণ বিশিষ্ট হইয়া কি জনা স্ত্রী বধে উদাত হইয়াছেন ! অনাের কথা দূরে থাক, দেখুন আপনি বিদশ

করিয়াছেন; তবে কি জনা স্ত্রী বধে অভিলাধী ছইভেছেন? অতএব বলিভেছি, অতি ত্বরার রণসজ্জা করুন; যুদ্ধে রাম লক্ষ্মণকে বিনাশ করিরা, অবিশস্থেই নির্বিয়ে জানকীর সহস্থা অনুভব করিবেন। এই বলিরা দে ক্ষাস্ত হইলে; মূঢ়মতি ছবাঝা রাবণ, স্বধ্ম বাক্য প্রতিগ্রহ পূর্বেক তদ্ধতে গৃহমধ্যে প্রবেশ করিল; আবার তৎক্ষণাৎ শোকে বিহলল ইইয়া উন্তের ন্যায় সভার আগমন পূর্বক প্রধান প্রধান স্কর্মণ দচীবদিগাকে আহ্বান করতঃ রাজাসনের উভয় পাছে উপ্রেশন করিতে আদেশ করিল। ৬৪।৬৫।৬৬।৬৭।৬৮।

ইতি জ্ঞামদধ্যাক্সরামারতে উমামহেশ্বরসভাদে
যুদ্ধকাওে নবমোহধ্যারঃ /

দশমো>शांश

দ বিচার্য্য দভামধ্যে রাক্ষলৈং দহ মন্ত্রিভিং।
নির্যযো যেহবশিষ্টান্তৈ রাক্ষদৈং দহ রাঘবম্ ॥ ১
শলভং শলভৈত্ব ক্রং প্রজ্জ্বলস্থ নিবানলম্।
ততো রামেণ নিহতাং দর্কে তে রাক্ষদা যুধি। ২
স্বরং রামেণ নিহতন্তীক্ষ্ণবাণেন বক্ষদি।
ব্যথিভত্ত্বরিভং লঙ্কাং প্রবিবেশ দশাননং। ৩।
দৃষ্ণী রামস্ত বহুশং পৌরষং চাপ্যমানুষম্।
ব্যবণো মারুতেশৈচব শীঘং শুক্রান্তিকং যুয়ে। ৪

নমক্ত্য দশগ্রীবং শুক্রং প্রাঞ্জলির ব্রবীৎ।
ভগবন্! রাঘনেলৈবং লক্ষা রাক্ষমযুথপৈ:। ৫।
বিনাশিতা মহাদৈত্যা নিহতাঃ পুক্রবান্ধবাঃ।
কথং মে ছুংখসন্দোহস্তায় তির্ছতি সদ্প্রেরী ? ৬।
ইতি বিজ্ঞাপিতো দৈত্যপ্তকঃ প্রাহ দশাননম।
হোমং কুরু প্রস্তুবন রহসি স্থাদশাননম।
মদি বিশ্বোন চেদ্ধোমে তহি ভোষানলোপিতঃ।
মহান্রথক বাহাক চাপতুনীর সায়কাঃ।
সন্তবিষ্যন্তি তৈর্য ক্রন্থ মঞ্জেরো ভবিষ্যুদি। ৯।

পার্ক্তী সরিধানে মহাদেব কহিরালেন। অনস্তর, সচীব সন্ধদ পরিবেটিত রাক্ষসেশ্বর রাবণ, সভাস্থলে কিরংক্ষণ মন্ত্রণা করভ, যুদ্ধাবলিফ্ট রাক্ষস-সৈনিকগণ সমভিব্যাহারে রাম ও লক্ষ্মণ সহ যুদ্ধার্থে যাত্রা করিল। ধেমন শলভেরা স্বেচ্ছার প্রজলিত অনলে শরীর সমর্পণ করিয়া জীবন পরিভ্যাগা করে, সেই রূপ রাবণের সমস্ত্র সেনাই রাম শরাগ্নিতে দেহ প্রদান করিয়া বিনফ্ট হইল, রাবণ জ্যোধে অধীর হইয়া বিপক্ষ পক্ষের উপরে অসংখা শর নিক্ষেপ করিল, ভাহাতে রাম কির্থিৎ কফ্ট হইয়া, এক বাণেই দশাননের বর্মাচহাদি বক্ষঃ-হল, সচ্ছিত্র করিয়া দিলেন, তাহাতে লক্ষাপতি অভিশর বাণিত হট্রা সভ্যে স্বভ্বনে প্রবেশ করিল। পরে তথার উপস্থিত হইয়া রাম, লক্ষ্মণ ও মাক্তির বীরত্ব, অস্তরে অরণ করত ভীত হইয়া, দৈতা-গ্রুক শুক্রাচার্য্যের নিক্ট গমন করিল।

ক্রমে তাঁহার সন্নিধানে উপনীত হইরা, ক্রতাঞ্জিপুটে নমস্বার পূর্বক বলিতে লাগিল—ভাগবন্! রাঘ্বদ্বর, লঙ্কার আগমন পূর্বক রণে আমার পুজ, পোজ, আন্থীয় বাহ্বদিগকে বিনই করিয়া তথার মহানন্দে অবস্থান করিতেছে। এক্ষণে, জাপনি সদাকু থাকিতে আর কে আমাকে এ বিষম বিপদ-সাগর হইতে পার করিতে সক্ষম হইবে? অভঞ্জব দীঘ্র উপার হির করিয়া দিন। ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৩।

রাবণ এই বলিয়া ক্ষান্ত ছইলে, দৈত্যগুৰু দশাননকে বলিতে লাগিলেন—হে রাক্ষ্যেশ্বর রাবণ ! তুমি গোপনে অগ্রি ক্রজ্জলিত করিয়া ছোমের অনুষ্ঠান কর, নচেৎ জ্ঞানিও অবিলয়ে তোমার বহু বিদ্ব ঘটিবার সন্তাবনা আছে। অতএই অতি শীঘ্র তুমি আমার মন্ত্র গ্রহণপূর্বাক রখা অখ্য চাপ, তুলীব এবং শায়ক যুক্ত ছইয়া, জন শূন্য স্থানে গমন করত মেনিভাবে

গৃহাণ মন্ত্রান্মদন্তান্ গচ্ছ হোমং কুরু জ্রুতম্।

ইত্যক্তস্থরিতং গত্বা রাবণো রাক্ষদাধিপ:। ১০।
গুহাং পাতালসদৃশীং মন্দিরে স্বে চকার হ।
লক্ষাদ্বারকপাটাদিবদ্ধা সর্দ্রন্ত মতুতঃ। ১১।
হোমদ্রব্যাণি সম্পাদ্য যান্ত্যক্তান্যাভিচারিকে।
গুহাং প্রবিশ্য চৈকান্তে মোনী হোমং প্রচক্রমে।১২
দ্বৈতিং ধূমমালোক্য মহান্তং রাবণান্তর্জঃ।
রামায় দর্শয়ামাদ হোমধূমং ভয়াকুলঃ। ১৩।
পশ্য রাম! দশ্রীবো হোমং কর্তুং সমারভং।
যদি হোমঃ সমাপ্তঃ স্থান্তদাক্রেয়া ভবিষ্যতি॥ ১৪
গ্রেতা বিঘার হোমস্থা প্রেষণাশু হরীশ্বরান্।
হথেতি রামঃ স্ব্রীবসন্মতেনাঙ্কণং কপিম্। ১৫।

হন্মৎপ্রম্থান্ বীরান্ আদিদেশ মহাবলান্।
প্রাকারং লঞ্জ্যয়িত্বা তে গত্বা রাবন্মন্দিরম্। ১৬!
দশকোটাঃ প্রবঙ্গানাং গত্বা মন্দিররক্ষকান্।
চূর্ণয়ামাস্তরশ্বাংশ্চ গজাংশ্চ ন্যহনন্ ক্ষণাং। ১৭।
ততশ্চ সরমা নাম প্রভাতে হস্তদংক্তয়া।
বিভীষণস্য ভার্যা সা হোমস্থানমসূচয়ং। ১৮।
গুহাপিধানপাধানমক্ষণঃ পাদঘট্টনেঃ।
চূর্ণয়িত্বা মহাসত্ত্বঃ প্রবিবেশ মহাগুহাম্। ১৯।
দৃষ্ট্বা দশাননং তত্র মীলিতাক্ষং দৃঢ়াসনম্।
ততোহক্ষণাক্ষয়া সর্বেবানরা বিবিশুক্তেম্। ২০।
তত্র কোলাহলং চক্রুম্বাড্রম্বশ্চ সেবকান্।
সন্তারাংশিচ্কিপ্রত্র হোমকুণ্ডে সমস্তঃ। ২১।
তথ্বমান্তিদ্বা হস্তাচ্চ রাবণস্থা বলাক্ষ্ণা।

নতন দেবের আরাধনা কর, তাহা হইলে তিনি সন্তন্ত হইরা থামাকে ভোমার অভিলবিত বর প্রদান করিবেন। এই বলষা শুক্রাচান্য স্থির হইলে, কর্ব্যুর-পতি লক্ষায় আগমন পৃত্তক নিজ্ঞ গৃহের অভ্যন্তরে পাতাল তুলা গুহা থনন করিয়া তন্মা প্রবেশানন্তর, লক্ষায়ার কবাটাদি সম্ভেক্ত করতঃ মৌনভাবে অগ্নি প্রজ্ঞালিত করিবার উপক্রম করিছে লাগিল। গাবলায়জ্জ বিভীষণ বহুপরিমাণে ধূমোথিত হইতে দেখিয়া ভ্রাকুলিছ চিত্তে জীরামকে হোম ধূম সন্দর্শন করাইলেন এবং কহিলেন—দেখুন, দশানন হোম আরম্ভ করিয়াছে। এক্ষণে যদি হোম সমাপ্ত হয় তাহা হইলে সে অজ্যের ইইবে; অভ্যাব হোমের বিশ্ব সম্পাদন করিবার জন্য কপীশ্বরদিগকে প্রেণ্ড করুন। অনন্তর শ্রীরাম হ্ত্যীবের সন্মতি অনুসারে ক্ষদ, মহাবলীয়ান্ হন্মান ও অন্যান্য কপিদিগকে হোম

তদনন্তর অঙ্গদাদি বানর নিকর, গহ্বরে প্রবেশ পূর্ব্বক তথায় মিলিতাক্ষা শুভাসনোপবিস্ট দশাননকে দশন করিয়া তাহার সেবক সৈনিকদিগকে দ্রীকরণানপ্তর, ছোমকুণ্ডের চতুর্দ্দিকে আবিজ্ঞনাদি নিক্ষেপ করতঃ মহাকোলাখলের সহিত সূত্য আরম্ভ করিল। তদর্শনে রাবণ, ক্রোধে অধীর ইইয়া, তেনৈব সঞ্চানাশু হত্মান্প্লবগাঞ্জীঃ ॥ ২২ ॥
মুদ্রি দক্তিশ্চ কার্চেশ্চ বানারাস্তমিতস্ততঃ।
ন জহে রাবণো ধ্যানং হতোহিপি বিজিগীষয়া ॥ ২৩
প্রবিশ্যান্তঃপুরে বেশ্যান্যঙ্গদো বেগবস্তরঃ।
সমানয়ৎ কেশবস্ধে ধূরা মন্দোদরীং শুভাম্॥ ২৪॥
রাবণস্থৈব পূরতো বিলপস্তীমনাথবং।
বিদদারাঙ্গদস্তশাঃ কঞ্কং রত্নভূষিত্য। ২৫।
মুক্তা বিমুক্তাঃ পতিতাঃ সমস্তাদ্রস্পরেঃ।
শ্রোণিস্তাং নিপ্তিতং ক্রটিতং রত্নচিত্রিত্য্। ২৬
কটিপ্রদেশাদ্বিস্তা নীবী তদ্যেব পশ্যতঃ।
ভূষণানি চ সর্বাণি পতিতানি সমস্ততঃ ॥ ২৭॥

দেবগন্ধবঁকন্যাশ্চ নীতা হৃথৈই: প্লবক্ষরি:।
মন্দোদরী রুরোদাথ রাবণস্যাগ্রতো ভূশম্॥ ২৮॥
ক্রোশন্তী করুণং দীনা জগাদ দশকন্ধরম.।
নির্লজ্ঞোহিদ পরেরেবং কেশপাশে বিক্লব্যতে।২৯
ভার্যা তবৈব পুরত: কিং জুহোষি ন লজ্জ্ঞাদে?।
হন্যতে পশ্যতো যস্য ভার্যা পাপেশ্চ শক্রভি:॥
মত্ব্যং তেন তব্রৈব জীবিতাশ্বরণং বরুম্।
হা মেঘনাদ! তে মাতা ক্রিশ্যতে বত বানব্র:॥
ভ্রিজীবতি মে জুংখনীদৃশং চ কথং ভবেৎ ?।
ভার্যা লক্ষ্ণাচ সন্তুক্তা ভর্তা মে জীবিতাশ্বা। ২২

ভন্তগারা ভাবে আচ্ছাদন পূর্বক, সহসা উপস্থিত মহা অনর্থ চিন্তা করতঃ ধাানে নিমগ্ন হইল। এমৎ কালে বানরাপ্রাণী হসুমান, দশাননের হস্ত হইতে বলপূর্বক, ভাব প্রহণ করতঃ, ভদ্মারা ও দন্ত, নথ এবং কাঠাদি ঘারা ভাষার মস্তকে নিদা-কণ প্রহার করিতে আরম্ভ করিল। তথাপি লঙ্কেম্বর বৈরী-বিজ্য়েচ্ছায় সেই কঠিন আঘাত সহ্ম করতঃ, ধাানভঙ্গ করিল না। তাহা দেখিয়া, অঙ্গাদি কয়েক জন প্রধান প্রধান বানর, অন্দরে প্রবেশ পূর্বক, রাবণের প্রধানা মহিষী মন্দো-দর্মার কবরী ধারণ করিয়া, ভাষাকে ভ্রমার আনয়ন করিল। দেই পরম রূপলাবশ্যবতী ময়দানবকনাা মন্দোদরী ও জনা-যার ন্যায় রাবণাপ্রে দণ্ডায়মানা হইয়া বিস্তর বিলাপ ও প্রিভাপ করিতে লাগিল। অমনি বালীরাজতনয় অঙ্গদ ভাষার বিবিধ-রত্ব-থচিত-কঞ্চ স্ববলে গ্রহণ পূর্বক, নথ-ছারা থণ্ড থণ্ড করতঃ, দূরে নিক্ষেপ করিল; ভদ্দানে অপরা-প্র প্লবঙ্গমেরা ভাষার সমস্ত গালোভরণ ও বছমূল্য রত্নযুক্ত কর্ণ ভূষণাদি নথ দক্ত দারা ছিন্ন হিন্ন করতঃ, বস্থধায় বিক্ষিপ্ত করিল, অমনি কটিদেশ হইতে বসন শ্লেখ হইল; তদ্ফেলনর দ্বারা আনীতা, রাবণ-হতা যত দেব গন্ধার্য কন্যার। ভয়ে থর থর করিয়া কাঁপিতে লাগিল ।২০।২১।২২।২৬।

পরে ঈদৃণী অবস্থাপরা মন্দোদরীও রাবণাথ্যে দণ্ডারমানা ইইয়া, সমধিক রোদন করভঃ দশাননকৈ করুণ দীন
বচনে বলিতে লাগিল। দেথ নাথ! তুমি অতি নিল জ্জি
কারণ, সম্মুথে সামানা শক্রগণ, কেশাকর্ষণ করিয়া, যাহার
মহিষীর এরপ তুরবস্থা করে, দে ছীন বল ছইলেও কথনই
ছির থাকিতে পারে না; তবে তুমি কেন ছির ভাবে অবস্থান
করিতেছ? অভএব জানিলাম; সকলই সময়ের অধীন।
হা ধিক্! ছা পুত্র মেঘনাদ! তুমি এখন কোখায় রতিয়াচঃ
বনাপশু শাখান্গ বানরেরা তোমার জননীর কিরূপ তুদ্দশা
করিয়াছে, এক বার আদিয়া দেখ। বৎস!তুমি জীবিভ
থাকিলে, তোমার জননীর এরপ অশ্যান দেখিয়া কথনই

শ্রুত্ব তদেবিতং রাজা মন্দোদর্যা দশানন:।
উত্তর্গ্র বজামানার তাজ দেবীমিতি ক্রবন্। ৩৩
জঘানাক্রদমব্যপ্র: কটিলেশে দশানন:।
ভতোৎসূজ্য মযু: সর্ক্রে বিশ্বংসা হবনং মহৎ। ৩৪
রামপার্শ্ব মুপাগম্য ভস্তু: সর্ক্রে প্রহর্ষিতা:।
রাবণস্ত ততো ভার্যামুবার পরিষান্ত্রন্। ৩৫।
দৈবাধীনমিদং ভদ্রে! জীবতা কিন্ন দৃশ্যতে?।
তাজে শোকং বিশালাক্ষি! জ্ঞানমালয়্য নিশ্বিত্ম।

নহা করিতে সক্ষম হইতে না। হা নাথ! ভার্যার লক্ষ্য করিতে প্রতঃ স্থামীই রক্ষা করিয়া থাকেন ; কিন্তু আমার ত্রুলাবশভঃ, সেই স্থামী বর্ত্তমান থাকিতে, অদ্য তাহার বিপরীত, দেখিতেছি, এই আশ্চর্যা! রে দগ্ধ প্রাণ! বলিতেছি তুই এক্ষণে আমার দেহ পরিত্যাশ কর, নতুবা আর কচক্ষণ এ সব হস্ত্রণা সহ্য করিবি !।

মন্দোদরীর এইরপ বহু বিলাপের পর, দশানন আর নিশ্চিম্ত থাকিতে না পারিয়া অগ্রে মহিনীকে শাস্তনা করছঃ, ক্রোধে অধীর ছইয়া, এক স্থতীক্ষ্ণ অসি করে গ্রহণ পূর্ব্বক, প্রথমেই অঙ্গদের কটিদেশে নিদাকণ প্রহার করিল। তদ্দর্শনে ভত্তস্থ অপর বানরেরা অঙ্গদ সহ ক্রেমে প্রদায়ন করতঃ সানন্দে বামপাশ্বে উপনীত ছইয়া, স্থােথ অবস্থান করিতে লাগিল। বিচাহন। ২০। ৩১। ৩২। ৩০। ৩৪। ৩৫।

জনস্তর লংকশ্বর রাবণ, ভার্যাকে বিশেষ রূপে শাস্ত্রনা করতঃ বলিভে লাগিল। দেখ, ভল্তে! যাহা কিছু ঘটনা ঘটি। তেছে, স্নে কলই দেবাধীন, ইহা কি তুমি দেখিরাও দেখি-তেছ না? জাতএব ছে বিশালাকি ! তুমি জ্ঞানাবলম্বন পূর্ব্বক এই মিথ্যাশোক ত্যাগ করতঃ স্ক্তির হও। তুমি জ্ঞানিও,

অজ্ঞানপ্রভবং শোকং শোকো জ্ঞানবিনাশকং।
অজ্ঞানপ্রভবাহংধী: শরীরাদিধনাত্মস্থ ॥ ৩৭ ॥
তন্মলং পুজদারাদিশকঃ সংসৃতিস্ততঃ।
হর্ষশোকভয়কোধলোভমোহস্প্রাদয়ঃ।। ৩৮ ॥
অজ্ঞানপ্রভবা হেতে জন্মস্তুক্রেরাদয়ঃ।
আত্মা তু কেবলঃ শুদ্ধো ব্যতিরিক্তো হলেপকঃ ॥
আনন্দরপো জ্ঞানাত্মা সর্বভাববিবর্জিতঃ।
ন সংযোগো বিযোগো বা বিভাতে কেনচিৎ সতঃ।
থবং জ্ঞাত্ব। স্বমাত্মানং ত্যক্ত শোকমনিন্দিতে!।
ইদানীমেব গচ্ছামি হত্মা রামং সলক্ষ্মন্ম। ৪১।
আগমিষ্যামি নো চেম্মাং দার্মিষ্যতি সাম্বৈঃ।
শ্রীরামো বজ্ঞকল্পিক্ট ততো গচ্ছামি তৎপদম ॥৪২

অজ্ঞান ছইতে শোক উৎপত্তি ছয়; আবার শোকই জ্ঞানকে বিনাশ করে অজ্ঞান হইতে উৎপত্তি যে অহং বুদ্ধি, ভাহা আবা ভিন্ন বাহ্যিক অনিত্য শরীরাদিতে ব্যাপিয়া আছে। সেই অজ্ঞান জ্ঞান্ত অহং ইত্যাকার জ্ঞানের মূল শ্বরূপ যে. পূজ্র-দারাদি সম্বন্ধ-জ্ঞান, ভাহা ছইতে ছর্য, শোক, ভ্রম, ক্রোধ, লোভ, মোহ, মদ, মাৎস্থ্য, জ্ঞ্মা, মৃত্যু এবং জ্ঞাদির উৎপত্তি ছয়। আত্মাকে কেবল নিদ্ধা অলেপক, আনন্দ-স্বন্ধপ, জ্ঞান-মন্ন এবং সর্বভাব বিবর্জ্জিত বিলিয়া জ্ঞানিবে। আত্মার কোন কালেই সংযোগ বিয়োগ নাই। অতএব হে আনন্দিতে! স্থীর আত্মাকে এইরূপ জ্ঞান করিয়া, এ অনিভ্য শোক ভ্যাগ কর। আমি এক্ষণেই যুদ্ধে চলিলাম্। অদ্য রাম লক্ষ্মণকে আমার হতে নিধন, কিশ্বা জ্ঞানামের অশনি সদৃশ শ্বের জামি পরম

তদা তয়া মে কর্ত্বরা ক্রিয়া মচ্ছাদনাৎ প্রিয়ে!।
দীতাং হত্বা য়য়া দার্ছিং তং প্রবেক্ষ্যদি পাবকম্॥
এবং শ্রুত্বা বচন্তুদ্য রাবণদ্যাতিদুঃথিতা।
উবাচ নাথ! মে বাক্যং শ্রুণু সত্যং তথা কুরু॥ ৪৪
শক্যো ন রাঘবো ক্রেতুং তয়া চান্যেঃ কদাচন।
রামো দেববরঃ সাক্ষাৎ প্রধানপুরুষেশ্রঃ॥ ৪৫॥
মৎদ্যো ভূত্বা পুরা কল্পে মনুং বৈবস্বতং প্রভূঃ।
ররক্ষ সকলাপন্ত্যো রাঘবো ভক্তবৎদলঃ॥ ৪৬॥
রামঃ কুর্মোহভবৎপূর্বাং লক্ষ্যোক্তনবিন্মৃতঃ।
দমুদ্রমন্থনে পৃষ্ঠে দধার কনকাচলম্॥ ৪৭॥
হিরণ্যাক্ষোহতিদুর্ব ত্যো হতোহনেন মহাত্মনা।

জেজেরপেণ বপুষা কোণীমুদ্ধরতা কচিন্। ৪৮। ।
ভিলোককণ্টকং দৈত্যং হিরণ্যকশিপুং পুরা।
হতবালারিদিংহেন বপুষা রঘুনন্দন: ॥ ৪৯ ॥
বিক্রমৈস্ত্রিভিরেবাদো বলিং বদ্ধা জগজ্যম্।
আক্রমাদাং হ্রেক্রায় ভ্তাায় রঘুসন্তম: ॥ ৫০ ॥
রাক্ষনা: ক্ষত্রিয়াকারা জাতা ভূমের্ভরাবহা:।
তান্ হত্বা বহুশো রামো ভুবং জিত্বা হ্রান্স্রান: ॥
স এব সাম্প্রতং জাতো রঘুবংশে পরাৎপর:।
ভবদর্থে রঘুশ্রেষ্ঠো মানুষম্বমুপাগত: ॥ ৫২।।
তস্য ভার্যা কিমর্থং বা হ্রুভা সীতা বনাদ্লাৎ ?।
মম পুক্রবিনাশার্থং স্বস্যাপি নিধনায়। চ ॥ ৫৩ ॥
ইতঃ পরং বা বৈদেহীং প্রেষয়্ম্ব রঘুত্রমে।

পদ নিশ্চর পাপ্ত ছইবে। পরে তুমি আমার অন্ত্যেষ্টিক্রিরার পূর্বে সীভাকে বিনষ্ট করিয়া, আমার দহিত পাবকে প্রবেশ ১৩৬।৩৭।৩৮।৩৯।৪০।৪১।৪২।৪৩।

অনন্তর মন্দোদরী, রাবণের এইরপ নিদাকণ বচন শ্রবণ করিয়া, অতি হঃথিতান্তঃকরণে স্বামীকে বলিতে লাগিল। দেখনাথ! তুমি যাহা স্থির করিয়াছ ভাগা অবশাই হইবে, কিন্তু বলিতেছি, তুমি কি অন্যে, রবে রাঘবকে কপনই পরা-জয় করিতে সক্ষম হইবে না। অতএব তুমি জানিও, শ্রীবাম মানুষ নয়, সাক্ষাৎ প্রধান পুরুষেশ্বর নারায়ণ। পুরাকর্পো মংসাবভার হইয়া, বৈবস্থত মন্থকে সকল আপদ হইতে বক্ষা করিয়াছিলেন, এই হেতু ভক্তবৎসল রাম মানুষ নয়। আবার সেই রাম, প্রকালে লক্ষ্যোজন বিস্তৃত শরীর ক্র্মাবতার হইয়া, সমুদ্রমন্থন সময়ে পুটে কনকাচল ধারণ করিয়াছিলেন, আতএব তাঁহাকে মন্ত্রা বলিয়া, নির্দেশ করা যায় না। আরও বলি, যে রাম, পূর্বকালে ছুর্তি ছিরণাক্ষকে নিধন করতঃ,

বরাহরপধারণ পূর্বক, ভাষণ দন্ত দারা উর্ব্বার উদ্ধার সাধন করিয়াছিলেন। আরও যিনি পূর্বকালে নরদিংছ রূপ ধারণ পূর্বক স্থীর শরীর দারা ত্রিলোক কণ্টক দৈত্য হিরণ্য কশিপুকে বিনাশ করিয়াছিলেন। আবার বে রঘূত্তন রাম বামন রূপে ছলনা পূর্বক বলিকে বদ্ধ করিয়া ত্রিভূবন আক্রেমণ করতঃ দেবরাজ্ঞ ইন্দ্রকে ভত্য ভাবে গ্রহণ করিয়াছিলেন। আর যিনি ভূভার ছরণ জন্য ধরায় বারহার জন্ম গ্রহণ পূর্বক অসংখ্য রাক্ষ্য ও ক্ষল্রিয়দিগকে বিনাশ করিয়াছিলেন। দেই পরাৎপর পরমপুক্ষ রাম সম্প্রতি আপনার জন্য মানব দেই ধারণ করিয়া রঘূবংশে জন্ম গ্রহণ করিয়াছেন। অভ্রের এক্ষণে জানিলাম, আমার প্রবিনাশের নিমিত্ত এবং আপনার বধের কারণ রাম-মহিমী বেদেহীকে বন হইতে বলপুর্বক ছরণ করিয়াছ। দে যাহা

বিভীষণায় রাজ্যং তু দল্পা গচ্ছামহে বনম্॥ ৫৪॥
মন্দোদরীবচং শ্রুজা রাবণো বাক্যমন্ত্রবীৎ।
কথং ভদ্রে! রণে পুজান ভাতৃন্ রাক্ষনমগুলম্।।
ঘাতয়িত্বা রাঘবেণ জীবামি বনগোচরঃ?।
রামেণ সহ যোৎস্যামি রামবানেঃ স্থীদ্রগৈঃ।।৫৯
বিদার্যমাণো যাস্যামি ভদ্বিক্ষোঃ পরমং পদম্।
জানামি রাঘবং বিষ্ণুং লক্ষ্মীং জানামি জানকীং।
কাত্বৈব জানকী সীতা ময়া নীতা বনাদ্বলাৎ॥৫৭
রামেণ নিধনং প্রাপ্য যাস্যামীতি পরং পদম্।
বিষ্চ্য ডাং তু সংসারাক্ষমিষ্যামি সহ প্রিয়ে!॥৫৮

পরানন্দময়ী শুদ্ধা সেব্যতে যা মুমুক্সুভি:!
তাং গতিং তু গমিধ্যামি হতো রামেণ সংযুগে ॥
প্রকাল্য কল্মধাণীই মুক্তিং ধাস্যামি ছুর্লভাং ॥

ক্লেশাদিপঞ্চতরঙ্গয়ণং ভ্রমান্তং
দারাত্মজাপ্তধনবন্ধুভূষাভিষুক্তং।
উর্বানলাভনিজরোষমনকজালং
দংশার্মাণর্মভীত্য হরিং ভ্রজামি ॥৬১॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
যুদ্ধকাণ্ডে দশমোহধ্যায়ঃ।

ঘটিবার ঘটিয়াতে, এক্ষণে যাহা বলি শ্রবণ কর—আথো বৈদেহী রামকে পরে রাজ্য বিভীষণকে প্রদান করিয়া চল বনে গমন করি। ৪৪। ৪৫। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। । ৫০। ৫৩। ৫৪।

মন্দোদরীর এইরূপ সুধাময় বাক্য প্রবণ করিরা, ল্কাধিণতি রাবণ বলিতে লাগিল—

হে ভারে! রাষ্য কর্মক পুত্র, জাতা প্রভৃতি রাক্ষণ সম্হকে সমরে বিনষ্ট করিয়া বনচারী হওত কিরপে জীবন ধারণ
করিব ! রাম সহ যুদ্ধ করিয়া অতি শীজ্রই তাঁহার বাণে
বিদীণ হইয়া সেই পরম বিষ্কুর পাদপদ্ম প্রাপ্ত হইব। আমি
রাঘ্বকে বিষ্কু ও জানকীকে লক্ষ্মী বলিরা অবগতে আছি,
এবং সীভাকে ঐ রগ জানিয়াই বন হইতে বলপুর্বক আন-

রন করির।ছি; এক্ষণে রাম কর্জ্ক বিনত্ত ইইরা প্রম শদ প্রাপ্ত হইব, হে প্রিয়ে! ভোমাকে বিমৃক্ত করিরা আমি সংসার ছইতে গমন করিব। মুমুক্ষু ব্যক্তিরা যে আনন্দ সস্তোগ করিরা থাকে আমি রাম কর্জ্ক নিছত ইইরা ঐ গতি প্রাপ্ত হইব; রক্ষ-দেহ-ক্ত পাশ সমূহ রাম নাম আরণ হারা দৃথীভূত করিরা ভূল ভ মুক্তি প্রাপ্ত হইব। জ্রী, প্রা, বন্ধ, প্রভৃতি ব্যক্তি সম্ভূত রাগ ছেবাছি পঞ্চ ক্লেশ পাইরাছি, এক্ষণে অনঙ্গ- জাল ও সংসার-সাগর উত্তীর্ণ ছইরা ছরির পাদপদ্ম লাভ করিব। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০।

ইতি শ্রীমনধ্যাত্মরামারণে উমানহেশ্বরসভানে বৃদ্ধকাঞে দশনেশংধ্যারঃ !

একাদশোহধ্যায়ঃ।

ইত্যুক্তা বচনং প্রেম্ণা রাজ্ঞীং মন্দোদরীং ভদা।
রাবণঃ প্রাথমো বাদ্ধং রামেণ সহ সংযুগে। ১।
দৃঢ়ং স্যান্দনমাস্থায় রুতো ঘোরৈনি শাচরৈঃ।
চক্রৈঃ বোড়শভিযুক্তং সবর্বং সকুবরং। ২।
পিশাচবদনৈর্ঘোরেঃ খরেষুক্তং ভয়াবহ্ম।
সর্বাস্ত্রশস্ত্রসহিতং সর্বোপক্ষর সংযুত্ম। ৩।
নিশ্চকামাথ সহসা রাবণো ভীষণাকৃতিঃ।
আয়ান্তং রাবণং দৃষ্ট্যা ভীষণং রপকর্কশম্॥ ৪॥
সন্ত্রস্থাভূত্তদা সেনা বানরী রামপালিতা॥ ৫॥
হন্সান্থ চোৎপ্লুডা রাবণং যোদ্ধুমায্যো।
আগত্য হনুমানু রক্ষোবক্ষস্যভুলবিক্রমঃ॥ ৬॥

মুক্তিকং ছুদ্ং বদ্ধা তাড়য়ামাস বেগতঃ।
তেন মুক্তিপ্রাবেণ স্থানুত্যামপতদ্রথে । ৭ ।
মুক্তি তোহও মুহুর্ত্তেন রাবণঃ পুনরুপ্রিতঃ।
উবাচ চ হন্তমন্তং শুরোহ্যি মম সম্মতঃ । ৮ ।
হন্তমানাহ তং ধিজ্ঞাং যন্ত্য জীবদি রাবণ!।
তং তাবন্মুক্তিনা বক্ষো মম তাড়য় রাবণ।॥ ৯ ॥
পঞ্চামায়া হতঃ প্রাণাম্মোক্ষসে নাত্র সংশ্রঃ।
তথেতি মুক্তিনা বক্ষো রাবণেনাপি তাড়িতঃ ॥১০॥
বিঘুর্ণমাননয়নঃ কিঞ্জিৎকশ্মন্মায্যে।
সংজ্ঞামবাপ্য ক্পিরাট্ রাবণং হন্তমুদ্যতঃ ॥১১॥

প্রেম ভরে মন্দোদরীর সহিত এই রূপ কথোপকথন করিয়া, দশানন জীরাম সহ যুদ্ধ করিতে যাতা কারণ, স্পৃদ্ সান্দনো-পরি উপবিষ্ট, ভরানক নিশাচর ও পিশাচ,পরিরভ যোড়শ চক্র রথ গুপ্তি যুক্ত, এবং নানাবিধ অন্ত্র সন্ত্র ও যুদ্ধোপকরণ সংগদানন ভীষণাক্ষতি হইরা সহসা বহির্গত ইইল। রাম্পাণিত বানরী সেনা রাবণকে ভীষণ রণ-কর্কশ শব্দ করিতে করিতে আসিতে দেখিয়া ভীত ইইল। আনস্তর হনুমান রাবণের সহিত যুদ্ধ করিবার আশারে উল্লক্ষ্ণন পূর্মক উপস্থিত

হইয়া এবং মুঠি বন্ধ করত অভি বেগে রাক্ষণের বক্ষঃ
দেশে আঘাত করিল, রাবণ তাহাতে রথোপরি নিপতিত
হইল, এবং কণ কাল মৃচ্ছিত হইরা পুনরায় উন্ধিত হইরা
হস্মানকৈ কহিল—হে হস্মশৃ! তুমি যথার্থ বীর। হস্মান
কহিল—হে রাবণ! আমাকে ধিক, কারণ তুমি জীবিত আছ:
হে রাবণ! তুমি আমার বক্ষ ভাড়ন কর, পশ্চাৎ আমি
ভোষাকে প্রাণে বিমন্ত করিব, তাহাতে তুমি মোক্ষ প্রাপ্ত
হইবে—ইহাতে কোন সন্দেহ নাই। অনন্তর রাবণ মুক্তি ঘারা
হস্মানের বক্ষ ভাড়ন করিল; হনুমান বিঘ্ণায়মান নয়ন
হইরা সংজ্ঞাহীন হইরাই আবার সংজ্ঞা প্রাপ্ত হইরা রাবণকে

ততোহনাত গতো ভীত্যা রাবণো রাক্ষ সাধিপ:।

হনুমানক্ষদকৈর নলো নীলন্তথৈর চ । ১২ ॥

চত্বার: সমবেতাত্রে দৃষ্ট্যা রাক্ষ সপুক্ষবান্।

অগ্নিবর্ণং তথা সর্পরোমাণং থজারোমকং ॥ ১৩॥

তথা রশ্চিকরোমাণং নির্জন্ম; ক্রমশোহস্থরান্।।

চত্বারশ্চভুরো হত্বা রাক্ষ সান্ ভীমবিক্র মান্ ॥১৪॥

দিংহনাদং পৃথক্ কৃত্বা রামপাশ্ব মুপাগতা:।

ততঃ ক্রে দশগ্রীবং সন্দশ্য দশনভ্দম্॥১৫॥

বিব্রত্য নয়নে ক্রুরো রামনে বন্ধোবত।

দশগ্রাবো রথস্থা রামং বক্তোপিমং শবৈ:॥ ১৬॥

আজ্ঘান মহাঘোরেধ রাভিরিব ভোষদ:।

রামস্য পুরতঃ সর্কান্ বানরানপি বিব্যথে॥ ১৭॥

ততঃ পাবনসংকাশেঃ শবৈঃ কাঞ্চনভূষণৈ:।

অভ্যবর্ষদ্রনে রামো দশগ্রীবং সমাহিত: । ১৮।
রথস্থং রাবণং দৃষ্ট্রা ভূমির্চং রঘুনন্দনম্।
আহ্র মাতলিং শক্রো বচনপ্রেদমন্ত্রবীৎ ॥ ১৯ ॥
রথেন মম ভূমির্চং শীন্তং যাহি রঘুত্তমম্।
ঘরিতং ভূতলং গড়া কুরুকার্য্যং মমানঘ!। ২০।
এবমুক্তোহথ তং নড়া মাতলির্দেবসার্থিঃ।
ততো হরৈশ্চ সংযোজ্য হরিতৈঃ স্যান্দনোত্তমম্ ॥
স্বর্গাজ্জরার্থং রামস্য ভ্যুপচক্রাম মাতলি:।
আন্তরীচ্চ ততো রামমপ্রতর্ক্যরথেন্থিতঃ।
প্রাঞ্জনিদেবরাজেন প্রেষিতোহন্মি রঘুত্তম!।২২।
রথোহরং দেবরাজস্য বিজয়ায় তব প্রতা!।
প্রেষিতশ্চ মহারাজ ! ধনুরৈক্রং চ ভূষ্তম্।২৩

বিনাশ করিতে উদ্যত হইল। অনস্তর রাক্ষ্যাধিপ রাবণ ভাতান্তঃকরণে প্রথমন করিল। হুনুমান, অঙ্গদ, নল ও নীল সমবেত হইয়া অগ্নিবর্গ, সর্পমান, অঙ্গারোমক ও রুশ্চিক রোমাণ রাক্ষ্যদিগাকে সর্মুথে নির্গত ইইতে দেখিরা ভীম বিক্রেম চারি জ্ঞনকে বিনষ্ট করিল, এবং প্রত্যেকেই দিংহনাদ করিতে করিতে রাম পার্ছে উপনীত হইল। অনস্তর দশগ্রীব ক্রোধ পরতন্ত্র ইইয়া আরস্ত্র লোচনে রাম দিকে ধাবিত হইল এবং রথস্থ ইইয়া আর্রামোপরি বরিষার ধারার ন্যায় বজ্রোপম শর দমূহ পরিত্যাগ করিতে লাগিল। ভাহাতে রাম-সম্মুথবর্তী বানরগাণ ব্যথিত ইইতে লাগিল। অনস্তর রামচন্ত্র কাঞ্চণ ভূষণ জড়িত পাবক স্কাশ বাণ বারা দশা-

ননকে সমাজ্যদন করিলেন। এই সময় ইন্দ্র রাবণকে রথো-পরি ও রঘুনাথকে ভূতলে দর্শন করিয়া মাতলিকে আহ্বান পূর্বক কহিলেন—ভূমি আমার রথ লইয়া ভূতলে গমন পূর্বক রাম সন্নিধানে উপস্থিত হও—হে অনঘ! ভূমি আমার এই কার্যা কর। জনস্তর মাতলি তাঁহাকে নমস্কার পূর্বক হিছে বর্ণের জন্য আগমন করিল, এবং রাম সন্মুথে উপনীত হইয়া কহিল—হে শ্রীরাম! আমি দেবরাজ ইন্দ্র কর্ত্ব প্রেরিত হইয়া কহিল—হে শ্রীরাম! আমি দেবরাজ ইন্দ্র কর্ত্ব প্রেরিত হইয়াছি, হে প্রভো! আপনার বিজ্যের জন্য দেবরাজের এই রথ উপস্থিত, এবং ভৎকর্ত্ব ধরু প্রেরিত হইয়াছে। ২২। ২৪। ৫। ৬। ৭। ৮। ১। ১০। ১১। ১২ ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২১

অভেদং কবচং ধজাং দিব্যভূণীযুগং তথা।
আকহা চ রথং রাম! রাবণং জহি রাক্ষসম্ ।২৪।
ময়। সারথিনা দেব! রুত্রং দেবপতির্যথা।
ইত্যক্তন্তং পরিক্রম্য নমক্ষ্ত্য রথোত্তমম্। ২৫।
আকরোহ রথং রামো লোকান্ লক্ষ্যা নিযোজয়ন্
ততোহতবন্মহাযুদ্ধং তৈরবং রোমহর্ষণম্ ।২৬।
মহাত্মনো রাঘবদ্য রাবশদ্য চ ধীমতঃ।
আগ্রেরন চ আগ্রেয়ং দৈবং দৈবেন রাঘবঃ।২৭।
আস্রং রাক্ষসরাজ্বস্য জ্বান পর্মাস্ত্রবিৎ।২৮।
তেতন্ত্র সমূজে ঘোরং রাক্ষসং চাস্ত্রমস্ত্রবিৎ।২৮।
রোবণদ্য ধনুমুক্তাঃ সর্পা ভূত্বা মহাবিষাঃ।

শরাঃ কাঞ্চনপুঙ্খাভা রাঘবং পরিভোহপতন্ ৷২৯ তৈঃ শরেঃ দর্পবদনৈর্ব্বযক্তিরনলং মুথিং। দিশশ্চ বিদিশশ্চিব ব্যাপ্তান্থত তদাভবন্। ৩০। রাম: দর্পাংস্ততো দৃষ্ট্য দমস্তাৎপরিপুরিভান্। নৌপর্ণমন্ত্রং তৎ ঘোরং পুর: প্রাবর্ত্তয়দ্রদে। ৬১ রামেণ মুক্তান্তে বাণা ভূত্বা গরুড়ৰাপিণং। চিচ্ছি**ছ: নর্পবাণাংস্তান্ সমস্তাৎ**দর্পশত্রবং ।৩২। অত্তে প্রতিহতে যুদ্ধে রাতমণ দশকদ্ধর:। ব্দভাবর্যস্তভো রামং ঘোরাভিঃ শরবৃষ্টিভি:।৩৩: তভঃ পুন: শরানীকৈ রামমক্রিফকারিণম্। অর্দমিত্বা তু ঘোরেণ মাতলিং প্রত্যবিধ্যত। ৬।। পাতরিত্বা রথোপত্থে রথকেতৃং চ কাঞ্চনম। ঐন্দ্রানশ্বানভ্যহনদ্রাবর্ণ: ক্রোধ মৃচ্ছি তঃ। ৩৫। বিষেদুর্দেব গন্ধব শিচারণাঃ পিতর ন্তথা। ष्पार्जाकातः इतिः पृष्ठे। व्यथिकान्त सहर्वतः । ५%।

ছে জীরাম! তিনি অভেদ্য কবচ, খজা, দিব্য ভূণীর দরও প্রেরণ করিয়াছেন; অতএব আপনি রখে আরোহণ করিয়া দেবপতি যেমন এই সার্থি সমভিব্যাহারে করিয়া বৃত্তাম্বরকে বিনাশ করিয়া ছিলেন, সেই রপে দশাননকে বিনাশ করুন। মাতনি এই রূপ কছিলে রামচন্দ্র রথকে নমস্কার করিয়া, রাবণ বধের অপণ কালাবশিষ্ট আছে বোধে, অনন্দিত ভইয়া, রখোপরি আরোহণ করিশেন। ২৪। ২৫

অনন্তর রাম ও রাবণে তুমুল সংগ্রাম হইতে লাগিল।
পারমান্ত বিশারদ রামচক্র রক্ষপতির আগ্নেরবাণ এবং দৈববাণ
খণ্ড খণ্ড করণান্তর মহা ক্রোধাবিষ্ট হইরা রাবণ প্রতি ঘোর অন্ত্র পরিত্যাগ করিলেন, রাবণ ও ক্রোধ পরভন্ত ছইরা রামোপরি বাণ নিক্ষেপ করিতে লাগিল এবং ঐ বাণ ভদ্ধক- মুক্ত ছইরা মহাবিষ সর্প হইল এবং ভাছারা মুখ হইতে অনল নির্গত করিতে করিতে চারিছিকে পরিব্যাপ্ত ছইল; প্রীরাম চক্ত ভদর্শনে সোপণাস্ত্র পরিত্যাগ করিলেন, ঐ বাণ পরিত্যক্ত ছইবা মাজ সর্প শক্ত গৰুড়রূপী ছইয়া সর্প বাণ ছেদন করিল দশানন মুদ্ধে সর্পবাণ প্রভিহত দেখিরা রামোগরি অবিরল ধারায় খারর্ফি করিতে লাগিল। অনুস্তর রাবণ পুনর্কার আক্রিফ রামকে অসংখ্য শর ধারা বিদ্ধ করিয়া পরে মাতলিকে বিদ্ধ করিল। এবং ক্রোধ-মুচ্ছিত হইয়া কাঞ্চণ মর ধ্বকা ছেদন ও অখ সমূহ বিদ্ধ করিল। দেব, গন্দর্কা, চারণ, খবি প্রভৃতি লোক সমস্ত রামকে বিহুবল দেখিয়া সাতিশর ব্যথিত

বাথিতা বানরেন্দ্রশ্চ বভুরুং সবিভীষণংঃ।
দশাস্থাে বিংশতিভুজঃ প্রসূহীতশরাসনঃ। ৩৭।
দদৃশে রাবণস্তা মৈনাক ইব পর্যাভঃ।
রামস্ত ভুক্টিং বদ্ধা ক্রোধসংরক্তলােচনঃ॥ ৩৮ ॥
কোপং চকার সদৃশং নির্দিহ্লিব রাক্ষসন্।
ধল্পরাদায় দেবেন্দ্রপল্পরাকার্মদৃত্রন্। ৩৯।
গৃহীত্বা পাণিনা বাণং কলােনলসমপ্রান্দর।
নির্দিহ্লিব চ্ছুল্বিং দৃদৃশে রিপুন্তিকে॥ ৪০॥
পরাক্রমং দশ্রিভুং তেজসা প্রজ্বানির।
প্রচক্রমে কালকণী সর্বলােকন্ত পশাতঃ। ৪১।
কিরুষা চাপং রামস্ত রাবণং প্রতিবিধা চ।
হর্ষান্দ্রমন্তিক কালান্তক ইবাবন্দেশি॥ ৪২॥
ক্রুদ্ধে রামন্ত বদনং দৃদ্ধী শক্তং প্রধাবতঃ।
ভক্তমে কর্তানি চচাল চ বস্তুরা॥ ৪৩॥

রামং দৃষ্টা মহারে জিমুৎপাতাংশ্চ স্থলারণান্।

অস্তানি সর্বাতৃতানি রাবণং চাবিশন্তরম্। ৪৪।

বিমানস্থঃ স্থরগণাঃ দিদ্ধগদ্ধবিকিন্নরাঃ।

দন্তঃ স্থমহাবৃদ্ধং লোকসম্বর্তকোপমন্।

ঐস্তমন্তং সমাদার রাবণস্থা শিরোহচ্ছিনং॥ ৪৫ রি

মূর্দ্ধানো রাবণস্থাথ বছবো ক্লাধিরোক্ষিতাঃ।

গগনাৎপ্রপতন্তি স্ম তালাদিব ফলানি হি॥ ১৬ রা

ন দিনং ন চ বৈ রাত্রির্ন সন্ধাং ন দিশোংশি বা।

প্রকাশন্তে ন তজ্ঞপং দৃশাতে তত্ত্ব সঙ্গরে॥ ৪৭ রা

ততা রামো বভ্নাথ বিস্মানবিক্ষানসঃ।

শতমেকোত্রং ছিন্ধং শিরসাং চৈকবর্তসাম্॥ ৮৮

ন চিব রাবণঃ শান্তো দৃশাতে জীবিতক্ষরাং।

ততা সক্রাপ্রবিদ্ধীরঃ কোশল্যানন্দর্শ্ধনঃ॥ ৪৯ ॥

কইলেন; কপীপ্রবাণ ও বিভীষণ রাবণকে বিংশতি হস্তে লগদন প্রহণ করিতে দেখিয়া, বাধিতমনা হইলেন। এবং রাবণকে যেন মৈনাক পর্বেত সদৃশ বোধ হইতে লাগিল। তদর্শনে শ্রীরামচন্দ্র কালানল-সমপ্রভ বাণ করে প্রহণ করিয়া, চক্ষায়ে দ্বারাই যেন শক্ত দগ্ধ করিবার নিমিত্ত চারিদিকে পর্যাবেক্ষণ করিভে লাগিলেন; এবং তেজ দ্বারা প্রজ্ঞালিত হইয়া সর্বলোক সমক্ষে স্থীয় পরাক্রম পরিদর্শন করিয়া, রাবণ-বিনাশ জন্য কালরপী হইলেন। শ্রীরামচন্দ্র চাপাকর্ষণ পূর্বকে রাবণকে বাণ দ্বারা বিদ্ধ করিয়া, যানরগণের হর্ষোৎপাদন করতঃ, কালান্তকের ন্যায় উপস্থিত হইলেন; তাহার ক্রোধান্বিপূর্ণ বদনমন্তল দর্শনে সর্ব্ব প্রোণি ভীত হইভে শাগিল এবং বস্থারা ক্রম্পানানা হুইলেন। স্থান, মন্ত্র ও

পাতানন্ত পোক সমস্ত শ্রীরামকে মহা কোণায়িত ও দশশ্রীবকে সন্দর্শন করিরা ভয় বিহ্নল হইল। স্বরণণ,
সিদ্ধাণ, গন্ধবিগণ ও কিন্নরগণ বিমান হইতে সর্প্রবাণ প্রভাব বৃদ্ধ দর্শন করিতে লাগিলেন। ইত্যবসরে শ্রীরাম ঐন্তরণণ
শ্রহণ করিয়া ক্রমে ক্রমে রাবণের সমস্ত শির্গছেনন করিলেন,
স্তরণং রাবণের মন্তক হইতে প্রভূত শোণিত ক্ষরিত হইতে
লাগিল, রাবণ-মন্তক বিচ্ছিন্ন হইয়া ভূতলে পতিত হওয়াতে
বোধ হইতে লাগিল যেন গগণ হইতে ভাল কল সমূহ নিপতিও
ছইতেছে। দিবা নাই, রাত্রি নাই, সন্ধাণ নাই, দিক্ নাই,
রাবণের সহিত শ্রীরণদের স্বোত্রর সংগ্রাম হইতে লাগিল,
রামচন্দ্র একশত এক বার ভূলাতেজী মন্তক ছেদন করিলেন।
কিন্ত পুনরার মন্তক পরিদ্লামান ইল, ভাছাতে রঘুনন্দন
সাতিশ্য বিস্মহাবিষ্ট ছইবেন। রাবণ ক্ষমপ্রাপ্ত হইতে জীবন
পাইয়াও বিগতে চেষ্ট ইইলনা। অনন্তর সর্বান্ত বিশারদ

অক্তৈশ্চ বছনির্যক্তশ্চিন্তরামান রাঘনঃ।
বৈথির্ব নৈহতা দৈতা মহাসন্ত্বপরাক্তমাং। ৫০।
ত এতে নিক্ষলং মাতা রাবণস্ত নিপাতনে।
ইতি চিন্তাকুলে রামে সমীপত্তে বিভীষণং॥ ৫১॥
উবাচ রাঘবং বাকংং ব্রহ্মদক্তবরো হৃদ্যে।
বিচ্ছিন্না বাহবোহপান্য বিচ্ছিন্নানি শিরাংনি চ।
উৎপৎসান্তি পুনং শীঘ্রমিত্যাহ ভগবানজঃ।
নাভিদেশেংমৃতং তম্ম কুগুলাকারসংস্থিতম্। ৫৩
তচ্ছোষরানলাস্ত্রেণ তম্ম মৃত্যুন্ততো ভবেং।
বিভীষণবচং শ্রুদ্বা রামং শীঘ্রপরাক্তমঃ। ৫৪।
পাবকাস্ত্রেণ সংযোজ্য নাভিং বিব্যাধ রক্ষসঃ।
অনন্তরং চ চিচ্ছেদ শিরাংনি চ মহাবলঃ॥ ৫৫॥

বাহুনপি চ সংব্রো রাবণকার গুন্তমঃ।
ততো ঘোরাং মহাশক্তিমাদার দশকলরঃ। ৫৬॥
বিতীষণবধার্থরে চিক্ষেপ ক্রোধবিহরলং।
চিচ্ছেদ রাঘবো বাণৈস্তাং শিতৈহে মভূষিতৈঃ।৫৭
দশগ্রীবশিরংশছলভোল ভেঁজো বিনিগতম্।
ম্লানকপো বভূবংথ ছিল্লৈঃ শীর্ষের্ভাল্লবৈঃ। ১৮॥
একেন মুখাশিরসা বাজ্জাং রাবণো বভৌ।
রাবণস্ত পুনংক্রুদ্ধো নানাশস্ত্রাস্তর্ভিভিঃ। ৫৯॥
ববর্ষ রামং তং রামস্তথা বংশিক্বিক্ষ চ।
ততে। বুদ্ধমভূৎ ঘোরং ভুমুলং লোমহর্ষণম্॥ ৬০
মথ সংস্মারয়ামাস মাতলী রাঘবং ভদা।
বিসৃদ্ধান্তং বধায়াস্য ব্রাক্ষণ শীব্রং রঘুত্ম!॥৬১

কেশিল্যানন্দ্ৰহ্মন রামচন্দ্র যে যে বাপ পরিত্যাগা করিরাছিলন, সেই দকল মহাপরাক্রমদৈত্যকে নিপাত করিতে অসমর্থ হওরার, তিনি চিন্তাকুলিত হুইলে, বিভীষণ তাঁহার সমীপার্জী হুইরা, রাঘবকে ব্রহ্মনত বন বিষয় উল্লেখ করিলেন এবং কহিলেন—হে রামচন্দ্র! ভগবান্ ব্রহ্মা ইহাকে এই বর দিয়াছিলেন যে, তাঁহার মন্তক বার বার বিচ্ছিন্ন হুইলেও গুনরার উৎপন্ন হুইবে, কিছুভেই মৃত্যু হুইবে না। ৪০ [৪১ | ৪২ | ৪৩ | ৪৪ | ৪৫ | ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ |

হে রাঘব! রাবণের মাওলাকার নাভিগতে অমৃত আছে, আপনি আয়োজ ছারা ভাছা লোষণ করিলে উহার মৃত্যু ইইবে; রামচন্দ্র বিভীষণের বাকা প্রবণ করিরা লঘু হত্তে পাব-কাজে শরাসনে নর্টী শর সংবোজন পূর্বক রাজ্সের নাভিদেশ বিশ্ব করিলেন, অনন্তঃ ভাহার মন্তক ছেদন করিয়া ভাহার বাত্ সমন্ত আক্রমণ করিলেন। পরে দশানন ক্রোধ বিহ্বল হইর' অতি ভীষণ মহাশৃতি প্রহণ পূর্বক বিভীষণকে বিমাশ কবিবার আশারে তাছা পরিভ্যাগ করিল,রাঘবও হেমভূষিত তীক্ষ্র বাণ ছারা তাছা ভেদন করিরা ফেলিলেন। দশাননের ছির শীর্ষ হউতে তেজ্ঞোপগম হই তেলাগিল, স্মুভরাং রক্ষ্ণ বিকৃতরূপী হইল; রাবণ প্রধান মন্তক ও হস্ত সম্বলিত হইয়া রিংল; পরে প্নর্বার কোপান্থিত হইয়া বিবিধ অন্ত্রশন্ত জালে রাম্চন্তরে আক্রম করিল, প্রীরামও অবিরল ধারার শার র্ফিক্রিতে লাগিলেন, অনন্তর ফুইজনে লোম হর্ষণ তুমুল সংগ্রোম হইতে লাগিলে। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮।

অনস্তর ইন্দ্র সাংখি মাতলী জীৱামচক্রকে স্মারণ করাইরা দিয়া কঞ্লি—হে রঘুবর! রাবণ বিনাশ হেতু ব্রহ্ম অন্তর দীত্র বিনাশকলে প্রথিতো যা সুরৈ সোহস্ত বর্ত্ত ।
উত্মান্ত ন চৈত্রা চেত্রবং রাঘব। দ্বা। ৬২

নৈব শীক্ষ প্রভা । বধ্যা বধ্য এব হি মর্মাণি ।
ততঃ সংস্মারিতো রামক্তেন বাক্যেন মাতলেঃ ৬৩

জ্ঞাহ সশরং দীপ্তং নিঃশ্বনন্তমিবোরগম্।
যার পাশ্বে তু পবনং কলে ভাক্ষরপাবকো। ৬৪।
শ্বীর্মাকাশ্ময়ং গৌরবে মেরুমন্দরৌ।
প্রবিশ্বি চ বিন্যন্তা লোকপালা মহৌজনা। ৬৫।
জ্যাত্রশানানং বপুষা শান্তভাক্ষরবর্চনা।
তম্প্রমন্তং লোকানাং ভয়নাশন্মন্তুত্ম। ৬৮।।
অভিমন্ত্র হতো রামস্তং মহেবুং মহাভুজঃ।
বেদপ্রেইক্তেন বিধিনা সন্দধ্যে কাম্মুকে বলী॥ ৬৭

গবিতাগি ককন, উহার বিনাশ বিষয়ে দেবতাদিগের দ্বারা বাহা কথিত হইরছে তাহা অন্যই ছইবে, কিন্তু হে রাঘব! জনা কোন শর হারা উহার মন্তক ছিল্ল ছইবে না, হে প্রান্থা উহার মন্তক ছিল্ল ছইবে না, হে প্রান্থা উহার মন্তক ছেলনে বিনাশ নাই, তবে উর্ফুল বিদ্ধা ইলেই উহার মৃত্যু হইবে। মান্তলি বাক্যে প্রীরামচস্ত্রের স্মরণ পথে রাবণবধ বিষয় জাগরক হইলে, তিনি সগর্জা আনিবিষ সদৃশ ও সুবীপ্রায়মাণ শর আহণ করিলেন; তাহার পার্ছে পারন—ফলকে স্থাানি সমন্তিত—শরীর জাকাশময় অর্থাৎ ব্যাপকতা ছেতু ছিরণাগর্জ—গরীর জাকাশময় অর্থাৎ ব্যাপকতা ছেতু ছিরণাগর্জ—গৌরবে মেন্ত পর্বত সদৃশ—মহাতেজপ্রী শোকপাল সকলের বলপ্রকাশ পায়—বাহার দেহের কান্তি মাধ্যাত্রিক সৌর কিরণকেও লক্ষিত করে—মহাতেজ প্রীরামচস্ত্র প্র দার্দ্ধান স্বান্তন

তিষ্মিন্ সন্ধীয়মানে রাঘবেণ শরেন্তেমে।
সর্বভূতানি বিজেক্ষ্চাল চ বস্থারা।। ৬৮॥
স বাবণায় সংক্রুদ্ধা ভূশমানম্য কার্ম্ কম্।
চিক্ষেপ পরমায়ত্তসমস্তং মর্মঘাতিনম্ ॥ ৬৯॥
স বজ্র ইব দুর্ম্বর্ধা বক্রপাণিবিদর্জিতঃ।
কতান্ত ইব ঘোরাস্যো নাপতজাবণোরিস। ৭০।
স নিম্প্রো মহাঘোরঃ শরীরান্তকরঃ পরঃ।
বিভেদ হৃদয়ং ভূর্ণং রাবণস্য মহাত্মনঃ। ৭১।
রা ণ্স্যাহরৎপ্রাণান্ বিবেশ ধর্ণীতলে।
স শরো রাবণং হত্বা রামভূলীরমাবিশ্ব ॥ ৭২॥
তস্য হস্তাৎ প্রাত্তি সশরং কার্মকং মহব।
গতান্তর্জমিবেগেন রাক্ষসেন্ডোহপতন্ত্রি।। ৭৩
তং দৃষ্ণী পতিতং ভূমৌ হতশেষাক্ষ রাক্ষসাঃ।
হতনাথ ভয়ত্ত্রা ভূজেরুং স্ক্রিতো দিশম্॥ ৭৪॥

আরোপন করিলেন, রঘুবীর সেই মহাশর সন্ধান করিলে সমস্ত জীব ভরাকুলিত ও বসুন্ধরা কম্পমানা হইতে লাগিল। ১৬১১৬২।৬৬।৬৪।৬৫।৬৮।৬৮।

মহাবীর রামচন্দ্র সাতিশন্ন ক্রুছ হইরা চাপাক্ষণ পূর্বক সেই সর্বাণতী মহান্ত্র পরিত্যাগ করিলেন—বাণ রামচন্দ্রের বজু তুল্য হস্ত পরিত্যক্ত হইর। ক্রতান্তের ন্যান্ন দশাননের উপরে নিপতিত হইল। সেই শরীরান্তকর মুহাঘোর শর পতিত হইরা মহাত্মা রাবণের হৃদর অতি শীত্র ভেদ করিল; অনস্তর রাবণ সংজ্ঞা বিহীন হইরা ধরণীতলে নিপতিত হইলে ঐ মহাত্ম রক্ষণতিকে বিনাশ করিয়া প্রত্যাবর্ত্তন পূর্বক রামচন্দ্রের তুণীর মধ্যে প্রবেশ করিল। অনন্তর রাবণের হস্ত হইতে সশর শরাসন শীত্র স্থলিত হইল—এবং অবশিষ্ট রাক্ষণেরা দশাননকে ধ্বণীতলে পতিত দেখিয়া মহা ত্রাসিত হওত চারিদিকে প্লায়ন করিতে লাগিল। প্রদিকে বানরেরা রাবণ

দশগ্রীবস্য নিধনং বিজয়ং রাঘবস্য চ।
ততো বিনেছঃ সংস্থা বানরা জিত কাশিনঃ ॥৭৫।
বদন্তো রামবিজয়ং রাবণস্য চ তদ্বধ্য।
অথান্তরীক্ষে ব্যনদৃৎ সৌমান্ত্রিদশদুন্তুভিঃ॥ ৭৬
পপাত পুষ্পার্টিশ্চ সমস্তাদ্রাঘনোপরি।
তুই,বুরুনিয়ং দিদ্ধাশ্চারণাশ্চ দিবৌকসং॥৭৭॥
অথান্তরীক্ষে ন্সূতুঃ সর্বতোহস্পরসো মুদা।
রাবণস্য চ দেহোপথ জ্যোদিরাদিত্যবং ক্ষুব্ছ।৭৮
প্রবিশে রগুল্রেষ্ঠং দেবানাং পশ্যতাং সতাম্য।
দেবা উচুালো ভাগ্যং রাবণস্য মহাত্মনঃ। ৭৯।
বয়ং তু স ত্রিকা দেবা বি স্থাঃ কারণ্যভাজনাং।
ভয়দুংগানিভিব্যাপ্তাঃ সংসারে পরিবন্তিনিঃ॥ ৮০

শ্বরং ভুরাক্ষণঃ ক্রো ব্রহ্মহাতী তোমসং।
পরদাররতো বিশ্বদেষী তাপসহিংসকং। ৮১।
পশাৎস্থ সর্বভূতেষু রামমেন প্রবিত্তনান ।
এবং ক্রবৎস্থ দেবেষু নারদং প্রাহ সন্মিতঃ ॥ ৮২
শ্রুতার স্থরা! যুরং ধর্মাহজ্ববিচক্ষণাঃ।
রাবণো রাঘবদেষাদনিশং ক্লদি ভাবয়ন্ ॥ ৮০॥
ভূতৈয়ঃ সহ সদা রামচরিত্রং দ্বেষশংযুতঃ।
প্রায়মাৎ স্থনিধনং ভ্রাৎ সর্বত্র রাঘবম্ ॥৮৯
পশ্যমনুদিনং স্থার রামমেনারুপশ্যভি।
ক্রোধোহণি রাবণস্যান্ত গুরুবোধাধিকে। হতন্ত্র রাম্যন নিহতশ্যন্তে নিধু তিশোবকল্ময়ঃ।
রাম্যায়জ্বমেরাপ রাবণো মুক্তবন্ধনং ॥ ৮৬॥

নিধন প্রাপ্ত ইইরাছে ও শ্রীরামচন্দ্র বিজ্ঞানী ইইরাছেন সন্দর্শনে যার পর নাই হুটোননা হইল—এবং কেহ"রাম জয়" "রাম জয়" শব্দ কেহ তৎকর্জ্ক রাবণ বধ শব্দ আরম্ভ করিল—ওদিকে অন্তরীক্ষে সেন্ম্যভাবানপর দেবগণ সানন্দে হুন্দুভি প্রনি এবং মধ্যে মধ্যে রাঘবোপরি প্রস্পান্তি করিছে লাগিলেন। ভংকালে মুনিগণও সিদ্ধা, চারণ এবং সন্ধর্ম প্রভৃতি দিবে কিস্কাণ প্রধান শক্ত নিধনে সহাস্য বদন ইইলেন এবং অপ্সরাগণ সাহলাদে হৃত্য করিছে লাগিল। ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২ । ৭৩। ৭৪। ৭৫। ৭৬। ৭৭।

এক্ষণে রাবণের দেছ হইতে স্থোর ন্যার জ্যোতি বছির্যত ছইয়া দেবতাদিগের সমক্ষে রঘুশ্রেই রামচল্রের শরীর মধ্যে প্রেশ কবিল—তদ্ধনি উঁথারা পরস্পর কহিতে লাগিলেন যে, মণাজা রাবণের কি সৌভাগ্য! আমরা সাজ্তিক দেবতা—বিষ্ণুর দল্লার পাত্র, ভয় ভ্রোদি পরিব্যাপ্ত, এবং সংসারে শিপ্ত থাকিঃ। কেবল ইতন্ততঃ করিয়া থাকি, কিন্ত এই রাক্ষ্য

क्ष्य, विश्वयोधी, माहिन्य श्रव्यायी, श्रद्धी व्याप अर्था विश्वया अर्था श्रद्धा विश्वया अर्था विश्वया अर्था विश्वया वि

মহাত্মা রাবণ হেষ সংযুক্ত হইলেও ওক সারণদির নিকট তৃতা সমব্যাহারে জীবাম চরিত্র শ্রবণ করিরাও তাঁহার হৃদর মধ্যে শ্রিরামকে সর্বাণ ভাবনা করিরা— এবং শ্রীরাম হইতে পীর নিধন হইবে ওমিরা ভয়প্রযুক্ত কি স্বপ্রে কি জাপ্রাভাবস্থায় সন্ধান সকল সমর রাম দর্শন করিতেন; এক্ষণে শ্রীরামকে সম্প্রে দেবির লিও ক্রুদ্ধ হইলেও স্তর্মপদেশ খেতু ভাহার দিওা ক্রান জাম্যাছে— অধুনা রামকর্ত্বক নিছত হইরা রাবণ সক্ষ পাপ ও বন্ধন হইতে বিমুক্ত হইরা ক্রামের সাযুক্তা প্রাপ্ত হইদেন। ১৮৩ চি৪ চি৫ চিঞ্

পাপিজো বা ছুরায়া প্রধনপরদারেষ্ সক্তো যদি স্যামিত্যং স্লেহাৎ ভয়াদ্বা রঘুকুলতিলকং ভাবয়ন্ সম্পরেতঃ।
ভূড়া শুদ্ধান্তরকো ভবশতক্রিতানেকদোধ্যবিষ্কাঃ
স:ভা বামস্য বিক্ষোঃ স্ববর-

বিষ্কৃতং যাতি বৈকুণ্ঠনাদ্যম্ । ৮৭ ।

হত্বা যুদ্ধে দশাস্যং ত্তিভুবনবিষমং বামহন্তেন চাপং
ভুমৌ বিষ্টভ্য তিষ্ঠন্নিত রকরপৃতং ভ্রাময়ন্ বাণমেকম্
মার্ক্রোপান্তনেত্তঃ শরদলিতবপুঃসূর্য্যকোটিপ্রকাশো
বীরজীবন্ধুরাকঃ ত্তিদশপতিমুতঃ পাতু মাং বীররামঃ

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্মাদে
যুদ্ধকাথে একাদশোহধ্যার:।

বলাপি রাবণ পাপান্ধা বা ছুরান্ধা ছইরাও কিন্তা নিরস্তর পর-ধন ও পরদারে সাহজ গাকিরাও প্রতিদ্বিদ্য ভক্তিভাবে কিন্তা ভবে রমুকুলভিলক শ্রীরামকে চিন্তা করত মরিয়াছে; জ্ঞাত্তব সে শুদ্ধান্ধা ও সংসার শতজনিত বছদোধ ছইতে বিমুক্ত ছল্মা, ভংক্ষণাং প্রথমেই মহাবিষ্ণু শ্রীরানের স্কুরবর সেবিক্ত বৈকৃত্বধানে গমন করিয়াছে। মুদ্ধে ত্রিস্কুবনক্তক

দশাননকে বিনাশ করিয়া, বামছত্তে চাপা ভূমে রক্ষা করতঃ
এবং দক্ষিণ হল্তে একটা বাণ ধারণ করিয়া ঘূর্ণায়মান করছঃ
চক্ষুদ্ধ আরক্তবর্ণ করিয়া দশুগ্রমান কোটীস্থাপ্রভারিত
শরক্ষত্তশ্দীর, বীরাপ্রাণণ্য, বন্ধুর-অঙ্গ, এবং ভিছশ প্তির স্কত
এইরূপ মহাবীর শ্রীরাম নিয়তঃ আমাকে বক্ষা ককণ।

ইতি শীষদধ্যাব্যরামারণে উমানছেশ্বরস্থাবে যুদ্ধকাওে একাদশোহধ্যারঃ।

द्योपर भार्या है।

রামো বিভাষণং দৃষ্ট্বা হন্মন্তং তথাঞ্চনম ।
লক্ষণং কপিরাজং চ জাম্বন্তং তথাপ্রান্ ॥ ১
পরিতুটেন মনসা সর্বানেবাব্রবীদ্ধান ।
ভবতাং বাহুবীর্যোগ নিহতো রাবণো ময়া ॥ ২ ॥
কীর্ত্তিঃ স্থাসতি বং পুণ্যা যাবচ্চন্দ্রনিকরৌ ।
কীর্ত্তিরিষ্যন্তি ভবতাং কথাং ত্রৈলোক্যপাবনীম্ ॥ ৩
যবোপেতাং কলিহ্রাং মাস্যন্তি পরমাং গতিম্ ।
এতন্মিমন্তরে দৃষ্ট্বা রাবণং পতিতং ভূবি ॥ ৪ ॥
মন্দোদরীমুখাঃ সর্কাঃ ব্রেয়ো রাবণপালিতাং ।

পতিতা রাবণগাথে শোচন্তঃ পর্বান্থন্থন্থ । ৫ ।
বিতীষণঃ শুশোচার্তো শোকেন মত্তান্তঃ।
পতিতো রাবণগাথে বছধা পর্যদেশক । ৬।
রামস্ত লক্ষ্মণং প্রাহ বোধয়স্থ বিভীষণ্য।
করোতু ভাতৃসংক্ষারং কিং বিলম্মেন ? ানদ!
স্তিয়ো মন্দোদরীমুখ্যাঃ পতিতা বিলপ্তি চ।
নিবর্যুত্ তাঃ সর্ব্বা রাক্ষনী রাবণপ্রিয়াঃ ৮ ॥
এবমুক্তোহ্থ রামেণ লক্ষ্মণোহগাদ্বিভীষণম্।
উবাচ মৃতকোপান্তে পতিতং মৃতকোপম্মা। ১ ॥

অনন্তর জীহর জীপাব্দতী সরিধানে বলিয়াছিলেন।
অনন্তর শীরামচন্দ্র যুদ্ধান্তে বিভীষণ, হন্তমান, অঙ্গদ, লক্ষ্মণ,
কপিবান্ধ স্থানি, জান্ববাদ্ এবং অন্যান্য বানরগণকে স্থার
সরিধানে উপন্থিত অবলোকন করিয়া সন্তুফচিত্তে কহিতে
লাগিলেন—হে বীরগণ! অদ্য তোমাদিগেরই বীর্যাবলে ও
সাহাস্যে বাবণ আমা কর্ত্বক রণে বিনদ্ধ ইইল; অভএব আমি
বলিভেতি, দিবাকর ও নিশাকরের অন্তান কাল পর্যান্ত ভোমাদিগের ত্রৈলোক্য পাবনী পুণ্য-কীর্ত্তি মেদিনী স্থামিনী
হইবে; আর কলিকালে এই ভূলোকে লোকে আমাযুক্ত
ভোমাদিগের এই সমস্ত পুণ্য কথা কীর্ত্তন করিয়া মুনিগাণারাধ্যা পরমা গতি প্রাপ্ত হইবে। এই রূপে জীরাম স্বপক্ষ
বোদ্ধ বর্গকে বলিভেছেন, ইত্যবস্থার মন্দোদ্ধী প্রভৃতি রাবণ

গালিতা দ্রীগণ, লক্ষেশ্বকে রণে নিহত এবং ধরায় নিপ্তিত দর্শনে, ভাছার পাদ যুগলের অগ্রে পতিত হইয়া উচ্চৈঃস্বরে বহু বিলাপ ও পরিতাপ কবিতে লাগিল। ১।২।৩।৪।৫। অনন্তর জীরাম, বিভীষণ ও মন্দোদরী প্রভৃতি দ্রীগণকে সাম্বনা করিবার নিমিত, লক্ষ্মণকে আজ্ঞা প্রদান করিলেন। স্বিবেকী লক্ষ্মণও জ্যেতের আজ্ঞা শিরোধার্গ্য করিয়া অভ্যন্ত শোকাবিষ্ট ও রোক্ষদ্যমান বিভীষণকে বলিতে লাগিলেন, হে ধার্মিকবর বিভীষণ! তুমি অপ্রো স্থীয় শোক পরিত্যাগ পূর্বক স্থামী সমুধে নিপ্তিতা বিলাপবারিণী মন্দোদরী প্রভৃতি জ্যেন্ঠ ভাতৃবধূদিগকে সাম্বনা করতঃ প্রকাং ভাতৃ সংস্কার কর, আর বিলম্ব করিবার প্রয়োগন নাই। দেখ, সথে বিভীষণ! তুমি যাহার জন্য ৫০ ছেগ ও

শোকেন মহতাবিউৎ সৌমিত্তিরিদমন্ত্রীৎ!।

যং শোচলি ত্বং দুংখেন কোহয়ং তব ? বিভীষণ।
ত্বং বাল্য কতমঃ সৃষ্টেঃ পুরেদানীমতঃপরম্।

যদ্বত্তোযোঘপতিতাঃ নিকতা যান্তি তদ্বশা। ১১।

সংযুদ্ধান্তে বিযুদ্ধান্তে তথা কালেন দেহিনঃ।

যথা ধানাস্থ বৈ ধানা তবন্তি ন তবন্তি চ। ১২।

এবং ভূতেযু ভূতানি প্রেরিভানীশমায়য়া।
ত্বং চেমে বয়মন্যে চ ভূল্যাঃ কালবশোদ্ভবাঃ। ১৩
কন্মমৃত্যু যদা যন্মাক্রদা তন্মান্ত্রবিষতেঃ।

ঈশ্বঃ সর্বাভূতানি ভূতিঃ সৃজতি হন্যজঃ॥ ১৪॥
আল্লাসুটিরস্বতিপ্রেরনপেক্ষোহপি বালবং।

দেহেন দেহিনো জীবা দেহাদেহোঃ ভিজায়তে॥
বীজাদেব যথা বীজং দেহান্য ইব শাশ্বঃ।
দেহিদেহবিভাগোয়মবিবেককৃতঃ পুরা।। ১৬।।
নানাত্বং জন্মনাশন্দ ক্ষায়ো র দ্বঃ ক্রিয়াফলম্।
দেই রাভান্তভেদ্ধা যথাই গ্রেদ ক্রিবিকিয়াঃ॥ ১৭॥
ত ইমে দেহসংযোগান্তনা ভস্তাসদ্প্রহাৎ।
প্রথা যথা তথা চান্যৎ ধাায়তো সদসদ্প্রহাৎ।
প্রস্তাধ্যানহং ভাবাস্তদা ভাতি ন সংস্তিঃ।
জীবতোইপি তথা তদ্ধদিম্কেস্যানহক্ষ্তেঃ॥ ১৯॥
তন্মান্মায়ামনোধর্মাং জহ্যহংম্যতাভ্রম্ম্।
রামভদ্যে ভগবতি মনো ধেহ্যাত্মনীশ্বের॥ ২০॥

শোক করিতেছ, এ বাজি তোমার কে ? আর স্থির পূর্বে,
তুমিই বা ইহার কে ছিলে? এক্ষণেই বা কে হয়, এবং
পরেই বা কে হইবে? যেরপ জলজোতে পভিত্র বালী
সকল, তথশভাপার হইয়া সর্বক্ষণ সংস্কৃতি বিস্তই হইতেছে,
যেমন যবাদির মধ্যে কোনটী উর্দিকে কোন কোনটী
অধোদিকে রন্ধি পার এবং স্মির্বহেতু কোন কোনটা নফ্ট হয়;
দেইরপ জীবাআরে কালবশে শ্রীর সহ নিরম্ভর সংযোগ
বিয়োগ প্রাপ্ত হইতেছে। এবং প্রেরিড জীব সমূহ জীবেই
সংযুক্ত হয়।

অভএব তুমি, আমি এবং অন্যে এই সমস্তই তুল্য ও কাল-বশতাপন্ন। যে দিবস যে সময়ে যাহার জন্ম, এবং যে দিন যেইক্ষণে যাহার মৃত্যু ছইবে, তাহা কেছ উল্লেখন করিতে দক্ষম নছে। কেবল স্টিকর্তা অজ্ঞ, সর্বাক্ষণ আগনার স্থয় এবং অস্বাধীন ভূতদান ভূত সকলকে স্জ্ঞনও সংহার ক্ষরিতেছেন। স্টেক্তা এইরূপ সার্বিক্ষণ নির্প্লেক্ষ ছইয়া বালকের নাায় ক্রীড়া করিতেছেন। নিত্য আত্মা সর্বাদা দেহ
সংযোগে জ্রীব হয়; যেমন নীক হইতে বীজের উৎপত্তি ইয়া
থাকে। সেইরপদেহ হইছেপুনঃ দেহের উৎপত্তি হয়। এই দেহী
ও দেহের বিভাগা পূর্কে করা হয় নাই; একারণ তৃমি শোকে
এরপ কাতর হইতেছ। কর্ম জন্য ফল, রুম্ম, নালা, কয় ও
রিজি নানা প্রকার হইয়া পাকে; সেই সমস্ত ধর্ম দ্রুটার নিকট্ট
প্রকাশ পায়। যেমন অগ্নিতে কাঠের বিকার প্রাপ্ত হয়;
বস্তুতঃ কাঠের কিছুই নক হয় লা, কেবল অসদ্জ্ঞান প্রমুক্ত
সেই সকল ধর্ম গুলি আত্মাতে প্রকাশ, পায়—বেরপ জ্বলন্
ছত্রে ক্রমে জীব সকল মিলিত হইয়া জীবগণ সমরে
গমন করে, সেইরপ সংসারে মিলিত হইয়া জীবগণ সমরে
সকলেই স্থানাত্তরিত হয়। বেরপ প্রস্তুপ্ত জনের জীবন সংস্কৃত্ত
ভাহে ইত্যাকার জ্ঞানের অভাবে সে সময়ে আ্রণ হয় না,
সেইরপ জীবমুক্ত জনও অহকার হইতে বিমুক্ত হইয়া
থাকে। সেই হেতু মায়ার কার্য যে অহকার ও মমতা, তাহা

সর্ব্বভূতাত্মনি পরে মায়ামানুষ্কপিণি। ৰাহ্যেনিদ্ৰয়াৰ্থসম্বন্ধাৎ ত্যাজয়িত্বা মন: শনৈ: ৷ ২১ ভত্ত দোষান দর্শায়ত্বা রামানন্দে নিযোক্ষয়। দেহ বুদ্ধ্যা ভবেষাতা পিতা মাতা স্বৃহুৎপ্রিয়: ॥২২ বিলক্ষণং যদ। দেহাৎ জানাত্যাত্মনমাত্মনা। তদা ক: ক্ষ্য বা বন্ধুভূতি৷ মাতা পিতা স্থৃহ্ছৎ ? 🏾 মিথ্যাক্তানবশাজ্জাতা দারাগারাদয়: সদা। मकामग्रम्छ विषया विविधारेम्छ मन्नमः ॥ २८॥ বলং কোশো ভূত্যবর্গো রাজ্যং ভূমি: ফুদাদয়:। অক্তানজত্বাৎদর্বে তে কণ্সঙ্গমভঙ্গুরা:। ২৫।

ভূতং ভবিষাদভক্ষন্ বর্ত্তমানমধাচরন্। विङ्बच यथानगावः ভवरमारेषन निश्रारम ॥ ২१ ॥ আজ্ঞাপয়তি রামস্তাং যদ্ভাতু: সাম্পরায়িকম্ তৎ কুরুষ যথাশাস্ত্রং রুদতীশ্চাপি যোষিতঃ।। ২৮ নিবারয় মহাবুছে। লক্ষাং গচ্ছন্ত মা চিরম্। শ্ৰুত্বা যথাবদ্বচনং লক্ষণস্য বিভীয**ণ**ঃ। ২৯। ত্যক্তা শোকং চ মোহং চ রামপাশ মুপাগমৎ। विभूगा वृक्षा धर्माटका धर्मार्थमहिख्द वहः ॥ ७०॥ রামদৈরবান্তরভার্থমুন্তরং পর্য্যভাষত। নৃশংসমনৃতং ক্ররং ত্যক্তধর্মব্রতং প্রভো ! ॥ ৬১: অথোত্তিষ্ঠ হৃদা রামং ভাবয়ন্ ভক্তিভাবিতম্ ॥২৬॥ নাহের্গাইস্মি দেব ! সংক্ষ্ত্রং পর্দারগভিমর্শিনম ।

ছ্যাগ করিয়া, ভগবান্ রামভদ্র ঈখরে মনোনিবেশ কর। 101416121201221261261261241616 1241221201

সর্বভূতের আত্মান্তরণ মারা মাতুষরপী। আর বাছ্যেন্ত্রিয়ের विषय मञ्चक श्रेष्ठ मनाक निद्व कदाहेन्ना, जाहाट जार নেখাইয়া সভত রামানন্দে নিবিষ্ট কর। তাহা হইলেই অন্তে मुक्ति भन (मरे भार्म भन गांड कतित्व। (कवन व्यनिष्ठा (मर-বুদ্ধি দারা পিতা, মাতা, ভাতা, সুফদ্ এবং প্রিরাদি প্রিরবস্ক ৰলিয়া বোধ হয়। কিন্তু যথন আত্মা শহীর হইতে বিল্লিষ্ট হয়, তথন কে কাহার ৰমু, বা কে কাহার ভাতা, পিডা, খাতাও স্কৃদ্ ইয়া থাকে? ওদ্ধ মিথ্যা জালের বশতাপর সক্ষ হইয়া ক্লভসুর দারাগারাদি শব্দাদি বিষয়, বিবিধ সম্পদ, ৰল, কোষ, ভ্তাবৰ্গ, রাজা, ভূমি এবং প্ৰাদি সকল আপনার বোধ ছইরা থাকে। অভএব বলিভেছি তুমি শীস্ত গাত্রেরখান করিয়া, ছদত্ত্বে ভাক্তিভাবে রামরূপ চিতাকরতঃ

তাঁহার দেবার নিযুক্ত হও ; এবং প্রতিদিন আবস্ক রাজ্যাদি ভোগকরতঃ, ভূত, ভবিষাৎ, বর্ত্তমান ভক্তনা সমাচরণ পূর্ব্বক সভ্যপথাশ্ররী হইরা বিহার কর, ল্রান্তিক্রমেও ভবদোষে আর লিগু ছইও না। দেখ, জীরাম ডোমাকে আজা করিয়াছেন তুমি অবিলয়ে যথাশান্ত জোঠলাভার শেষ ক্রিয়া কর, আর (माकार्का (ब्राक्नमामा शांवनमहिशीनागटक निवादन कद्रछः, সত্ত্বর লক্ষার প্রভিগমন করিতে আদেশ কর।

অনস্তর অভিবৃদ্ধি সম্পন্ন ধার্মিকবর বিভীষণ, মহাস্কা লক্ষাণের এইরূপ হিত্তানক বাক্য প্রবণ পূর্বক, শোক মোহাদি পরিত্যাগ করিয়া রামণাথে আগমন করতঃ ক্লডা-ঞ্চল পুটে দণ্ডারমান হইন।

অতঃপর ধর্মপরারণ বিভীষণ সক্ষাবের সেই সমস্ত ধর্মার্থ সংহিত্যাক্য বৃদ্ধিদারা মনে মনে বিবেচনা কিরিয়া, কেবল জীৱামের সেবার নিমিত্ত উত্তর প্রদান করিল। হে প্রিয় वेद्या। कोर्पान कामांदन अवन कांगा कविदन मा, प्रयुक्त

শ্রুর ভদ্বতং প্রীতো রামো বচনমন্ত্রনী ।। ৩২॥ মরণান্তানি বৈরাণি নির্কৃতং ন প্রয়োজনম্। ক্রিয়তামদ্য দংক্ষারো মমাপ্যেষ যথা তব। রামাজ্ঞাং শিরদা পূড়া শীঘুমের বিভীষণঃ। সাস্ত্রাকৈর্মেহাবুদ্ধিং রাজ্ঞীং মন্দেদেরীং তদা ।৩৪ সালু রাম স ধর্মান্ত্রা ধর্মবুদ্ধিবিভীষণঃ। জরয়ামাস ধর্মাক্রা ধর্মবুদ্ধিবিভীষণঃ। জরয়ামাস ধর্মাক্রঃ সংক্ষারার্থং স্ববান্ধানাল্য। ৩৫॥ চিত্যাং নিবেশ্য বিধিকৎপিতৃমেধবিধানতঃ। আহিতাগ্রের্যথা কার্য ং রাবণস্য বিভীষণঃ। ৩৬। তথৈর সর্বমকোদ্বন্ধুনিঃ সহ মন্ত্রিভিঃ। দদৌ চ পাবকং তন্ত্র বিধিযুক্তং বিভীষণঃ॥ ৩৭॥ স্লান্থা কৈরেণ তিলান্ দভ্যাভিমিশ্রিতান্। উদকেন চ সন্মিশ্রান প্রান্য বিধিপুর্বক্ষম্য ৩৮।

যে জন নির্দার, মিখ্যাবাদী, অভিশয় খল, শ্বধর্মত্যাগী এবং
নিয়ত পরদারাশক; তাছার অস্ত্রেষ্টি ক্রিয়ারপ সংক্ষার
করিতে আমি কোন অংশেই যোগ্য নহি। তথন জ্রীরাম
বিভীষণের এইরপ সগর্ম বাক্য শ্রবণ পূর্বক, আহলাদে পুলকিত হইয়া, তাছাকে প্ররুত্তি দিবার মানসে বলিতে লাগিলেন। দেখ সথে! মহুধ্যের বৈরভা ভাছার মরনাস্ত পর্যান্ত,
একবার মরিলে আর শক্রতায় ফল কি? অভএব বলি সত্বর
ইংরে সংক্ষার কর। ৩২। ৩৩।

অনস্তর ধর্মাজ্যা ধর্মপর বিভীষণ, শ্রীরামের আগজ্ঞা মস্তক্র ধারণ পূর্যক তৎকালে বৃদ্ধিমতী মন্দোদরী রাজীকে প্রবোধ বাকেন সাজ্যা করতঃ, স্থীন বাস্ক্রণণ সমভিব্যাছারে করিরা, জাতিশীত্র জ্যেষ্টের জ্যে ক্টিক্রিয়া করিতে প্রস্তুত্বলৈন। জনস্তব্য ধার্মিকরর বিভীষণ, আজুীর বন্ধু এবং বাক্ষ্রণ

প্রদার চোদকং তামৈ মূর্দ্ধা চৈনং প্রণমা চ।
তাং ক্রিয়েংসুনরামাস সাস্থ্যুক্তা পুনং পুনং ॥ ৬৯
গম্যতামিতি তাং সর্বা বিবিশুর্নগরং তদা।
প্রাবিষ্টাস্থ চ সর্বাস্থ্য রাক্ষনীয়ু বিভীষ্ণং ॥ ৪০ ॥
রামপার্শ মূপাগতা তদা তিষ্ঠছিনীতনং।
রামোহিপি সহ দৈন্যেন স্থানার সকলক্ষাণং ॥ ৪১ ॥
হর্ষ লেভে রিপুন্ হত্বা যথা রব্ধে শতক্রত্বং।
মাতলিক্ষ তদা রামং পরিক্রমান্তিবক্ষা চ । ৪২ ।
সমুজ্ঞাতক্ষ রামেণ যথো স্বর্গং বিহার্সা।
তত্তো ক্রিমনা রামো লক্ষ্মণং চেদ্মপ্রবীৎ ॥ ৪২ ॥

তদনন্তর শ্রীরাম লক্ষণ, স্ক্রীব ও সৈনাগণ সহ র্ত্তাক্সকে বিনষ্ট ক^{্রি}য়া র্ত্তহার ন্যায়, পরম শক্ত লকাধিপতি রাবণকে নিধন করতঃ অভিশয় আনন্দ লাভ করিলেন। ইতাবসরে বাসবদার্থি মাত্লী জীরাম্ফে ক্টার্গলিপুটে প্রথক্ষিণ ও প্রথায় বিভীষণায় মে লক্ষারাজাং দন্তং পুরেব হি।

ইদানীমপি গড়া তং লক্ষামধ্যে বিভীষণম্॥ ৪৪॥
অভিষেচয় বিশৈচ মন্ত্রবিদ্ধিপূর্বকম্।
ইজুাল্ডো লক্ষাণস্তর্গং জগাম সহ বানরৈঃ॥ ৪৫॥
লক্ষাং সূবর্ণকলশোঃ সমুদ্রজলসংযুতৈঃ।
অভিষেকং শুভং চক্রে রাক্ষসেন্দ্রস্য ধীমতঃ॥ ৪৬
ততঃ পৌরজনৈঃ সার্দ্ধং নানোপায়নপাণিভিঃ॥
বিভীষণঃ সদেশমিত্রিরুপায়নপুরস্কৃতঃ॥ ৪৭॥
দণ্ডপ্রণামমকরোজামস্যাক্রিইকর্মণঃ।
রামো বিভীষণং দৃষ্টা প্রাপ্তরাজ্যং মুদান্থিতঃ।৪৮

কৃতকুত্যনিবাত্মানমন্ত সহানুতঃ।

কৃতীবং চ সমালিক্ষ্য রামো বাক্যমথান্তবীৎ ॥৪৯॥

সহায়েন ত্ব্যা বীর! কিতো মে রাবণো মহান্।

বিভীষণোহিপি লক্ষায়ামভিষিক্তো ময়ানঘ ! ৫০॥

ততঃ প্রাহ হন্দ্যন্তং পার্ম্ম স্থং বিনয়াম্বিতম্।

বিভীষণস্যাত্মতে গচ্ছ তং রাবণালয়ম্।! ৫১॥

জানক্যৈ সর্ক্মাখ্যাহি রাবণস্য বধাদিক্ম্।

জানক্যাঃ প্রতিবাক্যং মে শীন্তমেব নিবেদয়॥ ৫২

এবমাজ্ঞাপিতো ধীমান্ রামেণ প্রনাত্মজঃ।

প্রবিবেশ পুরীং লক্ষাং পূজামানে। নিশাচরেঃ ॥৫৩

পুরঃসর তাঁহার অনুজাত হইয়া লকা পরিত্যাগ করতঃ অর্গে গামন করিল। অতঃপর জীরাম আনন্দিতান্তঃকরণে অনুজ লক্ষাণকে বলিলেন—দেখ লক্ষাণ, আর বিলবে প্রয়োজন নাই, অপ্রো লক্ষার রাজ্য বিভীগণকে দেওরা হউক, তবে একণে তুমি সত্ত্র লকা মধ্যে প্রবেশ করিয়া বিভীষণকে দিছাদিগাের হারা বিধি পূর্বকে লক্ষার রাজসিংহাসনে বসাইয়া সমন্ত্রক অভিযেক করাও। ৪২। ৪৩। ৪৪।

অমনি লক্ষণ জ্যোষ্ঠের আজা শিরোধার্য্য করিয়া বানরগণ সমতিব্যাহারে অবিলম্বে লক্ষার প্রবেশ পূর্বক অগ্রে সমুদ্র-বারি পরিপুরিত, আদ্রেশাখা সমস্থিত স্বর্গ-কলসচয় সভা মধ্যে সংস্থাপন করিয়া পরম মিত্র বিভীষণের অভিষেক ক্রিয়া সমাপ্তি করিলেন। অনস্তর বিভীষণ পোরজন হল্তে বিবিধ উপ-চৌকন অর্পণ পূর্বক সোমিত্রি সহ প্রীরাম সন্ধিষানে আগমন করিলেন। অমনি ভাঁহাকে দশুবংপ্রণাম প্রঃসর কতাঞ্জি-পুটে ভাঁহার পাছে দশুগ্রমান হইলেন। প্রিরামণ্ড বিভীষণকে অত্যানন অন্তব করিয়া, সহানুদ্রে তাঁহাকে আলিজন দান করতঃ আত্মাকে রত্রতার্থ জ্ঞান করিলেন। পরে স্থাবিকে আহ্বান করতঃ, আলিজন প্রদান পূর্বক, কহিতে লাগি-লেন।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮।৪১।

হে বীর! অদ্য ভোমাদিণের সাহায্যে আমাকর্জ্ক পরম শক্র হৃদ্দান্ত দশানন নিধন প্রাপ্ত আর বিভীষণও নিরাপদে রাজ্যাভিষিক হইল। তাহার পর পার্য স্থ পরম ভক্ত মহাবীর হুমুমানকে সমুখে ডাকিয়া বলিলেন। হে পরম হিতকারী হুমুমান! তুমি শীদ্র বন্ধুবর বিভীষণের অনুমতি গ্রহণ করিয়া রাবণালয়ে গমন কর। তথায় উপস্থিত হুইয়া, জ্ঞানকী সমীপে গমন করভঃ, অগ্রেরাবণ বধাদি আদ্যোপান্ত সমন্ত বিষয় বর্ণনা পূর্বক, পশ্চাৎ আমাদিণের ওভ সংবাদ বিজ্ঞাপন করিবে। ৫০। ৫১। ৫২। গ্রহণ শ্রিরাম কর্ভুক আজ্ঞাপিত হুইয়া, ধীশক্তিসম্পর প্রন পূত্র হুম্মান লক্ষাপ্রী প্রবেশপূর্বক নিশাচরগণ দারা পূর্বিভ হুইল। ক্রমে অতি সমিহিত রাবণ,গৃহে প্রবেশ পূরঃসর

প্রবিশা রাবণগৃহং শিংশপামূলমান্তি তাম ।

দদর্শ জানকীং তত্ত্ব কুশাং দীনামনিন্দিতাম ॥ ৫৪॥

রাক্ষনীতিঃ পরিরতাং ধ্যায়ন্তীং রামনেব হি!

বিনয়াবনতো ভূড়া প্রণম্য পবনাত্মকং॥ ৫৫॥

কুচাঞ্জলিপুটো ভূড়া প্রস্থো ভক্ত্যাগ্রতঃ স্থিতঃ।

তং দৃষ্টা জানকী ভূষণীং স্থিতা পূর্বেস্ফ্রিং যথৌ॥

জ্বাড়া তং রামদূতং সা হর্ষাৎসৌম্যমুখী ভবং।

স তাং সৌম্যমুখীং দৃষ্ট্রণ তস্যাঃ পবননন্দনঃ।

রামস্য ভাষিতং সর্বমাখ্যাভুমুগচক্রমে॥ ৫৭॥

দেবি! রামঃ সম্প্রীবো বিভীষণসহায়বাম্।

কুশলী বানরাণাং চ সৈন্যান্দ সহ লক্ষ্মণঃ। ৫৮॥

রাবণং সম্ভূতং হত্বা সবলং সহ মক্তিভিঃ।
ভামাহ কুশলং রামো রাজ্যে কৃত্বা বিভীষণম্ ॥৫৯॥
ত্রুভা ভর্জ্বঃ প্রিয়ং বাক্যং হর্ষদ্গদরা গিরা।
কিংঁ তে প্রিয়ং করোমাদ্য ? ন পশ্যামি জগজ্মে॥
সমান্ত প্রিয়বাক্যমা রত্বান্যাভরণানি চ।
এবমুক্তস্ত বৈদেহ্যা প্রভূবাচ প্রবন্ধমঃ॥ ৬১॥
রত্রীঘাদ্বিধাদ্বাপি দেবরাজ্যাদ্বিশিষাতে।
হতশত্রং বিজয়িনং রামং পশ্যামি স্থান্থ্রম্ ॥৬২॥
তস্য তদ্বচনং ক্রত্বা মৈধিলী প্রাহ মাক্রতিম্।
সর্কে সৌম্যা গুণাঃ সৌম্য! ছয়্যেব পরিনিষ্ঠিতাঃ
রামং দ্বন্ধ্যামি শীন্তং মামাজ্ঞাপরভূ রাঘ্বঃ।

ভধার শিংশপা তক ম্লাশ্রিভা রাক্ষনী পরিরতা চিন্তাপরা অনিন্দিতা কশান্ধী জনকনন্দিনী সীতাকে সন্দর্শন করিল। ক্রমে তথার যাইয়া তাঁচাকে প্রণতি প্রঃসর ভক্তিপূর্বক ক্রতাঞ্লিপুটে তাঁহার সন্মুখে দণ্ডারমান হইল। তথন জ্ঞানকী নহাবীর হন্মানকে নিকটে নিরীক্ষণ করিয়া, ক্ষণেক স্থিরভাবে অবস্থান করতঃ চিন্তা করিছে লাগিলেন, পরে পুর্বে কথা অরণ হওয়াতে যথন শ্রীরামের দৃত বলিয়া পিরিজ্ঞাতা হইলান, তৎক্ষণাৎ স্মিত্মুখে অভিশর আনন্দ অনুভব করিছে লাগিলেন। এমৎকালে প্রনপুত্র মহাবীর জ্ঞাক-ভূহিতাকে হাস্যমুখী দেখিরা আনন্দিতাতঃকরণে রাম-ভাষিত সমস্ত করিছে আরম্ভ করিল। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭।

হে দেবি! প্রীরাম স্থাীব ও বিভীষণের সহায়তায়, জাম্বান্ লক্ষ্মণ এবং বানরগণ সমন্তিব্যাহারে করিয়া মন্ত্রী, বল ও সূত সহ ভ্রাম্মা রাবণকে বিনাশ করতঃ লম্বারাজ্য বিভীষণকে প্রদান পূর্বক, এক্ষণে নিজণ্টক ছইরাছেন। ৫৮।

হতুমানের এইরপ আনন্দজনক বাক্য শ্রবণ করিরা, জানকী হর্ষোৎ কুল নয়নে গদ্গদ বচনে হন্মানকে বলিতে লাগিলেন; দেখ হন্মান্ ! তুমি জাদ্য আমাকে যেরপ প্রিয় কথা শুনাইলে, আমি ত্রৈলোক্যে এমন কোন বস্তু দেখিতে পাই না যে, এক্ষণে ভোমাকে জর্পন করিয়া সম্ভোষ লাভ করি। ভ্রথন সীতার এই কথা শ্রবণে হন্মান্ সহাস্য বদনে তাঁহাকে প্রভাৱর প্রদান করিতে লাগিল। ৬০। ৬১।

হে দেবি! আমার বিবিধ রত্ন সমূহে আর রাজ্যাদি কিছু-তেই প্ররোজন নাই। কেবল শক্রজর করিরা, স্কুছির ভাবা-পল্ল প্রীরামের মুনিগণারাধ্য চরণ বৃগল দর্শন করিব, নির্ভার এই বাসনা। অনস্তর মাক্তির এই বাক্য প্রবণ করিয়া, মৈখিলী পুনর্বার তাহাকে বলিতে লাগিলেন; দেখ বৎস অনিলকুমার! ভবে এক্ষণে সমস্তই সেমাগুণাপল ইইয়াছৈ,

তথেতি তাং নমক্ত্য যথে। দ্রুত্তু রঘূত্তমম্।। ১৪ कानका। ভाषि डर मर्सर द्वाममा। त्था नारवनश्रर। यित्रिमिट्डाक्त्रभाव्रष्ठः कर्मानाः । ७०॥ जार (मवीर (माकन मुखार क्रक्रे मर्ग रेमिथिनीम। এবমুক্তো হসুমতা রামো জ্ঞানবভাং বর: ॥ ৬৬ ॥ মায়াদীতাং পরিত্যক্তং জানকীমনলে স্থিতাম্। আদার্থ মনসা ধ্যাতা রামঃ প্রাহ বিভীষণম্॥৩৭ কোলাহলং প্রকুর্কভের রামপার্মপায়তুঃ। গচ্ছ রাজন্! জানকজামানয়াশু মমান্তিকম্! স্লাতাং বিরজ্বস্তাত্যাৎ সর্বাভরণভূষিতাম্॥ ৬৮॥

বিভীষণোহপি ভচ্ছু জ জগাম সহ মারুতিঃ। রাক্ষদীভিঃ সুরুদ্ধাভিঃ স্বাপরিত্বা তু মৈথিলীম । সর্বাভর্ণসম্পন্নামারোপ্য শিবিকোত্তমে। যাঞ্চীকৈৰ্বহু ভিত্ত প্ৰাং কঞ্চাকাকী বিভিন্ন ভাষ্ তাং দ্রুষাগতাঃ দর্ফে বানরা জনকালাজান্ তান্বাররস্থে বহবঃ সর্বতো বেত্রপাণ্যঃ ॥ ৭১ ॥ দৃষ্টা তাং শিবিৰঢ়াং দূরীদথ রঘুত্তমঃ : ৭২ : বিভীষণ ৷ কিমর্থং তে ? বানরান বার্য়ন্তি হি। পশ্যন্ত বানরাঃ দর্বে মৈথিলীং মাতরং মথা ॥ ৭ :

এবং ত্রিও স্থাপুর হইয়াছ জানিলাম; কিন্তু যাহাতে আমি অভিশীম্ভ জীরামকে দেখি, এবং তিনি আমাকে লইয়া যাইতে অনুমতি করেন, এইরপ করিও। ৬২। ৬৩। ৬৪।

অনম্ভর প্রন্দন, সীতাকে যে আছে৷ বলিয়া, প্রণতি পুরঃসর জ্বয় রাম শাকে জীরাম দর্শনে গমন করিল। আক্রমে হন্মান রামস্মীপে উপস্থিত ছইয়া তাঁছার অংগ্রে দণ্ডার্মান পুর্ব্বক ক্রডাঞ্জলিপুটে জানকীর কথিত সমস্ত বিষয় নিবেদন ক্রিয়া বলিল, ছে দেব! যাঁছার জন্য এই সমস্ত ব্যাপার বটিল, সেই সমাপিত কর্মের ফল প্ররুপ। জনক-ছভিতা, আদ্যাপি রাবণগৃছে অবস্থান করত: আপনার জীচরণ দর্শনাভি-লাষে নিরস্তর সমুৎস্কা রছিয়াছেন; অতএব তাঁছাকে এখানে আনিতে শীত্র অসুমতি কফন। তথন অতি বিজ্ঞতম बपुक्ल जिनक जीदांम, रन्यात्मद बाका खर्ग कविया, माशा-দীতা পরিত্যাগ পূর্বক, অনলম্বিতা বিশুদ্ধচরিত্রা জানকীকে खाउन कतिवात भागाम शत्रम्भित विकीषगरक वनिवाहितन, হে বাজান্। ভূমি শীজ্ঞ গমন কৰিয়া, জনক হৃছিভাকে सानारम छज्वत्य चाम्हामन ७ मर्साच्यत कृषिक कत्रकः, आभाव निक्कि आन्यन करा ७८। ७०। ७७। ७०। ७०।

জাতঃপর বিভীষণ জীরামের এইরপা আপজা জাবণ মাত অভিমাত্র বাতা হইয়া ত্রিতপদে প্রনপুত্র সহ সীতাসি লিধানে উপনীত হইয়া দেখিল, অতি ব্লছা নিশাচ্গীগণ, তাঁহাকে মান করাইয়া, অভি উৎকৃষ্ট বহুমূল্য বত্তে আচ্ছাদ্ন ও সর্বা-লছারে ভূষিত করতঃ, অতি যথে শিবিকোপরি আরোংগ क्रबाहेट्ड एह। उथन विक्रीयन, कानकीत्र गार्ट्य कश्कुक धदः মন্তকে মুকুট প্ৰদান পূৰ্বক বহুসংখ্যক যথিধারী রক্ষ দ্বার শিবিকার চতুর্দ্ধিকে স্থরক্ষিত করিয়া, শ্রীরামের নিকটে আনমুল করিতে লাগিল। এমৎকালে ব্লেরগণ জনকস্মস্থাকৈ দ্ৰ্ন মানুদে শিবিকার উভর পাখে দ্রায়মান হইল। কিব विज्ञानि ब्रक्तकेबा उरक्रमार क शामिशक नियांत्रम कब्रड: তথা ছইতে স্থানান্তরিত করিয়া দিল। তাছাতে বানর নিকর যথেক্ট অভিমানিত হইরা মহাকোলাছলের সহিত রামপার্থে আসিয়া উপস্তি হইল।৬৯।৭০।৭১। १८।

অনস্তৱ প্ৰীরাম, ভূর হইতে সীভাকে শিবিকারচা এবং কপিকুলকে নিকৎসাহ ও সানমুখ নদৰ্শন করিয়া, কিঞ্ছিৎ क्छेजारव विकीयगरक बनिएक गाणिएनन । एमर मर्थ विकीयन!

लानहादिन मा चाकू कानको मय मिश्विष्म।

क्रम्या कलामवहनः निविकानवङ्ग् मा । १८ ॥

लानहादिन मनदेकतानका ताममिश्विम ।

निश्चार्था कृष्णे जार माग्रामीकार कार्यार्थिन मिश्रकाम्

व्यवहातानान वङ्गः श्रीह कार त्रधूनननः।

व्यवहातान मा भीका वहनः त्रधिदानिक्मः। १७ ॥

विश्वामार्थर हि ताममा लाकानार श्रीकाग्र ह ॥११० ।

त्रश्चामार्थर हि ताममा लाकानार श्रीकाग्र ह ॥११० ।

प्रश्नामार्थर कृष्णे ज्ञानित्रका ङ्कामनमः।

प्रश्नामार्थन कृष्णिका कर्ष्णे क्रिकेश्यकाः। १० ॥

प्रश्नामार्थन कृष्णिका कर्ष्णे क्रिकेश्यकाः। १० ॥

व्यवसार्थन कृष्णिका कर्ष्णे क्रिकेश्यकाः। १० ॥

व्यवसार्थन कृष्णिका व्रक्षे क्रिकेश्यकाः। १० ॥

তুমি কি জন্য বানর দিগকে নিবারণ করিলে ? উহারা সীতাকে নিজ নিজ গার্ভধানিশীর ন্যার দদ্দনি করুক। আন সীতাও পাদচারে আমার নিকটে আগমন করুন। মৈথিলী প্রীরামের এইরপ বাকা জাবল করিয়া, শিবিকা হইতে অবভরণ পুর্বক লনৈঃ শনৈঃ পদত্রজে প্রীরাম সন্নিধানে আগমন করিতে লাগিশেন। ক্রেমে প্রীরাম তাঁহাকে খীয় দ্মুনেউপত্তি অবলাকন করিয়া আনন্দিভাতঃকরতা স্বন্ধ্যা নির্মিতা মায়াগীতঃকে বছ অবাচা বাক্য বলিতে আরম্ভ করিলেন। ভগন মৈথিলী প্রামের ক্ষিত সেই সমস্ভ অপ্রিয় বাক্য মনে বিবেচনা না করিয়া, অভি ত্রংগিতচিত্তে দেবর লক্ষণকে বলিয়াক্তিলেন; লক্ষ্মণ! ভূমি শীজ আমার নির্মিত স্থানন প্রজ্বাত করে। রাষ্ট্রের বিশ্বাসের জন্য ও লোকের প্রত্যাশন প্রজ্বাত করে। রাষ্ট্রের বিশ্বাসের জন্য ও লোকের প্রত্যাশন

পশাতাং সর্বলোকানাং দেববাক্ষসয়ে বিতাম।
প্রথমা দেবতাভাক ব্রাহ্মণেভাক মৈথিলী। ৮০।।
বন্ধাঞ্জলিপুটা চেদম্বাচাগ্রিদমীপরা।
যথা,মে হৃদয়ং নিতাং নাপদর্পতি রাঘবাং ॥৮১
তথা লোকস্ত সাকী মাং সর্বতঃ পাতু পাবকঃ॥৮২
এবম্ক্র্বা তদা দীতা পরিক্রম্য হৃতাশনম্।
বিবেশ জ্লনং দীপ্তং নির্ভয়েন হৃদা দতী॥৮৩

নিনিত্ত সভ্যৱ গ্ৰহ্মালি**ত জানগৈ প্ৰেৰেশ কৰিব**; জানি রাখ-বের এই শুভিপ্ৰায় **জানিগছি। ৭৪ । ৭৫** । ৭৬ । ৭৭ । ৭৮ । ৭৯ ।

অভংগর অরিশ্বম লক্ষ্ণ, সীতার এইরূপ বাক্য শ্রবণ পূর্বাক, অতি বিষয় স্থানের কাষ্ট্রতা আছরণ করতঃ, পারক প্রজ্ঞানিত করিয়া, ছির ভাবে রামপাশ্বে আদিয়া অবস্থান করিছে লাগিলেন। এমন সমা। জনকনলিনী, ভক্তি সহ-কারে অগ্রে রামচক্রাকে, ক্রেনে দেবতা ও রাক্ষণনিগকে প্রগতি প্রঃসর, দেব রাক্ষ্য, নরলোক এবং যোবিৎগণ সমাক্ষে অয়ি সমাপে গামন করতঃ ক্রভাঞ্জিপিটে দভারমানা ছইয়া, এই বাক্য বলিতে লাগিলেন। দেপ, ভোমরা সকল লোক সাক্ষী রছিলে: যদাপি কথনও রামচক্র আমার হালয় হইছে স্থানান্তরিত না হইয়া থাকেন, তাহা হইলে যেন এই কথা বলিয়া সীণা অয়িকে প্রকাম ও প্রদক্ষিণ করতঃ নির্ভিদ্ধে প্রজ্ঞানত অনলে প্রবেশ করিলেন। অংগ্রের দেব, সিদ্ধা প্রক্ প্রজ্ঞানত অনলে প্রবেশ করিলেন। অংগ্রের দেব, সিদ্ধা প্রক্ ভূতবাণ প্রভৃতি সকলে ভায়াতো জনকন্তি তাকে জীবিতা নিরীক্ষণ করিয়া, আশ্রুমা বোধে পর-পর বিনিতে লাগিলে দৃষ্টা ততো ভূতগণ'ঃ দলিদ্বাঃ দাতাং মহাবন্ধিগতাং ভূশার্তাঃ। পরস্পারং প্রাছরহো দ দীতাং

আহা ! মহামা রামচজ্র কি কথনও স্বীয় সহধর্মিনী সীতাকে পরিভাগে করেন নাই ! অভএব ধন্য সীতা, ধন্য সীতা রামঃ প্রিরং স্বাং কথম তাজজ্জঃ ? ॥৮৪॥ ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
বুদ্ধকাণ্ডে দ্বাদশোহধ্যায়ঃ।

বলিতে বলিতে সকলে যুগপৎ দীতার উপরে পুশর্টি কবভঃ, স্থানে প্রস্থান করিল।৮০।৮১।৮২।৮৩।

ইভি অসমধ্যাক্ষরামারণে উমামছেশ্বরসক্ষাদে
যুদ্ধকাওে বাদশোহধগর::

ত্রোদশোইধারঃ।

ততঃ শব্রং সহস্রাক্ষো যমক বরুণশুধা।
কুবেরক মহাতেজাঃ পিনাকী রুষবাহন: ॥ ১ ॥
ব্রহ্মা ব্রহ্মবিদাং শ্রেকো মুনিজিঃ সিছ্কচারগৈঃ।
পিতরো শ্লুষয়ং সাধ্যা গন্ধর্মাপারসোরগাং ॥ ২ ॥
এতে চানো বিমানবিত্যারাজগ্মুর্যত রাঘবং।
ভাক্রবন্ প্রমাক্ষানং রামং প্রাঞ্গর্কচ তে ॥

জনস্তর অর্গাধিপতি সহজ্ঞাক ইন্দ্র, যস, বহুণ, যক্ষপতি
মহাতেলা কুবের, রহবাহন ব্যোসকেশ, ব্রহ্মজানীর শ্রেষ্ঠ
ক্রমা, পিতৃগণ এবং মুনি, ক্মবি, সিদ্ধ, সাধ্য, গান্ধর্য, অপারগণ আর জনাগন্য ত্রিদিবস্থ নির্জ্ঞর নিকর, ব্যোপম্যানে
আর্মেহণ পূর্বক, ক্রমণঃ জীর্মি সন্নিধানে আগ্র্যন করিয়া,
ক্তার্কিপ্টে তাহার সমূধে দণ্ডার্মান হুইলেন। জননি

কর্ত্ত তথ সর্বলোকানাং সংক্ষী বিজ্ঞানবিগ্রহ:। বস্থনামটমোহসি তথ ক্রদ্রাপাং শঙ্করো ভবান্।। ৪ আদিকর্ত্তাসি লোকানাং ব্রহ্মা তথ চতুরানন:। অস্থিনৌ ঘাশসূতে তে চফুমী চন্দ্রভাক্ষরে।। ৫॥

সর্ব্বাত্রে দেবগণ বছাঞ্জল ছইয়া প্রমান্তারূপী জীরামের স্তব আরম্ভ করিলেন।১।২।৩।

হে দেব! আপনি সকলের কর্তা, এবং জ্ঞানময় দেছ
ধারণ করিয়া, সর্বাক্ষণ সর্বাধীবের প্রভাকীভূত হইছেছেন; আপনি অফবস্থর প্রধান বস্থ এবং শ্বরং একাদশ
কল্পের মধ্যে প্রধান কন্ত-শহর আর আপনি, লোক
সকলের আদিকর্তা চতুরানন বস্থাও। অশ্বিনীকুমারঘর আপনার আণ্ডুত, চন্দ্র স্থ্য আপনার দুই চক্

লোকানামাদির স্থাইদি নিত্য এক: সদোদিত:।

সদা শুক্ক: সদা বৃদ্ধ: সদা মুক্তোইগুণোইছর: ঃ ৬।

জুনামাসংর্জানাং জুং ভাসি মানুষ্বিগ্রহ:।

জুনাম স্মরতাং রাম! সদা ভাসি চিদাদ্ধ: ॥ १ ॥

রাবনেন ক্তং ভ্নেমস্মাকং তেজসা সহ।

জুরাদ্য তিহতো ছুক্ট: পুন: প্রাপ্তং পদং স্বক্ম ॥

এবং স্তবংস্থ দেবেষু ব্রহ্মা সাক্ষাৎপিতামহ:।

অব্রবীৎপ্রণতো ভুড়া রামং সত্যপথে ক্তিম্ ॥ ৯

ব্রক্ষোবাচ।

বন্দে দেবং বিষ্ণুমশেবস্থিতিহেজুং
ত্বামধ্যাত্মজ্ঞানিভিরত্তর্ক্ দি ভাবাম্।

দেবগণ এইরণ শুব করিলে পর, ত্রিলোক পিডামহ জন্ম শ্রীরামের সন্মুখে দণ্ডারমান হইরা প্রণতি প্রঃ-দরঃ গলগরীকৃতবাদে ও কভাঞ্জলি পুটে কহিতে লাগি-শেন। ছে রাম! তুমি মছাবিষ্ণু, অশেষ স্থিতি ছেতু, এবং শাস্ত্রজানীদিশোর স্থানের সদা প্রকাশিত, অতএব তোমাকে रशारश्यक्षिविश्वानः श्राप्तकः ।

नखामावः नर्वक्षिण्यः पृणिक्षम् । ১० ॥

व्यानाशाद्यो निक्षयुक्ता क्षि कृष्णः ।

क्षिण नर्वः नःभग्रवनेशः विषयोधान् ।

श्रमाश्चीणः यः गण्डमाश यज्ञः एः

वस्म त्रामः त्रष्ठकित्रीणः विविधानम् ॥ ১১ ॥

माञ्चाणीणः माध्यमामाः क्षणमानिः

मानाणीणः साध्यमामाः कृषिवन्तम् ।

याशिरधातः याश्विनाणः ज्ञिनवन्तम् ।

याशिरधातः याशिविधानः श्विशूनः

वस्म त्रामः विश्वजलाकः त्रमनीत्रम् । ३२ ॥

जावाजावव्याजात्रशैनः ज्वसूरेधाः

विशः शुक्तः दुक्तमनश्रः व्यनवाथाः

वस्म त्रामः वीत्रम्णसाङ्क्तनावम् ॥ ১० ॥

বন্দনা করি। আর তুমি তাজা অত্যক্তা বিষয় বিছীন, সর্ববেশ্রন্ত, সভামাত্র, সর্বপ্রধাণীর ছদমত্ব এবং দর্শনীয়রূপ প্রাণাপান বায়, যতিপণ্ডিতেরা নিক্ষল বুদ্ধিবার। সর্বসংশ্রম বন্ধ ও বিষয় সমূহ ছেদ করতঃ ছদরে বোমাকে দেখিভেছে। অতএব রত্ব কিরীটবুজ স্থাপ্রভামিত ডোমাকে বন্দনা করি। তুমি মারাজীত, জাণিবিষ্ণু, জ্বাতের আদিভূত, মনোভীত, মোহবিনাশকারী, মুনিবন্দা; যোগীধ্যের, যোগবিধানকারী, রমণীয়, লোক পূজিত এবং পরিপূর্ণ; অতএব তোমাকে অছ্-কণ বন্দনা করি। ১০। ১১। ১২।

ইং সংসার মিধ্যার পদ্মিপূর্ণ হইলেও ভোষাভে কোনরূপ ভাষাতার প্রতার হীন পরিলক্ষিত হয় না, মতএব ভোগমত্ত- षः (स नार्था नाथिजकार्यमधिनकनकाती।
सानाजीरको साधवनरिशाहिष्यनभाती।
क्कामधिन प्राचिक स्था करहाती
स्थानाकारिम प्रिक्षक्ति महानती
सामानाकः (लोक क्कोनाः भत्रमौनः
सामानाकः (लोक क्कोनाः भत्रमौनः
सामानाकः (लोक क्कोनाः भत्रमौनः
किक क्षाका काव स्था क्कि क्या कि स्था कि क्या काव स्था क्षा काव स्था काव स्था

নানাশান্তৈর্বেদকদ্যি: প্রতিপাদ্যং
নিত্যানন্দং নির্কিষয়ঞ্চান্মনাদিম।
মংসেবার্থং মানুষভাবং প্রতিপন্নং
বৈশে রামং মরকতবর্গং মধুরেশং ॥ ১१।
শ্রুমানুক্তো যা পঠতীনং স্তব্যাদ্যং
আহাং জন্মজ্ঞানবিধানং ভূবি মত্যং।
রামং শ্যামং কামিভকামপ্রদমীশং
ধ্যাড়া খাড়া পাতকজালৈর্হিলাবফুং
স্থান্ধে স্মাদায় বিদেহপুজ্রিকাম্।
জ্ঞিজ্ঞানাং বিমলাক্রণচ্যুতিং
রক্তান্থরাং দিব্যবিভূষণান্থিতাম্॥ ১৯॥

লিবাদির পূজিত ভোমার চরণবুগণ বদ্দা। করি—হে জ্রীরাম!
তুমি ত্রিকালব্যাপ্ত,মান্না বিছীন, জ্ঞানস্বরূপ, অনন্ত, জ্ঞার ও
সর্ব্রনেতা নাশক, অভএব ভোমাকে বন্দনা করি। তুমি
জ্ঞামার নাথ, তুমি প্রাথিত কার্য্য সমস্তের কর্তা, তুমি দেশকাল ও রূপ এই ত্রিবিধ পানিছের শূন্য, তুমি লক্ষ্মীণতি এবং
অধিশ জগতের কর্তা, তুমি ভক্তের প্রাথা ও প্রাপ্তরূপ। ইইরা
সংশার নাশ করিভেছ, তুমি যোগাভ্যাসে পবিত্রীকৃত অন্তঃকরণের স্হচারী—হে রাঘব! তুমি পরম্পারের ক্ষাণি ও অন্তঃ
ধোক সমুদ্যের পালন কর্তা, শ্রেকিক প্রমাণে তুমি জ্ঞামাদিনের অজ্ঞের, ভক্তি ও ভক্ষভাবাবনস্বীদিনের সেবা, অভএব
তুম্মর ইন্দীবরশ্যাম কলেবর ভোমাকে বন্দনা করি। ১৩।
১৯৪। ১৫।

হে মাধ্ব! তুমি সর্বাত্ত আতি ব্যাপক, তুমি গত-মান ক্ষতরাং মানাসক্ত কোন ব্যক্তিই তোমাকে জানিতে পারে বা, ক্ষাবতারে ব্নাবনে দেবত ব্ল জোমাকে জাভিবাদন ক্রিরাছিলেন, অতএব তুমি শিবাদির অভিনদ্ধা, ভোমাকে
নমস্থার করি। বিবিধ শাস্ত্র নিগীত বেদ সমূহ ভোমাতে
নিত্যানদ্দ এবং বাহু বিষয়ক জান বিষয় বর্ণনা করিয়াছে,
তুমি মংবেবার্থ অর্থাৎ রাবণাদি বিনাশ করিবার জন্য মানবরূপী হইয়াছ এবং ক্ষণাবতার হইবার অভিপ্রায়ে অত্যো
শক্ষ্যকে মথুরা রাজ্য প্রদান ক্রিয়াছিলে, অতএব মরক্ত
বর্ণ মথুরেশকে নমস্কার ক্রি।

শ্রহাবান্ হইয়া যে ব্যক্তি অত্যে এই শুব পাঠ করে এবং
ইছ জগতে প্রস্কৃতনান বিধান অভীক্ত বস্তু দাতা শ্যাম কলেবর
শ্রীরামকে ধ্যান করে,সে ব্যক্তি সর্ব্ধ পাপ ছইতে বিমৃক্ত ছয়।
ছতাশন লোক শুক্ত প্রস্কার শুব শ্রবণ করিয়া সর্বাক্ত স্থামারী,
বিমল অঞ্গ জ্যোতির্মন্তী, বক্ত বস্তু পরিধানা, দিব্যাভরণ বিছুবিতা বিদেহি কনাকে নিজ ক্রোড়ে গ্রহণ পূর্বক জ্বনংক্ত

প্রেরার সাকী জগতাং রঘুত্তমং
প্রপন্নসর্বাতি হরং ছতাশনঃ।
গ্রাণ দেবীং রঘুনাথ ! জানকীং
পুরা ত্বা ম্যাবরোপিতাং বনে। ২০।।
বিধার মায়াজনকাত্মজাং হরে!
দশাননপ্রাণবিনাশনার চ।
হতো দশাস্যং সহ পুজ্রবাজ্মবৈনিরাক্লতোহনেন ভ্রো ভূবং প্রভো!। ২১।।
তিরোহিতা সা প্রতিবিশ্বরপিণী
কুতা যদর্থং কৃতক্ত্যতাং গতা।
তেতোহতিজ্ঞাং পরিগৃহজানকীং
রামঃ প্রজ্ঞাং প্রিগৃহজানকীং
আরে স্মাবেশ্য স্থানপায়িনীং

দৃষ্ট্রাথ রামং জনকাত্মজাযুহং
প্রিয়া করেন্তং মুরনায়কো মুদা ॥ ২০॥
ভক্তা গিরা গদ্গদরা সমেতা
ক্তাঞ্চলিং ভোতুমথোপচক্রে ।
ক্রি উবাচ।
ভক্তেইং সদা রামমিন্দীবরামং
ভবারণ্যদাবানলাভাভিধানম্।
ভবানীক্সদা ভাবিতানক্ষরপং
ভবাভাবহেতুং ভবাদিপ্রপন্নম্॥ ২৪॥
মুরানীকছঃখোঘনালৈকহেতুং
নরাকারদেহং নিরাকারমীভাম্।
পরেশং পরানক্ষপং বরেণ্যং
হরিং রামমীশং ভজে ভারনাশম্। ২৫॥
প্রায়থিলানক্ষদোহং প্রপন্নং

দাকী কৰিয়া বহুনাথকৈ কহিলেন, ছে রাষ্ব্! আপনি অরণা মধ্যে জানকীকে আমার নিকট অর্পণ করিয়াছিলেন অধুনা তাঁহাকে গ্রহণ ককন। হে হরে! লকাধিপতি দশাননের প্রাণ বিনাশ দেতু জানকী-সদৃশী মায়া-সীতা হছন করিয়া স্বান্ধব দশাসাকে বিনাগ করিয়াছেন, অভএব হে প্রভা! এক্ষণে পৃথিবীর ভার নিরাক্ত হইরাছ। আপনি যে মায়াসীতা করিয়াছিলেন, এক্ষণে সেই প্রতিবিশ্বরূপিণী জনকায়জা তিরোকিতা হইয়াছেন; অনন্তর রামচন্দ্র প্রহাত চিত্তে সদানন্দ্রমী জানকীকে গ্রহণ করিয়া ভ্রাশনকে প্রতিপূতা করিলেন। ত্রিপতি গ্রিলোক-জননী ক্রীকে নিল জোড়ে উপবেশন করাকিল, গ্রিদেশবাধ ইক্র তাঁহাকে জনকছহিত্যকুক্ত আনন্দিত

সন্দর্শন করিরা পরম আফ্লাদিত ছইলেন; অনস্তর সাদ্ধাধ বচনে ভক্তি সহকারে ক্লভাঞ্জিপ্ট হইরা স্তব আরম্ভ করি-লেন। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২। ২৩।

প্রপন্নার্ছনিঃশেষনাশাভিধানম্!

আমি ভক্তিসহকারে নীলোৎপল আভাসংযুক্ত সংসার অরণোর দাবানলাভিধান,পতিতপাবনী ভগবভীর ক্ষরভাবিত্ত সদানক্ষের রূপ, নহাদেব পরিনেবিত সংসার ক্লেশ নিবারক্ষরাসচক্রকে ভক্তনা করি। দেবতাদিশের অপার হুংগ বিনাশ হৈতু যিনি মানবদেহ (বস্তুতঃ নিরাকার ব্রহ্মাদি শ্রেষ্ঠ) পরি-গ্রহ করিয়া ভূভার হুরণ করিয়াছেন, আমি দেই এইরি সান-

তপোষোগযোগীশভাবাভিভাবাং
কপীশাদিমিত্রং ভজে রামমিত্রম্। ২৬॥
দদা ভোগভাজাং স্তদুরে বিভাস্তং
দদা যোগভাজামদূরে বিভাস্ম্।
চিদানন্দকন্দং দদা রাঘ্যেশং
বিদেহাত্মজানন্দরপং প্রপদ্যে॥ ২৭॥
মহাযোগমায়াবিশেষামুমুক্তো
বিভাসীশ। লীলানরাকারর্জিঃ।
ভুদানন্দরীলাকথাপূর্ণকর্ণাঃ
কদানন্দর্বপা ভবনীহ লোকে। ২৮॥
আহং মানপানাভিমত্তপ্রমভো
ন বেদাথিলেশাভিমানাভিমানঃ।

केनानीः खन्य शान शख्य थाना ।

खिलाका विश्व छा कि सारता निनकेः ॥ २२ ॥

कृत खब्र कि मृत इस ता जिता सः

धता छात छू जा छू ता नी क ना तम् ।

गत क्या व खु र लम र शख्य तखर ।

खता व ति ते सार कि ता कि ता कि ता हि र विता था नि ता कि ती ला कि ता हि र विता था नि र विता हि र विता था कि ती हि र विता था है है सि र विता था कि ती हि र विता था कि ती हि र विता था है है

চক্রকে ভজনা করি। িনি শ্রণাপর্দিণের আশ্রেম দিরা থাকেন, বিনি তপ ও যোগ নীরত বোলিবিগে অভিভাবক এবং যিনি কপীন্দ্র স্থ্রীবাদির সহিত স্ণ্যভা নিগড়ে আবদ্ধ হইমাছেন, আনি নেই রামচন্দ্রকে ভক্তনা করি। বিনি ছজ্জান থিয় সন্ত সংসারাম্মীনিগের ছইতে স্পুরবভী রাখিয়া আত্মজনে বিষর সমস্ত গোগী দিগের অতি নিকটে অফুকণ রক্ষা করিন থাকেন, বিনি সমুদর চেভনদিগের ও বৈদেহী জানকীর আনন্দ বর্জন করিয়া থাকেন, আনি সেই বযুবংশাবভংস রাঘ্বকৈ নমস্কার করি। হে জ্বাদীশ্রঃ মহাযোগ্যাম গুণ দারা যেমন জ্বাদি অনুস্ত ইইয়া স্ফটিক বং আভা প্রকাশ করে, সেইকপ যোলালা দান হোমার মানবাঞ্জি উজ্জলতা বিকাশ ব্রিলা থাকে, অভএব ইই অগতে সমুদ্য লোক ভোনার ল'লা কথায় প্রনানন্দ লাভ করিয়া থাকে ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮।

্ব্যানি অহস্বার ও সুরাদিতে উন্ত, এবং লোকে ভূমাদি-

প্রযুক্ত দেরপ অভিমান করিয়া থাকে, গানি দেইরপ অভিমানিত হইয়া তোমাকে জানিতে গারি নাই; স্বভগং একণে তোমার জীপাদ পদ্মের অনুপ্রাহু ত্রিলোকের অধিপত্যাভিমান দ্রী-ভূগ হইরাছে। বিনি রত্ব কেন্তুর ও হারভূবিত এবং পৃথিনীর ভারত্বরপ অব্বাদিগের দাবানল সদৃশ, বাঁচার শরচন্দ্র দরিত বননমণ্ডল এবং আফর্ণ-পদ্ম-নত্র, আনি দেই দুস্তর পারাবার পার রঘুবংশধর জীরামচক্রকে ভজনা করি। ২৯।৩০।

বাঁধার ইজনীলমণির ন্যায় নীলকান্তি, বাঁধার বারা বিরাধপ্রভৃতি রাক্ষসগণ বিন্ত ইইরা সর্গ মর্ত পাভালত সম্দার লোক অংলাভ করিলাছে, বিনি যত্নপ্রাণ্য নিধ্যাদি সম্দার লোক অংলাভ করিলাছে, বিনি যত্নপ্রাণ্য নিধ্যাদি সম্দা এবং কির ট নি ভূযণে শোভিত ইইরাছেন, আমি মেই রয়ুবংশ চূড়ামণি জগদীশ্বর রামচন্দ্রকে ভজ্ঞনা করি। বাঁহাতে কোটিচন্দ্রনা দেলীপ্যথান আগতে, বিনি থেম বর্ণা ও বিজ্ঞান্ত সদৃশী জনক সুহিতাকে খীয় জতে এইণ করিয়াছেন এবং

ক্ষু রদ্ধেমবর্ণাং ভড়িৎ পুঞ্জ ভাসাং
ভক্ষে রামচক্রং নির্ত্তার্তিভক্ষ । ৩২ ।
ততঃ প্রোরাচ দ্বাবান ভবান্যা সহিত্যে ভবঃ
রামং ক্ষরাপত্তক্ষং বিমানস্থো নভন্তলে ॥ ৩৩ ॥
ক্ষাগমিশ্যামাযোধ্যারাং দ্রুষ্টুং তাং রাদ্ধ্যনহুক্তম্
ইদানীং পশ্য পিতরমন্ত দেহন্ত রাঘ্ব ! ॥ ৩৪ ॥
ভতোহপণ্যদ্বিমানস্থং রামো দশরথং পুরং।
ননাম শিরসা পাদে মুদা ভক্ত্যা সহামুক্তঃ ॥ ৩৫
কালিদ্যা মুর্য বিদ্রার রামং দশরথোহত্তবীং ।
ভারিভোহন্মি ত্রা বৎস ! সংসারাদ্দুঃখনাগরাং ॥
ইত্যুক্ত্যা পুনরঃলিক্ষ্য যথে রামেণ পুদ্ধিতা ।
রামেহপি দেবরাদ্ধং তং দৃষ্ট্যা প্রাহ্ কুতাঞ্জনিম্য।
রামেহপি দেবরাদ্ধং তং দৃষ্ট্যা প্রাহ্ কুতাঞ্জনিম্য।

মৎক্তে নিহতান, সংখ্যে বানরান্ পতি চান্ ভুবি

জীবরাশু স্থারতাা সহস্রাক্ষ । মমাজ্ঞরা ॥ ৬৮ ॥
তথেতামূতর্ট্যা তান্ জীবরামাস বানরান্ ।
যে,যে মৃতা মৃধে পুর্মং তে তে সুপ্তােশিকা ইব ।
পূর্বেন্দ্বলিনো ক্ষ্টা রামপাশ্ব মুপাযযুঃ ॥ ৬৯ ॥
নােশিতা রাক্ষ্যান্ত্র পীযুষস্পর্শনাদ্পি ।
বিভীষণস্ত সান্টাক্ষং প্রাণিপত্যান্ত্রনীঘচঃ ॥ ৪০ ॥
দেব ! মামনুস্ক্রীষ্ ময়ি ভক্তির্যদা তব ।
মঙ্গলন্ধান্যদা ডং কুরু সীতাব্যক্ষিতঃ ॥ ৪১ ॥
সালক্তা সহ ভাতাে শ্রো গ্রিষ্যামহে বয়ম ।

যিনি নিক্র। ও আলসা পরিশুনা ছইয়াছেন, আমি সেই রামকে ভজনা করি ৩১ ৩২।

অনন্তর মহাদেব গিরিরাজ কন্যা ভাগবতীকে সমভিবাণ ধারে করিলা বিমান মার্গে অবস্থান পূর্পক কমলগোচন রামকে কছিতে লাগিলেন—হে রাঘব! তুনি রাজ্যপ্রাপ্ত ধ্ইলে, আনি ভোমাকে দর্শন করিবার জ্ঞান্য অযোধ্যায় আগামন করিব, কিন্তু অধুনা ভোমার দেহের জনরিত্কে অবলো-কন কর। ৩০। ৩৪।

সনন্তর শ্রীরাম আকাশ পথে সর্বাহ্যে দশর্থকৈ দেখিতে পাইয়া অর্ব্জ লক্ষাপের সন্থিত তাঁহার পাদপ্র স্পর্শ করিয়া হুষ্টমনে মন্তকাবনত পূর্বেক প্রণাম করিলেন। দশরপত্ত আণিক্ষন করিয়া মন্তকাত্রাণ পূর্বেক রামচক্রকে কহিলেন—বংস! আমি তোমা কর্তৃক এই সংগারের অপার ভ্রংশসাগর ইইছে উত্তীপ ইইয়াছি এই বণিয়া শ্রীরামত্ব প্রালক্ষন

প্রদান করিলেন এবং শীরাম তাঁহাকে পূলা করিলে দশরখন অস্থানে প্রস্থান করিলেন; অনস্তর রাণ্ডন্দ্র পেবংগজ্ইন্দ্রকে অবলোকন করিয়া বন্ধাঞ্জি পুরেকি বলিতে লাগিলেন। ৩৫ । ৩৬। ৩৭।

হে সহ গণেচন! আমাকপ্তক অসংখ্য বানর ব্লাদ নিহত হইবা ধরাতলে পতিত বহিরাছে, অতএব অধুনা আমার নিদেশার্থনারে স্থাবর্যণরারা উহারা জীবিত হউক। অনস্তর যে সমুদর বানর নিকর হত ও আহত হইরাজিল স্থাবর্ষণে তাহার সমন্তই স্থাপ্তির ন্যায়, গাত্রেখান করিয়া দেশিল যে পূর্বের ন্যায় সকলই বলিষ্ঠ, তথন তাহারা জীরামের পার্থ দেশে আসিরা উপহিত্ হইন—বিভীষণ পীর্ষ স্পাশে রাক্ষসদিগতে উঠিতে না দেখিলা হানচক্রকে সালিস প্রতিপতি পুরুক কহিলেন—হে দেব ! আপান ব্যব্য আমাকে ভক্তি কলিয়া থাকেন, তথন আমাকে অনুগ্রহ করন যে, অন্য আপানি গাতান্যবিত হইবা মগলসান কর্মন এবং অনুষ্ লক্ষমণের সহিত্য ন্যাভাত্রণে ভ্রতি হউন, পরে

বিভীষণবচঃ শ্রুদ্ধ। প্রভ্যুবাচ রঘূত্তমঃ ॥ ৪২ ॥

মুকুনারোহতিভক্তো মে ভরতো মামবেকতে।

কটাবক্কলধারী ল শব্দক্রক্সমাহিতঃ ॥ ৪০ ॥

কথং তেন বিনা স্নানং অলস্কারাদিকং মম ?।

অতঃ সুত্রীবমুখ্যাংজ্বং পুজরাশু বিশেষতঃ । ৪৪॥

পুজিতেযু কপীন্দের্ পুজিতোহহং ন সংশয়ঃ।

ইভ্যুক্তো রাঘবেণাশু স্বর্গরন্ধানি চ ॥ ৪৫॥

বন্ধ রাক্ষ্যশ্রেণিশু স্বর্গরাধানি চ ॥ ৪৫॥

তভ্সান্ পুজিতান্ দৃষ্ট্রা রামো রবৈশ্ব মুখপান্।৪১

অভিনন্দ্য যথানারং বিস্কর্জ হরীশ্বরান্।

বিভীষণসমানীতং পুজ্পকং সুর্ব্যবর্চ সম্॥ ৪৭॥

আক্রেরাহ ততো রামন্তবিমানমন্ত্রমম্।

আকে নিধার বৈদেহীং লক্ষমানং যশবিনীম্। ৪৮
লক্ষাণন সহ ভাতা বিজ্ঞান্তেন ধচুম্বতা।
আববীক্ষ বিমানস্থঃ জ্ঞারামঃ সর্ববানরান্। ৪৯ ॥
সুগ্রীবং হরিরাজং চ অঙ্গদং চ বিভাষণন্।
নিত্রকার্যাং কুতং সর্ববং ভবস্তিঃ সহ বানবৈঃ।। ৫০
অমুক্তাতা ময়া সর্বের যথেকঃ গল্ভমহ্থ।
সুগ্রীব! প্রতি যাহাশ্রে কিন্ধিন্ধাং সর্বাস্থোবাং ।
ন ডাং ধর্ষয়িতুং শক্তাঃ সেন্দ্রা অপি দিবৌকসঃ!
অযোধ্যাং গল্ভমিক্ষামি রাজধানীং পিতুর্মম।
এবমুক্তান্ত রামেণ বানরান্তে মহাবলাঃ। ৫৩।।
উচুঃ প্রাঞ্জনয়ঃ সর্বেরাক্ষমশ্চ বিভীষণঃ।
আযোধ্যাং গল্ভমিক্ষামন্ত্রা সহ রঘুত্তম!॥ ৫৪।

আমরা দকলই অঘোধাার গমন করিব। রঘুনাথ বিভীষণের বাক্য প্রবণ করিয়া বলিতে লাগিলেন—আমার অভি ভক্ত দ্রোচা ভরত জটাবল্কন পরিধান পূর্বে ক, প্রণণ প্রত্র সমা-হিত হইরা আমার জনা অপেক্ষা করিভেছে অভএব প্রক্ মার ভরত বিনা আমার স্নান বা ভূষণে প্রয়োজন কি? অধুনা ভূমি নামর রাজ স্থাীবাদিকে বিশেষ রূপে পূজা কর। ভাষা হইলেই আমার পূজা হইবে, ইহাতে আর সংশ্র নাই।

বামচন্দ্র এইরপ কছিলে রাক্ষ্যেক্স বিভীবণ নানাবিধ রত্ব ভা বজ্ঞাদি বংগছো প্রদান করিতে লাগিলেন। অন-ন্তর রামচন্দ্র যুগপতি বানরদিগকে বিবিধ রত্ব দারা পূজিত সন্দর্শন কবির। বানরশ্রেষ্ঠ নিগকে অভিনন্দন পূর্বাক, বিভীবণ আংনিত প্র্যারশিম সদৃশ পুষ্পক রথ স্মজ্জীভূত করিলেন। অনস্তর শ্রীগ্রহন্দ্র স্বাক্ষ বশ্বিনী জনক তমন্ত্রাকে অনেক

আরোগিত করিয়া অত্যুৎক্র বিমানে আবোহণ করিলেন, এবং
মহাপথাক্রমণালী ধন্ধ বি লক্ষ্মণ সমতিশ্যাহারে বিমানত্ত হইয়া
সানর রাজ সুত্রীব; অক্ষদ ও বিভীষণকে বলিতে লালিলেন,
তোমরা বানরদিগোর সহিত মিলিত হইয়া সমস্তই বন্ধুর
ল্যায় কার্য্য করিয়াছে। ৪৬ | ৪৭ | ৪৮ | ৪৯ | ৫০ | এক্ষণে,
হে সুগ্রীব! আমার আদেশে তুমি গমন করিতে পার—
অভপ্রব তুমি সমস্ত সৈন্য লইয়া কিছিল্যার প্রতিগমন কর—
হে বিভীগণ! তুমি আমার পারম ভক্তা, অতপ্রব নিজ রাজ্যা
লক্ষা মধ্যে বাস কর—দেখ দিবেকিস বা ইন্দ্র লোমার প্রতি
অত্যাহার করিতে সক্ষম নহে। এক্ষণে আমি পিতৃরাজ্যো
গমন করিতে বাসনা করিয়াছে। সামচন্দ্র এইরপ বলিবামাত্র
মহাবলবান বানর সমূহ এবং রাক্ষ্যাধিণতি বিভীষণ ক্লতা—
গ্রাপনার সহিত্ত অবোধ্যার ঘাইতে ইফা করি। হে প্রভাগ

দৃষ্টা ছামভিধিকং তু কেশিল্যামভিবাদ্য চ।
পশ্চাদ্রণীমহে রাজ্যমনুজ্ঞাং দেহি নঃ প্রভো!
রামস্তথেতি সুগ্রীব! বানরৈঃ সবিভীষণঃ।
পুষ্পাকং সহফুসাংশ্চ শীঘুমারেছে সাম্প্রতম ॥ ৫৬
ততন্ত পুষ্পাকং দিবাং সুগ্রীবঃ সহ সেনয়া।
বিভীষণশ্চ সামাতাঃ সর্বেরি চারুরুভ্ছকে তম্। ৫৭।
তেষ্। বিদ্যু সর্বেষু কোবেরং প্রমাসনম্।
রাঘ্রেণাভ্যনুজ্ঞাতমুৎপ্পাত বিহায়দা।। ৫৮॥

বভে তেন বিমানেন হংসমুক্তেন ভাস্বতা।
প্রস্থাইবাপরঃ ॥ ৫৯ ॥
ততো বভে ভাস্করবিশ্বভ্ল্যং
কুবেরযানস্তপসানুলক্ষ্ম।
রামেণ শোভাং নিতরাং প্রপেদে
সীতা সমেতেন সহানুক্ষেন ॥ ৬০ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যান্মরামারণে উন্নামহেশ্বর সন্বাদে

যুদ্ধকাণ্ডে ত্রানেশোইধ্যায়ঃ।

আপনার অভিষেক সন্দর্শন এবং কেশিলা। দেবী অভি-গ্রাদন প্রঃস্থাপ্ত স্থাজ্যে প্রভ্যাবর্তীন করিব, এই অন্তর্জা প্রাদান কক্ষণ ৫১।৫২।৫২।৫১।৫৪।৫৫।

শ্রীরাম 'ভথাস্ত' বলিয়া,কহিলেন — হে স্থ্যীব ! সমস্ত বানর, বিভীবণ ও হন্মান সমভিব্যাহাবে পুষ্পক রথে শীঘ্র আরোহণ কর। অনন্তর স্থ্যীব বানরীসেনা সহিত ও বিভীষণ অমান্যপরিয়ত হইয়া দিবা পুষ্পক রথে সত্তর আারোহণ করিল। ভাহারা সকলে আরেচ হইলে কৌবের সমস্ত রাঘ্য কর্ভুক অনুজাত হইয়া গাগণমার্গ হইতে উল্লম্ফন করিতে লাগিল। গুফ্রন্থ রামান হামান হংসবাছন পুষ্পক রথে আবোহণ করিরা চতুর্মুখ ব্রহ্মার ন্যায় বিমানমার্গ শোভা পাইতে লাগিলেন। অনন্তর তপোলক কুবেরের রণ ভাস্কং-বিম্বের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিল। এবং অনুজ লক্ষ্মণ ও জনকারজা পরিবৃত হইয়া শীরামানজ্যের শোভা পরিবৃদ্ধিত হইতে লাগিল। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫১। ৬০।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামছেশ্বরসভানে

যুদ্ধকাণ্ডে ত্রেরোদশোহধ্যায়ঃ।

চতুৰ্দ্বেশাংখ্যায়ঃ।

পাত্রিত্বা ততশুকুঃ সর্বতো রঘুনন্দন:। অব্বীন্মৈথিলীং সীভাং রামঃ শশীনিভাননাম্। ত্রিকুটশিখরাগ্রস্থাং পশা লক্ষাং মহাপ্রভাম। এতাং রণভুবং পশ্চ মাংসকর্দমপঙ্কিলাম্॥ ২॥ অন্ত্রাণাং প্লবঙ্গানামত্র বৈশ্যনং মহৎ। ষ্পত্র মে নিহতঃ শেতে রাবণো রাক্ষদেশ্বরঃ।। ৩॥ কুন্তকর্ণেন্দ্রজিম খ্যাঃ সর্বে চাত্র নিপাতিভাঃ। এেষ সেতুম্য়া বদ্ধঃ সাগরে সলিলাশয়ে॥ ৪॥ এতচ্চ দৃশ্যতে তীর্থং সাগরস্য মহাত্মনঃ। সেত্ৰস্থাতি খ্যাতং ত্ৰৈলোক্যেন চ পুজিতম্।। ৫

এতৎপবিত্তং প্রমং দর্শনাৎ পাতকাপ্রম্। গত রামেশ্বরো দেবো ময়া শস্তু: প্রতিষ্ঠিত:॥ 🕭 ॥ অত্র মাং শরণং প্রায়েপ্তা মন্ত্রিভিশ্চ বিভীষণঃ। এষা সুজীবনগরী কিছিক্যা চিত্তকাননা ॥ ৭॥ তত্ত্র রামাজ্যা তারাপ্রমুখা হরিযোষিতঃ। আনরামাদ ভুত্তীবং দী হারাঃ প্রিরকান্যরা॥৮ । তাতিঃ সহোথিতং শীঘুং বিমানং প্রেক্ট রাঘবঃ: প্রাহে চাজিং ঋষ্যমূকং পশ্য বাল্যত্র মে হতঃ।। ৯ এষা পঞ্বটী নাম রাক্ষদা যত্র মে হতাং। অগন্ত্যস্য স্থাক্ষ্ম পখাশ্রমপদে শুভে॥১০॥

অনন্তর রয়ুকুলভিলক রামচন্দ্র চারিদিক নিরীক্ষণ ক্রিয়া শশিনিভাননা মিথিল-রাজ-ছহি হা সীতাকে বলিলেন, ত্ত্রিকূট পর্বত নিধরস্থ মহা প্রভাষিতা লক্ষাপুরী ও মাংল-कर्मन-शक्षिण युक्तत्क्व घरला,कन करा थे ज्ञारन वानत्रा-স্রদিগোর মহাযুদ্ধ হইয়াছিল, রাক্ষ্যেশ্ব দশানন ঐ স্থানে নিহত হইরা পতিত ছইয়াছিল। ঐ হানে মছাবীর কুন্ত-কর্ণ ও ইল্রজিৎ নিপ্তিত হইয়াছিল, এবং মহাসাগরোপরি আমি সেতু বন্ধন করিয়াছি অবলোকন কর। ১। ২। ৩।

এইটি মহাস্থা সাগরের ভীর্থ—ম্বর্গ মর্ত্ত পাতালম্ব লোক সমুদালের পূজিত ছইয়া সেতুবন্ধ নামে বিখ্যাত হইরাছে।

टेमिथिनि । शाशीद्वा देश पर्मन कदिएन मन्त्र भाभ इद्देश विमुद्ध ছইবে। ধর্মনিরত বিভীষণ মন্ত্রিগণ সমভিব্যাহারে এই স্থানে আমার শরণাপন্ন হইরাছিল, এবং এইটি স্ত্রীবের চিত্র কাননা कि स्का। नगती। वे सान श्वीय बामनितन्यवी इहेबा <u>শীতার মৃদ্রশাকাজ্ফিণী ভারা প্রভৃতি বানর যোষিদাণকে</u> আনয়ন করিয়াছে। শ্রীয়ামচন্দ্র তাঁহাদিগের সহিত বিমান ছইতে দর্শন করিলেন এবং সীভাকে কহিলেন ঐ দেখ গিরি-বর ঋষামৃক পর্বত—এই স্থানে বালী আমা কর্ত্বক বিনফ্ট ছইরা **क्नि।८।७।**१।৮।৯।

হে শুভে! এ পঞ্চবটী বন অন্দোকন কর—অন্যন্ত্য এথানে আমি বামের্যুর নামে মহাদেব প্রতিষ্ঠা করিয়াছি। হে মুনির আশ্রমপদে রাক্ষসদিগতে নিহত করিয়াছি। তে এতে তে তাপদাঃ দর্মে দৃশান্তে বরবণিনি!।
আদৌ শৈলবরো দেবি! চিত্রকুটা প্রকাশতে॥ ১১
অত্র মাং কৈকরীপুত্রঃ প্রদাদরিত্বমাগতঃ।
ভরদ্বাজাশ্রমং পশ্য দৃশাতে ধর্মনাতটে॥ ১২॥
এবা ভাগীরথী গঞ্চা দৃশাতে লোকপাবনী।
এবা সা দৃশাতে দীতে! দর্য্যুপ্মালিনী॥ ১৩॥
এবা সা দৃশাতেইবোধ্যা প্রণামংকুরু ভামিনি!।
এবং ক্রমেণ সম্প্রাপ্তো ভর্ম্বাজাশ্রমং হরিঃ॥ ১৪
পুর্ণে চতুর্দিশে বর্ষে পঞ্চম্যাং রঘুনন্দনঃ।
ভর্ম্বাজং মুনিং দৃষ্ট্যা ববন্দে সানুজঃ প্রভুঃ॥ ১৫
প্রস্তু মুনিমাদীনং বিনয়েন রঘুর্ম:।
শূণোধি ক্তিন্তরতঃ কুশল্যান্তে সহানুজঃ। ১৬।

ফুলিকা বর্জ তেইষোধ্যা জীবল্ডি চ হি মাতরঃ।
তাজা রামন্য বচনং ভরদ্ধান্ধঃ প্রকৃষ্টনীঃ ১৭।।
প্রাহ্ সর্ফের কুশলিনো ভর্তস্ত মহামনাঃ।
ফলমূলকতাহারো জটাবলকলধারকঃ ॥ ১৮ ॥
পাদুকে সকলং ন্যাের রাজ্যং তাং ফুপ্রতীক্ষতে।
যৎযৎকৃতং তুয়া কর্মা দওকে রঘুনন্দন! ॥ ১৯ ॥
রাক্ষদানাং বিনাশং চ দীতাহরণপুর্ফ্রকম্।
সর্বং জাতং ময়া রাম! তপদা তে প্রদাদতঃ ॥
তং ব্রহ্ম পর্মং সাক্ষাদাদিমধ্যান্ত্রজ্জিতঃ।
ত্মপ্রে সলিনং সৃষ্ট্যা তত্র স্থােহিদি ভূতকৃৎ ॥ ২১
নারায়ণােদি বিশায়ন্! নর্গােমন্তরাল্পকঃ।
ত্মাভিকমলােৎপ্রো ব্রহ্মা লােকপিতামহঃ॥ ২২

বংববিনি! ঐ ভাপসরন্দ এবং চিত্রকূট্ট পর্বাভ দেখা যাই ছেছে, এই হানে কৈকেয়ীপুত্র ভরত প্রসাদ প্রাহণে সমাগত হইরা-ছিল, ঐ দেখ যমুনাভট্টে ভরছাজাশ্রম দেখা যাইভেছে। হে সীতে! ঐ দেখ লোক পবিত্রকারিণী কল্পকন্যা গল্পা ও সরয় যুগপৎ লক্ষিত হইলেছে—হে ভামিনি! এক্ষণে অযোধ্যা নগরী দৃষ্ট হইডেছে, অতএব প্রণাম কর। এইরূপে জীহরি ক্রমণঃ ভরঘাজাশ্রমে উপহিত হইলেন।১০।১১।১২।১৩।১৪। চতুর্দ্দশ বংগর অভীত হইলে পঞ্চমীতিখিতে রঘুনন্দন ভরহাজন্মুনিকে দন্দর্শন করিয়া সামুক্তা ভাঁহাকে বন্দনা করিয়েন।

রঘুনাথ সবিনর আসনোপবিষ্ট ভরবাজকে জিজাসা করিলেন—তে মুনিবর! আপনি ভরত ও শক্রমের কোন কুশল সংবাদ কি অবণ করিয়াছেন ? অযোধ্যা মধ্যে সুভিক্ষা আছেত ? আমাব জননীরা তীবিতা আছেন ত ? শ্রীরাবের বাব্য শ্রবণে ভরম্বাক্ত মুনি কটাত্তঃকরণে বলিলেন—কলমূল-ভোজী জটাবলকলধারী মহামতি ভরত প্রভৃতি সকলেই কুশবে আছেন, আর সমুদার রাজ্ঞা জাপনার পাছকায় নাত্য হইরা আপনারই জনা প্রতীক্ষা করিতেছে—হে রগুনন্দন! দশুকা-রণ্যে রাক্ষ্য বিনাশ, সীতাহরণ প্রভৃতি যে যে ঘটনা ঘটিরাছে, তৎসমুদারই আমি তপঃ প্রভাবে এবং আপনার প্রসাদে অবগত ছইরাছি। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯ ২০। হে রঘুনাথ! আপনি আদি, মধা ও অন্ত বিবর্জিত—সাক্ষাৎ প্রম ব্রন্ধ, আপনি প্রথমে সলিল ক্ষেন করিয়াছিলেন।ছে বিশ্বাজ্ঞন্থ, আপনিই নারায়ণ—মন্ত্রানিগোব জন্তরাক্ষা; আপনার নাভিপত্ম হইতে লোকপিতামছ ব্রন্ধা উৎপন্ন ইইয়াছেন, অভএব আপনি অথিন অথিন ক্রগতের প্রি—

অতন্তং জগতানীশং সর্বলোকনমক্তঃ।

ত্বং বিক্রুজনিকী লক্ষ্মীঃ শেৰোহয়ং লক্ষ্মণাতিধঃ।
আরানা স্তল্পীদং ত্বাস্থন্যেবাস্থ্যায়য়া।
ন সজ্জনে নভোবত্বং চিচ্ছক্তা। সর্বসাক্ষিকঃ।
বহিরন্তশ্চ ভূতানাং ত্মেব র্যুনন্দন!।
পুর্ণোহপি মূঢ়দৃষ্টীনাং বিচ্ছিন্ন ইব লক্ষ্যসে। ২৫
জগত্বং জগদাধারন্ত্মেব পরিপালকঃ।
ত্মেব সর্বভ্তানাং ভোক্তা ভোজ্যং জগৎপতে!
দৃশ্যতে শ্রেয়তে যদ্যৎ স্মর্য্যতে বা র্যুত্ম!।
ত্মেব সর্ব্যধিলং ত্তিনান্যায় কিঞ্চন দ ২৭॥

মারা সৃজতি লোকাং শ্চ স্বস্তু বৈরহমাদিভিঃ।
বৃদ্ধ ক্তিপ্রেরিতা রাম! তথ্য ক্ত্রাপচর্যাতে । ২৮
যথা চুম্বকদারিধ্যাচন ত্রৈ বারদাদর:।
জড়া তথা ত্রা দৃষ্ট্য মারা সৃজতি বৈ জগৎ ॥২৯
দেহ দ্বরমদেহ দ্য তব বিশ্বং রিরক্ষিধোঁ।
বিরাট ভূলং শ্রীরং তে স্ত্রং ফুক্মমুদাহ তম্।৩০
বিরাজঃ সম্ভবস্তোতে অবতারাঃ সহস্রশা।
কার্যাদে প্রবিশস্তোব বিরাজং রঘুনন্দন!।৩১।
অবভারকথাং লোকে যে গায়ন্তি গুণন্তি চ।
অনন্যন্দনা মুক্তিক্তেষ্যমেব রঘূত্রম!।৩২।
তং ব্রহ্মণা পুরা ভূমেন্ত্রিরহারার রাঘ্ব!।
প্রার্থিত স্তপদা ভূকিন্তং জাতোহদি রঘোঃ কুলে।।

সমস্ত লোকে আপনাকেই নমস্কার করিয়া থাকে—হে রঘুনাথ! আপনি বিষ্তৃত্বং জানকী লক্ষ্মী। আপনি আপনা ছইতে এই জ্বগৎ স্তত্বন করিয়াছেন, কিন্তু আপনি মায়া ছারা আশক হয়েন না, এবং নভোষগুল যেমন সর্ব্ব দর্শক আপনিই সেইরপ চিছ্জি ছারা সমস্ত পরিদর্শন করিতেছেন স্তরাং আপনি সর্ব্ব সাক্ষী। ২১। ২২। ২৩। ২৪।

হে রনযুন্দন! আপনি সকল জীবের অন্তরে ও বাছিরে অবস্থান করিতেছেন, এবং পূর্ণ ব্রহ্ম হইলেও মৃঢ় বাক্তিদিগের নিকট যেন বিচ্ছিরের ন্যায় লক্ষিত হরেন। আপনি জগলের আধার, এবং আপনি জগতের প্রতিপালক; হে জগৎপতে! আপনিই জীবসমুদারের ভোক্তা এবং ভোজ্য। হে রঘ্বর! ইভন্ততঃ যাহা কিছু দেখিতে পাই, শুনিতে পাই, এবং আরণ পথে উপন্তিত হর তাহা সমস্তই আপনি—মর্ধাৎ সকল পদার্থে, সকল জীবেই আপনি পরিদ্রামান্ আছেন। হে শ্রীরাম! মারা জীব সকলকে ক্ষিক্তি করিয়াছে ও আপনারই গুণে অহুক্ষারাণি সমুৎপর

হইরাছে এবং আপনার হারাই প্রেরিড, সেই কারণেই আপনাতে প্রষ্টুত্ববংবাবহার হইরা ধাকে। যেমন চুহ্বক প্রস্তুও রের আকর্ষণে লোছ আকর্ষিত হইরা প্রস্তুরে সংমিলিড হওরানন্তর একস্থানে অবস্থিতি করে ডক্রপে আপনি বস্তুর সমুদার জড় সন্দর্শন করিলে মারাই জগৎ সমস্ত স্থি করিবরাছে। আপনি মিরাকার অপচ স্থল ও স্ক্রদেহ পরিপ্রাহ করিরা এক্ষাও মণ্ডল রক্ষা করিডেছেন, হে রঘুনন্দন! আপনি পৃথীতলে সহজ্ঞবার অবতীর্শ হইরা বিরাজমান হইরা পরে স্থীর কার্য্য অবসানে প্রারার লয়প্রাপ্ত ইইরাছেন। হে রঘুনন্দর। যে ব্যক্তি আপনার অবতার কথা গান করে বা ব্যাধ্যা করে ডাহার নিশ্রেই মুক্তিলাভ হর। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ১৯। ২০। ৩১। ৩২।

ছে রাঘব। পুর্বের ক্রন্ধার তপদ্যায় পরিতৃষ্ট ছইরা আপনি পৃথিবীর ভার অপনোদনের জন্য রযুকুলের **জন্ম** দেবকার্যানশেষেণ কুতং তে রাম ! ছুদ্ধর্ম ।
বছ্বর্ষসহস্রাণি মান্ত্র্যং দেহমান্ত্রিতঃ । ৩৪ ।
কুর্বন্ দুদ্ধরকর্মাণি লোকদ্বরহিতায় চ ।
পাপহারীণি ভুবসং যশসা প্রয়িষ্যসি । ৩৫ ।
প্রার্থামি জগন্নাথ ! পবিত্রং কুরু মে গৃহম্ ।
স্থেলা ভুক্তা সবলঃ খো গমিষাসি পত্রম্ ॥ ৩৬
তথেতি রাঘণোগতিস্তামিন্নাশ্রম উন্ন ।
সবৈন্যঃ পুজিতস্তেন সীত্রা লক্ষণেন চ । ৩৭ ।
ততো রামশ্চিন্তরিত্বা মুহ্রতং প্রাহ্ মারুতিম্ ।
উত্তো গচ্ছ হন্ত্যংস্ত্রম যাধ্যাং প্রতি সত্রং ॥ ৩৮ |
জানীহি কুশলী কচ্চিজনো নূপতিমন্দিরে ।
শঙ্কিবরপুরং গড়া ক্রহি নিত্রং গুহুং ম্ম ॥ ৩৯ ॥

কারের বহু সহস্র বংসর মানবদেহ পারণ পূর্বক হুমর দেব কার্য সাধন করিলছেন এবং ইছলোক ও পার পোকের মহলের নিমিত্ত হুমর কার্য সূন্হ সমাধা করিয়া যশে পৃথিবী পারপূর্ণ করিয়াছেল ২০০। ৩৪। ৩৫। হে জাগালাথ ! আপানি আমার গৃহ পনিত্র ককন এবং অদ্য এখানে থাকিয়া ভোজ-নাস্তে অযোধ্যায় গমন ককন এই আমি প্রার্থনা করি। ভর-দান্ত মুনি এইরূপ কছিলে—জ্ঞীরামচন্দ্র মহর্ষির উত্তমাজনে ইমন্য, লক্ষ্মণ ও সীতা সহিত মুনি কর্তৃক পূজিত হইয়া অব-স্থান করিলেন। ৩৬। ৩৭।

অনন্তর রামচন্দ্র মুহুর্তকাল চিন্তা করিয়া পবন কুমারকে কহিলেন—হে মাকতে! তুমি গীত্র অযোধ্যায় গমন করিয়া তথাকার গোক সমুদাশের কুশল বার্তা অবগত হও এবং শ্লিবের নগরে গমন কবিয়া মিত্র গুহকে আমার সংবাদ গুদান করা তদনন্তর তুমি নলিগ্রোমে যাইয়া আমার ভাতা জানকী লক্ষাণোপেত্মাগতং মাং নিবেদর।
নন্দিপ্রামং ততো গড়া জাতরং তরতং মম।। ৪০।।
দৃষ্ঠ্য ক্রাহ্নি লভার্যন্ত স্ক্রান্তং মম।। ৪০।।
সীড়াপহরণাদীনি রাবেশস্য বধাদিকম্ ॥ ৪১॥
ক্রাহি ক্রমেশ মে জাতুঃ সর্বাং তত্র বিচেষ্টিভ্য়।
হত্যা শক্রগণান সর্বান সভার্যাঃ সহলক্ষাণঃ। ১২।
উপরাতি সমৃদ্ধার্থঃ সহ থাক্ষহরীশ্বরিঃ।
ইত্যুক্ত্যা তত্র রন্তান্তং তরতস্য বিচেষ্টিতম॥ ৪২॥
সর্বাং জ্ঞাড়া পুনঃ শীন্ত্রমাগচ্ছ মম সন্ধিম্।
তথেতি হন্ত্রমাংক্তর মান্ত্র্যং বপুরাক্ত্রেঃ॥ ৪৪॥
নন্দিপ্রামং যথে। তুর্থ বায়ুবের্গেন মাক্রতিঃ।
গক্ত্মানিব বেগেন জিত্ক্ষন্ ভুক্রগোন্তমম্। ৪৫
শ্বিক্রেপুরং প্রাপ্য গুল্মান্দ্র মারুক্তিঃ।
উবাহ মধুরং বাকাং প্রক্রেমান্ত্র জ্বাণ্ড ৮৪॥
উবাহ মধুরং বাকাং প্রক্রেমান্ত্র জ্বাণ্ড ৮৪॥

ভরতের সহিত সাক্ষাৎ করিবে এবং তাঁচার কুশল সংবাদ জিজ্ঞাসা করিয়া সীতাহরণ প্রভৃতি রাবণের বিন্যাদি সমস্ত বিষয় তাহাকে বলিবে। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

আমার জাতা ভরত সমস্ত বিষয় সচেষ্ট হট্যা জিজাসা করিলে তুমি বলিবে যে, রামচন্দ্র ভার্যা জানকী ও অন্তল লক্ষাণের সহিত থাকিয়া সম্দায় বৈরী বিনাশ পূর্বক মহৈ-খ্যাশালী ছইয়া রাক্ষ্য ও বানরপতি দিগের সহিত উপগমন করিয়াছেন, তাঁহার অস্থেবিত র্তান্ত কহিয়া এবং সমস্ত বিষয় অবগত হইয়া পুনর্বার আমার সন্ধিনে শীত্র আমন করিবে। এইছুবলে পাবন নন্দন মনুবাদেই পরিগ্রহ করিয়া গরুড় ও পাবন সদৃশ অভিবেশে নন্দিগ্রামাভিমুপে প্রস্থান করিল। ৪২ / ৪৩ / ৪৪ / ৪৫ /

শৃদ্ধিবের নগরে গ্রমন কবিয়া মিত্র গুহকে আমার সংবাদ অনন্তর পাবন কুমার শৃদ্ধিবের পুরীতে উপস্থিত ছইর। অদান কর। তদনত্তর তুমি নন্দিশ্রোমে যাইয়া আমার ভ্রাহা । গুংকের সাক্ষাংকার গাভ করণানাওর সানন্দ চিত্তে ও মধুর রামো দাশরথিঃ প্রীমান্ দখা তে সহ দীতরা।
দলক্ষণন্তং ধর্মাত্মা ক্ষেমী কুশলমন্তবীৎ।। ৪৭।।
অনুজ্ঞাতোহদ্য মুনিনা ভরদ্ধাক্ষন রাঘবং।
আগমিব্যতি তং দেবং জক্ষ্যদি তং রঘুত্তমম্ ॥৪৮
এবমুক্ত্যা মহাতেজাঃ সংপ্রহৃত্তমম্ লহম্যা
উৎপপতে মহাতেগো বায়ুবেগেন মার্কতিং ॥৪৯॥
সোহপশ্য জাম নীর্পাং চ সর্যুং চ মহানদীম্।
ভামতিক্রম্য হলুমান্ত্রনিক্রামং যথে মুদা।। ৫০॥
ভামতিক্রম্য হলুমান্ত্রনিক্রামং থথে মুদা।। ৫০॥
দদর্শ ভরতং দীনং কুশমাশ্রমবাসিন্ম্।। ৫১॥
মলপক্ষবিদিক্ষাক্ষং জাটিলং বিক্রাম্বর্ম্।।
ক্রম্বুলকুতাহারং রাম্চিত্রাপ্রায়ণ্ম্॥ ৫২॥

বাকে; তাঁহাকে বলিতে লাগিল,—জাপনার প্রির্মিত ধর্মান্তা দাশবথি জীমান রামচন্দ্র সীণা ও লক্ষণের সহিত আপনার নিকট কুশল সংবাদ বলিবার জনঃ আমাকে প্রেরণ করিয়াছেন; ভর্মান্ত মূনির নিদেশান্ত্ব তী হইয়া তিনি আগমন করিবেন, আপনি তাঁহার সহিত সাক্ষাং করিবেন। মহাতেজন্দ্রী পবন-ভনর এই বাক্য বলিয়া প্রস্থান্তঃকরণে অনিলবেগে উল্লেখন প্রদান করিয়া রামতীর্থ ও মহানদী সরম্ অবলোকন করিল। পরে সে সমুদার অভিক্রেন করিয়া প্রমহর্ষে নন্দির্জামে উপ-নীত হইল। ৪৬। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০।

আযোধ্যার ক্রোশাস্তর ছইতেই অনিলতনয় দেখিল— ভরতের রুফাজিন ও বল্কল পরিধান,—অবস্থা দীন—শরীর ক্লণ ও নল পত্ত লিগু—মস্তকে জটাভার—আহার বন্য ফল মূল এবং বদর নাম্চিত্তাও আকুল। ভিনি বাদ-পাহ্কাছর সমুণে

সংস্থাপন পূর্বক কাষার বসন প্রিধারী হইলা প্রধান সচিত গণের সহিত পৃথিবী শ্বাসন করিছেছেন। প্রনক্ষার ভরতকে সাক্ষাৎ মৃত্তিমান ধর্মের ন্যায় উপরিক্ত অবলোকন করিছা করমোডে কহিতে লাগিল,—আপনি মে রামের জনা চিন্তা পর হইরাছেন, যে রাম ভাপদ বেশে দশুকারণো অবভিতি করিষাছিলেন, এবং ই হার জন্য অনুক্ষণ পরিতাপ করিতেছেন সেই ইক্ষাকু বংশোদ্ভব রামচন্দ্র আপনাকে কুশল সংবাদ শ্রেরণ করিয়াছেন। ৫১। ৫১। ৫১। ৫৫।

ছে দেব! আপনি মহৎ শোক পরিত্যাগ করুন,—আমি
আপনার নিকটে প্রিরসংবাদ কহিতেছে—এই মৃত্তেই জাতা
জীগামের সহিত আপনার সন্মিলন হইবে। রামচন্দ্র যুদ্ধক্ষেত্রে
লক্ষাধিপতি দশাননকে বিনাশ করিয়া সীতাকে উদ্ধারকরণানন্তর অতুল প্রেয়গালী ছইয়া অনুজ লক্ষ্মণ ও জনক
ছহিতা সীতা সমভিবাছারে আগমন করিভেছেন। ৫৬। ৫৭।
হন্যান এই গুভসংবাদ প্রাদান করিলে, কৈকেন্ত্রীর প্রিক্স

আলিক্ষ্য ভরতং শীঘুং যাক্তিং প্রিয়বাদিনম্।

আনন্দকৈরশ্রুক্তলৈং সিষেচ ভরতং কপিম । ৫৯ ।

দেবো বা মানুষো বা অমনুক্রোশাদিহাগতঃ।

প্রিয়াখ্যানস্য তে সৌম্য! দদামি ক্রবতং প্রিয়ম্।৬০

গবাং শতসহস্রঞ্জামাণাং চ শতং বরম্।

সর্বাভরণসম্পন্ধা মুঞ্জাং কন্যাস্ত ষোড়শ ॥ ৬১ ॥

এবমুক্ত্রা পুনং প্রাহ ভরতো মাক্রতাত্যুক্তম্।

বহুনীমানি বর্ষাণি গতস্য স্থুমহন্ধনম্। ৬২।

শুণোম্যহং প্রীতিকরং মম নাখন্য কার্তনম্।

কল্যাণী বত গাথেরং লোকিকী প্রতিভাতি মে।।

এতি জীবন্তমানন্দো নরং বর্ষশ গদিপি।

নাঘ্যক্ত হরিণাঞ্চ ক্থুমানীৎ স্মাগ্নঃ। ৬৪ ॥

পুত্র মহাবলবান্ ভরত আনন্দে মুজুণির হইয়া ভূপুঠে নিপকৈত হটলেন: এবং পুনকপান পূর্বক, উভসংবাদ দাতা
নকতাক্মজ হন্মানকে শীস্ত্র সমালিক্ষন করতঃ আনন্দাশুক বিসক্ষনে মহাকপিকে অভিষিক্ত করিয়া কেলিলেন এবং কহিছে
লাগিলেন—আপিন দেবতা না মানব দয়া পরতন্ত্র হইয়া
এখানে আগমন করিয়াছেন ? হে সেমা! আপনি প্রেরবাদী
শতএব আমি আপনাকে কি প্রিরবস্তু প্রদান করিব ? শত
সহস্ব গাতী, এক শত বহুৎ গ্রাম ও স্ব্যাভরণভূষিতা স্ব্যাজ
ক্ষারী যোজ্শী কন্যা দান করিব। এইরূপ করিয়া ভরত প্রননন্দনকৈ পুনর্ব্বার বলিলেন—আমার নাবের মহারণ্য মধ্যে
এই সমস্ত বংসর বিগত হইয়াছে, অভএব ভাঁহার প্রীভিক্ত
কীর্ত্তন প্রবণ করিব, কারণ ঐ সমস্ত আমার সভ্য বলিয়া
প্রতীতি হইতেছে, অধিকন্ত রাঘ্বের সহিত্ত বানরদিগ্রের সমাবাম কিরপে হইন, ক্ষাবণ করিলে অপার স্থানন্দ উপস্থিত হয়,

ভত্ত্বন্থানিই হজং তে বিশ্বদেয়ং বচন্তব।

এবমুজোইথ ইন্থুমান্ ভরতেন মহাত্যুনা॥ ৯৫॥

আচচক্ষেইথ রামস্য চরিতং রুৎস্থশঃ ক্রমাং।

শুজা তু পরমানন্দং ভরতো মারুতাল্যুলাং॥ ৬৯

আজ্ঞাপয়চ্ছক্রইণং মুদাযুতং মুদাস্থিতঃ।

দৈবভানি চ যাবন্তি নগরে রঘুনন্দন!। ৯৭।

নানোপহারবলিভিঃ পুরুস্তুত্ত মহাধিয়ঃ।

সুতা বৈভালিকালৈকে বন্দিনস্তুতিপাঠকাঃ। ৬৮।

বারমুখ্যাশ্চ শতশো নির্যান্ত্রীদার সঞ্জ্বশঃ।

রাজদারাত্তথামান্যা সেনাহস্ত্যশ্বপ্রাং। ৯৯।

ভাজাণান্চ ভবা পৌরা রাজ্ঞানো যে স্মাগভাং।

নির্যান্ত রাঘবস্যাদ্য ক্রমুং শশিনিভানন্ম্॥ ৭০॥

ভরতস্য বচঃ শ্রুড্বারত্বময়োজ্জ্বলৈঃ॥ ৭১॥

অলঞ্জুশ্চ নগরীং মুক্তারত্বময়োজ্জ্বলৈঃ॥ ৭১॥

ভরতের বাকা শুনিয়া শত্রুর নানামুক্তা রত্নবারা নগরীকে স্মক্ষীভূতা করিলেন ; তোরণে বিবিধ চিত্র বিচিত্র পতাকা তোর নৈশ্চ পতাক তির্নির চিত্রা ভির্ নেকধা।
আলক্ষ্রি তি বেশ্মানি নামাবলিবিচক্ষণাঃ ৭২।
নির্য্যান্তি রন্দশঃ সর্বের রামদর্শনলালসাঃ।
হয়ানাং শতসহস্রং গজানামযুতং তথা। ৭৩।
রথানাং দশসহস্রং স্থান্তি কিত্রি তিয়া
পারমেষ্ঠীন্যুপাদায় জব্যাণ্যুক্তাবচানি চ॥ ৭৪॥
ততন্ত শিবিকার্চা নির্য্যু রাজ্যোষিতঃ।
ভরতঃ পাত্তকে নাস্য শিরস্যেব কুতাঞ্জলিং। ৭৫॥
শক্রমহিতো রামং পাদচারেণ নির্য্যা।
তদৈব দৃশ্যতে দূরাদ্বিমানঞ্জুসন্নিভম্॥ ৭৬॥
পুষ্পকং স্থাসন্ধাশং মনসা ব্রহ্মানির্মাত্রম।
এত্রিন ভাতরো বীরো বৈদেহা রামলক্ষ্যণে।
প্রতিশ্ব কপিপ্রেষ্ঠো মন্তিভিশ্ব বিভীবণঃ।

উচ্চীরমান। হইল—ভবন সমুদার নান। আভরনে অলঙ্কত হইল। শত সংজ্ঞ অধ্য হস্তি, দশ সহজ্ঞ স্বর্গ-স্ত্র-বিভূষিত রথর্ক রাম দশন লালসার নিগত হইল; অনস্তর রাজ যোষদ্বর্গ নানা উপচার দ্রেরা সমূহ সমভিব্যাহারে করিয়া শিবিকায় আারোহণ পূর্বক বহির্গত হইলেন, পরে ভরত রামচন্ত্রের পাছুকা স্বীয় মন্তকে সংস্থাপন করিয়া শত্রের সভিত পদত্রজ্ঞে রুভাঞ্জালিপুট হইয়া গমন করিছে লাগিলেন। ইভাবদরে, দূর হইতে বিমানস্থ ব্রহ্বা নিম্মিত স্ব্যা সন্ধান পূস্পক রথের উপরি মহাবীর শ্রীরাম ও অমুজ লক্ষ্মন এবং বিদেহপুল্লী জানকী উপবিষ্ট থাকায় বিমান যেন চন্ত্রের নাগ্র পরিলক্ষিত হইতে লাগিল। ৭০। ৭২ । ৭৩:৭৪। ৭৭।

দৃশ্যতে পশ্যত জনা ইত্যাহ প্রনাত্যুজঃ ॥ ৭৮॥
ততো হর্ষসমুদ্ধ তো নিঃস্বনো দিরমস্পৃশৎ।
স্ত্রীবালযুবরদ্ধানাং রাগ্যাহয়মিত কীর্জনাৎ ॥ ৭০॥
রথকুঞ্জরবাজিস্থা অবতীর্য্য মহীং গতাঃ।
দিনুশুন্তে বিমানস্থং জনাঃ দোমসিংগম্বরে ॥ ৮০॥
প্রাপ্তলির্ভরতো ভূতা প্রস্থান্তো রাঘ্যোমা,খং।
ততো বিমানাপ্রতং ভরতো রাঘ্যার মুদ্ধা ॥ ৮১॥
বর্ষদে প্রণতো রামং মেরুস্থানির ভাক্ষরম্।
ভতো রামাভ্যমুক্তাতং বিমানমপ্রভর্তি ॥ ৮২
আরোপিতো বিমানং তন্তঃভঃ সানুজস্তনা।
রামমাসাদ্য মুদ্ধিতঃ পুনরেবাভ্যবাদয়ৎ ॥ ৮০
সমুপ্রাপ্য চিরাৎ দৃষ্টং ভরতং রঘুনন্দনঃ।
ভাতরং স্বাক্ষমারোপ্য মুদ্ধা তং পরিব্সক্ষে ॥ ৮৪ঃ

অনন্তর হন্মান কহিতে লাগিল ঐ দেখ কথি জ্ঞেষ্ট ক্থাবি এবং মন্ত্রি পরিবৃত বিভীষণকৈ দেখা যাইতেছে, অনতি প্রে ন্ত্রী, বালক, গ্রাও ব্লেরণ শ্রীরামচন্দ্রকে অবলোকন করিবা মাত্র "ঐ শ্রীরাম আদিতেছেন" ইত্যাকার হর্ষ স্চক শক্ষ গগণ স্পর্শ করিল। পরে অখারোহী অধ্ হইতে, গজারোহী গজ হইতে ও রথারোহী রথ হইতে, অবতীর্ণ হইরা বিমানজ রামচন্দ্রকে গগণাধ্যক্ত চন্দ্রের ন্যায় সন্দশন করিতে লাগিল,

অনন্তর ভরত অতিশায় হর্ষদহকারে বন্ধাঞ্জলি হটরা বিমানাত্রত শ্রীরামচন্ত্রের সমুখবর্তী ছইলেন এবং পর্বতে শিগরস্থ ভাস্করের ন্যায় রামচন্ত্রকে বন্দনা করিতে লাগিলেন,অমনিরামচন্ত্রক প্রভৃতির আাদেশবর্তী ছইয়া রথ ধরণীনলে অবতীর্ণ হটল, তথান ভরত ও শক্রুত্র পুত্পক রথ আব্রোপিত করিয়া এবং রামচন্ত্রকে প্রাপ্ত হইয়া পুনরায় তাঁহাকে অভিবাদন করিলেন। অনন্তর রঘুনাথ রামচন্ত্র ভরতকে বিলক্ষে উঠিতে

সূত্রীবং জামক্ত্রং চ যুবরাজং তথাক্ষদম।

নৈক্ষদিবিদনী নাংশ্চ খাষ্ড্রের সম্বজে ॥ ৮৬ ॥

স্বেলং চ নলং চৈন গ্রাক্ষণ গল্ধমাদনম্।
শর্ভং পন্যং চৈব ভরতঃ পরিষম্বজে । ৮৭ ।

সর্বে তে মান্বং রূপং কুত্বা ভরতমাদৃতাঃ।

পঞ্জকুঃ কুশলং সৌম্যাঃ প্রদুফাশ্চ প্রক্ষমাঃ ॥৮৮

৬ তঃ স্থ্রীব্যানিক্সা ভরতঃ প্রাহ্ ভক্তিতঃ।

ত্থ্যবিষ্ঠানিক্সা জরেছাইভূদোবণো হতঃ॥ ৮৯ ॥

ত্মস্মাকং চতুরাং ভু জাতা স্থ্রীব! পঞ্চমঃ।

শক্রম্শ্চ তদা রাম্মভিবাদ্য সলক্ষ্ণম্। ১০।

নীভায়াশ্চরণো পশ্চাদ্ববন্দ বিনয়ান্বিতঃ।
রামো মাতরমাদাদা বিবর্ণাং শোকবিহ্বলাম্। কঃ
জগ্রাহ প্রণতঃ পাদে মনো মাতঃ প্রসাদয়ন্।
কৈনেরং চ স্থমিত্রাঞ্চ ননামেতরমাতরঃ ॥ ৯২ ॥
ভরতঃ পাতৃকে তে তু রাঘবদা সুপূজিতে।
যোজয়ামাদ রামস্ত পাদয়োভক্তিদংযুতঃ। ৯৩।
রাজ্যমেতয়াদভূতং ময়া নির্যাভিতং তব ।
অদ্য মে সফলং জন্ম ফলিতো মে মনোরথঃ। ৯৪
যৎপশ্যামি সমায়াভমযোধ্যাং তামহং প্রভো!।
কোষ্ঠাগারং বলং কোশং কৃতং দশগুণং ময়া। ৯৫
ত্তেজ্বা জগল্লাথ! পালর্ম্ব পুরং স্বক্ম্।

দেখিয়া মিত্রত্ব ভিতৃ তাঁহাতে স্থীয় জোডে সাহলাদে উপ-বেশন করাইলেন। তৎপতে ভরত লক্ষণকে সভিবাদন পূর্মক কনকরাজ ছহিলার নাম সঙ্কীর্ত্তন কবিলেন; পশ্চাৎ ভিনি বার পর নাই প্রতি ও প্রেম-বিহন্ত হইয়া, স্থাীব, জাস্ববান, সুব্যাজ অঙ্কদ, নৈন্দ, বিবিদ, নীল, খ্যস্ত, সুযোগ, নল, গ্রাক্ষ, রাগ্ধনাদন, শ্যভ ও পনস্থাক অভিবাদন করিতে লাগিলেন। ৮১ ৮২ ৷ ৮৩ ৷ ৮৪ ৷ ৮৫ ৷ ৮৬ ৷

সমস্ত প্লবঙ্গম মনুষ্যরূপ পরিগ্রেণ্ড পূর্বক ভরতকে সমাদ্য করতঃ উছিরে কুশল সংবাদ জিজ্ঞাসা করিল। অনস্তর মহামতি ভরত সুগ্রীবকে আলিঙ্গন প্রদান করিয়া ভক্তি সহকারে কহিতে লাগিলেন, আপনার সাহাযো শ্রীরাম্চস্ত্র মহাবীর দশাননকে বিনাশ করিয়া যুদ্ধে বিজয়ী হইয়াছেন;ছে সুগ্রীব! আপনি আমাদিশের চারি ভ্রাতার পঞ্চম। পরে লাক্ষ্য প্রথমতঃ রামচন্ত্রকে শতিবাদন করিয়া, পরে লক্ষ্যণকে অভিবাদন করিলেন, অনন্তর বিনয়াবনত ছইয়া জানকীর চর্বুণ ন্যস্থার করিলেন। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ৯০। শীরাম পীর জননী কৌশল্যাকে মলিনা ওংশোক বিহ্বলাদর্শন করণানপ্তর উচ্চার চরণে সাহীজে প্রশিপাত করিলেন, পরে স্থমিত্রা, কৈকেয়ী প্রভৃতি অপরাণর জননী-দিগের চরণে প্রণাম করিলেন। ভরত রামচন্দ্রণ যে পাহকণ্ড দ্বর চতুর্দ্দশ বর্ষ পূজা করিভেছিলেন, তাহা এক্ষণে অভিশর ভক্তির সহিত শীরামের পাদপ্যে সংযোজিত করিয়া দিলেন, এবং কহিলেন, হে রঘুনাথ। আপনার রাজ্ঞা এই কাট পাহ্কার নাস্ত ছিল, অন্য আমার মনোনাঞ্ছা ফলবাতী হইন এবং আনার জন্মও সার্থক ছইল। ৯১। ৯২। ৯০। ৯৪।

তে প্রভা ! অনা আমি আপনাকে অযোধা নগরীকে
সমাগত সন্দর্শন করিলাম : হে জগরাথ ! আমি অরাদি
স্থাপন গৃহ, দেনা ও ধন দশগুণ পরিমাণে বৃদ্ধি করিয়াছি,
এক্ষণে আপনি স্থাং স্থায় ভেজে পৃথিবী পোশন কক্ষন কপীস্থাপ ভ্রতকে এইরপ বলিতে শুনিয়া যংপ্রোনাত্তি

ইতি ক্রনাণং ভরতং দৃষ্ট্য সর্বের কপীশ্বরাঃ ॥ ৯৬
মুমুচুর্নেক্রজং ভোরং প্রশাশং সুমুদিন্দ্রভাঃ।
ততো রামঃ প্রস্থান্তা ভরতং স্বাস্করণং মুদা। ৯৭
ম্যো তেন বিমানেন ভরতস্যাশ্রমং তদা।
ভাবরুহ্য তদা রামো বিমানাগ্র্যান্মহীত সম্। ৯৮।
ভাবরীৎপুষ্পকং দেখো গছ্ছ বৈশ্রবণং বহ।
ভাবুগছ্লেন্দ্রানানি কুবেরং ধনপালকম্। ৯৯॥

রামো ৰশিষ্ঠন্য গুরেঃ পদায়ুক্তং
নতা যথা দেবগুরো: শতক্রতুঃ ।
দত্ত্বা মহার্হাননমুত্তমং গুরোকুপাবিবেশাথ গুরো: সমাপতঃ ॥ ১০০ ॥

ইতি শ্রীমদধ্যারারামারণে উমামতেশ্বর সন্থাদে দ্ধকাণ্ডে চতুদিশোহধ্যার:।

আনন্দিত হইয়া অশ্রুষ্ঠ বিসর্জ্জন করিতে করিছে ভাঁহাকে প্রশংসাকরিতে গাগিল।

অনস্তর রামচন্দ্র প্রান্তঃকরণে ভরতকে জাগনার জন্য এক খা জোড়ে লইরা, দেই বিমানে আবোহণ পুর্বাক ভরতের গ্রুক সমীতে আগ্রমে সমন করিলেন : ভথার বিমান হইতে ধরণীতলে অব- । ১০০ জীন হইয়া পূজাককে কহিলেন, এক্ষণে ভূমি প্রতিত্যমন করিয়া কুবেগকে বছন করে, কারণ স্থামি জ্যান ভূমি দেই ধন পালকেরই ইন্ডি অনুগ্রম করিয়া থাক । পরে শচিপ্তি ইক্স থেমন দেবগুরুকে

নমন্ত্রাব করিয়া থাকেন, শীর'মচন্দ্রও কৃণগুক কলিট লেবের পাদপাল সেই রূপে গ্রেছণ করিলেন, এবং গুকুর উপ্রেশনের জন্য এক থানি মহামূল্য উভ্য জাসন প্রদান করিয়া প্রবং গুকুর স্থীপে উপ্রিক্ত হুইলেন : ২৫ ৷ ১৬ ১৭ ৷ ১৮ ৷

> ইতি জীষদধ্যাক্সগামরেলে উমামকেরংম ক্ষানে যুদ্ধকাণে চত্তকলোহয়ারঃ .

প্রদ্রোভ্ধাায়

ততন্ত্ব কৈকেরীপুজো ভরতো তক্তিস যুতঃ।
শির্মাঞ্জলিমাধার জেকেং ভাতরমন্ত্রীৎ।১।
মাতা যে সৎকৃতা রাম! দক্তং রাজাং জ্যা মম।
দদাযি তত্তে চ পুনর্যথা জ্যাদদা মম।২।
ইতৃত্ত্বো পানলোর্ভল্যা সাফাক্ষং প্রণিপ্তা চা
বছ্পা প্রথির মান কৈকেয়া গুরুণা সহ। ৩।
তথেতি প্রতিজ্ঞাহ ভরতাজ্জ্যমীশ্বরঃ।
মায়ামাগ্রিতা সকলাং নরচেন্টামুপাগতং। ৪।
স্বারাজ্যানুদ্রো যান মুখ্জ্ঞানৈক্রপিণং।
নির্ম্তাতিশ্রানন্ত্রি শিং প্রমান্ত্রনঃ। ৫।

মামুষেণ ভুরাজ্যেন কিং তস্য জগনীশিভূং?।

যস্য অভঙ্কমাত্ত্রেণ ত্রিরোকী নশাতি কলাং। ৬

যস্যানুগ্রহমাত্রেণ ভবন্ত্যাথগুলপ্রিরাং।
লীলাস্ট্মহাস্টেং কিয়দেতজ্যাপালেঃ ৭।

তথাপি ভজতাং নিত্যং কামপুরবিধিৎসয়া।
লীলামান্ত্র্যদেহেন স্প্রনিধিংসমা।
ততঃ শক্তম্বহনামিপুণঃ শাক্রন্ত্রকঃ।
সংভারাশ্যভিষেকার্থং আনীতা রাঘ্রস্য হি॥।

অনন্তর কৈকেয়া পুত্র ভবত জ্যেষ্ঠ জাতার মন্তকোপরি ভল্তিণ পুর্বাক অঞ্চলিবছা করিয়া বলিলেন—হে রামচক্র ! আমার জননা আমারে বালা প্রদান করিয়া আপনাকে বনবাদী করিয়াছিলেন, আপনি নেই বাকা প্রতিপালন করিয়াছিলেন এবং আপনিই আমাকে রাজা প্রদান করিয়াছিলেন একণে আপনাক পুনর্বার মেই রাজ্যা প্রদান করিছেছি । এই বলিয়া ভরত বামচক্রের পাদপ্যে মাইছিলে প্রবিশতি পূর্বক কৈকেয়ার সহিত বহু প্রকারে প্রার্থনা করিলেন যে, আপনি স্কিদানন্দ অভবে এই ভরতের নিকট হইতে রাজ্য পুন্রাই ক

জান উত্তরই তুলা; অতএব মনুষ্য ইইরা এই বিস্তৃত রাজে। প্রয়োজন কি ? যাঁহার জভিসিমার তিলোক ক্ষণান্ধ মধ্যে বিনষ্ট ইইরা যার, যাঁহার অনুপ্রত্যাত্ত আল্জন জীলমুভূড়া থাকে— যাঁহার লীলার এই মহ কঠি কজভ ফইরাছে, ধে রমাপতে। তাঁহারই এই অলোধ্যা লাজন ১০০, ৩ । । ৫০৬। ৭০

ভক্তদিগের অভিনার পূর্ণ করিবার ক্ষম আপনি প্রকীর লীপা-ছারা মন্ত্রদেছ ধারণ করিয়া লোক সমস্তকে ,শিক্ষা প্রদান নের নিমিত্র মন্ত্রাবৎ ব্যবছার কবিভেছেন। অনস্তর ক্ষেত্রিক কারেরা শক্রদের আদেশ প্রাপ্ত ছইয়া দাশরশির অভিবেক-জন্য সাগর সলিল আনয়ম করিল। প্রথমতঃ ভরত, মহাস্কা পূর্বং তু ভরতে স্নাতে লক্ষণে চ মহান্থনি।
স্থানিব বানরেন্দ্রে চ রাক্ষনেন্দ্রে বিভীবণে॥ ১০
বিলোধিত জটঃ স্নাত শির্মাল্যান্থলেপনা।
মহাহ বিদনোপেত স্তম্থে তব্ধ শ্রিয়া জ্বলন্। ১১!
প্রতিকর্মাং চ রামস্য লক্ষণশ্চ মহামতিঃ।
কারয়ামাস ভরতঃ সীতারা রাজেবোবিতঃ॥ ১২।
মহাহ বিস্তাভর নৈরলঞ্চক্রঃ স্থমধ্যমাম্।
ততো বানরপত্নীনাং সর্বাসামেব শোভনা। ১৩
অকারয়ত কৌশল্যা প্রস্থাই পুল্রবংসলা।
ততঃ স্যান্দনমাদায় শক্রয়বচনাৎ স্থাইঃ॥ ১৪॥
স্থায়র স্থাসন্থাং বোজরিত্বা প্রতিহঃ।
আরুরোহ রথং রামঃ সত্য ধর্মাপরায়নঃ। ১৫।
স্থানিবা স্বরাজশ্চ হম্মাংশ্চ বিভীবঃ।
স্থানা দিববাস্থাবা দেবানের স্থিতিঃ। ১৯।

রামমন্বীয়ূরত্থে চর্থাশগজবাহনাং।

য়্ঞীবপত্থাং সীতা চ ষ্যুর্থানৈং পুরং মহৎ :৭ ।

বজ্ঞপাণিযথা দেবৈহারত।শ্বথে স্থিতং।

প্রথযো রথমান্থার তথা রামো মহৎপুর্ম্॥ ১৮

সার্থাং ভরতশ্চক্রে রত্ত্বদশুং মহাদ্যুতিং।

শ্বেতাতপত্তং শক্রয়ো লক্ষণো ব্যক্তনং দধে। ১৯

চামরং চ স্মীপন্থো ন্যুর্বীজয়দরিক্দমং।

শশিপ্রকাশং ত্বপরং জ্ঞাহামূরনারকং ॥ ২০ ॥

দিবিজৈঃ সিদ্ধনীজ্বশ্চ ঋষিভি দ্বাদশ্বিনং।

ন্তার্মানস্য রামস্য শুক্রুবে মধুর্ধ্বনিং। ২১।

মামূরং ক্রপমান্তার বানরা গজবাহনাং।

ভেরীশ্র্ডানিনাদেশ্চ মুদ্রপণবানকৈং। ২২ ।

লক্ষমণ, বানরেন্দ্র শুঞ্জীব, রাক্ষসাধিপতি বিভীষণ কেশ সংক্ষরনানন্তর রুত্থাত হইরা, অঞ্জর, চন্দন কুস্থমমালা ও মুহান্শ্য বসন ধারণ করিয়া অবস্থিতি করিতে লাগিলেন। মুহান্থা লক্ষমণদেব জীরামচন্দ্রের বেশভূষা ক্যাইয়া দিলেন এবং ভ্রুত ও দশরথ পভ্লীগণ দীতার বেশবিন্যাস করিয়া দিলেন চি । ৯ ১০ ১১ ১২ ।

ভানতর পোরজনেরা মহামূল্য বসন ও বিবিধ ভূষণে জানতীকে অলঙ্গুল কবিলেন এবং বানরপর্টাদিলেরও বেশ ভূষ কবিরা দিলেন। তদনস্তার স্থান্ত শক্তার বাক। জাবণে স্থানক্ষাশ রথ লগনা বামাতো উপস্তিত হইলে স্তা-ধ্যাপ্রায়ণ বাম্চন্ত বিমানারোহণ করিলেন। স্থাীব, মুক্

রাজ অঙ্গদ, হত্মান ও বিভীষণ স্নানানন্তর দিব্যান্তর পরিধান করিলেন ও দিব্য ভূবণে ভূবিত হইলেন; অশ্বারোহী, গঞা-রোহী, রগী ও পদাভিদল শ্রীরামের অগ্র পশ্চাং গমন কবিতে লাগিল, এবং স্থাীবপত্নী ও সীতা বিমানারোহণ পূর্মক অযোগ্যাপুরী গমন করিলেন। সহজ্ঞাক্ষ যেমন স্বরাণ পরি-বৃত্ত হইয়া ছরিত অশ্ব সংযোজিত রংখ আরোহণ করিতেন; সেই রূপ রামচন্দ্র পরিজন থেটিত হইয়া রপারোহণ পূর্মক আন্যাধ্যাপুরী গমন কবিলেন; মহাভেজা ভরত রতু দত্ত গোহণ করিয়া দার্থি কার্যো নিগুক্ত হইলেন—শক্রম খেতাভপত্র ধারণ ও লক্ষ্মণ চামর বাজন করিলেন। ১০ ১৪/১৫ ১৯/১৭। ১৮। ১৯। স্মিকট্রজী অরিক্ষম স্থাীব চামর বাজন করিতে লাগিল এবং অস্তরনায়ক বিভীষণ সচ্ছপ্রকাশ ধারণ করিলেন। সিদ্ধ-সজ্জ্য ও দিব্য দর্শনি শ্রমিণ শ্রীবানের স্তৃতি বাদ ধর্যনি মুধুরবং কর্গগাচর ক্রিডে লাগিলেন; গলবাছন প্রবিষয়ের বিশ্বর প্রতি সমলক্তাম।
দদৃশুতে সমায়ান্তং রাঘবং পুরবাদিনঃ॥ ২৩॥

দূর্বাদলশ্যামতন্ত্রং মহার্থ নিবীটরত্বাভরণাচিতাঙ্কম্।
আরক্তকপ্পায়তলোচনান্তং
দৃষ্ট্যা যযুর্মোদমতীর পুণ্যাং ॥ ২৪।।
বিচিত্ররত্বাঞ্চতস্থ্রনদ্ধপীতাশ্বরং পীন্ভুজান্তরালম্।
অন্ধ্যমুক্তাফলদিব্যহারেবিবেরাচমানং রঘুনন্দনং প্রজাঃ । ২৫।
মুগ্রীবমুখ্যের্ইরিভিঃ প্রশাবৈদ্রনিষেব্যমাণং রবিভুল্যভাসম্।
কন্থ্যরিকাচন্দনলিপ্রগাত্তং
নিবীতকপ্যাদ্রমপ্রপ্রাভ্যান্ত্র্যান্ত্র

শ্রুত্বা রামমুপাগতং মুদা
প্রহর্ষবেগোৎকলিভাননশ্রিয়ঃ।
অপাস্য সর্বাং গৃহকার্যমাহিতং
হয়্যাণি চৈবারুরুছঃ স্বলঙ্কুতাঃ॥ ২৭॥
দৃষ্ট্বা হরিং সর্বাদৃগুৎসবারুতিং
পুল্পোঃ কিরস্তাঃ স্মিতশোভিতাননাঃ।
দৃগ্ভিঃ পুননে ব্রমনোরসায়নং
স্থানন্দ মূর্ত্তিং মনসং ভিরে ভিরে ॥ ২৮
রামং স্মিতস্লিগ্রদ্শাঃ প্রজান্তথা
পশ্রন্ প্রজানাধ ইবাপরঃ প্রভুঃ।
শনৈর্জিগামাথ পিতুঃ স্বলঙ্কুতং
গৃহং মহেন্দ্রালয়সন্মিতং হরিঃ॥ ২৯॥

বানর সকল মনুষ্যরপ পরিপ্রান্থ করিয়া, ভেরী, শাষ্ট্য, মৃদক ও পণব নিনাদে চারিদিক্ প্রতিশ্বনিত করিল; রাঘ্য শ্রেষ্ট সম-লঙ্কুত অযোধ্যাপুরীতে প্রেরেশ করিলেন, ইত্যবসরে পুরবাসীগণ নবভুর্ব্বাদলশ্যাম, মহার্ছ কিরীট রজ্বাভরণ বিভূষিত, আরক্ত কমল লোচন রামকে সমাগত দর্শনে অপার আনন্দ সাগবে ভাসমান হইতে লাগিল।২০ / ২১ / ২২ / ২৩ / ২৪ /

রথুনন্দন বিচিত্র রত্নযুক্ত অর্থময় কটিস্ত্রহার। পীভায়ার বন্ধন করিয়া, মহামূল্য দিব্য মুক্তাহার কঠেধারণ
করতঃ অপূর্কে শোভা ধারণ করিলেন ; কস্তুরিকাও অঞ্জ চন্দনে রামচন্দ্রের সর্কাঙ্গে অমূলিগু ও কম্পাক্তন মালা কঠলম্বিত হইলে, স্থাীব প্রভৃতি প্রশাস্ত্রচিত্ত বানরগণ রবি কিরণ সরিভ রামচন্ডের দেবাহরক্ত ছইল: প্রবাসিনী জ্রীগণ প্রীরাম আগমন করিতেছেন শ্রবণ করিরা
সমস্ত প্রকাগ্য পরিভাগে পূর্বাক অলফ্ তা ছইয়া, আনন্দোছোসিত বদনে প্রসাদোপরি আব্রোহণ করিল: রামচন্ডের
কান্তি যেন সর্বাদিক আনন্দে উচ্ছলিত করিতে করিতে
আগমন করিতেছে দেখিয়া, সন্মিত বদনা রমণীগণ প্রস্ত্রা
হান্তি যেন চকু ও মন দ্বারা তাঁহাকে আলিজন করিতে
লাগিল। প্রজাপতি বন্ধা যেমন লোক সম্হত্কে পরিদর্শন
করেন, সেইরাপ রমানাথ রামচন্দ্র ঈষদ্ধান্য সংযুক্ত হাইয়া
প্রজাপ্ত পরিদর্শন করিতে লাগিলেন; এবং মহেলু যেরপ
স্বালরে গনন করেন, প্রীহরি রামচন্দ্র দেইরপ মণি মাণিকা
খচিত জনকগ্রে নৃত্নন্দ গমনে প্রবেশ করিলেন। ২৫। ২৬।
১২৭। ২৮। ২৯।

প্রবিশ্য বেশ্মান্তরসংস্থিতে। মুদা
রামো ববন্দে চরণো স্বমাঙু ।
ক্রমেণ সর্বাঃ পিতৃযোধিতঃ প্রভুর্নাম ভক্ত্যা রঘুবংশকেডুঃ ॥ ৩০ ॥

ক্রান ভক্তার বুবংশকে জুঃ ॥ ৩০॥
ততো ভরতমাছেদং রামঃ সত্যপরাক্রমঃ।
সর্ব্রনম্পৎসমাযুক্তং মম মন্দিরমুন্তমম্॥ ৩১॥
মিত্রায় বানরেন্দ্রায় স্থাবার প্রদীয়তাম্।
সর্বেভ্যঃ স্থবাসার্থং মন্দিরানি প্রকল্পায়॥ ৩২॥
রামেবৈর সমাদিকো ভরতশ্চ তথাকরোক।
উবাচ চ মহাতেজাঃ স্থাবিং রাঘবানুজঃ। ৩৩।
রাঘবস্থাভিষেকার্থং চতুঃসিন্ধুজ্ললং শুভুম্।
আনেতুং প্রেষয়্পাশু দূতাংশুরিত্বিক্রমান্। ৩৪
প্রেষয়্মান্ স্থাবিশ জাস্বাত্তং মরুৎসুভুম্।
অঙ্গদং চ সুষ্ণেণং চ তে গড়া বায়ুবেগতঃ॥ ৩৫।

রঘুবংশকেতু রামচন্দ্র স্থাত ভবনে প্রবেশ করিয়া কেশিলা চরণে প্রণিগত করিলেন, পরে ক্রংম ক্রংম পিতার অপরাপর জ্রীদিগকে প্রণাম করিলেন। অনন্তর সভা পরাক্রম রামচন্দ্র ভরতকে কহিলেন, হে ভাতঃ! আমার গৃহ অতি উত্তম ও সমস্ত সম্পাদ সমাযুক্ত হইয়াছে, প্রক্রণে আমার প্রিয় মিত্র কপিরাজ স্থ্রীথকে গৃহ প্রদান কর, পরে অন্যান্য বানর্যাণ ও বিভীষণের নিমিত্ত বাসস্থান নির্দেশ করে। রাম এইরপ আদেশ করিবামাত্র ভরত সমুদায় নির্দেশ করিয়া দিলেন। অনন্তর মহাতেজা রাঘ্যানুক্ত কহিলেন, রঘুনাথের অভিষেকার্থ চতুঃসাগর হইতে পবিত্র জল আম্বান করিবার জন্য অতি বিক্রমণালী দৃত সকলকে প্রেরণ করন। তচ্ছুবণে কপিরাজ স্থ্রীব জাধ্বান্, হতুমান, অঙ্কদ ও স্থানে প্রেরণ করিবান, ভাহারাও অতি বেগো গম্ম

জনপূর্ণাংশ্চাতকুস্তকলশাংশ্চ সমানয়ন্।
আনীতং তীর্থসলিলং শক্রয়ো মস্ত্রিভিঃ সহ॥ ৬৯
রাঘবস্যাভিষেকার্থং বশিষ্ঠায় ন্যবেদয়ৎ!
ততস্ত প্রযতো রুদ্ধো বশিষ্ঠো ত্রাহ্মনৈঃ সহ। ৩৭।
রামং রত্নময়ে পীঠে স্পীতং স্ল্যবেশয়ৎ।
বশিষ্ঠো বামদেবশ্চ জাবালিরো তিমস্তর্থা॥ ৩৮॥
বাল্মীকিশ্চ তথা চক্রঃ সর্ফ্রে রামাভিষেচনম্।
কুণাগ্রত্লসমুকুপুন্যগন্ধজলিমুদা॥ ৩৯॥
অভাবিঞ্চন্ রঘুভের্ছং বাসবং বসবো যথা।
ঋতিপ্তিত্র হ্মিনেং প্রেষ্ঠিঃ কন্যাভিঃ সহ মন্ত্রিভিঃ॥
সর্কো যধীরদৈশ্চব দৈবতৈণ্ভিসি স্থিতিঃ।
চতুভিলোকপালেশ্চ স্তব্দিঃ সগণেত্রথা॥ ৪১॥
ছত্রং চ তদ্য জ্ঞাহ শক্রঘঃ পাণ্ডুরং শুভ্রম্।
স্থ্রীবরক্ষেনেন্ডে তৌ দ্বতঃ শ্বেতামরে। ৪২।

পূক্ষক সুবর্গ কলশপূর্ণ জ্বল অ:নয়ন করিপ। অনন্তর শক্রত্ত অমাতাগণ পরিৱত ছইয়া বশিগ্র দেবের নিকট রামাভিষেক বিষয় নিবেদন করিলেন।৩০।৩১।৩২।৩১।৩৪।৩৫।

অনস্তর ছবির বশিষ্ঠ নেব ব্রাহ্মণগণ সমভিব্যাহারে সদীত রামচন্দ্রকে রজ্নসিংহাদনে উপবেশন করাইলেন, পরে বামদেব, জাবালি, গোতম, এবং বাল্মীকি কুশাগ্রেও তুলদী সংবৃক্ত স্থায়ির পবিত্র স্থালি দারা রাম চন্দ্রকে অভিষেক করিলেন। বিষ্ণু যেমন বাদবকে অভিষেক করিয়াছিলেন দেইরপ ঋষিক ব্রাহ্মণগণ অমাত্য পরিবৃত্ত হইরা তাঁহাকে রাজ্যাভিষিক্ত করিলেন। দেবতা সকল নভোমতাল অবস্থিতি করিয়া এবং বশিষ্ঠ, চতুর্লোকপাল ও স্থজন পরিবৃত্ত হইয়া সংক্ষেধিধীরদে রামচন্দ্রকে অভিষেক করিলেন। শক্রম ক্ষিত শোভা সম্পর্ম খেন্ডছ্র তাঁহার মন্তকে ধারণ

মালাং চ কাঞ্চনীং বায়ুর্দদৌ বাসবচোদিতঃ।

সর্ব্রন্থসমাযুক্তং মনিকাঞ্চনভূষিত্ম॥ ৪৩॥

দদৌ হারং নরেন্দ্রায় স্বয়ং সক্রন্ত ভক্তিতঃ।

প্রজ্ঞদেবগন্ধর্বা ননৃতুশ্চাপ্সরোগণাঃ॥ ৪৪॥

দেবদুন্তভুষো নেতঃ পুম্পর্ফি: পপাত খাং।

নবদূর্বাদলশ্যামং পদ্মপত্রায়তেক্ষণম্॥ ৪৫॥

রবিকোটিপ্রভাযুক্তকিরীটেন বিরাজিত্ম।

কোটিকন্দর্পলাবশ্যং প্রতিষ্বসমার্তম্॥ ৪৬॥

দিব্যাভরণসম্পন্নং দিব্যচন্দনলেপনম্।

অযুতাদিত্যসন্ধাশং দিব্যুজং রঘুনন্দন্ম্। ৪৭।

করিলেন, স্থাব ও রাক্ষণাধিপতি বিভীষণ খেত চামর ব্যক্তন করিতে লাগিলেন। বায়ু বাসব প্রেরিড সর্ব্বরত্ব সমাযুক্ত মণি কাঞ্চন বিভূষিত কাঞ্চনী ও মালা প্রেলান করি-লেন। স্বয়ং দেবরাজ ভক্তি সহকারে রয়ুপতিকে হার প্রদান করিলেন। দেব গন্ধর্ব সকলেই আগমন করিয়াছিলেন এবং অপ্যরাগণ আনন্দে স্ত্যা আরম্ভ কণিল। স্বর্গে ভ্রুভি শ্বনি এবং পদ্মপলাশলোচন নবদ্র্বাদেল শ্যাম রামচক্ত্রোপরি অবিরল ধারার ক্সুম বৃষ্টি হইতে লাগিল; কিরীট মধ্যে যেন কোটি স্বর্য্যের আভা বিরাজিত হইতে লাগিল, তাঁহার কান্তি কেন্দের ন্যায় হইল, এবং তিনি দিব্য পীতাম্বর পরিধান করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১। ৪২। ৪৩।

ভিনি দিব্যাভরণ সম্পন্ন ও দিব্য অগুৰু চন্দনামূলিপ্ত হুইলেন; তাঁহার বাহুদ্বয়ে অযুত আদিত্য সন্ধিভ আভা বহি-ভূতি হুইতে লাগিল। এবং বামভাগে বিবিধ ভূষণ বামভাগে সমাসীনাং সীতাং কাঞ্চনসন্ধিভাম্।

নর্ব্যাভরণসম্পাশ বামাঙ্কে সমুপস্থিতাম্ ॥ ৪৮ ॥
রক্তোৎপলকরাস্তোজাং বামেনালিক্ষ্য সংস্থিতম্।

সর্ব্যাতিশয়শোভাচ্যং দৃষ্ট্যা ভক্তিসমস্বিভঃ ॥ ৪৯ ॥
উময়া সহিতো দেবঃ শক্ষরো রঘুনন্দনম্।

সর্বাদেবগণৈযুক্তঃ স্থোতুং সমুপচক্রমে ॥ ৫০॥

बीयशामित छेता ।

নমেংস্ত রামার সশক্তিকার
নীলোৎপলশ্যামলকোমলার।
কিরীটহারাঙ্কদভূষণার
কিংহাসনস্থার মহাপ্রভার।। ৫১॥
ত্মাদিমধ্যাস্তবিহীন একঃ
সূজস্যবস্থান চ লোকজাতম্।
ত্মায়রা তেন ন লিপ্যসে ত্থ

বিভূষিতা হিরশ্বী জনকত্বছিত। জানকী আসীনা ছইলেন এবং রক্তোৎপল বামকর দারা সমালিসনে সর্বাতিশর শোভা দর্শন করিরা পিণাকপাণি মহাদেব দুশানী সম্ভিব্যাহারে সর্বাদেব পরিব্রত হইয়া প্রগাঢ় ভক্তির সহিত রাম্চন্দ্রের শুব আরম্ভ করিলেন । ৪৭ । ৪৮ । ৪৯ । ৫০।

ছে দেব! আপনি মারাশক্তাবতার সীতার সহিত অবস্থিতি করিতেছেন, আপনার কান্তি নীলকমলের ন্যায় শ্যামল ও কোমল—আপনি কিরীট, হার, কেরুর ভূষণে ভূষিত, আপনি মহাপ্রতাম্বিত সিংহাসনে উপবিষ্ট, আপনাকে নমস্কার করি।

লীলাং বিধৎসে গুণসম্ভত্তং
প্রপন্ধ ভক্তানু বিধানহেতা !।
নানাবভারৈঃ সুরুমানুষা দৈয়ঃ।
প্রতীয়সে জ্ঞানিভিরেব নিভ্যম্। ৫৩॥
স্থাংশেন লোকং সকলং বিধায় তৃং
বিভর্ষি চ তৃং তদধঃ ফণীশ্বরঃ।
উপর্যধো ভাস্থানিলোডুপৌষধীপ্রবর্ষরপোহ্বসি নৈক্ধা জগৎ॥ ৫৪॥
স্থামহ দেহভূতাং শিখিরপঃ
পচনি ভক্তমশেষমজন্ত্রম্।
প্রনপঞ্চকরপনহারো
জগদখণ্ডমনেন বিভর্ষি॥ ৫৫॥

আপানি একাই আদি, মধ্য ও অন্ত বিছীন-আপানি নিজ মায়ায় লোক স্ষ্টি ক্রিয়াছেন, কিন্তু স্বয়ং ঐ মায়ায় লিপ্ত নহেন্য আপান মায়াদ্বারা জীবাদি স্থজন করিয়াছেন এবং ঐ জীব বিনাশ প্রাপ্ত ছুইলেও আপনি ভদ্দোষ ভাগী নহেন, অতএব আপনাকে নমস্কার করি। আপনি নানা গুণপূর্ণ ছইয়া শারণাগত ভক্তদিগোর মোক্ষ বিধানের নিমিত্ত উপেজ্ঞাদি ও রামক্ষঞাদি নানা অবভার দারা স্বকীয় লীলা প্ৰকাশ হেতু; আপনাকে নিভ্য জ্ঞানীয় ন্যায় প্রতীয়মান হয়। অভএব আপনাকে নমস্কার করি। আপান নিজ জংগে লোক সকল স্ফুন করিয়া অধো-ভাগে কণীশ্বর এবং উপরে স্থ্য, বায়ু, চক্র, ব্রীহাদি, মেঘ প্রভৃতি বল্রপে অবস্থিতি করিতেছেন। ইং লগতে আপনি দেহাভ্যন্তরন্থ জঠরানল ইইয়া সমুদায় পরিপাক করিতেছেন; আপনি প্রাণ, অপান, সমান, উদান ও ব্যান २ इत्रा व्यानी भारत दरे ना अब माजा। (र ज्यानीन! हता, य्या छ विक् मत्या त्य त्वल ष्रेसुष इत्र , जादाहे मत्रीतिनित्शत रेहजना, विश्व केना ! विष्णां प्रदेश स्था शिष्ण के केना ! विष्णां प्रियं हिला कि से प्रयं हिला कि से प्रयं हिला कि से प्रयं हिला कि से प्रयं हिला कि सिंग कि स

অনভ্তদিগের শোহা এবং ধৈষ্য, এই অবিল ব্রহ্মাণ্ডের আয়ু, কিন্তু এই সমন্তই আপনার স্বভাব। ৫১। ৫২। ৫৩। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ছে পরমেশ্বর! শিবপরারণ ব্যক্তিশিবকে, বিশ্বপুরারণ ব্যক্তি বিশ্বুকে, চল্দ্র পরারণ লোক স্থাকে জগদীশ্বর বলিয়া অভিমান করিয়া থাকেন, বস্তুতঃ তৎ সমস্তই আপনি। পুরাণে কথিত আছে, আপনি যেমন মৎস্যাদি ভিন্ন ভিন্ন দশরপ ধারণ করিয়াছেন, গেইরূপ লোকে আপনাকে সদস্বিভাগ করিয়া থাকে। এই অনস্তু স্টিভে স্থাবর জন্মাদি যে সমুদ্য বস্তু স্ট হর্ষাছে, ইত্তেছে ও ইইবে তৎমুদ্রের কোনটিও আপনা হুইতে বিভিন্ন বলিয়া উপলক্ষিত হয় না। মনুষ্যমাত্রই আপনার মাযায় স্থারত আছে। স্কুরাং আপানার তন্ত্রাবগত হুইভে অক্ষম, কিন্তু আপনাতেই ভন্তুসংল্য আছে। ব্রহ্মাদি কেন্তুই আপনার চৈতন্যরপ অবগত নহেন, তবে বহির্থ

ন দৃশ্যতে স্থাবরজক্ষাদে ত্য়া বিনাতঃ পরতঃ পরস্থাম ॥ ৫৯ ॥ তত্ত্বং ন জানস্থি পরাত্মনস্তে स्रनाः সমস্তান্তব মার্য়তে:। বৃদ্ধক্ত দেবামল মানসানাং বিভাতি তত্ত্বং পরমেকমৈশম্॥ ৬০ । बक्षापशस्त्रम विषूः श्वन १९ চি**দাত্মতত**্ব বহিরর্থভাবা:। ততো বুধস্তামিদমেব ৰূপং ভক্তা ভৰুমক্তিমুপৈতাত্বং । ৬১। অহং ভবন্নাম গণন্ কুতার্থো ব্যামি কাশ্যামনিশং ভ্ৰান্য। मुमूर्य भानसा विमुख्य दिश्य দিশামি মস্ত্রং তব রামনাম॥ ৬২ 🛭 ইমং স্তৱন্ধিত্যসনন্যভক্তা मृग्नि गाम्नि लिथसि (स रैव। তে দর্মদোধ্যং পরমং চ লব্ধা ভবৎপদং যান্ত ভবৎপ্রসাদাৎ 🛚 🐯 🤊 🖟

इन উবাচ।

রক্ষোহধিপেনাখিলদেবদৌখ্যং ক্তং চ মে ত্রহ্মবরেণ দেব!। পুনন্দ দর্মিং ভবতঃ প্রসাদাৎ প্রাপ্তং হডো রাক্ষসমুক্তশক্তঃ॥ ৬৪॥

দেবা উচু:।

ক্তা যজ্ঞভাগা ধরাদেবদন্তা
মুরারে ! ধলেনাদিদৈত্যেন বিকো ! ।
হতোহদ্য ত্বয়া নো বিভানের ভাগাঃ
পুরাবন্তবিদ্যন্তি যুশ্ধৎপ্রসাদাৎ ॥ ৬৫ ॥

পিতর উচু:।

হতোহদ্য ত্বা ছুক্টদৈত্যে মহান্দন!
গ্রাদে নবৈদ্তিপিগুদিকায়:।
বলাদত্তি হতা গৃহীতা সমস্তাল
নিদানীং পনল্কসত্যা ভ্যাম: 1 ৬ ৮ 1

ভাবাপর ব্যক্তির ন্যার পণ্ডিভেরা ক্রান্ত সমর্থ ইইরা আগনার প্রকৃত দৃশ্যমানরপ ধ্যান করতঃ মুক্তি প্রাপ্ত হর। হে প্রীরাম! আমি জীবন্যুক্তির জম্য জীবের নিদান সমর্থির আপ-লার রোম নামরপ মহামন্ত্রে তাহাদিগকে দীক্ষিত করিব। যে ব্যক্তি অনুন্যচিত্ত হইরা ভক্তি সহকারে এই ভব পাঠ করে, প্রবর্গ করে, গান করে, অথবা লেখে, সে আপনার প্রিয়ম স্থাতা লাভ করিবা আপনার প্রসাদে আপনার পাদপল প্রাপ্ত হয়। ৫৭ | ৫০ | ৬০ | ৬১ | ৬০ |

ইন্ত্র কহিলেন—হে দেব! রাক্ষসাধিপতি দশানন একা-কর্ত্ত্ব বর প্রাপ্ত হইরা জাপনার অধিল দেবরাজ্যের মিউড। হরণ করিয়াছিল, একাণে ভবদীয় প্রসাদ হেতু সেই দুফ শক্ত রাক্ষস অপিনার হারাই বিনষ্ট হইরাছে। ৬৪।

দেৰতারা কহিলেন—হে মুরারে, বিষ্ণো! ভূদের যজ্ঞ-ভাগ প্রদান করিলে বদস্থভাব রাক্ষ্সদারা তাহা অপদ্ধত হর, এক্ষণে রারণোৎপত্তির প্রাক্ষালে যেমন যজ্ঞ ভাগ প্রাপ্ত হই-

यका উচু:।

সদা বিষ্টিকর্মাণ্যনেনাভিযুক্তা वहारमा प्रभाखाः वला पृ अयुकाः। দুরাত্মা হতো রাবণো রাঘবেশ ! ত্বয়া তে বয়ং ছুংখজাতাদ্বিমুক্তাঃ।। ৬৭।।

গন্ধৰ্বা উচু:।

বয়ং সঙ্গীতনিপুণা গায়ন্তত্তে কথামৃতম্। আনেন্দ:মৃতদন্দোহযুক্তাঃ পূর্ণাঃ স্থিতাঃ পুরা। ৬৮ পশ্চাদ্দুরাত্মনা রাম! রাবণেনাভিবিজ্ঞাঃ। তমেব গায়মানাশ্চ তদারাধনতৎপরাঃ॥ ৬৯॥ স্থিতান্ত্রা পরিত্রাতা হতে হয়ং ছুফরাক্ষন:। এবং মহোরগাঃ সিদ্ধাং কিন্নরা মরুতস্তথা। ৭০। ৰসবো মুনরো গাবো গুহাকাশ্চ পতত্তিণঃ। সপ্রজাপতয়শৈচতে ভথা চাপ্সরসাং গণাঃ। ৭১।

ভাষ, অন্য আপনার শ্রীচরণ প্রদাদে আমাদিলেরই সেই মজ্জীয় ভাগ হইবে। ৬৫। ৬৭।

পিতৃলোক কহিলেন—হে মহাস্মন্! আদ্য ভোমাকৰ্ছক इके रेनजा विनक्षे व्हेन, औ इक्षे भन्नात्करत मनुसामल निर्शन বলপূর্ব্বক গ্রহণ করিরা ভোজন করিত, এক্ষণে সেই পিণ্ড পুন: প্রাপ্ত হইব। ৬৮।

যক্ষ কহিলেন—হে রাষবেশ! আমরা এই মুক্ত রাক্ষণ বৰ্ত্তক িন্টি কম্মে প্রেরিড হইভাষ, একণে আমাদিসের অপার হুঃগ অপনোদনের নিমিত্ত আপনি সেই তুরাআকে বিনাশ করিয়া-

দর্কে রামং সমাসাদ্য দৃষ্ট্য নেত্রমহোৎসবম্। স্তব্য পৃথক্ পৃথক্ সর্কৈর রাঘবেণাভিবন্দিতাঃ॥ ৭২ ययु^३ **प्रः प्रः** পদः मर्क्त बन्धकः जानश्रस्था । প্রশংসম্ভো মুদা রামং গায়ন্তভন্ন চেফিতিম্। ৭৩॥ ব্য য়ন্তম্ব ভিষেকাদ্র স তালক্ষণসংযুত্র। সিংহা**সনস্থ**্রাজেন্দ্র যয়ুঃ সর্কে **হৃদিস্থি**তম্ । ৭৪ ট খে বাদ্যেৰু ধনৎম্ব প্ৰমুদিত-क्रमरेश्राम व्यवदेषाः खनकिः বর্ষন্তিঃ পুষ্পর্কিং দিনি মুনি-निक^{दे}त्रक्षीछ। यानः मयनार ।

রাজ্যের পূর্ব্য হইতেই আপনার অমৃত্যয়ী কথা গান করিয়া পুণানন্দিত ও আপনার বিষয় সন্দিহান চিত্ত হটরা অবস্থান করিতাম; পরে হে রামচন্দ্র । হরাআ। রাধণ আমাদিগকে বল পূর্বক স্ববশে আনিলেও আনবা আপনার আবাধনায় ডংগর হইয়া, আপনারই সঙ্গীত গান করিতাম। এফণে আপনি সেই হুষ্ট রাক্ষ্যকে নিহত করিয়া মহোরগ, সিদ্ধ, কিল্লু, মকং, বসু, মুনি, পো, গুহাক, বিহল্পম, প্রজাপতি, অপ্সরা এবং গণ সমূহকে রক্ষা করিয়াছেন । ৬৯। ৭০। ৭১। অধুনা সকলেই রামচন্দ্রকে প্রাপ্ত হইয়া এবং তৎকর্ত্ত সকলই অভিবন্ধিত হইরা, প্রভ্যেকই মর্গেৎসবে তাঁহাকে স্তব করিছে लागिन।

অনস্তর, ব্রহ্মা, মহাদেব প্রভৃতি দেবতা সকল আনন্দিত মনে রামচন্দ্রের প্রশংসা ও গীত সংকীর্ত্তন করিতে করিতে স্ব স্থানে প্রস্থান করিলেন ; রামচন্দ্র, গীতা ও লক্ষণের সহিত রাজ্যাভিষিক্ত হইয়া সিংহাসনে উপবিষ্ট ছইলে, সকলেই তাঁছাকে হৃদয়স্থ করিয়া ধ্যান করিতে করিতে প্রস্থান করিল। ছেন। গ্রন্থ কহিয়াছেন, আমরা সঙ্গীত নিপুণ গন্ধর্ব রাবণ | বিমান মার্গ্রে বাদ্যধনি ছইতে লাগিল, দেবভাগা প্রমুদিত রামঃ শ্রামঃ প্রাসর স্মিতরুচিরমুখঃ সুর্যাকোটীপ্রকাশঃ
দীতাদে মিত্রিবায়া অজমুনি-

হরিভিঃ দেব্যমানো বিভাতি । ৭৫॥
ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে
দ্ধকাণ্ডে চতুর্দ্দশোহধ্যায়ঃ।

কদরে স্তব করিতে লাগিল—সর্গ চইতে পুষ্পার্কী হইতে লাগিল। মছর্ষিরা ইতস্ততঃ স্তুতি পাঠি আরম্ভ করিল ; নব-দুর্বাদিশশ্যম শ্রীগম প্রেলর ফুইয়া স্মিতমুথ ছইলে এবং সীতা, শৌমিত্রি, প্রনাক্ষন্ধ ও মুনি প্রভৃতিসকলের দ্বারাপরিসেব্যমান হইয়া কোটি স্থাঁ প্রকাশের ন্যায় শোভা পাইতে লাগিলেন। ৭২।৭২।৭৪।৭৫।

> ইতি **জ্ঞামদধ্যান্মরামায়নে উমামক্রেরসন্থাদে** যুদ্ধকাণ্ডে পঞ্চদশোহধ্যায়ঃ ;

যোড় শো ২ধ্যায়

श्रिशादि डेवाह।

রামে ইতিধিক্তে রাজেন্ডে সর্বলোকসুখাবহে।
বসুধা শদ্যসম্পন্না কলবন্তা মহীরহাঃ ॥ ১।
গন্ধহীনানি পুম্পাণি গন্ধবন্তি চকাশিরে।
সহস্রশতমশ্বানাং ধেনুনাং চ গবাং তথা। ১।

মহাদেব কছিলেন—- শ্ৰীরার রাজ্যাভিষিক্ত হইলে প্রজ্ঞাপুঞ্জ প্রভৃতি লোক সমৃদয় সুধসাগরে ভাসবান হইতে লাগিল,
বসুমভি শস্পুর্ণা হইলেন, পাদপাবলি ফলবান হইল, সৌরভ
বিহীন কুসুমচয় সৌগল্প জ্ঞান করিতে আরম্ভ করিল। রত্বনন্দন আদ্ধন দিগকে শত সহস্র অন্থ, হ্যাবভীধেনু প্রথমভঃ দান
ক্ষিবিলেন; পরে ত্রিংশত কোটি স্বর্ণ মুজা ও অস্থয় ব্য বিতরণ

দদৌ শতর্ষান্ পূর্বাং দিজেভ্যো রঘুনক্ষনঃ।

ক্রিংশৎকোটিং স্থবর্ণস্ত ব্রাক্ষণেভ্যো দদৌ পুনঃ॥

কর্মাভরণরত্বানি ব্রাক্ষণেভ্যো মুদা তথা।

স্থ্যকান্তিসমপ্রখ্যাং সর্করজুময়ীং স্রজম্॥ ৪

স্থ্যীবায় দদৌ প্রীত্যা রাঘনো ভক্তবৎসলঃ।

অঙ্গদায় দদৌ দিব্যে হাঞ্চদে রঘুনক্ষনং। ৫।

করিলেন। অনস্তর ভক্তবৎনল রাখব যার পর নাই ছবিভ হইমা আক্ষণ দিগকে বস্ত্র, আভরণ, রত্ন, দান করিয়া কপিরাজ স্প্রীবকে স্থা কান্তি সমিত সর্মারী মালা এবং যুবগাল অঙ্গাকে কেয়ুর প্রদান করিলেন। পরিশেষে রযুকুলভিলক চনদ্রকোটিপ্রতীকাশং মণিরত্ববিভ্রিতম্!
সীতায়ি প্রদদৌ হারং প্রীত্যা রযুকুলোত্তমঃ। ৬
অবমূচ্যাত্মন: কণ্ঠাৎ হারং জনকনন্দিনী।
অবৈক্ষত হরীন সর্বান্ ভর্তারং চ মূহুমুহঃ। १॥
রামস্তামাহ বৈদেহীমিঙ্গিতকো বিলোকরন্।
বৈদেহি! যস্য ভুকালি দেহি উন্মৈ বরাননে। ॥ ।
হন্মতে দদৌ হারং পশ্যতে রাঘবস্য চ।
তেন হারেণ শুশুভে মারুতিগৌরবেণ চ।। ৯
রামোহিপি মারুতিং দৃষ্ট্যা কুতাঞ্জলিমুপস্থিতম্।
ভক্ত্যা পরময়া ভুক ইদং বচনমন্ত্রীৎ। ১০।
হন্মংত্তে প্রসম্লোহন্মি বরং বরর কাজ্জিতম্।
দাস্যামি দেবৈরপি যদ্ তুল্ভং ভুবন্তর্য়ো ১১।
হন্মান্মপি তং প্রাহ্ নত্যা রামং প্রক্রেরীঃ।

শ্রীরাম কোটিচন্দ্র প্রভাষিত মণিরত্ব বিভূষিত ছার সছাস্যাস্যের সীভার কঠদেশে প্রদান করিলেন, জ্বনক নন্দিনীও বামর-গণ ও রাম সমক্ষে আপনার কঠ ছইতে ছার উন্মুক্ত করিয়া ভাহাদিগাের প্রতি বাবস্থার নয়নপাত করিতে লাগিলেন। ১।

জীরাম বৈদেছীকে ইলিতে অবলোকন করিয়া কহিলেন, তে বরাননে! তুমি যাহার প্রতি পরিতৃষ্টা আছ ভাষাকে হার প্রদান কর। অমনি বিদেহ পুত্রী-সীতা রাম সমক্ষে হয়-মানকে রতুহার প্রদান করিলেন, মারুতি সেই রতুহারে স্থাোভিড হইল। রয়ুনন্দন প্রনক্ষারকে প্রণাঢ় ভক্তি সহকারে ক্তাঞ্জলিপুট ছইয়া সীর সন্নিধানে উপনীত সন্দর্শন করিয়া অতি সন্তোম চিতে ভাষাকে বলিলেন—হে হমুনন্ আমি ভোমার উপর প্রসন্ন হইয়াছি, অভএব এই ত্রিত্বন মধ্যে দেব হল্লভি বর প্রার্থনা কর আমি ভোমাকে প্রদান করিব। ৮। ৯।১০।১১।
হত্মান প্রহান প্রহান করিয়ালকে কহিল, তে

ত্বনামস্বার্থন রাম। ন তৃপাতি মনো ম্ম। ১২।
অভত্তনাম সততং সারন্ স্থাস্থামি ভূতলে।
যাবৎ স্থাসতি তে নাম লোকে তাবৎকলেবরম্।
মম তির্চ্চ রাজেন্দ্র! বরোহয়ং মেহ ভিকাজিকতঃ
রামস্তথেতি তং প্রাহ্ মুক্তন্তির্চ্চ যথামুখম্॥ ১৪॥
কণ্পান্তে মম সায়জ্যং প্রাপ্রসাদে নাত্র সংশয়ঃ।
তমাহ জানকী প্রীতা যত্র কুত্রাপি মারুতে।॥
স্থিতং তামসুষ্যাসন্তি ভোগাং সর্ব্বে সমাজ্রা।
উত্যুক্তো মারুতিস্তাভ্যাং ঈশ্বরাভ্যাং প্রস্কৃষ্টি।।
আনন্দাশ্রুপরীতাকো ভূরোভূয়ঃ প্রণমাতে।।
কৃচ্ছাদ্যথে ভপস্বপুং হিমবস্তং মহামতি:॥ ১৭॥
ততো গুহং সমাসাদ্য রামঃ প্রাক্তাবরমন্ত্রমম্॥ ১৮
সব্বে! গচ্ছ পুরং রম্যং শ্রিকবেরমন্ত্রমম্॥ ১৮

রঘুনন্দন! আপনার নাম শ্বনণ করিরাও আমার ভৃতি হয়না.
অতএবইছলোকে আপনার নাম যত দিন থাকিবে আমিও তাহা
আমবণ সতত শ্বনণ করিরা অবস্থিতি করিব—হে রাজেন্দ্র!
মদাকাখিত এই বর আমাকে প্রদান ককন, রামচন্দ্র 'তথাজ্ব'
বলিরা তাহাকে কহিলেন—ভূমি কীব্যুক হইয়া যথা প্রথে
অবস্থান কর; কপ্পান্তে—ভূমি নিঃসন্দেহই আমার সাযুক্তা
প্রাপ্ত হইবে, অমনি আনকীও কহিলেন—হে মাকতে! ভোগ
সমূহ আমার আজতুসারী হইরা তোমার অন্তগমন করিবে।
ভাহার এইরপ কহিলে প্রক্রন্তামনা মহামতি প্রন্দন আনক্রেজপূর্ণ নর্মন ইইরা স্পীত রামকে ব্রিষ্ণার প্রণাম করতঃ
রাম ধর্মন বিশ্বোগ ছেতু তপ্রা করণাভিলাষে হিমালরাভিযুবে প্রস্থান করিল। ১২। ১৬। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭।

অনন্তৰ রামচন্ত্র গুছককৈ প্রাপ্ত ইইরা বন্ধাঞ্জলি পূর্বক উছোকে কছিলেন—হৈ সংখ! ভূমি অভ্যুত্তম প্রিটের পুরিতে গমন পূর্মক আমাকে অমুক্ত্রণ চিন্তা করভঃ খোপার্কিউ মানেব চিন্তয়য়িতাং ভুংক্ষা ভোগায়িঞ্বার্জিতান্।
তান্তে মনৈব সাক্ষপ্যং প্রাপ্সাদে ছং ন সংশায়ঃ।১৯
ইত্যুক্ত্বা প্রদদে তিমা দিব্যান্যাভরণানি চ।
রাজ্যং চ বিপুলং দক্ত্বা বিজ্ঞানং চ দদে বিভুং।২০।
রাজ্যং চ বিপুলং দক্ত্বা বিজ্ঞানং চ দদে বিভুং।২০।
রাদ্যালিক্ষিতো ক্ষটো যথে সভবনং গুইঃ।
যে চান্যে বানরাঃ প্রেষ্ঠা অযোধ্যাং সমুপাগতাঃ॥
অমূল্যাভরণৈকিস্তিঃ পূজয়ামাস রাঘ্যঃ।
ফ্রীবপ্রমুখাঃ সের্বি বানরাঃ সবিভীষণাঃ। ২২ ॥
যথাহৎ পুজিতান্তেন রামেণ পর্মাত্মনা।
প্রক্রিমনসঃ সর্বের জ্যারেব যথাগতম্॥ ২০ ॥
স্ত্রীবপ্রমুখাঃ সর্বের কিন্ধিদ্যাং প্রযুদ্ধ দা।
বিভীষণস্ত সম্প্রাপ্য রাজ্যং নিহ্তকণ্টকম্॥ ২৪ ॥
রামেণ প্রজ্ঞান্যথিলং শশাসাথিলবৎসলঃ॥ ২৫ ॥
অনিক্টয়পি বামেণ যৌবরাজ্যেইভিষেচিতঃ।

অন্ন ভোগা কর, পরে মৃত্যু সময়ে আমার সাযুজ্য নিশ্চরই প্রাপ্ত হইবে। এই বলিরা তিনি তাছাকে দিব্য ভূষণ, বিপুল রাজ্য এবং বিজ্ঞান প্রদান করিরা আলিক্ষন করিলেন; গুহ রামালিক্ষনে আফ্লাদিত হইরা স্বতবনে প্রস্থান করিল। অপরাপর বে সমস্ত বানর শ্রেষ্ঠ অযোধ্যার উপনীত হইরাছিল, রাঘব তাছাদিগকে অমূল্য বস্ত্র ও আভরণ হারা পূজা করিলেন। ১৮। ১৯। ২০। ২১।

সুত্রীব প্রভৃতি সমস্ত বানর শ্রেষ্ঠ ও বিভীষণ পরমান্ত্রা রাঘব কর্ত্বক পূজিত হইরা আনন্দিতান্তঃকরণে যথাস্থানে প্রস্থান করিল; পরে হুঞীবাদি বানরগণ কিছিল্যা নগরীতে গামন করিল; বিভীষণ নিক্ষণকৈ রাজ্য প্রাপ্ত হইরা রাম কর্ত্বক সামন্দে পূজিত হওনামন্তর লক্ষাভিমুখে প্রস্থান করি-লেন। অধিল বৎসল রাঘব সমস্ত রাজ্য শাসন করিতে লক্ষনণঃ পরয়া ভক্তা রামদেবাপরোহতবৎ ॥ ২৬॥
রামন্ত পরমাত্মাপি কর্মাধ্যক্ষোহপি নির্মালঃ।
কর্ত্তিবাদিবিহীনোহপি নির্মিকারোহপি সর্বাদা ॥২৭
স্থানন্দেনাপি তুইং সন্ লোকানামুপদেশকং ।
অধ্যেধাদিবকৈশ্চ সবৈ বিপুলদক্ষিণঃ ॥ ২৮ ॥
অধ্যত্তিপরমানন্দো মান্ত্রবং বপুরাশ্রিতঃ।
ন পর্যাদেবিশ্বধবা ন চ ব্যালক্তং ভয়ম্ ॥ ২৯॥
ন ব্যাধিজং ভয়ং চাসীদ্রামে রাজ্যং প্রশাসতি।
লোকে দম্যভয়ং নাসীদনর্ধো নাস্তি কশ্চন ॥
রদ্ধেরু সৎস্থ বালানাং নাসীন্মৃত্যভয়ং তথা।
রামপ্রাপরাঃ সর্বের্ব সর্বের রাঘ্বিচন্তকা ॥ ৬১॥
বর্বযুর্জনদান্তোয়ং য্থাকালং যথাক্রিছ।
প্রজাঃ স্বর্ধানিরতা বর্ণাশ্রমগুরার্বাঃ। ৬২॥
উরসানিব রামোহপি জুগোপ পিতৃবৎপ্রজাঃ।
সর্বলক্ষণসংযুক্তাঃ সর্ব্বধর্মপ্রায়্ণাঃ। ৩৩।

লাগিলেন এবং লক্ষ্মনদেব অনিচছুক থাকিলেও শ্রীরাম ঠাহাকে যেবিবরাজ্যে অভিষিক্ত করিলেন, কিন্তু তিনি দৃঢ় ভক্তির সহিত রামচন্দ্রের সেবামুরক্ত হইলেন। নির্মাল প্রমান্মারামচন্দ্র কার্যাধ্যক হইলেও, অনুক্ষণ নির্দ্ধিমানী ও বিকার শূন্য হইরা স্বকীরানন্দে লোকদিগকে উপদেশ দিবার জ্ঞান বিপুল দক্ষিণার সহিত, যজানুষ্ঠান করিলেন।

1 ২২ 1 ২০ 1 ২৪ 1 ২৫ 1 ২৬ 1 ২৭ 1 ২৮ 1

দেহ সম্বলিত প্রমানন্দ রাসচন্দ্র লোকরঞ্জন করিতে লাগিলেন, রাজ্ঞা মধ্যে সর্প, ব্যান্ত্র, অনার্থিভয়, ব্যাধি, দক্ষাও অনর্থ ভয় তিলাদ্ধি মাত্র ইছিল না। র্দ্ধিণের মধ্যে বালকদিগের মৃত্যু ভয় পরিশূনা হইল এবং সকলেই রাঘ্ব চিন্তাপর হইয়া রামপূজায় নিরত হইল। মেঘ সন্ত্রেজন দান করিতে লাগিল, বর্ণাশ্রম প্রস্থাপঞ্জ স্থায় নিরত

দশবর্ষসহস্র। বি রামে। রাজ্যমুপাক্ত সঃ॥ ৩৪ **॥**

ইদং রহস্তং ধনধান্যক্ষদ্ধিমং
দীর্ঘাবুবারোগ্যকরং সুপুণ্যদম্।
পবিত্রনাধ্যাত্মিকসংক্তিতং পুরা
রামারণং ভাষিতনাদিশস্কুনা । ৩৫ ।
শৃণোতি ভক্ত্যা মন্তুজ্ঞ সনাহিতো
ভক্ত্যা পঠেদা পরিভুফীমানসঃ ।
সর্বাঃ সমাপ্নোতি মনোগতাশিষো
বিমূচ্যতে পাতককোটিভিঃ ক্ষণাৎ । ৩৬ ॥
রামাভিষেকপ্রযতঃ শৃণোতি যো
ধনাভিলাষী লভতে মহদ্ধনম্ ।
পুল্রাভিলাষী স্তুতমার্যসন্মতং
প্রাপ্রোতি রামারণ্যাদিতঃ পঠন্ ॥ ৩৭ ॥
শৃণোতি যোহধ্যাত্মিকরামসংহিতাং

হইল। রামচন্দ্র ভাষাদিগকে পুদ্রবৎ স্থেষ্ট্র করিতে লাগি-লেন, সর্কলক্ষণ সম্পন্ন সর্ক্ষ ধর্মপরায়ণ প্রজ্ঞারণত তাঁছাকে পিভার ন্যায় ভক্তি প্রদর্শন করিতে লাগিল। দাশর্থি দশ সহস্র বৎসর রাজ্য শাসন করিয়াছিলেন। পুর্ক্ষে মহাদেব ক্ষয়ং ধন ধান্য সমৃদ্ধি সম্পন্ন দীর্ঘ জীবনারোগ্যকারী ক্মপুণ্যদ, পবিত্র আধ্যান্মিক রামায়ণ বর্ণনা করিয়াছিলেন। ২৯।৩০।

নে ব্যক্তি সমাহিত চিত্তে রামায়ণ শ্রবণ এবং প্রিতুষ্ট মনে ও ভক্তির সহিত পাঠ করে, সে ব্যক্তি সর্ব্ব প্রকার আলীর্বাদ প্রাপ্ত হইয়া কোটি কোটি পাপ ছইতে তৎক্ষণাৎ বিমৃক্ত হয়। যে ব্যক্তি অর্থাভিলাষী হইয়া শ্রীরামের অভিধ্যক বিষয় স্মত্রে শ্রবণ করে, সে বিপুল ধন প্রাপ্ত হয়। যে পুশ্রাশয়ে রামায়ণের আদান্ত পাঠ করে সে শিষ্ট সম্মত পুত্র লাভ করে। যে রাজা আধ্যান্মিক রাম সংহিতা শ্রবণ

প্রারেগতি রাজা ভুবমৃদ্ধসম্। শক্রিজিত্যারিভিরপ্রধর্ষিতে।। ব্যপেতদুংখো বিজয়ী ভবেন্ন্পং॥ ৩৮॥ স্ত্রিয়েহিপি শ্ণুস্তাধিরামসংহিতাং ভবন্তি তা জীবস্থতাশ্চ প্ৰজিতাঃ। বন্ধ্যাইপি পুত্ৰং লভতে ফুৰূপিনং কথামিমাং ভক্তিযুতা শূণোতি যা।। শ্ৰান্থিতো যং শ্ধুয়াৎপঠেররো বিজিতা কোপং চ তথা বিমৎদরঃ। দুর্গাণি সর্বাণি বিজিভ্য নির্ভয়ো ভবেৎ স্থা রাঘবভক্তিসংযুতঃ।। ৪০। মুরা: সমস্তা অপি गান্তি তুইতাং বিঘাঃ সমস্তা অপ্যাত্তি শৃণুতাম্ অধ্যাত্মরামায়ণমাদিতো নৃণাং ভবন্তি সর্কা অপি সম্পদঃ পরাঃ। ৪১। রজ্পলা বা যদি রামতৎপরা

করেন, তিনি সমস্ত শক্ত বিনাশ করিয়া ও সর্ব্য হৃঃথ ছইকে উত্তীর্ণ ছইয়া অতুল প্রশ্বর্য প্রাপ্ত হন। যে নকল কামিনী অধাত্মরামায়ণের আখ্যান শ্রবণ করে, ভাছারা জীবত্মতা দারা পুজিতা হয়; যে বন্ধ্যা জী ভিক্তি সংযুক্তা হইয়া রামায়ণ কথা শ্রবণ করে, সে অভিলাষ অনুরূপ সন্তান লাভ করে, যে নর জীরামের উপর ভক্তি প্রদর্শন পূর্ব্বক বিশুদ্ধ চিত্তে রামায়ণ কথা শ্রবণ বা পাঠ করে, সে বিমৎসর, কোপ ও সর্ব্ব হুঃথ জয় করিয়া পরম তথা লাভ করে। রামায়ণ অধ্যয়ন বা শ্রবণ করিলে দেবভারা পরিতৃষ্ট হয়েন, বিশ্ব সমৃদায় বিনষ্ট ও সর্ব্ব সম্পাদ সম্পান্ন হয়। যদি রাম ভংপরা রজত্মণা কামিনী রামায়ণ শ্রবণ করে, তংগ্রেসবিত পুত্র শ্বাহাদিগের ন্যার দীর্ঘ

শৃংগাতি রামায়ণমেতদাদিতঃ।
পুত্রং প্রস্তুতে ঋষভঞ্জিরায়ুষং
পতিব্রতা লোকস্পুজিতা ভবেৎ। ৪২।
পুজরিয়া তু যে ভক্ত্যা নমক্ষুব নি নিত্যশং।
সর্বৈরিং পাপৈবিনিমুক্তা বিক্ষোর্যান্তি পরং পদম্
অধ্যাল্লরামচরিতং কংসং শ্গুন্তি ভক্তিতঃ।
পঠন্তি বা স্বয়ং বক্তাত্তেষাং রামং প্রদীদতি ॥৪৪
র ম এব পরং ব্রহ্ম তিমিংস্তুক্তিইখিলাতানি।
ধর্মার্থকামমোক্ষাণাং যদাদিচ্ছাত্ত ভন্তবেৎ॥ ৪৫
শ্রোত্বাং নিয়মেনৈভজামায়ণমখণ্ডিতম্।
আায়্রামারোগ্যকরং কম্পাকোট্যহানাশনম্॥ ৪৬।
দেবাশ্চ দবে তুব্যন্তি গ্রহাং দবে মহর্ষয়ঃ।

রামারণদা শ্রানে তুষান্তি পিতরন্তথা। ৪৭।
অধ্যাত্মরামারণমেতদন্তু তং
বৈরাগ্যবিজ্ঞানযুতং পুরাতনম্।
পঠন্তি শৃণুন্তি লিখন্তি যে নরান্তেষাং ভবেহস্মিয় পুনর্ভবো ভবেহ। ৪৮।
আলোড্যাথিলবেদরাশিমসক্রদ্যন্তারকং ক্রক্ষা
তদ্রামো বিষ্ণুরহস্যমূর্তিরিতি যো বিজ্ঞায়-ভূতেশ্বরঃ
উদ্ব্যাথিলদারসংগৃহমিদং সংক্রেপতঃ প্রক্ষুত্বং
ব্রীরামস্তানিপূত্তত্ত্বমথিলং প্রাহ প্রিয়ায়ৈ ভবং।৪৯
ইতিশ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে

জীবন প্রাপ্ত হয়, এবং পতিব্রতা রমণী সর্বলোক পূজিতা হয়েন। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪০। ৪১। ৪২। যাহারা ভক্তি সহকারে গয়পুল দারা রামচন্দ্রকে নিত্য পূজা করিয়া নমক্ষার করে, তাহারা সর্ব্ব পাণ হইতে বিমৃক্ত হইয়া বিষ্ণুর পরম পদ লাভ করে, যিনি অধ্যাত্ম জ্রীয়ামের চরিত্র বিভদ্ধ চিত্তে ও ভক্তির সহিত অধ্যয়ন বা স্বয়ং বর্ণনা করেন, জ্রীয়াম তাহার উপরে পরিতৃত্ব হয়েন। রামচন্দ্র স্বয়ং পরমত্রক্ষ, তিনি তৃত্র থাকিলে অথিল সংগার সম্ভত্ত খাকে, এবং ধর্মার্থ কাম মোক্ষ প্রাপ্ত হওয়া যায়; এই অথিতেত অধ্যাত্ম রামায়ণ পরমায় য়িয়, রোগ অপনোদন, ও কোটি কল্প পাপ জনিত নিরয়গ্রমন নিবারণ করে, অতএব নিয়মিতরূপে ইহা জ্ববণ করা কর্ত্ব্য। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬।

রামারণ শ্রবণ করিলে দেবতা, গ্রহ, ঋষি এবং পিতৃলোক সমস্ত সন্তোষ লাভ করিরা থাকেন। যাঁহারা বৈরাগ্য বিজ্ঞান যুক্ত পুরাতন অধ্যাত্ম রামায়ণ অধ্যয়ন করেন, গ্রবণ করেন এবং লিখেন এই ভবসংসারে ভাঁহাদিগের আর পুন জন্ম হর না। ভূতেশ্বর মহাদেব স্বয়ং অখিল বেদরালি বিলোড়ন করিরা তারকত্রন্ধ শ্রীরামকে বিষ্ণুব রহস্য মৃত্তি অবগত হইবা, উপনিষদের সারভূত অর্থ সংগ্রহ পূর্মেক, তাঁহার এই নিগৃঢ় তত্ত্ব ভবানীকে সংক্ষেপে কহিয়াছিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯।

যুদ্ধকাণ্ডে যোড়শোহধ্যায়ঃ।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামারতে উমামহেশ্বরসন্থানে

যুদ্ধকাণ্ডে যোড়লোহধ্যারঃ।

रेजि वीयनशां ज्ञानात्रात्र युक्तका ७ नमार्थः

উত্তর কাণ্ডম।

জয়তি রঘুবংশতিলকঃ কোশল্যাক্ষদয়নন্দনো রামঃ
দশবদননিধনকারী দাশরিথিঃ পুগুরীকাক্ষঃ। ১।
পার্বাজুবোচ।
অথ রামঃ কিমকরোৎকোশল্যানন্দবর্দ্ধনঃ।
হত্যা মূথে রাবণাদীন রাক্ষদান ভীমবিক্রমঃ। ২।
অভিষিক্রপ্রযোধ্যায়াং দীতয়া দহ রাঘবঃ।
মায়ামাল্লখতাং প্রাপ্য কতিবর্ষাণি ভূতলে ?॥ ৩
স্থিতবান লীলয়া দেবঃ পরমাল্যা সনাতনঃ।
অত্যজন্মানুষং লোকং কথমন্তে রঘুদ্ধহঃ ?। ৪।
এতদাখ্যাহি ভগবন ! শ্রদ্ধত্যা মম প্রভো!।
কথাপীয়ুষমান্ধাদ্য ভূঞা মেহতীব বর্দ্ধতে।
রামচন্দ্রমা ভগবন ! ক্রহি বিস্তর্শং কথাম্। ৫।

হান নদন দাশরথি রামের জন্ন হউক।
পার্কতী মহাদেবকে বলিয়াছিলেন—কৌশলাননদ বর্জন
জানিত তেজা জীরাম দশানন প্রভৃতি রাক্ষসদিগকে যুদ্ধে বিনাশ
করিবার পর আব কি কি কার্য্য করিয়াছিলেন ? রঘুবংশাবতংশ
রামচন্দ্র অযোধ্যায় সীভার সহিত রাজ্যে অভিষক্ত হইয়া
নায়ামান্ত্য রূপে আর কভ কাল এই ধরাধামে অবন্ধিতি
করিয়াছিলেন ? পরমত্রন্ধ সনাতন শ্রীরাম স্বকীয় শীলায়
অবস্থান করিয়া ইছলোক কি দ্ধপে পরিত্যাগ করিলেন ? হে
ভগ্রন রামচন্দ্রের অমৃত্যয়ী কথা শ্রব্যে, তাঁহার বিষয় অবগত
হইষার জন্য আগ্যার পিপাসা উত্তরের বন্ধিত ইইতেছে
অতএব উক্ বিষয় বর্ণন করিয়া আমার কোত্হল পরিত্প্র ক্রন
। ১। ২। ২৪।৫।

দশানন নিধনকারী প্তরীকাক্ষ রঘুবংশ তিলক কেশিল্যা-

শ্রীমহাদের উবাচ।

রাক্ষসানাং বধং কুত্বা রাজ্যং রাম উপস্থিতে।

আয়েযুর্মারং সর্বে শ্রীরামমন্তিবন্দিতুম্। ৬।

বিশ্বামিত্রাহসিতঃ কণ্যেদুর্ব্বাসা ভৃগুরঙ্গিরাঃ।

কশ্যপো বামদেবোইত্রিস্তথা সপ্তর্ব রিয়াং ॥ ৭

আগস্তঃ সহ শিবৈয়ক মুনিভিঃ সহিতোহভ্যগাৎ।

আহি রামায় মুনয়ঃ সমাগত্য বহিঃস্থিতাঃ।

আগস্তঃপ্রম্থাঃ সর্বে আশীর্ভির্জিনিক্তুম্॥ ৯॥
প্রতিহারস্ততো রামমগস্তাব্চনাদ্দ্রতম্।

নমক্ত্যাব্রবীদ্বাক্যং বিন্যাবন্তঃ প্রভুম্॥ ১০॥

মহাদেব কহিলেন—জীরামচন্দ্র রাক্ষ্য দিগকে বিনাশ করিয়া রাজ্য মধ্যে উপনীত হইলে, মহর্ষি বিশ্বামিত্র, অসিত্ত, কণ্, হর্জাসা, ভৃত্ত, অন্ধিরা, কশাপ, বামদেব, অত্তি ও আগর আগর মহর্ষি তাঁহাকে অভিবাদন করিবার জন্য অবোধ্যায় আসিরা উপন্থিত হইলেন ; পরে অগাস্ত্যমুনি শিষ্যগণ পরিরত হইয়া রামচন্দ্রের দারদেশে উপনীত হইয়া হারপাণকে কৈহিলেন—তুমি সত্তর গিরা রামচন্দ্রকে বল যে, আগস্ত্য প্রভৃতি মুনিশ্রেটগণ আপনাকে আশীর্কাদ দারা অভিনন্দন করিছে আগমন করিয়া বহিছবিরে দণ্ডায়মান রহিয়াছেন। প্রতিহারী আগস্তোর বাক্য প্রবণানস্তর ক্রভপদে রামসন্ধিরানে গমন করিয়া নাম্বার পূর্ব্বক ক্রতাঞ্নিপ্রে কহিল, প্রভো! অগস্ত্যে প্রভৃতি

রুতাঞ্জলিকবাচেদমগস্থ্যে মুনিভিঃ সহ।

দেব ! ত্বদর্শনার্থায় প্রাপ্তো বহিরপন্থিতঃ ॥ ১১॥

হর্বাচ দারপালং প্রবেশ্য যথাস্থ্যম্।

পূজিতা বিবিশুর্কেশ্য নানারত্ববিভূষিতম্। ১২॥

দৃষ্ট্বা রামো মুনীন্ শীব্রং প্রভূগ্থার রুত্তাঞ্জলিং।

পাদ্যার্য্যাদিভিরাপুজ্য গাং নিবেদ্য যথাবিধি ॥১০

নত্বা তেভ্যো দদৌ দিব্যান্যাসনানি যথাহ্ভঃ।

উপবিষ্টাঃ প্রাক্তাশ্চ মুনয়ো রামপ্রজ্ঞাঃ ॥ ১৪॥

সংপৃষ্টকুশলাঃ সর্কে রামং কুশলমক্রবন্।

কুশলং তে মহাবাহো! সর্ক্ত রত্বনন্দন !॥ ১৫॥

দিন্টোদানীং প্রপ্রশামে হতশক্রমরিন্দম !।

নহি ভারঃ স তে রাম। রাবণো রাক্ষসেশ্বরঃ ॥ ১৬

দধনুত্তং হি লোকাংস্ত্রীন্ বিক্রেতৃং শক্ত এব হি।

দিন্ট্যা ত্বয়া হতাঃ দর্বের রাক্ষনা রাবণাদয়ঃ॥ ১৭

সহামেতক্মহাবাহো! রাবণদ্য নিবহ পম্।

অন্তর্গতিংশক্তাপ্তং রাবণের্য নিষ্ম দনন্ম ॥ ১৮ ॥

অন্তর্গতিমের্বাপেই তাত্তে রাঘুসত্ত্য!॥ ১৯ ॥

দত্তা চেয়ং ত্বয়াইস্মাকং পুরা ক্সভ্রম্বিদা।

হত্যা রক্ষোপণান্ সজ্যে কৃতক্তেয়েইদ্য জীবিদি॥২০

শুজা তু ভাষিতং তেষাং মুনীনাং ভাবিতাক্মনাম্।

বিশায়ং পরমং গড়া রামঃ প্রাঞ্জলিরব্রবীৎ॥২১॥

রাবণাদীনতিক্রম্য কুন্তর্কণিদিরাক্ষ্যান্।

ত্রিলোকজয়িনো হিত্যা কিং প্রশংস্থ রাবণিম ?॥

মহর্ষিগণ আপনাকে দর্শন করিবার অভিলাবে ছারদেশে উপস্থিত গ্রাচ্চন। প্রতিহারী বাক্য শ্রবণ করিয়া রামচন্দ্র কহিলেন, প্রমসমাদরের সহিত তাঁহাদিগকে পথ প্রদর্শন পূর্বক বিবিধ মণি মাণিক্য থচিত উত্তম গৃহ মধ্যে আন্মন কর। ১১।১২।

অনন্তর রামচন্দ্র মহর্ষিদিগকে অবলোকন করিয়া বন্ধাঞ্জলি হওত শীঘ্র গাত্রোপান করিলেন; এবং পাদাির্ঘাদি দারা
পূজা করণানন্তর মধুপর্কার্থ বৃষভ বিধানান্তসারে নিবেদন করিয়া
সাফালে প্রণিপাত পূর্বক যথাযোগ্য আসন প্রদান করিলেন
এবং তাঁহোরা রাম কর্ত্বক পূজিত হইয়া সানন্দ চিত্তে উপবেশন করতঃ জীরামকে অনাময় জিজাদা করিতে লাগিলেন—হে
মহাবাহো রঘুনাথ! আপনার সমস্ত মঙ্গল ত ? হে অরিন্দম!
অধুনা আহ্লাদের বিষয় যে, শক্রু নিপাত ইইয়াছে। হে
রামচক্র! রাক্ষ্যাধিপতি রাবণ আপনার আর ভারস্ক্রপ
নাই। আপনি ধনুপ্রাহণ করিলে স্বর্গ, মন্ত্র পাতাল এই
জিত্বন ক্ষয় করিতে নিশ্চন্ত সমর্থ হন, দেপুন আপনি রাব-

ণাদি রাক্ষদগণকে অবলীলাক্রমে নিপাত করিয়াছেন; দে মহাবাহো। আপনি অনায়াদেই রাবণ বিনাশ করিয়াছেন, কিন্তু রাবণি ইন্দ্রজিতের মৃত্যুতেই অসহা হইয়াছিল; হে রঘুসত্তম! সমরাঙ্গনে কুন্তুকর্ণ প্রভৃতি রাক্ষ্ণেরণ কালান্তকের ন্যায় প্রতীয়মান হইয়াছিল বটে কিন্তু আপনি কালোপম শর নিক্ষেপে তাহাদিগকে অনারাসে বিনষ্ট করিয়াছেন। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯।

পূর্ব্বে আপনি আমাদিগকৈ অভয়দান করিয়াছিলেন, এক্ষণে
রক্ষঃদিগকৈ যুদ্ধে নিহত করিয়া তাছার সফলতা সম্পন্ন
করিয়াছেন। অতএব অদ্য কুতকুতা হইয়া আপনার জীবন শ্লাঘনীর ছইল। ঈশ্বরপরায়ণ বিশুদ্ধতো মুনিদিগের বাকা শ্রাবণ
গোচর করিয়া বিশ্বয়াপন্ন হইয়া রামচক্ষ কৃতায়নিপুটে
বিনীত বচনে কহিলেন, আপনারা স্বর্গ, মর্ত্ত, পাতাল বিজ্ঞয়ী
অমিতকেলা দশানন ও অভুল বলশালী কুন্তুকর্গকে অভিক্রেম
করিয়া কি কারণে রাবণিকে এত প্রশাস্থা করিতেছেন?

তত্তত্ত্বদ্দনং প্রারাঘন্য মহাত্মনঃ।
কুন্তবানির্মাহাতে জা রামং প্রীত্যা বচাহত্ত্রীৎ।
শ্রাম! যথা রতং রানণে রাবণস্য চ।
জন্মকর্মানরাদানং সজ্জেকপাদ্গদতো মম॥ ২৪॥
পুরা কৃত্যুগে রাম! পুলস্ত্যো ত্রাহ্মণঃ মৃত্যঃ।
তপস্থাুং গতো নিদ্ধান্ মেরোঃ পার্শং মহামতিঃ
ভূগবিন্দোরাপ্রমেহসৌ ন্যবসন্ম্নিপ্লবঃ।
তপস্থেপে মহাতেজাঃ স্বাধ্যায়নিরতঃ সদা॥ ২৯
তত্ত্রাপ্রমে মহারম্যে দেবগন্ধর্বিকন্যকাঃ।
গায়ন্ত্যো নন্তুস্তত্ত্ব হসন্ত্যো বাদয়ন্তি চ॥ ২৭
পুলস্ত্যস্য তপে। বিঘাং চক্রুঃ সর্বা আনিন্দিতাঃ।
ততঃ ক্রুদ্ধা মহাতেজা ব্যাজ্যার বচো মহৎ ২৮
যা মে দৃষ্টিপথং গতেছ্ব সা গর্ভং ধার্যিবাতি।
তাঃ সর্বাঃ শাপসম্বিগ্লা ন তং দেশং প্রচক্রমঃ। ২৯

অন্তর মহামতি রাঘবের সদৃশ বাক্য প্রবণ করিয়া মহাতেজ। ক্তবাদিন অন্তা প্রীরামকে প্রবল করিয়া কহিলেন—হে রঘুনন্দন! দশাননাত্মজ ইম্রেজিতের জন্ম কর্ম ও বরাদির রভান্ত সংক্ষেপে কহিছেছি, মনোনিবেশ পূর্বক প্রবণ করুন।—হে রঘুনাথ! সভারুগে ব্রহ্মাপ্রিল রভবিদ্য মহাত্মা পুলস্তামুনি তপাস্যা করিবার নিমিত্ত মহাপ্রবিত্র পার্থাদেশে গানন করিয়াছিলেন। খাষিসভান ভূগবিন্দুর আশুমা মধ্যে অবস্থিতি করিয়া অনুক্ষণ কঠোর তপাস্যা করিছে আরম্ভ করিলেন; কিন্ত ঐ মহারণ্য মধ্যে দেব ও গাব্যব্রকারার স্বরভানলরে স্মধুর সঙ্গীত, নৃত্যবাদ্যাদি দ্বারা আমেশ প্রোদা করিত; এইরপে তাহার্যা পুলস্ত্যের তপোবিল্ল করিছে প্রাণাল—সনত্তর মহাতেজন্মী মহবি ভূপজার বিল্লাবলোকনে ক্রোধ প্রতল্প হইয়া এই অভিশাপে করিলেন যে, যে আমার দৃষ্ট পথে উপানত হইবে ভাহাকেই গার্থারণ করিতে হইবে,

ভূণবিন্দাস্ত রাজর্ষেঃ কনা তয়াশ্বোছচঃ।
বিচ্চার মুনেরপ্রে নির্ভরা তং প্রপশ্যতী। ৩০।
বভূব পাশ্বরতমুর্ব্যঞ্জিভান্তঃশরীরক্ষা।
দৃষ্ট্বা সা দেহবৈবর্ণং ভীতা পিতরমন্বর্গাৎ॥ ৩১।
ভূণবিন্দুশ্চ তাং দৃষ্টা রাজর্ষিরমিতছ্যাভিঃ।
ধ্যান্তা মুনিক্তং সর্বমবৈদ্বিজ্ঞানচস্কুষা। ৩২।
তাং কন্যাং মুনিবর্যায় পুলস্ত্যায় দদে পিতা।
তাং প্রগৃহাব্রবীৎকন্যাং বাঢ়মিত্যের স দ্বিঃ।
ভ্রম্বনপরাং দৃষ্ট্বা মুনিঃ প্রীতোহ্রবীদ্বচঃ।
দাস্যামি পুল্লমেকস্তে উভয়োর্বংশবর্ষনম্। ৩৪
ততঃ প্রাস্থ্ত সা পুলুং পূলস্ত্যালোকবিশ্রুতম্।
বিশ্রবা ইতি বিধ্যাভঃ পৌলস্ত্যা ভ্রম্বিনুম্নিঃ॥

কিন্তু তাহারা শাপ্রাজ্য হইরাও ঐ মহারণ পরিত্যার করিল না। ২০ । ২৪। ২৫ । ২৬ । ২৭ । ২৮ । ২৯ ।

মহামুনি এইরপ অভিশব্দাত প্রদান করিলেন বটে কিছ রাজর্মি তৃণবিন্দুর কন্যা ঐ বাক্য প্রবন্য করে নাই, স্কর্যার একদা সে অসংস্কৃতিত চিত্তে ঐ মুনির অপ্রে বিচরণ করিতে-ছিল। ইতাবসরে মুনিকনাগর গার্ভসঞ্চার হইবামাত্র ভাষার বণ পাশুর হইল, তদ্দর্শনে ভ্রগকুলিত মনে পিতৃসলিধানে আসিরা উপনীতা হইল। অমিততেজা রাজর্মি তৃণবিন্দু কন্যার অবস্থা অবলোকন করিয়া ধ্যানোপবেশনপূক্ষক বিজ্ঞান চফু দ্বারা মুনি রুভ সমস্ত ব্যাপার অবগত হইলেন; অনন্তর িনি কন্যাকে সমভিব্যাহারে করিয়া মুনিসন্নিধানে উপন্তিত হইরা কহিলেন—আপনি এই কন্যাটি গ্রহণ কঞ্চন। আমি জ্ঞাপনাকে অর্পণ করিলাম; পুলস্তা রাজর্মি বাক্য শ্রবণে তথাস্ত বলিয়া গ্রহণ করিতে অঙ্গীকার করিলেন। ৩০। ৩১। ৩৪।

মহর্ষি পুলস্তা তৃণবিন্দু কন্যার শুশ্রাবার পরিভূকী হুইখা তাহাকে বলিশেন আমি ভোমার পরিচর্য্যার যার পর নাই সন্ধ্যট হুইরাছি অভএব তোমার গভেঁ এরপ সন্তান জন্ম তদা শীলাদিকং দৃষ্ট্য ভরদ্বাজো মহামুনিং।
ভাষ্যার্থং স্থাং ছৃহিতরং দদৌ বিশ্রবদে মুদা। ৩৬
ভক্তান্ত পুজঃ দঞ্জজে পৌলস্ত্যাল্লোকদদ্মতঃ।
বিভূতুলো বৈশ্রবণো ব্রহ্মণা চালুমোদিতঃ॥৩৭
দদৌ তত্তপদা তুটো ব্রহ্মা তথ্য বরং শুভুম্।
মনোহভিল্যিতং তদ্য ধনেশত্বমথপ্তিভুম্। ৩৮॥
ভক্তো লক্ষবরং দোহপি পিতরং দ্রষ্টুমাগতঃ।
পুস্পাকেন ধনাধ্যাক্ষো ব্রহ্মাদতে ন ভাস্বতা॥ ৩৯॥
নসক্ত্যাথ পিতরং নিবেদ্য তপ্দঃ ফলম্।
প্রাহ মে ভগবান ব্রহ্মা দল্ভা বর্মনিন্দিত্ম॥ ৪০

নিবালায় ন মে স্থানং দত্তবান্ পরমেশ্বঃ।

ক্রিহি মে নিয়তং স্থানং হিংশা যত্র ন কস্য চিৎ ॥

বিশ্রবা অপি তং প্রাহ্ লক্ষা নাম পুরী শুলা।
রাক্ষশানাং নিবাসায় নির্মিতা বিশ্বকর্মাণা॥ ৪২॥
তাক্ত্যা বিষ্ণুভয়াদৈতা বিবিশ্বতের রসাতলম্।
লা পুরী ছংপ্রধর্ষানার্মধ্যেদাগরমান্থিতা। ৪০।
তত্র বাদায় গচ্ছ ত্বং নানিয় সাধিন্তিতা পুরা।
পিত্র দিকীস্থাপী গড়া তাং পুরীং ধনদোহবিশ্ব ৪৪
ল তত্র স্থানিরং কালমুবাদ পিতৃসমাতঃ।
ক্স্যচিত্বধ কালস্য সুমালী নাম রাক্ষশং॥ ৪৫॥

গ্রহণ করিবে যে, সে অকীয় মাতৃ এবং পিতৃকুল পরিসদ্ধন করিবেক। অনন্তর তৃণবিক্র হুছিতা এক পুল প্রাস্থান করিলেন এবং ঐ সন্তান পুলস্তা মূলি হইতে জন্ম গ্রহণ করিলাছে বলিমা স্পাত খোগিত হইল, স্কৃত্রাং সে বিশ্রবা ও অপরায়ণ পেশিলস্তা মূলি নামে স্থাত্র বিধ্যাত হইলেন। অনথর তাংগার স্বভাব ও চরিত্র পরিদ্রানে মহামুনি ভরদ্বাজ্ঞ পর্ম প্লক্তিক মনে তাঁহাকে স্কীয় ছুছিতা সম্প্র করিলেন
ত্তঃ। ৩৫। ৩৬।

খনন্তর ব্রন্ধা প্রদানত ববে ভরদ্বাজ তুহিতার গর্ত্তে ও শেশিক্তা
মূনির ঔরদে সকলোক বিখানত বৈপ্রবেশ নামে পিতৃতুলা এক
সভান জ্বন্মিল। এ পুত্র বোর তপানা প্রস্তুত হইলে
কমলবোনি ব্রহ্মা পরম পরিতৃষ্ট হইয়া তাঁহাকে অতুল ধনের
ক্রিপতি করিয়া দিলেন। অনন্তর ধনাধিপতি কুরেরব্রহ্মাদত্ত অপূর্ব্ব পুষ্ণাক রথে আরোহণ করিয়া পিতৃদর্শনে
বীমন করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩১।

ধনাধ্যক্ষ পিতৃ সমীপে উপস্থিত হইরা ভাঁহাতে প্রণাম পূর্বক তপদাার ফল র্ক্তান্ত নিবেদন করিয়া কহিলেন— জাণীশ্বর আমার বাদ স্থান নির্দেশ করিয়া দেন নাই; স্থানার নির্দান বাহন, অভএব যেখানে হিংসাদি কিছুই নাই এরপ স্থান আমাকে বলিয়া দিন, অমি তথায় বাস করিব; ভদ্জুবণে বিশ্রবা কহিলেন—পূর্ণে বিশ্বক্ষা রাক্ষ্যদিশের নিবাস হেতু লক্ষানায়ী এক অভিস্থানেভনা বকপ্রী নির্মাণ করিয়াছিলেন, এক্ষণে বিস্তুব ভবে নৈভা সমূহ ভাষা পরিভাগে করিয়াছিলেন, এক্ষণে বিস্তুব ভবে নৈভা সমূহ ভাষা পরিভাগে করিয়াছিলেন, এক্ষণে বিস্তুব ভবে নৈভা সমূহ ভাষা পরিভাগে করিয়াছিলেন, এক্ষণে বিশ্বে করিয়াছে, সেই পুরী অন্য শক্ষারা বিজিত হইবার কোন আশক্ষা নাই। কারণ উহা সমুদ্রের মধ্যে অবস্থিত; অভএব ভূমি ঐস্থানে বিয়া বাস কর। বৈশ্ববণ পিতার আদেশে ঐ পুরী মধ্যে বহুকালাবধি বাস করিছে লাগিলেন । ৪০ । ৪১। ৪২। ৪৪।

একদা স্থালী নামক নাংসভোজী এক রাক্ষণ অপূর্বরূপা লাবণাবতী স্থীর কন্যা নমভিব্যাহারে রসাভ্ন
হইতে আন্নন করিয়া মর্তলোকে বিচরণ করিতে ছিলেন,
ইত্যবস্বে ধনপতিকে পুস্তুক রথে বিচরণ করিতে অবলোকন
করিয়া মাস্ত্রিত প্রছন্ত হইয়া তাঁহার কৈক্যীনামী কন্যাধে

রসাতলামার্ক্তালোকং চচার পিনিতাশনঃ। গৃহীত্বা তনয়াৎ কন্যাৎ সাক্ষাদ্দেবীমিব শ্রিয়ম। ৪৬ অপশ্যদ্ধনদং দেবং চরন্তং পুষ্পকেণ সং। হিতায় চিন্তুরামান রাক্ষদানাং মহামনাঃ। १०। উবাচ তনয়াং তত্ত্ব কৈকসীং নাম নামভঃ। বংসে! বিবাহকালতে যৌবনং চাতিবৰ্ত্ততে॥ ৪৮ প্রত্যাখ্যানাচ্চ ভীতৈত্ত্বং ন বরৈগৃ ছলে শুভে !। সা ত্রং বর্য় ভদ্রং তে মুনিং ব্রহ্মকুলোদ্ভবম্ । ৪১ স্বয়মেৰ ততঃ পুজা ভবিব্যন্তি মহাবলাং!। ঈদুশাঃ সর্ব্বশোভাচ্যাঃ ধনদেন সমাঃ শু:ভ!।৫।। তথেতি সাশ্রমং গড়া মুনেরগ্রে ব্যবস্থিতা। লিখন্তী ভুবমগ্রেণ পাদেনাধোমুখী স্থিত। ॥ ৫১॥ তামপৃচ্ছ ৎ মুনিঃ কা তং কন্যাদি ? বরবর্ণিনি !। সাববীৎপ্রাঞ্চলিব ক্রন্! ধ্যানেন জ্ঞাতুমহ'দি। ততো ধ্যাত্ব। মুনিঃ দর্বং জ্ঞাত্বা তাং প্রত্যভাবত। জ্ঞাতং তত্ত্বাভিল্বিতং মন্তঃ পুজানভী ন্যান ॥ ৫৩

কহিলেন—বংসে! একলে তোমার যেবনকাল উপস্থিত, অতএব তোমার উবাহ সময় হবয়াছে: কিন্তু তুমি ভয়পরতন্ত্রা হইয়া এককুলোদ্ভব মহর্ষির নিকট ইইতে অপূরবর্ত্তিনী
হওয়ায় বরপ্রার্থনা ক্র নাই, তথাপি হে শুভে! সর্ব্বসম্পদ
সম্পন্ন ধনদেবের নাায় তোমারও মহাবলবান সন্তান উৎপর
হইবে; অনন্তর কৈকসী মুনির আশুমে উপনীত হইয়া
লজ্জাবনতমুখী হওও স্বীয় পাদদিকে নয়নপাত করিয়া রহিল।
মহর্ষি কহিলেন—হে বরবর্গিনি! তুমি কি জ্ঞাতীয়া, কাছার
কন্যা, আমাকে প্রকাশ করিয়া বল। কৈকসী মুনি বাক্য
শ্রেণে বর্দ্ধাঞ্জলি হইয়া কহিল, হে ব্রহ্মণ আপ্রনি আমাকে
তুশা জিজ্জাসা করিতেছেন, কারণ ধ্যানযোগে আসীন হইলে

দাৰণায়াং তু বেলায়ামানতাসি সুমধামে!।

অতন্তে দারুণী পুজো রাক্ষমে সম্ভবিষ্যতা। ৫৪

সাত্রবীন্মুনিশাদূলি! জ্জোহপ্যেবশ্বিধা সুকোই।
তামাহ পশ্চিমো যস্তে ভবিষ্যতি মহামতিং॥ ৫৫

মহাভাগবতঃ শ্রীমান্ রামভক্ত্যেকতৎপরা।
ইত্যুক্ত্রা সা তথা কালে সুষুবে দশকস্বরম্।।
রাবণং বিংশভিভুজং দশশীর্ষং স্থদারণম্।
তদ্রক্ষাজাতমাত্রেণ চচাল চ বস্ক্ষরা। ৫৭।
বভূবুর্নাশহেতুনি নিমিন্তান্য্যিলান্যপি।
কুম্তুকণিস্তাে জাতো মহাপর্বতি সন্ধিভঃ ৮৮।
ততঃ শূর্পনথা নাম জাতা রাবণসোদরা।
ততো বিভীষণো জাতঃ শান্যাত্যা স্যোমদর্শনঃ।।

আপনি সমস্ত অবগত চইতে পারেন। অনন্তর মহর্ষি ধ্যানাবলয়ন পূর্বেক তাগর আদ্যোপান্ত সমস্তই জানিতে পারিয়াকহিলেন আমি ধ্যান বলে জানিয়াছি যে, তুমি পূলাকাজিফাণী হইয়া এখানে আদিয়াছ অতএব এক্ষণে যেমন নিদাকর সময়ে আমার নিকট আগমন করিয়াছ ভজ্ঞপ তুমি ভয়ানকরাক্ষাক পূল সম্ভবা হইবে। অনন্তর সেই লগনা কহিল, হে মুনিশার্দ্দুল! আপনার বাকো এবছিধ পূল্ল উংপন্ন হইবে সন্দেহ নাই, কিন্তু সেই পূল্ল কি মহামতি, এবং পরম বৈয়য় শ্রীমান্ রামচন্দ্রের ভক্ত হইবে? অনন্তর প্রে কন্যা যথান্দ্রাম্য বিংশভিতু ছবিশিষ্ট, দশলীর্য, ভয়ানক রাষণকে প্রস্থাকরিল এবং ঐ রাক্ষ্য প্রস্থাকরিল এবং ঐ রাক্ষ্য প্রস্থাকরি হইবামান্ত বস্মতী কম্প্রানাহ ইলেন অধিকন্ত রক্ষঃবংশের ও অধিল জগতের বিনাশ কারণ ও সমুস্তু ভ হইল ় ৪৫।৪৬।৪৭।৪৮।৪৯।৫০।৫১।

অনন্তর মহমেকসদৃশ কুভকণ জন্মগ্রহণ করিল পরে রাবণ সহোদরা শূর্পনিখা ভূমিট হইল, শেষে বেদাধারন স্বাধ্যারী নিগত হারী নিত্যকর্মপ্রারণ:।
কুন্তুকর্ণস্ত দুউ আ দিজান সন্তুষ্টচেতস: ৬০।
ক্রেকর্ণস্ত দুউ আ দিজান সন্তুষ্টচেতস: ৬০।
ক্রেকর্ণস্ত মহাসন্তো লোকানাং ভ্রদায়ক:।
করবে লোকনাশার স্থানরো দেহিনামিব ॥ ৬১ ॥

রাম ! বং সকলান্তরস্থনভিত্যে জানাসি বিজ্ঞানদৃক্।
সাক্ষীসর্বক্দিক্টিতে। হি পরমো
নিত্যোদিতো নির্মল:।
বং লীলান্তুজাকুতিঃ স্থমহিমা যায়াগুনৈর্মাজ্ঞানে
লীলার্থং প্রতিটোদিতোহদা
ভবতো বক্ষ্যামি রক্ষোদ্ভবম্ ॥ ৬২ ॥

নিরত, সংযতাহার, নিত্যকর্মপরায়ণ, স্থালীল ও শান্ত মৃথি নিত্যকর্মপরায়ণ, স্থালীল ও শান্ত মৃথি নিত্যকর্মপরায়ণ, স্থালীল ও শান্ত মৃথি নিত্যকর্মণ করিয়া সাহলাদহনরে ইতন্ততঃ বিচরণ করিছে লাগিল। এদিকে রাবণণ্ড লোক-ভরাবছ জীবমাত্রেরই ব্যাধি সর্প হইয়া লোক বিনাশের জন্য পরিবন্ধিত হইতে লাগিল। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১।

হে রামচন্দ্র! আপেনি বিজ্ঞান স্বরূপ এবং সর্ব্বাস্তর্যামী

ইরা সকলেরই অন্তরন্থ যাবতীর বিষয় অবগতে আছেন। অভত্রব আপনি সাক্ষাৎ দ্রষ্টা। তাহা না ছইলে আমি মহুষা হইরা

কি প্রকারে আমার ঈদৃশ ভাব উপস্থিত হর। হে রয়ুনাথ!
আপনি সকলের হাদয়স্থ হইরা সর্ব্বদাই বিমল ভাবে উদিত

হরেন। আপেনি সীয় লীলা বশভঃ মনুষ্য দেহ পরিপ্রেহ করিরা
ভোন বস্তুভঃ আপনি মনুষ্য নহেন, আপনার মহিমা আপনিই
অবগত আছেন, অপরে ঐ মহিমা কির্নেপ জানিতে পারিবে।
আপনি মায়া ঘারা সমুদায়ই আচ্ছেন্ন করিরা রাধিয়াছেন, কিন্তু
স্বয়ং কোন রূপ স্পাশ করেন না—আপনি সর্বজ্ঞ, আপনার

কানামি কেবলমনস্তমচিন্তাশক্তিং
চিন্মাত্তমক্ষরমজং বিদিতাপ্সতত্ম।
বং রাম। মূঢ়নিজনপমনুপ্রব্রন্তো
মূঢ়োহপ্যহং ভবদমুগ্রহতক্ষরামি॥ ৬৩॥
এবং বদস্থমিনবংশপবিত্তকীর্ত্তিঃ
কুস্তোদ্ভবং রঘুপতিঃ প্রহ্মন বভাবে।
মার্যাশ্রেতং সকল্মেতদনন্যকত্বাৎ
মৎকীর্ত্তনং জ্বগতি পাপহরং নিবোধ॥৬৪॥
ইতিশ্রীমদধ্যাপ্ররামারণে উমামহেশ্র সন্থাদে
উত্তরকাণ্ডে প্রথ্নোহধ্যায়ঃ।

সমুখে বাকা বিন্যাস করা আমার পক্ষে নিভান্ত অনুচিত, ভবে লোক সমুদায়ের অবগতির নিমিত্ত আপনি যে সমস্ত বলিয়াছিলেন অদ্য আমি দেই রক্ষঃ বংশের বিষয় বর্ণনা করিব। হে মহাত্মনৃ! আপানি আমাকে জ্ঞানবিদ্ বলিরা উল্লেখ কৰিতেছেন, কিন্তু আমি আপনাকে এক মাত্ৰ বলিয়া জানি—আপনি অনাদি অনন্ত, আপনার শক্তি চিন্তার বহিন্ত তি, আপেনি চৈতন্য স্বরূপ, আপনি অক্ষর অর্থাৎ আপনার ক্ষরণ নাই, আপনি অজ অর্থাৎ কাছার গর্ভে জন্ম গ্রহণ করেন নাই। আপনিই আপনার ভত্ত অবগত আছেন, আপনার রূপ বিষয় অভিশয় গুঢ় কেইই জানিতে সমর্থ নহে ! অতএব আমি মৃঢ় হইয়াও আপনার প্রদর্শিত প্রবৃত্তিমার্গ আবলম্বন করিয়া ইচলোকে পর্যাটন করিতেছি। রঘুপতি সুর্বা বংশের পবিত্র কার্তিরপ অমৃত কথা কছিতে শ্রবণ क्रिया छे श्क्रू लाखः कत्रा मर्श्वारक विलिस -- महर्ष ! व्यामाव অনন্যকত হেতৃ পৃথিবীর সমস্ত লোক মারায় আচ্ছন্ন হ্ইয়া আছে, অতএব আমার এই অবতার গ্রহণের মুখ্য উদ্দেশ্য এই যে, এই জ্বগন্মগুলে আমি স্বয়ং মৎকীর্ত্তম আলাপ করিলে সমুদায় পাপ বিনষ্ট হইবে। ৬২ । ৬৩ । ৬৪।

> ইতি জীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বরস্থাদে উত্তরকাথে যোডশোহধ্যারঃ।

শ্বীনামবচনং ক্রন্থা পর মানন্দনির্ভরঃ।

মুনিঃ প্রোবাচ সদসি সর্ক্রেষাং তত্ত্ব শৃণুতাম্॥ ১॥

অথ বিত্তেশ্বরো দেবস্তত্ত্ব কালেন কেনচিৎ।

আযযৌ পুশ্পকারতঃ পিতরং দ্রুই মঞ্জুসা॥ ২॥

দৃষ্ট্বা তং কৈকসী তত্ত্ব ভাজমানং মহৌজসম।

রাক্ষসী পুত্রসামীপ্যং গহা রাবণমত্ত্রবীৎ॥ ৩॥

পুত্র! পশ্য ধনাধাক্ষং জ্বলন্তং স্বেন তেজ্পসা।

তুমপ্যেবং যথাভূয়ান্তথা যত্ত্বং কুরু প্রভো!॥ ৪॥

তচ্চ,ত্বা রাবণো রোষাৎ প্রতিজ্ঞামকরোদ্দ্রতম্।

ধনদেন সমো বাপি হাধিকো বা চিরেণ তু॥ ৫॥

ভবিষ্যাম্যথ! মাং পশ্য সন্তাপং ত্রুজ স্ত্রতে!।

ইত্যুক্ত্বা দুক্ষরং কর্ত্তং তপঃ স দশকক্ষরঃ॥ ৬॥

আগমৎ ফ্রাসির্গং গোকর্গং তু সহান্ত্রতঃ।

স্বং স্বং নিয়মমাস্থায় ভ্রাতরন্তে তপো মহৎ॥ ৭॥

আছিতা দুদ্ধরং ঘোরং সর্বলোকৈকতাপনম্।
দশবর্ষসহস্রাণি কুন্তকর্ণোইকরোন্তপঃ॥ ৮॥
বিভীষণোইপি ধর্মাত্মা সভাধর্মপরায়ণঃ।
পঞ্চবর্ষসহস্রাণি পাদেনৈকেন তচ্ছিদান্॥ ৯॥
দিব্যবর্ষসহস্রাং তু নিরাহারো দশাননঃ।
পূর্ণে বর্ষসহস্রাণি নব তস্যাতিচক্রমুঃ॥ ১০॥
অথ বর্ষসহস্রাণি নব তস্যাতিচক্রমুঃ॥ ১০॥
অথ বর্ষসহস্রাণি নব তস্যাতিচক্রমুঃ॥ ১০॥
তত্তুকামস্য ধর্মাত্মা প্রাপ্তশ্চাথ প্রজাপতিঃ।
বহুসামস্য ধর্মাত্মা প্রাপ্তশচাথ প্রজাপতিঃ।
বহুসামস্য ধর্মাত্মা প্রাপ্তশচাথ প্রজাপতিঃ।
বরং বরয় দাস্যামি যক্তে মনসি কাভিক্ষতম্॥ ১১॥
দশ্রীনোইপি তচ্ছাত্মা প্রস্তেমনান্তরাল্মনা।
অমরত্বং রণোমীশ। বরদো যদি মে ভবান্।
স্পর্ণনাগ্যক্ষাণাং দেবতানাং তথাসুরৈঃ॥ ১২॥

মহর্ষি অগস্তা শ্রীরামের বাক্য শ্রবণ করিয়া অপার আনন্দ সাগরে ভাসমান ছইয়া কছিলেন—অভঃপর ভোমরা শ্রবণ কর, বিতেশ্বব কুবের কিচুকাল তথার অবস্থান করিয়া এক দিন পূজাক রথে আরোহণ পূর্বাক পিভাকে দর্শন করিবার মানসে আগমন করিলেন; তথায় কৈকসী দীপ্তমান কুবেরকে সন্দর্শন করিয়া স্পুত্র রাবণকে কহিল, হে পুত্র! দেখ ধনাধ্যক্ষ স্বকীয় উজ্জলভায় পবিশোভিত ইয়া আগমন করিয়াছে, অভএব তুমিও যাহাতে ঐরপ ছও হাহার চেন্টা কর। রাবণ মাতার বাক্য আকর্ণন করিয়া কোধাবেগে প্রতিক্রা করিল, আমি ধনদের সমান অথবা ভাহার অলেকা ধনশালীও পরিশোভমান ইইব। অভএব ছে মাতঃ স্প্রতে! এক্ষণে সন্তাপ পরিহার ককন, এই বলিয়া দশানন কঠোর তপদ্যা হারা ফলদিদ্ধি করিবার নিমিত্ত অমুজ ভাতা হয় সমভিব্যাহারে গোকর্ণে আগমন করিল। তথায় ভাতিতিয় স্বাস্থানিরমাবলম্বন পূর্ত্তিক সর্ব লোক ভ্রদশী অভি কঠোর তপাসা। আরম্ভ করিল। ক্স্তকর্ণ দশহাজার বংসর ঘোরতর তপঃ করিয়াছিল। ১০২। ৩০। ৪০৫। ৬০। ৭০৮

সভাধর্ম পারায়ণ বিভীষণ পঞ্চসহত্র বংসর এক পদে অবদ্বিতি করিয়াছিলেন। দশানন অগ্নিতে আক্তি প্রদান পৃথ্যক
সহত্র বংসর অনশনে থাকিয়া খোরতর তপ্রসা করিল। ঐ
সহত্র বংসর অতীত হইলে আপনার এক এক মন্তক ছিঃ
করিয়া নয় ছাজার বংসর ব্যাপিয়া তপ্রসা করিতে লাগিল।
অনন্তর দশম বংসর উপস্থিত ছইলে দশম মন্তক ছিয়া করিনে
উদ্যত হয়, তথান প্রজাপতি ব্রহ্মা উপনীত ছইয়া কহিলেন
বংস, দশগ্রীব। তোমার তপ্রসায় আমি নিরতিশয় প্রৌদ
ছইয়াছি এক্ষণে তোমার অভিলয়িত বরপ্রার্থনা কর। দশানন
পদ্ময়োনি ব্রক্ষার বাক্য প্রবণে আননন্দোৎক্লমনে কহিল. তে
জগদীলা থ যদি আমাকে অমুগ্রেছ ক্রিয়া বরদান ক্রেন

অবধ্যন্তং তুমে দেহি তৃণভূতা হি মানুষা:।
তথান্তি প্রজাধ্যক্ষঃ পুনরাহ দশাননম্। ১৬।
অগ্নৌ হুতানি শীষ নি যানি তেহজুরপুক্ষব!।
ভবিষ্যন্তি যথাপূর্ব্বমক্ষরাণি চ সত্ম!। ১৪।
এবমুক্ত্বা ততো রামো! দশগ্রীবং প্রজাপতিঃ।
বিভীষণমুবাচেদং প্রণতং ভক্তবংসলঃ। ১৫।
বিভাষণ! দ্বয়া বৎস! কৃতং ধ্যার্থমুত্যম্।
তপস্ততো বরং বৎস! কৃতং ধ্যার্থমুত্যম্।
তপস্ততো বরং বংশ। বুলীব্যভিষতং হি তম্।১৬
বিভীষণোহপি তং নতা প্রাঞ্জলিক্রাক্যমন্ত্রবীং।
দেব! মে সর্কাণা বুদ্ধির্থমে তির্ভু শাশ্বতী।
মা রোচয়ন্ত্রপর্যো মে বুদ্ধিঃ সর্বন্তি সর্কাণা ১৭।
ততঃ প্রজাপতিঃ প্রীতো বিভীষণম্থান্ত্রবীং।

ভবে, এই বরদান করুন আখি যেন আমর ছই অর্থাৎ স্থপর্ন, নাগ, গফ দেবভা বা অস্ত্র কেছই যেন আমাকে বিনাশ করিতে সক্ষম হয় না। মথন আমি মনুষাদিগকে ভূণের নাার জ্ঞান করি তথন আমাকে আমরত বরপ্রদান করুন: প্রজাপতি ব্রহ্মা তথাস্ত বলিয়া পুনরায় তাহাকে কছিলেন – হে অসুর শ্রেষ্ঠ! তুমি শে সকল মস্তক অগ্নিতে আন্ততি দিয়াছ বে সমস্তই অক্ষয় হইবে।৯।১০।১১।১২।১৩।১৪। ে রামচন্দ্র ! ভক্তবৎসণ ব্রহ্মা দশত্রীবকে এই কথা বলিয়া প্ৰণত ধৰ্মাত্ম। বিভীষণকে কছিলেন—হে বিভীষণ! তুমি ধর্মাভিলাষী ছইয়া তপ্স্যা করিয়াচ, এক্ষণে তোমার মনোমত বরপ্রার্থনা কর। বিভীষ্ণ ভাঁছার কথা শ্রবণ করিয়া তাঁছাকে প্রণাম করিয়া রুতাঞ্জিপুটে কছিলেন, হে দেব! আপনি আমাকে এই বরদান করুন, যেন আমার বুদ্ধি সর্কানাই ধর্ম পথে অবস্থিতি করে, কার্ণ আমার বুদ্ধি সর্বাদ। সর্বাদ্ধে অভিনচি করিয়া থাকে। অনস্তর বন্ধা তাঁহার প্রতি যারপর নাই প্রতি প্রদর্শন পূর্বক

বৎস! তথ ধর্মনীলোহসি তথৈব চ ভবিষ্যসি ॥১৮

অবাচিতোহসি তে দাস্যে হ্যারতং বিত্তীবণ!।

কুন্তুকর্ণমথোবাচ বরং বরয় স্ত্রত!।১৯।

বাণ্যা ব্যাপ্তোহথ তথ প্রাহ কুন্তুকর্ণঃ পিতামহম্।

অপ্স্যামি দেব! বগ্মাসান্ দিনমেকং তু ভোজনম্

এবমস্তিতি তথ প্রাহ ব্রহ্মা দৃষ্ট্বা দিবেবিক্সঃ।

স্বরস্বতী চ তদ্বক্তান্ত্রির্গতা প্রযথে দিবম্।২১।

কুন্তুকর্ণস্ত দুষ্টাত্মা চিন্তুরামাস ত্থিতঃ।

অনভিপ্রেতমেবাস্যাৎ কিং নির্গতমহো বিধিঃ।২২

স্থালী বরলকাংস্তান্ জ্ঞাত্মা পৌজ্ঞান্ নিশাচরান্।
পাতালান্তিরঃ প্রায়াৎ প্রহন্তা দিভির্ন্তিতঃ।২৩।

দশ্বীবং পরিষ্ক্য বচনং চেদ্যব্রবীৎ।

দিন্ট্যা তে পুল্র! সম্ব্রো বাঞ্জ্রো যে মনোর্থঃ।

কহিলেন—ছে বৎস। তুমি পারম ধর্মণীল, প্রার্থনা না করি-লেও আমি তোমাকে অমরত্ব প্রদান করিলাম। ১৫ । ১৬।

অনন্তর পিতামছ ব্রহ্মা কুন্তকর্ণকে ফহিলেন—ছে সুরণ তুমি বরপ্রার্থনা কর; কুন্তকর্গ তাছার বাকা প্রবণ করিয়া কহিলেন—হে দেব! একদিবস ভোজন করিয়া চূর মাস নিদ্রা ভোগ করিব এই বর প্রদান করুন, ব্রহ্মাও 'তথান্তা কহিলেন। এক্ষণে স্বরস্থা তাঁহার বদনু হইতে নির্গতা হইয়া স্থর্গে গমন করিলেন। অতঃপর হুইমতি কুন্তকর্ণ হুঃখিত চিত্তে চিন্তা করিতে লাগিল যে, বিধাতার বিজ্বনা প্রযুক্ত আমার অনন্তিপ্রেত বরলাভ হইগ। সুমালী আপনার নিশাচর প্রেত্রের বরলাভ করিয়াছে অবগত হইয়া প্রহন্ত প্রভৃত্তির রাবণ সেনাপতি পরিব্রত হইয়া পাতাল হইতেনির্ভন্তে আগমন পূর্ব্বক রাবণাদির সমীপে উপস্থিত হইল। ১৯।২০।২১।২২।২৩। অনন্তর দশগ্রীব রাবণকে কছিল—হে পুত্র! ভূমি প্রম

যদ্ভরাচ্চ বরং লঙ্কাং ত্যক্তবা বাতা রসাতন্ম।
তদ্যতং নো মহাবাহো! মহদ্বিষ্ণুক্তং ভরম্। কি
অস্মাতিঃ পূর্দিমুবিতা লক্ষেরং ধনদেন তে।
ভাত্তাক্রান্তামিদানীং ত্বং প্রত্যানেতুমিহাই দি.।২৬
সামা বাঘ বলেনাপি রাজ্ঞাং বৃদ্ধঃ কৃতঃ স্কৃতং ।
উত্যুক্তো রাবণং প্রাহ্ নাহ দেয়বং প্রভাবিতুম্ ২৭
বিজেশো গুরুরস্মাকমেবং প্রত্যা তমত্রবীৎ।
প্রহত্তং প্রশ্রিতং বাক্যং রাবণং দশকন্ধরম্। ২৮।
প্রাণ্ রাবণ! যত্নেন নৈবং ত্বং বক্তুমই দি।
নাধীতা রাজধর্মান্তে নীতিশাস্ত্রং তথৈব চ। ২০।
স্বর্গাং ন হি সৌত্রাত্রং প্রত্যু মে বদতঃ প্রভো।
কশাপায় স্কৃতা দেবা রাক্ষ্যাশ্চ মহাবলাঃ। ৩০।

সেলি লাগ্য বশতঃ বরপ্রাপ্ত ইইয়াছ, অতএব এক্ষণে আমার চিরাভিলবিত মনোরথ সফল হইল ; হে মছাবাছো! যে ভরে আমারা লছা পরিভাগা করিয়া পাভাল মধ্যে পলায়ন করিয়াছিলাম এক্ষণে সেই বিফুর ভর অপনোদিত হইল। পুরের আমরাই এই লছাপুরীতে বাস করিতাম কিন্তু, ভোমার জাতা কুবের ভোমাকে আক্রমণ করিতাম কিন্তু, ভোমার জাতা কুবের ভোমাকে আক্রমণ করিলেও তুমি দৈন্য সমস্ত সাহাযো লছা পুরী অবলীলাক্রমে স্বাধীন করিতে সমর্থ হইয়াছ। এইরূপ কহিলে দশানন স্থমালীকে কছিল—দেশুন আপনার মুথে প্রেরণ কথা উপযুক্ত নহে। কারণ গ্রমণতি আমাদিগার, গুক্ত রাবণ সেনাপতি প্রহস্ত তাছার বাক্য প্রবণ করিয়া অতি বনীত বচনে কছিল—হে রাবণ! গ্রাপনি এইরূপ কহিতেছেন, কিন্তু উছা আপনার পক্ষেত্রপুক্ত। অভএব আপনি যেমন রাজ্যধন্ম এবং নীভিশান্ত্র অধ্যরন করেন নাই সমহিত চিত্তে আমার বাক্য প্রবণ করেন। ২৪। ২৫। ২৬। ২৭। ২৮। ২৯।

ং প্রভা! আমি সমস্তই বলিতেছি প্রবণ কঞ্চন—
স্রাদিনোর মধ্যে কিছুই সধ্যতা নাই, দেখুন, কণ্যপের পুত্র

পরস্পরমযুধান্ত ত্যুক্ত্বা সৌক্তদমায়ুধৈ:।

নৈবেদানীন্তনং রাজন্! বৈরং দেবৈরমুক্টিভম্॥ ৬১
প্রহস্তব্য বচঃ শ্রুড়া দশগ্রীবো ছর'জ্বন:।
তথেতি ক্রোধতান্ত্রাক্ষস্তিকুটাচলমন্থগাৎ। ৬২।
দূতং প্রহস্তং সংপ্রেষ্য নিষ্কাশ্য ধনদেশ্বরম্।
লক্ষামাক্রম্য সচিবৈ রাক্ষনৈ: সুধ্যান্তিতঃ। ৬৬।
ধনদঃ পিতৃবাক্যেন ত্যক্ত্বা লক্ষং মহাযশাঃ।
গত্বা কৈলাসশিধরং তপদ্বা তোষর্ঘিছ্বম্। ৬৪।
তেন স্থ্যমন্ত্রাপ্য তেনৈর পরিপালিতঃ।
আলকাং নগরীং তত্ত্র নির্মানে বিশ্বকর্মণা। ৩৫।
দিক্পালত্বং চকারাত্র শিবেন পরিপালিতঃ।
রাবণো রাক্ষনৈঃ সাধ্যভিষ্ক্রঃ সহান্ত্রিজঃ ॥ ৬৬॥

দেবতা ও মহাবল পরাক্রান্ত রাক্ষসদিয়ের মধ্যে তিলার্দ্ধমাত্রও স্থাতা ছিল না। তাহারা কেবল যুদ্ধে চিরকালই অভিবাহিত করিভেছে। হেরাজন্! এই বিবাদটি সূতন বলিয়া মনো-মধ্যে স্থাম দিবেন না-কারণ অতি প্রাচীনকাল হইতে এই বেষ চলিমা আসিতেছে। ত্রুষ্টমতি দশানন প্রহস্তের বাকা অবৰ করিয়া কোধাগ্লিমরমে চিত্রকূট পর্বতে প্রস্থান করিল, সচিব বর রক্ষঃগণ প্রছন্তকে দ্তরপে প্রেরণ করিয়া ধনদেশ্র কুবেরকে ৰহিছ্ত করিয়া লক্ষা আক্রমণ করিল এবং পারম সুখে অবস্থান করিল। দহাযশা কুবের পিতার আদেশ ক্রমে লঙ্কা-षील পরিভাগে পূর্বক কৈলাল পর্বতের লিখর দেলে গমন করিরা তপস্টা মারা দেবাদিদেব মহাদেবকে পরিভূষ্ট করি-লেন, অনস্তর ভৎকর্তৃক স্থাতা নিগড়ে আবন্ধ এবং পরি-পালিত ছইয়া তথায় বিশ্বকৰ্মা দারা অলকানগরী নিৰ্মাণ क्रवाहेत्नन; এथान म्यानन अशामत्व घारा अतिशानिक ছইয়া কণিষ্ঠ ভ্রাতা ও অপরাপর রাক্ষসগণের সহিত লকা-রাজ্যে অতিষ্কু হুইয়া স্বীয় রাজ্য রক্ষার নিষিক্ত দিক্পাল- রাজ্যং চকারাস্তরাশং ত্রিলোকং বাধরন্থল:।

তিনীং কালপঞ্জায় দদৌ বিকটকপিনীং। ৩৬।

বিচা জ্জন্ধার নামানে মহামায়ো নিশাচর:।

ততো ময়ো বিশ্বকর্মা রাক্ষনানান্দিতে: স্কুড:। ৩৭

স্তাং মন্দোদরীং নামা দদৌ লোকৈক স্ন্দরীম্।

রাবনায় পুন: শক্তিমমোঘাং প্রীতমানস:॥ ৩৮॥

বৈরোচনস্য দৌহিত্রীং রুত্রজ্বালেতি বিশ্রুতাম্।

স্বাং দন্তামুদ্বহুৎ কুম্ভকর্ণার রাবণঃ॥ ৩৯॥

গন্ধর্বরাজস্য স্তাং শৈল্যম্য মহাস্থনঃ।

বিভীষণস্য ভার্যার্থে ধর্মজ্বাং সমুদ্বহুৎ ॥ ৪০॥

সরমাং নাম স্কুলাং স্বলক্ষণসংযুতাম্।

ততো মন্দোদরী পুত্রং মেঘনাদমন্ধীক্ষনৎ॥ ৪১॥

কাতমাত্রস্ত যো নাদং মেঘবৎপ্রামুমোচ হ।

দিগকে নিযুক্ত করিল, এব অন্থর দিগকে বাধ্য করিরা স্থর্গ মর্ভ্র পাতাল রাজ্য ভোগ করিছে লাগিল। ৩০। ৩১। ৩২। ৩১।৩৪। ৩৫। ৩৬।

অনন্তর কালখন্ত্ বংশোংপার মহামানিক মিশাচর বিত্যু-জিহ্বার সহিত আপনার বিকট রূপিনী ভূগিনী শূর্পনথার পরিণর কার্যা সমাধা করিল। পশ্চাংকশ্যপপত্নীস্কৃত মরদানব দশাননকে স্বীয় ভূহিতা মন্দোদরী প্রদান করিলেন। এই সমরে বিশ্বকর্মা প্রীতি-প্রফুল্ল হইরা স্বহস্ত নির্মিত অনোঘা শক্তি রাবলকে প্রাদান করিলেন। ৩৭। ৩৮।

রাবণ স্বয়ং বৃত্তজালা নামী লোক বিশ্বাত বিরোচন পুত্রের দেশিছিত্রীর সহিত কুস্তকর্ণের উদ্বাহ কার্য্য সম্পন্ন করিলেন; মহামতি গান্ধুকার্যিপিতি শৈলুষের পরমর্থা পরায়ণা সোভাগ্যবতী সর্ক্ষ স্থলক্ষণসম্পান্ধা সরমা নামী কন্যার সহিত বিভিন্ধির পরিণন্ন কার্য্য সম্পাদিত লইল। অনস্তর বাবণ মহিমী মন্দোদরী একটা সন্তান প্রস্ব করিলেন, ঐ পুত্র ভূমিষ্ট ইবা মাত্র মেঘনির্ঘোষের ন্যায় গভীর শব্দ করিরাছিল

ততঃ সর্ব্বে ক্রবশ্বেঘনাদোহয়মিতি চাসক্রং ॥ ৪২ ॥
কুস্তকর্ণস্তঃ প্রাহ্ নিজা মাং বাধতে প্রাহ্ ।
ততশ্চ কারয়ামান গুহাং দীর্ঘাং স্কৃবিস্তরাম্ ॥ ৪৩
তত্ত্ব সুবাপ মুঢ়াক্মা কুস্তকর্ণো বিঘুর্নিওঃ ।
নিজিতে কুস্তকর্ণে তুরাবর্ণো লোকরাবনঃ ॥ ৪৪ ॥
ব্রাহ্মানান্ ঋষিমুখ্যাংশ্চ দেবদানব্দিমরান্ ।
দেবপ্রিয়ো মন্ত্ব্যাংশ্চ নিজ্পত্ম স মহোরগান ॥ ৪৫॥
ধনদোহপি ততঃ শ্রুড়া রাবনস্যাক্রমং প্রভুঃ ।
অধর্মং মা কুরুষেতি দূতবাক্রের্ন্রবারয়হ ॥ ৪৬ ॥
ততঃ ক্রুদ্ধো দশগ্রীবো জগাম ধনদালয়ম্ ।
বিনির্জিত্য ধনাধ্যক্ষং জহারোত্তমপুষ্পকম্ ॥ ৪৭ ॥
ততো যুমস্ত বরুণং নির্জিত্য সমরেহস্তরঃ ।
স্বর্গলোকমগান্ত্র্বং দেবরাক্সজিঘ্রং সয়া ॥ ৪৮ ॥

বলিয়া সকলেই ভাহার নাম মেখনাদ রাখিল। ৩৯।৪০।।
।৪১।৪২:

আনস্তর কুন্তকর্ণ দশাননকে কহিল, হে প্রভা! নিজা আসিরা আমাকে যারপর নাই কইপ্রদান করি তেছে। এই বলিরা ম্টান্থা এক অতি স্প্রশস্ত গুছা মিন্দাণ করাইরা তন্মুধ্য বিঘূর্নিত ছইরা নিদ্রে। যাইতে লাগিল। কুন্তকর্ণ নিদ্রিত ছইলে সক্র লোকভরপ্রদ ছুর ভা,দশানন ব্রাহ্মণ ঋষি পুক্রব, দেবতা,দানব, কিরর,দেবশ্রী,মন্থ্যাও মছোরগ সমস্তকেই বিনাশ করিতে আরম্ভ করিল। ধনপতি কুবের রাবণের এইরপ অহিতাচরণ শুরণ করিরা ভাছাকে অধ্যাচরণ করিতেনিধেই করিরা বলিয়া পাঠাইলেন। কিন্তু ছুর্কু দ্বি দশানন কুবেরের এই হিতকর বাক্য আকর্ণনে ক্রোধানলে বিদক্ষ ছইরা যক্ষপতির আলরে গমন করিল, এবং জাহাকে যুদ্ধে পরাভব করিরা পূপ্পক রম্ব অপ্রেশ্ব করিল; অনস্তর মহাবলবান অস্তর যম ও বক্তনের সহিত সমরাঙ্গনে ব্যাপ্ত ছইরা উাহাদিগকে পরাভূত করিরা তিদ্বাধিপতি দেবরাক্ত ইক্সকে বিনাশ করিবার

ততোহতব্যহত্যক্ষিত্রেণ সহ দৈবতৈ:।

ততো রাবণমতোত্য ববক ত্রিদশেশ্বরণ । ৪৯ ॥
তচ্ছু ত্বা সহসাগত্য মেঘনদেং প্রতাপবান্।
ক্রয়া ঘোরং মহত্যুদ্ধং জিত্বা ত্রিদশপুষ্ণবান্ ॥ ৫০ ॥
ইন্দ্রং গৃণীত্বা বদ্ধানো মেঘনাদেশ মহাবলঃ।
মোচয়িত্রা তু পিতরং গৃহীভেন্দ্রং যথো পুরম্। ৫১॥
ত্রন্ধা তু মোচয়ামাপ দেবেন্দ্রং মেঘনাদতঃ।
দত্ত্বা বরান বহুংস্তশ্মৈ ত্রন্ধা স্বত্তনং যথো ॥ ৫২ ॥
রাবণো বিজয়: লোক ন্স্রান্ জিত্বা ক্রমণ তু ।
কৈলাসং তোলয়াম স বাত্তিঃ পরিঘোপমৈঃ ॥৫৬
তত্র নন্দীশ্রেণেরং শপ্তেইয়ং রাবণেশ্বরং।
বানবৈর্দ্যানুষ্টেশ্চণ নাশং গচ্ছেতি কোপিনা ॥৫৪
শপ্তেইপ্যগণয়ন্ বাক্যং যথো হৈহয়পত্তনম্।
তেন বদ্ধো দশ্মীবঃ পুলস্তেনে বিমোচিতঃ॥ ৫৫॥

আশাষে সর্গালাকে অতি সত্ত্র গমন করিল ; সেথানে দেবরাজ ইক্রের লহিত তাহার তুমুল সংগ্রাম উপস্থিত হটল, কিন্তু রাবণই বিজ্ঞীত হট্যা তৎকর্তৃক বন্দীভূত হটল ; ৪৩।৪৪।৪৫। ৪৬।৪৭ : ৪৮ | ৪৯।

মহাপারাক্রান্ত মেঘনাদ পিতার ছ্রবস্থা শ্রণ করিয়া ত্রিদশনাথের সহিত ঘোরতর যুদ্ধ করতঃ তাঁহাকে পরাজিত ভ দৃঢ় রূপে আবদ্ধ করিয়া পিতাকে মুক্ত করিল, এবং ইন্দ্রকে বন্ধন করিয়া স্বপুরে আগমন করিল। প্রজ্ঞান পতি ব্রহ্মা ইল্ফের ভুগতি দর্শনে ক্ষ্ক ছইয়া মেঘনাদের নিক্ট হইতে ভাঁহাকে মোচন করণানন্তর সভবকে প্রস্থান করিলেন। ৫০।৫১ ৫২।

মহাবলশালী রাবণ ক্রমে ক্রমে সমস্ত লোক জ্বর করিলা পরিঘ সদৃশ কৈলাস গিরি স্বীয় বাজ ঘালা উত্তোলন কৰিয়াছিল তদ্দশনে ননীকেখর কোপান্তিত এইবা ভাষাকে এই অভিশাপ দিয়াছিলেন যে, বানর ও মনুধ্য খারা ভোমার বিনাশ ছইবে

ততোহপি বলমাসাদ্য জিঘাংসুহ রিপুঙ্গবম। ধৃতত্তেনৈৰ ক**ংকণ বালিনা দশকন্ধার** ॥ ৫**৬** ॥ ভাময়িতা তুচতুর সমুদ্রান্রাবণং হরিঃ। বিসর্জয়ামাস ততন্তেন সখ্যং চকার সং॥ ৫৭ । রাবণঃ প্রম্প্রীত এবং লেকে। মুহাবল:। চকার স্বশে রাম ! রুভুজে স্থমেব তান্। ৫৮॥ এবং প্রভাবো রাজেন্দ্র! দশগ্রীবঃ সহেন্দ্র ছে। ত্রা বিনিহত: সঙ্খ্যে রাবণো লোকবাবণ: ॥ ৫৯। মেঘনাদশ্চ নিহতো লক্ষাপন মহাত্মনা ৷ কুম্ভকণশ্চ নিহতস্থা পর্বত্সন্থিভঃ 🛚 ৬০ 🕦 ভবারারায়ণঃ সাক্ষাজ্জগতামাদিক্ষিভুং। ত্বস্বাপমিদং সর্বাং জ্বাৎস্থাবরজঙ্গমম্। ৬১। দশানন অভিশপ্ত হইয়া শাপের বিষয় চিত্তা করিতে করিতে সহস্রার্জ্ন নগরে গ্রান করিল সেখানে কাত্রীয়া ছারা বন্ধ হইল: মহর্ষি পুলস্তা গাবলের বন্ধনাবস্থা শ্রবণে সেখানে জ্বিত প্দেগ্যন কবিয়া ভাষাকে বিমুক্ত কবিলেন। মহাতেজ-রাবণ বল প্রাপ্ত হইয়া জিলাংসা রত্তি পরিতৃষ্ট করিবা-মানসে বানর শ্রেষ্ঠ বালির নিকটে গমন করিল, তথায় ছবি পুষ্পব বালি দশজীবকে কক্ষেত্র ভিতর বাণিয়া অবক্ষ করি লেন। বালি ভাগকে চারিসমুদ্রের উপরে জমণকরাইয়: অবশেষে 'সমুদ্রে বিসর্জ্জন করিলেন, পরে রামণ সমুচি। প্রভিফল প্রাপ্ত হইরা ভাঁহার মহিত যথাতা ভাগন করিল : । ६७ । ५६ । ५६ । ५५ । ५५ । ८३ त्रामहत्त्वा শালী পৌলভোর দমুদয় লোক স্বৰশে আনয়ন করিয় পরম প্রীত মনে রাজ্য সম্ভোগ করিতে লাগিল 🥴 ব্যজেজ। ইন্দ্রজিৎ ও দশান্দের এইরপ প্রভাব ছিল বটে কিন্ত আপনি ঘোর যুদ্ধে নর্বলোক বিজয়ী রাবণকেও বিনাশ করিয়াছেন। মহামতি লক্ষ্ণদেব মেঘনাদকে মৃদ্ধে বিনষ্ঠ করিয়া ছেন এবং আপনি মহামেক সদৃশ কুন্তকর্ণকে বিনাশ করিয়া-

ছেন। হে বিভেগ! আপনি সংক্ষাৎ না গায়ণ, আপনি জগতের

ত্ব্যতিকমলোৎপারা ব্রহ্যা লোকপিতামহঃ।
অগ্নিস্তে মুখতো জাতো লাচা সং রঘুন্তন ! । ১২ ॥
বাজ্ভ্যাং লোকপালোহাশ্চক্ষুর্ভাং চন্দ্র শক্ষরে ।
দিশশ্চ বিদিশন্চৈব কণাল্যাং তে সমুখিতাং ।৯০
ব্রাণাৎপ্রাণঃ সমুৎপ্রশ্চাশ্বিনী দেবসন্তমে ।
জ্ঞাজানুরজঘনান্ত্রলো কিনেয়েই তবন্ । ৬৪ ।
কুক্ষিদেশাৎ সমুৎপরাশ্চতারঃ নাগরা হরে ! ।
ক্রাভ্যামিশ্রেকারে বালখিল্যাশ্চ রেভ্সঃ । ৬৫ ।
ব্যেচাদ্যমে গুদামুতু মনো রুদ্বিলোচনঃ ।
অস্তিভ্যাং পরিতা জাতাঃ কেশেভ্যো মেঘ্সংইভিঃ।
ও্যধ্যস্তব রোমভ্যো নথেভ্যান্ড থ্রাদ্যঃ ।
ভ্রেধ্যস্তব রোমভ্যো নথেভ্যান্ড থ্রাদ্যঃ ।
ভ্রেধ্যস্তব রোমভ্যো নথেভ্যান্ড থ্রাদ্যঃ ।

স্ফিক্র্ডা : এই স্থাবর জন্তমাত্ম গ জ্বৎ সমস্ত আপনারই স্বরূপ, হে রয়ন্তম ! আপনার নাভিপদ হইতে লোক পিতামহ এন্ধা ড়ংপ্র হইয়াছেন, অগ্নি আপ্পন্ত মূথ হইতে বাক্যের সহিত জুম প্রেছণ করিয়াচেন, আপুসনার বাছদ্ধ হইতে লোকপাল, নয়নদ্বয় হইতে নিশাকর ও স্ব্যি এবং শ্রবণ যুগল হইতে দিক্ বিশিক সমূৎপন্ন ইইয়†ছে; হে ঐছেরে! আপনার আন্তান তইতে প্রাণবায় ও দেবজেষ্ঠ অধিনী কুমারদয়, জজ্যা জানু, উক্ত জন্মদেশ হইতে ভ্ৰলোক সমুদায় সংট হইয়াছে এবং আপনারই কুক্ষিদেশ বহির্গত হইলা চারিটী মহাসাগর অথিল জগৎ পরিব্যাপ্ত করিয়া রাখিয়াছে। আপনার স্তনদ্ব ুটতে ইন্দ্র ও বৰুণ প্রভৃতি দেবতা দকল, রেত হইতে বাল-शिना गुनि, (मेषु इटें एक यम, खक्कानम इटें एक मृजूर अर्थाद ত্রিলোচন কন্তে আপিনার অস্থি হইতে মেৰু এবং কেশ হইতে মেঘ সংহতি সমুৎপন হইয়াছে; হে রমানাথ ! ঔষধ বুমুদার আপনার রোম হইতে এবং গ্রাদি সমস্ত আপনার নথ হইতে উৎপন্ন হইয়াছে। আপনই বিশ্বরূপ পুরুষ-নাম্বণ-

নানারপ ইবাভাসি গুণব্য জ্কিরে সতি।

থামাপ্রিটিভাব বিরুধাঃ পিবন্তাভূতমধ্রে। ৬৮।
থয়া সৃষ্টমিদং সর্বাং বিশ্বং স্থানরজক্ষমন্। ৬৯।
থামাপ্রিটিভাব জীবন্তি সর্বের স্থানরজক্ষমাং। ৬৯।
থামাপ্রিটিভাব জীবন্তি সর্বের স্থানরজক্ষমাং। ৬৯।
থামুক্তিমথিলং বস্তু ব্যবহারেইপি রাঘব!।
ক্ষারমধ্যগতং সর্পর্বথা ব্যাপ্যাথিলং প্রঃ। ৭০।
থাজান গাদ্রেইনিনি বাং ভেনাবভাসদে।
নাজ্ঞানচক্ষুত্থাং পশ্যেদক্ষদৃক্ লাক্ষরং যথা।
থোগিনস্থাং বিচিন্নন্তি স্বদেহে প্রমেশ্বরম্। ৭২
মাত্রিরসনমুখের্বেদশীবৈরহ্নিশম্।
খুৎপাদভ্ভিলেশেন গৃহীভা যদি যোগিনঃ। ৭০।

শক্তিসম্বিত হইয়া বকা বিফ্ও ককে প্রভৃতি নানার? প্রকাশমান আছেন। ৫৮ । ৫৯ - ৬০ | ৬১ : ৬২ | ৬২ : ৮২ :

হে জনংপতে। দেবতা সকল আপনাকে আশ্রর,করিয়া
যজস্থানে অস্ত পান করিয়া থাকেন; এই স্থাবর জন্ধনারক
বিশ্ব আপনার হারাই স্থাই হইয়া আপনারই আশ্রেরভূতা
ইইয়াছে এবং অদ্যাবধি বর্তমান রহিয়াছে। তে রাগব! য়ন্
যেমন ক্ষীরমধ্যাত হইয়া সন্দায় পরং পরিব্যাপ্ত করিয়া
থাকে,সেইরপ আপনিও অখিল জগতে ব্যাপ্ত হইয়া আছেন।
অর্কাদি সমস্ত আপনার বিষয় প্রকাশ করিতেছে, তজ্জনা
আপনি স্বয়ং স্বীয় বিষয়ের কিছুই প্রকাশ করেন না; হে
ব্যক্তি জ্ঞান চক্ষু প্রাপ্ত হইয়াছেন তিনিই কেবল আপনাকে
নিত্য ও সর্বার অবলোকন করিয়া থাকেন। ৬৯ বিল । ২১।
তামসাজ্র স্থানে দিবাকর যেমন পরিলক্ষিত হয় না তজ্ঞান
তক্ষ্বাক্তিরা আপনাকে সন্ধনি করিতে পারে না,
কেবল তপন্যানিরত তপোলক যোগিগণ স্ব স্থ শবীরাভাতরে

বিচিন্ন হো হি পশান্তি চিম্মাত্রং তাং ন চানাথা।

মহা প্রলপিতং কিঞ্চিৎ সর্বজ্ঞিয় তবাপ্রতঃ।

কল্তমহ সি দেবেশ! তবান্তগ্রহভাগহম্। ৭৪।

দিগদেশকালপরিহীনমনন্যেকং

চিন্মাত্তমক্ষরমজং চলনাদিহীনম্।
সর্বজ্ঞনীশ্বরমনস্তপ্তপর্যুদস্তমারং ভজে রঘুপতিং ভজতামভিন্নম্ । ৭ ।
ইতি শ্রীমদধ্যাতাুরামায়ণে উমামহেশ্বরসম্বাদে
উত্তরকাপ্তে দ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

আপনার প্রমেশ্ররপ অবলোকন করিয়া থাকেন, অর্থাৎ আপনি সর্বাদা সর্বাত চৈত্রা স্থরপে বিদ্যমান আছেন; নিস্তাবন বদন উপনিষদে আপনার পুক্ষ বা প্রকৃতি রপের বিষয় কিছুই নাই, তবে আপনার চরণকমলে ভক্তি থাকায় যোগিরা আপনার দ্বারা অনুগৃহীত হইয়া থাকেন, হে দেবেশ! বিচার করিয়া দেখিতে হইলেউপনিষদেই আপানাকে চিন্মর বলিয়া প্রাপ্ত হওয়া যায়। তদ্ভির অপার কোন স্থানেও আপনার প্রকৃত তদ্ভ অবগত হওয়া যায় না, কিন্তু আপনি সর্বজ অর্থাৎ সমস্তই বিদিত আছেন, অতএব

আমি আপনার নিকটে দাহা কিছু কহিলাম, তরিষয়ে তিতীকা প্রদর্শন করিবেন, কারণ আমি আপনার অনুগ্রহের পাতা। হৈ রঘুবর! আপনি দিক্,দেশ ও কাল পরিহীন, আপনি ইহ জগতের এক মাত্র আগাধা, আপনি চিমার চিমাত্র আপনি স্য়স্তুন আপনি চলনাদি বিহীন, আপনি সর্বজ্ঞ, আপনি ঈশ্বর, আপনি নিরস্তময় আপনি ভক্তদিগোর অভিন্ন অতএব আপনাকে ভক্তনা করি। ৭২। ৭৩। ৭৪। ৭৫।

ইতি জীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বরসন্থাদে উত্তরকাণ্ডে দ্বিতীরোহধায়ঃ।

তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ

জীরাম উবাচ।
বালিস্থগীবরোজন্ম শ্রোভূমিচ্ছামি ভত্তঃ।
রবীন্দ্রো বানরাকারে জঞ্জাত ইতি নঃ শুরুতঃ। ১

শ্রীরাম কহিলেল—হে মহর্বে! আপনার নিকট বালি ও স্থাীব প্রভৃতির জন্ম র্ক্তান্ত শ্রবণ করিতে ইচ্ছা করি, এবং রবীক্ত প্রভৃতি দেবতা সকল বানরাকার পরিগ্রেহ করিয়া-ছিলেন, এইরূপ স্থামাদিশের প্রাণান্তর্গত বিক্ততি সমূহ বর্ণন অগস্ত্য উবাচ।
মেরোঃ স্বৰ্ণময়য়স্যাদ্রেশ্মধ্যশ্লে মবিপ্রভে।
ভিস্মিন সভাত্তে বিস্তীর্ণা ব্রহ্মণঃ শতবোজনা। ১ ।

কঞ্ন, জাবণ করিব। অগান্তা কহিলেন, মহাপর্বতের অন্তর্গত স্বর্গময় শৃক্ষ ছিল। তথায় লোকপিতামহ ব্রহ্মার শত যোজন বিস্তৃত আশ্রম ছিল; এক দিবস চতুর্মুখ ব্রহ্মা যোগাসনে উপ্ৰিট্ট আছেন, ইতাবসরে তাঁহার নেত্র হইতে বল্প বিমাণে जनाः वर्म्यः म कार्कनाहित्साभमाञ्चि छः । নেত্রভ্যাং পতিতং দিব্যমানন্দসলিলং বছ। ৩। তদ্গহীয়া করে জ্রন্ধা ধ্যাত্ম কিঞ্চিদত্যক্র । ভূমে। পতিত্যাত্তেণ তত্মাজ্জাতো মহাকপিঃ। ৪। তমাহ জহিণো বৎস! কিঞ্ছিৎকালং বসাত্র মে। স্মীপে সর্বশোভাট্যে ততঃ শ্রেয়ো ভবিষ্যতি ॥ ইত্যুক্তো ন্যবস্তুত্ত ব্রহ্মণা বানরোত্তমঃ। এবং বছতিথে কালে গুতে ঋক্ষাধিপঃ সুধী:। ৬। कर्नाहि ९ वर्र । हेन मूनार्थ मुना छ । অপশ্যদিব্যস্লিলাং বাপীং মণিশিলাস্থিতাম্। १ পানীয়ং পাতুম।গচ্ছত তা ছায়াময়ং কপিম। দৃষ্টা প্রতিকপিং মহা বিপপাত জলান্তরে।৮। তত্তা দৃষ্ট্বা হরিং শাঘুং পুনরুৎপ্লুত্য বানরং। অপশ্যৎ ফুর্দরীং রামানাত্যানং বিস্ময়ং গতঃ । ১ দিবাগননাতা নিপ্তি চইল, হিনি তাহা করতলে ধারণ করিয়া ধ্যান করতঃ কিঞ্চিৎ পবিত্যাগ করিলেন, ঐ জল ভূমি-ভলে পতিত হইবা মাত্র তাহা ইততে এক মহাকপি সমুৎপন্ন ১ইল। অনস্তর ব্রহ্মা সেই মহাকপিকে কছিলেন, বংস! তুমি আমার নিকট কিঞিৎ কাল অবস্থান কর, তুমি मर्क (माखाबिक ७ मिंजाशामानी इरेटन । बना वरे क्र কছিলে, বানবোজ্ম দেখানে অবস্থান করিল, এবং বছ কাল বিগত ছইলে এক দিবস ঋকপতি ফল মূলাদি ভক্ষণে সমুদ্যত ছইয়া পর্কতোপরি পরিভ্রমণ করিতে লাগিল। পথি-মধ্যে মণিময় সোপাৰ সমন্ত্ৰিত ভুবিমল জলাশায় সন্দৰ্শন করিয়া জলপানাভিলাবে তৎসমীপে উপনীত হইলে ধল সধ্যে ভাছার প্রভিবিশ্ব নিপভিভ হওয়ার মনে মনে ভাবিল বে, জনমধ্যে অপর বানর ঋবছিতি করিতৈছে, এই त्र क्र किन्द्र इहेग्रा (म के सन मर्था वन्न अपनाम कविन,

তত: সুরেশো দেবেশং পুদ্ধার্থ। চতুর্ম্ব্রন্থন্।
গচ্ছমধাক্ষণময়ে দৃষ্টা নারীং মনোরমান্। ১০।
কন্দর্পনরবিদ্ধান্ধস্তকবান্ বীর্যায়ুত্তমন্।
তামপ্রাপ্রেব তদ্বীদ্ধং বালদেশে পতন্তু বি। ১১॥
বালী সমন্তবন্তু শক্রতুল্যপরাক্রমঃ।
তম্ম দন্তা সুরেশানঃ স্বর্ণমালাং দিবং গতঃ ১২॥
তানুরপ্যাগতন্তক্র তদানীমের ভামিনীম্।
দৃষ্টা কামবশো ভূতা গ্রীবাদেশে সূক্রমাহং॥১৩
বীদ্ধং তদ্যান্ততঃ সদ্যো মহাকাম্যেই ভবদ্ধরিঃ।
তস্য দন্তা হন্মন্তং সহায়ার্থং গতে। রবিঃ॥১৪॥
পুক্রম্বং স্মাদায় গতা সা নিদ্রিতা ক্রিং।
প্রভ্রমং স্মাদায় গতা সা নিদ্রিতা ক্রিং।

উলক্ষন পূর্বক দেখিল যে, একটা অপূর্ব্ব রূপবতী কামিনী ভাছার সমুখ্যর্শ্বনী ছইরাছে। তদ্দলিন সে বিশাগপন হইল। ১/২।৩।৪।৫।৬।৭।৮।৯।

অনন্তর সুরপতি ইন্দ্র চতুরানন ব্রহ্মাকে পূজা করিয়া
মধ্যাক্ষ কালে সহরাভিমুথে গামন করিতে করিতে ঐ মনোরমা
রমণীকে দর্শন করণানন্তর কন্দর্পশ্রে একান্ত জর্জিরিত
কলেবর হইরা ভাহার সহিত মিলনের অভাব হইলেও বীর্য্য
পরিত্যাগা করিলেন, ঐ বীষ্য বালদেশে নিপভিত হইল, এবং
ভাহা। হইতে ইন্দ্রের ন্যার পরাক্রমশালী বালী সমুৎপর
হইল। সুরেশ্বর ভাহাকে একটা স্বর্ণমালা প্রদান করিলেন।
১০০১১১২। অনন্তর স্ব্যা সেই অনির্কাচনীর রপলাবণ্যবতী
ভামিনীকে নরন গোচর করিয়া মদন সায়কে নিভান্ত ব্যথিত
হইরা প্রিবাদেশে বহু পরিমাণে বীর্যা ঘটি করতঃ পরিভ্যাগ
করিলেন; ঐ বীর্যা ঘারা রপবতী কামিনীর একটা মহাকার
বানর সদ্য সমুত হইল; রবি বালীকে ভাহার সহার অরপ
ঐ সদ্য জাত হত্মানটী প্রদান করিয়া প্রশ্বা প্রশান করিলেন।
একদা ঐ কামিনী পুর্ব হর পইরা নিক্রা যাইতেছিল,

িক্ত দিতীয় বানরকে দেখিতে না পাইয়া ঐ মহাকপি পুনর্বার

ফলমূল দিভিঃ সংশ্বং পুল্লাভ্যাং সহিতঃ কপিঃ।
নতা চতুর্ম থস্যাথ্যে ঋক্ষরাজঃ ছিতঃ সুধীঃ ॥ ১৬ ।
ততাহত্তবীৎ সমাস্থান্য বহুশঃ কপিকুঞ্জরম্।
তত্তিকং দেবতানূত্যাহ্যামরসন্নিত্য ॥ ১৭ ॥
গচ্ছ দূত ! মরাদিফো গৃহীতা বানরোন্তমম্।
কিন্ধিলাং দিব্যনগরীং নির্মিতাং বিশ্বকর্মাণা ॥ ১
সরিসৌভাগবৈলিভাং দেবৈরপি ছুর্লান্য।
তস্যাং সিংহাসনে বীরং রাজান্যভিষেচ্য়। ১৯ ।
সপ্তত্তীপগভা যে যে বানরাঃ সন্তি দুর্জ্জাঃ।
সর্বে তে ঋক্ষরাজন্য ভবিষ্যন্তি বশেহনুগাঃ ॥ ২০
যদা নারায়ণঃ সাক্ষাজামো ভূতা সন্তেনঃ।
ভূতারামুরনাশায় সপ্তবিষ্যন্তি ভূতলে। ২১ ।

তদা দর্বে দহাব্যথি তদা গছন্ত বানরাঃ।

ইত্যুক্তো ব্রহ্মণা দূতো দেবানাং দ মহামতিং

যথাজ্ঞপ্তপ্রথা চক্তে ব্রহ্মণা তং ইরীশ্বম্।

দেবদূহস্ততো গহা ব্রহ্মণে তয়্যুবেদয়ৎ॥ ২০॥

তদাদি বানরাণাং দা কিছিস্ক্র্যাভূম্পাশ্রয়ঃ।

দর্বেশ্বরত্বানাগিং ব্রহ্মণাহিথিতঃ॥ ২৪
ভূমের্ভারে হৃতঃ রুৎস্কর্যা লীলান্দেহিনা

দর্বেভূহান্তরস্ক্র্যা নিতামুক্রন্দিদার্মঃ॥ ঃ ৫

অথশুনন্দ্রপ্রা ক্রিয়াক্রেমং॥ ঃ ৫

তথাপি বণ্যতে সন্তিনীলামানুষ্কপিণঃ॥ ঃ ৬

রজনী প্রভাত হইলে দেখিল বে, আংপনার সন্তান দ্বয় পূর্কের ন্যায় বানরাকার প্রাপ্ত হইয়াচে; অনন্তর ঋক্রোজ ফল মূণাদি আছ্য়ণ পূর্বেক প্রাদিনকে সমভিবাছারে করিয়া লোকপিডামছ চতুর্মৃথ ব্রন্ধার সন্নিধানে উপনীত হইরা ভাঁহাকে নমক্ষার পূর্বক অব্যক্তিতি করিল; পরে তিনি কপিকুত্তরকে বিবিধ প্রকারে সমাস্থাস প্রদান করিয়া অমর-গণু সরিধানে এক দেবতা গৃতকে আহ্বান কবিয়া কছিলেন— হে দৃত! তুমি আমাকৰ্ক আদিই হইর। বানব শেষ্ঠ নিগকে গ্ৰহণ করিয়া বিশ্বকর্ম। বিনিশ্মিত কিছিদ্ধা নামী দিবা নগরীতে গমন কর। ১৩। ১৪। ১৫। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। সেই নগরী দেবতা দিগের দারা পরম সেভাগ্য সংযুকা ১ইয়াচে, অতএব ভাহার সিংহাসনে মহাবীর বালীকে অধি-বেশন করাইয়া ভাহাকে রাজ্যাভিষিক্ত কর,আর সপ্তরীপ মধ্যে নে সমস্ত হুদ্ধর্ব বানর আতে, ভাহারা সকলেই ঐ ঋকরাকের ৰশবৰ্তী হইবে; যথন সাক্ষাৎ সমতিন নারায়ণ পৃথিবীর ভার অপনোদনের নিমিত্ত অর্থাৎ অন্তর্মদিগকে বিনাশ ক্রিবার জন্য রাম্রপে প্রিবীতে ভাবতীর্ণ ছইবেন, তথ্য

ঐ বানর সমস্ত তাঁহাকে গাহাত্য করিবার নিমিত গমন করিবে। অনস্তর দূত ব্রহ্মার নিদেশবর্তী হইতা হরীধাতক রাজ্যপদে অধিষ্ঠিত করিয়া পুনর্কার তৎসন্থিপনে গমন কর্ত্তঃ সমুদায় রক্তান্ত ভাছার নিকট নিবেদন করিল। ২০০২১

ছেল, অধুনা ব্রহ্মানার প্রের বানর দিরের আন্তর্ ছিল, অধুনা ব্রহ্মানার প্রার্থিত হট্যা তুমি সমস্ত বান্তরের রাজা হটলে। হে দেবেশ। আপনি হীর লীলা অবভার করিবার নান্সে মনুষ্যদেহ পরিপ্রাহ করিয়াছেন। আপনার দেহে এভদ্র পরাক্রম বে, আপনি ভূভার হরণ করিয়াছেন। যে লোক আপনাকে আক্রমমর্থণ করিয়া কেবল মাত্র আপনাকেই জ্ঞাত আছে তাহারই মুক্তিসাত হট্যা থাকে। আপনার রূপ অথও জানন্দ্রয় হইলেও সাধ্রেণের প্রাণ্থ বিনাশ ও স্বকীর যশ এবং পোক সমুদায়ের স্থান্থর জনন উদ্ধা পরাক্রম নিতান্ত আশ্রেমা থাকেন। বে, ব্যক্তি বালী ও স্থ্রীবের মহতী নীঠি ঘোষণা করে তাহার জন্ম ষশন্তে সর্বালোকানাং পাপহতৈর সুধার চ।

ব ইদং ক ব্রেক্মর্তো বালিস্থ গ্রীবরোর্মাহং। : १

জন্ম দ্বাল্লয়ত্বং স মুচ্যতে সর্বপাতকৈ।
অথান্যাং সম্প্রক্র্যানি কথাং রাম! দ্বাল্লয়াম্।২৮
সীতা ক্রতা যদর্বং সা রাবনেন ছ্রাল্লনা।
পুরা কৃত্যুগে রাম! প্রক্রাপতিস্কৃতং বিভূম্।২৯
সনংকুমারমেকাক্তে সমাসীনং দশাননঃ!
বিনয়বেনতো ভূতা হাতিরা দ্যেদমন্ত্রবীং॥ ৩০॥
কো স্বন্মিন্ প্রবরো লোকে দেবানাং বলবন্তরঃ?
দেবাশ্চ যং সমাল্লিত্য যুদ্ধে শক্রং জ্য়ান্ত হি?।
কং রজন্তি দ্বিজা নিত্যং কং ধ্যায়ন্তি চ যোগিনঃ?
এত্রেম্মংস ভগবন! প্রশ্বং প্রশ্বনিদামর!॥ ৩২
জ্যাতা তস্য ক্রান্তং য্রদশেষেণ যোগদ্কে।
দশাননমুবাচেদং শুণু বক্ষ্যামি পুজ্রক!॥ ৩৩॥

আপনারই আশ্রয়ভূত হয় ও সে সক্র পাপ হইতে বিনিম্ভি ইয়া যায়। ২৪ । ২৫ । ২৬ । ২৭ ।

চে শ্রীরাম! সম্প্রতি আত্ম বিষয়ক কথা অর্থাৎ ছুরাত্ম।
দশানন বে কারণে জনকাথজা সাঁতাকে হরণ করিয়াছিল, কহিছেছি, শ্রবণ করুন। হে রানচন্দ্র! . এক দিন
ক্রত্যুগে দশগ্রীব লোক পিডামছ ব্রহ্মার মানসপ্রত্য ননৎকুমারকে নির্জন প্রদেশে সমাদীন সন্দর্শন করিয়া বিনরাবনত হইয়া অভিবাদন পূর্কক কহিল—হে ভগবন্!
ইহ লোকে দেবতাদিগের মধ্যে কে অধিক বলবান্ আছে
যে, তাছার আশ্রয়ভূত ছইয়৷ দেবতারা সমগ্রসনে শক্র জ্বরে ? ব্রাহ্মণেরা কাছাকে নিজ্য ভজনা করে এবং কাহাকেই
বা যোগিরা ধানে করিয়া থাকে? ছে প্রেরিদাম্বর ভগবন্!
আপনি আমার এই সংশয় ভঞ্জন করিয়া দিন। রাবণের মনোমধ্যে ইচ্ছা মৃত্যু অবগত হইয়া যোগ বিশারদ সনৎকুমার
দশাননকে কছিলেন, ছে পুক্রক! আমার বাক্য শ্রবণ কর—

ভর্তা যো জগতাং নিতাং বাগ জন্মাদিকং নহি হারাইরের তো নিতাং হরিনারায়ণাহরায়ঃ ॥ ৩৪ । বাজিপকজাজ্জাতো ত্রহা বিশ্বস্কাশাভিঃ। তই যেনৈর সকলং জগৎ ছাররজঙ্কময়্॥ ৩৪ ॥ তং সমাপ্রিতা বিবুধা জয়ভি সমরে রিপুন। যোগিনো ব্যান্যোগেন ত্রেরাছজগড়ি তি । ৩৬ মহর্ষের্বচনং শ্রুড়া প্রভাবাচ দশাননং। দৈতাদানবরক্ষাংসি বিষ্ণুনা নিহিতানি চ॥ ৩৭ কাং বা গতিং প্রপদান্তে প্রেত্য তে মুনিপুসর। তম্বাচ মুনিপ্রেরা বাবনং রাক্ষ্যাধিপম্। ৩৮ ॥ দৈবতৈনিহিতা নিতাং গড়া সর্গমনুত্রময়্। ভোগক্ষয়ে পুনস্তশ্মাদ্রী ভূমো ভবস্তি তে॥ ৩৯

যিনি এই জগৎ প্রতিপালন করিতেছেন, যাঁহার জন্ম বা মৃত্যু কিছুই নাই, দেব, যক্ষ, রক্ষপ্রসূতি যাঁহাকে অচ্যুত নারায়ণ বলিধা সকলা নমজার করে, যাঁহার নালি কমল ছইতে বিশ্বস্থ কর্তা ব্রহ্মা উৎপন্ন হুইনিছেল, স্থানর জন্ম সমুদায় জগৎ স্টে হুইয়াছে, প্রিডেরণ ভাঁচাকে আগ্রহা করিয়া নমরে শক্র জন্ম করিয়া থাকেন. শেলিরা যোগাসনে উপ্রেশন করিয়া নিরন্তর ধানন করিয়া থাকেন। ১৮।২৯।৩০।৩১।৩০।৩৪।৩৫।৩৬।

দশানন মহর্বির বাক্য শ্রবণ করিয়া তাঁহাকে বনিলেন বিষ্ণুক্ত্রক দৈতা দানব ও রাক্ষণ সমন্ত নিহত ছাইলাছে কিন্তু হে মুনি পুরব! ভাছাদিগের কি গতি হাইবে, অন্তর্গত করিয়া প্রকাশ কঞ্চন; মছর্বি রক্ষাধিপতিব বাক্যাকণন করিয়া কহিলেন, তাছারা দেবতাগণ কর্তুক নিহত ছাইয়া নিতা প্রমপবিত্র অর্থবামে গ্রমন করিয়া থাকে, কিন্তু ভাছাদিগোর ভোগক্ষয় হাইলে অর্গচ্যুত হাইয়া পুন্রার পৃথিবীতে নিগতিত ছায়। হে রক্ষপতি ৷ পুর্বেজ্যাক্ষিত পুণা ও পাণ হেতু ভাছারা অ্র্নিলোকে ও ভুলোকে অব্তিনি श्रृक्तार्किरेजः भूगाभारेमखित्रस्य कास्वरिस्त ह । বিষ্ণুণা যে হতান্তে তু প্রাপ্লুবন্তি হরেগতিম। ৪০ শ্রুত্বা মুনিমুধাৎ সর্ব্বং রাবলো হৃষ্টমানসঃ। যোৎস্যেহং হরিণা দান্ধিমিতিচিন্তাপরোহভবৎ। ৪১ মনঃ স্থিতং পরিজ্ঞাত্বা রাবর্ণস্য মহামুনিঃ। উবাচ বৎস! তেইভীষ্টং ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥ ৪২ কঞ্চিৎকালং প্রতীক্ষম মুখী ভব দশানন!। এবমুক্তনা মহাবাহো। মুনিঃ পুনরুবাচ তম্। ৪৩। তদ্য স্বৰূপং বক্ষ্যামি হ্যৰূপদ্যাপি মায়িনঃ। च्हां व दत्र यू ह मदर्कियू न दिन्यू ह न की यु ह । ८८। ওঁ কারলৈচব সভ্যং চ সাবিত্তী পৃথিবী চ সঃ। সমস্ত জগদারঃ শেষৰাপধরো হি সং। ৪৫। मर्द्य (प्रवाः मसूखाम्ह कालः सूर्याम्ह हम्प्रसाः। स्ट्रर्य राम्ट्या मिरावाकी यमटेक्टव छथानिलः । १७। করিয়া থাকে, আর বিফ্রু যাঁছাকে বিনাশ করেন তিনি মৃক্তি পদ লাভ করিয়া :গোলোক ধামে থাকেন। ৩৭। ৩৮। 1081601

ক্টমানস রাবণ মুনিমুপ হইতে সমুদার অবণ করিয়া ভগবন্ধারাবল ও তমোগুণ প্রধানত্ব হেতু বিষ্ণুদ্ধেরী হইয়া আমিও তাহার সহিত যুদ্ধ করিব বলিয়া চিন্তা পরতন্ত্র হইল। মহামুনি দশগ্রীবের মনের বাসনা অবগত হইমা কহিলেন—বৎস! গোমার মনাভিলাধ পূর্ণ হইবে, ইহাতে ভিলার্দ্ধনাত্রও সংশর নাই, অভএব হে দশানন! কিঞ্ছিৎকাল অপেকা কর, স্থাই হইবে। ৪১। ৪২। এই বলিয়া মহামুনি সন্থ কুমার রাবণকে পুনর্বার বিশ্লেন, হে মহাবাহা! আমি সেই মহামারী নিরাকার স্নাতন বিষ্ণুর অরপ্রপ্র কহিতেছি—তিনি রক্ষ ওপর্বতাভ্যন্তরে, নদ ও নদী মধ্যে বাপ্ত হইয়া আছেন। তিনি সর্বার্গ্রহেল পরিব্যাপ্ত, তিনি সমুদার জগতের আধার ও অনন্তদেব। সমন্ত দেবতা, সমুদ্র,

অয়িরিক্রতথা মৃত্যুঃ পর্জনাে বসবস্তথা।
বিদ্যাতিতি অলত্যেষ পাতি চান্ডীতি বিশক্ত।
বিদ্যাতিতি অলত্যেষ পাতি চান্ডীতি বিশক্ত।
ক্রীড়াং করােত্যবাযালা সােহরং বিষ্ণুঃ সনাতনঃ।
তেন সর্বিমিদং ব্যাপ্তং ত্রৈলােক্যং সচরাচরম্।
নীলােৎপলদলশ্যামাে বিদ্যুদ্ধান্তরাক্তঃ। ৪৯।
শুদ্ধজাস্থানদপ্রখ্যাং শ্রিয়ং বামাক্ষসংস্থিতাম্।
সদানপারিনীং দেবীং পশ্যায়ালিক্য তির্কৃতি। ৫০
দেউুং ন শক্যতে কৈশ্চিদেবদানবপ্রানাঃ।
বস্য প্রসাদং কুরুতে স চিনং দ্রেই মহ্তি। ৫১।
ন চ যজ্জতপাভির্বা ন দানাবায়নাদিভিঃ।
শক্যতে ভগবান্দেই মুপারৈরিতরৈরপি। ৫২।

কাল, দিবাধর, নিশাকর, দিবস, রজনী, ধর্মরণজ ঘম, অনিল, অনল, ইন্দ্র, মৃত্যু, পজ্জন্য, বস্তুগণ, প্রজ্ঞাপতি ব্রহ্মা রক্তে, এবং অপরাপর দেব দানব সমূহের বহিত সেই মহাবিষ্ক সনাতন ক্রীড়া করিয়া পাকেন অর্থাৎ উপরোক্ত সমুদারই তাঁহার জীড়ার বস্তু সদৃশ; ভিনি স্বর্গ, মর্ত্ত, পাতাল ও हत्राहत विश्व मःमादत পরিব্যাপ্ত, নীলকমলের न्याञ्च मार्थमः, বিছাৰণ সৃদৃশ পীতবসনে আর্ত। নিমাল সুবৰ্ণ সন্ধিভঞী তাঁহার বামকোড়ে সংশ্বিতা আছেন, তিনি সেই অপার বিহীনা (पवीष्क ममाबरणाकन कतिया (व्यर्था९ श्रीय पर्गान স্ফিব্যাপারাদিতে প্রব্রুত ছইরা) তাঁহাকে সমালিদ্বন পূর্ব্রক অবস্থান করিতেছেন। ৪৩।৪৪।৪৫।৪৬।৪৭।৪৮।৪৯।৫০। IC> I (नवडा इडेक, शानव रुडेक श्वांत शत्रत इडेक, डाँहारक मर्मन कतिराख (करहे ममर्थ इत ना ।. खटन खिनि यातात खेलत অনুগ্ৰহ করিয়া পাকেন সেই ব্যক্তিই তাঁহাকে দেখিতে সক্ষম इत, नाइर बंख कंद्र, उन्ना कंद्र, मान कंद्र, अधावन कंद्र, अधावन অপরাপার ইতর উপার অবলয়ন কর, কিছুতেই ভগবানকে দর্শন করিতে দক্ষম ছইবে না; কিন্তু তাঁছার প্রতি ভক্তিপ্রদর্শন ত ভ কৈ জন্দ কথা নৈত কি হৈছে ধুঁত কলা বৈঃ।

শক্ত তে ত গুৱা স্থিত কৈ বাহা নাল কি কি কে কে ।

তথ বা জন্দ কি কি তে পুণ কং প্রনেশরন্।

ক্রেতাযুগে স দেবেশো ভবিতা নৃপ্রিগ্রহঃ। ৫৪।

হিতার্থং দেবমর্জ্যানামিক্ষাকুরাং কুলে হরিঃ।

রামো দাশর্থি ভূজা মহাসত্ত্বপরাক্রমঃ। ৫৫।

পিতৃর্নিরোগাৎস জাজা ভার্মায়া দওকে বনে!

বিচরিষ্যতি ধর্মাত্মা জগল্মাজা স্বনান্নয়া। ৫৬।

এবং তে সর্ব্বমাখ্যাতং মন্ত্রা রাবণ! বিভরাৎ।
ভক্ত ভক্তিভাবেন হুদা রামং শ্রিষ্যা যুত্ম। ৫৭।

কর,তাঁহার প্রিয়কার্যো প্রাণ উৎসর্গ কর, তাঁহার চিত্তের সহিত ভোমার চিত্ত নাস্ত কর, বিগত পাপ হও, তবে বেদান্তের বিমল দৃষ্টি দ্বারা ভগবান নারায়ণের দর্শন পাইবে। ৫১। ৫২। ৫৩।

হে লহাধিপতি দখানন! তোমার ভগবান দর্শনের
বিষয় আরও কহিতেছি, অবণ কর। সেই ভগবান নারারণ
দেব ও মর্ত্যা লোকের মদল জন্য ত্রেভাযুগে ইক্ষাকু বংখাবতংশ রাজ্যা দশরণের ঐরসে মহাবলপরাক্রান্ত রামচন্ত্র জন্ম
আহণ করিয়া রাজকলেবর ধারণ করিবেন। তিনি পিভার
নিদেশাক্রতী হইয়া অনুক লক্ষ্মণ ও ভার্যা জানকীর সহিত
দওকারণ্যে গামন করি বেন, এবং স্বকীয় মারা বিভার
করিয়া জগজ্ঞননী জানকীর সহিত বনম্বারে পরিশ্রমণ করিয়া
বেড়াইবেন। তে রাবণ। আমি ভোরার নিক্ট পরিভার
সম্পার কহিলাম, এক্ষণে অটপ ভক্তির সহিত শীমান্রামচল্রকে ভক্তনাক্রীয়াই লাক্ষ্য ভক্তির সহিত শীমান্রাম-

এবং শ্রুত্বা মুরায়্র ক্ষেত্র ক্ষেত্র হার বিরোধেপুত্র ক্ষেত্র রাজনো ক্ষান্ত । ৫৮
বৃদ্ধার্থী সর্বত্যে লোকান্ পর্যাইন সমবিশ্রিতঃ।
এতদর্থং মহারাজ! রাবণোহতীর বৃদ্ধিমান্।
হাতবান সানকীং দেবীং ভয়াত্মবধকাককয়া॥ ৫৯॥
ইমাং কথাং যং গুণুয়াৎপঠেতা
সংশ্রাব্যেলা শ্রুব্যাধিকাং সদা।
আল্বামারোগ্যমনস্ত্রোধ্যং
প্রাপ্রোতি লাভং ধনমক্ষরং চ।৬০।
ইতি শ্রীমদধ্যাতাব্যামারণে উমামহেশ্রসম্বাদে
উত্তরকাণ্ডে কৃতীরোহ্ধবারঃ।

সুরাধ্যক্ষ এবস্থিধ জ্ঞাবণ করিয়া কিঞ্চিৎ কাল মনে মনে
চিন্তা করিয়া ছির করিলেন রাবণ ভ্যোগ্ডণ প্রধানত্ব প্রযুক্ত
আপনার সহিত বিরোধ করিবার ভন্য যুদার্থী হইয়া সমস্ত
লোক পর্যাটন করিয়াছিল—হে মহারাক্ষ! স্বুদ্ধি রাবণ আপনার হল্তে প্রাণ বিসক্ষন দিবে বলিয়াই জনকতনয়া, সীভা
দেবীকে হয়ণ করিয়াছিল। যে ব্যক্তি রামচন্দ্রের এই সমস্ত
কথা প্রবণ করে, পাঠ করে, প্রবণচ্ছুক দিগকে সর্ব্বদাই জ্ঞাবণ
করায়, সে বাক্তি দীর্ঘ জীবন প্রাপ্ত ছয়, অনন্ত মিত্রভা এবং
জক্ষর ধন লাভ্ড করে । ৫৮। ৫৯। ৬০।

ইতি **এ**মদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্রনসভাদে উত্তরকাথে তৃতীয়োহধ্যায়ঃ।

চতুর্থো২ধ্যায়

একদা ব্রহ্মণো লোকাদায়ান্তং নারদং মুনিম।
পর্যাটন্ রাবণো লোকান্ দৃষ্ট্য নতাইব্রবীঘটঃ। ১
ভগবন্! ক্রহি মে যোদ্ধং কুল্প দন্তি মহাবলাঃ।
যোদ্ধমিচ্ছামি বলিভিন্তং জ্ঞাতাসি জগভারম্॥ ২
মুনিধ্যাতাই সুটিরং শেতদ্বীপনিবাসিনঃ।
মহাবলা মহাকায়ান্ত যাহি মহামতে!॥ ৩
বিষ্ণুপুজারতা যে বৈ বিষ্ণুনা নিহতাক যে।
ত এব তত্ত্ব সঞ্জাতা অজ্যোক্ত সুরাস্থুরৈঃ॥ ৪।

কোন সময়ে দশানন ত্রিভ্রম পরিভ্রমণ করিতে করিতে বিথি-মধ্যে দেবর্ষি নারদক্ষে ব্রহ্মলোক হইতে আগমন করিতে অবলাকন করিরা তাঁহাকে প্রণিপাত পূর্বক কহিল—ভগবল্! আপমি স্থান, মন্তা ও পাতালের সমস্তই অবগত আছেন। একংগ বললালা দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে ইচ্ছা করিতেছি। অভএব কোন্ প্রদেশে মহাবল পরাক্রমী বাস করে, আমাকে অনুপ্রাহ করিয়া বল্ন; দেবর্ষি রাবণের বাক্য প্রবণ করিবামাত্র ধানন করিয়া বলিলেন, হে মহামতে! খেত্রীপ নিবাদীরা মহাবলগালা ও মহাকার বিশিষ্ট। তাহারা বিষ্ণু পূজার অহুক্ষণ নিরত, বিষ্ণুও তাহাদিগকে করি করিতে সমর্থ হন নাই, অভএব তুমি সেই ছানে গ্রম্বকর; তচ্ছাবণে সমরাভিলারী রাবণ সচিবল্যণ পরিক্রভ হইয়া পূজাক রথে আরোহণ পূর্বক অভি সম্বর বেড দ্বীপ সমীপে আসিয়া উপনীত ছইল। সেই দ্বীপ প্রভা

শ্রুতা তভাবলে। বেগামান্তিভিঃ পুষ্পাকের তান্। যোজকাম: সমাগত্য শেত্ৰীপসমীপতঃ 🛭 ৫ ॥ তৎপ্রভাহততেজকং পুস্পকং নাচনত্ত।। ত্যক্ত। वियानः व्यवस्यो मिक्किन्क ननाननः ॥ ७। প্রবিশন্নের ভদ্দীপং ধৃতো হল্তেন যোষিতা। পৃষ্টশ্চ জুং কুতঃ কোহসি প্রেষিতঃ কেন বাবদ ॥ ৭ ইত্যুক্তো লীলয়া স্ত্রীভিহ সন্তীভিং পুনংপুনং। कृष्ट्राक्षञ्चाविनिम् उल्लामार खीनार ममाननः। ৮ व्याक्तर्राप्रजूतः नव्या विख्यामात्र पूर्वाजिः। বিষ্ণুনা নিহতো যামি বৈকুণ্ঠমিতি নিশ্চিতঃ ॥ ১ মরি বিষ্ণুর্যাধা কুপোত্তথা কার্য্যং করোম্যহ্ম্া ইতি নিশ্চিত্য বৈদেহীৎ জহার বিপিনেহসুরঃ ॥ ১০ দারা পুষ্পাক রণ প্রতিক্ষাগতি হইল স্মতরীং রাবণ ও সচিব বর্গ বিমান পরিভাগে পূর্বক পদত্রকে গমন করিতে লাগিল। ভाषां बील मृद्धां व्यदिण कतिया मौत यां विम्मन मना-ননকে হস্ত বারা ধারণ করিয়া কহিল, তুমি কোথা হইতে আসিরাচ । কোন ব্যক্তিই বা ভোমাকে প্রেরণ করিলাছে। আর কেন্ট বা এখানে আসিয়াছ? শীক্ষ বল। ১। ২ ৩। 81019191

সেই জীগণ ছাস্য করিতে করিতে পুন: পুনঃ এইরপ কহিলে দৈছিক ক্লেণ হেডু সেই কামিনীদিগের হত হইতে বিমুক্ত হইরা দশানম আচ্চর্যাছিত ছুইরা চিন্তা করিতে লাগিল আমি বিফ্ কর্ত নিছত ছইরা বৈকুঠগামে গমন করিব। বিফু বেমন আমার প্রতিকুপিত, আমিও সেইরপ জানারের পরাত্মান দ জহারাবনী মৃত্যাম্।

সাত্রৎপালয়ায়াদ ত্তঃ কাজ্জার্থং স্বর্কম্। ১

রামন্ত্বং পরমেশরে হিল দকলং জানাদি বিজ্ঞানদৃক
ভূতং ভব্যমিদং জিকালকলনা দাকী বিকপ্পোঞ্জিতঃ
ভক্তানামনুবর্ত্তনায় দকলাং কুর্বন জিয়াদং হতিং
রাগ্রমান কলাং কুর্বন জিয়াদং হতিং
রাগ্রমান কলাহ তা দালীশ লোকাচিতঃ ॥১২
স্তবৈধং রাঘরং তেন পুজিতঃ কুন্তদন্তবং।
স্থানার মানিভিঃ দার্জং প্রয়ে হাইমানদঃ ॥ ১৩
রামন্ত দাত্রা দার্জং জাতৃভিঃ দহ মন্তিভিঃ।
সংসারীব রমানাথো রম্মাণোহবদদ্গৃহে। ১৪।
অনাসক্তোহপি বিষয়ান বুভুক্তে প্রিবেষ্টিতঃ। ১৫।
হনুমৎপ্রমুব্যঃ দন্তির্বানরৈঃ প্রিবেষ্টিতঃ। ১৫।

কার্যাকরিব। হৈ রঘুনাথ ! এইরপ রত নিশ্চয় ছইয়া দশানন
অরণ্য মধ্যে বিদেহ রাজ চনয়াকে হরণ ক্রিয়াছিল এবং
আননাকে পরমাজা অবগত হইয়া ও আপানার দারাই
অকীয় বিনাশ ছিরসিদ্ধান্ত জানিয়া অবনী স্থভাকে হরণ করিয়া
জননীর নাায় প্রতিপালন করিয়াছিল 1৮ ৷ ৯ ৷ ১০ ৷ ১১ ৷

হে রামচন্দ্র ! আপনি পর্মেশ্বর, আপনি সমুদারের প্রতি আত্তুলা জ্ঞান করিয়া খাকেন। আপনি ভূক, ভবিষং ও বর্তমান এই ক্রিকালের সমস্তই অবগত আছেন, সেই জন্য আপনি এই ক্রিকালের সামনী, ভক্তদিনের কর্মক্রেক্তে প্রবৃত্তি নিবার নিমিত মমুবাই কি পরিস্তাই করিয়া মমুবাই ক্রিয়ার করিয়ারেন এবং ইন্দ্রাদি দেবভাদিশের সামা আর্চিত মইয়াও মংসদৃশ মুনিদিশের বাক্য আর্টিভেগাচর করিয়া পরিশোভিত হইয়াও মংসদৃশ মুনিদিশের বাক্য আর্টিভেগাচর করিয়া পরিশোভিত হইয়াও করিয়া আর্টিভ ইয়াও করিয়া পরিশোভিত করিয়া আর্টিভিত মুনিদিশের বাক্য আর্টিভিত করিয়া ও অয়া ওংক্তি প্রতিভ হইয়া মুনিগণ সালে আর্ট্রাভাইকরণে আর্ট্রের প্রত্তির করিলেন। ১১ । ১২ । ১৩ । ১৪ । ১৫ ।

পুলাকং চাগমদ্রামনেকদা পুর্ববংগ্রন্থ।
প্রাহ দেব! কুবেরেণ প্রেবিতং স্থামহং ততঃ ॥১৬
কিতং স্থ রাবনেনাদে পশ্চাদ্রামেণ নির্ক্তিম।
অহন্তং রাঘনং নিজাং বহু যাবদ্ধনন্ত্রি ॥ ১৭ ॥
নদা গল্ছেক্রপুল্রেন্ডো বৈকুঠং যাহি মাং তদা।
তচ্চারা রাঘনঃ প্রাহ পুশ্সকং সূর্যানান্তম ॥ ১৮
নদা স্মরানি ভদ্রং তে তদাগচ্ছ মমান্তিকম্।
তিষ্ঠান্থরার সর্বত্ত গল্জেদানং মমান্তিকম্।
ইত্যুক্ত্বা রামচন্দ্রেছিপি পৌরকার্যাণি সর্ব্বশঃ।
আতৃতির্মান্তিভিঃ সার্বাং যথান্যায়ং চকার সঃ। ২০
রাঘনে শাস্তি ভূবং লোকানাথে রমাপতে
বসুধা শ্রাসম্পন্না ফলবস্তান্চ ভূক্তবাঃ ॥ ২১ ॥

জীরামচন্দ্রও আর লক্ষ্মী সীভা, আর্জ্জাত্রর ও মন্ত্রিশবের সহিত मः मात्रीत नागत की जा कवि छ ना शिरंगने । विश्वत छेश-टिंग म्लुंग होन रहेबां का नटकत नाव थी। थिया कानकी ও সাধুগণের সন্ধিত সংসার উপভোগ করিতেছেন ইন্যাব-मद्र श्रूष्ट्रक अक्तिन क्रियाम मगीर्श छेननी इहेरा करन्त्र हैं-कहिन, (रु एमर्व ! जामि कार्शनात कार्यमर्गवर्डी ब्हेग्र! क्रवंद-সমীপে গমন করিয়াছিলাম। তিনি ভাষাকৈ পুনরায় ভাপনাব নিকট পোরণ করিশ্লাছেন এবং জালাকে বলিয়াছেন যে, তুমি অত্রে বাবন কর্ত্তক বিজ্ঞিত ছইয়া পরে প্রীরামহারা জিত চইরাছ অধুনা তুমি মহামুনি আগত কে এবং ব্যুকুলভিলক রামচন্ত্রকে বহন কর। বধন রয়ুনাথ বৈকুঠে গমন করিবেন তথন তুমি আমার স্মীপে পুনর:গ্যন করিবে। রাঘণ করি-প্রভাসন্থিত পুশাকের বাকা কর্ণোচর করিরা কহিলেন, যথন আমি ভোমাতে সহণ কৰিব তথন তুমি আমর্থি সমীলে व्याशमम कति । अक्तर्भ व्यामात मिर मनाकूत्रेश्वर के खर्थान हरेशा प्रकृत स्थान व्यवस्थान करा। अनस्य द्वाराध्य जाना अ

জনা ধর্মপরাঃ দর্বে পতিভক্তিপরাঃ জ্রিয়ঃ।
নাপশ্যৎপুত্রমরণং ক শিচ্চাজনি রাঘ্রে॥ ২২॥
সমাক্র বিমানাগ্র্যং রাঘ্রঃ দীভ্রা দহ।
বানরৈত্রভিঃ দার্ছং দঞ্চারাবনিং প্রভুঃ । ২
আমানুষাণি কার্যাণি চকার বহুশো ভুরি।
ত্র'ক্ষাণ্য স্তং দৃষ্ট্রা বালং মৃহমকালতঃ ॥ ২৪॥
শোচন্তং ত্রাহ্মণং চাপি জ্ঞাত্রা রামো মহামতিঃ।
তপক্তবং বনে শ্রুং হলা ত্রাহ্মণবালকম্।
জীবয়ামাদ শ্রুদ্রা দলে স্বর্গমনুত্তমম্। ২৫।
কোটিশঃ ভাপরামাদ শিবলিক্রানি দর্বশঃ।
মীতাং চ রময়ামাদ সর্বভোগেরমানুবিঃ॥ ২৭॥

মন্ত্রিগণের সহিত অপত্য নির্বিশেষে প্রজ্ঞাপালন করিতে লাগিলেন; লোকনাথ রমাপতি রাঘ্বের স্থাসনে বস্মতি প্রচ্ব শাস্থালিনী হইল এবং মহীকহ সকল অপ্রাথি ফলদান করিতে লাগিল। প্রজ্ঞাপুঞ্জ ধর্মপরারণ, সমন্তিনীগণ পতিসেবার অম্বত এবং অকাল মৃত্যু এককালে তিরোহিত হইল। ১৬। ১৭। ১৮। ১৯। ২০। ২১। ২২।

একদা ,রামচন্দ্র পূল্পককে সারণ করিবামাত্র পূল্পক তাঁচার সন্মুখে আদিয়া উপনীত হইল এবং তিনি সীতা সম্-ভিব্যাহারে ভাষতে আরোহণ পূর্মক বানর ও প্রাভূ সহ বিমান মার্গে প্র্যাটন করিতেছেন, ইত্যবস্ত্রে কোন ব্রাহ্মণের একটা সন্তান অকালে কালের করাল কবলে পতিত হইয়াছে অবলো-কন করিয়া নানাবিধ জলে কিক কার্যা করিয়াছিলেন। ব্রাহ্মণ প্রে পোকে নিভান্ত বিহলে হইয়াছেন দেখিয়া মহামতি রাম্বচন্দ্র বোর অরণ্যমধ্যে এক শ্রু ভলসায় করিভেছিল সন্দর্শন করিয়া ভাষার মন্তক ছেলন করতঃ ভাষাকে অভ্যুত্তম স্বর্গ থালে প্রেরণ করিলেন, এবং ও মৃত ব্রাহ্মণ বালককে প্রাহ্মীরিজ করিলেন। ২৩। ২৪। ২৫। ২৬।

অনন্তর পরমান্তা রামচন্ত্র মহুবাদিগকে উপদেশ দিবার

উদ্দেশে কোটি কোটি শিবলিল সর্কত্র সংস্থাপন করিলেন
ও অলেপিকভাবে সর্ক্র ভোগা উপভোগা করিয়া জনকনিদিনী
সীতার সহিত বিহার করিতেল গিলেন। পরম ধার্মিক রামচন্দ্র
ধর্মের সহিত রাজ্য শাসন করিয়াছিলেন এবং সর্ক্র লোক
পাপনালিনী স্ফারিত্র বিষয়ী কথা সংস্থাপন করিয়া সর্ক্রলোক কর্জ্ক বিধিবং পরিপুজিত হইয়া দশ সহস্র বংসর
রাজ্যশাসন করিয়াছিলেন। রাজর্বি রামচন্দ্র সর্ক্রদা এক
পত্নীর প্রতি অনুমক্ত থাকিরা বিশ্রমভাবে মহ্বাদিগকে ভগবর্দ্ধাচরণ শিক্ষা দিবার নিমিত্ত গৃহ মধ্যে অবন্থিতি করিতে
লাগিলেন; জনকত্বহিতা সাধী সীতা রামচন্দ্রের উপর প্রগাঢ়
প্রেম প্রদর্শন করিয়া নিয়ন্তর অবিজ্ঞেনভাবে থাকিতেন
এবং তাঁহার জানুটিক ইন্সির নিগ্রহাদি হারা ভর্তার মনমোহিনী ছইয়া তাঁহার ভারগ্রাহিনী হইয়াছিলেন। ২৭

এক দ্বি ক্রড়িছোগুসরাযুক্ত আঘোদকান্দক্ষ দিবা হথ্যমধ্যে নীশমানিকা ভেজোরাশি দিখ্যাত্তরণ বিজুবিত প্রসন্ত বদন শান্তপ্রকৃতি ভড়িদ্বতা নিভাগর রাষ্চ্যা একাকী নির্জনে দীতা কমলপত্তাকী দৰ্বন্তরণ ভূষিতা।

রামমাহ করভাগে দা লালয়ন্তী পদামুদ্রে। ৩৪

দেবদেব। জালাথ! পরমান্মন্। দনাতন।।

চিদানন্দাদিমধ্যান্তরহিতাশেষকারণ!। ৩৫।

দেব! দেবা: দমাদাদ্য মানেকান্তেইক্রবস্থাতা।

বহুশোহর্ষমানান্তে বৈকুপ্তগমনং প্রতি। ৩৬।

ত্রা সমেতন্তিভ্তা রামন্তির্গতি ভূতলে।

বিস্ক্র্যান্মান্ স্বকং ধাম্ বৈকুপ্তং চ সনাতনম্। ৩৭

আন্তে ত্রা জগদ্ধাত্তি। রামঃ কমললোচনঃ।

অগ্রতো যাহি বৈকুপ্তং তথা চেন্দ্রভ্তাং। ৩৮

আগ্রতা যাহি বৈকুপ্তং সনাথান্ন: করিষ্যতি।

ইতি বিজ্ঞাপিতাহতৈম্মা বিজ্ঞাপিতে। তবান্।

যদ্যুক্তং তৎ কুরুষ্ণা নাইমাজ্ঞাপরে প্রভো!।

সী হারাভদ্ধঃ প্রজারামো ধ্যাত্বাইত্রনীৎ ক্ষণমা ৪০
দেবি! জানামি সকলং তত্ত্রোপায়ং বদামিতে।
কণ্ণারিত্বা মিষং দেবি! লোকবাদা হাত ইবাপর:।
ভবিষ্যত: কুমারো দ্বো বাল্মীকেরাশ্রমান্তিকে।৪২
ইদানীং দৃশ্যতে গর্ভঃ পুনরাগত্য মেহন্তিকম।
লোকানাং প্রভারার্থং তং কুত্রা শপ্থমাদর:২।৪৩
ভূমেবিবরমাত্রেণ বৈকুপ্তং যাদ্যানি জ্বত্তম্।
পশ্চাদহং গ্যিষ্যামি এষ এব সুনিশ্চয়ঃ। ৪৪।
ইত্যক্ত্রা তাং বিস্ক্যাথ রামো জ্ঞানৈকলক্ষণঃ।
মিজিভির্মান্তভ্তুক্তিক্রিলমুখ্যান্দ্র সংক্রতঃ। ৪৫।

উপবিষ্ট আছেন অবলোকন করিয়া ক্মণলোচনা সর্বাশক্ষার ভূষিতাজনক তুহিতা সীতা শ্রীরামের পাদপদা হত্তেধারণ করিরা কহিলেন, হে দেব ! হে জগলাখ, হে প্রমাত্মন্, হে সনাতন! जार्यान मिकिमानम, जार्यनात जाति नारे, मधा मारे ७ जाउ নাই। আপান অশেষ জগতের কারণ; ছে দেব! 🗮 দি দেবতাগণ আশাকে বিগনে প্রাপ্ত হইর। আসনার বৈকুঠ গমন मश्रक्क व्यामांत्र निक्र विविध श्रार्थन। किन्त्र। विवेशिक्षिन,-"द्रामहत्त्व व्यामानिगरक अ मनाच्य शास्त्राक क्षाम श्रद्धिग्राग পূर्वक माधाक्री हिस्सा जानमात महिल बदामश्रात जिल्लि করিতেছেন। ছে জগদাত্তি ! অত্যে আপনি বৈকুঠে গমন ককন, তাহ। इरेटन शक्कारनज बधुनाथ ७ वर्ग श्रारम व्यागमन कर्वेड व्यामानिगटक मनाथ क्रियान ।" डाइन्त्रा व्यामादक अरेक्स विनित्रा ছিলেন এবং আমিও একণে আপনাকে কহিছেছি। অভএব टर नाथ ! याका युक्ति युक्त क्य, जाना काशह ककन । कि**क र**व প্রভো! আদিআপনাকে বোন রপ আজা করিডছি না, জানি (दमा ७२ | ७०। ७४। ७৫। ७७। ७१। ७৮। ७२। मामहिष

বৈদেহীর এবন্ত বাকা আ কর্ণন করিয়া কিরৎকাল তিন্তার পর কছিলেন, হে দেবি! আমি সমস্তই অবগত আছি, কির ওবিষয়ের উপার আছে, বলিডেছি, প্রারণ কব। আমি ভোমাকে রাবণালর হুইতে পুণ্র্যাহণ করিয়াছি বলিয়া লোকে অপবাদ হোষণা করিতেছে। অধুনা লোকাপবাদ ভয়ে আমি ভোমাকে কানন মধ্যে পরিত্যাগ করিব, কিন্ত আপাততঃ ভোমার গর্ভ সন্তব বলিয়া অনুমিত হুইতেছে, অত্রব বিপিনস্থ বাল্মীকির আশ্রমে ভোমার গর্ডে হুইতী সন্তান উৎপন্ন হুইবে! ভাহার পর তুমি পুনর্বার আমার সমাপে আগামন করিলে আমি প্রক্রা পুঞ্জের বিশ্বাসোৎপাদনের জন্য ভোমাকে পুনর্বার পারীকা করিব, তখন তুমি পৃথিবীমধ্যে প্রবেশ পুর্কাক শীত্রই গমন করিবে এবং আমিও ভোমার প্রত্যা প্রক্রিক, এইটী নিশ্চর জানিবে। ৪০। ৪১। ৪২। ৪০। ৪৪। এই বলিয়া সর্বালক্ষণ সম্পান রামচন্দ্র সীত্রাসম্বিধান পরিত্যাগ করির। ভক্তম সচিব ও সেনাপতিদিব্যের হারা পরিব্রত হইর।

তত্ত্বেপেবিইং শ্রিরামং কুইনেং পর্পোনত।

হাস্প্রেড়ে কথা স্থান হাসরস্তঃ স্থিতা হরিম। ৪৯ ॥

কথা প্রসঙ্গাৎপ প্রচ্ছ রামো বিজয়নামকন্।

পৌরা জানপদা মে কিং বদন্তী হ শুভাশুভম্ ? ৪৭

দীতাং বা মাত গং বা মে জাতুষা কৈক গ্রীমথ।

ন ভেতবাং স্বয়া জাহি শাপিতোহিদ মমোপরি ।৪৮

ইত্যুক্তবং প্রার কিহে গাপেতোহিদ মমোপরি ।৪৮

ইত্যুক্তবং পরিং রামেণ বিদিতাম্বনা। ৪৯।

কিন্তু হল্বা দশগ্রীবং সীতামাহ্নত্য রাঘবঃ।

অমর্ষং পৃষ্ঠতঃ কুল্ব। স্ববেশ্ব প্রতাপাদয়ৎ॥ ৫০॥

বীদৃশং হৃদয়ের তদ্য দীতা সন্তোগজং কুশ্বম্।

যা হাতা বিজনেইরণ্যে রাবণেন দুরাল্বনা॥ ৫১॥

সিংছাসনে উপবেশন করিলেন এবং উপাসক স্কেছর্গ নানা-বিষয়িনী কথায় তাঁছার চিত্ত বিনোদন করিতে লাগিল; কথা প্রস্তান ও জানপদবাসীরা জামার গুডাশুভ বিবরে কে কি বলিতেছে? সীতারই হউক বা জামার কন্দীরই, হউক বা লাভাদিগেরই হউক অথবা কৈকেনীরই হউক, যাহারই হউক নির্ভিন্ন কোন ভার নাই। ৪৫। ৪৬। ৪৭।

রামচন্দ্র এইরপ কহিলে, বিশ্বর বলিল, হে দেব ! সকলেই আপনাকে বলিরা থাকে যে, বিশিভাতা রঘুনাথ হক্ষর কার্যা লকল করিরাছেন বটে, কিন্ত দশাননকে সমরে নিছত করিরা রাঘব ক্রোধ অপরিদর্শন পূর্বক লীতাকে প্নর্বার অভবনে জীনরাল করিয়াছেন। আর ছ্রান্থা রাবণ যে সীতাকে বিজন অরণ্য ছইতে বলপূর্বক হরণ করিয়াছিল, দেই সীভা তাঁহার ক্ষান্তে কিরপে অ্বদারিলী হইল ? অতএব আমান্দিণের জীরা যদি কোন ছক্ষ করে, তবে ভাছালিধেরও ক্ষমা

আন্দাকমপি তৃষ্ণ থে বিতাং মর্বাং ভবেছ।

বাদ্ক ভবতি বৈ রাজা তাদ্শ্যো নিয়তং প্রজাঃ।

ক্রুণা তছচনং রামঃ স্বজনান্ পর্যাপ্রস্কৃত।

তেইপি নত্বকের রামমেবনেতর সংশারঃর ৫৩।

ততো নিস্কা সচিবান্ বিজয়ং স্ক্রুনন্তথা।

আচ্য় লক্ষাণং রামো বচনং চেদমন্ত্রীছ ॥ ৫৪॥
লোকাপবাদস্ত মহান্ দীতামাপ্রিত্য মেহতবছ।

শীতাং প্রাতঃ সমানীয় বাল্মীকেরাশ্রমান্থিকে ॥৫৫॥

ত্যক্ত্বা শীত্রং রথেন তৃং পুনরায়াহি লক্ষাণ!।

বক্ষানে যুদি বা কিঞ্জিন্তদা মাং হতবানিসি॥ ৫৬

ইত্যুক্তো লক্ষাণো ভীতা৷ প্রাহরুপ্রাপ্য জানকীম্

স্মন্ত্রস্য রথে কৃত্রা জ্লাম সহসা বনস্॥ ৫৭॥

বাল্মীকেরাশ্রমন্যান্তে ত্যক্তা শীতামুবাচ সং।

লোকাপবাদভীত্যা ত্বাং তাক্তবান রাঘ্বো বনে॥

হইতে পারে। কারণ রাজা যেরপ আচরণ করিবেন প্রজান বাও সেইরপ করিবে। রামচন্দ্র তাছার কথা শুনিরা আত্মীর পরিজনকে ঐ বিষয় জিজাদা করিলেন—কিন্তু তাহারাও তাঁহাকে নমকার করিয়া কহিলেন,ইছাতে কোন সন্দেহ নাই। ৪৮।৪৯।৫০।৫১।৫২।৫৩।

অনম্বর প্রমুপতি সচিববর্গ, বিশার ও ক্ষেববর্গকে পরিত্যাগ পূর্বাক লক্ষাণকে আহ্বান করিয়া কহিলেন—হে লক্ষাণ! দীতাকে আশ্রম দেওয়ার ভয়ানক কলক উপস্থিত হইয়াছে, অতএব কল্য প্রাতে ভুমি সীতাকে অন্তঃপুর হইতে লইয়া বাল্মীকির আশ্রম প্রেদেশে পরিত্যাগা পূর্বাক পুনর্বার রখা-রোহণ করিয়া অতি শীজ প্রভাগবর্জন করিবে। যদি ভূমি ইহাভে কিছু বিকক্তি কর, তবে ভূমি আশ্রাকে হলন করিবে। রাখব এইরপ ক্ষিলে লক্ষ্মণ ভীতাতঃকরণে প্রান্ধীকে অতি প্রাতে গাজোশান করাইয়া স্থমন্তের রখে আব্রোহণ পূর্বাক সহসা বন্ধধ্যে প্রস্থান করিলেন। অনস্তর বাল্মীকির আশ্রমের

রাহ্বোহপি নীতারহিতঃ পরায়া বিজ্ঞানদৃক্ষেবল আদিদেবঃ। সন্তাজ্ঞা ভোগানখিলান্ বিরক্ষো মুনিত্রতোহভূন্মুনিদেবিতাও ্ঘ্রিঃ। ৬৪।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে উত্তরকাত্তে চতুর্থোহধ্যারঃ।

এক প্রান্ত ভাগে সীতাকে পরিছার করিয়া লক্ষণ তাঁছাকে কছিলেন—লোকাপবাদ ভয়ে শ্রীরাম আপনাকে ভারণ্য মধ্যে পরিভাগে করিলেন—ছে মাতঃ! আমার ইছাতে কিছু মাত্র দোষ নাই। এক্ষণে আপনি মুনির আশ্রম পাদে গমন ককন, এই বলিরা লক্ষণ রামসরিধানে শীল্প আসিয়া উপনীত হইলেন। ৫৪। ৫৫। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০।

এদিকে সীতা পতি বিরহানলে দহুমানা হইয়া মুক্তকণ্ঠে বাদন করিতে করিতে বছবিধ বিকাপ করিতে লাগিলেন, দিবাদৃক্ বাল্মীকি শিষ্যাণ প্রমুখাৎ ক্রন্দন বিষয় অবণপুর্বক সীতাকে অবগত হইয়া অহ্যাদিয়ারা পুজা করণানস্তর তাঁহাকে বিবিধ প্রকারে আখাস প্রদান করিলেন এবং ভাবি বিষয়

সমস্ত জানিতে পারিয়া যোষিয়র্গ নিযুক্ত করিয়া দিলেন তাহারা মুনিপ্রম্থাৎ সীতাকে পরমাআ। বিষ্ণুর লক্ষ্মী অবগত হইয়া প্রতিদিন পূজা এবং পরম আদেরের সহিত তাঁহাকে নিরস্তর পরিচর্যা করিয়াছিল। ওদিকে আদি দেব পরমাআ। রামচক্র বিজ্ঞান দৃক্ হইয়া সীতা শ্ন্য প্রযুক্ত একাকী অবস্থান করিয়াছিলেন এবং সমস্ত ভোগ বিষয়ে বিরক্ত ও অনাস্ত হইয়া মুনিবৎ কার্যা করিয়াছিলেন। ৬১। ৬২। ৬০। ৬৪।

ইতি শ্রীমদধ্যাস্থরাময়েণে উমামহেশব দখাদে । উত্তরকাণ্ডে চতুর্থেছিধ্যায়ঃ।

প কমোহধ্যায়ঃ।

রামগীতা।

শ্রীমহাদেব উবাচ।

ততো জগন্মকলমকলান্ধনা

বিধার রামারণকীর্তির্ত্তমাম্।

চচার পুর্বাচরিতং রঘুত্তমো

রাজর্ষিবর্টারেভিদেবিতং যথা। ১।

দৌমিত্রিণা পৃষ্ট উদারবৃদ্ধিনা

রামঃ কথাঃ প্রাছ পুরাতনীঃ শুভাঃ।

রাজ্ঞঃ প্রমন্তন্য নৃগদ্য লাপতো

ভিজদ্য তির্যাক্তমথাহ রাঘ্বঃ। ২।

কদাচিদেকান্ত উপন্থিতং প্রভুং

রামং রমালালিতপাদপক্ষম্।

দৌমিত্রিরালাদিত্র্মান্ধভাবনং
প্রণম্য ভক্ত্যা বিন্যান্ধিভোহত্রবীৎ। ৩॥

মহাদেব কহিলেন—বাঁহা ছইছে জগতের সমুদার মদল বিধান ছইতেছে এবং বিনি আনতি—ক্ষ্য—কর আমৃতারমান বামারণকাপ উত্তম কীর্ত্তি সংস্থাপন করিরাছেন, সেই রঘুপতি রামচক্র প্রেরআন সীতাকে পরিহার করিরা প্রজান পালন ও সংক্ষা প্রবাদি কার্য্যে কালাতিপাত করিছে লাগিলোন। অনন্তর ক্মিত্রা লক্ষ্য উদ্ধার কুছি লক্ষ্যণ প্রাচিন্দ রাজা দিগের ধর্মাধর্ম নির্গরার্থ জীরামকে জিজ্ঞানা করিলে, রঘুনাথ প্রমত তুপতি ব্রাহ্মণের ব্রহ্ম অপহরণ জন্য জিল্ক কর্তক অভিশপ্ত ছইরাছিলেন,তরিষ্য় আধান করিরাছিলেন।

पः खंदितारधारित हि नर्सामितान ।

गाजू। नाधीरनार्शी निताक्तिः ख्राम्।

खाजीवरन कानमृण्य महामर्खः।

शामाक्ष्म् विक्रम्मकिनाम्। १।

वारः खालदारिया लागम् कः खर्टः।

खालवर्गः उत रागिकाविकम्।

यथाक्षमाक्षानमलात्रवातिषिः

स्थः उतियामि उथान्यापि माम्। १॥

क्षाण्याथ रागिमिजिवरहारथितः उन।

खाह खालवार्ज्यः खानस्थेः।

ভগবহক সংকথা অবলে শুদ্ধান্তঃকরণ হর্মা স্থমিত্রানন্দন কোন সময় রামচন্দ্রকে বিজ্ঞানে প্রাপ্ত হর্মা,
ভাঁহাকে গুরু নির্দেশ করতঃ ভক্তি সহকারে তাঁহার চরণ
কমলে প্রণিপাত পূর্বক বিনীত ভাবে কহিলেন, হে মহামতে !
আপনি নিরবজিয় চৈতুন্যরূপী, সর্বান্তঃগামী, আপনি
আকার বিহীন অথচ আপনার পদায়ুক্ত সংলগ্নান্তঃকরণ ভক্তদিগের সন্মুখে ক্ষয়ং প্রভীয়মান হইভেছেন; হে প্রভা!
যোগিরা আপনার পাদপালে সংসারের অপবর্গ চিন্তা করেন।
এক্ষণে আমি আপানার সেই সর্ব্জনারাধ্য চন্তণে আধ্রয়
লইণাম। স্থানার জান সংসারের মুখ্য হারণ এবং বাহাতে
অনায়ানে পরিজ্ঞাণ পাই আমানে তাহাই শিক্ষা প্রদান
কক্ষন। ভক্তদিগের সংসার ভ্রুথপেহারী, রাজন্য দিগেব
ভ্রণ, ভক্তবৎসল রামচন্দ্র অন্ত্রের বাহ্য প্রবণ করিয়া

विकान नकान उद्या श्रास्त छ द्य क विकाल प्रश्निक कि श्री मा जुननः । ७ ।

भारमे वर्ता का वर्ता का वर्ता कि श्री स्त्र स् नाक्षावहानिर्व ह वाश्यक्करशः।
७८२७ छः कर्ष महम्बद्धद्वः।
७७ः श्रूनः मः श्राण्यत्रभावादिण।
७ स्थान्यूर्थ। क्षान्यविद्यान् ७८२९॥ ५०॥
नस् क्षिशार्यनम् स्थन क्षानिर्णः।
यदेशव विद्याश्रक्षयार्थनार्थनम्।
कर्त्यका व्याशक्ष्यः व्यारहानिष्ठाः।
विद्या नक्ष्यकृष्टेशकि का श्रूनः॥ ५५॥

নিত্য নৈনিভিক ক্রিক্সাক্ষণাপে বিরোধ না থাকিলেও
অজ্ঞানের অথবা ক্রোধের বিনাপ ছর না। গরত্ব কর্মারর্ভানে পুনর্কার দোব বিশিক্ষ হর, অপরক্ত সংগার হউতে মুক্তির
প্রত্যাপা থাকে না, ক্রেই ক্রালা বিশেকী ব্যক্তিরা জ্ঞান
বিচারে প্রব্রক হব; বেষম বিদ্যা, ক্রেন্ডি, প্ররাণ লক্ষণবার।
ব্রহ্মবিদ্ হবরা থাকে এবং ইর্লার ঘারাই পুরুষার্থ সাধন
উক্ত হবরাকে, নেইর্লা জ্ঞান ক্র্মবার। ব্রহ্মকে বে প্রাপ্ত
হণুরা বার, ও ইবা ছারাই প্রমেশ্বরকে সাধনা করা যাইতে
পারে, ক্রিছ ক্রিরা জ্ঞানাই প্রমেশ্বরকে সাধনা করা যাইতে
পারে, ক্রিছ ক্রিরা জ্ঞানাই প্রমেশ্বরকে সাধনা করা যাইতে
পারে, ক্রিছ ক্রিরা জ্ঞানাই প্রমেশ্বরক ক্রানেণ লওচকাদির
হারে এবং এই স্কল ক্রান্ত্য না ক্রিলে জ্ঞানোৎপাদন না
হইরা বংং পার্ণের উৎপত্তি হয়, নেই কারণে লওচকাদির
নাার উল্লিন্ডের উজ্লেরই প্রশার ক্রান্তা আছেছ। ক্রান্তি
ক্রিয়ার কার্যা অন্তর্জ হইলে দোরোৎপত্তি হইরা বাকে সেই
ক্রান্ত রুষ্কুক্রনের। সর্ক্রাই ক্রিয়া বের্মণ সহার গ্রহণ
ক্রিকর পুক্রার্থ ঘোক্তম্বিকা বির্মা বের্মণ সহার গ্রহণ

অজ্ঞান তিমির বিমাল করিবার নিমিক্ত ভাছাকে আছা-ভত্তজান প্রদান করিতে লাগিলেন। ৩।৪।৫। এ।

হে লক্ষণ! তত্ঞান লাভ করিতে ছইলে ক্রমণঃ বহিল ও অতবলের সাধন কার্যা অর্থাৎ অত্যে অবশীক্ষম বলিত নিজ্য, নৈমিতিক যক্ষ লালাদি রূপ ক্রিন্স নমত সাধন করিয়া অন্তঃকরণ বিশুদ্ধ করণানন্তর লাম লমানি ব্যাসুষ্ঠান পূর্বাক আক্ষান লাভ করিবার জনা ব্রহ্মনিটা ক্ষণ সংযুক্ত সদ্প্রকর পরিচ্ছা। করা উচিব। চক্র বেনন পরিক্রমণ সম্বরে একবার অধ্য ও একবার বিদ্ধা করিব। করা উচিব। চক্র বেনন পরিক্রমণ সম্বরে কার্যা অনবরত হ ছইতেতে বলিয়া ক্রতিত ছইরা থাকে, স্তরাং প্রীক্রমণাত্তির ক্রিন্সাই ক্রমণ ক্রিন্সাই প্রতিত জনা তুর্মি বিষয়াজিলাটী ছইরাছ, ক্রোন অধ্য ক্রিনা ও ক্রোন ক্রমণ করার্যা অবলাভ হইবে ব্রহ্মা প্রাপ্ত বিষয়াজিলাটি ক্রমার ক্রমণার ক্রমণ করার্যা ক্রমণাত হর্মান ক্রমণার ক্রমণাত হর্মান ক্রমণার ক্রমণাত হর্মান ক্রমণার ক্রমণার ক্রমণাত করিব। আন্তর্মার অনুস্থিত হ্রমণাত হর্মান ক্রমণার ক্রমণার ক্রমণাত হর্মান ক্রমণার ক্

क्यांक्रिक (मास्तरि अक्किंश)

उत्तादमम कार्यामिनः मुम्किन।

नम् चड्डा अन्वकार्याकारिनी

विमान किक्किनमाशादमकट्ड ॥ ३२॥

न गडाकार्याकृति कि महम्बद्धः

थकाक्कु इक्कु मानि कार्यामिकान्।

उदेशव विमान विश्विकः श्राकालिदेव
विमान हि किक्कु मानित्व
उत्ति मान्य किक्कु मानित्व
उत्ति भागाः किक्कु मानित्व
विमान श्री किक्कु मानित्व
विमान स्वाप किक्कु मानि

ना किया जिल्ला कार्या जाणामना कवित्व जावर्ष, महनव पाया किलिए जारा कु उन्हास कारा कारा के दिन ना विद्या किलिए त्रा किलिए जार्य के का किलिए ना विद्या कारा किलिए विद्या किलिए के दिन किलिए किलिए

কোমাণ ! কোন কোন বিজ্ঞান বাদীয়া বলেন বে, কান কিলা হইতে মুক্তি আপ্ত ছঞ্জা বাদ, কিল আহা আৰু নেমন কৰ্ম নোক সাধন অসং—ভজ্ঞান কাহাল মুক্তি ব্যৱস্থ বিশিত হইলেও জাতা কানং অনুবোদ্ধিত হুইছা সংক্ৰে হে নৌনিজেয় ! এ বিভাগ জেডু নেহাকিয়াৰ কুইছে জিলা

পরিবর্জিত ছইর। খাকে এবং যে ব্যক্তির অছ্ট্রার বিনীয় इই-ষাছে ভাষার বিদ্যাই প্রীসন্ধা; পরিশুদ্ধ বেদান্ত বাক্য मितिस्य विष्ठांत्र कतित्व ध्यात्र बर्टमात्र आकार ७ अछः-क्तर इंखि थाल रुउरा यात्र, अवर के प्रतमा विना।-विश्वक त्मद्या विन्तारक एकमा करतम ; शूनम्ह कर्च कर्खेदा कोग्रामित व्यक्ति महिन महिनायूरी इह व्यक्ति विमा कर्डुवानि वृक्तिक विमाहे करका विमान अवर कर्षा अवस्थात विद्वाप समा मुगुक-জনেরা নৈবিভিক জিয়া পরিত্যাগ করিয়া পরবন্ধ পরমেখ-त्वत अकि **अकुन्त क्रिक स्वर्गन कविता शाकन, क्र**पीर नमछ वैक्षिक दर्शक विशेष क्षेत्र असुत क्षेत्र। नसमा मिल्यासम्बद्धिकारमः ७६९व शत्रमा (द मनाकृतामिन् ! बाशी व विशासी एकट्ट काही कहा, कईवा, तारे विदश करिएकि आर्थ कर । नहीं गर्था कार्क जरकात यावर कान अवस्थि बाबरव छात्रकान विकि बर्केन कार्या कराहे वा र प्रत्यक विषये। स्वत्रिक क्षित्री अध्यक्षका काटक सरगाड वरेत्राः, नदूराकः विकारः अविकार कविका बाटकना २४ । ১८ ।

যদা পরাজ্যী ব্যবিভারি ভাররম্।
তিনৰ মায়া প্রবিদারতৈ হলা
সকারকাকারকারা প্রসংস্তে: । ১৮ ॥
প্রতিপ্রবাধানি বিনালিতা ৮ সা
কথং ভবিষাতা নি কার্যকারিণী ? ।
বিজ্ঞান মাত্রাদরীলা দি পুনর্ভ বিষাতি ॥ ১৯ ॥
যদি স্ম নকা ন পুনং প্রস্থাতে
কর্তাহমদ্যেতি মতি: কথং ভবেৎ ? ।
তন্মাৎ স্বতন্ত্রা ন কিমপ্যপেকতে
বিদ্যা বিমোক্ষার বিভাতি কেবলা ॥ ২০ ॥

ন। তৈতিরীর ক্তিরাহ শালরং
ন্যাসং প্রশাল্ড চ বাজিনাং ক্রেছির।
এতাবদিত্যাহ চ বাজিনাং ক্রেছির।
আনং বিমোকার ন কর্ম শাধনম। ২১।
বিদ্যালমন্ত্র তু দ্শিতভ্যা
কর্ম দৃষ্টান্ত উদাক্তঃ লমঃ।
কলৈঃ পৃথকদান্ত্র দুক্তির কর্ম।
সংসাধ্যতে জ্ঞানমতো বিপর্যয়ম্। ২২।
শপ্রভাবারো হুহনি তানাভ্যনাভ্যনাভ্যা
দ্রুষেভ্যাজ্যমণি ক্রিয়াভ্যতিবিধানতঃ কর্মবিধিপ্রকাশিত্ম। ২৩।

আত্মা পরিশুদ্ধ হটকা জগদীখনের এবং জীবের আত্মার সহিত পরস্পর বিভেদ লক্ষিত হয়, ঐ বিজ্ঞান প্রভাবর चीत लकान भीना लाजाबाता देवत द्वि नम्मात जेनसम्ब भूर्तक उन्नार्कात व्यथ्**छ द्वस्ति मा**श्व प्रथम विवश क्षेत्रील করে ভথন মারা ক্ষাৰ্থ থোপ্ত কর্মের বাহত সমিদিত रहेता नीज विमाण ब्याब एक, व्यक्तिक कारी विमान हरेता সংগার অর্থাৎ ক্রিয়া মাশও উপস্থিত হয়। এই সম্ভ আতি अमान बाबा विमके बरेबा के कविना किबरन कार्या नाविनी চ্চতি ? অৰ্থাৎ তাহায় আৰু উত্তৰ ব্যান্ত কাৰণ অভি-शरिक विजीवांचा विकास विकास बांध बहेटक वाचीर मिनि-शामन कान कान कान अक्षारण निमक क्षेत्र नार, तार कना रक् एक गर्नवर बाह्य माह्य केशन बाह्य छेरलीक स्वेतन ना र्शम उद्यक्तान विकानकारी व्यक्तिश शूनदाव छैर गत्र का वहन उटन कात्रदश्य आधान आगृत्क "आधित देवतम समा" अविति कि क्षकाद्य अरदर्शिक बहेरक नार्य । दन्दे रिकू क्षेत्रवान्य क्षवता क्षत्र विद्वारणक एरेश बादक मा, अवर की कावन वर्णां है दिली-

हन जना जनहार न नाम (नाजमान हन । के व्यक्ति रेड कि नीन जमार कर्मार वक्ति नाम निवास कि निवास व्यवस्था कि व्यक्ति निवास कि निवास कर्मार कर्म कर्मार कर्मार कर्मार कर्म कर्मार कर्मा

टाकावि उ उ क्या मार्गि श्री का मार्गः ।

विकास दे कि का जा स्था का का निवास ।

स्थी क दन्दम क दिसा का का निवास ।

स्थी क दन्दम क दिसा का का निवास ।

स्थी क दन्दम क दिसा का का निवास ।

स्थी क दन्दम क दिसा का का निवास ।

स्था का का विद्या का मार्गि का निवास मार्गि का निव

হইতে পারে না, এমন কি তজ্বদর্শীরাও ওরপ হইতে অকম, সেই কারণে পশুভেরা জিয়া কলাসক চিত্ত বিশিষ্ট লোক দিগোর বিধামানুখারী বিত্তি প্রকাশিত কর্ম পরিহার করিয়া থাকেন। যে বাজি নিক্ষ করিয়া করিয়া থকিন। যে বাজি নিক্ষ করিয়া করিয়া থকীয় মনকে পশুভূদ্ধ করিয়াছেন, ভগার মন গুরু শাস্ত্র বিখাসে সংযোজিত হইরাছে এবং গুরুর প্রসাদে ব্রহ্ম জান প্রথাক হইরা, এবং শুকীর ও অপরাপর লোক দিগের একালা অব্যাত হইরা, গিরি রেরুপ বিভূত্তেই বিচলিত হব না সেইরপ বিব্যাভিলাম ঘারা আন্দোভিত না হইরা সম্পার ত্রহাহীল হর। ১৮ ১৯।২০।২১।২২।২০।

सम क्षेत्राम शर्रक टावुक वाकार्य विकारमंत्र छैश्निहिरे व्यथ्य अवर नमार्थ व्यवगिष्ठ कात्र मिक्स् टेटिनिहें; अवर नमार्थ क्षेत्र निहें कि विकारमंत्र व्यक्ति हैं अवर नमार्थ क्षेत्र निहें कि विकारमंत्र कि विकार के कि विकार के

वकाञ्चलकारको समस्य १ उशास्त्र सम्बद्धी समस्य १ (मार्गर सम्बद्धित ज्ञानका) यूट्याञ्चलकारकारकारकारको २१। तमा निभक्षेक्र ज्ञात्र स्थाप्त । (ञ्ञातानग्र इश्यप्त । स्वर्धानकर्मनाम् । स्त्रीतमानग्र सम्बद्धानिकर्मनाम् । स्त्रीतमानग्र सम्बद्धानिकर्मनाम् ।

বিরোধ পরিহার পুর্বাক ভোমা কর্তৃক সমাক্ বিচারিত ভত্ত্ব পদ ব**ক্ষমাণ লক্ষণ যাৱা লক্ষিত তত্ত্বপদ উপস্থি**ত বিষয়ক একান্ত্রা, জ্ঞানোদর চিৎ স্বরূপ প্রাপ্ত হইরা থাকে। সভাবতঃ একাত্মক প্রযুক্ত স্বার্থভ্যাগবভী লক্ষণা (অর্থাৎ যেমন গঙ্গাঃ **८याय-- এই फुटल अम्बालनाटर्वत ध्येवार ८याय मर्व्यट**काचारत পরিত্যান জনা তীর্রপার্থ সক্ষণা) কখনই সম্ভব হইতে পারে ना ध्वर काक कर्कक मिश्र प्रका कत्राल ध्यम कांक शामत मधि छेनशांकका नक्ता (महे श्रकात विद्ताश्यमंत्रः के नक्ता मछाविक स्रेटिक शास्त्र मा, अहे कांत्र व लक्क लक्का मशस्या-জিত হয়; পুর্বোজ গোষের অভাবপ্রযুক্ত অর্থাৎ ধনাং-भेजाप बन्ज होस प्रमन के दिवनक भनाद दिन्नानि-विनिकेषपूर्वामान (वन्नामा क्षाप्त अप्तपूर हत। शृथिवानि পঞ্চুত সম্ভূত সম্ভূব এক চিত ছইয়া অমুদাৰ বিধা বিভাগ नुष्यं काषात्र अक कागरक हाविकारण विकित करनामसन ভাছার অংশ সমূহের শশরাপর ভূত চতুকীর অভিনা চতৃ-हेर बारा गरपूक्क करिया এक अक्री शकाश्वक छूठ छेरशर एव, अवर व्यक्ति श्रविद्यात्म विक्रित करुवात शृक्षियापित ত্ব ছংখ কৰু সকলের ভোগাশ্রর, या रहा देश परवाशी कुछ छैरेनछ । बार्मानवृक व्यानकारीय क्य करा बाहा-मन अर्थार विकासकृष्ठ अरे भेरीन जानमा हरेएके चुन्छ। लास इरेग्राट्ड वरेमन क्षिक जाट्ड। २६। २७ । २१। २४।

দ্কাং ননোর বিদ্যানি হৈয় হং
প্রাবৈরগানী ক ভত্তবন্তর হা
ভালা হ স্থানের স্থাধনং ভবেৎ
শরীর মন্তি দুরাভানে র্ধাঃ ॥ ২ ৯ ॥
অনাদ্য নির্মান মহীক কারণং
মায়াপ্রধানক পরং শরীর কম্।
উপাধিভেদাত রতঃ পৃথক্ছিতং
আত্মানমাত্মনার্ধার হেৎ ক্রমাৎ ॥ ৩০ ।
কোবেষ্যং তের্তু ভত্তদাক্তিবিভাতি সঙ্গাৎ ক্রিকোপলো ষ্থা।
অসক রপোহ্য মজো যতোহ্বরো
বিজ্ঞায়তেই মিন্পরিতো বিচারিতে ॥ ৩১।

এক্ষণে পণ্ডিভেরা লিক্স দেহাক্সক ছুল শরীর সমর্জি হইতেছে জানিরা কছিয়াছেন যে সংকল্পাক্সক মন,নিশ্চরাক্সক বৃজি,জাণেন্দ্রির, রসনা, দর্শনেন্দ্রির,শ্রবণেক্সির ও তৃক্ এই ছর জ্ঞানেন্দ্রির এবং বাক্, পাণি, পাদ, পারু ও উপত্ব এই পঞ্চ-কর্মেন্দ্রির—এবং প্রাণ, অপান, ব্যান, উদান ও সমান এই পঞ্চ প্রাণ সমুদারে এই সপ্রদল্প ইন্দ্রির ছারা সংযুক্ত হইরা অপ্রীকৃত ভূত সম্ভব; অভএব অনুশ্য তথা তথা ত্ব হুঃখাদির অনুভব সাধন ছুল শরীরাক্সাত ভোগ লাভ ছইরা থাকে।

হে বৎস! ইং জগতে লোকে উৎপত্তি বিহীন, সন্থা-সন্থা নিৰ্মাচা, জগৎ প্ৰাণঞ্চপতি, ব্ৰহ্মমানা, প্ৰমান্ধা উপাধি ভেৰ একমাত্ৰ চৈতনা, ভেল বৃদ্ধি বিবরে পুৰুক জগৎপাতা জানীৰ-রকে সক্ষা গৰ্মণ উপাধি পরিত্যাগ করিব। ও প্রত্রণ ব্রন্দ নিলিধ্যাসন ছারা ক্রমণঃ জানিতে পাবে; আনক্ষময় বন্দেতে প্রাণময়, মনোমর, বিজ্ঞানমন, ও অরম্য এই জানাব চারিল্বী কোবদধ্যে তৎসম্থীর আক্রতি বেদীপানান আছে জর্থাৎ যেমন জ্বাদি কুসুম ফুটিক সংগ্রুক হইলে সানা- বুকেন্তিথা বুজিরপীত দুশ্যতে
স্থাদিকেদেন গুণজয়াজ্বনঃ।
অন্যোহন্যতোহিমান ব্যক্তিচারতো মৃষা
নিত্যে পরে ব্রহ্মণি কেবলে শিবে॥ ৬২॥
দেহেন্দ্রিরপ্রাণমনশিচদাত্মনাং
সক্তাদক্রং পরিবর্জতে ধিয়ঃ।
ব্যক্তিবোম্শজরাজ্ঞসক্ষণা
যাবস্তবেজাবদলো ভবোদ্তরঃ। ৩৩।
নেতিপ্রমাণেন নিরাক্কতাধিলো
ক্রদা স্যাস্থাদিতচিদ্বনামূতঃ।

বিধ আকৃতি পরিদৃশ্যমান হয়, সেই প্রকার আনন্দনর জগদীখর ও জীব সমূহ পরস্পর স্মিলিত ছইলে কের-মধ্যে তাঁহার বিবিধ রূপ লক্ষিত হয়; এই মহাবাক্য স্মাক্ রূপে বিচার করিয়া দেখিলে এ আত্মাকে অয়াদি সঙ্গ রহিত ব্রস্ত্ ও অবর বলিরা পরিলক্ষিত হইতে অর্থাৎ অজ্ঞানি জনেরা ভত্তংকোষসঙ্গ প্রযুক্ত ক্ষটিকবৎ বোধ করিবে, কিন্ত ভন্তক ব্যক্তি দিনের দে রপ প্রভীতি হইবে না। এই আক্সা মধ্যে জাগরিতাবস্থার যে তিমটী রত্তি অবলোকিত হর তাহাই গুণ্তবাত্মাৰ সত্ত্ব বহু ও তমরূপ গুণ ত্রের বুহির वर्ष बार छेक सर्वाबत्त्र मुनकष (रजू बरे विश्वनारकात्र व्यवस्थान अहे सार्क्त सहित्रा शास्त्र, व्यनामा वाजिनावात्रा-खरात यात्रणकः व्यवस्य (क्लू यश्चानिन वागात्रण वा प्रतृष्टित পভাব হয়। সেই জনা এ ছুইটার না ধাকার পার্পার ব্যক্তি-हात छेन्द्रिक हर, ग्रह्महार जाननात जनामस क्षर्क छेरनिछ वा नाग तिहीन, त्रवम तक ७ कामम तथ सग्वीवद्वत श्राक्ष वाष्ट्रिकां वर्ष अमस्त्र । आलमात्र एमर, देविका स्थान, मन ଓ हिट्डिय अविक्रित इत्राव अवल तृषि इप्रि क अमन्त कातरन क्षक तकना बाररकान शतिवर्त्तम करेंद्र छातर छ मरमारवत छेर शक्ति इहेरत । उमर्शन बहुकाक्रत्वत छेरानकर माज তালে শেবং জনদান্ত্র দুন্নং

শীহা যথান্তঃ প্রক্রহাতি তৎকর নৃ । ৩৪।

কলাচিলাত্রা ল স্তো ল জারতে

ন কীয়তে নাপি বির্ব্ধতেইনবঃ।

নিরন্তর্গতিশিরঃ সুধাত্রকঃ

সাংপ্রতঃ সর্বাগতোহয় দদ্দাঃ ॥ ৩৫ ॥

এবং বিধে জানায়ে সুধান্তকে

কথং ভবো তুঃখনয়ঃ প্রনীয়তে ?

ভজানতোহধ্যাসবশাংপ্রকাশতে

জানে বিলীয়েত বিরোধতঃ ক্রণাং ॥ ৩৬।

এবং রজঃতম অপেক্ষা প্রধান বৃদ্ধি দেই জন্য সংসারের নিমিত্ত नर्ने (कांकार्द निविकाका)। यिनि धरे नमेख धर्मान नरेना खनर एक मियाक्राम प्रतिशृहीक इदेशाट्ड (दाथ करतम ७ कत्र मरश সাজ্বিত মমধারা চিল্লকণ ও তথ সমাখাদন করিয়াছেন, তিনি পরিণাম ছঃখ প্রযুক্ত সন্তিরের ন্যায় ইইয়া অশেব জগৎ, দেহ, विक्रियामि मृना मध्द পরিত্যাগ করেন, অবট রঞ্চভ্যাগের উপাদান বিষয় कथि कर्दान मा, এবং ইক্রিয়ানির বারা তথ্য জ্ঞান লাভাশ্যে কি প্রকারে উপালীবোর পরিছারাশকার मुडास পরিদর্শন কবিরা পরিছার কর্মেন; বেমন ভৃষ্ণার্ড জন माहित्यम् व्यापि व्याद्धाः व्यक्तिम् अध्यम् अस्य जिल्लाम् इत, त्रहेक्ष्ण अर्था मुना मातारण उपादक धारक विवाद अला त्यांक विद्वात विद्वारक (इन क्यांन करत्या। महीत हेंद-প্তির পর আহার নমুদ্ধ ভারত থাকে, জীপান্তঃ কল্মই आख हर ना, ट्राने कांडरन अक्का व विकास विकास कि সর্ব্ধ বড় ভাব বিশারণৎ অনিতা হইয়া নির্ভিত্তা करत बेलिता (बाथ इस) कांक्री छेडात अक्रम किन्छ छ (मर्क् शिक्काविक किरिया किर्मा किर्मा किर्मा किर्मा प्तार कार्या प्रमान, वार्यकान वे तार्थ विक् काशक अर्जाक कोश्वारक कार्य जन्म करूत कार्यक विश्व क्रम विकास मूना काम्यान स्रम मनगानि व्यत्ताव स्रेग गरमारत যদক্ষণ কে বিভাবতে অসং

অধ্যাসনিত নিজ্ঞান কিলিকিড: ।

অসপতিতে হৈ বিভাবনং করা

রক্ষাদিকে ভবদশীবারে জন্মবা ৩৭॥

বিকল্পনায়ারহিতে চিলাজকে
হকার এবং প্রথমঃ প্রকলিতঃ।

অধ্যাস এবাজনি স্ক্রারণে

নিরাময়ে ব্রক্ষাণি কেবলে পরে ॥ ১৮।

কি প্রকারে ভীত ছওয়া বাষ্? ভুংগ প্রচুর অজ্ঞানের মূল: এট প্রকার বিকার শূন্য আত্মার জন্ম মরণাদি প্রবাহ রপদংসার ভাবকে কি প্রকারে শহা করা যাইতে পারে? অজ্ঞান মূলক দেহান্তঃকরণাদিতে আমার অধ্যাপাবশাসুবতী বশতঃ ভ্রান্তিরপ প্রতীদ্ধি, এবং ঐ সংসার ছইতে কি আকারে নিবৃত্তি হয়? ভদপানোদনার্থ কথিত আচে ্য বেষম জ্ঞান রূপ রজ্জ তে দর্পের লয় হর সেই প্রকার জান ভাবিউ ভ হইতে ভাহার সহিত অভানের বিবেধ ইইলে ক্ষম কাল মধ্যে কারণ উপস্থিত কর, ঐ কারণ कुछ का क्रांस विसक्षे इह, ध्वर क्षे विभाभ कार्यादाता সংসারের -বিলয় আন্তি হয়। বেমল জম জমত দেখি ছেড व्यत्रक तक्कुर्ल मर्ग वनिवा द्यान क्या विचक्कात्मम क्याम विषय करियादकन, त्यायम ब्रम्म, जन्म प्रदेशन जित्रका-Date का कि के जारी करतन जुन कारन तक विदर के क्षण व मार्थ जनदर्भाका अंशनीयात अश्व अर्थार त्रसान नरगाडोब्र मधूर चाच कानाचार रण्डः वर्षायर चनाच क्षेत्र। बाह्र। मन्द्र विकरण कावन बाह्य ब्रह्मिल, ब्रह्म : प्रकार के किए अर्थकार कि प्रकार शत अर्थका चारमध्य नर्भ निकार प्राप्त प्राप्त विकास करियो पर असि साथ चाक्रीतः जैवनकः वस्त्रात विकित्ति च वसाग वर्षारः भटर

ইছোদিরাক্ষাদিক্ষাদিধনিকাঃ

সদা ধিয়া সংস্তিক্ষেত্র পরে।

যত্ত্বাং প্রকাশে বিভাগতে হি নঃ ॥ ৩৯ ॥

অনাদ্যবিদ্যোভববৃত্তিবিবিতাে

জীবঃ প্রকাশোহর্মিতীর্যতে চিহঃ।

আত্মা ধিরঃ সাক্ষিত্রা পৃথক্ষিতাে

বৃদ্ধা পরিচিন্নপরঃ স এব হি ॥ ৪০ ॥

চিহিম্মাক্ষাভূষিয়াং প্রসঙ্গত স্থাত্ত্বান্তিমাদ্যাদিকার প্রক্ষিতি।

ক্রা পরিচিন্নপরঃ স এব হি ॥ ৪০ ॥

চিহিম্মাক্ষাভূষিয়াং প্রসঙ্গত স্থাত্ত্বান্ত্রমধ্যাদবশাৎ প্রতীয়তে

জড়াজড়ত্বং চ চিন্নান্সচেত্র্যোঃ ॥ ৪১ ॥ প্তরোঃ সকালাদশি বেদবাকাতঃ
সঞ্জাতবিদ্যাত্মশুবো নিরীক্ষা তম্।
আত্মানমাত্মস্থাধিবর্তিতঃ
ত্যক্তেদশেবং জড়মাত্মগোচরম্ ॥ ৪২ ॥
প্রকাশরপাহহমেতার নির্দানঃ।
ক্রিভাতোহহমতীর নির্দানঃ।
বিশুক্রবিজ্ঞানখনো নির্দানঃঃ
সম্পূর্ণ আনন্দময়োহহমক্রিয়ঃ॥ ৪০ ॥
সদৈবমুক্তোহহমচিন্ত্যশক্তিমান
ন গ্রীন্দিয়জ্ঞানমবিক্রিয়াত্মকঃ।
অনন্তপারোহ্মহর্নিশং বুধৈব্রিভাবিতোহহং হাদি বেদবাদিভিঃ ॥ ৪৪ ॥

নুষ্যাক্সক সমস্ত সংসাবের কারণ। সর্ব্যাক্ষী আত্মা ভাসমান সংসাবের কারণ অর্থাৎ ভূত ভবিষাৎ ও বর্ত্তমান
কালিন উপেকা, রাগ, সুথ, চুংখাদির ঘন্দ ধার্মিকা—বৈ
কারণ বলতঃ প্রস্তুত্তির অর্থাৎ বৃদ্ধি রতির অভাব প্রযুক্ত
আত্মা আমাদিগের সুধ অরপে অর্থাৎ ক্ষরপ্রধারা নিল্টরীকত হয়। প্রক্ষ তত্তপদার্থ বিষয় সম্বন্ধে এইরপ ক্ষিত্ত
ভাত্তে, আমাদি হিল্যা হইতে উৎপন্ন অন্তঃকরণের প্রতিবিশ্বিত
ভিত্ত হইতে জীবের উদ্ভব হয়,এবং পরমান্ধা বৃদ্ধির সাক্ষ্মী হতরার ধীধর্মসক হইতে পৃথকভাবে অর্থান্ত খাকে অভ্তর্থ
বৃদ্ধির লক্ষণ সমূহের পরিজের বিহীন হয়, অর্থাৎ পরমান্ধাত
ভান হারা প্রতিবিধানার বিলর প্রতি হইলে ও জীব পরমান্ধার ন্যার প্রতিবিধানার বিলর প্রতি সম্বান্ধের জাব
জীবান্ধা হইতে জড়ব প্রতীন্ধান ত্ব, অভ্যব পরিক্রেরা
গরমান্ধারণ চিত্তের ডার্কিক ব্যবহার এবং জীবান্ধার জড়ব

উরেথ করিরাছেন, এছলে আর্ত্রাবছারই করিরা থাকেন; যেনন অগ্নিচগুনিছিপিও অনলের ধর্ম রক্ষা করে, আর্থাৎ তাহার দাহিকা লক্তি হর, এবং লেছির বর্ত্ত লম হেতু অনলে তারমান হর। গুরুর স্বীপে বেদবাকা আকর্ণন করির। যে বাজি বিদ্যালাভ করিয়া, ভত্মারা আন্তর্মণ আপনাকে অন্তর করিতে সক্ষম ছরেন, তিনি নেই চিদানন্দ শ্রমণ—
উপাধি বিভ্তিত অগ্নানন্দকে শ্রমীর ছন্তর্ম অবনোকন করিয়া ভূপা অভ পরিভাগে করেন, আর্থাৎ একম্প্রান্ম উন্থান ব্যান্তর প্রান্ধ করেন। তা ওছা তথা ওছা তথা ওছা তথা ওছা তথা ওছা বিশ্বাক।

তে প্ৰকাশ আৰি আপ্নাকেই প্ৰকাশ করিব। বাজি আমি জন্মানি বিছীন, অজাতীয় ভিতীয় বিষহিত, আৰি সংক্ষত-নিধ্যের প্ৰো, আমি অভীয় নিশান সাত্ৰা ক্ষতিবৰ্গ বিকেশ বিয়হিত, বিশুল বিজ্ঞান বন, কণ্ডৰ অভিবান পায়িণ্না, দেশ তবং সদাস্থ্যমথণ্ডিতাত্মনা
বিচারমাণস্য বিশুদ্ধভাবনা।
হন্যাদবিদ্যামচিরেণ কারকৈরসায়নং যদ্ধপ্রশাসিতং রুজঃ॥ ৪৫॥
বিবিক্ত আসীন উপারতেন্দ্রিয়ো
বিনির্জিতাত্মা বিমলান্তরাশয়ঃ।
বিভাবয়েদেকমনন্যসাধনো
বিজ্ঞানদৃক্ কেবল আত্মসংস্থিতঃ॥ ৪৬॥

কাল, পরিছেদ বিহীন; আমি আনন্দরপ ও পরিণাম শ্ন্য । পণ্ডিভেরা ভূত ভবিবাৎ ও বর্ত্তমান অর্থাৎ অফুক্ষণ সমন্ত ধর্ম বিরহিত অচিন্ত্যা শক্তি সম্পন্ন প্রমাত্মাকে ইন্দ্রিয়াতিরিক্ত জ্ঞানরূপ অপরিণামীকে—অনস্ত ও দেশকাল পরিছেদ সদৃশ প্রমাত্মাকে মনোমধ্যে চিন্তা করিয়া থাকেন। ৪৩। ৪৪।

এইরপ ভাবনা করিলে ভাহার ফল এই যে, বিষয়ে মন: সনর্পন না করিরা বে আজার প্রতি মন:সংযোগ করিরা বিচারপূর্কক সর্কলা ধ্যান করে, ভাহাতে পরমন্তব্দের আকার অন্তঃকরণ রক্তি—ইভ্যাদি অভি পরিত্র ভাবনা উদিত হর, পরে দেছ ও অন্তঃকরণ কর্ম্ম সমুদরের সহিত, স্মচাক পরিসেবিভ রসারন বেমন পীড়াকে বিনাশ করে, গৈইরপ অবিদ্যা অভি শীত্র দুরীভূভা হর। অনন্তর ধ্যান বিষরের কর্ত্তব্যভা এই মিশ্চর হইরাছে যে, ইক্রিরাদি ভার্য্য সমস্ত নির্ভি করিরা অর্থাৎ শমদমাদি সম্পার ছইরা বিজ্ঞান প্রদেশে যথোচিত পদ্মাসমোপরি উপবিক্র ছইরা প্রাণারামাদি কর্ত্তক জিভান্তঃকরণ কর্মচ অভিপ্রবিত্র চিত্ত হইরা, জন্তু- দুলামান বিবর্জিত অনন্য সাথন অর্থাৎ ডক্স জানাতিরিক্ত মুক্তি সাথন শ্রম্ম বিরক্তি, বিষয় কার্য্যে যেমন অন্তর প্রবিষ্ট করিরা থাকে সেই প্রকার পরমান্ধার ক্রিভ সমর্থন পূর্কক প্রেমণিতা জগদীব্যররের চিত্তা করে। ৪৫। ৪৬।

বিশং যদেওৎপরমান্ধদর্শনং
বিলাপয়েদান্থনি সর্বকারণে।
পূর্ণশ্চিদানন্দময়োহবভিষ্ঠতে
ন বেদ বাহাং ন চ কিঞ্চিদান্তরম্ ॥ ৪৭
পূর্বাং সমাধেরখিলং বিচিন্তয়েৎ
ভূঁ জারমাত্রং সচরাচরং জগৎ।
তদেব বাচ্যং প্রণবো হি বাচকো
বিভাব্যতেহজ্ঞানবশান্ন বোধতঃ ॥ ৪৮ ॥
অকারসংজ্ঞঃ প্রুমধ্যে হি বিশকো
হ্যকারকন্তৈজস স্বর্যতে জ্মাৎ।
প্রাক্তো মকারঃ পরিপ্র্যতেহধিলৈঃ
সমাধিপূর্বাং ন তু তত্ততো ভবেৎ ॥ ৪৯

অধিকত্ত ভ্ত, ভবিষ্য ও বর্তমান বিশ্ব সংসার ও পরমাত্মা দর্শন কারণে মারার নিকটবর্তী সর্বোপাদানাভিন্দতে আবার প্রতি বিলাপ করিয়া থাকে অর্থাৎ উপাদানসন্তাব্যতিরিক্ত কার্য্য সত্ত দেখিতে না পাওয়ায় সর্বাদা চিদানন্দময় হইয়া অবস্থান করে। অর্থাৎ বাহ্য, অন্তর বা দ্রা কিছুই জানিতে পারে না, সর্বান্তই পরমাত্রমকে পরিদর্শন করে। সমাধির অর্থাৎ সকল বিষর ব্যাসক্ষ নিবৃত্তি পূর্বেক ব্রহ্মাকার রভির পূর্বেক চরাচর অধিল ব্রহ্মাতে উকার মাত্র লোকে চিন্তা করে প্রশাব বাচক দিশোর নিকটই প্রসিদ্ধ, কিন্তু এই চিন্তা অজ্ঞানতা করা অনুষ্ঠিত হয় মা। 'অ'কার সংজ্ঞ প্রকাই বিষের ভাতাং সাক্ষী, অনন্তর 'উ'কার'সক পুরুবই অর্থাৎ নিজনেহাভিমানী হিরণ্য করি উকারক স্বাধ্য নাজী—ক্ষমন্তর প্রকৃতি সাক্ষী প্রাক্ত প্রকার বিষয়ের পূর্বেক তারাং সাক্ষী সকলের প্রকৃতি বাক্ষী প্রাক্ত প্রকার স্থানার পূর্বেক তারাং সাক্ষী সকলের প্রকৃতি সাক্ষী প্রাক্ত প্রকার স্থানার পূর্বেক তারাং সাক্ষী সকলের বেদমন্তের প্রকিত করিলা বাক্ষির স্থানার পূর্বেক তারাণ্ড কারা হয় ক্ষা ৪৭। ৪৮। ৪৮।

বিশং ছকারং প্রদাং বিলাপরেৎ
উকারমধ্যে বহুধা ব্যবস্থিতম্।
ততো মকারে প্রবিদ্যাপ্য তৈজ্ঞসং
ভিতীয়বর্গং প্রাণম্য চান্তিমে॥ ৫০॥
মকারমপ্যান্তালি চিম্মনে পরে
বিলাপরেৎপ্রাক্তমশীহ কারণম্।
সোহহং পরং ব্রহ্ম সদাবিম্ক্তিমদিজ্ঞানদৃধাক উপাধিতোহমলঃ॥ ৫১
এবং সদা জাতপরাত্মভাবনঃ
স্থানন্ত্রই পরিবিম্যুতাথিলঃ।
আত্তে স নিত্যাত্মহুপপ্রকাশকঃ
সাক্ষাভিমুক্তোহ্চলবারি সিম্বুবং॥ ৫২

এবং সদাহতার সমাধিযোগিনো

নির্তসর্বেজিয়গোচরস্য হি।

বিনির্জিতাশেষরিপোরহং সদা

দৃশ্যো ভবেয়ং জিতবড় গুণাত্মনঃ ॥ ৫৩॥

ধ্যাকৈবমাত্মানমহর্নিশং মুনিগুতেহুৎ সদা মুক্তসমন্তবন্ধনঃ।

প্রারন্ধমন্তিমানবর্জিতো

ময্যেব সাক্ষাৎপ্রবিলীয়তে ততঃ॥ ৫৪

আদৌ চ মধ্যে চ তথৈব চান্ততো
ভবং বিদিস্বা ভয়শোককারণম্।

হিল্লা সমস্তং বিধিবাদ্যোদিতং
ভঙ্গেৎ সমাত্মানম্থাথিলাত্মনাম্॥ ৫৫॥

ভি'কার মধ্যে ত্ল দেহাভিমান বিশ্ব প্রথম বছবিধ রূপে বাবছিত আছেন, এবং উক্ত 'অ'কার তাহাতে বিলীন হয়, অনন্তর লিসদেহাভিমানী প্রণবের বিতীয় 'উ'কার বর্ণ ম'কারে বিলীন হয়। প্রাক্ত কারণত্বাভিমানী 'ম'কার ইয়ার পরে আত্মাভেই লয় প্রাপ্ত হয়, অনন্তর এ স্কবিলাপা-ধিচান পরজক বিভাসিত হয়েন, পরে স্ক্রা বিমৃত্তির নায় নিতা মুক্ত রাগ ধেষাবি মলিন বন্ধ মুক্তি কি রূপে পাইকে পারে, অভ্যান বিজ্ঞান দ্বীক্ষান-লিবিধাসন ৪ তৎ-সাক্ষাৎকারে লাধন হইয়া থাকে। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০।

অতএব উক্ত আকারে যে বাকির অগর আন্তার আতি ভারনা উপ্রিক হরা অধীর পুত্র ও বেহানি শব্দ প্রি-বিশাত হয়, অসমপাননে প্রিচুষ্ট হয় অর্থাৎ নিবয়ানন্দ যাহার পরিণামে হংথ হেতু আর বিহক্তি নাই, নিতা আন্ধাতিই মুখ প্রকাশ হইয়া খাকে. জীবলুক্ত নিশ্চন বারি সম্বানিত সিল্পুর ন্যায় অর্থাৎ বিষয় নম্বন্ধ রূপ লহরী রহিত হইয়া আছে। সর্কান সমাধি যোগ অত্যাস করে, সমস্ত ইন্ধিনাদি হইতে বিষয় বাপার নিব্রক্ত করে, কামাদি বিপুক্তর বলীতৃত করিয়াছে, আমি প্র ভক্তের দৃশ্য অর্থাৎ আমি তাহার দৃতি পথে উপনীত আছি। যে মুনি সমুনার সংসার বন্ধন হইতে সুক্ত হইয়া দিখা রাজ পর্যাক্ষাকে খান করে ও নীবলুক প্রান্ধর বলাসুবর্তীর বালা অভিযান বর্জিত হইয়াছে, তিনি আমাতে বিলীল হবেন ৷ আদিতে যথো ও অভে সমস্তই ভয় পোক করিব অবগত হইয়া ও এ করেমীতৃত বিধি বাদ প্রোক্ত করিব ভাগ পরিতাগ করিয়া অথিন জীব ভিনের কর্মকত্ত্ব পরমেন

আত্মগুভেদেন বিভাবয়য়দং
ভবত্যভেদেন ময়াত্মনা তদা।

যথা জলং বারিনিধো যথা পরঃ
কীরে বিয়দোল্মানিলে যথানিলঃ॥ ৫৬॥
ইঅং যদীক্ষেত হি লোকসংস্থিতো
জগন্ম বৈবেতি বিভাবযন্মনিঃ।
নিরাক্তভাচ্ছ তিযুক্তিমানতে।
যথেন্দুভেদো দিনি দিগ্ভমাদয়ঃ॥ ৫৭॥
যাবন পশ্যেদখিলং মদাত্মকং
তাবন্মদারাখনতংপরো ভবেং।
ভ্রন্ধানুরভার্জিভভক্তিলক্ষণো
যস্তম্য দুশ্যোখমহনিশং হৃদি॥ ৫৮॥

রহস্তমেতচ্ছ তিসারসংগ্রহং

ময়া বিনিশ্চিত্য ভবোদিতং প্রিয়া।

যক্তেলালোচয়তীহ বৃদ্ধিনান্

সমূচ্যতে পাতকরাশিভিঃ ক্ষণাং ॥ ৫৯ ॥

ভাতর্বদীদং পরিক্ষত্য চেতসা।

মন্তাবনাভাবিত শুদ্ধমানসং

স্থী ভবানন্দ্রমান নিরাময়ঃ ॥ ৬৭ ॥

যঃ সেবতে মানগুণং গুণাৎপরং
হলা কলা বা যদি বা গুণাপুকম্।

বরকে উল্লাকরেন। ৫০ ৫২। ৫০ । ৫৪। ৫৫। যেমন নদী

অমুদ্রে প্রবিষ্ট ইইলে তাহার জল সমুদ্রের নাার হর,

দুল্ল মধ্যে জল মিপ্রিত করিলে যেমন ক্ষারবং হর, চর্ম

ভাত্তিকালির অবিক্রির বায়ু মহাবায়ুর সাহত সংমিলিত হইরণ

থেমন একাকার হয়, সেই রূপ আত্মায় সমস্ত অধিষ্ঠান

থাকার আমাতে ক্রেরপ জীব অভেদ রূপে অবিভ্রতি করে

ভাত্তরাং আমার ও পর্যেবরের আত্মা অভিন্ন রূপে অব
হিত আছে। জীবন্ধুকি দুলার প্রারক বশতঃ লোক

বাবহার করিয়া, জগংকে মিখ্যা ভাবনা করেয়া যদি মুনিরা

একাত্মা জানিতে সক্ষম হয়; শ্রুতি গুল্যামুসারে জগং

মিথ্যা পরিদ্বামান হর, যেমন চন্দ্র এক, কিন্তু শ্রম

বশতঃ ঘুই চন্দ্র ব্যিয়া বোধ হয়, যেমন মধ্যে মধ্যে ক্রিয়া

জ্বাতি হয়। গেই রূপ তত্ত্ব জানেও ক্রম উপ-

ষ্ঠিত গর। যাবৎ কাল অথিল জাৎ মধ্যে আমার অধিষ্ঠানত দুলন না পাইবে ভাবৎ কাল আমাকে পাইবার জনা করে বদারাধন তৎপর, দুঢ় বিশ্বাসবান হইয়া আমাকে আর ধনা করিবে এবং আমিও ভাহার হুৎপদ্ম মধ্যে দিবারার দুট হইয়া খাকি । ৫৬ । ৫৭ । ৫৮ । ৫হ প্রিয়! আমাক জিলাই আই নিশ্চয় করিয়াছি ইছ জগতে বে বুজিমান এই বিষয় সমূহ আলোচনা করে সে পাতক রাশি হুইতে ভৎক্ষণাৎ মুক্ত হয় হে লাভঃ! যালি এই জগৎ পরিজ্ঞ হয় ভাহা হইলে সমন্তই মায়া অবগত হইয়া হৈতনা লাভ করণান্ত্রর সমন্ত (বন্ধ পরিভাগে করিয়া আমাকে চিন্তা করিবার নিমিত) বিশুল মান্দেরে নিরামন্ত হুইয়া আমাকে চিন্তা করিবার নিমিত)

्र वाकि विश्वाखालत् । सामात्र शक्क गर द्रख व च्या खना बहिक, जाकिनानस्य वा स्वामान जलाक (नवा সোহহং স্বপাদাঞ্চিতরেণুভিঃ স্পৃশন্
পুনাতি লোকত্রিতরং যথা রবিঃ ॥ ৬১ ॥
বিজ্ঞানমেতদ্ধিলং শ্রুতিসারমেকং
বেদান্তবেদ্যাচরণেন নয়ের গীতম্।

Street Agency Street

যঃ **গ্ৰন্থয়**িপৰিপঠেদ্বভক্তিযুক্তো। যক্তপনেতি যদি ম**য়চনেতু ভক্তিঃ॥** ৬২॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর স্থাদে উত্তরকাণ্ডে পঞ্চমোহধারিঃ।

করে নে অপাদ পথনেপু স্পার্শ করাইরা, স্থা যেমন জন্ত এ অক্ষার হরণ করে, দেই রূপ লোক ত্রয়ের পবিত্র সাধ্য ক্রিয়া ব্যকে; এই শ্রুভিসার অধিল বিজ্ঞান গীত জ্যামি বেদাস্ত চরণে স্যাবেশিত ক্রিয়াছি। সভএব যে ভক্তি যুক্ত ছইরা পাঠ করে, দে আমার বাক্যাস্সারে আমাঃ সাযুক্য প্রাপ্ত হয়। ৬১। ৬২।

> ইতিশীনদধ্যাত্মরামায়ণে উনামহেশ্বর সম্বাদে উত্তরকাণ্ডে পঞ্চনোহধ্যায়ঃ।

यर्छा ३ था अः।

ब्रीयहारम्य छेवाउ।

একদা মুনয়ঃ সর্বে যমুনাতীরবাসিনঃ।
আজগ্মু রামবং দ্রুষ্ট্রুং ভ্যাপ্তব্যুরক্ষ । ১॥
কুত্বাত্রে তু মুনিজেঠং ভাগবং চ্যবনং দিজাঃ।

অসম্যাতাঃ সমায়াতা রামাদভয়কাজ্মিণঃ ॥ ২ ॥
তান্ পূজয়িত্বা পর্য়া ভক্ত্যা রঘুকুলোত্তমঃ।
উবাচ মধুরং বাক্যং হর্যয়মুনিমওলম্ ॥ ৩ ॥

मशास्त्र शार्विक विश्वतम्, धकर्गा रेमूना जीवराणी। मश्चित्रण लवन नाटम त्राक्तान्त्र ज्वात शनात्रमश्च स्ट्रेशा

রামচক্রকে দর্শন করিতে আসিরাছিলেন। ব্রক্ষিণের। মূমি শ্রেষ্ঠ ভার্মবিকে অতাবভী করিরা কহিলেন, এই অসংখা গমি সামচক্রের নিকট হইচে স্বর্গ বিষয়েশীকাঞ্জী হইরা করবাণি মুনিজেনাঃ ! কিনাগননকারণন্ ? ।

ধন্যাংশি কদি বৃহং মাং প্রীজাক্ত নিহাগভাঃ ॥৪॥

ত্বকং চাপি যৎকার্য্য ভবভাং ভৎকরোম্যহন্ ।

আজ্ঞাপয়স্ত মাং ভভাং ত্রাহ্মনা দৈবতং হি নে ॥ ৫॥

তচ্ছ ত্বা সহসা হাউশ্চাবনো বাক্যমত্রবাঁৎ ।

মধুনামা মহাদৈত্যঃ পুরা কৃতযুগে প্রভো ! ॥ ৬ ॥

আসীদতীব ধর্মাত্মা দেবত্রাহ্মণপুজকঃ ।

তত্ত তুটো মহাদেবো দদে শ্লমসূত্রমন্ ॥ ৭ ॥

প্রাহ চানেন যং হংসি স তু ভন্মীভবিষ্যতি ।

রাবণস্থাস্কা ভার্যা তস্য কুন্তীনসী শ্রুভা ॥ ৮ ॥

তত্তাং তু লকণো নাম রাক্ষসো ভীমবিক্রমঃ ।

আসীদ্তুরাত্মা তুর্ধর্যো দেবত্রাহ্মণহিংসকঃ ॥ ৯ ॥

পীড়িতান্তেন রাজেন্ত ! বরং ছাং শরণং গতাঃ ।
তচ্ছ ছা রাদ্বোহণান্ত মা ভীবো মুনিপুসবাঃ ! ॥১০
লবণং নাশরিক্ষামি গক্ত বিগত্তবাঃ ।
ইত্যক্তা প্রাহ রাদ্ধেপি জাতৃন্ কো বা হনিষ্যতি
লবণং রাক্ষসং দদ্যাদ্ভাক্ষণেভ্যাত্মং মহৎ ।
তচ্ছ ছা প্রাঞ্জলিঃ প্রাহ ভরতো রাঘ্বায় বৈ ॥ ১২ ।
তচ্ছ ছা প্রাঞ্জলিঃ প্রাহ ভরতো রাঘ্বায় বৈ ॥ ১২ ।
ততো রামং নমস্কৃত্য শক্তামো বাক্যমন্ত্রীৎ ॥ ১০ ॥
লক্ষণেন মহৎ কার্যং রুতং রাঘ্য ! সংযুগে ।
নন্দিগ্রামে মহাবৃদ্ধির্ভরতো তুঃখমস্কৃত্থ ॥ ১৪ ॥
অহমেব গমিষ্যামি লবণস্য বধায় চ ।
ছৎপ্রসাদাদ্রমুজ্রেষ্ঠ ! হন্যাং তং রাক্ষসং মুধি ॥১৫।

স্থাগত হইরাছেন। রঘুকুলোত্তম বামচক্র প্রমা ভক্তির
সহিত তাঁছাদিগকে পূজা করিয়া মুনি মগুলীর মধ্যে
আনল উৎপাদন করাইরা মধুর বাকো কছিলেন—ছে মুনি
ক্রেট্রাণ! আমি আপনাদিনাের কি কার্যা করিব,আর আপনাদিগের আরাল্যেরই বা কারণ কি? যদি আপনারা আনজিত
ভইরা আয়াকে দেখিবার জন্য আসিরা থাকেন, তাহাছইলে
আমি ধনা চাহাতিত। আপনাদিগের যে যে সাধ্যাতীত কার্যা
আচে ওৎসম্পার এই ভূতাের প্রতি আদিন কর্মন,
ত্র্মনই সম্পাদন করিডেছি; জীরাদের বাকা অবণ করিয়া
চাবন মহানন্দে কছিলেন—হে প্রভা! সভা বুগ ছইতে
সধুনামক এক সহানৈতা আছে। এই কৈতা পূর্বে বার পর
আরি ধ্যালা ও প্রত্তর্গাইরা এক, অতি ইলল পূর্বে বার পর
আরি ধ্যালা ও প্রত্তর্গাইরা এক, অতি ইলল প্রান্তিররা
ভারের প্রতি পরিতৃক্ত ইইরা এক, অতি ইলল প্রান্তিররা

বলিরাছিলেন যে, এই শ্ল যাহার উপর নিজেপ করি থে.
ভাষা তৎক্ষণাৎ ভন্মীভূত হইরা যাইবে। হে জাগানান্দ! রাব পের কণিষ্ঠা ভাগানী কুন্তীনসী তাহার ভার্য্যা ভাষার গাওঁজাত লবণনামে ভীম বিজম ছুরান্ধা মাক্ষস সাভিশর হর্জর্ব ওদেবলা ও ব্রান্ধণিগোর হিংলক। হে রাজেন্দ্র! আমরা তৎকক্ষক পীড়িভ হইরা আপুনার শরণাগত ইইলাম। রাহ্ব বলিলেন হে মুনি পুস্বগণ! আপুনাদের আর ভন্ন নাই। আপুনারা বিগভভর হইরা প্রভাগান্দ ক্ষম, আমি লবপকে বিনাশ করিব। এই বলিয়া আভাদিগকে বলিলেন হোমাদের মধ্যো কে লবণকে বিনাশ করিবে। রাজণেরা প্র রাজনের ভব্নে মহাভীত হব্রাছে। এতৎ ক্ষমণ করিরা ক্ষমন ক্ষমন, আমি প্রে. হুই রক্ষকে বিনাশ করিব: আন্ধান ক্ষমন, আমি প্রে. হুই তচ্ছু হা স্বাক্ষমারোপা শক্তম্বং শক্তস্ননঃ।
প্রাহাদৈর বাভিষেক্যামি মধুরারাজ্যকারণাৎ॥ ১৬
অনায্য চ স্থসন্তারান্ লক্ষণেনাভিষেতনে।
অনিচ্ছন্তমপি স্নেহাদভিষেক্ষকারয়ৎ॥ ১৭॥
দত্ত্বা তব্মে শরং দিব্যং রামঃ শক্তমমত্রবীৎ।
অনেন জহি বাণেন লবণং লোককণ্টকম্॥ ১৮॥
স তু সংপ্রা তচ্ছুলং গেহে গচ্ছতি কাননম্।
ভক্ষণার্থং তু জন্তুনাং নানা প্রাণিবধায় চ॥ ১৯॥
স তু নায়াতি সদনং যাবছনচরো ভবেং।
ভাবদেব পুরদ্বারি তিষ্ঠ স্বং ধৃতকাম্মুকিঃ॥ ২০॥

যোৎস্থতে স ষয়া ক্রেক্তনা বধ্যো ভবিষ্যতি।
তং হয়া লবণং ক্রেরং তদ্ধং মধুসংক্তিতম্॥ ২১॥
নিবেশ্য নগরং তত্র তির্চ যং মেহমুশাদনাৎ।
অখানাং পঞ্চাহস্রং রথানাং চ তদর্শকম্॥ ২২॥
গল্পানাং বট্শতানীহ পঞ্জীনাময়ুতক্রয়ম্।
আগমিষ্যতি পশ্চাক্তমত্রে সাধ্য রাক্ষসম্॥ ২৩॥
ইত্তের্বা মূর্দ্ধ্রবেত্রায় প্রেষয়ামাদ রাঘবঃ।
শক্রেয়ং মুনিভিঃ সার্দ্ধমাশীর্ভিরভিমন্দ্য চ॥ ২৪॥
শক্রেয়েং প্রনিভঃ বার্দ্ধমাশীর্ভিরভিমন্দ্য চ॥ ২৪॥
শক্রেয়েংপি তথা চক্রে যথা রামেশ্রুকাদিতঃ।
হত্বা মধুস্রতং মুদ্ধে মধুরামকরোৎপুরীম্॥ ২৫॥
স্মীতাং জনপদাং চক্রে মধুরাং দানমানতঃ।
সীতাপি স্তব্বের পুত্রো দ্বো বাল্মীকেরথাশ্রমে॥২৬

করিয়া কছিলেন, ছে রাহ্ব ! লক্ষ্মণ আপনার সমভিব্যাহারে থাকিয়া মহৎকার্য্য করিয়াছেন। শতহের বাক্য অবশানন্তর শক্রনিস্দন রাষচন্দ্র ভাঁহাকে শ্বকীয় ক্রোড়ে উপবেশন করা-ইয়া কছিলেন, আমি অত্যে ভোমাকে মধুরা রাজপুনে প্রভিটিত कत्रिय ; এই दिनया नक्षांगरक व्यक्तिरक क्षेत्र मध्य व्यक्ति क्ष করিতে আদেশ দিলেন। লক্ষণও অতি সত্ত্র বাবতীয় জব্য আবোজন করিলেন, পরে শক্রম মধ্রা রাজসিংহাসনে উপ-বেশন করিতে অনিচ্ছুক থাকিলেও নামচন্দ্র স্বেছ পরভয় इरेश कूनशुक बनिहानि आक्रानितिक चानक्रम कड़ारेश তাছাকে মধুরা রাজপদে অভিবেক করাইলেন। অনস্তর तामहत्व डांबाटक निया भन्न क्षानाम कतिन्ना करिटनम, जुनि **এই नव पावा ट्याक कर्छक लवगरक कव कव। लवग शृहसरका** নীর শূল রাখিরা বল্য জীব ও অপরাণর আণী বিনাপ कतिबाद निविद्ध कामने मर्गा विह्नत्व कविता भारक ; दम विभिन ংইতে যতক্ষণ প্ৰতিগ্ৰন না করিবে,তৎকালাবাধ তুমি কায়ুক ধারণ পূর্বক ভাষার অংশকার সিংহ্রারে অবস্থান ক্রিবে;

দে প্রতিনির্ভ হইরা যথন তোমাকে পুরুষারে অবলোকন করিবে, তথন জোধসংরক্ত নরন হইরা তোমার সহিত যুদ্ধ করিতে উদ্যত হইরা অচিরাৎ বিনফ্ট হইবে; অনতর সেবিনাশ প্রাপ্ত ছইলে,কানমমধ্যে মধুনামে স্ববিধ্যাত এক নগর আছে, তৃমি ভ্রমার প্রবেশপূর্বাক আমার নিদেশবর্তী হইরা পাঁচ সহত্র গজারোহী ও অযুভত্তর পদাতি সইরা অবস্থান কর, পরে আমার নিকটে আগমন করিবে। এই বলিরা প্রামান শক্রমের মন্তকাজাণ করিরা তাঁছাকে আশীর্কাদ পূর্বাক মুনিদিগের সম্ভিকাছারে প্রেরণ করিলেন। ১৬। ১৭। ১৮।

শীরাম শক্রমকে থেরপ উপদেশ দিরাছিলেন তিনিও সেই-রপ বাবতীয় কার্য্য সমাধা করিলেন, অর্থাৎ মধুত্বসরকে সমর কেতে বিনাশ করিরা মধুবানারী নগরীকে ভাষার রাজ্যানী করিলেন। একণে মধুবা নগরী মহানমুদ্ধিশালী জন পদ হইয়া উঠিল। এই সময়ে সীতা বাল্মীকির আলমপদে-চুইটা মুমুক্ত সন্তান প্রস্বাক করিলেন। সহর্বি বাল্মীকি জ্যোঠ্য নাম

মুনিস্তয়োর্নাম চক্রে কুশো জ্যেষ্ঠেহিমুক্টো লবঃ।

ক্রেণ বিদ্যাসম্পর্মো সীতাপুজ্রো বস্থবতুঃ॥ ২৭॥

উপনীতো চ মুনিনা বেদাধ্যয়নতৎপরো।

ক্রুমং রামায়ণং প্রাহ্ কাব্যং বালকয়োমুনিঃ॥২৮॥
শঙ্করেণ পুরা প্রোক্তং পার্কিত্য পুরহারিণা।
বেদোপরংহণার্থার তাবদগ্রাহয়ৎ প্রস্তঃ॥ ২৯॥
কুমারো স্বরমম্পর্মো স্কর্লবিশ্বনাবিব।

তন্ত্রীতালসমায়ুক্তো গায়ন্তো চেরতুর্বনে॥ ৩০॥

তত্র তত্র মুনীরাং তো সমাজে স্বর্নপিণো।
গায়ন্তাবভিতো দৃষ্ট্রা বিশ্বিতা মুনয়োহক্রবন্॥৩১॥
গন্ধর্কেষিহ কিমরেষু ভুবি বা দেবেষু দেবালয়ে
পাতালেষথ বা চতুর্ম্বখন্ন লোকেষু সর্কেরু চ।

আশ্বাভিশ্চিরজীবিভিশ্চিরতর দৃষ্ট্বা দিশঃ সর্বতো।
নাজ্ঞারীদৃশগীতবাদ্যগরিমা নাদর্শি নাশ্রাবি চ ॥৩২॥
এবং স্তবন্ধিরথিলৈমু নিভিঃ প্রতিবাদরম্।
আদাতে স্থমেকান্তে লাল্মীকেরাশ্রমে চিরম্॥৩৩॥
অথ রামোহখমেধাদীংশ্চকার বহুদশিশান্।
যজ্ঞান্ স্থামায়ং সীতাং বিধায় বিপুলফ্যুতিঃ॥ ৩৪॥
তিশ্বিহিতানে ঋষয়ঃ সর্বের রাজর্বয়ন্তথা।
রাক্ষাং ক্রিয়া বৈশ্যাঃ সমাজগুর্দিদৃক্ষবঃ॥ ৩৫॥
বাল্মীকিরপি সংগৃহ্থ গায়ন্তৌ তৌ কুশালবৌ।
জগাম ঋষিবাটস্য সমাপং মুনিপুস্বঃ॥ ৬৬॥
তত্রৈকান্তে স্থিতং শান্তং সমাধিবিরমে মুনিম্।
কুশঃ পপ্রচ্ছু বাল্মীকিং জ্ঞানশাক্ষং কথান্তরে॥ ৩৭॥

কুশ ও কনিষ্ঠের নাম লব রাখিলেন। দিন দিন সন্তানম্বর
শশিকলার ন্যায় উত্তরোত্তর পরিবর্জিত ও নানা বিদ্যায়
সবিশেষ বুংপত্তি লাভ করিতে লাগাল। কিয়দিবস পরে মূনি
বালকদিগের উপনয়ন কার্যা সমাধান করিয়া ভাছাদিগকে
বেদাভাগেস করাইতে লাগিলেন এবং মহাদেব পার্মতীর নিকট
যেরপ রামায়ণ বর্ণন করিয়াছিলেন,তিনিও সেইয়প তাহাদিগকে
বেদের ভাৎপর্যা জ্ঞানপ্রদান করিবার নিমিন্ত রামায়ণ
কাব্য বর্ণন করিতে লাগিলেন। অতি রপলাবণ্যমর কুমারদ্বয় স্মধুর স্বর্মপার এবং ভক্রীভালনের বিবয়ে জভান্ত নিপুণ
ছইয়া কানন ভিতরে গান করিয়া বেড়াইতে লাগিল। মুনি
গাণ স্বর্মণী কুনার দ্বয়কে নির্ভর চিতে গান করিতে দেখিয়া
বিস্মরোৎক্র লোচনে বলিভেন, গান্ধবলোকে, কিয়রলোকে
ভূলোকে, দেবলোকে, পাতালে, ব্রহ্মলোকে অথবা সম্লায়

লোক মধ্যে ঈদৃশ গায়ক কদাপি দর্শন বা কদাপি ঈদৃশ গীত শ্রবণ করি নাই। অধিল স্তুয়মান মুনিগণের সহিত সীতার তনর হুইটী বাল্মীকির আশ্রমপদে প্রম হুংখ অবস্থান করিতে লাগিল। ২৫ । ২৬। ২৭। ২৮। ২৯। ৩০। ৩১।

কিছু দিবস পরে পরম শোভামর জীরামচন্ত্র হিরক্ষী সীতা-প্রতিকৃতি নির্মাণ করাইয়া বহুদক্ষিণা সমেত অখনেধ যক্ত আরন্ত করিলেন ; মহর্রি, রাজরি, ব্রাহ্মণ,ক্ষতির, বৈশ্য প্রভৃতি যাবতীর লোক নামাদিক দেশ হইতে আদিরা সেই বজ্জহলে সমহবত হইলেন। মুনিপুলব বাল্মীকিও গীত নিপুণ কুলীলবকে সমভি-বাহারে করিয়া ক্ষিসমবেত ছামে উপনীত হইলেন। তথার কুলসমাধি বিরামে মুনিকে নির্ক্ষনন্তানে উপবিষ্ট সক্ষনি করিয়া বিবিধ কথা প্রসঙ্গে জ্ঞান শাস্ত্র বিষর সম্বন্ধে প্রম জিল্লাসা করিলেন। হে ভগবন্। এই অবিল সংসারের বন্ধন ভগবন্! শ্রেছি মিছামি সজ্জেপান্তবতো হথিলম্।
দেহিনঃ সংস্তির্ব্বন্ধঃ কথমুৎপদ্যতে দৃঢ়ঃ ?॥৩৮॥
কথং বিমুচ্যতে দেহী দৃঢ়বন্ধান্তবাভিধাৎ ?।
বক্তুমর্হসি সর্ব্বজ্ঞঃ! মহুং শিষ্যায় তে মুনে!॥ ৩৯
বালীকি ক্রবাচ।

শূণু বক্ষ্যামি তে সর্বাং সজ্জেপাদ্বর্ধযোক্ষয়ে। স্বরূপং সাধনং চাপি মন্তঃ শ্রুত্বা যথোদিতম্ ॥৪০॥ তথৈবাচর ভদ্রং তে জীবন্মক্তো ভবিষ্যসি। দেহ এব মহাগেহমদেহস্য চিদাত্মনঃ ॥৪১॥ তত্যাহস্কার এবাত্মিনান্ত্রী তেনৈব কল্লিতঃ। দেহগেহাভিমানং স্বং সমারোপ্য চিদাত্মনি ॥৪২॥

তেন তাদাস্মাপন্ধঃ স্বচেষ্টিতমশেষতঃ।
বিদধাতি চিদানন্দে তন্তাসিতবপুঃ স্থাম্॥ ৪৩॥
তেন, শংক্ষলিতো দেহী সক্ষলিগড়ারতঃ।
পুত্রদারগৃহাদীনি সক্ষলাতি চানিশম্॥ ৪৪॥
সক্ষলান্ স্থাং দেহী পরিশোচতি সর্বদা।
তায়স্তস্থাহমো দেহা অধ্যোভ্যমধ্যমাঃ॥ ৪৫॥
তমঃসন্ধ্রজঃসংজ্ঞা জগতঃ কারণং হিতেঃ।
তমোরপাদ্ধি সক্ষলানিত্যং তানসচেষ্ট্রা॥ ৪৬॥
অত্যন্তং তামসো ভূষা কৃষিকীট্ছমাপ্নুরীৎ।
সন্ধরপো হি সক্লো ধর্মজ্ঞানপরায়ণঃ॥ ৪৭॥
অদ্রমোক্ষমান্তাঃ মুখরপো হি তিন্ঠতি।
রজোরপো হি সক্লো লোকে স ব্যবহারবান্॥৪৮॥

কি প্রকারে দৃঢ়রপে উৎপন্ন ছয়, আপনার নিকট তদ্বিষয়
সহকে কিছু প্রবণ করিছে ইচ্ছা করিয়ছি—হে সর্বজ্ঞ নহামুনে! শরীরীক এই সংসারের দৃঢ়তর বন্ধন ছইতেই বা কিপ্রকারে বিমুক্ত হয়, ডৎ সমুদায় আপনার এই শিষ্যকে বলিতে সমর্থ ছয়েন। ৩৪। ৩৫। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯।

বাল্মীকি কহিলেন—হে বৎস! আমি বন্ধন ও মোক্ষ বিবরের সমন্তই ভোমার নিকট সংক্ষেপে কহিতেছি প্রবণ কর। আমার দিকট আকর্ণন করিরা আমার বর্ণিত অরপ ও সাধন যেরপ ছইবে, তুমি দেই গুলি অন্তি যতুসহকারে সংরক্ষা কর, তাহা হলৈ ভোমার মঙ্গল ছইবে, এরং জীবমুক্তি প্রাপ্ত হলৈ । দেহ সম্বন্ধনীন ব্যক্তির দেহ যেমন আপনার নর, চিদান্ধার দেহও দেইরপ জানিবে। এই দেহ মধ্যে অহলারই সর্ব্বপ্রধান ও মন্ত্রী এবং যে সমৃদার অব- ষকীর গেছ অর্থাৎ বিষরাভিমানকে আরোপিত করিয়াছে।
সেই চিদাআ কর্তৃক অভেদ যুক্ত ছইরা অচেন্টিত পরমানন্দ
সচিদানন্দের প্রতি প্রধাবিত ছয়। ঐ অছ্ছার হারা দারীরী
সমুদার সঙ্কাপত এবং সঙ্কাপারপ শৃথাদে আবদ্ধ হইরা
প্রত্র, ত্রী ও গৃহাদির উপর বাসনা হইরা থাকে। অবম
উত্তম ও মধ্যম এই ওপত্রয়যুক্ত দেছীর এ কামনা
অসম্পূর্ণা ছইলে দে অনুক্ষণ পরিতাপ করিয়া বাকে; ভমঃ
সত্ত ও রজঃ এই তিন্টা অধিল ক্যাতের অব্ভিতির কারণ
জানিবে এবং ত্যোগুলের হারা যাবভীর সন্ধরিত ছইরা থাকে;
লোক সমূহ অতাত ভ্যোগুলমর ছইলে কৃমি কীটত্ব প্রাপ্ত
ছয়। বাহারা সন্ত্রণ অলক্ষ্ক, ভাহারা ব্যক্তির নায়
ছইরা সর্বাস্থাদারক সন্নিক্টবর্তী মোক্ষ নামাজ্যের ন্যায়
অবস্থান করেন; এবং বিনি রজ্যোগুণাজ্যর করিয়া থাকেন,

পরিতিষ্ঠতি সংসারে পুরুদারামুরঞ্জিতঃ।

ত্রিবিধং তু পরিত্যক্স রূপবেতন্মহামতে ! ॥ ৪৯ ॥

সক্ত্রঃ পরমাথোতি পদমাত্মপরিক্ষরে।

দৃষ্টীঃ সর্ববা পরিত্যক্ষা নির্ম্য মন্স। মনঃ ॥ ৫০ ॥

সবাহাভ্যন্তরার্থনা সক্ত্রন্য কয়ং ক্রকঃ।

যদি বর্ষসহত্যানি তপশ্চর্মি দারুণম্॥ ৫১ ॥

পাতালস্থ্য ভূস্কু স্বর্গস্থ্যাপি তেহনঘ!।

নান্যঃ কশ্চিত্বপার্যোহন্তি সক্ত্রোপশমাদৃতে ॥ ৫২ ॥

অনাবাধেহ্রিকারে স্থে পরম্পাবনে।

সক্তরাপশ্বে ষত্রং পৌরুবেণ পরং কুরু ॥ ৫০ ॥

 সহরতত্তে নিধিলা ভাবাঃ প্রোক্তাঃ কিলানছ।।
ছিমে তত্তে ন জানীমঃ ক যান্তি বিভবাঃ পরাঃ ॥৫।
নিঃসহরো যথাপ্রাপ্তব্যবহারপরো ভব।
ক্যেসহজালক জীবো ব্রহ্মমাধারাৎ ॥ ৫৫ ॥
অধিগঙপরমার্থতামূপেত্য
প্রসভ্যপাস্য বিকল্পজালমু চৈচঃ।
অধিগন্ধ পদং তদ্ভিতীয়ং
বিত্তক্রধায় হুর্প্রচিত্রক্তিঃ॥ ৫৬ ॥

ইঙ্ শ্রীমদধ্যাত্মরামারণে উমামহেশ্বর সন্থাদে উত্তরকাণ্ডে যঠোহধারেঃ।

অন্য কোন উপায় নাই; স্বাক্ষরপো স্থলাত করিব। বাসনা থাকিলে অতীব হুঃথ ও বিবয় সম্বন্ধ বিহীন না ছইলে তাহা প্রাণ্ডির জন্য অপর কোন উপায় নাই, অতএন সক্ষণা উপান্ম করিবার নিমিত্ত সাহসে নির্ভিত্ত করিয়া ব্র্ বান হও। ৫০। ৫১। ৫২। ৫০।

হে অন্দ! এই সমুদার জগৎ সংসার সন্ধন্ন স্থা আবদ কিন্তু সূত্র বিচ্ছিত্র ছইলে ঐ বিভব কোধার প্রভান করে অবগত নহি। অভএব সন্ধন বিছীন হইয়া বধা প্রাপ্ত ব্যবহার কর, এবং সন্ধান আকালিন ছিল ছইলে জীব সমূহ পরন্ত্রমত্ত্ব প্রাপ্ত হইর। সহসা সংশ্র জাল বিচ্ছিল করিরাও অধিগত ব্রম্ভন্ত প্রাপ্ত হইর। সেই অধিভীর পর্ম ব্যারের পদপ্রাপ্ত হও এবং অস্থান্দ্র্যা স্থানের নিমিন্ত ব্যাকার চিত্ত র্ভিত্ব সাদৃশ্য প্রাপ্ত হও। ৫৪। ৫৫। ৫৬।

> रे विकास गांच जा माद्र के का बहु के बंद महार प्र के कुत्र कारण बहु के स्थान है।

मश्रुरमा>शायः।

বাল্মীকিনা বেথিতোহসো কৃশঃ সদ্যো গতজমঃ।

অন্তর্যুক্তো বহিঃ সর্ব্বমনুক্র্বংশ্চচার সঃ।। ১।।

বাল্মীকিরপি তৌ প্রাহ্ সীতাপুজো মহাধিয়ো।

তত্র তত্র চ গায়স্বো পুরে বীথিয়ু সর্বতঃ॥ ২॥

বামস্যাত্রে প্রগান্তাং শুক্রামুর্যদি রাখবঃ।

ন প্রাহং বৈ মুবাভ্যাং তদ্যদি কিঞ্ছিৎপ্রদাস্যতি॥৩॥

ইতি তৌ চোদিতৌ তত্র গায়মানো বিচেরতঃ।

যথোক্তং ঋষিণা পূর্বং তত্র তত্রাভ্যগায়তাম্॥ ৪॥

তাং স শূল্রাব কাক্ৎস্থঃ পূর্ব্বচর্যাং ততন্ততঃ।

অপূর্ব্বপাঠজাতিং চ গেয়েন সমভিপ্রতাম্॥ ৫॥

বালয়ো রাঘবঃ প্রুডা কৌত্হলমুপেয়িবান্।

অথ কর্মান্তরে রাজা সমাহুয় মহামুনীন্॥ ৬॥

কুশ বাল্যাকি কন্থক উপদিন্ত ছইলে সদ্য বিগত জ্ঞম ও
নিধিধ্যাসনামন্ত সাধন-সম্পন্ন ছইরা চারিদিকে বিচরণ করিতে
লাগিল। মহর্ষি বাল্যাকি ধীশকিসম্পন্ন, সুরাগা-ভাল-লন্নবিশুক্ত, সঙ্গীতনিপূণ, সর্ব্বে গীন্তার্থান সীতা পুরুষরকে
কহিলেন, ভোষরা জীরাম স্থাপে সংগীত কর, কিন্তু ভিনি
যদি স্নেছ পরভন্ত ছইলা কিঞ্চিৎ অর্থ প্রদান করেন, ভাষা
গ্রহণ করিবে না। কুমারদার ঋষি কর্তৃক এইরপ আদিন্ত ছইরা
সংগীত করিতে করিতে জীরাম স্থাপে উপনীত ছইরা গান
করিতে আরম্ভ করিল। ১। ২।০।৪। ভূর্যাবতংশ
বামচন্দ্র বালকছরের গীতের অপুর্ব্ব পঠন রীতি ও ভাষাদিব্যের
স্থাপ্র কঠন্থর প্রবণ করিয়া বার পর নাই ক্রেভ্লাক্রান্ত
ছইলেন; জানন্তর ন্রব্যান্ত্র রামচন্দ্র জ্বন্য কান্ত্রের নান্তর, বালনান্ত
গণকে, এবং পৌরাণিক ও ব্যাকরণবিদ্ বত রন্ধ বালক

রাজ্ঞানৈচন নরব্যান্ত্র: পশুক্তাংশৈচন নৈগমান্।
পৌরানিকাংশছকবিদো যে চ বৃদ্ধা দ্বিজ্ঞান্তয়ঃ ॥ ৭ ॥
এতান্ সর্ব্বান্ সমান্ত্রয় গায়কৌ সংপ্রবেশয়ং ।
তে সর্ব্বে হৃষ্টমনসো রাজ্ঞানো ব্রাহ্মণাদয়ঃ ॥ ৮ ॥
রামং তৌ দারকৌ দৃষ্ট্রা বিশ্মিতা ছানিমেষণাঃ ।
অবোচন্ সর্ব্ব এবৈতে পরস্পরমধাগতাঃ ॥ ৯ ॥
ইমৌ রামস্য সদৃশো বিম্বাদ্বিদ্ধমিবোদিতো ।
জাটিলো যদি ন স্থাতাং ন চ বক্ষলধারিণো ॥ ১০ ॥
বিশেষং নাধিগচ্ছামো রাঘ্বস্থানয়োন্তদা ।
এবং সম্বদ্ধাং তেষাং বিশ্মিতানাং পরস্পারম্ ॥ ১১
উপচক্রমতুর্গাতুং তাবুভো মুনিদারকো ।
ততঃ প্রবৃত্তং মধুরং গান্ধব্বিমতিমানুষম্ ॥ ১২ ॥

ছিলেন, সকলকেই আহ্বান পূর্বক গীত নিপুণ কুলীলব সমতিব্যাহারে সভা মণ্ডপে প্রবেশ করিলেন, এবং রাজন্য-গণ ও ত্রাহ্মণবর্গ সামন্দচিতে সাজান্থলে আসির। উপনীত হইলে, রামচজ্ঞ বালকবরের প্রতি অনিমেবলোচনে অবলোকন করিয়া সাতিশর বিশ্বিত হইলেন এবং সকলেই পরস্পর বলিতে লাগিলেন, যদি এই বালক ছুইটীর মন্তকে জটাভরণ এবং পরিধান বলকল না থাকিত ভাহা হইলে ইহাদিগকে শ্রীয়ামচন্ত্রের প্রতিবিশ্ব বলিয়া কিছুতেই সংশ্বর থাকিত না। আহা ! রামচন্ত্র ও বালকর্মের মধ্যে কিছুই প্রতেশ লক্ষিত হইতেছে না। সক্ষান্থ সমুদ্ধর লেক্ষে এই রূপ বলিতে বলিতে বিশ্বরাপর হইতে লাগিলেন ইত্যবস্বর মুনি বালক্ষর অলোকিক মধুমর সংগীত আরক্ষ করিল। ৫ । ৬ । ৭ । ৮ । ১০ । ১০ । ১০ ।

শ্রুণ তন্মধ্বং গীতমপরাত্নে রঘ্তনঃ।

উবাচ ভরতং চাভ্যাং দীয়তামযুতং বস্থ ॥ ১৩ ॥

দীয়মানং স্বর্ণস্ত ন তজ্জগ্রহস্তদা।

কিমনেন স্বর্ণের রাজনো বন্যভোজনো ? ॥ ১৪ ॥

ইতি সংত্যজ্য সংদত্তং জগ্যহুর্মুনিসন্নিধিম্।

এবং শ্রুণ্ডা তু চরিতং রামঃ স্বস্যৈব বিস্মিতঃ।।১৫॥

স্ঞাত্বা সীতাকুমারে তৌ শক্রন্থং চেদমত্রবীৎ।

হন্মন্তং স্ক্ষেণশ্চ বিভীষণমথাঙ্গদম্।। ১৬ ॥

ভগবন্তং মহাত্মানং বাল্মীকিং মুনিস্তমম্।

আনয়ধ্বং মুনিবরং সঙ্গীতং দেবসন্মিতম্।। ১৭ ।।

অস্যান্ত পর্বদো মধ্যে প্রত্যাহং জনকাত্মজা।

করোতু শপথং সর্বের জানস্ত গতকল্পবাম্।। ১৮ ॥

রঘুনাথ প্র শিশু হুইটার মনোছর গীত প্রবণ করিয়া ভরতকে কছিলেন, 'ইংলিগাকে অযুত অর্ণ মুদ্রা প্রদান কর।' এই
প্রকার আদিন্ত হইরা ভরত স্বর্ণ মুদ্রা প্রদান করিছে গমন
করিলেন,কিন্তু বালক দ্বর প্রত্যাখ্যান করিয়া কহিল, হে রাজন!
আমরা বন্য-কল-মূলাশী, সুবর্ণ মুদ্রা লইরা কি করিব? এই
বলিয়া ভাছারগ বাল্মীকির নিকট প্রছান করিল। বামচন্ত্র
তাহাদিগের উদ্ধা চরিত কথা শুনিয়া বারণর নাই বিশ্বর্গাপর
হইলেন। ১০। ১৪।১৫।

অনন্তর রামচন্ত্র প্র ছইটা বালককে অভাগিনী বনবাসিনী
নীতার গল্ঞান বলিয়া জানিতে পারিলেন এবং শক্রম,
হন্মান, ক্ষেণ, বিজীরণ ও অজনকে, বলিন্ত্রন যে, এই
বালকেরা নিশ্চয়ই নীভার সন্তান, অভএব একনে ভগরান্
মহাত্মা, মুনিসভান বাল্যাকির সমভিবাগহান্ত্র সীজাতি
আনরন কর; এবং নীভা তাঁহার বিভন্ন চরিত্র সকলকে

সীতাং তদ্বচনং শ্রুছা গতাঃ সর্বেহতিবিশ্বিতাঃ।
উচুর্যথোক্তং রামেণ বাল্মীকিং রামপার্বলাঃ। ১৯॥
রামস্ত হৃদ্গতং সর্ববং জ্ঞাছা বাল্মীকিংরব্রবীং।
শ্বঃ করিষ্যতি বৈ সীতা শপথং জনসংসদি।। ২০॥
যোষিতাং পরমং দৈবং পতিরেব ন সংশারঃ।
তচ্ছুছা সহসা গন্ধা সর্বে প্রোচুমু নের্ববচঃ।। ২১॥
রাঘবস্যাপি রামোহপি শ্রুছা মুনিবচন্তথা।
রাজানো! মুনয়ঃ! সর্বেশ শৃণুধ্বমিতি চাব্রবীং॥২২৯
সীতায়াঃ শপথং লোকা বিজ্ঞানস্ত শুভাশুভম্।
ইত্যুক্তা রাঘবেণাথ লোকাঃ সর্বের্দিদৃক্ষবঃ ২৩
সীতাপ্রবেশনং দৃষ্ট্বা সর্বং সম্যোহিতং জগং।
রামস্ত স্বর্বং জ্ঞাত্ত্ব ভবিষ্যংকার্য্যগেরাবা। ৪৮

অবগত করাইবার নিমিত্ত সভামধ্যে শপথ করুন, তাই।
হইলে পৃথিবীস্থ সম্পর লোক তাঁহাকে নিজ্পাপী বলিব
অবগত হউক। সভাস্থ লোক সমুদার রামচন্দ্রের বাক্য ও
গীতার বিষর শ্রবণ করিয়া সাতিশার বিশ্মিত হইলেন:
অনস্তর শ্রীরামের পারিষদগণেরা তাঁহার অভিপ্রার্থ
বাল্মীকিকে কছিলে, বাল্মীকি রামচন্দ্রের হৃদয়গত ভাব
বুরিতে পারিয়া কহিলেন, সীতা এই সভামধ্যে শপথ করিবেন।
১৬০১৭ ১৮০ ১৯০২০।

সভাদ্য যাবতীয় লোক মছর্বির বাক্য প্রবণ পূর্বক সহসা গাংলাখান পূর্বক কহিলেন, ব্রীলোকের পাকে পতি প্রমানেবতা, ভাষার কোন সন্দেহ নাই; রামচন্দ্রও মুনি বাক্য বিন্যাস আকর্ণন করিয়া সভাদ্য সকলকে সম্বোধন করিয়া কহিলেন, ছে বাহন্যগণ ও মুনিগণ। আপ্রনারা প্রবণ করন, আপ্রারা প্রমানকহিতার শপ্ত প্রবিদ্যা তাহার ধর্মাধর্ম মিগ্র করন। এই বলিরা তিনি সভাদ্ধ যাবতীয় লোকের প্রতি দৃষ্টিগাত করিছে গাগিলেন। ব্রাহ্মণ

বান্ধাণঃ ক্ষতিয়া বৈশ্যাঃ শ্দ্রাশ্চেব মহর্ষাঃ।
বানরাশ্চ সমাজগা; কোত্হলসমন্বিতাঃ ॥ ২৪ ॥
ততাে মুনিবরস্তৃ প্র সাতিঃ সমুপাগমং।
ভাগ্রতন্ত্রম্বিং কুত্যা যান্তী কিঞ্চিদবাগ্র্যালী ॥ ২৫ ॥
কৃতাঞ্জলির্বাপাকঠা সীতা যজ্ঞং বিবেশ তম্।
দৃষ্ট্যা লক্ষ্মীমিবায়ান্তাং ব্রহ্মাণমসুযাযিদীম্ ॥ ২৬ ॥
বাল্মীকেঃ পৃষ্ঠতঃ সাঁতাং সাধ্বাদাে মহানভূং।
তদা মধ্যে জনোহস্য প্রবিশ্য মুনিপুঙ্গবঃ ॥ ২৭ ॥
সীতা সহায়াে বাল্মীকিরিতি প্রাহ চ রাহণ্য্।
ইয়ং দাশরথে ! সীতা স্বত্রতা ধর্মাচারিণী ॥ ২৮ ॥
ভাপাপা তে পুরা ত্যক্তা মমাক্রমসমীপতঃ ।
লোকাপবাদভীতেন ত্র্যা রাম ! মহাবনে ॥ ২৯ ॥
প্রাত্যয়ং দাস্যতে সীতা তদসুজ্ঞাতুমইসি ।
ইমো তু সীতাতনয়াে ইমো যমলজাতকো ॥ ৩০ ॥

করির, বৈশ্য, শুদ্র, বানর ও মছর্বি প্রভৃতি সমস্ত লোকই রাঘ্বের কথা শুভিগোচর করিরা বার পর নাই কেতৃহলাক্রান্ত হইলেন। অনন্তর মহর্বি বাল্মীকি সীড়াকে সম্ভিব্যাহারে করিরা সভা হলে উপনীত হইলে, সীভা মুনিকে অপ্রবর্তী করিয়া নীরক্তিনাগামন করিতে লাগিলেন এবং বন্ধা- গুলি হইরা বাম্পান্তল লোচনে বজ্জন্তলে উপনীতা হইলেন। পরমন্ত্রের অনুগানিনী লন্ধীকে বাল্মীকির প্রভাব পালপ্র আগমন করিতে সন্দর্শন করিরা সভা সাধ্বাদে পরিপূর্ণা হইল, পরে মন্ধানুনি বাল্মীকি সীড়া সম্বেভ বজ্জন্তলে উপনীত হইরা রাম্বচক্রাকে কহিলেন, হে দালর্বে প্রাণ্থনীত হইরা রাম্বচক্রাকে কহিলেন, হে দালর্বে প্রাণ্থনীর স্ক্রভাবলন্ধিনী ক্রমন্ধ রন্ধিনী সীড়াকে প্রহণ কর্মন; হে রাম্বচক্রা আগদিন লোকাপ্রাদ্ধ তরে এই নিস্পাণা ক্রমক ছিড়োকে পুর হইতে বহিন্ধত করিরা মনীর আক্রম সরিধানে

স্থতো তু তব তুর্ধর্ষো তথ্যমেতদ্ববীমি তে।
প্রচেতদোহহন্দশমঃ পুজো রঘুক্লোদ্বই ! ॥ ৩১ ॥
শন্তং ন স্মরাম্যক্তং যথেমো তব পুত্রকোঁ।
বহুন্ বর্ষগণান্ সমাক্ তপদ্দর্যা। মন্না কৃত। ॥ ৩২ ॥
নোপান্নীয়াং ফলং তস্তা তৃষ্টেয়ং যদি মৈথিলী।
বাল্যীকিনৈবমুক্তন্ত রাঘবঃ প্রত্যভাষত ॥ ৩৩ ॥
এবমেতন্মহাপ্রাক্ত ! যথা বদসি স্ব্রত্ত ! ।
প্রত্যেয়া জনিতো সহং তব বাকৈর্কিলি হৈঃ ॥৩৪॥
লক্ষায়ামপি দত্তো মে বৈদেহা প্রত্যেয়া মহান্।
দেবানাং পুরতন্তেন মন্দিরে সংপ্রবেশিতা ॥ ৩৫ ॥

পরিত্যাগ করিয়াছিলেন। শীতা আপনার প্রত্যক্স উৎপাদন করিছেছেন, আগনিও ভাষা অবগত হইতে নক্ষম হয়েন; এই সীতা গঠিজ ধমজ সন্তান দ্বর আপনারই । ২১।২২ ৷২৩। ২৪।২৫ ৷ ২৬ ৷ ২৭ ৷ ২৮ ৷ ২৯ ৷ ৩০ ৷

হে রযুক্লধ্বন্ধর ! জামি লপথ করিরা বলিতেটি যে, এই ছইটী আপানারই ছন্ধর্ম তনর—হে রামচন্দ্র! আমি বহুকাল ব্যাপিরা ওপায়চরণ করিয়াছি জানিবেন, অভএব আমি মিথ্যাকে কথন আত্রর প্রদান করি না, এই পুত্রন্ধর আপানারই, আমার বাক্য কথনই মিথ্যা নহে; যদি মিথিলা রাজকন্যা কোনরণ দোষ করিয়া থাকেন, তথাপি তাহার প্রতি ওরপ করা কোন মতেই কর্ত্তব্য হয় নাই। বালীকি এই প্রকার কহিলে রাঘব তাহাকে বলিলেন, হে মহাপ্রাক্ত ! আপান সমস্তই কহিলেন, এবং আপানার শাহম প্রতি বাক্যে আমার সম্পূর্ণ বিখাসও জনিয়াছেন হৈ মুনে! লন্ধার বিদেহ পুত্রী অগ্নিমধ্যে প্রবেশ করিয়া আমার বিধান উৎপাদন ও দেবতানিগের সম্মুণে ভিনি ক্ষিত্র ইবো প্রবেশ করিয়া আমার বিধান

সোজা বিশ্ব কাৰ্য বিশ্ব কাৰ্য বিশ্ব বিশ্ব

নাগেলৈ প্রীয়মাণং চ দিব্যদে হৈরবিপ্রভম্।
ভূদেবী জানকীং দোর্ভ্যাং গৃহীত্বা স্লেহসংযুকা ॥৪২॥
স্থাগকং তাম্বাকৈনাং আসনে সম্মবেশরং।
সিংহাসনন্থাং বৈদেহীং প্রবিশন্তীং রসাক্তলম্ ॥ ৪৩॥
নিরস্তরা পুস্পর্ষ্টির্দিব্যা সীতামবাকিরং।
সাধ্বাদশ্চ স্থমহান্ দেবানাং পরমান্তুক্তঃ।। ৪৪॥
উচুশ্চ বহুধা বাচো হান্তরীক্ষণতাঃ স্থরাঃ।
অন্তরীক্ষে চ ভূমো চ সর্বে স্থাবরজঙ্গমাঃ ॥ ৪৫॥
বানরাশ্চ মহাকায়াঃ সীতাশপথকারণাং।
কেচিচিন্তাপরান্তস্থাঃ কেচিন্ধ্যানপরায়ণাঃ ॥ ৪৬॥
কেচিন্দ্রামং নিরীক্ষন্তঃ কেচিৎসীতামচেত্সঃ।
মুহুর্তুমাত্রং তৎসর্বং ভূক্ষীস্থুক্তম্চেত্নম্॥ ৪৭॥

হে একাণ ! জনক ছহিতা নিষ্পাপা হটলেও আমি লোকা-প্রাদ ভবে তাঁহাকে পরিস্যাগ করিরাছিলাম, কিন্ত चात्रिक कामारक कमा कतिएक ममर्थ इराम; क्नीमर আমার ঔরসে জন্মগ্রহণ করিয়াছে, যাছা হউক, একণে আমার তথ্মতি জানকী প্ররার লপথ করিরা জগমাওলে व्यविष्ठि पूर्वक मानम हिला इडेम्। डेश्कर्शक्त मह-আক প্রভৃতি দেবতারা জীরামচন্দ্রের অভিপ্রায় অবগত হইরা बचाटक व्यवस्त्री करिया व्यागमन कतिरलन। कही छः करन প্ৰজা সমাগম অৱস্থোকন করিয়া কেবিয় বাসিনী বাস্পা-क्रम्यी अत्यारममा जनकष्ट्रिका क्रकाक्षमिल्हि कहिटल লাগিলেন, আমি যেমন মনোমধ্যে রাম ভিত্র অন্যক্ষে ক্ষম চিন্তা করি নাই, মাজা বস্থারা আমার পাভাল প্রবেশ क्ता (यम क्रिक्रज़र्ग शथ धारान कतिए मन्दी इस; সীতা এইরপে **শপ্**থ করি**তেছেল** ইতি মধ্যে **ভা**হার নিমিত্ত অতি অদ্ভুড, দিবা, অভাত্তম সিংহাসন ভুডন ছইডে প্রত্যক্ত উখিত হইল। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০। ৪১।

লোক সমুদারের আশ্চর্যা উৎপাদনের জন্য সীতার কলেবর অর্থার ন্যায় দীন্তি ধারণ করিল এবং পৃথিবী দেবী স্নেছ পরভন্তা হইরা তাঁছাকে প্রছণ পূর্বাক অগত কহিতে কছিতে তাঁছাকে আগনে উপবেশন করাইয়া, রসাতল মধ্যে প্রবেশ করিলেন; সাক্ষাৎ লক্ষ্মী সীতাকে এইরপ অবস্থাপর হইলে অর্গ হইতে অবিরল কুসুম বর্ষণ হইতে লাগিল এবং দেবতারা যার পর নাই আমান্দিত চিত্ত হইয়া অভভূ সাধুবাদ চারিদিকে বিকীপ করিতে লাগিলেন। অন্তরীক্ষম্থ স্বর সমূহ 'ছে সীতে! আপলার এরপ্রস্থার্যা অযোগা।' ইত্যাদি নানাবিধ বাক্য কছিতে লাগিলেন। কি অন্তরীকে,কি পৃথিবীতে স্থাবর অক্ষম সমুদার লোক প্রে প্রকার কছিতে লাগিল। ৪২। ৪৬ ৪৫।

দীভার শপথ হৈছু মহাকাল বাদরদিবোর মধ্যে কেছ বা থারপ কথা বলিভে লাগিল—কৈছ বা'জানকী কোথার গামন করিলেন', ইত্যাকার চিন্তা করিতে লাগিল—কেছ বা ভাঁহার পাভাল গামন কালিম রূপ ধ্যান করিতে লাগিল—কেছ বা রামচন্দ্রের প্রতি লক্ষ করিতে লাগিল—কেছ বা বেন সাতা প্রবেশনং দৃষ্ট্র। সর্বাং সম্মেছিতং জগং।
রামস্ত সর্বাং জ্ঞাতিত ভবিষ্যৎকার্যগোরবৃষ্ ॥ ৪৮ ॥
অজানমিব ছঃখেন শুলোচ জনকান্তজাম্।
ব্রহ্মণা ঋষিভিঃ সার্ছং বোধিতো রম্মুনন্দনঃ ॥ ৪৯ ॥
প্রতিবৃদ্ধ ইব স্বপ্নাচ্চকারানন্দরাঃ ক্রিয়াঃ।
বিসদর্জ ঋষীন্ সর্বান্ ঋতিজ্ঞা যে সমাগতাঃ ॥ ৫০॥
তান্ সর্বান্ ধনরত্নাদ্যৈ ভোষয়ামাস ভূরিশঃ।
উপাদার কুমারো তৌ জুযোধ্যামগ্রমংপ্রভুঃ ॥ ৫১ ॥
তদাদিনিস্পৃহো রামঃ সর্বভোগের দর্বদা।
আত্রচিন্তাপরো নিত্যমেকান্তে সমুপ্রভিঃ ॥ ৫২ ॥
একান্তে ধ্যামনিরতে একদা রাঘ্রে সতি।
ভ্রাহা নারায়ণং সাক্ষাৎকৌশল্যা প্রিয়বাদিনী ॥ ৫৩ ॥

নীতাকেই দর্শন করিতে লাগিল, পরে মৃত্ত মধ্যে সকলেই অচেতনৰৎ তৃষ্টীস্থাব ধারণ করিল। রামদ্বিতা সীভার রসাতলে প্রবেশ সন্দর্শন করিয়া সম্দার জগৎ মুয় ছইল। রামচন্দ্র ভবিষ্যতের সমস্ত বিষয় জবগত হইরাও জনকাজ্মদার নিমিত প্রাকৃতজ্ঞানের ন্যায় হুঃখ ও পরিভাপ করিতে লাগিলেল এবং ব্রহ্মা ও ধবিগণ ভাষাকৈ প্রবেশ দান করিছে লাগিলেন। । ৪৬ । ৪৭ । ৪৯ । ৪৯ ।

রামচন্দ্র শ্বরাবন্দার অবগত হইরা বজের অবণিক কার্য সমাধা করিলেম, অবস্তব পরি ও পছিন্দ্র দিশকে বইলপত্তি-মাণে ধন ও রক্ত কাল করিয়া কার পর নাই সভক করিয়া বিদার করত: কুলার স্থাকে প্রতিক অংবাধ্যাপ্রীর্থ্যে প্রাথমন করিলেম। ৫০। ৫১।

একণে রামচত যাবতীয় পার্থিক করে সর্মানই প্রাপ্তা হত্তান এবং আপনার চিন্তার উৎক্তিত হর্মা প্রতিদিন

ভক্তাগত্য প্রসন্ধং তং প্রণতা প্রান্থ কৃষ্টি।

রাম ! তং অগতামাদিরাদিমধ্যান্তবর্জিতঃ ॥ ৫৪ ॥

পরমাত্মা শরানন্দঃ পূর্ণঃ পুরুষ ঈশ্বরঃ ।

জাতোহদি মে গর্ভগৃহে মম পুণ্যাতিরেকতঃ ॥ ৫৫ ॥

অবসানে মমাপ্যদ্য সময়েহভূদেঘূত্তম ! ।

নাদ্যাপ্যবোধজঃ কৃৎস্মো ভববনো নিবর্ততে ॥ ৫৬ ॥

ইদানীমপি মে জ্ঞানং ভববন্ধনিবর্ত্তকম্ ।

যথা সংক্রেপতো ভূয়াতথা বোধয় মাং বিভো ! ॥৫৭॥

নির্বেদবাদিনীমেবং মাতরং মাতৃবৎসলঃ ।

দয়ালঃ প্রাহু ধর্মাত্মা জরাজজন্মিতাং শুভাম্॥ ৫৮

বিজন ছানে উপবিষ্ঠ থাকিতেন। একদিন রামচক্র একান্তে উবেশন করিয়া ধ্যানমগ্য ছইলে প্রিরভাবিনী রামজননী কৌশল্যা তাঁহাকে সাক্ষাৎ নারারণ জানিতে পারিয়া সাভিশর ছফ্টান্তঃকরণে ও ভক্তিসহকারে আগ্যমন পূর্বক সঁদানন্দ রামচক্রকে প্রথাম পুরংমর কহিলেন, ছে রাম! ভূমি অখিল ব্রক্ষাণ্ডের আদি, নধ্য ও অন্ত বিবর্জিত; ভূমি পদ্মাত্মা, পরমানন্দ, পূর্বজন জন্মর, আ্যার প্রণ্যাধিকা প্রযুক্তই আমার লঠরমধ্যে জন্ম গ্রেছণ করিয়াছ। ছে রন্ত্রমা আমার বার্ত্বকা দলা উপছিত, ভোষারও অবভার গীলা অবলান প্রায় হইয়াছে, কিন্তু জোমার আমুখলিকতা বলতঃ এই নামানা সংসার বন্ধন ছইতে আমার কোন রূপ নিস্কৃতি ছইতেছে না; অভ্যাব হে বিভো! এই অবলাম সমন্তে ভববদ্ধন নিস্কৃতি নক্ষীর জ্ঞান বিষয়ক কিছু সংক্রিপ্ত ভল্ব আমাকে প্রমান কর্ম বিষয়ক ক্রিপ্ত ভল্ব আমাকে প্রমান কর্ম বিষয়ক ক্রিপ্ত কর্ম বিষয়ক ক্রিপ্ত কর্ম বিষয়ক ক্রিপ্ত ক্রিপ্ত কর্ম বিষয়ক ক্রিপ্ত ক্রিক ক্রিপ্ত কর্ম বিষয়ক ক্রিপ্ত কর্ম বিষয়ক ক্রিপ্ত ক্রিপ্য ক্রিপ্ত ক্রিপ্ত

मत्राज् श्वाचा अ बाज्भवादन रामक्त सम्बोह याना स्कृतिहान क्रिया निर्द्यन्यापिनी, स्वास्त्र विस्कृतस्या, ७७-नक्षणमञ्जा चीव्र गर्कशिविगीटक सम्बन्ध, (द बाटः! सावि মার্গান্ত্রেয়ে ময়া প্রোক্তাঃ পুরা মোক্ষাপ্তিদাধকাঃ। কর্মযোগো জ্ঞানযোগো ভক্তিযোগশ্চ শাশ্বতঃ ॥৫৯॥ ভক্তিবিভিদ্যতে মাতন্ত্রিবিধা গুণভেদতঃ। স্বভাবো যস্ত্র যন্তেন ওস্ত্র ,ভক্তির্বিবভিদ্যতে ॥ ৬০॥ यञ्च हिरमार ममुक्तिण मञ्चर मारखर्यस्य वा। ভেদদৃষ্টিশ্চ সংরম্ভী ভক্তো যে তামসঃ স্মৃতঃ ॥ ৬১ ॥ ফলাভিদন্ধিভোগার্থী ধনকামো যশস্তথা। অর্চাদো ভেদবুদ্ধ্যা মাং পূজ্ঞায়েৎ স তু রাজসঃ॥৬২॥ পরিশ্লিমপিতং যস্ত্র কর্ম্মনির্হরণায় বা। কৰ্ত্তবামিতি বা কুৰ্যান্তেদবুদ্ধ্যা সমাত্ত্বিকঃ॥ ৬৩ ॥ यन्खनां व्यापादित ययान्छ खनां नरा । অবিচ্ছিন্না মনোবৃত্তির্যথা গঙ্গান্থনোহন্তুধৌ। তদেৰ ভক্তিযোগস্থ লক্ষণং নিগুণস্থ হি॥ ৬৪॥ অহৈতুক্যব্যবহিতা যা ভক্তির্শ্বয়ি জায়তে। সা মে সালোক্য সামীপ্য সাষ্টি সাযুজ্যমেব বা ॥৬৫॥

ইতি পূর্ব্বে বেদসমত তিমার্গ বিষয় অর্থাৎ কর্মযোগ, জানযোগ
ও তৎপরে ভাক্তিযোগ উল্লেখ করিয়াছি। হে জননি! তম, রজঃ
ও সন্ধ এই তিনটার গুণভেদামুসারে ভক্তি তিন ভাগে বিভক্ত
হয়, অর্থাৎ মাহার যেরূপ স্বভাব, ভাহার সেই স্বভাবহারা
ভক্তি বিভিন্ন লক্ষিত হয়। যে ব্যক্তি হিংসা, লক্রর দন্ত,
পূর্তালাভাদি, ফলরূপ মাধুসর্যা অর্থাৎ পরগুণহেষ অরিমিতাদি
বিষয়ে আগ্রহ করে, সেই জামার তামস ভক্ত বলিয়া উল্লিখিত
হয়; যে ব্যক্তি অর্থ ভোগোজা, প্রহিক যলঃ ও অর্থাভিলার
প্রকাল করিয়া পাকে এবং ভেদ বৃদ্ধি, ইন্টেলাদি পূরা
স্থান সংগ্রহ করিয়া আঘাকে উপাসনা করিয়া থাকে সেই
রাজ্যস; যে ব্যক্তি পাপ বিশাশ জন্য পূজা করিয়া আমাকে
সমর্পণ করে এবং নিজন্তিহারা শান্ত কথিত অবস্তা কর্তব্য

দদাত্যপি ন গৃহুস্তি ভক্তা মৎ দেবনং বিনা।

স এবাত্যন্তিকো যোগো ভক্তিমার্গস্ত ভামিনি । ॥৬৬॥

মন্তাবং প্রাপ্ত মাতেন অতিক্রম্য গুণত্রয়ম্।

মহতা কামহীনেন স্বর্ধ্মাচরণেন চ ॥ ৬৭॥

কর্মযোগেন শস্তেন বজিতেন বিহিংসনম্।

মদর্শনস্তুতিমহাপুজাভিং স্মৃতিবন্দনৈং ॥ ৬৮॥

ভূতেরু মন্তাবনয়া সঙ্গোসত্যবর্জনৈং।

বহুমানেন মহতাং হুংখিনাম্মুকম্পয়া॥ ৬৯॥

স্বস্মানেরু মৈত্রা চ যমাদীনাং নিষেবয়া।

বেদান্তবাক্যশ্রবণান্মম নামানুকীর্ভনাৎ॥ ৭০॥

কার্য্য সমূহ সম্পাদন করে, সেই সান্ধ্রিক । ৫৮।। ৫৯।৬০।। ৬১।৬০।

আমি অনস্তগুণের অধার; যেমন জাহুণী জল সাগং
নধ্যে মিলিত হইলে অভেদ বিষয়ত্ব হয়, সেইরপ আমার গুণ
হইতে অবিচিছর মনোরতি আমাতে সংমিলিত হইয়া অভেদক্
প্রাপ্ত হয়। হে মাতঃ! ভক্তিযোগ ও নিগুণের লক্ষণ
ঠিক ঐরপ জানিবেন। বিনা কারণে আমার উপর ধে
অব্যবহিতা ভক্তিই অনিরা খাকে সেই ভক্তি মুক্তি আমার
সামীপ্য, অরপতা ও সাধুজ্য প্রাপ্ত হয়; যিনি আমার সেবা
নিরত হইয়া মোক্ষাভিলাধী হয়েন, তিনি আমার প্রেরত
ভক্তা হে ভামিনি! আমার সেবা না করিলে ভক্ত,
কাছাকেও গ্রহণ করেন না। তিনি ভক্তি যোগ্যারা মারা
অতিক্রম করিয়া, অতি মহৎ, কাম বিহীন, নিজ্য, নৈমিতিকরণ
সর্ক্ষণাচরণেও মলৈক্য প্রাপ্ত হয়েন। ১৪ । ৬৫ । ৬৬ । ৬৭ ।

যিনি কর্ম-যোগ সাধন করিয়া থাকেন, হিংসা বিবহিত হইয়া পূলা, ভতি ও বন্দনানি করিয়া থাকেন, ভিনিই আমার সাক্ষাংকার লাভ করিয়া থাকেন, আমাকে চিন্তাপথে রক্ষা করিছে ছইলে চুঞ্চসল পরিহার, অনত্য বিস্ক্রেন, মহৎ বাজিদিয়ের বভ্যান, ছংখীদিগ্রের প্রতি দয়া, আপনার নমানাবহাপমদিগের সহিত মিজতা, ব্যনির্ম, প্রাণারাম

সংসদেশ জিবেনৈর ফ্রং পরিবর্জনাৎ।
কাজ্জ্যা মম ধর্মস্য পরিশুদ্ধান্তরো জনঃ॥ ৭১॥
মদ্গুণপ্রবণাদের যাতি মামঞ্জ্যা জনঃ।
যথা বায়ুবশাৎ গন্ধঃ স্বাঞ্জ্যাদ্ত্রাণমানিশেৎ॥ ৭২
যোগাভ্যাসরতং চিত্তমেবমাত্মানমাবিশেৎ।
সর্বেয় প্রাণিজাতের ফ্রংমাত্মা ব্যবস্থিতঃ॥ ৭৩॥
তমজ্ঞারা বিমৃঢ়াত্মা কুরুতে কেবলং বহিঃ।
ক্রিয়োৎপর্মেনিকভেদিক্র বিয়মেনি নাম্ব। তোষণম্।
ভূতাবমানিনার্চায়ামর্চিতোহহং ন প্রজিতঃ॥ ৭৫॥

তাবন্দামর্চয়েদেবং প্রতিমাদো স্বকর্মজিঃ।

যাবৎসর্কের্ ভূতের্ স্থিতং চাজনি ন সারেৎ।। ৭৬॥

যস্ত ভেদং প্রক্রুলতে স্বাজ্বনশ্চ পরস্ত চ।

ভিন্নদৃষ্টের্ডয়ং মৃত্যুন্তস্ত কুর্যান্ন সংশয়ঃ॥ ৭৭॥

যামতঃ সর্বাভূতের পরিচ্ছিন্নের সংতিস্থ্য।

একং জ্ঞানেন মানেন মৈজ্ঞা চার্চ্চেদভিন্নধীঃ॥ ৭৮॥

চেতসৈবানিশং সর্বাভূতানি প্রাণ্ডের্ম সংশ্ভিত্য॥ ৭৮॥

জ্ঞাত্ব। মাং চেতনং শুদ্ধং জীবরূপেণ সংস্থিতম্॥ ৭৯॥

তত্মাৎকদাচিন্নেক্তে ভেদমীশ্রজীবয়োঃ।

ভক্তিযোগো জ্ঞানযোগো ময়া মাতরুদীরিতঃ॥৮০॥

নিষেবন, বেদান্ত বাক্য আকর্ণন, আমার নামসন্ধীর্ত্তন, সৎসঙ্গের সহিত সরল ব্যবহার, অহং "কর্ত্তা" এই বুজিঘারা
আমার পুজাদিতে ইচ্ছা বিধান করা, পরিগুদ্ধান্তঃ করণ
লোকের অবশ্য কর্ত্ব্যা যেমন গন্ধবহদারা বাহিত হইরা সৌরভ
নাসারদ্ধে প্রবেশ করে; ভক্রপ যে ব্যক্তি আমার চরিত্র বিষয়
শ্রবণ করে, দে আমার সাযুজ্য প্রাপ্ত হয়। ৬৮। ১৬৯ ।৭০।

যে চিত নিরন্তর যোগাত্যানে আসক্ত হয়, সেই
প্রমাত্মায় প্রবিষ্ট হয় : হৈ মাতঃ! আমি সর্ক্তিই চেতন রূপে
বিরাজনান আছি, স্তরাং প্রাণি সমুদার অন্যপ্রহণ করিবা
মাত্র আমি তাহাদিগের চেতন সম্পাদন করিবা থাকি ; ছে
অছে! আমাকে সর্কভূতের চৈতন্য সম্পাদক আনিরা
বিমৃচ ব্যক্তিরা গান্ধপুশধুশাদিবারা পূজা করিরা আমার
সভোষ উৎপাদন করে না; সর্ক্তপ্রাণির অপনানকারী ব্যক্তি
যাবৎকাল আমার প্রতিমা পূজা না করে, তাবৎকাল আমার
পূজা বা অর্চনা কিচুই হয় না। ৭৩। ৭৪। ৭৫।

आमि मर्स्यानित मस्य अविष्ठ आहि, बहेंगे लाक যতদিন না আপন শাতি পথে আনয়ন করে, অর্থাৎ অবগত না হয়, তদৰ্ধি পুলাদিতে তাহার অধিকার নাই। যে ব্যক্তি আপনার এবং অপারের মধ্যে ভিন্ন জান করে, ঐ ভেদ দৃষ্টি বশতঃ তাহার মৃত্যু ভন্ন উপস্থিত হয়, তাহাতে কোন गश्मत्र नारे; सामार्क ७ मर्यां थानि मत्भा शतिक्रित्रकृति সংস্থিত হইলেও অভিন্ন হাদর সর্বত্ত এক জ্ঞানে ও এক মনে সর্বাপার উপর মিত্রভাবে আমাকে অর্চনা করে আমাকে সর্বাভূতে জীবনরূপে সংস্থিত অবগত ছইয়া চেতনা প্রযুক্ত পণ্ডিত লোকে যাবভীর প্রাণীকে প্রণাম করিয়া থাকেন मिरे कार्य जाराता कमाहिए मेचन ७ जीव याचा (कानवर् প্রভেদ পরিদর্শন করেন না। হে মাতঃ ! আমি জ্ঞান যোগ ও ভক্তি যোগের সহিত প্রস্তারিত করিয়াছ। পুরুষ কেবল जिक्क (योशवादा शदिशास जान (योश व्याध इरेवाद जना जामि ভক্তি যোগে जीव नम्ह्य कमग्रह हदेशा जाहि। हर মাতঃ! আপনি; আমাকে পুত্ররূপে নিরম্বর সর্গ করিয়া আলব্যৈকভরং বাপি পুরুঞ্জ শমস্কৃতি। পুত্ররূপেণ বা নিত্যং শ্বৃত্ব। শান্তিমবাখ্যদি। শ্ৰেষ্যা নামস্য বচনং কৌশ্ল্যানন্দ্ৰসংযুত। ॥ ৮২ ॥ तामः गन। कृति शांका किया मःमात्रक्रमम्। অতিক্রম্য পতীক্তিভ্রোহপ্যবাপ পরমাৎ গতিম্ ॥৮৩॥

|কৈকেয়ী চাপি যোগং রযুপতিগদিতং পূর্বমেবাধিগম ততে। মাং ভক্তিযোগেন মাতঃ ! সক্ষ হাদিছিত্য ৮১ শ্রদ্ধাভক্তিপ্রশাস্তা হাদি রঘুতিলকং ভাবয়স্তী গতাসুঃ। গত্বা স্বৰ্গং ক্ষুবন্তী দশরথসহিতা মোদমানাবতক্ষে মাতা জ্ঞীলক্ষণস্তাপ্যতিবিমলমতিঃ প্রাপ ভর্তুঃ সমীপম্

> ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সন্থাদে উত্তরকাত্তে সপ্তমোহধ্যায় ।

শান্তিভোগ করিবেন ; কেশিল্যা রাষ্চক্তের বাক্য প্রবণ করিয়া সাতিশার আনন্দিত। ছইলেন। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯। ৮°। 1821821

दाब क्रममी (क्भना मःमोद वक्कम विक्रित कतिया क्रमय मस्या त्रामहक्ति अनुकृष शाम कत्रडः मस्त्रसः ७ उम अरे शुगद्धत्र অভিক্রম পর্বাক পরমাগতি প্রাপ্ত ছইলেন। অনস্তর কৈকেয়ী পরিতদ, ভব্তিসংযুক্ত ও অশান্ত অন্তঃকরণে রঘুনাথকে !

স্মরণ করিয়া চিত্রকূট পর্বতে গমন পুর্বক রযুক্তচুড়ামণ बामहस्रादक हिंखा कबिएक माशिरमेन, श्रद शास्ताममान অর্থ গমন করিয়া রাজা দশরখের সহিত কেলি সংযুক্ত হইয়া অবস্থান করিলেন এবং এক্ষণে অতি বিমল হৃদ্ শ্রীলক্ষ্মণ জ্ঞানী স্থমিত্রা রবুরাজ দলবংখের সঙ্গ প্রাং इरे(जन । ৮०। ৮৪।

> इंडिजीश्रमधाख्दामाद्रण छेश्राम्ट्यंद म्बाटन উত্তৰকাণ্ডে সপ্তমেহিব্যারঃ।

অফীমো২ধ্যায়ঃ।

শ্রীমহাদেব উবাচ।

অথ কালে গতে কন্মিন্
ভরতো ভীমবিক্রমঃ।

যুবাজিতা মাতুলেন ছাহুতোহগাৎ সসৈনিকং॥ ১॥

রামাজ্ঞয়া গতাস্তত্র

হত্বা গন্ধর্ব নায়কান্।

তিজ্রঃ কোটীঃ পুরে দে তু

নিবেশ্য রঘু নন্দনঃ॥ ২॥

পুক্রং পুষ্পরাবত্যাং
তক্ষং তক্ষশিলাহ্বয়ে।

অভিষিচ্য স্থতো তত্র
ধনধান্য সুহৃদ্রতো ৩০।

প্ররাগত্য ভরতো

রাম দেবাপরোহভবং ।

ততঃ প্রীতো রঘুপ্রেষ্ঠো

লক্ষনং প্রাহ সাদরম্ ॥ ৪ ॥

উভো কুমারো সোমিত্রে !

গৃহীত্বা পশ্চিমাং দিশম্ ।

তত্র ভিল্লান্ বিনির্জিত্য

দুষ্ঠান্ স্বর্বাপকারিণঃ ॥ ৫॥

অঙ্গদিচত্রকৈতৃশ্চ

মহাসত্ব পরাক্রমো ।

দ্বো দ্বে নগরে কৃত্বা

গজাশ্ব ধনরত্বকৈঃ ॥ ৬ ॥

অভিষিচ্য স্থতো তত্র

শীত্রমাগচ্ছ মাং পুনঃ ।

মহাদেব কহিলেন, অনস্তর কিছুকাল অতীত হইলে মহাবল পরাক্রান্ত ভরত খদেশ নিকটবর্তী গন্ধ বধার্থ মাতুল কর্তৃক আচত হইলে সসৈন্য বছির্গত হইরা রামাজ্ঞার ভিনকোটী গন্ধনায়ক বিনাশ করিলেন; অনস্তর তিনি পুকর এবং পুকর-বভাগ নামক নগরীম্বর ধনধান্য প্রপুরিত ও বন্ধু বান্ধব পরিবৃত্ত করিরা স্কীর প্রহর তক্ষ ও তক্ষণীলকে তথাকার রাজ্ঞ পদে অভিবিক্ত করিলেন। অনস্তর ভরত প্রভাগবর্ত্তন পূর্বক শ্রীরাম-চল্পের সেবায় নিযুক্ত হইরা রহিলেন। পরে রঘুজ্ঞেষ্ঠ

রামচন্দ্র পরম প্রীতান্তঃকরণে ও সাদরে ভ্রাতৃপারায়ণ অমুত্র লক্ষমণকে কহিলেন, ছে সেমিতে! তুমি স্থীয় পুজ্রুর সমতি-বাহারে পশ্চিমদিকত্ব সর্বাপহারী তুরাত্মা ভিল্লদিগকে জর করণানস্তর্ভুইটা নগর গজাত্ম, ধন ও রত্ম হারা বিভূষিত করিয়া মহাবল পরাক্রান্ত অভ্যন ও চিত্রকেতৃকে ভ্রথার অভিষেক পূর্বক পুনর্বার শীজ প্রত্যাবর্তন করিবে। সেমিতি লক্ষ্মণ প্রীরাম-চল্ডের আদেশ লিরোধার্যা করিয়া, হয়, হন্তি ও সৈন্যাদি

রামস্ঠাজাং পুরস্কৃত্য গজাশ্ব বলবাহনঃ॥ १॥ গত্বা হত্বা রিপূন্ সক্রান্ স্থাপয়িত্বা কুমারকৌ। সৌমিত্রিঃ পুনরাগত্য রামদৈবাপরোহভবৎ॥৮॥ ততস্তু কালে মহতি প্রয়াতে রামং দদা ধর্মপথেস্থিতং হরিম। **ज्रष्टे** नगागान् विदन्धाती । কালস্ততো লক্ষ্মণমিত্যুবাচ॥॥৯॥ নিবেদয়স্বাতিবলস্য দূতং মাং দ্রস্ট্রকামং পুরুষোত্তমায়। রামায় বিজ্ঞাপনমস্তি তস্থ মহর্ষিমুখ্যস্ত চিরায় ধীমন্!॥ ১০॥ তম্ম তদ্বচনং শ্ৰুত্বা সৌমিত্রি স্থরয়াবিতঃ।

আচচক্ষেহ্থ রামায় স সংপ্রাপ্তং তপোধনম্ 🛚 ১১ ॥ এবং ব্রুবস্তং প্রোবাচ লক্ষণং রাঘবো বচঃ। শীঘ্ৰং প্ৰবেশ্যতাং তাত! মুনিঃ সৎকার পূর্ববিকম্॥১২॥ লক্ষণস্ত^{*}তথেত্যক্ত্বা প্রাবেশয়ৎ তাপসম্। স্বতেজসা জ্বনন্তং ওং ঘ্বতসিক্তং যথানলম্। ১৩॥ সোহভিগম্য রঘুশ্রেষ্ঠং দীপ্যমানঃ স্বতেজ্যা। মুনির্ম্মধুরবাক্যেন বর্ধস্বেত্যাহ রাঘবম্॥ ১৪॥ তিখ্যৈ স মুনয়ে রামঃ পূজাং কৃত্বা যথাবিধি।

এছণ পূর্বাক যাবতীয় শক্ত বিনাশ করিলেন এবং কুমার দর্বেক তথাকার রাজ পদে অভিধিক্ত করিয়া পুনশ্চ প্রত্যাবর্তন পূর্বাক জীরামের সেবার অত্যক্ত হইলেন। ১। ২। ৩। ৪। ৫। ৬। ৭৮। এইরূপে বহুকাল বিগত হইলে,একদিন শ্ববিশেধারী কাল নির্ভ্র ধর্মামুরাগী জীরামচজ্জের সহিত সাক্ষাৎ করিবার মানসে লক্ষণ সমীপে উপনীত হইয়া কহিলেন, ছে ধীমান্। আমি পুক্ষোত্তম রামচজ্রকে দর্শন করিবার জান্য আগমন করিবারি, অভএব অভি শীজ গন্তন করিয়া শ্বিলেক্তের বিজ্ঞাপন ব্যাসচজ্জের নিকট নিবেদন করে। লক্ষ্যণদেব ভাঁছার বাক্য

শ্রবণ করিয়া অভি ক্রভ পদে জীরাম সমীপে উপনীত ছইয়া
খবির আগমন বার্তা বিজ্ঞাপন করিলেন; রযুমাথ অনুজের
বাক্যাকর্ণন করিয়া কহিলেন, হে ভাভ ! তুমি মুনিকে অভি
সমাদরে সংকার পূর্বাক শীত্র গৃহমধ্যে আনরন কর। ১।
১১।১২। লক্ষন জ্যেতির আজ্ঞা শীরোধার্য্য করিয়া
সম্ভত্তভাশনের নাার অতেজ জ্লসন্ত তপোধনকে পরম সমাদরে
গৃহাস্তান্তরে আনয়ন করিলেন; অন্তর্জ সম্ভেল, দীতিসান,
মুনিপ্লব রঘুনাথের নিকট গামন করিয়া অভি মধুর বাক্যে
রাষ্বকে বলিলেন, আপনি ভুরাজ্য অংশক্ষা অর্গরাজ্য লগতে
উদ্যোগী হউন। রাষ্চন্তর মহর্ষিকে সমাগত দেখিয়া মধোন

.

পৃষ্টানাময়মব্যপ্রো রামঃ
পৃষ্টোহথ কেন সঃ ॥ ১৫ ॥

দিব্যাসনে সমাসীনো
রামঃ প্রোবার্চ তাপসম্।

যদর্থ মাগতোহিদ

হুমিহ তৎপ্রাপয়স্থ মে ॥ ১৬ ॥

বাক্যেন চোদিত স্তেন
রামেণাহ মুনির্ব্বচঃ।

ঘল্মেব প্রয়োক্তব্যম্

আনালক্ষ্যন্ত তদ্বচঃ ॥ ১৭ ॥

নাত্যেন চৈতৎ প্রোতব্যং
নাখ্যাতব্যং চ কস্য চিৎ।

শৃণুয়াদ্ বা নিরীক্ষেদ্ বা

যঃ স বধ্যন্ত্রয়া প্রভো! ॥ ১৮॥

তথেতি চ প্রতিজ্ঞায়
রামো লক্ষ্মণম্ অবীৎ।
তিষ্ঠ স্থং দ্বারি সৌমিত্রে!
নায়াত্বত্র জনো রহঃ ॥১৯॥
যদ্যাগচ্ছতি কো বাপি
দ বধ্যো মে ন সংশয়ঃ।
ততঃ প্রাহ মুনিং রামো
যেন বা স্থং বিসন্তিভ্রতঃ ॥২০॥
যতে মনীষিতং বাক্যং
তদ্ বদস্থ মমাগ্রতঃ।
ততঃ প্রাহ মুনির্ব্বাক্যং
শৃণু রাম! যথাতথম্॥২১॥
ব্রহ্মণা প্রেষিতোহস্মীশ!
কার্যার্থে তেহস্তিকং প্রভো!।

পাযুক্ত বিধানানুসারে তাঁহাকে পুলা করিলে, মুনি তাহার অনাময় জিজ্ঞাসা করিলেন ; শ্রীরামপ্ত তাঁহার কুশল বার্তা জিজ্ঞাসা করিলেন। অনস্তর শ্রীরামচক্র দিব্যাসনে উপবেশন করিয়া ওপোধনকে বলিলেন, আপনি এথানে যাহার নিমিন্ত আগমন করিয়াছেন ভবিষয় আমার নিকট সবিস্তার প্রকাশ ককন। রামচন্দ্র এইরপ বলিলে,মুনিবর কহিলেন,আমার বিশেষ গৃঢ় রহস্য আছে, কিন্ত ভাহা অন্যের নিকট অব্যক্তব্য বলির অতি গুপ্তভাবে কহিব ; ছে প্রভা! আপনি ভিম অপর। কেইই ভাহা শ্রবণ করিবে না বা আপনি কাছাকেও বলিবেন না। স্বীকার ক্রন্স, যে, যদি কেছ অন্তরাল হইতে প্রবণ বা নিরীক্ষণ করে সে আপনার বধ্য। রামচন্দ্র মহর্মির বাক্যে

প্রতিজ্ঞা করিয়া লক্ষ্মণকে বলিলেন, ছে সে মিত্রেয়! তুমি এই বাবদেশে অবস্থান কর, দেখিও কেহ খেন এই রহস্য হানে না আইসে, কিন্তু যদি কেহ উপনীত হয়, সে নিশ্চরই আমার বধ্য। পরে মুনি কহিলেন, যে কোন লোক যাউক না কেন কিন্তু তুমি বিস্কৃতিত হুইবে। ১৩ । ১৪ । ১৫ । ১৬ । ১৭ । ১৮ | ১৯ । ১০ ।

অনস্তর জীরাম কছিলেন, একণে আপনার মনোভিণবিভ বাক্য আমার নিকট প্রকাশ করুন, তৎপ্রবণে মুনি ব্লিলেন, ছে প্রীরাম! একণে আমার সভ্য বাক্য প্রবণ করুন। ছে প্রভা, হে জ্বাদীশ্বর! কোন বিশেষ কার্ব্যোপদক্ষে প্রদা আমাকে আপনার নিকট প্রেরণ করিয়াছেন। ছে দেব। ছে অহং হি পূর্বেজে। দেব!
তব পুত্রঃ পরন্তপ!॥২২॥
মায়া সঙ্গমজো বীর!
কালঃ সর্বহরঃ স্মৃতঃ।
ত্রন্মা ত্বামাহ ভগবান্
সর্বেদেবর্ষি পূজিতঃ॥২০॥
রক্ষিতুং স্বর্গ লোকস্থ
সময়স্তে মহামতে!।
পুরা ত্বমেক এবাসীলোকান্ সংহৃত্য মায়য়া॥২৪॥
ভার্যায়া সহিত স্তঃ
মামাদো পুত্রমজীজনঃ।
তথা ভোগবতং নাগমনস্তমুদকেশয়ম্॥২৫॥

মায়য়া জনয়িত্ব। তুং (की ममारको बशावतनी। मध्रिक छे छ रकी रेमर छा। হত্য মেদোহস্থিদঞ্যম্ ॥ ২৬॥ ইমাং পর্বত সম্বদ্ধাং মেদিনীং পুরুষর্যভ! পদ্মে দিব্যার্ক সংকাশে নাভ্যামুৎপাদ্য মামপি॥ ২৭॥ মাং বিধায় প্রজাধ্যক্ষং ময়ি সর্ববং ন্যবেদয়ৎ। দোহহং সংযুক্তসংভার-স্থামবোচং জগৎপত্তে ! ॥২৮॥ রক্ষাং বিধৎস্ব ভূতেভ্যো যে মে বীর্য্যাপহারিণঃ। ততত্ত্বং কশ্যপাজ্জাতো विक्थ्वि। यनक्र भ श्रु ॥ २ ॥ ॥

পরন্তপ! আমি আপনার সর্বজ্যের পুত্র অর্থাৎ ক্ষির আনেক পূর্ব্বে আপনি আমাকে ক্ষুদ্ধন করিয়াছেন। হে বীর'! আমি ত্রিগুণমরী প্রকৃতির সঙ্গ—সমুদার পদার্থ সংহারী কাল নামে বিখ্যাছ। মহামতে! একণে সর্বদেববি পুজিত ভগবান ত্রহ্মা আপনাকে বলির।ছেন যে, আপনার অবভার অবসান হইরাছে, অতএব একণে অর্গ লোক রক্ষা করিবার সমর উপস্থিত হইরাছে। পূর্ব্বে আপনি মারা ছারা অনার্ত খাকিরা অভেদরপে একই ছিলেন; অ্থ্যে আমাকে মারার স্থিত প্রস্কুপে, পরে ভোগবত অনন্ত নাগকে ক্ষুদ্ধন করিরাক্তি নত্তপের আপনি নিজ্ঞমারা ছারা স্পরাক্তমী মধুকুট্ত নামে সুইটি মহাবল্গালী দৈত্যকে ক্ষুদ্ধন করিরা পুনর্বার

তাহাদিগকে সংহার পূর্ব্বক মেদান্থি সঞ্চর অরপ এই পরত সম্বদা বস্থারা স্থান করিয়াছেন। ত্রুন অরণ সদৃশ আপনার নাভি পদ্ম হইতে আমাকে উৎপাদন করিয়াছেন, হে জগৎপতে। আপনি আমাকে প্রজ্ঞাপুঞ্জের অধ্যক্ষ করিয়া আমার উপর তাহাদিগের উৎপাদন, লালনপালনাদি যাবডীয় ভার অর্পন করিয়াছেন। আমিও প্র কার্য্য করিবার নিমিত অঙ্গীকার করিয়া অকীর কার্যা সম্পাদন করিছে—কিছু অধ্না আমার প্রজ্ঞাপীভনকারী হরাআদিগের ব্যস্থান করিয়া আমাকে রক্ষা ককন, হে ধরণীধর! আপনি প্র কারণ পরত্তি হইয়া কল্যপের উরলে বামনর্মণী হইয়া জন্ম গ্রহণ পূর্বক রাক্ষ্যণ বিনাশ করিয়া পৃথিবীর ভার দ্বীভূত

উত্তরকাপ্তম্।

কংবানিদি ভূভারং
বধা দ্রুকো গণস্ত চ।
সর্বাসূৎ সার্য্যাণাস্থ
প্রজাস্থ ধরণীধর ! ॥ ৩০ ॥
রাবণস্ত বধাকাক্ষ্ণী
মর্ত্তালোক মুপাগতঃ ।
দশবর্ষ সহস্রাণি
দশবর্ষ শতানি চ ॥ ৩১ ॥
কৃষা বাসস্ত সময়ং
ত্রিদশেষাত্মনঃ পুরা।
স তে মনোরথঃ পূর্ণঃ
পূর্ণে চারুষি তে নৃষু॥ ৩২ ॥
কালস্তাপস রূপেণ
তৃৎ সমীপ মুপাগমম্।

ততো ভূয়ৼচ তে বৃদ্ধি
যদিরাজ্য মুপাদিত্ম ॥ ৩৩ ॥

তত্তথা ভব ভদ্রং তে

এবমাহ পিতামহঃ।

যদি তে গমনে বৃদ্ধি
দেবলোকং জিতেন্দ্রিয় ! ॥ ৩৪ ॥

সনাথা বিষ্ণুনা দেবা

ভবস্ত বিগত জ্বাঃ।

চতুম্মু থস্থ তদ্ বাক্যং

শুত্বা কালেন ভাষিত্ম ॥ ৩৫ ॥

হসন্ রামস্তদা বাক্যং
কুৎস্লুস্যান্তকম ব্রবীৎ।

শুতং তব বচো মেহদ্য

মুমাপীষ্টতরং তু তুৎ ॥ ৩৬ ॥

করত: প্রণীড়িত প্রজা সমূহকে রক্ষা ককন; আপনি লকাধিপতি দশাননকে বিনাশ করিবার মানসে মর্ত্তাকে আসিরা দশসহজ্ঞ ও দশশত বংসর কাল অবস্থিতি করিতে-ছেন । ২১।২২।২৩।২৪।২৫।২৬।২৭। ২৮।২৯।

ইতিপুর্বে ত্রিদির মধ্যে অকীর অবন্ধিতির কাল সমৃতীর্ণ হটলে, আপনি নরলোকে অবতীর্ণ হইয়াছেন। আপাততঃ আপনার অবতরণ সময় প্রার অতীত হইতে দেখিয়া আমি "কাল" তাপসত্তপ পরিগ্রহ পূর্বক আপনার সমিকট্টে আগমন করিবছি। অধুমা স্বকীর মনোরম রাজ্য স্থ উপভোগা করিতে যদি আগনার বাসনা থাকে, ভাছা হইলে ছে জিতেন্ত্রির! পিতামহ বলিরাছেন, বে,আপনি ভব সৌভাগ্য সভোগা ক্ষন, নচেৎ যদি দেবলোকে গমন করিতে আগনার ইছো হর, তাহা হইলে দেবতারা বিক্লুকে প্রাপ্ত ছইরা সনাথ এবং বিগত জর ছইবেন। ৩২।৩৩। ৩৪।

কাল মূথে চত্দুৰ্থ ব্ৰদার কথা অবণ করিয়া জীরাম হাস্য করিয়া কালকে কহিলেন, আজ ভোমার বিক্ট হইতে আমার ইফুডর বাকা সমুদার শ্রবণ করিলান। কটা সন্তোষঃ পরমো জ্ঞেয়স্থাগমন কারণাৎ।
ত্ররাণামপি লোকানাং
কার্যার্থং মম সম্ভবঃ ॥ ৩৭॥
ভদ্রং তেহস্তাগমিষ্যামি
যত এবাহ মাগতঃ।
মনোরথস্ত সংপ্রাপ্তো
ন মেহত্রাস্তি বিচারণা॥ ৬৮॥
মহসেবকানাং দেবানাং
সর্কাকার্যােষু বৈ ময়া।

হে কাল ! তুমি মুমিবেশ পরিগ্রহ করিয়া আমার সহিত সাক্ষাৎ করিবার মানসে মর্ক্তালোকে আগমন করিয়াছ গুনিয়া, আমার সাতিশয় সন্তোষ লাভ হইয়াছে। একণে আমার পক্ষে স্বৰ্গ, মন্ত্য, ও পাতালের কার্য্য সর্বতোভাবে সম্পাদন করা কর্ত্তব্য; আপাভত: ভূলোকের কার্য্য অবসাম হইয়াছে, স্থতরাং এখানে আর অধিককাল অবস্থানের প্রক্রোজন নাই। ছে কাল! তোমার মঙ্গল ছউক্; আমি যে কারণ অবল্বন ক্ষিয়া মর্ত্তালোকে আগমন ক্ষিয়াছিলাম, সেই কারণেই পুন-ৰ্মার ইহলোকে আগমৰ কৰিব, তাহাতে তিলমাত্র সন্দেহ নাই। किछ देनानीर जूनि (र आभार निकर जानियाह, जाशांकहे আমার মনোরথ সিক্ষাছইরাছে, সুতরাং আমার আর क्षानक्षेत्र विष्ठाद्वव व्यवसायका नाहे। महीक्रात्रवा श्रवे क्ष (एवडा म**७नी** पिर्शद याचडीब कार्या जामात्र बाता मण्यानिक रुरेशा शांकन (ए श्रृञ**ः का**नित्व मोश्रा बाजारे नेमुनाव भनार्थ व्यवहानभीम व्यर्थार देउल्ड (र मम्छ यस व्यरमायन করিতেছ, তৎসমূলায়ই মারা কর্তৃক স্থান্তিত ও রক্ষিত, এবং 📗 স্থাতব্যং মায়য়া পুত্র!

যথা চাহ প্রজাপতিঃ ॥ ৩৯ ॥

এবং তয়োঃ কথয়তোহ্র্রাসা মুনিরভ্যগাৎ।

রাজ দ্বারং রাঘবসাদর্শনাপেক্ষয়াদৃতম্ ॥ ৪০ ॥

মুনিল্ক্মণমাসাদ্য

হর্বাসা বাক্যমত্রবীৎ।

শীস্তং দর্শয় রামং মে

কার্য্যং মেত্যন্তমাহিত্য্॥ ৪১ ॥

তচ্ছু ত্বা প্রাহ সৌমিত্রিমুনিং জ্লনতেজসম্।

রামেণ কার্য্যং কিং তেহ্দ্যকিং তেহ্ভীফং করোম্যহ্ম ? ॥৪২॥

পিতামহ প্রজাপতিও এবিষয় সন্থমে কছিয়াছেন। ৩৭। ৩৮। । ৩৯।

শ্রীমচল্ডের সহিত কালের এইরপ কথোপকখন ছইছেছে,
ইত্যবসরে প্র্রাণা মুনি রমুনাথ সম্পান গালসার লক্ষাণ রামিত
বারদেশে আসিয়া উপনীত হইলেন, অনস্তর তিনি লক্ষাণ
দেবকে সমুখে অবলোক্ষা করিয়া বলিলেন, আমি কোন
বিষয়কার্যাসুবোধে শ্রীষামচল্ডের সহিত সাক্ষাৎ করিবার
করা আগমন করিয়াছি, অভএব এক্ষণে তুমি লীজ তাঁহার
সহিত সাক্ষাৎ করাত ; রামাসুজ প্র্রালার বাকা শ্রবণ করিয়া
পাবক সভূপ ভৈতঃপুঞ্জালী মুনিকে কহিলেন, অন্য শ্রীরামের
সহিত আপনার কি কার্যাস্থাছে, শ্রার শ্রাপনার বাসনাই বা কি

রাজা কার্যান্তরে ব্যথ্যে।
মুহূর্ত্তং সংপ্রতাক্ষতাম্।
তচ্ছ তা জোধসন্তপ্তে।
মুনিঃ সৌমিত্রিমন্তরীৎ ॥ ৪০ ॥
অন্মিন্ ক্ষণে তু সৌমিত্রে !
ন দর্শয়ি চৈছিতুম্।
রামং সবিষয়ং বংশং
ভন্মীকুর্যান্ন সংশয়ঃ ॥ ৪৪ ॥
শ্রুত্বা তদ্বচনং তোরমুষে তু ব্বাসসো ভূশম্।
সর্বনাশাদ্বরং মেহদ্য
নাশো হেকস্য কারণাৎ।

নিশ্চিত্যৈবং ততা গন্ধা
রামায় প্রাহ্ন লক্ষ্মণঃ ॥ ৪৬॥
দৌমিত্রের্বচনং ক্রুড্মা
রামঃ কালং ব্যুসজ্জ্য়ৎ।
শীস্ত্রং নির্গম্য রামোহপি
দদশাত্রেঃ স্কৃত্যং মুনিম্॥ ৪৭॥
রামোহভিবাদ্য সংপ্রীতো
মুনিং পপ্রচ্ছ সাদর ।
কিং কার্য্যং তে করোমীতি
মুনিমাহ রঘুত্তমঃ ॥ ৪৮॥
তচ্ছুড্মা রামবচনং
হর্বাসা রামমন্ত্রবীৎ।
অদ্য বর্ষ সহস্রাণামুপবাস সমাপন্ম॥ ৪৯॥

অনুগ্রহ করিয়া বলুন, আমি করিভেছি; কারণ মহারাজ অপর কার্য্য সাভিশর বাত্ত, অতএব মুহূর্ত্তকাল প্রতীক্ষা করন। তজুবণে মহর্ষি জোধান্ধ হইয়া স্থমিত্রানন্দনকে কহিলেন, "রে সেমিত্রে! এই দতে বদি তুই জগদীখন রামকে না দেখাস্, তাহা হইলে রামকে বিশেষতঃ রঘুবংশ একবারে ভন্মীভূত করিয়া কেলিব, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই।" লক্ষণ মহাভেজবাম্ মহর্ষি হুর্মাসার এইরপ ভ্রাবহ বচন আকর্ণন করিয়া, তাহার বাক্যের স্বরূপত্ব বিষয় ইতল্ভঙঃ চিন্তা করিতে লাগিলেন, পরে ছির করিলেন যে, এক মহর্ষি হুর্মাসার করিতে লাগিলেন, পরে ছির করিলেন যে, এক মহর্ষি হুর্মাসার করিছে স্থানির হারণে সর্বোচ্ছেন হওয়া অপেক্ষা, অন্য আনারই মৃত্যু স্ক্রভোভাবে জ্যেরহন। এই প্রকার ক্তরিশ্বর হুইয়া লক্ষণ মৃনিকে স্বার্গের করিলেল করিয়া৷ অভি ক্রভেপ্রে

জীরামচজের সমীপে উপনীত ছইরা সমুদায় র্ভাক্ত নিবেদন করিলেন। ৪০।৪১।৪২।৪৩। ৪৪।৪৫।৪৬।

রযুকুলতিলক রামচন্দ্র অহ্জের বাক্য প্রবণ করিয়া কালকে পরিভাগে পূর্মক ভরিভ পদে বহিদ্দেশে আগমন করিয়া অতিপুত্র হুর্মাসা মূনির সহিভ সাক্ষাং করিলেন এবং যার পর নাই প্রীভাত্তঃকরণে তাঁছাকে পালাছাদি হারা অভিবাদন পূর্মক পরম সমালরের সহিভ কহিলেন, হে মুনিপুলব ! আমাকে আদেশ করুল, আপনার কি কি কার্য্য সম্পাদন করিতে হুইবে। হুর্মাসা জীরামের বাক্য ওনিয়া কহিলেন, আমি এক সহল বৎসর কাল উপবাস করিয়া আছি; এক্সণে সেই উপবাস সমাপ্ত হুইয়াছে, অভঞ্জা, হে ব্যুবর!

অতে ভাজনমিছামি

সিলং যতে রঘুতম ! ।

রামো মুনিবচঃ শ্রুড়া

সম্ভোষেণ সমন্বিতঃ দ ৫০ ॥

সসিদ্ধমন্ধং মুনমে

যথাবং সমুপাহরং ।

মুনির্ভুংজ্বান্ধময়তং

সস্তুকীঃ পুনরভ্যগাং ॥ ৫১ ॥

স্থাশ্রমং গতে তন্মিন্

রামঃ সন্মার ভাষিত্ম ।

কালেন শোক ছঃখার্ডো

বিমনাশ্চাতি বিহুলাঃ ॥ ৫২ ॥

অবাঙ্ মুখো দীনমনা

ন শশাকাভিভাষিতুম্ ।

মনসা লক্ষনং জ্ঞাত্ব।
হতপ্রায়ং রঘৃদ্বহঃ॥ ৫০॥
অয়াঙ্মুখো বস্থবাথ
তৃষ্ণীমেবাথিলেশ্বরঃ।
ততো রামং বিলোক্যাহ
সৌমিত্রিছুংখদংপ্লুতম্॥ ৫৪॥
তৃষ্ণীং স্তৃতং চিন্তুরন্তং
গর্হসং ক্ষেন্য্।
মং ক্তে তাজ সন্তাপং
জহি মাং রঘু নন্দন!॥ ৫৫॥
প্রতিং কালস্য কলিতা।
পূর্বিমেবেদৃশী প্রভো!।
ত্বির হীনপ্রতিজ্ঞে তৃ
নরকো মে প্রবং ভবেং॥ ৫৬

ইদানীং সিদ্ধান্ন ভোজন করিতে ইচ্ছা করিতেছি; রামচক্র মহর্বির বাক্য শ্রুতিগোচর করিয়া বংশরোনান্তি পরিতৃষ্ট হইলেন এবং মহর্বির নিমিত্র বংশাপয়ক্ত সিদ্ধান্ন সমাহরণ করিয়া তাঁছাকে ভোজন করাইলেন; ত্র্বাসাও অমৃততুল্য অরাদি ভোজন করিয়া পরম পরিতৃষ্ট হইরা প্রভাবর্ত্তন করিলেন। ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১।

এক্ষণে মছর্বি স্বান্তর্যে প্রতিনিয়ন্ত হইলে কালের নিদারণ বাক্য রমুনাথের ক্ষতি পথে আগক্ষ হইল এবং তৎক্ষণাৎ তিনি পোক ও ছঃথে মিক্তিগর বিমনা ও বিহলে হইলের। এক্ষণে আগনার স্বেহাপাদ অমুদ্ধ লক্ষণ নির্মানিত হইতেছে মনে যনে এই ভাবির। কিং কর্তব্য বিষুদ্ধ হইলেন। আর ইয়ারার মুখ হইতে বাক্য নিঃশরণ হর না—মন স্বর্ম দাই ক্ষতি দীনভাবাপন সুতরাং লক্ষণকে কালের রন্তান্ত কিছুই বলিতে সক্ষম হইলেন না। ৫২। ৫৩।

অনস্তদেব লক্ষণ একাওপতি রামচন্দ্রকৈ নিকা বিদন
তৃষ্ঠীন্তাৰাপর এবং নিরভিশন বিষয় সন্দর্শন করিরা কহিলেন,
হে রশুনাথ! আমার উপর আপনার অকপট স্বেছ নিবকন
আপনি মৎপ্রতি কোনরূপ অভিডাচরণ করিতে অক্ষম, এবং
ঐ স্কেছ ছেতু আমাকে বিনাশ করিতে অশক্ত—কিন্ত ভাছা না
করিলে আপনাকে প্রতিজ্ঞা ভন্ত-রূপ পালে কিন্ত হইতে হয়,
মনমধ্যে এই সমুদার বিষয় আন্দোলন করিরা আপনি
মোনাবলম্ব করিয়াছেন। হে প্রজ্ঞো আপনি আমার জন্য
সন্তাপ পরিহার প্রেক্ আমাকে বিনাশ কন্দন; কালের
গতি পরিহার প্রেক্ আমাকে বিনাশ কন্দন; কালের
গতি পরিহার অসাধ্য, ইয়া অনুষ্ঠানী —দেখুন আমার
বিষয় চিন্তা করিলে আপনি নক্ষা প্রতিজ্ঞা হইতে বিচাত হই

ময় প্রীতি র্যদি ভবেং
দ্যুকুগ্রাহ্মতা তব ।

দ্যুকুগ্রাহ্মতা তব ।

দ্যুকুগ্রাহ্মতা তব ।

মা মা ধর্মাং ত্যুক্ত প্রভো! ॥ ৫৭ ॥

দোমিত্রিণোক্তং তচ্ছু,তুগ্রা
রামণ্চলিত মানসং।
আহুয় মন্ত্রিনঃ সর্ব্রান্
বশিষ্ঠং চেদ মন্ত্রবীং ॥ ৫৮ ॥

মুনে রাগ্যনং থতু
কালস্থাপি হি ভাষিতম্।
প্রতিজ্ঞা মাত্মনশ্চৈব

সর্ব্ব মাবেদয়ৎপ্রভু: ॥ ৫৯ ॥
প্রুভ্রা রামস্থা বচনং

মন্ত্রিণঃ দপুরোহি হাঃ।
উচুঃ প্রাঞ্জলয়ঃ দর্কের
রাম মক্লিফকারিণম্॥ ৬০॥
পূর্বেমেব হি নির্দ্দিক্তং
তব ভূভার হারিণঃ।
লক্ষ্মেণন বিয়োগন্তে
জ্ঞাতো বিজ্ঞান চক্ষুষা॥ ৬১।
ত্যজাশু লক্ষ্মণং রাম!
মা প্রতিজ্ঞাতে পরিত্যক্তে
ধর্ম্মো ভবতি নিক্ষ্মলঃ॥ ৬২॥
ধর্ম্মেন হেইংখিলে রাম!
বৈলোক্যং নশুতি প্রবম্।
জং তু দর্বেশ্ব লোকস্থ
পালকোহদি রঘ্তুম!॥ ৬০

বেন এবং আমাকেও নিশ্চর নিরন্নগামী ছইতে হইবে ; যদি আমার প্রতি আপনার প্রসন্ধতা এবং অমুগ্রহ থাকে, ভাছা গইলে, হে প্রভো! শোক ও মােহ পরিভাগা করিরা আমাকে বিমন্ত কঙ্গন—হে প্রভো! কদাপি ধর্ম পরিভাগা করিবেন না, কারণ ভাগা ছইলে আপনার প্রভিজ্ঞা পালনই ক্রিরিদিগার প্রধান ধর্ম, অভএব ধর্ম বর্জন করিবেন না—করিবেন না। ৫৪।৫৫। ৫৬।৫৭।

রযুক্লভিলক রামচন্দ্র শক্ষাণের এবস্তুত বাকা প্রবণ করিরা বিচলিভ্যনা হইলেন, অনস্তর সমস্ত মন্ত্রী ও বলিষ্ঠানেরকে সভাছলে আনর্ত্তন করিরা দর্গরি ছুর্কালার আগ্রন র্ভাত্ত-কাল কর্ত্তভিত-এবং স্থার প্রতিজ্ঞা তাহালিগের নিক্ট সম্পার বহিতারে প্রকাশ করিলেন। রাম্চন্দ্র প্রমুখাৎ এই নিদার্গ্র নাক্য প্রবণ করিবানাক সুল- পুরোহিত বলিঠ ও বিশ্ববর্গ বছাঞ্জলি হইরা অরিফ্টকারী রব্নাথকে কহিলেন, হে রাজন্! আপনি ভূভার অপনোদন-কারী, অতএব পুরুর্ব ইইডেই আপনার নিমুদারই নির্দিষ্ট ইই রাছে, অর্থাৎ লক্ষণের সহিত আপনার বিরোগ সংঘটন আপনি বিজ্ঞান চক্ষু ঘারা অবগত আছেন, অতএব হে রামচক্র! আপনি লক্ষ্যুণকে শীত্তই শরিত্যাগ ককন, হে প্রভো! আপনি প্রতিজ্ঞা ল্ডেন করিবেন না, কারণ প্রতিজ্ঞা ল্ডেন করিলে ধর্ম নিজ্ঞান হর, হে রয়ুভ্রম! এই অথিল জারামধ্যে রাজ্যর ধর্ম নিজ্ঞান হর, হে রয়ুভ্রম! এই অথিল জারামধ্যে রাজ্যর ধর্ম নিজ্ঞান হর, হে রয়ুভ্রম! এই অথিল জারামধ্যে রাজ্যর ধর্ম নিজ্ঞান হরে, অধিকত্ত শাপনি সমুদ্দির লোকের ধর্ম-

মেবৈত্যক্ত্বা লক্ষাণকং
তৈলোক্যং ত্রাতু মইনি
মারো ধর্মার্থ সহিতং।
বাক্যং তেষা মনিন্দিভম্॥ ৬৪ ॥
সভামধ্যে সমাক্রাত্য
প্রোহ সৌমিত্রে মঞ্জুসা।
যথেক্টং গছহ সৌমিত্রে!
মাভূদ্ধর্মস্ত সক্রময়ং॥ ৬৫ ॥
পরিত্যাগো বধো বাপি
সতামেবোভয়ং সমম্।
এব মুক্তে রঘুল্রেষ্ঠে
তুংখ ব্যাকুলিতেক্ষণঃ॥ ৬৬ ॥

রামং প্রণম্য দৌমিত্রিঃ
শীস্ত্রং গৃহমগাৎ স্বক্ষ্।
তত্তোহগাৎসর্যূতীরমাচম্য স কৃতাঞ্জিলঃ॥ ৬৭॥
নব্দারাণি সংযম্য
মূর্গ্লি প্রাণ মধারয়ৎ।
যদক্ষরং পরং ব্রহ্ম
বাস্থদেবাখ্য মব্যয়ম্॥ ৬৮॥
পদং তৎ পরমং ধার্ম
চেতসা সোহভ্যচিন্তয়ৎ।
বায়ু রোধেন সংযুক্তং
সর্বে দেবাঃ সহর্ষয়ঃ॥ ৬৯॥
সায়য়ো লক্ষ্মণং পুর্পেস্তর্ষুবুশ্চ স্মাকরন্।

রক্ষক, অভএব ধর্ম বিনষ্ট করিবেন না; হে মহারাজ! কেবল লক্ষ্যাণকে পরিভাগে করিলেই ত্রিলোক রক্ষা করিতে সমর্থ হইবেম। রযুক্লচ্ডামনি রামচন্দ্র সভান্থ বশিষ্ঠ প্রভৃতির যথোপর্ক অনিন্দিত ধর্মার্থ নিংযুক্ত বাক্য প্রবণ করিরা স্থমিত্রা-ত্রমরকে ভংক্ষণাৎ করিবেন—হেনেমিত্রের! যথেষ্ট হইরাছে। একণে যেন ধর্মের ক্ষরপ্রপ্রেক না হর, ধর্মনিষ্ঠ সাধু ব্যক্তি-দিগের পক্ষে বিনাশ ও পরিহণর উভয়ই সম্ভূলা, অভএব ভোমার বাহা অভিকৃতি হয় ভাছাই কর। ৫৮। ৫৯। ৬০। ৬১। ৬১। ৬২। ৬৩। ৬৪। ৬৫।

রযুক্তের রায়চন্ত্র অহজের প্রতি এইরূপ কছিলে, ছঃখা ব্যাক্তিত লোচন ক্রিত্রানশন জীরায়চন্তের পদস্পতে প্রতিন পাত পূর্বাক হারত পদে অধীয় গৃহ মধ্যে গমন করিলেন। অনন্তর সরযুর তীরদেশে উপস্থিত হইয়া বছাঞ্জলি ছইরা সলিলতাহণ পূর্বেক আচমন করিলেন, ও নবদার সমূহ অর্থাৎ চক্ত,
কর্ণ, নাসিকা,মুখ, পারু, উপস্থ ও ব্রহ্মরন্ধ্র সংযম পূর্বেক শীর্ষ
দেশে প্রাণ ধারণ করিরা 'অহং অবার বাস্থদেবাখ্য' পরম ব্রহ্ম
এই অক্ষরাবন্ধরন পূর্বেক চিত্তমধ্যে তাঁছার পরম পদক্ষণ
চিত্তা করিছে লাগিলেন। স্বহর্ষি প্রভৃতি দেবভারা অনতদেবকে বারু ক্ষরক্ষ পূর্বেক ধ্যানে নিমগ্র সন্দর্শন করিয়া সাতিশর সম্ভক্ষ ইইলেন এবং কুসুম্বারা তাঁছাকে আরুত করিলেন,
পারে বাসব উল্লেক্ত ক্ষর্মবারা তাঁছাকে আরুত করিলেন,
পারে বাসব উল্লেক্ত ক্ষেত্রীর প্রভূপ ক্রিয়াই স্থর্বে প্রস্থান
নাই; অনক্ষর বেবরাঞ্জ ও দেবর্ষিয়া বিশ্ব র চতুর্ভাগ লক্ষ্যণ-

শদৃশ্যং বিবুধৈঃ কৈশ্চিৎ
শরীরং স বাসবঃ ॥ १०॥
গৃহীত্বা লক্ষাণং শক্রঃ
ফর্গলোক মথা গমৎ।
ততো বিষ্ণো শ্চত্ত্রাগং
তং দেবং হার সভ্যাঃ।
সর্কো দেবর্ষয়ে দৃষ্ট্যা
লক্ষ্যণং সমপূজ্যুন্॥ ৭১॥

দেবকে স্বর্গধামে অবলোকন করিয়া পুজা করিলেন। লক্ষ্যণ-দেব স্বর্গে আগমন করিলে, সিদ্ধলোকস্থ বোগীরা ব্রহ্মার সহিত মিলিত হইয়া যার পর নাই হর্ষেৎকুল হওত অনস্ত- লক্ষ্মাণে হি দিবমাগতে হরো
দিদ্ধলোকগতযোগিনস্তদা।
ব্রহ্মণা সহাসমাগমস্মুদ।
দেপ্তুমাহিতমহাহি রূপকম্॥৭২॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশ্বর সম্বাদে উত্তরকাণ্ডে অপ্রমোহধ্যায়ঃ।

দেবকে দেখিবার জান্য আগ্রমন ক্রিলেন। ৬৬। ৬৭।৬৮। । ৬৯। ৭০। ৭১। ৭২।

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমামহেশর সন্থাদে
উত্তরকাণ্ডে অফ্রমোহধ্যায়ঃ।

नवरमा ३ था महा

শীমহাদেব উবাচ।
লক্ষনং তু পরিত্যজ্য
রামো হুংথ সমন্বিতঃ।
মন্ত্রিণো নৈগমাংকৈচব
বিশিষ্ঠং চেদ মত্রবীৎ॥১॥
অভিষেক্যামি ভরত
মধিরাজ্যে মহামতিম্।
অদ্য চাহং গমিষ্যামি
লক্ষ্মণশ্য পদানুগঃ॥২॥
এব মুক্তে রঘু শ্রেষ্ঠে
পোর জানপদা স্তদাশ্র

মহাদেব বলিলেন, রাজীবলোচন রামচন্দ্র অনুজ্ঞ লক্ষাণকে
পরিবর্জন করণানতর নাভিশর তুঃথাকুল হইরা সচিব, নৈগার
ও কুলপুরোহিত বলিন্তদেবকে কহিলেন, অদ্য আমি মহামতি ভরতকে এই অযোধ্যা রাজ্যে অভিবেক পূর্বাক লক্ষাণের
পদচিক্ত লক্ষ্য করিয়া তাঁহার সহিত সন্মিলিত হইব। রছুকুলোহছ রামচন্দ্র স্বাক্ষমক্ষে এইরপ মনোগাত ভাব প্রকাশ
করিলে পৌরজনেরা নিরভিশর তুঃথে বিক্ষল হইরা ছিরমূল
ভক্র ন্যার ভূপুঠে নিপ্তিত হুইতে লাগিল। রাহবের

হঃখার্তাঃ পতিতা ভুবি॥৩॥
মুচ্ছি তো ভরতো বাপি
শ্রুত্বা রামাভি ভাষিত্রম্।
গর্হমামাস রাজ্যং স
শ্রোহেদং রাম সমিধো ॥৪॥
সত্যেন চ শপেনাহং
ছোং বিনা দিবি বা ভুবি।
কাজ্যে রাজ্যং রঘুশ্রেষ্ঠ !
শপে ত্বং পাদয়োঃ প্রভো !॥৫॥
ইমো কুশীলবো রাজন্!
অভিষিঞ্জ রাঘব!।
কোশলেষু কুশং বীরমুত্তরেষু লবং তথা ॥৬॥

এই নিদাকণ বাক্য ভরতের আনতিগোচর হইবা মাত্র ভরতও মৃদ্ধিত হইলেন, অতঃপর রাজ্যকে অশেব প্রকারে নিজা করিরা শীরাম সরিধানে এই নিবেদন করিলেন ছে রখুজের। অর্থামেই হউক অথবা এই ধরণীতলেই হউক, আমি আপনার অনুজ, সভ্য ও শপথ করিরা বলিভেছি বে, আপনি বিদ্যমান না থাকিলে কথনই রাজ্যাভিলাব করিনা; হে এভো! আমি আপনার শীচরণ স্পর্শ কহিছেছি, আমি কদাপি এই রাজ্যের প্রভ্যাশা করি না। হৈ রাজনং! হে রঘুবংশাবভংস

গচ্ছস্ত দূরাস্থরিতং
শক্রনায় বি ।
অস্মাকমেতদ্ গমনং
স্বর্কাসায় শৃণোতু সং॥ ৭॥
ভরতেনোদিতং শ্রুত্বা
পতিতস্তাঃ সমীক্ষ্য তম্।
প্রজাশ্চ ভয় সমিয়া
রাম বিশ্লেষ কাত্রাঃ॥ ৮॥
বশিষ্ঠো ভগবান রামমুবাচ সদয়ং বচঃ।

বীরচ্ডামণে! আমি আপনার চরণাববিন্দে এই প্রার্থনা করি যে, আপনি লব ও কুশকে এই রাজ্যে অভিবিক্ত কৰুন, অর্থাৎ মহাবীর কুশকে কোশল রাজ্য সিংহাদনে প্রভিত্তিত ককন এবং অকুভোগাহসী লবকে উত্তর রাজ্য প্রদান করুন। গে বযুবর! একণে শক্রম মথুরা নগরীতে অবস্থান করিতেছে, অতএব তাহাকে এসানে আনম্বন করিবার নিমিত্ত দ্ প্রেরণ করন, কারণ আমরা যখন সকলেই প্রস্থান করিতে বাসনা করিতেছি, তথন সে আমাদিগের প্রস্থানের বিষর প্রবণ করুক। এদিকে প্রীরামচন্দ্রের বিচ্ছেদামলে দহ্যমান প্রজাপ্ত যার পর নাই কাতর হইরা ধূলায় বিলুঠিত হইতে লাগিল; অপর দিকে ভরত প্রমুখাৎ অভি ভরকরী কথা তাহাদিগের প্রবণ বিবরে প্রবিষ্ঠ হইবা মাত্র, তাহারা ভরতের প্রতি অনিমিষ নম্বনে নিরীক্ষণ করিবা অধিকত্তর ভয় ব্যাকুল হইরা প্রভিত্তা হার প্রতিত্তা হার প্রতিত্তা হার প্রতিত্তা আমিষ

অনন্তর ভগবান্ বলিষ্ঠদেব প্রজাবর্গকে ধুদ্যবল্তিত ছইতে অবলোকন করিয়া করুণারদার্ফ চিত্তে প্রজাবংসল পশ্য তাতাদরাৎসর্বাঃ
পতিতা ভূতলে প্রজাঃ ॥ ৯ ॥
তাসাং ভাবানুগং রাম !
প্রসাদং কর্তুমইসি ।
ক্রুছা বশিষ্ঠ বচনং তাঃ
সমুখাপ্য পূজ্য চ ॥ ১০ ॥
সম্মেহো রঘুনাথস্তাঃ
কিং করোমীতি ? চাত্রবীৎ ।
ততঃ প্রাঞ্জলয়ঃ প্রোচঃ
প্রজা ভক্ত্যা রঘুবহম্ ॥ ১১ ॥
গস্তু মিচ্ছুসি যত্র
দ্বমনুগচ্ছামহে বয়ম্ ।

রামচন্দ্রকে কহিলেন—হে তাত! আপনার প্রকামগুলী ধরণীতলে নিপতিত হইরা রহিয়াছে, একবার অবলোকন করুন; হে রাজীবলোচন রামচন্দ্র! এক্কণে আপনার পক্ষে এই কর্ত্তর্য ছইতেছে থে, আপনি ভাছাদিগের মনোগত অভিপার অবগত হইরা ভাহাদিগের উপর কপা বিভরণ করেন। প্রজামগুলী কুলগুরু বলিষ্ঠদেবের এই শুভমরী কথা প্রবণ করিয়া মহানন্দে গাজোখান পূর্বক শ্রীরামচন্দ্রের পাদপদ্ম পূজা করিলে, জ্রীরামচন্দ্র ভাহাদিগের কি কার্য্য করিব প্রকাশ করিয়া বল। অনন্তর ভাহারা কৃতাঞ্জলি হইরা অতি বিনয়-মত্র ও দীনবচনে কহিল, হে রব্রশান ! আপনি হেখানে গমন করিছে বাদনা করিয়াছেন, আমরাও তথার

অন্মাকমেশা পরমা শ্রীতির্ধ**র্মো** য্**মক্ষ**য়ঃ॥ ১২। তবাকুগমনে রাম! হালতা নো দৃঢ়া মহিঃ। পুত্রদারাদিভিঃ সার্দ্ধ-মকুযামোহদ্য সর্বর্থা ॥ ১৩ তপোবনং বা স্বৰ্গং বা शूतः ना त्रध् मन्द्रमः!। জ্ঞাত্বা ভেষাং মনো দার্চ্যং কালস্য বচনং যথা ॥ ১৪ ॥ ভক্তং পোরীজনং চৈব বাঢ় মিত্যাহ রাঘবঃ।

কুথৈব নিশ্চয়ং রাম-ন্তি স্মিরোহনি প্রভু: ॥ ১৫ ॥ প্রস্থাসাস চ তৌ রামভদ্রঃ কুশীলবৌ। অষ্টো রথ সহস্রাণি সহস্রবৈদ্ধ দিন্তিতাম ॥ ১৬ ॥ ষ্ঠিং চাশ্ব সহস্রাণা-(मरेककरेया परमी वलः। বহুরত্নৌ বহুধনো হুট পুষ্ট জনারতো ॥ ১৭॥ অভিবাদ্য গতে বামং ক্লচ্ছেণ ভু কুশীলবৌ। শত্রসানয়নে দূতান্

यात शत माहे श्रिट्राय अवश अक्ष श्रिशी किन वहेरत'। रव এছুকুলভিলক রামচন্দ্র ! আপেনার পশ্চাৎ গমন করিবার নিমিত্ত আমাদিগোর হৃদরমধ্যে একান্ত অভিদাধ জন্মিগাছে ! অভএব আমরা ন্ত্রী, পুত্র ও অপরাপর বন্ধ্বান্ধর সমভিব্যাহারে অদাই আপাপনার অনুসমন করিব; হে রঘুনাথ! আপনি মহর্ষিণের দিবা আত্রম পদেই যাম, কিল্প। স্বর্গা-रवाहन्हे ककम — अथवा शूत्रमाधारे अवद्यान ककन, रगपारनरे यान, आवडा जापनात अन्हान्सामी इरेंद्र, हेराएँ विहू माज मरमह मोहै। भा १०१११११११

नवपृथ्वापनभाभि बायहरू ध्यञामधनीत अवध्यकात सत्मा-গত অভিপ্রায় অবগভছইয়া কালের বাক্য স্মৃতিমার্গে আন্দো-लन शूर्लक, भव्रमञ्च शूर्वजनरामी अज्ञांशक्क कहिलन-

আগনার অনুগান্ন করিতে ইচ্ছা করিতেছি, ইছাতে আমাদের হে মন্তক্ত প্রজ্ঞাগণ! তোমাদিগের আন্তরিক বাসনঃ স্থাসিদ্ধ করিব। মছাপ্রভূ রামচক্র ভাছাদিগকে এইরপ ক্তনিশ্চয় করিয়া **যেখানে কুশীলব অবন্থিতি** করিছে-ছিলেন সেই স্থানে প্রস্থান করিলেন। অনস্তর আট সহস্র র্থ, এক সহত্র ছন্ত্রী, ছয় সহত্র অখ এবং বহু সেনা ভাছাদিশের প্রভােককে প্রদান ক্রিদেন; এতদাতীত বছরিধ उच्च ७ প্রচুর ধন তাহ্যদিগের প্রত্যেককে প্রদান করিলেন অনন্তর কুলীলন ভাগবান রামচন্তের বিয়োগ জনিত इः स्थ माजियात कांजत रहेता ठाँहात हत्र कमल छिल मञ्कारत श्राप्तिक कतिया श्राप्तिक कितान । ১৪ I ১৫ I 1201591

> অন্তর ব্যুদ্ধন রামচন্দ্র শক্তমকে অযোধ্যামধ্যে আনয়ন করিবার নিমিত্ত অভি জত গমনশীল দুভগণকে প্রেরণ

প্রেষয়ানাস রাঘবঃ।
তে দূতাস্ত্ররিতং গত্তা
শক্রুয় ন্যবেদয়ন্॥ ১৮॥
কালস্যাগমনং পশ্চাদক্রিপুজ্রস্য চেস্থিতম্।
লক্ষণসা চ নির্যাশং
প্রাভিষেচনং চৈর
সর্বং রামচিকীর্যিতম্।
শক্রা ভদ্বিচনং
শক্রিয় কুলনাশনম্॥ ২০॥

ব্যথিতোহপি ধৃতিং লবা পুত্রাবাহুয় সম্বরঃ। অভিষিচ্য স্থবাহুং বৈ মথুরায়াং মহাবলঃ॥ ২১॥ যুপকেতুং চ বিদিশা-নগরে শক্তসুদনঃ। অযোধ্যাং ম্বরিতং প্রাগাৎ স্বরং রাম দিদৃক্ষয়া॥ ২২॥ দদর্শ চ মহাম্যানং তেজদা জ্বন প্রভন্

করিলেন, ভাহারাও রামাজা প্রাপ্ত হইরা যৎপরোনাতি জত বেগে গনন করিরা শক্রম সনিধানে উপনীত হইল, এবং অন্যোধ্যামধ্যে যে সমস্ত ঘটনা হইরাছিল তাহারা একে একে সমুদার তাঁহার সমীপে কহিতে লাগিল যে, হে ভাত! প্রথমতঃ কাল মহর্মি বেশ প্রবিশ্রহ করিয়া রঘুনাথের সহিত সাক্ষাৎ করিবার জন্য আগমন করেন, তিনি গোমচন্দ্রের সহিত নিভ্ত স্থানে কথোপকথন করিতেছেন ইতিমধ্যে অতিপুত্র মুর্কাসা লক্ষ্যণ রক্ষিত ঘারদেশে উপনীত হইরা মহারাজ রামচন্দ্রের সহিত সাক্ষাৎ করিবার বাসনা প্রকাশ করিলে লক্ষ্যণদেব রাক্ষাদেশ অনুসারে তাঁহাকে নির্ভ করাতে ক্ষোধকশায়-লোচন মুর্কাসা তাঁহার কথার কর্পণত করিলেন না স্ক্রমাৎ কাল ও রাম্যান্তের নিষ্ণে শ্রীরামচন্দ্রকে আদ্যোপান্ত রুতান্ত বর্ণন করিলেন, স্কুতরাং
শ্রীরামের প্রতিজ্ঞা অমুযারী লক্ষ্মণদেব বিবর্জিত হইমাছেন।
হে দেব! অনন্তর রহুনাথ শুরং ইহলোক পরিত্যাগ করিন
বার বাসনা প্রকাশ করিয়া কুশীলবকে রাজ্যাভিষিক্ত
করিয়াছেন। মহাবল পরাক্রান্ত শক্রম দৃত্যুংখ রহুবংশের
অবসান হইতেছে অন্তিগোচর কলিয়া যার পর নাই
ব্যথিত হইলেন বটে, কিন্ত ছালয়মধ্যে সহিষ্ণুতা অবলম্বন
পূর্বক অনভিবিশম্বে কুমারম্বরকে আহ্বান করিয়া পাঠাইলেন; পরে স্বরাহ নামে জ্যেষ্ঠ পুত্তকে মধুরা রাজ্যে অভিবিজ্ঞাকরিলেন, অনন্তর কনিই ভন্য মুপকেতুকে বিদিশার
রাজনিংছাদনে অম্বিভিত করিয়া শক্রনিস্থান মানসে মধুরনাগরী
হইতে বহির্গত হইয়া অভিসত্তর অযোধ্যা রাজ্যে আনিয়া
উপনীত হইলেন ১৯৮ ১৯ ১২০ ২২ ১ ২২ ।

মহাত্মা রামচন্দ্র দিব্য রাজবেশ পরিষার পুর্বাক চীরাহর

তুকুলযুগ সন্ধীতং

ঋষিভিশ্চাক্ষয়ৈ র তুম্॥ ২৩॥
অভিবাদ্য রমানাথং
শক্রন্মো রমুপুঙ্গবম্।
প্রাঞ্জলির্ধর্ম সহিতং
বাক্যং প্রাহ মহামতিং॥ ২৪॥
অভিষিচ্য স্থতো তত্র
রাজ্যে রাজীবলোচনং!।
তবাসুগমনে রাজন্
বিদ্ধি মাং কৃতনিশ্চয়মূ॥ ২৫॥
ত্যক্তবং নার্হসি মাং বীর

ভক্তং তব বিশেষতঃ।
শক্রম্য দৃঢ়া বৃদ্ধিং
বিজ্ঞায় রয়ু নন্দনঃ॥ ২৬॥
সজ্জী ভবতু মধ্যাক্তে
ভবা নিত্য ত্রবীষচঃ।
অথ ক্ষণাৎ সমুৎপেতুব্বানরাঃ কামরূপিণঃ॥ ২৭॥
ঝকাশ্চ রাক্ষ্মাশ্চৈব
গোপুচছাশ্চ সহস্রশঃ।
খ্যীণাং দেবতানাঞ্চ

পরিধান করতঃ স্বকীর ডেজ সম্ভূত উজ্জাস প্রভা সমারিত হইর। অতি দীর্ঘজীবী বশিষ্ঠাদি মহর্ষিগণ পরিবৃত ছইর। অবস্থান করিতেছেন ইত্যুবদরে শত্রুত্ব উপনীত হইরা তাঁছাকে দর্শন করিলেন।

মহামতি, সুমিজান্তনর শক্তম, রযুক্ণতিলক সীতাপতি রামচন্দ্রের চরণ কমলে সাফালে প্রণিপাত করিলেন, অনস্তর কতাঞ্জানপুট হইরা ধর্ম সম্বালিষ্ট বাক্যে কহিছে লাগিলেন, হে রাজীব লোচন! অমি স্থকীর কুমারবন্ধকে মধুরা ও বিদিশ নগরে অভিবিক্ত করিরা আদিরাছি, একংণ—হে রাজন! আমি অপনার পশ্চালামী হইবার মানসে আপনার নিকটে আগমল করিরাছি ইহা আমি গ্রেনামধ্যে হিরীক্তত হইরাছি জানিবেন ।২০।২৪।২৫।

হে বীরবর ! আমি আপনার অনুজ্ঞ, বিশেষতঃ আপনার পরম ভক্ত, অন্য ভাবে গ্রহণ করিয়া আপনি আমাকে পরিতাগ পূর্বক গমন করিতে কখনই সমর্থ নছেন। অতএব আমি বিনয় নত্র বচনে বলিতেছি দয়া পরতন্ত্র হইয়া আমাকে সমজিব্যাহার করিয়া লউন রয়ুনন্দন অনুজ্ঞ শক্রয়ের যারপর নাই দৃঢ়া বৃদ্ধি অবগত হইয়া ভাঁহাকে কহিলেন—হে শক্রয় থাক ভাছা হইলে এই মধ্যাহ্ণ সমরে সজ্জীভূত হও, অনস্তর কামরগধারী হরিপুল্লবগণ ঋক্ষ সমস্ত রক্ষ্বিংশ নত্ত যাবভীয় রাক্ষরগণ এবং গোপুছ্ছ সমুদায় এখনই এছান হইছে উলামন কক্ষা বিজ্ঞন বিপিন নিবাসী মহর্বিদিশের দেবতাদিগের এবং জীরণ্মচন্দ্রের ভনরের। রন্থবংশধর সাভাগতির বছির্গমন বিষয়ে বানর ও

ক্রম্বা প্রোচ্ রযুশ্রেষ্ঠং
সর্বের বানর রাক্ষনাঃ।
তবাকুগমনে বিক্লি
নিশ্চিতার্থং শুনঃ প্রভাে!॥ ২৯
এত স্মিন্ধন্তরে রাশং
হুগ্রীবোহপি বনঃ
যথা বদভি বাদ্যাহ
রাঘবং ভক্তবংসলং।
হুভিষিচ্যাঙ্গদং রাজ্যে
আপতাে হস্মি মহাতেজ।
তবাকুগমনা বিক্লি মাং
রাম কৃতনিশ্চয়ম্॥ ৩০॥

প্রান্ত বিভাগ দূচং বাকাং

থাক বানর রক্ষদাম।

বিভীষণ মুবাচেদং

বচনং মৃত্ত সাদরম্ ॥ ৩১ ॥

ধরিষ্যতি ধরা যাবৎ

প্রজান্তবিং প্রসাধিমে।

বচনাদ্রাক্ষণং রাজ্যং

শাসিতোহসি মমো পরি ॥ ৩২ ॥

ন কিঞ্ছিত্ররং বাকাং

গ্রমা মৎ প্রিয়কারণা।

এবং বিভীষণং ত্যক্ত্রা

হন্মন্ত মথা ব্রবীৎ ॥ ৩৩ ॥

বচনা মাক্তে জং চিরং
জীবমমাজ্ঞাং মামুষ কুথাঃ।

বাক্ষনের। রমানাথের বচন কর্ণপাত করিয়া নিরভিশয় ভক্তি

এবং বিনয় প্রদর্শন পূর্মক তাঁছাকে কহিল, হে প্রভা!

আপনি ইছলোক পরিভাগি করিয়া বৈকুও প্রতিগমন করিবেন
বটে, কিন্তু আমরাও আপানার সন্থিত গামন করিব এ বিবয়ে
আপনি ক্রভনিশ্চর হইয়া থাকিবেন । ২৬। ২৭.। ২৮। ২৯।
কিরৎক্ষণ পরে মহাবলপারাক্রম কপিরাক হ্যঞীব
ভক্তামুরাগী রাজীবলোচন রখ্নাখকে ম্থাবিধি অয়ুনারে
অভিবাদন পূর্মক কয়পুটে ছহল, হে প্রভাম! আপানার
ভাচরণে আমার এই নিবেদন যে আদি অতুল বিক্রমণালী
ঘুবরাল অলদকে কিছিয়াণ রাজ্যে অভিবিক্ত করিব। অলভ্রম
আপনি বখার গ্রমন করিবেন আমিও আপানার লক্ষতিবাছারে প্রস্থান করিব। আমার বিভামনালী
ব্যাহারে প্রস্থান করিব, আলি অলম্ম নধ্যে এইটা বিক্রমণালী
করিয়াছি জানিবেন। দালারণি থক্ষ ব্যাহার ও রাক্ষসনিবার
প্রতিভা বচন আকর্ণন করিয়া দশ্জীবালুক্স বিভীবণ্ডক খং-

পরোনাতি আদর সহকারে এবং অতি মৃত্ মুধ্র বাক্যে কছিতে লাগিলেন, হে ধর্মপরারণ বিজ্ঞীবণ ! ফর্লিন অবধি এই বলুদ্ধরা অবস্থারিনী থাকিবে তাবৎ কাল তুমি আমার বচনাকুবারী হইরা প্রজ্ঞামগুলীর সন্তোম উৎপাদন ও রক্ষঃ সম্বন্ধীর রাজ্য প্রতিপাদন কর—বিদ্ তুমি ইছাতে আমাকে অন্য কোন রূপ বাক্য বল, তাহাহইলে ভূমি আমার বিনাশ জনিত পাভকে কল্বিত হইলে; অভএব একণে হে বাবনাকুত! আমার উল্প বাক্ষের তিপ শাল প্রতিরশ্বক প্রদান করিও না

পৰন কুমার হতুমানকে বলিবেন, হে মাকতে তুমি চিন্তাী

জাষবন্ত মথ প্রাহ

তিষ্ঠহং দ্বাপরান্তরে ॥ ৩৪ ॥

ময়া সার্দ্ধং ভবেদ্যুব্ধং

যং কিঞ্চিৎ কারণান্তরে

তত স্তানাদ্বঃ প্রাহ

মে ঋকবানরাক্ষসান্ ॥ ৩৫ ॥

সর্বানেব ময়াসার্দ্ধং
প্রযাতেতি দয়ান্বিতঃ ।

ততঃ প্রভাতে রম্বংশনাথো

বিশালবক্ষা: শিতকঞ্জলোচনঃ ॥ ৩৬ ॥

পুরোবসং প্রাহ বশিষ্ঠমার্য্যং

বন্দ্রিহোত্তাণি পুরো গুরোব্দেম।

ততে। বশিষ্ঠোইপি চ কারসর্বং
প্রাম্থানিকং কর্মমহদ্বিধানাং ॥ ৩৭ ॥
ক্ষোমান্তরো দর্ভপবিত্রপাণির্মাহাপ্রয়াণায় গৃহীত বৃদ্ধিঃ।
নিক্ষমা রামো নগরাং সিতলোচ্ছশীবয়াতঃ শশিকোটিকান্তিঃ॥
রামস্থ সব্যে শিতপত্মহস্তা
পদ্মাগতা পদ্মবিশাললোচনা।
পাশ্বেইথ দক্ষেক্রণ কপ্তহন্তা
শ্যামায্যে জীরপি দীপ্যমানা॥ ৩৮

হটয়া এই ধরণীতলে অবস্থান কর—হে প্রমনন্দন ! আমার
আজা কথনই মিথা। ইইবার নহে জানিবে। অভঃপর রয়ুনন্দন
রামচন্দ্র জাষবানকে সংস্থাধন কবিরা কহিলেন,ছে জাষবান !
ক্রেডা বৃগ অভিক্রান্ত হইলে ঘাপর বৃগ আপিবে, ভূমি দীর্ঘজীবী হইরা নেই ঘাপর বৃগ পর্যান্ত এই পৃথিবী তলে অবস্থিতি
কর ; হে জাষবান ! কোম কারণ প্রস্তুক্ত আমার সহিত
ভোমার তুমুল নংপ্রাম হইবে,ভালারপর ভূমি অর্পে গমন করিবে,
ইহাতে ক্রডনিক্তর শাক্ষিবে। পরিস্তেবি অব্যুক্ত ভিলক
ভগবান নারাবণ অপরাপর অক্স নাম্কার ও নামরগণের উপ্র
কপা কটাক্ষপাত করিয়া ব্যার্থাইলেন হে অক্স, রাক্ষ্য ও
সকল। তেগমরা নক্ষলেই আন্তার সহিত গমন করিতে প্রার

অন্তর বল্পনী প্রক্রাতা ক্ট্রেন ধ্রব্যুগ্রন্থলাম বিলাক্তরক পল্প প্রাণ লোচন মুদ্ধং লপ্তি ছান্তী বলত সংস্কৃত্র বলা-

শ্বানি হইরা কুলপুরহিত বশিষ্ঠদেবকে বলিলেন—হে গুরো!
শাষার প্রস্থানের সমর উপস্থিত হইরাছে, অভএব অপপনি অথ্যে
শাষার প্রস্থানের সমর উপস্থিত হইরাছে, অভএব অপপনি অথ্যে
শাষার প্রাক্তা প্রবণ করিরা তাঁহণর মহাপ্রস্থানোপযুক্ত যাবতীর কর্মা রীতিমত বিধানাল্লারে সমাধা করিলেন অর্থাৎ সূত্রি সম্পন্ন কুলগুল বশিষ্ঠদেব রামচন্দ্রের মহা প্রয়াণের নিমিত্ত হকুল পরিধান ও দর্ভবিনিশ্বিত পরিজ্ঞাবন্ধ সমুদার আরোজন করিলেন। হার ; কোটা শাল কান্তি পরম ব্রহ্ম পরমান্ত্রণ করিয়া আন্ত্রোকার করিয়া আন্ত্রোকার করিয়া আন্ত্রোকার করিয়া আন্ত্রোকার করিয়া আন্তর্গালাকার করিয়া আন্তর্গালাকার করিয়া করিলে করিয়া করিয়ার প্রস্কিক চার্ক্রিক আলোকার্যাক্র করিয়া রহুনাবের করে করে গ্রহণ প্রক্রিক চার্ক্রিক আলোকার্য়ক করিয়া রহুনাবের বি

শস্তানিশাস্তানি ধকুশ্চবাণা
জগ্মপুরস্তাদ্ধ্র বিগ্রাহান্তে।
দেবাশ্চ সর্বে ধুড বিগ্রাহান্ত
যযুশ্চ সন্বেমুনক্ষণ্ড দিব্যাঃ।। ৩৯॥
মাতাপ্রুজানাং প্রণবেণ সার্দ্ধং
যযৌহরিং ব্যাহ্নতিভিঃ সমেতা।
গচ্ছস্তমেবাকুগতা জনান্তে
সপুঞ্জারাঃ সহ ব্দ্ধুবর্গৈঃ।
অনার্তদ্বারমিবাগবর্গং
রামং ব্রজস্থং যযুরাপ্রকামাঃ॥ ৪২॥
সাত্তঃপুরঃ সাকুচরঃ সভাষ্যঃ
শক্রদ্বুক্তো ভরতোহকুষায়াৎ।

গচ্ছ ন্থনালোক্য রমাসমেতং

ক্রীরাঘবং পৌরজনাঃ সমস্তাঃ ॥ ৪৩॥

সবালব্দাশ্চ মযুদ্ধিজাগ্র্যাঃ

সামাত্যবর্গাশ্চ সমস্তিনো যয়ুঃ।

সর্বের গতাঃ ক্ষত্রমুখাঃ প্রক্রন্তা

বৈশ্যাশ্চ শূদ্রাশ্চ তথাপরে চ॥ ৪৪॥

স্থাীবমুখ্যা হরিপুক্ষবাশ্চ

স্যাতা বিশুদ্ধাঃ শুভশক্যুক্তাঃ।

ন কশ্চিদাদীত্বস্থংখ্যুক্তো

দীনোহথ বা বাছাম্পেরু সক্তঃ॥ ৪৫॥

আমনন্দরপানুগতা বিরক্তা

যযুশ্চ রামং পশু ভৃত্যবর্গৈঃ।

সমভিব্যাহারে গমন ক্রিভে লাগিলেন; লাজ, শজ, ধয়, ও বামনিকর ভীষণ আকার পরিপ্রেছ পূর্বাক জগদীখন নামচল্লের অপ্রে অপ্রে গমন করিতে লাগিল। স্থাগীর দেবভারা
বিপ্রেছ মুর্জি ধারণ করিছা ভাঁহার প্রকাহতী হুইলেন, সনকাদি
নহর্ষি প্রেভৃতি ও ভাঁহার অনুগমন করিতে লাগিলেন; এবং
বেদমাভা সাধনী গারতী এবং প্রণ্য ব্যাহাভি সমভিব্যাহারে
করিলা প্রিংকির সমিধানে গমন করিলেন। লোকে বেমন
আর্গসমূক ঘারলেশে অবনীলাকেনে গমন করিয়াথাকে সেইরপ
অবোধাবাসী বাবভার প্রজা মণ্ডলী জাগনাপন পূত্র, পরিবার
ও বজুবার্ষর সমভিব্যাহারে লইলা স্থকীর বাসমা দিন্ধি করিন
বার জন্য গমনশীল প্রমান্তা লাশবিদ্য প্রভাব প্রস্তাহ গমন
করিতে লাগিল। প্রশান্ত স্বভাব কৈকেরী প্রত্র অমুচর বর্গকে

স্বামুগামী করিয়া স্বকীয় ভার্যা ও শক্তেমকে সমভিবাহাবে লইয়া জ্যোতের অমুগমন করিলেন। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ১০। । ৪১। ৪২। ৪৩।

ইতাবসরে প্রজন বাসীরা প্রাৎপর রামচন্দ্রকে লক্ষ্মী
সমন্তিরাহারে মহাপ্ররাণ করিতে অবলোকন করিরা,কি বালক,
কি র্ক্ষা সমন্ত ত্রাক্ষণেরা আম্ব্রিক লোকদিগের সহিত তাঁহার
অনুগমন করিলেন; অমান্ত্যবর্গেরা ও পরিশেষে বৈশ্য এবং
শ্রে সমন্ত সাক্ষ্যান্তঃকরণে রযুনাথের পশ্চাক্ষ্যামী হইল।
বানর প্রত্বরা শরীরাজ্গাছন পুরুক স্থান করিরা এবং সর্ব্বভোভাবে বিশুদ্ধান্তঃ ইরা কশিন্তান স্থ্রীবের অপ্রার্থি হইরা
মহানন্দে মঙ্গল ভূচক শক্ষরিতে করিতে গানন করিতে লগিদ।
ওলাণে কেছই সংলার নিব্রুদ্ধ প্রশীভিত ছিলনা অধ্বা
দীন ভাষাপ্র বা সাংসারিক কর্ম স্থ সভোগা অভিলাধী ছিল
মা। স্তরাং প্রে সমুলায় লোক এবং নগানীছ বারতীয় কিছর-

ভূতামাদৃশ্যানি চ যানি তত্র
যে প্রাণিনঃ স্থাবরজঙ্গনাশ্চ ॥ ৪৬
সাক্ষাৎ পরাত্মানমনন্তশক্তিং
জগ্ম বিবিরক্তাঃ পরমেকমীশম্।
নাসীদযোধ্যানগরে ভূ জন্তঃ
কশ্চিত্তদা রামমনা ন যাতঃ ॥ ৩৭
শূন্যং বভূবাধিলমেব তত্র
পুরং গতে রাজনি রামচন্দ্রে।
ততোহতিদুরং নগরাৎস গত্ব।
দৃষ্ট্রা নদীং তাং হরিনেত্রজাতাম্॥ ৪৮।

ননন্দ রামস্মৃতপাবনোহতে।
দদর্শ চাশেষমিদং হাদিছম্।
অথাগতস্ত্র পিতামহো মহান্।
দেবাশ্চ সর্বের ঋষয়শ্চ সিদ্ধাঃ ॥ ৪৯
বিমানকোটীভিরপারপারং
সমারতং থং স্থরসেবিতাভিঃ।
রবিপ্রকাশাভিরভিক্ষুরৎস্বং
জ্যোতির্ম্মাং তত্র নভো বস্তুব ॥ ৫০ ॥
স্বয়ং প্রকাশৈর্মাহতাং মহস্তিঃ
সমারতং পুণ্যকৃতাং বরিষ্ঠিঃ।
বর্শ্চ বাতাশ্চ স্থগন্ধবস্তো
ববর্ষ রস্তিঃ কুসুমাবলীনাম্॥ ৫১॥

গণ ভব সংখে বিরক্ত ইইয়া অপার আনন্দ সাগরে সম্ভরণ দিতে দিতে সাক্ষাৎ বৈকুঠনাথ রাখবের অনুগমন করিল, অপারাপর ধাবতীয় জীব এবং স্থাবর জন্মাত্মক প্রাণিনিকর সাহলাদ চিত্তে এবং অলক্ষিতভাবে রঘুনাথের অনুগামী ইইতে লালিল।
। ৪৪ । ৪৫ । ৪৬ ।

সংসার সন্তোগ বিরহিত ব্যক্তিরা সাক্ষাৎ পরমেশ্বর সনাতন অনন্তশাক্তি পরমান্তা বিত্রহিত ব্যক্তিরা রামচন্দ্রের পশ্চাৎ পশ্চাৎ গমন করিতে লাগিল; তাঁহার এই মহাপ্ররাণের সময় অবোধ্যা নাগারীতে এমন কোন জীব ছিলনা,যাখারা রামরূপ ধানে নিময় হয় নাই অর্থাৎ যাবতীয় জীব রাম নাম মন্ত্রে দীকিত হইয়া তাঁহার অম্বর্তী হইয়াছিল।মহারাজ দালর্থির মহাপ্রেছান গত হইলে অধিল ব্রহ্মান্ত এককালে শ্ন্যময় অর্থাৎ যাবতীয় জীব রাম নাম মন্ত্রে দীক্ষিত হইয়া উশ্হার অম্বর্তী হইয়াছিল।মহারাজ দালর্থির মহাপ্রেছান গত হইলে অধিল ব্রহ্মান্ত এককালে শ্ন্যময় অর্থাৎ যাবতীয় জীব রাম নাম মন্ত্রে দীক্ষিত হইয়া উশ্হার অম্বর্তী হইয়াছিল; অনন্তর ভগবান্ রামচক্র পরম লোভাবিত অ্যোধ্যানগ্রী ছইতে অধিকদ্র গমন করিয়া পরিশেষে ক্রিরা নাম করিয়া পরিশেষে ক্রিরা নাম করিয়া পরিশেষে

দেহ স্মৃতিপথে আনয়ন পূর্বক তদানক্ষ বর্জন করিতে লাগিলেন অতঃপর আপনার হৃদয় মধ্যে এই অপরিসীমা জগৎ
অবস্থিতি আছে, এইরপ সক্ষর্শন করিলেন। ইতিমধ্যে তাঁহার
মহাপিতামহ, ইস্রাদি দেবতা সকল এবং সনকাদি মহর্ষি
প্রভৃতি রামচন্দ্রের সর্যুর তীরে আগমন সংবাদ শ্রবণ করণানক্তর সকলই তাঁহার সমীপে সমাগমন করিলেন। এক্ষণে
অপরিসীম গাণমণ্ডল দেবতাদিগের কোটি কোটি বিমানে
সমাজ্য হইল অর্থাৎ স্থায় দেবতা প্রভৃতি লোক সমূহ
দিবা দেববানে আলোহন করিরা ত্বিস্ত ত গণণমণ্ডলে আসিয়া
উপনীত হইলেনা ইহাতে বোধ হইতে লাগিল যেন, ত্র্যার
উদয়ে নক্ষরাবলী প্রচ্ব ল্যাতিশ্বর হইরা আকাশ পথে অবছিতি করিতেছে; যে সমস্ত ব্যক্তি এই জগল্পথে অতি পরিত্র
কার্যা সমূহ সমাধা করিয়াহেন, তাঁহারই স্বর্গে অপরাপেক্ষা
আধিপতা প্রাপ্ত হইরাছেন এবং গ্রাণমার্গ করড় এখন

উপস্থিতে দেবমুদঙ্গনাদে
গায়ৎস্থ বিদ্যাধর কিমুরেষু ।

য়ামস্ত পদ্যাং সর্যুজলং সকৃং ।

স্পৃষ্ট্বা পরিক্রামদনন্তশক্তিঃ ॥ ৫২
ব্রহ্মা তদা প্রাহ্
কৃতাঞ্জলিস্তং
বাসং পরাত্মন্!
পরমেশ্রস্তম্ ।
বিক্রঃ সদানন্দময়োহসি পূর্ণো
জানাসি তত্ত্বং নিজনৈশ্যেকম্॥ ৫৩॥

তথাপি দাসস্থ মমাথিলেশ। কৃতং বচো ভক্তপরোহসি বিদ্ধন্! ত্বং জ্রাভৃতিবৈষ্ণবমেকমাদ্যং প্রবিশ্য দেহং পরিপাহি দেবান্॥ ৫৪ যদ্বা পরো বা যদি রোচতে তং প্রবিশ্য দেহং পরিপাহি নন্তম্। ত্রমেব দেবাধিপতিশ্চ-বিষ্ণুর্জানন্তি ন স্থাং পুরুষা বিনা মাম্॥ ৫৫॥

রামচন্দ্রকে ভাবলোকন্ করিতেছেন; আবর সমীরণ পাতিত— পাবন রামচন্দ্রের উপর স্থান্ধ কুসুম বর্ষণ করিতে লাগিলেন। । ৪৭। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১।

দেবভাদিগের মৃদস নিনাবে চারিদিক প্রতিধ্বনিত হইল এবং বিদ্যাধর ও কিল্লর কামিনীগণ স্থরতানগরে সংগীত আরম্ভ করিল। বাঁছার শক্তির সীমা নাই, সেই অপরিসীম শক্তিরাজীবণোচন রামচন্দ্র সরমূর পবিত্ত সলিল স্পর্গ করিয়া প্রদক্ষিণ করিলেন; ইতাবসরে পিতামছ ব্রহ্মা ক্তাঞ্জলিপুটে শত্তারমান তইয়া তাঁছাকে কছিলেন, হে পরমাত্মন্! আপনি প্রমেশ্বর—জগৎ স্থিছিতি ও বিদর কর্তা, আপনি নিষ্টু—আপনি সদানন্দময়—আগনি প্ণব্রত্ম—আপনিই এক-মাএ ঈশ্বর, আমি আগনার কোন ভত্ত্ব জানি না। আশনিই আপনার ব্যুক্ত অবগত আছেন। হে দেব-দেব জগদীবর!

আমি জানি, ত্রহ্মরপের শরীর পরিপ্রহণ কখনই হইতে পারে না, কিন্ত ভক্তদিগের উপর আপনার বিশেষ অনুপ্রহ আছে বলিয়া, আপনি মারা দারা সমুদার স্ফন করিয়াছেন, অভএব হে বিদ্বন্! এক্ষণে চারি ভ্রাতার সহিত মিলিত হইয়া অতাে বৈষ্ণৰ দেহে প্রবেশ করিয়া দেবতাদিগকে পরিত্রাণ করন। ৫২।৫২।৫২।

হে ভবভারসংহারিন্ রামচক্র ! যদি আপনি পরদেহ
অভিলাব করেন, তাহা হইলে আপনি ওল্ধা প্রবিষ্ঠ ইইয়া
পুনরার জন্মগ্রহণ পূর্বেক আমাদিগকে পরিত্রাণ করুন;
হে দেব! আপনি দেবতাদিগের অধিপতি পুরুষোভ্য বিষ্কৃ,
কেবণ আমিই আপনাকে নারায়ণ বলিয়া অবগত আছি,
কিন্ত অপর কোন ব্যক্তি আপনাকে জানিতে সক্ষম নহে !

সহস্ত্রন্তর নমে।
নমস্তে প্রদীদ
দেবেশ ! পুনর্নমস্তে ।
পিতামহপ্রার্থনয়।
স রামঃ পশ্যৎস্ত
দেবেরু মহাপ্রকাশঃ ॥ ৫৬ ॥
মুক্তংশ্চ চক্ষ্থে দিবৌকসাং তদ!
বস্থব চক্রাদিযুত্শচতুর্ভুজঃ ।
শেষো বস্থবেশ্বতর্মস্তঃ
সৌমিত্রিবত্যস্তুত্ভোগধারী ॥ ৫৭
বস্থব তুশ্চক্রদরৌ চ
দিবেনী কৈকেরি-

সূত্রল বণান্তকশ্চ।
সীতা চ লক্ষ্মারভংপুরৈব
রামাে হি বিফুঃ
পুরুষঃ পুরাণঃ ॥ ৫৮ ॥
সহাসুজঃ পূর্বশরীরকেণ
বভূব ভেজাময়দিব,মূর্ত্তিঃ।
বিফুং সমাসাদ্য স্থরেক্রমুখ্যা
দেবাশ্চ সিদ্ধা মুনয়্শচ যক্ষাঃ ॥ ৫৯ ॥
পিতামহাদ্যাঃ পরিতঃ পরেশং
স্তবৈগ্ণন্তঃ পরিপূজয়ন্তঃ।
আনন্দসংপ্লাবিতপূর্ণচিত্রা

বভূবিরে প্রাপ্তমনোরথান্তে॥ ৬ - ॥

হে দেবের্থর ! আপেনি সহল ওক্ত অতএব আপনাকে নমস্থার করি—আপিনি প্রসন্ন হউন। ১০ জগদীশ্বর ! পুনর্বার আপেনাকে নমস্কার করি। ইঞাদি দেবতারা রঘুনাথকে সন্দ-শন করিতেছেন, এই অবস্থার পিতামহ পদ্মাধান ব্রস্থার প্রার্থনাহসারে পরমব্রস্থানাতন বিষণ্ধ, তাহাদিগের প্রতি । প্রসন্ন হইয়া স্বরং প্রকাশিত হইলেন। ৫৫। ৫৬।

এক্ষণে দিৰৌকস দিলের চফু সমূহ বিজ্ঞান দৃষ্টি প্রাপ্ত হইল ।

এবং বৈক্ঠপতি নিজ মারা ঘারা এতাবংকাল ছিভুজ পরিপ্রাহ
করিয়া পৃথিবীছ সমুদার লোকদিবের নয়নগোচর হইয়া
এই ধরাতলে অবস্থিতি করিয়াছিলেন; কিন্তু এখন শন্ধ, চক্রে,
গদা, পদ্ম বিশিষ্ট চারিটী হস্ত ধারণ করিশেন; কিন্তু কি
আশ্চর্যের বিষয় যে, লক্ষ্মণ দেবলোকান্তর প্রাপ্ত হইলেও
রামচক্রের চতুর্ভুক্ম ধারণ সময়ে তাঁহার দেহ প্রীহরি রঘুনাথের
সমীপে উপনীত হইল। লবণ রাক্ষ্ম সংহারী কৈকেরী আয়াজ

অনতিবিলয়ে দিবা চক্র ও শঙ্কা রূপ পরিপ্রেণ করিলেন—জনক হহিতা রামমনোরমা সীতা পূর্বের লক্ষ্মী ছিলেন, এক্ষণে আর্যাপুত্রকে চতুর্ভুজ ধারণ করিতে সন্দর্শন করিয়া লক্ষ্মীরপো নিজ পতির বামপাধে আসিয়া উপনীলা হইলেন অভ্রন্থ রামচন্দ্র স্থর্গ, প্রতিস্থর্গ, বংশা, মন্বন্তর, বংশানুর্চিত এই পঞ্চ লক্ষণাক্রান্ত ব্যাসাদি মুনি প্রণীত প্রায়োলিখিত রামচন্দ্র পরমন্ত্রকা সনাতন বিফু । পরমসনাতন রামচন্দ্র অনুজনিবার চতুরংশভূত দেহ একত্রীকৃত হইয়া দিবা তেলো ময় বিফ্রপ পরিপ্রাহ করিলেন। তিদিবেশর ও দেবতারা এবং সিদ্ধাণ, মহর্ষি গণও যক্ষাদি প্রভৃতি দেববোনিরা ও পিতামহাদি দেব সকল গোলক পতি চতুর্ভুক্ত বিফাকে সংপ্রাপ্ত ইইয়া সাজিশয় হর্ষোৎকুলান্তঃকরণে বিবিধ স্তব ঘারা তাঁহার গুণ গান এবং পূজা করিছে লাগিলেন; এখন তাঁহাদিবের চিত্ত অপার আনন্দ তরক্ষে উচ্ছিন্ত হইল, লক্ষ্মীণনিকে প্রাপ্ত হইবার বাসনা রূপ উল্লী নহুকাল ভদাহ বিফুজছিণং
মহাত্ম এতে হি ভক্তা
ময়ি চামুরক্তাঃ।
বাস্তং দিবং মামমুবান্তি
দর্বে তির্যাক্শরীরা অপি
পুর্যুক্তাঃ॥ ৬১॥
বৈকুপসাম্যং পরমং
প্রয়ান্ত সমাবিশৃষ্যাণ্ড
মমাজ্ঞরা ত্বন্।
ক্রেয়া হরেকীক্যমথাত্রবীৎকঃ
শান্তানিকান্যান্ত
বিচিত্রভোগান্॥ ৬২॥

লোকাগ্যদীয়োপরি দীপ্যমানাং-স্তদ্ভাবযুক্তাঃ কৃতপুণ্যপুঞ্জাঃ। যে চাপি তে রাম! পবিত্রনাম গৃণন্ডি মত্যা লয়কাল এব॥৬৩॥ স্থাজনতো বাপি ভজন্ত লোকাং স্তানেব যোগৈরপি চাধিগম্যান্। ততোহতিহৃষ্টা হরিরাক্ষসাদ্যাঃ স্পৃষ্ঠা জলং ত্যক্তকলেবরাস্তে॥৬৪

≢ইতে তাহাদিগোর হাদয়ে প্রধাতিও চইডেছিল একণে তাহা শুসম্পাদিত হটল। ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯। ৬০।

ভগবানের বিষণু রূপে বৈকুণ্টে অবস্থান বিষয় ভারতের

নভা পর্বে—স্বাদিকপাল সভাবণনে—দমসূভা প্রস্তাবে

ক্ষিত আছে যে, দাশর্ষি রামচল্র যমের সভারও
পরিদৃশ্যমান হইরাছিলেন, দেবয়ি নারদ ভংপ্রভিবাদ করিয়া
বলিয়াছিলেন যে, ভগবান বিফুব্রামাবতার পরিপ্রেই করিবার
হুইটি প্রয়োজন ছিল, প্রথমটা ছফ্টান্মা লোকদিগকে বিমন্ত করিয়া শিক্টাচারী ব্যাক্তদিগকে প্রভিপালন করিবেন এবং
অপরটী স্বয়ং লোকবং ব্যবহার প্রদর্শন করিয়া পৃথিবীস্থ্

মাবতীয় লোকদিগকে ধর্ম ও মর্য্যাদা রূপ জ্ঞানালোকে
আলোক্তি করিবেন এবং ব্যবহার প্রদর্শনে ভাহাদিগের
প্রেক্তি উৎপাদিত ছইবে। স্ক্রালদ্দী বাল্মীকি প্রস্তৃতি

নহর্ষিদিগের ভূত ও ভবিষ্যৎ ভত্ত্তান আছে—দেবতারা কহিভেছেন, ইতাবসরে রাশি রাশি পুণা আহরণ করিয়া পুৰুষোত্তম ভগবান রামচন্দ্র পিতামহ একাকে বলিলেন যাগারা আমার অনুসমন করিরাছে ভাহারা সক্রেট আমার পারম ভক্ত এবং আমাতে সাতিশয় অনুরক্ত আর তিষ্যক জাতিরাও পুন্যযুক্ত হুইয়া আমার সহিত স্বর্গে আগমন করুক, হে ব্রহ্মণ ! আমি ভোমাকে কহিতেছি যে,ভূমি আমার আদেশ গ্রহণ পূর্ব্বক আমার পরম স্থান বৈকুণ্ঠ সদৃশ লোকে তাহাদিগকে শীত্র পইয়া যাও। পিন্তামছ ব্রহ্মা ভগবান নারা-য়ণের বাক্য শ্রবণ করিয়া বলিলেন ভাহারা বিচিত্র সূপ ভোগ সমন্বিত সাস্তানিক লোকে প্রস্থান কৰুক :—(২ হুত— ভাবন নারারণ। যে সমস্ত ব্যক্তি অন্তিম সময়ে আপনার পরম পবিত্র 'রাম' নাম গ্রহণ করিয়া থাকে, ভাছারা আমার উদ্ধন্তন লোকে অর্থাৎ ব্রহ্ম লোক্ অভিক্রেম করিয়া ভদ্দ্ধ ভাগত্তি গাভিশয় উজ্জন লোকে প্রস্থান করে, অধিকন্দ্র যাহার৷ অজ্ঞান বশতঃ আপনাকে ভক্তৰা করিয়া থাকে. ভাগারাও ঐ লোকে গমন করিয়া থাকে। অনস্তর বানর স্ত্রমণণ, ব্রাক্ষ্ণগণ ও অপ্রাপর যে সম্পার বোক বযু-নাখের অমুগমন করিয়াছিল,ভাছারা যার পর নাই আব্লাদিত হইয়া সর্যুর সলিল স্পর্শ করিয়া মলবাছী কলের পরিত্যাগা क्त्रिल। ७১। ७२। ७०। ७८।

প্রপেদিরে প্রাক্তনমেব রূপং যদংশজা ঋক্ষহরীশ্বরাস্তে। প্রভাকরং প্রাপ হরিপ্রবীরঃ সুগ্ৰীব আদিতাজ বীৰ্য্যবন্ধাৎ ॥৬৫॥ ততো বিষয়াঃ সর্যুদ্ধলেয়ু নরাঃ পরিত্যজ্য মনুষ্যদেহ্য। আরুহ্য দিব্যাভরণা বিমানং প্রাপুশ্চ তে সান্তনিকাথ্যলোকান্॥ ৬৬॥ তিগ্যক্পজাতা অপি রামদৃষ্টা জলং প্রবিষ্ট দিবমেৰ যাতাঃ! দিদৃক্ষবো জানপদাশ্চ লোকা রামং সমালোক্য বিমুক্তসজ্ঞাঃ॥ ৬৮ ॥

শ্বহা হরিং লোকগুরুং পরেশং **म्लुके। फ**नः सर्गगवाश्वतक्षः। এতাবদেবোত্তরমাহ শস্তুঃ শ্রীরামচন্দ্রস্য কথাবশেষম্॥ ৬৮॥ যঃ পাদমপ্যত্র পঠেৎস পাপাৎ-বিমুচ্যতে জন্মসহস্ৰজাতাৎ। দিনে দিনে পাপচয়ং প্রকৃর্বান্ পঠেন্নরঃ শ্লোকমপীহ ,ভক্ত্যা॥ ৬৯॥ বিমুক্ত দৰ্ববাঘচয়ঃ প্ৰযাতি রামেতি সালোক্যমনন্যলভাম।

जनसुत्र श्रक अवः रुति श्रृष्टराता (य य वः म इरेट्ड अव গ্রাহণ করিরাছিল, তাহারা মেই পূর্বে জন্মার্জিভ রূপ প্রাপ্ত ১ইল. বানরদিগের অধিপতি মহাবল পরাক্রান্ত স্থগ্রীব দিবা-করের বীর্য্য হইতে জন্ম পরিগ্রন্থ করিয়াছিলেন,স্মভরাং বানর সভাষ কিষিদ্ধারোজ প্রভাকরের সহিত বিলীন হইলেন। অনস্তর ভগবান রামচন্দ্রের পশ্চাদগামী যাবভীর মনুষ্য উছা-নিলের ক্রপান্তর সন্দর্শন করিয়া অভি ব্যাতাতা সহকারে সরয্ নদীর সলিলে নিমগ্ন হুইয়া মানব কলেবর পরিভাগে করিলেন, শরিশেষে বিবিধ মণি মানিকা থচিত বিমানে আব্রোহণ করিয়া প্রহুষ্ট চিত্তে সাম্ভনিকা নামক লোকাভিনূপে প্রস্থান করিতে লাগিলেন। ভিয়ত্ত্ যোলিৱা সীভা নাথকে সন্দর্শন করণাস্তর मिलन मध्य व्यायन कवित्रा विगठ भाभा हरेन ७ उरक्तनार অর্গারোত্বণ ক্রিল: জুনপদ বাদীরা উত্থাদিগের ঐক্লপ অব- 🕽 আপ্যান রঘুনামক কর্ত্তক রচিত এবং অতি প্রাকালে স্বন্ন:

স্থানস্তর পরিদর্শন করিয়া লোকাভিরাম রঘুনাথকে স্লেশ্ন ও সাফীক্ষে প্রণিপাত করণান্তর সংসার বন্ধন ছইতে বিনিশ্ম জ इहेटन अकरा मण्लूर्व क्रम रेवत्रभगावनयन शृक्षक त्नाक श्रक প্রমেশ্বর শ্রীহবিকে স্মৃতিপথে আনয়ন এবং সর্যুর জল স্পশ করিবা মাত্র স্বর্গারোহণ করিল। অধুনা শ্রীরাম ভক্তিভাজন শস্তর শ্রীরামচন্দ্রের কথা অ্বশেষ করিয়া কহিল যে—যিনি রামায়ণের একচরণ স্লোক মাত্র মনোনিবেশ করিয়া ভক্তি পূর্বক পাঠ করেন, তিনি সহর বার জন্ম গ্রাহণ করিরা বে সমুদায় পাপ করিয়াছেন, উাহার সেই সমুদার কলুষ রাশি ভস্মীভূত হইরা যায়,আর যিনিপ্র তিদিন পাপ কার্য্য করিয়াও আন্তরিক ভক্তির সহিত একবার এক চরণ শ্লোক পাঠ করিয়া ধাকেন, তাঁহার সেই পাপ বিনাশ প্রাপ্ত হয়, অর্থাৎ রামা-রণ অধারন করিলে সমস্ত পাপ তিরোহিত হইয়া যার এবং পতিচপাবন রামজ্রের সালোক্য প্রাপ্ত হয়; এই রামায়ণ

আধ্যানমেতন্রযুনয়কস্তাস্থ
কৃতং পুরা রাঘবচোদিতেন ॥ ৭০ ॥
মহেশ্বরেণাপ্তভবিষ্যদর্থং
ক্রুত্বা ছু রামঃ পরিতোধমেতি ।
রামায়ণং কাব্যমনস্তপুণ্যং
শ্রীশঙ্করেণাভিহিতং ভবানৈর ॥ ৭১ ॥
ভক্ত্যা পঠেদফঃ শৃণুয়াৎ স পাপৈ
বিমুচ্যতে জন্মশতোদ্ভবৈশ্চ ।
স্থধ্যাত্মরামং পঠতশ্চ নিত্যং
শ্রোভৃশ্চ ভক্ত্যা লিথিভূশ্চ রামং ॥ ৭২ ॥

অতিপ্রদর্শন সদা সমীপে

দীতাসমেতঃ প্রিয়মাতনোতি ॥ ৭০ ॥

রামায়ণং জনমনোহরমাদিকাব্যং

ব্রহ্মাদিভিঃ সুরবরৈরপি সংস্তৃতমে।

শুদ্ধান্তিঃ পঠতি সঃ শৃণুয়ান্তু নিত্যং

বিফোঃ প্রয়াতি সদনং স বিশুদ্ধদেহঃ ॥৭৪॥

ইতি শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উমান্তেশ্বরসন্থাদে উত্তরকাণ্ডে নবমোহধ্যায়ঃ।

রষুনাথ কর্ত্ত প্রেরিড **ছইয়াছে । ৩৫ । ৬৬ । ৬৭ । ৬৮ ।** । ৬৯ । ৭ •

রাজীবলোচন রামচন্দ্র দেবদেব মহাদেব কর্ক্ক রামারণ সহক্ষে ভবিষাদ্বাণী প্রবণ করিয়া যারপর নাই পরিতোষ হইলেন, থরং ভবানীপতি এই অপরিসীণ প্রাপ্তদ শ্রীরামচরিত কাব্য ভবানীর নিকট কহিয়াছিলেন। যে ব্যক্তি ভক্তি-সংকারে অধ্যাক্স রামান্ত্রণ পাঠ করে, সে ব্যক্তি শভক্তন্ম সম্ভূহ পাপ হইতে বিমুক্ত হয়। শ্রীরামচ্জ্রা স্থপদ ঘঠিত অধ্যাক্স রামান্ত্রণ মার পর নাই ভক্তিসহকারে প্রতিদিন পাঠ ও শ্রবণ করিয়া সাতিশয় প্রসন্ন হৃদরে সর্বাদ সীভাব সমীপে উপবেশন করিয়াছেন। ব্রহ্মাদি স্বর্গণ লোক দহ্দর রঞ্জন আদি কাব্য রামচরিত বিষয় শুভিবাদন করিয়া থাকেন। যিনি শ্রহার সহিত রামান্ত্রণ পাঠ করেন অথবা অব্যতি চিত্তে প্রভিদিন শ্রবণ করেন তিনি পরিমার্জিভ শ্রীরে বিষ্ণুর সরিধানে গমন করিয়া থাকেন। ৭১। ৭২।৭৩।

> ইতি **জ্ঞা**মদধ্যাস্থারা যায়**েণ উমামছেন্ত্রসম্বাদে** উত্তরকাণ্ডে নবমোহশ্যায়ঃ।

ঐারাম স্তবঃ।

ত্রীগণেশায় নমঃ।

অস্থ প্রীরামচন্দ্রন্তবরাজন্তোত্তমন্ত্রস্থ সমৎক্ষার
ক্ষাঃ। অমুষ্টুপ্ ছলঃ। প্রীরামো দেবতা। সীতাবীজম্। হনুমান্ শক্তি: 1 প্রীরামপ্রীত্যর্থে জপে
বিনিয়োগঃ।

সূত উবাচ। সর্বাশাস্ত্রার্থতত্বজ্ঞং ব্যাসং সভ্যবতীহৃতম্ ! ধর্মপুত্রঃ প্রহুফীজা প্রত্যুবাচ মুনীশ্বম্ ॥ ১॥

যুখিছির উবাচ।

ভগবন্যোগিনাং শ্রেষ্ঠ সর্ব্বশাস্ত্রবিশারদ। কিং ভদ্ধং কিং পরং জাপ্যং কিং ধ্যানং মুক্তিসাধনং॥ শ্রোভূষিচ্ছামি তৎ সর্ব্বং ক্রছি মে মুনিসত্তম।

বিশ্বনাশক গণপ্তিকে নম্ভার করি। স্কংকুষার মুনি ভগবান্ রামচন্ত্র শুব ও শুোত বলিরাছিলেন,—শ্রীরামচন্ত্র দেবতা, জানক হছিতা সীভার আদি, পবন কুমার হসুমানের শক্তি, অভএব শ্রীরামটন্তের প্রীতির নিমিত্ত জপ করি।

স্ত কছিলেন—ধর্মপুত্র বৃধিটির সাহলাদান্তঃকরণ হইরা সর্বাগত বিশারদ ভন্তজানবিদ্ মুনিসন্তম সত্যবতীনন্দন ব্যাসকে বলিরাছিলেন—ছে ভগাবন্! আপুনি যোগিগণের শ্রেষ্ঠ, আপুনি সর্বাজ্ঞের পারদর্শী, অভত্রব তত্তই বা কিরুপো অবগত হইব—পরম পুক্রকেই বা কিরুপে অপু করিতে হইবে—ধ্যানই বা কিরুপে করিতে হইবে—মুক্তি সাধনই বা কিরুপে হইবে—হে মুনি সন্তম! আবি আপুনার নিক্ট ঐ

বেদব্যাস উবাচ।

ধর্মরাজ মহাভাগ শৃণু বক্ষ্যামি তত্ততঃ ॥ ৩ ॥
যৎপরং যদ্গুণাতীতং যক্ষ্যোতিরমলং শিবং।
তদেব পরমং তত্ত্বং কৈবল্যপদকারণং ॥ ৪ ॥
শ্রীরামেতিপুরং জাপ্যস্তারকং ব্রহ্মসংস্ককং ।
ব্রহ্মহত্যাদিপাপদ্বমিতি বেদবিদো বিহুঃ ॥ ৫ ॥
শ্রীরামরামেতি জনাযে জপস্তি চ সর্বাদা।
তেবাং ভুক্তিশ্চ মুক্তিশ্চ ভবিষ্যতি ন সংশয়ঃ ॥ ৬ ॥
ভবরাজং পুরা ব্যোক্তং নারদেন চ ধীমতা।
তৎসর্বাং সম্প্রবক্ষ্যামি হরিধ্যানপুরঃসরং ॥ ৭ ॥

সমুদার জানিতে ইচ্ছা করিরাছি, অন্বগ্রহ করিরা আমাকে বলুন। ১ / ২ ।

বেদব্যাস কহিলেন—ছে ধর্মরাজ্ঞ ! তোমার অভিণ্যিত ভব বিষয় সমূহ বলিভেছি অবছিত মনে অবণ কর।৩।

ছে যুধি ঠিন! যিনি পরং ব্রহ্ম, যিনি গুণাভীত, বাচার জ্যোতিঃ নির্মণ ও মললম্ব, বেদজ্ঞ ব্যক্তিরা উচার ভত্ত্ব বিষয় এই বলেন যে, মোক্ষ প্রাপ্ত হইবার কারণই ঠাহার জ্ঞান কর্মার বিষয় এই বলেন থে, মোক্ষ প্রাপ্ত হইবার কারণই ঠাহার করেন, ঠাহার করেণায় হইলে ব্রহ্মহত্যাদি পাপ ছইছে মুক্তি পাওয়াযার। ৪।৫।

বে মহাত্মা ব্যক্তিরা তাঁহাকে সর্বাদাই লগ করিরা থাকেন তাঁহাদিগের ভক্তি এবং মুক্তি হইবে ইহাতে তিলমাত্র সংলর নাই। ৬। তাপত্তয়ায়শমনং সর্বাঘোষনিক্তনং।

দারিত্রছঃখশমনং সর্বসম্পৎকরং শিবং॥৮॥

বিজ্ঞানফলদং দিব্যং মোকৈকফলসাধনং।

নমস্কত্য প্রবক্ষামি রামং কৃষ্ণং জগন্ময়ং॥৯

অযোধ্যানগরে রম্যে রত্তমশুশনধ্যে।।

স্মরেৎ কল্লতরো কৃলে রত্তমিগ্রাসনং শুভং॥১০॥

তন্মধ্যেইদলং পদ্মং নানারত্বৈশ্ব বেষ্টিতম্।

স্মরেন্মধ্যে দাশর্থিং সহ্তাদিত্যভেজসম্॥১১॥

পিত্রক্গতং রামমিক্রনীল্মণিপ্রভ্ম।

কোমলাক্ষং বিশালক্ষং বিত্রঘণিন্বরার্তম্॥১২॥

ভাত্বোটিপ্রতীকাশং কিরীটেন বিরাজিত্য্।

বক্তব্যবেষ্করেরত্বকুগুল্মগুত্তম্॥১০॥

রত্বকরণমঞ্জীরং কটিদূত্তেরলঙ্কৃত্ম্।

ত্রীবৎসক্রেপ্তভারক্ষং মুক্তাহারোপশোভিত্মু ॥১৪॥

দিব্যরত্বসমাযুক্তমুজিকাভিরলঙ্কৃত্য্।

রাঘবং হিচ্চুজং বালং রামমীবংশ্বিতাননম্॥ ১৫॥

তুলসীকুল্মন্দারপুল্পমাল্যেরলঙ্কৃত্য্।

কর্পরাপ্তক্রকন্ত রিদিব্যগদ্ধানুলেপনম্॥ ১৬॥

যোগশাল্রেঘভিরতং বোগীশং বোর্গারক্য্।

সদা ভরতসোমিত্রশক্তিক্রেক্রশণোভিত্য্। ১৭॥

বিদ্যাধরস্করাধীশসিদ্ধান্ত ক্রমানমহর্নিশম্॥ ১৮॥

বিশ্বামিত্রবিশিল্পিটিং পরিসেবিভ্র্য্।

সনকাদিমুনিভেটি র্বোগের্কেশ্চ সেবিভ্র্য্। ১৯

ধীশক্তি সন্মত দেবর্ষি নারদ পূর্ব্বে যাহ। বলিয়াছিলেন আমিও ভগবান্ শ্রীহরির ধ্যান এবং অপরাপর যাবতীরই কছিতেছি। ৭।

ভাগত্তরানল বিনাশকারী, পাপরাশি মিধনকারী, যাবভীর দরিত্রদিনাের হঃথাপছারী, সমুদার বিভব দাতা সর্ব মঙ্গলমর দিবা বিজ্ঞান ফল প্রদানকারী, মোক্ষ ফল সাধন জগলাাপক রাম ক্ষাকে নমকার করিয়া উচ্চার বিষয় বলিভেছি। ৮।

মরোছন অযোধানগরত রজাদি থচিত মওপাবছারী কংপা তকর মূলদেশে সংখিত শুভনর রজুনিংহাসন অরণপথে আনম্বন করিবে; জনস্কর ভাষার মধ্যত্তি অফ্টনল কমল, কৈবিধ রজাদি পরিবেক্টিড তনর রম্বনাথকে অরণ করিবে 1১০।১১।

ইজ নীলমলিপ্রাক্ত কেইলগাল বিশালনমন বিজ্যন্ত্রগাঁহরারত পিতৃজ্যোত্তগাল শ্রীরাসমূহজ্ঞকে শ্রণ করিবে; লোট দিনম্বলি সদৃশ কিরীট বিরাজিত রম মণ্ডিত কের্র নূপুর এবং কুকল সমাযুক্ত রঘুনাথকে শ্বরণ করিবে; রত্ন কছণ সমাযুক্ত কটি স্ক্রোছ্ত ব্রীবংস কোছত মণিবুক্ত মুক্তাহারে স্থাভিত সীতানাথকে শ্বরণ করিবে। ১২।১৩1১৪।

দিবা রত্ম সমাযুক্ত মুক্তিকার অবাস্কৃত ক্ষমদাসাবদন বিভ্জা বিশিক্ষা বালক বমুপভিকে স্মরণ করিবে; তুলসী, কুল, মন্দার তক কুন্ম মাল্যে অলম্কুত—কপূর অগুক কন্ত্র বি দিবা স্থান্ধাম্বলিপ্ত রাঘবকে স্মরণ করিবে; যিনি যোগশাছে মর্মদা অনুরক্ত, যিনি যোগীল ও যোগদারক, যিনি অনুস্থা ভরত সৌমিত্রি ও শত্রুম উপশোভিত, হইরা আছেন ভাঁচাকে স্মরণ করিবে ১৫।১৬।১৭।

বিনি বিদ্যাধর এবং সুরদিগের অধিপতি, যিনি শিদ্ধ গল্পক, কিল্পরগণ এবং নারদ অভৃতি যোগীবরদিগোর ভারা দিবানিশি ভূমনান ভ্রমা থাকেন ভাঁহাকে অফুকণ প্রবণ করিবে। যিনি বিশামিত্র ও বশিক্ষ প্রভৃতি মুনিদিগের ভারা পরিসেবিত ভ্রমা থাকেন, যিনি সনকাদি যোগীর্ক কর্তৃক দর্কাণ শুশ্রাবিত ভ্রমা থাকেন ভাঁহাকে ভ্রপ্যা স্কাণ প্রবণ রাসং রঘুবরং বীরং ধনুবেদিবিশারদম্।

মঙ্গলায়তনং দেবং রামং রাজীবলোচনং ॥ ২০

সর্বিশাস্তার্থতত্ত্ত্রমানন্দকরন্থন্দরং।
কৌশলানন্দনং রামং ধনুর্বাণধরং হরিম্॥ ২১
এবং সঞ্জিন্তরন্ বিষণ্ডুং মক্ক্রোতিরমলং বিভুং।
প্রস্তার্থার ভূতাব রঘুনন্দনং।
কৃতাঞ্জলিপুটো ভূতা চিন্তয়য়য়ৢতং হরিম্॥ ২৩

যদেকং যৎপরং নিত্যং যদনভ্ঞিদাস্তকং।

যদেকং ব্যাপকং লোকে উজ্লেশং চিন্তয়াম্যহং। ২২

বিজ্ঞানহেতুং বিমলায়তাকং প্রজ্ঞানরূপং স্বস্থাথিকহেতুং। শ্রীরামচক্রং হরিমাদিদেবং পরাৎপরং রামমহং ভক্তামি॥ ২৫॥

কারবে। বহুকোঁদ বিশারদ মঙ্গলায়তন লোচন, মহাবল প্রাক্রম রাজীবলোচন রত্বর প্রীরামচন্দ্রকে নিরন্তর স্মরণ করিবে; যিনি সর্কা শাস্ত্র ও বিজ্ঞান ভত্তবিষয় অবগত আছেন, যিনি আনন্দকর ও সুন্দর, যিনি কোশল্যাতনয় সেই ধ্রুর্কাণধারী প্রীহরি রামচন্দ্রকে স্মরণ করিবে। দেবর্ষি নারদ মহাজ্যোতি সম্পান বিমল বিভূ বিশ্বুকে গুদর মধ্যে এইরূপ ভাবনা করিয়াও প্রজ্ঞাই মনে কুতাঞ্জলিপুট হইরা সর্কালোক মঙ্গল কামনার নিমিন্ত রব্নন্দনকে পরিভূই করিলেন;—যিনি ভগতের একমাত্র সম্বল—যিনি পরম পুরুষ—যিনি নিত্য, ঘাহার অন্ত নাই, গিনি চিলাল্মক, যিনি ইহলোকে এক মাত্র বাগেক, জাহার সেই রূপ চিন্তা করি; যিনি বিজ্ঞানের কারণীভূত, ঘাহার নয়ন বিমল ও আয়ত, যাহার রূপ প্রজ্ঞানে পূর্ণ, যিনি একমাত্র স্ক্রমণের ভলনা করি। দেবর্ষি নারদ মহাকবি অনাদি, পুরুষোত্তম, কবিং পুরাণং পুরুষং পুরস্তাৎ সনাতনং যোগিনমীশিতারং। অণোরণীয়াং সমনস্তবীর্ষ্যং প্রাণেশ্বং রামমুসো দদর্শ॥ ২৬॥

नात्रम खेषाठ ।

নারায়ণং জগন্ধাথমভিরামং জগৎপতিং।
কবিং পুরাণং বাগীশং রামং দশরথাস্করং॥ ২৭॥
রাজরাজং রঘুবরং কৌশল্যানন্দবর্জনম্।
ভর্গং বরেণ্যং বিশ্বেশং রঘুনাথং জগদ্গুরুম্॥ ২৮
সত্যং সত্যপ্রিয়ং শ্রেষ্ঠং জানকীবল্লভং বিভুম্।
দৌমিত্রি পূর্বজং শান্তং কামদং কমলেকণং॥ ২৯
আদিত্যং রবিমীশানং স্থাণিং সূর্য্যনাময়ম্।
আনন্দরূপণং দৌম্যং রাঘ্বং করুণাময়ং॥ ৩০॥

সন্তন, যোগী প্রধান, অতি স্ক্র, অনন্ত বীর্ষা প্রাণেশর জীরান-চক্রকে দর্শন করিলেন । ১৮ ৷ ১৯ ৷ ২০ ৷ ২১ ৷ ২২ ৷ ২৩ ৷ ২৪ ৷ ৷ ২৫ ৷ ২৬ ৷ .

নারদ কহিলেন—নারারণ জগরাধ, অভিরাম জগৎপতি, অনাদি, বাকোর ঈবর, শ্রীরামচন্দ্র রাজা দশরথের তনর। তিনি রাজাদিগের রাজা, রঘুবর, কৌশলাার আনন্দ বর্জ ন ; তিনি ভগ অর্থাৎ ঐর্থ্য বীর্যা বলঃ দৌভাগ্য জ্ঞান ও বৈরাগ্য এই ছর প্রকার শক্তি ; তিনি প্রধান, বিশ্বসংসারের ঈবর, তিনি রঘু-বংশের প্রভু, তিনি জগভের গুরু। তিনি সভ্য, সভ্যপ্রিয়, শেষ্ঠ ; তিনি জানকীবরত ও বিভু ; তিনি সৌমিত্রির পূর্বজ, শাস্ত, অভীইদাভা, এবং কমলেকণ। তিনি আদিভা, রবি, ঈশান তিনি স্থা, তিনি স্থা, ও অনামর ; তিনি আনন্দরণী, শাস্ত রঘু-কুলোভ্র করুগামর। ২৭। ২৮।২৯।৩০।

ভামনগ্ন তপোমূর্তিং রামং পরশুধারিণম্।
বাক্পতিং বরদং বাচাং শ্রীপতিং পক্ষিবাহনম্॥৩ঃ॥
শ্রীশার্মধারিণং রামং চিন্নয়ানন্দবিগ্রহম্।
হলধ্যিকুমীশানং বলরামং কুপানিধিম্॥ ৩২ ॥
শ্রীবল্লভং কুপানাথং জগন্মোহনমচাত্তম্।
মহুস্তকুর্মবরাহানি রূপধারিণমব্যয়ম্॥ ৩৩ ॥
বাস্থানেশং জগদেয়ানিমনানিনিধনং হরিম্।
গোবিন্দং পোপতিং বিষ্ণুং গোপীজনমনোহরম্॥ ৩३
গোপোপালপরীবারং গোপকস্থাসমার্তম্।
বিহৃৎপুঞ্জ প্রতীকাশং রামং কৃষ্ণং জপন্ময়ম্॥ ৩৫ ॥
বিশ্বংপুঞ্জ প্রতীকাশং রামং কৃষ্ণং জপন্ময়ম্॥ ৩৫ ॥
বিশ্বংশ্বরান্ধিং মাধ্বং মকরধ্বজং।

তিনি জামদগ্যা, তপেশম্ভি পরশুধারী রামচক্র; তিনি বাক্পতি বরন. বাচা, লক্ষ্মীপতি, এবং পক্ষিবাহন; জিনি শ্রীশাঙ্গারী রামচক্র। তিনি চিনার, আনন্দ ও বিগ্রহরূপী; তিনি ঈশান ও রূপানিধি হলধারী বলরাম। তিনি শ্রীনাথ, রূপানাথ, ফগনোহন অচ্যত; তিনি মংস্যা, কূর্মা, বরাহ গুভ্জি রূপারী অবার; তিনি জ্বরং যোনি বাস্থদের, অনাদি নিধন শ্রীহরি; তিনি গোবিন্দা, গোপতি, গোপীমনমোহনকারী পর্ম বিষ্ণু; তিনি প্রিরীর পালক এবং গোপাল ও গোপকন্যায় সমাস্কৃত ওবং বিদ্যুৎরাশি সৃদৃশ; তিনি শ্রীরাম ও শ্রীকৃষ্ণ স্মুদার জগতে পরিবাশ্র হইয়া আছেন। ৩১। ৩২। ৩২। ৩৫।

ভিনি গো এবং গোণিকারণদারা সমাকীর্ণ বংশিধ্বনি করিছে থারপর নাই তৎপর; তিনি কামরূপী ও কলাবৎ, তিনি কামিনী-দিলের কামদ, সর্বাময় জগদীখার। তিনি মন্মধ এবং মধ্রানাগ্ন; শ্রীবরং শ্রীকরং শ্রীশং শ্রীনিবাসং পরাৎপরম্॥ ৩৭॥
ভূতেশস্ত্পতিং ভদ্রং বিভূতিং ভূতিভূষণং!
সর্ববৃহগহরং বারং তুইদানববৈরিণং॥ ৩৮॥
শ্রীনৃসিংহং মহাবাহুং মহান্তং দাঁপুতেজসং।
চিদানক্ষয়ং নিতাং প্রণবং জ্যোতিরূপিণম্॥ ৩৯॥
আদিতামপ্রকাতং নিশ্চিতার্থ স্বরূপিণং।
ভক্তপ্রিয়ং পদ্মনেত্রং ভক্তানামীপ্সিতপ্রদং ॥ ৪০॥
কাশল্যেই কলামূর্ত্তিং কাকুৎস্থ কমলাপ্রিয়ং।
সিংহাসনেসমাসীনং নিত্যব্রত্মকল্মষং॥ ৪১॥
বিশ্বামিত্রপ্রিয়ং দান্তংস্বদারনিয়ত্বতং।
যত্তেশং মৃজ্ঞপুরুষং যজ্ঞপালনতৎপরং॥ ৪২॥

তিনি মাধ্ব ও মকরংবজ্ঞা, তিনি শ্রীধন, শ্রীকর, শ্রীশা, শ্রীনিবাদ এবং পরাংপর পরংব্রহ্ম। তিনি ভূত সম্লায়ের ঈশ্বর, ও ভূ-পতি; তিনি জ্ঞ নি বিভূতি এবং ভূতিভূষণ; তিনি সর্ব্যত্থিতর মহাবীর ও ছইালা দানবদিগের শক্তা। তিনি নুসিংচ ও মহাবাহ ; তিনি মহান্ত এবং দীও তেজা, চিদানন্দময় ও নিতা, তিনি প্রণার সর্বাজ্ঞাতি রূপী, তিনি স্থ্যমণ্ডলের মধান্তলে অবস্থিত আছেন; তিনি নিশিচ্ত বিষয়ের স্বরূপী; তিনি ভক্ত জানের প্রিয়া ও পদ্মনেত্র এবং ভক্তদিগের বাঞ্ছিত পদার্থ প্রদান করিয়া পাকেন। ৩৬। ৩৭। ৩৮। ৩৯। ৪০।

তিনি কোশলতন্ত্রার কলা মৃত্তি—কাকুৎমু কমলাপতি;
সিংহাসনোপবিষ্ট নিতাধর্মাবলম্বী নিত্পাপ রামচন্দ্র; তিনি
বিশ্বামিত্রের প্রিয়শক্রনিগের দমনকারী, সর্কানা উদারব্রতে বৃতী;
তিনি যজের ঈশব, তিনি যজ্ঞ পৃক্ষ এবং যজ্ঞ পালনে তৎপার।
তিনি সতাসক এবং কোধকে প্রাক্তর করিয়াছেন; তিনি,
শরণাপ্রদিগকে সন্তামের ন্যায় সন্দর্শন ও সর্কারেশ বিদ্বিত
করিয়া থাকেন; তিনি ধার্মিকবর বিভীষ্ণকে বর প্রদান
করিয়াছিলেন। তিনি রেফি অত্তর্থৰ দক্ষরালার মন্তক ছিল

সত্যসন্ধং জিতজোধং শরণাগতবৎসলং।
সর্ববেরুশাপহরণং বিভীষণ বরপ্রদং ॥ ৪০॥
দশগ্রীবহরং রৌদ্রুং কেশবং কেশিমর্দ্দনং।
বালিপ্রমথনং বীরং দুগ্রীবেপ্সিতরাজ্যদং ॥ ৪৪॥
নরবানরদৈবৈশ্চ সেবিতং হুমুমৎপ্রিয়ং।
শুদ্ধং সূক্ষ্মং পরং শাস্তং তারকব্রহ্মরূপিণং ॥ ৪৫॥
সর্ববিত্বাহাভূতক্ষং সর্বাধারং স্নাতনং।
সর্ববিধারণকর্তারং নিদানং প্রক্তেঃ পরং॥ ৪৬॥

করিরাছিলেন, তিনি কেশীবিনাশী কেশব। তিনি কিছিকা।
রাজ বালিকে মণিত করিরা সুগ্রীবের অভিলবিত রাজ্যা
প্রদান করিয়াছিলেন; তিনি নর বানর ও দেবতাদিগের দ্বারা
পরিদেবিত এবং পবন নন্দন ছন্মানের প্রিয়; তিনি শুদ্ধ,
তিনি স্কুন্ধ, পরংব্রহ্ম, শাস্ত ও তারক ব্রহ্মরপী। তিনি যাবতীয় ভূতের আত্মা ও সমুদায় ভূতের অন্তর্গত এবং সমস্ত
পদার্থের আধার ও সনাতন; তিনি চতুর্দ্ধিকস্থ যাবতীয় বস্তুর
কারণ ও কর্ত্তা তিনি নিদান ও প্রকৃতির পরম ব্রহ্ম অতএব
ভারাকে নমস্কার করি। ৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫। ৪৬।

হে বিভো! আপনি নিরাশ্রয়,নিরাভাস, নিরবৎ, নিরঞ্জন, নিতানন্দ, নিরাকার, অছৈত, তম ও পরমন্ত্রন্ধ; আপনি পরাংপরতর, তত্ত্ব, সভানন্দ, চিদায়ক মনে ও শীর্ষদেশে নিরস্তর অবস্থান করিতেচেন অতএব অগপনাকে নমস্থার করি। ছে রঘুনার্থ! আপনি স্থ্যমণ্ডলের মধ্যে অবস্থিত আছেন, আপনি সীতা সমন্বিত রামচন্দ্র, অপনি পুণুরীকাক্ষ্য, অমের ও গুরুতংপার অভএব অগপনাকে নমস্থার করি। আমি জ্যোতিক পদার্থপত্তি বাস্থদেবকে নমস্থার করি। আমি জ্যোতিক পদার্থপত্তি বাস্থদেবকৈ নমস্থার করি। জাগানন্দর্রপী রামচক্ষ্যকে নমস্থার করি। আপনি যোগী ও বন্ধবাদীদিগের বেলান্তমিন্ট এবং জনদেবীদিগের নাম্যামর নিজ্ঞাত্বের জন্য উদ্ভব ক্রেরাছেন অতএব আপনাকে নমস্থার করি। ৪৭। ৪৮। ৪১। ৫১।

निরাময়ং নিরভোসং নিরবদ্যং নিরঞ্জনং। নিত্যানন্দং নিরাকারমহৈতং তম্দঃপরং॥ ৪৭ ॥ পরাৎপরতরং তত্ত্বং সত্যানন্দং চিদাত্মকং। মনসাশিরসা নিত্যং প্রণমামিরঘৃত্যং ॥ ৪৮ ॥ সূর্য্যওলমধ্যক্ষং রামং সীতাসমন্বিতং। নমামিপুগুরীকাক্ষমমেয়ং গুরুতৎপরং॥ ৪৯॥ নমোহস্তবাম্বদেবায় জ্যোতিষাংপত্য়ে নমঃ। নমোহস্ত রামদেবার জগদানন্দর্রপিণে ॥ ৫০॥ नत्यारवनास्त्रिनिशंत्र (यातिहर्न जन्मवानिहन । যায়াময় নিরস্তায় প্রপন্নজনসেবিনে॥ ৫১॥ বন্দামহেমহেশান চত্তকোদত্থতনম। क्षानकी एक क्यानक्तर्यक्षनः त्र पुनक्तन्य ॥ ८२ ॥ উৎফ্লামলকোম লোৎপলদলশ্যামায়রামায়তে কামায় প্রমদামনোহরগুণগ্রামায়রামাত্মনে। যোগারত্যুনীক্রমানস সরোহংসায় সংসার-বিধ্বং দায় স্ফুরদে জিদে রঘুকুলোভং দায়পুং দেনমঃ

প্রচণ্ড কোদন্ত খণ্ডনকারী মনোছর বন্দনা করি। জানকীর স্থানানদা বর্জন রঘুনাথকে নমস্থার করি। সুকোমল বিকচ কমল নরন নবদ্র্জাদলশ্যাম প্রমাণ মহেশপুণকাম
ও আশেব গুণগ্রাম প্রথান্তম রামচন্দ্রকে নমস্থার করি;
যোগাসনাসীন মুনীন্দ্র মানস-সর হংল সংসার বিধ্বংস্কারী
মহাদীপ্রি রযুক্লজাভ প্রথান্তম রযুনাথকে নমস্থার করি।
এই সংসারোৎপত্তি-কারণ বেদবিদ্ জনের অপ্রাধান্য, আদিত্যচল্রে স্থাভা সমন্বিত অনল সর্জাত্মক সর্ক্রজীবগাভ স্বরূপ রাম
চল্রকে অথ্যে নমন্বার করি। নিরঞ্জন, প্রভিন্ন-কিছীন নিরীছ
নিরাশ্র, নিক্কন, মহামান্না, নিত্য নিশ্বর বিষয় পূনা স্বরূপ

ভবোদ্ধং বেদবিদাং বরিষ্টমাদিত্য চন্দ্রানানস্থপ্রভাবম্ ।
দর্বাত্মকং দর্বগতস্বরূপং
নমামিরামং তমসংপরস্তাৎ ॥ ৫৪ ॥
নিরপ্তনং নিজ্পাত্মং নির্নাহং
নিরাশ্রয়ং নিক্ষমপ্রপঞ্জম্ ।
নিত্যপ্রবং নির্বিষয়স্বরূপং
নিরস্তরং রামমহং ভজামি ॥ ৫৫ ॥
ভবাকিপোতং ভরতাগ্রজ্ভম্
ভক্তপ্রিয়ং ভামুকুলপ্রদীপম্ ।
ভূতত্রিনাধ ভূবনাধিপস্তম,
ভজামি রামং ভবরোগবৈদ্যম্ ॥ ৫৬
দর্বাধিপত্যং সমরাঙ্গধীরং
সত্যং চিদানক্ষয়স্বরূপম ।

সত্যং শিবং শান্তিময়ং শরণাং
সনাতনং রামমহং ভজামি॥ ৫৭॥
কার্যাক্রিয়াকারণমপ্রমেয়ং
কবিং পুরাণক্ষমলায়তাক্ষম্।
কুমারবেদ্যং করুণাময়ত্
কল্পক্রমং রামমহং ভজামি॥ ৫৮॥
তৈলোক্যনাথং সরসীরুহাক্ষং
দয়নিধিং ছল্ডবিনাশহেভুম্।
মহাবলং বেদনিধিং স্করেশং
সনাতনং রামমহং ভজামি॥ ৫৯॥
বেদান্তবেদ্যং কবিমীশিতারমনাদিমধ্যান্তমচিত্যমাদ্যম।
অগোচরং নিশ্মলমেকরূপং
নমামিরামং তমসং পরস্তাৎ॥ ৬০

রামচন্দ্রকে অমুক্ষণ ভজনা করি ।৪৭।৪৮।৪৯।৫°।৫১। ৫২।৫৩।৫৪।৫৫।

ভবজলধির তর্ণী ভরতাগ্রজ সেই ভক্তপ্রির প্র্যাবংশ প্রদীপ রামচন্দ্রকে যাবজীয় ভূতদিগের প্রীপতি বর্গ, মর্ত্য ও পাতাল ত্রিভ্বনাধিপতি সেই ভবরোগ বৈদ্য জীরামকে ভলনা করি। সর্বাধিপতি সমরাল ধীর সত্য, চিদামলময় স্বরূপ, শিব, শান্তিময় শরণা সনাতম রামচন্দ্রকে ভলনা করি। হে ভগবদ্। আপনি কার্যা ও ক্রিয়ার কারণ, অপ্রমেয়—করি, প্রাণ, কমলায়তাকি, কুমার বেদ্য ক্ষণাময় সেই ক্রক্রম রাম্ব চন্দ্র অভঞ্জব আপ্যাকে ভল্মা করি—আপনি ত্রৈলোক্যনাথ, প্রক্রময়ন, দ্যার সাগার দক্ত বিনাশ কারণ, মহাবদ, বেদের

পারাবার, স্বরেশ সনাতন রামচন্দ্রকে জ্জনা করি; আপনি অপার ও স্থা শ্বরূপ পরাৎপর রামচন্দ্র, অতএব আপনাকে জ্জনা করি; আপনি তত্ত্ব শ্বরূপ, পুরুষ পুরাণ ও আপনি শ্বতেজ পরিপুরিত বিশ্ব; আপনি রাখাদিগের রাজাও স্থা মণ্ডল মধ্যে অবস্থিত, আপনি এই নিখিল জগতের ঈশ্বর রামচন্দ্র অতএব আপনাকে জ্জনা করি । ৫৬। ৫৭। ৫৮। ৫৯।৬০।

চিদানন্দমর রযুবংশপতি লোকান্তিরার মুকুন্দ জীহরি রাম চক্তকে নমস্বার করি। ছে রযুবর! আপনি বিদ্যাধিপতি ক্রিদিগের শ্রেষ্ঠ, অভএব স্বাপনাকে প্রশাম করি। ছে রাম! আপনি যোগীদিগের শ্রেষ্ঠ ও স্তাসক্ষ-স্বাপনাকে সকলে সংশবদো ব্যক্ষা দি সক্তমজং
হরিং বিকৃষন ভ্রমাদ্যম্।
অপারদন্দিৎ স্থমেকরপং
পরাৎপরং রামমহং ভজামি ॥৬১।
তত্ত্বরপং পুরুষং পুরাণং
সতেজনা পুরিতবিশ্বমেকম্।
রাজাধিরাজং রবিমগুলন্দং
বিশেষরং রামমহং ভজামি ॥৬২॥
লোকাভিরামং রবুবংশনাথং
হরিকিদানন্দ্রময়ং মুকুন্দম্।
অশেষবিদ্যাধিপতিং করীক্রং
নমামিরামং ত্রমণঃ পরস্তাৎ॥৬৩॥
বোগীক্রদক্রেশ্রম্প্রেশ্রমানং

দেবা করিয়া থাকে—আপনি নির্মাণ আদিদেব নারারণ ও লগতের একমাত্র পাতি, অককার আদিভা রূপ ধারণ করিয়া- ছেন অওএব আপনাকে প্রতিদিন নমস্বার করি। আপনি বিভূতিপ্রদ অর্থাৎ অনিমাং, লখিমা, বাজি, প্রাকাম্যা, মহিমা ঈশিও, ব'লড়, কামাবসান্নিও প্রদান করিয়া ধাকেন ও বিশ্ব নংলার স্থানন করিয়াছেন, আপনি বিলাম—বাজ্ঞাদিগের উক্র ব্যুবংশাধিপতি জ্বাদীশ্বর—আপনি চিন্তাভীত বাক্যাভীত জ্যোতিশ্বর অনন্তম্পূর্তিরামচন্দ্র অভ্তর আপনাকে ভজনা করি। ১৯। ৬০। ৬১।

আপনি এই অশেষ বিশ্ব সংসাবের বিহার গীন আদিতা
গুক পূর্ণ সুধাতিরাম যাবতীর বস্তুর সাক্ষিদীপ্তিমর নারগরণ
বিষ্ণু অভএব আপনাকে ভঙ্কনা করি—মুনীক্ত গুহা পরিপূর্ণ
কাম—আপনি চক্ত পাপবিনাশ কারণপরাৎপর পর রক্ষ পবিত্র ;
মহান্ রামচক্তকে ন্মসার করি, ছে রয়ুন্দন ! আপনি ব্রফা

নারায়ণং নির্মালমাদি দেবম্। নভোহস্মিনিত্যং জগদেকনাথ-মাদিত্যবর্ণ: তম্দঃ পরস্তাৎ ॥ ৬৪ ॥ বিভূতিন্দবিশ্বস্তজংবিরামং तारकक्तभौगः त्रघू वः मनाथम्। অচিন্তামব্যক্তমনন্তমূর্ত্তিং জ্যোতির্মায়ং রামমহং ভজামি॥ ৬৫। অশেষসংসারবিহারহীন-মাদিত্যগং পূর্ণস্থাভিরামম্। সমস্তসাক্ষিং তমসঃ পরস্তাৎ নারায়ণং বিষ্ণুমহং ভজামি॥ ৬৬ ॥ মুনীক্রগুহং পরিপূর্ণকামং কলানিধিস্কলায়নাশহেতুম্। পরাৎপরং যৎপরমং পবিত্রং ন্মামিরামং মহতোমহাস্তম্ ॥ ৯৭ ॥ ব্রহ্মাবিফুশ্চ রুদ্রশ্চ দেবেক্রো দেবতান্তথা। আদিত্যাদিগ্রহাদৈচৰ জ্যেবরগুনন্দন ॥ ৬৮ ॥

বিষ্কু ও মহেশ্বর — জাপনি দেবতা ও দেবতাদিগের ইন্দ্র এবং আদিতা ও গ্রহ, আপনি তাপল, ঋষ, সিদ্ধ, সাধ্য। ও মকং— অপান বিশ্রে বেদ ও যজ্ঞ এবং পুথাণ ও ধর্ম সংছিতা, যক্ষ্য, রাক্ষ্য, ও গান্ধব্য প্রভৃতি কাপালিক দিগা গ্রহুদিগার বর্ণা শ্রম ধর্ম ও বর্ণ সমস্তই আপনি ; হে রঘু পুদ্ধব! আপনি সনকাদি মুনিদিগের শ্রেষ্ঠ আপনি অফ্টরম্ম — আপনি তিকাল ও একাদশ করে। হে রঘুনন্দন! আপনি তাবকা ও দশক— সপ্রবীপ ও সমুদ্র—নগ নদ ও ক্রম; হে রঘুনায়ক আপনি ভ্রের ও ক্রম্ম আপনি দানব দিগের অন্তকাবী; তে রঘুবল্ল ।

তাপদাঋষরঃ দিহ্নাঃ সাধ্যাশ্চ মরুতস্তথা । বিপ্রা বেদান্তথাং যজ্ঞাঃ পুরাণং ধর্মাদংহিতানা ১৯৯ वर्गाञ्चमाञ्ज्यां सम्भा वर्गसन्त्राञ्चरेशवह । সক্ষরাক্ষম গন্ধবিদিক পালাদিগগন্ধাদিভিঃ॥ ৭০ ॥ সনকাদিমুনিশ্রেষ্ঠাস্তমেব রছ্পুঙ্গব। বদবোহফৌত্রয়ঃকালা রুল্লাএকাদ**শস্থ্**তাঃ ॥ ৭১ ॥ ভারকাদশদিক চৈবত্তমেব রঘুন্দন। সপ্তৰীপাঃ সমুদ্রাশ্চ নগান্দ্যস্তথাক্রমাঃ॥ ৭২॥ স্থাবর। জ**ন্সমাদৈচব ছদে**ব রঘু**না**য়ক। দেবতিৰ্ঘাঙ্মকুষ্যাণাং দানবানাং ত**়েথবচ** ॥ ৭৩ ॥ মাকা পিতা তথা ভাতা ছয়েব রঘুবল্লভ। मर्त्वकाः वः भन्नः खन्ना इनायः मर्व्यागरिक ॥ १८ ॥ হুসক্ষরং পরং জ্যোতিস্থুমের পুরুষোত্তম। ত্বমেব তারকং ব্রহ্মত্বভোহন্যারেবকিঞ্চন ॥ ৭৫॥ শান্তং সর্ববগতং সূক্ষাং পরং ব্রহ্মসনাভনম্। রাজীবলোচনং রামং প্রণমামি জগৎপতিম্॥ ৭৬॥

ব্যাস উবাচ।
ততঃ প্রসন্ধঃ জ্রীরাম্ঃ প্রোবাচ মুনিপুঙ্গবম্।
তুপ্তোহিম্ম মুনিশার্দুল রুণাম্বরমুভ্যম্॥ ৭৭॥

জাপনি মাতা পিতা ও লাতা—ক্ষাপনি সমস্তই পর্য ব্রহ্ম ও ভ্রম । ৬১। ৭০। ৭১। ৭২। ৭৯। ৭৪।

হে পুক্ষোত্তম! আপনি ক্ষকর ও পরম, আপনি ক্লোতি-স্বরূপ, আপনি ভারকরক, আপনার অন্য কোনরূপ তত্ত্ব মাই; আপনি শাস্ত, সকল বস্তব অন্তর্গত ও হক্ষ; আপনি পরং বিশ্ব সনাচন ও রাজীবলোচন রামচন্দ্র এবং অগতের পতি, অতএব স্থাপনাকে প্রনিপাত ক্ষরি। ৭৫। ৭৬।

নারদ উগাচ।

যদি হু প্রেছিন সর্ব্বক্ত শ্রীরাম করুণানিধে।

ত্বমূর্ত্তিদর্শনেনৈর কৃতার্থোহহং চ সর্ব্বদা॥ ৭৮॥

ধন্যোহহং কৃতকৃত্যোহহং পুণ্যোহহং পুরুষোত্রম।

অন্য মে সফলং জন্মজীবিতং সফলঞ্চমে॥ ৭৯॥

অন্য মে সফলং জ্ঞানমদ্য মে সফলন্তপঃ।

অন্য মে সফলং কর্ম দংপাদান্তোজ দর্শনাং।

অন্য মে সফলং সর্ব্বম্যনাম্মরণং তথা॥৮০॥

ত্বং পাদান্তোকহ্দন্তকিং দেহি রাঘব।

ততঃ প্রমসম্পীতঃ স রামঃ প্রাহ্নার্দম্॥৮১॥

ব্যাস কহিলেন! অনস্তর জীরামচক্র ভাঁছার শুবশ্রবণে সাভিশ্য পরিতৃষ্ট হইরা মুনিপৃঙ্গবকে বলিলেন,ছে মুনিশার্দি,ল ঃ আমি ভোমার শুব আংকর্ণন করিয়া যার পর নাই সন্তুষ্ট ছই-য়াটি অভএব এক্সণে উক্তম বরপ্রার্থনা কর। ৭৭।

নারদ কহিলেন। হে সর্বজ্ঞ, ককণামর শ্রীরামচক্রণ যদিও আপনি আমার প্রতি দত্তই ইইরাছেন বট্টে, কিন্তু আদা আপনার মূর্ত্তি দক্ষনি করিয়া আমি কতক্রতার্থ ইইলাম : তে প্রুষোত্তম, আমি ধল্ল ইইলাম, কতক্রতা ইইলাম—আমি প্ণানীল, অদা আমার জন্ম ও জীরন স্কুল ইইল : আপনার পাদ-পদ্ম দর্শন হেতু অদা আমার জান দার্থক ইইল, ভপশু। স্ফল ইইল, আমার যাবতীয় কার্য্য শুফল প্রদাব করিল, অবিক্ষ আপনার নাম শ্রণ করিয়া আদা আমার সমস্ভই সফল ইইল, অত্তব ছে রাঘব ! আপনার পাদপ্রারপ তরণীতে বাছাতে আমার দৃঢ়া ভক্তি থাকে, ভাহাই প্রদান কর্মন অন্তরে রাম্চশ্র প্রম্ম পরিভূষ্ট ইইয়া নার্দ্যকে কছিলেন। ৭৮ । ৭৯ ৷ ৮০ ৷ ৮১ ৷

জীরাম উবাচ।

মুনিবর্যমহাভাগ মুনেত্বিষ্টং দদামি তে। যন্ত্রয়া চেপ্সিতং সর্ববং মনসা তন্তবিষ্যতি ॥ ৮২॥

नात्रम खेवाह।

বরং ন্যাচে রঘুনাথ বুশ্রংপাদাজভক্তিঃ সভতং ন্যাস্ত।
ইদং প্রিয়ং নাথবরং প্রযাচে
পুনঃ পুনস্থানিদমেব যাচে ॥ ৮০ ॥
ব্যাস ভবাচ।

ইত্যেবমীড়িভো রামো প্রাদান্ত সোবরান্তরম্। বিররাম মহাতেজাঃ সচ্চিদানন্দ বিগ্রহঃ ॥ ৮৪॥ অবৈত্যমলং জ্ঞানং ত্রমাযুর্বং তথা। অন্তর্ধায় জগন্নাথঃ পুরতন্তস্তরাঘবঃ ॥ ৮৫॥

বিরাম বলিলেন। ছে মুনিশ্রেষ্ঠ মহাভাগ নারদ! আমি ভোষাকে উলাই প্রদান করিলাম। অধিকত্ত তুমি মনে বাছা অভিলাধ করিবে ভোমার ভাছাই লফল হউবে। ৮২।

নারদ কছিলেন। হে রবুনাথ ! আমি আপনার নিকট অদ্য কোনরূপ বর যাচ্ঞা করি না, কেবল আপনার জ্ঞীপাদ-কমলে যেন আমার ভক্তি থাকে এই মাত্র প্রিয়বর পুনঃ পুনঃ প্রার্থনা করি। ৮৩।

বাাস কহিলেন—নারদকর্ত্ক এইরপ শুত হইলে সচিদানক্ষ
অমিততেজা রামচন্দ্র তাঁহাকে অপর একটা বরদান করিলেন যে,
অট্রেড অমসজ্ঞান এবং ভরাম শরণ শাকিবে—অনম্ভর
তাঁহার সম্প্রেই অগরাথ অন্তর্হিত হইলেন।—রয়ুনাথ রামচল্রের এই অফ্রেম সর্বাস্থাভাগ্য সম্পান্তি ও মুক্তিপ্রদ এবং
ভ্তমর ভবরাক্ষ ব্রহ্মার পুত্রারা বেদের সারাংশ হইতে হে
দেব! আপনার অতিগৃঢ় সেহ যখতঃ প্রকীন্তিত হইরাছে।
যিনি ক্রিসন্ধ্যা ও শ্রহাবান্ হইরা এই শুব পাঠ বা শ্রবণ করেন

ইতি জীরঘুনাথস্যস্ত বরাক্তমস্ত্রম্।
সর্বাদোভাগ্যসম্পত্তি দায়কজা জিলং শুভুম্॥ ৮৬॥
কথিতং ব্রহ্মপুত্রেণ বেদানাং দারঘুত্তমম্।
শুভাদস্ভুজ্মং দিব্যং তবঙ্গেহাংপ্রকীর্তিভুম্॥ ৮৭॥
যঃ পঠেচছু পুয়ালাপি জিসন্ধাং শুদ্ধমানিতঃ।
ব্রহ্মহত্যাদিপাপানি তৎসমানি বহুনি চ ॥ ৮৮॥
স্বর্ণস্তেরী হুরাপানী শুক্তরাঘুতানিচ।
গোবধান্ত্যপপাপানি অনৃতাৎসম্ভবানি চ ॥ ৮৯॥
সর্বৈঃ প্রমুচাতে পালেঃ ক্লায়্তশতোদ্ভবৈঃ।
মানসম্বাদিকং পাপং কর্মাণাসমুপার্জিভ্ম্॥ ৯০॥
জীরামস্মরণেনের তৎক্ষণামশ্যতি প্রবম্।
ইলং সত্যমিদং সত্যং সত্যমেতদিহোচ্যতে॥ ৯১॥
রামং সত্যং পরংব্রহ্ম রামান্তিক চিন্নবিদ্যতে।
তত্মান্তামস্বর্নপোহ্যং সত্যং সত্যমিদং কর্মং॥৯২॥

শ্রীরামচন্ত্রবব্ পুক্রবরাজবর্ঘ্য-রাক্তেন্দ্র রামরঘুনায়ক রাঘবেশ। রাজাধিরাজ রঘুনন্দন রামচন্দ্র দাসোহহ মদ্য ভবতঃ শরবাগতোহন্দ্রি॥৯৩॥

তিমি ব্রহ্মহত্যা এবং গোবধ জানিত পাপ চইতে অথবা মমোগত হউক, বাচনিক হউক, কিখা অপর কর্ম সম্ভূত পাপ হউক, যাবতীয় পাপ হইতে নিফ্তি লাভ করেন; এবং শ্রীরামচক্রেকে শ্রণ করিলে সমুদর কর্মষ তৎক্ষণাৎ ক্ষয়প্রাপ্তি হয়, ইছা সর্ক্ষা পত্য ভাছার সংশ্র মাই।৮৪।৮৫।৮৬। ১৮৭।৮৮।৮৯ ১০।৯১।৯৫।

য়ানচন্দ্র পতা ও পর্যবন্ধ, ভিনি বাতীত আর কিছুই নাই, দেই জভ সমুদারই রামখন্তপ স্করাং প্রগৎ পতা। শ্রীরাম-চন্দ্র রযুবংশলভ রালাদিনের প্রেট রযুবারক রাঘব প্রগদীখর, বৈদেহী সহিতং স্থ্যক্রমতলেহৈমে মহামগুপে মধ্যে
পুষ্পকমাসনে মণিময়ে বীরাসনে সংস্থিতম্।
অগ্রেবাচযতিপ্রভং জনস্তুতং তত্ত্বং
মুনী স্তৈঃপরং ব্যাখ্যাতং ভরতাদিভিঃ
পরিরতং রামং ভজেশ্যামলম্॥ ৯৪ ॥
রামং রক্ষকিরীটকুওলযুতং কেয়ুরহারাম্বিতং
সীতালক্কতবামভাগমমলং সিংহাসনস্থং বিভূম্
স্থাীবাদি হরীশ্বরৈঃ স্থ্রগণৈঃ সংদেব্যমানং সদা
বিশ্বামিত্রপরাশরাদিমুনিভিঃ সংস্ক্রমানং প্রভূম্ ॥৯৫॥
সকল গুণনিধানং যোগিভিঃস্ত্রমানং

ভূজবিজিতসমানং রাক্ষসেন্দ্রাদিমানম্।
মহিতনৃপভয়ানং সীতয়াশোভমানং
স্মৃতক্ষরবিমানং ব্রহ্মরামাভিধানম্॥ ৯৬॥
রঘুবর তবম্র্তিশ্যামকে মানসাজে
নরকগতিহরং তেনামধেয়ং মুখে মে।
অনিশমভূলভক্ত্যামস্তকং ত্বৎপদাজেভবজননিধিময়ং রক্ষমামার্ত্রবেরা॥ ৯৭ ॥
রামরত্বমহং বন্দে চিত্রকৃটপতিং হরিম্।
কৌশন্যাভিক্তিসন্তৃতং জানকীকণ্ঠভূষণম্॥৯৮
ইতি শ্রীসনৎকুমারসংহিতায়াং নারদোক্তং শ্রীরামচক্রস্তবরাজস্তোত্রং সম্পূর্ণম্।

তিনি রাজাদিগের রাজা রযুনন্দন, আমি তাঁহার কিছর অতএব আমি স্মরণাপ্র ছইলাম। ৯৩।

ন্ত্ৰ (কল্পত্ৰ) মৃণহিত ছিরণার মহামওণ মধ্যত্ব কুপ্তম ও মণিমর বীরাসনোপবিষ্ট রামচন্দ্রকে এবং যতিপ্রভ জনস্ত ভবযোগিলন কবিত ভরত প্রভৃতি প্রাতৃ চতৃষ্টর পরিবৃত নবদ্ধাণলগাম রঘুমাধকে ভলনা করি। কিরীটি ও কুওলযুত এবং কেয়ুরহার পম্বিত বামপার্ছে পবিষ্টানীভালত্ব ভূবিমণ সিংহারনোপবিষ্টানিভ্ রামচন্দ্রকে—আর বিনি স্থানীবাদি বানর প্রেট ও দেবগণনার। নিরন্তর পরিসেনায়ান হটরা থাকেন—মিলি বিশামিত্র ও পরাশর প্রভৃতি, মুনিধিপের ভরমান হটরা থাকেন ক্লামিত্র ও পর্লুকে বন্ধনা করি—

দকল গুণ নিধান যোগিগণ সংস্কৃত্যমান, দশানন প্রভৃতি রাক্ষদেশর বিজ্ঞিত ভ্রুকণ্ড সময়িত রাক্ষণপূলিত জনক তৃহিতা
শোভমান শ্বভ্রুদরবিমান রামাভিধান রপুনাধকে বন্দন।
করি। হে রঘ্বর! আমার মানসাজ মধ্যে আপনার মূর্তি
চিন্তা করি; আপনি নরকগতি হরণ করেন, আমি সংসারাপবে নিমগ্র হইয়া আছি, অভএব অতুল ভক্তি সক্কারে
আপনার শ্রীচরণারবিন্দে আমার মন্তক প্রণত করি—আমাকে
রক্ষা করুন; কৌশল্যাভক্তিসভ্ত জানকী কঠাভরণ চিত্তক্টপতি রামল্ল শ্রীহরিকে বন্ধনা করি। ৯৪। ৯৫। ৯৬। ৯৭। ৯৮।
ইতি শ্রীসনংকৃত্যার সংহিতা নারদ্যোক্ত শ্রীরামচন্দের
ত্ব কম্পূর্ণ হুইন।

অথ সংক্ষিপ্তমূলরামায়ণপ্রারম্ভঃ ।

তপংস্বাধ্যায়নিরতং তপশ্বীবাগ্নিদাশ্বরম্।
নারদং পরিপপ্রচছ বাল্মীকিমুনিপুঙ্গবম্॥ ১॥
কোন্ধান্ন সাম্পুডং লোকে গুণবান্কশ্চনীর্ঘ্যবান্।
ধর্মজ্ঞশ্চ কৃতজ্ঞশ্চ সত্যবাক্যোদৃঢ়ব্রতঃ ॥ ২॥
চারিব্রেণচ কো যুক্তঃসর্বস্থেতেষু কোহিতঃ।
বিদ্যান্কঃ কংসমর্থশ্চ কশ্চৈকঃ প্রিয়দর্শনিঃ॥ ৩॥
আত্মবান্ কো জিতকোধো হ্যান্ডমান্কো নস্য়কঃ।
কন্সবিভাতিদেবাশ্য জাতরোষস্থা সংষুগে॥ ৪॥
এতদিচ্ছামাহেং প্রোভুং পরং কোভ্ছলং হি মে।
মহর্ষেত্রং সমর্থোহিস জ্ঞাতুমেবংবিধং নরম্॥ ৫॥

শ্রুতামিতি চামন্ত্রপ্রস্থাবের বিদোবচঃ।
শ্রুতামিতি চামন্ত্রপ্রস্থাবের বিদারতী । ৬॥
বহবো তুর্লভাশ্চের যে ত্ব্বা কীর্ত্তি তাঞ্ণাঃ।
মুনেবক্ষ্যাম্যহং বুর্বাতি যুক্তঃ শ্রেম্বতাং নরঃ॥ ৭॥
ইক্ষাকুবংশপ্রভবো রামোনামজনৈঃশ্রুতঃ।
নিয়তাত্বা মহাবার্য্যাত্যতিমান্ধৃতিমারশী॥ ৮॥
বৃদ্ধিমানীতিমারাগ্যা শ্রীমাংচ্ছক্রনিবর্হণঃ।
বিপুলাংসে। মহাবাহুঃ কমুগ্রীবো মহাহুনুঃ॥ ৯॥
মহোরক্ষো মহেছাসো গৃচজক্রর রিক্ষমঃ।
আজাকুবাহুঃ স্থানিরাং স্থললাটঃস্থ্রিক্রমঃ॥ ১০॥

দংক্ষিপ্তমূল রামায়ণ।

একদা বালীকি তপংসাধ্যার নিরত তপশ্বী বাগ্বিদাশব মুনিশ্রেষ্ঠ দেবর্ষি নারদকে ক্টিলেন, ছে মুনে! সম্প্রতি এই জগতে গুণবান্ বীর্যাবান্, ধর্মজ্ঞ, কৃতজ্ঞ, সতাবাক্ ও দৃঢ়ব্রত কোন বাক্তি আছে—ধর্মাচরণযুক্ত ও সর্বজীবের হিতকারী বিচানই বা কে, কেই বা প্রিয়দর্শন, ইহ জগতে কোন্ ব্যক্তি আহ্বান্ ও সমর ক্ষেত্রে জ্রোধকে পরাক্ষর করিয়াছেন। আমি সমুদর শ্রবণ করিতে ইচ্চা করিতেছি, কারণ ঐ সমস্ত শুনিকে আমার যার পর নাই কোত্হল জ্বিয়াচে, ছে মহর্ষে! আপনি এবন্ধি মন্থ্যের বিষয় আমাকে অবগত করাইতে সক্ষম। ১। ২। ৩। ৪। ৫।

ত্তিলোকজ দেবর্ষি নারদ বালীকির এবত্থকার বাক্য শুবৰ করিয়া তাঁহাকে সন্তাষণ পূর্বক পরম সন্তোষ প্রদ্রাক্ষ্য বিদ্যালয় করিয়া তাঁহাকে সন্তাষণ পূর্বক পরম সন্তোষ প্রদ্রাক্ষ্য বিষয় কীর্ত্তন করিয়াছ তৎসমুদার মহুয়ো সংশ্লিষ্ট থাকা অভি ত্বতি । কিন্ত,হে মুনে! যে মতুষ্য ঐ সমন্ত গুণে ভূষিত আছেন, আমি তাঁহারই বিষয় কহিতেছি শ্রবণ কর—লোকপ্রমুধাৎ শুমিরাছি ইক্ষাকুবৎশোদ্ধব শ্রীরামচক্র সংযুতাত্মা, মহাবীর হাতিমান্ ও শ্বতিমান্। ভিনি বুদ্মিন্, নীতিমান্, বাগ্মী, শ্রীমান্, শত্রু বিনাশক। ভিনি পৃথিবীর অংশভূভ ও মহাবাহ; ভাঁহার প্রীবা শন্ধের স্থায়, রাওত্তলোপরিভাগ প্রশস্ত ; ভিনি মহোরত্ব মহাধমুধ্ব, গুড় জক্র, ও অরিন্তান, তাঁহার বাহ জ্ঞাত্তদেশ পর্যান্ত লখমান্, শীর্ষদেশ উক্তম, ললাটপ্রশন্ত ও মহাবিক্রেম্বালী; ভাঁহার ক্ষম্ব সম্ভাগে বিভক্ত,

সমঃ সমবিভক্তা সং স্নিশ্ববর্ণ প্রতাপবান্।
পানবক্ষা বিশালাকো লক্ষাবাঞ্ভলক্ষণঃ॥ ১১॥
ধর্মজ্ঞঃ সত্যসন্ধশ্চ প্রজানাঞ্চতেরতঃ।
যশসীজ্ঞানসম্পূরঃ শুচির্বস্থাঃ সমাধিমান্॥ ১২॥
প্রজাপতি সমঃ শ্রীমান্ধাতারিপুনিসূদনঃ।
রক্ষিতা জীবলোকস্থা ধর্মস্থা পরিরক্ষিতা॥ ১৩॥
রক্ষিতাস্থা ধর্মস্থা সজনস্থাচ রক্ষিতা।
বেদবেদাঙ্গতরজ্ঞে। ধনুর্বেদে চ নিষ্টিতঃ॥ ১৪॥
সর্ববিশাস্তার্থ তত্ততঃ স্মৃতিমান্ প্রতিভানবান্।
সর্ববিলাক প্রিয়ঃ সাধুরদীনাত্মা বিচক্ষণঃ॥ ২৫॥
সর্ববিদাহতিগতঃ সন্তিঃ সমুদ্র ইব সিন্ধুতিঃ।
শার্যঃ সর্বসমশৈচর সদিব প্রিয়দর্শনঃ॥ ১৯॥
সাচ সর্বিশ্ববিশিতঃ কৌশল্যানন্দবর্দ্ধনঃ।
সমুদ্র ইব গাস্ত্রীর্যো ধ্রেরণিছিমবানির। ১৭॥
সমুদ্র ইব গাস্ত্রীর্যো ধ্রেরণিছিমবানির। ১৭॥

বর্ণ সিম্বাকর, প্রতাপ অসীম, বক্ষঃদেশ উন্নত, নয়ন বিশাল; শক্ষী দেদীপামান ও শক্ষণ শুভময়। ৩ । ৭ । ৮ । ৯ । ১০ । ১১ ।

তিনি ধর্মজে, সত্যস্থ ও প্রজা সমূহের হিজের জন্য নিরস্তর নিরস্তর নিরস্তর ভিনি যশন্ত্রী, জ্ঞানসম্পর, শুচি ও সমাধিমান্। তিনি প্রজাপতির সদৃশ শ্রীমান্, বিধাতা ও অরিনিস্থদন; তিনি জ্ঞাবদিগকে রক্ষা করেন এবং ধর্মও পরিরক্ষণ করিয়া থাকেন, এমন কি আপনার ধর্ম যে ভাবে রক্ষা করেন, স্বজন সমূহের ধর্মও সেই ভাবে রক্ষা করিয়া থাকেন। তিনি যেমন বেদ বেদালদনী। ওজপ ধন্তুর্কেদেও নিউত। তিনি সর্ক্র শাস্ত্রের অর্থভর্মত.
ক্র্ডিমান্, ও অসাধারণ বুদ্দিশালী; সর্ক্রেশাকের প্রিয় ও সাধু এবং অদীনাত্রা ও বিচক্ষণ। ১২। ১৯। ১৫।

সিশ্বর সহিত বেমন সমুদ্র মিণিত হইরাছে, তিনিও তজপ সাধু বাক্তির সহিত সকলা গতিবিধি করিয়া থাকেন,এবং যাবতীর আহাকে সমান তাবে সকলা দশন করেন। তিনি তাঁহাদিগের গ্রিয় দশন, সমস্ত সদ্ গুণে বিভূষত, কেশিল্যার আনন্দ বর্জন,

বিক্তুনাসদৃশোবীর্য্যে সোমবৎপ্রিয়র্শনঃ।
কালাগ্নিসদৃশংক্রোধে ক্ষময়া পৃথিবীসমঃ॥ ১৮॥
ধনদেন সমস্তাপে সত্যে ধর্মইবাপরঃ।
তমেবং গুণসম্পন্নং রামং সত্যপরাক্রণম্॥ ১৯॥
ক্রোষ্ঠং শ্রেষ্ঠগুলৈযুক্তং প্রিয়ং দশরথাক্মজম্।
প্রকৃতীনাং হিতৈযুক্তং প্রকৃতি প্রিয়কাময়য়া॥ ২০॥
যোবরাজ্যেন সংযোক্ত্র্মৈচ্ছৎ প্রীত্যামহীপতিঃ।
তস্মাভিষেকসম্ভারান্ দৃষ্ট্রা ভার্যাহথ কৈকেয়ী॥২১॥
পূর্বাং দত্তবরাদেবী বরমেনম্যাচত।
বিবাসনক্ষ রামস্থ ভরতস্থাভিষেচনম্॥ ২২॥
স সত্যবচনাদ্রাজা ধর্মপোশেন সংযুক্তঃ।
বিবাসয়ামাসমূতং রামং দশরথঃ প্রিয়্ম্যা ২০॥
স জগাম বনং বীরঃ প্রতিজ্ঞামমুপালয়ন্।
পিতৃর্বাচননির্দেশাৎ কৈকেয়্যাঃ প্রিয়্বারণাৎ॥ ২৪

সমুদ্রের লায় গন্তীর এবং পর্বতের মন্ত অটল। তিনি বীর্ণো বিক্রুর সদৃশা, সুধা বর্ষণে চন্দ্রের সদৃশা, কোধে কালাধির তুলা এবং কীতীক্ষার পৃথিবীর মত ভিলেন। তিনি স্বস্তুতাগ বিষয়ে ধনদেবের মত ও সভো ধর্মের তুলা ছিলেন। সভাপরাক্রম রামচক্রই এই সমস্ত গুণসংযুক্ত ছিলেন। প্রকৃতির প্রেরকামনা হেতু মহারাজ দশরখের প্রির জ্যেষ্ঠ পুত্র শ্রীরামই সর্ক্ লেষ্ঠ গুণে অলম্ব ড ছিলেন। ১৬ । ১৭ । ১৮ । ১৯ । ২০ ।

মহারাজ প্রীত হইয়া রামচন্দ্রকে যৌবরাজ্যে অভিবিক্ত করিতে ইচ্ছা করিলেন, এবং তাঁহার অভিষেক প্রবাদি আরো-জিত হইতে দেখিয়া, রাজমহিষী কৈকেয়ী মহারাজের নিকট পূর্বালীকত বর্ষয় প্রার্থনা করিলেন—এক বরে, শ্রীরামের বন-বাস ও অপর বরে ভরতের রাজ্যাভিষেক। রাজা সত্যরূপ ধর্ম-পালে আবন্ধ থাকায় প্রিয়পুত্র রামচন্দ্রকে বনে নির্বাসন করিলেন। মহাবীর রামচন্দ্র পিতার আদেশ ও কৈকেয়ীর প্রিয়কারণ হেতু তং ব্রজন্তং প্রিয়োত্রাতা লক্ষ্মণোস্ক্রগামই॥
ক্রেছান্বির্য়সম্পন্ধঃ স্থান্ধিনান্দবর্দ্ধনঃ॥ ২৫॥
ভাতরং দয়িতোভ্রাতৃঃ সৌভ্রাত্রমন্তুদর্শয়ন্।
রামস্ত দয়তোভ্রাতৃঃ স্থানিজানন্দবর্দ্ধনঃ॥ ২৬॥
ক্রনকন্ত কুলেজাতা দেবমায়ৈর নির্ম্মিতা।
সর্বলক্ষণসম্পন্ধা নারীণামুভ্যাবধূঃ॥ ২৭॥
সীতাপ্যন্তুগভারামং শশিনং রোহিণী যথা।
পৌরৈরন্তুগভো দূরং পিত্রা দশরথেন চ॥ ২৮॥
শূঙ্গবেরপুরে সূতং গঙ্গাকূলে ব্যাসর্জ্রয়থ।
গুহুমাসাদ্য ধর্মাত্মা নিষাদাধিপতিং প্রিয়্ম্ম্॥ ২৯॥
গুহুমাসাদ্য ধর্মাত্মা নিষাদাধিপতিং প্রিয়্ম্ম্॥ ২৯॥
গুহুম সহিত্যোরামো লক্ষ্মণেন চ সীত্রয়া।
তে বনেন বনং গড়া নদীন্তীত্মা বহুদকাঃ॥ ৩০॥
চিত্রকৃট্যনুপ্রাপ্য ভরদ্যাজন্ত শাসনাথ।
রম্যাবস্থং কুষা রম্মাণা বনে ত্রয়ঃ॥ ৩১॥

দেবগন্ধর্বসক্ষাশা স্ত্রতে ন্যবসন্থাম্।

চিত্রকুটং গতে রামে পুত্রশোকাত্রস্তদা ॥ ৩২ ॥

রাজা দশরথং স্বর্গং জ্বাম বিলপন্স তুম্।

মৃত্রে তু তামান্ ভরতো বশিষ্ঠপ্রমুখৈদ্বি জৈ:॥ ৩৩॥

নিযুক্তামানো রাজ্যায়

নৈক্তাক্তাং মহাবলঃ

স ক্রণাম বনং বীরো

রামপাদপ্রসাদকঃ ॥ ৩৪ ॥

গণাভূত্বমহান্তানং রামং সত্যপরাক্রমম্।

অযাচদ্ভাতরং রামমার্জ্জনামপুরস্কৃতম্ ॥ ৩৫ ॥

গমেব রাজা ধর্ম্ম ইতি রামং বচোহত্রবীং।

রামোহপি পরমোদারঃ স্তুমুখঃ স্থমহায়শাঃ ॥ ৩৬ ॥

নচৈচ্ছং পিতৃরাদেশাদ্রাজ্ঞাং রামো মহাবলঃ ।

পাতুকেচাস্য বাজ্যায়ন্যাসং দল্বা পুনঃ পুনঃ ॥ ৩৭ ॥

বনে প্রস্থান করিলেন। বিনরসম্পন্ন স্বামান্তর লক্ষণ প্রিন্ন আছাকে বনগমনেশ্যান্ত দেখিল্লা উহার অনুগমন করিলেন। শ্রীরামচল্রের প্রণায়নী জনকবংশোদ্ভবা দেবমারা নিশ্মিন্তা, সর্বলক্ষণ সম্পন্না, নারীপ্রেন্তা জানকী লক্ষণের সৌল্রান্ত সম্পর্ন, রেন্নহিণী যেমন নিশাকরের অনুগামিনী হইরাছিলেন, তজ্ঞপ শ্রীরামের পশ্চাদাশামিনী হইলেন এবং প্রবাসীরা ও তাহার পিতা দশরপাও কির্দ্ধুর পর্যান্ত তাহার পশ্চাৎ পশ্চাৎ গ্যন করিল্লা গুহতে প্রাপ্ত হইরা গলাতীরস্থ শৃলবেরপুরে প্রির পুত্রকে পরিত্যাগ করিলেন । ২১। ২২। ২৩। ২৪। ২৫। । ২৬। ২৭। ২৮। ২৯।

রামচন্দ্র গুহ, কল্মণ ও সীতার সহিত বছবন ভীর্থ ও জলা-শর অভিক্রম করিয়া পরিশেষে ভরদ্বাক নির্দিষ্ট চিত্রকূট পর্যাতে উপস্থিত হইয়া, ভ্রম্য আবাস নির্দাণ করিয়া ভল্পয়ে বাস করিতে লাগিলেন। দেবতা গন্ধর্ক সন্ধাশ প্রভৃতি চিত্রকৃটি পর্ববতে পরম স্থাধে বাদ করিতেন। রামচন্দ্র চিত্রকৃট শিথরে প্রদান করিলে পর, ব্লাঞ্জা দশরপ প্রশোকে বিহ্বল হইয়া জীবন পরিহার পূর্বাক স্থাগে গমন করিলেন। অনস্তর বশিষ্টাদি রাজ-শেবা ভরতকে রাজ্যাভিষিক্ত করিবার নিমিত্র সক্ষণ্প করিলে, তিনি রাজ্যভোগ করিছে অনিক্রা প্রকাশ করিয়া কোষ্টের পদ প্রসাদের জন্য বনোদ্দেশে প্রস্থান করিলেন তে।তঃ। ৩২০তা ৩৪। ভরত স্ত্যাপরাক্রম মহান্মা রামচন্দ্রের নিকট উপানীত ছইয়া অগ্রেক্তমা প্রার্থনা করিয়া করিলেন। তে তাকে। আপ্রাক্রির বালা

ভরত স্থাপর ক্রিমা কহিলেন, হে তাত ! আপুনিই রাজা ভ ধর্মজ । রামচক্রও যার পর নাই উদার চরিত্র, মিইভাষী ও মহাবলা ; এক্ষণে পিতার আদেশক্রমে বনগমন করিলাছেন, সূত্রাং পুনর্কার রাজ্যভোগ করিতে ইচ্ছুক হইলেন না । পরে ভরতের মন্ত্রাগা পূর্মক জাপনার পাছকা প্রদান করিলা নিবর্তয়ামাস ততো ভরতং ভরতাগ্রহঃ।

স তু কামমবাসৈবে রামপাদাবুপস্পূশন্ ॥ ১৮॥
নন্দি গ্রামেইকরোন্ধান্তঃ রামাপমনকাজ্কয়া।
গতেতু ভরতে শ্রীমান্সভাসকোন্ধিতেন্দ্রিয়ঃ॥ ৩৯॥
রামস্ত পুনরালক্ষ্য নাগরস্থ জনস্য চ।
তত্রাগমননেকাগ্রো দশুকান্ প্রবিবেশহ ॥ ৪০॥
প্রবিশ্যতু মহাহরপ্যং রামো রাজীবলোচনঃ।
বিরাধং রাক্ষণং হলা শরভঙ্গং দদর্শহ ॥ ৪১॥
স্থতীক্ষ্মপাপ্যসন্তাক্ষ অগন্তাভ্রাতরং তথা।
অগন্তাবচনানৈক্র জ্রোহৈন্দ্রশ্রাসন্ম। ৪২॥
খড়গঞ্চ পরমং প্রতিস্তৃণীচাক্ষরসায়কৌ।
বসতন্তস্য রামশ্য বনে বনচরৈঃ সহ ॥ ৪০॥
খব্যোভ্যাগমন্তসর্কে বধায়াস্বরক্ষসাম্।
স তেষাংপ্রতিশুপ্রাব রাক্ষসানাং তথা বনে ॥ ৪৪॥

প্রতিজ্ঞাতশ্চ রামেণ বধঃসংযতিরক্ষসাম্ ।

থাবীণামগ্রিকল্লানাং দণ্ডকারণ্যবাসিনাম্ ॥ ৪৫ ॥

তেন তত্ত্বিব বসতা জনস্থাননিবাসিনী ।

নিরূপিতা শূর্পণথা রাক্ষসীকামরূপিণী ॥ ৪৬ ॥

ততঃ শূর্পণথাবাক্যাত্ত্বাক্তান্তসর্ব্বরাক্ষসান্ ।

খরং ত্রিশিরসকৈব দ্যণকৈব রাক্ষসম্ ॥ ৪৭ ॥

নিজঘান রণে রামন্তেষাকৈব পদানুগান্ ।

বনে তত্মিন্নিবসতা জনস্থাননিবাসিনাম্ ॥ ৪৮ ॥

রক্ষসাং নিহতান্যাস্থসহস্রাণি চতুর্দশ ।

ততো জ্ঞাতিবধং প্রুঘা রাবশঃ ক্রোধম্ন্তিতঃ ॥ ৪৯॥

সহায়ং বরয়ামাস্মারীচং নামরাক্ষসম্ ।

বার্যমাণঃ মুবক্তা আরীচেন স্বাবণঃ ॥ ৫০ ॥

ন বিরোধো বলবতাক্ষমো রাবণ তেন তে।

অনাদৃত্য তু তদ্বাক্যং রাবণঃ কালচোদিতঃ ॥৫১ ॥

অনাদৃত্য তু তদ্বাক্যং রাবণঃ কালচোদিতঃ ॥৫১ ॥

ভরতাগ্রজ রামচক্ষ ভরতকে নিবৃত্ত করিলেন এবং সত্যসন্ধ, জিছেলির রামানুষ প্রীমান্ ভরতও অপ্রক্রের পাদস্পর্শ করিয়। নন্দিগ্রামে অবস্থান পূর্বক প্রীরামের প্রত্যাবর্তনের প্রতীক্ষা করিয়া তথার রাজ্যভোগ করিছে লাগিলেন। প্রীরাম পুনর্ববার নাগরিক লোকদিগকে তথার আগেমন করিছে দেখিয়া, চিত্রকৃট পরিজ্যাগ পূর্বক দওকারণ্যে প্রবেশ করিলেন। ৩৫। ৩৬। ৩৭।

রাজীবলোচন রাখব দণ্ডকারণ্যে প্রবেশ করিরাই বিরাষ নামক রাক্ষসকে বিনাশ পূর্বাক শরস্তক্ষকে দর্শন করিলেন। অনস্তর তিনি স্কৃতীক্ষ, অগজ্য ও অগস্তা ব্রাকাদক দর্শন করিলা, অগস্তোর বাক্যামুসারে ইন্দ্রশাসন গ্রহণ করিলেন; এবং অপর বড়ল, অক্ষরত্তীর ও সায়কগ্রহণ পূর্বাক বনচরদিপের সহিত বাস করিতে গাগিলেন। অনস্তর বহিরা রাক্ষ্য-স্কুদিগতে ধ্বংস করিবার নিমিক্ত প্রীরাস সরিধানে আগখন করিতে গাগিশেন। তিনিও উাহাদিগের মুখে তত্ত্তা রাক্ষস সমুহের কথা প্রবণ করিরা, দণ্ডকারণাবাদী অগ্নিকপ্পা ঋষিদিগের সমক্ষে রাক্ষদ বধের প্রতিজ্ঞা করিলেন ।৪১। ৪২। ৪৩। ৪৪। ৪৫।

পরে তিনি জনস্থান নিবাসিনী ডামরূপা শূর্পণথানামী রাক্ষসীকে লক্ষ্য করিলেন; অনন্তর শূর্পণথার বাক্ষোত্তিক্তি হইরা
খর,দ্বণ এবং ত্রিশিরা শ্রীরামের দক্ষে যুদ্ধমানদে আগমন করিলে,
তিনি ভাহাদিগকে অমূচরগণ দমেত দর্গ্রামে নিহত করিলেন।
সেই জন-স্থান নিবাসী চতুর্দশ সহস্র রাক্ষ্য এবং ফ্রাভি বধ প্রবণ
করিয়া মহাতৃর্দান্ত রাবণ ক্রোধে মৃচ্ছি ভ হইল। জনন্তর লক্ষাধিপতি মানীচনামক রাক্ষ্যকে বরপ্রদান পূর্বক ভাহার সহায়ভা
করিতে অভিলাষ প্রকাশ করিল। মারীচ কহিল—হের রাবণ!
বলবানের সহিত বিরোধ করা কোনমতে উচিত নহেই। কিছ
মহাকাল প্রেরিড বাবণ ভাহার ব্যক্য জনাদ্য করিয়া তৎসহ

জনাম দহ মারীচন্তদ্যাপ্রম পদং তদা।
তেন মায়াবিনা দূরমপবাহানৃপাত্মজৌ ॥ ৫২
জহার ভার্যাং রামদা গৃধুং হবা জটায়ুষং।
পৃধ্ং চ নিহতং দৃষ্ট্বা ছতাং শুরুণ চ মৈথিলীং।
রাঘবঃ শোকসন্তপ্তো বিললাপাকুলেন্দ্রিয়ঃ।
ততন্তেনৈব শোকেন গৃধুং দয়্বা জটায়ুষং॥ ৫৪
মার্গমাণো বনে সীতাং রাক্ষদং সন্দদর্শহ।
কবন্ধং নামরূপেণ বিকৃতং ঘোরদর্শনমং॥ ৫৫॥
তং নিহত্য মহাবাহ্ন দ্দাহ স্বর্গতশ্চ সঃ।
দ চাদ্য কথয়ামাদ শবরীং ধর্মচারিণীমং॥ ৫৬॥
শ্রমণীং ধর্মনিপুণামভিগচ্ছেতি রাঘবমং।
শোহভিপচ্ছন্মহাতেজাঃ শবরীং শক্রেস্থদনং॥ ৫৭
শবর্ষা পৃজিতঃ সম্যোমো দশর্থা য়জঃ।
পাল্পাতীরে হস্মতা সঙ্গতো বানরেণ্ড॥ ৫৮॥

হতুমঘচনাকৈব স্থাীবেণ সমাগমঃ।

স্থাীবায় চ তৎসর্বাং শংসদ্রামো মহাবলং ॥ ৫৯ ॥

আদিতস্তদ্যধারতং সীতায়াশ্চ বিশেষতং।

স্থাীবশ্চাপি তৎসর্বাং শ্রুণ্ডা রাম্য্য বানরঃ॥ ৬০ ॥

চকার স্থাং রামেণ প্রীতশ্চিবায়ি দাক্ষিকং।

ততো বানররাক্ষেনবৈরাস্কর্থনং প্রতি॥ ৬১ ॥

রামায়াবেদিতং সর্বাং প্রণয়া হুংথিতেন চ।

প্রতিজ্ঞাতং চ রামেণ তদা বালিবধং প্রতি॥ ৬২ ॥

বালিনশ্চ বলং তত্র কথয়ামাস বানরঃ।

স্থাীবং শ্কিতশ্চাদীর্মিত্যং বীর্যোণ রাঘ্যবে ৬৩

স্থাীব প্রতায়ার্থস্ত হল্পুড়েং কায়মূত্রমং।

দর্শয়ামাস স্থাবা মহাপর্বত্সমিত্রং ॥ ৬৪ ॥

উৎস্ময়িত্য মহাবাহুঃ প্রেক্ষচান্থিং মহাবলঃ।

পাদাক্ষ্রেণ্ডন চিক্ষেপ সম্পূর্ণং দশ্যোজনং ॥ ৬৫

সেইআলিমপদে উপনীত হটল। অনস্তর মাধীন বাককুমাব দ্বকে মারাধান দূরে জানয়ন করিলে রাবণ রামচন্দ্রের পত্নী সীভাকে হরণ করিল, ও পৃথিমধ্যে গৃধুরাছ ভটায়ুকে নিহত করিয়াছিল। ৪৮। ৪৯। ৫০। ৫১। ৫২।

ত্রীরামচন্দ্র পৃধুরাল বিনষ্ট এবং মৈথিলী অপশ্বভা গ্রহীছে ব্রবণ করিলা বার পর নাই শোকার্স্ত হইলা আকুলচিত্তে বিলাপ করিছে লাগিলেন। ভিনি হংসহ শোক সম্বর্গ গ্রহণেও গুনুরাজ কটায়ুর অলিসংস্কার করিলেন। অনস্তর বনে বাইকে বাইকে পথিমধ্যে খোরদর্শন বিক্রতিরূপ কবন্ধকে দেখিতে পাইলেন, এবং মহাবাস্থ ভালাকে নিহত করিলা দাহ করিলেন। সে পর্বেগ প্রস্থান কালে ধর্মচারিণী শ্বরীকে কহিল—অলি ধর্মানিপুণে! ভূমি রামচন্দ্রমাণে গমন কর। ইতিমধ্যে শক্রনিধনকানী মহাত্তেজ্ঞা রামচন্দ্র শ্বরীর নিকট গমন করিতে করিছে গমনপ্রে ভজ্মবা

বানবরণী হনুমানের সহিত তাঁহার সাক্ষাৎ হইল ও হনুমানের বচনে স্থ্যীবের সহিত তাঁহার সমাগম হইল। মহাবল রঘুনন্দন নিক্ষের আমুপুর্বিক সমস্ত বিষর্গ স্থায়ীবকে বলিলেন ; বিশেষতঃ সীতার আদ্যোপান্ত রুক্তান্ত অবগত করাইলেন। মহাকণি স্থায়ীব জীরামের বাকা প্রবণ করণানন্তর অগ্নিসান্দিক করিয়া ভাঁহার সহিত সম্বাক্তা স্থাত্ত বদ হইল। কণিবর প্রশার্মকতঃ বানবরান্ত বালীর বৈরীভাব সমস্ত অতি তৃংগভ্রের তাঁহার নিকট নিবেদন করিল,রঘুনাবও তথন তৎসমক্ষে বালিবধের প্রভিক্তা করিলেন। ৫০। ৫৪। ৫৫। ৫৬। । ৫৭। ৫৮। । ৫৭। ৫৮। । ৫০। ৬০। ৬১। ৬১। ৬০। ৬৪।

বানর বালির বন বিষয় সর্বেদাই বলিত এবং রাষ্ট্রের বীর্ষাসম্বন্ধে সন্দেহ করিছে লাগিল। অনকর স্থাীব ভাঁছার বসপ্রভারের জন্য মহাপর্বত সমূদ হন্দুভির উত্তম, দেহ সন্দর্শন করাইল; মহারাম্ম মহারল রাঘ্ব উত্তিত হইয়া ভাহার

1--

বিভেদ চ পুনস্তালান্ সপ্তৈকেন মহেরুণা।
গিরিং রসাতলং চৈব জনয়ন্ প্রত্যয়ং ভদা॥ ৬৬॥
ততঃ প্রীমতনাস্তেন বিশ্বস্তঃ স মহাকপিঃ।
কিছিন্ধাং রামসহিতো জগাম চ গুহাং তদা॥ ৬৭
ততো গর্জন্ধবিবঃ সুগ্রীবো হেমপিঙ্গলঃ।
তেন নাদেন মহতা নির্জাম হরীশ্বঃ॥ ৬৮॥
অবমন্য তদা তারাং স্থ্রীবেশ সমাগভঃ।
নিক্ষান চ তত্তিশং শরেণেকেন রাঘবং॥ ৬৯॥
ততঃ স্থ্রীব বচনাদ্ধরা বালিনমাহবে।
স্থ্রীব্যেব তদ্রাজ্যে রাঘবং প্রত্যপাদয়ৎ॥ ৭০॥
স চ সর্বান্ সমানীয় বানরান্ বানরর্বভঃ।
দিশঃ প্রস্থাসাদ দিদ্কুর্জনকাত্যজাম্॥ ৭১॥
ততে। গৃধুস্থ বচনাৎ সম্পাতেইনুমান্ বলী।
শত্যোজনবিশ্তীর্নং পুগ্লুবে লবণার্শ্বম্॥ ৭২॥

তত্ত লক্ষাং সমাসাদা পুরীং রাবণপালিতাম্।
দদর্শ সীতাং ধায়েন্তীমশোকবনিকাগতাম্।। ৭০।
নিবেদয়িত্ব।ভিজ্ঞানং প্রবৃত্তিং বিনিবেদ্য চ।
সমাশ্বাস্থ চ বৈদেহীং মদ্রামাস তোরণম্।। ৭।
পশ্বদেনাগ্রগান্ হত্বা সপ্তমন্তিস্থতানপি।
শ্রমক্ষঞ্চ নিম্পিষ্য গ্রহণে সমুপাগতম্ ॥ ৭৫॥
অস্ত্রেণোম্ক্রমাত্বানং জ্ঞাত্বাপিতামহাদ্বরাৎ।
মর্ষয়ন্ রাক্ষদান্ বীরোমন্ত্রিণস্তান দৃচ্ছয়া॥ ৭৬॥
তত্তে। দগ্ধ্য পুরীং লঙ্কামতে সীতাঞ্চ মৈথিলীম্।
রামায় প্রিয়মাধ্যাত্বং পুনরায়ান্ মহাকপিঃ ॥ ৭৭॥
গোহভিগম্য মহাত্বানং কৃত্বা রামং প্রদক্ষিণম্।
ন্যবেদয়দমেয়াত্বা দৃন্ট্যা সীতেতি তত্ত্তঃ ॥ ৭৮॥
ততঃ স্থ্যীবসহিতো গত্বা তীরং মহোদধেঃ।
সমুদ্রং ক্ষোভয়ামাস শরেরাদিত্য সন্ধিভঃ॥ ৭৯॥
সমুদ্রং ক্ষোভয়ামাস শরেরাদিত্য সন্ধিভঃ॥ ৭৯॥

অন্ধি দর্শন করির। পাদাস্ত্রীরার। দশবোকন দূরে নিকেপ করিলেন এবং পুনব্রীর বাণবারা সগুভালভেদ করিলেন। বাণ সপ্তভাল ভেদ করিয়া গিরি ভেদ করভঃ রসাভলে প্রবেশ করিল, তথন স্থীবের দৃঢ়প্রতার জ্ঞান্মল; জনস্তর মহাকপি সমাক্ বিশ্বস্থ ছুইরা অভিপ্রীতমনে রাখবের সহিত কিমিন্নার গমন করিয়া গুহার প্রবেশ করিলেন। ৬৫। ৬৬। ৬৭।

অন্তর পিক্সর্থ মহাকপি স্থাীব সিংহনাদ করিলে, ক্লপীশ্ব বালি ঐ নিনাদ আকর্ণন করিয়া বহিগত হইলেন এবং
তাবার বাকা উপেকা করিয়া স্থাীবের সহিত সংগ্রামে প্রার্ভ
হইলেন রাঘর স্থাীবের বাক্যাস্থারে এক গরে বালিকে
বিনাশ করিয়া স্থাীবকে কিছিল্যা রাজ্যে অভিষ্কি করিলেন।
স্থাীব রাজসিংহাসনে প্রতিষ্ঠিত হইয়া জনকত্হিতার অস্থেমণার্থ বান্ধরুক্তকে চারিলিকে প্রেরণ করিলেন। মহাবনী

গ্ৰান গৃধু সম্পাতির বচনে শত বোজন বিভীর্ণ লবণ সমূদ্র উল্লেখন করিল এবং সমূদ্র উত্তীর্ণ ছইয়া রাবণ---পালিভা লক্কাপুরী দেখিতে পাইল। অভঃপর অশোকবনোপবিষ্টা চিস্তাকুলা সীতাকে দশ্ল করিল। ৬৮। ১৯। ৭০ । ৭১। ৭২।

হত্মান বৈদেখীকে অভিজ্ঞানস্চক নিদর্শন প্রদর্শন করিয়া তাঁহার অবেষণ বার্জা বিজ্ঞাপন করিল এবং আখাদ প্রদান করিয়া তোরণছার জগ্ন করিল; পরে পাঁচটী প্রধান সেনাধ্যক্ষকে নিপাত ও আর সাত মির স্ক্রিক নিহন্ত করণানস্তর রাবণের তিন পুত্রকে বিনষ্ট করিল। পরি-শেষে মহাশ্ব অক্ষর্মারকে উপনীত দেখিরা ভাহাকে নিজ্ঞো-বিত করিল। মহাবীর হ্নুমান অক্রোগ্মক্ত কানিয়াও রাক্ষণ এবং সরিদিগকে ক্ষমা করিল; এবং মৈথিলী বাতীক্ত দর্শ্রামাস চাত্মানং সমুদ্রং সরিতাং পতিঃ।
সমুদ্রবচনাট্চেব নলঃ সেতু মকারয়ৎ ॥ ৮০॥
তেন গত্বা পুরীং লঙ্কাং হত্বা রাবণমাহবে।
রামং সীতামসুপ্রাপ্য পরাংত্রীড়ামুপাগমৎ॥ ৮১॥
তামুবাচ ততো রামঃ পুরুষং জনসংসদি।
তামুষ্যমাণা সা সীতা বিবেশ জ্লনং সতী॥ ৮২॥
ততোহিমি বচনাৎ সীতাং জ্ঞাত্বা বিগতকল্মষাম্।
কর্ম্মণা তেন মহতা ত্রৈলোক্যং স চরাচরম্॥ ৮০॥
স দেবর্ষিগণং তুইইং রাঘবস্য মহাত্মমঃ।
বভৌরামঃ স্কুসংহান্তঃ পূজিতঃ সর্ব্বদৈবতৈঃ॥ ৮৪॥
অভিষিচ্য চ লঙ্কায়াং রাক্ষ্যেন্দ্রং বিভীষণম্।
ক্তর্কত্যস্তদারামো বিজ্বঃ প্রমুমোদ হ॥ ৮৫॥

সমুদার লক্ষাপুরী দগ্ধ করিয়া রামচক্সকে সমস্ত বৃক্তান্ত অবগত করিবার নিমিত্ত আরাম সল্লিখানে প্রত্যাসমন করিল।
কমুমান মহাস্থা রাঘবের নিকট উপনীত হইরা উাহাকে
প্রদক্ষিণপূর্বক সীতাদশন ও লঙ্কাদগ্ধ বিষয় আমুপুর্বিক নিবেদন
করিল। রামচক্র স্থাবির সহিত মহাসমুদ্রের তীরে উপনীত
হইয়া আদিতাসন্তি শর্মারা সমুদ্র বিক্ষোভিত করিতে লানিলেন, পরে সরিৎপতি শুষ্য উথিত হইরা দশন দিলেন। এবং
সমুদ্রেবচনে নল সেতু নিশ্মাণ করিল। ৭৬। ৭৭। ৭৮। ৭৯।৮০।

রামচন্দ্র সেই সেতু দিয়া লঙ্কাপুরী গখন পূর্ব্বক রণক্ষেত্রে রাবণকে বিনাপ করিয়া দীতাকে প্রাপ্ত হইলেন বটে, কিন্তু যার পর নাই ত্রপাসংবৃদ্ধ হইলেন। তিনি লোকসভামধ্যে দীতাকে আত্ম বিষয় জিজাদা করিলেন, নিম্পাপা সাধবী জনক- ছহিতা জলন্তপাবক মধ্যে প্রবেশ করিলেন। শ্রীরাম অগ্নির বাক্যামুদারে তাঁহাকে বিগ্তপাপা অবগত ছইলেন এবং দীতার দেই কর্মে অর্গ মন্ত্রি ও পাতালন্দ্র দকলেই তাঁহাকে পাশবিহীনা জানিল। পরে দেবর্দির্গণ মহান্ধা শ্রীরামের প্রতি পরিতৃষ্ট হইলে সমস্ত্র দেবতা কর্ত্ব তিনি প্রতিত হইলেন;

দেবতাভ্যো বরং প্রাপা সমুখা পা চ বানরান্।

অযোধাং প্রস্থিতো রামঃ পুষ্পাকেণ স্থল্ব কঃ ॥৮৬
ভরছাজাশ্রমং গত্তা রামঃ সত্যপরাক্রমঃ।
ভরতস্থান্তিকং রামো হমুমন্তংব্যসর্জয়ৎ ॥ ৮৭ ॥
পুনরাখান্তিকাং জল্পন্ স্থতীবসহিতস্তদা।
পুষ্পাকং তৎসমাক্রম্থ নিদিগ্রামং যযৌ তদা ॥ ৮৮ ॥
নিদিগ্রামে জটাং হিত্ব। ভ্রাতৃভিঃসহিতোহনবঃ।
রামঃ সীতামকুপ্রাপ্য রাজ্যং পুনরবাপ্রবান্ ॥ ৮৯ ॥
প্রস্থাদতোলোকস্তক্তঃ পুক্তঃ স্থান্মিকঃ।
নিরাময়েছে রোগশ্চ তুর্ভিক্ষভরবর্জিতঃ ॥ ৯০ ॥
ন পুক্রমরণং কেচিদ্ দ্রক্রান্তি পুরুষাঃকচিৎ।
নার্যাশ্রম বিধব। নিত্যং ভবিষ্যন্তি পতিব্রতাঃ ॥ ৯১ ॥
ন চাগ্রিজং ভয়ং কিঞ্জাপ্রে মুক্তন্তি জন্তবঃ।
ন বাতজং ভয়িক্রিজাপি জ্রক্তং তথা ॥ ৯২ ॥

অন্তর রঘুমাথ রাক্ষণেক্ত বিভীবণকে সক্ষারাজ্যে অভিবিক্ত করিয়া বিগভ্জার ইইয়া কুড্কুছা হইলেস ৮৮১ ৮২ ৮৮৩ । ৮৪ ৮৫ ।

অরিনিস্দন রামচন্দ্র দেবতাদিগের বরপ্রাপ্ত ইইয়া সমুদায় মিচত বানরদিগকে পুরস্থীবিত করিয়া পুরে স্বস্থাণ পরিব্রত হউরা পুলাকরথে আরোহণ পূর্বক অযোধাাভিমুখে গছন করিলেন। সত্যপরাক্রম রামচন্দ্র ভরহালাশ্রমে উপনীত হইয়া অফুজ্র ভরতের নিকট ছত্তমানকে প্রেরণ করিলেন। পরে ভাগার প্রভাবর্তনে রাখব স্থাীবসহ পুলাকরণে আরোহণ করিয়া মলিগ্রামে প্রস্থান করিলেন। তথার উপনীত হইয়া অন্য রামচন্দ্র ভাতৃদ্র জন্তী। পরিভাগে করিলেন এবং দীতাকে প্রাপ্ত ইইয়া পুনর্ব্বার রাজ্য ভোগ করিতে লাগিবেল। ৮৬। ৮৭। ৮৮। ৮৯। ১০। ১১।

अवान्य, महायम मण्यत, अवक्रिक्त, शतिकृष्टे खरः स्था-

নচাপি কুছুয়ং তত ন তক্ষরভয়ং তথা।
নগরাণি চ রাষ্ট্রাণি ধনধন্যযুতানি চ ॥ ৯৩॥
নিতাং প্রমুদিতাঃ দর্বে যথা কৃতয়ুগে তথা।
অশ্বনেধশতৈরিফীবত্বস্ত স্থবর্গকৈঃ ॥ ৯৪॥
গবাং কোটিযুতং দত্বা ব্রহ্মালোকং গমিষ্যতি।
অসংখ্যেয়ং ধনং দত্বা ব্রাহ্মাণেভ্যো মহায়শাঃ॥ ৯৫॥
রাজবংশাচ্ছতগুণান্ স্থাপয়িষ্যতি রাঘবঃ।
চাতুর্বর্গিঃ চ লোকেহিম্মিন স্থেমে ধর্ম্মে নিয়োক্ষতি।
দশবর্ষসহস্রাণি দশবর্ষশতানি চ।
রামে। রাজ্যমুপাশিত্বা ব্রহ্মালোকং গমিষ্যতি॥ ৯৭॥

ইদং পবিত্রং পাপত্বং পুণাং বেদৈশ্চ সন্মিতম্।

যঃ পঠেদ্রামচরিতং সর্ববপাপেঃ প্রমূচ্যতে ॥ ৯৮ ॥

এতদাখ্যানমায়ুষ্যং পঠন্ রামায়ণং নরঃ।

সপুত্রপৌত্তঃ সগণঃ প্রেত্য স্বর্গে মহীয়তে ॥ ৯৯ ॥

পঠন্দ্রিজা বাগৃষভত্বমীয়াৎ

ক্বিস্তুলঃ শস্তফলত্বমীয়া-

ইত্যার্ধে শ্রীমন্ত্রামায়ণে বাল্মিকীয়ে আদিকাব্যে নারদবাকো সংক্ষিপ্তঃ প্রথমঃ সর্গঃ॥ ১॥

জ্জনশ্চশুদ্রোহপি মহত্বমীয়াৎ॥ ১০০॥

শ্বিক হইরা উঠিল। আমার বোগ ও ছুর্ভিক্ষ ভয় দুরীভূত ১টল। পুরের মৃত্যু আর কাহাকে দেখিতে হইল না। প্রতিব্রতা স্বী আর বিধবা হইল না। অগ্নি হইতে কোমরূপ ভর থাকিল না। জান্ত সমূহ গলে আর নিমগ্ন হইবে না, বাত হইতে আর কোন ভয় নাই এবং জরা আর কাহাকেও আক্রমণ করিবে না। নগর ও রাষ্ট্রসমূহ ধন ধানাযুক্ত হইল; সকলেই নিভা বহুবস্তাও স্ববর্গ সমাযুক্ত অখমেধের যজ্ঞ সমাহিত ক্রিবে। পোক সমূহ ব্যাক্ষণিগকে কোটি কোটি ধেফু এবং অসভ্যা ধনদান করিয়া ব্রহ্মলোকে গমন ক্রিবে। ১০ ১ ১১ ১২ । ৯০।

রঘুনাক রাজ্বংশ হইতে শততাণ রাজ্য সংস্থাপন করিলেন

এবং ইহলোকে চারি বর্ণকে স্থা স্ব ধর্মে নিরোক্তে করিলেন, তিনিদশসহল ও দল শত বংসর রাজা ভোগ করিয়া ক্রনাকে গমন করেন, যে বাজি এই বেদ সন্মিত পাপদ্ম পরম প্রিত্ত শ্রীরামচরিত্র শ্রবণ করে দে সর্ক্রপাপ হইছে বিমুক্ত হইরা যায়, মনুষা এই রামায়ণ আখ্যান পাঠ করিয়া সপ্ত পৌত্র ও সজন পরিবৃত্ত হইরা অর্গে গমন করে। ত্রাহ্মণ পাঠ করিলে বালীজা প্রাপ্ত হরেন, ক্ষত্রিয়া ভ্রিপতিত্ব লাভ করেন, বণিক্
নাসা ও কলপ্রাপ্ত হর এবং শৃত্রও মহত্ব শাস্ত করে। ৯৬।

ইতি বালিকীর আবাদি কাব্যে রামায়ণে নারদ প্রোক্ত সংক্ষিপ্ত গুর্থমন্বর্গ সমাপ্ত।

অথ রামাষ্টপ্রারন্তঃ

ভক্তে বিশেষস্থলরং সমস্তপাপথগুনম্।
স্বভক্তচিভরপ্পনং সদৈব রামমন্বরম্॥ ১॥
জটাকলাপশোভিতং সমস্তপাপনাশনম্।
স্বভক্তভীতিভপ্তনং ভজেহ রামমন্বরম্॥ ২॥
নিজস্বরূপবাধকং কুপাকরং ভবাপহমু।
সমং শিবং নিরপ্তনং ভজেহ রামমন্বরম্॥ ৩॥
সপ্রপঞ্চক্তিং হালামর্রপবাস্তবম্।
নিরাকৃতিং নিরাময়ং ভজেহ রামমন্বরম্॥ ৪।
নিপ্রপঞ্চ নির্বিক্ল নির্মালং নিরাময়ং।
চিদেকরূপং সভতং ভজেহ রামমন্বরং॥ ৫॥

রামাষ্ঠক প্রারম্ভঃ।

থিনি পারম স্থক্ষর ও সমুদার পাপ থওন করেন, যিনি আপনার ভক্তজনের হাদর রঞ্জন করেন, আমি সেই অদিভীয় রামচল্রকে সর্ব্বদাই বলনা করি। যিনি জটাসমূহে পরি-শোভিত ছইয়াছিলেন এবং যাবতীয় কল্মর বিনস্ক করিয়াছেন, যিনি আপমার ভক্তজনের ভবভর ভঞ্জন করিয়াছেন আমি সেই অন্তর শ্রীরামকে বল্দনা করি। যিনি সকলকে আপনার শুরূপ জ্ঞান করিয়া সকলেরই উপর কুপা বিভরণ করেন, এবং ভববিদ্ধ অপহরণ করেন, যিনি সমদর্শী, মঙ্গলময় ও নিরঞ্জন, আমি সেই অন্বিভীর রামচল্রকে ভক্তনা করি : ১ : ২ : ৩ :

স্প্রপঞ্চ ক**প্রিড নাম**ধারী, নিরাকার নিরামর দেই অবর

ভবানিপোতরপকং হংশেষদেহকরিতং।
গুণাকরং রূপাকরং ভজেহ রামমন্বয়ং॥ ৬॥
মহাবাক্যবাধকৈ বিবিরাজমানবাকৃপলৈ:।
পরব্রহ্মব্যাপকং ভজেহ রামমন্বয়ং॥ ৭॥
শিবপ্রদং স্থপ্রদং ভবচ্ছিদং জমাপহং।
বিরাজমানদৈশিকং ভজেহ রামমন্বয়ং॥ ৮॥
রামান্টকং পঠতি যং স্করং স্থপুণ্যং
ব্যাসেন ভাষিতমিদং শৃণু তে মন্ত্র্যাঃ।
বিদ্যাং প্রিয়ং বিপুলসৌখ্যমনস্তর্কীর্তিং
সম্পাপ্য দেহবিলয়ে লভতে চ মোক্ষং॥৯॥
ইতি রামান্টকং সম্পূর্ণং।

সীভানাথকে বন্ধনা করে। নিম্প্রপঞ্চ, নির্ক্তির, নির্মান, নিরামর চিদেকরপী অন্তর রাঘবকে সতত । জনা কবি। ভবার্ণব ভরণিরপী সর্ব্বগুণাকর, করণা-নিধি অন্বয় সীভাপতিকে বন্দ । করি। ৪। ৫। ৬।

মহাবাক্যবোধক বাক্পদ বিরাজ্ঞমান পর্যত্রক্ষর্যাপক অধ্র দশরপাস্থ্রজ্ঞকে বন্দনা করি। মঙ্গল ও সুখপ্রাদ, ভবভ্রমাপহারী, বিরাজ্ঞমান, অধ্র ঈশ্বর শ্রীরামকে বন্দনা করি। বেমসুষা সুকর ও সুপুণ্য ব্যাসোজ এই রামাষ্ট্রক শ্রবণ করে, সে বিদ্যা, শ্রী, বিপুল স্থাতো এবং অনস্তকীর্ত্তি প্রাপ্ত হইরা দেহ বিলয় স্মরে মেক্ষিণ্ড করে। ৭।৮।৯।

हैकि बोदायां हैकः मन्मूर्गम्।

নারায়ণ স্তবঃ

যোগেন সিদ্ধবিবৃধৈঃ পরিভাব্যমাণং
লক্ষ্যালয়ং তৃলসিকাচিতভক্তভুক্ষন্।
প্রোত্তুক্রক্তনথরাক্স্লিপত্রচিত্রং
গঙ্গারসং হরিপদাস্ক্রমাঞ্জয়েহহম্॥ ১॥
গুক্তন্মণিপ্রচয়ঘটিতরাজহংসসিঞ্জৎস্থাপুরযুতং,পদপদার্ভ্তম্।
পীতাম্বর্গুকলবিলোলচলৎপতাকং
স্বর্গিত্রকুবলয়ঞ্হরেঃ স্মরামি॥২॥
জ্ঞে স্থাপ্রল্পনিল্লালম্পিপ্রদ্ধে
শোভাস্পাক্রণ্মণিদ্যুতিচুকুমধ্যে।

যোগসিদ্ধ পণ্ডিতগণ দক্ষণা বাঁছার চিন্তা করিয়া থাকেন, বিনি লক্ষীর আশ্রম, বাঁগার ভক্তরপ ভ্রেরা তুলসী হারা ব্যাপ্ত থাকে, বাঁছার সাভিশর, রক্তবর্ণ-নথযুক্ত অঙ্গুলিরপ পত্রহারা গঙ্গাকল চিত্তিত রছিয়াছে, উদৃশ ছব্লিপাদপদ্মের আশ্রম গ্রহণ করিলামণ ১

বিষ্ণর যে চরণ-কমলর্থ গুদ্দিত মণিসমূহ দারা ঘটিত ও রাজ্রণদের নাার শব্দারান শোভন মূপুরে সুসজ্জিত রহিরাছে, যাহা পীত বসলো চঞ্চল জঞ্চল দারা প্রচলিত পতাকার নাার শোভা পাইতছে, যাহাছে সুবর্ণনিশ্বিত ত্রিবক বলর দীন্তি বিস্তার করিতছে, সেই চরণ-কমল-রস্ত সরণ করি। ২। যাহা গক্তেরগলদেশছ নীলকান্ত মণির সদৃশ, যাহার মধ্যত্বলে বিনতক্ষলনের জ্বকণবর্ণ-মণি-তুল্য চত্ত্বর পোতা বিস্তার করিতেছে, বাহার নিয়ে লখমান স্বর্থ

আরক্তপাদতললম্বনশোভমানে
লোকেম্বনোৎসবকরে চ হরেঃ স্মরামি॥
তে জামুনী মথপতেভুজ্মুলসঙ্গ
রক্ষেৎসবার্ততড়িদ্বসনে বিচিত্রে।
চক্ষৎপত্রমুখনির্গতসামগীতবিস্তারিতাত্মশসী চ হরেঃ স্মরামি॥ ৪।
বিষ্ণোঃ কটিং বিধিক্তান্তমনোজভূমিং
জীবান্তকোষগণসঙ্গ কুলমধ্যাম্।
নানান্ত্রপত্রপীতবিচিত্রবন্ধাং
ধ্যায়েমিবদ্ধবসনাং খগপৃষ্ঠসংস্থাম্॥ ৫॥
শাতোদরং ভগবতন্ত্রিবলিপ্রকাশম্

রক্তবর্ণ-পদত্তল শোঁভা পাইতেছে, য়াহা ভক্তর্কের লোচনের আমনসদায়ক, হরির সেই ভক্তযাধর শুর্ণ করি। ৩।

উৎসবার্থ ক্লকদেশে অর্পিত বিহাৎস্তৃত্ব পীত্রসন প্তিত হওরাতে বাহা বিচিত্রবর্ণ ছটয়ছে, চঞ্চল গ্রুড্মুখে বিনির্মত সাম্পান ধারা বাহার মাহাজ্য বিস্তার হইতেছে। বিষ্ণুর সেই জাত্রয় স্মুরণ করি। ৪।

যাহা বিধাতা যম ও কলপের জাধার জর্থাৎ যাহ। সৃষ্টি ছিতি ও অলরের কারণ, ত্তিগুণা প্রাকৃতি পীত ও বিচিত্র বদনরূপে যেথানে অবস্থান ক্রিতেচে, ছীবগণের রীজের জাধার
সংস্কৃত তুক্ল যে স্থলে শোক্তা পাইডেচে, সেই গ্লগপ্টস্থিত
বিষ্ণুর ক্টিছেশ চিন্তা করি। ৫।

কাবর্ত্তনাভিত্তিকস্বিধিজন্মপদ্মন্।
নাড়ীনদীগণরসোথসিতান্ত্রসিন্ধুং
ধ্যায়েহওকোষনিলয়ং তন্তুলোমরেগন্॥ ৬॥
বক্ষঃ পরোধিতনয়াকুচকুস্কুমেন
ভারেণ কৌস্তভমণিপ্রভয়া বিভাতম্।
শ্রীবংসলক্ষম হরিচন্দনজপ্রসূনমালোচিতং ভগবতঃ স্মভগং স্মরামি ॥ ৭॥
বাহু স্থবেশসদনো বলয়াঙ্গদাদিশোভাস্পদো হরিতদৈত্যবিনাশদকো।
তৌ দক্ষিণো ভগবতশ্চ গদাস্থনাভতেজোজিতো স্মললিণে মনসা স্মরামি॥৮॥
বামো ভুজৌ মুররিপোধ্ তপদ্মশান্তো।
ভামো করীন্দকরবন্মণিভূমণাটো।।

যাগতে ত্রিবলি শোভা পাইংছে, যে হুলে আহর্ত সদৃশ নাভিসরোব্যে ব্রহ্মার জন্মহানরপ পদ্ম বিকসিত হইয়া ংছি-য়াছে, বে স্থানে নাড়ীরপা নদীগণের রম দ্বারা অন্তর্ম দিল্লু উল্লিড ছইভেছে, যাহা ব্রহ্মাণ্ডের আধারস্থরপ, যাহাতে স্বারোমরাজি শোভা সম্পাদন করিভেছে, ভ্যাবানের ভাদৃশ ক্ষীণ উদ্ধ ব্যরণ করি। ৬।

লক্ষমীর কুচকুত্বমহারা, হার হারা ও কেভিড ভমণির প্রভা দারা বিরাজ্যমান জীবংস্চিক্তি গরিচন্দনজ্ঞাত কুসুম্মালা দারা বিভূষিত প্রম রুম্বীয় তগ্বানের বক্ষঃতল অবণ করি।৭।

ষে বাত্বয়, সুবেশনিলয় ও বলর অসদ গ্রন্থতি অলফার দ্বারা শোন্তমান; যে বাত্দ্বর, গুলান্ত দৈত)গণকে বিনাশ করি-নাভে; যে বাত্বর, গলা ও স্থাশন চাক্রের তেড়েছা দ্বারা সকলকে অভিতৰকরিতেতে; ভগবানের গেই স্কলিত দক্ষিণ বাত্ব্যল মনো দারা স্বরণ করি। ৮।

মূরবিপুর বে বাম ভূজদর করিকরসদৃশ খ্রামবর্ণ ও শখ্ব-পদ-বারী, বাছাতে মণিভূষণ শোভা পাইতেচে, যাছার রক্তবর্ণ র ক্তাঙ্গুলিপ্রচয়চুষিতজ। মুম(ধা)
পদালয়াপ্রিয়করে রাজচিরে মারামি॥ ৯॥
কঠং মৃণালমমলং মুগপক্ষত্রস্থা
লেথাত্রমেণ বনমালিকয়া নিবীতম্।
কিংবা বিমুক্তিবসমন্ত্রকসংফলস্থা
রন্তঃ চিরং ভগবতঃ স্থভগং স্মরামি॥ ১০॥
রক্তাষ্প্রজং দশনহাসবিকাশরমাং
রক্তাধরে ঠবরকোমলবাক্স্থাচাম্।
সন্মানসোদ্রবচলেকণপত্রচিত্রং
লোকাভিরামমমলঞ্চ হরেঃ স্মরামি॥ ১১
শ্রাজাজাবস্থগন্ধবিদং স্থনাশং
শপল্লবং স্থিভিলয়োদয়কর্মাদক্ষম্।
কামোৎসবঞ্চ কমলাহাদয়প্রকাশং
দংচিত্রয়ামি হরিবক্র বিলাসদক্ষম্॥ ১২॥

মন্দ লিসমূহ জার স্পর্শ করিয়াছে, পদালরার প্রিয় নেই মনোহর কর্মাণ স্বল করি। ৯। মুখপাদের ম্বালস্ক্রা নির্মাল রেবাত্তরমূকে বন্দালাবিভূষিত ও মুক্তাবস্থার এব স্থিতির মন্ত্রপ রমণীয় ফলের রক্তাবস্থা পারম স্থলর ভগ্রাক্রের কঠ নিরস্তর ধ্যান করি। ১৮।

ইক্তপন্ত্ৰপ, রক্তাধ্রোষ্ঠ দারা কমনীর, ছাত্ত গালে বশন্ত্রিকাশ হওয়াতে পরম স্থানর, বচনত্রপ হাধাসম্পন্ন, মনীর্থ প্রতিকর, চঞ্চল-নয়নপত্রদার। চিত্রিত, লোকের মনোবঞ্জন ছরির বদন-কমল স্থরণ করি। ১।

যাছা ছইতে যন সদনের গান্ধও আন্তান করিতে হয় না,
বাহার সমিধানে উত্তম নাকি। শোভা পাইতেছে, যাছা
ছইতে জগতের ক্ষি হিতি প্রবার ছব, বাছা হইতে নদনমছোৎদৰ প্রকাশ হইর। গাকে, যদশনে কমলার ছবন
বিক্সিত হয়, ছবির মুখপঙ্গাল যাহা শোভমান হইতেছে,

কর্ণো লসন্মকরক্ঞলগণ্ডলোলো
নানাদিশাঞ্চ নভসশ্চ বিকাসগোহোঁ।
লোলালকপ্রচয়চ্য়নকুঞ্চিতাপ্রো
লয়োহরের্মাণিকিরীটভটে স্মর্কাম। ১৩॥
ভালং বিচিত্রভিলকং প্রিয়চারুগন্ধগোরোচনারচন্যা ললনাক্ষিসথাম।
ব্রৌনাকধামমণিকান্তকিরীট্যুইং
ধ্যায়েন্মনোনয়নহারকমীশ্বরত্ম॥ ১৪॥
শ্রীবাস্থাদেবচিকুরং কুটিলং নিবৃদ্ধং
নানাত্রগন্ধিকস্তামঃ স্বজনাদরেণ।
দীবহি রমান্তদেয়গাশমনং ধুনত্তং
ধ্যায়েহন্মুবাহরুচিরং ক্লারাজমধ্যে॥ ১৫॥
সেঘাকারং সোম্সুর্যপ্রকাশং
ভ্রুন্মশং শক্রচাপেকমানম্।
লোকাভীতং পুগুরীকায়তাক্ষং

গণ্ডস্থলে চঞ্চল মকরাকার কুণ্ডল বারা যাথা বিভূষিত রচিয়াছে, যাহা হারা নামাদিক প্রেলালমণ্ডল প্রকাশিত হয়, যাহার অগ্রভাগ চঞ্চল অলক মূহ স্পর্শে কিঞিৎ কুঞ্জিতের ন্যায় প্রভীয়মান হইতেছে, যাহা মণিময়-কিরীট-প্রান্তে সংলগ্ন বহিয়াছে, হারর ঈদৃণ কণ্ডয় মুরণ করি ১১৩।

যাহা বিচিত্র তিলকদ্বারা বিভূষিত, প্রিয় ও মনেছের গল্প-বিশিষ্ট-গোরোচনার রচিত প্রাবলি দারা যাহা কামিনীর নয়ন-সাদৃশ্য ধারণ স্থিয়াছে, যাহা ব্লের একমাত্র আঞ্রয়, থেখানে মণিনর রমণীয় কিরীট রহিরাছে, যাহা সকলেরই মন ও নয়ন হরণ করে, ঈশ্বর ছরির ভাদৃণ ললাট শ্বরণ করি। ১৪

স্থান কর্তৃক সমাণর পূর্ব্যক নানা স্থানি কুস্থ ছার।
বন্ধ, কুটিল, দীর্ঘ, লক্ষীর মনোভব-নিবারণকারী, (বায়ু ছার।
দিবং) কম্পিত, কুফ্মেম্বের স্থায়, ক্চিন, প্রীবাস্থদেবের
কেশপাশ, দ্বংপদমধ্যে চিন্তা করি। ১৫।

নাতি বাহার শারীর মেত্রর জার, বাহার (নয়নদ্রর) চক্র ও চ্পার্যোর জার, ইশুধনুঃস্দৃশ বাহার শোভন জার্গল, বাহার বিছাচ্চেলঞ্চাপ্রয়েহহং হপ্র্ম ॥ ১৬॥
দীনং হীনং সেবয়া বেদবতা।
পাপৈন্তাপৈঃ পূরিতং মে শরীরম্।
লোভাক্রান্তং শোকমোহাধিবিদ্ধং
কুপাদৃক্ত্যা পাহি মাং বামুদেব।॥ ১৭॥
যে ভক্ত্যাদ্যাং ধ্যায়মানাং মনোজ্ঞাং
ব্যক্তিং বিফোঃ বোড়শশ্লোকপুল্পৈঃ
স্তত্বা নবা প্রায়েবা বিধিজ্ঞাঃ

পদেরিতমিদং পুণ্যং শিবেন পরিভাষিতং। ধন্যং যশস্তমায়ুষ্যং স্বর্গাং স্বস্ত্যয়নং পরং॥ ১৯॥ পঠন্তি যে মহাভাগান্তে মূচ্যন্তেহ্ছসোহখিলাং। ধর্মার্থকামমোক্ষাণাং পরত্রেহ ফলপ্রদং॥ ২০॥

॥ हेकि नातायन (छाज्यः मम्पूर्नः॥

নাসিক। দীর্ঘ, যাছার পল্পের মদৃশ স্থানীর্ঘ নরন্তর, যাঁচার (পীত) বসন বিদ্যুংসদৃশ, উদৃশ অপুর্ব-মূর্তি বিষ্ণুর আগ্রন্থ করি। ১৬।

মামি মতি দীন ও বেদবিছিত-সেবাদিবিহীন। মানার শনীর পাপভাপে প্রপূরিত, লোভাক্রান্ত এবং শোক মোচ ও মানসী ব্যথা দারা অভিভূত। অতএব বাস্থদেব! কপাদ্ধি দারা আমাকে ক্লা কর। ১৭।

যে সকল ব্যক্তি ভক্তিপূর্মক বৈষ্ণুর এই আদ্য মনোহর মৃত্তি ধ্যান করিরা যোড়শ-শ্লোক-রূপ পূজা দ্বারা স্তব কবিরা নমস্তার ও পূজা করিবে, সেই সকল বিধিক্ত ব্যক্তিরা শুল ও মৃত্তি ইইরা ব্যানন্দ ভোগা করিবে।১৮ 1

পদ্মা কর্ম্ক কথিত শিবপ্রোক্ত এই (ন্তর্) জতীব পরিত্র ধন্য যশক্ষর জায়ুষ্য কর্মকলদায়ক ও পরম কন্তায়ন। ১৯।

এই স্তব্ প্রলোকে ধর্ম অর্থ কাম ও মোক রূপ কণপ্রদ। যে সকল মহাআমে। এই স্তব পাঠ করিবেন, ওঁছোর। সমু-দার পাপ হইতে মুক্ত হইবেন। ২০।

ইভি নারায়ণ স্তোত্র সমাধঃ।